Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तमिऴ

कम्ब रामायण

किष्किन्धा-सुन्दरकाण्ड

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ ३.

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कम्ब रामायणम्

(तमिळ)

किष्किन्धा-सुन्दरकाण्ड

(नागरी लिप्यन्तरण, अन्वय एवं हिन्दी अनुवाद)

रचयिता

महर्षि कम्बर्

लिप्यन्तरण एवं अनुवाद

आचार्य ति० शेषाद्रि, एम० ए०

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रथम संस्करण—

१९८०-८१ ई०

पृष्ठसंख्या—१८ × २२ ÷ ८ = १०१६

मूल्य— ७०·०० रुपया

राजकीय संग्रहालय, लखनऊ
क्रमसंख्या 57997
प्राप्ति तिथि
विभाग
श्रेणी
STATE MUSEUM, LUCKNOW.

मुद्रक—

वाणी प्रेस

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उपहार

.....

.....

.....

.....

.....

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजबनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ।।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीराम-पञ्चायतन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

Swami Chinmayananda

Bombay Yagnasala
14-11-79.

Sri. Seshadri.
Madurai.

Blessed One,
Harom Harom. Harom.
Salutations.

Congratulations that you found in you the "faith" to serve the Lord with this superhuman work of translating and commenting, in Hindi, the entire 10,000 and odd verses of Kambar Ramayana. May Sri Ramachandra shower His grace upon you. Let Sita give the required heart. and let Hanumanji supply the mental and physical strengths to accomplish it.

Lovingly yours,

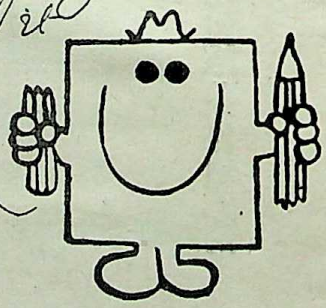

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्री स्वामी चिन्मयानन्द
श्री शेषाद्रि
मदुरै
धन्य ॐ

बाम्बे यज्ञशाला
१४-११-७९

हरिः ओम्, हरिः ओम्, हरिः ओम्, प्रणाम ।

कम्बर रामायण के पूरे दस हज़ार से अधिक पद्यों के टीका सहित अनुवाद के अत्यद्भुत कार्य द्वारा श्री 'प्रभु' की सेवा करने के लिए जो तुमने अपने में 'विश्वास' पा लिया है उसके लिए मेरी बधाइयाँ ।

श्रीराम तुम पर अपनी कृपा बरसाएँ, श्री सीताजी आवश्यक "मनोबल" दें; और हनुमानजी उसे पूरा करने क लिए आवश्यक शारीरिक व मानसिक बल दें ।

प्रेम प्रेम प्रम
(प्रेमसहित)
ॐ चिन्मयानन्द

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कम्बन-मणिमण्डपम्

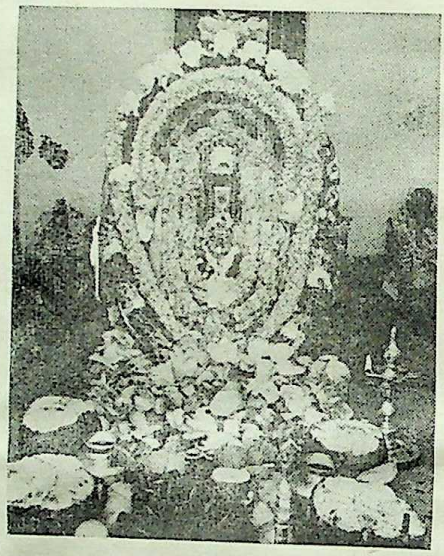

तमिळनाडु में कारैक्कुडी से दस-पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर स्थित नाट्टरशनकोट्टाई नामक स्थान में महर्षि कम्बन के समाधिस्थल पर, उनके अनन्य भक्त कम्बन-अडिप्पोडि (कम्बन की चरणरेणु) श्री सा० गणेशन द्वारा स्थापित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आचार्य ति० शेषाद्रि का अभिनन्दन

कारैक्कुडी के 'कम्बन कळगम्' द्वारा इस अनुवाद का भव्य स्वागत

बालकाण्ड की भूमिका में कारैक्कुडी के निवासी, कम्बन कळगम् के निर्माता, संचालक और अध्यक्ष श्री कम्बन अडिप्पॊडि (कम्बन-चरणरेणु) जी की चर्चा दी गयी है। उस संदर्भ में उक्त कळगम् द्वारा हर वर्ष चलायी जानेवाली 'कम्ब जयन्ती' के उत्सव की बात भी कही गयी है। वह उत्सव चार दिनों का होता है और उसकी समाप्ति कारैक्कुडी से दस-पन्द्रह किलोमीटर की दूरी पर स्थित नाट्टरशनकोट्टाई नामक स्थान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

में वहाँ होती है, जहाँ कम्बन की समाधि पर बना मन्दिर-सा मण्डप रहता है। फाल्गुन (सौर गणना के अनुसार) महीने के 'हस्त नक्षत्र' का दिन कम्ब रामायण के प्रकाशन का दिन माना जाता है। (शकाब्द ८०७ के फाल्गुन यानी फ़रवरी सन् ८९६ ई० के दिन वह प्रकाशित हुआ।) इसलिए यह उत्सव उस दिन कम्बन की पूजा-अर्चना के साथ समाप्त होता है।

इस उत्सव में तमिळनाडु के मूर्द्धन्य विद्वान् और अन्य गण्यमान्य सज्जन भाग लेकर अपने भाषणों, कविताओं और चर्चाओं द्वारा अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं। यह शानदार जलसा है और कम्बन अडिप्पॊडि जी कोई बात उठा नहीं रखते। यह उत्सव कारैक्कुडी में बन रहे कम्ब-मण्डप में चलता है।

इस साल 'कम्ब-मेला' में दो विशेष बातों का आयोजन था। कम्बन के दो विद्वान् भक्तों की स्मृति में चित्रों का अनावरण एक बात था, और इस अनुवाद-ग्रंथ के प्रणेता का अभिनन्दन दूसरी बात।

मार्च १८ से २१वीं ता० तक मनाये गये इस उत्सव में पहले ही दिन की सभा के कार्यक्रम में ये दोनों अच्छे कार्य सम्पन्न हुए।

इस सभा के तमिळनाडु के वित्तमंत्री श्री वी० आर्० नॆडुञ्जॆळियन जी सभापति रहे। प्रधान न्यायमूर्ति जस्टिस् मु० मु० इस्माइल ने उद्घाटन किया। (इनकी लिखी भूमिका बालकाण्ड के आरम्भ में छपी है।) तमिळनाडु विधान कौंसिल के अध्यक्ष मान्य म० पॊ० शिवज्ञान ग्रामणी जी ने वी० वी० एस् अय्यर के चित्र का अनावरण किया और उनका गुणगान समुचित रूप से किया। यह साल व० वे० सु० अय्यर के जन्म का सौवाँ साल है। उन्हीं ने पहले-पहल कम्बन की रचना का विश्व के श्रेष्ठतम कवियों की रचनाओं के साथ तुलना करके कम्बन को उनसे भी आगे निकली मेधा का स्वामी साबित किया। उनका 'A study of Kamban' 'कम्बन —एक अध्ययन' बड़ा ही उत्कृष्ट, प्रामाणिक और महत्त्व का विद्वतापूर्ण ग्रन्थ है। वी० वी० एस्० (व-वे-सु) अय्यर तमिळनाडु के 'तिलक' थे।

कोयम्बत्तूर के प्रसिद्ध मिल-मालिक जी० के० सुन्दरम् जी ने तॆ० पो० मीनाक्षी सुन्दरम् के चित्र का अनावरण किया। तॆ० पो० मी०,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जिनको यहाँ गुरुदेव कहके सम्बोधित करने की प्रथा है, बहुभाषाविद्, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय के प्रथम उपकुलपति थे। उन्हीं ने पहले-पहल कम्बन का समूचा ग्रन्थ एक ही जिल्द में संकलन करके पुस्तक के प्रकाशन में सहायता दिलायी थी।

बाद मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० डॉ० सु० शंकर राजू नायडू ने श्री शेषाद्रि और ग्रन्थ की सराहना की। इनकी लिखी भूमिका भी बालकाण्ड के आरम्भ में छपी है। उन्होंने अपनी संस्तुति के भाषण में कहा कि तमिळभाषियों के लिए हिन्दी अपनी वर्णमाला, विचित्र ध्वनियों, 'ने, का, के, की' आदि विधियों के कारण जटिल लगती है और उस पर अधिकार पाना उतना सुलभ नहीं। तमिळनाडु में रहनेवाले इने-गिने हिन्दी के अधिकारी विद्वानों में आचार्य ति० शेषाद्रि एक हैं।

फिर उन्हीं ने कम्बन की महत्ता बतायी। अनुवाद के दो-एक स्थलों का उल्लेख करके बताया कि अनुवाद सफल हुआ है।

यहाँ की प्रथा के अनुसार उन्होंने कम्बन कळगम् की ओर से ज़री की कारीगरी से युक्त रेशमी शाल उढ़ाकर अनुवादक का सम्मान किया।

असल में यह कार्य तमिळ देश के समूचे कम्बन प्रेमियों के सम्मान का प्रदर्शक है और ट्रस्ट और अनुवादक इस पर गर्व कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनुवादक की अवतरणिका

अयोध्या-अरण्यकाण्ड की भूमिका (अनुवादक की अवतरणिका) में तमिऴ के वाक्यों में आनेवाले शब्दों के मूल रूपों को छाँटने में जो कठिनाई सम्भवनीय है, उसे दूर करने (कम से कम करने) के विचार से शब्द-विचार पर कुछ बातें कही गयीं। अब उसी को मद्दे नज़र रखकर सन्धि-सम्बन्धी कुछ विस्तार करना चाहता हूँ।

सन्धि ध्वनियों के मेल से होती है। वहाँ विग्रह आसान है। पर शब्दों का जहाँ योग के कारण रूप-परिवर्तन होता है, जो आम तौर से समास के कारण होता है, वहाँ विग्रह आसान नहीं है। यों ही शब्दों को खण्डित करने से काम नहीं चलेगा। अतः समास के कारण होनेवाली सन्धि-सम्बन्धी बातें जानना आवश्यक हो जाता है। असल में तमिऴ में 'पुणर्च्चि' के प्रकरण में जो तत्त्व बताये जाते हैं वे अधिकांश समास के ही नियम हैं, यद्यपि 'पुणर्च्चि' का अर्थ मेल, सन्धि या योग है।

पुणर्च्चि

1 पुणर्च्चि (लक्षण)— शब्दों के अपने क्रम में मेल या योग को "पुणर्च्चि" कहते हैं। इसमें "समास, सन्धि और योग" तीनों का समावेश है। ये दो तरह की हैं:—

पहली— वेऱ्ऱुमैप् पुणर्च्चि— जब पूर्वशब्द का अपर शब्द से विभक्ति के "योग" या समास बनता है, उसे 'वेऱ्ऱुमैप् पुणर्च्चि' कहते हैं। (इसके अंतर्गत हिन्दी का तत्पुरुष समास आता है।) इसमें कारक-चिह्न लुप्त भी रह सकते हैं, प्रकट भी।

उदाहरण :

कारकचिह्न लुप्त	कारकचिह्न प्रकट	कारकचिह्न	विभक्ति
पाल् कुटित्तान् (दूध पिया)	पालैक् कुटित्तान् (दूध को पिया)	ऐ (को)	दूसरी
तलै वणङ्किनान् (सिर नवाया)	तलैयाल् वणङ्किनान् (सिर से नमन किया)	आल् (से)	तीसरी
परतन् मैन्तन् (भरत-सुत)	परतनुक्कु मैन्तन् (भरत को सुत)	कु (को)	चौथी

(यहाँ हिन्दी में छठी विभक्ति होती है।)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मलै वीळुरुवि (पर्वत-उतरती नदी)	मलैयिन् वीळुरुवि (पर्वत से उतरती नदी)	इन् (से)	पाँचवीं
मुरुकन् वेल् (मुरुग-भाला)	मुरुकनतु वेल् (मुरुगन का भाला)	अतु (का)	छठी
कुकै नुळैन्तान् (गुहा-घुसा)	कुकैक्कण् नुळैन्तान् (गुहा में घुसा)	कण् (में)	सातवीं

पाल्+कुटम्=पार्कुटम् पालै उटैय कुटम् मध्यमपदलोपी कर्मधारय

दूसरी— अल्वळिप् पुणर्च्चि— अन्य सभी समस्त (या संयुक्त) शब्द "अल्वळिप् पुणर्च्चि" के कहे जाते हैं। "अल्" का अर्थ "इतर" या अन्य या 'जो यह नहीं'।

उदाहरण :

(क) पाय्पुलि— विनैत्तॊहै (कृदन्त) के प्रयोग से बननेवाले समस्त शब्द 'पाय्' का अर्थ 'झपटता', 'झपटा' और आगे 'झपटनेवाला' है— पुलि=बाघ है।

(ख) पचुम् पुल् (हरी घास) पण्पुत्तॊहै— गुणवाचक विशेषण तथा विशेष्य का समास है।

(ग) कयल् विळि— (मछली-सी आँख)उवमैत्तॊहै— उपमेय तथा उपमित शब्दों का मेल।

(घ) इराप्पहल्— इरा+पकल्=रात (और) दिन (द्वन्द्व समास)।

(ङ) कयल् विळि वन्ताळ— यहाँ "मछली-सी आँख वाली आयी" अर्थ है। यह 'अन्मॊळित्तॊहै' (कर्मधारय समास) में बना समास है।

2 "पुणर्च्चि" दो तरह से साधी जाती है—

(अ)1 स्वाभाविक या केवल संयोग— इरामन् वन्तान् (राम आया), माटु पुल् मेय्नततु (बैल ने घास चरी।)

2 विकारयुक्त—मेल होते वक़्त पूर्व शब्द के आखिर में और पूर्व व अपर शब्दों के बीच परिवर्तन या विकार हो जाते हैं।

उदाहरण : कलै+चॆल्वि=कलैच्चॆल्वि।

(आ) विकार तीन तरह के होते हैं— आगम, परिवर्तन और लोप।

आगम—कलै+चॆल्वि=कलैच्चॆल्वि— आगम है 'च्' आया है। (कला में निपुण स्त्री इसका अर्थ है। 'कलै' और 'चॆल्वि' का समास नहीं बना तो अर्थ भिन्न होगा; उनको अलग-अलग लेना पड़ेगा।)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पू+तोट्टम्=पून् दोट्टम्—आगम है। पू और तोट्टम् अलग-अलग रहें तो दोनों के अलग-अलग अर्थ करना पड़ेगा। पर यहाँ यह समस्त शब्द है। अर्थ 'फूलों का बाग' है।

परिवर्तन—मरम्+चाय्न्ततु=मरञ्जाय्न्तदु(अर्थ—पेड़ गिरा।) यहाँ म् ञ् में परिवर्तित हो गया।

लोप—मरम्+वेर्=मरवेर्— (अर्थ— पेड़ की जड़) यहाँ म् का लोप हो गया।

तमिऴ में इस तरह के समासगत संधि के विस्तृत नियम होते हैं। उनके रूप के किंचित् ज्ञान के लिए कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

संधि में परुष व्यंजनों का द्वित्व

तमिऴ में परुष वर्ग के अक्षरों के द्वित्व का मुख्यत्व है। द्वित्व के विना अर्थ भी बदल जाता है; समास ही भिन्न हो जाता है। अतः पहले उन स्थलों का विवरण उदाहरण-सहित दिया जाता है।

नोटः— यहाँ तमिऴ के वर्णों के वर्गीकरण का स्मरण करना सुविधाजनक होगा :

अ आदि बारह स्वर— स्वरवर्ण के हैं।

क, च, ट, त, प, ऱ— ये परुष अक्षर, "वल्लॆऴुत्तु" या "वलि" या वल् इऩम् के परुषवर्ण या परुषगण के अक्षर हैं।

ङ, ञ, ण, न, म, ऩ— ये कोमल वर्ण "मॆल् इऩम्" कोमल वर्ण या कोमल गण के हैं।

य, र, ल, व, ऴ, ळ— ये मद्धिम वर्ण के अक्षर "इडैयिऩम्" के कहे जाते हैं।

3 (क) विभक्ति-समास में वे स्थल जहाँ परुष वर्ण का द्वित्व होता है :

1 द्वितीया तत्पुरुष के विग्रह करते समय द्वित्व होता है :

अणैयै+कट्टिऩान्=अणैयैक्कट्टिऩान्। (आक्कल्) सृजन
कट्टैयै+तऱित्ताऩ्=कट्टैयैत्तऱित्ताऩ्। (अऴित्तल्) नाश
ऊरै+शेर्न्दाऩ्=ऊरैच्चेर्न्दाऩ्। (अडैदल्) प्राप्ति
उलहै+तुऱन्दाऩ्=उलहैत्तुऱन्दाऩ्। (नीत्तल्) त्याग
पुलियै+पोऩ्ऱवऩ्=पुलियैप्पोऩ्ऱवऩ्। (ऒत्तल्) समता
पॊरुळै+पॆऱ्ऱाऩ्=पॊरुळैप्पॆऱ्ऱाऩ्। (उडैमै) स्वामीत्व

2 चौथी विभक्ति के बने समस्त शब्दों के विग्रह करते समय :

नम्बिक्कु+कॊडुत्ताऩ्=नम्बिक्कुक्कॊडुत्ताऩ्। (कॊडै) दान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाम्बुक्कु+पहै कीरि=पाम्बुक्कुप्पहै कीरि। (पहै) शत्रुता
औवैक्कु+कबिलर् नण्बर्=औवैक्कुक्कबिलर्। (नण्बर्)मित्रता
वॅन्ऱवर्क्कु+कळल् तक्कदु=वॅन्ऱवर्क्कुक्कळल्। (तक्कदु)उचितता
नूलुक्कु+पञ्जु=नूलुक्कुप्पञ्जु। (अदुवादल्) वही बनना
कूलिक्कु+शॅय्द वेलै=कूलिक्कुच्चॅय्द वेलै। (पॊरुट्टु) तदर्थ
कण्णनुक्कु+तम्बि मुरुहन्=कण्णनुक्कुत्तम्बि मुरुहन्। (क्रम)

3 छठी विभक्ति में अवर वर्ग के नामों के बाद परुषाक्षरों का द्वित्व हो जाता है :

यानै+कादु=यानैक्कादु। (गजकर्ण)
कुदिरै+शॅवि=कुदिरैच्चॅवि। (अश्वकर्ण)
पाम्बु+तलै=पाम्बुत्तलै। (सर्पसिर)
पूनै+पार्वै=पूनैप्पार्वै। (मार्जारदृष्टि)

4 सातवीं विभक्ति पर आधारित समास में :

कूण्डु+किळि=कूण्डुक्किळि। (पिंजरे का तोता)
तण्णीर्+पाम्बु=तण्णीर्प्पाम्बु।
मलै+कुहै=मलैक्कुहै।

5 परुष वर्ण के ह्रस्व 'उ' के बाद परुष अक्षर आवे तो उसका द्वित्व हो जाता है :

वाक्कु+कॊडु=वाक्कुक्कॊडु। कॊक्कु+शिऱहु=कॊक्कुच्चिऱहु।
पाक्कु+तूळ्=पाक्कुत्तूळ्। अच्चु+पलहै=अच्चुप्पलहै।

6 स्थानवाचक शब्द के उपांत अक्षर कोमल (मॅल्लॅळुत्तु) व्यंजन हों तो परुष व्यंजनों का द्वित्व हो जाता है :

इङ्गु+कण्डान्=इङ्गुक्कण्डान्।
अङ्गु+शॅन्ऱान्=अङ्गुच्चॅन्ऱान्।
आङ्गु+तेडिनान्=आङ्गुत्तेडिनान्।
ऍङ्गु+पोनाय्=अङ्गुप्पोनाय् ?
ईङ्गु+कण्डान्=ईङ्गुक्कण्डान्।
आण्डु+शॅन्ऱान्=आण्डुच्चॅन्ऱान्।
ईण्डु+तेडिनान्=ईण्डुत्तेडिनान्।
याण्डु+पोनाम्=याण्डुप्पोनाय् ?

7 एकाक्षर शब्द के आगे के परुषाक्षर का द्वित्व हो जाता है :

पू+कडै=पूक्कडै पू+चॅण्डु=पूच्चॅण्डु
ती+पुहै=तीप्पुहै ई+तलै=ईत्तलै
तै+पॊङ्गल्=तैप्पॊङ्गल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

3 (ख) इतर समास-गठन में परुष अक्षरों का द्वित्व :

1 अरै, पादि (आधा) के बाद आनेवाले परुषाक्षर :
अरै+काशु=अरैक्कासु। पादि+शुमै=पादिच्चुमै ।

2 ह्रस्व अक्षर के आगे के परुष का द्वित्व होता है :
कऩा+कण्डेऩ्=कऩाक्कण्डेऩ् ।
पला+चुळै=पलाच्चुळै ।
उला+तमिऴ्=उलात्तमिऴ् ।
इरा+पहल्=इराप्पहल् ।

3 दो ह्रस्वाक्षरों के शब्दों के आगे के परुषाक्षर का द्वित्व होता है :
कॊशु+कडित्तदु=कॊशुक्कडित्तदु ।
उडु+शिदऱियदु=उडुच्चिदऱियदु ।
कणु+तोऩ्ऱियदु=कणुत्तोऩ्ऱियदु ।
वडु+पिळन्ददु=वडुप्पिळन्ददु ।

4 नकारात्मक शब्दों का अन्तिम स्वर जहाँ लुप्त है, वहाँ :
कलैया+कूऩ्दल्=कलैयाक्कूऩ्दल् ।
नाडा+शिऱप्पु=नाडाच्चिऱप्पु ।
काणा+तॆय्वम्=काणात्तॆय्वम् ।
माणा पिऱप्पु=माणाप्पिऱप्पु ।

5 अकारान्त कृदन्त (अपूर्ण क्रिया) के आगे के परुषाक्षर का :
पाड+केट्टाऩ्=पाडक्केट्टाऩ् ।
पाड+शॊऩ्ऩाऩ्=पाडच्चॊऩ्ऩाऩ् ।
कूऱ+तॆरिन्दाऩ्=कूऱत्तॆरिन्दाऩ् ।
आऱ+पॊऱुत्ताऩ्=आऱप्पॊऱुत्ताऩ् ।

6 इकारान्त कृदन्त (अपूर्ण क्रिया) के आगे के परुषाक्षर का :
केट्टालऩ्ऱि+कॊडाऩ्=केट्टालऩ्ऱिक्कॊडाऩ् ।
उणविऩ्ऱि+शॆत्ताऩ्=उणविऩ्ऱिच्चॆत्ताऩ् ।
तेडि+तन्दाऩ्=तेडित्तन्दाऩ् ।
ओडि+पोऩाऩ्=ओडिप्पोऩाऩ् ।

7 उन शब्दों के आगे, जिनका अन्तिम स्वर ह्रस्व हो और उपान्त कोमल वर्ग का हलन्त व्यंजन हो :
अऩ्बु+तळै=अऩ्बुत्तळै ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

8 गुणवाचक विशेषण तथा विशेष्य से बने समस्त शब्दों में :
वट्ट+कोट्टै=वट्टक्कोट्टै। पच्चै+पुडैवै=पच्चैप्पुडैवै।

9 दो नामों के (रूपी या संज्ञित अर्थ में) बने समस्त शब्दों में :
तै+तिङ्गळ्=तैत्तिङ्गळ्। शारै+पाम्बु=शारैप्पाम्बु।

10 अ, इ—संकेतात्मक प्रत्यय और अॆ प्रश्नात्मक प्रत्यय के आगे :
अ+करुम्बु=अक्करुम्बु। इ+शङ्गु=इच्चङ्गु।
अॆ+पन्दु=अॆप्पन्दु ?

11 'अन्त' (उस); 'इन्त' (इस) और 'अॆन्त' (कौन) इन प्रश्नवाचक शब्दों के आगे :
अन्द+कुदिरै=अन्दक्कुदिरै। इन्द+शिलै=इन्दच्चिलै।
अॆन्द+तट्टु=अॆन्दत्तट्टु ? अॆन्द+पडम्=अॆन्दप्पडम् ?

12 अप्पडि (वैसा), इप्पडि (ऐसा); अॆप्पडि (कैसा) इन शब्दों के आगे :
अप्पडि+कूऱिऩान्=अप्पडिक्कूऱिऩान्।
इप्पडि+शॆम्दान्=इप्पडिच्चॆम्दान्।
अॆप्पडि+पाडिऩान्=अॆप्पडिप्पाडिऩान् ?

13 'इऩि' (अब, आगे); 'तऩि' (अकेला); "मऱ्ऱै", "मऱ्ऱु" (अलावा, अन्य, इतर) इन शब्दों के आगे :
इऩि+पोहलाम्=इऩिप्पोहलाम्।
तऩि+पळक्कम्=तऩिप्पळक्कम्।
मऱ्ऱु+कण्डवै=मऱ्ऱुक्कण्डवै।
मऱ्ऱ+पॊरुळ्हळ्=मऱ्ऱप्पॊरुळ्हळ्।
मऱ्ऱै+कूऱुहळ्=मऱ्ऱैक्कूऱुहळ्।

वे स्थल जहाँ द्वित्व नहीं होता

4 (क) विभक्ति-समास में जहाँ परुष का द्वित्व नहीं होता :

1 कर्म, तत्पुरुष समास में जहाँ विग्रह नहीं किया गया है:—
कवै+कट्टिऩान्=कवै कट्टिऩान्। (सृजन)
काडु+कॊऩ्ऱान्=काडु कॊऩ्ऱान्। (नाश)
ऊर्+शेर्न्दान्=ऊर् शेर्न्दान्। (प्राप्ति)
उयिर्+तुऱन्दान्=उयिर् तुऱन्दान्। (त्याग)
पुलि+पोऩ्ऱान्=पुलि पोऩ्ऱान्। (समता)
पुहळ्+पॆऱ्ऱान्=पुहळ् पॆऱ्ऱान्। (स्वामीत्व)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

2 तीसरी विभक्ति के 'ऑटु, ओटु' के चिह्नों के आगे नहीं होगा—
ऍन्नॉडु+कऱ्ऱान्=ऍन्नॉडु कऱ्ऱान् ।
महनोडु+शेर्न्दान्=महनोडु शेर्न्दान् ।
ऍन्नॉडु+तङ्गिनान्=ऍन्नॉडु तङ्गिनान् ।
वेलनोडु+पोनान्=वेलनोडु पोनान् ।

3 पाँचवीं विभक्ति के 'इरुन्तु, निन्ऱु' चिह्नों के आगे नहीं होता—
मरत्तिलिरुन्दु+कुदित्तान्=मरत्तिलिरुन्दु कुदित्तान् ।
वीट्टिनिन्ऱु+पुऱप्पट्टान्=वीट्टिनिन्ऱु पुऱप्पट्टान् ।

4 छठी विभक्ति के चिह्नों के आगे नहीं होगा—
कण्णनदु+कुळल्=कण्णनदु कुळल् ।
वेलनुडैय+शिऱप्पु=वेलनुडैय शिऱप्पु ।
ऍन+कैहळ्=ऍन कैहळ् ।

4 (ख) इतर सन्धियों में जहाँ परुष का द्वित्व नहीं होगा :

1 उच्च जाति के साधारण नामों (जातिवाचक संज्ञाओं) के आगे—
तम्बि+शिऱियवन्=तम्बि शिऱियवन् ।
शॅल्वि+पॅरियळ्=शॅल्वि पॅरियळ् ।
ताय्+शिऱन्दवळ्=ताय् शिऱन्दवळ् ।
ताय्+शिऱन्ददु=ताय् शिऱन्ददु ।

2 उन सभी कृदन्तीय विशेषणों को छोड़, जिनके अन्तिम स्वर लुप्त हों—
पाराद+काडु=पाराद काडु (नकारात्मक)
पुदिय+शिङ्गम्=पुदिय शिङ्गम् (संकेतात्मक)
पाय्न्द+तवळै=पाय्न्द तवळै (खुला)

3 अवर जाति के वाचक पूर्ण क्रिया के शब्दों के आगे—
मुळङ्गिन+शङ्गुहळ्=मुळङ्गिन शङ्गुहळ् ।
आर्त्तन+पऱैहळ्=आर्त्तन पऱैहळ् ।
पाडिन+कुमिल्हळ्=पाडिन कुमिल्हळ् ।
करैन्दन+काक्कैहळ्=करैन्दन काक्कैहळ् ।

4 "चॅय्यिय"—(करने) जैसी अपूर्ण क्रिया के आगे—
उण्णिय+शॅन्ऱान्=उण्णिय शॅन्ऱान् । (खाने गया)
नोटः—यह कविता में ही प्रयुक्त होता है ।

5 'मिया' की पूरक ध्वनि के आगे—
केण्मिया+शॅल्व=केण्मिया शॅल्व !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॅन्मिया+तम्बि=शॅन्मिया तम्बि !

केण्मिया—केण्—सुनो; शॅन्मिया=शॅल=चल—यह भी कविता में आता है।

6 आकारान्त, नकारात्मक बहुवचन की पूर्ण क्रियाओं के आगे नहीं होता :

वारा+किळिहळ्=वारा किळिहळ्।

तिन्ना+पुलिहळ्=तिन्ना पुलिहळ्।

पाडा+कुयिल्हळ्=पाडा कुयिल्हळ्।

7 कर्ता अगर ऐकारान्त हो तो सन्धि में द्वित्व नहीं होता :

यानै+पॅरियदु=यानै पॅरियदु। पूनै+शिऱियदु=पूनै शिऱियदु।

8 प्रश्नसूचक शब्द के आगे द्वित्व नहीं होता :

कण्णा+केळ्=कण्णा केळ्। वेला+शॅल्=वेला शॅल्।

मुरुहा+ता=मुरुहा ता। कुप्पा+पो=कुप्पा पो।

9 क्रिया और संज्ञा मिलकर जहाँ समस्त शब्द बने हों, वहाँ द्वित्व नहीं होता :

कत्तु+कडल्=कत्तुकडल्। ऑलि+शङ्गु=ऑलिशङ्गु।

मोदु+तिरै=मोदुदिरै। तॅळि+पॉरुळ्=तॅळिपॉरुळ्।

10 ह्रस्वान्त शब्दों के उपान्त अक्षर परुष जहाँ नहीं हो, वहाँ द्वित्व नहीं होगा :

नाडु+कळित्तदु=नाडु कळित्तदु।

अॅह्(.·.)गु+कडिदु=अॅ.·.गु कडिदु।

कयिऱु+शिऱिदु=कयिऱु शिऱिदु।

पन्दु+तन्दान्=पन्दु तन्दान्।

कॉय्दु+शॅल्=कॉय्दु शॅल्।

11 कुछ मामूली उकार के आगे द्वित्व नहीं होगा :

कदवु+तिऱन्ददु=कदवु तिऱन्ददु। नालु+पेर्=नालु पेर्।

12 कुछ संख्यावाचक शब्दों के आगे परुष का द्वित्व नहीं होगा :

ऑन्ऱु+कॉडु=ऑन्ऱु कॉडु। ऑरु+काशु=ऑरु काशु।

इरण्डु+शिङ्गम्=इरण्डु शिङ्गम्। इरु+शीर्=इरु शीर्।

मून्ऱु+किळि=मून्ऱु किळि। नान्गु+काल्=नान्गु काल्।

ऐन्दु+तलै=ऐन्दु तलै। आऱु+शेवल्=आऱु शेवल्।

एळु+कडल्=एळु कडल्। ऑन्बदु+पळम्=ऑन्बदु पळम्।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

13 वह, यह (कर्तावाचक) निश्चयार्थक सर्वनामों के आगे :
अदु+शिऱिदु=अदु शिऱिदु। इदु+पॅरिदु=इदु पॅरिदु।

4 (ग) अन्य स्थल जहाँ द्वित्व नहीं होगा :

1 'अॅतु', 'एतु', 'यातु' क्या एकवचन; 'अॅवै', 'यावै' क्या बहुवचन प्रश्नवाचक सर्वनामों के आगे :
अॅदु+तङ्गिऱ्ऱु ?=अॅदु तङ्गिऱ्ऱु ? एदु+पै ?=एदु पै ?
यादु+शॅय्दाय् ?=यादु शॅय्दाय् ? अॅवै+शॅन्ऱऩ ?=अॅवै शॅन्ऱऩ ?
यावै+कण्डऩ ?=यावै कण्डऩ ?

2 'अव्वळवु' (उतना), 'इव्वळवु' (इतना), 'अॅव्वळव' (कितना) —इन शब्दों के आगे :
अव्वळवु+पॉरुळ्=अव्वळवु पॉरुळ्।
इव्वळवु+कालम्=इव्वळवु कालम्।
अॅव्वळवु+शुरुक्कम्=अॅव्वळवु शुरुक्कम् ?

3 अत्तऩै (उतना), इत्तऩै (इतना), अॅत्तऩै (कितना) —इन शब्दों के आगे :
अत्तऩै+काक्कै=अत्तऩै काक्कै।
इत्तऩै+शॅल्वम्=इत्तऩै शॅल्वम्।
अॅत्तऩै+पॅरिदु !=अॅत्तऩै पॅरिदु !

4 पटि (ऐसा) के प्रत्यय के बाद :
तॅरिमुम्बडि+कूऱिऩान्=तॅरिमुम्बडि कूऱिऩान्।
उवक्कुम्बडि+शिऱन्दान्=उवक्कुम्बडि शिऱन्दान्।
काणुम्बडि+तोन्ऱिऩान्=काणुम्बडि तोन्ऱिऩान्।
महिऴुम्बडि+पेशिऩान्=महिऴुम्बडि पेशिऩान्।

5 'शिल', 'पल' (कुछ) :
शिल+कऱ्कळ्=शिल कऱ्कळ्। पल+शॉऱ्कळ्=पल शॉऱ्कळ्।
शिल+तडैहळ्=शिल तडैहळ्। पल+पयिऱ्हळ्=पल पयिऱ्हळ्।

6 आ, ओ, ए, या —इन प्रश्नसूचक शब्दों के आगे :
अवऩा+शॅन्ऱान् ?=अवऩा शॅन्ऱान् ?
अवऩो+कण्डान् ?=अवऩो कण्डान् ?
यारे+शॅय्दार् ?=यारे शॅय्दार् ?
या+कऱिऩाय्=या कूऱिऩाय् ?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

7 निश्चयार्थक 'ए'कार-युक्त शब्दों के आगे :
इवऩे+शॅय्दवऩ् ! = इवऩे शॅय्दवऩ् !

5 उटम्पटु मॅय् (मिलानेवाला व्यंजन)— पास-पास स्वर ही आएँ तो उन्हें मिलाने के लिए य और व के व्यंजनों का आगम होता है :

'य्' आया है :—
मणि+अऴहिदु=मणियऴहिदु
ती+ॲऴुन्ददु=तीयॅऴुन्ददु
कै+इदु=कैयिदु
अवऩे+अऴहऩ्=अवऩेयऴहऩ्

'व्' का आगम हुआ है :—
विळ+अऴहिदु=विळवऴहिदु
पला+अऴहिदु=पलावऴहिदु
कडु+अऴहिदु=कडुवऴहिदु
पू+अऴहिदु=पूवऴहिदु
नॉ+अऴहिदु=नॉव्वऴहिदु
को+अऴहिदु=कोवऴहिदु

6 प्रश्नवाचक या निश्चयवाचक शब्दों (सर्वनामों) का मेल :
(कौन, क्या) ॲ+अणि=ॲव्वणि; ॲ+याऩै=ॲव् याऩै।
(उस) अ+अणि=अव्वणि; अ+याऩै=अव् याऩै।
यहाँ अपर शब्द का आरम्भाक्षर य या व है। तब हलन्त व का आगम हुआ है। य को छोड़ अन्य व्यंजन आएँ तो उस-उस व्यंजन का द्वित्व हो जाता है। [पहले (10) में आया है।]

7 ह्रस्व उ का मेल— नाकु+अरिदु=नाकरिदु— ह्रस्व उ का लोप हो गया और क्+अ मिलकर क हो गया। अपर शब्द यकारारम्भ हो तो ह्रस्व उ ह्रस्व इ बन जाता है :
नाकु+यातु=नाकियातु।
कुछ स्थानों में ह्रस्व उ के बाद 'ऐ' का आगम होता है। उदा :
पण्टु+कालम्=पण्टैक्कालम्। इऩ्ऱु+कूलि=इऱ्ऱैक्कूलि।

8 गुणी नामों का मेल— अधिकांश गुणवाचक शब्द (संज्ञाएँ) 'मै' में अन्त होते हैं। उनको लेकर गुणी का समस्त शब्द जब बनते हैं, तो समास निम्नलिखित प्रकार से बनते हैं :
उटैमै+अऩ्=उटैयऩ्—मै का लोप।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow.

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करुमै+अत्=करियत्—मै का लोप और उ का इ में विकार।
पचुमै+तार्=पैन्तार्—मै का लोप; चु का विकार; त् का न् में विकार।

9 व्यंजनान्त शब्दों की सन्धि— पूर्व शब्द व्यंजनान्त हो और अपर शब्द स्वरान्त तो पहले के व्यंजन से यह स्वर संयुक्त हो जाता है :
उदा : नेरम्+इल्लै=नेरमिल्लै। पाल्+आटु=पालाटु।

10 केवल एक ह्रस्व अक्षर और हलन्त के बने शब्दों के आगे स्वरारम्भ शब्द आएँ, तो निम्नलिखित विकार होता है :
मण्+अरितु=मण्णरितु। पॊन्+अरितु=पॊन्नरितु।

11 'म'कारान्त शब्दों की संधि— इसमें पहले 'म्' का लोप हो जाता है; फिर स्वरान्त बनकर तत्संबंधी विधियों के अनुसार परिवर्तन पाता है। उदा :

1 मरम्+अडि=मरवडि (म् का लोप; मिलानेवाला व्यंजन का आगम।)

2 मरम्+कोडु=मरक्कोडु (म् का लोप+क का द्वित्व)

3 मरम्+वेर्=मरवेर् (म् का लोप; फिर केवल संयोग : विकार नहीं।)
मरम्+नार्=मरनार्

4 (अ) उण्णुम्+चोऱु=उण्णुञ्जोऱु (म् का ञ् में बदलना।)
(आ) अहम्+चॆवि=अञ्जॆवि—म् का लोप म् का च वर्ग के कोमल ञ् में परिवर्तन।
अहम्+कै=अङ्गै— म् का लोप; म् का क वर्ग के कोमल ग् में परिवर्तन।

12 ण, न की समास-संधि विधि :

1 शिरु कण्+कळिऱु=शिऱु कट्कळिऱु— ण् का ट् में परिवर्तन
पॊन्+तट्टु=पॊऱ्ऱट्टु— न् का ऱ् में परिवर्तन

2 मण्+ञाट्चि=मण्ञाट्चि
पॊन्+नीट्चि=पॊन्नीट्चि
मण्+वन्मै=मण्वन्मै
पॊन्+याप्पु=पॊन्याप्पु
विभक्ति-समास है। इसमें केवल संयोग यानी विना परिवर्तन के मेल हो जाता है।

3 मण्+कटितु=मण्कटितु इतर-समास है— परुषगण, (अनुनासिक)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मण्+ञान्ऱ्तु=मण्ञान्ऱ्तु
मण्+याप्पु=मण्याप्पु
पॊन्+कटितु=पॊन्कटितु
पॊन्+ञान्ऱ्तु=पॊन्ञान्ऱ्तु
पॊन्+याप्पु=पॊन्याप्पु

कोमल गण और मद्धिम गण —तोनों के व्यंजनों के साथ स्वाभाविक मेल या संयोग हो जाता है।

13 ल, ळकारान्त शब्दों की विधि :

1 कल्+कुऱै=कऱ्कुऱै
मुळ्+कुऱै=मुट्कुऱै

विभक्ति-समास है-- ल ऱ में और ळ ट में बदल गया।

2 कल्+कुऱितु=कल् कुऱितु या कऱ्कुऱितु
मुळ्+कुऱितु=मुट् कुऱितु--या मुट्कुऱितु

इतर समास है विकल्प है।

3 कल्+ञॆरिन्ततु=कन् ञॆरिन्ततु
मुळ्+ञॆरिन्ततु=मुण् ञॆरिन्ततु
कल्+ञॆरि=कन् ञॆरि
मुळ्+ञॆरि=मुण् ञॆरि

इतर समास है- कोमल वर्ण के सामने विकार पाता है। विभक्ति-समास है, यहाँ भी ल न में और ळ ण में बदल जाता है।

4 कल्+यातु=कल् यातु
मुळ्+यातु=मुळ् यातु
कल्+याप्पु=कल् याप्पु
मुळ्+याप्पु=मुळ् याप्पु

मद्धिम गण के अक्षर के सामने दोनों तरह के समासों में अपरिवर्तन के स्वाभाविक संयोग होता है।

14 न, ल, ण के आगे त, न के सम्बन्ध में :

1 पॊन्+तीतु=पॊन्ऱीतु
कल्+तीतु=कऱ्ऱीतु

न, ल के आगे का त ऱ में बदल जाता है।

2 पॊन्+नन्ऱु=पॊन्नन्ऱु
कल्+नन्ऱु=कन्नन्ऱु

न न में बदल जाता है।

3 मण्+तीतु=मण्टीतु
मुळ्+तीतु=मुट्टीतु

त ट में बदलता है।

4 मण्+नन्ऱु=मण्णन्ऱु
मुळ्+नन्ऱु=मुण्णन्ऱु

न ण में बदलता है।

15 य, र और ऴकारान्त शब्दों के सम्बन्ध में :

1 वेय्+कटितु=वेय्कटितु
वेर्+कटितु=वेर्कटितु
वीऴ्+कटितु=वीऴ् कटितु

इतर समास है— अपरिवर्तित मेल है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

2 मॅय्+कीर्त्ति=मॅय्क्कीर्त्ति इतर समास है।
कार्+परुवम्=कार्प्परुवम् क, प आदि का द्वित्व होता है।
पूळ्+परवै=पूळ्प्परवै

3 नाय्+काल्=नाय्क्काल् विभक्ति-समास है। परुष अक्षर
तेर्+काल्=तेर्क्काल् का द्वित्व होता है।
पूळ्+काल्=पूळ्क्काल्

4 वेय्+कुळल्=वेयङ्गुळल्, वेय्क्कुळल् विभक्ति-समास है।
आर्+कोटु=आरङ्गोडु, आर्क्कोटु विकल्प है।

अब तक सन्धि के विविध रूपों का परिचय दिया गया है। उद्देश्य यही है कि जहाँ समस्त शब्द दिये गये हैं, वहाँ मूल शब्दों की परख हो जाय। पर इसका कितना उपयोग हुआ या होता है, वह तब तक हमें मालूम नहीं हो सकता जब तक कोई पाठक कम्ब रामायण के इस अनुवाद के द्वारा कम्बन को ही नहीं 'तमिळ' भाषा को समझने का प्रयास न करे और अपना अनुभव न बतलाए।

आशा है कि शीघ्र ही ऐसे एक नहीं, अनेक जिज्ञासु पाठक हिन्दी-ज्ञाता तमिळप्रेमी निकल आएँगे।

तब ये देखेंगे कि और भी सहायता की आवश्यकता पड़ती है। प्रयत्न करने पर वह भी उन्हें मिल जाएगा।

ति० शेषाद्रि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

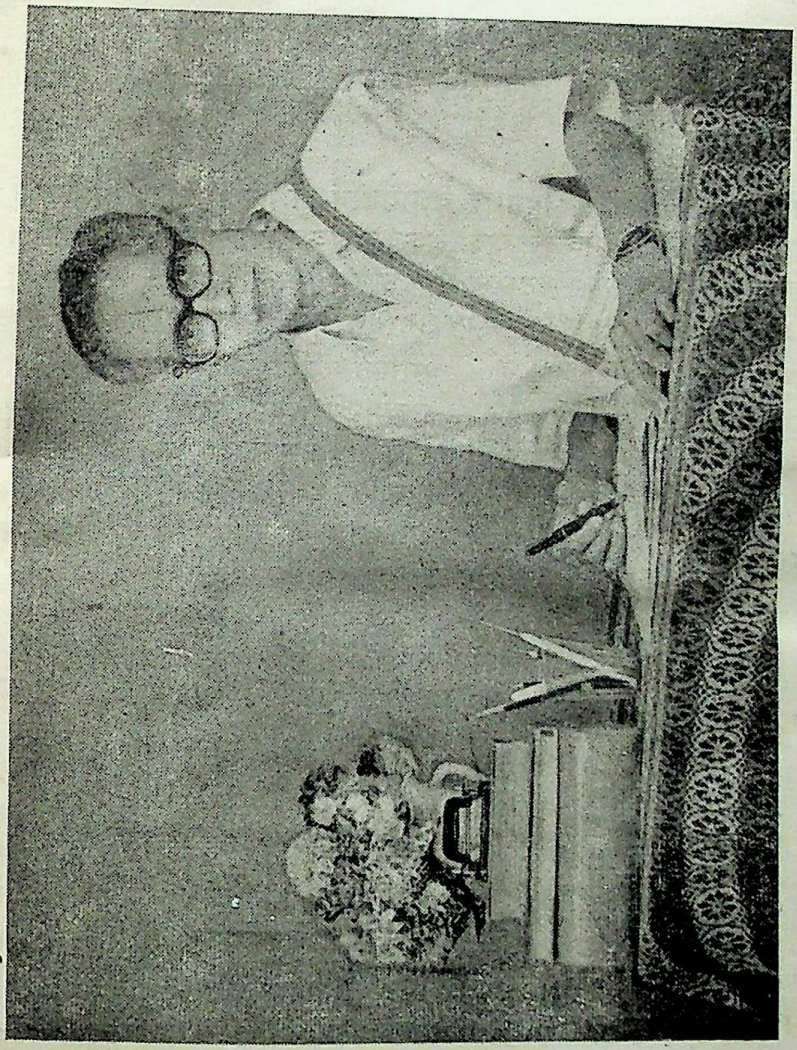

सानुवाद लिप्यन्तरणकार—
आचार्य श्री ति० शेषाद्रि, एम० ए०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रकाशकीय प्रस्तावना

अमर भारती सलिल-मञ्जु की, 'तमिळ' सुपावन धारा।
पहन नागरी-पट उसने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

अचलाद्रि चलायमान

शेषाद्रि के उपक्रम से हिमाद्रि चलायमान हो गये। अचलायतन में ही सीमित न रहकर हिमञ्चल अब अञ्चल-अञ्चल की सैर करने लगे। तमिळ रूपाम्बरा ने नागरी पटम्बर भी धारण कर लिया। तमिळ का प्राचीन और विशाल महाकाव्य 'कम्बरामायण' अब केवल तमिळ-जन तक सीमित नहीं है। लेखन और उच्चारण, दोनों पद्धतियों पर उसका नागरी लिप्यन्तरण और राष्ट्रभाषा हिन्दी में सरलानुवाद, इसका अधिकांश प्रकाशित होकर अब अखिल राष्ट्र की वस्तु बन चुकी है।

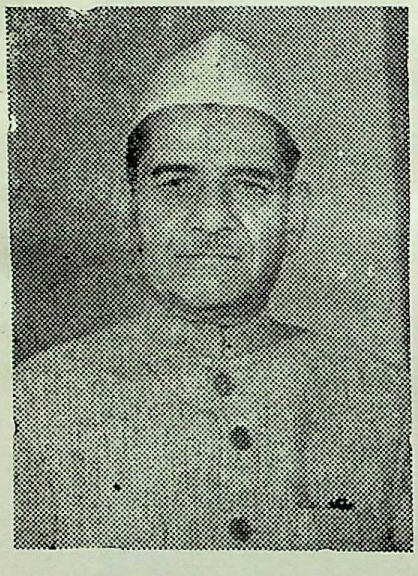

पृष्ठभूमि

अभी कल की बात है, जब आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस भगीरथ-कार्य को हाथ में लिया। और प्रतिकूल स्वास्थ्य में भी लगभग ५००० पृष्ठ का यह वृहत् संस्करण सम्पूर्णप्राय है। वर्ष १९८० के आरम्भ में कम्ब रामायण का बालकाण्ड, ६६० पृष्ठों में छपकर, राष्ट्र के सम्मुख अवतीर्ण हुआ था। वर्ष-समाप्ति से पहले ही अयोध्या-अरण्यकाण्ड की दूसरी जिल्द १०२४ पृष्ठों में छपकर तैयार हुई। सन् ८१ के आरम्भ में ही किष्किन्धा-सुन्दर की तीसरी वृहद् जिल्द १०१६ पृष्ठों में प्रकाशित हो गयी और युद्धकाण्ड तीव्रगति में यन्त्रस्थ है। इस आशातीत उपलब्धि के लिए भगवति वाणी को हम पुनः और बारम्बार नमन करते हैं। तमिळ की अलौकिक लिपि एवं भाषा, और उसके प्राचीन महाकाव्य कम्ब रामायण के सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण की गढ़ाई-जड़ाई कितनी जटिल है, यह पाठकों से अब ओझल नहीं। फिर भी, विद्वान् अनुवादक का अथक परिश्रम और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ट्रस्ट के विद्वानों एवं शिल्पी कलाकारों का श्रम एवं ट्रस्ट के पवित्र कार्य के प्रति उनकी लगन और समर्पित मनोवृत्ति —इस बल पर हम इस त्वरा गति से कार्य को सम्पन्न करने में सफल हो सके हैं। इसलिए यह चरितार्थ है कि श्री शेषाद्रि के उपक्रम से हिमाद्रि चलायमान हो गये।

बालकाण्ड के प्रकाशकीय का सार

लिपि के माध्यम से भाषाई सेतुबन्धन का महत् उद्देश्य; १९४७ ई० से अकिञ्चन् की साधना; १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना; तब से अब तक सभी भारतीय भाषाओं के अनेक सानुवाद लिप्यन्तरणों की सम्पूर्ति; विदेशी भाषाओं के नागरी लिप्यन्तरण पर भी काम आरम्भ; नागरी लिपि में अप्राप्य अन्य भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों (स्वर-व्यञ्जनों) के सिर्जन से राष्ट्रलिपि का शृंगार; विशेष रूप से तमिळ लिपि की जटिलता; हिन्दी रूपान्तरकार वयोवृद्ध किन्तु अतिकर्मठ विद्वान् आचार्य ति० शेषाद्रि का हमारे पुनीत उद्देश्य की पूर्ति में योगदान —'बालकाण्ड' की भूमिका में इन सबकी चर्चा है। तमिळ ही नहीं, विश्व की सभी लिपियों और भाषाओं के पीछे, देर-सबेर, एक दिन एक मूलोद्गम के मत की ओर संकेत भी किया गया है।

बालकाण्ड में विद्वानों के प्राक्कथन

मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० एस्० शंकर राजू नायडू; कम्बन्चरण-रेणु श्री सा० गणेशन्; तमिळनाडु के चीफ़ जस्टिस् श्री एम्० एम्० स्माइल; जस्टिस श्री महाराजन; स्व० श्री० के० सन्थानम् आदि के प्राक्कथन; और सर्वोपरि, आरम्भ में ही श्रीस्वामी चिन्मयानन्दजी महाराज का सोल्लास आशीर्वाद —यह सब बालकाण्ड में अक्षरशः मुद्रित हैं।

बालकाण्ड पर प्रतिक्रिया

जनता का उद्घोष जनार्दन का उद्घोष है। आवाज़ए ख़ल्क़, नक़्क़ारए ख़ुदा ! चारों ओर से इस प्रयास को प्रशंसा प्राप्त हुई। उत्तर-दक्षिण, हिन्दी-अहिन्दी, ये भ्रान्तियाँ उड़ते शुष्क-श्वेत बादलों के समान विलुप्त हो रही हैं। विशेष रूप से तमिळनाडु में ही, ग्रन्थ और ग्रन्थकार एवं ट्रस्ट के आजीवन न्यासी आचार्य ति० शेषाद्रि का स्थान-स्थान पर स्वागत हुआ। एक स्थल पर, उस समय के महामहिम राज्यपाल श्री प्रभुदास बी० पटवारी द्वारा विमोचन; तमिळनाडु के मूर्धन्य पत्र-पत्रिकाओं में न केवल 'कम्ब', वरन् सभी भाषाओं पर ट्रस्ट के कार्यों की सराहना —ऐसा हुआ जन-मानस में आलोडन !

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अयोध्या-अरण्यकाण्ड

श्री प्रभुदास बी० पटवारी, तथा दक्षिण में हिन्दी और हिन्दी-प्रचारकों के गांधीयुगीन आदिम प्रवर्तक बिहारनिवासी श्रीअवधनन्दन ने इस महत् कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के प्रमुख राष्ट्रभाषा-सेवी श्री शौरिराजन ने एक लम्बी भूमिका में "उत्तरं यत् समुद्रस्य, हिमवद्-दक्षिणम् च यत्। वर्षं तत् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा ॥" का स्मरण दिलाकर राष्ट्रीय एकात्मीयता की छवि को निखारा है। गांधीयुग से अद्यावधि निरन्तर राष्ट्रसेवी तमिळनाडु के जाने-माने महापुरुष श्री० ना० म० र० सुब्बरामन ने तो प्रस्तुत भाषाई-सेतुबन्धन पर अपने वक्तव्य के साथ-साथ ट्रस्ट के निर्माणाधीन 'भुवन वाणी मन्दिर' के लिए एक हज़ार रुपया दान-स्वरूप अर्पण किया। एक्सप्रेस परिवार की तमिळनाडु से प्रकाशित होनेवाली क्षेत्रव्यापी पत्रिका 'दिनमणि कदिर', 'दिनमणि दैनिक', सर्वोदय पत्र 'ग्राम-राज्यम्' आदि ने बड़ी भावुकता के साथ 'भुवन वाणी मंदिर' के स्वरूप की चर्चा की है। अरण्य-अयोध्याकाण्ड की भूमिका में पृष्ठ ३-४ (द्वितीय) पर ये संस्तुतियाँ अवलोकनीय हैं।

किष्किन्धा-सुन्दरकाण्ड

नवप्रकाशित इस खण्ड में, विद्वान् अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार आचार्य ति० शेषाद्रि के अभिनन्दन का समग्र वर्णन पृष्ठ ९-११ पर विद्यमान है। कम्बन के समाधिस्थल पर प्रत्येक वर्ष मनायी जानेवाली कम्ब जयन्ती के अवसर पर 'भुवन वाणी ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित कम्ब रामायण के नागरी संस्करण का समादर और चर्चा दक्षिणाञ्चल का विषय बनी।

इस सुअवसर पर मद्रास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्राचार्य डॉ० सु० शंकर राजू नायडू ने हिन्दी संस्करण की प्रशंसा करते हुए हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में कहा है कि "हिन्दी अपनी वर्णमाला, विचित्र ध्वनियों, ने–का–के–की आदि विधियों के कारण जटिल लगती है और उस पर अधिकार पाना उतना सुलभ नहीं"।

हिन्दी के पक्षधरों को उनके कथन पर ग़ौर करना चाहिए। डॉ० शंकर नायडू आरम्भ से ही हिन्दी भाषा और हमारे कार्य के प्रशंसक हैं। उन पर हिन्दी-विरोधी होने के आरोप की गुंजाइश नहीं। वे हिन्दी के विद्वान् भी हैं। हमको समझना चाहिए कि हिन्दी-जैसी सरल भाषा भी, नवीन और अनभ्यस्त होने के कारण, अहिन्दीभाषी को अटपटी और कठिन प्रतीत होती है। यदि हिन्दीभाषी पर तमिळ-जैसी जटिल भाषा का भार आ पड़े तो उनको और अधिक कठिनाई प्रतीत होगी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इसलिए अहिन्दीभाषियों की कठिनाई के प्रति हमें सहिष्णुता और उदारता से काम लेना चाहिए।

उसी प्रकार तमिळभाषियों से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि हिन्दी की वर्णमाला तो कठिन नहीं, वरन् उनकी सहायक है। तमिळ में, वे एक ही अक्षर लिखकर स्थान-भेद से कई ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। यह जटिलता नागरी लिपि में स्वतः दूर हो जाती है, जिसके फलस्वरूप तमिळभाषी और हिन्दीभाषी को परस्पर एक-दूसरे की भाषा का लिखना-पढ़ना सुकर हो जाता है। इसी सुविधा के लिए किसी समय तमिळ के लिबास में 'ग्रन्थ लिपि' की रचना हुई थी, जिसको कालान्तर में चढ़ा-ऊपरी ने निगल लिया। अन्यथा आज के युग में वह राष्ट्र की भाषा-समस्या में अत्यन्त सहायक सिद्ध होती।

अनुवादक की अवतरणिका

आचार्य ति० शेषाद्रि ने 'कम्ब रामायण' के प्रकाशित होनेवाले सभी (लगभग पाँच) खण्डों में एक धारावाहिक अवतरणिका लिखने की धारणा बनाई है। अवतरणिका, न केवल सम्बन्धित ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार, वरन् तमिळभाषा और तमिळकाव्य पर, सब मिलकर एक स्वयं-शिक्षिका के रूप में नागरी एवं हिन्दी के पाठकों तथा हिन्दी जाननेवाले तमिळ-भाषियों का ज्ञानवर्द्धन करती रहेगी। प्रथम दो जिल्दों के तारतम्य में, प्रस्तुत खण्ड में भी अनुवादक की चल रही अवतरणिका में, सन्धि-समास के फलस्वरूप उच्चारण-वैभिन्न्य का विश्लेषण दिया गया है।

महर्षि कम्बर्

ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर ग्रन्थकार का नाम मैंने 'महर्षि कम्बर्' दिया है। कई शुभचिन्तकों को कम्बर् के लिए 'महर्षि' शब्द उपयुक्त नहीं प्रतीत हुआ। "कम्बर् विवाहित गृहस्थ था, कम्बर् के वंश-परिवार पर विपरीत किंवदन्तियाँ भी हैं, आदि-आदि।" मेरा नम्र निवेदन है कि ऋषि-महर्षि प्रायः सब पुत्र-कलत्र वाले हुए हैं। महर्षि होने के लिए अविवाहित होगा, ऐसा कोई विधान नहीं है। रहा लोक-आक्षेप, तो उस त्रास से गोस्वामी तुलसीदास, सन्त एकनाथ, सन्त ज्ञानेश्वर जैसे भी नहीं बच पाये। देवभाषा संस्कृत के अतिरिक्त, एक देशज भाषा 'तमिळ' में रामचरित की रचना! यही क्या कम अपराध था कम्बर् का। शुद्धाशुद्ध का तथ्य तो अतीत के अन्तराल में है। हमारे सामने तो प्रेरणा-स्रोत की महत्ता प्रधान है। नागरी लिपि की सार्वभौमिकता का उद्घोष करनेवाले जस्टिस शारदा-चरण मित्र मंत्र-द्रष्टा ऋषि हैं। 'वंदेमातरम्' मंत्र के मूलस्रोत बंकिम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऋषि कहे जाते हैं। 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का शंख-नाद करनेवाले तिलक, 'भगवान्' पदवी से प्रख्यात हुए।

कम्बर्-काव्य को, विद्वान् १२०० वर्ष पूर्व तक ले जाते हैं। तब से तमिळ का यह जीवन्त अद्भुत महाकाव्य, जनता और विद्वानों, सभी में शीर्षस्थ सम्मान-प्राप्त है। और आज १२०० वर्षों के बाद, वह नागरी लिपि का नव-कलेवर धारण कर, न केवल अखिल राष्ट्र, वरन् विश्व में भारतीय वाङ्मय की छटा बिखेरने जा रहा है। हम गौरवान्वित हैं, आत्मविभोर हैं, उस युगपुरुष के लिए नत-मस्तक हैं। कम्ब को 'महर्षि' सम्बोधित करने के लिए और चाहिए क्या ? प्रत्येक खण्ड के प्रकाशन के समय वे हमारे लिए स्मरणीय हैं।

आभार-प्रदर्शन

कम्ब रामायण का १०१६ पृष्ठों का तृतीय खण्ड प्रस्तुत है। शेष दो खण्ड लगभग, २५०० पृष्ठों में, शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं। युद्धकाण्ड पूर्वार्ध और युद्धकाण्ड उत्तरार्ध। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' के निरन्तर चल रहे इस 'वाणीयज्ञ' में, देश-विदेश के विद्वान्, उदार श्रीमान्, और शासन —सभी का सहयोग प्राप्त है। हम ट्रस्ट की ओर से उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत 'सानुवाद लिप्यन्तरण' के प्रकाशन में, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की उल्लेखनीय सहायता निहित है। वर्षानुवर्ष उनसे प्राप्त सहायता के फलस्वरूप, 'रामेश्वरम् का लोकप्रख्यात सेतु' के पदचिह्नों पर चलकर, भुवन वाणी ट्रस्ट, 'भाषाई सेतु' पर ग्रन्थ रूपी शिला पर शिला जमाता चला आ रहा है। केवल आभार प्रकट करना पर्याप्त नहीं है। केन्द्रीय राजभाषा विभाग (गृहमंत्रालय) और शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को इस ग्रन्थ के प्रकाशन का पूर्ण श्रेय है। प्रतिदान में हम आश्वासन देते हैं कि नागरी लिपि और राष्ट्रभाषा के माध्यम से विश्व की भाषाओं का सेतुकरण, विश्वमञ्च पर नागरी का प्रस्थापन, और राष्ट्रभाषा के भण्डार को भरने में उत्तरोत्तर अपने कर्तव्य का पालन करते रहेंगे। यही है हमारा आभार-प्रदर्शन।

विश्ववाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी-पट, सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ–३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त

(तमिऴ) वर्णमाला का नागरी-रूपान्तर

तमिऴ के विशिष्ट व्यञ्जन 'ऴ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने, २३-६-६६ में प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ष़' रूप निर्धारित किया था।

विदित हो कि ५-६ फ़रवरी, १९८०की निदेशालय की बैठक में, जिसमें मैं भी सम्मिलित था, 'ष़' के स्थान पर 'ऴ' ही को ग्रहण किया गया।

☞ तमिऴ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की 'कम्ब रामायण बालकाण्ड' पर भूमिका पृष्ठ २३-२४ दृष्टव्य। क, च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं। तमिऴ में ए और ओ के ह्रस्व और दीर्घ स्वरों (मात्राओं) को भिन्न रूप में लिखा जाता है। नागरी लिपि में उनका रूप े ी ; ो हैं।

तमिऴ - देवनागरी वर्णमाला

அ अ क	ஆ आ का	இ इ कि	ஈ ई की
உ उ कु	ஊ ऊ कू	எ ऎ कॆ	ஏ ए के
ஐ ऐ कै	ஒ ஓ ओ को	ஓ ओ को	ஔ औ कौ
ஃ अक्			
க க	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ட	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர ர
ல ल	வ व	ழ ऴ,ळ	ள ळ
ற ऱ,ऱ	ன ऩ,ऩ	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	ஶ श	க்ஷ क्ष

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तमिऴ उच्चारण—कुछ तत्त्व

[तमिऴ के व्यञ्जनों में स्थानभेद से, लेखन तथा उच्चारण में अन्तर पड़ जाता है। नागरी लिपि के माध्यम से तमिऴ के पठन में यह एक समस्या है। कम्ब रामायण (बालकाण्ड) की भूमिका में, आचार्य ति० शेषाद्रि ने इस सम्बन्ध में पृष्ठ २२-२४ में एक विवरण दिया है। पाठकों को तमिऴ के लेखन और उच्चारण में सुविधा प्रदान करने के लिए श्री शेषाद्रि का वह विवरण 'कम्ब रामायण' के प्रत्येक खण्ड में उद्धृत कर देना समुचित होगा:—]

ध्वनि-समूह—स्वर (तमिऴ में इनको प्राणाक्षर कहते हैं।) मूल १२है।

लब्धलिपि	ह्रस्वः—अ इ उ अॅ (ए का ह्रस्व) ऑ (ओ का ह्रस्व)	—	1 मात्रा
	दीर्घः— आ ई ऊ ए ऐ ओ औ	—	2 मात्राएँ
	"आय्दम" (उपस्वर)—∴	—	½ मात्रा
अलब्धलिपि	ह्रस्व—ऐ और औ	—	1 मात्रा
	ह्रस्व—उ, ह्रस्व इ	—	½ मात्रा
	ह्रस्व—'आय्दम'	—	¼ मात्रा

नोटः— आय्दम या उपस्वर संस्कृत के विसर्ग (:) से द्योतित हो सकता है। उसका उच्चारण 'अह्क्' है। इस लिप्यंतरण में दोनों संकेतों (∴ और :) का प्रयोग पाया जायगा। पाठक ∴ पाने पर विसर्गवत् पढ़ लें और : पाने पर ∴ लिख लें।

ह्रस्व ऐ (अय् या अ) का उच्चारण कविता में आवश्यक है। इस लिप्यंतरण में बालकाण्ड भर में और अयोध्याकाण्ड के पाँच सौ पद तक मूल पदों में अ या अय् लिखा गया है। इसमें एक त्रुटि रह जाती है कि तमिऴ का सही अक्षर-प्रयोग जानने के लिए अन्वय का सहारा लेना पड़ेगा। पर कहीं-कहीं संधि-विग्रह के कारण मूल की कुछ ध्वनियों के लुप्त होने की संभावना रह जाती है। अतः बाद के पदों में ऐ कै···आदि ही लिखा जाता है। पाठक पद को ठीक तरह से पढ़ेंगे तो ध्वनि से ही समझ जायँगे कि ऐ ह्रस्व है या दीर्घ। शब्द के आरम्भ में आनेवाला ऐ दीर्घ ही रहता है। अन्य ह्रस्व-ध्वनियों के सम्बन्ध में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होगी।

व्यंजन (शरीराक्षरः) मूल १८ हैं

लब्धलिपि	वल्लॅऴुत्तु (परुष वर्ग)	क च ट त प ऱ
	मॅल्लॅऴुत्तु —कोमल या अनुनासिक वर्ग	ङ ञ ण न म ऩ
	इडैयॅऴुत्तु (मद्धिम) वर्ग	य ऱ ल व ऴ ळ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अलब्धलिपि : ह, ग, ज, ड, द, ब। ह और ग की ध्वनि 'क' द्वारा प्राप्त की जाती है। वैसे ही ज की च द्वारा; ड, ट द्वारा; द, त द्वारा और ब की प द्वारा मिल जाती है। स्थान-भेद से यह ध्वनि-योजना सिद्ध हो जाती है। बोलते समय ही ये ध्वनियाँ निकलती हैं। लेखन में ये मूल रूप में लिखी जाती हैं।

नोट—तमिऴ में महाप्राण और संयुक्ताक्षर नहीं हैं। हलन्त के बाद पूरा व्यंजन लिखने की व्यवस्था है। हलंत व्यंजन से शब्द आरम्भ नहीं होता।

अब अलग-अलग इन वर्णों का प्रयोग देखें:—

क— शब्दारम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद 'क' ही रह जाता है; जैसे— कण्डु,पाक्कु, उङ्गट्कु, कऱ्क।

दो स्वरों के बीच वह 'ह' हो जाता है; जैसे— काहम्।

ङ् के बाद 'ग' बन जाता है। उदा : चङ्कम् —शङ्गम्।

च— द्वित्व में और ऱ्, ट् के बाद च ही रहता है। उदाहरण : अच्चु, पॉऱ्चटै, वॅट्चि। अन्यत्र और शब्द के आरम्भ में भी श है। जैसे पा शम्, शदम् आदि। (अपवाद— संस्कृत के शब्दों में कभी-कभी 'स' का उच्चारण पाया जाता है; जैसे— कोसलै।

ञ्— के बाद उसे ज की ध्वनि दी जाती है; उदाहरण : मञ्चम्— मञ्जम् पढ़ा या बोला जाता है।

ट— शब्द के आरम्भ में नहीं आता। द्वित्व में ट का उच्चारण है, अन्यत्र ड; उदाहरण : पडम्, पण्डम्।

त— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और क् के बाद वह त रहता है; जैसे— तयरदन, शत्तम्, शक्ति। अन्यत्र वह 'द' की ध्वनि लेता है— शन्दम्, परदन्, मोदल्।

प— शब्द के आरम्भ में, द्वित्व में और ट्, ऱ् के बाद यह 'प' ही है। उदा : पडम्, कप्पल्, पॅट्पु, पॉऱ्पु। अन्यत्र यह 'ब' के समान ध्वनित है।

विशेष: न् आदि के बाद यह कभी-कभी प, ब दोनों से पृथक्, कुछ उनके बीच की ध्वनि निकालता है। भेद नगण्य है। बोलते-बोलते कोई अभ्यस्त हो जाता है।

न— इसका हिन्दी के दन्त्य न का ही उच्चारण है।

ऩ— यह भी दन्त्य है। पर न के स्थान से कुछ ऊपर दाँत के घर्षण से यह ध्वनि उत्पन्न होती है। इन दोनों में उच्चारण-भेद नहीं के बराबर है। पर शब्द के आरम्भ में ऩ नहीं आता। न शब्द के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मध्य में नहीं आता पर संस्कृत के तद्भव शब्दों में न के स्थान पर, शब्द-मध्य ही सही प्रयुक्त होता है। कभी-कभी संधियुक्त शब्द में आता है।

र— यह साधु रेफ़ है। हिन्दी के रेफ़ के समान है। यह शब्दारम्भ में नहीं आता। तमिळ में अ, इ या उ मिलाकर कहते हैं; जैसे— अरङ्गन्, इरामन् उरुत्तिरन्।

ऱ— यह शकट या घर्षणयुक्त रेफ़ है। यह भी शब्दारम्भ में नहीं आता। जब इसका द्वित्व होता है, तब उच्चारण कुछ ट्र के समान हो जाता है। दोनों र और ऱ मूर्धन्य ही हैं पर एक की जगह पर दूसरा लिखा नहीं जा सकता। अर्थ-भेद हो जायगा। उदाहरण : अरम्— रेती; अऱम्—धर्म।

ळ— मराठी ळ के समान है।

ऴ— यह ऱ और ऩ के समान तमिळ की विशिष्ट ध्वनि है। ष और ळ के उच्चारण स्थानों के मध्य लुंठित जीभ जाए पर स्पर्श न करे। तब यह ध्वनि निकाली जा सकती है। यह थोड़ा अभ्यास करने पर ही आ सकता है। संस्कृत के श ष स ह के लिए ग्रन्थाक्षर का ईजाद हुआ। पर वे ठेठ संस्कृत शब्दों के तत्सम प्रयोग में ही आते हैं।

विशेष ध्यानयोग्य— कहीं-कहीं इन नियमों के प्रतिकूल उदाहरण मूल पदों में मिलेंगे; जैसे— निन्पॅरुऱ् को निन्बॅरुऱ् पढ़ना चाहिए, पर निन्पॅरुऱ् पाया जायगा, तो समझना चाहिए कि यति के कारण या अर्थ पर ज़ोर देने के लिए अक्षर मूल रूप में उच्चरित हैं।

आखिर यह ध्वनि-विपर्यय प्रयास-लाघव का फल है और प्रयास-सुगमता के कारण ही बना है। अन्यथा कोई निर्धारित नहीं है। अतः इसमें कोई बड़ी गल्ती हो जाने की सम्भावना नहीं। हाँ, अभ्यस्त कानों के लिए कुछ अटपटा लगेगा। शङ्गम्, शङ्कम् से अधिक उच्चारण-सुलभ है।

कभी-कभी चरणांश या पदखण्ड (आगे देखें) शब्द नहीं रहते। दो शब्दों के (पहले पीछे के) दो अंश मिलकर चरणांश बन जाते हैं। यह तमिळ में छन्द-रचना की विशेषता है। तमिळ में संधि के कारण दो शब्द एक हो जाते हैं और छंद-रचना उसे कहीं भी खण्डित कर देती है। तब पदखण्ड को ही उच्चारण के लिए शब्दवत् मानना पड़ेगा। तब 'का' आदि का मूल उच्चारण हो जाता है।

यह सब नियम पढ़ते वक़्त जटिल लगेगा। अभ्यास से ज्ञात हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विषय-सूची

किष्किंधाकाण्ड

प्रशस्तियाँ, अनुवादक की अवतरणिका, प्रकाशकीय 1-40

ईश्वर-वन्दना 41

1 पम्पा पटल 41-60

पम्पा का वर्णन; श्रीराम का विलाप; श्रीराम की दीन स्थिति; श्रीराम का पम्पा में स्नान; रात का आगमन और श्रीराम की स्थिति; रात का वर्णन; सूर्योदय और दोनों का प्रस्थान।

2 हनुमान पटल 60-76

श्रीराम और लक्ष्मण को देखकर सुग्रीव का डरकर छिप जाना; हनुमान का आश्वासन देना; ब्रह्मचारी-वेश में हनुमान का आजमाना; श्रीराम और लक्ष्मण पर हनुमान का निर्हेतुक प्रेम; हनुमान का श्रीराम और लक्ष्मण से अपना वृत्तान्त कहना; श्रीराम का हनुमान की प्रशंसा में अपने भाई से कहना; परस्पर सम्मानवचन; हनुमान के पूछने पर श्रीलक्ष्मण का अपना वृत्तान्त कहना; हनुमान का दण्डवत् करना और पूछने पर अपना असली रूप दिखाना; हनुमान का विराट् रूप; श्रीराम का विस्मय-कथन।

3 मैत्री पटल 76-109

हनुमान का सुग्रीव के पास आकर समाचार देना; सुग्रीव-श्रीराम-मिलन; सुग्रीव का शरण जाना और श्रीराम का अभयदान; श्रीराम का आतिथ्य; हनुमान का वाली-वृत्तान्त कहना; मायावी-युद्ध; बिल में प्रवेश; सुग्रीव का राजा बनना; वाली का उससे क्रोध; सुग्रीव की बुरी स्थिति; श्रीराम का वाली पर खीझ और वादा; सुग्रीव का श्रीराम की वाली-वध-सामर्थ्य पर सन्देह; हनुमान का सुझाव।

4 सालवृक्ष पटल 110-119

सुग्रीव की सालवृक्ष-भेदन की प्रार्थना; सालवृक्ष-वर्णन; श्रीराम के धनु की टंकार; श्रीराम का अस्त्र चलाना और उसका कार्य; सुग्रीव का श्रीराम की स्तुति करना और वानरों का आनन्द।

5 दुन्दुभी पटल 119-125

श्रीराम का दुन्दुभी का अस्थिपंजर को देखना; सुग्रीव का दुन्दुभी का वृत्तान्त कहना; दुन्दुभी-वाली-संग्राम; श्रीराम की आज्ञा से श्रीलक्ष्मण का अस्थिपंजर को उछाल देना।

6 आभरण-दर्शन पटल 125-138

सुग्रीव का आभरणों का समाचार देना; श्रीराम का आभरणों को देखना और दुःखी होना; श्रीराम का होश खोना और सुग्रीव का धैर्य बँधाना; श्रीराम का होश में आना और सुग्रीव से अपना दुःख कहना; सुग्रीव का पुनः धीरज दिलाना; हनुमान का वाली-वध की आवश्यकता बताना; श्रीराम की सम्मति और सबका प्रस्थान।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

7 वालि-वध पटल 138-213

श्रीराम आदि के मार्ग व मार्गगमन का वर्णन; सुग्रीव का ललकारना; वाली का क्रुद्ध होना; वाली-तारा संवाद; वाली का लड़ने आना; श्रीराम और लक्ष्मण का वाली के शान और सुग्रीव के भ्रातृविरोध को लेकर आपस में बात करना; सुग्रीव-वाली-युद्ध; श्रीराघव का वाली पर अस्त्र चलाना; वाली का विस्मय और खीझ; वाली का अस्त्र को वक्ष से निकालना और श्रीराम का नाम देखना; वाली का अपना श्रीराम पर विश्वास झूठा हो जाने से शरम, दुःख और क्रोध का अनुभव करना; श्रीराम का वाली के समक्ष आना; वाली का श्रीराम की निन्दा करना; श्रीराम का वाली के प्रश्नों का उत्तर देना; वाली का समाधान कहना; श्रीराम का वाली की मान्यताओं का खण्डन करना; वाली का और प्रश्न करना; लक्ष्मण का उत्तर देना; वाली का ज्ञान पाना; वाली का श्रीराम की स्तुति करना और सुग्रीव को उनके अधीन सौंप देना; वाली का हनुमान की प्रशंसा करना; अंगद का वाली को देखकर विलाप करना; वाली का आश्वासन; अंगद को श्रीराम के हाथ में सौंपना; वाली की परमपदयात्रा; तारा का आना और रोना; हनुमान का तारा को महल में पहुँचाना और वाली का दाहकर्म आदि करवाना।

8 शासन-शास्त्र पटल 213-227

श्रीराम का लक्ष्मण को सुग्रीवाभिषेक की आज्ञा देना; हनुमान का सामग्री इकट्ठी कर लाना; अभिषेक; श्रीराम का सुग्रीव को शासन-शास्त्रोपदेश देना; सुग्रीव का श्रीराम को नगर में वास करने का निमन्त्रण देना और श्रीराम का अस्वीकार करना; श्रीराम का तपस्यानिमित्त प्रश्रवणपर्वत पर जाने का संकल्प; सुग्रीव का नगर में जाना; अंगद का श्रीराम की सलाह लेकर नगर जाना; हनुमान का श्रीराम की सेवा में रहने की अनुमति माँगना; श्रीराम का न मानना; सुग्रीव का शासन।

9 वर्षाकाल पटल 227-278

वर्षा का वर्णन; वर्षाकाल का प्रकृतिवर्णन; श्रीराम का विरह-दुःख; श्रीलक्ष्मण का श्रीराम को धीरज बँधाना; श्रीराम का किंचित् धैर्यावलम्बन; फिर से पिछली वर्षा का (शरद का) वर्णन; श्रीराम का विरह-विलाप; श्रीलक्ष्मण का उत्तर; शरद का अन्त और प्रकृति-वर्णन।

10 किष्किंधा पटल 278-332

श्रीराम का कोप करके लक्ष्मण को किष्किंधा भेजना; श्रीलक्ष्मण का अपना अलग मार्ग पकड़कर जाना; उनकी गति का वर्णन; उनका किष्किंधा पहुँचना; अंगद का, वानरों द्वारा लक्ष्मण का आगमन जानकर सुग्रीव के पास जाना; सुग्रीव की स्थिति का वर्णन; अंगद का सुग्रीव को जगाना और सुग्रीव का बेसुध रहना; अंगद का हनुमान के पास जाना; दोनों का तारा के पास जाना; तारा का उनको आड़े हाथों लेना; वानरों का कपाट बन्द करना; श्रीलक्ष्मण का कोप और कपाट तोड़कर अन्दर आना; तारा का स्त्रियों-सहित लक्ष्मण के रास्ते में आना; लक्ष्मण का दुःख; तारा-लक्ष्मण-संवाद; लक्ष्मण का शान्त होना और हनुमान का आना; लक्ष्मण का प्रश्न करना और हनुमान का समाधान; लक्ष्मण का कोप छोड़कर सुग्रीव का दोष बताना; हनुमान का उन्हें सुग्रीव के पास ले जाना; अंगद का सुग्रीव से लक्ष्मण के क्रोध के साथ आगमन का समाचार देना; सुग्रीव का जागकर उसी पर दोष लगाना;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अंगद का उत्तर सुनकर सुग्रीव का पछताना; किष्किंधा में श्रीलक्ष्मण का शानदार स्वागत; सुग्रीव का लक्ष्मण का स्वागत करना; दोनों का महल के अन्दर जाना; लक्ष्मण का सिंहासन पर बैठने से इनकार करना; सुग्रीव का श्रीराम के पास आना; श्रीराम का क्षेमप्रश्न; सुग्रीव का अपना अपराध मानकर पछताना; उसका हनुमान के दूतों को साथ ले आने की बात कहना; सुग्रीव और अंगद को बिदा देना।

11 सेना-संदर्शन पटल 332-347

वानर-यूथपों का आगमन; सेना का गौरव और बल; सेनापतियों का सुग्रीव को प्रणाम करना; श्रीराम से सेना-संदर्शन की प्रार्थना करना; सेना का वर्णन; श्रीराम का लक्ष्मण से सेना की बड़ाई का वर्णन करना।

12 अन्वेषण-प्रेषण पटल 347-379

श्रीराम का सुग्रीव से आगे का कार्य करने को प्रेरणा देना; सुग्रीव का हनुमान आदि वानर वीरों को दक्षिण की दिशा में जाने की आज्ञा देना; मार्ग में अन्वेषण योग्य स्थानों का वर्णन; श्रीराम का हनुमान से सीतादेवी का नख-शिख-वर्णन; अभिज्ञान-कथन; श्रीराम का मुँदरी को अभिज्ञान के रूप में देना।

13 बिल-प्रवेश-निर्गमन पटल 379-408

वानरवीरों का मार्ग-गमन; विंध्यपर्वत पर आना; नर्मदा नदी के तट पर अन्वेषण; हेमकूटपर्वत-प्रदेश पर खोजना; मरुप्रदेश पर आना; बिल-मार्ग में जाना; अँधेरी गुहा में वानरवीरों का संकट और वानरों का हनुमान से प्रार्थना करना; हनुमान का उन्हें ले जाना और स्वयंप्रभा के नगर में पहुँचना; स्वयंप्रभा का वर्णन; स्वयंप्रभा का उनसे प्रश्न करना; हनुमान का उत्तर देना; स्वयंप्रभा का अपना चरित्र सुनाना; हनुमान का अपने विराट् रूप में बिल को तोड़कर ऊपर आना; स्वयंप्रभा का देवलोक जाना।

14 मार्ग-गमन पटल 408-427

वानरवीरों का एक सर के तट पर विश्राम करना; एक असुर का आकर अंगद से टकराना; असुर का अंगद द्वारा मारा जाना; जाम्बवान का उस असुर का वृत्तान्त कहना; वानर वीरों का आगे जाना; पॅन्नॅ नदी, विदर्भ देश, दण्डक वन जाना; मुण्डकघाट पर आना; गोदावरी नदी पर आना; तोंण्डै देश में आना; उस देश का वर्णन; कावेरी नदी के तमिळ देश में आना।

15 सम्पाती पटल 427-449

वानरवीरों का दक्षिणी सागर को देखना; हेमकूट पर जो अलग गये उन वानरों का आकर इनसे मिलना; वानरों का अपनी असफलता पर दुःख प्रगट करना; अंगद का आत्महत्या पर उतारू होना; जाम्बवान का रोकना; हनुमान के संवाद में जटायु का नाम का आना; सम्पाती का वह सुनकर इनके पास आना; वानरों का डरकर भागना; हनुमान का सम्पाती से प्रश्न करना; सम्पाती का अपना और अपने भाई जटायु का वृत्तान्त कहना; हनुमान का जटायु-रावण का युद्ध के सम्बन्ध में कहना; सम्पाती का वानरों से श्रीराम का नामजप करने की प्रार्थना करना; सम्पाती के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पंखों का श्रीराम-नाम-महिमा के कारण निकल आना; वानरों का सीता के अन्वेषण का समाचार कहना; सम्पाती का सीता के स्थान का निर्देश और चला जाना।

16 महेन्द्र पटल 449-461

वानरों का आगे के कर्तव्य के सम्बन्ध में सलाह-मशविरा करना; समुद्र-तरण में सबका अपनी-अपनी बलहीनता का बयान करना; जाम्बवान का हनुमान को प्रोत्साहित करना; हनुमान का उत्साह के साथ जाने का आश्वासन देना; हनुमान का विराट् रूप में महेन्द्र पर्वत पर खड़ा हो जाना।

सुन्दरकाण्ड

1 समुद्र-संतरण पटल 463-506

ईश्वर-वन्दना; हनुमान का स्वर्ग देखना; हनुमान के पैरों से दबने पर महेन्द्र पर्वत पर हुई बातें; समुद्र-तरण आरम्भ; उसकी गति के कारण हुई बातें; हनुमान का वर्णन; मैनाक पर्वत का वर्णन; मैनाक की दावत और हनुमान का उत्तर; सुरसा का दख़ल व हनुमान का बचकर निकलना; हनुमान और अंगारतारा की टक्कर; हनुमान का प्रवालपर्वत पर कूदना; हनुमान का लंका देखकर विस्मय करना।

2 नगरान्वेषण पटल 506-609

लंका नगर का वर्णन; चन्द्रोदय का वर्णन; हनुमान का प्राचीर और द्वार को देख विस्मय करना; लंकादेवी का रूप; हनुमान और लंकादेवी की टक्कर; हारकर लंकादेवी का अपना वृत्तान्त बताना; लंका के प्रकाश का वर्णन; लंका की वीथियों में हनुमान के जाने और दृश्यों का वर्णन; हनुमान का कुम्भकर्ण को देखना; विभीषण को देखना; इन्द्रजित् को देखना; अन्य स्थानों में अन्वेषण; हनुमान का मध्य नगर की खाई का पार करना; उस नगरभाग की सुप्त-स्थिति का वर्णन; हनुमान का अन्तर्नगर पहुँचकर खोज लगाना; हनुमान का मन्दोदरी को देखना और देवी सीता के भ्रम में पड़ना और भ्रम दूर हो जाना; रावण के महल में; सुप्त रावण का वर्णन; रावण को मारने का निश्चय करना; शान्त होकर अलग जाना; हनुमान का असफलता पर दुःख; हनुमान का अशोक वन को देखना।

3 सीता-दर्शन पटल 609-677

हनुमान का अशोक वन में प्रकाश; सीताजी की दुःखी स्थिति; प्रहरी राक्षसियों को सो जाना और देवी-त्रिजटा-संवाद; त्रिजटा का अपने देखे स्वप्न का विवरण देना; राक्षसियों का जाग उठना और देवी को त्रास देना; सीताजी का दुःख और हनुमान का आगमन और देवी के दर्शन; देवी की पवित्रता देखकर हनुमान के विस्मय-वचन; अशोक वन में रावण का ठाट-बाट और परिवार के साथ आगमन; सीता का डरना और हनुमान का उन दोनों को देखना; रावण की सीता से प्रेमयाचना; सीतादेवी का कटु उत्तर और रावण का क्रोध; हनुमान का गुस्सा; रावण का सीता का उत्तर देना और धमकी देकर चला जाना; राक्षसियों का सीता को दिक करना और त्रिजटा का निवारण।

4 रूप-दर्शन पटल 677-727

हनुमान का राक्षसियों को सुला देना; सीता के दुःख के वचन और प्राणत्याग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

का निश्चय और माधवी झाड़ के पास जाना; हनुमान का प्रगट होकर अपने को रामदूत बताना; सीता का पहले संशय करके बाद को पूछना; हनुमान का अपना वृत्तान्त कहना; सीतादेवी के कहने पर श्रीराम के रूप का वर्णन; हनुमान द्वारा हनुमान के प्रज्ञान-वचनों का उल्लेख और अंगुलीयक प्रदानम्; मुँदरी पाकर सीतादेवी के वचन और उनकी चेष्टाएँ; सीताजी का हनुमान को बधाई देना, संस्तुति करना और आशीर्वाद देना; हनुमान का श्रीराम का वृत्तान्त वर्णन करना; श्रीराम का दुःख सुनकर देवी की सहानुभूति; सीता का हनुमान से सागर-तरण के सम्बन्ध में सफ़ाई के प्रश्न और हनुमान के उत्तर; हनुमान का विश्वरूप दिखाना; सीताजी को उसके छिपाने की प्रार्थना; हनुमान का अपना सामान्य रूप अपनाना; सीताजी का बधाई और आशीर्वाद के वचन; हनुमान का वानर-सेना की बड़ाई का वर्णन करना; हनुमान का बिदाई से पहले एक सुझाव पेश करना।

5 चूडामणि पटल 728-758

हनुमान का देवी को खुद ले जाने का प्रस्ताव; सीता का अस्वीकार करना; हनुमान का सीताजी से सन्देश माँगना; सीताजी का श्रीराम को सन्देश जिसमें संशय, दुःख आदि मिश्रित थे; हनुमान का सीता को ढाढ़स बँधाना; सीताजी का सँभलना; सीताजी का चूडामणि देना; हनुमान का उसे आदर के साथ ग्रहण करना।

6 (अशोक) वन-विध्वंस पटल 758-781

हनुमान का अपने आप विचार करना; वन को नष्ट करना; नष्ट करने के प्रकारों का वर्णन; चन्द्र का छिप जाना और हनुमान के कार्य से सारे लोक में प्रकाश का फैलना; पशु-पक्षी का हाल; सूर्योदय पर राक्षसियों का हनुमान के सम्बन्ध में पूछना और सीता का टाल देना; हनुमान द्वारा चैत्य का नाश; ऋतुदेवों की रावण से शिकायत करना।

7 किंकर-वध पटल 781-810

रावण का ताना देना और ऋतुदेवों का कथन; हनुमान का नर्दन; रावण की आज्ञा और किंकरों का युद्ध के लिए प्रस्थान; किंकरों का घेर आना और हनुमान की स्थिति; किंकर-हनुमान-युद्ध; हनुमान की जीत और देवों का आनन्द; पहरेदारों का रावण को ख़बर देना।

8 जम्बुमालि-वध पटल 810-833

रावण का गुस्सा और जम्बुमाली को आज्ञा सुनाना; जम्बुमाली का अपनी सेनाओं के साथ युद्ध के लिए प्रस्थान; सेना देखकर हनुमान का उत्साह और तत्प्रेरित चेष्टाएँ; जम्बुमाली-हनुमान-युद्ध; जम्बुमाली का हनन; रावण का समाचार पाना और उसकी स्थिति का वर्णन।

9 पंच सेनापति-वध पटल 833-858

पंचसेनापतियों की प्रार्थना; सेनाओं का प्रस्थान; हनुमान सेनाओं को देखता है; हनुमान का विराट् रूप लेकर राक्षसों से लड़ना; सेना का नाश; पंच सेनापति-युद्ध; उनका नाश और रावण का समाचार पाना।

10 अक्षकुमार-वध पटल 859-883

अक्षकुमार का युद्ध में जाने की अनुमति माँगना; उसकी सेना का कूच;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हनुमान का अक्षकुमार को देखकर अनुमान करना; अक्षकुमार का हनुमान को देखकर हल्का समझना और सारथी की चेतावनी; अक्षकुमार का संकल्प; सेना के साथ युद्ध; अक्षकुमार का युद्ध और वध; पश्चात् युद्धभूमि की घटनाएँ; अक्षकुमार की मृत्यु का समाचार महल में जाता है।

11 पाश-बन्धन पटल 883-910

इन्द्रजित् का रोष; उसकी सेना की विपुलता का वर्णन; उसका रावण से निवेदन; उसकी सेना का कूच; उसका युद्धभूमि देखकर दुःखी होना; हनुमान-का इन्द्रजित् को देखकर विस्मय करना; सेनाओं के साथ हनुमान का युद्ध; हनुमान-इन्द्रजित्-युद्ध; इन्द्रजित् द्वारा ब्रह्मास्त्र-प्रयोग; मारुति की मूर्च्छा और राक्षसों का मोद।

12 बन्धन-मुक्ति पटल 910-968

हनुमान का बँध जाना और राक्षसों का आनन्द-कोलाहल; हनुमान को देखकर कुछ सहानुभूति करते हैं; हनुमान के विचार; हनुमान के बन्धन का समाचार रावण को मिलता है; हनुमान की बात सुनकर देवी सीता का व्यग्र होना; हनुमान का रावण के महल में लाया जाना; दरबार में रावण का वर्णन; रावण को देखकर हनुमान का रोष से भर जाना; हनुमान का रुककर विचार करना; इन्द्रजित् का रावण को हनुमान का परिचय दिलाना; रावण का प्रश्न करना; हनुमान का उत्तर देना; रावण का फिर से प्रश्न करना; हनुमान का उत्तर देना; फिर से रावण के प्रश्न और हनुमान के उत्तर; रावण का हनुमान की पूँछ पर आग लगाने की आज्ञा; ब्रह्मास्त्र का प्रभाव छूट जाता है और हनुमान रस्सियों से बाँधा जाता है; हनुमान के आन्तरिक विचार; पूँछ पर आग का लगाया जाना; समाचार सुनकर सीता का दुःख करना; उनकी अग्निदेव से प्रार्थना और उसके प्रभाव; हनुमान की स्थिति और गति।

13 लंका-दहन पटल 968-991

आग में मकानों की स्थिति का वर्णन; उपवनों का जलना; आकाशलोकों का जलना; घोड़ों का जलना; राक्षस-राक्षसियों की दुर्गति; राक्षसों का समुद्र में गिरना; हथियारों का पिघलना; हाथियों का नाश; पक्षियों का नाश; रावण के महल में आग का लग जाना और रावण आदि का पलायन; रावण का दहन का कारण पूछना और जानकर क्रोध करना; राक्षसों का हनुमान को खोज देखना; हनुमान का राक्षसों को मारकर बाहर चला जाना; सीताजी के स्थान पर आँच का न आना; हनुमान का सीताजी से मिलकर बिदा लेना और प्रस्थान।

14 श्रीचरण-वन्दना पटल 991-1015

हनुमान का लंका से लौटना; हनुमान को लौटा देखकर अंगदादि वानरों का आनन्द अनुभव करना; हनुमान का देवी का वृत्तान्त कहना; हनुमान को पुरस्सर करके सबका प्रस्थान; श्रीराम की दुःखमग्नस्थिति का वर्णन; हनुमान का आगमन; उसके कृत्य से श्रीराम का शुभसमाचार अनुमान कर लेना; हनुमान का सीता-वृत्तान्त-कथन; हनुमान का अपने कार्यों का विवरण देना; हनुमान का चूडामणि देना और श्रीराम पर उसका प्रभाव; सुग्रीव का धीरज देना और श्रीरामका शान्त होना; वानर-सेना का कूच।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

किष्किन्दा काण्डम्

कडवुळ् वाळ्त्तु (ईश्वर वन्दना)

❀ मून्ऱुरु वॅनक्कुण मुम्मै यामुदल्, तोन्ऱुरु वॅवैयुमम् मुदलैच् चॉल्लुदऱ्
केन्ऱुरु वमैन्दवु मिडैयि निन्ऱवुम्, शान्ऱुरु वुणर्वितुक् कुवन्द दायिनान् 1

मुतल्–परमात्मा; मुम्मै कुणम् आम्–तीन गुणों के; मून्ऱु उरु अॅन–तीन देव हैं, जैसे; तोन्ऱु उरु अॅवैयुम्–व्यक्त सभी रूप; अ मुतलै चॉल्लुतऱ्कु–उस परब्रह्म को कहने के लिए; एन्ऱु उरु अमैन्तवुम्–योग्य रूप जिनके हैं, वे; इटैयिल् निन्ऱवुम्–मध्य में स्थित जो हैं, वे; चान्ऱु उरु–उन सबके साक्ष्य (श्रीराम) उणर्वितुक्कु–हमारी अनुभूति के लिए; उवन्ततु आयिनान्–परम भोग्य बन प्रकट हुए। १

आदि परब्रह्म हमारे ज्ञान के विषय बनकर श्रीराम के रूप में अवतरित हुए। वे तीन गुणों के त्रिदेव, सृष्टि के सारे जीव, पदार्थ आदि, परब्रह्म के द्योतक अर्चावतार और उनके मध्य पाये जानेवाले जीवन्मुक्त लोग इन सभी के साक्षी रूप रहनेवाले हैं। तात्पर्य यह कि ये सब परब्रह्म के ही रूप हैं। वैष्णव मत के अनुसार ये सब परब्रह्म श्रीमन्नारायण के शरीर हैं और वे सर्वशरीरी हैं। १

1. पम्बैप् पडलम् (पम्पा पटल)

तेन्बडि मलरदु शॅङ्गण् वॅङ्गैमा, तान्बडि हिन्ऱदु तॅळिवु शान्ऱदु
मीन्बडि मेहमुम् बडिन्दवीङ्गुनीर्, वान्बडिन् दुलहिडैक् किडन्द माण्बदु 2

तेन् पटि मलरतु–(वह सर ऐसा–)भ्रमरावृत पुष्पों का; चॅम् कण्–लाल आँखों के और; वॅम्–डरावने; कै मा–करि; पटिकिन्ऱतु–गोते लगाते हैं, जिसमें; तॅळिवु चान्ऱतु–स्वच्छता के साथ है; मीन् पटि–नक्षत्रसहित; मेकमुम् पटिन्त–मेघों से युक्त; वीङ्कु नीर् वान्–अधिक जल के साथ आकाश ही; उलकु इटै–पृथ्वी पर; पटिन्तु किटन्त–पड़ा रहता हो; माण्पु–ऐसा विलक्षण है। २

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पम्पा सर का वर्णन किया जाता है। सर प्राकृतिक बड़ा तालाब है। वह सर ऐसे पुष्पों से भरा है, जिन पर (शहद या) भ्रमरकुल रहता है; जिसमें लाल आँखों वाले डरावने करि आकर नहाते हैं। वह ऐसा दृश्यमान है, मानो नक्षत्रों और मेघों से अलंकृत और विपुल जलराशि से भरा आकाश ही भूमि पर आकर पड़ा हुआ हो। २

ईर्न्दनुण् पळिङ्गॆऩत् तॆळिन्द वीर्म्बुऩल्
पेर्न्दॊळिर् नवमणि पडर्न्द पित्तिहैच्
चेर्न्दुऴिच् चेर्न्दुऴि निऱत्तैच् चेर्दलान्
ऒर्न्दुणर् विल्लव रुळ्ळ मॊप्पदु 3

ईर्न्त–तराशे हुए; नुण् पळिङ्कु–सूक्ष्म स्फटिक; ऎऩ–जैसे; तॆळिन्त–स्वच्छ रहनेवाला; ईर्म् पुऩल्–(उसका) शीतल जल; पेर्न्तु–(वायु के कारण) चलकर; ऒळिर्–उज्ज्वल; नव मणि पटर्न्त–नवरत्न जिनमें जड़े रहते हैं; पित्तिकै–उन किनारों की भित्तियों पर; चेर्न्तुऴि चेर्न्तुऴि–जब-जब लगता है, तब; निऱत्तै चेर्तलाल्–उन रंगों से प्रभावित होता है, इसलिए; ऒर्न्तु–अनुमान (तर्क आदि) करके; उणरवु इल्लवर्–अनुभवज्ञान जिन्होंने प्राप्त नहीं किया है; उळ्ळम्–उनके मन का; ऒप्पतु–साम्य रखनेवाला है। ३

काट-छाँटकर सुन्दर बनाया गया स्फटिक-सम है उसका जल। वह शीतल जल लहरों के रूप में चलकर नवविध रत्नों से युक्त और जाज्वल्यमान प्राकृतिक तट-भित्तियों से टकराता है। जब-जब वह ऐसा टकराता है, तब वह उन नवरत्नों का प्रतिबिम्ब पाकर रंग-बिरंगा लगता है। तब वह उनके मन का सादृश्य करता है, जो अपनी तरफ़ से तर्क, अनुमान आदि करके तत्त्व जान नहीं पाते और दृढ़ धारणा न रहने से सन्देह के कारण जिनके मन का रंग बदलता रहता है। ३

कुवाऩ्मणऱ् ऱडन्दॊऱुम् पवऴक् कॊम्बिवर्
कवाऩर शऩ्ऩमुम् पॆडैयुङ् काण्डलिल्
तवाऩॆडु वाऩहन् दयङ्गु मीऩॊडुम्
उवामदि युलप्पिल वुदित्त वॊत्तदु 4

कुवाल्–लगे हुए; मणल् तटम् तॊऱुम्–बालू के ढेर-ढेर पर; पवळम् कॊम्पु–प्रवाल-लता पर; इवर्–रहते जैसे; कवाऩ्–पैरों वाले; अरचु अऩ्ऩमुम्–राजहंस; पॆटैयुम्–और हंसिनियाँ; काण्टलिऩ्–दिखाई देते हैं, इसलिए; तवा नॆटु वाऩकम्–अक्षय विस्तृत आकाश में; तयङ्कुम् मीऩ् ओटुम्–विद्यमान उडुओं के साथ; उवा मति–पूर्णचन्द्र; उलप्पु इल–असंख्यक; उतित्त ऒत्ततु–उदित हुए हों, ऐसे लगा। ४

उस सर के मध्य और किनारों पर यत्र-तत्र बालू के टीले देखे जाते हैं। उन पर अपने लाल पैरों के कारण प्रवाल-लता के समान दिखनेवाले राजहंस और उनकी हंसिनियाँ बैठे रहते हैं। उससे वह सर ऐसा लगता है, मानो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अक्षय आकाश उज्ज्वल नक्षत्रों के साथ हो और उसमें अनेक पूर्णचन्द्र उदित हुए हों। ४

ओदनी रुलहमु मुयिर्हळ् यावैयुम्
वेदपा रहरैयुम् विदिप्प वेट्टनाळ्
शीदनी रुवरियैच् चॅंहुक्क वाङ्गॉरु
कादिहा दलन्ऱरु कडलि नन्नदु 5

काति कातलन्–गाधिनंदन ने; ओतम् नीर् उलकमुम्–समुद्रजलावृत पृथ्वी; उयिर्कळ् यावैयुम्–(और) सभी जीवों को; वेत पारकरैयुम्–वेदपारगों को; वितिप्प–सृजित करना; वेट्ट नाळ्–(जिस दिन) चाहा उस दिन; चीत नीर् उवरियै–शीतल जल-भरे समुद्रों को; चॅंकुक्क–दबाने के लिए (मान घटाने के लिए); आङ्कु–वहाँ; तरु–सृष्ट; ऑरु कटलिन् अन्नतु–अन्य एक सागर-जैसा था। ५

गाधितनय विश्वामित्र ने एक बार समुद्रों से घिरे भुवनों, उनमें सभी तरह के जीवों और वेदपारंगत ब्राह्मणों को अलग से सृष्ट करना चाहा था। यह पम्पा सर उस समुद्र के जैसा लगा, जिसे उस दिन विश्वामित्र ने शीतल जल-भरे समुद्र के मानमर्दन के लिए सरजा था। ५

अॅऱ्पडर् नाहर्द मिरुक्कै यीदॅनक्
किऱ्पदोर् काट्चिय दॅनिनुङ् गेळुऱक्
कऱ्पह मनैयवक् कविञर् काट्टिय
शॊऱ्पॊरु ळामॅनत् तोन्ऱु हिन्ऱदु 6

नाकर् तम्–नागों का; अॅल् पटर्–प्रकाश से भरा; इरुक्कै–वासस्थान (पाताललोक); ईतु अॅन–यह है, ऐसा; किऱ्पतु–इशारा करता सा; ओर् काट्चियतु–दृश्यमान है; अॅनिनुम्–तो भी; केळ् उऱ–छवि के साथ; कऱ्पकम् अनैय–कल्पतरु के समान; कविञर् काट्टिय–कवियों द्वारा दर्शित; चॊल् पॊरुळ् आम्–शब्दों के अर्थगाम्भीर्य के ही; अॅन–समान; तोन्ऱुकिन्ऱतु–दिखाई देता है। ६

'नागों का प्रकाशमय लोक यही है' —ऐसा इंगित कर रहा हो, ऐसा दृश्यमान था वह सर। साथ-साथ कल्पतरु के समान (शब्द और अर्थ दोनों की दृष्टि से) कवियों द्वारा प्रयुक्त शब्दों के प्रकाशमय अर्थों के समान भी दिखता है। नागलोक अनेक रत्नों की राशियों के कारण प्रकाशमय रहता है। वह प्रकाश पम्पा सर के जल में प्रतिबिंबित होता है। इसलिए वह सर ऐसा दिखता है, मानो यह संकेत करता हो कि यही नागलोक है। वह सर बहुत गहरा है और उसका जल स्वच्छ है। कवि के शब्द कल्पतरु से उपमित हैं क्योंकि दोनों वांछित और अधिक अर्थ दे सकते हैं। ६

कळनवि लन्नमे मुदल कण्णहन्
तळमलर्प पुळ्ळॊलि तळङ्गि यिन्नदोर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किळवियॅन् ऱऱिवरुङ् गिळर्च्चित् तादलिन्
वळनहर्क् कूलमे पोलु माण्बदु 7

कळम् नविल्–मधुर बोलनेवाले; अन्नम् मुतल–हंस आदि; कण् अकल्–विशाल; तळ मलर्–दलयुक्त कमलपुष्पों पर रहनेवाले; पुळ् ऑलि–पक्षियों का कलरव; तळङ्कि–अधिक रहता है; इन्नतु ओर् किळवि–यह अमुक की ध्वनि है; अऱिवु अरु–यह जानना कठिन है; किळर्च्चित्तु–ऐसा कोलाहलमय है; आतलिन्–इसलिए; वळ नकर्–समृद्ध नगर की; कूलमे पोलुम्–पण्यवीथी जैसे; माण्पतु–विलक्षण है। ७

विशाल दलसंकुल कमलपुष्पों पर हंस आदि पक्षी कलरव करते हुए रहते हैं। उनमें कौन से पक्षी क्या बोलते हैं, यह समझा नहीं जाता। ऐसी अधिक और मिश्रित ध्वनि के कारण वह सर किसी बड़े नगर के बाज़ार के समान लगता है। ७

अरिमलर्प् पङ्गयत् तन्न मॅङ्गणुम्
पुरिहुळल् पुक्किडम् पुहल्हि लादयाम्
तिरुमुह नोक्कलॅ मिऱन्दु तीर्दुमॅन्
ऱॅरिपुहु वनवॅन्नत् तोन्ऱु मीट्टदु 8

ऍङ्कणुम्–सर्वत्र; अरि मलर्–लाल लकीरों से युक्त; पङ्कयत्तु–कमलपुष्पों पर रहते हुए; अन्नम्–मराल; पुरि कुळल्–सँवारकर बँधे हुए केश वाली सीताजी का; पुक्किटम्–प्रवेशस्थल; पुकल्किलात–न (जान) कहनेवाले; याम्–हम; तिरुमुकम् नोक्कलॅम्–(श्रीराम का) श्रीमुख नहीं देखेंगे; इऱन्तु तीर्तुम्–मर मिटेंगे; ऍन्ऱु–यह निश्चय करके; ऍरि पुकुवन्न ऍन्न–अग्निप्रवेश करते हों जैसे; तोन्ऱुम्–दिखते हैं; ईट्टतु–वह सर ऐसा है। ८

उस सर में सर्वत्र लाल कमलपुष्पों का घना समूह है। उन कमलों के मध्य हंस पक्षी पाये जाते हैं। उनको देखने पर ऐसा लगता है कि वे हंस आग में प्रवेश कर रहे हों! क्यों? उनके मन में (शायद) यह विचार है— (मेढ़ी में) गूँधकर गाँठ के रूप में बँधी चोटी से अलंकृत सीताजी के रहने का स्थान हम नहीं जानते, इसलिए श्रीराम से बता भी नहीं सकते। ऐसे हम श्रीराम का मुख नहीं देखेंगे और आग में घुसकर अपनी जान त्याग लेंगे। ८

काशडै विळङ्गिय काट्चित् तायिनुम्
माशडै पेदैमै यिडैम यक्कलाल्
आशडै नल्लुणर् वनैय दामॅन्नप्
पाशडै वयिन्ऱॊऱुम् परन्द पण्बदु 9

माचु अटै–दोषयुक्त; पेतैमै–अज्ञता; इटै मयक्कलाल्–मध्य में आकर मोह में डाल लेती है, इसलिए; आचु अटै–दोषपूर्ण हो जानेवाले; नल् उणर्वु अन्नैय–उत्तम ज्ञान के समान; काचु अटै विळङ्किय–रत्नोंसहित उज्ज्वल होकर; काट्चित्तु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयिऩुम्–दृश्यमान होने पर भी; वयिऩ् तॊऱुम्–स्थल-स्थल पर; पाचटै परऩ्त–काई फैली थी; पण्पतु–ऐसा विशिष्टतायुक्त था वह। ९

मोती, रत्न आदि उस सर के तल में पड़े थे। जल की स्वच्छता के कारण वे बाहर दिखाई दे रहे थे। ऐसे दृश्य होने पर भी कहीं-कहीं काई, सेवार आदि के कारण जल ढका हुआ था और मोती, रत्न आदि अदृश्य रहे। वह दृश्य उस ज्ञान के समान लगा, जो अज्ञान के कारण मोहाच्छादित हो जाता हो। ९

कळिप्पडा मऩत्तवन् काणिऱ् कऱ्पॆऩुम्
किळिप्पडा मॊऴियवळ् विऴियिऩ् केऴॆऩत्
तुळिप्पडा नयऩङ्ग डुळिप्पच् चॊरुमॆऩ्
ऱॊऴिप्पडा दायिडै यॊळिक्कु मीऩदु 10

कळि पटा–आनन्द जिसमें नहीं रहता; मऩत्तवऩ्–उस मन के श्रीराम; काणिल्–हमें देखेंगे तो; कऱ्पु ऍऩुम्–मूर्तिमान पातिव्रत्य; किळि पटा–शुक में भी अप्राप्य; मॊऴि अवळ्–(मधुर-)भाषिणी उन (सीता) की; विऴियिऩ् केळ् ऍऩ–आँखों का बन्धु समझकर; तुळि पटा–कभी (अश्रु-)कण जिनमें न पड़े थे; नयऩङ्कळ् तुळिप्प–उन नेत्रों में आँसू की बूँदें ढलकाते हुए; चोरुम्–दुःखी होंगे; ऍऩऱु–सोचकर; ऒळि पटातु–रूप व्यक्त नहीं करते हुए; अ इटै–उस सर में; ऒळिक्कुम्–अपने को छिपा लेनेवाली; मीऩतु–मछलियों से युक्त है (वह सर)। १०

उस सर में मछलियाँ रहीं पर वे छिपी रहीं। उसका कारण क्या था ? शायद उनको यही भय था कि श्रीराम आनन्दरहित मन के हैं। उनकी दृष्टि हम पर पड़ेगी तो उन्हें पातिव्रत्य की मूर्ति, शुक में भी अप्राप्य (मधुर) भाषण वाली सीताजी की आँखें स्मरण हो आयेंगी और अपनी आँखों से जो कभी अश्रु बहाने के आदी नहीं हैं, वे आँसू बहाते हुए शिथिल पड़ जायँगे। ऐसे मीनों से भरा हुआ वह सर था। १०

कऴैपडु मुत्तमुङ् गलुऴिक् कार्मद
मऴैपडु तरळमु मणियुम् वारिनेर्
इऴैपडर्न् दऩैयनी ररुवि यॆय्दलान्
कुऴैपडु मुहत्तियर् कोलम् बोल्वदु 11

कऴै पटु–बाँसों में उत्पन्न; मुत्तमुम्–मोतियों; कलुऴि–पंकिल; कार् मत मऴै–काले मद-नीर से युक्त मेघों (गजों) से; पटु–प्राप्य; तरळमुम्–मोतियों को और; मणियुम्–अनेक रत्नों को; वारि–बटोर लेकर; नेरिऴै पटर्न्तु–सुन्दर आभरण-भूषित; नीर् अरुवि–सरिता-जल; ऍय्तलाल्–आया है, इसलिए; कुऴै पटु मुकत्तियर्–कुण्डलधारिणी मुखों की स्त्रियों के; कोलम् पोल्वतु–सौंदर्य के समान सौंदर्य रखनेवाला है वह सर। ११

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वह सर कर्णकुण्डलधारिणी सुन्दरियों का-सा सौन्दर्य रखता था, क्योंकि उसमें बाँसों से उत्पन्न मोती, पंकिल मदनीर वाले मत्तगजों से उत्पन्न मोती और अनेक प्रकार के रत्न, इनको बहा लेती आकर सरिताएँ उससे मिलती थीं। ११

पॊङ्गुवॆङ् गडहरि पॊदुळि याडलिन्
कङ्गुलि ऩॆदिर्पॊरु कलविप् पूशलिल्
अङ्गनॊन् दलशिय विलैयि ऩाय्वळै
मङ्गैयर् वडिवॆऩ वरुन्दु मॆय्यदु 12

पॊङ्कु–उमग उठनेवाला; वॆम् कट–उष्ण मदनीर वाले; करि–मातंग; पॊतुळि आटलिन्–गोते लगाते हैं, इसलिए; कङ्कुलिन्–रात के समय में; ऎतिर् पॊरु–सामने से आलिंगन के; कलवि पूचलिल्–संभोग-समर में; अङ्कम् नॊन्तु–अंगों में शिथिल पड़कर; अलचिय–थकित हुई; आय् वळै–चुने हुए कंकणभूषित; विलैयिन् मङ्कैयर्–वेश्याओं का; वटिवु ऎऩ–शरीर के समान; वरुन्तुम्–कष्ट उठानेवाले; मॆय्यतु–शरीर का है। १२

उस सर में उष्ण मदस्रावी गज गोते लगाते हैं। उससे वह सर उन आभरणभूषिता वेश्याओं के शरीर के समान थकित अंगों का हो जाता है, जो रात के समय सामने प्राप्त संभोग-समर में अपने शरीर की शक्ति खोकर श्रांत हो रहती हैं। १२

विण्डॊडु नॆडुवरैत् तेऩुम् वेऴत्तिन्
वण्डुळर् नऱुमद मऴैयु मण्डलाल्
उण्डवर् पॆरुङ्गळि युऱलि ऩोदियर्
तॊण्डैयङ् गऩियिदऴत् तुप्पिऱ् चाऩ्ऱु 13

विण् तॊटु–आकाशस्पर्शी; नॆटु वरै–उन्नत पर्वतों से झरनेवाला; तेऩुम्–शहद; वेऴत्तिऩ्–गजों का; वण्टु उळर्–भ्रमर जिसमें पैठकर चूसते हैं; नऱु मत मऴैयुम्–सुगन्धित मद-वारि; मण्टलाल्–आकर मिलते हैं, इसलिए; उण्टवर्–(उस सर के जल को) पीनेवाले; पॆरुम् कळि उऱलिन्–बहुत आनन्दयुक्त होते हैं, इसलिए; ओतियर्–रमणियों के; तॊण्टै अम् कऩि इतऴ्–बिम्बफल-सम अधरों के; तुप्पिल् चाऩ्ऱतु–(अमृत) पान के समान है। १३

गगनस्पर्शी और बड़े पर्वतों से शहद की धारा आती है। मत्तगजों के भ्रमराकुलित और सुगन्धित दान की धारा आती है। वे धाराएँ आकर उस सर में मिल जाती हैं। उस सर का जल पीने से लोग मदमत्त हो जाते हैं। इसलिए वह सर सुकेशिनी बिम्बाधरा स्त्रियों के अधरों की समानता करता है (और जल अधर-मधु की)। १३

आरिय मुदलिय पदिऩॆण् पाडैयिल्
पूरिय रॊरुवऴि पुहुन्द पोऩ्ऱऩ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ओर्विल किळविह ळौन्ऱ्ऱौ डौप्पिल
शोर्विल विळम्बुपुट् टुवन्ऱु हिन्ऱदु 14

आरियम् मुतलिय–संस्कृत आदि; पतिन् अण् पाटैयिल्–अठारह भाषाओं के; पूरियर्–अल्पज्ञ लोग; ओरु वळि–एक स्थान पर; पुकुन्त पोन्ऱत्त–मिलकर शोर मचाते जैसे; ओर्वु इल–स्वच्छ नहीं हैं; किळविकळ्–शब्द; ऑन्ऱोटु ऑप्पु इल–परस्पर सम नहीं; चोर्वु इल–दुर्बल नहीं हैं; विळम्पु–(ऐसे) बोलनेवाले; पुळ्–पक्षीगणों से; तुवन्ऱुकिन्ऱतु–भरा है। १४

आर्य (संस्कृत) आदि अठारह भाषाओं के अपढ़ बोलनेवाले एक स्थान पर इकट्ठे हो गये हों, ऐसे, अस्पष्ट और परस्पर विपरीत और अथक रूप से बोलनेवाले पक्षीगणों से पूर्ण है (वह सर)। १४

तानुयि रुऱत्तनित् तळुवुम् पेडैयै
ऊनुयिर् पिरिन्दॆऩप् पिरिन्द वोदिमम्
वानर महळिर्तम् वयङ्गु नूपुरत्
तेनुहु मळलैयैच् चेविय़ि ऩोर्प्पदु 15

तान् उयिर् उऱ–अपने प्राणों के साथ; तनि तळुवुम्–खूब आलिंगन करनेवाली; पेटैयै–हंसिनी को; उयिर् ऊन् पिरिन्ततु ऍऩ–प्राण शरीर को छोड़ गये हों जैसे; पिरिन्त ओतिमम्–अलग जो गया वह हंस; वान् अर मकळिर् तम्–आकाशलोक की सुरबालाओं की; वयङ्कु–मनोरम; नूपुर तेन् उकु–नूपुरों की शहद-सी उठनेवाली; मळलैयै–मधुर, तुतली-सी बोली को; चॆवियिन् ओर्प्पतु–अपने कानों से सुनते हैं, ऐसा है वह सर। १५

उस सर में व्योमराज्य की अंगनाएँ आकर स्नान कर रही हैं। उनकी बोलियाँ उनके नूपुरों की ध्वनि ही के समान मनोरम हैं। हंस उन मधुर बोलियों को कान देकर सुनते हैं। कौन हंस ? वे हंस, जो अपनी हंसिनियों से शरीर त्यागकर जानेवाले प्राणों के समान छोड़ अलग हुए हैं। कैसी हंसिनियाँ ? वे हंसिनियाँ, जो इन हंसों के साथ इस तरह पाश-बद्ध रहीं, मानो प्राणों से प्राण लगाकर अपूर्व रीति से आलिंगन कर रही थीं। १५

ईऱिड लरियमाल् वरैनिन् ऱीर्त्तिळि
आऱिडु विरैयहि लार मादिया
ऊऱिड वॊण्णह रुरैत्त वॆण्डळच्
चेऱिडु परणियिऱ् ऱिहळुन् देशदु 16

ईऱु इटल्–अन्त निर्धारित करना; अरिय–(जिसका) कठिन है; माल् वरै निन्ऱु–बड़े पर्वत से; ईर्त्तु इळि–बहाते हुए नीचे बहनेवाली; आऱु इटु–नदियों द्वारा लाकर डाले हुए; विरै अकिल्–सुगन्धित अगरु; आरम् आतिया–चन्दन के काठ आदि; ऊऱिट–पड़े घुलते रहते हैं, इसलिए; ऑळ् नकर्–श्रेष्ठ नगर में लोगों द्वारा;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उरत्त–पीसकर; वॅण् तळ चेऱु–सफ़ेद चन्दन का लेप; इटु–जिसमें रखा गया हो; परणियिल्–उस पात्र के समान; तिकऴुम्–मनोरम रहनेवाले; तेचतु–सौंदर्य का (है वह सर)। १६

अपरिमित बड़े पर्वत से नदियाँ सुगन्धित अगरु, चन्दन आदि की लकड़ियाँ बहा ले आयीं और वे उस सर में पड़ी घुली रहीं। तब वह सर श्रेष्ठ नगरवासियों के द्वारा घिसकर तैयार किये हुए चन्दनलेप के पात्र के समान दिखा। १६

नव्वि नोक्किय रिदऴ्निहर् कुमुदत्ति नऱुन्देन्
वव्वि मान्दलिन् कळिमयक् कुऱुवन्न महरम्
ऍव्व मोङ्गिय विऱप्पॊडु पिऱप्पिवै यॅन्नक्
कव्वु मीनॊडु मुऴुहिन्न वॅऴुवन्न करण्डम् 17

मकरम्–मकर; नव्वि नोक्कियर्–मृगाक्षियों के; इतऴ् निकर्–अधरों के समान; कुमुतत्तिन्–कुमुदपुष्पों के; नऱुम् तेन्–सुबासपूर्ण मधु को; वव्वि मान्तलिन्–लेकर पीते हैं, इसलिए; कळि मयक्कु–सुरापायी-प्राप्य नशा; उऱुवन्न–प्राप्त करते हैं; ऍव्वम् ओङ्किय–दुःखप्रवृद्ध; इऱप्पु ओटु पिऱप्पु–मरण और जन्म; इवै ऍन्न–ऐसे हैं, इसका संकेत करते-से; कव्वु मीन् ऑटु–अपने द्वारा ग्रस्त मछलियों के साथ; करण्टम्–करंड; मुऴुकिन्न ऍऴुवन्न–उस (सर के) जल में डूबते हैं, उतराते हैं। १७

उसमें मकर थे। मृगनयनी सुन्दरियों के अधरों के समान जो उस सर में कुमुद-कुसुम थे, उनसे सुगन्धपूर्ण शहद रिसता रहा। उसको पीकर वे मकर सुरापायी के-से नशे में रहे। उसमें करंड पक्षी मछलियाँ पकड़ते रहे। उन मछलियों के साथ वे कभी जल के अन्दर घुसते, कभी बाहर निकलते। उसे देखकर ऐसा लगा मानो वे, दुःखबहुल जन्म और मरण का चक्र यही है —यह दरसा रहे हों। १७

कवळ यानैय नार्कन्दक् कडिनऱुङ् गमलत्
तवळै यीहल मावदु शॅय्दुमॅन् ऱरुळित्
तिवळ वन्नङ्ग डिरुनडै काट्टुव शॅङ्गण्
कुवळै काट्टुव दुवरिदऴ् काट्टुव कुमुदम् 18

कवळ यानै–कवलभक्षी गज; अनार्कु–सम (श्रीराम) को; अन्त कटि नऱुम् कमलत्तु अवळै–उस श्रेष्ठ सुगन्धित कमल की (निवासिनी) सीता को; ईकलम्–(ढूंढ़ लाकर) नहीं देते; आवतु चॅय्तुम्–तो भी जितना हो सकेगा, उतना करेंगे; ऍन्ऱु अरुळि–ऐसा कृपा करके; अन्नङ्कळ्–हंस; तिवळ–प्रकट रूप से; तिरु नटै काट्टुव–(सीताजी की-सी) श्रेष्ठ चाल दिखाते हैं; कुवळै–नीलोत्पल; चॅम् कण् काट्टुव–(सीताजी की-सी) लाल आँखें दिखाते हैं; कुमुतम्–(लाल) कुमुद; तुवर् इतऴ् काट्टुव–लाल अधर दिखाते हैं। १८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसमें हंस चल-फिर रहे थे। वे मानो सीताजी की चाल का श्रीराम को स्मरण दिला रहे थे। उनका विचार था कि हम कवलग्राही गज-सदृश श्रीराम को सुगन्धपूर्ण कमल की निवासिनी श्री सीताजी को ढूँढ़ लाकर दे नहीं पाये। कम से कम उनकी-सी चाल दिखाएँ। उनके मन में कृपा थी। वैसे ही नीलोत्पल के फूलों ने देवी की लाल डोरोंसहित आँखों का और कुमुदों ने लाल अधरों का दृश्य दरसाया। १८

पॅय्ह लन्गळि निलङ्गॊळि मरुङ्गॊडु पिऱ़ळ
वैह लुम्बुनल् कुडैबवर् वाऩर महळिर्
शॅय्है यन्नङ्ग ळेन्दिय शेडिय रॅन्नप्
पॊय्है यन्नङ्ग ळेन्दिय पूङ्गॊम्बु पॊलिव 19

पॅय् कलन्कळिन्–(उतारकर) रखे गये आभरणों से; इलङ्कु ऒळि–निसृत प्रकाश; मरुङ्कु ऒटु पिऱ़ळ–पास के स्थानों से भिन्न छटा देते हैं; वैकलुम–दिनों-दिन; पुनल् कुटैपवर्–जल में स्नान करनेवाले; वान् अर मकळिर्–आकाश की अप्सरा स्त्रियों के; चॅय्कै अन्नङ्कळ्–कृत्रिम हंसों को; एन्तिय–उठा ले आनेवाली; चेटियर् अन्न–दासियों के समान; पूम् कॊम्पु–पुष्पशाखाएँ; पॊय्कै अन्नङ्कळ्–सर के हंसों को; एन्तिय–धारण करती हुई; पॊलिव–शोभायमान हैं। १९

उसमें रोज आकाशलोकवासिनी अप्सराएँ आकर स्नान करती थीं। उनके साथ उनकी दासियाँ आयीं और उनके हाथों में उन अप्सराओं के मनोरंजन के लिए बने कृत्रिम हंस थे। उन अप्सराओं ने अपने आभरण उतारकर वहाँ यत्र-तत्र रखे थे। उनकी कांति वहाँ के पदार्थों से अलग चित्र-विचित्र छटा दिखा रही थी। वहाँ की पुष्पलताएँ अपने ऊपर बैठे हंसों के साथ उन अप्सराओं की चेरियों के समान लगीं, जिनके हाथों में कृत्रिम हंस थे। १९

एलु नीणिळ लिडैयिडै यॅऱित्तलिऱ् पडिहम्
पोलुम् वार्पुनल् पुहुन्दुळ वामॅनप् पॊङ्गि
आलु मीन्गणम् वॅरुवुऱ् वलम्वर वञ्जक्
कूल मामरत् तिरुञ्जिऱै पुलर्त्तुव कुरण्डम् 20

एलुम्–युक्त; नीळ् निळल्–लम्बी छायाएँ; इटै इटै–बीच-बीच में; ऍऱित्तलिन्–पड़ती हैं, इसलिए; पटिकम् पोलुम् वार् पुतल्–स्फटिक-से विस्तृत जलतल में; पुकुन्तुळ आम् ऍत–घुसे हों जैसे; आलुम्–क्रीडामग्न; मीन् कणम्–मछलियों के समूह; वॅरुवु उऱ–डर से; अलम् वर–घबड़ाकर; पॊङ्कि अञ्च–चंचल और कातर होते; कुरण्टम्–(ऐसे) बगुले; कूल मा मरत्तु–तट पर के आम्रतरुओं पर; इरुम् चिऱै–अपने बड़े पंखों को; पुलर्त्तुव–सुखा रहे हैं। २०

उसके किनारों पर पेड़ थे और उन पेड़ों की शाखाओं पर बैठे हुए बक अपने बड़े पक्षों को सुखा रहे थे। उनकी परछाईं उस सर के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

स्फटिक-स्वच्छ जल में यत्र-तत्र पड़ती थी। मछलियों ने सोचा कि सचमुच बक घुस गये हैं। इसलिए वे भयातुर होकर घबड़ाते हुए चकित और थकित हो रहीं। ऐसे दृश्यों का था वह सर। २०

अङ्गॊर् बाहत्ति नञ्जन मणिनिऴ लडैयप्
पङ्गु वेऱदिऱ् पदुमरा हत्तॊळि पायक्
कङ्गु लुम्बह् लुम्मॆन्नप् पॊलिवन्न कमलम्
मङ्गै मार्तुणै मुलैयॆन्नप् पॊलिवन्न वाळम् 21

अङ्कु–वहाँ (उस सर के); ओर् पाकत्तिन्–एक भाग में; अञ्चत्तमणि–नीली मणियों की; निऴल् अटैय–छटा पड़ती है, तो; वेऱु पङ्कु अतिल्–दूसरे भाग में; पतुमराकत्तिन् ऒळि–पद्मराग का प्रकाश; पाय–फैला है; पॊलिवन्न कमलम्–(तब) शोभा के साथ विद्यमान कमल; कङ्कुलुम् पकलुम् ऎन्न–रात और दिन के (बन्द और खुले कमलों के) रहते हैं और; वाळम्–चक्रवाक; मङ्कै मार्–स्त्रियों के; तुणै मुलै ऎन्न–स्तनद्वयों के समान; पॊलिवन्न–रूप में शोभते हैं। २१

वहाँ एक भाग में नीलमणियों की कांति पड़ी रही। दूसरी ओर पद्मराग का लाल प्रकाश पड़ा रहा। इसलिए वहाँ के कमल रात और दिन में जैसे क्रमशः बन्द और खिले रहे। (नीलमणियों की काली कांति अँधेरा-भरी रात के समान थी और पद्मराग का प्रकाश धूप के समान।) चक्रवाक पक्षी (देखने में) स्त्रियों के स्तनों के समान लगे। २१

वलिन डत्तिय वाळॆन्न वाळैहळ् पाय
ऒलिन डत्तिय तिरैतॊऱु मुहळ्वन्न नीर्नाय्
कलिन डक्कळैक् कण्णुळ रॆन्नडङ् गविन्नप्
पॊलिवु डैत्तॆन्नत् तेरैहळ् पुहळ्वन्न पोलुम् 22

वलि नटत्तिय–बल के साथ चलायी गयी; वाळ् ऎन्न–तलवार के समान; वाळैकळ् पाय–'वाळै' नाम की मछलियाँ झपटती हैं; ऒलि नटत्तिय–ध्वनिपूर्ण; तिरै तॊऱुम्–तरंगों में; कलि नट–मनोरंजक नर्तन करनेवाले; कळै कण्णुळर् ऎन्न–बाँस (गाड़कर उस पर) नर्तन दिखानेवाले नटों के समान; नीर् नाय्–जलकूकर; उकळ्वन्न–लुढ़कते हैं; नटम् कवित्त–और नर्तन का-सा खेल दिखाते हैं और; तेरैकळ्–दादुर; पॊलिवु उटैत्तु ऎन्न–(तुम्हारा नाच) श्रेष्ठता से युक्त है, कहकर; पुकळ्वन्न पोलुम्–वाहवाही करते से हैं। २२

(उस सर में कुछ अनोखे दृश्य पाये जाते हैं।) 'वाळै' नाम की मछलियाँ बहुत वेग और शक्ति के साथ चलायी गयी तलवार के समान झपटती थीं। तरंगों के मध्य जल-कूकर (एक जलजन्तु) बाँस गाड़कर खेल दिखानेवाले नटों के समान लुढ़क-लुढ़ककर तमाशा दिखा रहे थे। दादुर उनको देखकर वाहवाही दे रहे थे। २२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्न दाहिय वहन्बुनर् पॊय्हैयै यणहिक्
कन्नि यन्नमुङ् गमलमु मुदलिय कण्डान्
तन्नि नीङ्गिय तळिरियर् कुरुहिनन् ऱळर्वान्
उन्नु नल्लुणर् वॊडुङ्गिडप् पुलम्बिड लुऱ्ऱान् 23

अन्नतु आकिय–ऐसे (दृश्यों के); अकल् पुनल्–विशाल जल-फैलाव के; पॊय्कैयै–सर के; अणुकि–पास जाकर; कन्नि अन्नमुम्–बालमरालों; कमलमुम्–और कमलों; मुतलिय–आदि (सब) को; कण्टान्–देखकर; तन्नित्न् नीङ्किय–अपने से अलग जो चली गईं; तळिर् इयऱ्कु–पल्लवनिभ सीताजी के लिए; उरुकिनन्–द्रवीभूत होकर; तळर्वान्–दुखते हुए; उन्नुम् नल् उणर्वु–विवेकी बुद्धि के; ऒडुङ्किट–मन्द पड़ने के कारण; पुलम्पिटल् उऱ्ऱान्–(श्रीराम) विलाप करने लगे। २३

श्रीराम अपने छोटे भाई के साथ ऐसे पम्पा सर पर आये। उसमें रहनेवाले बाल-मरालों और कमलों को देखा। उन्हें उनसे बिछुड़ी पल्लव-निभ सीताजी का स्मरण सताने लगा। उनका मन द्रवीभूत हो गया। दुःख के कारण धैर्य, बुद्धि भी मन्द पड़ गयी। तब वे यों विलाप करने लगे। २३

वरियार् मणिक्काल् वरालिनमे मडवन् नङ्गा ळॆन्नैनीङ्गित्
तरिया नडैया ळिलळालॆऱ् ऱन्द वेदुन् दहवेयाल्
ॲरिया निन्ऱ वारुयिरुक् किरङ्गि नाली दिशैयन्ऱो
पिरिया दिरुन्दीर्क् कॊरुमाऱ्ऱम् पेशिर् पूशल् पॆरिदामो 24

वरि आर्–लकीरों से युक्त; मणि काल्–सुन्दर पैरों (रूपी डैनों) से युक्त; वराल् इनमे–'वराल' मछलियों के समूह; मट अन्नङ्काळ्–बालमराल; ॲन्नै नीङ्कि–मुझे छोड़कर; तरिया–अलग जी नहीं सकतीं; नटैयाळ्–ऐसे स्वभाव की; इलळ्–(सीता मेरे साथ अब) नहीं है; ॲन् तन्त–मेरे लिए दिया गया सन्देश; एतुम्–कोई; तकवे–अच्छा होगा; ॲरिया निन्ऱ–जलनेवाले; आर् उयिर्क्कु–मेरे प्यारे प्राणों के लिए; इरङ्कित्ताल्–सहानुभूति करेंगे तो; ईतु–यह; इचै अन्ऱो–(तुम्हारे लिए) प्रशंसा का विषय होगा न; पिरियातु–अवियुक्त; इरुन्तीर्क्कु–जो रहते हो, उन तुमको; ऒरु माऱ्ऱम् पेचिल्–(उसके सम्बन्ध में) एक बात कहना; पूचल्–टंटा; पॆरितु–बड़ा; आमो–हो जायगा क्या। २४

रेखाओं से युक्त डैनों वाली हे 'वराल' मछलियो! हंसो! अब सीताजी मेरे पास नहीं रहतीं। उनका स्वभाव ऐसा है कि वे मुझे छोड़कर अलग जीवित नहीं रह सकतीं। उसने तुम्हारे पास कुछ भी कहा हो तो वह मुझसे कह दो। यही उचित होगा। मेरे प्राण उसके विना जल रहे हैं। दया करके यह सहायता करोगे तो वह तुम्हारी कीर्ति का हेतु बनेगा। तुम तो नर-मादा अपृथक् रहते हो। कुछ मुझे बताओगे तो टंटा बढ़ जायगा क्या? । २४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वण्ण नऱुन्दा मरैमलरुम् वाशक् कुवळै नाण्मलरुम्
पुण्णि ऩॆरियु मॊरुनॆञ्जम् बॊदियु मरुन्दिऱ् ऱरुम्बॊय्हाय्
कण्णु मुहमुङ् गाट्टुवाय् वडिवु मॊरुहाऱ् काट्टायो
ऒण्णु मॆन्ऩि ऩः(ह्)दुदवा दुलोवि ऩारु मुयर्न्दारो 25

वण्ण नऱुम्–सुन्दर और सुबासित; तामरै मलरुम्–कमलपुष्प; वाच नाळ् कुवळै मलरुम्–सुबासित और तत्कालविकसित कुवलयपुष्प; पुण्णिऩ् ऎरियुम्–व्रण के समान जलनयुक्त; ऒरु नॆञ्चम्–(मेरे) एक मन में; पॊतियुम् मरुन्ऩिल्–घाव पर लिपे मलहम के समान; तरुम्–दरसानेवाले; पॊय्काय्–हे सर; कण्णुम् मुकमुम्–आँखें और मुख; काट्टुवाय्–दिखाते हो; वटिवुम्–सारा रूप; ऒरु काल्–एक बार; काट्टायो–नहीं दिखाओगे क्या; ऒण्णुम् ऎऩ्ऩिल्–हो सकता है तो; अ.ऱु उतवातु–(जो दे सकते हैं) उसको न देकर; उलोविऩारुम्–लोभ दिखानेवाले भी; उयर्न्ऩारो–श्रेष्ठ बन सकेंगे क्या (बन नहीं सकेंगे)। २५

हे सर ! मेरा मन व्रण से जल रहा है। तुम सुन्दर और सुबासपूर्ण कमलकुसुमों और सुबासित और नवविकसित नीलोत्पल के फूलों को दिखा रहे हो और वह मेरे मन पर मलहम का काम दे रहा है ! तुम इस तरह सीताजी की आँखों और मुख को दरसा रहे हो ! क्या उसका सारा रूप नहीं दिखाओगे एक बार ? हो सकता है तो दिखाने की दया करो। वह न करके लोभ दिखाओगे तो लोभी भी उत्कृष्ट हो सकते हैं क्या ? । २५

विरिन्द कुवळै चेदाम्बल् विरैमॆऩ् कमलङ् गॊडिवळ्ळै
तरङ्ग नॆरुङ्गु वरालामै यॆऩ्ऱित् तहैय तमैनोक्कि
मरुन्दि ऩऩैया ळवयवङ्ग ळवॆनिऱ् कण्डेऩ् वल्लरक्कन्
अरुन्दि यहल्वाऩ् शिन्दिऩवो वावि युरैत्ति यामऩ्ऱे 26

विरिन्त कुवळै–विकसित नील कुवलय; चॆम्मै आम्पल्–लाल कुमुद; विरै मॆल् कमलम्–वासपूर्ण कोमल कमल; कॊटि वळ्ळै–'वळ्ळै' नाम की लता; तरङ्कम् नॆरुङ्कु–तरंगों के बीच पास-पास संचार करनेवाले; वराल्–'वराल' नामक मीन; आमै–कछुए; ऎऩ्ऱु इ तकैय तमै–इस प्रकार के जीवों को (देखकर); वावि–हे सर; मरुन्ऩिऩ् अऩैयाळ्–देवामृत के समान सीता के; अवयवङ्कळ्–अंगों को; निऩ् कण्टेऩ्–तुम्हारे पास देखता हूँ; वल् अरक्कऩ्–बली राक्षस (रावण); अरुन्ति अकल्वाऩ्–उसको खाकर जो गया; चिन्ऩितवो–तब बिथुर गये, क्या ये; उरैत्ति–बताओ। २६

श्रीराम ने विकसित नीलोत्पल के फूलों को, लाल कुमुदों को और सुन्दर सुबासित कोमल कमलों को देखा। 'वळ्ळै' नाम की लता देखी, जिसके पत्ते मनुष्य के कानों के आकार के लगते हैं। लहरों के मध्य 'वराल' मछलियाँ और कछुए भी दिखाई दिये। (तो उन्हें क्रमशः सीता की आँखें, अधर, मुख, कान, पिंडली, उत्चरण आदि स्मरण हो आ गये।) उन्होंने सर से कहा कि हे सर ! तुम्हारे पास मैं अमृत-समाना सीताजी के अवयवों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को देखता हूँ। क्या वे तब बिथुरे गिरे हैं, जब बली राक्षस रावण सीता को खाते हुए जाता रहा ? । २६

ओडा निन्ऱ कळिमयिले शायऱ् कॉदुङ्गि युळ्ळळिन्दु
कूडा दारिऱ् ऱॅरिहिन्ऱ नीयु माहङ् गुळिर्न्दायो
तेडा निन्ऱ वॅन्नुयिरैत् तॅरियक् कण्डाय् शिन्दैयुवन्
दाडा निन्ऱा यायिरङ्ग णुडैयाय्क् कॉळिक्कु माऱुण्डो 27

ओटा निन्ऱ–दौड़ते फिरनेवाले; कळि मयिले–मुदित मोर; चायऱ्कु ऑतुङ्कि–(सीता की) आभा के सामने (हार मानकर) हटकर; उळ् अळिन्तु–मन मारकर; कूटातारिल्–शत्रु के समान; तॅरिकिन्ऱ–दिखनेवाले; नीयुम्–तुम भी; आकम् कुळिर्न्तायो–मन में आनन्दानुभव करते हो क्या; तेटा निन्ऱ–जिसकी मैं खोज कर रहा हूँ; ऍन् उयिरै–उस मेरे प्राणसमाना को; तॅरिय कण्टाय्–तुमने खूब देखा है; चिन्तै उवन्तु आटा निन्ऱाय्–अब सन्तोष के साथ नाचते हो; आयिरम् कण् उटैयाय्क्कु–सहस्र-नेत्र तुमसे; ऑळिक्कुम् आऱ उण्टो–छिपने का रास्ता भी है क्या २७

(श्रीराम एक मयूर से पूछते हैं—) हे दौड़ते फिरनेवाले मयूर ! सीताजी की आभा के सामने तू हार गया था। मन मारकर तू शत्रुवत् व्यवहार करता-सा दीखता है ! अब तेरा मन ठण्डा हो गया न ? तूने मेरी प्राण-सम सीता को खूब देखा है ! अब मुदितमन हो नाच रहा है ! तेरे सहस्र नेत्र हैं ! तुझसे कोई वस्तु अनदेखी रह सकेगी क्या ? । २७

अडैयी ऱॅनिनु मॉरुमाऱ्ऱ मऱिन्द दुरैयी रन्नत्तिन्
पॅडैयी ऱॉन्ऱुम् पेशीरो पिळैया देऱ्कुम् पिळैत्तीरो
नडैनी रळियच् चॅय्दारार् नडुवि लादार् नऱियवरो
डुडैयीर् पहैदा नुमैनोक्कि युवक्किन् ऱेनै मुऱिवीरो 28

अन्नत्तिन् पॅटैयीर्–हंस-स्त्रियो; अटैयीर् ऍतिनुम्–पास नहीं आओगी तो भी; अऱिन्ततु–जाना; ऑरु माऱ्ऱम्–एक समाचार; उरैयीर्–मुझे बताओ; ऑन्ऱुम् पेचीरो–कुछ न कहोगी क्या; पिळैयातेऱ्कुम्–निरपराधी के प्रति भी; पिळैत्तीरो–अपराध करोगी; नटु इलातार्–तटस्थता (कमर) जिसके पास नहीं है; नटै नीर् अळिय चॅय्तार्–तुम्हारी चाल (के गर्व) को मिटाया; यार्–किसने था; अवरोटु पकै तान्–उनके साथ शत्रुता; नऱि उटैयीर्–भले ही रखो; उमै नोक्कि–तुम्हें देखकर; उवक्किन्ऱेनै–हर्षित होनेवाले मुझसे; मुऱिवीरो–गुस्सा करोगी क्या। २८

(हंसिनियों से उपालम्भ—) हे हंसकुमारियो ! तुम मेरे पास नहीं आओगी। सही। पर सीता के सम्बन्ध में कुछ समाचार कहो। क्या नहीं कहोगी ? मैंने तो तुम्हारा कोई अपराध नहीं किया। निरपराध के प्रति भी अपराध करोगी क्या ? कटिहीन ('नडु' का अर्थ तटस्थता भी है— अतः तटस्थता से रहित) किसने तुम्हारा चाल का गर्व चूर किया ?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सीता ने ही न ? उसके साथ शत्रुता तुम भले ही करो। मैं तो तुमको देखकर आनन्द से भर जाता हूँ। मुझसे भी खीझ दिखाओगी क्यों ? । २८

पॊन्बाल् पॊरुवुम् विरैयल्लि पुल्लिप् पॊलिन्द पॊलन्दादु
तन्बार् ऱऴुवुङ् गुऴल्वण्डु तमिऴ्प्पाट् टिशैक्कुन् दामरैये
ऎन्बा लिल्लै यप्पालो विरुप्पा रल्लर् विरुप्पुडैय
उन्बा लिल्लै यॆन्ऱक्का लॊळिप्पा रोडु मुऱवुण्डो 29

पॊन् पाल्–स्वर्ण का-सा गुण; पॊरुवुम्–रखनेवाले; विरै अल्लि–सुबासित दलों के; पुल्लि पॊलिन्त–अन्दर शोभनेवाले और; पॊलन् तातु–स्वर्ण-सम मकरन्द; तन् पाल् वऴुवुम्–जिन पर लगे रहते हैं; कुऴल् वण्टु–बाँसुरी-ध्वनि वाले भ्रमर; तमिऴ् पाट्टु–मधुर संगीत; इचैक्कुम्–(जिनमें रहकर) गाते हैं; तामरैये–ऐसे कमल-पुष्पो; ऎन् पाल् इल्लै–(सीता) अब मेरे साथ नहीं है; अप्पालो इरुप्पार् अल्लर्–अलग कहीं रहनेवाली भी नहीं है; विरुप्पु उटैय–प्रेमासक्त; उन् पाल्–तुम पर; इल्लै ऎन्ऱक्काल्–नहीं है, कहोगे तो; ऒळिप्पारोटुम्–छिपा रखनेवालों के साथ; उऱवु उण्टो–मित्रता हो सकती है क्या। २९

हे कमलपुष्पो ! तुम्हारे दल स्वर्ण के समान हैं। उन पर मकरन्द भरा है। उस मकरन्द-धूल पर भ्रमर लोटते हुए अपने शरीरों पर उसे मल लेकर खूब गुंजार कर रहे हैं ! सीता मेरे साथ नहीं है। वह ऐसी है जो अन्यत्र रह ही नहीं सकती। (वह या तो मेरे साथ रहेगी या अपनी नैहर तुम पर।) अगर तुम यह कहो कि वह यहाँ नहीं, तो वह झूठ ही होगा। छिपाकर रखनेवालों के साथ मित्रता कैसे रखी जायगी ? । २९

ऒरुवा शहत्तै वाय्तिऱन्दिङ् गुदवाय् पॊय्है युळ्ळॊडुङ्गुम्
तिरुवा यन्नैय शेदाम्बर् कयले किडन्द शॆङ्गिडैये
वॆरुवा वॆदिर्निन् ऱमुदुयिर्क्कुम् वीऴिच् चॆव्विक् कॊऴङ्गन्निवाय्
तरुवा यव्वा यिन्नमिऴ्दुन् तण्णॆन् मॊऴियुन् दारायो 30

पॊय्कैयुळ्–सर के अन्दर; ऒटुङ्कुम्–दबे रहनेवाले; तिरुवाय् अन्नैय–सीताजी के श्रीसम्पन्न अधरों के समान; चॆम्मै आम्पऱ्कु–लाल कुमुदकुसुमों के; अयले किटन्त–पास रहनेवाली; चॆम् किटैये–लाल खुखरो; वॆरुवा–निर्भय होकर; ऎतिर् निन्ऱु–सामने रहकर; अमुतु उयिर्क्कुम्–अमृत बहानेवाले; वीऴि कॊऴुम् कत्ति–"वीऴि" (नाम) के पुष्ट फल के (सदृश); चॆव्वि वाय्–(सीता के) लाल मुख को; तरुवाय्–दरसाते हो; अ वायिन्–उस मुख के; इन् अमिऴतुम्–मधुर अमृत को भी; तण् ऎन्न–शीतल; मॊऴियुम्–बोली को भी; तारायो–नहीं दोगे क्या; ऒरु वाचकत्तै–एक वचन; वाय् तिऱन्तु–अपना मुख खोलकर; इङ्कु उतवाय्–कहने की, यहाँ, कृपा करो तो। ३०

हे लाल 'किटै' (खुखरी ?) लता, जो सर के अन्दर सीता के मुख के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समान लाल कुमुदों के पास पड़ी हो ! (किटै लाल रंग की जललता है। उसकी उपमा अधर से दी जाती है।) तुम मेरे सामने मधुस्रावी, 'वीळि' के फल के समान (सीता के) सुन्दर अधरों को दिखा (स्मरण करा) रही हो ! क्या तुम उन अधरों का अमृतपान और उनकी बोली का स्वाद नहीं दिलाओगी ? मुख खोलकर एक बात करो तो बड़ी दया होगी। ३०

अलक्क णुऱ्ऱेऱ् काऱ्ऱुवदऱ् कडैवुण् डऩ्ऱो कॊडिवळ्ळाय्
मलऱ्क्कॊम् बऩैय मडच्चीदै कादै मऱ्ऱॊऩ् ऱल्लैयाल्
पॊलक्कुण् डलमुङ् गॊडुङ्गुळैयुम् पुऩैताळ् मुत्तिऩ् पॊऱ्ऱोडुम्
विलक्कि वन्दाय् काट्टायो विऩ्ऩुम् बूशल् विरुम्बुदियो 31

कॊटि वळ्ळाय्–हे 'वळ्ळै' लता; **मलर् कॊम्पु अऩैय**–पुष्पशाखा-सदृश; **मटम् चीतै**–बाला सीता के; **काते**–कर्ण; **मऱ्ऱु ऒऩ्ऱु अल्लै आल्**–(तू) दूसरा कुछ नहीं है तो; **पॊलऩ् कुण्टलमुम्**–स्वर्णकुण्डलों; **कॊटुम् कुळैयुम्**–वक्र ताटंकों को; **पुऩै ताळ्**–पहने हुए, लटकनेवाले; **मुत्तिऩ् पॊऩ् तोटुम्**–मोती के स्वर्ण कर्णफूलों को; **विलक्कि वन्ताय्**–छोड़कर आये हो; **काट्टायो**–(सीता को) दिखाओगी नहीं क्या; **अलक्कण् उऱ्ऱेऱ्कु**–दुःख को प्राप्त मुझे; **आऱ्ऱुवतऱ्कु**–दुःखशमन के लिए; **अटैवु उण्टु अऩ्ऱो**–मार्ग होगा न; **इऩ्ऩुम् पूचल् विरुम्पुतियो**–आगे भी मुझसे झगड़ा चाहती हो क्या। ३१

हे 'वळ्ळै' लता ! तुम पुष्पलता-सदृश बाला सीता के कान ही हो ! और कुछ नहीं। स्वर्णकुण्डल, वक्र ताटंक और मोती-जड़ित स्वर्ण कर्णफूल (विना पहने) त्यागकर आयी हो ! क्या तुम मुझे उस सीता को नहीं दरसाओगी ? मैं दुःखदग्ध हूँ। दिखाओगी तो दुःख बुझाने में सहायता मिलेगी। फिर क्यों और भी मुझसे झगड़ा रखना चाहती हो ? । ३१

पऱ्ऱु पूत्त विरऱ्पदुमम् पव्ळम् बूत्त वडियाळॆऩ्
नॆञ्ञु पूत्त तामरैयि ऩिलय मुवन्दा णिऱम्बूत्त
मञ्ञु पूत्त मऴैयऩैय कुऴलाळ् कण्बोऩ् मणिक्कुवळाय्
नञ्ञु पूत्त तामॆऩ्ऩ नहुवा यॆऩ्ऩै नलिवायो 32

पऱ्ऱु पूत्त–लाक्षारंजित; **विरल्**–उँगलियों; **पतुमम् पवळम् पूत्त**–पद्मों में प्रवाल जटित हों, ऐसे; **अटियाळ्**–चरणों वाली; **ऒऩ् नॆञ्ञु**–मेरे मन के; **पूत्त तामरैयिऩ्**–विकसित कमल पर; **निलयम् उवन्ताळ्**–वास चाव के साथ करनेवाली; **निऱम् पूत्त**–रंगीन; **मञ्ञु पूत्त**–सुन्दरता-भरे; **मऴै अऩैय**–मेघ-सम; **कुऴलाळ्**–केश वाली की; **कण् पोल्**–आँख के सदृश रहनेवाले; **मणि कुवळाय्**–सुन्दर कुवलय-कुसुम; **नञ्ञु पूत्ततु ऒऩ्ऩत**–विष फैलता हो, ऐसा; **नकुवाय्**–हँसी दिखाते हो; **ऒऩ्ऩै नलिवायो**–मुझे त्रास दोगे क्या। ३२

(नीलोत्पल के फूल से श्रीराम कहते हैं—) लाक्षारसरंजित उँगलियों, प्रवाल-जड़ित पद्मों के समान चरणों से भूषित; मेरे मन रूपी विकसित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कमल पर वास चाहनेवाली; और सुन्दर काले रंग के मेघ के समान केश वाली सीता की आँख के समान दृश्यमान नीलोत्पल के फूल ! तुम मुझ पर विष की-सी दृष्टि डालते हुए हँस रहे हो ! मुझे सताओगे क्या ? । ३२

ऎऩ्ऱ यावुयिर्क् किऩ्ऱव नेडविऴ्, कॊऩ्ऱै याविप् पुऱत्तिवै कूऱियाऩ्
पॊऩ्ऱ यादुम् पुहल्हिलै पोलुमाल्, वऩ्ऱ याविलि यॆऩ्ऩ वरुन्दिऩाऩ् 33

ऎऩ्ऱु–ऐसा; अया उयिर्क्किऩ्ऱवऩ्–ठण्डी आहें भरनेवाले; आवि पुऱत्तु–सर के पास; एटु अविऴ् कॊऩ्ऱै–(दलों से पूर्ण) फूलों से युक्त अमलतास तरु; इवै–ये बातें; याऩ् कूऱि–मैं, कहकर; पॊऩ्ऱ–मर जाऊँगा, तब भी; यातुम्–कुछ भी; पुकलकिलै पोलुम्–नहीं कहोगे शायद; आल्–तो; वऩ्–कठोर; तयाविलि–निर्दय हो; ऎऩ्ऩ–कहकर; वरुन्तिऩाऩ्–दुःखी हुए । ३३

इस तरह श्रीराम विलाप करते हुए ठण्डी आहें भरते रहे । फिर उन्होंने सर के पास रहे अमलतास के तरुओं को देखकर कहा कि विकसित पुष्पों से भरे हे अमलतास ! देखो । मैं इस तरह दुखड़ा रोते-रोते मर जाऊँगा । इस स्थिति में मुझे देखकर भी तुम कुछ आश्वासन के वचन नहीं कहते हो । तुम अवश्य कठोर और निर्मम हो । ३३

वार ळित्तिळ माप्पिडि वायिडैक्, कार ळिक्कलु ऴक्करुङ् गैम्मलै
नीर ळिप्पदु नोक्किऩ ऩिऩ्ऱऩऩ्, पेर ळिक्कुप् पिऱन्दविल् लायिऩाऩ् 34

पेर् अळिक्कु–बड़ी दया का; पिऱन्त इल्–जन्मस्थान; आयिऩाऩ्–जो रहे; वार् अळित्तु–बड़े प्रेम का पात्र; इळ मा पिटि वाय् इटै–छोटी आयु की बड़ी हथिनी के मुख में; कार् अळि–काले भ्रमरों के; कलुऴ–तितर-बितर भागते; करुम् कै मलै–काले करि को; नीर् अळिप्पतु–जल पिलाते हुए; नोक्किऩऩ्–देखते हुए (श्रीराम) निऩ्ऱऩऩ्–खड़े रहे । ३४

श्रीराम बड़ी दया के जन्मस्थान थे । उन्होंने एक दृश्य देखा । एक काला हाथी अपनी सूँड़ से जल लेकर अपने गहरे प्रेम का पात्र, हथिनी के मुख में डाल रहा था । तब काले भ्रमर चकित होकर उड़ रहे थे । श्रीराम ने यह दृश्य देखा तो वे स्तब्ध खड़े रह गये । ३४

आण्डव् वळ्ळलै यऩ्बॆऩु मारणि, पूण्ड तम्बि पॊऴुदु कऴिन्ददाल्
ईण्डि रुम्बुऩ ऱोय्नदुऩ् ऩिशैयॆऩ, नीण्ड वऩ्गऴ ऱाऴ्नॆडि योयॆऩ्ऱाऩ् 35

आण्टु–तब; अऩ्पु ऎऩुम्–प्रेम नाम का; आर् अणि पूण्ट–अपूर्व आभरण-धारी; तम्पि–अनुज (ने); अ वळ्ळलै–उन उदार प्रभु को; पॊऴुतु कऴिन्ततु आल्–(दिन का) समय बीत गया, इसलिए; नॆटियोय्–बढ़े हुए (या बड़े यशस्वी); ईण्टु–यहाँ; इरुम् पुऩल् तोय्न्तु–इस बड़े जलाशय में स्नान करके; उऩ् इचै ऎऩ–आपकी कीर्ति के समान; नीण्टवऩ्–लम्बे (सर्वव्यापी); कऴल् ताऴ्–(श्रीमन्नारायण) के चरणों की पूजा करें; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा । ३५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तब प्रेम रूपी उत्तम आभरणधारी लक्ष्मण ने उदार प्रभु श्रीराम से विनय की कि दिन बीत गया। सन्ध्या आ गयी। इसलिए, हे लम्बे (श्रीशरीर के या) यश के धारक ! यहाँ इस जलाशय में स्नान करें और आपके यश के समान सर्वत्र व्याप्त श्रीमन्नारायण की चरण-वन्दना करें। ३५

अरशु मव्वऴि निऩ्ऱरि देहियत्, तिरैशॅय् तीर्त्तमुऱ् जॅय्दव मुण्मैयाल्
वरैशॅय् मामद वारण नाणुऱ, विरैशॅय् पूम्बुऩ लाडलै मेयिऩात् 36

अरचुम्–राजा राम ने भी; अ वऴि निऩ्ऱ–वहाँ से; अरितु एकि–सायास जाकर; अ तिरै चॅय् तीर्त्तमुऱ्–उस तरंगसंकुल सर के जल की; चॅय् तवम्–की हुई तपस्या; उण्मैयाल्–रही, इसलिए; वरै चॅय्–पर्वत-सम; मा मत वारणम्–बहुत मदस्रावी हाथी को भी; नाण् उऱ–लजाते हुए; विरै चॅय् पूम् पुऩल्–सुवासपूर्ण पुष्पों से भरे जल में; आटलै–स्नान में; मेयिऩात्–प्रवृत्त हुए। ३६

राजा राम भी वहाँ से सायास सर के पास गये। तरंग उठानेवाले उस सरोवर के जल का सुकृत था। इसलिए श्रीराम ने उसमें स्नान करना अपनाया। तब पर्वताकार और मदस्रावी गज भी उनको देखकर लजा गया। ऐसा उन्होंने स्नान किया। ३६

नीत्त नीरि नॅडियवऩ् मूऴ्हलुम्, तीत्त कामत् तॅऱुहदिर्त् तीयिऩाल्
काय्त्ति रुम्बैक् करुमहक् कम्मियऩ्, तोय्त्त तण्बुऩ लॉत्तदत् तोयमे 37

नॅटियवऩ्–लम्बोतरे; नीत्तम् नीरिल्–उस बड़े प्रवाह के सर के जल में; मूऴ्कलुम्–(श्रीराम ने) जब स्नान किया; तीत्त–तब उनके शरीर को ताप देनेवाले; कामम्–विरह की; तॅऱु कतिर् तीयिऩाल्–जलती ज्वाला की अग्नि के कारण; अ तोयम्–वह जल; करुमकऩ् कम्मियऩ्–लोहार; इरुम्पै काय्त्तु–लोहे को तपाकर; तोय्त्त–(जिस जल में) डुबोया; तण् पुऩल्–उस ठण्डे जल के; ऑत्ततु–समान बन गया (गरम हो गया)। ३७

जब लम्बे क़द के श्रीराम ने उस जल में स्नान किया, तब उनके शरीर को तपानेवाली विरहाग्नि ने उस जल पर अपना प्रभाव दिखाया। जब लुहार लोहा तपाकर ठण्डे जल में डालता है, तब वह जल गरम हो जाता है। वैसे ही उस सर का जल भी गरम हो गया। ३७

आडिऩा ऩन्ऩमा यरुमऱैहळ् पाडिऩान्
नीडुनीर् मुऩ्ऩैनू ऩॅऱिमुऱैयि ऩेमिताळ्
शूडिनाऩ् मुनिवरैत् तॉऴुदुपूज् जोलैवाय्
माडुताऩ् वैहिऩा ऩॅरिहदिर् वैहिऩाऩ् 38

अऩ्ऩमाय्–हंस का रूप लेकर; अरु मऱैकळ्–अपूर्व वेदों को; पाटिऩाऩ्–जिन्होंने गाया; मुऩ्ऩै नूल् ऩॅऱि मुऱैयिऩ्–(उन श्रीराम ने) प्राचीन शास्त्रों की बतायी विधि के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनुसार; नीटु नीर् आटितान्–विस्तृत जलाशय में स्नान करके; नेमि ताळ् चूटितान्–चक्रधर (विष्णु) देव के चरणों की; चूटितान्–वन्दना की; मुनिवरै तॊऴुतु–मुनियों की पूजा करके; पूम् चोलै वाय्–एक बगीचे में; माटुतान्–एक ओर; वैकितान्–ठहरे; ऍरि कतिर्–जलानेवाला सूर्य भी; वैकितान्–अस्त हुआ। ३८

श्रीराम विष्णु के अवतार थे। विष्णु ने एक बार हंस का अंशावतार लेकर ब्रह्मा को वेद गाकर सिखाये थे। उन्होंने पम्पा सर में प्राचीन शास्त्रोक्त रीति से स्नान करके श्री चक्रधर नारायण के चरणों की पूजा की। फिर वहाँ के मुनियों को नमस्कार करके वे एक बगीचे में गये। उसमें एक ओर ठहरे। तब किरणमाली भी अस्त हुआ। ३८

अन्दियाळ् वन्दुता ऩणुहवे यव्वयिन्
शन्दवार् कॊङ्गैया डऩिमैता ऩायहन्
शिन्दिया नॊन्दुतेय् पॊऴुदवण् शीदनीर्
इन्दुवा नुन्दुवा ऩॆरिहदि रायिऩान् 39

अन्तियाळ्–सन्ध्यादेवी; वन्तु–आकर; अणुकवे–निकट पहुँची; अ वयिन्–तब; नायकन्–नायक; चन्त–सुन्दर; वार्–अँगियाबद्ध; कॊङ्कैयाळ्–स्तनों वाली सीताजी का; ततिमैतान्–अकेलापन; चिन्तिया–सोचकर; नॊन्तु–दुःख से; तेय् पॊऴुतु–जब विगलित हुए, तब; अवण्–वहाँ; चीत नीर्–(समुद्र के) शीतल जल को; वान् उन्तुवान्–आकाश में उछालनेवाला; इन्तु–चन्द्र; ऍरि कतिर्–तापक सूर्य(-सा); आयितान्–बन गया (श्रीराम के लिए।)। ३९

सन्ध्या देवी आ पहुँची। तब श्रीराम को सीतादेवी का स्मरण आया। नायक श्रीराम सुन्दर अँगियाबद्ध स्तनों वाली सीताजी का निस्सहाय एकाकीपन स्मरण करके दुःखी हुए। दुःख से कृश होने लगे। तब चन्द्र उदित हुआ। वह शीतल समुद्र-जल को आकाश तक उछालने वाला है। पर श्रीराम के लिए वह जलानेवाले सूर्य के समान बहुत गरम लगा। ३९

पूवॊडुङ् गिऩविरवु पुळ्ळॊडुङ् गिऩपॊरुविल्
मावॊडुङ् गिऩमरऩु मिलैयॊडुङ् गिऩकिळिहळ्
नावॊडुङ् गिऩमयिल्ह णडमॊडुङ् गिऩकुयिल्हळ्
कूवॊडुङ् गिऩपिळिऱु कुरलॊडुङ् गिऩकळिऱु 40

पू ऒटुङ्किऩ–फूल बन्द हुए; विरवु–अनेक प्रकार के मिश्रित; पुळ्–पक्षी; ऒटुङ्किऩ–(जाकर) दुबक गये; पॊरुवु इल्–उपमाहीन; मा ऒटुङ्किऩ–प्राणी छिप गये; मरऩुम् इलै ऒटुङ्किऩ–तरुओं के पत्ते भी संकुचित हो गए; किळिकळ्–शुकों की; ना–जिह्वाएँ; ऒटुङ्किऩ–बन्द हो गयीं; मयिल्कळ्–मोरों का; नटम्–नाच; ऒटुङ्किऩ–बन्द हुए; कुयिल्कळ्–कोयलों की; कू–कूकें; ऒटुङ्किऩ–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बन्द हुईं; कळिऱु–पुरुषगजों के; पिळिऱु कुरल्–चिंघाड़ने की ध्वनियाँ; ऑटुङ्कित–बन्द हो रहीं। ४०

रात का आगमन हो गया। इसलिए उस सर के फूल सब बन्द हो गये। विविध तरह के पक्षी अपने-अपने घोंसलों में जाकर दुबक गये। उपमाहीन अनेक जानवर जाकर अपने-अपने स्थानों में बन्द हो गये। बड़े पेड़ों के पत्ते बन्द हुए। शुकों की बोली, मोरों का नाच, कोयलों की कूकें, हाथियों की चिंघाड़ —सब बन्द हो रहीं। ४०

मण्डुयिन् ऱ्ऱनिलैय मलैतुयिन् ऱ्ऱमऱुविल्
पण्डुयिन् ऱ्ऱविरवु पनितुयिन् ऱ्ऱपहरुम्
विण्डुयिन् ऱ्ऱहळुदुम् विळिदुयिन् ऱ्ऱपळुविल्
कण्डुयिन् ऱिलऩॆडिय कडऱुयिन् ऱ्ऱवॊर्हळिऱु 41

मण् तुयिन्ऱ्ऱ–पृथ्वी के सब सो गये; निलैय मलै–अचल पर्वत; तुयिन्ऱ्ऱ–सोये; मऱु इल्–निर्मल; पण्–जलाशय; तुयिन्ऱ्ऱ–सो गये; विरवु पनि तुयिन्ऱ्ऱ–व्याप्त हिम भी सो गया; पकरुम् विण्–(बड़ा) कहलानेवाला आकाश भी; तुयिन्ऱ्ऱ–निःशब्द हुए; कळुतुम्–भूतगण ने भी; विळि तुयिन्ऱ्ऱ–आँखें मूंद लीं; नॆटिय कटल्–विशाल (क्षीर-)सागर पर; तुयिन्ऱ् ओर् कळिऱु–निद्रा करनेवाले अप्रतिम हाथी, श्रीराम; पळुतु इल्–निर्मल; कण् तुयिन्ऱिलऩ्–आँखें मूंदकर नहीं सोये। ४१

पृथ्वी, अचल पर्वत, निर्मल जलाशय, सर्वत्र व्याप्त हिम, गौरवान्वित आकाश —सभी निःशब्द हो गये। भूतों ने भी आँखें मूँद लीं। पर क्षीर-सागर पर निद्रा करने के आदी जो थे, गजश्रेष्ठ-तुल्य उन श्रीराम ने अपनी निर्मल आँखें नहीं मूँदीं। ४१

पॊङ्गिमुऱ् ऱियवुणर्वु पुणर्दलुम् पुहैयिऩॊडु
पङ्गमुऱ् ऱ्ऱैयविऩै परिवुऱुम् बडिमुडिविल्
कङ्गुलिऱ् ऱदुकमल मुहमॆडुत् तदुकडलिल्
वॆङ्गदिर्क् कडवुळॆऴ विमलऩ्वॆऩ् दुयरिऩॆऴ 42

मुऱ्ऱिय उणर्वु–पूर्णज्ञान; पॊङ्कि पुणर्तलुम्–प्राप्त होने पर; पुकैयिनॊटु–धुएँ के साथ; पङ्कम् उऱ्ऱ अतैय–पंक मिल गया हो, ऐसा; विऩै–उसके कर्म; परिवु उऱुम्पटि–जैसे नष्ट होते हैं, वैसे; मुटिवु इल्–अनन्त रीति से, लम्बी रही; कङ्कुल्–रात; इऱ्ऱतु–समाप्त हुई; कटलिल्–समुद्र पर; वॆम् कतिर्–गरम किरणों के; कटवुळ् ऍऴ–(सूर्य-)देव उठे; विमलऩ्–विमल प्रभु को; वॆम् तुयरिऩ् ऍऴ–कठोर (विरह-)दुःख से मुक्त कराने के लिए; कमलम्–कमल; मुकम् ऍटुततु–विकसित हुए। ४२

जैसे-तैसे अनन्त लगनेवाली वह रात ऐसे बीती, जैसे सम्पूर्ण ज्ञान के प्राप्त होने पर धुएँ और पंक के मिश्रण के समान रहनेवाला कर्म (पाप) मिट

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जाता है। समुद्र से उष्णकिरण सूर्यदेव उगे। कमल भी विमल विष्णुदेव श्रीराम के दुःख के निवारणार्थ विकसित हुए। ४२

कालैये कडिदुनॅडि देहिऩार् कडल्कविनु
शोलयॅय् मलैतऴुवु काऩऩी णॅऱितॊलैय
आलयेय् तुऴऩियह ऩाडरार् कलियमिऴ्दु
पोलवे युरैशॅय्पुऩ मानैऩा डुदल्पुरिञर् 43

आलै एय् तुऴऩि–इक्षुशालाओं से निकलनेवाली ध्वनि से भरे; अकल् नाटर्–(और) विशाल (कोसल) देश के वे; आर् कलि अमिऴ्तु पोलवे–शब्दायमान सागर से उत्पन्न अमृत के ही समान; उरै चॅय्–बोलनेवाली; पुऩ मानै–वनमृगी (-सी सीताजी) को; नाटुतल् पुरिञर्–खोजने में प्रवृत्त हो; कटल् कवितुम्–समुद्रतुल्य; चोलै एय्–उपवनों से पूर्ण; मलै तऴुवुम्–पर्वतों से मिलित; काऩल् नीळ् नॅऱि–कंकड़ीले और लम्बे मार्ग; तॊलैय–तय करने के विचार से; कालैये–सवेरे ही; कटितु–सवेग; नॅटितु–बहुत दूर; एकिऩार्–गये। ४३

इक्षुशाला से उत्पन्न ध्वनि वाले विशाल कोसल देश के स्वामी दोनों क्षीरसागरोत्पन्न अमृत के समान बोलनेवाली वनमृगी-सी सीतादेवी को खोजने के हेतु सवेग जाने लगे। उन्हें समुद्र-सम विशाल उपवनों से भरे और पर्वत-मिलित कंकड़ीले मार्ग तय करने थे। इसलिए वे उदयकाल में ही बहुत जल्दी-जल्दी बहुत दूर चले गये। ४३

2. अनुमप् पडलम् (हनुमान पटल)

ऍय्तिऩार् शवरिनॅडि देयमाल् वरैयॅळिदिऩ्
नॊय्दिऩे ऱिऩदऩि ऩोऩ्मैहूर् कवियरशु
शॅय्वदोर् हिलऩिवर्ह डॅव्वरा मॅऩवॅरुवि
उय्दुना मनविरॅवि ऩोडिऩाऩ् मलैमुऴैयिऩ् 44

ऍय्तिऩार्–(वैसे जो) गये; चवरि नॅटितु एय–शबरी से साफ़ निर्दिष्ट; माल् वरै अतऩिल्–बड़े पर्वत पर; ऍळितिऩ्–अनायास; नॊय्तिऩ्–शीघ्र; एऱितर्–चढ़े; नोऩ्मै कूर्–क्षमाशील; कवि अरचु–कपिराज (सुग्रीव); इवर्कळ्–ये; तॅव्वर् आम्–शत्रु हैं; ऍऩ वॅरुवि–ऐसा डरकर; चॅय्वतु ओर्किलऩ्–क्या करना, यह न जान कर; नाम् उय्तुम् ऍऩ–हम बच जायँ, यह सोचकर; मलै मुऴैयितिल्–पर्वतगुफा में; विरैविऩ् ओटिऩाऩ्–शीघ्र भागा। ४४

ऐसे जो गये, वे दोनों शबरी द्वारा साफ़ निर्दिष्ट ऋष्यमूक पर्वत पर अनायास और शीघ्रता से चढ़ते चले। उस पर कपिराज सुग्रीव बैठा था। वह क्षमा के साथ उस पर्वत पर रहता था। उसने इन दोनों को देखा तो डर गया कि ये धनुर्धर वीर शत्रु ही हैं। अब क्या करना होगा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

—यह न जानता हुआ वह 'हम बच जायँ' —इस विचार से पर्वत की गुफा की ओर भागने लगा। ४४

कालिऩ्मा मदलैयिवर् काण्मिऩो करुवुडैय
वालिये वलिऩ्वरवि ऩार्हडाम् वरिशिलैयर्
नीलमाल् वरैयऩैयर् नीदियाय् निऩैदियॆऩ
मूलमोर् हिलऩ्मरुहि योडिऩाऩ् मुळैयदऩिऩ् 45

कालिऩ् मा मतलै–पवनदेव के श्रेष्ठ पुत्र; इवर् काण्मिऩ्–इनको देखो; वरि चिलैयर–सबन्ध धनुर्धर; नील माल् वरै अऩैयर्–नीले, बड़े पर्वत से तुल्य हैं; कऱु उटैय–वैर रखनेवाले; वालि एवलिऩ्–वाली की प्रेरणा से; वरविनार्कळ् ताम्–आनेवाले हैं अवश्य; नीतियाय्–नीतिज्ञ; निऩैति–सोचो; ऍऩ–कहकर; मूलम्–हेतु; ओर्किलऩ्–न जानकर; मऱुकि–घबड़ाकर; मुळै अतऩिल्–उस गुफा के अन्दर; ओटिऩाऩ्–दौड़ा। ४५

तब उसने हनुमान से कहा कि पवनदेव के महान पुत्र! इनको निहारो। सबन्ध धनुर्धर, नील पर्वत-सम दृश्यमान —ये अवश्य वैरी वाली की प्रेरणा से ही (हमें तंग करने) आये हैं। नीतिज्ञ मारुति! तुम खूब सोचो! ऐसा कहकर उनके आगमन का हेतु न समझ सकने के कारण घबड़ाहट में पड़कर गुफा के अन्दर भाग गया। ४५

अव्विडत् तवर्मरुहि यञ्जिनॆञ् जळियमैदि
वॆव्विडत् तिऩैमरुहु तेवर्ता ऩवर्वॆरुवत्
तव्विडत् तऩियरुळुन् दाळ्शडैक् कडवुळॆऩ
इव्विडत् तिऩिदिरुमि ऩञ्जलॆऩ् ऱिडैयुदवि 46

अ इटत्तु–वहाँ; अवर्–वे; मऱुकि अञ्चि–घबड़ाते हुए डरकर; नॆञ्चु अळि अमैति–(जब) चित्ताक्रान्त रहे, तब; वॆम् विटत्तिऩै–(सागर-मन्थन के समय प्रकट हुए) भयंकर विष को देखकर; मऱुकु–जो घबड़ाए; तेवर् ताऩवर् वॆरुव–वे देव और दानव भयभीत हुए, तब; तव्विट–डर दूर करने; तऩि अरुळुम्–जिन्होंने अपूर्व कृपा की; ताळ् चटै कटवुळ् ऍऩ–उन प्रलम्ब जटाधारी शिवदेव के समान; इ इटत्तु–यहाँ; इऩिदु इरुमिऩ्–सुख से रहें; अञ्चल्–नहीं डरें; ऍऩ्ऱु–ऐसा; इटै उतवि–बीच में सहायता करके (कहकर)। ४६

उस पर्वत पर सुग्रीव आदि वानरवीर घबड़ाहट के साथ भयातुर हुए। तब सागर-मन्थन के अवसर पर भयंकर विष से भयभीत देवों व दानवों की सहायता में जिन्होंने उसको खाकर कृपा की, उन प्रलंब जटाधारी शिवजी के समान हनुमान उठा। उसने उनको आश्वासन प्रदान किया कि यहीं सुख से रहें। भय मत करें। ४६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अञ्जनैक् कॊऱुशिऱुव ऩञ्जनक् किरियऩैय
मञ्जनैक् कुऱुहियॊरु माणिनऱ् पडिवमॊडु
वॆञ्जिनत् तॊऴिलर्तव मॆय्यर्कैच् चिलैयऱॆऩ
नॆञ्जयिर्त् तयन्मऱैय निऩ्ऱुकऱ् पिऩिऩैयुम् 47

अञ्चनैक्कु ऒरु चिऱुवऩ्–अंजना का अप्रतिम पुत्र हनुमान; ऒरु नल् माणि–एक श्रेष्ठ ब्रह्मचारी के; पटिवमॊटु–रूप में; अञ्चनम् किरि अनैय–अंजनगिरि-तुल्य; मञ्चनै–सुन्दर श्रीराम के; कुऱुकि–पास आकर; अयल् मऱैय निऩ्ऱु–अलग अदृश्य खड़े होकर; वॆम् चिऩ तॊऴिलर्–भयंकर क्रोधी कर्मरत; तव मॆय्यर्–तपस्वी वेश के शरीर वाले; कै चिलैयर्–हाथ में धनु लिये हुए; ऎऩ–यह देखकर; नॆञ्चु अयिर्त्तु–मन में शंका करके; कऱपिऩिऩ्–विद्वत्ता का आधार लेकर; निनैयुम्–विचार करने लगा। ४७

यह कहकर अंजना के अप्रतिम पुत्र ने एक उत्तम ब्रह्मचारी का वेश लिया। वह अंजनगिरि-तुल्य श्रीराम के पास आया, छिपा खड़ा रहा। वे क्रोध से कार्य करनेवाले लगते हैं। पर उनका तपस्वी का वेश है। और हाथ में धनु रखते हैं। यह देखकर हनुमान निश्चय नहीं कर सका कि ये कौन हैं। उसके मन में संशय पैदा हुआ। तब वह अपनी विद्वत्ता से प्राप्त ज्ञान के आधार पर सोचने लगा। ४७

देवरॊप् परुतलैव रामुदऱ् ऱेवरॆऩिऩ्
मूवर्मऱ् ऱिवरिरुवर् मूरिविऱ् कररिवरै
यावरॊप् पवरुलहिऩ् यादिवर्क् करियपॊरुळ्
केवलत् तिवर्निलैमै तेर्वदॆक् किऴमैकॊडु 48

ऒप्पु अरु–उपमाहीन; तेवर् तलैवर् आम्–देवों के प्रधान; मुतल् तेवर् ऎऩिऩ्–आदिदेव हैं तो; अवर् मूवर्–वे तीन हैं; इवर् इरुवर्–ये तो दो हैं; मूरि विल् करर्–बलवान धनु के धारक हैं; उलकिल्–संसार में; इवरै ऒप्पवर्–इनकी समानता करनेवाले; यारे–कौन हैं; इवर्क्कु–इनके लिए; अरिय–असाध्य; पॊरुळ् यातु–पदार्थ क्या है; केवलत्तु इवर् निलैमै–अपूर्व इनकी स्थिति; ऎ किऴमै कॊटु–किसके नाते से; तेर्वतु–जाना जायगा। ४८

ये अनुपम देवों के प्रधान त्रिदेव नहीं हो सकते। क्योंकि वे तीन हैं। ये तो दो ही हैं। इनके हाथ में कठोर धनु है। संसार में इनकी टक्कर का कौन मिल सकता है? ये खोजते फिरें, ऐसी इनके लिए असाध्य वस्तु क्या है? निपट अद्वितीय इनका समाचार किस नाते से जाना जायगा? । ४८

शिन्दैयिऱ् चिऱिदुदुयर् शेर्वुऱत् तॆरुमरलिऩ्
नॊन्दयर्त् तऩरॆऩिऩु नोवुऱुञ् जिऱियरलर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्दरत् तमरर्शिऱु मानिडप् पडिवर्मयर्
शिन्दनैक् कुरियपॊरु डेडुदऱ् कुऱुनिलैयर् 49

चिन्तैयिल्–मन में; चिऱितु तुयर्–थोड़ी ग्लानि; चेर्वु उऱ–उठी, इसलिए; तॆरुमरलिन्–उस गड़बड़ी में; नॊन्तु अयर्त्तनर्–पीड़ित होकर थके हैं; ऎनिनुम्–तो भी; नोवु उऱुम्–अभिभूत होनेवाले; चिऱियर् अलर्–शक्तिहीन नहीं हैं; अन्तरत्तु अमरर्–आकाश के अमर; चिऱु मानिट पटिवर्–छोटे मानवरूप में आये हैं; मयर्–मोहक; चिन्तनैक्कु उरिय–चिन्ता योग्य; पॊरुळ्–पदार्थ कोई; तेटुतऱ्कु उऱु–खोजने में प्रवृत्त; निलैयर्–स्थिति वाले हैं। ४९

उनके मन में थोड़ी ग्लानि अवश्य हुई है। घबड़ाहट से ये अवश्य कुछ क्लांत हैं। तो भी बिल्कुल अभिभूत हो जायँ, ऐसी ओछी प्रकृति या शक्ति के भी नहीं हैं। इसलिए आकाशवासी अमर देव ही कम महत्त्व के मानवी रूप लेकर आये हैं। उनके मन को मोहनेवाली और चिन्ता के योग्य किसी वस्तु की खोज में लगे रहनेवाले से लगते हैं। ४९

दरुममुन् दहवुमिवै तनमॆनुन् दहैयरिवर्
करुममुम् पिऱिदॊर्पॊरुळ् करुदियन् ऱदुकरुदिन्
अरुमरुन् दनैयदिडै यऴिवुवन् दुळददनै
इरुमरुङ् गिनुनॆडिदु तुरुवुहिन् ऱनरिवर्हळ् 50

इवर्–ये; तरुममुम् तकवुम् इवै–धर्म और शालीनता, इनको; ततम् ऎनुम्–धन माननेवाले; तकैयर्–स्वभाव के हैं; करुममुम्–मनोरथ (कार्य) भी; पिऱितु ओर् पॊरुळ्–दूसरी वस्तु; करुति अन्ऱु–चाहकर नहीं; अतु करुतिन्–उसको सोचें, तो; इवर्कळ्–ये; अरु मरुन्तु अनैयतु–उत्तम देवामृत-सम; इटै अऴिवु वन्तु उळतु–(कुछ) बीच में खो गया है; अतनै–उसको; इरु मरुङ्किनुम्–(दायें, बायें) दोनों ओर; नॆटितु–बहुत दूर तक; तुरुवुकिन्ऱनर्–(छानकर) खोजते हैं। ५०

ये धर्म और गौरव को धन माननेवाले लगते हैं। इनके मनोरथ का कार्य भी किसी अन्य वस्तु की चाह का नहीं लगता। देवामृत-सा कोई पदार्थ बीच में खो गया है। उसको वे दायें और बायें बहुत दूर तक खोजते आते हैं। ५०

कदमॆनुम् बॊरुण्मैयिलर् करुणैयिन् कडलनैयर्
इदमॆनुम् पॊरुळलदॊ रियल्बुणर्न् दिलरिवर्हळ्
शदमनञ् जुऱुनिलैयर् तरुमनञ् जुऱुशरिदर्
मदननञ् जुऱुवडिवर् मऱलियञ् जुऱुविऱलर् 51

कतम् ऎनुम् पॊरुण्मै इलर्–वैरी स्वभाव के नहीं हैं; करुणैयिन् कटल् अनैयर्–करुणा के सागर के समान हैं; इतम् ऎनुम् पॊरुळ् अलतु–हितार्थ से इतर; इवर्कळ्–ये; ओर् इयल्पु–एक गुण; उणर्न्तिलर्–नहीं जानते (रखते); चतमन् अञ्चुऱु–शतमख भी डरे; निलैयर्–ऐसे शानदार; तरुमन् अञ्चुऱु–धर्मदेवता भी डरें, ऐसे;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चरितर्–चरित्र वाले; मतऩ्ऩ्–मन्मथ; अञ्चुऱु–डरे, ऐसा; वटिवर्–सौंदर्यवान; मऱलि–यम भी; अञ्चुऱु–डरे, ऐसा; विऱलर्–पराक्रमी । ५१

ये वैर रखनेवाले लोगों का-सा क्रोध नहीं रखते । करुणा के समुद्र के समान हैं । परहित को छोड़कर कोई दूसरा अर्थ चाहनेवाले स्वभाव के नहीं लगते । इन्द्र भी इनका पौरुष देखकर डरेगा । धर्मदेवता भी इनका चरित्र देखकर डरेगा । मदन इनका रूप देखकर डरेगा । यम भी डरे ऐसी वीरता के हैं ये । ५१

ऍऩ्बऩ पलवु मॅण्णि यिरुवरै यॅय्द नोक्कि
अऩ्बिऩ ऩुरुहु हिऩ्ऱ वुळ्ळत्त ऩार्वत् तोरै
मुऩ्बिरिन् दऩैयर् तम्मै मुऩ्ऩिऩा ऩॅऩ्ऩ निऩ्ऱान्
तऩ्बॅरुङ् गुणत्ताऱ् ऱऩ्ऩैत् तानल दॊप्पि लादान् 52

तऩ् पॅरुम् कुणत्ताल्–अपने महान गुणों के कारण; तऩ्ऩै तान् अलतु–आपकी आपको छोड़; ऒप्पु इलातान्–उपमा नहीं रखनेवाले; ऍऩ्पऩ पलवुम्–ऐसे अनेक; ऍण्णि–विचार करके; इरुवरै–दोनों के; ऍय्त नोक्कि–समीप जाने का निश्चय करके; अऩ्पिऩोटु–प्रेम के साथ; उरुकुकिऩ्ऱ–पसीजनेवाले; उळ्ळत्तऩ्–मन का; आर्वत्तोरै–प्रियों से; मुऩ् पिरिन्तु–पहले अलग होकर; अऩैयर् तम्मै–उनसे; मुऩ्ऩिऩान्–मिले; ऍऩ्ऩ–जैसे; निऩ्ऱान्–खड़ा रहा । ५२

अपने उन्नत गुणों के कारण अपने आप को छोड़ कोई दूसरी उपमा न रखनेवाले हनुमान ने इस तरह अनेक प्रकार से सोचकर उनके पास जाना चाहा । प्रेमार्त मन के साथ विछोह के बाद पुनः प्रियों से मिलनेवाले के समान उनके सामने खड़ा रहा । ५२

तऩ्गऩ्ऱु कण्ड वऩ्ऩ तऩ्मैय तरुहट् पेळ्वाय्
मिऩ्गऩ्ऱु मॅयिऱ्ऱुक् कोण्मा वेङ्गैयॅऩ् ऱिऩैय वेयुम्
पिऩ्शॅऩ्ऱु कादल् कूरप् पेळ्हणित् तिरङ्गु हिऩ्ऱ
ऍऩ्गऩ्ऱु हिऩ्ऱ वॅण्णिऱ् पऱ्पल विवरै यम्मा 53

तऱुकण्–निर्भयता; पेळ् वाय्–(और) खुला (बड़ा) मुख; मिऩ् कऩ्ऱुम्–बिजली को विह्वल करनेवाले; ऍयिऱ्ऱु–दाँत, इनसे युक्त; कोळ् मा–सिंह; वेङ्कै–व्याघ्र; ऍऩ्ऱु इऩैयवेयुम्–कथित ये भी; तऩ् कऩ्ऱु कण्टु अऩ्ऩ–अपने वत्सों को देखा हो, ऐसे; तऩ्मैय–(वात्सल्य-)गुण के होकर; पिऩ् चॅऩ्ऱु–उनके पीछे जाकर; कातल् कूर–प्रेमाधिक्य के साथ; पेळ्कणित्तु–आँखें मूँदकर; इरङ्कुकिऩ्ऱ–अनुताप दिखाते हैं; इवरै–इन्हें; पल्पल ऍण्णि–अनेक प्रकार से मानकर; ऍऩ् कऩ्ऱुकिऩ्ऱ–क्यों अनुताप करते हैं; अम्मा–हाय री माँ । ५३

(हनुमान ने और भी देखा ।) बिजली को भी मात देनेवाले रूप से प्रकाशमय दाँतों वाले अपने मुख खोले सिंह और व्याघ्र आदि सहस्र

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जानवर भी उनको अपने वत्सों को जैसे वात्सल्य के साथ देखते और आँखें मूँदकर रंज प्रकट करते हैं। इनके सम्बन्ध में अनेक प्रकार से सोचकर ये क्यों ऐसे रंज दिखाते हैं ? । ५३

मयिऩ्मुदऱ् पऱवै यॅल्ला मणिनिऱत् तिवर्दम् मेऩि
वॅयिलुऱऱ् किरङ्गि मीदाय् विरिशिऱैप् पन्दर् नीङ्गा
इयल्वहुत् तॅय्दु हिऩ्ऱ विऩमुहिऱ् कणङ्ग ळेङ्गुम्
पयिल्वुऱत् तिवलै शिऩ्दिप् पयप्पयत् ताळुम् पाङ्गर् 54

मयिल् मुतल्–मयूर आदि; पऱवै ॲल्लाम्–खग सब; मणि निऱत्तु–मनोरम रंगों के; इवर् तम् मेति–इनके श्रीशरीर पर; वॅयिल् उऱऱ्कु–धूप पड़ेगी, इसकी; इरङ्कि–चिन्ता करके; मीतु आय्–इनके ऊपर जाकर; विरि चिऱै–खुले पंखों का; पन्तर् नीङ्का–वितान न छोड़ें, इस तरह; इयल् वकुत्तु–सुन्दर ढंग से रचना करके; ॲय्तुकिऩ्ऱ–इनके साथ जाते हैं; इऩ मुकिल् कणङ्कळ्–श्रेष्ठ मेघों के समूह; ॲङ्कुम्–सब स्थानों पर; पयिल्वु उऱ–(इनसे) लगे रहकर; तिवलै चिऩ्ति–बूंदें गिराते हुए; पय पय–धीरे-धीरे; पाङ्कर–इनके समीप; ताळुम्–नीचे-नीचे जाते हैं। ५४

इन सुन्दरवर्ण वीरों के शरीर पर धूप लगती देखकर मयूर आदि पक्षी दुःखी हैं। वे इनके ऊपर अपने पंख फैलाकर वितान-सा बनाये उनके साथ-साथ इस रीति से चलते हैं कि वे उस वितान के नीचे से अलग न हो जायँ। श्रेष्ठ मेघवृन्द भी, ये जहाँ-जहाँ जाते हैं, वहाँ-वहाँ छोटी बूँदें गिराते हुए उनके साथ-साथ धीरे-धीरे जाते हैं। वे नीचे-नीचे ही जाते हैं। ५४

❀ कायॅरि कऩलुङ् गऱ्कळ् कळ्ळुडै मलरे पोलत्
तूयशॅङ् गमल पादन् दोय्दॊऱुङ् गुळैन्दु तोऩ्ऱुम्
पोयिऩ तिशैह डोऱु मरऩॊडु पुल्लु मॅल्लाम्
शाय्वुऱुन् दॊळुव पोलिङ् गिवर्हळो दरुम मावार् 55

काय् ॲरि कऩलुम्–जलती आग के समान तपनेवाले; कऱ्कळ्–कंकड़ आदि; तूय–पवित्र; चॅम् कमल पातम्–लाल चरण-कमलों के; तोय् तॊरुम्–लगते-लगते; कळ् उटै मलरे पोल–मधु-भरे पुष्पों के समान; कुळैन्तु तोऩ्ऱुम्–मृदुल बन जाते हैं; पोयिऩ तिचैकळ् तोऱुम्–ये जहाँ-जहाँ जाते हैं, उन सभी दिशाओं में; मरऩ् ऒडु पुल्लुम् ॲल्लाम्–तरुओं के साथ घास आदि सभी; इङ्कु तॊळुव पोल्–इस ओर प्रणाम करते जैसे; चाय्वुऱुम्–नत रहते हैं; तरुमम् आवार्–ये धर्ममूर्ति हैं; इवर्कळो–ये, क्या। ५५

(और भी विस्मयकारी बातों को देखता है हनुमान।) कंकड़, जो जलती अग्नि के समान जलाते हैं, इनके पवित्र और लाल कमल-से चरण लगते हैं तो शहद-भरे फूलों के समान कोमल हो जाते हैं। वे जिन-जिन दिशाओं में जाते हैं, वहाँ रहनेवाले तरु, घास आदि पादप इन्हीं की ओर झुक जाते हैं, मानो वे इनको प्रणाम कर रहे हों। ५५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ तुऩ्बिऩैत् तॊडक्कु मायत् तॊल्विऩै तुडैत्तु नीक्कित्
तॆऩ्बुलत् तऩ्ऱि मीळा नॆऱियुय्क्कुन् देव रोताम्
ऎऩ्बॆऩक् कुरुहु हिऩ्ऱ दिवर्हिऩ्ऱ दळविल् कादल्
अऩ्बिऩुक् कवदि यिल्लै यडैवॆऩ्गॊ लऱिद ऱेऱ्ऱेऩ् 56

तुऩ्पिऩै–कष्टों को; तॊटक्कुम्–शृंखला में देनेवाले; माय तॊल् विऩै–मायाजनित कर्म को; तुटैत्तु नीक्कि–पोंछ मिटाकर; तॆऩ् पुलत्तु अऩ्ऱि–दक्षिण में (यम) लोक न भेजकर; मीळा नॆऱि–आवर्त्तनहीन, मोक्षमार्ग में; उय्क्कुम्–पहुँचानेवाले; तेवरो ताम्–देव हैं क्या; ऎऩ्पु–हड्डियाँ; ऎऩक्कु–मेरी; उरुकुकिऩ्ऱ–पानी हो जाती हैं; अळविल् कातल्–अपार स्नेह; इवर्किऩ्ऱतु–उठता है; अऩ्पिऩुक्कु–प्रेम का; अवति इल्लै–ठिकाना नहीं रहता; अटैवु ऎऩ् कॊल्–उपलब्धि क्या होगी; अऱितल् तेऱ्ऱेऩ्–जान नहीं पाता। ५६

(हनुमान अनुभव करता है कि उसके तन-मन में एक अगाध दैवी प्रेम व्याप्त हो रहा है।) आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक दुःखों को शृंखला में देनेवाले हैं पूर्वकृत कर्म। उनका नाश करके, दक्षिण के यमलोक में जाने से बचाते हुए मोक्षलोक में, जहाँ से लौटना नहीं होता, पहुँचना हो तो आदि परमात्मा देवों की कृपा से ही वह साध्य है। (हनुमान पूछता है कि) क्या ये ही वे देव हैं ? वह कहता है कि मेरी हड्डियाँ जलप्राय हो रही हैं। अपार प्रेम उमड़ आता है। इनके प्रति उठनेवाले प्रेम का ठिकाना नहीं रहता। इसके फलस्वरूप क्या ही सौभाग्य जागने वाला है ? वह जान नहीं पाता। ५६

❀ इव्वऴि यॆण्णि याण्डव् विरुवरु मॆय्द लोडुम्
शॆव्वऴि युळ्ळत् तानुन् दॆरिवुऱ वॆदिर्शॆऩ् ऱॆय्दिक्
कव्वैयिऩ् ऱाह नुङ्गळ् वरवॆऩक् करुणै योनुम्
ऎव्वऴि नीङ्गि योय्नी यारॆऩ वियम्ब लुऱ्ऱान् 57

चॆम् वऴि उळ्ळत्तानुम्–नेकमार्गगामी मन के हनुमान (के) भी; इ वऴि ऎण्णि–इस तरह सोचकर; आण्टु–वहाँ; अ इरुवरुम्–उन दोनों के; ऎय्तलोटुम्–आने पर; ऎतिर् चॆऩ्ऱु–सामने जाकर; तॆरिवु उऱ ऎय्ति–प्रकट रूप से पास पहुंचकर; नुङ्कळ् वरवु–आपका आगमन; कव्वै इऩ्ऱु–अमंगलरहित (शुभ); आक–हो; ऎऩ–कहने पर; करुणैयोनुम्–कृपालु (के) भी; नी–तुम; ऎ वऴि–कहाँ से; नीङ्कियोय्–आनेवाले हो; यार्–कौन; ऎऩ–पूछने पर; इयम्पल् उऱ्ऱान्–(हनुमान) बोलने लगा। ५७

हनुमान नेकमन था। वह इस तरह सोचता रहा। तब श्रीराम और लक्ष्मण उसके पास आ गये। हनुमान उनके पास प्रकट होकर उनके सामने जा खड़ा हुआ और अभिनन्दन-वचन बोला कि आपका आगमन अशुभहीन (शुभ) हो। कृपालु श्रीराम ने पूछा कि तुम कहाँ से आ रहे हो और कौन हो ? हनुमान इसका उत्तर यों देने लगा। ५७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ मऱ्जॅऩत् तिरण्ड कोल मेऩिय महळिर्क् कॅल्लाम्
नऱ्जॅऩत् तहैय वाहि नळिरिरुम् बऩिक्कुत् तेम्बाक्
कऱ्जमॉत् तलर्न्द शॅय्य कण्णयान् काऱ्ऱिऩ् वेन्दर्
कऱ्जऩै वयिऱ्ऱिल् वन्दे नाममु मनुम नॅऩ्बेऩ् 58

मऱ्चु ऍऩ–मेघ-सम; तिरण्ट कोल–अधिक सुन्दर; मेऩिय–शरीर वाले; मकळिर्क्कु ऍल्लाम्–सभी स्त्रियों के लिए (जो आप पर दृष्टि डालती हैं); नऱ्चु ऍऩ–विष के-से; तकैय आकि–स्वभाव की बनकर; नळिर् इरुम् पऩिक्कु–शीतल और कड़े हिम के सामने भी; तेम्पा–न मुरझानेवाले; कऱ्चम् ऑत्तु–कमल के समान; अलर्न्त–विकसित; चॅय्य कण्ण–लाल आँखों वाले; यान्–मैं; काऱ्ऱिऩ्–वेन्तऱ्कु–वायुदेव का; अऱ्चऩै वयिऱ्ऱिल्–अंजना के गर्भ में; वन्तेऩ्–उत्पन्न हुआ (पुत्र) हूँ; नाममुम्–नाम भी; अनुमन्–हनुमान; ऍऩ्पेऩ्–कहा जाता हूँ। ५८

बहुत ही सुन्दर मेघवर्ण ! ऐसी आँखों वाले, जो सभी दर्शक स्त्रियों के लिए विष के समान हैं और शीतल ओस के पड़ने पर भी न मुरझाने वाले कमल के समान विकसित और लाल हैं ! मैं वायुदेव का अंजना के गर्भ से आया पुत्र हूँ। मेरा नाम हनुमान है। ५८

❀ इम्मलै यिरुन्दु वाऴु मॅरिहदिर्प् परिदिच् चॅल्वन्
शॅम्मलुक् केवल् शॅय्वेऩ् ऱेवनुम् वरवु नोक्कि
विम्मलुऱ् ऱऩैया ऩेव विऩविय वन्दे नॅऩ्ऱाऩ्
ऍम्मलैक् कुलमुन् दाऴ विशैशुमन् दॅऴुन्द तोळाऩ् 59

इचै चुमन्तु–कीर्ति धारण कर; ऍ मलै कुलमुम्–किसी भी पर्वतकुल को; ताऴ–नीचा दिखाते हुए; ऍऴुन्त तोळाऩ्–उन्नत उठे कंधों वाले (हनुमान) ने; इ मलै–इस पर्वत पर; इरुन्तु वाऴुम्–रहकर वास करनेवाले; ऍरि कतिर्–गरम किरणों के; परिति–सूर्य के; चॅल्वऩ्–प्यारे पुत्र; चॅम्मलुक्कु–प्रभु (सुग्रीव) का; एवल् चॅय्वेऩ्–आज्ञाकारी हूँ; तेव–भगवान; नुम् वरवु नोक्कि–आपका आना देखकर; अऩैयाऩ्–उनके; विम्मल् उऱ्ऱु–घबड़ाकर; एव–प्रेरित करने पर; विऩविय–पूछने के लिए; वन्तेऩ्–आया; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ५९

किसी भी पर्वतकुल को मात देनेवाली रीति से उन्नत और कीर्तिभार-वाही कन्धों के हनुमान ने आगे कहा कि इस पर्वत पर गरम किरण-माली सूर्यदेव का पुत्र वास कर रहे हैं। उनका मैं सेवक हूँ और उनकी आज्ञाएँ मान रहा हूँ। आपका आगमन देखकर वे घबड़ा गये। उनसे प्रेरित होकर मैं आपसे आपके सम्बन्ध में पूछने आया हूँ। ५९

❀ माऱ्ऱमः(ह्) दुरैत्त लोडुम् वरिशिलैक् कुरिशिऩ् मैन्दऩ्
तेऱ्ऱमुऱ् ऱिवऩि नूङ्गुच् चॅवियो रिऩ्मै तेऱि
आऱ्ऱलु निऱैवुङ् गल्वि यमैदियु मऱिवु मॅऩ्ऩुम्
वेऱ्ऱुमै यिवऩो डिल्लै यामॅऩ विळम्ब लुऱ्ऱाऩ् 60

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मार्ऱम्–उत्तर; अ.ऱ्तु–वह; उरैत्तलोटुम्–कहने पर; वरि चिलै–सबन्ध धनु के; कुरिचिल् मैन्तन्–चक्रवर्ती-कुमार; तेऱ्ऱम् उऱ्ऱु–आश्वस्त होकर; इवनिन् ऊङ्कु–इससे बढ़कर; चॆव्वियोर् इन्मै–श्रेष्ठ का अभाव; तेऱि–निश्चित रूप से जानकर; आऱ्ऱलुम्–पराक्रम; निऱैवुम्–गुणपूर्णता; कल्वि अमैतियुम्–विद्या से प्राप्त विनय; अऱिवुम्–और ज्ञान; ऍन्नुम्–आदि ये गुण; इवन्नोटु वेऱ्ऱुमै इल्लै आम्–इससे परे नहीं हैं; ऍन्न–सोचकर; विळम्पल् उऱ्ऱान्–(लक्ष्मण से) बोलने लगे। ६०

हनुमान ने यह उत्तर दिया तो सबन्ध धनुर्धर चक्रवर्तीतनय श्रीराम को विश्वास हो गया। इससे बढ़कर उत्तम कोई नहीं होगा। यह निश्चय हुआ। पराक्रम, गुणपूर्णता, विद्या से प्राप्त विनय और ज्ञान —ये विशेषताएँ इससे पृथक् नहीं होंगी। यह धारणा बना लेकर श्रीराम लक्ष्मण से यों बोले। ६०

❀ इल्लाद वुलहत् तॆङ्गु मिङ्गिव निशैहळ् कूरक्
कल्लाद कलैयुम् वेदक् कडलुमे यॆन्नुङ् गाट्चि
शॊल्लाले तोन्ऱिऱ् ऱन्ऱे यार्कॊलिच् चॊल्लिन् शॆल्वन्
विल्लार्तो ळिळैय वीर विरिञ्जनो विडैवल् लानो 61

इङ्कु–इस पृथ्वी में; इचैकळ् कूर–कीर्ति बढ़े, ऐसा; इवन् कल्लात–इसने जो नहीं सीखे; कलैयुम्–शास्त्र और; वेत कटलुम्–वेदों का सागर; उलकत्तु ऍङ्कुमे–संसार में कहीं; इल्लात–नहीं होंगे; ऍन्नुम्–इसका; काट्चि–प्रत्यक्ष प्रमाण; चॊल्लाले तोन्ऱिऱ्ऱु–इसके वचन से मिल जाता है; अन्ऱे–न; इ–यह; चॊल्लिन् चॆल्वन्–वाग्देवी-पुत्र (वचनसमर्थ); यार् कॊल्–कौन होगा; विल् आर् तोळ्–धनुधारी कन्धों के; इळैय वीर–छोटे वीर; विरिञ्चनो–विरंचि है; विटै वल्लानो–या ऋषभवाहन शिव हैं। ६१

धनुधारी भुजा वाले छोटे वीर! इस संसार में ऐसे शास्त्र या वेद-सागर नहीं हैं, जो इसने नहीं सीखे हैं। इससे उसकी कीर्ति विवर्धित रहती है। उसके वचन इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। है न यह बात? यह सरस्वतीपुत्र (भाषण-चतुर) कौन होगा? ब्रह्मदेव होगा या ऋषभ-वाहन समर्थ शिवजी ही होगा? । ६१

माणियाम् बडिव मन्ऱु मऱ्ऱिवन् वडिव मैन्द
आणियिव् वुलहुक् कॆल्ला मॆन्नला माऱ्ऱऱ् केऱ्ऱ
शेणुयर् पॆरुमै तन्नैच् चिक्कऱत् तॆळिन्देन् पिन्नर्क्
काणुदि मॆय्म्मै यॆन्ऱु तम्बिक्कुक् कळ्ऱिक् कण्णन् 62

मैन्त–तात; इवन् वटिवम्–इसका सच्चा रूप; माणियाम् पटिवम् अन्ऱु–ब्रह्मचारी का रूप नहीं है; मऱ्ऱु–फिर; इ–इस; उलकुक्कु ऍल्लाम्–सारे संसार के लिए; आणि ऍन्नलाम्–धुर कह सकते हैं; आऱ्ऱऱ्कु एऱ्ऱ–इसके पराक्रम के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनुरूप; चेण् उयर्–बहुत ही उत्कृष्ट; पॅरुमै तन्नै–गौरव को; चिक्कु अऱ्–संशयहीन रीति से; तॅळिन्तेन्–जान गया; पिन्तर्–बाद; मॅय्म्मै–सच्चाई; काणुति–देखोगे; ऍन्ऱु–ऐसा; तम्पिक्कु–भाई को; कण्णन्–सबके नेत्रस्वरूप श्रीराम; कळऱि–कहकर। ६२

तात ! तुम जो ब्रह्मचारी का इसका वेश देख रहे हो, वह उसका सच्चा रूप नहीं है। फिर वह इस सारे संसार का धुर है ! इसका पराक्रम और उसके अनुरूप उसकी श्रेष्ठता —इनको मैं साफ़ पहचान रहा हूँ। तुम भी बाद उसको देखोगे। यह लक्ष्मण से कहकर श्रीराम—। ६२

❀ ऍव्वळि यिरुन्दान् शॊन्न कविक्कुलत् तरशन् याङ्गळ्
अव्वळि यवनैक् काणु मरुत्तियि नणुह् वन्देम्
इव्वळि निन्नै युऱ्ऱ वॆमक्कुनिन् निन्शॊ लन्न
शॆव्वळि युळ्ळत् तानैक् काट्टुदि तॆरिय वॆन्ऱान् 63

चॊन्न–(तुमसे) उक्त; कवि कुलत्तु अरचन्–कपिकुलाधिपति; ऍ वळि इरुन्तान्–किस स्थान पर रहते हैं; याङ्कळ्–हम; अ वळि–वहाँ (जाकर); अवनै काणुम्–उनको देखेंगे (उनसे मिलेंगे); अरुत्तियिन्–चाह के साथ; अणुक वन्तेम्–मिलने आये हैं; इ वळि–यहाँ; निन्नै उऱ्ऱ–तुमसे मिलकर; ऍमक्कु–हमें; निन् इन् चॊल् अन्न–तुम्हारे ही मधुर वचन के समान; चॆम् वळि उळ्ळत्तानै–सीधे मन के उनको; तॆरिय–परिचित कराते हुए; काट्टुति–दरसाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ६३

हनुमान से बोले। उक्त वानरराज कहाँ हैं ? हम उन्हीं को उधर जाकर मिलने की उत्कंठा लेकर आये हैं। अब तुम हमें मिल गये हो। तुम्हारे मधुर वचन के समान ही मधुर-स्वभाव उनसे हमें मिला दो और परिचय करा दो। उन्हें दरसाओ। ६३

मादिरप् पॊरुप्पो डोङ्गि वरम्बिला वुलहिन् मऱ्ऱिप्
पूदरप् पुयत्तु वीरर् नुम्मॊक्कुम् बुनिदर् यारे
आदरित् तवनैक् काण्डऱ् कणुहिनि रॆन्नि नन्नान्
तीदवित् तरिदिऱ् चॆय्द शॆय्दवच् चॆल्व नन्ऱे 64

मातिर पॊरुप्पोटु–दिशाओं को घेरकर रहनेवाले (चक्रवाल गिरि) के साथ; ओङ्कि–समान रूप से उन्नत; वरम्पु इला–निस्सीम; उलकिन्–लोक में; इ–यहाँ के; पूतर पुयत्तु–भूधर-सम कन्धों के; वीरर्–वीर; नुम् ऒक्कुम्–आपके समान; पुनितर्–पवित्र पुरुष; यारे–और कौन हैं; अवनै काण्टऱ्कु–उनको देखने के लिए; आतरित्तु–चाव के साथ; अणुकिनिर् ऍन्नितन्–पधारे हों तो; अन्नान्–वे; तीतु अवित्तु–पाप मिटाकर; अरितिल् चॆय्त–कष्ट के साथ कृत; चॆय्तव चॆल्वम्–कर्तव्य तपस्या का धन; नन्ऱे–बड़ा अच्छा है ही। ६४

(हनुमान श्रीराम और लक्ष्मण से शिष्टता के साथ बोला।) दिशाओं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को घेरते हुए चक्रवाल पर्वत जो है, उनके साथ-साथ और उतने ही उन्नत बढ़े हुए भूधर-तुल्य कन्धों वाले वीर ! आपके समान पवित्र पुरुष दूसरे कौन होंगे ? यह बात है कि आप स्वयं उनसे मिलने की चाह लेकर पधारे हैं, तो पाप शान्त करते हुए उन्होंने जो कर्तव्य तपस्या की है वह भाग्य-धन निश्चय ही श्रेष्ठ है ! । ६४

इरवितन् पुदल्वन् रन्नै यिन्दिरन् पुदल्व नॅन्नुम्
परिविलन् शीऱप् पोन्दु परुवरऱ् कॊरु वनाहि
अरुवियङ् गुन्ऱि नॅम्मो डिरुन्दन नवन्बाऱ् चॅल्वम्
वरुवदो रमैविन् वन्दीर् वरैयिनुम् वळर्न्द तोळीर् 65

वरैयिनुम् वळर्न्त तोळीर्–पर्वतों से भी उन्नत कन्धों वाले; इरवि तन् पुतल्वन् तन्नै–रवि-कुमार पर; इन्तिरन् पुतल्वन् ऍन्नुम्–इन्द्र के कुमार; परिवु इलन्–दयाहीन; चीऱ–(वालि) के क्रोध करने पर; परुवरऱ्कु ऒरुवन् आकि–दुःखसंतप्त निस्सहाय एकाकी बनकर; अरुवि अम् कुन्ऱिल्–नदीसहित (ऋष्यमूक) पर्वत पर; पोन्तु–आकर; ऍम्मोटु–हमारे साथ; इरुन्ततन्–रहते हैं; अवन् पाल्–उनके पास; चॅलवम् वरुवतु–संपत्ति आती हो; ओर् अमैविन्–ऐसी एक रीति में; वन्तीर्–आप पधारे हैं । ६५

भूधरों से भी अधिक उन्नत कन्धों वाले ! रविसूनु सुग्रीव पर इन्द्र-पुत्र निर्दय वालि ने क्रोध दिखाया । सुग्रीव दुःखाक्रांत हुए । निस्सहाय और एकाकी बनकर वे सरिताओं से भूषित इस पर्वत पर आये और हमारे साथ (छिपे) रह रहे हैं । अब उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति हो जाय, ऐसा एक सन्दर्भ बनाते हुए आप पधारे हैं (या आप ही सम्पत्ति के समान पधारे हैं) । ६५

ऒडुङ्गलि लुलहम् यावु मुवन्दन वुदवि वेळ्वि
तॊडङ्गिन मऱ्ऱु मुऱ्ऱत् तॊल्लऱन् दुणिवर् शान्ऱोर्
कॊडुङ्गुलप् पहैञ नाहिक् कॊल्लिय वन्द कूऱ्ऱै
नडुङ्गिनर्क् कबय नल्हु मदनिनु नल्ल दुण्डो 66

चान्ऱोर्–श्रेष्ठ लोग; ऒटुङ्कल् इल्–अक्षय; उलकम् यावुम्–सारे लोक में; उवन्तत–लोग जो चाहते हैं; उतवि–उनको वह देकर; तॊटङ्कित वेळ्वि–आरब्ध यज्ञ आदि; मऱ्ऱुम्–अन्य कार्य; मुऱ्ऱ–पूरा करने के लिए; तॊल् अऱम्–प्राचीन धर्म पर; तुणिवर्–दृढ़ रहेंगे; कुल कॊटुम्–जीवकुल के भयंकर; पकैञन् आकि–शत्रु बनकर; कॊल्लिय वन्त–मारने आये; कूऱ्ऱै–यम से; नटुङ्कितर्क्कु–भयभीत हुए लोगों को; अपयम्–अभय-प्रदान; नल्कुम् अतनिनुम्–करने के उस काम से; नल्लतु उण्टो–अधिक श्रेष्ठ हैं क्या । ६६

श्रेष्ठ लोग प्राचीन धर्मों का पालन इसलिए करते हैं कि वे अक्षय संसार में सबको उनके माँगे पदार्थ दान दें और अपने आरब्ध यज्ञादि शास्त्रविहित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कर्म पूरा करें। पर जीवकुल का शत्रु बनकर आनेवाले यम से भयभीत लोगों को अभयदान देने से बड़ा धर्म कोई हो सकता है क्या ? । ६६

अॅम्मैये कात्ति रॅन्ऱ लॅळिदरो विमैप्पि लादोर्
तम्मैये मुदलिट् टान्ऱ शराशरञ् जमैत्त वाऱ्ऱल्
मुम्मैया मुलहुङ् गाक्कु मुदल्वर्नीर् मुरुहच् चॅव्वि
उम्मैये पुहल्बुक् केमुक् किदिन्वरु मुऱदि युण्डो 67

इमैप्पु इलातोर्–जो पलक नहीं गिराते; तम्मैये मुतल् इट्टु–उन देवों से लेकर; आन्ऱ–श्रेष्ठ; चराचरम् चमैत्त आऱ्ऱल्–जड़जंगमजग सृष्ट करने के सामर्थ्य के साथ; मुम्मैयाल् उलकम् काक्कुम्–त्रिलोकपालन करनेवाले; मुतल्वर् नीर्–परम देव आप ही हैं; अॅम्मैये–हम अकिंचन को; कात्तिर् अॅन्ऱल्–रक्षित करें, यह कहना; अॅळितु–छोटी बात है; मुरुक चॅव्वि उम्मैये–दिव्य सौंदर्ययुक्त आपके ही; पुकल् पुक्केमुक्कु–शरण आये हमें; इतिन्–इस (आपकी कृपा) से बढ़कर; वरुम् उऱति उण्टो–मिलनेवाला हित अन्य हो सकता है क्या। ६७

हे वीर ! आप अपलक देवों से लेकर चराचरमय सारे जग की सृष्टि करने के साथ-साथ त्रिलोक के पालन करने का भी सामर्थ्य रखनेवाले परम देव हैं। ऐसे आपसे, हमारी रक्षा की प्रार्थना करना बहुत ही अल्प विषय है। दिव्य सौन्दर्यमय आपकी शरण आये हैं —इससे बढ़कर और किस लाभ को अधिक हितकारी मानें ? । ६७

❀ यारॅन्न विळम्बु हेन्ना नॅङ्गुलत् तिऱैवर् कुम्मै
वीरर्नीर् पणित्ति रॅन्ऱान् मॅय्म्मैयिन् वेलि पोल्वान्
वार्हळ लिळैय वीरन् मरबुळि वाय्मै यावुम्
शोर्विल निलैमै यॅल्लान् दॅरिवुऱच् चॊल्ल लुऱ्ऱान् 68

मॅय्म्मैयिन् वेलि पोल्वान्–सत्य(-खेत) के घेरे के समान (सत्यसेतु) हनुमान ने; नान्–दास मैं; अॅम् कुलत्तु इऱैवर्क्कु–हमारे कुल के नायक को; उम्मै–आपको; यार् अॅन्न विळम्पुकेन्–कौन कहकर परिचय दूं; वीरर्–वीर; नीर पणित्तिर्–आप आज्ञा दीजिए; अॅन्ऱान्–पूछा; वार् कळल्–(स्वर्ण की) ढली पायल से भूषित; इळैय वीरन्–लघु वीर लक्ष्मण ने; वाय्मै यावुम्–सभी सच्ची घटनाएँ; चोर्विलन्–विना कोई अंश छोड़े; मरपुळि–यथाक्रम; निलैमै अॅल्लाम्–सारी स्थिति; तॅरिवु उऱ–साफ़ करते हुए; चोल्लल् उऱ्ऱान्–कहना प्रारम्भ किया। ६८

हनुमान ने, जो सत्य के खेत के घेरे के समान (सत्यसेतु) था, आगे बहुत ही चातुर्य के साथ पूछा कि हे वीर ! अपने कुल के नायक सुग्रीव के पास मैं आपका कौन सा परिचय दूँ ? आपको कौन बतलाऊँ ? आप ही आज्ञा दें। तब स्वर्ण की ढली पायल से अलंकृत छोटे वीर लक्ष्मण सारी सच्ची घटनाएँ विना छूट के साफ़ समझाते हुए बताने लगे। ६८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ शूरियन् मरबिऱ् ऱोन्ऱिच् चुडर्नॆडु नेमि याण्ड
आरिय नमरर्क् काहि यशुररै यावि युण्ड
वीरियन् वेळ्वि मुऱ्ऱि विण्णुल होडु माण्ड
कारियऱ् करुणै यन्न कण्णहन् कविहै मन्नन् 69

चूरियन् मरपिल्–सूर्य के वंश में; तोन्ऱि–प्रकट होकर; चुटर् नॆटु नेमि–उज्ज्वल, बड़ा (आज्ञा-)चक्र; आण्ट–जिन्होंने चलाया; आरियन्–वे उत्तम राजा; अमरर्क्कु आकि–सुरों के लिए; अचुररै–(शंबर आदि) असुरों के; आवि उण्ट–प्राण खाने (हरने) वाले; वीरियन्–प्रतापी; वेळ्वि मुऱ्ऱि–यज्ञ सम्पन्न करके; विण् उलकोटुम्–आकाश का भूमि के साथ; आण्ट–जिन्होंने शासन किया; कार् इयल्–मेघ का स्वभाव; करुणै अन्न–(जो कृपा है) उसके समान कृपालु; कण् अकल्–विशाल; कविकै मन्नन्–छत्रधारी। ६९

सूर्यवंशोत्पन्न; उज्ज्वल और विशाल आज्ञाचक्र चलानेवाले; सर्वश्रेष्ठ पुरुषोत्तम; देवों के हितार्थ शंबरासुर आदि असुरों के मारक प्रतापी; अनेक यज्ञ सुसम्पन्न करके जिन्होंने आकाश के साथ भूमि पर शासन किया; मेघ के समान करुणा का स्वभाव रखनेवाले और विशाल छत्र (राज्य)-धारी; । ६९

[इसके बाद टी०के०सी के संकलन में निम्नलिखित पद पाया जाता है। यद्यपि प्रस्तुत संकलन में उसको क्षेपक माना गया है, तो भी चूंकि टी०के०सी इसे प्रामाणिक मानते हैं, इसलिए हम मूल पद और भावार्थ दे रहे हैं।]

❀ पुयऱु मतत्तिण् कोट्टुप् पुहर्मलैक् किऱैयै यूर्न्दु
मयऱु मवुणर् यारु मडिदर वरिविऱ् कॊण्ड
इयऱु पुलमैच् चॆङ्गोन् मनुमुदल् यारु मॊव्वात्
तयरदन् कनह माडत् तडमदि लयोत्ति वेन्दन् (69 अ)

मेघ के समान मद बहानेवाले, कठोर दाँतों से युक्त और मुख पर लाल बिन्दियों के साथ दृश्यमान गजराज पर चढ़कर जिन्होंने धनु के सहारे युद्ध किया और सारे असुरों को मरवाया; जो सहज मेधावी, नेक दण्डधर और मनु से लेकर किसी भी राजा से अनुपमेय (अधिक) सुशासक थे, दशरथ नाम के वे स्वर्णमहलों से भरी, विशाल प्राचीरों-सहित अयोध्यानगरी के राजा थे। ६९ (अ)

❀ अन्नवन् शिऱुव नामिव् वाण्डहै यन्नै येवत्
तन्नुडै युरिमैच् चॆल्वन् दम्बिक्कुत् तहवि नल्हि
नन्नॆडुङ् गानञ् जेर्न्दा नाममु मिराम नॆन्बान्
इन्नॆडुञ् जिलैव लानुक् केवल्शॆय् यडियन् याने 70

अन्नवन् चिऱुवन् आम्–उनका पुत्र; इ आण् तकै–ये पुरुषश्रेष्ठ; अन्नै एव–माता की आज्ञा से; तन् उटै उरिमै चॆल्वम्–अपने स्वत्व का राज्यधन; तम्पिक्कु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अपने छोटे भाई को; तकविन् नल्कि–उदारता के साथ देकर; नल् नॅटुम् कातम्–बहुत ही बड़े जंगल में; चेर्न्तान्–आ गये; नाममुम् इरामन् ऍन्पान्–नाम के भी श्रीराम हैं; इ–इन; नॅटुम् चिलै–बड़े धनु में; वलात्तुक्कु–समर्थ श्रीराम की; एवल् चॅय्–सेवा करनेवाला; अटियन्–दास; याऩे–मैं हूँ। ७०

ये पुरुषश्रेष्ठ उनके पुत्र हैं। माता की आज्ञा मानकर ये अपने स्वत्व का राज्य आदि धन अपने छोटे भाई के हाथ उदारता के साथ सौंप कर इस अति विपुल कानन में पधारे हैं। इनका नाम भी सुनो— श्रीराम है। इन लम्बे और धनुर्विद्याविदग्ध श्रीराम की सेवा करनेवाला किंकर हूँ मैं। ७०

❀ ऍन्ऱवन् ऱोऱ्ऱ मादि यिरावण निळैत्त मायप्
पुन्ऱॊळि लिऱुदि याहप् पुहुन्दुळ पॊरुळ्ह ळॆल्लाम्
ऒन्ऱुमाण् डॊळिवु ऱाम लुणर्त्तिऩ नुणर्त्तक् केट्टु
निन्ऱवक् कालिन् मैन्द नॆडिदुवन् दडियिऱ् ऱाळ्न्दान् 71

ऍन्ऱु–ऐसा; अवन् तोऱ्ऱम् आति–उनके अवतार से लेकर; इरावणन् इळैत्त–रावण-कृत; माय पुन् तॊळिल्–वंचनापूर्ण नीच काम; इऱुति आक–तक; पुकुन्तु उळ–घटित; पॊरुळ्कळ् ऍल्लाम्–सारी घटनाएँ; ऒन्ऱुम्–(कुछ) एक भी; ऒळिवु उऱामल्–न छोड़कर; आण्टु–तब; उणर्त्तितऩ्–जतलायीं; उणर्त्त केट्टु–बतायी गयी बातें सुनकर; निन्ऱ–उनके सामने स्थित; अ कालिन् मैन्तऩ्–वह पवनकुमार; नॆटितु उवन्तु–बहुत प्रसन्न होकर; अटियिल्–उनके चरणों पर; ताळ्न्तान्–झुका। ७१

लक्ष्मण ने ऐसा श्रीराम के अवतार से लेकर रावण-कृत वंचक नीच कर्म तक की सारी घटनाएँ विना किसी अन्तर के कह सुनायीं। वह सुनकर वायुकुमार बहुत प्रसन्नता के साथ श्रीराम के श्रीचरणों पर झुका। ७१

❀ ताळ्दलुन् दहाद शॆय्द दॆन्नैनी दरुम मन्ऱाल्
केळ्विनून् मऱै व लाळा वॆन्ऱऩ नॆन्नक् केट्ट
पाळियन् दडन्दोळ् वॆन्ऱि मारुदि पदुमच् चॆङ्गण्
आळिया यडिय नेनु मरिहुलत् तॊरुव नॆन्ऱान् 72

ताळ्तलुम्–झुकने पर; केळ्विनूल् मऱै–श्रौत और स्मार्त वेदों के; वलाळा–विद्वान; नी–तुमने; तकाततु चॆय्ततु–अनुचित किया; ऍन्नै–वह क्यों; तरुमम् अऩ्ऱु–धर्मसम्मत नहीं है; ऍन्ऱऩऩ्–श्रीराम ने कहा; ऍन्नत–कहना; केट्ट–सुनकर; पाळि–स्थूल; अम्–सुन्दर; तटम् तोळ्–विशाल कन्धों के; वॆन्ऱि–विजयी; मारुति–मारुति ने; पतुमम् चॆम् कण् आळियाय्–लाल कमल-सी आँखों के चक्रधारी; अटियऩेनुम्–दास मैं भी; अरि कुलत्तु–कपिकुल का; ऒरुवऩ्–एक हूँ; ऍन्ऱान्–कहा। ७२

उसके प्रणाम करने पर श्रीराम ने पूछा कि हे! यह क्या कर रहे हो?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रवण द्वारा वेद और शास्त्रों में दक्षताप्राप्त विप्र ! यह अनुचित कार्य किया, वह क्यों ? यह धर्मसम्मत नहीं है। यह सुनकर स्थूल, सुन्दर, विशाल और विजयी भुजाओं वाले हनुमान ने निवेदन किया कि पद्मपत्र-अरुणाक्ष ! चक्रधारी ! दास मैं भी उसी कपिकुल का एक हूँ। ७२

❀ मिऩ्ऩुरुक् कॊण्ड विल्लोर् वियप्पुऱ वेद नऩ्ऩूल्
पिऩ्ऩुरुक् कॊण्ड दॆऩ्ऩुम् पॆरुमैयाम् बॊरुळुम् नाणप्
पॊऩ्ऩुरुक् कॊण्ड मेरु पुयत्तिऱ्कु मुवमै पोदात्
तऩ्ऩुरुक् कॊण्डु निऩ्ऱाऩ् ऱुरुमत्तिऩ् ऱऩिमै तीर्प्पाऩ् 73

तरुमत्तिऩ् तऩिमै–धर्म का एकाकीपन (धर्म की निस्सहायता); तीर्प्पाऩ्–दूर करनेवाला; मिऩ् उरु कॊण्ट–विद्युतस्वरूप; विल्लोर्–धनुर्धरों को; वियप्पु उऱ–विस्मय में डालते हुए; वेतम् नल् नूल–वेद आदि शास्त्रों ने; पिऩ् उरु कॊण्टतु ऍऩ्ऩुम्–बाद यह रूप लिया हो, ऐसा; पेरुमै आम् पॊरुळुम्–गौरव नामक तत्त्व भी; नाण–लजा जाय, ऐसा; पॊऩ् उरु कॊण्ट–स्वर्णरूप; मेरु–मेरु पर्वत भी; पुयत्तिऱ्कु–(हनुमान की) भुजा की; उवमै पोता–उपमा न बन सके, ऐसा; तऩ् उरु कॊण्टु–अपना रूप (विश्वरूप) लेकर; निऩ्ऱाऩ्–खड़ा रहा। ७३

यह कहकर धर्म की निस्सहायता दूर करने के लिए धर्मसहायक के रूप में अवतरित हनुमान अपना निजी (बड़ा भारी) रूप लेकर उनके सामने खड़ा हुआ। तब विद्युतस्वरूप धनु के धारक श्रीराम और लक्ष्मण अपार विस्मय में पड़ गये। वेद आदि शास्त्रों ने एक नया रूप लिया हो, ऐसा; गौरव का तत्त्व भी उनकी गुरुता को देखकर लजा जाय, ऐसा; स्वर्णमय मेरुपर्वत भी उनकी भुजा की उपमा न बन सके, ऐसा वह हनुमान दृश्यमान रहा। ७३

कण्डिल नुलह मूऩ्ऱुङ् गालिऩाऱ् कडन्दु कॊण्ड
पुण्डरी हक्क णाऴिप् पुरवलऩ् पॊलऩ्गॊळ् शोदिक्
कुण्डल वदऩ मॆऩ्ऱाऱ् कूऱलाऩ् दहैमैत् तॊऩ्ऱो
पण्डैनूऱ् कदिरोऩ् शॊल्लप् पडित्तऩऩ् पडिव मम्मा 74

उलकम् मूऩ्ऱुम्–तीनों लोकों को; कालिऩाल्–अपने श्रीचरणों से; कटन्तु कॊण्ट–नापकर (जिन्होंने) तीर्ण किया; पुण्टरीक कण्–वे पुण्डरीकाक्ष; आऴि–चक्रधर; पुरवलऩ्–जगन्नाथ; पॊलऩ् कॊळ् चोति–स्वर्णमय उज्ज्वल; कुण्टल–कुण्डलों से भूषित; वतऩम्–(हनुमान का) आनन; कण्टिलऩ् ऍऩ्ऱाल्–नहीं देख पाये तो; पण्टै नूल्–अति प्राचीन शास्त्र (व्याकरण आदि); कतिरोऩ् चॊल्ल–सूर्य के सिखाने पर; पटित्तऩऩ्–जिन्होंने अध्ययन किये थे; पटिवम्–उनका आकार; कूऱल् आम् तकैमैत्तु ऒऩ्ऱो–वर्णन-योग्य एक विषय है क्या। ७४

तब अपने श्रीचरणों से जिन्होंने त्रिलोक को तीर्ण किया था, वे पुंडरीकाक्ष चक्रधर प्रभु स्वर्णमयकुण्डल-भूषित हनुमान का मुख देख नहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सके तो उस हनुमान का रूप वर्ण्य एक विषय हो सकता है क्या, जिसने सूर्य से शिक्षा लेकर प्राचीन व्याकरणादि शास्त्रों का अध्ययन किया था ? । ७४

❀ ताट्पडाक् कमल मन्न्न तडङ्गणान् ऱम्बिक् कम्मा
कीट्पडा निन्ऱ नीक्किक् किळर्पडा दाहि यॅन्ऱुम्
नाट्पडा मऱैह ळान्ऱु नवैपडा ञान्त् तालुम्
कोट्पडाप् पदमै यॅय कुरक्कुरुक् कॊण्ड दॅन्ऱान् 75

ताळ् पटा–नाल पर जो न उगा हो; कमलम् अन्त्त–उस कमल के समान; तटम् कणान्–विशाल आँखों वाले; तम्पिक्कु–अपने छोटे भाई से; ऐय–तात; कीळ् पटा निन्ऱ–अधोस्थितियाँ; नीक्कि–छोड़कर; किळर् पटातु आकि–अमन्द न पड़कर; ऍन्ऱुम्–सदा; नाळ् पटा–कालातीत; मऱैकळालुम्–वेदों द्वारा; नवै पटा–(और) निर्दोष; ञान्तत्तालुम्–ज्ञान द्वारा; कोळ् पटा–अग्राह्य; पतमे–तत्त्व ने ही; कुरक्कु उरु–वानर का रूप; कॊण्टतु–लिया है; ऍन्ऱान्–कहा; अम्मा–मैया री । ७५

श्रीराम ऐसे कमल के दल के समान विशाल आँखों वाले थे, जो मामूली नाल पर नहीं उगा था (जो दिव्य था)। उन्होंने अपने छोटे भाई से कहा कि भैया! यह देखो। यह मामूली वानर का रूप नहीं। यह उस सनातन तत्त्व का वानर-रूप है, जो नीची स्थितियों और गतियों से परे है; जो सदा प्रकाशमय है; जो कालातीत है; और जो वेदों और निर्दोष ज्ञान द्वारा भी अग्राह्य है ! आहा मैया ! कितना अद्भुत है ! । ७५

❀ नल्लन्न निमित्तम् बॅऱ्ऱे नम्बियैप् पॅऱ्ऱेम् नम्बाल्
इल्लैये तुन्ब मान्न दिन्बमु मॅय्दिऱ् ऱामाल्
विल्लिन्ना यिन्नैयन् बोलाङ् गविकुलक् कुरिशिल् वीरन्
चॊल्लिन्ना लेवल् शॅय्वा न्नवन्निलै शॊल्लऱ् पाऱ्ऱो 76

विल्लिताय्–धनुर्धर; नल्लन्न–अच्छे; निमित्तम्–शकुन; पॅऱ्ऱेम्–पाये (हमने); नम्पियै पॅऱ्ऱेम्–(उसी से) पुरुषनायक यह मिला है; नम्पाल्–(अब) हमारे पास; तुन्पम् आन्तु–संकट; इल्लैये–नहीं रहे; इन्पमुम्–सुख भी; ऍय्तिऱ्ऱु आम्–मिल गये; इन्नैयन्–ऐसा (वीर); कवि कुल कुरिचिल्–वानरकुल-पति; वीरन्–(और) वीर (सुग्रीव) की; चॊल्लिन्ताल्–आज्ञा के वचन के अनुसार; एवल् चॅय्वान् पोल् आम्–कैंकर्य करनेवाला लगता है तो; अवन् निलै–उसकी स्थिति; चॊल्लल् पाऱ्ऱो–(श्रेष्ठता) बतायी जा सकती है क्या । ७६

श्रीराम ने आगे कहा— धनुधारी लक्ष्मण ! हमारे शुभ शकुन हो गये। तभी पुरुषनायक यह प्राप्त हुआ है। अब हमारे पास कोई संकट नहीं रहा। सुख ही सुख आ गया। ऐसा यह वीर कपिकुल के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राजा का आज्ञाकारी दास है —यह सुनते हैं। तब तो वह राजा कैसा होगा ? उसकी श्रेष्ठता बतायी जा सकेगी क्या ? । ७६

❀ ऍन्ऱह मुवन्दु कोल मुहमलर्न् दिनिदि निन्ऱ
कुन्ऱुऱळ् तोळि नानै नोक्किय कुरक्कुच् चीयम्
शॅन्ऱवन् ऱन्नै यिन्ने कॉणर्हिन्ऱेन् शिऱिदु पोऴ्दु
वॅन्ऱियि रिरुत्ति रॅन्ना विडैपॅऱ्ऱु विरैविऱ् पोनान् 77

ऍन्ऱु–ऐसा कहकर; अकम् उवन्तु–मन से मुदित होकर; कोलम् मुकम् मलर्न्तु–सुन्दर मुख पर सन्तोष प्रकट करते हुए; इतितिन् निन्ऱ–प्रसन्न खड़े रहे; कुन्ऱु उऱळ्–पर्वत-सम; तोळिनानै–कन्धों वाले को; नोक्किय–देखकर; कुरक्कु चीयम्–वानरसिंह; चॅन्ऱु–जाकर; इन्ने–अभी; अवन् तन्नै–उनको; कॉणर्किन्ऱेन्–लाता हूँ; वॅन्ऱियिर्–विजयी वीर; चिऱितु पोऴ्तु–थोड़ी देर; इरुत्तिर्–ठहरिए; ऍन्ना–कहकर; विटै पॅऱ्ऱु–विदा लेकर; विरैविल् पोनान्–शीघ्र गया। ७७

ऐसा श्रीराम ने प्रफुल्ल-चित्त होकर कहा। उनका मुख भी सन्तोष के कारण प्रकाशमय हो रहा। बहुत ही प्रसन्नता के साथ अपने सामने स्थित पर्वत-सम भुजा वाले श्रीराम को वानरसिंह हनुमान ने देखकर निवेदन किया कि विजयी वीर ! मैं अभी जाकर उन्हें बुला लाता हूँ। थोड़ी देर ठहरे रहें। हनुमान ने यह कहकर उनसे आज्ञा ली। फिर वह बहुत शीघ्र चला। ७७

3. नट्पुप् पडलम् (मैत्री पटल)

पोनमन् दरमणिप् पुयनॅडुम् बुहळिनान्
आनदन् नरिहुलत् तरशन्मा डणुहिनान्
यानुमुन् कुलमुमिव् वुलहुमुयन् दनमॅना
मानवन् गुणमॅला निनैयुमा मदियिनान् 78

पोन–जो गये; मन्तरम्–मंदरगिरि-सम; मणि पुयम्–सुन्दर भुजा वाला; नॅटुम् पुकळिनान्–बड़े यश वाला; मानवन्–मानव श्रीराम के; कुणम् ऍलाम्–सर्व कल्याणगुणगणों के; निनैयुम्–स्मरणकारी; मा मतियिनान् आन–बड़ा बुद्धिमान जो था; यानुम्–मैं भी; उन् कुलमुम्–तुम्हारा कुल और; इ उलकुम्–यह लोक; उयन्ततम्–तर गये; ऍना–कहते हुए; तन्–(हनुमान) अपने; अरि कुलत्तु अरचन् माटु–वानरकुल के राजा के पास; अणुकिनान्–पहुँचा। ७८

हनुमान मन्दर पर्वत-सम सुन्दर भुजाओं के और बहुत बड़ी कीर्ति के स्वामी सम्मान्य श्रीराम के सब दिव्य और कल्याणगुणों का स्मरण करते हुए चला। कपिकुल-राज सुग्रीव के पास यह कहते हुए पहुँचा कि मैं तर गया; आप तर गये और आपके कुल का भी उद्धार हो गया। ७८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेलवन् रिरुमहर् कुरैशॅय्दान् विरैशॅय्दार्
वालियॅन् ऱळविला वलियिन्ना नुयिर्तॅऱक्
कालन्वन् दन्निडर्क् कडल्हडन् दन्मॅन्ना
आलमुण् डवन्निन् ऱुरुनडम् बुरिहुवान् 79

आलम् उण्टवन्निन्–हलाहल (विष-) पायी के समान; निन्ऱु–स्थित होकर; अरु नटम् पुरिवान्–अतिशय नृत्य करनेवाला; विरै चॅय्–सुबासदायी; तार्–माला-धारी; वालि–वाली; ऍन्ऱु–नाम के; अळवु इला–अपार; वलियिन्नान्–बली के; उयिर् तॅऱ–प्राणों को तोड़ने; कालन् वन्तन्तन्–यम आ गया; इटर् कटल्–संकटसागर; कटन्तन्नॅम्–तारण कर लिया; ऍन्ना–यह; मेलवन्–ऊपर के (सूर्य) देव के; तिरुमकर्क्कु–सुपुत्र से; उरै चॅय्तान्–बोला। ७९

हनुमान हलाहलविषपायी शिवदेव के समान नृत्य करते हुए बोला कि सुगन्ध छिटकानेवाली माला के धारक और अपार बली वाली के प्राण हरने के लिए यम आ गये। हम भी दुःख-सागर पार कर गये! हनुमान ने आकाशचारी सूर्यदेव के पुत्र सुग्रीव से ये बातें कहीं। ७९

मण्णुळार् विण्णुळार् माऱुळार् वेऱुळार्
ऍण्णुळार् दिशैयुळा रियलुळा रिशैयुळार्
कण्णुळा रायिन्नार् पहैयुळार् कळिनॅडुम्
पुण्णुळा रारुयिर्क् कमिऴ्दमे पोलुळार् 80

मण् उळार्–भूलोकवासी; विण् उळार्–व्योमवासी; माऱु उळार्–इतर (पाताल) लोकवासी; वेऱु उळार्–अन्य लोग; तिचै उळार्–दिशाओं के वासी; ऍण् उळार्–स्मरण करनेवालों के लिए; इयल् उळार्–बुद्धि-रूप जो रहते हैं; इचै उळार्–कीर्तिस्वरूप जो रहते हैं; कण् उळार्–नेत्रस्वरूप जो रहते हैं; आयिन्नार्–वे बने रहते हैं; पकै उळार् जिनके शत्रु हैं; कळि नॅटुम् पुण् उळार्–और जिनके (शत्रु द्वारा) प्राप्त बड़े गहरे घाव हैं; आर् उयिर्क्कु–उन जीवों के लिए; अमिऴ्तमे पोल्–अमृत के ही समान; उळार्–रहनेवाले (वे वीर हैं।)। ८०

हनुमान ने श्रीराम का और भी गुणगान किया। वे वीर पृथ्वी में, व्योम में, इनसे अलग नागलोक में, इतर लोकों में या किसी भी दिशा में रहनेवालों में अपना स्मरण करनेवाले भक्तजनों के लिए बुद्धि, कीर्ति और नेत्रों के समान सहायता करनेवाले हैं। उनमें जिनके शत्रु हैं और जिन्हें शत्रु के कारण बहुत गहरे व्रण (पीड़ा और दुःख) हो गये हैं, उनके लिए देवामृत के समान (तापहारी) हैं। ८०

शूऴिमाल् यानैयार् तॊऴुहऴऱ् ऱयरदन्
पाऴिया रुलहॅला मॊरुवऴिप् पडरवाऴ्
आऴियान् मैन्दर्पे रऱिविन्ना रऴहिन्नार्
उऴिया लिन्निदुन्क् करशुदन् दुदविन्नार् 81

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चूळि–मुखपट्ट-सहित; माल् यानैयार्–बड़े गजों के स्वामी राजाओं से; तोळ कळल्–नमस्कृत पायल-चरण; तयरतन्–दशरथ; पाळि आर् उलकु अॅलाम्–बड़े-बड़े सभी लोकों को; ऑरुवळि पटर–अपने शासनाधीन कर चलाते (पालते) हुए; वाळ्–जो रहे; आळियान्–उन चक्रवर्ती के; मैन्तर्–पुत्र हैं; पेर् अळकिनार्–बड़े ही सुन्दर; अरिवितार्–और मेधावी; ऊळियाल्–विधिवत; उनक्कु–आपको; इनितु अरचु तन्तु–सुख से राज्य प्रदान कर; उतवितार्–उपकार करनेवाले हैं। ८१

(हनुमान श्रीराम का चरित्र और परिचय यों देता है—) वे चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र हैं, जिनके पायल-चरणों पर मुखपट्ट से अलंकृत बड़े गजों के स्वामी राजा लोग विनत होते थे और जो सभी विश्वों को अपने एकछत्र शासन के अधीन करके चलाते रहे थे। वे बड़े ही सुन्दर हैं और मेधावी भी। वे ही विधिवत आपको राज्य प्रदान करके उपकार करनेवाले हैं। ८१

नीदियार् करुणैयिन् नॅरियितार् नॅरिवयिन्
पेदिया निलैमैया रॅवरिनुम् पॅरुमैयार्
पोदिया दळविला वुणर्वितार् पुहळितार्
कादियार् शेय्दरुङ् गडवुळ्वॅम् बडैयितार् 82

नीतियार्–(और) न्यायी; करुणैयिन् नॅरियितार्–करुणा के मार्ग पर चलनेवाले; नॅरि वयिन्–न्याय-मार्ग से; पेतिया निलैमैयार्–न हटने के स्वभाव वाले; अॅवरिनुम्–किसी से भी; पॅरुमैयार्–अधिक सम्मान्य; पोतियातु–विना पर-बोधन के ही; अळवु इला–अपार; उणर्वितार्–प्रतिभाशाली; पुकळितार्–कीर्तिमान; कातियार् चेय्–गाधिपुत्र; तरुम्–(द्वारा) दिये गये; कटवुळ्–दिव्य; वॅम् पटैयितार्–प्रतापी अस्त्रों वाले। ८२

(और भी—) वे न्यायी हैं। करुणावलम्बी हैं। न्यायमार्ग से न हटनेवाले किसी से भी ये अधिक गौरववान हैं। विना किसी के बोधन से ही वे प्रतिभावान अपार ज्ञानी रहते हैं। बड़े कीर्तिमान और गाधिपुत्र कौशिकजी के द्वारा प्रदत्त दिव्य और प्रतापी अस्त्रों वाले हैं। ८२

वेलिहर् चिनवुता डहैविळिन् दुरुळविर्
कोलियक् कॉडुमैयाळ् पुदल्वनैक् कॉन्रुदन्
कालियर् पॉडियिना नॅडियहर् पडिवमाम्
आलिहैक् कुरियपे रुरुवळित् तरुळिनान् 83

वेल् इकल्–त्रिशूल लेकर युद्ध करनेवाली; चिनवु ताटकै–क्रोधी ताड़का; विळिन्तु उरुळ–मरकर गिर पड़े, ऐसा; विल् कोलि–धनु प्रयोग करके; अ कॉटुमैयाळ्–उस अत्याचारिणी के; पुतल्वनै कॉन्रु–पुत्र (सुबाहु) को मारकर; तन् काल् इयल्–अपने श्रीचरणों पर लगी; पॉटियिनाल्–धूली से; नॅटिय कल्–बड़े प्रस्तर के; पटिवम् आम्–रूप में रही; आलिकैक्कु–अहल्या को; उरिय–उनका अपना; पेर् उरु–मान्य रूप; अळित्तु–देकर; अरुळिनान्–कृपा की। ८३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन्होंने त्रिशूल लेकर लड़नेवाली ताड़का को अपने धनु को झुकाकर (अस्त्र चलाकर) मारा; उस अत्याचारिणी के पुत्र सुबाहु को मारा। और अपने चरणों पर लगी धूल के पवित्र प्रताप से उन्होंने (श्रीराम ने) बड़े पत्थर के रूप में पड़ी जो रहीं, उन अहल्या को उनका अपना रूप दिलाकर उपकार किया था। ८३

नल्लुरुप् पमैयुनम् बियरिन्मुन् नवनयन्
दॆल्लुरुप् परियपे रॆरिशुडर्क् कडवुडन्
पल्लिरुत् तवन्वलिक् कमैतियम् बहमॆनुम्
विल्लिरुत् तरुळिनान् मिदिलैपुक् कणैयुनाळ् 84

नल् उरुप्पु अमैयुम्–शुभ अंग-लक्षणों के बने; नम्पियरिन्–नायकों में; मुन्नवन्–ज्येष्ठ श्रीराम; मितिलै पुक्कु–मिथिला में प्रवेश कर; अणैयुम् नाळ्–जब गये तब; ऍल् उरुप्पु–प्रकाश की किरणों के; अरिय–अपूर्व; पेर्–बड़े; ऍरि चुटर् कटवुळ् तन्–गरम किरणमाली सूर्यदेव के; पल् इरुत्तवन्–दाँत जिन्होंने तोड़े थे; वलिक्कु अमै–उन शिवजी की शक्ति के अनुरूप बने; तियम्पकम् ऍनुम्–त्र्यंबक नाम के; विल् नयन्तु–धनु को प्यार के साथ उठाकर; इरुत्तु अरुळिनान्–तोड़कर कृपा की। ८४

दोनों लक्षणपूर्ण अंगों के सुन्दर रूपधर हैं। उनमें ज्येष्ठ श्रीराम ने मिथिला में जाकर रहते समय, गरम किरणमाली सूर्यदेव के दाँतों के भंजक शिवजी के धनुष को तपाक से उठाया और भग्न करके उपकार किया। (दक्ष-यज्ञ के अवसर पर शिवजी ने सूर्य के दाँत तोड़े थे।)। ८४

उळैवयप् पुरविया नुदववुड् रॊरुशॊलाल्
अळविल्कड् पुडैयशिड् ड्वैपणित् तरुळलाल्
वळैयुडैप् पुणरिशूळ् महितलत् तिरुवॆलाम्
इळैयवड् कुदवियित् तलैयॆळुन् दरुळिनान् 85

उळै वयम्–अयालसहित बलवान; पुरवियान्–अश्वों के स्वामी (दशरथ) से; उतव उड्रु–दिया जाकर; अळवु इल् कड्पु उटैय–अपार पातिव्रत्यशीला; विड्डवै–छोटी माता के; ऒरु चॊलाल्–एक वचन के कारण; पणित्तु अरुळलाल्–आज्ञा देने से; पुणरि चूळ् वळै उटै–समुद्र से जो घेरी गयी है; मकितलम् तिरु ऍलाम्–भू की सम्पत्ति, सब; इळैयवड्कु–छोटे भाई को; उतवि–उपकार-बुद्धि के साथ देकर; इ तलै–इस ओर; ऍळुन्तरुळिनान्–कृपा करके पधारे हैं। ८५

अयाल वाले बलिष्ठ अश्वों के स्वामी चक्रवर्ती दशरथ ने अपनी इच्छा से राज्य को श्रीराम को दिया। पर बड़ी पातिव्रत्यशीला श्रीराम की विमाता कैकेयी को दशरथ ने वर का वचन दिया था। उसकी प्राप्ति में विमाता ने श्रीराम को आज्ञा दिलायी कि वन जाओ। उस आज्ञा को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मानकर समुद्रवलयित राज्यश्री और अपनी सारी सम्पत्ति को अपने छोटे भाई (कैकेयी के पुत्र) को देकर के श्रीराम इस ओर पधारे हैं। ८५

तॆव्विरा वहैनॆडुञ् जिहैविरा मऴुविऩान्
अव्विरा मऩैयुमा वलितॊलैत् तरुळिऩान्
इव्विरा हवन्वॆहुण् डॆऴुमिरा वऩैयऩाम्
अव्विरा दऩैयिरा वहैदुडैत् तरुळिऩान् 86

इ इराकवन्–इन श्रीराम ने; तॆव् इरा वकै–शत्रु ही न रहें, ऐसा; नॆटुम् चिकै–लम्बी ज्वालाओं से; विरा–युक्त; मऴुविऩान्–परशु वाले; अ इरामऩैयुम्–उन (परशु-) राम को; मा वलि तॊलैत्तु–उनका बल मिटाकर (हराकर); अरुळिऩान्–(लोक का) उपकार किया; वॆकुण्टु ऎऴुम्–कुपित हो चढ़ आनेवाले; इरा अऩैयऩ् आम्–रात्रि के समान काले; अ विराततै–उस विराध को भी; इरा वकै–जीवित न रहे, ऐसा; तुटैत्तु–मिटाकर; अरुळिऩान्–कृपा की। ८६

इन्हीं श्रीराम ने उन परशुराम का बल मिटाया था, जिनके अग्निशिखा-वृत्त परशु ने मही को शत्रुहीन बना दिया था; यह इनकी कृपा थी। वही नहीं। रात के समान काला विराध कोप के साथ उन पर चढ़ आया। श्रीराम ने उसका भी नाश करके लोकोपकार किया। ८६

करऩ्मुदऱ् करुणैयऱ् ऱवर्हडऱ् पडैयॊडुम्
शिरमुहच् चिलैहुऩित् तुदवुवाऩ् तिशैयुळार्
परमुहप् पहैदुमित् तरुळुवाऩ् परमराम्
अरऩ्मुदऱ् रलैवरुक् कदिशयत् तिऱलिऩाऩ् 87

करऩ् मुतल्–खर आदि; करुणै अऱ्ऱवर्–करुणाहीन (की); कटल् पटैयॊटुम्–सागर-सी सेना के साथ; चिरम् उक–उनके मस्तकों को गिराते हुए; चिलै कुऩित्तु–धनुष झुकाकर; उतवुवाऩ्–(देवों और मानवों का) उपकार किया; तिचै उळार्–सभी दिशाओं में रहनेवाले; पर मुक पकै–वैरी शत्रुओं को; तुमित्तु–मिटाकर; अरुळुवाऩ्–कृपा करनेवाले हैं; परमर् आम्–श्रेष्ठ देव; अरऩ् मुतल् तलैवरुक्कु–हर आदि प्रधान देवताओं के लिए भी; अतिचय–विस्मय देनेवाली; तिऱलिऩाऩ्–शक्ति रखनेवाले हैं। ८७

(वही नहीं —) खर आदि नृशंस निशाचरों और उनकी सागर-सम सेना को श्रीराम ने उनके सिर काटकर मिटाया और देवों और मानवों का बड़ा उपकार किया। श्रीराम ऐसे हैं, जो सभी दिशाओं में रहनेवाले शत्रुओं का नाश करके उपकार करेंगे। श्रेष्ठ हर आदि प्रधान देवों को भी विस्मय हो जाय, वे ऐसे शक्तिशाली हैं। ८७

आयमा नाहर्दा ळाऴिया ऩॆयलाल्
कायमा ऩायिऩाऩ् यावऩै कावला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीयमा नेर्दिया निरुदमा रीशनार्
मायमा नायिनान् मायमा नायिनान् 88

कावला–हमारे पालक; आर् माय–अधिक मायावी; मान् आयितान्–मृग जो बना; निरुत मारीचन्–उस राक्षस मारीच के लिए; मा यमान् आयितान्–बड़े यम बने; आय–उचित; मा नाकर्–श्रेष्ठता से युक्त देवों से; ताळ्–नमस्कृत; आळि याने अलाल्–चक्रधारी विष्णु के सिवा; मान् कायम् आयितान्–मानवशरीरी बने; यावने–और कौन हैं; नी–आप; अ मान्–उन महान पुरुष से; नेर्ति–जाकर मिलें। ८८

राजन ! राक्षस मारीच मायामृग बना। श्रीराम उसके लिए बड़ा यम बन गये। वे अवश्य चक्रधारी श्रीविष्णु हैं, जिनके चरणों पर देव विनत होते हैं ? फिर कौन ऐसे मानव बन सकते हैं ? आप आइए और उन महान विभूति से मिलिए। (इस पद में माय मान् में श्लेष है। माय मान् = मायावी मृग; मा यमान् = बड़ा यम। 'मान्' शब्द के और दो अर्थ हैं— मानव और महान; 'मायम्' का 'मरने' अर्थ भी है।)। ८८

उक्कवन् दववुडर् पॉऱैतुऱन् दुयर्पदम्
पुक्कवन् दमुनमक् कुरैशॅयुम् बुरैयवो
तिक्कवन् दरनॅडुन् दिरळ्करञ् जॅलवुतोळ्
अक्कवन् दनुनिनैन् दमरर्ताळ् शवरिपोल् 89

अम्–श्रेष्ठ; तव–तपस्या से; उटर् पॉऱै–शरीर का भार; तुऱन्तु–गिराकर; उक्क–जो दिवंगत हुईं; अमरर् निनैन्तु–देवों द्वारा ध्यान कर; ताळ्–नमस्कृत; चवरि पोल्–शबरी के समान; तिक्कु अवम् तर–सभी दिशाओं में संकट फैलाकर; नॅटु तिरळ् करम्–लम्बे और स्थूल हाथों को; चॅलवु तोळ्–चलानेवाले कन्धों से युक्त; अ कवन्तनुम्–वह कबन्ध भी; उयर् पतम् पुक्क–उच्च पद पहुँचा, वह; अन्तमुम्–महिमा; नमक्कु–हमें; उरै चॅयुम्–कथन योग्य हो, ऐसा; पुरैयवो–सुलभ है क्या। ८९

शबरी थीं, जो श्रेष्ठ तपस्या से शरीर-भार छुड़ाकर मरीं। देव भी उनका स्मरण करके नमस्कार करते हैं। उन्हें मोक्ष दिया प्रभु ने। कबन्ध था, जो अपने हाथों को सारी दिशाओं में फैलाकर बड़ा उत्पात मचा रहा था। वह भी इन्हीं की कृपा से मोक्ष पहुँचा। श्रीराम की इस महिमा का सम्यक् वर्णन क्या हमारे लिए सुलभ है ? । ८९

मुनैवरुम् पिऱरुमे मुडिवरुम् बहलॅलाम्
इनैयर्वन् दुऱुवरॅन् रियवऱम् पुरिहुवार्
विनैयॅनुञ् जिऱैदुऱन् दुयर्पदम् विरवितार्
ऍनैयरॅन् ऱुरैशॅय्हे निरविदन् पुदल्वने 90

इरवि तन् पुतल्वने–हे सूर्यसूनु; मुनैवरुम् पिऱरुम्–मुनि और अन्य लोग;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इत्तैयवर् वन्तु–ये आकर; उऱुवर् ऍन्ऱु–उपकार करेंगे, यह समझकर; मुटिवु अरुम्–अनन्त; पकल् ऍलाम्–काल तक; इयल् तवम् पुरिकुवार्–उत्तम तपस्या करते हुए; वित्तै ऍन्तुम् चिऱै–कर्मबन्धन की कारा; तुऱन्तु–तुड़ाकर; उयर् पतम्–श्रेष्ठ (मोक्ष) पद; विरवित्तार्–पहुँचे; ऍत्तैयर्–ऐसे ये कैसे महान हैं; ऍन्ऱु–यह; उरै चॅय्केन्–कथन करूँ। ९०

हे सूर्यसूनु ! मुनिगण और अन्य ऋषि आदि इन्हीं के आगमन और कृपा की प्रतीक्षा में लम्बे काल तक कठोर तपस्या करते हैं और कर्मबन्धन की कारा काटकर सर्वोत्कृष्ट मोक्षपद को प्राप्त होते हैं। ऐसी स्थिति में इनके बारे में, ये कौन हैं, कैसे हैं ? यह विवरण मैं कैसे दे सकूँगा ? । ९०

मायैयान् मदियिला निरुदर्होन् मत्तैवियैत्
तीयका नॅऱियिनुय्त् तत्तवट् टेडुवान्
नीयैया तवमिळैत् तुडैमैया नॅडुमत्तम्
तूयैया वुडैमैया लुऱवित्तैत् तुणिहुवार् 91

ऐया–प्रभु; मति इला–बुद्धिहीन; निरुतर् कोन्–राक्षसराज; मायैयाल्–प्रपंच से; मत्तैवियै–श्रीराम की पत्नी को; तीय कान् नॅऱियिन्–कठोर वनमार्ग में; उय्त्तत्तन्–ले गया; अवळ् तेटुवान्–उनको खोजने के लिए; नी–आप; तवम् इळैत्तु–सुकृत कर चुके; उटैमैयाल्–उससे; मत्तम्–और मन में; नॅटुम् तूयैया उटैमैयाल्–अति पवित्रता रखते हैं, इसलिए; उऱवित्तै–आपकी मैत्री; तुणिकुवार्–प्राप्त कर लेने का निश्चय किया है। ९१

प्रभु ! जड़मति राक्षसपति प्रपञ्च रचकर श्रीराम की पत्नी को कठोर कानन-मार्ग में हर ले गया। उन्हीं की खोज में वे इधर आये। आपका सुकृत है और आपका मन पवित्र है। इसीलिए वे आपकी मैत्री तीव्रता से चाहते हैं। ९१

तन्दिरुन् दत्तररुट् टलैमैयैप् पहैञत्ताम्
इन्दिरन् शिऱुवनुक् किऱुदियिन् ऱिशैदरुम्
पुन्दियित् पॅरुमैयाय् पोदरॅन् ऱुरैशॅय्दान्
मन्दिरङ् गॅळुमुनूत् मरबुणर्न् दुदवुवान् 92

कॅळुमुनूल्–श्रेष्ठ शास्त्रसम्मत; मन्तिरम् मरपु–मंत्रणा का क्रम; उणर्न्तु–जानकर; उतवुवान्–उपकार करनेवाले (हनुमान) ने; पुन्तियिन् पॅरुमैयाय्–श्रेष्ठ बुद्धिशाली; अरुळ् तलैमैयै–कृपा-विशेष को; तन्तिरुन्तत्तर्–वे आपको प्रदान करने को प्रस्तुत हैं; पकैञत् आम्–शत्रु; इन्तिरन् चिऱुवनुक्कु–इन्द्रपुत्र (वाली) का; इऱुति–अन्त; इन्ऱु इचै तरुम्–अब हो जायगा; पोतर्–जाइए; ऍन्ऱु–ऐसा; उरै चॅय्तान्–कथन किया। ९२

हनुमान शास्त्रज्ञ था। मन्त्रणा देने का क्रम, जानता था। उसने सुग्रीव से आगे कहा कि श्रेष्ठ बुद्धिशाली ! वे आप पर विशेष कृपा रखते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हैं। आपके शत्रु, इन्द्र के पुत्र, वाली का अन्त अब आ जायगा। इसलिए आप उनके पास जाइए। ९२

अन्नवा मुरैयॅला मऱिविन्ना लुणर्हुवान्
उन्नैये युडैयवॅर् करियदॅप् पॉरुळरो
पॉन्नैये पॉरुवुवाय् पोदॅन्नप् पोदुवान्
तन्नैये यनैयवन् शरणम्वन् दणुहिन्नान् 93

अन्नत आम्–वैसे; उरै ॲलाम्–वे वचन; अऱिविन्नाल्–बुद्धि से; उणर्कुवान्–समझकर; पॉन्नैये–(सुग्रीव ने) स्वर्ण से ही; पॉरुवुवाय्–तुल्य; उन्नैये उटैय–तुमको प्राप्त; ॲऱ्कु–मुझे; ॲ पॉरुळ्–कौन सी वस्तु; अरियतु–दुर्लभ है; पोतु–चलो; ॲन्न–कहकर; पोतुवान्–निकला; तन्नैये अनैयवन्–स्वोपम; चरणम् वन्तु–(श्रीराम के) चरणों के पास आकर; अणुकिनान्–पहुँचा। ९३

सुग्रीव ने हनुमान की कही सारी बातें सुनीं। बुद्धिसंगत समझा। उसने हनुमान से कहा कि स्वर्ण ही सम (मूल्यवान या सुन्दर) हनुमान! तुम्हें सहायक के रूप में मैंने पाया है। वैसे मुझे दुर्लभ वस्तु कौन सी होगी? आओ। फिर वह स्वोपम श्रीराम के चरणों पर आ पहुँचा। ९३

❀कण्डन नॅन्ब मन्नो कदिरवन् शिऱुवन् कामर्क्
कुण्डलन् दुऱन्द कोल वदनमुङ् गुळिर्क्कुङ् गण्णुम्
पुण्डरी हङ्गळ् पूत्तुप् पुयऱ्ऱळीइप् पॉलिन्द तिङ्गळ्
मण्डल मुदयञ् जॅय्द मरगदक् किरियन् नानै 94

कतिरवन् चिऱुवन्–किरणमाली के पुत्र ने; पुण्टरीकङ्कळ्–कमल; पूत्तु–विकसित होकर; पुयल् तळीइ–मेघ से मिलकर; पॉलिन्त–शोभायमान; तिङ्कळ् मण्टलम्–चन्द्रमण्डल; उतयम् चॅय्त–उदित हो; मरकत किरि–ऐसे मरकतपर्वत; अन्नतानै–जैसे का; कामर्–मनोरम; कुण्टलम् तुऱन्त–कुण्डल-रहित; कोल वतनमुम्–सुन्दर वदन; कुळिर्क्कुम् कण्णुम्–और स्नेहशीतल आँखों के; कण्टनन्–दर्शन किये। ९४

सूर्यसूनु सुग्रीव ने आकर श्रीराम के दर्शन किये। श्रीराम एक मरकत-गिरि के समान थे, जिस पर अनेक कमल खिले थे और जिस पर मेघावृत चन्द्र-मण्डल उदित हुआ था। उनके मुख के दर्शन किये, जो मनोरम कुण्डलों से रहित थे। उनकी आँखों के दर्शन किये जो स्नेह-शीतल थीं। ९४

❀नोक्किन नॅडिदु निन्ऱा नॉडिवरुङ् गमलत् तण्णल्
आक्किय वुलह मॅल्ला मन्ऱुतॉट् टिन्ऱु हाऱुम्
पाक्कियम् बुरिन्द वॅल्लाङ् गुविन्दिरु पडिव माहि
मेक्कुयर् तडन्दोळ् वॅन्ऱि वीरराय् विळैन्द वॅन्बान् 95

नोक्कितन्–दर्शन करके; नॅटिदु निन्ऱान्–बहुत देर (मुग्ध) खड़ा रहा;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नॉटिवु अरुम्–अवर्ण्य; कमलत्तु अण्णल्–कमल के देव ब्रह्मा से; आक्किय–सृष्ट; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोकों द्वारा; अन्ऱु तॉट्टु–उस दिन से लेकर; इन्ऱु काऱुम्–अब तक; पुरिन्त पाक्कियम् ऍल्लाम्–कृत पुण्य सब; कुविन्तु–इकट्ठा होकर; इरु पटिवम् आकि–दो दिव्य मूर्तियाँ बने; मेक्कु उयर्–खूब उन्नत; तटम् तोळ्–विशाल भुजाओं के; वॅन्ऱि वीरराय्–विजयी वीरों के रूप में; विळैन्त–व्यक्त हुआ है; ऍन्पान्–ऐसा सोचने लगा (सुग्रीव)। ९५

देखा तो सुग्रीव मन्त्रमुग्ध-सा बहुत देर विस्मित खड़ा रह गया। उसने सोचा किअवर्णनीय श्रेष्ठ कमलासन ब्रह्मा द्वारा सृष्ट सारे विश्वों का उस दिन से लेकर अब तक किया हुआ जो पुण्य है,वही दो मूर्तियाँ बनकर श्रेष्ठ उन्नत भुजाओं के साथ विजयी वीरों के रूप में व्यक्त हुआ है ! । ९५

❀ तेऱिन्ऩे नमरर्क् कॅल्लान् देवरान् देवरॅन्ऱे
मारियिप् पिऱप्पिल् वन्दार् मानुड राहि मन्नो
आरुहॉळ् शडिलत् तानु मयनुमॅन् रिवर्ह ळादि
वेरुळ कुळुवै यॅल्ला मानुडम् वॅन्ऱ दन्ऱे 96

मारि–रूप बदलकर; मानुटर् आकि–मनुष्य बनकर; इ पिऱप्पिल् वन्तार्–इस जन्म में आये हुए ये; अमरर्क्कु ऍल्लाम्–सभी देवों के; तेवर् आम् तेवर्–देव परमदेव हैं; ऍन्ऱु–ऐसा; तेऱिन्ऩॅन्–साफ़ समझ लिया; आऱु कॉळ्–गंगाधर; चटिलत्तानुम्–जटाधारी महादेव और; अयनुम्–ब्रह्मा; ऍन्ऱु–कहलानेवाले; इवर्कळ् आति–इनसे लेकर; वेऱु उळ कुळुवै ऍल्लाम्–अन्य सभी वृन्दों को; मानुटम् वॅन्ऱतु–मानवता ने जीत लिया है। ९६

ये दोनों देवों के देव परमदेव के ही अवतार हैं। परमेश्वर ने ही अपना रूप बदलकर मनुष्य-जन्म लिया है। गंगाधर जटाधारी महादेव, ब्रह्मा आदि अनेक वृन्दों के देवों के जन्म को मनुष्य-जन्म ने हरा दिया है ! मानव जाती का ही भाग्य रहा कि ये परमदेव मानव बन आये। ९६

❀ ऍऩनिऩैन् दिऩैय वॅण्णि यिवर्हिन्ऱ काद लोदक्
कऩैहडर् ऱिरैयुळ् ळाळ्न्दु कण्णिणै कळिप्प नोक्कि
अऩहऩैक् कुऱुहि ऩानव् वण्णलु मरुत्ति कूरप्
पुऩैमलर्त् तडक्कै नीट्टिप् पोन्दिऩि दिरुत्ति यॅन्ऱान् 97

ऍऩ निऩैन्तु–ऐसा सोचकर; इऩैय ऍण्णि–यों विचार करके; इवर्किन्ऱ–उमगनेवाले; कातल् ओतम्–प्रेम-जल के; कऩै कटल्–शब्दायमान समुद्र की; तिरैयुळ् आळ्न्तु–तरंगों में मग्न होकर; कण् इणै–अक्षद्वय; कळिप्प–मुदित करते हुए; नोक्कि–दर्शन करके; अनकऩै–अनघ के; कुऱुकिऩान्–समीप गया; अ अण्णलुम्–उन महिमावान प्रभु ने भी; अरुत्ति कूर–वांछा के बढ़ते; पुऩै मलर–सुन्दर कमल-सम; तटम् कै–(और) विशाल हाथों को; नीटटि–बढ़ाकर; पोन्तु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(स्वागत में); पोन्तु–इधर आकर; इतितु इरुत्ति–सुख से रहो; ऍन्ऱान्–कहा। ९७

ऐसी-ऐसी बातें सुग्रीव ने सोचीं। और आगे भी अनेक विचार करते हुए श्रीराम और लक्ष्मण के प्रति उमड़ आनेवाले स्नेहजल के शब्दायमान सागर की तरंगों में मग्न हुआ। अपनी आँखों को मुदित करते हुए उनके दर्शन किये। इस परवश स्थिति में सुग्रीव श्रीराम के पास पहुँचे। अनघ श्रीराम की भी वांछा बढ़ी। उन्होंने सुन्दर कमल-सम अपने हाथ बढ़ाकर उसका स्वागत किया और कहा कि आओ! इधर सुख से रहो। ९७

तवावलि यरक्क रॅन्तुन् दवाविरुट् पहैयॅत् तळ्ळिक्
कुवालऱ निऱुत्तऱ् केऱ्ऱ् कालत्तिन् कूट्ट मॉत्तार्
अवामुद लऱुत्त शिन्दै यन्हनु मरियिन् वेन्दुम्
उवावुऱ् वन्दु कूडु मुडुपदि यिरवि यॉत्तार् 98

अवा मुतल् अऱुत्त–राग को जड़ से उखाड़कर रहे; चिन्तै अन्हनुम्–मन के अनघ श्रीराम और; अरियिन् वेन्तुम्–कपिराज; उवा उऱ्–अमावस्या के आने पर; वन्तु कूडुम्–आ मिलनेवाले; उडुपति इरवि–उडुपति और किरणमाली के; ऑत्तार्–समान रहे; तवा वलि–अक्षय बली; अरक्कर् ऍन्तुम्–राक्षस रूपी; तवा इरुळ् पकैयै–अखण्डित अन्धकार शत्रु को; तळ्ळि–मिटाकर; कुवाल् अऱम्–पुंजीभूत धर्म को; निऱुत्तऱ्कु–स्थापित करने के लिए; कालत्तिन् कूट्टम्–उपयुक्त काल के संगम के; ऑत्तार्–समान लगे। ९८

श्रीराम ने राग को मूल से उखाड़कर फेंक दिया था। अनघ वे और वानरराज सुग्रीव मिले, तो उनका मिलन अमावस्या के दिन उडुपति चन्द्र और किरणमाली रवि के सम्मिलन-सा था। अक्षय बलशाली राक्षस रूपी अखण्डित अन्धकार-शत्रु को मिटाने के लिए और पुंजीभूत धर्म की संस्थापना करने के लिए संगमित कालों के समान था। ९८

कूट्टमुऱ् ऱिरुन्द वीरर् कुऱित्तदोर् पॉरुट्कु मुन्नाळ्
ईट्टिय तवमुम् पिन्नर् मुयऱ्चियु मियैन्द दॉत्तार्
वीट्टुम्वा ळरक्क रॅन्तुन् दीविनै वेरिन् वाङ्गक्
केट्टुणर् कल्वि योडु ञानमुङ् गिडैत्त दॉत्तार् 99

कूट्टम् उऱ्ऱु इरुन्त–एकत्रित रहे; वीरर्–वीर; कुऱित्तत्तु ओर् पॉरुट्कु–निश्चित कोई कार्य साधने के लिए; मुन् नाळ्–पूर्व के दिनों में; ईट्टिय तवमुम्–की हुई तपस्या; पिन्नर् मुयऱ्चियुम्–और बाद का प्रयत्न; इयैन्तत्तु–मिले; ऑत्तार्–जैसे लगे; वीट्टुम् वाळ्–घातक तलवार-सरीखे; अरक्कर् ऍन्तुम्–राक्षस रूपी; ती विनै–पातक को; वेरिन् वाङ्क–मूल से उखाड़ने के लिए; केट्टु उणर् कल्वियोटु–श्रवण से प्राप्त विद्या को; ञानमुम्–ज्ञान भी; किटैत्तत्तु–प्राप्त हुआ हो; ऑत्तार्–ऐसा लगे। ९९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीराम और सुग्रीव का मिलन और कैसा था ? किसी निश्चित कार्य की सिद्धि के लिए पूर्वकृत तपस्या का फल और तत्काल का प्रयत्न —दोनों मिल गये हों, ऐसा भी लगा। और भी खूनी तलवार-से राक्षसों के रूप में रहे पातक को मूल से मिटाने के हेतु श्रवण से प्राप्त विद्या को तत्त्व का ज्ञान भी प्राप्त हो गया हो, ऐसा भी लगा। ९९

❀आयदो रवदि यिन्क णरुक्कन्शे यरशै नोक्कित्
तीवित्तै तीय नोऱ्ऱा रॅन्निन्यार् शॅल्व निन्नै
नायह नुलहुक् कॅल्ला मॅन्नला नलमिक् कोयै
मेयिन्नॅन् विदिये नल्हिन् मेवला हादॅन् नॅन्ऱान् 100

आयतु ओर्–ऐसे एक; अवतियिन् कण्–समय में; अरुक्कन् चेय्–अर्कपुत्र; अरचै नोक्कि–राजा राम को देखकर; चॅल्व–प्रभु; उलकुक्कु ऍल्लाम्–सारे लोकों के; नायकन् ऍन्नलाम्–नायक मानें, उसके योग्य; नलम् मिक्कोयै–श्रेष्ठता रखनेवाले; निन्नै–आपके पास; मेयिन्नॅन्–आ गया; ती वित्तै तीय–पाप जल जायँ, ऐसी; नोऱ्ऱार्–तपस्या के कर्ता; ऍन्निल् यार्–मेरे समान कौन होंगे; वितिये नल्किन्–जब विधि ही अनुकूल रहे, तब; मेवल् आकातु–अप्राप्य; ऍन्–क्या है। १००

उस मिलन के समय सूर्यसूनु सुग्रीव ने राजा राम से यों निवेदन किया। प्रभु ! सारे लोकों के नायक के योग्य श्रेष्ठता रखनेवाले आपके पास मैं आ गया हूँ। कठोर पाप को मिटानेवाली तपस्या के श्रेष्ठ कर्ता मेरे समान कौन होंगे ? जब विधि स्वयं उपकार करने को अनुकूल हो जाती है, तब कौन सी वस्तु होगी जो दुर्लभ हो ? । १००

मैयऱु तवत्ति नान शवरियिम् मलैयि नीवन्
दॅय्दिनै यिरुन्द तन्मै यियम्बिनळ् याङ्ग ळुऱ्ऱ
कैयऱु तुयर निन्नाऱ् कडप्पदु करुदि वन्दोम्
ऐयनिऱ ऱीरुमॅन्न वरिहुलत् तलैवन् शॊल्वान् 101

ऐय–श्रेष्ठ; मै अऱु–अकलंक; तवत्तिन् आन–तपस्या में रत; चवरि–शबरी ने; इ मलैयिल्–इस पर्वत पर; नी वन्तु ऍय्तिनै–तुम आये रहे; इरुन्त तन्मै–रहने की बात; इयम्पिनाळ्–कही थी; याङ्कळ् उऱ्ऱ–हमको प्राप्त; कै अऱु तुयरम्–निष्क्रिय बनानेवाला दुःख; निन्नाल् कटप्पतु करुति–तुम्हारी सहायता से दूर करें, समझ; निन् तीरुम्–तुम दूर करोगे, सोचकर; वन्तोम्–आये हैं; ऍन्न–(श्रीराम के) यह कहने पर; अरि कुल तलैवन्–वानरकुल का नायक; चॊल्वान्–बोला। १०१

उसके उत्तर में श्रीराम ने यह श्रीवचन उच्चारे। श्रेष्ठ सुग्रीव ! निर्दोष तपस्विनी शबरी ने हमें तुम्हारे इस ऋष्यमूक पर्वत पर आकर वास करने की बात बतायी थी। हम यही सोचकर तुम्हारे पास आये कि हम पर जो मनुष्य को निष्क्रिय बना सकनेवाली विपदा आयी है, वह तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सहायता से दूर होगी। श्रीराम ने जब यह बात कही तब वानरकुलाधीश ने यों कहा। १०१

❀ मुरणुडैत् तडक्कै योच्चि मुन्नवन् पिन्वन् देनै
इरुणिलैप् पुऱत्तिन् काऱु मुलहॅङ्गुन् दॊडर विक्कुन्
ऱरणुडैत् ताह वुयन्दे नारुयिर् तुऱक्क वञ्जिच्
चरणुनैप् पुहुन्दे नॅन्नैत् ताङ्गुद ऱरुम मॅन्ऱान् 102

मुन्नवन्–मेरे अग्रज के; पिन् वन्तेनै–अनुज, मुझ पर; मुरण् उटै–बलिष्ठ; तटम् कै–विशाल हाथ; ओच्चि–उठाते हुए; इरुळ् निलै–अन्धकारनिलय; पुऱत्तिन् काऱुम्–इस अण्ड के बाहर तक; उलकु ॲङ्कुम्–विश्व भर में; तॊटर–पीछा करने पर; आर् उयिर्–प्यारे प्राण; तुऱक्क अञ्चि–छोड़ने से डरकर; इ कुन्ऱ–इस (ऋष्यमूक) पर्वत के; अरण् उटैत्तु आक–मेरे रक्षक रहते; उयन्तेन्–बचा; चरण् उनै पुकुन्तेन्–आपकी शरण में आया हूँ; ॲन्नै ताङ्कुतल्–मुझे अपना लेना (और मेरी सहायता करना); तरुमम्–आपका धर्म है; ॲन्ऱान्–कहा। १०२

प्रभु ! मेरे बड़े भाई ने अपने ही अनुज मुझ पर अपना बलवान हाथ उठाकर खदेड़ा। विश्व भर में, अण्ड के बाहर तक जहाँ अँधेरा भरा है उसने मेरा पीछा करके मुझे भगाया। मैं मरने से डरता था। अच्छा हुआ कि यह पर्वत मेरा रक्षण कर सकता था। मैं इधर आया तभी जीवित बच सका। ऐसा मैं आपकी शरण में आया हूँ। मेरी रक्षा करना आपका धर्म है ! । १०२

❀ ॲन्ऱवक् कुरङ्गु वेन्दै यिरामनु मिरङ्गि नोक्कि
उन्ऱनक् कुरिय विन्ब तुन्बङ्ग ळुळ्ळ मुन्नाळ्
शॅन्ऱन पोह मेल्वन् दुऱुवन तीर्प्प लन्न
निन्ऱन वॅनक्कु निऱ्कु नेरॅन मॊळियु नेरा 103

ॲन्ऱ–ऐसा जिसने कहा; अ कुरक्कु वेन्तै–उस वानरपति को; इरामनुम्–श्रीराम (ने); इरङ्कि नोक्कि–अनुताप के साथ देखकर; उन् ततक्कु उरिय–तुम्हारे अपने; इन्प तुन्पङ्कळ् उळ्ळ–सुख-दुःख जो हैं; मुन् नाळ् चॅन्ऱन–उनमें जो पहले हो चुके हैं; पोक–उनको जाने दो; मेल् वन्तु उऱुवन–जो आगे आयेंगे; तुन्पङ्कळै–उन दुःखों को; तीर्प्पल्–दूर कर दूँगा; अन्न निन्ऱन–वैसे जो स्थित हैं; ॲनक्कुम् निऱ्कुम् नेर्–वे मेरे और तुम्हारे लिए समान रहेंगे; ॲन–यह; मॊळियुम् नेरा–वचन देकर। १०३

श्रीराम ने ऐसा कहनेवाले सुग्रीव पर दया की दृष्टि फेरी। कहा कि देखो सुग्रीव ! तुम्हारे हक में जितने सुख-दुःख होंगे, उनमें जो बीत गये वे तो बीत गये। पर आगे जो दुःख होंगे उनका निवारण मैं अवश्य करूँगा। अभी जो बाकी हैं आने को, उनको तुम भी मेरे समान हक के समझ लो। प्रभु श्रीराम ने यह वचन दिलाया। १०३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ मऱ्ऱिऩि युरैप्प दॆऩ्ऩे वाऩिडै मण्णि ऩिऩ्ऩैच्
चॆऱ्ऱव रॆऩ्ऩैच् चॆऱ्ऱार् तीयरे यॆऩिनु निऩ्ऩो
डुऱ्ऱव रॆऩक्कु मुऱ्ऱा रुऩ्किळै यॆऩदॆऩ् कादऱ्
चुऱ्ऱमुऩ् चुऱ्ऱ नीयॆऩ् ऩिऩ्ऩुयिर्त् तुणैव ऩॆऩ्ऱाऩ् 104

मऱ्ऱु–और; इऩि–आगे; उरैप्पतु–कहने के लिए; ऍऩ्ऩे–क्या है; वाऩ् इटै–आकाश में; मण्णिऩ्–पृथ्वी में; निऩ्ऩै चॆऱ्ऱवर्–तुम्हारे शत्रु; ऍऩ्ऩै चॆऱ्ऱार्–मेरे भी शत्रु हैं (मैं वैसा मानूंगा); निऩ्ऩोटु उऱ्ऱवर्–तुम्हारे साथी मित्र; तीयरे ऍऩिऩुम्–दुष्ट ही क्यों न हों; ऍऩक्कुम् उऱ्ऱार्–मेरे भी मित्र होंगे; उऩ् किळै–तुम्हारे नातेदार; ऍऩतु–मेरे हैं; ऍऩ् कातल् चुऱ्ऱम्–मेरे प्यारे रिश्तेदार; उऩ् चुऱ्ऱम्–तुम्हारे बन्धु हैं; नी–तुम; ऍऩ्–मेरे; इऩ्–प्यारे; उयिर् तुणैवऩ्–प्राणसखा हो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। १०४

फिर आगे बोले— फिर कहने को क्या है ? इतना मान लो कि आकाश में हो, चाहे पृथ्वी में, जो भी तुम्हारे त्रासक शत्रु हैं वे मेरे भी शत्रु होंगे। तुम्हारे साथी मित्र मेरे मित्र होंगे। तुम्हारे बन्धु मेरे बन्धु और मेरे प्यारे रिश्तेदार तुम्हारे बान्धव ! तुम मेरे प्यारे प्राणसखा हो ! । १०४

❀ आर्त्ततु कुरक्कुच् चेऩै यञ्जऩैच् चिऱुवऩ् मेऩि
पोर्त्तऩ पॊडित्त रोम पुळहङ्गळ् पूविऩ् मारि
तूर्त्तऩर् विण्णोर् मेहञ् जॊरिन्दऩ कऩह मण्णल्
वार्त्तैयॆक् कुलत्तु ळोर्क्कु मऱैयिनु मॆय्यॆऩ् ऱुऩ्ऩा 105

अण्णल् वार्त्तै–महिमावान प्रभु का वचन; ऍ कुलत्तु उळोर्क्कुम्–किसी भी कुल के लोगों के लिए; मऱैयिऩुम्–वेदवचन से भी (अधिक); मॆय्–सत्य है; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उऩ्ऩा–सोचकर; कुरक्कु चेऩै—वानर-सेना ने; आर्त्ततु–आनन्दारव किया; अञ्चऩै चिऱुवऩ्–अंजना के पुत्र की; मेऩि–श्रीदेह पर; पॊटित्त रोम पुळकङ्कळ्–प्रफुल्ल रोम-पुलक; पोर्त्त–भर गये; विण्णोर्–देवों ने; पूविऩ् मारि–पुष्पवर्षा करके; तूर्त्तऩर्–(भूमि को) पाट दिया; मेकम्–मेघों ने; कऩकम्–कनक की; चॊरिन्तऩ–वर्षा करायी। १०५

महिमामय प्रभु श्रीराम का यह वचन सुनकर वानर-सेना आनन्दनाद कर उठी। 'यह प्रभु का वचन किसी भी (वानर, मानव, देव या प्राणी) कुल के सभी लोगों के लिए सत्य है और वेद-वाक्य से भी अधिक सत्य है' —इसी धारणा से वे वीर हर्षोन्मत्त हो उठे। अंजनासुत की श्रीदेह रोमांच से ढक गयी। देवों ने पुष्पवर्षा करके भूमि को छिपा दिया। मेघों ने कनकवर्षा करायी। १०५

❀ आण्डॆऴुन् दडियिऱ् ऱाऴ्न्द वञ्जऩैच् चिङ्गम् वाऴि
तूण्डि डडन्दोण मैन्द तोऴुनु नीयुम् वाऴि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ईण्डुनुङ् गोयि लॅय्दि यिनिदिनि निरुक्कै काण
वेण्डुदुम् मरुळु हॅन्ऱान् वीरनुम् विळुमि दॅन्ऱान् 106

आण्टु–तब; ॲळुन्तु–उठ आकर; अटियिल् ताळ्न्त–श्रीराम-चरण पर विनत हुआ; अञ्चनै चिङ्कम्–अंजनापुत्र सिंह-सदृश हनुमान ने; तूण् तिरळ्–स्तम्भ-सम स्थूल; तटम् तोळ्–और विशाल कन्धों वाले; मैन्त–बलवान वीर; वाळि–जियें; तोळनुम् नीयुम्–आपका मित्र और आप; वाळि–(चिरकाल) जिएँ; ईण्टु–अब; नुम् कोयिल् ॲय्ति–अपना मन्दिर जाकर; इनितिन्–सुख से; निन् इरुक्कै–आपका (आराम से) रहना; काण वेण्टुतुम्–देखना चाहते हैं; अरुळुक–कृपा करें; ॲन्ऱान्–प्रार्थना की; वीरनुम्–श्री वीरराघव ने भी; विळुमितु–यह श्रेष्ठ है; ॲन्ऱान्–कहा (सम्मति प्रकट की)। १०६

तब हनुमान उठा। श्रीराम के पास आकर उनके चरणों पर विनत हुआ। अंजनासुत, केसरी-सदृश हनुमान ने निवेदन किया कि स्तम्भ-सम स्थूल और विशाल कन्धों वाले बली वीर! जिएँ आप। आपका मित्र और आप चिरकाल जिएँ। अब आप अपने मन्दिर में सुख से पधारें और प्रसन्नता के साथ आराम करें। इसके हम दर्शन करना चाहते हैं। यह निवेदन सुनकर श्रीवीरराघव ने भी श्रीवचन उच्चारा कि हाँ! यह अच्छी बात है! । १०६

एहिन रिरवि शेयु मिरुवरु मरिह ळेरुम्
ऊहवॅञ् जेनै शूळ्वन् दडियिणै युवन्दु वाळ्त्त
नाहमु नरन्दक् कावु नळिनवा विहळु मल्हिप्
पोहबू मियैयु मेशुम् पुदुमलर्च् चोलै पुक्कार् 107

इरवि चेयुम्–रविसुत (और); इरुवरुम्–(श्रीराम और लक्ष्मण) दोनों; अरिकळ् एरुम्–वानरों में केसरी-सम हनुमान; वॅम्–भयंकर; उक जेनै–और वानर-सेना के; चूळ् वन्तु–घेरते आकर; अटियिणै–चरणद्वय; उवन्तु वाळ्त्त–भक्ति के साथ वन्दना करते; एकिनर्–चले; नाकमुम्–पुंनाग और; नरन्त कावुम्–नारंगी के बागों; नळिन वाविकळुम्–और कमलसरों से; मल्कि–खूब भरे होकर; पोक भूमियैयुम्–भोगभूमि (स्वर्ग) को भी; एचुम्–शरम में डालनेवाले; पुतुमलर् चोलै–नवविकसित पुष्पोद्यान में; पुक्कार्–पहुँचे। १०७

उनके सम्मत होने पर रविसुत सुग्रीव, श्रीराम और लक्ष्मण दोनों और वानरकेसरी हनुमान सब उठे और चलने लगे। वानर-सेना ने उनके चरणों में विनत होकर उनकी स्तुति की। वे एक नवविकसित पुष्पोद्यान में पहुँचे, जिसमें पुंनाग, नारंगी आदि के तरु लसे थे और कमलसर पाये गये। वह भोगभूमि स्वर्ग का भी उपहास करनेवाला (उतना मनोरम और सुहावना) उद्यान था। १०७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आरमु महिलुन् दुन्नि यविर्पळिक् कऱैय ळावि
नारनिन् ऱन्नपोऱ् ऱोन्ऱि नवमणित् तडङ्ग णीडुम्
पारमु मरुङ्गुन् दैय्वत् तरुवुयर् मरत्ति नाडुम्
शूरर महळि रूश रुवन्ऱिय शुम्मैत् तन्ऱे 108

आरमुम् अकिलुम्–चन्दनतरुओं और अगरु के वृक्षों से; तुन्नि–ठस भरकर; अविर् पळिङ्कु अऱै–उज्ज्वल स्फटिक-चट्टानों से; अळावि–शोभायमान; नारम् निन्ऱत पोल्–(उनमें) जल स्थित हो; तोन्ऱि–ऐसा भ्रम पैदा करते हुए; नव मणि तटङ्कळ्–नवरत्न-खचित तडागों के; नीटुम्–लम्बे; पारमुम् मरुङ्कुम्–तटों और पास के स्थलों में; तेय्व तरु–देवलोक के कल्पतरु-सम; उयर्–उन्नत; मरत्तिन्–वृक्षों पर; आटुम्–झूलनेवाले; चूर् अर मकळिर्–देवबालाओं के; ऊचल्–झूले; तुवन्ऱिय–जो खूब मचाते हैं; चुम्मैत्तु–उस शोर से भरा है, (वह उद्यान)। १०८

उसमें चन्दनतरु और अगरु के पेड़ बहुत थे। प्रकाशमय स्फटिक-चट्टानें थीं। वे ऐसी दिखीं मानो उनमें जल भरा हो। नवरत्नों से शोभित तडाग थे। उनके कूलों पर और उनके आसपास दिव्य कल्पतरु के समान अनेक ऊँचे वृक्ष थे। उन पर देवनारियाँ झूले बाँधकर झूल रही थीं। वह उद्यान उनकी कोलाहलध्वनि से भरा था। १०८

अयर्विल् केळ्विशा लऱिञर् वेलैमुन्
पयिल्विल् कल्वियार् पॊलिविल् पान्मैपोल्
कुयिलु मामणिक् कुळुमु शोदियाल्
वॆयिलुम् वॆळ्ळिवॆण् मदियिन् मेम्बडा 109

अयर्वु इल्–अप्रमत्त; केळ्वि चाल्–श्रवणज्ञान से युक्त; अऱिञर् वेलै मुन्–ज्ञानी पंडितों के सागर (वृन्द) के सामने; पयिल्वु इल्–अनभ्यस्त; कल्वियार्–विद्या वाले; पॊलिवु इल्–जैसे नहीं चमकते; पान्मै पोल्–वैसी रीति से; कुयिलुम्–जड़ित; मा मणि कुळुमु–अनेक रत्नों की सम्मिलित; चोतियाल्–ज्योति से; वॆयिलुम्–धूप भी; वॆळ्ळि वॆण् मतियिन्–चाँदी के से श्वेत चन्द्र की तरह; मेम्पटा–प्रकाश में उन्नत नहीं रहती। १०९

उसमें अनेक तरह के रत्न पाये गये। उनके प्रकाश के सामने धूप भी श्वेत चाँदनी से अधिक उज्ज्वल नहीं रही। वह ऐसा रहा, जैसा अप्रमत्त श्रवण-ज्ञान से भरे विद्वानों के (सागर) समूह के सामने विद्या से अनभ्यस्त लोग नहीं चमकते। १०९

एय वन्नदा मिन्नि शोलैवाय्, मेय मैन्दनुङ् गवियिन् वेन्दनुम्
तूय पूवणैप् पॊलिन्दु तोन्ऱिनार्, आय वन्बिन्ना रळव ळावुवार् 110

एय–(ऐसी विशेषता से) युक्त; अन्नतु आम्–उस; इतिय–सुहावने; चोलै वाय्–उद्यान में; मेय मैन्ततुम्–आगत वीर श्रीराम; कवियिन् वेन्ततुम्–कपिराज;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तूय पू अर्ण–पवित्र पुष्पासन पर; पॉलिन्तु तोन्ऱिऩार्–शोभायुक्त विराजे; आय अन्पिऩार्–गम्भीर प्रेम के साथ; अळवळावुवार्–स्नेहसम्भाषण करने लगे। ११०

ऐसे विशिष्ट सुखद उद्यान में श्रीराम और कपिकुलेश दोनों पधारे और एक पवित्र पुष्पासन पर विराजे। दोनों बराबर स्नेह के साथ वार्तालाप करने लगे। ११०

कऩियुङ् गन्दमुम् कायुन् दूयऩ
इऩिय यावैयुङ् गॉणर यारिऩुम्
पुऩिदऩ् मञ्जऩत् तॉऴिल्पु रिन्दुपिऩ्
इऩिदि रुन्दुनल् विरुन्दु मायिऩाऩ् 111

कऩियुम्–फलों और; कन्तमुम्–कन्दों; कायुम्–खाद्य कच्चे फलों को; तूयऩ–पवित्र और; इऩिय–मधुर; यावैयुम्–सब; कॉणर–लोग लाये, तब; यारिऩुम् पुऩितऩ्–सर्वश्रेष्ठ पावनमूर्ति; मञ्चऩ तॉऴिल्–स्नानकार्य; पुरिन्तु–करके; पिऩ्–पश्चात; इऩितु इरुन्तु–सुख से रहकर; नल् विरुन्तुम्–श्रेष्ठ अतिथि भी; आयिऩाऩ्–बने (आतिथ्य स्वीकार किया)। १११

स्नेह के साथ जब वे बोलते रहे तब वानर फल, कन्द, तरकारी आदि लाये, जो पावन और मधुर थे। सर्वश्रेष्ठ पावन (और पावनकारी) भगवान ने स्नानकार्य किया। फिर सुख से आसीन होकर आतिथ्य को स्वीकार किया। १११

विरुन्दु माहियम् मॅय्म्मै यऩ्बिऩो
डिरुन्दु नोक्किऩॉन् दिरैवऩ् शिन्दियाप्
पॉरुन्दु नऩ्मऩैक् कुरिय पूवैयैप्
पिरिन्दु ळाय्हॉलो नीयुम् पिऩ्ऩॅऩ्ऱाऩ् 112

अ मॅय्म्मै अऩ्पिऩोटु–उस तरह सच्चे प्रेम के साथ; इरुन्तु–रहकर; इऱैवऩ्–भगवान श्रीराम ने; विरुन्तुम् आकि–आतिथ्य स्वीकार करके; नोक्कि–सुग्रीव पर दृष्टि डालकर; नॉन्तु–खेद करके; चिन्तिया–विचार करके; पॉरुन्तु–योग्य; नल् मऩैक्कु उरिय–सद्गृहिणी; पूवैयै–स्त्री से; पिऩ्–बाद; नीयुम्–तुम भी; पिरिन्तु उळाय् कॉल्–वियुक्त हो गये क्या; अॅऩ्ऱाऩ्–प्रश्न किया। ११२

श्रीराम ने सुख से आतिथ्य स्वीकार किया। तब उनकी दृष्टि सुग्रीव पर पड़ी। उनके मन में सुग्रीव के अकेलेपन पर ध्यान गया। वे दुःखी हुए। उन्होंने उससे पूछा कि फिर तुम भी आखिर अपनी योग्य गृहिणी स्त्री से वियुक्त हो गये क्या ? । ११२

अॅऩ्ऱ वेलैयि नॅऴन्दु मारुदि
कुऩ्ऱु पोलनिऩ् ऱिरुहै कूप्पिऩाऩ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निन्ऱ नीदियाय् नॅडिदु केट्टियाल्
ऑन्ऱु नानुनक् कुरैप्प दुण्डॅना 113

ॲन्ऱु वेलैयिल्–प्रश्न करते समय; मारुति–मारुति; कुन्ऱु पोल ॲऴुन्दु निन्ऱु–पर्वत-सम उठ खड़ा हुआ और; इरुकै–दोनों हाथ; कूप्पिनान्–जोड़े; निन्ऱ नीतियाय्–अचल नीतिमान; नान्–मैं; उन्नक्कु–आपसे; उरैप्पतु–निवेदन करूँ, वह; ऑन्ऱु उण्टु–एक बात है; नॅटिदु केट्टि–लम्बी (है) सुन लें; ॲना–कहकर। ११३

जब श्रीराम ने सुग्रीव से यह प्रश्न किया, तब मारुति पर्वत के समान उठ खड़ा हुआ और दोनों हाथ जोड़कर यों बोला। अचल नीतिमान स्वामी! आपसे एक बात निवेदन करनी है। उसको आप पूरा-पूरा आदि से अन्त तक सुनिए। ११३

नालु वेदमा नवैयि लार्हलि
वेलि यन्नदोर् मलैयिन् मेलुळान्
शूलि यिन्नरुट् टुरैयिन् मुऱ्ऱिनान्
वालि यॅन्ऱुळान् वरम्बि लार्ऱलान् 114

नालु वेतमाम्–चार वेद रूपी; नवै इल्–निर्दोष; आर् कलि–समुद्र ही; वेलि अन्नतु–रक्षा-भित्तियाँ जिसकी हों; ओर् मलैयिन् मेल्–ऐसी एक गिरि (कैलास) पर; उळान्–रहनेवाले; चूलियिन्–शूली महादेव की; अरुळ् तुरैयिन्–कृपा से; मुऱ्ऱिनान्–पूर्ण; वरम्पिल् आर्ऱलान्–असीम बलशाली; वालि–वाली; ॲन्ऱु उळान्–नामक एक है। ११४

निर्दोष, वेद रूपी और शब्दायमान समुद्रों को रक्षण-भित्तियों के रूप में जिसने पाया है, उस कैलासपर्वत पर रहनेवाले शूली महादेव की कृपा का पूर्ण पात्र और असीम बलिष्ठ वाली नाम का एक वानरराज है। ११४

कळऱुन् देवरो डवुणर् कण्णिनिन्
ऱुळ्ळु मन्दरत् तुरुवु तेय्वुर
अऴलुङ् गोळरा वहडु तीयॅऴच्
चुऴलुम् वेलैयैक् कडैयुन् दोळिनान् 115

कळऱुम्–प्रशंसित; तेवरोटु–देवों के साथ; अवुणर्–दानव; कण्णि निन्ऱु–(अमृत-प्राप्ति का), लक्ष्य लेकर, (दोनों ओर) खड़े होते; उळ्ळुम्–घूमनेवाला; मन्तरत्तु–मन्दर पर्वत का; उरुवु–आकार; तेय्वु उर–घिसे ऐसा; अऴलुम्–क्रुद्ध; कोळ् अरा–भयंकर सर्प, वासुकी के; अकट् ती ॲऴ–पेट से आग निकले, ऐसा; चुऴलुम् वेलैयै–मथित समुद्र को; कटैयुम् तोळिनान्–अकेला मथनेवाले बलिष्ठ कन्धों का। ११५

अमृत निकालने के उद्देश्य से देवों और दानवों ने वासुकी-लपेटे मन्दर पर्वत को घुमाया था। तब मन्दर के आकार को घिसाकर क्षीण कराते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हुए और क्रुद्ध भयंकर वासुकी नाग अपने पेट से आग उगले —ऐसा वाली ने अकेले ही मन्दर पर्वत को घुमाया था और समुद्र बिल्कुल क्षुब्ध हो गया। (यह वृत्तान्त वाल्मीकी में नहीं पाया जाता।) ऐसा भुजबली है वह। ११५

निलत्तु नीरुमाय् नॅरुप्पुङ् गाऱ्ऱुमाय्
उलैविल् पूदनान् गुडैय वाऱ्ऱलान्
अलैयिन् वेलैशूळ् किडन्द वाळिमा
मलैयि निन्ऱुमिम् मलैयिन् वावुवान् 116

निलत्तुम्–भूमि; नीरुम् आय्–व जल बने; नॅरुप्पुम् काऱ्ऱुम् आय्–अनल और अनिल बने; उलैव ईल्–अक्षय; पूतम् नान्कु उटैय–(जो हैं) उन चार भूतों के सम्मिलित; आऱ्ऱलान्–बल से युक्त; अलैयिन् वेलै–तरंगसमेत समुद्र से; चूळ् किटन्त–घिरे रहे; आळि मा मलैयिन् निन्ऱुम्–चक्रवाल पर्वत से; इ मलैयिल्–इस पर्वत पर; वावुवान्–उछलकर कूदेगा। ११६

वाली भूमि, जल, अनल और अनिल —इन चारों भूतों का सम्मिलित बल रखता है। तरंग-भरे बाह्य समुद्रों से घिरे चक्रवाल पर्वत से उछलकर वह इस पर्वत पर एक दम कूद सकता है। ११६

किट्टु वार्पॊरक् किडैक्कि नन्नवर्प्
पट्ट नल्वलम् बाह मॅय्दुवान्
ॲट्टु मादिरत् तिरुदि नाळुमुऱ्
ऱ्ऱट्ट मूर्त्तिताळ् पणियु माणैयान् 117

पॊर किट्टुवार्–लड़ने आनेवाले; किटैक्किन्–मिल गये तो; अन्नवर् पट्ट–उनमें रहनेवाले; नल् वलम्–श्रेष्ठ बल का; पाकम्–(आधा) भाग; ॲय्दुवान्–खुद प्राप्त कर लेगा; ॲट्टु मातिरत्तु–आठों दिशाओं के; इऱुति–अन्त तक; नाळुम् उऱ्ऱु–रोज जाकर; अट्ट मूरत्ति–(वहाँ अधिष्ठित रहनेवाले) अष्टमूर्तियों के; ताळ्–चरणों की; पणियुम्–पूजा करने का; आणैयान्–नियम रखनेवाला। ११७

जो कोई उससे युद्ध करने आयगा, उसका आधा बल वाली को मिल जायगा। ऐसा वर उसे प्राप्त है। (यह बात वाल्मीकी में नहीं पायी जाती। श्रीराम ने छिपकर वाली को मारा, इसकी सफ़ाई में यह वर इंगित किया जाता है।) वह प्रतिदिन आठों दिशाओं के अन्त तक जाता है और वहाँ अधिष्ठित अष्टमूर्तियों की पूजा कर आता है। यह उसका नियम बना है। ११७

काल्शॆ लादवन् मुन्नरक् कन्वॆळ्
वॆल्शॆ लादवन् मार्बिन् वॆन्ऱियान्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाल्शॆ लादवा यलदि रावणन्
कोल्शॆ लादवन् कुडैशॆ लादरो 118

अवन् मुन्नर्–उसके सामने; काल् चॆलातु–पवन नहीं चलता; अवन् मार्पिन्–उसके वक्ष में; कन्त वेळ्–स्कन्द (कार्तिकेय) देव की; वेल् चॆलातु–शक्ति नहीं निफर सकती; वॆन्ऱियान्–विजयी (की); वाल् चॆलात–पूँछ जहाँ नहीं जाती; वाय् अलतु–उस जगह के सिवा अन्यत्र (यानी जहाँ उसकी पूँछ जाती वहाँ नहीं); इरावणन् कोल्–रावण का (राज) दण्ड; चॆलातु–नहीं जायगा; अवन् कुटै–उसका छत्र भी; चॆलातु–नहीं चलेगा। ११८

उस वाली के सामने पवन नहीं चलता। उसके वक्ष में स्कन्ददेव की शक्ति घात नहीं कर सकती। (स्कन्ददेव कार्तिकेय हैं।) रावण का दण्ड और छत्र वहीं चल सकेंगे, जहाँ वाली की पूँछ नहीं गयी हो। रावण का अधिकार वाली के अधिकार से सीमित रह गया है। ११८

मेरु वेमुदर् किरिहळ् वेरॊडुम्, पेरु मेयवन् पेरु मेन्नॆडुम्
कारुम् वान्नमुङ् गदिरु नाहमुम्, तूरु मेयवन् पॆरिय तोळ्हळाल् 119

अवन् पेरुमेल्–वह चलेगा तो; मेरुवे मुतल् किरिकळ्–मेरु ही आदि पर्वत; वेरॊटुम्–जड़ के साथ; पेरुमे–उखड़ जायँगे; अवन् पॆरिय तोळ्कळाल्–उसकी बड़ी भुजाओं से; नॆटुम् कारुम्–बड़े-बड़े मेघ और; वान्नमुम्–आकाश; कतिरुम्–चन्द्र और सूर्य और; नाकमुम्–स्वर्गलोक; तूरुमे–परस्पर टकराकर मिट जायँगे। ११९

जब वह चलता है, तब उसके वेग से चालित पवन के कारण मेरु आदि सभी पर्वत जड़ से उखड़ जाते हैं। उसके कन्धों से टकराकर बड़े-बड़े मेघ, आकाश, चन्द्र और सूर्य और स्वर्गलोक तक चूर हो जा सकते हैं। ११९

पारि डन्दवॆम् बन्ऱि पण्डैनाळ्, नीर्हि डन्दपे रामै नेरुळान्
मार्बि डन्दमा वॆन्नि मऱवन्, तार्हि डन्दतो डहैय वल्लदो 120

पार् इटन्त–भूमि को उखाड़नेवाले; वॆम् पन्ऱि–अतिबलिष्ठ वराह (विष्णु का अवतार) भी; पण्टै नाळ्–प्राचीनकाल में; नीर् किटन्त–जल में रहा; पेर् आमै–बड़ा कच्छप (विष्णु का अवतार) भी; नेर् उळान्–उसके समान हैं; मार्पु इटन्त–हिरण्य का वक्ष-विदारक; मा ऍन्निन्नुम्–नरसिंह भी; अवन्–उसके; तार् किटन्त तोळ्–माला से अलंकृत कन्धों को; तकैय वल्लतो–परास्त करने की शक्ति रखता क्या। १२०

वह, भूमि को जिन्होंने खोद निकाला उन विष्णु का अवतार, बड़ा वराह, और प्रलयजल में पड़ा रहा, विष्णु का, अवतार कच्छप —इनकी-सी शक्ति रखनेवाला है। नरसिंह भी, जिन्होंने हिरण्यकशिपु के वक्ष को विदीर्ण किया था, इसके भुजबल को परास्त कर सकेंगे क्या ? नहीं। १२०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पडर्न्द नीणॅडुन् दलैप रप्पिमी
दडर्न्दु पारिडन् दनैय नन्दनुम्
किडन्दु ताङ्गुमिक् किरियिन् मेयिलान्
नडन्दु ताङ्गुमिप् पुवन नाळॅलाम् 121

अनन्ततुम्–अनन्त नाग भी; पटर्न्त–खुले; नीळ् नॅटु–लम्बे-चौड़े; तलै–अपने सहस्र सिरों को; परप्पि–फैलाकर; मीतु अटर्न्तु–उन पर रही; पार् इटम् तनै–भूमि को; किटन्तु ताङ्कुम्–उसके नीचे रहकर ढो रहा है; इ किरियिन् मेयिलान्–इस पर्वत पर रहनेवाला वाली तो; इ पुवनम्–इस भुवन को; नाळ् ऍलाम्–अनेक काल से; नटन्तु ताङ्कुम्–चलते हुए ही धारण करता रहा है। १२१

अनन्तनाग इस भूमि को अपने सहस्र सिरों को फैलाकर, भूमि के नीचे रहकर ही उसे धारण कर रहा है। पर इस पर्वत पर रहनेवाला वाली चलते हुए ही बरसों से इसका धारण कर रहा है। १२१

कडलॉ लिप्पदुङ् गाल्श लिप्पदुम्
मिडल रुक्कर्तेर् मीदु शल्वदुम्
तॉडरिन् मऱ्ऱवन् शुळियु मॅन्ऱलाल्
अडलिन् वॅऱ्ऱिया ययलि नाववो 122

अटलिन् वॅऱ्ऱियाय्–युद्धविजेता; कटल् ऑलिप्पतुम्–समुद्र का गर्जन करना; काल् चलिप्पतुम्–पवन का संचार करना; मिटल् अरुक्कर्–शक्तिमन्त (द्वादश) आदित्यों का; तेर् मीतु चॅल्वतुम्–रथों पर सवार होकर संचार करना; तॉटरिन्–(वाली के) पास जायँ तो; अवन् चुळियुम्–वह क्रोध करेगा; ऍन्ऱु अलाल्–यह (कारण) छोड़कर; मऱ्ऱु अयलिन्–अन्य कारणों से; आववो–होते हैं क्या। १२२

हे युद्धविजेता ! समुद्र गरजता है, वायु बहती रहती है, बलवान द्वादश आदित्य रथों पर सवार हो संचार कर रहे हैं ! यह सब क्यों ? वे वाली से डरते हैं। सोचते हैं कि अगर हम उसके पास जायँ तो वह कुपित होगा। अन्य कोई हेतु है क्या ? नहीं। १२२

वॅळ्ळ मेळुपत् तुळ्ळ मेरुवैत्
तळ्ळ लानदो ळरियिन् ऱानैयान्
उळ्ळ मॉन्ऱियॅव् वुयिरुम् वाळुमाल्
वळ्ळ लेयवन् वलियिन् वन्मैयाल् 123

वळ्ळले–उदार दानी; मेरुवै तळ्ळल् आत–मेरु को भी ढकेलने की शक्ति वाले; तोळ्–कन्धों के; वॅळ्ळम् ऍळुपत्तु उळ्ळ–सत्तर 'वॅळ्ळम्' के; अरियिन् तानैयान्–वानरों की सेना का स्वामी; अवन् वलियिन्–उसकी शक्ति के; वन्मैयाल्–आधिक्य से; ऍ उयिरुम्–सभी जीव; उळ्ळम् ऑन्ऱि–उसके साथ मन मिलाकर, मेल के साथ; वाळुम्–जीते हैं। १२३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हे वदान्य ! उसके पास सत्तर 'वॅळ्ळम्' या समुद्र वानरवीरों की बनी सेना है। (एक हाथी, एक रथ, तीन अश्व, पाँच पदाति —ये मिलकर एक 'पंक्ति' बनते हैं। तिगुणे के हिसाब से सेनामुख, गुल्म, गण, वाहिनी, पृतना, चमू, अनीकिनी होती है। दस अनीकिनियों की एक अक्षौहिणी होती है। फिर अठगुणे के हिसाब से एक, कोटि, शंख, बिन्द, कुमुद, पद्म, देश और समुद्र होता है —शुक्रनीति से न०वे० रा० द्वारा उद्धृत।) उसके प्रताप के आधिक्य के कारण सभी जीव उसका आदर करके मेल के साथ रहते हैं। १२३

मऴैयि डिप्पुऱा वयवॅञ् जीयमा
मुऴैयि डिप्पुऱा मुरण्वॅङ् गालुमॅन्
तऴैतु डिप्पुऱच् चार्वु ऱावनन्
विऴैवि डत्तिन्मेल् विळियै यञ्जलाल् 124

विळियै अञ्चल् आल्–उसके गर्जन से डरते हैं, इसलिए; अवन्–उसके; विऴैवु इटत्तिन् मेल्–चाहे (वास के) स्थान के ऊपर; मऴै इटिप्पु उऱा–मेघ वज्रघोष नहीं निकालते; वयम् वॅम्–विजयी भयंकर; चीयमा–सिंह जानवर; मुऴै–गुफाओं में; इटिप्पु उऱा–गर्जन नहीं करते; मुरण् वॅम् कालुम्–बली, भयंकर पवन भी; मॅन् तऴै–मृदु पत्तों में; तुटिप्पु उऱ–स्पन्दन पैदा करते हुए; चार्वु उऱा–उनके पास नहीं बहता। १२४

वाली गरज उठेगा, इसी डर से जहाँ वह चाह के साथ रहता है, उसके ऊपर मेघ वज्र नहीं गिराते। विजयशील सिंह जानवर अपनी गुफा में भी गर्जन नहीं करते। बलवान भयंकर पवन भी पल्लवों को भी हिलाते हुए नहीं बहता। १२४

मॅय्क्कॊळ् वालिऱान् मिडलि रावणन्
तॊक्क तोळुऱत् तॊडर्ब डुत्तनाळ्
पुक्कि लादवुम् बॊऴिय रत्तनीर्
उक्कि लादवु मुलहम् यावदो 125

मॅय् कॊळ् वालिऱाल्–अपने शरीर का एक अंग, पूँछ से; मिटल् इरावणन्–अति बलिष्ठ रावण के; तॊक्क तोळ्–राशि के कन्धों को; उऱ–खूब कसकर; तॊटर् पटुत्त नाळ्–जिस दिन (वाली ने) बाँधा था; पुक्कु इलातवुम्–(उस दिन) वह जिन लोकों में नहीं गया; पॊऴि अरत्त नीर्–बहनेवाला रक्त; उक्कु इलातवुम्–जहाँ नहीं गिरा; उलकम् यावतो–वे लोक कौन हैं। १२५

(एक बार वाली समुद्रतट पर सन्ध्यावन्दन कार्य में निरत था। रावण ने पीछे से उसको अपनी बीसों भुजाओं से बाँधा।) वाली ने उसके बीसों कंधों को एक साथ कसकर अपनी पूँछ से बाँध लिया। उसी स्थिति में उसको उठा लेते हुए वाली सभी लोकों में घूमा। तब कौन सा लोक बचा था, जिसमें वाली नहीं गया था और जहाँ रावण का रक्त नहीं गिरा था ? । १२५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्दि रन्ऱनिप् पुदल्व निन्नळिच्
चन्दि रन्ऱळैत् तनैय तन्मैयान्
अन्द हन्ऱनक् करिय वाणैयान्
मुन्दि वन्दन निवनिन् मॉय्म्बिनाय् 126

मॉय्म्पिनाय्–शक्तिमन्त; इन्तिरन् तनि पुतल्वन्–इन्द्र का अनुपम वह पुत्र; इन्ऱ अळि–सुखद; चन्तिरन्–चन्द्र; तळैत्तु अनैय–शोभायमान हो, ऐसा; तन्मैयान्–विशिष्ट (श्वेत वर्ण का) है; अन्तकन् तनक्कु अरिय–यम के लिए भी अलंघ्य; आणैयान्–आज्ञाकारी है; इवनिन्–इन (सुग्रीव) का; मुन्ति वन्ततन्–अग्रज है। १२६

शक्तिमान ! इन्द्र का वह अनुपम पुत्र वाली श्वेत रंग का है और सुखद शोभायमान चन्द्र के समान है। उसकी आज्ञा ऐसी है कि यम के लिए भी टालना कठिन है। वह इन सुग्रीव का अग्रज भ्राता है। १२६

अन्न वन्नॅमक् करश नाहवेन्
रिन्न वन्निळम् बदमि यऱ्ऱुनाळ्
मुन्न वन्गुलप् पहैञन् मुट्टिनान्
मिन्नॅ यिऱ्ऱुवा ळवुणन् मेन्मैयान् 127

अन्नवन्–वह; ऍमक्कु अरचन् आक–हमारा राजा रहा, तब; इन्नवन्–ये; इळम् पतम् एन्ऱु–युवराज के पद का धारण करके; इयऱ्ऱु नाळ्–शासन करते रहे, तब; मेन्मैयान्–शक्ति में बढ़ा हुआ; मुन्–पूर्व से ही; अवन् कुल पकैञन्–वाली का कुलवैरी जो रहा, वह; मिन् ऍयिऱ्ऱु–उज्ज्वल वक्र दन्तार; वाळ् अवुणन्–तलवारधारी दानव; मुट्टिनान्–(वाली से) भिड़ा। १२७

वह वाली हमारा राजा रहा। ये सुग्रीव युवराज के पद पर थे। जब ये राज्य कर रहे थे, तब अति बलिष्ठ, वाली का कुलवैरी और बिजली-सम वक्रदंतार और तलवारधारी (मायावी नाम का) दानव वाली से आकर भिड़ा। १२७

मुट्ट निन्ऱवन् मुरणु रत्तिनाल्
ऑट्ट वञ्जिनॅञ् जुलैय वोडिनान्
वट्ट मण्डलत् तरिदु वाळ्वॅना
ऍट्ट रुम्बिल मदनि लॅय्दिनान् 128

मुट्ट–टकराने पर; निन्ऱवन्–जो अड़ा रहा वह वाली; मुरण् उरत्तिनाल्–बलवान वक्ष से; ऑट्ट–प्रहार करने लगा; अञ्चि–डरकर; नॅञ्चु उलैय–मन में व्यग्र होकर; ओटिनान्–भागा; वट्ट मण्टलत्तु–गोल भूमण्डल में; वाळ्वु अरितु ऍना–जीना कठिन है, जानकर; ऍट्टु अरुम्–पहुँचने में कठिन; पिलम् अतनिल्–एक बिल में; ऍय्तिनान्–घुस गया। १२८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जब असुर भिड़ने आया, तब वाली अड़ा रहा और अपने वक्ष से उस पर प्रहार किया। असुर डरा और जान लेकर भागा। 'इस गोल भूमण्डल पर कहीं भी रहना खतरे से खाली नहीं' —यह जानकर वह ऐसे एक बिल में घुस गया, जहाँ जाना बहुत ही कठिन था। १२८

अॅय्दु कालैयिप् पिलऩु ळॅय्दियाऩ्
नॉय्दि ऩङ्गवऱ् कॉल्वॅ ऩोऩ्मैयाल्
शॅय्दि कावऩी शिऱिदु पोऴ्दॅऩा
वॅय्दि नॅय्दिऩाऩ् वॅहुळि मेयिऩाऩ् 129

अॅय्तु काले–जब घुसा; वॅकुळि मेयिऩाऩ्–क्रुद्ध (वाली); याऩ्–मैं; इ पिलऩुळ् अॅय्ति–बिल में जाकर; नोऩ्मैयाल्–शक्ति से; नॉय्तिऩ्–शीघ्र; अङ्कु–वहाँ; अवऩ् कॉल्वॅऩ्–उसको मारूँगा; नी–तुम; चिऱितु पोऴ्तु–थोड़ी देर; कावल् चॅय्ति–रक्षण का काम करो; अॅऩा–कहकर; वॅय्तिऩ्–शीघ्र; अॅय्तिऩाऩ्–(बिल में) गया। १२९

जब वह घुस गया तो वाली को अपार क्रोध हुआ। उसने सुग्रीव को आज्ञा दी कि मैं इसमें जाऊँगा और अपने बल से इसको शीघ्र मारकर आ जाऊँगा। तुम इसकी रखवाली करो, थोड़ा समय। यह कहकर वाली शीघ्र उस बिल में घुस गया। १२९

एहि वालियु मिरुदुवे ळॉडेऴ्
वेह वॅम्बिलऩ् दडवि वॅम्मैशाल्
मोह मोडमऱ् मुयल्विऩ् वॅहिडच्
चोह मॅय्दिनिऩ् रुणैदु ळङ्गिऩाऩ् 130

वालियुम्–वाली भी; वॅम् पिलम् वेकम् एकि—भयंकर बिल में घुसकर; एऴ् ओटु एऴ् इरुतु–चौदह ऋतुओं के काल तक; तटवि–टटोलकर; वॅम्मै चाल्–उग्र; मोकम् ओटु–उत्साह के साथ; अमऱ् मुयल्विऩ्–युद्ध के प्रयत्न में; वॅकिट–लगा रहा, तब; निऩ् तुणै–आपके भाई (सुग्रीव); चोकम् अॅय्ति–शोकाकुल होकर; तुळङ्किऩाऩ्–घबड़ा गया। १३०

वाली उसके अन्दर गया। उस असुर को ढूँढ़ता रहा। चौदह ऋतुओं का (अट्ठाईस मास का) काल बीत गया। आखिर उसको पाकर वाली उग्र रूप से दत्तचित्त होकर उसके साथ लड़ने में लगा हुआ था। इधर आपके भाई सुग्रीव चिन्ताग्रस्त होकर (शायद वाली मर गया क्या ? इस संशय के कारण) घबड़ाये रहे। १३०

अऴद ऴुङ्गुऱु मिवऩै यऩ्बिऩिल्
तॉऴुदि रऩ्दुनिऩ् ऱॉऴिलि दादलाल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऴुदु वॆऩ्ऱियाय् यरशु कॊळ्हऩप्
पऴुदि ऎऩ्ऱऩऩ् परियु नॆञ्जिऩान् 131

ऍऴुतु वॆऩ्ऱियाय्–उल्लेखनीय विजयशाली; अऴुतु अऴुङ्कुऱुम्–रोते और दुःखी; इवऩै–इनको; अऩ्पिऩिल् तॊऴुतु–स्वामी-भक्ति के साथ नमस्कार करके; इरऩ्तु–प्रार्थना में; निऩ् तॊऴिल् इतु–आपका कार्य है यह; आतलाल्–इसलिए; अरचु कॊळ्क–राज्य लो; ऍऩ–हमारे कहने पर; परियुम् नॆञ्चिऩान्–(भ्रातृस्नेह से) विह्वलमन; इतु पऴुतु–यह गलत है; ऍऩ्ऱऩऩ्–कहा। १३१

वर्णनयोग्य विजयशील ! बहुत काल तक सुग्रीव दुःख के साथ रोते रहे। तब हम वानरों ने इनसे प्रार्थना की। शासन करना आपका जन्मसिद्ध अधिकार का कार्य है। आप जाकर राज्य पर अधिकार करें। पर भ्रातृवियोग से दुःखी इन्होंने कहा कि यह गलत काम है। वे सम्मत नहीं हुए। १३१

ऍऩ्ऱु ताऩुमव् वऴियि ऱुम्बिलम्
शॆऩ्ऱु मुऩ्ऩवऱ् ऱेडु वेऩवऱ्
कॊऩ्ऱु ळाऩ्ऱऩैक् कॊलवॊ णादॆऩिल्
पॊऩ्ऱु वेऩैऩप् पुहुदऩ् मेयिऩाऩ् 132

ऍऩ्ऱु–ऐसा कहकर; अ वऴि–उसी रास्ते से; इरुम् पिलम् चॆऩ्ऱु–बड़े बिल में जाकर; मुऩ्ऩवऩ् तेटुवेऩ्–अपने बड़े भाई को ढूँढूँगा; अवऩ् कॊऩ्ऱु उळाऩ् ततै–उसके हन्ता को; कॊल ऒणातु ऍऩिल्–मार नहीं सकूँगा तो; पॊऩ्ऱुवेऩ्–स्वयं मर जाऊँगा; ऍऩ–यह ठानकर; ताऩुम्–स्वयं भी; पुकुतल् मेयिऩाऩ्–घुसने लगे। १३२

उन्होंने यह ठाना कि मैं इसी मार्ग से इस बिल में घुस जाऊँगा और बड़े भाई की टोह लगाऊँगा। समझिए कि उनको असुर ने मारा है और उसे मैं मार नहीं सकूँगा, तो मैं स्वयं आत्महत्या कर लूँगा। यह निश्चय सुनाकर वे उसी बिल में प्रवेश करने लगे। १३२

तडुत्तु वल्लवर् तणिवु शॆय्दुनोय्
कॆडुत्तु मेलैयोर् किळत्तु नीदियाल्
अडुत्त कावलुम् मरशु माणैयिल्
कॊडुत्त दुण्डिवऩ् कॊण्ड दिल्लैयाल् 133

वल्लवर्–समर्थ, बड़े वानर लोगों ने; तटुत्तु–रोककर; तणिवु चॆय्तु–समाधान करके; नोय् कॆटुत्तु–दुःख का रोग दूर करके; मेलैयोर्–पूर्व के लोगों के; किळत्तु नीतियाल्–कथित नीतिवाक्यों के अनुसार; अटुत्त कावलुम् अरचुम्–प्राप्त पालन और शासन का पद; आणैयिल्–क्रम के अनुकूल; कॊटुत्तऩ उण्टु–दिया, यही सत्य है; इवऩ् कॊण्टऩ इल्लै–इन्होंने खुद लिया नहीं था। १३३

तब चतुर, समर्थ बुजुर्ग लोगों ने उनको रोका और सान्त्वना दिलायी;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और दुःखरोग से निवृत्त कराया। पूर्व के विद्वानों के कथित धर्म के अनुसार पालन और शासन का ज़िम्मा उनका हो गया था। इसलिए उन्होंने राज्य का भार नियमानुसार उन्हें सौंप दिया। यही सच्ची घटना है। सुग्रीव ने स्वयं राज्य नहीं लिया था। १३३

अऩ्ऩ नाळिऩ्मा यावि यप्पिलत्
तिऩ्ऩ वायिल् डेऱु मॅऩ्ऩयाम्
पॊऩ्ऩिऩ् माल्वरैप् पॊरुप्पॊ ऴित्तुवे
ऱुऩ्ऩु कुऩ्ऱॆला मुडऩ डुक्किऩैम् 134

अऩ्ऩ नाळिल्–उन दिनों; याम्–हम; मायावि–मायावी; अ पिलत्तु–उस बिल के; इऩ्ऩ वायिल् ऊटु–इस द्वार के द्वारा; एऱम् ऍऩ्ऩ–चढ़कर बाहर आयगा (तो); ऍऩ्ऩ–ऐसा सोचकर; पॊऩ्ऩिऩ् माल् वरै पॊरुप्पु–स्वर्ण का बड़ा मेरुपर्वत; ऒऴित्तु–छोड़कर; वेऱु उऩ्ऩु–अन्य गण्य; कुऩ्ऱु ऍलाम्–सभी पर्वतों को; उटऩ् अटुक्किऩैम्–उस द्वार पर चुन दिया। १३४

जब यह सब हुआ तो हमने सोचा कि मायावी इस द्वार से बाहर आ जाएगा तो अनर्थ हो जाएगा। इस डर से हमने उसको बन्द कर अपनी रक्षा करना चाहा। अतः मेरुपर्वत को छोड़कर अन्य सारे गण्य भारी पर्वतों को उठाकर हमने उस द्वार के सामने चुन दिया। १३४

शेम मव्वऴिच् चॆय्दु शॆङ्गदिर्क्
कोम हऩ्ऱऩैक् कॊण्डु वऩ्दियाम्
मेवु कुऩ्ऱिऩ्मेल् वैहुम् वेलैवाय्
आवि युण्डऩ ऩवऩै यऩ्ऩवऩ् 135

याम्–हम; अ वऴि–उस द्वार को; चेमम् चॆय्तु–सुरक्षित (बन्द) करके; चॆम् कतिर्–लाल किरणों के सूर्य के; कोमकऩ् तऩै–सुपुत्र को; कॊण्टु वऩ्तु–ले आकर; मेवु कुऩ्ऱिऩ् मेल्–(हमारे वास के लिए) बने पर्वत पर; वैकुम् वेलै वाय्–रहते थे, तब; अवऩै–उस असुर के; अऩ्ऩवऩ्–उस वाली ने; आवि उण्टऩऩ्–प्राण पी लिये (हर लिये)। १३५

इस तरह उस द्वार को खूब बन्द करके, हमने सुरक्षा का बन्दोबस्त किया। लाल किरणों के स्वामी सूर्य के सुत को पर्वत पर ले आये। हम यहाँ निश्चिन्त अपना समय बिताने लगे। उधर क्या हुआ ? वाली ने मायावी के प्राणों का पान कर लिया (मार डाला)। १३५

ऒळित्त वऩ्ऩुयिर्क् कळ्ळै युण्डुळम्
कळित्त वालियुङ् गडिदि ऩॆय्दिऩाऩ्
विळित्तु निऩ्ऱुवे ऱुरैपॆ ऱाऩिरुन्
दळित्त वाऱुनऩ् ऱिळव लारॆऩा 136

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒळित्तवन्–जो छिपा रहा उसके; उयिर् कळ्ळै–प्राणसुरा को; उण्टु–पान करके; उळम् कळित्त–मनमस्त; वालियुम्–वाली भी; कटितिन् ऎय्तिनान्–वेग के साथ आकर; विळित्तु निन्ऱु–टेर लगाता रहा; वेऱु उरै पॆऱान्–उत्तर नहीं पाकर; इळवलार्–युवराज का; इरुन्तु अळित्त–यहाँ रहकर उपकार करने का; आऱु–यह प्रकार; नन्ऱु ऎंता–अच्छा रहा, कहकर। १३६

बिल में जो छिपा था, उस मायावी के प्राण वाली के लिए सुरा-सम लगे। यानी वाली उसको मारकर सन्तोष से भर गया। मनमस्त होकर वह द्वार पर आकर क्या देखता है ? द्वार बन्द है। टेर लगाता है; कोई उत्तर नहीं मिलता। हा ! युवराज का यहाँ रखवाली करके मेरा उपकार करने का यह तरीका भी बड़ा अच्छा रहा ! यह कहा। १३६

वाल्वि शैत्तुवान् वळिनि मिर्न्दुऱक्
काल्पॆ यर्त्तवन् कडिदु दैत्तलुम्
नील्नि ऱत्तवा नॆडुमु हट्टवुम्
वेलै पुक्कवुम् बॆरिय वॆऱ्पॆलाम् 137

अवन्–उसके; वान् वळि–आकाश में; निमिर्न्तु उऱ–उठी रहे, ऐसा; वाल् विचैत्तु–पूँछ ऊपर करके; काल् पॆयर्त्तु–पैर उछालकर; कटितु उतैत्तलुम्–जोर से (लात) मारने पर; पॆरिय वॆऱ्पु ऎलाम्–सारी बड़ी गिरियाँ; नील् निऱत्त–नील; वान्–आकाश की; नॆटु मुकट्टवुम्–ऊँची चोटी की (तक पहुँची हुई) हो गयीं; वेलै पुक्कवुम्–और समुद्र में मग्न (हो गईं)। १३७

उसने अपनी पूँछ आकाश की चोटी से लगाते हुए उठायी। बड़े वेग के साथ पैर उछालकर लात मारी तो द्वार पर के सारे पर्वत उड़ गये। एक अंश के आकाश पर गये और बाकी समुद्र में जा गिरे। १३७

एऱि नानव नॆवरु मञ्जुऱच्
चीऱि नानॆडुञ् जिहर मॆय्दिनान्
वेऱि लादवन् बुदवु मॆय्म्मैयाम्
आऱि नानुम्वन् दडिव णङ्गिनान् 138

अवन्–वह; ऎवरुम् अञ्चुऱ–सबको भयभीत करते हुए; एऱिनान्–बिल के बाहर चढ़ आया; चीऱिनान्–क्रोध दिखाते हुए; नॆटुम् चिकरम् ऎय्तिनान्–विशाल उन्नत शिखर पर आ पहुँचा; वेऱु इलात–निर्विकार; अनुपु उतवु–भ्रातृप्रेम की भेंट लेकर; मॆय्म्मै आम्–सत्य के; आऱिनानुम्–मार्ग में चलनेवाले सुग्रीव भी; वन्तु–सामने आकर; अटि वणङ्किनान्–उसके चरणों पर नत हुए। १३८

वह ऊपर चढ़कर बिल के बाहर निकला। सबको भयभीत करते हुए अत्यन्त क्रोध के साथ वह इस पर्वत के विशाल और उन्नत शिखर पर चढ़ आया। सत्यमार्गगामी सुग्रीव निर्विकार भ्रातृप्रेम की भेंट लेकर उसके सामने आये और चरणों पर नत हुए। १३८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वणङ्गि यण्णनिन् वरवि लामैयाल्
उणङ्गि युन्वऴिप् पडर वुन्नुवेऱ्
किणङ्ग रिन्मैया लिऱैव वुन्नुडैक्
कणङ्गळ् कावलुन् कडन्मै यॆन्ऱनर् 139

वणङ्कि–नमस्कार करके; अण्णल्–महिमामय; निन्–आपका; वरवु–आगमन; इलामैयाल्–नहीं हुआ, इसलिए; उणङ्कि–मुरझाकर; उन् वऴि पटर–आपकी खोज में आना; उन्नुवेऱ्कु–जो सोचा वैसे मुझे; इऱैव–हे नाथ; उन्नुटै कणङ्कळ्–आपके ही इन वृन्दों ने; इणङ्कर् इन्मैयाल्–सम्मत न होने से; कावल् उन् कटन्मै–शासन तुम्हारा ज़िम्मा है; ऎन्ऱनर्–कहा। १३९

नमस्कार करके उन्होंने वाली से निवेदन किया कि महिमावान ! आप बहुत दिन तक लौट नहीं आये। मैं मुरझाया और मैं आपका अनुगमन करना ही चाहता था। पर आपके इन वानरवृन्दों ने उससे सहमत न होकर मुझसे आज्ञा दी कि शासन करना तुम्हारा कर्तव्य है; ज़िम्मा है। १३९

आणै यञ्जियिव् वरशै यॆय्दिवाळ्
नाणि लादनी नवैयुळ् वैहिनाय्
पूणु लावुदो ळिनैपॊ ऱायॆनक्
कोणि नानॆडुङ् गॊडुमै कूऱिनान् 140

पूण् उलावु–आभरण जिन पर हिलते हैं, ऐसे; तोळिनै–भुजा वाले; पॊऱाय्–क्षमा कीजिए; ऎन–विनय करने पर; आणै अञ्चि–इनकी आज्ञा से डरकर; इ अरचै–इस राज्य को; ऎय्ति–लेकर; वाळ्–रहनेवाले; नाण् इलात नी–निर्लज्ज तुम; नवैयुळ् वैकिनाय्–अपराध कर चुके हो; कोणिनान्–विकृतमन; नॆटुम् कॊटुमै–बड़े कठोर वचन; कूऱिनान्–बोला। १४०

आभरणालंकृत भुजा वाले भाई ! क्षमा करें। सुग्रीव ने यह विनय की। पर वाली का मन वक्र हो गया था। उसने अपराध लगाया कि उनकी आज्ञा से डरकर तुम राज्य लेकर भोग कर रहे हो। तुम निर्लज्ज हो ! तुम अपराध कर चुके हो। विकृतमन वाली ने कितने ही कठोर शब्द कहे। १४०

अडल्ह डन्ददो ळवनै यञ्जिवॆम्
कुडल्ह लङ्गियॆङ् गुलमॊ डुङ्गमुन्
कडल्ह डैन्दवक् करद लङ्गळाल्
उडल्ह डैन्दन निवनु लेन्दनन् 141

अटल् कटन्त–अतिक्रान्त; तोळ् अवनै–भुजबल वाले उससे; अञ्चि–डरकर; ऎम् कुलम्–हमारे समूह; वॆम् कुटल्–तप्त आँतों के; कलङ्कि–विचलित होते;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऑटुङ्क–दुबके रहे; मुन् कटल् कटैन्त–पूर्वकाल में जिनसे समुद्र मथा था; अ करतलङ्कळाल्–उन हाथों से; उटल् कटैन्ततन्–(सुग्रीव का) शरीर मथ दिया; इवन् उलैन्ततन्–ये व्याकुल हुए। १४१

वाली का भुजबल बल के माप का भी अतिक्रमण कर गया था। उसके डर के कारण हमारे समूह के वानरों की आँतें तक तप्त हो गयीं, विचलित हो गयीं। हम दुबके खड़े रहे। तब वाली ने अपने हाथों से, जिनसे उसने क्षीरसागर को मथा था, सुग्रीव को प्रहार करके त्रस्त किया। ये सुग्रीव बहुत व्याकुल हुए। १४१

नक्क रक्कडर् पुऱत्तु नण्णुनाळ्
शॅक्कर् मॅय्त्ततिच् चोदि शेर्हलाच्
चक्क रप्पॊरुप् पिन्ऱ लैक्कुमप्
पक्क मुऱ्ऱवऱ् कडिदु पऱ्ऱिनान् 142

नक्करम्–नक्रों से युक्त; कटल् पुऱत्तु–समुद्रों के भी उस पार; नण्णुम् नाळ्–(जब सुग्रीव) गये तब; चॅक्कर् मॅय्–लाल शरीर के; तति चोति–अनुपम ज्योतिस्वरूप (सूर्य); चेर्कला–जहाँ पहुँच नहीं पाते; चक्करम् पॊरुप्पिन्–चक्रवाल गिरि के; तलैक्कुम्–तल के भी; अ पक्कम् उऱ्ऱु–उस पार जाकर; अवन् कटितु पऱ्ऱिनान्–उनको जल्दी पकड़ लिया। १४२

सुग्रीव भागा। नक्रसहित समुद्रों के उस पार जाकर रहा। वाली चक्रवाल गिरि के उस पार, जहाँ लाल शरीर के अनुपम ज्योतिपुंज सूर्य भी पहुँच नहीं पाते, गया और सुग्रीव को पकड़ लिया। १४२

पऱ्ऱि यऱ्जलन् पळियै वॅऱ्जितम्
मुऱ्ऱि निन्ऱदन् मुरण्व लिक्कैयाल्
ऍऱ्ऱु वाऩॅडुत् तॅळुद लुम्बिळैत्
तऱ्ऱ मॊन्ऱुपॆऱ् ऱिवन हन्ऱनन् 143

पऱ्ऱि–पकड़कर; पळियै अऱ्चलन्–लोकनिन्दा से न डरकर; वॅम् चितम्–भयंकर क्रोध; मुऱ्ऱि निन्ऱ–से भरे; तन् मुरण् वलि कैयाल्–अपने अति बलिष्ठ हाथों से; ऍऱ्ऱुवान्–पटकने के विचार से; ऍटुत्तु ऍळुतलुम्–उठाते हुए उठा तो; इवन्–ये; अऱ्ऱम् ऒन्ऱु–एक मौका; पॆऱ्ऱु–पाकर; पिळैत्तु अकन्ऱनन्–बचकर भाग गये। १४३

वाली 'भ्रातृत्रासक के रूप में लोक-निन्दा का पात्र बनूँगा' इस बात से भी नहीं डरा। उसने अति क्रोध के साथ अपने क्रूर हाथों से सुग्रीव को पकड़ लिया। उनको वेग से पटकने के विचार से उसने अपने हाथ उठा लिये। तब सुग्रीव किसी विध मौका पाकर बच गये और भाग आये। १४३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्दै मऱ्ऱव ऩॆयिऱ दुक्कुमेल्, अन्द हऱ्कुमो ररण मिल्लैयाल्
इन्द वॆऱ्पिन्वन् दिवऩि रुन्दऩन्, उन्द वुऱ्ऱदोर् शाब मुण्मैयाल् 144

ऍन्तै–हमारे धाता; अवन्–(वाली) वह; ऍयिऱ अतुक्कुमेल्–दाँत पीसेगा तो; अन्तकऱ्कुम्–यम के लिए भी; ओर् अरणम्–कोई पनाह; इल्लै–नहीं मिलेगी; आल्–इसलिए; उन्त–(मतंग मुनि द्वारा) दिया जाकर; उऱ्ऱतु ओर् चापम्–मिला एक शाप; उण्मैयाल्–है, उससे; इवन्–ये; इन्त वॆऱ्पिन् वन्तु–इस गिरि पर आकर; इरुन्ततन्–ठहरे हैं। १४४

हनुमान ने जारी किया। हमारे धाता! वाली दाँत पीसता दिखता तो यम को भी पनाह नहीं मिलती। इसलिए सुग्रीव का बचना कठिन हो गया। तो भी कुपित मतंग मुनि का दिया हुआ शाप है कि वह इधर नहीं आ सकता। इसलिए सुग्रीव इस पर्वत पर आकर ठहरे हैं। १४४

उरुमै यॆन्ऱिवऱ् कुरिय तारमाम्, अरुम रुन्दैयु मवन्वि रुम्बिऩान्
इरुमै युन्दुऱन् दिवऩि रुन्दऩन्, करुम मिङ्गिदॆङ् गडवु ळॆन्ऱऩन् 145

ऍम् कटवुळ्–हमारे ईश्वर; इवऱ्कु–इनके; उरुमै ऍन्ऱु–रुमा नाम की; उरिय तारम् आम्–इनकी अपनी पत्नी; अरु मरुन्तैयुम्–दुर्लभ अमृत को भी; अवन् विरुम्पिऩान्–उसने अपने पास कामना के साथ रख लिया है; इवन्–ये; इरुमैयुम्–(पत्नी, राज्य) दोनों को; तुऱन्तु–त्यागकर; इरुन्ततन्–रहते हैं; इङ्कु करुमम् इतु–यहाँ का वृत्तान्त यह है; ऍन्ऱऩन्–(हनुमान ने) कहा। १४५

हमारे भगवान! सुग्रीव के रुमा नाम की, दिव्य अमृत-समान पत्नी है। वाली ने उसे भी कामना के साथ अपने पास रख लिया है। ये पत्नी व राज्य, दोनों से वंचित होकर इधर आकर ठहरे हैं। यही घटित वृत्तान्त है। हनुमान ने सारी बातें कह सुनायीं। १४५

❀ पॊय्यि लादवन् वरन्मुऱै यम्मॊऴि पुहल
ऐय ऩायिरम् पॆयरुडै यमरर्क्कु ममरन्
वैय नुङ्गिय वायिदळ् तुडित्तदु मलर्क्कण्
शॆय्य तामरै याम्बलम् पोदॆऩत् तिहळ्न्द 146

पॊय् इलातवन्–असत्य-रहित (सत्यसंध); वरन् मुऱै–यथाक्रम; अ मॊऴि पुकल–वह वृत्तान्त बोला, तब; आयिरम् पॆयरुटैय–सहस्रनामी; ऐयन्–प्रभु; अमरर्क्कुम् अमरन्–देवाधिदेव के; वैयम् नुङ्किय–भुवनों को (प्रलयकाल में) निगलनेवाले; वाय् इतळ्–मुख के अधर; तुदित्ततु–फड़के; कण्–आँखें रूपी; चॆय्य–लाल; तामरै मलर्–कमल के फूल; आम्पल् अम् पोतु ऍऩ–लाल कुमुद-सुमन के समान (अत्यधिक लाल); तिकळ्न्त–हो गये। १४६

हनुमान कभी झूठ बोलनेवाला नहीं था। सत्यसंध था। उसने क्रमवार सारी घटनाएँ कह सुनाया तो सहस्रनामधारी देवाधिदेव के प्रलयकाल में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विश्व को निगलनेवाले मुख के अधर फड़क उठे। उनके लाल कमल-सम आँखें कुमुद-सम अत्यधिक लाल हो गयीं। उन्हें बड़ा क्रोध हुआ। १४६

❀ ईर नीङ्गिय शिऱ्ऱवै शॊऱ्ऱऩ ळॆऩ्ऩ
वार नीङ्गला विळवऱ्कु मऩ्ऩर शुरिमैप्
पार मीन्दवन् परिविल नॊरुवऩ्ऱ ऩिळैयोऩ्
तारम् वौविऩ ऩॆऩ्ऱशॊऱ् ऱरिक्कुमा ऱुळदो 147

ईरम् नीङ्किय–स्नेहार्द्रता से रहित; चिऱ्ऱवै–विमाता ने; चॊऱ्ऱऩळ्–कहा; ऎऩ्ऩ–वह मानकर; वारम् नीङ्कला–प्यारे; इळवऱ्कु–छोटे भाई भरत को; मऩ् अरचु–स्थायी राज्य के; उरिमै पारम्–स्वत्व का भार; ईन्तवऩ्–जिन्होंने दे दिया; परिवु इलऩ्–प्यार-रहित; ऒरुवऩ्–एक (वाली) ने; तऩ् इळैयोऩ् तारम्–अपने छोटे भाई की पत्नी को; वौविऩऩ्–ग्रस लिया; ऎऩ्ऱ चॊल्–यह कथन; तरिक्कुम् आऱ–सहेगा, इसका कोई मार्ग; उळतो–है क्या। १४७

(श्रीराम अपने छोटे भाइयों के अगाध प्रेमी थे।) स्नेहहीन विमाता के कहने पर उन्होंने अत्यक्त प्यार के अपने छोटे भाई भरत को अपने स्वत्व के राज्य का भार सौंप दिया था। ऐसे श्रीराम इस बात को सुनकर सह लें कि किसी ने अपने छोटे भाई की पत्नी को ग्रस लिया है, यह कैसे सम्भव हो सकता हैं ? इसका मार्ग कहाँ ? । १४७

❀ उलह मेऴिऩो डेऴुम्वन् दवऩुयिर्क् कुदवि
विलहु मॆऩ्ऩिऩुम् विल्लिडै वाळियिऩ् वीट्टिऩ्
तलैम योडुनिऩ् ऱारमु मुनक्किऩ्ऱु तरुवॆऩ्
पुलैम योयव नुऱैविडङ् गाट्टॆऩप् पुहऩ्ऱाऩ् 148

उलकम्–लोक; एळिऩ् ओटु एऴुम्–सात और सात (चौदहों) के वासी; वऩ्तु–मिल आकर; अवऩ् उयिर्क्कु–उसके प्राणों के; उतवि–(रक्षण में) सहायता करें; विलकुम्–और मेरे विरोध व्यवहार करें; ऎऩ्ऩिऩुम्–तो भी; विल् इटै–अपने धनुष से (प्रेषित); वाळियिऩ्–शरों से; वीट्टि–उनको मारकर; तलैमैयोटु–नेतृत्व (राज-पद) के साथ; निऩ् तारमुम्–तुम्हारी पत्नी को भी; इऩ्ऱु–अभी; उऩक्कु तरुवॆऩ्–तुम्हें दिलाऊँगा; पुलैमैयोय्–बुद्धिमान; अवऩ् उऱैवु इटम्–उसका वासस्थान; काट्टु–दिखाओ; ऎऩ–ऐसा; पुकऩ्ऱाऩ्–श्रीवचन उच्चारे। १४८

(उन्होंने सुग्रीव को वचन दिया।) चौदहों लोकों के वासी मिलकर आवें, उसकी प्राण-रक्षा में मेरा विरोध करें तो भी मैं अपने धनु से प्रेरित शरों से उनका वध कर दूँगा। फिर तुम्हें तुम्हारा राज्य और तुम्हारी पत्नी दोनों को मुक्त कराकर तुम्हें सौंप दूँगा। बुद्धिमान सुग्रीव ! अब मुझे उसका वासस्थान दिखाओ। श्रीराम ने यह कहा। १४८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅऴुन्दु पेरुव हैप्पॅरुन् दिरैक्कड लिरैप्प
अऴुन्दु तुन्बत्तिन् करैकण्ड कडहऴि ऱ्ऱैयान्
विऴुन्द देयिनि वालिदन् वलियॅन विरुम्बा
मॉऴिन्द वीरऱ्किया मॅण्णुव दुण्डॅन मॉऴिन्दान् 149

उवकै–सन्तोष का; पॅरुम् तिरै–उत्तुंग तरंगों का; कटल्–सागर; इरैप्प–शोर कर उठा; अऴुन्तु तुन्पत्तिन्–गहरे दुःख का; करै कण्ट–तट देखकर; कटम् कळिऱ अऱैयान्–मत्तहाथी-सम (सुग्रीव); इनि–अब; वालि तन् वलि–वाली का बल; विऴुन्तते–मिटा; अॅन–ऐसा सोच; विरुम्पा–चाह के साथ; अॅऴुन्तु–उठकर; मॉऴिन्त–(वादे का वचन) कहनेवाले; वीरऱ्कु–वीर से; याम् अॅण्णुवतु–हमें सोचने का; उण्टु–(एक कार्य) है; अॅन–ऐसा; मॉऴिन्तान्–बोले। १४९

यह सुनकर सुग्रीव आनन्दानुभव करने लगा। आनन्द का, बड़ी-बड़ी लहरों का गहरा सागर गरज उठा। मत्तगज-सा सुग्रीव दुःख के सागर के पार आ गया। उसे लगा कि अब वाली अपना बल खो गया। तपाक से वह उठा। फिर जिन्होंने वाली को मारने का वादा किया था, उन श्रीराम से निवेदन किया कि अब हमें एक बात के सम्बन्ध में सोचना है। १४९

अऱैय वाण्डुरैत् तनुमऱै मुदलिय वमैच्चर्
निऱैवुङ् गल्वियु नीदियुञ् जूऴ्च्चियु निऱैन्दार्
अॅऱैय रन्नव रोडुम्वे ऱिरुन्दऱ निरवि
तऱैय नव्वऴिच् चमीरणन् महनुरै तरुवान् 150

इरवि ततैयन्–सूर्यपुत्र; अऱैय–ऐसा; आण्टु उरैत्तु–वहाँ कहकर; नितैवुम्–धारणाशक्ति; कल्वियुम्–विद्या; नीतियुम्–नीति का ज्ञान; चूऴ्च्चियुम्–मन्त्रणा; निऱैन्तार्–इनसे भरे; अनुमते मुतलिय–हनुमान आदि; अमैच्चर्–मन्त्री; अॅऱैयर्–जितने थे; अन्तवरोटुम्–उन सबके साथ; वेऱ इरुन्ततन्–अलग (मन्त्रणाकार्य में लगे) रहे; अ वऴि–तब; चमीरणन् मकन्–समीरण-सूनु; उरै तरुवान्–सलाह देने लगा। १५०

सुग्रीव यह कहकर हनुमान आदि जितने मंत्री थे, उन सबको लेकर अलग गया। वे मंत्री सोचकर सलाह देने में समर्थ थे। उनमें विद्या थी। वे नीति और राजतन्त्र जाननेवाले थे। तब समीरणसूनु हनुमान सुग्रीव को यों समझाने लगा। १५०

उन्नि नेनुन्ऱ नऴ्ळत्ति नुऱ्ऱदै युरवोय्
अन्नऱ वालियॅक् कालनुक् कळिप्पदो राऱ्ऱल्
इन्नऱ वीरर्पा लिल्लैयॅन् ऱयिर्त्तनै यिनियान्
शॉन्नऱ केट्टवै कडैप्पिडिप् पायॅनच् चॉन्नान् 151

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उरवोय्–शक्तिमन्त; उन् तन्–आपके; उळ्ळत्तिन्–मन में; उऱ्ऱतै–जो उठा उसको; उन्निन्नेन्–मैं ताड़ गया; अन्न वालियै–उस (अति बली) वाली को; कालत्तुक्कु अळिप्पतु–यम को (मेहमान के रूप में) दिलाने का; ओर् आऱ्ऱल्–ऐसा बल; इन्न वीरर् पाल्–इन वीरों के पास; इल्लै–नहीं है; ऍन्ऱु–यह मानकर; अयिर्त्तनै–शंकित हैं; इनि–अब; यान्–मेरा; चॊन्न केट्टु–कहना सुनकर; अवै–उनके अनुसार; कटै पिटिप्पाय्–काम कीजिए; ऍन्न–कहकर; चॊन्नान्–आगे बोले। १५१

बलिष्ठ राजा ! आपके मन का भाव मैं ताड़ गया। आप संशय करते हैं कि ऐसे बली वाली को यम के पास पहुँचाने की शक्ति इन वीरों के पास नहीं है। अब मेरा कहना सुनिये और उनको मानकर आगे का काम कीजिए। १५१

शङ्गु शक्करक् कुऱियुळ तडक्कैयिऱ् ऱाळिल्
ऍङ्गु मित्तुणै यिलक्कणम् यावर्क्कु मिल्लै
शॆङ्गण् विऱ्करत् तिरामनत् तिरुनॆडु माले
इङ्गु दित्तन नीण्डऱ निऱुत्तुदऱ् कित्तुम् 152

तट कैयिल्–विशाल हाथों में; ताळिल्–और पादों में; चङ्कु चक्कर कुऱि–शंख-चक्र के निशान; उळ–हैं; ऍङ्कुम्–कहीं भी; यावर्क्कुम्–किसी के; इ तुणै–इतने; इलक्कणम् इल्लै–अंग-लक्षण नहीं हैं; चॆम् कण्–लाल आँखों; विल् करत्तु–और धनु से युक्त हाथ के; इरामन्–ये श्रीराम; अ तिरु नॆटुमाले–वे श्रीमहाविष्णु ही हैं; ईण्टु–अब; इत्तुम्–अब भी; अऱम् निऱुत्तुतऱ्कु–धर्म स्थापित करने के लिए; उतित्ततन्–अवतार ले प्रकट हुए हैं। १५२

श्रीराम के विशाल हाथों और श्रीचरणों में शंख-चक्र के चिह्न हैं। ये लक्षण कहीं भी, किसी में भी नहीं पाये जाते। इसलिए लाल आँखों वाले ये धनुर्धर श्रीराम वे महाविष्णु ही हैं। वे ही अब धर्मसंस्थापनार्थ श्रीराम का अवतार लेकर प्रकट हुए हैं। १५२

शॆऱुक्कुम् वन्ऱिऱऱ् ऱिरिपुरन् दीयॆऴच् चिनविक्
करुक्कुम् वॆञ्जिनक् कालन्ऱन् कालमुङ् गालाल्
अऱुक्कुम् बुङ्गव नाण्डपे राडहत् तनिविल्
इऱुक्कुन् दन्मैयम् मायवऱ् कन्ऱियु मॆळिदो 153

चॆऱुक्कुम्–लोकत्रासक; वन् तिऱल्–कठोर बली; तिरिपुरम् ती ऍऴ–त्रिपुर को जलाकर; चिनवि करुक्कुम्–बिगड़कर कोप करनेवाले; वॆम् चिनम्–भयंकर क्रोधी; कालन् तन् कालमुम्–यम के काल को भी; कालाल् अऱुक्कुम्–अपने श्रीचरण से काट लेनेवाले; पुङ्कवन् आण्ट–पुंगव शिवजी के प्रयोग में रहे; पेर् आटकम् तनि विल्–बड़े, स्वर्ण के, अनुपम धनुष को; इऱुक्कुम् तन्मै–तोड़ देने का काम; अ मायवऱ्कु अन्ऱियुम्–उन मायावी के सिवा; ऍळितो–किसी के लिए सुलभ है क्या। १५३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिवजी बड़े क्रोधी हैं। उनके रौद्र क्रोध के सामने लोक-त्रासक त्रिपुर जलकर खाक हुए थे। वे बड़े प्रतापी हैं। (मार्कण्डेय को बचाने के लिए) उन्होंने अपने श्रीचरण से यमदेव की आयु भी मिटा दी थी। ऐसे पुंगव के स्वर्णमेरु-सम (स्वर्णमय) बहुत बड़े त्र्यम्बक नाम धनुष को तोड़ना क्या साधारण काम है? वह कार्य उन मायावी महाविष्णु के सिवा किसी अन्य के लिए सुलभ है क्या? । १५३

अॅन्नै यीन्ऱव नुलहङ्ग ळियावैयु मीन्ऱान्
तन्नै यीन्ऱवऱ् कडिमैशॅय् तवमुन्नक्
उन्नै यीन्ऱवॅऱ् कुऱुपद मुळदॅन्न
वुरैत्तान्
इन्न तोन्ऱले यवनिदऱ् केदुवुण् डिऱैयोय् 154

इऱैयोय्–राजा; अॅन्नै ईन्ऱवन्–मेरे जनक पिता; इ उलकङ्कळ्–इन सारे लोकों के; ईन्ऱान् तन्नै–स्रष्टा ब्रह्मा को; ईन्ऱवऱ्कु–जिन्होंने अपनी नाभी में प्रकट कराया, उनका; अटिमै चॅय्–कैंकर्य करो; अ.'.ते–वही; उन्नक्कु तवम्–तुम्हारा तप-कर्म है; उन्नै ईन्ऱ–तुम्हारे जनक; अॅऱ्कु–मुझे भी; उऱु पतम्–श्रेष्ठ पद; उळतु–मिल जायगा; अॅन्न–ऐसा; उरैत्तान्–बोले थे; इन्न तोन्ऱले–ये महापुरुष ही; अवन्–वे (महाविष्णु) हैं; इतऱ्कु–इसका; एतु उण्टु–हेतु भी है। १५४

हे राजा! मेरे पिता ने मुझसे पहले ही कहा है कि सर्वलोक-स्रष्टा ब्रह्मा के भी स्रष्टा महाविष्णु का कैंकर्य करो। यही तुम्हारे लिए तपोसाधना होगी। तुम कैंकर्य करोगे तो मुझे भी श्रेष्ठ पद मिल जायगा। उनसे निर्दिष्ट महाविष्णु ये ही श्रीराम हैं। इसका हेतु भी है। १५४

तुन्बु तोन्ऱिय पॊळुदुडन् ऱोन्ऱुव नॅवर्क्कुम्
मुन्बु तोन्ऱलै यऱिदऱकु मुडिवॅन्नॅन्
ऱियम्ब
अन्बु शान्ऱॅन्न वुरैत्तन नैयवॅन्
याक्कै
अॅन्बु तोन्ऱल वुरुहिन विनिप्पिऱि
दॅवन्नो 155

ऐय–प्रभु; मुन्पु–पहले; तोन्ऱलै–स्वामी को; अऱितऱ्कु–पहचानने का; मुटिवु अॅन्–निर्णय हेतु क्या है; अॅन्ऱु–ऐसा; इयम्प–पूछने पर; अॅवर्क्कुम्–किसी पर; तुन्पु तोन्ऱिय पॊळुतु–बड़ा दुःख होगा, तब; उटन् तोन्ऱुवन्–तुरन्त प्रकट होंगे; अन्पु–(जो सहज रूप से) उठेगा, वह प्रेम; चान्ऱु–प्रमाण है; अॅन्न उरैत्तनन्–ऐसा बताया; अॅन् याक्कै–मेरे शरीर की; अॅन्पु तोन्ऱल–हड्डियाँ, नहीं रह गयी हों, ऐसा; उरुकिन–पिघल गयीं; इनि–आगे; पिऱितु अॅवन्नो–अन्य प्रमाण क्या चाहिए। १५५

नायक! मैंने अपने पिता से पूछा कि भगवान को पहचानने का निश्चित उपाय क्या है? तब उन्होंने कहा कि जब किसी पर विपदा आती है, तब वे तुरन्त प्रकट होते हैं। उनके दर्शन करने पर प्रेम उमड़

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयगा। वही प्रमाण होगा। उसी के अनुसार जब मैंने पहले इनके दर्शन किये, तभी मेरा शरीर प्रेम से भर गया और मेरी हड्डियाँ तक अपनी कठोरता त्यागकर पिघल गयीं। उस पर किस प्रमाण की ज़रूरत है ? । १५५

पिऱिदु मऩ्ऩवऩ् पॅरुवलि याऱ्ऱलैप् पॅरियोय्
अऱिदि यॅऩ्ऩिनुण् डुबायमः(ह्) दरुम्बॅरु मरङ्गळ्
नॅऱियि निऩ्ऱऩ वेऴिऩॊऩ् ऱुरुवविन् नॅडियोऩ्
पॊऱिहॊळ् शॅञ्जरम् पोवदु काणॅऩप् पुहऩ्ऱाऩ् 156

पॅरियोय्–महान; पिऱितुम्–और भी; अऩ्ऩवऩ्–उनके; पॅरु वलि–बड़े बल के; आऱ्ऱलै–पराक्रम को; अऱिति ऍऩ्ऩितु–जानना चाहें तो; उपायम् उण्टु–एक उपाय है; अ.ः.तु–वह; नॅऱियिल् निऩ्ऱऩ–मार्ग में जो खड़े हैं; अरुम्–उत्तम; पॅरु मरङ्कळ्–बड़े वृक्ष; एऴिऩ्–सात में; ऒऩ्ऱु उरुव–एक को भेदकर; इ नॅटियोऩ्–इन महापुरुष का; पॊऱि कॊळ्–धनुष से लगे; चॅम् चरम्–सीधे शर का; पोवतु–जाना (उपाय) है; ऍऩ–ऐसा; पुकऩ्ऱाऩ्–कहा; काण्–देखो। १५६

महानुभाव ! और भी कहूँ। आप इनके बड़े बल का प्रताप जानना चाहें तो एक उपाय है। मार्ग में जो सात बड़े और अपूर्व सालवृक्ष हैं, उनमें एक से इन महापुरुष का शर निफर जायगा तो वही यह जानने का उपाय होगा। हनुमान ने सुग्रीव को ऐसा बताया। १५६

नऩ्ऱु नऩ्ऱॅऩ नऩ्ऩॅडुङ् गुऩ्ऱमु नाणुम्
तऩ्ऱु णैत्तऩि मारुदि तोळिणै तऴुविच्
चॅऩ्ऱु शॅम्मलैक् कुऱुहियाऩ् शॅप्पुव दुळदाल्
ऒऩ्ऱु केऴॅऩ विरामनु मुरैत्तियः(ह्) दॅऩ्ऱाऩ् 157

नऩ्ऱु नऩ्ऱु ऍऩ–अच्छा है, अच्छा, ऐसा; तऩ् तऩि तुणै–अपने अद्वितीय मित्र; मारुति–मारुति के; नल् नॅटुम् कुऩ्ऱमुम्–श्रेष्ठ बड़े पर्वत भी जिनके सामने; नाणुम्–लाज से भर जायँगे ऐसे; तोळ् इणै–दोनों कन्धों को; तऴुवि–पाशबद्ध करके; चॅऩ्ऱु–वहाँ से जाकर; चॅम्मलै कुऱुकि–पुरुषोत्तम के पास पहुँचकर; याऩ् चॅपपुवतु–मेरा निवेदन; ऒऩ्ऱु–एक; उळतु आल्–है, इसलिए; केळ ऍऩ–सुनिए (ऐसा) कहने पर; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; अ.ः.तु उरैत्ति–वह कहो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। १५७

सुग्रीव ने कहा कि अच्छा ! तुम्हारा कहा उपाय बहुत ही अच्छा है ! फिर सुग्रीव ने हनुमान के पर्वतहासी कंधों के जोड़े को कसकर आलिंगन किया। फिर वे राजा राम के पास आये। सुग्रीव ने श्रीराम से निवेदन किया कि आपसे एक प्रार्थना है। श्रीराम ने कहा कि सुनाओ। १५७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

4. मरामरप् पडलम् (सालवृक्ष पटल)

एह वेण्डुमिन् नॅऱियॅऩ विऩिदुहॊण् डेहि
माह नीण्डदु कुऱुहिड निमिर्न्दऩ मरङ्गळ्
आह वञ्जिऩो डिरण्डिऩॊऩ् ऱुरुवनिऩ् ऩम्बु
पोह वेयॅन्ऱऩ् मऩत्तिडर् पोमॅऩप् पुहन्ऱाऩ् 158

इ नॅऱि–इस मार्ग से; एक वेण्टुम्–जाना है; अॅऩ–कहकर; इऩितु–आराम से; कॊण्टु एकि–ले जाकर; नीण्टतु माकम्–विशाल आकाश को भी; कुऱुकिट–ऊँचाई में कम करते हुए; निमिर्न्तत–उन्नत जो उगे थे; मरङ्कळ्–सालवृक्ष; अञ्चिऩ् ओटु इरण्टु आक–पाँच के साथ दो (सात) में; ऒऩ्ऱु उरुव–एक को बेधते हुए; निऩ् अम्पु पोकवे–आपका शर चलेगा तो; अॅऩ् तऩ् मऩत्तु–मेरे मन का; इटर् पोम्–दुःख दूर हो जायगा; अॅऩ–ऐसा; पुकऩ्ऱाऩ्–कहा। १५८

सुग्रीव श्रीराम और लक्ष्मण को 'इस मार्ग से जाना है' कहते हुए ले गया और उस स्थान पर आया, जहाँ गगन को भी नीचे छोड़कर उन्नत उगे हुए सात सालवृक्ष खड़े थे। 'उनमें एक को आपका शर वेध जायगा तो मेरे मन का कष्ट दूर हो जायगा' —सुग्रीव ने श्रीराम से निवेदन किया। १५८

मऱुवि लादवऩ् कूऱुलुम् वाऩवर्क् किऱैवऩ्
मुऱुवल् शॅय्दवऩ् मुऩ्ऩिय मुयऱ्चियै मुऩ्ऩि
ऎऱुळ्व लित्तडऩ् दोळिऩऱ् शिलैयै नाणेऱ्ऱि
अऱिवि ऩालळप् परियवर् ऱरुहुशॅऩ् ऱणैन्दाऩ् 159

मऱु इलातवऩ्–अकलंक (सुग्रीव) के; कूऱुलुम्–वह कहने पर; वाऩवर्क्कु इऱैवऩ्–देवों के देव; अवऩ् मुऩ्ऩिय–उसके अभिप्राय का; मुयऱ्चियै–प्रयास; मुऩ्ऩि–ताड़कर; मुऱुवल् चॅय्तु–मुस्कुराकर; ऎऱुळ् वलि–अधिक शक्तियुत; तटम् तोळिल्–विशाल कन्धे पर के; नल् चिलैयै–श्रेष्ठ धनु में; नाण् एऱ्ऱि–प्रत्यंचा चढ़ाकर; अऱिविऩाल्–बुद्धि से; अळप्पु अरियवऱ्ऱु–जिनको जानना कठिन है, उन; अरुकु चॅऩ्ऱु–के पास जा; अणैन्ताऩ्–पहुँचे। १५९

अकलंक सुग्रीव ने यह प्रार्थना कही, तो देवाधिदेव ताड़ गये कि यह क्या जानने का प्रयास कर रहा है! मुस्कुराते हुए उन्होंने अपने कंधे से धनुष लिया और उस पर प्रत्यंचा चढ़ायी। फिर वे उन सालवृक्षों के पास गये, जिनके सम्बन्ध में बुद्धि पूर्ण रूप से जान नहीं सकती थी। १५९

ऊऴि पेरिऩुम् पेर्विल वुलहङ्ग ळुलैन्दु
ताऴ्ङ् गालत्तुऩ् दाळ्विल तयङ्गुपे रिरुळ्शूऴ्
आऴि मानिलऩ् दाङ्गिय वरुङ्गुलक् किरिहळ्
एऴ माण्डुवऩ् दॊरुवऴि निऩ्ऱॅऩ वियैन्द 160

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऊऴि पेरित्तुम्–युग बदला तो भी; पेर्वु इल–(स्थान) न बदलनेवाले; उलकङ्कळ्–लोक; उलैन्तु–मिटकर; ताऴुम्–जब नष्ट हो जाते हैं; कालत्तुम्–उस काल में भी; ताऴ्वु इल–अक्षय रहनेवाले; तयङ्कु पेर् इरुळ्–चकित करनेवाले विपुल अन्धकार से; चूऴ्–घिरी; आऴि मा निलम्–समुद्रवलयित बड़ी पृथ्वी को; ताङ्किय–धारण करनेवाले; अरुम् कुल किरिकळ्–श्रेष्ठ कुलपर्वत; एऴुम्–सातों; आण्टु वन्तु–वहाँ आकर; ऑरु वऴि निऱ्ऱ–एकत्र खड़े हो; ऍऩ–ऐसा; इयैन्त–बने रहनेवाले। १६०

वे वृक्ष ऐसे थे, जो युग के बदलते समय में भी अचल रहते थे। सारे लोकों के नष्ट होते समय में भी वे विना किसी आफ़त के रहनेवाले थे। चक्रित करनेवाले अन्धकार के साथ रहनेवाले सातों भूधर कुलपर्वत वहाँ एकत्र हो गये हों, ऐसे दृश्यमान थे वे तरु। १६०

कलैहण् डोङ्गिय मदियमुङ् गदिरवऩ् ऱाऩुम्
तलैहण् डोडुदऱ् करुन्दवम् पुरिदरुम् शारल्
मलैहण् डोमॆऩ्ब दल्लदु मलर्मिशै ययऱ्कुम्
इलैहण् डोमॆऩत् तॆरिप्परुन् दरत्तऩ वेऴुम् 161

एऴुम्–सातों; कलै कण्टु–कलाओं के साथ; ओङ्किय मतियमुम्–पूर्णचन्द्र और; कतिरवऩ् तानुम्–सूर्य भी; तलै कण्टु–उनके सिर देखकर; ओटुतऱ्कु–उनके ऊपर जाने के लिए; अरुम् तवम् पुरि तरुम्–कठिन तपस्या करते हैं; मलर् मिचै अयऱ्कुम्–कमल पर के अज के लिए भी; चारल् मलै कण्टोम्–कोई पर्वततल देखा; ऍऩ्पतु अल्लतु–यह कहने के सिवा; इलै कण्टोम् ऍऩ–पत्र देखे, यह; तॆरिप्पु अरुम्–कहना असम्भव; तरत्तऩ–इस प्रकार के हैं। १६१

सोलहों कलाओं के साथ परिपूर्ण चन्द्र और सूर्य भी उनकी चोटी देखने को तरसें और तदर्थ तपस्या करें, इतने ऊँचे थे वे तरुराज! स्वयं कमलासन ब्रह्मा भी उनका तना देखें और समझें कि हमने पर्वत के तल देखे हैं। क्योंकि वे पत्र देख नहीं पाते ताकि समझें कि ये वृक्ष हैं। ऐसे थे वे तरु। १६१

ऑक्क नाळॆला मुऴल्वऩ वुलैविल वाह
मिक्क दोर्पॊरु ळुळदॆऩ वेऱुहण् डिलॆमाल्
तिक्कुम् वाऩमुऱ् जॆऱिन्दवत् तरुनिऴऱ् चीदम्
पुक्कु नीङ्गलिऱ् ऱळर्विल विरविदेर्प् पुरवि 162

नाळ् ऍलाम्–सारे दिन, एक समान; ऑक्क–एक साथ; उऴल्वऩ–घूमनेवाले; इरवि तेर्–सूर्य के रथ के; पुरवि–अश्व; तिक्कुम्–दिशाओं और; वानमुम्–आकाश में; चॆऱिन्त–फैले; अ तरु–उन तरुओं की; चीतम् निऴल्–शीतल छाया में; पुक्कु नीङ्कलिऩ्–घुसकर जाते हैं, इसलिए; तळर्वु इल–अथक होकर; उलैवु इल आक–संकट-रहित रहते हैं, इसका; वेऱु ओर् पॊरुळ्–दूसरा कोई कारण; मिक्कतु–श्रेष्ठ; उळतु ऍऩ–है, यह; कण्टिलॆम्–हमने नहीं देखा (जाना)। १६२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूर्य के रथ के अश्व एक साथ घूमते हैं और हर दिन घूमते हैं। पर वे थकते नहीं, निर्बल नहीं होते। क्यों ? इसका कारण क्या है ? दिशाओं में और अन्तरिक्ष भर में व्याप्त इन वृक्षों की ठंढी छाया में वे प्रवेश करते और उनसे होकर जाते हैं। इससे श्रेष्ठ कोई कारण होगा —हम नहीं जानते। १६२

नीडु नाट्कळुङ् गोट्कळु मॅन्बमे निवन्दु
माडु तोऱ्ऱुव मलरॅऩप् पॊलिहिऩ्ऱ वळत्त
ओडु माच्चुडर् वॅण्मदिक् कुट्करुप् पुयर्न्द
कोडु तेय्त्तलिऱ् कळङ्गमुऱ् ऱामॅनुङ् गुऱिय 163

नीटु–लम्बे (काल से रहनेवाले); नाट्कळुम्–नक्षत्र और; कोट्कळुम्–ग्रह; ऍऩ्प–जो हैं वे; मेल् निवन्तु–ऊपर रहकर; माटु तोऱ्ऱुव–उनके पार्श्व में दिखाई देते हैं; मलर् ऍऩ–उनके फूलों के रूप में; पॊलिकिऩ्ऱ–दृश्यमान; वळत्त–इस विशेषता के साथ; ओटुम्–संचारी; मा चुटर्–श्रेष्ठ किरणों के; वॅळ् मतिक्कु–श्रेष्ठ चन्द्र के; उळ् करुप्पु–अन्तर्गत कलंक; उयर्न्त कोटु–ऊँची शाखाओं के; तेय्त्तलिल्–रगड़ने से; उऱ्ऱु कळङ्कम्–बना कलंक; आम्–है; ऍऩुम्–ऐसा कहने योग्य; कुऱिय–निशान वाले हैं। १६३

सनातन ग्रह और नक्षत्र इन पेड़ों के पार्श्व में रहते हैं और वे इनके फूलों के समान लगते हैं। ऐसे दृश्यमान हैं ये पेड़। आकाशचारी चन्द्र में कलंक है, वह क्या है ? इन तरुओं की शाखाओं के रगड़ने से ही वह अंश चूर्ण होकर चू गया ! उसी से लगा हुआ वह कलंक है। इसके निशान रखनेवाले हैं वे तरु। १६३

तीद रुम्बॅरुञ् जाहैह डळैत्तदोर् शॅयलात्
वेद मॅन्ऩवुन् दहुवऩ विशुम्बिऩु मुयर्न्द
आदि यण्डमुऩ् बळित्तव ऩुलहिलङ् गवऩूर्
ओदि मन्दुणैप् पॅडैयॊडुम् बुडैयिरुन् दुऱैव 164

तीतु अरुम्–अविनश्वर; पॅरुम् चाकैकळ्–बड़ी-बड़ी शाखाएँ; तळैत्ततु–समृद्ध हैं; ओर् चॅयलाल्–उस धर्म के कारण; वेतम् ऍऩ्ऩवुम्–वेद भी कहने; तकुवऩ–योग्य हैं; विचुम्पिऩुम्–आकाश से भी; उयर्न्त–ऊँचे हैं; आति–प्राचीन; अण्टम्–अण्डगोलों के; मुऩ्पु अळित्तवऩ्–पूर्व सृजक (ब्रह्मा) के; उलकिल् अङ्कु–(सत्य-) लोक में वहाँ; अवऩ् ऊर्–उनका वाहन; ओतिमम्–हंस; तुणै पॅटैयॊटुम्–संगिनी हंसिनी के साथ; पुटै इरुन्तु–एक ओर रहकर; उरैव–जीवन बिताते हैं, ऐसे हैं ये तरु। १६४

अविनश्वर शाखाओं से युक्त होने के कारण ये वेद भी कहे जाने योग्य हैं। ये आकाश से भी ऊँचे हैं; इसलिए आदि अण्डगोल के पुरातन स्रष्टा के लोक में जो उनका वाहन हंस है, वह अपनी स्त्रीहंस के साथ इन्हीं पेड़ों की बगल में वास करता है। १६४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाऱ्ऱ मल्हुपो दडैहनि ननैमुद नाना
वीऱ्ऱिन् मण्डलत् तियावैयुम् वीळ्हिल याण्डुम्
काऱ्ऱ लम्बिनुङ् गलिनॅडु वानिडैक् कलन्द
आऱ्ऱिन् वीळ्न्दुपो यलैहडऱ् पाय्दरु मियल्ब 165

काऱ्ऱु अलम्पितुम्–हवा हिला दे तो भी; नाऱ्ऱम् मलकु–सुबासपूर्ण; पोतु–फूल; अटै–पत्ते; नतै कनि–कलियाँ और फल; मुतल–आदि; नाना वीऱ्ऱिन्–अनेक खण्ड बनकर; यावैयुम्–वे सब; मण् तलत्तु–पृथ्वीतल में; याण्टुम्–कहीं भी; वीळ्किल–गिरनेवाले नहीं; वान् इटै कलन्त–आकाश में ही पड़ी रही; आऱ्ऱिन्–गंगा में; वीळ्न्तु–गिरकर; पोय्–(बहते हुए) जाकर; कलि नॅटुम्–शोर-भरे; अलै कटल्–तरंग समेत समुद्र में; पाय् तरुम्–मिल जाते हैं; इयल्प–वैसे प्रकार के हैं। १६५

हवा बहुत प्रबल रूप से हिलाये तो भी उनके सुगन्धपूर्ण फूल, पत्ते, कलियाँ और फल छितरकर भूमि पर कहीं नहीं गिरते। पर वे आकाश-गंगा में तिरकर गर्जनशील तरंगायित समुद्र में जा मिलते हैं। १६५

अडिय नान्मऱै यन्दण नण्डत्तुक् कप्पाल्
मुडियिन् मेऱ्चॅन्ऱ मुडियन वादलिन् मुडिया
नॅडिय मालन्न निलैयन नीरिडैक् किडन्द
पडियिन् मेनिन्ऱ मेरुमाल् वरैयिनुम् परिय 166

नान् मऱै अन्तणन्–चतुर्वेदी ब्रह्मा के; अणटत्तुक्कु अटिय–अण्डों के मूल से भी नीचे गयी हुई जड़ वाले थे; अप्पाल्–उस (अण्ड) के भी परे; मुटियिन् मेल्–शिखर के भी ऊपर; चेन्ऱ–गये हुए; मुटियन–शिखर के; आतलिन्–इस कारण; मुटिया–अनन्त; नॅटिय माल्–त्रिविक्रम महाविष्णु; अन्न–के समान; निलैयत–दृश्यमान हैं; नीर् इटै किटन्त–समुद्रमध्य पड़ी रहनेवाली; पटियिन् मेल्–भूमि पर; निन्ऱ–स्थायी; मेरु माल् वरैयिनुम्–मेरु के बड़े पर्वत से भी; परिय–मोटे हैं। १६६

चतुर्वेदी ब्रह्मा के अण्ड के मूल तक इनकी जड़ें गयी हैं। इनकी शिखाएँ उस ब्रह्माण्ड की चोटी के ऊपर भी गयी हैं। इसलिए वे त्रिविक्रम महाविष्णु के समान आकार के लगते हैं। समुद्र-मध्य-स्थित भूमि पर स्थायी रहनेवाले मेरु से ये अधिक स्थूल हैं। १६६

वळ्ळ लिन्दिरन् मैन्दऱ्कुन् दम्बिक्कुम् वयिर्त्त
उळ्ळ मेयॅन वॉन्ऱिनॉन् रुळ्वयिर्प् पुडैय
तॅळ्ळु नीरिडैक् किडन्दपार् शुमक्किन्ऱ शेडन्
वॅळ्ळि वॅण्बडङ् गुडैन्दुकीळ् पोहिय वेर 167

वळ्ळल्–दानी; इन्तिरन्–इन्द्र के; मैन्तऱ्कुम्–पुत्र वाली और; तम्पिक्कुम्–छोटे भाई सुग्रीव के; वयिर्त्त उळ्ळमे ऍन–वैरी मन के समान; ऑन्ऱिन् ऑन्ऱ–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(उन पेड़ों में) एक से बढ़कर एक; वयिर्प्पु उटैय–हीर वाले हैं; तॆळ्ळु नीर् इटै–शुद्धजल के समुद्रमध्य; किटन्त–पड़ी रहनेवाली; पार्–भूमि को; चुमक्कित्तर्–धारण करनेवाले; चेटन्–शेषनाग के; वॆळ्ळि वॆण्–पटम्–चाँदी के समान श्वेत फन को; कुटैन्तु–छेदकर; कीऴ् पोकिय–पाताल में गयी हुई; वेर–जड़ों वाले हैं। १६७

दानी इन्द्र के पुत्र और उसके भाई सुग्रीव के मन के वैर के ही समान इनके एक-एक का सत भी कठोर हो गया था। शुद्धजल सागरमध्य-स्थित भूमि के धारक शेषनाग के फनों को छेदकर जो नीचे गयी थीं, ऐसी जड़ों के थे ये वृक्ष। १६७

शॆन्ऱु तिक्किनै यळन्दन तिशैहळिऱ् ऱेवर्
ऍन्ऱु निऱ्कुमॆन् ऱिशैप्पन विरुशुडर् तिरियुम्
कुन्ऱि नुक्कुयर्न् दहन्ऱन यादिनुङ् गुरुहा
ऑन्ऱिनुक् कॊन्ऱि निडैनॆडि दियोशनै युडैय 168

चॆन्ऱु–बढ़कर; तिक्किनै–दिशाओं को; अळन्तन–नापनेवाले; तिचैकळिल् तेवर्–दिशाओं के (दिग्पाल) देव; ऍन्ऱुम् निऱ्कुम्–हमेशा उन्हीं पर रहते हैं; ऍन्ऱु इचैप्पन– ऐसा वर्ण्य हैं; इरु चुटर्–दो प्रकाशपुंज सूर्य और चन्द्र; तिरियुम्–जिसकी परिक्रमा करते हैं; कुन्ऱिनुक्कु–उस मेरुपर्वत से बढ़कर; उयर्न्तु अकन्ऱन–उन्नत और विशाल बने हैं; यातिनुम् कुऱ्का–किसी से भी कम नहीं; ऑन्ऱिनुक्कु ऑन्ऱिन् इटै–एक दूसरे के बीच; नॆटितु–लम्बाई (दूरी); ऒरु योचनै उटैय–एक योजन की रखनेवाले थे। १६८

वे ऐसे व्यापक हैं, मानो वे दिशाओं को नापते हों। दिग्पालक इन्हीं पर रहते हों —ऐसे वर्णनीय हैं। मेरुपर्वत से भी, जिसकी दोनों प्रकाशपुंज, सूर्य और चन्द्र परिक्रमा करते हैं, उन्नत और विशाल हैं। वे किसी से भी कम नहीं हैं। उनकी आपस की, एक-दूसरे से, दूरी एक योजन की थी। १६८

आय मामर मनैत्तैयु नोक्किनिन् ऱमलन्
तूय वार्हणै तुरप्पदो रादरन् दोन्ऱच्
चेय वानमुन् दिशैहळुञ् जॆविडुऱत् तेवर्क्
केय लाददोर् पयम्वरच् चिलैयिना णॆऱिन्दान् 169

आय–वैसे; मा मरम् अनैत्तैयुम्–सभी बड़े वृक्षों को; अमलन्–निरंजन श्रीराम ने; नोक्कि निन्ऱु–देखते खड़े रहकर; तूय वार् कणै–पवित्र लम्बे शर को; तुरप्पतु–छोड़ने की; ओर् आतरम्–एक प्रबल इच्छा; तोन्ऱ–होने से; चेय वानमुम्–दूर के आकाशवासी और; तिचैकळुम्–दिशाओं के वासी; चॆविटु उऱ–बहरे हो जायँ, ऐसा; तेवर्क्कु–देवों को; एय् अलात–अपरिचित; ओर् पयम् वर–एक भय हो जाय, ऐसा; चिलैयिन् नाण्–धनु की प्रत्यंचा; ऍऱिन्तान्–खींचकर ध्वनि निकाली। १६९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निरंजन श्रीराम ऐसे उन पेड़ों को गौर से देखते खड़े रहे। उनके मन में उत्कण्ठा हुई कि पवित्र और लम्बा शर चलाऊँ। तब उन्होंने प्रत्यंचा को खींचकर टंकार पैदा की। उससे अधिक दूर के देवलोकवासियों और सभी दिशाओं के रहनेवाले लोगों के कान बहरे हो गये। देवों को एक अभूतपूर्व डर हो गया। १६९

ऒक्क निन्ऱदेव् वुलहमु मङ्गङ्गे योशै
पक्क निन्ऱवर्क् कुऱ्ऱदु पहर्वदेप् पडियो
दिक्क यङ्गळु मयङ्गिन दिशैहळुन् दिहैत्त
पुक्क यन्बदि शलिप्पुऱ वॊलित्तदप् पोर्विल् 170

ओचै–वह ज्यास्वर; ऍ उलकमुम्–सारे लोकों में; अङ्कङ्के–यत्र-तत्र; ऒक्क निन्ऱतु–समान रूप से फैला; पक्कम् निन्ऱवर्क्कु–पास स्थित लोगों पर; उऱ्ऱतु–जो बीता; पकर्वतु–वह कहना; ऍप्पटियो–कैसे हो; तिक् कयङ्कळुम्–दिग्गज भी; मयङ्कित–बेहोश हुए; तिचैकळुम्–दिशाएँ; तिकैत्त–अस्त-व्यस्त हुईं; अ पोर् विल्–उस (श्रीराम के) युद्ध-धनुष की ध्वनि; अयन् पति–ब्रह्मा के (सत्य-) लोक को भी; चलिप्पु उऱ–चंचल करते हुए; पुक्कु ऒलित्ततु–घुसकर गूंजी। १७०

वह ज्यास्वन सारे लोकों में यत्र-तत्र समान रूप से व्याप गया। उन वृक्षों के पास जो रहे, उन पर कैसे बीता, यह क्या कहा जाय? आठों दिग्गज बेहोश हो गये। दिशाएँ भ्रमित हो गयीं। श्रीराम के उस युद्ध-धनु की ध्वनि ब्रह्मा के सत्यलोक में घुसी, तो वह लोक भी डगमगा गया। १७०

अरिन्द मन्शिलै नाणॆडि दार्त्तलु ममरर्
इरिन्दु नीङ्गिनर् कऱ्पत्ति निऱुदियॆन् ऱयिर्त्तार्
परिन्द तम्बिये पाङ्गुनिन् ऱान्मऱ्ऱैप् पल्लोर्
पुरिन्द तन्मैयै युरैशॆयिऱ् पळियवर्प् पुणरुम् 171

अरिन्तमन्–अरिन्दम (परंतप) श्रीराम; चिलै नाण्–धनु का डोरा; नॆटिदु आर्त्तलुम्–देर तक ध्वनि करता रहा तो; अमरर्–देव; कऱ्पत्तिन् इऱुति–कल्पान्त; ऎन्ऱु–कहकर; अयिर्त्तार्–शंकित ए; इरिन्तु नीङ्कितर्–अस्त-व्यस्त भागे; परिन्त तम्पिये–स्निग्ध छोटे भाई ही; पाङ्कु निन्ऱान्–पास खड़े रहे; मऱ्ऱै पल्लोर्–अन्य अनेक लोगों ने; पुरिन्त तन्मैयै–जो किया वह कार्य; उरै चॆयिल्–कहें तो; पळि–निन्दा; अवर् पुणरुम्–उनकी होगी। १७१

अरिन्दम श्रीराम के धनुष का डोरा बहुत देर तक टंकार निकालता रहा। देवों को शंका हो गयी कि कल्पान्त आ गया। इसलिए वे अस्त-व्यस्त होकर भागे। केवल लक्ष्मण ही पास खड़े रहे, जो कि श्रीराम पर अगाध भक्ति रखते थे। अन्य अनेकों ने क्या किया, यह कहने लगें तो उनकी निन्दा होगी। १७१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅय्दल् काण्डुङ्गॊ लिन्नुमॅन् ऱरिदिन्वन् दॅय्दिप्
पॊय्यिन् मारुदि मुदलिनर् पुहलुरुम् बॊऴुदिल्
मॊय्हॊळ् वार्शिलै नाणिनै मुऱैयुऱ वाङ्गि
वॅय्य वाळियै याळुडै विल्लियुम् विट्टान् 172

पॊय् इल्–असत्य-रहित (सत्यसंध); मारुति मुतलिनर्–मारुति आदि; इन्नुम्–और भी; अॅय्तल् काण्टुम् कॊल्–शर चलाना भी देखना है क्या; अॅन्ऱु–कहकर; अरितिन् वन्तु अॅय्ति–सप्रयास आ पहुँचकर; पुकल् उरुम् पॊऴुतु–समीप आते समय; आळुटै विल्लियुम्–हमारे कैंकर्य-प्राप्त धनुर्धर श्रीराम ने भी; मॊय् कॊळ्–सुदृढ़; वार् चिलै–लम्बे धनुष के; नाणिनै–डोरे को; मुऱै उऱ–यथाविधि; वाङ्कि–खींचकर; वॅय्य वाळियै–भयंकर शर को; विट्टान्–चलाया। १७२

सत्यसंध मारुति आदि यही सोचने लगे कि आगे श्रीराम का शर चलाना देखना भी है क्या ? वे बहुत प्रयास के साथ श्रीराम के पास धीरे-धीरे आये। तब हमारे कैंकर्य के अधिकारी श्रीराम ने सुदृढ़ अपने चाप के डोरे को यथाविधि खींचकर एक भयंकर शर चलाया। १७२

एऴु मामर मुरुविक्की ऴुलहमॅन् ऱिशैक्कुम्
एऴु मूडुपुक् कुरुविप्पिन् नुडनडुत् तियन्ऱु
एऴि लामैयान् मीण्डदव् विराहवन् पहऴि
एऴु कण्डपि नुरुवुमा लॊऴिवदन् ऱिन्नुम् 173

इराकवन्–श्रीराघव का; अ पकऴि–वह बाण; एऴु मा मरम्–उन सातों बड़े वृक्षों को; उरुवि–बेधकर; कीऴ् उलकम्–नीचे के लोक; अॅन्ऱु–ऐसा; इचैक्कुम् एऴुम्–कहलानेवाले सातों को; ऊटु पुक्कु–मध्य घुसकर; उरुवि–उस तरफ़ बाहर आकर; पिन्–बाद; उटन् अटुत्तु–साथ लगे; इयन्ऱ–रहनेवाले; एऴु इलामैयाल्–सप्तक न रहने के कारण; मीण्टतु–लौट आया; इन्नुम्–आगे भी; एऴु कण्ट पिन्–कोई सप्तक देखता तो उसके बाद; उरुवुम्–भेद जाता; ऒऴिवतु अन्ऱु–छोड़नेवाला नहीं था। १७३

श्रीराघव का वह बाण सातों सालवृक्षों को भेदकर बाहर निकला। फिर सातों लोकों के मध्य घुसकर निफरा। उसके बाद अन्य कोई सप्तक (सात वस्तुओं का सम्मिलित समूह) न पाकर लौट आया। और कोई सप्तक मिल जाता, तो वह अवश्य भेदकर पार होता। छोड़ता नहीं। १७३

एऴु वेलैयु मुलहमे लुयर्न्दन वेऴुम्
एऴु कुन्ऱमु मिरुडिह ळॆऴुवरुम् बुरवि
एऴु मङ्गैय रॆऴुवरु नडुङ्गिन रॆन्ऱ
एऴु पॆऱ्ऱदो विक्कणैक् किलक्कमॅन् ऱॆण्णि 174

एऴु वेलैयुम्–सातों समुद्र; उयर्न्तन–ऊपर रहनेवाले; मेल् उलकम्–उपरिलोक;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एळुम्–सातों; एळु कुन्ऱमुम्–सातों पर्वत; इरुटिकळ्–ऋषि; ऍळुवरुम्–सप्तक; पुरवि एळुम्–सातों अश्व (सूर्य के रथ के); मङ्कैयर् ऍळुवरुम्–सातों कन्याएँ; इ कणैक्कु–इस शर का; इलक्कम्–निशान; एळु–सप्तक; पॅऱ्ऱतो–बनेगा क्या; ऍन्ऱु ऍण्णि–यह सोचकर; नटुङ्कित्तर्–भयभीत हो गए। १७४

तब सृष्टि में जितने सप्तक थे, वे सब भयभीत हो गये। (नमक, इक्षुरस, सुरा, घृत, दधि, दुग्ध, शुद्धजल के) समुद्र-सप्तक; (भूलोक, भुवलोक, स्वर्लोक, जन, महा, तपो, सत्य के सातों) उपरिलोक; (कैलास, हिम, मन्दर, विन्ध्य, निषध, हेमकूट, गन्धमादन —ये सातों) गिरियाँ; (अत्रि, भृगु, कुत्स, वसिष्ठ, गौतम, काश्यप, अंगिरा —ये) ऋषि-सप्तक; (गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप, वृहती, पंक्ति, दृष्टुप, जगती —ये छन्द, जो सूर्यरथ के अश्व हैं —ये सातों) अश्व; (ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, नारायणी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डी —ये) सप्तकन्याएँ —ये सब सप्तक इस संशय से भयभीत हुए कि इस शर का निशान कोई भी सप्तक होगा ! । १७४

अन्नत दायितु मऱत्तितुक् कारुयिर्त् तुणैवन्
ऍन्नुन् दन्मैयै नोक्किन रियावरु मॅवैयुम्
पॊन्नित् वार्हळर् पुदुनऱुन् दामरै पूण्डु
शॅन्नि मेर्कॊण्ड वरुक्कन्शे यिवैयिवै शॅप्पुम् 175

अन्नतु आयितुम्–वैसा हुआ तो भी; अऱत्तितुक्कु–धर्म का; आर् उयिर् तुणैवन् ऍन्नुम्–बहुत ही प्राणप्यारा रहने का; तन्मैयै–उनका स्वभाव; यावरुम् ऍवैयुम्–सारे लोगों और सारे जीवों ने; नोक्कितर्–समझा (समझकर भय त्याग दिया); पॊन्नित् वार् कळल्–स्वर्ण की बड़ी पायल के; पुतु नऱुम् तामरै–नवीन सुगन्धित शहदयुक्त कमलों (चरणों) को; पूण्टु–पकड़कर; चॅन्नि मेल् कॊण्ट–अपने सिर पर जिसने रख लिया; अरुक्कन् चेय्–वह सूर्यकुमार; इवै इवै चॅप्पुम्–यों-यों बोलने लगा। १७५

तो भी उनको यह विश्वास था कि श्रीराम धर्म के प्राणप्यारे संगी हैं। इसलिए वे सभी भयमुक्त हुए। तब सूर्यपुत्र सुग्रीव स्वर्ण की बनी बड़ी पायलों से शोभित और नवविकसित सुगन्धपूर्ण कमल के समान रहनेवाले श्रीराम-चरणों को सिर पर धारण करके (चरणों पर दण्डवत में सिर रखकर) निम्नोक्त स्तुति की बातें कहने लगा। १७५

वैयनी वानुनी मऱुनी मलरिन्मेल्
ऐयनी याळिमा मालुनी यरनुनी
शॅय्यती वित्तॅनॅऱुन् देवुनी नायितॅन्
उय्यवन् दुदविना युलहमुन् दुदविनाय् 176

वैयम् नी–भूमि भी आप हैं; वानुम् नी–आकाश भी आप; मऱुम् नी–अन्य भूत भी आप; मलरिन् मेल् ऐयन्–(कमल-)पुष्प पर वास करनेवाले देव (ब्रह्मा भी);

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नी–आप हैं; आऴि मा मालुम्–क्षीरसागर-शायी महाविष्णु भी; नी–आप; अरत्तुम् नी–हर भी आप; ती वित्तै तॅरुम्–पापनाशक; चॅय्य तेवुम् नी–श्रेष्ठ देव भी आप; उलकु–प्रपंच को; मुन्तु उतवित्ताय्–पहले सृष्ट करनेवाले आपने; नायित्तेन् उय्य–कुत्ते के समान मेरे उद्धार के लिए; वन्तु उतवित्ताय्–आकर उपकार किया। १७६

आप भूमि हैं; आकाश व अन्य भूत भी आप हैं। कमलासन ब्रह्मा, क्षीरसागरशायी महाविष्णु, हर आदि सब हैं। पापनाशक श्रेष्ठ देवता भी आप ही हैं। लोकपिता आपने ही इस प्रपंच को सृष्ट किया। ऐसे आपने स्वयं आकर मेरे उद्धार का बड़ा उपकार किया है। १७६

अॅन्नॅत्तक् करियदॅप् पॉरुळुमॅर् कॅळियदाल्
उन्नैयित् तलैविडुत् तुदवित्तार् विदियित्तार्
अन्नैयॉप् पुडैयवुन् नडियरुक् कडियन्यान्
मन्नवर्क् करशवॅन् रुरैशॅय्दान् वशैयिलान् 177

वचै इलान्–निर्दोष सुग्रीव ने; मन्नवर्क्कु–राजाओं के; अरच–राजा; वितियित्तार्–विधि के देव ने; उन्नै–आपको; इ तलै विटुत्तु–यहाँ भिजवाकर; उतवित्तार्–उपकार किया है; अॅन्–क्या; अॅन्क्कु–मेरे लिए; अरियतु–दुर्लभ है; अॅ पॉरुळुम्–कोई भी वस्तु; अॅर्कु–मेरे लिए; अॅळियतु आल्–सुगम है, इसलिए; अन्नै ऑप्पु उटैय–मातृ-सम; उन्–आपके; अटियरुक्कु–दासों का; यान् अटियन्–मैं किंकर हूँ; अॅन्रु–ऐसा; उरै चॅय्तान्–कथन किया। १७७

निर्दोष सुग्रीव ने और भी निवेदन किया। राजाधिराज! विधि ने आपको यहाँ भिजवाकर मेरा बहुत बड़ा उपकार किया है! अब मेरे लिए कौन सी बात दुर्लभ है? कोई भी बात सुगम है! इसलिए मैं माता-तुल्य आपके दासों का भी दास बन गया। १७७

आडित्तार् पाडित्ता रङ्गुमिङ् गुङ्गलन्
दोडित्ता रुवहैया नऱवैयुण् डुणर्हिलार्
नेडित्ताम् वालिहा लन्नैयॅन्ना नॅडिदुनाळ्
वाडित्तार् तोळॅलाम् वळरमर् ऱवरॅलाम् 178

नॅटितु नाळ् वाटित्तार्–बहुत दिन से व्यथित; अवर् अॅलाम्–वे सब; वालि कालत्तै–वाली के यम को; नेटित्ताम्–ढूंढ़कर पा गये; अॅन्ना–कहकर; उवकैयिन् नऱवै–सन्तोष का सुरा; उण्टु–पीकर; उणर्किलार्–आपा भूलकर; तोळ् अॅलाम् वळर–भुजाओं के वर्धित होते; आटित्तार्–नाचे; पाटित्तार्–गाये; अङ्कुम् इङ्कुम्–इधर-उधर; कलन्तु–मिलकर; ओटित्तार्–दौड़े। १७८

वे वानर बहुत दिनों से संकटग्रस्त और व्यथित रहे थे। अब उन्हें यह सन्तोष हो गया कि हम वाली के काल को ढूंढ़ रहे थे और वह श्रीराम के रूप में मिल गया। आनन्द सुरा का काम करने लगा। पिये हुए के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समान वे आपा भूलकर नाचे-गाये। उनके कन्धे फूल उठे। वे वृन्दों में मिलकर यत्र-तत्र दौड़े। १७८

5. तुन्दुबिप् पडलम् (दुन्दुभि पटल)

अण्डमुम् महिलमु मडैयवन् ऱत्तलिडैप्
पण्डुवॆन् ददुनॆडुम् पशैवऱन् दिडिनुम्वान्
मण्डलन् दॊडुवदम् मलैयिन्मेन् मलैयॆत्तक्
कण्डत्तन् ऱुन्दुबिक् कडलत्ता नुडलरो 179

अण्टमुम्–अण्डगोल और; अकिलमुम्–उसके अन्तर्निहित सारे लोक; अटैय–एक साथ; अन्ऱु–प्रलय के उस दिन; अत्तल् इटै–आग में; पण्टु–पहले; वॆन्ततु–जल गये; नॆटुम् पचै वऱन्तिटिनुम्–(रक्त आदि) लस के बहुत दिनों से सूखने पर भी; वान् मण्टलम् तॊटुवतु–आकाश-मण्डल को छूनेवाला; कटल् अत्तान्–समुद्र-सम; तुन्तुपि उटलै–दुन्दुभी के (मृत) शरीर को; अ मलैयिन् मेल्–उस पर्वत पर रहनेवाले; मलै ऍत्त–अन्य पर्वत के समान; कण्टत्तन्–(श्रीराम ने) देखा। १७९

[श्रीराम ने दुन्दुभि की लाश को देखा। दुन्दुभि महिष का-सा रूप वाला था। इसको मय का पुत्र भी माना जाता है। वाल्मीकी के अनुसार श्रीराम ने सालवृक्ष-छेदन के पहले दुन्दुभि के पंजर को अपने पैर के अँगूठे से उछाला था।]

वह दुन्दुभि का पंजर सारे अण्डगोल के और उसके अन्तर्हित सभी लोकों के पूर्व प्रलयकाल में अग्नि में जलने पर जो अवशेष रह सकता था, उसके समान था। रक्त आदि सूख गया था, तो भी वह इतना ऊँचा था कि आकाश को छू रहा था। समुद्र के समान वह फैला पड़ा था। श्रीराम ने उस मृत शरीर (अस्थिपंजर) को देखा, जो ऋष्यमूक पर्वत पर पड़े रहनेवाले दूसरे पर्वत के समान लगता था। १७९

तॆन्बुलक् किळवनूर् मयिडमो दिशैयिन्वाळ्
वन्बुलक् करिमडिन् ददुहॊलो महरमीन्
ऍन्बुलप् पुऱवुलर्न् ददुहॊलो विदुवॆन्ता
उन्बुलक् कुरियनो युरैशैया यॆत्तववन् 180

इतु–यह; तॆन् पुलम् किळवन्–दक्षिण दिशा के अधिदेव की; ऊर्–सवारी; मयिटमो–महिष है; तिचैयिन् वाळ्–दिशाओं में वास करनेवाले; वन्पु–बलिष्ठ; उलम् करि–(गजों में) मोटा एक गज; मटिन्ततु कॊलो–मरा है क्या; मकर मीन्–मगर-मच्छ; उलप्पु उऱ–जीवन खोकर; ऍन्पु उलर्न्ततु कॊलो–उसकी हड्डियाँ सूखी पड़ी हैं क्या; ऍन्ता–सोचकर; उन् पुलक्कु उरिय–तुम्हारी जानकारी में आयी हुई बात को; नी–तुम; उरै चॆयाय्–बताओ; ऍत्त–पूछने पर; अवन्–सुग्रीव भी। १८०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीराम ने उसको देखकर सुग्रीव से पूछा कि सुग्रीव ! यह पंजर दक्षिण दिशा के अधिदेव यम का वाहन महिष है ? या आठ बलिष्ठ मोटे दिग्गजों में एक मरा पड़ा है ? या किसी मगरमच्छ के मरने पर उसकी हड्डियाँ सूखी पड़ी हैं ? आश्चर्य के साथ ऐसा पूछने के बाद श्रीराम ने कहा कि तुम जो जानते हो, वह बताओ। सुग्रीव ने यों उत्तर दिया। १८०

तुन्दुबिप् पॅयरुडैच् चुडुशिनत् तवुणन्मी
इन्दुवैत् तॉडनिमिर्न् दॅऴुमरुप् पिणैयिनान्
मन्दरक् किरियॅनप् पॅरियवन् महरनीर्
शिन्दिडक् करुनिऱत् तरियिनैत् तेडुवान् 181

मी इन्तुवै–ऊपर, चन्द्र को; तॉट–स्पर्श करते हुए; निमिर्न्तु ऍऴु–ऊपर की ओर उठे हुए; मरुप्पु इणैयिनान्–शृंगद्वय-सहित था; मन्तर किरि–मन्दर पर्वत; ऍन–जैसे; पॅरियवन्–बड़ा आकारवाला; तुन्तुपि–दुन्दुभि; पॅयरुटै–नाम का; चुटु चिनत्तु–जलानेवाले क्रोध का; अवुणन्–दानव; मकर नीर् चिन्तिट–मकरालय (समुद्र) का जल विलोड़ित करके; करु निऱत्तु–काले रंग के; अरियिनै–हरि को; तेटुवान्–ढूँढ़ चला। १८१

एक दुन्दुभि दानव था। उसके दो सींग थे, जो आकाश में चन्द्र को स्पर्श कर दें, इतने ऊँचे ऊपर को उठे हुए थे। उसका आकार मन्दर पर्वत के समान बड़ा था। उसका क्रोध अग्नि के समान जलानेवाला था। वह मकरालय में इतने ज़ोर से घुसा कि उसका जल छलककर छितर गया। वह काले रंग के महाविष्णु को (युद्ध करने के लिए) ढूँढ़ते हुए चला। १८१

अङ्गुवन् दरियॅदिर्न् दमैदियॅन् नॅन्ऱलुम्
पॉङ्गुवॅञ् जॅरुविनिऱ् पॉरुदियॅन् ऱुरैशॅयक्
कङ्गैयिन् कणवनक् करैमिडऱ् ऱमलने
उङ्गदप् पॅरुवलिक् कॉरुवनॅन् ऱुरैशॅय्दान् 182

अङ्कु–वहाँ; अरि वन्तु–हरि आये; ऍतिर्न्तु–सामने रहकर; अमैति ऍन्–योजना क्या है; ऍन्ऱलुम्–पूछने पर; पॉङ्कु–क्रोध जिसमें उमड़े, उस; वॅम् चॅरुविनिल्–भयंकर युद्ध में; पॉरुति–मुझसे भिड़ो; ऍन्ऱु उरै चॅय–यह कहने पर; कङ्कैयिन् कणवन्–गंगा के पति; अ करै मिटऱ्ऱु–वे विष-कण्ठ; अमलने–निर्मल ईश्वर ही; उम्–तुम्हारे (जैसे लोगों को); कत पॅरुवलिक्कु–क्रोधशील बड़े बल के योग्य; ऑरुवत–एक (शत्रु) है; ऍन्ऱु–ऐसा; उरै चॅय्तान्–कहा। १८२

तब वहाँ हरि सामने आये। उन्होंने दानव से पूछा कि अभिप्राय क्या है ? दानव ने उत्तर दिया कि मेरे साथ क्रोध उभाड़नेवाली रीति से युद्ध करो। तब हरि ने कहा कि चलो गंगा के पति के पास। विषकण्ठ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वे ही तुमको तृप्तिदायक युद्धदान कर सकेंगे। तुम बहुत ही क्रोधशील और बड़ी शक्ति के रखनेवाले हो। १८२

कडिदुशॅन् ऱवनुमक् कडवुडन् कयिलैयैक्
कॉडियकॉम् बिनिन्मडुत् तॅळुदलुङ् गुरुहिमुन्
नॉडिदिनिन् कुऱैयैयॅन् ऱलुनुवन् ऱनतरो
मुडिविल्वॅञ् जॅरुवॅनक् कुदवुवान् मुयल्हॅना 183

अवनुम्–वह भी; कटितु चॅन्ऱु–जल्दी जाकर; अ कटवुळ् तन्–उन ईश्वर के; कयिलैयै–कैलास पर्वत को; कॉटिय कॉम्पितिल्–भयंकर सींगों से; मट्टतु–उखाड़ लेकर; ऍळुतलुम्–उठा, तो; मुन् कुऱकि–सामने आकर (शिवजी); निन् कुऱैयै–अपनी चाह; नॉटिति–कहो; ऍन्ऱलुम्–बोले, तो; मुटिवु इल्–असीम; वॅम् चॅरु–कठोर युद्ध; ऍनक्कु उतवुवान्–मुझे देकर उपकार करने का; मुयल्क–प्रयत्न करें; ऍना–यह; नुवन्ऱनन्–(दुन्दुभि) बोला। १८३

वह वेग के साथ चला। उसने ईश्वर शिव के कैलास को अपने सींगों से खोदकर उठा लिया। तब शिवजी उसके सामने आये और पूछा कि तुम्हारी चाह क्या है? दानव ने कहा, मुझसे असीम काल तक भयंकर युद्ध करने का प्रयत्न कीजिए। १८३

मूलमे वीरमे मूडिना योडुपोर्
एलुमो तेवर्पा लेहॅना वेवितान्
शालनाळ् पोर्शॅय्वा यादियेर् चारल्पोय्
वालिपा लेयॅना वानुळोर् वानुळान् 184

मूलमे–आदि से ही; वीरमे मूटितायोटु–वीरता में मग्न रहनेवाले तुमसे; पोर् एलुमे–युद्ध शक्य है क्या; तेवर् पाल् एकु ऍना–देवों के पास जाओ, ऐसा; एवितान्–प्रेरित किया; वान् उळोर्–व्योमवासियों के; वान् उळान्–ऊपर रहनेवाले इन्द्र; चाल नाळ्–अनेक दिन; पोर् चॅय्वाय् आति–युद्ध करनेवाले हो; एल्–तो; वालि पाले–वाली के पास ही; पोय् चारल्–जाकर मिलो; ऍना–ऐसा। १८४

शिवजी ने कहा कि तुम आदि से ही वीरता से आवृत बड़े वीर हो! तुम्हारे साथ युद्ध करने की शक्ति मुझमें है क्या? तुम देवों के पास जाओ। उन्होंने उसे देवों के पास भेजा। (वह उनके पास गया।) देवों के राजा इन्द्र ने उनसे कहा कि अगर तुममें बहुत लम्बे काल तक युद्ध करने की चाह है, तो वाली के पास ही जाओ। १८४

अन्नवन् विडवुवन् दवनुम्वन् दरिहडम्
मन्नव वरुहपोर् शॅयवॅना मलैयितॅच्
चिन्नपिन् नम्बडुत् तिडुदलुञ् जिनवियॅन्
मुन्नवन् मुन्नर्वन् दवनॉडुम् मुनैदलुम् 185

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्नवन् विट–इन्द्र के भेजने पर; अवनुम्–उस (दुन्दुभि) के; उवन्तु वन्तु–मुदित आकर; अरिकळ् तम् मन्नव–वानरों के राजा; पोर् चॅय–युद्ध करने; वरुक–आओ; ऍन्ना–कहकर; मलैयिन्नै–वाली के वास के पर्वत को; चिन्न पिन्नम् पट्टतिट्टतलुम्–छिन्न-भिन्न करने पर; ऍन् मुन्नवन्–मेरे अग्रज; चिनवि–कुपित हो; मुन्नर् वन्तु–सामने आकर; अवनोटु–उसके साथ; मुन्नैतलुम्–लड़े, तब । १८५

इन्द्र ने ऐसा कहकर उसे भेज दिया। दुन्दुभि भी बहुत खुश होकर वाली के पास आया। वानरराज ! आओ, हमसे भिड़ो ! यह कहते हुए उसने वाली के पर्वत को तहस-नहस किया। तो मेरे बड़े भाई क्रुद्ध हुए और आकर उससे भिड़ने लगे। १८५

इरुवरुञ् जॅरुवुरुम् पॉऴुदिनिन् नवर्हळॅन्
ऱॊरुवरुञ् जिरिदुणर्न् दिलर्हळॅव् वुलहमुम्
वॅरुवरुन् दहैयिनार् विऴुवर्निन् ऱॅऴुवराल्
मरुवरुन् दहैयर्ता नवर्हळ्वा नवर्हडाम् 186

इरुवरुम्–दोनों; चॅरु उरुम् पॉऴुतिन्–जब भिड़े तब; इन्नवर्कळ् ऍन्नुऱ–कौन हैं, ऐसा; ऒरुवरुम्–कोई भी; उणर्न्तिलर्कळ्–समझ नहीं पाये; ऍ उलकमुम्–किसी भी लोक के वासी; वॅरुवरुम् तकैयिनार्–देखकर भयभीत हो जायँ, ऐसे रचित वे; विऴुवर्–गिरेंगे; निन्नुऱ ऍऴुवर् आल्–फिर उठेंगे, इसलिए; तानवर्–दानव; वानवर्कळ् ताम्–और देवों को भी; मरुवु–पास आना; अरुम् तकैयर्–असम्भव हो, ऐसी स्थिति वाले। १८६

दोनों जब लड़े तो वे इतने गुँथ गये कि किसी के लिए भी अलग-अलग पहचानना कठिन हो गया। वे दोनों ऐसे थे कि किसी भी लोक के वासी उनको देखकर भयभीत हो जायँ। ऐसा वे भिड़ते हुए कभी गिर जाते; कभी उठ जाते कि दानव, देव सभी उनके समीप आ नहीं सके। १८६

तीयॅऴुन् ददुविशुम् बुऱनॅडुन् दिशैमिशैप्
पोयॅऴुन् ददुमुऴक् कुडनॅऴुन् ददुपुयल्
तोयमुम् बुणरियुन् दॊडर्तडङ् गिरिहळुम्
शायऴिन् दनवडित् तलमॅडुत् तिडुदलाल् 187

अटि तलम्–पैरों को; ऍट्टुतिट्टुतलाल्–बदलकर रखने से; ती–आग; विचुम्पु उऱ–आकाश छूते हुए; ऍऴुन्ततु–उठी; मुऴक्कु–गर्जन; नॅटुम् तिचै मिचै–लम्बी दिशाओं में; पोय् ऍऴुन्ततु–जाकर गूंज उठा; पुयल्–मेघ; उटन् ऍऴुन्ततु–साथ उठे; तोयमुम्–जलाशय; पुणरियुम्–समुद्र; तटम् तॊटर् किरिकळुम्–और बड़े श्रेणीबद्ध पर्वत; चाय् अऴिन्ततन–प्रभाहीन हो गये (महिमाहीन हो गये या सौंदर्य-विहीन हो गये)। १८७

वे जब पैंतरे बदलते तब आग उठ जाती और आकाश तक फैल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जाती। उनका गर्जन सारी दिशाओं में जाकर गूँज उठा। मेघ भी उसके साथ उठ जाते। शुद्ध जलाशय, समुद्र और बड़ी पर्वतश्रेणियाँ अपना-अपना सौन्दर्य खो गयीं। सब मिट गये। १८७

अऱ्ऱदा हियशॅरुप् पुरिवुऱु मळविऩिल्
कॉऱ्ऱवा लियुम्वयक् कुववुतोळ् वलियिऩाल्
पऱ्ऱिया शयिऩवऩ् पणैमरुप् पिणैपऱित्
तॅऱ्ऱिऩा ऩवऩुम्वा ऩिडियिऩिन् ऱुरऱिऩाऩ् 188

अऱ्ऱतु आकिय–उस प्रकार के; चॅरु–युद्ध को; पुरिवुऱुम् अळविऩिल्–जब वे करते रहे, तब; कॉऱ्ऱ वालियुम्–साहसी वाली ने भी; वयम् कुववु–विजयी और पुष्ट; तोळ् वलियिऩाल्–भुजबल से; अवऩ्–उसके; पणै–स्थूल; मरुप्पु इणै–सींगों के जोड़े को; पऱ्ऱि–पकड़कर; पऱित्तु–नोच लेकर; आचैयिऩ्–दिशाओं में; ऍऱ्ऱिऩाऩ्–फेंका; अवऩुम्–वह (दुन्दुभि) भी; वाऩ् इटियिऩ्–आकाश में होनेवाले वज्र के समान; निऩ्ऱु–खड़ा होकर; उरऱिऩाऩ्–गरजा। १८८

दोनों में ऐसा युद्ध हो रहा था। तब साहसी वाली ने अपनी विजयी, पुष्ट और उन्नत भुजाओं के बल से दानव के दोनों सींगों को तोड़ लेकर दूर दिशाओं में फेंक दिया। वह भी वहीं रहकर वज्र के समान गरजने लगा। १८८

कवरियङ् गिरियिऩैक् करदलङ् गॉडुतिरित्
तिवर्दलुङ् गुरुदिपट् टुयर्नॅडुन् दिशैतॉऱुम्
तुवरणिन् दऩवॅऩप् पॉशितुदैन् दऩदुणैप्
पवर्नॅडुम् बणैमदम् बयिलुम्वऩ् गिरिहळे 189

कवरि अम् किरियिऩै–महिष के आकार के सुन्दर पर्वत के समान उस दुन्दुभि को; करतलम् कॉटु–(वाली) हाथों से; तिरित्तु–घुमाते हुए; इवर्तलुम्–घूमा तो; कुरुति पट्टु–(उस दानव का) रक्त आ लगा, इसलिए; उयर् नॅटुम्–विशाल व उन्नत; तिचै तॉऱुम्–आठों दिशाओं में; तुणै–मिले रहे; पवर्–पास-पास के; नॅटुम्–बड़े; पणै–स्थूल; मतम् पयिलुम्–मदमत्त; वऩ् किरिकळ्–बलिष्ठ गिरि-सम गज; तुवर् अणिन्तऩ अॅऩ–लाल रंग से रंगित हो गये जैसे; पॉचि–(रक्त के) लेप से; तुतैन्तऩ–युक्त हो गये। १८९

वाली महिषाकार सुन्दर पर्वत-सम उसको अपने हाथों में उठाकर घुमाते हुए स्वयं घूमने लगा। तब उस असुर के रक्त से आठों परस्पर मित्र, बड़े, मोटे और मदस्रावी दिग्गज लाल रंग के बने से लिप्त हो गये। १८९

पुयल्हडन् दिरवितऩ् पुहल्हडन् दयलुळोर्
इयलुमण् डिलमिहन् दॅऩैयवन् दविरमेल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वयिरवन् करदलत् तवऩ्वलित् तॅऱियवन्
ऱुयिरुम्विण् पडरविव् वुडलुमिम् बरिऩरो 190

अवऩ्–वह; पुयल् कटन्तु–मेघमण्डल पार करके; इरवि तऩ् पुकल्–सूर्य-मार्ग; कटन्तु–पार करके; अयल् उळोर् इयलुम्–उनके परे अन्य देवों के भी; मण्टिलम् इकन्तु–मण्डलों को पार करके; ॲतैयवुम्–अन्य लोकों को भी; तविर–छोड़ते हुए; मेल्–ऊपर; वयिर–कठोर; वऩ् कर तलत्तु–बलिष्ठ हाथों से; वलित्तु ॲऱिय–ज़ोर से फेंकने पर; अऩ्ऱु–तब; उयिरुम् विण् पटर–प्राणों के स्वर्ग में जाते; इ उटलुम्–यह शरीर भी; इम्परिऩ् अरो—इस लोक में पड़ा रह गया न। १९०

वाली ने अपने बहुत ही बलवान हाथों से उसको ऐसा ले पटका कि वह मेघमण्डल, सूर्यमण्डल, देवलोक और अन्य लोकों को पार कर जाये। तब उसके प्राण स्वर्ग में चले गये और उसका शरीर इस भूमि पर पड़ा, इस भूमि का हो गया न ? । १९०

मुट्टिवाऩ् मुहडुशॅऩ् ऱणवियिम् मुडैयुडल्
कट्टिमाल् वरैयैवन् दुऱुदलिऱ् करुणैयाऩ्
इट्टशा बमुमॅऩक् कुदवुमिव् वियल्बिऩिल्
पट्टवा मुऴुवदुम् बरिविऩा लुरैशॅय्दाऩ् 191

इ मुटै–यह दुर्गन्धपूर्ण; उटल् कट्टि–शरीर का मांसपिण्ड; वाऩ् मुकटु–आकाश की छत को; मुट्टि चॅऩ्ऱु–टकराते हुए जाकर; अणवि–वहाँ लगा रहने के बाद; माल् वरैयै–इस बड़े (ऋष्यमूक) पर्वत पर; वऩ्तु उऱ्ऱलिल्–आ गिरा, तब; करुणैयाऩ्–करुणामय (मतंग ऋषि) का; इट्ट चापमुम्–दिया गया शाप भी; ॲऩक्कु उतवुम्–मेरा उपकारी बना; इ इयल्पिऩिल्–इस प्रकार से; पट्टवा मुऴुवतुम्–जो कष्ट सहना पड़ा, वह सब; परिविऩाल्–पीड़ा के साथ; उरै चॅय्ताऩ्–(सुग्रीव ने) कह सुनाया। १९१

यह दुर्गन्धपूर्ण शरीर, मांसपिण्ड ऊपर गया, आकाश की छत से टकराया और इस बड़े पर्वत पर आ गिरा। तब करुणामय मतंग ऋषि ने यह देखकर वाली को शाप दे दिया। वही शाप अब मेरा बड़ा उपकारी बना रहता है। इस प्रकार से सुग्रीव ने अपने सारे कष्टों की कहानी वेदना के साथ सुना दी। १९१

केट्टऩ ऩमलऩुङ् गिळन्द वाऱॅलाम्
वाट्टॊऴि लिऴवलै यिदऩै मैन्दनी
ओट्टॅऩ ववऩ्कऴल् विरलि नुन्दिऩाऩ्
मीट्टदु विरिञ्जऩा डुऱ्ऱु मीण्डदे 192

अमलऩुम्–निरंजन प्रभु ने भी; किळन्त आऱु ॲलाम्–कथित सभी बातों को; केट्टऩऩ्–सुना; वाळ् तॊऴिल्–करवालकार्य में चतुर; इळवलै–छोटे भाई से;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मैन्त–वीर भाई; नी–तुम; इतऩै–इसको; ओट्टु–दूर करो; ऍत–कहा तो; अवऩ्–उन्होंने भी; कऴल् विरलिऩ्–पैर की उँगलियों से; उन्तिऩान्–उछाला; अतु–वह पंजर; मीट्टु–फिर एक बार; विरिञ्चऩ् नाटु उऱ्ऱु–विरंचि का लोक जाकर; मीण्टतु–लौट आया। १९२

यह सब श्रीराम ने सुना। उन्होंने तलवार चलाने में अत्यन्त चतुर अपने छोटे भाई लक्ष्मण से कहा कि वीर भाई! इसको यहाँ से हटाओ। लक्ष्मण ने भी उसको अपने पैरों की उँगली से उछाला, तो वह पंजर फिर एक बार विरंचिलोक जा लौटा १९२

6. कलऩ् काण् पडलम् (आभरण-दर्शन पटल)

आयिडै यरिक्कुल मशऩि यञ्जिड
वाय्तिऱऩ् दार्त्ततु वळ्ळ लोङ्गिय
तूयवच् चोलैयि लिरुन्द शूऴल्वाय्
नायह वुणर्त्ततुव दुण्डु नाऩैऩा 193

अ इटै–तब; अरि कुलम्–वानरवृन्द; अचति अञ्चिट–वज्र को भयभीत करते हुए; वाय् तिऱऩ्तु–मुख खोलकर; आर्त्ततु–शोर मचा उठे; वळ्ळल्–उदार प्रभु श्रीराम भी; ओङ्किय–उन्नत; नल्–अच्छे; तूय–पवित्र; चोलैयिल्–उद्यान में; इरुन्त–जब रहे; चूऴल् वाय्–उस समय; नायक–नायक; नाऩ् उणर्त्ततुवतु–मेरी समझाने की; उण्टु–एक बात है; ऍऩा—कहकर। १९३

तब वानरवृन्दों ने मुख खोलकर सन्तोष का बड़ा हल्ला मचाया। दानी श्रीराम ऊँचे तरुओं से पूर्ण एक सुन्दर और पवित्र उपवन में जाकर ठहरे। तब सुग्रीव ने कहा कि नायक! मेरा एक निवेदन है। १९३

इव्वऴि यामियैन् दिरुन्द दोरिडै
वॅव्वऴि यिरावणऩ् कॊणर मेलैनाळ्
शॅव्वऴि नोक्किऩैम् देविये कॊलाम्
कव्वैयि ऩरऱ्ऱिऩळ् कऴिन्द शेणुळाळ् 194

मेलै नाळ्–पहले किसी दिन; इ वऴि–यहाँ; याम् इयैन्तु–हम मिलकर; इरुन्ततु ओर् इटै–जब रहे तब; वॅम् वऴि–दुराचारी; रावणऩ्–रावण द्वारा; कॊणर–लायी जाकर; कऴिन्त चेण् उळाळ्–बहुत दूर आकाश में जो रहीं; कव्वैयिऩ्–(एक स्त्री ने) दुःख से; अरऱ्ऱिऩळ्–विलाप किया; चॅम्मै वऴि–अब खूब; नोक्किऩैम्–सोचकर देखा; तेविये कॊल् आम्–देवी सीता ही होंगी शायद। १९४

उसने कहा— पहले किसी दिन हम यहाँ एकत्र होकर बैठे हुए थे। तब दुराचारी रावण एक स्त्री को उठाये ले जा रहा था। वह बहुत दूर में दुःख से विलाप कर रही थीं। अब सोचता हूँ तो लगता है कि वे देवी सीता ही थीं। १९४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उऴैयरि नुणर्त्तुव दॆऩ्ब दुऩ्नियो
कुऴैपॊरु कण्णिऩाळ् कुऱित्त दोर्न्दिलॆम्
मऴैपॊरु कण्णिणै वारि योडुदऩ्
इऴैपॊदिन् दिट्टऩळ् याङ्ग ळेऱ्ऱऩॆम् 195

कुऴै पॊरु–कुण्डलों से टकरानेवाली; कण्णिऩाळ्–आँखों की वे; उऴैयरिऩ्–पास जो रहे उन हमसे; उणर्त्तुवतु–(अपनी स्थिति) बताना; ॲऩपतु उऩ्नियो–यह सोचकर; कुऱित्ततु–उनका अभिप्राय; ओर्न्तिलॆम्–जान नहीं सके; तऩ् इऴै–अपने आभरणों को; पॊतिन्तु–बाँधकर; मऴै पॊरु–बारिश के समान; इणै कण्–जोड़ी की आँखों से; वारियोटु–बहनेवाली अश्रुधारा के साथ; इट्टऩळ्–नीचे डाल दिया; याङ्कळ्–हमने; एऱ्ऱऩॆम्–लेकर रख लिया। १९५

तब उन्होंने अपने आभरणों को वस्त्रखण्ड में बाँधकर आँखों से बहनेवाली अश्रुधारा के साथ हमारे सामने नीचे डाला। यह उन्होंने क्या सोचकर किया ? हम ही पास रहे, हमको अपनी स्थिति समझाना चाहती थीं, यही कारण था ? या कोई और ? हम नहीं जानते। हमने भी उन्हें उठाकर रखा है। १९५

वैत्तऩॆ मिव्वऴि वळ्ळ ऩिऩ्वयिऩ्
उय्त्तऩ तन्दपो दुणर्दि यालॆऩाक्
कैत्तलत् तऩ्ऩवै कॊणर्न्दु काट्टिऩाऩ्
नॆय्त्तलैप् पाल्हलन् दऩैय नेयत्ताऩ् 196

नॆय् तलै–शहद से; पाल् कलन्तऩैय–दूध मिला जैसे; नेयत्ताऩ्–स्निग्ध; वळ्ळल्–दानी प्रभु; उय्त्तऩ–ऐसे जो डाले गये, उनको; इ वऴि वैत्तऩॆम्–यहाँ रखा है; निऩ् वयिऩ्–आपके पास; तऩ्त पोतु–जब देंगे तब; उणर्ति–आप समझ लेंगे; ॲऩा–कहकर; अऩ्ऩवै–उन आभरणों को; कै तलत्तु–अपने हाथों में; कॊणर्न्तु–ले आकर; काट्टिऩाऩ्–दिखाया (सुग्रीव ने)। १९६

सुग्रीव का स्नेह शहदमिश्रित दूध के समान मधुर और गाढ़ा था और पवित्र भी। वैसे स्नेही सुग्रीव ने आगे कहा कि वदान्य ! वे आभरण, जिनको उन्होंने नीचे डाला था, इधर ही हैं। उनको हम आपके पास लाकर दें तो आप समझ सकेंगे कि वे क्या उन्हीं के हैं। यह कहकर सुग्रीव अपने हाथ में उन आभरणों को ले आया और श्रीराम को दिखाया। १९६

तॆरिवुऱ् नोक्किनऩ् ऱॆरिवै मॆय्यणि
ॲरिहिऩ लॆय्दिय मॆऴुहिऩ याक्कैपोय्
उरुहिऩ ऩॆऩ्गिलॆ मुयिरुक् कूऱ्ऱमाय्प्
परुहिऩ ऩॆऩ्गिलॆम् बहर्व दॆऩ्गॊलाम् 197

तॆरिवै मॆय् अणि–देवी के शरीर को अलंकृत करते जो रहे उनको; तॆरिवु उऱ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ध्यान देकर; नोक्कितन्-श्रीराम ने निहारा; ऍरि अन्नल्-जलती अग्नि में; ऍय्तिय-पड़े; मॆऴुकिन्-मोम के समान; याक्कै पोय्-शरीर के; उरुकिन्नन्-कृश हुए (पिघल गये); ऍन्किलॆम्-यह नहीं कह सकते; उयिरुक्कु ऊऱ्ऱम् आय्-प्राण की संजीवनी समझकर; परुकिन्नन् ऍन्किलॆम्-पिया, यह भी कह नहीं सकते; पकर्वतु-कहने के लिए; ऍन् कॊल् आम्-क्या ही है। १९७

देवी सीता के शरीर को अलंकृत करते जो रहे, उन आभरणों को श्रीराम ने ध्यान से देखा। तब उनकी स्थिति क्या रही? आग में पड़े मोम के समान शरीर द्रवीभूत हो गया? ऐसा कह नहीं सकते। या प्राणों की संजीवनी मानकर उनको उन्होंने पी लिया—यह भी नहीं कह सकते। फिर हम क्या कह सकेंगे?। १९७

नल्हुव दॆन्निनि नङ्गै कॊङ्गैयैप्
पुल्हिय पूणुमक् कॊङ्गै पोन्ऱन
अल्हुलि नणिहळु मल्हु लायिन
पल्हलन् पिऱवुमप् पडिव मायवे 198

नङ्कै कॊङ्कैयै-देवी के उरोजों को; पुल्किय-जो आलिंगन करते रहे; पूणुम्-वे आभरण; अ कॊङ्कै पोन्ऱन-उन्हीं स्तनों के समान बने (दिखे); अल्कुलिन् अणिकळुम्-कटि-प्रदेश के आभरण भी; अल्कुल् आयिन-कटि-प्रदेश ही बने; पल्कलन्-अनेक आभरण; पिऱवुम्-अन्य भी; अ पटिवम् आयिन-उन्हीं अंगों के रूप में दिखे (जिन पर वे पहने गये थे); इनि-इसके अलावा; नल्कुवतु-आभरण कर सकते हैं; ऍन्-क्या (उपकार)। १९८

उन आभरणों ने सीता के उन अंगों का स्मरण दिलाकर बड़ा उपकार किया। उरोजों से जो आभरण लगे रहे, वे (हार आदि) उरोज ही बन गये! कटिप्रदेश के मेखला आदि आभरण वही अंग बन गये। अन्य अंगों के आभरण भी वे अंग बन गये। (श्रीराम के मन में उन अंगों की स्मृति जागी और वह तीव्र हो गयी।) वे आभरण इसके सिवा क्या उपकार कर सकते थे?। १९८

विट्टपे रुणर्विनै विळित्त वॆन्गॆन्नो
अट्टन वुयिरैयव् वणिह ळॆन्गॆन्नो
कॊट्टिन शान्दॆन्नक् कुळिर्न्द वॆन्गॆन्नो
शुट्टन वॆन्गॆन्नो यादु शॊल्लुहेन् 199

अ अणिकळ्-उन आभरणों ने; विट्ट-जो छूट गयी थी; पेर् उणर्विनै-(श्रीराम की) उस प्रज्ञा को; विळित्त-बुलाकर लौटा दिया; ऍन्कॆन्नो-कहूँ; उयिरै-प्राणों को; अट्टन-मार दिया; ऍन्कॆन्नो-कहूँ; कॊट्टिन-ऊपर उड़ले गये; चान्तु ऍन-चन्दन के समान; कुळिर्त्त-शीतल बनाया; ऍन्कॆन्नो-कहूँ; चुट्टन-जलाया; ऍन्कॆन्नो-कहूँ; यातु चॊल्लुकेन्-क्या बता सकता हूँ। १९९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन आभरणों ने श्रीराम की छूटी प्रज्ञा को फिर से जाग्रत् कर दिया —ऐसा कहूँ ? या उन्होंने उनके प्राण जला (मिटा) दिये —कहूँ ? अधिक परिमाण में लिप्त चन्दन के समान शरीर को शीतल (सुखी) बनाया —कहूँ ? या श्रीशरीर को ताप दिया —कहूँ ? क्या कहूँ, मैं ? । १९९

मोन्दिड नऱुमल राऩ मॊय्म्बिनिल्
एन्दिड वुत्तरी यत्तै येय्न्दऩ
शान्दमु मार्यॊळि तऴुवप् पोर्त्तलाल्
पून्दुहि लाऩवप् पूवै पूण्गळे 200

अ–उन; पूवै–कोमल सारिका-सम देवी के; पूण्कळ्–आभरण; मोन्तिट–सूंघने के लिए; नऱु मलर् आत–सुगन्धित फूल बने (उन्होंने सूँघा); मॊय्म्पिनिल्–अपने कन्धों पर; एन्तिट–धारण करने पर; उत्तरीयत्तै–उत्तरीय के; एय्न्तत–स्थान में रहे; चान्तमुम्–चन्दन भी; आय्–बने और; ऒळि तऴुव–शोभा देते हुए; पोर्त्तलाल्–शरीर पर धारण करने से; पूम् तुकिल्–सुन्दर वस्त्र भी; आत–बने । २००

श्रीराम को वे आभरण कैसे-कैसे लगे ! उन्होंने उन्हें सूँघा तो वे फूल हो गये । (फूल के समान उन्होंने उन्हें सूँघा ।) कन्धों पर धारण किया तो वे उत्तरीय बने । चन्दन बने और शोभा बढ़ाते हुए उनके अंगों के आवरण बने । तब वे सुन्दर वस्त्र भी बने । २००

ईर्त्तत़ऩ शॆङ्गणीर् वॆळ्ळम् यावैयुम्
पोर्त्तत़ऩ मयिर्प्पॆरुम् बुळहम् पॊङ्गुतोळ्
वेर्त्तत़ऩ नॆन्गॆन्नो वॆदुम्बि नाऩॆन्गो
तीर्त्तत़नै यव्वऴि यादु शॆप्पुहेन् 201

ईर्त्तत़ऩ–बहकर जो आया; चॆम् कण् नीर् वॆळ्ळम्–लाल अश्रुप्रवाह; यावैयुम्–सबको; मयिर् पॆरुम् पुऴकम्–रोमांच ने; पोर्त्तत़ऩ–ढक दिया; पॊङ्कु तोळ्–प्रफुल्ल कन्धे; वेर्त्तत़ऩ–स्वेदयुक्त हो गये; ऎन्कॆन्नो–कहूँ; वॆतुम्पित्तान्–तप्त हुए; ऎन्को–कहूँ; तीर्त्तत़ऩ–भगवान की; अ वऴि–वह स्थिति; यातु चॆप्पुकेन्–क्या कह सकता । २०१

श्रीराम की आँखों से अश्रु की धारा बहती आयी और उनके शरीर पर लगी रही । पर रोमांच ने उसको ढक दिया । तब क्या कहा जाय ? यह कहूँ कि उनके पुष्ट कन्धे स्वेदयुक्त हो गये ? या यह कहूँ कि विरहताप से तप्त हो गये ? तीर्थ, भगवान श्रीराम की तब की स्थिति का क्या कहूँ ? । २०१

विडम्बरन् दऩैयदोर् वॆम्मै मीक्कॊळ
नॆडुम्बॊऴु दुणर्विऩो डुयिर्प्पु नीङ्गिय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तडम्बॅरुङ् गण्णनैत् ताङ्गि नान्रन्
दुडम्बिनिर् चॅरिमयिर् शुरुक्कॊण् डोडवे 202

विटम् परन्त-विष फैला; अनैयतु-ऐसा; ओर् वॅम्मै-एक ताप; मी कॊळ-अधिक हुआ; नॅटुम् पॊळुतु-बहुत देर तक; उणर्वितोटु-सुध के साथ; उयिर्प्पु-श्वास; नीङ्किय-खोया रहा; तटम् पॅरुम् कण्णनै-(जिनका) उन आयतविशालाक्ष को; तनतु उटम्पितिल्-अपने शरीर पर के; चॅरि मयिर्-घने बालों के; चुरु कॊण्टु ओट-झुलसने देते हुए; ताङ्कितान्-(सुग्रीव ने) धारण कर लिया। २०२

उनके शरीर भर में विष फैला जैसा ताप बढ़ गया। वे बहुत देर तक सुध-बुध खोये रहे। सुग्रीव ने उन आयतविशालाक्ष श्रीराम को अपने शरीर पर धारण कर लिया। ताप इतना था कि सुग्रीव के शरीर के बाल झुलस गये। २०२

ताङ्गिन निरुत्तियत् तुयरन् दाङ्गुरा
देङ्गिय नॅञ्जिन निरङ्गि विम्मुवान्
वीङ्गिय तोळिनाय् विनैयि नेनुयिर्
वाङ्गिनॅ निव्वणि वरुवित् तेयॅना 203

ताङ्कितन्-धारण कर; इरुत्ति-रखते हुए; अ तुयरम्-वह (उनका) दुःख; ताङ्कुरातु-सह नहीं सक कर; एङ्किय-दुखनेवाले; नॅञ्चितन्-मन के साथ; वीङ्किय-फूले हुए; तोळिनाय्-कन्धों वाले; विनैयिनेन्-यह कार्यकर्त्ता मैं; इ अणि वरुवित्ते-ये आभरण मँगाकर ही; उयिर् वाङ्किनॅन्-आपके प्राण हर चुका; ऍना-कहकर; इरङ्कि-अनुताप से; विम्मुवान्-भर गया। २०३

सुग्रीव श्रीराम के दुःख से कातर हुआ। श्रीराम को अपने अंक में धारण करते हुए सुग्रीव ने कहा कि प्रफुल्ल भुजा वाले! मैं अनुचित काम का करनेवाला बन गया। ये आभरण मँगाकर मैंने आपके प्राणों को खतरे में डाल दिया। वह बहुत दुःख से भर गया। २०३

अयनुडै यण्डत्ति नप्पु रत्तैयुम्
मयर्वर नाडियॅन् वलियुङ् गाट्टियुन्
उयर्पुहळ्त् तेवियै युदवर् पालनाल्
तुयरुळन् दयर्दियो शुरुदि नूल्वलाय् 204

चुरुति नूल् वलाय्-श्रुतिशास्त्रविद्वान्; अयन् उटै-ब्रह्मा के; अण्टत्तिन्-अण्ड के; अ पुरत्तैयुम्-पार के स्थानों में भी; मयर्वु अर-विना भ्रम के; नाटि-खोजकर; ऍन् वलियुम्-अपना बल भी; काट्टि-दिखाकर; उन् उयर् पुकळ्-आपकी उत्कृष्ट यशस्विनी; तेवियै-धर्मपत्नी को; उतवल् पालन्-ले आने को बद्ध हूँ; आल्-इसलिए; तुयर् उळनतु-दुःख में पड़कर; अयर्तियो-श्रान्त होंगे क्यों। २०४

उसने आगे आश्वासन दिया। श्रुतिशास्त्रव्युत्पन्न! ब्रह्माण्ड के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस पार भी जाकर सब स्थलों में विना प्रमाद के ढूँढ़कर, अपने बल से आपकी उत्कृष्ट यशस्विनी धर्मपत्नी सीताजी को ले आने का संकल्पबद्ध हूँ। फिर आप क्यों दुःखमग्न होकर श्रान्त हों ? । २०४

तिरुमह ळऩैयवत् तॅय्वक् कऱ्पिऩाळ्
वॅरुवरच् चॅय्दुळ वॅय्य वऩ्बुयम्
इरुबदु मीरैन्दु तलैयु निऱ्कवुऩ्
ऑरुहणैक् काऱ्ऱुमो वुलह मेऴुमे 205

तिरुमकळ् अऩैय–श्रीलक्ष्मी-सदृश; अ तॅय्व कऱ्पिऩाळ्–उन पतिव्रता देवी को; वॅरुवर चॅय्तु उळ–जिसने भयभीत किया है; वॅय्यवऩ्–उस नृशंस की; पुयम् इरुपतुम्–बीसों भुजाएँ; ईर् ऐन्तु तलैयुम्–दसों सिर; निऱ्क–रहें; उऩ् ऑरु कणैक्कु–आपके एक शर के सामने; उलकम् एऴुम्–सातों लोक; आऱ्ऱुमो–ठहर सकेंगे क्या। २०५

श्रीलक्ष्मी-सदृश पतिव्रता सीता को भयभीत करते हुए जो कष्ट देता रहता है, उस क्रूर रावण के बीस भुजाएँ और दस सिर हैं। तो क्या ? उनको रहने दीजिए। आपके एक शर के सामने सातों लोक टिक सकेंगे क्या ? । २०५

ईण्डुनी यिरुन्दरु ळेऴॊ डेऴॊऩप्
पूण्डपे रुलहङ्गळ् वलियिऱ् पुक्किडैत्
तेण्डियव् वरक्कऩैत् तिरुहित् तेवियैक्
काण्डिया ऩिव्वऴिक् कॊणरुङ् गैप्पणि 206

ईण्टु–यहीं; नी इरुन्तु अरुळ्–आप रहने की कृपा करें; एऴ् ओटु एऴ् ऍऩ–सात और सात; पूण्ट–के बने; पेर् उलकङ्कळ्–लोकों में; वलियिऩ् पुक्कु–अपने बल से प्रवेश करके; इटै–वहाँ; तेण्टि–खोजकर; अ अरक्कऩै–उस राक्षस को; तिरुकि–मरोड़कर; तेवियै–देवी सीता को; इ वऴि कॊणरुम्–इधर लाने का; कै पणि–मेरा हस्तकौशल (कार्यकौशल) काण्टि–देखिए। २०६

श्रीमान आप यहीं रहने की कृपा करें। चौदह की संख्या के इन बड़े लोकों में मैं अपने बल से प्रवेश करूँगा। देवी को ढूँढ़ूँगा। उस राक्षस रावण का शरीर मरोड़ दूँगा। फिर सीताजी को इधर सम्मान सहित ले आऊँगा। मेरी कार्यकुशलता देखिए आप। २०६

एवल्शॅय् तुणैवरेम् याङ्ग ळीङ्गिवऩ्
तावरुम् बॅरुवलित् तम्बि नम्बिनिऩ्
शेवह मिदुवॅऩिऱ् चिऱ्ह नोक्कलॅऩ्
मूवहै युलहुनिऩ् मॊऴियिऩ् मुऩ्दुमो 207

याङ्कळ्–हम; एवल् चॅय्–आज्ञाकारी; तुणैवरेम्–साथी हैं; ईङ्कु इवऩ्–यहाँ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रहनेवाले ये (लक्ष्मण); ता अरुम्-अप्रतिहत; पॅरु वलि-बड़े बलवान; तम्पि-कनिष्ठ भ्राता हैं; नम्पि-नायक; निन् चेवकम्-आपकी वीरता; इतु ऍतिल्-यह है तो; चिऱुक नोक्कल्-लघुता देखना; ऍन्-क्यों; मू वकै उलकुम्-तीनों (वर्गों के) लोक; निन् मॉऴियिन्-आपकी आज्ञा; मुन्तुमो-लाँघकर जायेंगे क्या। २०७

आपके आज्ञाकारी सेवक और सखा हम हैं। और यहाँ पास जो हैं, वे लक्ष्मण दुर्द्धर्ष बड़े बलवान हैं। नायक! आपकी शक्ति तो वैसी है। तब क्यों आप अपने को अल्प के रूप में देखें? क्या पाताल, भूलोक, देवलोक —ये तीनों वर्गों के लोक आपकी आज्ञा को लाँघ सकेंगे? । २०७

पॅरुमैयो रायितुम् पॅरुमै पेशलार्
करुममे यल्लदु पिऱिदॅन् कण्डदु
दरुमनी यल्लदु तनित्तु वेऱुण्डो
अरुमैये दुनक्कुनिन् ऱवलङ् गूर्दियो 208

पॅरुमैयोर् आयितुम्-प्रशंसायोग्य हों तो भी; करुममे अल्लतु-कार्य करना छोड़कर; पॅरुमै पेचलार्-अपनी प्रशंसा नहीं करते रहते; पिऱितु ऍन् कण्टतु-फिर क्या देखा गया; तरुमम्-धर्म; नी अल्लतु-आपके सिवा; तनित्तु वेऱु-अलग दूसरा; उण्टो-है क्या; उनक्कु-आपके लिए; अरुमै एतु-कठिन क्या है; निन्ऱु-रहकर; अवलम्-दुःख; कूर्तियो-करेंगे क्या। २०८

बड़े समर्थ लोग भी करनी करते हैं। अपनी प्रशंसा कहते नहीं फिरते। यह बड़ा तथ्य है। इसको छोड़ दूसरा तथ्य कहाँ? धर्म आप ही हैं। दूसरा कुछ नहीं है। आपके लिए दुर्गम क्या है? फिर आप ऐसा रहकर क्यों दुःख कर रहे हैं? । २०८

मुळरिमेल् वैहुवान् मुरुहऱ् ऱन्दवत्
तळिरियल् बाहत्तान् ऱडक्कै याऴियान्
अळवियॉन् ऱावदे यन्ऱि यैयमिल्
किळवियाय् तनित्तनिक् किडप्प रोतुणै 209

ऐयम् इल्-असंदिग्ध; किळवियाय्-वचन बोलनेवाले; मुळरि मेल्-कमल पर; वैकुवान्-आसीन (ब्रह्मा); मुरुकत् तन्त-'मुरुगन' (कार्तिकेय का तमिऴ नाम) के जनक; अ तळिरियल्-उस पल्लव-समान पार्वतीदेवी के; पाकत्तान्-अर्द्धाङ्गी; तट कै आऴियान्-विशाल हस्त में चक्र रखनेवाले (चक्रधारी) विष्णु; अळवि-मिलित होकर; ऑन्ऱु आवते अन्ऱि-एक बनें तब के सिवा; तनि तनि-पृथक्-पृथक् वे; तुणै किटप्परो-आपकी समानता कर सकेंगे क्या। २०९

कमलासन, मुरुगन की माता पार्वती को अंग में रखनेवाले अर्धनारीश्वर और विशाल हाथ में चक्र रखनेवाले चक्रधारी विष्णु —तीनों सम्मिलित हो एक बने आवें, तो शायद वे आपकी समानता कर सकेंगे। पृथक्-पृथक् वे आपकी समानता कर सकेंगे क्या? । २०९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्नुडैच् चिऱुकुऱै मुडित्त लीण्डॊरीइप्
पिन्नुडैत् तायिनु माह बेदुऱुम्
मिन्निडैच् चत्तहियै मीट्टु मीडुमाल्
पॊन्नुडैच् चिलैयिनाय् विरैन्दु पोयॆन्ऱान् 210

पॊन् उटै–सौंदर्ययुक्त; चिलैयिनाय्–धनुर्धर; ऍन्नुटै–मेरी; चिऱु कुऱै–छोटी याचना; मुटित्तल्–पूरा करना; पिन्नुटैत्तु आयिनुम्–पीछे हो तो; आक–हो; ईण्टु ऒरीइ–अब उसको रहने देकर; विरैन्तु पोय्–शीघ्र जाकर; पेतु उऱुम्–पीड़ित रहनेवाली; मिन् इटै–विद्युत्कटि; चत्तकियै–जानकी को; मीट्टु–छुड़ाकर; मीळ्तुम्–लौट आयेंगे (हम); ऍन्ऱान्–कहा (सुग्रीव ने)। २१०

सुन्दर धनुर्धारी ! मेरी छोटी प्रार्थना बाद को देखी जाय ! उसको अब छोड़ दें। हम अभी जायँगे। रावण के हाथों त्रस्त, विद्युत्कटि सीता को उससे मुक्त कराके लेकर लौट आयँगे। २१०

ऍरिहदिर्क् कादल निनैय कूऱुलुम्
अरुवियङ् गण्डिऱन् दन्बि नोक्किनान्
तिरुवुऱै मार्बनुन् दॆळिवु तोन्ऱिड
ऒरुवहै युणर्वुवन् दुरैप्प दायिनान् 211

ऍरि कतिर्–दाहक किरणों के सूर्य के; कातलन्–प्यारे (पुत्र) के; इनैय कूऱुलुम्–यह कहने पर; तिरु उऱै–श्रीनिवास; मार्पनुम्–वक्ष वाले; तॆळिवु तोन्ऱिट–प्रज्ञा पाकर; ऒरु वकै उणर्वु–एक तरह से सुध; वन्तु–मिलने से; अरुवि–(अश्रु की) नदी बहानेवाली; अम्–सुन्दर; कण्–आँखें; तिऱन्तु–खोलकर; अन्पिन् नोक्किनान्–स्नेह के साथ देखकर; उरैप्पतु आयिनान्–कहने लगे। २११

गरम किरणमाली के पुत्र, सुग्रीव, के यह कहने पर श्रीनिलयवक्ष (महाविष्णु) के अवतार श्रीराम एक तरह से सचेत हुए। सुन्दर और अश्रुसरिता की अपनी आँखें खोलकर उन्होंने सुग्रीव से ये बातें कहीं। २११

विलङ्गॆळिर् ऱोळिनाय् विनैयि नेनुमिव्
विलङ्गुविर् करत्तिनै निरुक्क वेयवळ्
कलन्गळित् तन्ळिदु कर्पिन् मेविय
पॊलन्गुळैत् तॆरिवैयर् पुरिन्दु ळोर्हळ्यार् 212

विलङ्कु ऍळिल्–पर्वतसुन्दर; तोळिनाय्–कन्धों वाले; विनैयिनेनुम्–दुर्भाग्यशाली मेरे; इ इलङ्कु विल्–इस देखने योग्य धनु के; करत्तिनैन्–रखनेवाले हाथों के; इरुक्कवे–रहते हुए भी; अवळ्–उसने; कलन् कळित्ततळ्–अपने आभरण त्यागे; इतु–यह कार्य; कर्पिन् मेविय–गृहस्थ धर्म में लगी हुई; पॊलन् कुळै तॆरिवैयर्–स्वर्णकुण्डलधारिणी स्त्रियों में; पुरिन्तुळोर्कळ्–जो करने को मजबूर हुई हैं; यार्–वे कौन हैं। २१२

पर्वत जैसे और सुन्दर कन्धों वाले ! मैं बड़ा अभागा हूँ। हाथ में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह शोभायमान धनु लिये हुये रहता हूँ ! तो भी सीता को अपने आभरण उतारने पड़े। गृहस्थी में लगी हुई स्त्रियों में और किसका यह दुर्भाग्य रहा है ? । २१२

वाणडुङ् गण्णियॅन् वरवु नोक्कयान्
ताणॅडुङ् गिरियॉडुन् दरुक्क डम्मॉडुम्
पूणॉडुम् पुलम्बिये पॉळुदु पोक्कियिन्
नाणॅडुञ् जिलैशुमन् दुळल्वॅ नाणिलेन् 213

वाळ् नॅटुम् कण्णि–तलवार-सी आयत आँखों वाली सीता; ऍन् वरवु नोक्क–मेरी राह देख रही हैं, तब; यान्–मैं; ताळ्–तलों के साथ; नॅटुम् किरि ऑटुम्–उन्नत पर्वतों से; तरुक्कळ् तम् ऑटुम्–वृक्षों के साथ; पूण् ऑटुम्–इन आभरणों के साथ; पुलम्पिये–विलाप करते हुए ही; पॉळुतु पोक्कि–समय व्यतीत करके; इ नाण्–इस डोरेसहित; नॅटुम् चिलै–लम्बे धनुष को; चुमन्तु–ढोते हुए; नाण् इलेन्–निर्लज्ज होकर; उळल्वॅन्–संकटग्रस्त रह रहा हूँ। २१३

तलवार के समान आँखों वाली सीता मेरी बाट जोह रही है ! पर मैं यहाँ विशाल तलोंसहित गिरियों, वृक्षों और आभरणों को देखकर विलाप करता हुआ, और इस बड़े धनुष को बेकार ढोता हुआ, निर्लज्ज (लाजहीन) दुःख सह रहा हूँ। ("नाण्"—डोरा, लाज)। २१३

आऱुडन् शॅल्बव ररिवै मार्दमै
वेऱुळोर् वलिशॅयिन् विलक्कि वॅञ्जमत्
तूऱुऱत् तम्मुयि रुहुप्प रॅन्नैये
तेऱिऩळ् पुन्गणोय् तीर्क्क हिऱ्ऱिलेन् 214

आऱु–मार्ग में; उटन् चॅल्पवर्–साथ चलनेवाली; अरिवै मार् तमै–स्त्रियों को; वेऱु उळोर्–पराये लोग; वलि चॅयिन्–त्रास देते हैं तो; विलक्कि–उनको हटाकर; वॅम् चमत्तु–भयंकर युद्ध में; ऊऱु उऱ्–कष्ट आने पर; तम् उयिर् उकुप्पर्–अपनी जान दे देते; ऍन्नैये तेऱिऩळ्–मुझी पर निर्भर जो रहीं, उनका; पुन्कण् नोय्–दुःखरोग को; तीर्क्ककिऱ्ऱिलेन्–नहीं दूर कर सक रहा हूँ। २१४

मार्ग में अपने साथ आनेवाली स्त्री पर कोई अत्याचार करे, तो भी लोग उस अत्याचारी को रोकते हैं। कठोर युद्ध में अपने प्राण भी दे देते हैं। पर मुझे देखो। मेरे ही ऊपर सब तरह से निर्भर है सीता। उसका दुःख दूर करने में भी मैं असमर्थ हूँ। २१४

इन्दिरऱ् कुरियदो रिडुक्कण् डीर्त्तिहल्
अन्दहऱ् करियपो रवुणऱ् ऱेय्ततऩ्
ऍन्दैमऱ् ऱवनिऩ्वन् दुदित्त यानुळेन्
वॅन्दुयर्क् कॉडम्बळि विल्लिऱ् ऱाङ्गिनेन् 215

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्तै–मेरे पिता ने; इन्तिरऱ्कु उरियतु–इन्द्र का; ओर् इटुक्कण्–एक संकट; तीर्त्तु–दूर करके; अन्तकऱ्कु अरिय–यम के लिए भी असाध्य; इकल् पोर् अवुणन्–विरोधी, युद्ध में चतुर दानव (शम्बर) को; तेय्त्तत्तन्–मिटाया; मऱ्ऱु–इसके विपरीत; अवत्तिल् वन्तु–उनके पुत्र के रूप में आकर; उतित्त–पैदा जो हुआ; यान्–वह मैं; वॆम् तुयर्–कठोर दुःखदायी; कॊटुम् पऴि–घोर अपमान; इ विल्लिल्–इस धनुष पर; ताङ्कित्तेन्–उठा रहा हूँ। २१५

मेरे पिता ने इन्द्र का संकट दूर किया। यम के लिए भी दुर्द्धर्ष वैरी और युद्ध-चतुर शंबरासुर को कठोर युद्ध में मारा। किन्तु मैं हूँ उनका ही पुत्र! इस धनुष पर कठोर दुःखदायी क्रूर निन्दा ढो रहा हूँ। २१५

करुङ्गड ऱॊट्टत्तर् गङ्गै तन्दत्तर्
पॊरुम्बुलि मान्ऩॊडु पुत्तलु मूट्टित्तर्
पॆरुन्दहै यॆन्ऩुगुलत् तरशर् पिन्ऩॊरु
तिरुन्दिऴै तुयरनान् ऱीर्क्क हिऱ्ऱिलेन् 216

करुम् कटल्–काले समुद्र के; तॊट्टत्तर्–खननकारी; कङ्कै तन्तत्तर्–गंगा को भूमि पर जो लाये, वे; पॊरुम् पुलि–झगड़ालू व्याध को; मान् ओटु–हरिण के साथ; पुत्तलुम् ऊट्टित्तर्–(एक ही घाट पर) पानी पिलानेवाले; पॆरुम् तकै–बड़े ही श्रेष्ठ; ऍन् कुलत्तु अरचर्–मेरे कुल के राजा; पिन्–उनके बाद; नान्–मैं; ऒरु–एक; तिरुन्तु इऴै–श्रेष्ठ आभरणभूषित स्त्री का; तुयरम्–दुःख; तीर्क्ककिऱ्ऱिलेन्–दूर कर नहीं सक रहा हूँ। २१६

हमारे पूर्वजों में सागर-खननकारी (सगरपुत्र) रहे। गंगा नदी को भूमि पर लानेवाले (भगीरथ) रहे। शत्रु व्याध को हरिण के साथ एक ही घाट में जल पिलानेवाले (मान्धाता) थे। ऐसे प्रख्यात राजा थे मेरे पूर्वज। उनके ही कुल में उत्पन्न मैं एक (अपनी ही) स्त्री का दुःख दूर नहीं कर सक रहा हूँ। २१६

विरुम्बॆऴि लॆन्दैयार् मॆय्म्मै वीयुमेल्
वरुम्बऴि यॆन्ऱियान् महुडऩ् जूडलेन्
करुम्बऴि शॊल्लियैप् पहैञऩ् कैक्कॊळप्
पॆरुम्बऴि शूडित्तेन् पिऴैत्त दॆन्ऩरो 217

विरुम्पु–मनोरम; ऍऴिल्–शानदार; ऍन्तैयार्–मेरे पिता का; मॆय्म्मै वीयुम् एल्–(वचन) सत्य भंग हो जायगा तो; पऴि वरुम्–निन्दा होगी; ऍन्ऱु–सोचकर; यान्–मैंने; मकुटम् चूटलेन्–मुकुट धारण नहीं किया; करुम्पु अऴि–ईख को हरानेवाली; चॊल्लियै–बोली वाली को; पकैञऩ्–शत्रु; कै कॊळ–ले गया; पॆरुम् पऴि–बड़ा अपमान; चूटित्तेन्–धारण कर लिया; पिऴैत्ततु ऍन्–क्या ही गल्ती की है। २१७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरे पिताजी सबके मनों का हरण करनेवाले रूप के स्वामी थे। उनका वचन भंग हो जायगा तो बड़ा अपयश होगा। इस डर से शायद मैंने मुकुट धारण नहीं किया। किन्तु इक्षुरस के स्वाद को भी फीका बनानेवाली मधुर बोली वाली सीता को रावण के हाथ कैद होने देकर मैंने बड़ी निन्दा ग्रहण कर ली। कैसी ही भयंकर गलती हो गयी है मेरे हाथों ? । २१७

ऍन्नन्नॉन् दिन्नन पन्नि येङ्गिये
तुन्नरुन् दुयरत्तुच् चोर्हिन् ऱान्ऱनै
पन्नरुङ् गदिरवन् पुदल्वन् पैयुळ्पार्त्
तन्नवॅन् दुयरॅनु मळक्कर् नीक्किनान् 218

ऍन्न–ऐसा; नॉन्तु–दुःखी होकर; इन्नन पन्नि–ऐसी बातें कहते हुए; एङ्किये–तरसते हुए; तुन्न अरुम्–असह्य; तुयरत्तु–शोक से; चोर्किन्ऱान् तनै–लटनेवाले की; पन्न अरुम्–अकथनीय; पैयुळ्–पीड़ा को; कतिरवन् पुतल्वन्–सूर्यसुत ने; पार्त्तु–देखकर; अन्न–उस; वॅम् तुयर् ऍनुम्–कठोर दुःख रूपी; अळक्कर्–समुद्र के; नीक्किनान्–पार कराया। २१८

श्रीराम ने दुःख के साथ ऐसी-ऐसी बातें कहीं। उनका मन आक्रान्त हो गया। असह्य दुःख के कारण वे निर्बल हो रहे। ऐसे उनके दुःख को सूर्यपुत्र ने देखा। उसने अपनी परिचर्या से धीरज दिलाकर उनको उस कठोर दुःख के सागर को पार कराया। २१८

ऐयनी याऱ्ऱलि नाऱि नेनला
दुय्वने यॅनक्किदि नुरुदि वेरुण्डो
वैयहत् तिप्पळि तीर माय्वदु
शॅय्वॅनिन् कुरैमुडित् तन्ऱिच् चॅय्हलेन् 219

ऐय–प्यारे; नी–तुमने; आऱ्ऱलिन्–शान्त कराया; आऱिनेन् अलातु–शान्त हुआ, नहीं तो; उय्वने–जी सकता था क्या; ऍनक्कु–मेरे लिए; इतिन्–इस (तुम्हारी मित्रता) से बढ़कर; उरुति–हितकारी; वेरु–दूसरा; उण्टो–है क्या; वैयकत्तु–संसार में; इ पळि तीर–इस अपमान को पोंछने के लिए; माय्वतु चॅय्वॅन्–मर जाऊँगा; निन् कुरै–तुम्हारी शिकायत; मुटित्तु अन्ऱि–दूर किये बगैर; चॅय्कलेन्–वैसा नहीं करूँगा। २१९

श्रीराम किसी विध सम्हले। उन्होंने सुग्रीव से कहा कि तुम्हारे ही कहने से मैं सम्हल रहा हूँ। नहीं तो मैं कहाँ जीवित रह पाता ? तुम्हारी मित्रता से बढ़कर कोई हित भी है ? यह अपयश कठोर है। उससे बचने के लिए मैं मर जाऊँगा। पर तुम्हारी माँग पूरी किये विना मैं ऐसा नहीं करूँगा। २१९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅन्ऱन निराहव निनैय कालैयिल्
वन्ऱिऱन् मारुदि वणङ्गि नोक्किनान्
कुन्ऱिवर् तोळिनाय् कूऱल् वेण्डुव
दॊन्ऱुळ ददनैनी युवन्दु केळॆना 220

अॅन्ऱनन्–कहा; इराकवन्–श्रीराघव ने; इनैय कालैयिल्–उस समय; वन् तिऱल्–अधिक बलशाली; मारुति–मारुति ने; वणङ्कि नोक्किनान्–नमस्कार करके देखा; कुन्ऱु इवर्–पर्वत-सम; तोळिनाय्–कन्धों वाले; कूऱल् वॆण्डुवतु–निवेदन-योग्य; ऒन्ऱु उळतु–एक बात है; अतनै–उसको; नी–आप; उवन्तु–मन देकर; केळ्–सुनिए; अॅना–कहकर। २२०

श्रीराम ने सुग्रीव को यों वादा दिलाया। तब बहुत बली मारुति ने श्रीराम को नमस्कार करके उनसे निवेदन किया कि पर्वतभुज ! एक बात का निवेदन है। कृपा करके सुनें। यह सुनाकर आगे—। २२०

कॊडुन्दिऱल् वालियैक् कॊन्ऱु कोमहन्
कडुङ्गदि रॊन्मह नाक्किक् कॆवळर्
नॆडुम्बडै कूट्टिना लन्ऱि नेडरि
दडुम्बडै यरक्कन दिरुक्कै याणैयाल् 221

कॊटुम्–निर्मम; तिऱल्–बलिष्ठ; वालियै–वाली को; कॊन्ऱु–मारकर; कटुम्–अधिक गरम; कतिरोन्–किरणों वाले सूर्य के; मकन्–पुत्र को; कोमकन् आक्किक–राजा बनाकर; आणैयाल् (सुग्रीव की) आज्ञा द्वारा; कॆ वळर्–युद्धाभ्यस्त; नॆटुम् पटै–बड़ी सेना को; कूट्टिनाल् अन्ऱि–एकत्रित किये विना; अटुम् पटै–घातक सेना वाले; अरक्कनतु–राक्षस का; इरुक्कै–वासस्थान; नेटु अरितु–ढूंढ़ना कठिन (काम) है। २२१

पहले क्रूर पराक्रमी वाली को मारना है। फिर गरम किरणमाली सूर्यदेव के पुत्र को राजा बनाना और समर के सब प्रकारों में समर्थ सेना को एकत्र करना चाहिए। तभी, घातक सेना के स्वामी रावण का वासस्थान ढूँढ़कर उसका पता लगाया जा सकता है। नहीं तो वह दुस्साध्य है। २२१

वानदो मण्णदो मऱुम् वॆऱ्पदो
एनैमा नाहर्त मिरुक्कैप् पालदो
तेनुळर् तॆरियलाय् तॆळिव दन्ऱुनाम्
ऊनुडै मानुड माव दुण्मैयाल् 222

तेन् उळर्–भ्रमर जिसको कुरेदते हैं; तॆरियलाय्–ऐसी माला से भूषित; वानतो–आकाश में का है; मण्णतो–भूतल का; मऱुम्–अन्य; वॆऱ्पतो–पर्वतप्रदेश का; एनै–अन्य; मा–विशाल; नाकर् तम् इरुक्कै–नागों के वास के; पालतो–स्थान में है; नाम्–हम; ऊनुटै–मांस के; मानुटम् आवतु उण्मै–मानव-शरीर के हैं; आल्–इसलिए; तॆळिवतु अन्ऱु–निश्चित रूप से जानने योग्य नहीं। २२२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐसी माला से शोभायमान प्रभु, जिस पर भ्रमर कुरेदते रहते हैं ! उन राक्षसों का वासस्थान आकाश में है, या इस भूतल में ? या कहीं अन्य पर्वतस्थलों में ? या अन्य नाग आदि लोगों के वास के लोक में है ? हम सब मानवशरीरी हैं। (वानर और नर दोनों का शरीर एक-सा माना गया है, देवों के दिव्य शरीरों और राक्षसों के राक्षस-शरीरों से भिन्न।) इस कारण हम निश्चित रूप से जानते नहीं। २२२

ऍव्वुल हत्तितु मिमैप्पि नॅय्दुवर्
वव्वुव रव्वळि महिळ्न्द यावैयुम्
वॅव्वितै वन्दॅत वरुवर् मीळ्वराल्
अव्वव रुऱैविड मऱियऱ् पालदो 223

इमैप्पिन्–पलक मारते समय के अन्दर; ऍ उलकत्तितुम्–किसी भी लोक में; ऍय्तुवर्–जायँगे; अ वळि–वहाँ; मकिळ्न्त यावैयुम्–जिनको पसन्द करते हैं, उन सबको; वव्वुवर्–हथिया लेंगे; वॅव्वितै–कठोर पूर्व-कर्म; वन्ततु ऍत–आ गया हो, ऐसा; वरुवर्–आ जायँगे; मीळ्वर्–लौट जायँगे; अ अवर् उऱैविटम्–ऐसे उनका वासस्थान; अऱियल् पालतो–जानने योग्य है क्या। २२३

वे पलक मारते समय के अन्दर कहीं भी, किसी भी लोक में जा पहुँचने वाले होते हैं। वे वहाँ जो भी उनको भावे उन वस्तुओं का अपहरण कर लेंगे। बुरे पूर्वकर्म जैसे अचूक रीति से और अकस्मात आते हैं, वैसे वे भी आ जाते हैं। वैसे ही वापस भी चले जाते हैं। ऐसे उनके वासस्थान का पता लगाया जा सकता है क्या ? । २२३

ऑरुमुऱै येपरन् दुलहम् यावैयुम्
तिरुमह ळुऱैविडन् देर वेण्डुमाल्
वरत्तमुऱै नाडिडिल् वरम्बिन् ऱालुल
हरुमैयुण् डळप्परु माण्डुम् वेण्डुमाल् 224

वरत्तमुऱै–क्रमेण स्थान-स्थान में; नाटिटिल्–खोजना हो; उलकु–संसार; वरम्पु इन्ऱु–असीम है; आल्–इसलिए; अरुमै उण्टु–कठिनाई है; अळप्पु अरुम् आण्टुम्–असंख्यक वर्षों का समय भी; वेण्टुम् आल्–(खोजने के लिए) चाहिए; आल्–इसलिए; ऑरु मुऱैये–एक ही समय; उलकम् यावैयुम्–सारे लोक में; परन्तु–फैलकर; तिरुमकळ्–श्रीलक्ष्मीदेवी का; उऱैविटम्–वासस्थान; तेर वेण्टुम्–ढूँढ़ लेना चाहिए। २२४

श्रीलक्ष्मी (सीता) जी को एक-एक स्थान पर क्रम से ढूँढ़ने लगें, तो लोक की सीमा कहाँ है ? वह तो असीम है ! उसमें बहुत अधिक कठिनाई है। उस रीति से अधिक काल तक ढूँढ़ना पड़ेगा। इसलिए श्रीदेवी को एक साथ दुनिया भर में व्यापकर ढूँढ़ना चाहिए। २२४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एऴुपत् ताहिय वॆळुळत् तॆण्बडै
ऊऴियिऱ् कडलॆऩ वुलहम् बोर्क्कुमाल्
आऴियैक् कुडिप्पिऩु मयऩ्शॆ यण्डत्तैक्
कीऴ्मडुत् तॆडुप्पिऩुङ् गिडैत्तल् शॆय्युमाल् 225

एऴु पत्तु आकिय–सत्तर; वॆळ्ळत्तु ऍण्–'वॆळ्ळम्'की संख्या की; पटै–(वानरों की) सेना; ऊऴियिल् कटल् ऍऩ–प्रलयसागर के समान; उलकम्–सारे संसार पर; पोर्क्कुम्–छा जायगी; आल्–इसलिए; आऴियै–समुद्र (जल) को; कुटिप्पिऩुम्–पीना हो; अयऩ् चॆय् अण्टत्तै–ब्रह्मा-सृष्ट अण्ड को; कीऴ् मटुत्तु–नीचे से उखाड़कर; ऍटुप्पिऩुम्–उठा लेना हो; किटैत्तल्–जो भी सामने आयें; चॆय्युम्–वे कार्य कर देंगे। २२५

सत्तर 'वॆळ्ळम्' की संख्या की सेनाएँ आयँगी, तो वह प्रलयसमुद्र के समान सारे लोक पर छा जायँगी। समुद्र को पीना (सोखना) हो। चाहे ब्रह्माण्ड को जड़ से उखाड़ उठाना हो, जो भी काम आ जाय वह करने में समर्थ हैं। २२५

आदला लऩ्ऩदे यमैव दामॆऩ
नीदियाय् निऩैन्दऩॆ नॆऩनि हळ्त्तिऩाऩ्
सादुवा मॆऩ्ऱवत् तऩुविऩ् शॆल्वऩुम्
बोदुनाम् वालिपा लॆऩ्ऩप् पोयिऩार् 226

नीतियाय्—राजनीतिनिपुण; आतलाल्–इसलिए; अऩ्ऩते–वही (कार्य); अमैवतु आम्–करना (उचित) है; ऍऩ–ऐसा; निऩैन्तऩॆऩ्–सोचा मैंने; ऍऩ निकळ्त्तिऩाऩ्–ऐसा कहा; चातु आम् ऍऩ्ऱ–साधु कहनेवाले; अ–उन; तऩुविऩ् चॆल्वऩुम्–धनुर्धर ने भी; वालि पाल्–वाली के पास; पोतुम् नाम्–जाएँ हम; ऍऩ्ऩ–कहा, तब; पोयिऩार् (सब) चले। २२६

राजनीति के अच्छे ज्ञाता ! वही काम (वानर-सेना इकट्ठी करके भेजना) उचित है। यही मेरा विचार है। हनुमान ने यह निवेदन किया। वही साधु है —धनुधन श्रीराम ने सहमति दिलायी। फिर कहा कि हम वाली के पास जायँ। तब सब चले। २२६

7. वालि वदैप् पडलम् (वालि-वध पटल)

वॆङ्ग णाळि येऱु मीळि मावुम् वेह नाहमुम्
शिङ्ग वेऱि रण्डॊ डुन्दि रण्ड वऩ्ऩ शॆय्हैयार्
तङ्गु शाल मूल मार्त माल मेल मालैपोल्
पॊङ्गु नाह मुन्दु वऩ्ऱ शार लूडु पोयिऩार् 227

वॆम् कण्–भयानक आँखों वाले; आळि एऱम्–पुरुषशरभ; मीळि मावुम्–और साहसपूर्ण बाघ और; वेकम् नाकमुम्–गतिमान गज; चिङ्क एऱु–पुरुषसिंह;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इरण्टोटुम्–दो के साथ; तिरण्ट अॅन्त्त–एकत्र हुए जैसे; चॅय्कैयार्–कर्मण्य; तङ्कु–वहाँ रहनेवाले; चालम्–सालवृक्ष; मूलम्–'मूलम' नाम के तरु; आर्–अगस्त; तमालम्–तमाल; एलम्–एला नाम के (जटाधारी) तरु; मालै पोल्–हारों की तरह; पोङ्कु–पुष्पबहुल; नाकमुम्–पुंनाग; तुवन्ऱ–इनसे खूब भरे; चारल् ऊटु–पर्वत-प्रदेशों से होकर; पोयित्तार्–चले। २२७

जैसे भयंकर आँख वाला (नर) "याळि", साहसपूर्ण बाघ औरतीव्रगामी गज दो पुरुषसिंहों के साथ एकत्र हो जाते हों, वैसे सुग्रीव, हनुमान, नल, नील, तार और श्रीराम और लक्ष्मण वहाँ के पर्वतप्रदेशों से होकर चले जहाँ साल, अगस्त, एला और हारों के समान पुष्पगुच्छों के साथ शोभायमान पुंनाग आदि तरुविशेष घने रूप से उगे थे। २२७

उळैयु लानॅ डुङ्गण् माद रूश लूश लल्लवेल्
तळैयु लावु शन्द लर्न्द शारल् शार लल्लवेल्
मळैयु लावु मुन्ऱि लल्ल मन्ऱ नाऱु शण्बहक्
कुळैयु लावु शोलै शोलै यल्ल पॊन्शॅय् कुन्ऱमे 228

उळै–हरिणी के समान; उलाम्–चकित देखनेवाली; नॅटु कण्–आयत आँखों से भूषित; मातर्–स्त्रियों के; ऊचल्–झूले; ऊचल् अल्ल एल्–झूले नहीं तो; तळै उलावु–पत्ते जिन पर हिलते हैं, उन; चन्तु–चन्दन के पेड़ों से भरे; चारल्–पर्वतप्रदेश; चारल् अल्ल एल्–ऐसे प्रदेश नहीं तो; मळै उलावु–मेघविहार; मुन्ऱिल्–(पर्वतों के) आँगन; अल्ल–(वे) नहीं तो; मन्ऱल् नाऱु–सुबासित; कुळै उलावु–पत्ते जिन पर झूलते हैं, उन; चण्पकम् चोलै–चम्पक वन; चोलै अल्ल–(चम्पक) वन नहीं तो; पॊन् चॅय्–स्वर्णदृश्य; कुन्ऱमे–गिरियाँ। २२८

उस पर्वत-मार्ग में कोई न कोई मनोरम दृश्य दृष्टिगोचर हो रहा था। हरिणों की-सी और आयत आँखों वाली स्त्रियों के झूले; वे जहाँ नहीं थे, वहाँ चन्दन तरुओं के प्रदेश जिनके पत्ते हिल रहे थे। नहीं तो मेघविहार पर्वतांगन या चंपकवन और उसके तरुओं पर सुबासित पल्लव हिल रहे थे। चंपकवन जहाँ नहीं पाये गये, वहाँ स्वर्णसम गिरियाँ विद्यमान थीं —इस तरह मार्ग के सभी भाग मनोरम थे। २२८

अऱङ्गळ् नाऱुम् मेतियार् अऱङ्कु णाऱु मेनि यार रिक्क णङ्ग ळोडुमङ्
गिऱङ्गु पोदु मेऱु पोदु मीऱि लाद वोशैयाल्
कऱङ्गु वार्ह ळऱक लन्क लिप्प मुन्दु कण्मुहिळत्
तुऱङ्गु मेह मुम्मु णर्न्दु मोदु लावुमे 229

अऱङ्कळ् नाऱुम् मेतियार्–धर्मस्वरूप श्रीराम और लक्ष्मण; अरि कणङ्कळोटुम्–वानरगण के साथ; अङ्कु–वहाँ; इऱङ्कु पोतुम्–उतरते समय; एऱु पोतुम्–चढ़ते वक्त; ईऱु इलात–सदा; ओचैयाल्–शब्द के साथ; कऱङ्कु वार् कळल्–क्वणनशील बड़ी पायल रूपी; कलन्–आभरण; कलिप्प–ध्वनि निकाल रहे थे; मुन्तु–पहले;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण् मुकिऴ्त्तु–आँखें मूँदकर; उऱङ्कु–जो सो रहे थे; मेकमुम्–वे मेघ भी; उणर्न्तु–जागकर; मीतु उलावुम्–आकाश में संचार करने लगे। २२९

धर्मस्वरूप श्रीराम और लक्ष्मण वानरगण के साथ उस मार्ग में कभी नीचे उतरते, कभी चढ़ाई पर चढ़ते जा रहे थे। तब उनकी क्वणनशील पायलें निरन्तर बज रही थीं। उस ध्वनि से सुप्त मेघ भी जाग गये और आकाश में संचार करने लग गये। २२९

नीडु नाह मूडु मेह मोड नीरु मोडवे
आडु नाह मोड मात्त यात्तै योड वाळिपोम्
माडु नाह नीडु शारल् वाळै योडुम् वावियू
डोडु नाह मोड वेङ्गै योड़म् यूह मोडवे 230

नीटु नाकम् ऊटु–लम्बे पर्वतों से होकर; मेकम् ओट–मेघ भागते; नीरुम् ओट–जल बहता; आटुम् नाकम्–फन फैलाकर नाचनेवाले सर्प; ओट–भागते; मातम् यात्तै ओट–बड़े गज दौड़ते; आळि पोम्–शरभसंचार के; माटु–पास में; माकनीटु–स्वर्ग रहे, ऐसे विशाल; चारल्–प्रदेशों में; वावि ऊटु–सरों के अन्दर; वाळैयोटुम्–'वाळै' मीनों के साथ; ओटु नाकम्–भागनेवाले सर्प; ओट–भागते; वेङ्कैयोटु–बाघों के साथ; ऊकम्–काले (मुख वाले) बन्दर; ओट–भागते। २३०

वहाँ सर्वत्र स्पन्दन था। लम्बे पर्वतों पर से मेघों का संचार; जल का बहाव; फन फैलाए हुए नाचनेवाले सर्पों की गति; बड़े गजों का भागना; 'याळियों' का इधर-उधर जाना; स्वर्ग तक विस्तृत पर्वतप्रदेश के जलाशयों में 'वाळै' मछलियों और सर्पों का संचार या बाघों के साथ काले मुख वाले बन्दरों का जाना-आना —इस तरह वह मार्ग सर्वत्र गतिमय था। २३०

मरुण्ड माम लैत्त डङ्गळ् शॅल्ल लाव दल्लमाल्
तॅरुण्डि लाद मत्त यात्तै शीऱि निन्ऱि डित्तलाल्
इरुण्ड काळ् हिऱ्ऱ डत्तॉ डिऱ्ऱु लर्न्द शन्दुवन्
दुरुण्ड पोद ऴिन्द तेनॉ ऴुक्कु पेरि ऴुक्किन्ऱे 231

माल्–मोह से; तॅरुण्टु इलात–जो छूटे नहीं थे; मत्त–मत्त; यात्तै–गज; चीऱि निन्ऱु–कोप के साथ; इटित्तलाल्–झपटते, इसलिए और; इरुण्ट–काले; काळ्–कठोर गूदे के; अकिल् तटत्तु ओटु–अगरु-काष्ठों के साथ; इऱ्ऱु–टूटकर; उलर्न्त–सूखे हुए; चन्तु–चन्दन के पेड़; वन्तु–आकर; उरुण्ट पोतु–जब लुढ़कते हैं, तब; अऴिन्तु–छत्तों के टूटने से निकली; तेन् ऒऴुक्कु–शहद की धारा से उत्पन्न; पेर् ऒऴुक्किन्–बड़ी फिसलन थी, इसलिए; मरुण्ट–भ्रामक; मा मलै तटङ्कळ्–बड़े पर्वत-प्रदेश; चॅल्लल् आवतु अल्ल–यात्रा के लिए सुगम नहीं थे। २३१

वहाँ के मार्ग में जाना खतरे से खाली नहीं था। कारण ? मद में चूर मत्त हाथी कोप के साथ मार्ग में झपटने को तैयार खड़े थे। कठिन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हीर (गूदा) के काले अगरुकाष्ठ और चन्दन के तरु जब कटकर लुढ़कते तब शहद के छत्ते टूट जाते थे और शहद बड़ी धारा में बहने लगता। उससे फिसलन हो जाती थी। इसलिए पर्वततराइयों के वे मार्ग किसी को भी भ्रमित कर सकते थे। उनमें जाना सुलभ नहीं था। २३१

मिऩऩम णिक्कु लन्दु वऩऱि विल्ल लर्न्दु विण्गुलाय्
अऩल्प रप्प लॊप्प मीदि मैप्प वन्द विप्पपोल्
पुऩल्प रप्प लॊप्पि रुन्द पॊऩ्प रप्पु मॆऩ्बराल्
इऩैय विऱ्ऱ डक्कै वीर रेऱु हिन्ऱ कुन्ऱमे 232

इऩैय–ऐसे; विल् तट कै–धनु रखनेवाले विशाल हस्तों के; वीरर्–वीर (श्रीराम और लक्ष्मण); एऱुकिन्ऱ–जिस पर चढ़ते हैं वह; कुन्ऱम्–पर्वत; मिऩल्–रह-रहकर चमकनेवाले; मणि कुलम्–रत्न-समूह; तुवन्ऱि–भरा था और; विल् अलर्न्तु–कान्ति बिखेरकर; विण् कुलाय्–आकाश तक; अऩल् परप्पल् ऒप्प–आग फैलाते जैसे; मीतु–उस पर्वत पर; इमैप्प–प्रकाश छिटकाते हैं तब; वन्तु अविप्प पोल्–(उस आग को) आकर बुझाते जैसे; पुऩल् परप्पल्–जल डाल रहे हों; ऒप्पु इरुन्त–जैसे रहनेवाले; पॊऩ् परप्पुम्–स्वर्णराशि भी; (इरुन्त–रही;) ऎऩ्पर्–कहते हैं। २३२

ऐसे वीर जिस पर्वत पर चढ़ते जाते थे, उसमें रत्नों की विपुल राशियाँ थीं। उनसे जो लाल रंग की कान्ति छूट रही थी, उसको देखकर ऐसा लगा मानो आकाश में बहुत दूर आग फैल गयी हो। वहाँ स्वर्णों के स्थल भी थे और वे, उस आग को बुझाने के लिए जल पसार दिया गया हो, ऐसे लगे। २३२

तेऩि ऴुक्कु शारल् वारि शॆल्ल मीदु शॆल्लुनाळ्
मीऩि ऴुक्कु मऩ्ऱि वाऩ विल्लि ऴुक्कुम् वॆण्मदिक्
कूऩि ऴुक्कु माऱु लावु कोळि ऴुक्कु मॆऩ्बराल्
वाऩि ऴुक्कु मेल वाश मऩ्ऱ ऩाऱु कुन्ऱमे 233

वाऩ्–देवों को भी; इऴुक्कुम्–खींचनेवाले; एलम् वाचम् मऩ्ऱल्–एलाबास से बासित; कुन्ऱम्–उस पर्वत पर; तेऩ् इऴुक्कु चारल्–शहद की धारा से युक्त पर्वतढालों में; वारि चॆल्ल–जल बहता है, तब; मीतु चॆल्लुम्–ऊपर संचार करनेवाले; नाळ् मीऩ्–नक्षत्रों को; इऴुक्कुम्–खींचकर ले जाता है; अऩ्ऱि–अलावा; वाऩ विल्–इन्द्रधनुष को भी; इऴुक्कुम्–खींचता है; वॆण् मति कूऩ्–श्वेत चन्द्र के वक्र अंश को; इऴुक्कुम्–खींचता; माऱु–परस्पर विपरीत; उलावु–संचार करनेवाले; कोळ् इऴुक्कुम्–(नव-) ग्रहों को खींचता; ऎऩ्पर्–(ऐसा लोग) कहते हैं। २३३

उसमें एले के वृक्ष थे। उनकी सुगन्धि देवों को भी आकृष्ट कर रही थी। उस पर्वत पर, जिस पर शहद की धारा बह रही थी, जल भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बह रहा था। वह जलधारा आकाश के नक्षत्र, इन्द्रधनुष, चन्द्र का वक्र अंश और परस्पर विपरीत चलनेवाले नवग्रह —इन सबको खींच लेती। २३३

मरुवि याडुम् वावि तोऱुम् वाऩ याऱु पायुम्वन्
दिरुवि यार्द डङ्गण् मीऩि ऩेऱु पायु माऱुपोल्
अरुवि पायु मॊऩ्ऱि ऩॊऩ्ऱि ऩाऩै पायु मेऩलिल्
कुरुवि पायु मोडि मन्दि कोडु पायु माडॆलाम् 234

माटु ऍलाम्–पार्श्वों में सब ओर; मरुवि–उतरकर; आटुम्–जिनमें लोग स्नान करते हैं, उन; वावि तोऱुम्–तालाबों में, हर एक में; वाऩ याऱु–आकाशगंगा; वन्तु पायुम्–आकर बहती; मीऩिऩ् एऱु–बड़ी-बड़ी मछलियाँ; इरुवि आर्–बाल-कटे कोदों के पौधों से भरे; तटङ्कळ्–खेतों में; पायुम्–झपटते; आऱु पोल्–नदियों की ही तरह; अरुवि पायुम्–नाले बहते हैं; ऒऩ्ऱिऩ् ऒऩ्ऱिऩ्–एक-एक (नाले) में; आऩै पायुम्–हाथी झपटते हैं; एऩलिल्–कोदों के खेतों पर; कुरुवि पायुम्–चिड़ियाँ झपटती हैं; मन्ति–वानर; ओटि–भागकर; कोटु पायुम्–तरुशाखाओं (या पर्वतशृंगों) पर झपटते हैं। २३४

वहाँ पर्वत के तलों में जो जलाशय थे उनमें आकाशगंगा बही। उन जलाशयों के मोटे-मोटे मीन उन खेतों के कोदों के पौधों पर झपटे, जिनकी बालें कट गयी थीं। वहाँ के बरसाती नाले भी नदियों के समान (विशाल) बह रहे थे। उनमें हाथी झपटते रहते थे। कोदों के खेतों पर चिड़ियाँ झपटतीं। बन्दर तरुशाखाओं पर भागते और झपटते थे। २३४

अन्ऩ दाय कुऩ्ऱि ऩाऱु शॆऩ्ऱ वीर रैन्दॊडैन्
दॆऩ्ऩ लाय योश ऩैक्कु मुम्ब रेऱि इम्बरिल्
पॊऩ्ऩि ऩाडि ऴिन्द दऩ्ऩ वालि वाऴ्पॊ रुप्पिडम्
तुऩ्ऩि ऩार्हळ् यादु शॆय्दु मॆऩ्ऱु शॊऱ्ऱ पोदिऩै 235

अऩ्ततु आय–वैसे रहनेवाले; कुऩ्ऱिऩ् आऱु–पर्वत-मार्ग से; चॆऩ्ऱ–जो गये वे; वीरर्–श्रीराम आदि वीर; एऩ्तु ओटु एऩ्तु–पाँच के साथ पाँच; ऍऩ्तल् आय–(दस) कहलानेवाले; योचऩैक्कुम्–योजन से भी; उम्पर् एऱि–ऊपर चढ़कर; इम्परिल्–इस लोक में; पॊऩ्ऩिऩ् नाटु–(अमरावती) स्वर्णपुरी; इऴिन्ततु अऩ्ऩ–उतरकर आया हो जैसे; वालि वाऴ्–वाली के वास के; पॊरुप्पुइटम्–पर्वतस्थान को; तुऩ्ऩितार्कळ्–गये; यातु चॆय्तुम्–क्या करेंगे; ऍऩ्ऱु–ऐसा; चॊऱ्ऱ पोतिऩ्–पूछने पर। २३५

ऐसे पर्वत-मार्ग पर श्रीराम आदि वीर दस योजन दूर ऊपर चले। वाली जहाँ वास करता था, उस पर्वत-नगर किष्किन्धा के पास पहुँचे। वह स्थान स्वर्णपुरी अमरावती-सा लगा जो आकाश से उतरकर वहाँ रह गयी हो। वे सोचने लगे कि अब क्या किया जाय ?। २३५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अव्वि डत्ति राम ऩीय ळैत्तु वालि याऩपेर्
वॆव्वि डत्तिऩ् वन्दु पोर्वि ळैक्कु मेल्वै वेऱुनिऩ्
ऱॆव्वि डत्तु णिन्द मैन्द दॆऩ्ग रुत्ति दॆऩ्ऱऩऩ्
तॆव्व डक्कुम् वॆऩ्ऱि यानु नऩ्ऱि दॆऩ्ऱु शिन्दिया 236

अ इटत्तु–तब; इरामऩ्–श्रीराम ने; अळैत्तु–(सुग्रीव को पास) बुलाकर; नी–तुम; वालि आऩ–वाली नाम के; पेर् वॆम् विटत्तिऩ्–बड़े भयंकर विष के साथ; वन्तु–आकर; पोर् विळैक्कुम्–जब युद्ध करो; एल्वै–तब; वेऱु निऩ्ऱु–अलग खड़ा रहकर; ऍव्विट–बाण चलाने को; तुणिन्तु–ठाना है; अमैन्तत्तु इतु–निश्चय यह; ऍऩ् करुत्तु–मेरी राय है; ऍऩ्ऱऩऩ्–कहा; तॆव् अटक्कुम्–शत्रु-संहार कर; वॆऩ्ऱियाऩुम्–विजय चाहनेवाला (सुग्रीव) भी; इतु नऩ्ऱु–यही अच्छा है; ऍऩ्ऱु–ऐसा; चिन्तिया–सोचकर। २३६

तब श्रीराम ने सुग्रीव को अपने पास बुलाया और कहा कि तुम बड़े और भयंकर विष, वाली, को ललकारो। जब तुम उसके विरुद्ध युद्ध करो तब मैं अलग रहकर उसके ऊपर बाण चलाऊँ, यही मेरी राय है। शत्रु वाली के नाश में तुला हुआ, विजय का चाहक सुग्रीव ने उत्तर में कहा कि हाँ ! वही अच्छा है। २३६

वार्त्तै यऩऩ दाह वाऩि यङ्गु तेरि ऩाऩ्महऩ्
नीर्त्त रङ्ग वेलै यञ्ज नील मेह नाणवे
वेर्त्तु मण्णु ळोरिऩ् विण्णु ळोरि रिन्दु विम्ममेल्
आर्त्त वोशै यीश ऩुण्ड वण्ड मुऱ्ऱु मुण्डदे 237

वार्त्तै अऩ्ततु–श्रीराम का वचन वैसा; आक–रहा तो; वाऩ् इयङ्कु–आकाशचारी; तेरिऩाऩ् मकऩ्–रथ के स्वामी सूर्य का पुत्र; तरङ्क नीर् वेलै–तरंगाकुल समुद्र को; अञ्च–भयभीत करते हुए; नील मेकम् नाण–नीले मेघों को लजाने देते हुए; मण् उळोरिऩ्–भूतलवासियों के समान; विण् उळोर्–स्वर्गवासी भी; वेर्त्तु–पसीना-पसीना होकर; इरिन्तु–अस्त-व्यस्त होकर; विम्म–दुःख से भर जायँ, ऐसा; मेल् आर्त्त ओचै–तिस पर निकाला शोर; ईचऩ् उणट–महाविष्णु से खादित; अण्टम् मुऱ्ऱुम्–अण्ड भर को; उण्टतु–(लील गया) खा गया। २३७

श्रीराम ने ऐसा कहा तो सुग्रीव ने घोर गर्जन-नाद निकाला। आकाशचारी रथ के स्वामी सूर्य के पुत्र के उस नाद के सामने तरंगायमान समुद्र डर गया। नीले मेघ लजा गये। भूमि के वासी जैसे सुरलोकवासी भी पसीना-पसीना होकर अस्त-व्यस्त हो गये और घबड़ाहट से भर गये। उसका नाद सारे ब्रह्माण्ड को लील गया, जिसको भगवान महाविष्णु ने प्रलय के अवसर पर अपने उदर में समा लिया था। २३७

इडित्तु रप्पि वन्दु पोरॆ दिर्त्ति येल डर्प्पऩॆऩ्
ऱडित्त लङ्गळ् कॊट्टि वाय्म डित्त डत्त लङ्गुतोळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुडैत्तु निन्ऱु ळैत्त पूशल् पुक्क दॅन्ब मिक्किडम्
तुडिप्प वङ्गु ऱङ्गु वालि तिण्शॅ वित्तॉ ळैक्कणे 238

वन्तु–आकर; पोर् ॲतिर्त्तियेल्–युद्ध में सामना करो तो; अटर्प्पॅन्–मार दूंगा; ॲन्ऱु–कहकर; इटित्तु उरप्पि–डाँट बतायी और; अटि तलङ्कळ् कॊट्टि–पैरों को ज़ोर से पटककर; वाय् मटित्तु–अधर मोड़कर; अटुत्तु अलङ्कु तोळ्–पार्श्व में फड़कते रहनेवाले कन्धों को; पुटैत्तु–ठोंकते हुए; निन्ऱु ळैत्त पूचल्–रहकर जो (शोर) मचाया, वह शोर; इटम् मिक्कु–बायें अंगों के अधिक; तुटिप्प–फड़कते; अङ्कु–वहाँ (किष्किन्धा नगर में); उऱङ्कु–सोते रहनेवाले; वालि–वाली के; तिण् चॅवि तॊळै कण्–बलयुक्त कर्ण-विवर में; पुक्कतु–घुसा; ॲन्प–कहते हैं। २३८

'तुम आकर मेरे साथ युद्ध करो तो मैं तुम्हारी हत्या कर दूँगा' —ऐसा सुग्रीव ने डाँट के साथ बताया। उसने ललकार के साथ पैरों से शब्द निकालते हुए पैंतरे बदले। अधरों को मोड़ लिया; कन्धे ठोंके। ऐसा जो शोर उसने मचाया वह वाली के बलवान कर्णविवर में जा पहुँचा। तब वह सो रहा था। जब उसने यह सुना तब उसके बायें अंग बहुत फड़के। २३८

❀ माऱ्पॅरुङ् कडहरि मुळक्कम् वाळरि
एऱ्पदु शॅवित्तलत् तॅन्न वोङ्गिय
आर्प्पॊलि केट्टन्न नमळि मेलॊरु
पाऱ्कडल् किडन्ददे यन्नैय पान्मैयान् 239

अमळि मेल्–सेज पर; ऒरु पाल् कटल्–एक क्षीरसागर; किटन्तते अन्नैय–पड़ा रहा हो, ऐसे ही; पान्मैयान्–दृश्य वाली ने; माल्–भ्रमित; पॅरुम् कट करि–बड़े व मत्त गज की; मुळक्कम्–चिंघाड़ को; वाळ् अरि–भयंकर सिंह; चॅवि तलत्तु–कान से; एऱ्पतु ॲन्नत–सुनता हो जैसे; ओङ्किय–उठा हुआ; आर्प्पु ऒलि–ललकार का स्वर; केट्टन्न्–सुना। २३९

अपनी शय्या पर वाली क्षीरसागर के समान लेटा हुआ था। मदहोश मत्तगज की चिंघाड़ सुननेवाले सिंह के समान वाली ने सुग्रीव की ललकार का उच्च नाद सुना। २३९

❀ उरुत्तनन् पॊरवॅदिर्न् दिळव लुऱ्ऱमै
वरैत्तडन् दोळिन्नान् मनत्ति नॅण्णिन्नान्
शिरित्तन न्वॅवॊलि तिशैयि न्प्पुऱ्ऱत्
तिरित्तदव् वुलहमॊ रेळॊ डेळैये 240

वरै तटम् तोळिन्नान्–पर्वत-सम विशाल कन्धों वाले ने; इळवल्–कनिष्ठ भ्राता; उरुत्तनन्–कोप करके; पॊर–लड़ने के हेतु; ॲतिर्न्तु उऱ्ऱमै–सामने आया है, यह बात; मनत्तिन् ॲण्णिन्नान्–मन में सोची; चिरित्तनन्–हँसा; अ ऒलि–उस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ध्वनि ने; तिचैयिन् अ पुऱत्तु–दिगन्त के उस पार जाकर और; अ उलकम्–श्रेष्ठ लोक; ऑर् एऴॊटु एऴै–(सात और सात) चौदहों को; इरित्ततु–भय से अस्त-व्यस्त करा दिया। २४०

पर्वतविशाल कन्धों वाले वाली ने जब सोचा कि मेरा छोटा भाई सुग्रीव मुझसे युद्ध करने आया है तो उसे हँसी आ गयी। वह हँस उठा। वह ध्वनि दिगन्त के उस पार भी चौदहों लोकों पर छायी, जिससे सारे लोक काँप उठे। २४०

ऍऴुन्दनन् वल्विरैन् दिऱदि यूऴियिल्
कॊऴुन्दिरैक् कडल्हिळर्न् दनैय कॊळ्हैयान्
अऴुन्दिय दक्किरि यरुहिन् माल्वरै
विऴुन्दन तोळ्पुडै विशैत्त काऱ्ऱिनै 241

ऊऴि इऱुतियिन्–युगान्त में; कॊऴुम् तिरै–बड़ी-बड़ी लहरों का; कटल्–समुद्र; किळर्न्ततु–उमँग उठा हो; अनैय–जैसी; कॊळ्कैयान्–अवस्था में वाली; वल् विरैन्तु–बहुत तेजी से; ऍऴुन्तनन्–उठा; अ किरि–वह पर्वत; अऴुन्तियतु–दब गया; तोळ् पुटै–भुजाओं को; विचैत्त–ठोंकने से उठी; काऱ्ऱिन्–हवा के कारण; अरुकिन् माल् वरै–पास के बड़े पर्वत; विऴुन्तत–गिर गये। २४१

वाली शीघ्र उस प्रकार उठा जैसे युगान्त में बड़ी लहरों वाला सागर उमँग उठा हो! उस (के भार और वेग) से वह पर्वत धँस गया। कंधों के ठोंकने से जो हवा चलित हुई उसके कारण पास के बड़े-बड़े पर्वत टूटकर गिरे। २४१

पोय्प्पॊडित् तनमयिर्प् पुऱत्त वॆम्बॊऱि
काय्प्पॊडुऱ् ऱॆऴुवड कनलुङ् गण्कॆडत्
तीप्पॊडित् तनविऴि तेवर् नाट्टिनुम्
मीप्पॊडित् तनपुहै युयिर्प्पु वीङ्गवे 242

वॆम् पॊऱि–गरम अंगारे; मयिर् पुऱत्त–शरीर के बालों के ऊपर; पॊय्–आकर; पॊटित्त–छितरे; विऴि–आँखों ने; काय्प्पु ओटु–क्रोध के साथ; उऱु ऍऴु–मिलकर ऊपर उठनेवाली; वट कनलुम्–बड़वाग्नि की; कण् कॆट–आँखों को चौंध से खराब करते हुए; ती पॊटित्तत–आग निकाली; उयिर्प्पु–श्वास; वीङ्कवे–वेग के साथ ऊपर आया तब; पुकै–धुआँ; तेवर् नाट्टिनुम्–देवलोक में भी; मी–ऊपर जाकर; पॊटित्तत–प्रकट हुआ। २४२

भयंकर कोपाग्नि शरीर पर के बालों के ऊपर अंगारों के रूप में प्रकट हुई। आँखों से आग निकली। उसको देखकर भयंकर क्रोध के साथ (भयंकर रूप से भभककर) उठनेवाली बड़वाग्नि भी चौंधिया गयी! उसके निःश्वास बढ़े और उनसे धुआँ उठकर ऊपर गया और सुरलोक में जाकर फैल गया। २४२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ कैक्कॊडु कैत्तलम् बुडैप्पक् कावलिन्
तिक्कयङ् गळुमदच् चॆरुक्कुच् चिन्दिन
उक्कन वुरुमिन मुलैन्द वुम्बरुम्
नॆक्कन नॆरिन्दन निन्ऱ कुन्ऱमे 243

कै कॊटु–हाथ से; कै तलम्–हथेली; पुटैप्प–(वाली ने) पीटी; कावलिन्–लोकरक्षण में लगे रहनेवाले; तिक्कयङ्कळुम्–दिग्गजों ने भी; मत चॆरुक्कु–मदमस्ती (पौरुष) को; चिन्तिन–त्याग दिया; उरुम् इनम्–वज्रसमूह; उक्कन–चूर हो चू गये; उम्परुम्–आकाशलोक भी; उलैन्त–क्लान्त हो गये; निन्ऱ कुन्ऱम्–अचल गिरियाँ भी; नॆक्कन–टूटे; नॆरिन्तन–चूर्ण हो गये। २४३

वाली ने हाथ से हाथ पीटा। तो पृथ्वी के रक्षण में खड़े रहनेवाले दिग्गजों ने अपना मद और शक्ति त्याग दी। वज्र निर्बल होकर गिर गये। देवलोक डगमगा गये। अचल पर्वत भी दलक गये। २४३

वन्दनॆन् वन्दनॆ नॆन्ऱ वाशहम्
इन्दिरि मुदऱ्ऱिशै यॆट्टुङ् गेट्टन
शन्दिरन् मुदलिय तार हैक्कुळाम्
शिन्दिन ववन्मुडिच् चिहरन् दीण्डवे 244

वन्तनॆन्–आ गया; वन्तनॆन्–आ गया; ऎन्ऱ वाचकम्–वे शब्द; इन्तिरि मुतल् तिचै–इन्द्र की (पूर्व) दिशा आदि; ऎट्टुम्–आठों दिशाओं में; केट्टन–सुनाई दिये; अवन्–उसके; मुटि चिकरम्–किरीट-शिखर के; तीण्ट–छूने से; चन्तिरन् मुतलिय–चन्द्र आदि; तारकै कुळाम्–ताराओं के समूह; चिन्तिन–नीचे गिर गये। २४४

वाली ने उच्च स्वर में ललकार का उत्तर दिया— आ गया। अभी आ गया। वे शब्द इन्द्र की पूरब दिशा से लेकर सारी दिशाओं में गूँज उठे। उसके किरीट की चोटी के लगने से चन्द्र और सितारों के समूह नीचे चू गये। २४४

वीशिन काऱ्ऱिन्वेर् पऱिन्दु वॆऱ्पिनम्
आशैयै युऱ्ऱन वण्डप् पित्तिहै
पूशिन वॆण्मयिर्प् पुऱत्त वॆम्बॊऱि
कूशिन नन्दहन् कुलैन्द दुम्बरे 245

वीचिन काऱ्ऱिन–(वाली के उठने के वेग से) चालित हवा के कारण; वॆऱ्पु इनम्–पर्वतसमूह; वेर् पऱिन्तु–जड़ कटकर; आचैयै–दिशाओं में जा; उऱ्ऱन–पहुँचे; वॆण्मयिर्–(शरीर के) सफ़ेद बालों के; पुऱत्त–ऊपर; वॆम् पॊऱि–कोपाग्नि (जो उठी) उसके कण; अण्ट पित्ति कै–अण्ड की भित्तियों पर; पूचिन–पोत गये; अन्तकन्–यम; कूचिनन्–संकोच में पड़ गया; उम्पर्–स्वर्गलोक; कुलैन्ततु–अस्त-व्यस्त हुआ। २४५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसके वेग से हवा चलित हुई। तब पर्वत-वृन्द मूल से कटकर दिशाओं में जा लगे। श्वेत बालों के ऊपर से निकले अंगारे अण्ड-भित्तियों से जा लगे। यम भी वाली को देखने से संकोच करने लगा। स्वर्ग अस्त-व्यस्त हो गया। २४५

कडित्तवा यॅयिऱुहु कऩल्हळ् कार्विशुम्
बिडित्तवा लुहुमुरु मिऩत्तिऱ् चिन्दिऩ
तडित्तुवीळ्ऩ् दऩवॅऩत् तहर्ऩ्दु शिन्दिऩ
वडित्ततोळ् वलयत्तिऩ् वयङ्गु काशरो 246

कटित्त वाय्–मुख में पिसते; ऍयिऱु उकु–दाँतों से निकली; कऩल्कळ्–अग्नि के कण; कार्–मेघों के; विचुम्पु इटित्त आल्–आकाश में टकराने से; उकुम्–गिरनेवाले; उरुम् इऩत्तिल्–वज्र-समूह के समान; चिन्तिऩ–गिरे; वटित्त–श्रेष्ठ; तोळ् वलयत्तिऩ्–बाहुवलय में; वयङ्कु काचु–दृश्यमान रत्न; तटित्तु वीळ्ऩ्तऩ ऍऩ्त–तड़ितें गिरतीं जैसे; तकर्ऩ्तु चिन्तिऩ–टूटकर गिरे। २४६

वाली ने दाँत पीसे। तब दाँतों से अंगारे निकले। वे आकाश में गरजते मेघों से निकलकर गिरनेवाली तड़ितों के समान छितरे। उसके सुन्दर बाहुवलयों से रत्न अलग होकर गाजों के समान चू पड़े। २४६

ञालमु नाऱ्ऱिशैप् पुऩलु नाहरुम्
मूलमु मुऱ्ऱिड मुडिविऱ् ऱोक्कुमक्
कालमु मॊत्तऩऩ् कडलिऱ् ऱाऩ्कडै
आलमु मॊत्तऩ नॅवरु मञ्जवे 247

ऍवरुम् अञ्च–कोई भी भयभीत हो, ऐसा; ञालमुम्–यह भूमि और; नाल् तिचै पुऩलुम्–चारों दिशाओं के समुद्र और; नाकरुम्–देव; मूलमुम्–सृष्टि के मूल (भूत आदि); मुऱ्ऱिट–(इनको) नाश करते हुए; मुटिविल्–युगान्त में; तोक्कुम्–जला डालनेवाले; अ कालमुम्–उस प्रलयकाल के; ऒत्तऩऩ्–समान भी रहा; कटलिल्–(क्षीर-) सागर में; ताऩ् कटै–खुद उससे मथने से निकले; आलमुम्–हलाहल के; ऒत्तऩऩ्–समान भी रहा। २४७

उस वाली को देखकर सब कोई भयभीत हो गये। तब वह प्रलय-काल के समान लगा जो भूमि, चारों ओर के सागर, देवगण और इन सबके मूलतत्त्व आदि सभी का अन्त करते हुए जला डालता है। और भी उस हलाहल के समान भी लगा, जिसको उसी ने खुद क्षीरसागर मथकर उससे प्रकट कराया था। २४७

❀ आयिडैत् तारैयॅऩ् ऱमुदिऱ् ऱोऩ्ऱिय
वेयिडैत् तोळिऩा ळिडैवि लक्किऩाळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वायिडैप् पुहैवर वालि कण्वरुम्
तीयिडैत् तन्नॅडुङ् गून्द ऱीहिन्ऱाळ् 248

अ इटै–तब; तारै ऍन्ऱु–तारा नाम की; अमुतिल् तोन्ऱिय–अमृत के समान दृश्यमान; वेय् इटै तोळिन्ताळ्–बाँस-से प्राप्त कन्धों वाली (वाली-पत्नी) ने; वाय् इटै–मुख से; पुकै वर–धुआँ निकलने देते हुए; वालि कण् वरुम्–वाली की आँखों में प्रकट; ती इटै–अग्नि में; तन् नॅटुम् कून्तल्–अपने लम्बे केश को; तीकिन्ऱाळ्–जलने देती हुई; इटै विलक्किताळ्–बीच में आकर रोका। २४८

तब तारा ने आकर उसे रोका। तारा अमृत के समान प्रकट हुई। बाँस के समान कन्धों वाली वाली की पत्नी तारा के लम्बे केश उस अग्नि में झुलसे जो वाली के मुख से धुआँ छोड़ते हुए उसकी आँखों में जल रही थी। २४८

❀ विलक्कलै विडुविडु विळित्तु ळान्ऱुरम्
कलक्कियक् कडल्हडैन् दमुदु कण्डॅन्न
उलक्कविन् ऩुयिर्हुडित् तॊल्लै मीळ्हुवॅन्
मलैक्कुल मयिलॅन्न मडन्दै कूऱुवाळ् 249

मलै कुल मयिल्–पर्वतवासिनी सुन्दर मोरनी; विलक्कलै–मत रोको; विटु विटु–छोड़ो, छोड़ो; अ कटल्–(तब या) उस सागर को; कटैन्तु–मथकर; अमुतु कण्टु–अमृत निकाला (मैंने); ऍन्न–वैसे ही; विळित्तु उळान्–ललकारनेवाले का; उरम् कलक्कि–बल मिटा करके; उलक्क–उसको मारकर; इन्न उयिर् कुटित्तु–उसके प्यारे प्राण पीकर; ऑल्लै–शीघ्र; मीळ्कुवॅन्–लौट आऊँगा; ऍन्न–कहने पर; मटन्तै–वह नारी; कूऱुवाळ्–बोली। २४९

वाली ने उससे कहा कि पर्वतकुलकेकिनी! मुझे मत रोको। छोड़ दो, छोड़ दो। उस दिन जैसे सागर मथकर अमृत निकाला, उसी तरह आज ललकारनेवाले सुग्रीव का बल मिटाकर, उसे मिटा दूँगा और उसके प्यारे प्राण पीकर शीघ्र लौट आऊँगा। तब तारा ने कहा। २४९

❀ कॊऱ्ऱव निन्बॅरुङ् गुववुत् तोळ्वलिक्
किऱ्ऱनन् मुन्नैना ळीडुण् डेहुवान्
पॅऱ्ऱिलन् पॅरुन्दिऱल् पॅयर्त्तुम् पोर्शॅयऱ्
कुऱ्ऱु नॅडुन्दुणै युडैमै यालॅन्ऱाळ् 250

कॊऱ्ऱव–राजा; मुन्नै नाळ्–पहले दिन; निन्–आपके; कुववु पॅरुम् तोळ्–पुष्ट, बड़े कन्धों के; वलिक्कु–बल के सामने; इऱ्ऱनन्–हारकर; ईटु उण्टु–अपमानित होकर; एकुवान्–जो भागा; पॅरु तिऱल्–(वह अब) बहुत शक्ति; पॅऱ्ऱिलन्–पा नहीं गया है; पॅयर्त्तुम्–फिर भी; पोर् चॅयऱ्कु–युद्ध करने के लिए; उऱ्ऱु–आना; नॅटुम् तुणै–बहुत बड़ी सहायता; उटैमैयाल्–प्राप्त करने के कारण; ऍन्ऱाळ्–कहा। २५०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राजा ! पहले यही सुग्रीव आपके पुष्ट बड़े कन्धों के बल के सामने हारा, अपमानित हुआ और भागा। उसे अब कोई बड़ी शक्ति तो प्राप्त नहीं हुई है। तो भी वह लड़ने आया है। इसका कारण उसकी किसी बड़ी सहायता की प्राप्ति है। —तारा ने ऐसा कहा। २५०

मून्ऱॆऩ मुऱ्ऱिय मुडिविल् पेरुल
हेन्ऱुड ऩुऱ्ऱऩ वॆऩक्कु नेरॆऩत्
तोऩ्ऱिऩुन् दोऱ्ऱवै तॊलैयु मॆऩ्ऱऱ्कुच्
चाऩ्ऱुळ वऩ्ऩवै तैयल् केट्टियाल् 251

तैयल्–दयिता; मूऩ्ऱु ऎऩ–तीन की संख्या में; मुऱ्ऱिय–पूर्ण बने; मुटिवु इल्–अनन्त; पेर् उलकु–बड़े लोकों के वासी; ऎऩक्कु नेर् ऎऩ–मेरे सामने; एऩ्ऱु–विरोध करके; उटऩ् उऱ्ऱऩ–साथ मिलकर; तोऩ्ऱिऩुम्–आकर प्रकट हों तो भी; अवै तोऱ्ऱु–वे हारकर; तॊलैयुम्–मिट जायँगे; ऎऩ्ऱऱ्कु–इसके लिए; चाऩ्ऱु उळ–प्रमाण हैं; अऩ्ऩवै–उनको; केट्टि–सुनो; (आल्–पूरक ध्वनि)। २५१

वाली ने कहा— दयिता ! स्वर्ग, मध्य, पाताल —तीनों श्रेणियों के असंख्यक और बड़े लोक, सारे, मिलकर मेरे विरुद्ध युद्ध करने आयें तो भी वे हारकर मिट जायँगे। इसके प्रमाण हैं। बतलाता हूँ। सुनो। २५१

मन्दर नॆडुवरै मत्तु वाशुहि
अन्दमिल् कडैहयि ऱडैह लाळियाऩ्
शन्दिरऩ् ऱूणॆदिर् तरुक्किऩ् वाङ्गुवार्
इन्दिरऩ् मुदलिय वमर रेऩैयोर् 252

मन्तर–मन्दर के; नॆटवरै–बड़े पर्वत को; मत्तु–मथानी; वाचुकि–वासुकी को; अन्तम् इल्–बहुत लम्बी; कटै कयिऱु–नेती; आळियाऩ्–चक्रधारी महाविष्णु को; अटै कल्–(पर्वत को धँसने से रोकने का) आधार-प्रस्तर; चन्तिरऩ्–चन्द्र को; तूण्–स्थिर स्तम्भ (खूँटा, जिसके सहारे मथानी बँधी रहती है); तरुक्किऩ्–गर्व के साथ; ऎतिर् वाङ्कुवार्–आमने-सामने रहकर खींचनेवाले; इन्तिरऩ् मुतलिय अमरर्–इन्द्रादि देव; एऩैयोर्–और अन्य (असुर) थे। २५२

(क्षीरसागर-मन्थन की बात लो।) मन्दरपर्वत को मथानी, वासुकी की लम्बी नेती बनायी गयी। चक्रधारी महाविष्णु पर्वत के नीचे आधार-प्रस्तर बने रहे, ताकि पर्वत घूमते समय धँस न जाय। चन्द्र को स्थिरस्तम्भ बनाकर उसी से मथानी सुरक्षित की गयी। गर्व के साथ दोनों पक्षों में इन्द्रादि सुरगण और असुर रहकर नेती को खींचने लगे। २५२

पॆयर्वुऱु वलिक्कवु मिडुक्किल् पॆऱ्ऱियार्
अयर्वुऱु लुऱ्ऱदै नोक्कि यानदु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तयिरॆऩक् कडैन्दवर्क् कमुदन् दन्ददुम्
मयिलियऱ् कुयिन्मॊऴि मऱक्कऱ् पालदो 253

मयिल् इयल्–मोर की-सी छटा; कुयिल् मॊऴि–कोकिल की वाणी वाली; पॆयर्वु उऱ–घुमाते हुए; वलिक्कवुम्–खींचने पर; मिटुक्कु इल्–निर्बल; पॆऱ्ऱियार्–दम वाले; अयर्वु उऱल् उऱ्ऱऩॆ–थक गये, उसे; नोक्कि–देखकर; यान्–मेरा; अतु–उसे; तयिर् अॆऩ–दही के समान; कटैन्तु–मथकर; अवर्क्कु–उन्हें; अमुतम् तन्ततुम्–अमृत दिलाना; मऱक्कल् पालतो–भूलने योग्य है क्या। २५३

मयूराभा कोकिलवाणी तारा! वे मन्दरपर्वत को घुमाने लगे। पर उनमें योग्य बल नहीं था। इसलिए वे थक गये। उसको मैंने देखा तो मैं गया और दही के समान सागर को मथ डाला। अमृत निकालकर दिया। वह सामर्थ्य भुलाने की बात है क्या? । २५३

❀ आऱ्ऱलि ऩमररु मवुणर् यावरुम्
तोऱ्ऱऩ रॆऩैयवऱ् शॊल्लऱ् पालदो
कूऱ्ऱुमॆऩ् पॆयर्शॊलक् कुलैयु मारिऩि
माऱ्ऱवऱ् काहिवन् दॆदिरु माण्बिऩार् 254

आऱ्ऱलिऩ्–मेरी शक्ति के सामने; अमररुम्–देव और; अवुणर् यावरुम्–दानव सब; तोऱ्ऱऩर्–जो हारे; अॆऩैयवर्–कितने हैं; चॊल्लल् पालतो–(हिसाब) कहा जा सकता है क्या; कूऱ्ऱुम्–यम भी; अॆऩ् पॆयर्–मेरा नाम; चॊल–लेने पर; कुलैयुम्–भय से काँप जायगा; माऱ्ऱवऱ्कु–मेरे शत्रु का; आकि वन्तु–(सहायक) बन आकर; इति–अब; अॆतिरुम्–लड़े; माण्पिऩार्–ऐसी शक्ति रखनेवाले; आर्–कौन हैं। २५४

मेरे सामने अमर और असुर कितने ही हारे हैं! उनकी गणना भी हो सकती है क्या? यम भी, मेरा नाम लिया जाय तो भय से काँप जायगा! फिर कौन हैं जो इतना हौसला रखते हैं कि मेरे सामने आकर युद्ध करें? । २५४

❀ पेदैय रॆदिर्हुव रॆऩिऩुम् बॆऱ्ऱुडै
ऊदिय वरङ्गळु मुरमु मुळ्ळदिल्
पादियु मॆऩ्ऩदाऱ् पहैप्प दॆङ्ङऩम्
नीतुय रॊऴिहॆऩ निऩ्ऱु कूऱिऩाऩ् 255

पेतैयर्–बुद्धिहीन; अॆतिर्कुवर्–लड़ेंगे; अॆतिऩुम्–तो भी; पॆऱ्ऱऩॆ–उनके प्राप्त; ऊतियम् वरङ्कळुम्–शक्तियाँ और वर; उरमुम्–बल; उळ्ळतिल्–जो हैं, उनका; पातियुम् अॆऩ्ऩतु–आधा मेरा होगा; आल्–इसलिए; पकैप्पतु अॆङ्ङऩम्–विरोध करेंगे कैसे; नी–तुम; तुयर्–दुःख; ऒऴिक–छोड़ो; अॆऩ–ऐसा; निऩ्ऱु–सावधानी के साथ; कूऱिऩाऩ्–(आश्वासन का वचन) कहा (वाली ने)। २५५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समझो कि कुछ जड़मति हैं जो युद्ध करने आ जायँ। (मेरे प्राप्त वरदान के बल से) उनके वर, बल और सामर्थ्य —सबके आधे भाग मेरे हो जायँगे। फिर वे कैसे मेरा विरोध करेंगे ? तुम अपना दुःख छोड़ दो। वाली ने तारा को धीरज देते हुए सावधानी से कहा। २५५

❀ अन्नदु केट्टव ळरश वायवर्
किन्नुयिर् नट्पमैन् दिराम नॅन्बवन्
उन्नुयिर् कोडलुक् कुडन्वन् दानॅनत्
तुन्निय वन्बिनर् शॊल्लिना रॅन्ड्राळ् 256

अन्नतु केट्टवळ्–उसको सुनकर (तारा ने); अरच–राजा; इरामन् ऍन्पवन्–श्रीराम नाम के; आयवर्कु–उनका; इन् उयिर् नट्पु–प्राणप्यारा मित्र; अमैन्तु–बनकर; उन् उयिर् कोटलुककु–तुम्हारे प्राण हरने के लिए; उटन् वन्तान्–साथ आये हैं; ऍन–ऐसा; तुन्निय–निकट के; अन्पितर्–स्नेहियों ने; चॊल्लितार्–कहा; ऍन्ड्राळ्–बोली। २५६

यह सुनकर तारा ने उत्तर दिया। राजा ! बात ठीक नहीं है। हमारे निकट के स्नेहियों ने कोई बात कही है। श्रीराम नाम के कोई सुग्रीव के प्राणप्यारे मित्र बनकर आपके प्राण हरने के लिए उसके साथ इधर आये हैं। २५६

❀ कुळैत्तवल् लिरुविनैक् कूरु काण्गिला
दळैत्तय रुलहिनुक् कऱत्ति नारॅलाम्
इळैत्तवर् कियल्बल वियम्बि यॅन्शॅय्दाय्
पिळैत्तनै पावियुन् पॅण्मै यालॅन्ड्रान् 257

पावि–पापिनी; कुळैत्त–संकटदायी; वल् इरु विनैककु–बलवान दोनों कर्मों (पाप, पुण्य) का; ऊरु–नाश; काण्किलातु–(उपाय) न देखकर; अळैत्तु–बुलाते हुए; अयर्–दुःखी; उलकिनुक्कु–लोकवासियों को; अऱत्तिन् आऱु ऍलाम्–धर्म के मार्ग सब; इळैत्तवर्कु–अपने चरित्र से सिखाया जिन्होंने, उन श्रीराम के लिए; इयल्पु अल–अनुपयुक्त; इयम्पि–कहकर; ऍन् चॅय्ताय्–क्या ही (अपचार) किया है; उन् पॅण्मैयाल्–अपनी स्त्री-बुद्धि के कारण; पिळैत्तनै–अपराध किया (या बच गयीं); ऍन्ड्रान्–वाली ने कहा। २५७

(वाली को श्रीराम का नाम सुनकर क्रोध आ गया। क्षुब्ध भी हुआ।) वाली बोला— पापिनी ! (क्या बात करती हो ? श्रीराम कौन हैं, जानती हो?) पूर्वकर्म, पाप और पुण्य, दोनों मनुष्यों को निरन्तर सताते हैं। उनका अन्त न पाकर जीव छटपटाते हैं। निवारण का कोई उपाय न देखकर वे श्रीराम को बुलाते हैं, तो वे आकर जीवों को धर्म के मार्ग सब अपने आचरणों द्वारा बताते हैं। ऐसे श्रीराम के सम्बन्ध में अनुचित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बातें कहती हो ! यह बड़ा अपचार है ! तुम स्त्री हो ! इसीलिए तुमने यह अपराध किया है ('पिऴैत्तल्' का दूसरा अर्थ 'जीवित बच जाना' है !)। २५७

❀ इरुमैयु नोक्कुऱु मियल्बि नाऱ्किदु
पॅरुमैयो वीङ्गिदिऱ् पॅऱुव दॅन्गौलो
अरुमैयि निन्ऱुयि रऴिक्कु माऱुडैत्
तरुममे तविर्क्कुमो तन्नैत् तानरो 258

इरुमैयुम्–(पूर्व, अपर) दोनों पक्षों को; नोक्कुऱुम्–सोच-देखनेवाले; इयल्पि–नार्क्कु–स्वभाव वाले श्रीराम के लिए; इतु पॅरुमैयो–यह (काम) गौरव है क्या; इङ्कु–यहाँ; इतिल्–इस (मित्रता) में; पॅऱुवतु–लाभ; ऍन् कौलो–क्या है; अरुमैयिन् निन्ऱु–दुर्लभ रहकर; उयिर अऴिक्कुम्–जीवों की रक्षा करने का; आऱु उटै–कार्यकारी; तरुममे–धर्म स्वयं; तन्नै तान्–अपने आप को; तविर्क्कुमो–नष्ट कर लेगा क्या । २५८

वाली आगे बोला। श्रीराम निष्पक्ष दोनों ओर ध्यान देनेवाले स्वभाव के हैं। उनके लिए यह काम गौरवदायी है क्या ? और भी इससे उनको मिलेगा भी क्या ? धर्म दुर्गम है और जीवरक्षण का सामर्थ्य रखता है। क्या वह स्वयं अपना नाश करा लेगा ? । २५८

❀ एऱ्ऱपे रुलहॅला मॅय्दि यीन्ऱवळ्
माऱ्ऱव ळेवमऱ् ऱवडन् मैन्दनुक्
काऱ्ऱरु मुवहैया लऴित्त वैयनैप्
पोऱ्ऱलै यिन्नन पुहऱ्ऱ् पालैयो 259

एऱ्ऱ–(पिता द्वारा) भरण किये हुए; पेर् उलकु ऍलाम्–विशाल लोक (राज्य-अधिकार) सब; ऍय्ति–प्राप्त करके; ईन्ऱवळ्–जननी की; माऱ्ऱवळ्–सौत के; एव–आज्ञा देने पर; मऱ्ऱु–फिर; अवळ् तन् मैन्तनुक्कु–उनके पुत्र को; आऱ्ऱ अरुम्–(अन्यों द्वारा) करने में असाध्य; उवकैयाल्–सन्तोष के साथ; अऴित्त–जिन्होंने दिया; ऐयनै–उन प्रभु को; पोऱ्ऱलै–नहीं सराहा; इन्नतत–ऐसी (निन्दा की) बातें; पुकलल् पालैयो–कह सकोगी क्या । २५९

अपने पिता के भरण में रहे सारे लोकों का अधिकार पाकर भी उन्होंने अपनी विमाता के कहने पर उसे उनके पुत्र के हाथ में असाध्य प्रेम के साथ सौंप दिया। ऐसे महान पुरुष की सराहना नहीं करतीं पर ऐसी निन्दा की बातें करोगी ! । २५९

❀ निन्ऱपे रुलहॅला नॅरुङ्गि ने रिनुम्
वॅन्ऱिवॅञ् जिलैयलाऱ् पिऱिदुम् वेण्डुमो
तन्ऱुणै यॊरुवरुन् दन्निल् वेऱिलान्
पुन्ऱौऴिऱ् कुरङ्गॊडु पुणरु नट्पॅनो 260

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निन्ऱ्-स्थायी; पेर् उलकु ऍलाम्-बड़े-बड़े सभी लोक; नॅरुङ्कि-मिलकर; नेरित्तुम्-लड़ें तो भी; वॅन्ऱि-विजयदायी; वॅम्-भयंकर; चिलै अलाल्-धनु को छोड़कर; पिऱितुम्-अन्य सहायता भी; वेण्टुमो-उन्हें चाहिए क्या; तन् तुणै-अपने सदृश; तन्तिल्-अपने से; वेऱु ऑरुवरुम्-अन्य कोई; इलान्-नहीं ऐसे (श्रीराम); पुल् तॉळिल्-अल्पकृत; कुरङ्कोटु-वानर के साथ; पुणरुम् नट्पु-करे, ऐसी मित्रता; ऍन्तो-क्यों। २६०

ये लोक, जो युग-युग से रहते हैं, सभी मिलकर उनका सामना करें तो भी अपने एक कोदण्ड के सिवा किसी और (चीज़) की सहायता लेनेवाले वे नहीं हैं। उनकी बराबरी का और कोई नहीं रहता। ऐसे वे अल्पकर्मी वानर के साथ मित्रता क्यों बना लेंगे ?। २६०

❀ तम्बिय रल्लदु तन्तक्कु वेऱुयिर्
इम्बरि निल्लॅन वॅण्णि येय्न्दवन्
ऍम्बियुम् यानुमुऱ् ऱॅदिर्न्द पोरिनिल्
अम्बिडै तॉडुक्कुमो वरुळि नाळियान् 261

तम्पियर् अल्लतु-छोटे भाइयों के सिवा; तन्तक्कु-अपने; वेऱु उयिर्-अलग प्राण; इम्परिल्-इस लोक में; इल्-नहीं; ऍन्त-ऐसा; ऍण्णि-सोचकर; एय्न्तवन्-उनसे मिलकर रहनेवाले; अरुळिन् आळियान्-करुणासागर; ऍम्पियुम् यानुम्-मैं और मेरा भाई; उऱ्ऱ ऍतिर्न्त-(जिसमें) लगे लड़ते हैं; पोरिनिल्-(उस) लड़ाई में; इटै-बीच में आकर; अम्पु तॉटुक्कुमो-बाण चलायेंगे क्या। २६१

वे ऐसे हैं जिनके इस लोक में अपने अनुजों के अलावा प्राण हैं ही नहीं। और जो उनसे हेल-मेल के साथ रहते हैं। वे करुणासागर हैं। ऐसे वे क्या उस युद्ध में बीच में आकर बाण चलायेंगे, जिसमें मैं और मेरे भाई भिड़ रहे हैं ?। २६१

❀ इरुत्तिनी यिऱैयिव णिमैप्पिल् कालैयिल्
उरुत्तुयिर् कुडित्तव नुडन्वन् दारैयुम्
करुत्तळित् तॅय्दुवॅन् कलङ्ग लॅन्ऱुऱन्
विरैक्कुळल् पिन्नुरै विळम्ब वञ्जिनाळ् 262

नी-तुम; इऱै-कुछ देर; इवण् इरुत्ति-ठहरो; इमैप्पु इल्-पलक भी न मारो; कालैयिल्-उस समय के अन्दर; उरुत्तु-कोप दिखाकर; उयिर् कुटित्तु-प्राण पीकर; अवन् उटन् वन्तारैयुम्-उसके साथ आये हुओं को भी; करुत्तु अळित्तु-विफल-मनोरथ करके; ऍय्तुवॅन्-लौट आऊँगा; कलङ्कल्-क्षुब्धमत हो; ऍन्ऱुऱन्-कहा; विरै कुळल्-सुगन्धित केश वाली; पिन्-आगे; उरै विळम्प-बात करने से; अञ्चिनाळ्-डरी। २६२

तुम थोड़ी देर यहीं ठहरो। पलक भी न मार सको उतनी देर के अन्दर मैं कोप करके सुग्रीव को मार डालूंगा। और उसके साथ आये हुओं का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मनोरथ विफल करके लौट आ जाऊँगा। तुम मत घबड़ाओ। वाली ने धीरज दिया। आगे सुगन्धित केशिनी तारा कुछ न बोली। वह कुछ कहने से डरती थी। २६२

ऒल्लैच् चॆरुवेट् टुयर्वन्पुय वोङ्ग लुम्बर्
ऎल्लैक्कु मप्पा लिवर्हिन्ऱ विरण्डि नोडुम्
मल्लऱ् किरियिन् ऱलैवन्दनन् वालि कीऴ्पाल्
तॊल्लैक् किरियिन् ऱलैतोन्ऱिय ञायि ऱॆन्न 263

वालि—वाली; ऒल्लै—जल्दी; चॆरु वेट्टु—युद्ध करना चाहकर; उयर्—फूल उठनेवाले; उम्पर् ऎल्लैक्कुम्—स्वर्ग की सीमा के पार भी; इवर्किन्ऱ—उन्नत; वन् पुय—बलवान भुजा रूपी; ओङ्कल्—पर्वत; इरण्टिन्नोटुम्—दो के साथ; कीऴ् पाल्—पूर्व दिशा में; तॊल्लै किरियिन् तलै—प्राचीन (उदय-)गिरि के शिखर पर; तोन्ऱिय—प्रकट; ञायिऱु ऎन्न—सूर्य के समान; मल्लल् किरियिन् तलै—वैभवयुक्त गिरि के ऊपर; वन्ततन्—आया। २६३

वाली को युद्ध प्यारा था। उसके बारे में सोचते ही उसके कंधे फूल उठे। वे देवों के लोकों के पार भी उन्नत हुए। पूर्व दिशा की प्राचीन उदयगिरि पर प्रकट होनेवाले सूर्य के समान वाली अपने दोनों उन्नत भुजाओं के साथ शोभता हुआ वैभवपूर्ण उस गिरि पर आया। २६३

निन्ऱा ऩॆदिर्या वरुनॆञ्ज नडुङ्गि यञ्जत्
तन्ऱोळ् वलियाऱ् ऱहैमाल्वरै शालुम् वालि
कुन्ऱू डुवन्दुऱ् ऱनन्गो ळवुणन् कुऱित्त
वन्ऱू णिडैत्तोन् ऱियमानन्ऱ शिङ्ग मॆन्न 264

तन् तोळ् वलियाल्—अपने भुजबल से; तकै माल् वरै—शालीन बड़े (मेरु) पर्वत की; चालुम्—समता करनेवाला (वाली); कोळ् अवुणन् कुऱित्त—नृशंस राक्षस (हिरण्यकशिपु) द्वारा निर्दिष्ट; वल् तूण् इटै—कठोर खम्भे से; तोन्ऱिय—प्रकट; मा—माननीय; नरचिङ्कम् ऎन्न—नृसिंह के समान; ऎतिर् यावरुम्—सामने (आये) सभी को; नॆञ्चम् नटुङ्कि—दिल दहलकर; अञ्च—भयभीत होने को विवश करते हुए; कुन्ऱु ऊटु वन्तु—पर्वत से होकर आया और; निन्ऱान्—स्थित रहा। २६४

वाली अपने भुजबल में बड़े और श्रेष्ठ मेरुपर्वत से तुल्य था। जब क्रूर राक्षस हिरण्यकशिपु ने खम्भे का निर्देश किया (और प्रह्लाद को ललकारा कि तेरा हरि इसमें है क्या ?) तब उस कठोर स्तम्भ के मध्य से नृसिंह प्रकट हुए। उन्हीं नृसिंह-मूर्ति के समान वाली सामने आये सभी के मन में भय भरते हुए गिरियों की घाटियों से होता हुआ आया और खड़ा रहा। २६४

आर्क्किन्ऱ पिन्नोन् ऱनैनोक्किनन् ऱानु मार्त्तान्
वेर्क्किन्ऱ वानत् तुरुमेरु वॆऱित्तु वीऴप्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पोर्क्किन्ऱ् वॆल्ला वुलहुम्बॊदिर् वुऱ्ऱ् पूशल्
कार्क्कुन्ऱ् मन्ना निलन्दाविय कालि नॆन्न 265

आर्क्किन्ऱ्–गर्जन करनेवाले; पिन्नोन् तनै–अनुज को; नोक्कितन्–देखकर; तानुम् आर्त्तान्–उसने भी नारे लगाये; वेर्क्किन्ऱ्–स्वेदयुक्त; वानत्तु–आकाश के; उरुम् एऱ्–वज्रराज; वॆऱित्तु–तनकर; वीळ–गिरें, ऐसे; कार्कुन्ऱम् अन्नान्–काले मेघ-सम महाविष्णु के; निलम् ताविय–लोकमापक; कालिन् ऍन्न–श्रीचरणों के समान; पूचल्–उनके घोष; पोर्क्किन्ऱ्–(भू को) आवृत रहनेवाले; ऍल्ला उलकुम्–सारे लोकों में; पॊतिर्वु उऱ्ऱ्–भर गये। २६५

उसने अपने गर्जन करनेवाले अनुज को देखा। उसने भी मारू नारे लगाये। उस दिन काले मेघतुल्य महाविष्णु के श्रीचरण सब जगह फैले। तब स्वेदयुक्त आकाश के वज्रसमूह भी भय से नीचे चू पड़े। उन्हीं श्रीचरणों के समान वाली और सुग्रीव के घोषों का शब्द सब लोकों में व्याप्त हुआ। २६५

अव्वेलै यिराम नुमन्बुडैत् तम्बिक् कैय
शॆव्वे शॆलनोक् कुदितानवर् देवर् निऱ्क
ऍव्वेलै यॆम्मेरु वॆक्कालॊडॆक् काल वॆन्दी
वॆव्वे ऱुलहत् तिवर्मेनियै मानु मॆन्ऱान् 266

अ वेलै–तब; इरामनुम्–श्रीराम भी; अन्पु उटै–प्यारे; तम्पिक्कु–अपने छोटे भाई से; ऐय–सुन्दर भाई; चॆव्वे चॆल–खूब ध्यान देकर; नोक्कुति–देखो; तानवर् तेवर् निऱ्क–दानव और देव एक ओर रहें; वॆव्वेऱु उलकत्तिन्–पृथक्-पृथक् रहनेवाले लोकों में; ऍ वेलै–कौन सा सागर; ऍ मेरु–कौन सा मेरु; ऍ काल् ऒटु–कौन से पवन के साथ; ऍ काल वॆम् ती–कौन सी प्रलयकालीन नाशकारी आग; इवर् मेनियै–इनके शरीर की; मानुम्–समता करेगी। २६६

(श्रीराम को वाली और सुग्रीव के रूप को देखकर विस्मय हुआ।) श्रीराम अपने प्यारे भाई से बोले। सुन्दर भाई! ध्यान देकर निहारो। देव और दानव एक ओर रहें! पृथक्-पृथक् रहनेवाले इन लोकों में कौन सा सागर, कौन सा मेरु, पवन या कालानल —इनके रूप और आकार की समता कर सकेगा? । २६६

वळ्ळऱ् किळैयान् पहर्वानिवन् ऱन्मुन् वाणाळ्
कॊळ्ळक् कॊडुङ् गूऱ्ऱुवनैक् कॊणर्न् दान्कुरङ्गिन्
ऍळ्ळऱ् कुऱुम्बोर् शॆयवॆय्दिनै मॆन्नु मिन्नल्
उळ्ळत्ति नूनऱ् वुणर्वुऱ्ऱिलै नॊन्ऱु मॆन्ऱान् 267

वळ्ळऱ्कु इळैयान्–दानी प्रभु के अनुज; पकर्वान्–कहते; इवन्–यह सुग्रीव; तन् मुन्–अपने ज्येष्ठ भ्राता की; वाळ् नाळ् कॊळ्ळ–आयु हरने के लिए; कॊटुम् कूऱ्ऱुवनै–क्रूर यम को; कॊणर्न्तान्–यहाँ लाया है; कुरङ्किन्–वानरों से;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऎऴ्ऴऱ्कु उऱम्–निन्द्य; पोर् चॆय–युद्ध करने; ऎय्तिनॆम्–आये हैं; ऎन्नुम्–इसका; इन्तल्–दुःख; उळ्ळत्तिन्–चित्त में; ऊन्ऱ–गड़ गया, इसलिए; ऒन्ऱुम्–कुछ भी; उणर्वु उऱ्ऱिलॆन्–सोच नहीं पाता; ऎन्ऱान्–कहा। २६७

यह सुनकर वदान्य श्रीराम के अनुज ने कहा कि यह अपने ज्येष्ठ भाई को शत्रु मानकर उसकी आयु को हरने के निमित्त भयंकर यम को इधर लाया है! वानरों के साथ, गर्हण योग्य युद्ध करने के लिए हम भी आये हैं। यह दुःख मेरे चित्त में गड़ा हुआ है। अतः मैं कुछ सोच नहीं पाता। २६७

आऱ्ऱादु पिन्नुम् पहर्वानऱत् ताऱ ऴुङ्गत्
तेऱ्ऱादु शॆय्वार् हळैत्तेऱुदल् शॆव्वि दन्ऱाल्
माऱ्ऱा नॆनत्तन् मुन्नॆक्कॊल्लिय वन्दु निन्ऱान्
वेऱ्ऱार्ह डिऱत्ति वन्ऱञ्जमॆन् वीर वॆन्ऱान् 268

आऱ्ऱातु–शोक न सह सककर; पिन्नुम्–और भी; पकर्वान्–कहते; वीर–वीर; अऱत्तु आऱु–धर्म का मार्ग; अऴुङ्क–नष्ट करते हुए; तेऱ्ऱातु–विवेचन न करके; चॆय्वार्कळै–(बुरे काम) करनेवालों को; तॆऱुतल्–(मित्र) समझना; चॆव्वितु अन्ऱु–ठीक नहीं होगा; तन् मुन्नॆ–अपने ज्येष्ठ को; माऱ्ऱान् ऎन–शत्रु कहकर; कॊल्लिय–मारने के लिए; वन्तु निन्ऱान्–आकर खड़ा है; वेऱ्ऱार्कळ् तिऱत्तु–परायों के प्रति; इवन् तञ्चम्–इसका शरण्यभाव; ऎन्–कैसा होगा; ऎन्ऱान्–(लक्ष्मण) बोले। २६८

लक्ष्मण के लिए यह क्षोभ असहनीय रहा। अपने को शान्त बना नहीं सके। वे आगे बोले— वीर भ्राता! धर्ममार्ग नष्ट करके अविवेकी कार्य करनेवालों को सहायक चुन लेना श्लाघनीय काम नहीं है। यह अपने ज्येष्ठ भ्राता को शत्रु मानकर उसे मारने के निमित्त आ खड़ा है। परायों के प्रति इसका शरण्यभाव कौन सा मूल्य रखेगा? (सर्वशरण्य श्रीराम के सामने सुग्रीव को श्रीराम का शरण्य मानना खलता है। अतः 'तञ्चम्' का अर्थ 'इसका शरण में आना और आपका मानना' —किया जाता है। तब 'परायों के प्रति' —अर्थ नहीं होगा 'पराये हमारी' यह अर्थ होगा।)। २६८

अत्ता विदुहे ळॆनवारियन् कूऱु वानिप्
पित्ताय विलङ्गि नॊऴुक्किनैप् पेश लामो
ऎत्तायर् वयिऱ्ऱि नुम्बिन्पिऱन् दोर्ह ळॆल्लाम्
ऒत्ताऱ् परदन् पॆरिदुत्तम नाद लुण्डो 269

अत्ता–तात; इतु केळ्–यह सुनो; ऎन–ऐसा; आरियन्–महिमावान श्रीराम; कूऱुवान्–बोलने लगे; पित्तु आय–पागल; इ विलङ्किन्–इस मृगप्राय के; ऒऴुक्किनै–चरित्र को; पेचल् आमो–चर्चा योग्य मानेंगे क्या; ऎ तायर्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किसी भी माता की; वयिऱ्ऱिनुम्–कोख में; पिऩ् पिऱन्तोर्कळ्–अनुज के रूप में उत्पन्न; ऍल्लाम्–सभी की; ऒत्ताल्–तुलना करें तो; परतऩ्–भरत के समान; पॅरितु उऩ्तमऩ्–बहुत श्रेष्ठ; आतल्–बननेवाले; उण्टो–कोई हैं क्या। २६९

तब महिमावान श्रीराम ने लक्ष्मण को समझाया कि तात! यह सुनो। ये पागल और मृगप्राय हैं। उनके चरित्र चर्चा के विषय बन सकेंगे क्या? (नहीं।) (किसी भी माता से उत्पन्न अनुज जब अपने अग्रजों से हेल-मेल के साथ रहें तो भरत बहुत उत्तम माना जायगा क्या? —यह सीधा अर्थ लगता है। पर हेय लगता है। इसलिए यह अर्थ किया गया है—) अगर किसी भी माता से उत्पन्न सभी अनुजों की भरत से तुलना की जाय तो भरत के समान उत्तम कोई पाया जायगा क्या? । २६९

विऱ्ऱाङ्गु वॅऱ्पऩ् ऩविलङ्गॅऴिऱ् ऱोळ मॅय्म्मै
उऱ्ऱार् शिलरल् लवरेपल रॅऩ्ब दुण्मै
पॅऱ्ऱा रुऴैप्पॅऱ ऱपयऩ्पॅऱुम् पॅऱ्ऱि यल्लाल्
अऱ्ऱार् नवैयॅऩ् ऱलुक्काहुन रार्हॊ लॅऩ्ऱान् 270

विल् ताङ्कु–धनु धारण करनेवाले; वॅऱ्पु अऩ्त–पर्वत-सम; इलङ्कु–वर्तमान; ऍऴिल्–सुन्दर; तोळ–भुजा वाले; मॅय्म्मै उऱ्ऱार्–सचमुच बड़प्पन के रखनेवाले; चिलर्–थोड़े हैं; अल्लवरे–जो नहीं; पलर्–वे अनेक हैं; ऍऩ्पतु–यह मसल; उण्मै–सत्य है; पॅऱ्ऱार् उऴै–(मित्र-रूप में) प्राप्त लोगों के पास; पॅऱ्ऱ पयऩ्–प्रापनीय हित की; पॅऱुम्–प्राप्त; पॅऱ्ऱि अल्लाल्–उपलब्धि के सिवा; नवै अऱ्ऱार्–दोषरहित हैं; ऍऩ्ऱलुक्कु–ऐसा कहने योग्य; आकुतर्–बननेवाले; आर् कॊल्–कौन हैं; ऍऩ्ऱान्–कहा। २७०

धनुर्धारी पर्वततुल्य सुन्दर भुजा वाले! दुनिया में सच्चे (श्रेष्ठ आचरणशील) मनुष्य कम हैं। इसके विपरीत रहनेवाले ही अधिक संख्या में हैं। यह मसल सत्य है। मित्र के पास प्राप्य हित जो होगा उसे लेना है। वही लाभ है। उसे छोड़कर दोष देखना आरम्भ करो तो दोषहीन कहलाने योग्य कौन हैं इस संसार में? । २७०

वीरऩ् तिऱलो रिवरिऩ्ऩ विळम्बुम् वेलै
तेरिऱ् ऱिरिवान् महऩिन्दिरऩ् शॅम्म लॅऩ्ऱिप्
पारिऱ् ऱिरियुम् बऩिमाल्वरै यऩ्ऩ पण्बार्
मूरिऩ् तिशैया ऩैयिरण्डॅऩ मुट्टि ऩारे 271

वीरम् तिऱलोर् इवर्–वीर और बलिष्ठ ये; इऩ्ऩ विळम्पुम् वेलै–जब ऐसा बोलते रहे, तब; तेरिल् तिरिवाऩ्–रथचारी; मकऩ्–(सूर्य का) पुत्र; इऩ्तिरऩ् चॅम्मल्–इन्द्र का पुत्र; ऍऩ्ऱु–कहलानेवाले; इ पारिल्–इस भूमि पर; तिरियुम्–संचार करते हुए; पऩिमाल् वरै–हिमाच्छादित बड़े पर्वतों के-से; पण्पार्–रूप वाले; मूरि–बलवान; तिचै यानै–दिग्गज; इरण्टु–दो; ऍऩ–जैसे; मुट्टिऩार्–आपस में भिड़े। २७१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ये दोनों बलिष्ठ वीर आपस में ऐसी बातें कर रहे थे। तब रथचारी सूर्य का पुत्र सुग्रीव और इन्द्र का पुत्र वाली दोनों भूतल पर संचार करनेवाले हिमपर्वत के समान दिखते हुए दो बलवान दिग्गजों के समान आपस में भिड़े। २७१

कुन्ऱोडु कुन्ऱॊत् तन्ऱ्कोळरि कॊऱ्ऱ वल्ले
ऱॊन्ऱोडु शॆन्ऱॊन् ऱॆदिरुऱ्ऱन्न वेयु मॊत्तार्
निन्ऱार् तिरिन्दार् नॆडुञ्जारि निलन्दि रिन्द
वन्ऱोट् कुयवन् ऱिरिमट्कलत् ताऴि यॆन्न 272

कुन्ऱु ऒटु–पर्वत के साथ; कुन्ऱु–पर्वत (टकराता हो); ऒत्तन्ऱ्–ऐसे रहे; कॊऱ्ऱ–विजयी; वल्–बलिष्ठ; एऱु कोळरि–(नर) सिंह; ऒन्ऱोटु ऒन्ऱु–परस्पर; ऎतिर् चॆन्ऱु–सामने आकर; उऱ्ऱन्नवेयुम्–भिड़ने लगे; ऒत्तार्–ऐसे; निन्ऱार्–रहते हुए; नॆटुम् चारि–(दायें और बायें) दूर-दूर तक चक्कर लगाये; वल् तोळ्–बलवान कन्धों के; कुयवन् तिरि–कुम्हार के घुमाये हुए; मण् कलत्तु–मिट्टी के बर्तन बनाने के; आऴि अन्न्त–चक्र के समान; निलम्–भूमि (के जीव) तिरिन्त–डगमगायी (अस्त-व्यस्त हुए)। २७२

दो पर्वत टकराते जैसे, विजयी, ताकतवर दो सिंह आपस में भिड़ते जैसे दोनों दायें और बायें घूमे। तब बलवान कन्धों के कुलाल से घुमाए हुए मृत्पात्र के समान भूमि चक्रित हुई। भूमि के वासी डगमगा गये। २७२

तोळोडु तोडॆय्त् तलिऱ्ऱॊन्ऱिलन् दाङ्ग लाऱ्ऱात्
ताळोडु ताडॆय्त् तलिऱ्ऱन्द तऴऱ्पि ऱुङ्गल्
वाळोडु मिन्ऩो डुवपोऩॆडु वाऩि ऩोडुम्
कोळोडु कोऴुऱ् ऱन्नॊत्तडर्त् तार्हॊ दित्तार् 273

तोळ् ऒटु–(एक के) कन्धे के साथ; तोळ् तेय्त्तलिल्–(दूसरे का) कन्धा टकराता तो; तॊल् निलम्–पुरातन भूमि; ताङ्कल् आऱ्ऱा–सहन कर नहीं सके, ऐसा; ताळ् ऒटु ताळ्–पैर से पैर; तेय्त्तलिन्–टकराता, इस कारण; तन्त–उत्पन्न; तऴल् पिऱङ्कल्–अग्निपुंज; वाळ् ऒटु–प्रकाश के साथ; मिन् ओटुव पोल्–विद्युत चलती जैसे; नॆटु वानिन्–विशाल गगन में; ओटुम्–सवेग चलनेवाले; कोळ् ऒटु कोळ्–ग्रह के साथ ग्रह; उऱ्ऱन ऒत्तु–टकराते जैसे; कॊतित्तार्–उबले; अटर्न्तार्–लड़े। २७३

उनके कन्धे भिड़े। पुरातन भूमि को भी असह्यता का अनुभव दिलाते हुए उनके पैर आपस में टकराये। तब अग्नि का पुंज उठा। वह विस्तृत आकाश में बिजली के समान सवेग व्याप चला। वे दो ग्रहों के समान आपस में बहुत क्रोध के साथ लड़े। २७३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तन्दोळ् वलिमिक् कवर्तामॊरु ताय्व यिऱ्ऱिन्
वन्दोर् मडमङ् गैपॊरुट्टु मलैद लुऱ्ऱार्
शिन्दो डरियुण्कट् टिलोत्तमै कादऱ् चॆऱ्ऱ
सुन्दोब सुन्दप् पॆयर्त्तॊल्लैयि न्नोरु मॊत्तार् 274

तम् तोळ् वलि-(अपने) अपने भुजबल में; मिक्कवर्-बढ़े हुए; ताम ऒरु ताय् वयिऱ्ऱिन्-दोनों एक ही माता की कोख से; वन्तोर्-जनित; मट मङ्कै पॊरुट्टु-एक बाला स्त्री के कारण; मलैतल् उऱ्ऱार्-गुथने लगे, वे; चिन्तु ओटु-सिंधु को हराने (भगाने) वाले; अरि-लाल डोरों से युक्त; उण् कण्-अंजनयुक्त; नेत्रों वाली; तिलोत्तमै-तिलोत्तमा के; कातल्-प्रेम के कारण; चॆऱ्ऱ-जो लड़े; चुन्त उपचुन्त पॆयर्-सुन्द-उपसुन्द नाम के; तॊल्लैयिन्नोरुम्-प्राचीन राक्षसों की भी; ऒत्तार्-समानता करते थे। २७४

वे दोनों भुजबल में बढ़े हुए थे। दोनों एक ही माता की कोख से जने थे। अब वे एक बाला स्त्री (रूमा) के निमित्त लड़ते हुए सुन्द-उपसुन्द के समान दिखे, जो लाल डोरों से युक्त और अंजनभूषित आँखों वाली तिलोत्तमा के निमित्त आपस में लड़े थे। (इसका वृत्तान्त यों है— ये दोनों हिरण्यकशिपु के वंश में आये दानव थे। वे लोकों को बहुत त्रस्त करते थे। महाविष्णु ने विश्वकर्मा द्वारा तिलोत्तमा नाम की अप्सरा को सृष्ट कर इनके पास भेजा। ये दोनों उस पर आसक्त हुए। तिलोत्तमा ने कहा कि मैं तुम दोनों में श्रेष्ठतर बलशाली से विवाह कर लूँगी। दोनों आपस में लड़कर मर गये।)। २७४

कडलॊन् ऱिन्नॊडॊन् ऱुमलैक्कवुङ् गावन् मेरुत्
तिडलॊन् ऱिन्नॊडॊन् ऱमर्शॆय्यवुञ् जीऱ्ऱ मॆन्ब
दुडल्हॊण् डिरणडाहि युडऱ्ऱवुङ् गण्डि लादेम्
मिडलिङ् गिवर्वॆन् दॊळिऱ्कॊप्पन्न वेऱु काणेम् 275

कटल् ऒन्ऱिन् ऒटु ऒन्ऱु-एक समुद्र दूसरे समुद्र के साथ; मलैक्कवुम्-टकराये; कावल्-भूमि का रक्षक; मेरु तिटल्-मेरुपर्वत; ऒन्ऱिन्नॊटु ऒन्ऱु-(दो भाग बनकर) आपस में; अमर् चॆय्यवुम्-लड़े; चीऱ्ऱम् ऎन्पतु-कोप नाम का गुण; इरण्टाकि-दो भागों में बँटकर; उटल् कॊण्टु-(मानव-) शरीर लेकर; उटऱ्ऱवुम्-एक दूसरे को सताएँ; कण्टिलातेम्-नहीं देखा, ऐसे हम; इङ्कु-यहाँ; इवर्-इनके; मिटल् वॆम् तॊळिऱ्कु-कठोर साहसपूर्ण युद्धकृत्य की; ऒप्पन्न-समता करनेवाले; वॆऱु काणेम्-कुछ नहीं देखते। २७५

हमने दो समुद्रों को आपस में टकराता नहीं देखा है। मेरुपर्वत का दो भाग बनकर आपस में भिड़ना नहीं देखा है। न ही कोप को दो भागों में बँटकर परस्पर गुँथते देखा है। और इन साहसी वीरों के युद्धकार्य की उपमाएँ भी नहीं देखते। २७५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऊहङ् गळिऩा यहर्वङ्ग णुमिऴ्न्द तीयाल्
मेहङ् गळ्करिन् दऩवॅऱ्पु मॅरिन्द तिक्किन्
नाहङ् गणडुङ् गिऩनाऩिल मुङ्गु लैन्द
माहङ् गळैनण्णिय विण्णवर् पोय्म ऱैन्दार् 276

ऊकङ्कळिऩ्–वानरों के; नायकर्–नायकों की; वॅम् कण्–उग्र आँखों की; उमिऴ्न्त–उगली; तीयाल्–आग से; मेकङ्कळ् करिन्तऩ–मेघ झुलस गये; वॅऱ्पुम् ॲरिन्त–पर्वत जल गये; तिक्किऩ्–दिशाओं के; नाकङ्कळ्–हाथी; नटुङ्कित–काँप उठे; नाऩिलमुम्–चतुर्विधा भूमि भी; कुलैन्त–अस्त-व्यस्त हुए; माकङ्कळै–आकाशलोकों में; नण्णिय–वास करनेवाले; विण्णवर्–स्वर्गवासी; पोय् मऱैन्तार्–(कहीं) जाकर छिप गए। २७६

उन वानरनायकों की भयानक आँखों से जो आग निकली, उससे मेघ झुलस गये। पर्वत जल गये। दिग्गज काँपे। चतुर्विधा भूमि थर्रायी। आकाशवासी देव कहीं जाकर छिप गये। २७६

विण्मे लिऩरो नॅडुवॅऱ्पिऩ् मुहट्टि ऩारो
मण्मे लिऩरो पुऱमादिर वीदि यारो
कण्मे लिऩरो वॅऩयावरुङ् काण निन्ऱार्
पुण्मे लिरत्तम् पॊडिप्पक्कडिप् पार्पु डैप्पार् 277

विण् मेलिऩरो–व्योम के ऊपर के हैं; नॅटु वॅऱ्पिऩ्–बड़े पर्वत के; मुकट्टिऩारो–शिखर के हैं; मण् मेलिऩरो–भूतल के हैं; पुऱम्–बाह्य; मातिरम्–दिशाओं की; वीतियारो–वीथियों के हैं; कण् मेलिऩरो–(हमारे) दृष्टिपथ के हैं; ॲऩ–ऐसा; यावरुम्–सबके; काण–दृष्टिगोचर होते हुए; निन्ऱार्–(घूमते) रहनेवाले; पुण् मेल्–व्रणों पर; इरत्तम्–रक्त; पॊटिप्प–ढलकाते; कटिप्पार्–काटते; पुटैप्पार्–पीटते (लड़ते)। २७७

सभी जगह रहनेवालों ने उन्हें अपने-अपने स्थान पर देखा। तो यह सन्देह उठा कि क्या वे आकाश में रहकर लड़ रहे हैं? या बड़े पर्वत के शिखर पर? या भूमि पर? या अण्ड के बाहर की वीथियों पर? या हमारी ही दृष्टि के पथ में रहकर लड़ रहे हैं? ऐसा लड़ते हुए उन्होंने परस्पर एक दूसरे को काटा और पीटा। तब गम्भीर व्रण हुए और उन पर रक्त ढलक आया। २७७

एऴॊत् तुलहन् दिशैयॅट्टॊ डिरण्डु मुट्टि
आऴिक् किळरार् कलिक्कॅम्मडङ् गार्प्पि ऩोदै
पाऴित् तडन्दो ळिऩमार्बिनुङ् गैहळ् पाय
ऊऴिक् किळर्हा रिडियॊत्तदु कुत्तु मोदै 278

आर्प्पिऩ् ओतै–उनके गर्जन का स्वर; उलकम् एऴ्–सातों लोकों में; ऒत्तु–जैसे; तिचै–दिशाओं; ॲट्टु ओटु इरण्टुम्–आठ और दो (दस) में; मुट्टि–जा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

टकराकर; आळि किळर्–समुद्र की उमड़ से; आर् कलिक्कु–उत्पन्न उच्च स्वर से; ऐम्मटङ्कु–पाँच गुना (अधिक था); पाळि–सारयुक्त; तटम् तोळितुम्–विशाल कन्धों पर; मार्पितुम्–वक्ष पर; कैकळ् पाय–हाथों को चलाते हुए; कुत्तुम् ओतै–घूंसा मारने से उत्पन्न ध्वनि; ऊळि किळर्–युगान्त में उठनेवाले; कार् इटि–मेघों के गर्जन; ओत्तत्तु–के समान थी। २७८

उन्होंने नारे लगाये। गर्जन किया। वह स्वर सातों लोकों में व्याप्त हुआ। वैसे ही वह आठों दिगन्तों से जा टकराया। उमड़नेवाले सागर की ध्वनि से वह स्वर पाँच गुना अधिक था। हाथ चलाकर उन्होंने आपस में कन्धों पर और वृक्षों पर घूंसा मारा। वह स्वर युगान्त में घुमड़नेवाले बादलों के वज्र के समान था। २७८

वॆव्वा यॆयिऱ्ऱान् मिडल्वीरर् कडिप्प मीच्चॆन्
ऱव्वा यॆळुशो रिहळाशॆह डोऱम् वीश
ॲव्वा युमॆळुन् दहॊळुञ्जुडर् मीन्गळ् याबुम्
शॆव्वा यॆनिहर्त् तन्नशॆक्करै यॊत्त मेहम् 279

मिटल् वीरर्–बलिष्ठ वीरों के; वाय् वॆम् ॲयिऱ्ऱाल्–अपने-अपने मुख के भयानक दाँतों से; कटिप्प–काटने से; अ वाय्–उन मुखों से; ॲळु–निकलनेवाला; चोरि–रक्त; मी चॆन्ऱु–ऊपर जाकर; आचॆकळ् तोऱम्–दिशा-दिशा में; वीच–व्याप्त हुआ, तब; ॲ वायुम्–कहीं भी; ॲळुन्त–उदित; कॊळुम् चुटर्–विपुल कान्ति के; मीन्कळ् यावुम्–नक्षत्र सभी; चॆव्वायै–मंगल ग्रह; निकर्त्तत–के समान लगे; मेकम्–मेघ; चॆक्करै ओत्त–लाल गगन के समान लगे। २७९

उन बलिष्ठ वीरों ने अपने-अपने मुख के भयानक दाँतों से एक दूसरे को काटा। तब रक्त जो बह आया, आकाश में उछलकर सभी दिशाओं में फैल गया। उससे विपुल प्रकाशमय नक्षत्र, जहाँ कहीं भी उदित हुए, मंगलग्रह के समान (लाल) हो गये। मेघ भी लाल (सन्ध्या-) गगन के समान बन गये। २७९

वॆन्द वल्लिरुम् बिडॆनॆडुङ् गूडङ्गळ् वीळच्
चिन्दि यॆङ्गणुञ् जिदऱुव पोऱ्पॊऱि तॆऱिप्प
इन्दि रन्महन् पुयङ्गळु मिरविशे युरन्तुम्
शन्द वन्नॆडुन् दडक्कैह डाक्कलिऱ् ऱहर्व 280

वॆन्त–खूब तप्त; वल्–घने; इरुम्पु इटै–लोहे पर; नॆटु कूटङ्कळ्–बड़े हथौड़ों के; वीळ–पीटने से; पॊऱि तॆऱिप्प–अंगारे छूटते; ॲङ्कणुम् चिन्ति–सब ओर गिरते; चितऱुव पोल्–छितरते हैं जैसे; इन्तिरन् मकन्–इन्द्रपुत्र के; पुयङ्कळुम्–कन्धे और; इरवि चेय्–रविकुमार का; उरन्तुम्–वक्ष; चन्तम्–सुन्दर; वल्–ताकतवर; नॆटुम् तटम् कैकळ्–लम्बे विशाल हाथों के; ताक्कलिल्–प्रहारों से; तकर्व–(पिटकर) खण्ड-खण्ड हुए। २८०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जब खूब तप्त लोहे पर भारी हथौड़ों की चोटें पड़ती हैं, तब लोहे के छोटे-छोटे तप्त कण चारों ओर उड़ते हैं। वैसे ही इन्द्रपुत्र के कन्धों से और सूर्यसूनु के वक्ष से, उनके आपस की बलिष्ठ सुन्दर हाथों की चोटों के कारण, अंश छूटकर उड़ने लगे। २८०

उरत्ति नान्मडुत् तुन्दुवर् पादमिट् टुदैप्पर्
करत्ति नाल्विशैत् तॅऱ्ऱुवर् कडिप्पर्निन् ऱिडिप्पर्
मरत्ति नालडित् तुरप्पुवर् पॊरुप्पिनम् वाङ्गिच्
चिरत्तिन् मेलॅऱिन् दोऱुक्कुवर् तॅऴिप्पर्ती विऴिप्पर् 281

उरत्तिनाल्—छाती से; मटुत्तु—टकराकर; उन्तुवर्—ढकेलते; पातम् इट्टु—पैर बढ़ाकर; उतैप्पर्—लात मारते; करत्तिनाल्—हाथों से; विचैत्तु—वेग के साथ; ॲऱ्ऱुवर्—ठेलते; कटिप्पर्—काटते; निन्ऱु—अड़कर; इटिप्पर्—टकराते; मरत्तिनाल्—तरुओं से; अटित्तु—पीटकर; उरप्पुवर्—चिल्लाते; पॊरुप्पु इनम्—गिरि-समूह; वाङ्कि—उखाड़ लेकर; चिरत्तिन् मेल्—सिरों पर; ॲऱिन्तु—फेंककर; ऒऱुक्कुवर्—दण्ड देते; तॅऴिप्पर्—नारे लगाते; ती विऴिप्पर्—आग्नेय दृष्टि करते। २८१

वे एक दूसरे को अपनी छाती से टकराकर ढकेलते; पैरों से लात मारते; हाथों से वेग के साथ पीटते। दाँतों से काटते। खड़े होकर धक्का देते। तरुओं से पीटकर चिल्लाते। पर्वतसमूह लेकर सिर पर फेंककर दण्डित करते। गर्जन करते। अग्नि के समान लाल आँखों के साथ तरेरते। २८१

ॲडुप्पर् पऱ्ऱियुऱ् ऱॊरुवरै यॊरुवर्विट् टॅऱिवर्
कॊडुप्पर् वन्दुरङ् गुत्तुवर् कैत्तलङ् गुळिप्पक्
कडुप्पि निऱ्पॅरुङ् गऱङ्गॆनच् चारिहै पिऱङ्गत्
तडुप्पर् पिन्ऱुव रॊन्ऱुवर् तळुवुवर् विऴुवर् 282

ऒरुवरै ऒरुवर्—एक दूसरे को; पऱ्ऱि उऱ्ऱु—पकड़ लेकर; ॲटुप्पर्—उठाते; विट्टु ॲऱिवर्—दूर फेंकते; उरम्—छाती; वन्तु—आकर; कॊटुप्पर्—आगे करते; कै तलम् कुळिप्प—हाथों को (मुट्ठियों को) धँसाते हुए; कुत्तुवर्—घूंसा मारते; कटुपिपित्तिल्—अतिवेग से; पॆरु कऱङ्कु ॲत्त—बड़े वातचक्र के समान; चारिकै पिऱङ्कु—दायें और बायें पैंतरे बदलते हुए; तटुप्पर्—रोकते; पिन्ऱुवर्—पीछे हटते; ऒन्ऱुवर्—गुंथे रहते; तळुवुवर्—लपेट लेते; विऴुवर्—नीचे गिरते। २८२

वे एक दूसरे को पकड़ लेते और दूर फेंकते। सामने आकर छाती आगे करते। ऐसा घूँसा देते कि मुट्ठियाँ ही शरीर के अन्दर धँस जायँ। प्रबल वातचक्र के समान वे पैंतरे बदलते और रोकते। कभी पीछे हटते; कभी गुँथ जाते, चपेट में लेते और नीचे गिर जाते। २८२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वालि नालुरम् वरिन्दनर् नॅरिन्दुह वलिप्पर्
कालि नानॅडुङ् गाल्पिडित् तुडर्रुवर् कळल्वर्
वेलि नालुर वॅरिन्दन विरल्वलि युहिराल्
तोलि नाक्कैह णॅडुवरै मुळैयॅनत् तॊळैप्पर् 283

वालिनाल्–पूँछ से; उरम् वरिन्तनर्–वक्ष लपेटकर; नॅरिन्तु उक–दलककर गिरने देते हुए; वलिप्पर्–खींचते; कालिनाल्–पैर से; नॅटु काल्–लम्बे पैर को; पिटित्तु–मरोड़, पकड़कर; उटर्रुवर्–पीड़ा देते; कळल्वर्–उस बन्धन से बच जाते; वेलिनाल्–भाले को; उर ॲरिन्तनन–खूब गड़ाकर फेंका गया हो, ऐसा; विरल् वलि–अति कठोर; उकिराल्–नाखूनों से; तोलिन्–चमड़े से ढके; आक्कैकळ्–शरीरों पर; नॅटु वरै मुळै–बड़ी पर्वत-गुफाओं; ॲन–के समान; तॊळैप्पर्–छेद बना देते। २८३

एक दूसरे की छाती को अपनी पूँछ से लपेट लेकर ऐसा खींचते कि शरीर ही दलककर चू जाय! पैरों से पैर पकड़कर खींचते और दुःख देते। पकड़ से बच जाते। शक्ति के प्रहार के समान अपने तेज कठोर नाखूनों को चलाकर चमड़े-मढ़े उनके शरीरों पर छेद ही लगा देते, जो पर्वत की गुफाओं के समान दिखते। २८३

मण्ण हत्तन मलैहळु मरङ्गळु मर्रुम्
कण्ण हत्तिनिर् रोन्रिय यावैयुङ् गैयाल्
ॲण्ण हप्परित् तॅरिदलि नॅर्रलि निर्र
विण्ण हत्तिनै मरैत्तन मरिहडल् वीळ्न्द 284

मण् अकत्तन–पृथ्वी के; मलैकळुम्–पर्वतों; मरङ्कळुम्–और तरुओं को; मर्रुम्–और; कण् अकत्तिनिल्–दृष्टिपथ में; तोन्रिय–प्रकट; यावैयुम्–सभी को; कैयाल्–हाथों से; ॲण् नक–गिनती को परिहास करते हुए (अनगिनत); परित्तु–तोड़ लेकर; ॲरितलिल्–एक दूसरे पर फेंकते; ॲर्रलिल्–प्रहार करते, इसलिए; इर्र–टूटे वे; विण्णकत्तिनै–व्योममण्डल को; मरैत्तन–ढकनेवाले; मरि कटल्–उठकर गिरनेवाली तरंगों से युक्त सागर में; वीळ्न्त–गिरनेवाले बने। २८४

वे भूमि के हों, या आकाश के सभी पर्वतों और तरुओं और दृष्टि में पड़नेवाले सारे पदार्थों को तोड़कर उठा लेते और फेंकते। ऐसे पदार्थों की संख्या गिनती में ही न आ सकती थी। उनके शरीरों से लगकर वे टूट जाते और आकाश को ढकनेवाले या उठकर गिरनेवाली तरंगों से युक्त सागर में गिरनेवाले बन जाते थे। २८४

वॅरुविच् चाय्न्दनर् विण्णवर् वेरॅन्नै विळम्बल्
ऒरुवर्क् काण्डम रॊरुवरुन् दोर्रिल रुडन्रु
शॅरुविर् रुय्त्तलिर् चॅङ्गनल् वॅण्मयिर्च् चॅल्ल
मुरिपुर कानिडै यॅरिपरन् दनवॅन मुनैवार् 285

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आण्टु अमर्–वहाँ के युद्ध में; ऒरुवरुम्–कोई; ऒरुवर्क्कु–किसी से; तोऱ्ऱिलर्–नहीं हारा; उटनूऱ–कष्ट उठाकर; चॆरुविल्–युद्ध में; तुयत्तलिल्–मग्न रहे, इसलिए; चॆम् कनल्–लाल कोपाग्नि; वॆण् मयिर्–उनके (शरीर के) श्वेत रोमों द्वारा; चॆल्ल–प्रकट हुई, इसलिए; मुरि पुल्–सूखी घास के; कान् इटॆ–वन में; ऍरि परन्तत–आग फैल गयी; ऍत–जैसे; मुनैवार्–लड़े; विण्णवर्–व्योमवासी; वॆरुवि–डरकर; चाय्न्ततर्–अस्थिर हुए; वेऱु विळम्पल्–अलावा कहना; ऍन्नै–क्या। २८५

तब जो युद्ध हुआ, उसमें कोई किसी से न हारा। एक दूसरे को पीड़ा देते हुए स्वयं कष्ट उठाकर लड़ रहे थे। तब कोपाग्नि उनके श्वेत बालों पर बाहर दिखाई दे रही थी। तब सूखी घास के वन में आग फैल रही हो, ऐसा दृश्य उपस्थित हो रहा था। वे इस भाँति युद्ध कर रहे थे। उसको देखकर व्योमवासी देव भी भय से अस्थिर हो गये। फिर इस लड़ाई का और कैसा वर्णन किया जाय ?। २८५

अन्न तन्मैय राऱ्ऱलि नमर्पुरि पॊळुदिन्
वन्नॆ डुन्दडत् तिरळ्पुयत् तडुदिऱल् वालि
शॊन्न तम्बियैत् तुम्बियै यरितॊलैत् तॆन्न
कॊन्न हङ्गळिऱ् करङ्गळिऱ् कुलैन्दुह मलैन्दान् 286

अन्न–ऐसे; तन्मैयर्–रंग-ढंग के वे; आऱ्ऱलिन्–बल लगाकर; अमर् पुरि पॊळुतिन्–जब लड़े, तब; वल्–बलवान; नॆटु–लम्बे; तटम्–विशाल; तिरळ्–स्थूल; पुयत्तु–भुजा वाले; अटु तिऱल्–शत्रुसंहारक बलशाली; वालि–वाली ने; चॊन्न तम्पियै–जिसने ललकार सुनाई, उस लघु भाई से; तुम्पियै–हाथी को; अरि–सिंह; तॊलैत्तु ऍन्न–जैसे मिटा देगा वैसे; कॊल् नकङ्कळिल्–घातक नाखूनों से; करङ्कळिल्–व हाथों से; कुलैन्तु उक–जर्जर हो गिर जाए, ऐसा; मलैन्तान्–युद्ध किया। २८६

जब ऐसे रंग-ढंग के वाली और सुग्रीव अपना सारा बल लगाकर लड़ रहे थे तब बलवान, लम्बे, विशाल और स्थूल हाथों वाला वाली सुग्रीव से, जिसने उसको ललकारा था, इस तरह लड़ा जैसे एक सिंह हाथी का बल मिटाता है। उसने अपने कठोर घातक नाखूनों और हाथों से सुग्रीव पर प्रहार करते हुए लड़ाई की। तब सुग्रीव निर्बल होकर गिर गया। २८६

[इसके बाद तीन अतिरिक्त पद हैं, जिनका सार है— वाली के प्रहारों से जर्जर होकर सूर्यसूनु प्रभु श्रीराम के पास गया और क्षोभ के साथ उलाहना की। प्रभु ने कहा कि मुझे भेद नहीं दिखाई दिया। अब पुष्पित लता पहनके जाओ। दुःखो मत।

सिर पर नक्षत्र-माला जैसा पुष्पहार पहने हुए सुग्रीव व्याघ्र के समान वज्रनाद को मात देनेवाले गर्जन के साथ युद्ध करने आया और शत्रुतप वाली को मुट्ठी से मारकर त्रस्त कर दिया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शंकितमन वाली ने गुस्से के साथ ऐसा घूरा कि यम भी डर गया। फिर मन्दहास के साथ उसने अपने हाथों और पैरों से सूर्यपुत्र के मर्मस्थलों पर ऐसा प्रहार किया कि सुग्रीव मूर्च्छित हो गया।

ध्यान से देखने पर पता चलेगा कि तीनों पद क्षेपक हैं। किसी वाल्मीकी-भक्त तमिळ-विद्वान् द्वारा बनाये गये हैं। कथा के रवैये को ये साफ़ रोकते हैं।]

कक्कि नानुयि रुयिर्प्पॊडुञ् जॆविहळिऱ् कण्णिन्
उक्क ताङ्गॆरिप् पडलैयो डुदिरत्ति नोदम्
तिक्कु नोक्कितन् शॆङ्गदि रोन्महन् शॆरुक्किप्
पुक्कु मीक्कॊडु नॆरुक्कित निन्दिरन् पुदल्वन् 287

आङ्कु–तब; चॆम् कतिरोन् मकन्–किरणमाली के पुत्र ने; उयिर्प्पॊटुम्–निःश्वास के साथ; उयिर्–प्राणों को; कक्कितान्–उगला; चॆविकळिल्–कानों; कण्णिल्–व आँखों से; उतिरत्तिन् ओतम्–रक्त का प्रवाह; ऍरि पटलै ओटु–अग्निपटल के साथ; उक्कतु–निकला और बूँदें छिड़कीं; तिक्कु नोक्कितन्–सारी दिशाओं में दृष्टि दौड़ायी; इन्तिरन् पुतल्वन्–इन्द्र-पुत्र वाली ने; चॆरुक्कि–आवेग के साथ; मी कॊटु पुक्कु–और भी उसके पास जाकर; नॆरुक्कितन्–कष्ट दिया। २८७

तब सुग्रीव का दम फूल गया। प्राण निकलने लगे। कानों और आँखों से रक्त का प्रवाह अग्निपटल के साथ निकलकर बहा। वह सारी दिशाओं में दृष्टि दौड़ाने लगा। तब इन्द्रपुत्र वाली ने आवेग के साथ उसके पास जाकर और भी यंत्रणा दी। २८७

ऍडुत्तुप् पारिडै यॆऱ्ऱुवॆन् पऱ्ऱियॆन् ऱिळवल्
कडित्त लत्तिनुङ् गळुत्तिनुन् दन्निरु करङ्गळ्
मडुत्तु मीक्कॊण्ड वालिमेऱ् कोलॊन्ऱु वाङ्गित्
तॊडुत्तु नाणॊडु तोळुऱुत् तिराहवन् ऱुऱन्दान् 288

पऱ्ऱि ऍटुत्तु–पकड़कर उठाकर; पार् इटै–भूमि पर; ऍऱ्ऱुवॆन्–पटक दूँगा; ऍन्ऱु–कहकर; इळवल्–छोटे भाई को; कटि तलत्तिनुम्–कमर में; कळुत्तिनुम्–व गले में; तन् इरु करङ्कळ् मटुत्तु–अपने दोनों हाथों को देकर; मी कॊण्ट (सुग्रीव को) जिसने ऊपर उठाया; वालि मेल्–उस वाली पर; इराकवन्–श्रीराघव ने; कोल् ऍन्ऱु वाङ्कि–एक बाण लेकर; तॊटुत्तु–धनुष पर संधानकर; नाण् ऍटु–डोरे के साथ; तोळ् उऱुत्तु–कन्धा मिले, ऐसा डोरा खींचकर; तुरन्तान्–चलाया। २८८

तब वाली ने सोचा कि इसको उठाकर भूमि पर पटक दूँ। इसलिए उसने सुग्रीव की कमर पर एक हाथ और कन्धे पर एक हाथ देकर उसे उठा लिया। तभी श्रीराम ने एक बाण लेकर धनु में रखा, डोरा कन्धे तक खींचकर बाण को छोड़ दिया। २८८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कारुम् वार्शुवैक् कदलियिन् कनियिनैक् कऴियच्
चेरुञ् जूशियिऱ् चॆन्ऱदु निन्ऱदॆन् शॆप्प
नीरु नीर्दरु नॆरुप्पुम्वऩ् कार्ऱुङ्गीऴ् निरन्द
पारुञ् जार्वलि पडैत्तव नुरत्तैयप् पहऴि 289

अ पकऴि–वह बाण; नीरुम्–जल; नीर् तरु नॆरुप्पुम्–जल का जनक अनल; वल् कार्ऱुम्–(उसका जनक) बलवान अनिल; कीऴ्–नीचे; निरन्त–व्याप्त; पारुम्–थल; चार्–इनका सम्मिलित; वलि पटैत्तवऩ्–बल जिसमें था, उस वाली के; उरत्तै–छाती में; कारुम्–पके; वार् चुवै–अति स्वादिष्ट; कतलियिऩ् कनियितै–कदली-फल में; कऴिय चेरुम्–घुस जानेवाली; चूचियिऩ्–सूई के समान; चॆन्ऱतु–शीघ्र घुसा; चॆप्प निन्ऱतु–कहने के लिए रहा जो; ऍऩ्–वह क्या है। २८९

वाली असाधारण रूप से बलवान था। उसमें जल, जल का जनक अनल, उसका जनक अनिल और पृथ्वी —इन सब भूतों का सम्मिलित बल था। ऐसे वाली के वक्ष में वह शर सूई के समान घुसा जो पके और अति स्वादिष्ट कदलीफल में घुस रही हो! अब कहने के लिए क्या बचा है? (इसका यह अर्थ भी किया जा सकता है कि वह रुका। क्या समझाने को रुका?।)। २८९

अलङ्गु तोळ्वलि यऴिन्ददऩ् ऱम्बियै यरुळान्
वलङ्गॊळ् पारिडै यॆऱ्ऱुवा नुऱ्ऱपोर् वालि
कलङ्गि वल्विशैक् काल्हिळर्न् दॆऱिवुरुङ् गडैनाळ्
विलङ्गऩ् मेरुवुम् वेर्पऱिन् दालॆऩ वीऴ्न्दाऩ् 290

अलङ्कु तोळ् वलि–शोभायमान कन्धों का बल; अऴिन्त—जिसका मिट गया; तऩ् तम्पियै–उस अपने भाई को; अरुळाऩ्–दया न दिखाकर; वलम् कॊळ्–कठोर; पार् इटै–भूमि पर; ऍऱ्ऱुवाऩ्–पटकने को; उऱ्ऱ–प्रस्तुत; पोर् वालि–योद्धा वाली; कलङ्कि–हड़बड़ाकर; वल्–प्रबल; विचै काल्–वेगवान पवन; किळर्न्तु–उठकर; ऍऱिवु उऱुम्–सबको (जब) उड़ा देता है; कटै नाळ्–उस युगान्त के दिन में; विलङ्कल् मेरुवुम्–मेरुपर्वत भी; वेर् पऱिन्ताल् ऍऩ्ऩ–जड़ से उखड़ गया हो, ऐसा; वीऴ्न्ताऩ्–नीचे गिरा। २९०

शर के लगने से वह निर्दय वाली गिरा जिसने भुजबल खोकर कष्टग्रस्त अपने भाई को कठोर भूमि पर पटकना चाहा। वह बलवान योद्धा था। वह वाली चक्कर खाकर ऐसा गिरा, मानो युगान्त में, प्रबल रूप से उठकर सभी जीवों व पदार्थों को उखाड़ देनेवाले पवन के आघात से जड़ से उखड़कर मेरुपर्वत गिरा हो। २९०

ऍऴन्दु वाऩ्मुह डिडित्तुहप् पडुप्पलॆऩ् ऱिवरुम्
उऴन्दु पेर्वुऴित् तिशैतिरिन् दिऱुप्पलॆऩ् ऱुऱुक्कुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विळुन्दु पारिनै वॅरॊडुम् पऱिप्पलॅन् ऱोरुम्
अळुन्दु मिच्चर मॅय्दव नार्हॊलॅन् ऱयिर्क्कुम् 291

ऍळुन्तु–उठकर; वान् मुकटु–आकाश-शिखर को; इटित्तु–धक्का देकर; उक पटुप्पल् ऍन्ऱु–गिरा दूंगा, कहते हुए; इवरुम्–ऊपर उठता; उळुन्तु पेर्वु उऴि–उड़द के लुढ़कने की देर में; तिचै तिरिन्तु–चारों दिशाओं में घूमकर; इऱुप्पल् ऍन्ऱु–तोड़-फोड़ डालूंगा, कहते हुए; उऱुक्कुम्–कोप दिखाता; विळुन्तु–नीचे झपटकर; पारिनै–भूमि को; वेर् ऒटुम्–जड़ के साथ; पऱिप्पल्–उखाड़ लूंगा; ऍन्ऱु ओरुम्–यह सोचता; अळुन्तुम्–गड़नेवाला; इ चरम्–यह शर; ऍय्तवन्–चलानेवाला; आर् कॊल्–कौन है तो; ऍन्ऱु–ऐसा; अयिर्क्कुम्–सन्देह करता। २९१

वाली सँभलकर उठा। फिर 'आकाश की चोटी को धक्का देकर गिरा दूंगा' यह कहते हुए उठता। 'उड़द के एक बार घूमने के समय के अन्दर ही सारी दिशाओं में घूमकर सारी वस्तुओं को तोड़-फोड़कर मिटा दूंगा' —ऐसा कहकर अपना गुस्सा दिखाता। 'झपटकर इस भूमि को जड़ से खोद दूंगा' —ऐसा विचार करता। फिर संशय उठाता कि इस तरह मेरी छाती में गड़नेवाले शर का प्रेरक कौन होगा ?। २९१

ऍऱुङ् गैयिनै निलत्तॊडु मॅरिप्पॊऱि पिऱक्कच्
चुऱु नोक्कुऱुञ् जुडुशरत् तैत्तुणैक् करत्ताल्
पऱि वालिनुम् कालिनुम् पल्लिनुम् बरिप्पान्
उऱ्ऱॊ णामैयि नुलैवुऱु मलैयॅन वुरुळुम् 292

कैयितै–हाथ को; निलत्तॊटु–भूमि पर; ऍऱुम्–पीटता; ऍरि पॊऱि–अंगारे; पिऱक्क–छितराते हुए; चुऱुम्–चारों ओर; नोक्कुऱुम्–देखता; चुटु चरत्तै–जलानेवाले उस शर को; तुणै करत्ताल्–दोनों हाथों से; पऱि–पकड़कर; वालिनुम् कालिनुम् पल्लिनुम्–पूंछ से, पैरों से और दाँतों से; पऱिप्पान्–उखाड़ता; उऱु–उखाड़ते; ऒणामैयिन्–न उखड़ने पर; उलैवु उऱुम्–दुःखी होता; मलै ऍन–पर्वत के समान; उरुळुम्–लोटता। २९२

(क्षोभ और क्रोध की दशा में) वह हाथ से धरती को पीटता। आँखों से अंगारे निकालते हुए चारों ओर दृष्टि दौड़ाता। जलानेवाले उस शर को वह पूँछ, हाथों और दाँतों से पकड़कर बाहर खींचने का प्रयास करता। पर उस काम को असाध्य पाकर खीझ उठता। पर्वत के समान भूमि पर लोटता। २९२

देव रोवॅन वयिर्क्कुमत् तेवरिच् चॅयलुक्
काव रोववर्क् काऱ्ऱुलुण् डोवॅनु मयलोर्
एव रोवॅन नहैशॅयु मॊरुवनै यिऱैवर्
मूव रोडुमॊप् पान्शॅय लामॅन मुनियुम् 293

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेवरो–क्या देव हैं; ऍऩ–ऐसा; अयिर्क्कुम्–संशय करता; अ तेवर्–वे देव; इ चॅयलुक्कु–इस काम के लिए; आवरो–(योग्य) होंगे क्या; अवर्क्कु–उनमें; आऱ्ऱल् उण्टो–शक्ति है क्या; ऍऩुम्–पूछता; अयलोर्–दूसरे; एवरो ऍऩ–कौन हैं, कहकर; नकै चॅयुम्–हँस उठता; इऱैवर् मूवरोटुम्–तीनों देवों की; ऒप्पाऩ्–समानता करनेवाले; ऒरुवऩे–उन अकेले देव का; चॅयल् आम्–काम है; ऍऩ–कहकर; मुऩियुम्–कुपित होता। २९३

उसे सन्देह हुआ कि क्या देवों ने यह शर चलाया होगा ? पर क्या देवता लोग ऐसा काम करने को सम्मत होंगे ? उनमें शक्ति भी है ? फिर दूसरे कौन होंगे ? वह हँस उठता। फिर सोचता कि त्रिदेवों के समान बल रखनेवाले, अपार महिमावान, किसी अद्वितीय देव ने ही किया होगा ! यह सोचकर वह कोपवश हो जाता। २९३

नेमि दाऩ्कॊलो नीलहण् डऩ्ऩॆडुञ् जूलम्
आमि दाङ्गॊलो वऩ्ऱॆऩिऱ् कुऩ्ऱुरु वयिलुम्
नाम विन्दिरऩ् वच्चिरप् पडैयुमॆऩ् ऩडुवण्
पोमॆ ऩुन्दुणैप् पोदुमो यादॆऩप् पुऴुङ्गुम् 294

नेमि ताऩ् कॊलो–चक्रायुध (सुदर्शन) ही है क्या; नीलकण्टऩ्–नीलकंठ शिवजी का; नॆटु चूलम्–लम्बा त्रिशूल; इतु आम् कॊलो–यह है क्या; अऩ्ऱु ऍऩिल्–नहीं तो; कुऩ्ऱु उरुवु–(क्रौंच-) पर्वत भेद जो गया; अयिलुम्–(कार्तिकेय की) शक्ति भी; इऩ्ऩिरऩ्–इन्द्र का; नाम–भयानक; वच्चिर पटैयुम्–वज्रायुध भी; ऍऩ् नटुवण्–मेरे बीच से; पोम् ऍऩुम्–जायँ ऐसा; तुणै–उतना; पोतुमो–(सशक्त) बने हैं क्या; यातु–कौन सा है; ऍऩ–यह सोचकर; पुऴुङ्कुम्–व्याकुल होता। २९४

'यह जो मेरी छाती को विद्ध कर रहा है, क्या महाविष्णु का सुदर्शन चक्रायुध है ? या नीलकण्ठ शिवजी का लम्बा त्रिशूल है ? नहीं तो क्रौंच पर्वत को जिसने वेधा, वह कार्तिकेय की शक्ति हो या इन्द्र का भयानक वज्रायुध हो, वे मेरे शरीर के मध्य में भेदकर नहीं जा सकेंगे। यह कौन सा है ?' ऐसा सोचते हुए वाली व्याकुल हुआ। २९४

विल्लि ऩाऱ्ऱुरप् परिदिव्वॆऩ् जरमॆऩ वियक्कुम्
शॊल्लि ऩाऩॆडु मुऩिवरो तूण्डिऩा रॆऩ्ऩुम्
पल्लि ऩाऱ्परिप् पुऱुम्बल हालुन्दऩ् ऩुरत्तैक्
कल्लि यार्प्पॊडु परिक्कुमप् पहऴियैक् कण्डाऩ् 295

तऩ् उरत्तै–अपनी छाती को; कल्लि–छेदकर; आर्प्पु ऒटु–शब्द के साथ; परिक्कुम्–घुस जो रहा; अ मकऴियै–उस बाण को; कण्टाऩ्–देखकर; इ वॆम् चरम्–यह सन्तापक शर; विल्लिऩाल्–धनु द्वारा; तुरप्पु अरितु–प्रेषणीय नहीं है; ऍऩ वियक्कुम्–ऐसा विस्मय करता; चॊल्लिऩाल्–अपने (अमोघ) शब्दों से; नॆटु मुऩिवरो–महर्षियों ने; तूण्टिऩार्–प्रेरित किया क्या; ऍऩ्ऩुम्–सोचता; पल कालुम्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनेक बार; पल्लिन्नाल्–अपने दाँतों से; पऱिप्पुऱुम्–(काट) निकालने का प्रयास करता। २९५

फिर उसने बाण को देख लिया जो उसके कठोर वक्ष को बड़े शब्द के साथ भेद रहा था। उसे आश्चर्य हुआ कि क्या यह बाण किसी धनु द्वारा प्रेषित भी किया जा सकता है? उसने विचार किया कि क्या महर्षियों ने अपने अमोघ (मन्त्र-) वचन से इसे प्रेरित किया? अनेक बार उसने अपने दाँतों से बाहर खींच लेने का प्रयास किया। २९५

शरमॅ नुम्बडि तॅरिन्ददु पलपडच् चलित्तॅन्
उरमॅ नुम्बद मुयिरॊडु मुरुविय वॊऩ्ऱैक्
करमि रण्डिनुम् वालिनुङ् गालिनुङ् गळऱ्ऱिप्
परम नऩ्ऩवऩ् पॅयरऱि हुवॅऩॅनप् पऱिप्पाऩ् 296

चरम् ॲऩुम् पटि तॅरिन्ततु–शर है, ऐसा मालूम हो गया; पल पट–अनेक प्रकार से; चलित्तु ॲऩ्–चंचल होने से क्या (लाभ); उरम् ॲऩुम् पतम्–वक्ष नाम के स्थान को; उयिर् ऒटुम्–मेरे प्राणों के साथ; उरुविय ऒऱ्ऱै–भेद जानेवाले इस अद्वितीय शर को; करम् इरण्टिलुम्–दोनों हाथों से; वालिनुम्–पूंछ से; कालिनुम्–व पैरों से; कळऱ्ऱि–अपनी छाती से निकालकर; परमऩ्–बड़े ही श्रेष्ठ; अऩ्ऩवऩ्–उस (चलानेवाले) का; पॅयर्–नाम; अऱिकुवॅऩ्–जान लूंगा; ॲऩ–सोचकर; पऱिप्पाऩ्–निकालने लगा। २९६

वाली ने कुछ निश्चय किया। 'यह मालूम हो गया कि यह बाण है। तब अनेक प्रकारों से चंचल होने से क्या लाभ होगा? यह शर मेरी छाती को मेरी जान के साथ भेदकर चल रहा है! इस अपूर्व शर को मैं अपनी पूँछ और पैरों का उपयोग करके बाहर खींच लूँगा और उसका नाम देख लूँगा जो परमवीर लगता है।' यह निश्चय करके वह उस बाण को खींचने लगा। २९६

ओङ्ग रुम्पॅरुन् दिऱलुडै मऩऩ्ततुळ् ळऩ्ततऩ्
वाङ्गि नाऩ्मऱ्ऱव् वाळियै याळिपोल् वालि
आङ्गु नोक्किऩ रमररु मवुणरुम् पिऱरुम्
वीङ्गि नार्हडोळ् वीररै यार्विय वादार् 297

याळि पोल्–'याळी' (नामक भयंकर जानवर) की तरह; वालि–वाली ने; ओङ्कु–वर्धनशील; अरुम् पॅरुम्–अपूर्व, बड़ा; तिऱल् उटै–बलसंयुक्त; मऩऩ्ततऩ्–मन वाला; उळ्ळऩ्ततऩ्–जीवट का (जो था); अ वाळियै–उस बाण को; वाङ्किऩाऩ्–जोर से पकड़ लिया; आङ्कु नोक्किऩऱ्–वहाँ देखा; अमररुम्–देवों और; अवुणरुम्–दानवों और; पिऱरुम्–अन्यों ने; तोळ् वीङ्किऩार्कळ्–उनके कन्धे (विस्मय और गर्व से) फूल उठे; वीररै–वीरों की; वियवादार–प्रशंसा न करनेवाले; यार्–कौन हैं। २९७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाली 'याळी' (बहुत ही बलवान अप्राप्य या कल्पित जानवर) के समान बलिष्ठ था। मन का भी बहुत बड़ा साहसी था। बड़ा ही जीवट का था। उसने उस बाण को पकड़कर आगे जाने से रोक दिया। यह बड़ा ही वीरता का काम था। देवों, दानवों और अन्यों ने उसे देखा तो उनकी भुजाएँ भी फूल उठीं। उनके मन में उतनी उमंग भर गयी। हाँ! वीरों को देखकर कौन विस्मय और उमंग से नहीं भरता ? । २९७

❀ वाशत् तारवन् मार्बॆनु मलैवऴङ् गरुवि
ओशैच् चोरियै नोक्किन नुडन्पिऱप् पॆन्नुम्
पाशत् तार्पिणिप् पुण्डवत् तम्बियुम् बशुङ्गण्
नेशत् तारैहळ् शोरितर नॆडुनिलञ् जेर्न्दान् 298

वाचम् तार्–सुबासित माला; अवन्–(पहने हुए) उसके; मार्पु ऍन्नुम्–वक्ष रूपी; मलै वऴङ्कु–पर्वत से निःसृत; अरुवि–सरिता-सदृश; ओचै चोरियै–शब्दायमान रक्त को; उटन् पिऱप्पु–सहोदर के; ऍन्नुम्–उस; पाचत्ताल्–पाश से; पिणिप्पु उण्ट–बद्ध; अ तम्पियुम्–वह भाई (सुग्रीव) भी; नोक्किनन्–देखकर; पचुम् कण्–स्नेहार्द्र आँखों से; नेच तारैकळ्–प्रेम के आँसू; चोरि तर–बहाते हुए; नॆटु निलम् चेर्न्तान्–लम्बी धरती पर गिरा। २९८

सुबासित मालाधारी वाली का वक्ष पर्वत के समान था। उससे रक्त की सरिता बह चली। शोर के साथ बहनेवाले रक्त को सुग्रीव ने देखा। वह सहोदर-प्रेम के पाश से बद्ध था। उसकी प्रेमार्द्र आँखों से बलात् भ्रातृस्नेह-जनित आँसू की धाराएँ बहने लगीं और वह धरती पर लम्बा व चित गिर गया। २९८

❀ परित्त वाळियैप् परुवलित् तडक्कैयाऱ् पऱ्ऱि
इऱुप्पॆ नॆन्ऱुरॊण् डॆऴुन्दनन् मेरुवै यिरण्डाय्
मुरिप्पॆ नॆन्निनू मुरिवदन् ऱामॆन्न मॊऴियाप्
पॊरित्त नामत्तै यऱिहुवा नोक्किनन् पुहऴोन् 299

परित्त वाळियै–(अन्दर) धँसते हुए उस बाण को; परु वलि–अधिक बली; तट कैयाल्–विशाल हाथ से; पऱ्ऱि–पकड़कर; इऱुप्पॆन्–तोड़ूँगा; ऍन्ऱु कॊण्टु–कहते हुए; ऍऴुन्ततन्–उठा; मेरुवै–मेरु को; इरण्टाय्–दो (टुकड़ों) में; मुरिप्पॆन् ऍन्निनुम्–तोड़ सकता हूँ, तो भी; मुरिवतु अन्ऱु आम्–यह टूटनेवाला नहीं है; ऍन्ऱु मॊऴिया–ऐसा कहते हुए; पुकऴोन्–स्तुत्य वाली; पॊरित्त–अंकित; नामत्तै–नाम को; अऱिकुवान्–जानने के लिए; नोक्किनन्–देखा। २९९

वाली ने बाण को बाहर निकाल दिया। 'मैं अपने बहुत ही बलवान और विशाल हाथों से उसे पकड़कर तोड़ दूँगा' —यह विचार करके उठा। पर उसे कहना पड़ा कि मेरु को भी दो खण्डों में तोड़ सकता हूँ। पर इसको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तोड़ना असाध्य है। यह कहते हुए उसने उसमें अंकित नाम को जानने के लिए उस पर दृष्टि चलायी। २९९

❀ मुम्मैशा लुलहुक् कॅल्ला मूलमन् दिरत्तै मुऱ्ऱुम्
तम्मैये तमक्कु नल्हुन् दत्तिप्पॅरुम् बदत्तैत् तान्ने
इम्मैये मऱुमै नोय्क्कु मरुन्दिन्नै यिराम वॅन्नुम्
शॅम्मैशेर् नामन् दन्नैक् कण्गळिऱ् ऱॅरियक् कण्डान् 300

मुम्मै चाल्–त्रिविध; उलकुक्कु ऍल्लाम्–सारे लोकों के; मूल मन्तिरत्तै–मूल मन्त्र को; मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; तमक्कु–उनके भक्तों को; तम्मैयै नल्कुम्–नामी को ही दिलानेवाले; तत्ति पॅरुम् पतत्तै–अद्वितीय श्रेष्ठ पद को; तान्ने–स्वयं; इम्मैये मऱुमै नोय्क्कुम्–इह-पर भवरोग के; मरुन्तिन्नै–औषध को; इराम ऍन्नुम्–राम के; चॅम्मै चेर्–महान; नामम् तन्नै–नाम को; कण्कळिल्–आँखों से; तॅरिय–स्पष्ट रूप से; कण्टान्–देखा। ३००

(वहाँ वाली ने क्या नाम देखा ?) त्रिविध, भूमि, मध्य और पाताल के लोकों का आधार मन्त्र; भक्तों को पूर्णतः अपने (नामी) को दिला देनेवाला विशिष्ट अद्वितीय शब्द; इह-पर के भवरोग का श्रेष्ठ औषध; राम का महिमामय नाम —इसको वाली ने साफ़-साफ़ अपनी आँखों से देखा। ३००

❀ इल्लऱन् दुऱन्द नम्बि यॅम्मनोर्क् काहत् तङ्गळ्
विल्लऱन् दुऱन्द वीरन् ऱोन्ऱलाल् वेद नन्नूल्
शॊल्लऱन् दुऱन्दिलाद सूरियन् मरबुन् दॊल्लै
नल्लऱन् दुऱन्द दॅन्ना नहैवर नाणुक् कॊण्डान् 301

इल्लऱम्–गृहस्थ धर्म के; तुऱन्त–त्यागी (जो वन में आये हैं); नम्पि–नायक; ऍम्मनोर्क्कु आक–हम लोगों के लिए; तङ्कळ्–अपना; विल् अऱम्–धनु-धर्म; तुऱन्त–त्यागी; वीरन्–वीर; तोन्ऱलाल्–अवतार से; वेतम् नल् नूल्–वेदों के श्रेष्ठ शास्त्रों में; चॊल्–प्रतिपादित; अऱम्–धर्म; तुऱन्तिलात–जिसने नहीं त्यागा; चूरियन् मरपुम्–उस सूर्यकुल ने भी; तॊल्लै नल् अऱम्–प्राचीन सद्धर्म; तुऱन्ततु–त्याग दिया; ऍन्ना–सोचकर; नकै वर–हँसी के आने से; नाणु कॊण्टान्–शरम खायी। ३०१

(वाली सोचने लगा।) घर-बार छोड़कर वन में आये हुए श्रीराम हम जैसे वानरों के कार्य में अपने धनु-धर्म को त्याग चुके —ऐसे वीर श्रीराम के जन्म लेने से वेदशास्त्र-विहित धर्ममार्ग से न हटनेवाला सूर्यवंश भी सनातन सद्धर्म छोड़नेवाला हो गया। उसे हँसी आयी। और शरम का अनुभव हुआ। ३०१

❀ वॅळ्हिडु महुडञ् जाय्क्कुम् वॅडिपडच् चिरिक्कु मीट्टुम्
उळहिड मिदुवन् दान्नो रोङ्गऱ मोवॅन् ऱुन्नम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुऴ्हिडुङ् गुऴियिऱ् पुक्क मूरिवॆङ् गळिनल् यानै
तॊऴ्हॊडुङ् गिडन्द ऎन्नत् तुयरुऴन् ऱऴिन्दु शोर्वान् 302

वॆऴ्किटुम्–शरम का अनुभव करता; मकुटम्–किरीट को (सिर को); चाय्क्कुम्–झुकाता; वॆटि पट–ठठाकर; चिरिक्कुम्–हँसता; मीट्टुम्–फिर; उऴ्किटुम्–चिन्तामग्न होता; इतुवुम्–यह भी; ओर्–एक; ओङ्कु–उत्कृष्ट; अऱम् तानो–धर्म है क्या; ऎन्ऱु उन्नुम्–ऐसा सोचता; कुऴियिल् पुक्क–एक गड्ढे में गिरा हुआ; मूरि-बलवान; वॆम्–भयंकर; कळि नल् यानै–मत्त, श्रेष्ठ हाथी; मुऴ्किटुम्–अन्दर खींचनेवाले; तॊऴ्कु ऒटुम्–पंक में; किटन्ततु ऎन्न–फँस गया हो, ऐसा; तुयर् उऴन्ऱु–दुःख में पड़कर; अऴिन्तु–बल खोकर; चोर्वान्–थक जाता। ३०२

वाली शरम का अनुभव करता; किरीट (सिर) को झुकाता; ठठाकर हँसता। फिर गम्भीर रूप से चिन्तामग्न हो जाता। सोचने लगता कि क्या यह भी एक श्रेष्ठ धर्म है ! गड्ढे में पंक में पड़कर धँसनेवाले सबल भयंकर और मत्त गज के समान वह दुःखी होकर छटपटाया, बल खोकर बहुत शिथिल हो गया। ३०२

❀ इऱैदिऱम् बिनना लॆन्ने यिऴिन्दुळो रियऱ्कै यन्निन्
मुऱैदिऱम् बिनना लॆन्ऱु मॊऴिहिन्ऱ मुहत्तान् मुन्नर्
मऱैदिऱम् बाद वाय्मै मन्नर्क्कु मनुविऱ् चॊल्लुम्
तुऱैदिऱम् बामऱ् काक्कत् तोन्ऱिनान् वन्दु तोन्ऱ 303

इऱै तिऱम्पिनन्–राजा धर्मच्युत हो गये; आल्–इसलिए; इऴिन्तुळोर्–नीच लोगों की; इयऱ्कै–स्थिति; ऎन्ने–क्या होगी; ऎन्निन्–मेरे सम्बन्ध में; मुऱै तिऱम्पिनन्नाल्–तो क्रम-भंग कर दिया है; ऎन्ऱु–ऐसा; मॊऴिकिन्ऱ–आपसे आप बोलते रहनेवाले; मुकत्तान् मुन्नर्–मुख के वाली के सामने; वाय्मै–सच्चे; मन्नर्क्कु–राजाओं के लिए; मनुविल् चॊल्लुम्–मनु में कथित; मऱै–वेद-विचार के; तिऱम्पात–विपरीत जो न जाने थे; तुऱै–उन मार्गों की; तिऱम्पामल्–नष्ट न होने देते हुए; काक्क–रक्षा करने के हेतु; तोन्ऱिनान्–अवतरित श्रीराम; वन्तु तोन्ऱ–उसके सामने आये, तब। ३०३

स्वयं राजाराम ने धर्ममार्ग छोड़ दिया, तो नीच लोगों की क्या हस्ती है ? वह भी राजाराम ने मेरे सम्बन्ध में क्रम-भंग कर दिया है ! वाली यों आप से आप कह ही रहा था कि उसके सामने श्रीराम आ प्रकट हुए। ये श्रीराम मनु-शास्त्र में राजाओं के सम्बन्ध में निर्दिष्ट वेदतत्त्व के विपरीत न चलने का क्रम सुस्थापित करने के लिए अवतरित हुए थे। ३०३

❀ कण्णुऱ्ऱान् वालि नीलक् कार्मुहिल् कमलम् बूत्तु
मण्णुऱ्ऱु वरिवि लेन्दि वरुवदे पोलु मालैप्
पुण्णुऱ्ऱ निऱत्तिऱ् चोरि पॊङ्गिये पॊडिप्प नोक्कि
ऎण्णुऱ्ऱा यॆन्शॆय् दायॆन् ऱेशुवा नियम्ब लुऱ्ऱान् 304

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीलम् कार् मुकिल्-काला वर्षाकालीन मेघ; कमलम् पूत्तु-विकसित कमल धारण करके; वरि विल् एन्ति-सबन्ध धनुष लेकर; मण् उऱ्ऱु-भूमि पर आकर; वरुवते पोलुम्-आता हो जैसे; मालै-महाविष्णु को; कण् उऱ्ऱान् वालि-आँखों से देखकर वाली; पुण् उऱ्ऱ-व्रणयुक्त; निऱ्त्तिल्-छाती से; चोरि-रक्त; पोङ्किये-उमड़कर; पोटिप्प-उठा, उस स्थिति में; नोक्कि-देखकर; ऍन् (ऍण्) उऱ्ऱाय्-क्या सोचा; ऍन् चॅय्ताय्-क्या किया; ऍन्ऱु-ऐसा; एचुवान्-भर्त्सना देते हुए; इयम्पल् उऱ्ऱान्-कहने लगा। ३०४

वाली ने श्रीराम को देखा, जो एक काले वर्षाकालीन मेघ के समान थे। उस मेघ में कमल खिले थे। वह धनुष लिये हुए धरती पर आ रहा था। वाली की छाती के व्रण से रक्त उमड़ आ रहा था। वाली ने श्रीराम से पूछा कि क्या सोचा और क्या किया है तुमने ? वह और भी उन्हें भर्त्सना देने लगा। ३०४

❀ वाय्मैयु मरबुङ् गात्तु मन्नुयिर् तुऱन्द वळ्ळल्
तूय्मैयन् मैन्द नेनी बरदन्मुन् ऱोन्ऱि नाये
तीमैतान् पिऱरैक् कात्तुत् तान्शॅय्दाऱ् ऱीदन् ऱामो
ताय्मैयु मऱैयुम् नट्पुन् दरुममुन् दळुवि निन्ऱाय् 305

ताय्मैयुम्-मातृवत्सलता; मऱैयुम्-और वेदसम्मत बर्ताव; नट्पुम्-और मैत्री; तरुममुम्-और धर्म; तळुवि निन्ऱाय्-इनको अपनाये रहनेवाले; वाय्मैयुम्-सत्य और; मरपुम्-कुलाचार का; कात्तु-पालन कर; मन् उयिर् तुऱन्त-अपने नित्य प्राण जिन्होंने छोड़े थे; वळ्ळल्-उन दानी; तूय्मैयन्-और पवित्र पुरुष दशरथ के; मैन्तने-पुत्र; नी-तुम; परतन् मुन्-भरत के पहले; तोन्ऱित्ताये-(अग्रज के रूप में) पैदा हो गये; तीमै-बुराई; पिऱरै कात्तु-दूसरों से बचाकर; तान् चॅय्ताल्-वह खुद करे तो; तीतु अन्ऱु आमो-(बुराई) बुराई नहीं रहेगी क्या। ३०५

मातृवत्सलता, वेदमार्ग, मैत्री, धर्म आदि को अपनाए रहनेवाले श्रीराम ! दशरथ सत्य और अपने कुल के आचार का सम्यक् पालन करके उसी के अर्थ अपने प्राण भी त्याग चुके। ऐसे दानी और पवित्र दशरथ के पुत्र ! तुम कैसे भरत के अग्रज हो पैदा हुए ? दूसरों को बुराई करने से रोको और स्वयं बुराई करो तो वह बुराई, बुराई नहीं रहेगी क्या ? । ३०५

कुलमिदु कल्वि यीदु कॊऱ्ऱमी दुऱ्ऱु निन्ऱ
नलमिदु बुवन मून्ऱिन् नायह मीदु निन्ऱोळ्
वलमिदिव् वुलहन् दाङ्गुम् वण्मैयी दॆन्ऱाऱ् ऱिण्मै
अलमरल् शॅय्य लामो वरिन्दिरुन् दयर्न्दु ळार्पोल् 306

इतु कुलम्-यह तुम्हारा कुल है; कल्वि ईतु-तुम्हारी विद्या यह है; कॊऱ्ऱम् ईतु-विजय यह है; उऱ्ऱु निन्ऱ-तुम्हारे जन्मसिद्ध; नलम्-अच्छे गुण; इतु-ये हैं; पुवनम् मून्ऱिन्-तीनों लोकों का; नायकम् ईतु-नायकत्व यह है; निन् तोळ् वलम् इतु-तुम्हारा भुजबल यह है; इ उलकम् ताङ्कुम्-यह संसार-भरण करने की; वण्मै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ईतु–वदान्यता यह है; ऍन्ऱाल्–तो; अऱिन्तिरुन्तु–जानते हुए भी; अयर्न्तु उळार् पोल्–भ्रान्त के समान; तिण्मै अलमरल्–गुण-दृढ़ता में चंचलता लाना; चॆय्यलामो–कर सकते हो क्या। ३०६

(सारा संसार तुम्हारी प्रशंसा करता है कि) इनका कुल यह (उत्कृष्ट); विद्या ऐसी; विजय यह; इन्हें प्राप्त अच्छे गुण ये हैं। तीनों भुवनों का नायकत्व यह जो इनका है। इनका भुजबल ऐसा। भुवन का गोप्तृत्व यह। तो यह सब जानते हुए भी मोहित मनुष्य के समान ऐसी दृढ़ता को अस्थिर करा देना क्या तुम्हें शोभा देगा ? । ३०६

❀ कोवियऱ् ऱरुम मुङ्गळ् कुलत्तुदित् तोऱ्हट् कॆल्लाम्
ओवियत् तॆऴुद वॊण्णा वुरुवत्ता युडैमै यन्ऱो
आवियैच् चत्तहन् पॆऱ्ऱ वन्नत्तै यमिऴ्दिन् वन्द
देवियैप् पिरिन्द पिन्नैत् तिहैत्तत्तै पोलुञ् जॆय्है 307

ओवियत्तु ऍऴुत ऑण्णा–आपका चित्र न बन सके, ऐसे; उरुवत्ताय्–अपार रूप वाले; को इयल् तरुमम्–राजधर्म; उङ्कळ् कुलत्तु–तुम्हारे कुल में; उतित्तोर्कट्कु ऍल्लाम्–उत्पन्न सभी की; उटैमै अन्ऱो–सम्पत्ति है न; आवियै–प्राण (-समाना) सीता को; चत्तकन् पॆऱ्ऱ–जनक की जनायी गयी; अन्नत्तै–हंसिनी देवी को; अमिऴ्तिन् वन्त–अमृत के समान तुम्हारे पास आयी हुई; तेवियै–देवी को; पिरिन्त पिन्नै–छोड़ने के बाद; चॆय्कै–काम में; तिकैत्तत्तै पोलुम्–अस्त-व्यस्त हो गये शायद। ३०७

हे ऐसे रूपवान, जिसका चित्र नहीं बन सकता ! राजधर्मपालन तुम्हारे कुल में उत्पन्न सभी का धन है ! (फिर तुमने उसका भंग क्यों किया ?) प्राण-सम, जनकदुहिता हंसिनी-सी, अमृततुल्य सीतादेवी के वियोग के बाद तुम्हारा मन भ्रमित और कार्य अस्थिर हो गया है क्या ? । ३०७

❀ अरक्कन्नो रऴिवु शॆय्दु कऴिवत्ते लदऱ्कु माऱोर्
कुरक्कर शदनैक् कॊल्ल मनुनॆऱि कूऱिऱ् ऱुण्डो
इरक्कमॆङ् गुहुत्ता यॆन्बा लॆप्पिऴै कण्डा यप्पा
परक्कऴि विदुनी पूण्डाऱ् पुहऴैयार् परिक्कऱ् पालार् 308

अरक्कन्–राक्षस रावण; ओर् अऴिवु चॆय्तु–एक हानि करके; कऴिवत्तेल्–चला जाय तो; अतऱ्कु माऱु–उसके प्रीतिकार में; ओर् कुरक्कु अरचु अतत्तै–एक वानरराज को; कॊल्ल–मारने को; मनु नॆऱि–मनु-धर्म ने; कूऱिऱ्ऱु उण्टो–कहा है क्या; इरक्कम्–दया को; ऍङ्कु–कहाँ; उकुत्ताय्–गिरा दिया; ऍन् पाल्–मुझमें; ऍ पिऴै–कौन सा अपराध; कण्टाय्–देखा; इतु परक्कऴिवु–यह बड़ा अपयश; नी पूण्टाल्–तुम धारण करो तो; पुकऴै–यश को; यार्–कौन; परिक्कल् पालार्–भरण करने योग्य रहेंगे। ३०८

(क्या ही विचित्र विडम्बना है !) राक्षस कोई हानि कर गया तो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दूसरे वानरराज को मारने की आज्ञा मनुधर्म देता है क्या ? दया तुमने कहाँ छोड़ी ? मुझमें क्या अपराध देखा ? यह बड़ा अपयश है ! अगर तुम अपयश धारण कर लोगे तो यश का पात्र कौन बन सकेगा ? रे बाप ! । ३०८

ऑलिहड लुलहन् दन्नि लूर्दरु कुरङ्गिन् माडे
कलियदु कालम् वन्दु कलन्ददो करुणै वळ्ळाल्
मॅलियवर् पाल देयो विळुप्पमु मॉळुक्कन् दानुम्
वलियवर् मॅलिवु शॅय्दार् पुहळन्रि वशैयु मुण्डो 309

करुणै वळ्ळाल्–करुणा-दानी; ऑलि कटल्–शब्दायमान समुद्रवसना; उलकम् तन्नित्ल्–लोक में; ऊर् तरु–रेंगनेवाले; कुरङ्किन् माटे–वानरों के हक में ही; कलि अतु कालम्–कलि (नाशक) काल; वन्तु कलन्ततो–आ मिल गया क्या; विळुप्पमुम्–सभ्यता और; ऑळुक्कम् तानुम्–सदाचरण; मॅलियवर् पालतेयो–निर्बलों के लिए ही विहित हैं क्या; वलियवर्–बलवान; मॅलिवु चॅय्ताल्–नीच काम करें; पुकळ् अन्रि–यश के सिवा; वचैयुम् उण्टो–निन्दा (नहीं) होगी (शायद) क्या । ३०९

अपरिमित दयावान ! शब्दायमान समुद्रमध्य स्थित भूलोक में क्या रेंगते चलनेवाले वानरों पर ही कलि (नाश का) काल आ छा गया ? सभ्यता (श्रेष्ठता) सदाचार आदि निबलों के लिए ही विहित हैं ? बलवान लोग नीच काम करें तो यश मिलेगा और भर्त्सना नहीं होगी न ? । ३०९

कूट्टॉरु वरैयुम् वेण्डाक् कॉऱ्ऱव पॅऱ्ऱ तादै
पूट्टिय शॅल्व माङ्गोर् तम्बिक्कुक् कॉडुत्तुप् पोन्दु
नाट्टॉरु करुमञ् जॅय्दाय् यॅम्बिक्किव् वरशै नल्हिक्
काट्टॉरु करुमञ् जॅय्दाय् करुमन्दा निदन्मे लुण्डो 310

कूट्टु–सहायक; ऑरुवरैयुम्–किसी की; वेण्टा–अपेक्षा नहीं करनेवाले; कॉऱ्ऱव–विजयराघव; पॅऱ्ऱ तातै–जनक ने; पूट्टिय चॅल्वम्–जो सम्पत्ति दिलायी; आङ्कु–उसे वहाँ; ओर्–श्रेष्ठ; तम्पिक्कु–भाई को; कॉट्टुत्तु–देकर; नाट्टु–जनपद में; ऑरु करुमम् चॅय्ताय्–एक (अनोखा) कार्य किया; पोन्तु–जाकर; ऍम्पिक्कु–मेरे भाई को; इ अरचै–इस राज्य को; नल्कि–देकर; काट्टु–जंगल में; ऑरु करुमम् चॅय्ताय्–एक कार्य किया; इतन् मेल्–इससे बड़ा; करुमम् तान् उण्टो–कर्म कोई होगा क्या । ३१०

किसी दूसरे की सहायता की अपेक्षा न करनेवाले विजयी ! तुम्हारे जनक ने तुम्हें स्वतः जो सम्पत्ति दी, उसे तुमने अपने श्रेष्ठ भाई को देकर जनपद में एक अनोखा कार्य कर दिखाया । फिर मेरे भाई को यह राज्य देकर यहाँ जंगल में एक कार्य किया । इससे बढ़कर कोई काम हो सकता है क्या ? । ३१०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऱैहऴ ललङ्गल् वीरर्क् कडुत्तदे पुरिव दाण्मैल्
तुऱैयॆन लायिऱ् ऱन्ऱे तॊन्मैयि नन्नूऱ् कॆल्लाम्
इऱैवनी यॆन्नैच् चॆय्द तीदॆनि लिलङ्गै वेन्दै
मुऱैयल शॆय्दा ऩॆन्ऱु मुनिदियो मुनिवि लादाय् 311

मुनिवु इलाताय्–क्रोधविहीन; अऱै कऴल्–शब्द करनेवाली पायल के धारक; अलङ्कल्–मालाधारी; वीरर्क्कु–वीरों के लिए; अदुत्तते–योग्य (काम) ही; पुरिवतु–करना; आण्मै तुऱै ऍऩल्–पुरुषोचित काम कहना; आयिऱ्ऱु अऩ्ऱे–होता है न; तॊन्मैयिऩ्–प्राचीन; नल् नूऱ्कु–श्रेष्ठ शास्त्रों के; ऍल्लाम्–सबके; इऱैवऩ् नी–नायक तुमने; ऍऩ्ऩै चॆय्ततु ईतु–मेरे प्रति जो किया, यह; ऍऩिल्–तो; इलङ्कै वेन्तै–लंकापति से; मुऱै अल–अनुचित काम; चॆय्तान् ऍऩ्ऱु–किया, ऐसा; मुनितियो–गुस्सा करोगे क्या। ३११

हे क्रोधविहीन राम ! शब्द करती रहनेवाली पायलधारी वीर के लिए योग्य काम करना ही पुरुषोचित माना जायगा न ? तुम सभी प्राचीन शास्त्रों के नायक हो ! तुमने यह काम कर दिया; फिर लंकापति के सम्बन्ध में 'अनुचित व्यवहार किया' कहकर कोप करोगे क्या ? । ३११

इरुवर्पो रॆदुरुङ् गालै यिरुवरु नल्लुऱ् ऱारे
ऑरुवर्मेऱ् करुणै तूण्ड वॊरुवर्मे लॊळित्तु निऩ्ऱु
वरिशिलै कुऴैय वाङ्गि वायम्बु मरुमत् तॆय्दल्
तरुममो पिऱिदॊऩ् ऱामो तक्किल दॆऩ्ऩुम् बक्कम् 312

इरुवर्–दो; पोर् ऍतिरुम् कालै–युद्ध में परस्पर जब लड़ते हैं तब; इरुवरुम्–दोनों; नल् उऱ्ऱारे–(समान रूप से) अच्छे (मित्र) हैं ही; ऑरुवर् मेल्–उनमें एक पर; करुणै तूण्ट–करुणा के प्रेरित करने पर; ऑळित्तु–छिपा; निऩ्ऱु–रहकर; ऑरुवर् मेल्–(दूसरे) एक पर; वरि चिलै–सबन्ध धनु; कुऴैय–झुकाते हुए; वाङ्कि–डोरा (खींचकर); वाय् अम्पु–तीक्ष्णमुखी शर को; मरुमत्तु–मर्मस्थान पर; ऍय्तल्–चलाना; तरुममो–धर्म (हो सकता) है; पिऱितु–इतर; ऑऩ्ऱु–एक; आमो–होगा; तक्किलतु–अनुचित; ऍऩ्ऩुम् पक्कम्–की तरफ़ ही (माना) जायगा। ३१२

जब दो मनुष्य, जो हमारे लिए समान रूप से अपरिचित हैं, आपस में युद्ध करते हैं, तब दोनों समान रूप से हमारे होते हैं। तब एक के प्रति करुणा करके, उससे प्रेरित होकर आड़ में से सबन्ध धनु को झुकाकर तीक्ष्णमुखी बाण को दूसरे के मर्म पर चलाना धर्म होगा या धर्मेतर ? वह अवश्य अनुचित, अधर्म के पक्ष में ही माना जायगा। ३१२

❀ वीर मऩ्ऱु विदियऩ्ऱु मॆय्म्मैयिऩ्
वार मऩ्ऱुनिऩ् मण्णिऩुक् कॆऩ्ऩुडल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बार मन्ऱु पहैयन्ऱु पण्बॊऴिन्
दीर मन्ऱिऱि दॆन्शॆय्द वाऱ्ऱो 313

वीरम् अन्ऱु–वीरता (का काम) नहीं है; विति अन्ऱु–युद्धधर्म की विधि नहीं; मॆय्म्मैयिन्–सत्य की; वारम् अन्ऱु–सीमा में भी नहीं; निन् मण्णिन्ऱुक्कु–तुम्हारे इस राज्य में; ऎन् उटल्–मेरा शरीर; पारम् अन्ऱु–भार नहीं है; पकै अन्ऱु–शत्रुता नहीं; पण्पु ऒऴिन्ऱु–शील त्यागकर; ईरम् अन्ऱि–स्नेह-हीन होकर; इतु–यह; ऎन् चॆय्त आऱु–क्या करने का प्रकार है। ३१३

तुम्हारा व्यवहार वीरता का परिचायक नहीं है; न ही वह विधिसम्मत है। वह सत्य की सीमा के अन्दर भी नहीं आता। तुम्हारे राज्य की भूमि पर मेरा शरीर असह्य भार भी नहीं बना था। मैं तुम्हारा शत्रु भी तो नहीं। अपना शील-स्वभाव छोड़कर, आर्द्रता (दया) का भाव त्यागकर तुमने यह जो कार्य किया है वह किस काम में आयगा ? । ३१३

इरुमै नोक्किनिन् ऱियावर्क्कु मॊक्किन्ऱु
अरुमै याऱ्ऱलन् ऱोवरङ् गाक्किन्ऱु
पॆरुमै यॆन्बदि दॆन्बिऴै पेणल्विट्
टॊरुमै नोक्कि यॊरुवऱ् कुदवलो 314

इरुमै–दोनों तरफ़; नोक्कि निन्ऱु–समान रूप से देखकर; यावर्क्कुम् ऒक्किन्ऱु–सर्वमान्य; अरुमै–श्रेष्ठ कर्म; आऱ्ऱल् अन्ऱो–करना न; अऱम् काक्किन्ऱु–धर्म-रक्षण करने का; पॆरुमै ऎन्पतु–बड़प्पन है; पिऴै पेणल् विट्टु–दोष से बचकर; ऒरुमै नोक्कि–एकतरफ़ा होकर; ऒरुवऱ्कु उतवल् ओ–एक की सहायता करना ही; इतु ऎन्–यह क्या (न्याय) है। ३१४

दोनों पक्षों का विचार करके सर्वमान्य रीति से श्रेष्ठ व्यवहार करना ही न धर्मपालन का गौरवमय कार्य होगा ! दोषपूर्ण कार्य से बचना छोड़कर पक्षपाती बनकर किसी एक की सहायता करना (ऐसा माना जायगा) क्या ? यह क्या नीति है ? । ३१४

शॆयलैच् चॆऱ्ऱु पहैतॆऱु वान्ऱॆरिन्
दयलैप् पऱ्ऱित् तुणैयमैन् दायॆनिन्
पुयलैप् पऱ्ऱुमव् वॆङ्गरि पोक्कियोर्
मुयलैप् पऱ्ऱुव दॆन्न मुयऱ्चियो 315

चॆयलै चॆऱ्ऱु–(तुम्हारे गृहस्थी-सम्बन्धी) कार्य को जिसने मिटाया; पकै–उस शत्रु को; तॆऱुवान्–मारने के लिए; तॆरिन्तु–सोचकर; अयलै पऱ्ऱि–एक पराये को (मित्र के रूप में) लेकर; तुणै अमैन्ताय्–उसके सहायक बने; ऎनिल्–तो; पुयलै पऱ्ऱुम्–मेघ को खींचनेवाले; अ वॆम् करि–उस भयंकर हाथी को; पोक्कि–जाने देकर; ओर् मुयलै–एक खरगोश को; पऱ्ऱुवतु–मित्र बना लेना; ऎन्न मुयऱ्चियो–कैसा प्रयास है। ३१५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुम्हारी गृहस्थी को मिटाकर जो गया उस शत्रु को मारना चाहते हो। उपाय सोचकर तुमने अन्य की सहायता ली है। तुमने उसको अपना सहायक बना लिया है। ठीक ! तो मेघ को भी छीन लेनेवाला भयंकर गज है— उसको (या मेघ-सम हाथी को भी पछाड़नेवाले सिंह को —यानी मुझे) छोड़कर एक खरगोश को (मित्र के रूप में) पकड़ लेना कैसा (बुद्धिमत्ता का) प्रयास है ? । ३१५

❀ कारि यन्ऱ निऱत्त कळङ्गमॊत्
ऱूरि यन्ऱ मदिक्कुळ दामॆन्बर्
सूरि यन्मर बुक्कुमॊर् तॊन्मऱु
आरि यन्बिऱन् दाक्किन्नै यामरो 316

ऊर् इयन्ऱ–संचारी; मतिक्कु–चन्द्र में; कार् इयन्ऱ निऱत्त–काला रंग वाला; कळङ्कम् ऒन्ऱु–कलंक एक; उळतु आम्–रहता है; ऎन्पर्–कहते हैं; चूरियन्–सूर्य के; तॊल् मरपुक्कुम्–प्राचीन वंश के लिए; ऒर् मऱु–एक कलंक; आरियन्–श्रेष्ठ पुरुष (तुमने); पिऱन्तु—पैदा होकर; आक्किन्नै आम्–लगा लिया है। ३१६

संचरणशील चन्द्र में काले रंग का कलंक है। यह सब लोक कहते हैं। (सूर्य में नहीं है, पर) प्राचीन सूर्यकुल पर भी श्रेष्ठ तुमने पैदा होकर धब्बा लगा दिया है क्या ? । ३१६

मऱ्ऱॊ रुत्तन् वलिन्दऱै कूववन्
दुऱ्ऱ वॆन्नैयॊ ळित्तुयि रुण्डनी
इऱ्ऱि दऱ्पि निहलरि येऱॆन्
निऱ्ऱि पोलुङ् गिडन्द निलत्तरो 317

मऱ्ऱु ऒरुत्तन्–दूसरे किसी (एक) के; वलिन्तु–ज़बरदस्ती से; अऱै कूव–(युद्ध के लिए) ललकारने पर; वन्तु उऱ्ऱ–जो आया उस; ऎन्नै–मुझे; ऒळित्तु–छिपा रहकर; उयिर् उण्ट नी–प्राण खा लिये ऐसे तुम; इऱ्ऱु इतन् पिन्–इस घटना के बाद; किटन्त निलत्तु–जिस पर मैं पड़ा हूँ, उस भूमि पर; इकल्–युद्ध में चतुर; अरि एऱु ऎन–नरकेसरी के समान; निऱ्ऱि पोलुम्—(शान के साथ) खड़े भी रहो क्या। ३१७

किसी ने (जो तुम्हारे किसी नाते का नहीं) मुझे ज़बरदस्ती आकर युद्ध के लिए ललकारा और मैं युद्ध करने आया। ऐसे मेरे प्राणों को तुमने छिपे रहकर हर लिया। यह करने के बाद तुम, जहाँ मैं (शराहत हो) पड़ा हूँ, वहाँ आकर खड़े हो, मानो युद्ध-चतुर नरकेसरी हो ! । ३१७

❀ नूलि यऱ्कैयु नुङ्गुलत् तन्वैयर्
पोलि यऱ्कैयुम् शीलमुम् पोऱ्ऱलै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वालि यैप्पडुत् तायलै मन्नर्
वेलि यैप्पडुत् ताय्विऱल् वीरने 318

नूल् इयऱ्कैयुम्–शास्त्रोक्त क्रमों को; नुम् कुल–तुम्हारे कुल के; तन्तैयर् पोल्–पुरखों के समान; इयऱ्कैयुम्–उनके स्वभाव को; चीलमुम्–और उनके शील को; पोऱ्ऱलै–मानकर नहीं चले; वालियै पटुत्ताय् अलै–वाली को नहीं मारा है; मन् अऱम्–राजधर्म की; वेलियै–रक्षक बाड़ को; पटुत्ताय्–नष्ट कर दिया है; विऱल् वीरने–प्रतापी वीर हो क्या। ३१८

शास्त्रों में जो कहे गये हैं वे गुण, तुम्हारे कुल के पुरखों से प्राप्त गुण, शील आदि को तुम मानकर नहीं चले। तुमने वाली को मारा नहीं है; पर वास्तव में राजधर्म की रक्षक बाड़ को मिटा दिया है। क्या तुम सचमुच प्रशंसायोग्य प्रतापी वीर हो ? । ३१८

❀ तार मऱ्ऱॊरु वन्गॊळत् तन्गैयिल्
पार वञ्जिलै वीरम् बळिप्पदे
नेरु मन्ऱु मऱैन्दु निरायुदन्
मार्बि नॆय्यवो विल्लिहल् वल्लदे 319

तारम्–(तुम्हारी) पत्नी को; मऱ्ऱु ऒरुवन्–किसी अन्य ने; कॊळ–हर लिया, तब; तन् कैयिल्–अपने हाथ में; पारम् वॆम् चिलै–भारी और भयंकर धनु; वीरम्–वीरता का; पळिप्पतु–परिहास करता है; नेरुम् अन्ऱु–सामने से नहीं; मऱैन्तु–छिपकर; निरायुतन् मार्पिन्–निरायुध के वक्ष में; ऎय्यवो–(शर) चलाने के कारण क्या; विल् इकल–धनुर्युद्ध में; वल्लतु–समर्थ कहा जाना। ३१९

तुम्हारी पत्नी को किसी ने हर लिया। तब तुम्हारे हाथ का भारी भयंकर धनु तुम्हारी वीरता का परिहास कर रहा है! (तुम्हारा कोदण्ड-पाणी नाम ही किस काम का ?) सामने से नहीं, आड़ में रहकर आयुध-हीन रिक्त हाथ मेरे वक्ष में शर चलाना ही धनुर्युद्ध में तुम्हारे सामर्थ्य का परिचायक बनेगा ? । ३१९

❀ ऎन्ऱु तानु मॆयिऱु पॊडिपडत्
तिन्ऱु कान्ऱु विळिवळित् तीयुह
अन्ऱु वालि यनैयन् कूऱिनान्
निन्ऱ वीर निनैय निहळ्त्तुवान् 320

ऎन्ऱु–ऐसा; अ वालि तानुम्–उस वाली ने; ऎयिऱु पॊटि पट–दाँतों को चूर्ण बनाते हुए; तिन्ऱु–पीसकर; विळि वळि–आँखों द्वारा; ती कान्ऱु उक–आग प्रकट होकर छितर जाय ऐसा; अन्ऱु–तब; अनैयन–वे बातें; कूऱिनान्–कहीं; निन्ऱ वीरन् तानुम्–सामने स्थित वीर भी; इनैय–यों; निकळ्त्तुवान्–कहने लगे। ३२०

वाली ने दाँत चूर-चूर हो जायँ, ऐसा दाँत पीसते हुए, आँखों से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अंगारे निकाल छितराते हुए ऐसी बातें कहीं। तब वहाँ जो स्थित थे वे श्रीराम भी यों बोले। ३२०

पिलम्बुक काय्नॆडु नाळ्पॆय रायॆन्नाप्
पुलम्बुऱ् ऱुन्वऴिप् पोदलुऱ् ऱान्ऱनैक्
कुलम्बुक् कान्ऱ् मुदियर् कुऱिक्कॊळीइ
अलम्बुत् तारव नीयर शॆन्ऱलुम् 321

पिलम् पुक्काय्–बिल में (तुमने) प्रवेश किया; नॆटु नाळ्–बहुत दिन तक; पॆयराय्–नहीं लौटे; अॆन्ना–इसलिए; पुलम्पु उऱ्ऱु–विलाप करके; उन् वऴि–तुम्हारे मार्ग में; पोतल् उऱ्ऱान् तनै–जाने को उद्यत (सुग्रीव) को; कुलम् पुक्कु–तुम्हारे कुल में जनमे हुए; आन्ऱ मुतियर्–श्रेष्ठ वृद्ध लोग; कुऱि कॊळीइ–उसका संकल्प जानकर; अलम्पु तारव–हिलती मालाधारी; नी अरचु–तुम राजा हो; अॆन्ऱलुम्–कहने पर। ३२१

(मायावी का पीछा करते हुए) तुम बिल में घुसे। बहुत दिनों तक लौट नहीं आये। यह देखकर सुग्रीव दुःखी हुआ और विलाप करते हुए तुम्हारे पीछे तुम्हारे मार्ग में जाने को उद्यत हुआ। तब तुम्हारे कुल के वृद्ध लोगों ने उसका आशय ताड़ लिया। उससे कहा कि हिलनेवाली माला से शोभित सुग्रीव ! तुम हमारे राजा हो। तब। ३२१

वान मॊळवॆन् ऱम्मुनै वैत्तवन्
तानु माळक् किळैयु मिऱत्तडिन्
दियानु माळ्वॆनि रुन्दर शाळ्हिलॆन्
ऊन मान वुरैपहर्न् दीरॆन 322

अॆन् तम् मुनै–मेरे अग्रज को; वानम् आळ वैत्तवन् तानुम्–स्वर्गपालन करने जिसने भेज दिया, वह मायावी; माळ–मर जाए; किळैयुम् इऱ–और उसका परिवार मिट जाय, ऐसा; तटिन्तु–मारकर; यानुम्–मैं भी; माळ्वॆन्–मर जाऊँगा; इरुन्तु–(जीवित) रहकर; अरचु–राज्य; आळ्किलॆन्–नहीं पालूँगा; ऊनम् आन–निकृष्ट; उरै–बात; पकर्न्तीर्–बतायी; अॆन–कहने पर। ३२२

सुग्रीव ने कहा कि मेरे बड़े भाई को इस राक्षस ने स्वर्ग में उसका पालन करने के लिए भेज दिया। उसको उसके परिवारों के साथ मार दूँगा और स्वयं भी मर जाऊँगा। जीवित रहकर शासन न करूँगा। तुम लोगों ने निकृष्ट बात की सलाह दी है। मैं नहीं मानूँगा। ३२२

पऱ्ऱि यान्ऱ पडैत्तलै वीररुम्
मुऱ्ऱु णर्न्द मुदियरु मुन्बरुम्
अॆऱ्ऱु रुम्मर शॆय्दिलै येलॆनक्
कॊऱ्ऱ नन्मुडि कॊण्डिलन् कोदिलान् 323

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आन्ऱ्-श्रेष्ठ; पटै तलै वीररुम्-सेनापति वीरों ने और; मुऱ्ऱुणर्न्त-पूर्णज्ञ; मुतियरुम्-वयोवृद्ध लोगों ने और; मुन्परुम्-अन्य अगुओं ने; पऱ्ऱि-पकड़कर; अरचु ऍय्तिलैयेल्-राज्य न लोगे तो; ऍऱ्ऱु उऱुम्-क्या गति (वानरों को) प्राप्त होगी; ऍत्त-कहा, तब भी; अ कोतु इलान्-उस निर्दोष (सुग्रीव) ने; कॊऱ्ऱम् नल् मुटि-राजकीय श्रेष्ठ किरीट को; कॊण्टिलन्-स्वीकार नहीं किया। ३२३

उसको सुनकर उत्तम सेनापति वीरों, पूर्णज्ञानी वयोवृद्ध लोगों और अन्य मुखियाओं ने मिलकर उसको पकड़ लिया और कहा कि सोचो! अगर तुम राज्य न लोगे तो वानरों की गति क्या होगी? तब भी उस निरपराध सुग्रीव ने राजकीय श्रेष्ठ मुकुट को नहीं अपनाया। ३२३

वन्द निन्नै वणङ्गि मकिळ्न्दनन्
ऍन्दै यॆन्कणि नत्तव राऱ्ऱलिन्
तन्द दुन्नर शॆन्ऱु तरिक्किलेन्
मुन्दै युऱ्ऱदु शॊल्ल मुनिन्दुन्नी 324

वन्त निन्नै-(फिर) आये हुए तुमको; मकिळ्न्तनन्-हर्षित होकर; वणङ्कि-नमस्कार करके; ऍन्तै-पितृतुल्य; इनत्तवर्-समूह के लोगों ने; ऍन् कण्-मेरे पास; आऱ्ऱलिल्-(तर्क के) ज़ोर से; तन्त-जो सौंपा; उन् अरचु-उस तुम्हारे राज्य को; तरिक्किलेन्-वहन नहीं किया; ऍन्ऱु-ऐसा; मुन्तै उऱ्ऱतु-पूर्व-वृत्तान्त को; चॊल्ल-कहा, तब भी; नी-तुम; मुनिन्तु-कुपित होकर। ३२४

फिर तुम लौट आये। तुमको लौट आये देखकर सुग्रीव अपार हर्षित हुआ। उसने तुमको नमस्कार करके कहा कि पिता-सम मेरे भाई! हमारे समूह के वानरों ने तर्क के ज़ोर से मेरे पास यह राज्य सौंपा। पर तुम्हारा वह राज्य मैंने नहीं लिया। इस तरह उसने पूर्ववृत्तान्त सुनाया। पर तुम नहीं माने और कुपित हुए। ३२४

कॊल्ल लुऱ्ऱनै युम्बियैक् कोदवऱ्
किल्लै यॆन्ब दुणर्न्दु मिरङ्गलै
अल्लल् शॆय्य लुनक्कब यम्बिळै
पुल्ल लॆन्नवुम् पुल्ललै पॊङ्गिनाय् 325

उम्पियै-अपने भाई को; कॊल्लल् उऱ्ऱनै-निहत करने लगे; अवऱ्कु-उसका; कोतु इल्लै-कोई अपराध नहीं; ऍन्पतु-यह; उणर्न्तुम्-जानकर भी; इरङ्कलै-दया नहीं की; अल्लल् चॆय्यल्-त्रास मत दो; उनक्कु अपयम्-तुम्हारी शरण हूँ; पिळै पुल्लल्-मुझ पर अपराध मत लगाओ; ऍन्तवुम्-प्रार्थना करने पर भी; पुल्लल्-नहीं माने; पॊङ्किनाय्-उबल पड़े। ३२५

कोप करके तुम अपने भाई को मारने लगे। वह निरपराध है, यह जानकर भी तुमने दया नहीं दिखाई। उसने विनय की कि मुझे त्रास मत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दो। मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। मुझे अपराधी मत मानो। फिर भी तुमने उसकी बात नहीं मानी और उस पर कोप दिखाया। ३२५

ऊऱ्ऱ मुऱ्ऱुडै यानुऩक् कारमर्
तोऱ्ऱु मऩ्ऱु तॊऴुदुयर् कैयऩैक्
कूऱ्ऱ मुण्णक् कॊडुप्पॆऩॆन् ऱॆण्णिऩाय्
नाऱ्ऱि शैक्कुम् पुऱत्तैयु नण्णिऩान् 326

ऊऱ्ऱम्–बल; मुऱ्ऱु उटैयान्–पूर्ण रखनेवाले; उऩक्कु–तुम्हारे सामने; आर् अमर् तोऱ्ऱुम्–होनेवाले इस युद्ध में हारा; ऎऩ्ऱु–विनय करके; तॊऴुतु उयर्–अंजलिबद्ध और ऊपर उठाए हुए; कैयऩै–हाथों वाले को; कूऱ्ऱम् उण्ण–यम को खाने; कॊटुप्पॆऩ्–दे दूंगा; ऎऩ्ऱु–ऐसा; ऎण्णिऩाय्–सोचा (तुमने); नाल् तिचैक्कुम्–(वह) चारों दिगन्तों के; पुऱत्तैयुम्–उस पार को भी; नण्णिऩान्–गया। ३२६

सुग्रीव ने यह भी कहा कि तुम्हारे पास सम्पूर्ण बल है। हमारे बीच हुए इस युद्ध में मैं हार मान लेता हूँ। उसने यह कहकर हाथ जोड़े और नमस्कार की मुद्रा में ऊपर उठाये। तुमने उसे यम का भोजन बनाने का संकल्प किया। वह भागा और दिगन्तों के पार के प्रदेशों में जा पहुँचा। ३२६

अऩ्ऩ तऩ्मै यऱिन्दु मरुळलै
पिऩ्ऩ वऩ्ऩिव ऩॆऩ्बदुम् पेणलै
वऩ्ऩि तानिडु शाब वरम्बुडैप्
पॊऩ्म लैक्किव नण्णलिऱ् पोहलै 327

अऩ्ऩ तऩ्मै–उसकी वैसी स्थिति; अऱिन्तुम्–जानकर भी; अरुळलै–दया नहीं दिखाई; इवऩ् पिऩ्ऩवऩ्–यह अनुज है; ऎऩ्पतुम्–यह बात भी; पेणलै–नहीं मानी; वऩ्ऩि तान्–महर्षि (मतंग) के; इटु–दिये हुए; चापम् वरम्पु उटै–शाप की सीमा के अन्तर्गत; पॊऩ् मलैक्कु–सुन्दर ऋष्यमूक पर्वत को; इवऩ् नण्णलिऩ्–यह आया, इसलिए; पोकलै–नहीं गये (तुम)। ३२७

वह भय से भागा —यह जानते हुए भी तुमने दया नहीं की। 'आखिर यह मेरा अनुज है!' यह नाता भी तुमने नहीं माना। यह स्थान मतंग मुनि (वर्णी का अपभ्रंश रूप प्रयुक्त है —अतिवर्णी के अर्थ में।) के शाप से निर्दिष्ट सीमा के अन्दर यह ऋष्यमूक पर्वत पड़ा है। वह उधर पहुँच गया, इसलिए तुम उधर नहीं गये। ३२७

ईर मावदु मिऱ्पिऱप् पावदुम्
वीर मावदुङ् गल्वियिऩ् मॆय्ऩॆऱि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वार मावदु मऱ्ऱॊरु वऩ्बुणर्
तार मावदॆत् ताङ्गुम् तरुक्कदो 328

ईरम् आवतुम्–दया जो है; इल् पिऱप्पु आवतुम्–कुलीनता जो है; वीरम् आवतुम्–वीरता जो है; कल्वियिऩ्–विद्या द्वारा; मॆय् नॆऱि–सच्चे धर्ममार्ग की; वारम् आवतुम्–श्रेष्ठता जो है; मऱ्ऱु ऒरुवऩ्–(वह) किसी दूसरे की; पुणर्–भोग की हुई; तारम् आवतॆ–पत्नी को; ताङ्कुम्–अपना बना लेने का; तरुक्कु अतो–घमण्ड होगा क्या। ३२८

दया, कुलीनता, वीरता, शिक्षा द्वारा प्राप्त सदाचार, निष्ठा —इन सबमें परोपभुक्त दारा के ग्रहण को सहने की शक्ति है क्या ? । ३२८

मऱन्दि ऱम्बल् वलियमॆ ऩामऩम्
पुऱन्दि ऱम्ब लॆळियवर्प् पॊङ्गुदल्
अऱन्दि ऱम्ब लरुङ्गडि मङ्गैयर्
तिऱन्दि ऱम्ब ऱॆळिवुडै योर्क्कॆलाम् 329

तॆळिवु उटैयोर्क्कु ऎलाम्–सुलझे हुए विचार वाले सभी के लिए; अरुम् कटि–श्रेष्ठ गृहस्थी के संरक्षण में रहनेवाली; मङ्कैयर् तिऱम्–स्त्रियों के सम्बन्ध में; तिऱम्पल्–अतिक्रमण; वलियम् ऎऩा–हम बली हैं, समझकर; मऱम् तिऱम्पल्–वीरता का दुरुपयोग; मऩम् पुऱम् तिऱम्पल्–अन्तःकरण की उपेक्षा करना; ऎळियवर् पॊङ्कुतल्–निर्बलों पर क्रोध करना; अऱम् तिऱम्पल्–धर्म के विपरीत (कार्य) हैं। ३२९

सभी सद्विवेकियों के लिए गृहस्थी के संरक्षण में रहनेवाली स्त्रियों के प्रति अतिक्रम का व्यवहार करना, अपने बल के घमण्ड में अन्तःकरण का उल्लंघन करना, निर्बलों पर उबल पड़ना —ये काम अधार्मिक हैं। ३२९

दरुम मिऩ्ऩ दॆऩुन्दहैत् तऩ्मैयुम्
इरुमै युन्दॆरिन् दॆण्णलै यॆण्णिऩाल्
अरुमै युम्बिदऩ् ऩारुयिर्त् तेवियॆप्
पॆरुमै नीङ्गिड वॆय्दप् पॆऱुदियो 330

तऱमम् इऩ्ततु–धर्म यह है; ऎऩुम्–ऐसा इंगित; तकै तऩ्मैयुम्–उसकी विशेष गति; इरुमैयुम्–और इह-पर दोनों; तॆरिऩ्तु–खूब विश्लेषण करके; ऎण्णलै–तुमने नहीं सोचा; ऎण्णिऩाल्–सोचा होता तो; अरुमै उम्पि तऩ्–प्यारे अनुज की; आर् उयिर् तेवियै–प्राणप्यारी पत्नी को; पॆरुमै नीङ्किट–गौरव त्यागते हुए; ऎय्त पॆऱुतियो–हथिया पाओगे क्या। ३३०

तुमने धर्म, उसकी श्रेष्ठता, पाप-पुण्य, इह-पर —इनका विचार नहीं किया। अगर किया होता तो अपने प्यारे अनुज की पत्नी को अपनी बनाकर गौरव खोते क्या ? । ३३०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आद लानु मवऩॆऩक् कारुयिर्क्
काद लाऩॆऩ लानुनिर् कट्टऩॆऩ्
एदि लारैयु मॆऴियरॆऩ् ऱारैयुम्
तीदु तीर्प्पदॆऩ् शिन्दैक् करुत्तरो 331

आतलानुम्–इसीलिए; अवऩ्–वह (सुग्रीव); अॆऩक्कु–मेरा; आर् उयिर्–प्यारे प्राण-सम; कातलाऩ्–मित्र है; अॆऩलानुम्–उससे भी; निऩ् कट्टऩॆऩ्–तुमको मिटाया; एतु इलारैयुम्–निरपराधों को और; अॆऴियर्–दीन; अॆऩ्ऱारैयुम्–लोगों को; तीतु तीर्प्पतु–हानि से बचाना; अॆऩ् चिन्तै करुत्तु–मेरे मन का संकल्प है। ३३१

इन कारणों से और वह मेरा प्राणप्यारा मित्र है —इस नाते मैंने तुम्हें मारा। निर्दोष और निर्बल लोगों को हानि से बचाना मेरा संकल्प है। ३३१

पिऴैत्त तऩ्मै यिदुवॆऩप् पेरॆऴिल्
तऴैत्त वीर ऩुरैशॆयत् तक्किला
दिऴैत्त वालि यियल्बल वित्तुणै
विऴैत्ति ऱत्तॊऴि लॆऩ्ऩ विळम्बुवाऩ् 332

पिऴैत्त तऩ्मै–अपराध करने का प्रकार; इतु अॆऩ–यह है ऐसा; पेर् अॆऴिल्–बड़ी सुन्दरता से; तऴैत्त वीरऩ्–पूर्ण वीर श्रीराम के; उरै चॆय–कहने पर; तक्कु इलातु–अनुचित; इऴैत्त–जिसने किया; वालि–वाली; इ तुणै–इतने; इयल्पु अल–(हमारे सम्बन्ध में) साध्य नहीं हैं; विऴै तिऱम्–मनमाना; तॊऴिल्–काम करना ही; अॆऩ्ऩ विळम्पुवाऩ्–कहकर समझाने लगा। ३३२

यही तुम्हारा अपराध है। —ऐसा अतिसुन्दर श्रीराम ने वाली को बताया। अनुचित आचरण वाले वाली ने उत्तर में कहा कि ये सब धर्म हमारी जाति के योग्य नहीं हैं। मनमाना करना ही हमारा धर्म है। वह आगे बोला। ३३२

ऐय नुङ्ग ळरुङ्गुलक् कऱ्पिऩप्
पॊय्यिऩ् मङ्गैयर्क् केय्न्द पुणर्च्चिपोल्
शॆय्दि लऩ्ऩॆमैत् तेमलर् मेलवऩ्
अॆय्दि नॆय्दिय दाह वियऱ्ऱिऩाऩ् 333

ऐय–प्रभु; नुङ्कळ्–तुम लोगों की; अरुम् कुल–श्रेष्ठ जाति के; कऱ्पिऩ्–पातिव्रत्य पर आधारित; अ पॊय् इल् मङ्कैयर्क्कु–उन असत्यहीन स्त्रियों के; एय्न्त–योग्य; पुणर्च्चि पोल्–विवाह-मिलन के समान; अॆमै–हमको; तेमलर् मेलवऩ्–दिव्य कमलासन ब्रह्मा ने; चॆय्तिलऩ्–(संभोग-विधान) नहीं दिया है; अॆय्तिऩ्–संयोग हुआ तो; अॆय्तियतु–संभोग बना, ऐसा; इयऱ्ऱिऩाऩ्–विधान बनाया है। ३३३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रभु ! आपकी जाति में पातिव्रत्यशीला और सच्ची (पति-भक्ति रखनेवाली) स्त्रियों के योग्य विवाह-विधान हैं। ऐसे विधान हमारे लिए कमलासन ब्रह्मा ने नहीं बनाये हैं। पर 'संयोग हुआ तो संभोग करो' का विधान ही दिया है। ३३३

मणमु मिल्लै मऱैनॆऱि वन्दन
गुणमु मिल्लैक् कुलमुदऱ् कॊत्तन
उणर्वु शॆन्ऱुऴिच् चॆल्लु मॊऴुक्कलाल्
निणमु नॆय्यु मिणङ्गिय नेमियाय् 334

निणमुम्–(शत्रु-) मांस; नॆय्युम्–और घृत; इणङ्किय–मिलकर लगे हुए; नेमियाय्–चक्रधारी; उणर्वु चॆन्ऱु उऴि–मन जहाँ गया; चॆल्लुम् ऒऴुक्कु–वहीं जाने का चरित्र है; अलाल्–उसके सिवा; मऱै नॆऱि–वेदमार्ग से; वन्तन–आये; मणमुम् इल्लै–विवाह-विधान नहीं; कुल मुतऱ्कु–तुम्हारे (मानव) कुल के; ऒत्तन–समान; कुणमुम् इल्लै–(हमारे पास) गुण भी नहीं। ३३४

शत्रुमांस और घृत से लिप्त चक्र के धारण करनेवाले वीर ! मन जहाँ प्रेरित करता है, वहीं जाना हमारा आचार है। उसके सिवा वेद-सम्मत विवाह नहीं है; न ही तुम्हारे मानवकुलोचित गुण हैं हममें। ३३४

पॆऱ्ऱि मऱ्ऱिदु पॆऱ्ऱदॊऱ् पॆऱ्ऱियिल्
कुऱ्ऱ मुऱ्ऱिलॆ नीयिदु कोडियाल्
वॆऱ्ऱि यऱ्ऱदॊऱ् वॆऱ्ऱियि नायॆनच्
चॊऱ्ऱ चॊऱ्ऱुऱैक् कुऱ्ऱदु शॊल्लुवान् 335

वॆऱ्ऱि अऱ्ऱतु–(सच्ची) विजय से हीन; ऒऱ् वॆऱ्ऱियितान्–श्रेष्ठ विजयी; पॆऱ्ऱि इतु–(हमारी जाति की) स्थिति यह है; पॆऱ्ऱतु ऒऱ् पॆऱ्ऱियिल्–जन्म-प्राप्त धर्म के अनुसार; कुऱ्ऱम् उऱ्ऱिलॆन्–दोषयुक्त न हुआ हूँ; नी इतु कोटि–तुम इसको मन में धारण करो; ऎन्न–ऐसा; चॊऱ्ऱ–कहे हुए; चॊल् तुऱैक्कु–वचनक्रम के; उऱ्ऱतु–योग्य उत्तर को; चॊल्लुवान्–श्रीराम देने लगे। ३३५

हे झूठे विजयी ! यह हमारी जाति को मिली रीति है। उसके अनुसार देखा जाय तो मुझ पर कोई दोष नहीं लगा है। तुम यह बात मन में धारण कर लो। वाली ने जब ऐसा कहा तो श्रीराम उसके विचारक्रम को ध्यान में रखकर योग्य उत्तर देने लगे। ३३५

नलङ्गॊ डेवरिऱ् ऱोन्ऱि नवैयऱक्
कलङ्ग लावऱ नन्नॆऱि काण्डलिन्
विलङ्ग लामै विळङ्गिय दादलान्
अलङ्ग लाय्क्कि दडुप्पदन् ऱामरो 336

नलम् कॊळ्–सद्गुणी; तेवरिल्–देवों से (या के समान); तोन्ऱि–पैदा होकर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नवै अऱ–निर्दोष; कलङ्कला–भ्रमविहीन; अऱम् नल् नॅरि–धर्म का अच्छा मार्ग; काण्टलिन्–जानते हो, उससे; विलङ्कु अलामै–जानवर न रहना; विळङ्कियतु–साफ़ मालूम होता है; आतलाल्–इसलिए; अलङ्कलाय्क्कु–मालाधारी तुम्हें; इतु अटुप्पतु अऱ्ऱु–यह उचित नहीं; आम्–होगा। ३३६

श्रेष्ठ गुण वाले देवों से (या देवों के समान) तुम पैदा हुए। निर्दोष और भ्रमरहित रीति से तुम धर्म की अच्छी गति को जानते हो। इससे साफ़ है, तुम जानवरों में नहीं हो। इसलिए, हे मालाधारी वीर! यह कार्य तुम्हारे योग्य नहीं था। ३३६

पॊऱियिन् याक्कैय दोपुल नोक्किय
अऱिविन् मेलदऱ् ऱोवऱत् ताऱुदान्
नॅऱियि नोन्मैयै नेर्निऱ् ऱुणर्न्दनी
पॅऱुदि योपिळै युऱ्ऱु पॅऱ्ऱिदान् 337

अऱत्तु आऱु तान्–धर्म की गति; पॊऱियिन् याक्कैयतो–इन्द्रियसहित शरीर पर आश्रित रहेगी क्या; पुलन् नोक्किय–इन्द्रियों का आश्रय; अऱिविन् मेलतु अऱ्ऱो–विवेक पर स्थित है न; नॅऱियिन् नोन्मैयै–धर्ममार्ग का बल; नेर् निऱ्ऱु–सीधे प्रत्यक्ष रीति से; उणर्न्त नी–जाननेवाले तुम; पिळै उऱ्ऱु–अपराध करके; उऱु–प्राप्त होनेवाले; पॅऱ्ऱितान्–पद को; पॅऱुतियो–पाओगे क्या। ३३७

धर्म का आचरण क्या इन्द्रियों के आगार शरीर पर निर्भर रहेगा? वह तो इन्द्रियों को वश में रखनेवाली विवेकबुद्धि पर आधारित है। तुम प्रत्यक्ष रूप से धर्म की शक्ति को जानते हो। फिर अपराध करने की स्थिति को ही तुम अपनाओगे क्या?। ३३७

माडु पऱ्ऱि यिडङ्गर् वलित्तिडक्
कोडु पऱ्ऱिय कॊऱ्ऱवर् कूयदोर्
पाडु पॅऱ्ऱ वुणर्विन् पयत्तिनाल्
वीडु पॅऱ्ऱ विलङ्गुम् विलङ्गरो 338

इटङ्कर्–एक नक्र; पऱ्ऱि–पकड़कर; माटु–एक ओर; वलित्तिट–खींचता रहा, तब; पाटु पॅऱ्ऱ–उत्कृष्ट; उणर्विन् पयत्तिनाल्–भावना के फलस्वरूप; कोटु पऱ्ऱिय–शंख (पांचजन्य) रखनेवाले; कॊऱ्ऱवन्–विजयी (श्रीमहाविष्णु को); कूयतु–पुकारकर; ओर्–परम; वीटु पॅऱ्ऱ–पद जिसने प्राप्त किया; विलङ्कुम्–वह जानवर भी; विलङ्कु अरो–जानवर था क्या। ३३८

(तुम गजेन्द्र की बात जानते हो।) नक्र ने उसको पकड़ा और जल की ओर खींचा। गजेन्द्र की बुद्धि श्रेष्ठ थी। उसने पाञ्चजन्य शंख के धारक महाविष्णु को पुकारा। उसे मोक्षपद मिल गया। क्या वह भी जानवर ही माना जाय?। ३३८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिन्दै नल्लऱत् तिऩवऴिच् चेर्दलाल्
पैन्दॊ डित्तिरु विऩ्बरि वाऱ्ऱुवाऩ्
वॆन्दॊ ऴिऱ्ऱुऱै वीडुपॆऱ् ऱैय्दिय
ऍन्दै युम्मॆरु वॆक्कर शल्लऩो 339

नल् अऱत्तिऩ् वऴि–सद्धर्मपथ पर; विऩ्तै चेरतलाल्–मन गया, इसलिए; पैन्तॊटि–स्वर्णकंकणालंकृता; तिरुविऩ्–श्रीलक्ष्मी (सीता) का; परिवु–दुःख; आऱ्ऱुवाऩ्–कम करने के हेतु; वॆम् तॊऴिल् तुऱै–भयंकर (युद्ध-) कर्म में; वीटु पॆऱ्ऱु–मोक्ष प्राप्त कर; ऍय्तिय–जो गये; ऍऩ्तैयुम्–मेरे पिता (तुल्य) जटायु भी; ऍऱुवॆक्कु अरचु–गीधों के राजा; अल्लऩो–नहीं थे क्या। ३३९

(जटायु की बात लो।) उनका मन श्रेष्ठ धर्मपथगामी था। इसलिए वे स्वर्णकंकणधारिणी श्रीलक्ष्मीजी सीता का दुःख कम करने गये और रावण के साथ घोर युद्धकर्म में प्रवृत्त हुए। उसमें उन्हें मोक्षपद प्राप्त हो गया। क्या वह गीधों (पक्षियों) के राजा नहीं हैं ?। ३३९

नऩ्ऱु तीदॆऩ् ऱियऱॆऱि नल्लऱि
विऩ्ऱि वाऴ्व दऩ्ऱोविलङ् गिऩ्ऩियल्
निऩ्ऱ नऩ्ऩॆऱि नीयऱि यानॆऱि
ऒऩ्ऱु मिऩ्मैयुऩ् वाय्मै युणर्त्तुमाल् 340

नऩ्ऱु तीतु ऍऩ्ऱु–अच्छा, बुरा यह; इयल् तॆरि–(और) उनका स्वभाव जाननेवाले; नल् अऱिवु इऩ्ऱि–अच्छे विवेक के विना; वाऴ्वतु अऩ्ऱो–जीना न; विलङ्किऩ् इयल्–जानवरों का स्वभाव है; निऩ्ऱ नल् नॆऱि–सुस्थापित अच्छे मार्गों में; नी–तुम; अऱिया नॆऱि–जो नहीं जानते वह मार्ग; ऒऩ्ऱुम् इऩ्मै–कुछ नहीं है, यह बात; उऩ् वाय्मै–तुम्हारे वचन ही; उणर्त्तुम्–बता देंगे। ३४०

जानवर का लक्षण है क्या ? कौन सी बात अच्छी है, कौन सी बुरी —इसके ठीक-ठीक लक्षण के ज्ञान के विना रहना ही तो जानवरों का स्वभाव है ! इस संसार में सुस्थापित धर्म-मार्गों में तुमको अज्ञात कोई भी मार्ग नहीं है —यह तथ्य तुम्हारे वचनों से साफ़ प्रकट होता है ! । ३४०

तक्क विऩ्ऩ तहादऩ विऩ्ऩवॆऩ्
ऱॊक्क वुऩ्ऩल राहि युयर्ऩ्दुळ
मक्क ऴुम्विलङ् गेमऩु विऩ्ऩॆऱि
पुक्क वेलव् विलङ्गुम् बुत्तेऴिरे 341

इऩ्ऩ तक्क–क्या-क्या ग्राह्य हैं; इऩ्ऩ तकातत–क्या-क्या अग्राह्य हैं; ऍऩ्ऱु–यह; ऒक्क–सबको लेकर; उऩ्तलर् आकि–विचार न करनेवाले बनकर; उयर्ऩ्तु उळ–(जन्म से) उच्चता प्राप्त; मक्कळुम्–मानव भी; विलङ्के–पशु ही हैं; अ विलङ्कुम्–वे पशु भी; मऩुविऩ् नॆऱि–मनुनीति; पुक्कवेल्–(सम्मत मार्ग में) प्रवेश करें तो; पुत्तेऴिरे–देव ही (मान्य) होंगे। ३४१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो जन्म से उत्कृष्ट मानव पैदा हुए हैं, पर यह विवेक नहीं करते कि क्या ग्राह्य है, क्या अग्राह्य और सबको तोलकर कोई सही निर्णय नहीं करते वे पशु ही हैं ! पर वे जन्मजात पशु भी मनुनीति के अनुसार चलने लगें तो वे देवों के समकक्ष होंगे । ३४१

काल ऩाऱ्ऱल् कडिन्द कणिच्चियान्
पालि ऩाऱ्ऱिय पत्ति पयत्तलान्
मालि ऩाऱ्ऱरु वऩ्बॆरुम् बूदङ्गळ्
नालि ऩाऱ्ऱलु माऱ्ऱुऴि नण्णिऩाय् 342

कालऩ् आऱ्ऱल्–यम के बल को; कटिन्त–जिन्होंने प्रभावहीन बनाया; कणिच्चियान् पालिऩ्–उन परशुधर शिवजी के प्रति; आऱ्ऱिय–तुमने जो की; पत्ति पयत्तलाल्–उस भक्ति के फलीभूत होने से; मालिऩाल्–शिवजी के सद्भाव के कारण; तरु–दत्त; वल् पॆरुम् पूतङ्कळ्–बलिष्ठ और बड़े भूतों के; नालिऩ्–चारों (अनल, अनिल, जल, थल) के; आऱ्ऱलुम्–प्रताप को; माऱ्ऱु उऴि–दूर करने की शक्ति; नण्णिऩाय्–प्राप्त की (तुमने) । ३४२

तुमने काल के प्रभाव का निरसन करनेवाले शिवजी की भक्ति की । शिवजी ने तुम पर दयाभाव रखा और उसके फलस्वरूप तुममें अनल, अनिल, जल और थल —इन चारों प्रबल भूतों के बल को भी बेकार करने की शक्ति आ गयी थी । ३४२

मेव रुन्दरु मत्तुऱै मेविऩार्
एव रुम्बवत् तालिऴिन् दोर्हळुम्
ताव रुन्दव रुम्तम दऩ्मैशाल्
देव रुम्मुळर् तीमै तिरुत्तिऩार् 343

मेवु अरुम्–दुष्प्राप्य; तरुम तुऱै–धर्ममार्ग पर; मेविऩार् एवरुम्–लगे हुए सब कोई; पवत्ताल्–पाप के कारण; इऴिन्तोर्कळुम्–निकृष्ट बने हुए लोग; ता अरुम्–दोषहीन; तवरुम्–तपस्वी; तम–अपने; तऩ्मै चाल्–गुणों में उत्कृष्ट; तेवरुम्–देव (इनमें); तीमै तिरुत्तिऩार्–बुराई करनेवाले; उळर्–हैं । ३४३

सभी तरह के लोगों में महान भी हैं और क्षुद्र भी पाये जाते हैं । दुर्गम धर्मपथ के पथी , पाप के कारण पतित लोग, निर्दोष तपस्वी, अपने गुणों के कारण उच्च बने हुए देव —सबमें ऊँचे भी हैं, ओछे भी । ३४३

इऩैय दादलि ऩॆक्कुलत् तियावर्क्कुम्
विऩैयि ऩाल्वरु मेऩ्मैयुङ् गीऴ्मैयुम्
अऩैय तऩ्मै यऱिन्दु मऴित्तऩै
मऩैयिऩ् माट्चियॆऩ् ऱाऩ्मऩु नीदियाऩ् 344

मऩु नीतियाऩ्–मनुनीति पर चलनेवाले श्रीराम; इऩैयतु आतलिऩ्–ऐसी स्थिति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है, इसलिए; अॅ कुलत्तु यावर्क्कुम्–किसी भी जाती के सभी के लिए; मेन्मैयुम्–गौरव और; कीळ्मैयुम्–क्षुद्रता; वित्तैयित्ताल्–उनके कर्म से; वरुम्–प्राप्त होती हैं; अत्तैय तन्मै–वह रीति; अऱिन्तुम्–जानते हुए भी; मत्तैयिन्–गृहस्थी का; माट्चि–गौरव; अळित्तत्तै–मिटा दिया; अॅन्ऱान्–बोले। ३४४

मनुनीति के अनुसार चलनेवाले श्रीराम ने वाली से और भी कहा—यही सच्ची स्थिति है। किसी भी कुल के किसी को भी महत्ता या क्षुद्रता उसके कर्म के अनुसार ही प्राप्त होगी। यह सब जानते हुए भी तुमने गृहस्थी का गौरव मिटा दिया। ३४४

अव्वुरै यमैयक् केट्ट वरिक्कुलत् तरशु मान्ऱ
शॅव्वियो यत्तैय दाहच् चॅरुक्कळत् तुरुत्तॅय् दादे
वॅव्विय पुळिञ नॅन्त्त विलङ्गित्तै मऱैन्दु विल्लाल्
अॅव्विय दॅन्त्तै यॅन्ऱा त्तिलक्कुव त्तियम्ब लुऱ्ऱान् 345

अ उरै–वे वचन; अमैय–ध्यान से; केट्ट–सुनकर; अरि–वानर; कुलत्तु–कुल का; अरचुम्–राजा वाली भी; आन्ऱ–उत्कृष्ट; चॅव्वियोय्–सदाचारी; अत्तैयतु आक–वही हो; चॅरु कळत्तु–युद्धभूमि में; उरुत्तु–कोप करके; अॅय्ताते–न आकर; वॅव्विय–क्रूर; पुळिञन् अॅन्त्त–व्याध के समान; विलङ्कित्तै–अलग (या पशु को); मऱैन्तु–आड़ में रहकर; विल्लाल् अॅव्वियतु–धनु से शर चलाना; अॅन्त्तै–कैसा (न्याय) है; अॅन्ऱान्–पूछा; इलक्कुवन्–लक्ष्मण; इयम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। ३४५

वाली ने श्रीराम का कहना ध्यान से सुना। कपिकुलराज ने पूछा कि उत्कृष्ट सदाचारी ! तुम्हारा कहना सही रहे ! पर युद्धभूमि में कोप के साथ प्रकट न होकर पशु को मारनेवाले क्रूर व्याध के समान तुमने (अलग रहकर) धनुष से शर चलाया। यह कैसा (धर्म) है ? उसका उत्तर लक्ष्मण देने लगे। ३४५

मुन्बुनित् रम्बि वन्दु शरण्बुह मुऱैयि लोयैत्
तॅन्बुलत् तुय्प्पॅ नॅन्ऱु शॅप्पित्तन् शॅरुवि नीयुम्
अन्बित्तै युयिरुक् काहि यडैक्कल मियान्तु मॅन्बाय्
अॅन्बदु करुदि यण्णल् मऱैन्दुनित् रॅय्द दॅन्ऱान् 346

नित् तम्पि–तुम्हारे भाई के; मुन्पु वन्तु–पहले आकर; चरण् पुक–शरण माँगने पर; मुऱै इलोयै–अधर्मी तुम्हें; तॅन् पुलत्तु–दक्षिणी प्रदेश में (यमपुरी में); उय्प्पॅन्–पहुँचा दूँगा; अॅन्ऱु–ऐसा; चॅप्पितन्–(श्रीराम ने) कहा; चॅरुविल्–युद्ध में; नीयुम्–तुम भी; उयिरुक्कु अन्पित्तै–प्राणों के मोह में; आकि–पड़कर; यान्तुम् अटैक्कलम्–मैं भी शरणप्रार्थी हूँ; अॅन्पाय्–कहोगे; अॅन्पतु करुति–यह सोचकर; अण्णल्–महिमायुक्त श्रीराम का; मऱैन्तु निन्ऱु–आड़ लेकर; अॅय्तत्तु–चलाना; अॅन्ऱान्–कहा। ३४६

तुम्हारे भाई ने पहले आकर श्रीराम की शरण माँगी और श्रीराम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ने वादा किया कि दुराचारी तुम्हें यमपुरी भिजवा दूँगा। युद्ध में तुम भी प्राणों के मोह में पड़कर शरण माँगोगे तो क्या किया जायगा ? यही सोचकर श्रीराम ने आड़ में से शर चलाया। ३४६

कविकुलत् तरशु मऩ्ऩ कट्टुरै करुत्तिऱ् कॊण्डान्
अवियुऱु मऩत्त ऩाहि यऱत्तिऱ ऩऴियच् चॆय्यान्
पुवियिडै यण्ण लॆऩ्ब दॆण्णिनिऱ् पॊरुन्द मुऩ्ऩे
शॆवियुऱु केळ्विच् चॆल्वऩ् शॆऩ्ऩियि ऩिरैञ्जिच् चॊऩ्ऩाऩ् 347

कवि कुलत्तु अरचुम्–वानरकुलाधिपति ने भी; अऩ्ऩ कट्टुरै–वह व्याख्या; करुत्तिल् कॊण्टाऩ्–समझ ली; अवि उऱु–शान्त; मऩत्तऩ् आकि–मन वाला बनकर; अण्णल्–महिमामय श्रीराम; पुवि इटै–भूमि पर; अऱम् तिऱऩ्–धर्म की श्रेष्ठता को; अऴिय चॆय्याऩ्–मिटने न देंगे; ऎऩ्पतु–यह तथ्य; ऎण्णिऩिल् पॊरुन्त–चिन्तन में आया, तो; चॆवि उऱु–कर्ण द्वारा; केळ्वि चॆल्वऩ्–श्रवणज्ञान के धनी के; मुऩ्ऩे–सामने; चॆऩ्ऩियित् इरैञ्चि–सिर से नमस्कार करके; चॊऩ्ऩाऩ्–बोला। ३४७

वानरकुलाधिपति ने उनके हेतुकथन पर ध्यान दिया। बात समझी। शान्त-मन हुआ। उसके मन में यह विश्वास जगा कि महिमामय श्रीराम भूमि पर धर्म की स्थिति को बिगाड़नेवाला कोई काम नहीं करेंगे। इस तथ्य के जानने पर वाली श्रवण-ज्ञान-धन श्रीराम के सामने सिर झुकाकर नमस्कार करके बोला। ३४७

तायॆऩ वुयिर्क्कु नल्हित् तरुममुन् दहवुञ् जार्वुम्
नीयॆऩ निऩ्ऱ नम्ब ऩॆऱियिऩि ऩोक्कु नेर्मै
नायॆऩ निऩ्ऱ वॆम्बा ऩवैयुऱु लुणर लामे
तीयऩ पॊऱुत्ति यॆऩ्ऱाऩ् शिऱियऩ शिऩ्दि यादाऩ् 348

चिऱियऩ चिऩ्तियाताऩ्–छोटी बातों की ओर ध्यान न देनेवाला; ताय् ऎऩ–माता के समान; उयिर्क्कु–जीवों को; नल्कि–हित देकर; तरुमुम्–धर्म; तकवुम्–और तटस्थता; चार्वुम्–आधार; नी–आप; ऎऩ निऩ्ऱ–ऐसे विद्यमान; नम्प–नायक; ऩॆऱियिऩिल्–श्रेष्ठ मार्ग पर; नोक्कुम् नेर्मै–स्थित होकर विचार करने की श्रेष्ठता के आधार पर; नाय् ऎऩ–कुत्ते के समान; निऩ्ऱ–रहनेवाले; ऎम् पाल्–हमारे; नवै उऱल्–दोषयुक्त होने की बात; उणरलामे–विचारणीय है क्या; तीयऩ–बुराइयाँ; पॊऱुत्ति–क्षमा कीजिए; ऎऩ्ऱाऩ्–बोला। ३४८

वाली छोटी बातों पर ध्यान देनेवाला नहीं था। (परमपदप्राप्ति, श्रीराम की महिमा आदि के सामने अपना दुःख और क्रोध भूल गया।) हे नायक ! माता के समान जीवों का हित करनेवाले ! धर्म, तटस्थता और आश्रय आप ही हैं, ऐसे विद्यमान श्रीराम ! धर्म-मार्ग पर स्थित रहकर विचार करनेवाले आप श्वान-सम हमारी दोषयुक्तता का विश्लेषण करेंगे क्या ? हमारी बुराइयों को क्षमा कर दीजिए। ३४८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इरन्दनन् पिन्नु मॅन्दै यावदु मॅण्ण ऱेऱ्ऱाक्
कुरङ्गॅनक् करुदि नायेन् कूऱिय मनत्तुक् कॊळ्ळेल्
अरन्दैवॅम् बिऱवि वॅन्नोय्क् करुमरुन् दनैय वैया
वरन्दरु वळ्ळा लॊन्ऱु केळॅन मऱित्तुम् जॊल्वान् 349

पिन्नुम्–फिर भी; इरन्तनन्–विनय करता हुआ; अॅन्तै–विधाता; अरन्तै–दुःखमूल; वॅम् पिऱवि अॅन्–भयानक जन्म रूपी; नोय्क्कु–रोग के; अरु मरुन्तु अनैय–श्रेष्ठ औषध-समान; ऐया–प्रभु; वरम् तरु–वरदायी; वळ्ळाल्–दानी; यावतुम् अॅण्णल् तेऱ्ऱा–किंचित भी विवेक न रखनेवाले; नायेन्–मुझ दास को; कुरङ्कु अॅन करुति–वानर समझकर; कूऱिय–कहे गये; मनत्तु कॊळ्ळेल्–मन में न रखिए; ऒन्ऱु केळ्–एक बात सुनिए; अॅन–ऐसा; मऱित्तुम्–आगे भी; चॊल्वान्–कहने लगा। ३४९

वाली ने यह कहकर आगे विनय की। विधाता! दुःखमूल भयंकर भवरोग के दिव्य औषध, प्रभु! याचित वरों को देनेवाले दानी! विवेक-हीन वानर हूँ आपका दास मैं। इसका विचार करके आप मेरी कही हुई बातों को मन में न रखें। और भी एक विनय है, सुनिए। ३४९

एवुहूर् वाळिया लॅय्दुना यडियनेन्
आविपोम् वेलैवा यऱिवुदन् दरुळिनाय्
मूवर्नी मुदल्वनी मुऱ्ऱुनी मऱ्ऱुनी
पावनी दरुमनी पहैयुनी युऱवुनी 350

एवु–प्रेरित; कूर् वाळियाल्–तीक्ष्ण शर से; अॅय्तु–चलाकर; नाय् अटियनेन्–श्वान से मुझ दास को; आवि पोम्–प्राणों के चलने के; वेलै वाय्–समय पर; अऱिवु तन्तु अरुळिनाय्–ज्ञान प्रदान कर दया दिखायी; मूवर् नी–आप त्रिदेव हैं; मुतल्वन् नी–उनके आदि भी आप; मुऱ्ऱुम् नी–ये सारे आप ही; मऱ्ऱुम् नी–अन्य सभी आप ही; पावम् नी–पाप आप हो; तरुमम् नी–धर्म भी आप; पकैयुम् नी–शत्रु भी आप; उऱवुम् नी–सम्बन्धी भी आप हैं। ३५०

आपने तीक्ष्ण बाण चलाकर मुझे मारा और मरते समय आकर दास को ज्ञान देकर बड़ा उपकार किया। आप त्रिदेव हैं; त्रिदेवों में आदि हैं। संसार के सारे पदार्थ आप ही हैं। अन्य भी आप ही हैं। आप पाप, धर्म, शत्रु, बन्धु सब हैं। ३५०

पुरमॅला मॅरिशॅय्दोन् मुदलिनोर् पॊरुविला
वरमॅला मुरुवियॅन् वशॅयिला वलिमैशाल्
उरमॅला मुरुवियॅन् नुयिरॅला मुरुवुनिन्
शरमलार् पिऱिदुवे रुळदरो दरुममे 351

पुरम् अलाम्–त्रिपुर सारा; अॅरि चॅय्तोन्–जिन्होंने जला दिये वे रुद्र; मुतलितोर्–आदि देवों के; पॊरुवु इला–अनुपम; वरम् अॅलाम्–सभी वरों को;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उरुवि–दूर करके; ऍन्–मेरे; वचै इला–अनिन्द्य; वलिमै चाल्–बलयुक्त; उरम् ऍलाम् उरुवि–वक्ष सब वेधकर; ऍन् उयिर् ऍलाम्–मेरे सारे प्राणों को; उरुवुम्–विद्ध करनेवाले; निन् चरम् अलाल्–आपके शर के अलावा; तरुमम्–धर्म; पिऱितु वेऱु–अन्य कोई; उळतु अरो–है क्या। ३५१

त्रिपुरदाहक शिवदेव आदिदेवताओं ने मुझे अनुपम वर दिये थे। उन सबको विफल करके, अनिंद्य और सबल मेरे वक्ष को और प्राणों को विद्ध करके जानेवाला आपका उत्तम बाण ही धर्म है। उसके सिवा धर्म अलग कहीं है क्या ? । ३५१

[अतिरिक्त पद— बड़े पराक्रमी शिवजी अपने भक्तों को उच्च वर (परमपद) दिलाने की शक्ति रखते हैं। वह आपके नाम के सदा स्मरण करने से ही उन्हें प्राप्त हुई। ऐसे आपके मैंने प्रत्यक्ष दर्शन कर लिये। फिर मेरे लिए दुर्लभ क्या है ?]

यावरु मॅवैयुमा यिरुदुवुम् बयनुमाय्
पूवुनल् वॅऱियुमॉत् तॉरुवरुम् पॉदुमैयाय्
यावनी यावदॅन् ऱऱिविना ररुळिनार्
तावरुम् पदमॅनक् करुमैयो तनिमैयोय् 352

तनिमैयोय्–अकेले देवता; यावरुम्–सब कोई और; ऍवैयुम् आय्–बस कुछ बनकर; इरुतुवुम् पयनुम् आय्–ऋतुएँ और उनके फल बनकर; पूवुम् नल् वॅऱियुम् ऑतुतु–पुष्प और सुगन्ध के समान; ऑरुवु अरुम्–अपृथक् रहनेवाले; पॉतुमैयाय्–सम रहनेवाले; नी यावन्–आप कौन हैं; यावतु–कैसे हैं; ऍन्ऱु–यह बात; अऱिविनार् अरुळिनार्–ज्ञान ने दिखा दी; ता अरुम् पतम्–अकलंक परमपद; ऍनक्कु अरुमैयो–मेरे लिए दुर्लभ है क्या। ३५२

अद्वितीय श्रीराम ! सब कोई, सब कुछ, ऋतुएँ और उनके फल सभी में, पुष्प में सुगन्ध के समान समान रूप से व्याप्त रहते हैं आप। मुझे इसका ज्ञान हो गया कि आप कौन हैं और आपकी प्रकृति क्या है। अब मेरे लिए अनिंद्य परमपद भी दुर्लभ रहेगा क्या ? नहीं। ३५२

उण्डॅनुन् दरुममे युरुवमाय् निन्ऱनिन्
कण्डनॅन् मऱ्ऱिनिक् काणवॅन् कडवनो
पण्डॉडिन् ऱळवुमे यॅन्पॅरुम् बळविनै
दण्डमे यडियनेऱ् कुरुपदन् दरुवदे 353

उण्टु ऍनुम्–(सनातन रूप से) है ऐसा; तरुममे–धर्म ही; उरुवमाय् निन्ऱ–स्वरूप में विद्यमान; निन् कण्टनॅन्–आपके दर्शन मैंने कर लिये; मऱ्ऱु–अलावा; इनि काण ऍन् कटवनो–और भी किसी के दर्शन करनेवाला बनूँगा क्या; ऍन्–मेरे; पॅरुम् पळम् विनै–बड़े और पूर्वकृत कर्म; पण्टु ऑटु–आदि से लेकर; इन्ऱु अळवुमे–आज तक के ही; तण्टमे–यह दण्ड ही; अटियनेऱ्कु–मुझ दास को; उऱु पतम्–परमपद; तरुवते–दिला देगा। ३५३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धर्म के अस्तित्व को धर्मस्वरूप आपमें मैंने देख लिया। फिर आगे क्या देखना चाहूँगा ? मेरे पूर्वकृत कर्म पहले से आज तक ही रहे। (अब मिट गये।) आपने जो दण्ड दिया वही मुझे परमपद दिला देगा। ३५३

मऱ्ऱिनि युदवि युण्डो वानिनु मुयर्न्द मानक्
कॊऱ्ऱव वुन्नै यॆन्नैक् कॊल्लिय कॊणर्न्दु तॊल्लैच्
चिऱ्ऱिनक् कुरङ्गि नोडुन् दिरिवुऱच् चॆय्द चॆय्है
वॆऱ्ऱर शॆय्दि यॆम्बि वीट्टर शॆनक्कु विट्टान् 354

वानिनुम् उयर्न्त–व्योम से भी उन्नत; मान कॊऱ्ऱव–सम्मान्य विजयी; ऎम्पि–मेरे छोटे भाई ने; ऎन्नै कॊल्लिय–मुझे मरवाने; उन्नै–आपको; कॊणर्न्तु–लाकर; तॊल्लै–प्राचीन; चिऱ इन कुरङ्कितोटुम्–अल्प जाति के वानरों के स्वभाव के; तिरिवु उऱ–विपरीत; चॆय्त चॆय्कै–जो किया उस कार्य से; वॆऱुमै अरचु–कोरा राज्य; ऎय्ति–प्राप्त करके; ऎनक्कु–मुझे; वीटु अरचु–परमपद का मोक्ष-राज्य; विट्टान्–प्राप्त करने दिया; मऱ्ऱु इति–इससे श्रेष्ठ कोई; उतवि–सहायता; उण्टो–हो सकती है क्या। ३५४

व्योम से भी उन्नत महिमा के विजयी स्वामी ! मेरा अनुज मुझे मारने आपको ले आया। इस कार्य द्वारा उसने क्षुद्र जाति के वानरों के स्वभाव के विपरीत एक बड़ा श्रेष्ठ काम किया है। इससे उसने स्वयं कोरा वानराधिपत्य लेकर मुझे परमपद मोक्ष का राज्य दिला दिया। इससे बढ़कर उसके हाथों क्या उपकार हो सकता है ? । ३५४

ओविय वुरुव नाये नुळदॊन्ऱु पॆऱुव दुन्बाल्
पूविय नऱुव मान्दिप् पुन्दिवे ऱुऱ्ऱ पोळ्दिल्
तीविनै यियऱ्ऱु मेनु मॆम्वियैच् चीऱि यॆन्मेल्
एविय पहळि यॆन्नुङ् गूऱ्ऱिनै येव लॆन्ऱान् 355

ओविय उरुव–चित्रसमान रूपवान; नायेन्–दास का; उन् पाल्–आपसे; पॆऱुवतु–माँग लेना; ऒन्ऱु उळतु–एक है; पू इयल्–पुष्पों से प्राप्य; नऱवम् मान्ति–मधु पीकर; पुन्ति–बुद्धि; वेऱु उऱ्ऱ पोळ्तिल्–बदल जब जाती है, तब; ती विनै इयऱ्ऱुमेनुम्–बुरे कार्य कर लेगा तो भी; ऎम्पियै चीऱि–मेरे भाई पर गुस्सा करके; ऎन् मेल् एविय–मुझ पर प्रेषित; पकळि ऎन्नुम्–शर रूपी; कूऱ्ऱिनै–यम को; एवल्–मत चला दें; ऎन्ऱान्–यह प्रार्थना की। ३५५

चित्र-सम रूपवान ! मुझ दास को आपसे एक याचना करनी है। पुष्पों से प्राप्य मधु को पीकर उस नशे में बुद्धि खोकर मेरा भाई अगर कोई बुरा काम करेगा, तो आप उस पर गुस्सा करके मुझ पर जो शर के रूप में यम को प्रेरित किया उसे उस पर न चलाइएगा। ३५५

इन्न मॊन्ऱिरप्प दुण्डा लॆम्बियै युम्बि मार्हळ्
तन्मुनैक् कॊल्वित् तानॆन् ऱिहळ्वरेऱ् ऱडुत्ति तक्कोय्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुन्नमे मॊऴिन्दा यन्ऱे यिवन्कुऱै मुडिप्प दैय
पिन्निवन् विनैयिन् शॆय्है यदनैयुम् बिऴैक्क लामो 356

तक्कोय्–उत्तम; इन्नम् ऒन्ऱु–और एक; इरप्पतु–याचना; उण्टु–है; उम्पिमारकळ्–आपके छोटे भाई; ऎम्पियै–मेरे अनुज की; तन् मुत्तै–अपने अग्रज को; कॊल्वित्तान्–मरवाया (सुग्रीव ने); ऎन्ऱु–कहकर; इकऴ्वरेल्–निन्दा करें तो; तटुत्ति–उनको रोकिए; ऐय–प्रभु; इवन् कुऱै–इसका कष्ट; मुटिप्पतु–दूर करना; मुन्नमे–पहले ही; मॊऴिन्ताय् अन्ऱे–आपने वचन दिया न; पिन्–फिर; इवन् विनैयिन्–इसके प्रारब्ध के; चॆय्कै अतनैयुम्–परिणाम-कर्म से; पिऴैक्कल्–बचना; आमो–साध्य है क्या। ३५६

उत्तम गुण वाले ! और एक प्रार्थना है। अगर आपके भाई मेरे भाई की, यह कहकर निन्दा करेंगे कि उसने अपने बड़े भाई को मरवा दिया तो आप उनको रोक दें। आपने इसकी याचना पूरी करने का वादा किया था। उस सिलसिले में वह जो काम करेगा उसके फल से बच सकेंगे क्या ? । ३५६

मऱ्ऱिलॆ नॆन्निनु माय वरक्कनै वालिऱ् पऱ्ऱिक्
कॊऱ्ऱव निन्गट् टनदु कुरक्कियऱ् ऱॊऴिलुङ् गाट्टप्
पॆऱ्ऱिलॆन् कडन्द शॊल्लिऱ् पयनिलै पिऴैप्प दिन्ऱि
उऱ्ऱदु शॆय्हॆन् ऱालु मुरियनिव् वनुम नॆन्ऱान् 357

कॊऱ्ऱव–विजयी राजा राम; मऱ्ऱु इलॆन्–और कुछ करनेवाला न रहा; ऎन्नितुम्–तो भी; माय अरक्कनै–वंचक राक्षस को; वालिल् पऱ्ऱि–पूँछ में बाँधकर; निन् कण् तन्तु–आपके पास सौंपकर; कुरङ्कु इयल् तॊऴिलुम्–वानरयोग्य कार्य; काट्ट पॆऱ्ऱिलॆन्–दिखा नहीं पाया; कटन्त–बीती बात; चॊल्लिल्–कहने में; पयन् इलै–कोई लाभ नहीं है; पिऴैप्पतु इन्ऱि–गलती के विना; उऱ्ऱतु–यह जो मिला है; चॆय्क–वह काम करो; ऎन्ऱालुम्–कहने पर; इ अनुमन्–यह हनुमान; उरियन् ऎन्ऱान्–समर्थ है, कहा। ३५७

(वाली ने आगे कहा—) विजयशील श्रीराम ! और कुछ नहीं कर सका तो भी वंचक राक्षस को पूँछ से बाँधकर आपके पास लाता और अपना वानर-सामर्थ्य दिखाता। वह भाग्य नहीं रहा। पर जो बीत चुका, उसको अब कहने से क्या लाभ है ? पर यह जो हनुमान है उसे, 'जो आ गया, इस काम को करो'— की आज्ञा दी जाय तो वह पूर्ण रूप से समर्थ है। ३५७

अनुमनॆन् बवनै याऴि यैयनिन् शॆय्य शॆङ्गैत्
तनुवॆन निनैदि मऱ्ऱॆन् तम्बिनिन् तम्बि याह
निनैदियोर् तुणैव रिन्नो रनैयव रिलैनी यीण्डव्
वनिदैयै नाडिक् कोडि वानिनु मुयर्न्द तोळाय् 358

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनुमन् ऍन्पवनै–हनुमान नाम के उसको; निन्–आपका; चॆय्य–सुन्दर; चॆम् कै तन्नु ऍन्–लाल हाथ का धनु; निनैति–समझिए; आळि ऐय–चक्रधारी प्रभु; वानिन्नुम्–आकाश से भी अधिक; उयर्न्त–उन्नत; तोळाय्–कन्धे वाले; मऱ्ऱु–और भी; ऍन् तम्पि–मेरे भाई को; निन् तम्पि आक–अपने भाई के रूप में; निनैति–समझें; इन्नोर् अनैयवर्–इनसे तुल्य; ओर् तुणैवर्–एक साथी; इलै–दूसरा नहीं होगा; ईण्टु–ऐसी स्थिति में; नी–आप; अ–उन; वनितैयै–देवी को; नाटि–ढूँढ़कर; कोटि–प्राप्त कर लीजिए। ३५८

चक्रधारी देव ! आकाश से भी अधिक उन्नत कन्धों वाले ! इस हनुमान को आप अपने लाल हाथ का सुन्दर धनु मान लीजिए। और मेरे छोटे भाई को अपना छोटा भाई मान लीजिए। इनके समान आपको दूसरा सहायक नहीं मिलेगा। उनकी सहायता से आप अपनी पत्नी सीतादेवी को ढूँढ़कर प्राप्त कर लीजिए। ३५८

ऍन्ऱवऱ् कियम्बिप् पिन्न रिरुन्दन निळव रन्नैत्
तन्ऱुणैत् तडक्कै नीट्टि वाङ्गिनन् ऱळुवि मैन्द
ऒन्ऱुनक् कुरैप्प दुण्डा लुऱुदियः(ह्) दुणर्न्दु कोडि
कुन्ऱिनु मुयर्न्द तोळाय् वरुन्दलै यॆन्ऱु कूऱुम् 359

ऍन्ऱु–ऐसा; अवऱ्कु इयम्पि–उनसे कहकर; पिन्नर्–पीछे; इरुन्तनन्–जो रहा, उस; इळवल् तन्नै–लघु भाई को; तन् तुणै–अपने जोड़े के; तट कै–विशाल हाथ; नीट्टि–बढ़ाकर; वाङ्किनन्–खींच लेकर; तळुवि–गले लगाते हुए; मैन्त–बेटे; कुन्ऱिनुम् उयर्न्त–पर्वत से भी बढ़े हुए; तोळाय्–कन्धों वाले; ऒन्ऱु–एक बात; उनक्कु–तुमसे; उऱुति–हितकारी; उरैप्पतु–कहनी; उण्टु–है; अ..तु–उसे; उणर्न्तु–समझकर; कोटि–मान लो; वरुन्तलै–दुःख मत करो; ऍन्ऱु–कहकर; कूऱुम्–बोला। ३५९

वाली ने यह सब श्रीराम से कहा। फिर उसने अपने दोनों हाथ बढ़ाकर अपने पीछे खड़े रहे सुग्रीव को पकड़कर अपने पास खींच लिया और गले लगा लिया। फिर उससे कहा कि बेटे ! पर्वत से भी अधिक बढ़े हुए कन्धों वाले ! तुमसे एक बात कहनी है। उसे सुनो, समझो और मन में धारण करो। दुःख मत करो। वह समझाकर कहने लगा। ३५९

मऱैहळुम् मुनिवर् यारुम् मलर्मिशै ययनुम् मऱ्ऱैत्
तुऱैहळिन् मुडिवुञ् जॊल्लुन् दुणिपॊरु डिणिविऱ् ऱूक्कि
अऱैहळ लिराम नाहि यऱनॆऱि निऱुत्त वन्द
तिऱैयॊरु शङ्गै यिन्ऱि यॆण्णुदि यॆण्ण मिक्कोय् 360

ऍण्णम् मिक्कोय्–सोच-विचार में समर्थ; मऱैकळुम्–वेद; मऱ्ऱै–और अन्य ग्रन्थों के बताये हुए; तुऱैकळिन् मुटिवम्–मार्ग का अन्त; मुनिवर् यारुम्–सभी मुनिगण;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मलर् मिचै अयतुम्–कमलासन ब्रह्मा; चॊल्लुम्–जो बताते हैं; तुणि पॊरुळ्–वह निश्चित तत्त्व; तिणि विल्–सारयुक्त धनु; तूक्कि–उठाए हुए; अऱै कळल्–क्वणित पायलधारी; इरामन् आकि–श्रीराम बनकर; अऱ नॆऱि निऱुत्त–धर्ममार्ग प्रतिष्ठापनार्थ; वन्ततु–आया है; इऱै–थोड़ा भी; ऒरु चङ्कै इत्ऱि–कोई संशय विना; ऎण्णुति–समझो। ३६०

सोच-विचार करने में समर्थ सुग्रीव ! ये जो श्रीराम हैं वह परम-तत्त्व हैं, जिसकी सत्ता का दृढ़ता से वेद घोषित करते है; अन्य ग्रन्थों का विषय है; जिसके बारे में सारे मुनिगण और कमलासन बतलाते हैं। वही तत्त्व क्वणनशील पायलधारी श्रीराम बनकर हाथ में कठोर धनुष लिये हुए संसार में धर्म-मार्ग को सुस्थापित करने के लिए अवतरित हुआ है ! इसको विना किसी शंका या संशय के मान लो। ३६०

निऱ्किन्ऱ शॆल्वम् वेण्डि नॆऱिनिन्ऱ पॊरुळ्ह ळॆल्लाम्
कऱ्किन्ऱ वित्तन्ऱन् नामङ् गरुदुव विवनैक् कण्डाय्
पॊऱ्कुन्ऱ मनैय तोळाय् पॊदुनिन्ऱ निलैमै नोक्किन्
ऎऱ्कॊन्ऱ वलिये शालु मिदऱ्कॊन्ऱु मेदु वेण्डा 361

पॊन् कुन्ऱम् अनैय–मेरुपर्वत-सदृश; तोळाय्–भुजा वाले; निऱ्किन्ऱ–शाश्वत; चॆल्वम् वेण्टि–पद (परमपद) चाहकर; नॆऱि निन्ऱ–धर्ममार्ग पर स्थित; पॊरुळ्कळ् ऎल्लाम्–सभी जीव; इवन् तन् नामम्–इनका नाम; कऱ्किन्ऱ–जप करते हैं; इवनै करुतुव–इनका ध्यान करते हैं; कण्टाय्–जानते हो; पॊतु निन्ऱ–तटस्थ; निलैमै नोक्किन्–स्थिति में रहकर देखें तो; ऎन् कॊन्ऱ–मुझे मारने की; वलिये–शक्ति ही; चालुम्–प्रमाण होगा; इतऱ्कु–इसके लिए; ऒन्ऱुम्–और कोई; एतु वेण्टा–हेतु की आवश्यकता नहीं है। ३६१

मेरुपर्वत-सम कन्धों वाले ! शाश्वत परमपद प्राप्त करने के हेतु धर्म-मार्ग पर जानेवाले सभी जीव इनका ही नाम जपते हैं और ध्यान करते हैं। तुम यह जान लो। तटस्थ रहकर देखा जाय तो इसका प्रमाण वही उनकी शक्ति है जिसने मुझे मारा। और अन्य किसी हेतु की आवश्यकता नहीं है। ३६१

कैदव मियऱ्ऱि याण्डुङ् गळिप्परुङ् गणक्कि ऱीमै
वैहलुम् पुरिन्दु ळारुम् वानुयर् निलैयै वळ्ळल्
ऎय्दवर् पॆऱुव रॆन्ऱा विणैयडि यॆय्दि यॆवल्
शॆय्दवर् पॆऱुव दैय शॆप्पलाञ् जिऱुमैत् तामो 362

ऐय–तात; कैतवम् इयऱ्ऱि–कैतव करके; याण्टुम्–कभी भी; कळिप्पु अरु–अनिवार्य; कणक्कु इल्–असंख्यक; तीमै–पापकार्य; वैकलुम्–हर दिन; पुरिन्तुळारुम्–जिन्होंने किये वे भी; वळ्ळल्–उदार श्रीराम के द्वारा; ऎय्तवर्–प्रेरित शर के लक्ष्य बने (और मरे) तो; वान् उयर् निलैयै–अत्युच्च परमपद को;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पऱुवर् ऍऩ्ऱाल्–पा जायेंगे, तो; इणै अटि ऍय्ति–उनके चरणद्वय की शरण लेकर; एवल् चॅय्तवर्–उनका कैंकर्य करनेवाले; पॅऱुवतु–जो प्राप्त करेंगे; चॅप्पल् आम्–(वह पद) कहने योग्य; विऱुमैत्तु आमो–लघु विषय होगा क्या। ३६२

तात ! जो वंचक काम करते रहते हैं, दुर्वार असंख्यक पाप सदा करते हैं वे भी, इन उदार प्रभु से प्रेरित शर से मरेंगे तो अतिश्रेष्ठ परमपद को प्राप्त हो जायँगे। तब जो इनके चरणद्वय की शरण में रहकर इनकी सेवा करते हैं, उनको जो पद प्राप्त होगा क्या वह इतना अल्प होगा कि वर्णन का विषय बने ? । ३६२

अरुमैयॅऩ् विदियि ऩारे युदवुवा ऩमैन्द कालै
इरुमैयु मॅय्दि नाय्मऱ् ऱिऩिच्चॅयऱ् पाल दॅण्णिऩ्
तिरुमऱु मार्ब ऩेवल् शॅऩ्ऩियिऱ् चेर्त्तिच् चिन्दै
ऑरुमैयि निऱुवि मुम्मै युलहिऩु मुयर्दि यऩ्ऱे 363

वितियितारे–विधि ही; उतवुवान् अमैन्त कालै–जब उपकार करने को उद्यत हो जाती है, तब; अरुमै ऍऩ्–अगम क्या; इरुमैयुम् ऍय्तिताय्–(तुम) इह-पर दोनों हित पा चुके; इऩि–आगे; चॅयल् पालतु–कर्तव्य; ऍण्णिऩ्–सोचो तो; तिरु मऱु मार्पऩ्–श्रीवत्सांकितवक्ष; एवल्–(श्रीराम) की आज्ञाओं को; चॅऩ्ऩियिल् चेर्त्ति–सिर पर धारण करो; चिन्तै–मन को; ऑरुमैयिऩ्–एक ही मार्ग पर (अचल); निऱुवि–रखकर; मुम्मै उलकिऩुम्–तीनों विध लोकों में; उयर्ति–श्रेष्ठता प्राप्त कर लो। ३६३

जब स्वयं विधिदेवता उपकार करने को उद्यत हो जाते हैं, तब क्या वस्तु दुर्लभ होगी ? तुम भाग्यवान हो। इह-पर दोनों हित पा चुके हो ! आगे का कर्तव्य सोचो तो यही है कि, श्रीवत्सांकितवक्ष श्रीराम की आज्ञाओं को शिरोधार्य करो; मन को एक मार्ग में चलाओ और त्रिविध लोकों में सर्वश्रेष्ठ परमपद को प्राप्त हो जाओ। ३६३

मदवियल् कुरक्कुच् चॅय्है मयर्वॉडु माऱ्ऱि वळ्ळल्
उदवियै युऩ्ऩि यावि युऱ्ऱिटत् तुदवु हिऱ्ऱि
पदवियै यॅवर्क्कु नल्हुम् पण्णवऩ् पणित्त यावुम्
शितैविल शॅय्दु नॉय्दिऱ् ऱोर्वरुम् बिऱवि तीर्दि 364

मत इयल्–मत्त स्वभाव के; कुरक्कु चॅय्कै–वानर-कृत्यों को और; मयर्वॉटु–भ्रम को; माऱ्ऱि–दूर करके; वळ्ळल्–उदार प्रभु श्रीराम की; उतवियै–सहायता को; उऩ्ऩि–सोचकर; उऱ्ऱिटत्तु–(उन पर) जब विपदा आयगी, तब; आवि उतवुकिऱ्ऱि–अपने प्राण भी देकर (सेवा करो); पतवियै–परमपद को; ऍवर्क्कुम् नल्कुम्–(भक्त) किसी को भी देनेवाले; पण्णवऩ्–कृपालु स्वभाव के; पणित्त–(श्रीराम के) आज्ञा किये हुए; यावुम्–सभी कार्य; चितैवु इल–विना कमी के; चॅय्तु–करके; तीर्वु अऱुम्–दुर्वार; पिऱवि–जन्म को; नॉय्तिल्–सुगम रीति से; तीर्ति–दूर करो। ३६४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अपना मस्त वानर-प्रकृति का कृत्य और भ्रम छोड़ दो। उदार प्रभु का उपकार स्मरण रखो। जब उन पर कोई विपदा आये तो अपने प्राण देकर निवारण करो। वे भक्तों में भेद करनेवाले नहीं हैं। किसी को भी अपना परमपद दिलानेवाले उदार प्रभु हैं। वे जो भी कहेंगे उनको निर्दोष रीति से कार्यान्वित करो। इस प्रकार अपना जन्म-बन्धन शीघ्र काट लो। ३६४

अरशियऱ् पारम् पूरित् तयर्त्तनै यिहऴा दैयन्
मरैमलर्प् पादम् नीङ्गा वाऴुदि मन्नऩ् रॅन्बार्
ऍरियऩऱ् कुरिय रॅन्ऱे यॅण्णुदि यॅण्णम् यावुम्
पुरिदिशिऱ् ऱडिमै कुऱ्ऱम् पॊऱुप्परॅन् ऱॅण्ण वेण्डा 365

अरचु इयल्–राज्य-शासन के; पारम्–भार पर; पूरित्तु–मुदित होकर; अयर्त्तनै–भ्रमित हो; इकऴातु–(श्रीराम को) अल्प मत मानो; ऐयन् मरै मलर् पातम्–(और) श्रीराम के कमल-चरणों से; नीङ्का–अलग मत जाओ; वाऴुति–इस तरह जीवन बिताओ; मन्नऩ् ऍन्पार्–राजा कहलानेवाले; ऍरि अऩऱ्कु–जलती आग की समानता पाने के; उरियर् ऍन्ऱे–योग्य हैं, यही; ऍण्णुति–समझो; ऍण्णम् यावुम्–उनके विचार सब; पुरिति–कार्यान्वित करो; चिऱु अटिमै–मैं छोटा दास हूँ; कुऱ्ऱम् पॊऱुप्पर्–अपराध क्षमा करेंगे; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍण्ण वेण्टा–विचार नहीं रखना चाहिए। ३६५

राज्य-शासन के भार से मुदित होकर या भूलकर उनको अल्प मत मानो। प्रभु श्रीराम के कमल-चरणों से अलग मत होओ। उनकी ही शरण में जीवन बिताओ। राजा जलती आग के समान है। उन्हें वसा ही रहने का अधिकार है। यह विचार करके उनके सभी विचारों को कार्यान्वित करो। 'हम छोटे दास हैं, वे हमारी भूलें क्षमा कर देंगे' —ऐसा कभी मत सोचो। ३६५

❀ ऍऩ्ऩवित् तहैय वाय वुऱुदिहऴ् यावु मेङ्गुम्
पिऩ्ऩवर् कियम्बि निऩ्ऱ पेरॅऴि लाऩै नोक्कि
मऩ्ऩवर्क् करशऩ् मैन्द मऱ्ऱिवऩ् शुऱ्ऱत् तोडुम्
उऩ्ऩडैक् कलमॅऩ् रुय्त्ते युयर्हर मुच्चि वैत्तान् 366

ऍऩ्ऩ–इस तरह; इ तकैय आय–ऐसे; उऱुतिकऴ् यावुम्–सब हितों का; एङ्कुम्–दुःखी; पिऩ्ऩवऱ्कु–अपने अनुज को; इयम्पि–उपदेश देकर; निऩ्ऱ–सामने स्थित; पेर् ऍऴिलाऩै–अतिसुन्दर श्रीराम को; नोक्कि–देखकर; मऩ्ऩवर्क्कु अरचऩ् मैन्त–राजाधिराज के पुत्र; इवऩ्–यह; चुऱ्ऱत्तोटुम्–इसके परिवार के साथ; उऩ् अटैक्कलम्–आपकी शरण में है; ऍऩ्ऱु उय्त्तु–कहकर उसे उनके पास सौंपकर; उयर् करम्–उठाये हुए हाथ; उच्चि वैत्तान्–(वाली ने) अपने सिर पर रखे। ३६६

इस भाँति वाली ने अपने दुःखी भाई को ऐसे हितोपदेश दिये। फिर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अपने सामने स्थित अतिरूपवान श्रीराम से कहा कि राजाधिराज के पुत्र ! यह सुग्रीव अपने परिवारों के साथ आपकी शरण में है। यह कहकर वाली ने सुग्रीव को श्रीराम के आगे किया। फिर उसने अपने हाथ जोड़कर सिर पर रख लिये। ३६६

❀ वैत्तपिन् नुरिमैत् तम्बि मामुह नोक्कि वल्लै
उय्त्तनै कौणर्दि युन्र नोङ्गरु महनै यॅन्न
अत्तलै यवनै येवि यळैत्तलि नणैन्दा नॅन्ब
कैत्तलत् तुवरि नीरैक् कलक्किनान् पयन्द काळै 367

वैत्त पिन्–रखने (नमस्कार करने) के बाद; उरिमै तम्पि–अपने ही छोटे भाई का; मा मुकम् नोक्कि–उत्तम मुख देखकर; उन् तन्–तुम्हारे; ओङ्कु अरु मकनै–श्रेष्ठ और प्यारे पुत्र (अंगद) को; वल्लै–शीघ्र; उय्त्तनै–बुला; कौणर्ति–लाओ; ऍन्न–कहकर; अ तलै–वहाँ; अवनै एवि–उसको भिजवाकर; अळैत्तलिन्–बुलवाने पर; कै तलत्तु–हाथों से; उवरि नीरै कलक्किनान्–(जिसने) समुद्रजल को मथा, उस वाली का; पयन्त काळै–पुत्र ऋषभ-सम अंगद; अणैन्तान्–आया (ऍन्प)। ३६७

सिर पर जुड़े हाथ रखकर नमस्कार करने के बाद वाली ने अपने भाई के गौरवमय मुख को देखकर कहा कि सुग्रीव ! तुम जाओ और अपने श्रेष्ठ और प्यारे पुत्र अंगद को बुला लाओ। वाली ने सुग्रीव को भिजवाकर बुलवाया। समुद्र को अपने हाथों से जिसने मथा था, उस वाली का पुत्र ऋषभतुल्य अंगद आया। ('ऍन्प' का इधर अर्थ नहीं किया गया यद्यपि उसका अर्थ 'कहते हैं' भी है।) पूरक ध्वनि। ३६७

❀ शुडरुडै मदिय मॅन्नत् तोन्रलुन् दोन्रि याण्डुम्
इडरुडै युळ्ळत् तोरै यॅण्णिनु मुणर्न्दि लादान्
मडरुडै नरुमॅन् शेक्कै मलैयन्रि युदिर वारिक्
कडरिडैक् किडन्द कादर् रादैयैक् कण्णिर् कण्डान् 368

चुटर् उटै–प्रकाशमय; मतियम् ऍन्न–चन्द्र के समान; तोन्रलुम्–कुँअर भी; याण्टुम्–कहीं भी; इटर् उटै उळ्ळत्तोरै–संकटग्रस्त लोगों को; ऍण्णिनुम्–अपनी कल्पना में भी; उणर्न्तिलातान्–जो नहीं जानता था, वह; तोन्रि–आकर; मटर् उटै–सुमन दलों से युक्त; नरु मॅन्–सुगन्धित और कोमल; चेक्कै मलै अन्रि–शय्या रूपी पर्वत पर न; उतिर वारि–रक्तप्रवाह रूपी; कटर् इटै–समुद्रमध्य; किटन्त–पड़े रहे; कातल् तातैयै–प्यारे पिता को; कण्णिल् कण्टान्–अपनी आँखों से देखा (अंगद ने)। ३६८

वाली का कुमार भूलकर भी किसी को दुःख देनेवाला नहीं था। दुःखी मनुष्य को उसने कल्पना में भी नहीं देखा था। वह प्रकाशमय पूर्णचन्द्र के समान आ प्रकट हुआ। उसने देखा कि वाली पंखुड़ियों की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बनी शय्या रूपी पर्वत पर नहीं लेटा था, पर रक्त-समुद्र के मध्य पड़ा था। उसने अपनी आँखें फाड़कर उस दृश्य को देखा। ३६८

❀ कण्डहण् कऩलु नीरुङ् गुरुदियुङ् गाल मालैक्
कुण्डल मलम्बु हिऩ्ऱ कुववुत्तोट् कुरिशि ऱिङ्गळ्
मण्डल मुलहिल् वन्दु किडन्ददम् मदियिऩ् मीदा
विण्डल मदऩि ऩिऩ्ऱोर् मीऩ्विऴुन् दॆऩ्ऩ वीऴ्न्दाऩ् 369

कण्ट कण्–देखनेवाली आँखों ने; कऩलुम्–अग्नि को और; नीरुम्–जल को; कुरुतियुम्–रक्त को; काल–निकाला और; कुण्टलम् अलम्पुकिऩ्ऱ–कुण्डल जिन पर लगे डोलते हैं; मालै कुववु–और जो माला से भूषित हैं, उन; तोळ्–कन्धों से भूषित; कुरिचिल्–राजकुमार; तिङ्कळ् मण्टलम्–चन्द्रमण्डल; उलकित्त् वऩ्तु–भूमि पर आकर; किटऩ्ततु–पड़ा रहा; अ मतियिऩ् मीता–उस चन्द्रमण्डल पर; विण् तलम् अतऩिऩ् निऩ्ऱु–आकाश से; ओर् मीऩ्–एक नक्षत्र; विऴुन्तु ऍऩ्ऩ–गिरा, जैसे; वीऴ्न्ताऩ्–गिरा। ३६९

उसकी उन आँखों से आग उठी और जल रक्त के साथ बह निकला। अंगद के कन्धे ऊँचे थे। उन पर कुण्डल डोल रहे थे। वे माला से अलंकृत थे। वह राजकुमार आकर वाली पर गिरा। तब ऐसा लगा मानो चन्द्रमण्डल भूमि पर पड़ा हो और उस पर आकाश से एक तारा आकर गिरा हो। ३६९

❀ ऍऩ्दैये यॆऩ्दै येयिव् वॆऴुदिरै वळाहत् तियार्क्कुम्
शिऩ्दैयाऱ् चॆय्है यालोर् तीविऩै शॆय्दि लादाय्
नॊऩ्दऩै यदुदा ऩिऱ्क निऩ्मुह नोक्किक् कूऱ्ऱम्
वऩ्ददे यऩ्ऱो वञ्जा दारदऩ् वलियैत् तीर्प्पार् 370

ऍऩ्तैये–पिता; ऍऩ्तैये–मेरे पिता; इ ऍऴु तिरै–इन सातों समुद्रों से; वळाकत्तु–वलयित भूमि में; यार्क्कुम्–किसी की भी; चिऩ्तैयाल्–मन से; चॆय्कैयाल्–और कृत्य से; ओर् ती बिऩै चॆय्तिलाताय्–कोई हानि न करनेवाले; नॊऩ्तऩै–अब दुःखग्रस्त हो गये; अतु ताऩ् निऱ्क–वह तो रहे एक ओर; निऩ् मुकम् नोक्कि–आपके मुख को देखते हुए; कूऱ्ऱम्–मृत्यु भी; अञ्चातु–विना भय खाये; वऩ्तते अऩ्ऱो–आ गयी न; आर्–कौन; अतऩ् वलियै–उसके बल को; तीर्प्पार्–तोड़ देगा। ३७०

(अंगद विलाप करने लगा।) मेरे पिताजी ! मेरे पिताजी ! आपने सातों समुद्रों से वलयित इस भूमि पर किसी का अहित नहीं सोचा, न ही किया। ऐसे आप अब कष्ट में पड़े हैं। हाय ! वह एक ओर रहे ! आज यह अनोखी बात हो गयी है कि यम ने भी आपके सम्मुख आने का साहस किया ! अब कौन है जो उसका घमण्ड चूर करे ? । ३७०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तऱैयडित् तदुपोऱ् ऱीरात् तहैयवित् तिशैह डाङ्गुम्
करैयडिक् किळिवु कण्ड कण्डह् नॅञ्ज मुन्ऱन्
निऱैयडिक् कोल वालि निलैमैयै निनैयुन् दोऱुम्
पऱैयडिक् किन्ऱ वन्दप् पयमऱप् पऱ्न्द दन्ऱे 371

तऱै–खूंटे; अटित्तु पोल्–गाड़े गये हों, ऐसे; तीरा तकैय–अचल रहनेवाले; इ तिचैकळ् ताङ्कुम्–इन दिशाओं के भारवाही; कऱै अटिक्कु–ओखली के समान पैरों के गजों को; इळिवु कण्ट–हरानेवाले; कण्टकन्–कंटक रावण का; नॅञ्चम्–मन; उन् तन्–आपकी; निऱै–स्थूल; अटि–अग्रभाग से युक्त; कोल–सुन्दर; वालिन्–पूँछ की; निलैमैयै–(शक्ति की) स्थिति को; निनैयुम् तोऱुम्–जब-जब स्मरण करता है तब; पऱै अटिक्किन्ऱ–ढोल-सा थर्रानेवाला; अन्तप्पयम्–वह भय; अऱ–अलग; पऱन्ततु अन्ऱे–भाग गया न । ३७१

आपकी मृत्यु से रावण के मन का भय मिट जायगा। रावण खूँटों के समान अचल रहकर दिशाओं को ढोनेवाले, ओखली के समान पैरों वाले दिग्गजों को हराकर उनको हेय बना दिया था। उस कंटक का मन आपकी सुन्दर और स्थूल अग्र भाग की पूँछ का स्मरण करते हर समय पिटे ढोल के समान थर्राता था। अब वह भय उड़ गया। ३७१

❀ कुलवरै नेमिक् कुन्ऱ मॅन्ऱवा नुयर्न्द कोट्टित्
तलैहळु निन्बॉऱ् ऱाळिऱ् ऱळुम्बिनित् तविर्न्द वन्ऱे
मलैयुड नरवु मऱ्ऱु मदियमुम् बलवुन् दाङ्गि
अलैहडल् कडैय वेण्डि नारिनिक् कडैव रैया 372

ऐया–श्रेष्ठ; कुल वरै–आठों कुलपर्वत; नेमि कुन्ऱम्–चक्रवालपर्वत के; वान् उयर्न्त कोट्टित्–गगनस्पर्शी पर्वत के; तलैकळुम्–शिखर भी; निन्–आपके; पोन् ताळिल्–सुन्दर पैरों के कारण; तळुम्पु–पड़े चिह्नों से; इति–अब; तविर्न्त अन्ऱे–रिक्त हो गये न; मलैयुटन्–मन्दरपर्वत के साथ; अरवुम्–सर्प (वासुकी); मतियमुम्–चन्द्र; मऱ्ऱुम् पलवुम्–और अन्य सभी; ताङ्कि–धारण करके; अलै कटल्–तरंगपूर्ण समुद्र का; कटैय वेण्टित्–मथन करना हो; आर् इति कटैवर्–कौन मथेगा । ३७२

श्रेष्ठ ! आपके पैरों के लगने से आठों कुलपर्वतों और गगनस्पर्शी चक्रवालपर्वत के शिखरों पर घिसने के चिह्न लगे हुए थे। अब वे उनसे रहित हो जायँगे। मन्दरपर्वत, वासुकी नाग, चन्द्र और अन्य उपकरण तैयार करके तरंगपूर्ण समुद्र को मथना पड़े तो कौन मथेगा ? । ३७२

पञ्जिनॅमॅल् लडियाळ् पङ्गन् पदयुह मल्ल यादुम्
अञ्जलित् तऱियाच् चॅङ्गै याणैया यमरर् यारुम्
ऍञ्जल रिरुन्दा रुण्णा दिन्नमु दीन्द नीयो
तुञ्जिनै वळ्ळि योऱ्ह णिन्नित्तियार् शॊल्लऱ् पालार् 373

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पञ्चिन् मॆल् अटियाळ्–रुई से भी अधिक कोमल चरणों की पार्वतीदेवी के; पङ्कन्–अर्द्धांगी के; पत युकम् अल्ल–चरणद्वय को छोड़कर; यातुम् अञ्चलित्तु अऱियाँ–किसी की अंजलि करना जिन्होंने नहीं जानने का; आणै–नियम रखा था; चॆम् कैयाय्–ऐसे लाल हाथों वाले; अमरर् यारुम्–सभी देव; ऍञ्चलर् इरुन्तार्–अमर रहते हैं (आपके मथने से प्राप्त अमृत खाकर); इन् अमुतु–वह मधुर अमृत; उण्णातु–विना भोगे; ईन्त नीयो–उन्हें देकर आप; तुञ्चिनै–मृतक हो गये; निन्ऱिन्–आपसे बढ़कर श्रेष्ठ; वळ्ळियोर्कळ्–दानी; चॊल्लल् पालार्–कहाने योग्य; यार्–कौन हैं। ३७३

रुई से भी कोमलचरणा पार्वती को आधा शरीर जिन्होंने दिया है, उन शिवजी के चरणद्वय को छोड़कर आपके हाथों ने किसी की अंजलि करना न जाना था। यह आपका प्रण था। ऐसे लाल हाथों वाले ! आपकी कृपा और परिश्रम से अमृत निकला। उसे आपने देवों को दे दिया। वे अमर रह गये। पर आप मर गये। आपसे बढ़कर श्रेष्ठ दानी कहलानेवाले कौन होंगे ? । ३७३

आयत पलवुम् बन्नि यऴुङ्गिनन् पुऴुङ्गि नोक्कित्
तीयुऱु मॆऴुहिऱ् चिन्दै युरुहिनन् शॆङ्गण् वालि
नीयिनि ययर्वा यल्लै यॆन्ऱुदन् नॆञ्जिऱ् पुल्लि
नायह निरामन् शॆय्द नल्विनैप् पयनी दॆन्ऱान् 374

आयत पलवुम्–ऐसी बहुत बातें; पन्नि–बार-बार कहकर; पुऴुङ्कि–तप्त होकर; अऴुङ्कितन्–दुःखी हुआ और; नोक्कि–(वाली को) देखकर; ती उऱु मॆऴुकिल्–आग में गलते मोम के समान; चिन्तै उरुकितन्–द्रवमन हो गया; चॆम् कण् वालि–लाल बनी आँखों वाले वाली ने; नी–तुम; इनि–अब से; अयर्वाय् अल्लै–दुःखी मत हो; ऍन्ऱु–(धीरज में) कहकर; तन् नॆञ्चिल्–अपने गले से; पुल्लि–लगाकर; नायकन् इरामन्–नायक श्रीराम का; चॆय्त ईतु–कृत यह कार्य; नल् वित्तै पयन्–सौभाग्य का फल है; ऍन्ऱान्–कहा (वाली ने)। ३७४

अंगद ऐसी बातें कहते हुए विलाप करता रहा। वह बहुत तप्त और दुःखी हुआ। वह वाली को देखकर अग्नि-तप्त मोम के समान द्रवमन हो गया। तब वाली ने अंगद को धीरज देते हुए कहा कि पुत्र ! दुःख मत करो। फिर उसने अपने पुत्र को गले से लगाते हुए कहा कि सर्वलोकनायक श्रीराम ने जो किया है, यह मेरे सौभाग्य का फल है। ३७४

तोन्ऱुलु मिऱत्त रानुन् दुहळऱत् तुणिन्दु नोक्किन्
मून्ऱुल हत्ति नोर्क्कुम् मूलत्तै मुडिन्द वन्ऱे
यान्ऱव मुडैमै यालिव् विऱुदिवन् दियैन्द दियार्क्कुम्
शान्ऱॆन निन्ऱ वीरन् रान्वन्दु वीडु तन्दान् 375

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तोन्ऱुलुम्–जन्म लेना; इऱत्तल् तानुम्–और मरना; तुकळ् अऱ–दोषहीन; तुणिन्तु तोक्किन्–दृढ़ता से विचारा जाय तो; मून्ऱु उलकत्तित्तोर्क्कुम्–तीनों लोकों के वासियों के लिए; मूलत्ते–आरम्भ में ही; मुटिन्त–निश्चित विषय हैं; यान्–मैं; तवम् उटैमैयाल्–पूर्वकृत तपस्या वाला था, इसलिए; इ इऱुति–ऐसा अन्त; वन्तु इयैन्ततु–आ मिला; यार्क्कुम्–सभी के; चान्ऱु ऍऩ–साक्षी-रूप में; निन्ऱु–स्थित; वीरन्–वीर श्रीराम ने; तान् वन्तु–स्वयं पधारकर; वीटु तन्तान्–मोक्ष दिलाया। ३७५

अंगद ! जन्म और मरण तीनों लोकों के वासियों के सम्बन्ध में पूर्व-निर्धारित विषय हैं। मैंने तपस्या की थी, इसलिए ऐसा दुर्लभ अन्त हुआ। तभी तो सबके साक्षीरूप-स्थित ये श्रीराम स्वतः मेरे पास आये और इन वीर श्रीराम ने मुझे मोक्षपद दिला दिया। ३७५

❀ पालमै तविर्दि यॅन्शॊऱ् पऱ्ऱुदि यॅन्ऩि नैय
मेलॊरु पॊरुळु मिल्ला मॅय्प्पॊरुळ् विल्लुन् दाङ्गिक्,
काल्तरै तोय निन्ऱु कट्पुलक् कुऱ्ऱ दम्मा
माल्तरुम् बिऱवि नोय्क्कु मरुन्दॆन वणङ्गु मैन्द 376

ऐय–तात; पालमै तविर्ति–बालपना छोड़ दो; ऍन् चॊल्–मेरा कहना; पऱ्ऱुति–मानो; ऍन्ऩिन्–तो; मेल् ऒरु पॊरुळुम् इल्ला–जिसके परे या ऊपर कोई तत्त्व नहीं है; मॅय् पॊरुळ्–वह सनातन तत्त्व; विल्लुम् ताङ्कि–धनु भी लेकर; काल्–पैरों को; तरै तोय–भूमि पर रखते हुए; निन्ऱु–स्थित रहकर; कण् पुलक्कु उऱ्ऱतु–दृष्टिगोचर हुआ; मैन्त–पुत्र; माल् तरुम्–मोहजनक; पिऱवि नोय्क्कु–भवरोग का; मरुन्तु ऍत–औषध मानकर; वणङ्कु–इनका नमन करो; अम्मा–मैया री। ३७६

(वाली ने अंगद को सलाह दी।) बेटे ! बालपन छोड़ दो। मेरी बात मानो। ये श्रीराम, वही तत्त्व है जिससे परे कोई तत्त्व नहीं है। वह सनातन तत्त्व हाथ में एक धनु भी लिये हुए और धरती पर चरण रखते हुए दृष्टिगोचर हुआ है। इसलिए, हे पुत्र ! इनकी वन्दना करो, यह मानकर कि ये मोहक भवरोग के औषध हैं। ३७६

❀ ऍन्ऩुयिर्क् किऱुदि शॅय्दा नॅन्बदै यिऱैयु मॅण्णा
दुन्ऩुयिर्क् कुऱुदि शॅय्दि यिवर्क्कम रुऱ्ऱ दुण्डेल्
पॊन्ऩुयिर्त् तॊळिरुम् बूणाय् पॊदुनिन्ऱु दरुमम् पोऱ्ऱि
मन्ऩुयिर्क् कुऱुदि शॅय्वान् मलरडि तॊळुदु वाळ्दि 377

पॊन् उयिर्त्तु–स्वर्ण से निर्मित होकर; ऒळिरुम्–ज्वलन्त रहनेवाले; पूणाय्–आभरणधारी; ऍन् उयिर्क्कु–मेरे प्राणों का; इऱुति चॆय्तान्–अन्त कराया; ऍन्पतै–यह बात; इऱैयुम् ऍण्णातु–बिल्कुल न सोचकर; उन् उयिर्क्कु–अपने जीवन का; उऱुति चॆय्ति–हित करा लो; इवर्क्कु–इनकी; अमर् उऱ्ऱतु उण्टेल्–(शत्रुओं से) लड़ाई हो गयी तो; पॊतु निन्ऱु–तटस्थ रहकर; तरुमम् पोऱ्ऱि–धर्म का पक्ष

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लो; मन् उयिर्क्कु–सनातन जीवों के; उऱुति चॆय्वान्–हितकारी इनका; मलर् अटि–चरण-कमल; तॊऴुतु–वन्दित कर; वाऴ्ति–जीवन बिताओ। ३७७

स्वर्णनिर्मित, कांतियुक्त आभूषणभूषित अंगद ! श्रीराम ने मेरे प्राणों का अन्त करा दिया, इस बात का किंचित भी विचार मत करो। अपने जीवन का हित साध लो। इनको कभी युद्ध करने का मौका आ जाय तो तटस्थता न छोड़कर धर्म का पालन करो। ये सनातन जीवों के हितकारी हैं। इनके चरणों की पूजा-वन्दना करके उनकी सेवा में जीवन बिताओ। ३७७

अॆन्ऱन निनैय वाय वुऱुदिहळ् यावुञ् जॊल्लित्
तन्ऱुणैत् तडक्कै यारत् तनयनैत् तऴुविच् चालक्
कुन्ऱिनु मुयर्न्द तिण्डोट् कुरक्किनत् तरशन् कॊऱ्ऱप्
पॊन्ऱिणि वयिरप् पैम्बूट् पुरवलन् ऱन्नै नोक्कि 378

कुन्ऱिनुम् चाल उयर्न्त–पर्वत से भी अत्यधिक उन्नत; तिण् तोळ्–सुदृढ़ कन्धों से युक्त; कुरङ्कु इनत्तु अरचन्–वानरकुलाधिपति; अॆन्ऱनन्–ऐसा; इनैय आय–इस तरह के; उऱुतिकळ् यावुम्–सब हितकारी बातें; चॊल्लि–कहकर; तन् तुणै तट कै–अपने जोड़े के विशाल हाथों से; तनयनै–पुत्र को; आर तऴुवि–कसकर आलिंगन करके; कॊऱ्ऱम्–विजयी; पैम् पॊन् तिणि–उत्तम स्वर्णमय; वयिरम् पूण्–हीरे-जड़े आभरणों से भूषित; पुरवलन् तन्नै–जगद्रक्षक को; नोक्कि–देखकर। ३७८

पर्वतों से भी अत्यधिक उन्नत कन्धों वाले वानराधिपति वाली ने ऐसा इस तरह की हित की बातें कहीं। फिर उसने अपने दोनों विशाल हाथों से अपने पुत्र का कसकर आलिंगन किया। उसके बाद वाली ने विजयशील और स्वर्णमय, हीरे-जटित आभरणधारी जगन्नाथ श्रीराम की ओर देखकर— । ३७८

❀ नॆय्यडै नॆडुवेऱ् ऱानै नीनिऱ निरुद रॆन्नुम्
तुय्यडैक् कनलि यनन्न तोळिनन् ऱॊऴिलुन् दूयन्
पॊय्यडै युळ्ळत् तार्क्कुप् पुलप्पडाप् पुनिद मऱ्ऱुन्
कैयडै याहु मॆन्ऱव् विरामऱ्कुक् काट्टुङ् गालै 379

पॊय् अटै–असत्यमिलित; उळ्ळत्तार्क्कु–मन वालों को; पुलप्पटा–अदृश्य; पुनित–पवित्र पुरुष; नॆय् अटै–घृतसिक्त; नॆटु वेल्–लम्बे भालों के धारक वीरों की; चेनै–सेना वाले; नील् निऱ निरुतर् अॆन्नुम्–काले रंग के राक्षस रूपी; तुय् अटै–कपास के गट्ठर के लिए; कनलि अनन्न–अग्नि-सम; तोळिनन्–कन्धे वाला है; तॊऴिलुम्–कार्य में; तूयन्–पवित्र है; मऱ्ऱु–अब; उन् कैयटै आकुम्–आपका धरोहर होगा; अॆन्ऱु–कहकर; अ इरामऱ्कु–उन श्रीराम को; काट्टुम् कालै–दिखाने (सौंपने) पर। ३७९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाली ने सम्बोधित किया कि असत्य-मन जीवों को अगोचर रहनेवाले पवित्र पुरुष ! इस अंगद के कन्धे घृत-लगे भालों वाले वीरों की सेना के स्वामी, काले रंग के राक्षस रूपी रुई की गठरियों के लिए अग्नि के समान हैं। यह अपने कृत्यों में भी पवित्र रहनेवाला है। अब से यह आपका धरोहर है। यह कहकर जब उसने अंगद को श्रीराम के आगे किया, तब। ३७९

❀ तन्नडि ताळ्द लोडुन् दामरैत् तडङ्ग णानुम्
पॊन्नुडै वाळै नीट्टि नीयिदु पॊऱुत्ति यॆन्ऱान्
ॲन्नलु मुलह मेळु मेत्तिन विऱन्दु वालि
अन्निलै तुऱन्दु वानुक् कप्पुऱत् तुलह नानान् 380

तामरै तट कणातुम्–आयत-कमलाक्ष ने भी; तन् अटि ताळ्तलोटुम्–अपने पैरों पर (उसके) झुकने पर; पॊन् उटै वाळै नीट्टि–स्वर्णनिर्मित तलवार बढ़ाकर; नी–तुम; इतु–इसको; पॊऱुत्ति–धारण कर लो; ॲन्ऱान्–कहा (उसे दिया); ॲन्नलुम्–कहते ही; उलकम् एळुम् एत्तित–सातों लोकों ने स्तुति की; वालि–वाली; अ निलै–वह स्थिति; तुऱन्तु–छोड़कर; वानुक्कु–स्वर्ग के; अ पुऱत्तु–उस पार के; उलकन् आनान्–विष्णुलोक (वैकुण्ठ या परमपद) वासी बना। ३८०

अंगद श्रीराम के चरणों में नत हुआ। विशाल-कमलाक्ष श्रीराम ने अपनी स्वर्णनिर्मित तलवार बढ़ायी और अंगद से कहा कि इसको धारण करो। (श्रीराम ने उसे अंगरक्षक का पद दिया।) श्रीराम के यह कहते ही सातों लोकों के वासियों ने श्रीराम की स्तुति की और अंगद को बधाई दी। तब वाली अपनी भूलोकवास की स्थिति से छूटकर उस परमलोक में पहुँच गया, जो देवों के स्वर्गलोक से भी परे, ऊपर है। ३८०

कैयव णॆहिळ्द लोडुङ् गडुङ्गणै कालन् वालि
वॆय्यमार् बहत्तुट् टङ्गा दुरुविमेक् कुयर मीप्पोय्त्
तुय्यनीर्क् कडलुट् टोय्न्दु तूय्मल रमरर् तूव
ऐयन्वॆन् विडाद कॊऱ्ऱत् तावम्वन् दडैन्द दन्ऱे 381

अवण्–तब; कै–उसके हाथों के; नॆकिळ्तलोटुम्–ढीले पड़ते ही; कटुम् कणै कालन्–कठोर शर रूपी यम; वालि–वाली के; वॆय्य–सुदृढ़; मार्पु अकत्तु उळ्–वक्ष के अन्दर; तङ्कातु–न रहकर; उरुवि–निफरकर; मेक्कु उयर–ऊपर उठकर; मी पोय्–दूर जाकर; तुय्य नीर् कटलुळ्–शुद्ध-जल-सागर में; तोय्न्तु–मग्न होकर; तूय् मलर्–पवित्र पुष्प; अमरर् तूव–देवों के बरसाते; ऐयन्–प्रभु की; वॆन्–पीठ को; विटात–छोड़ जो अलग नहीं होता; कॊऱ्ऱत्तु–जो विजय का आधार है, उस; आवम्–तूणीर में; वन्तु–आकर; अटैन्ततु–पहुँचा। ३८१

वाली के हाथ (जो बाण को पकड़े हुए थे) ढीले हो गये तो कठोर बाण (यम) वाली के सुदृढ़ वक्ष से निफरकर बाहर आया। आकाश में ऊपर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बहुत दूर गया। शुद्धजल के सागर में नहा उठा। फिर उस तूणीर में आकर घुस गया जो श्रीराम की पीठ से कभी अलग नहीं होता था और जो श्रीराम की विजयों का आधार था। ३८१

वालियु मेहि ऩान्विण् वरम्बिला वाऱ्ऱ लोडुम्
पालिया मुन्नर् निऩ्ऱ परिदिशेय् शॅङ्गै पऱ्ऱि
आलिलैप् पऴ्ळि यानु मङ्गद ऩोडुम् बोऩान्
वेल्विऴित् तारै केट्टाळ् वन्दवन् मॅय्यिल् वीऴ्न्दाळ् 382

वालियुम्–वाली भी; विण् एकिऩान्–परमपद गया; आल् इलै पऴ्ळियानुम्–वटपत्रशायी विष्णु (के अवतार श्रीराम) भी; वरम्पु इला–असीम; आऱ्ऱलोटुम्–बल के साथ; मुन्नर् निऩ्ऱ–सामने स्थित; परिति चेय्–सूर्यपुत्र के; चॅङ्कै–लाल हाथों को; पऱ्ऱि–पकड़कर; पालिया–कृपा का प्रदर्शन करके; अङ्कतऩोटुम्–अंगद को साथ लेकर; पोऩान्–(परे) गये; वेल् विऴि–बर्छी-सी आँखों वाली; तारै केट्टाळ्–तारा ने सुना; वन्तु–आकर; अवन् मॅय्यिल्–उस (वाली) के शरीर पर; वीऴ्न्ताळ्–गिरी। ३८२

वाली स्वर्ग (परमपद) पहुँच गया। सुग्रीव अपार बल के साथ सामने खड़ा था। श्रीराम वटपत्रशायी (विष्णु प्रलयकाल में एक शिशु के रूप में प्रलय-प्रवाह के ऊपर एक वटपत्र पर शयन की मुद्रा में रहते हैं, ऐसा पुराणों का कथन है।) विष्णु के अवतार थे। उन्होंने सूर्यपुत्र सुग्रीव का हाथ पकड़कर अपनी कृपा जतायी। फिर वे अंगद को साथ लेकर वहाँ से अलग हो गये। भाले की-सी आँखों वाली तारा ने समाचार सुना तो वह भागती आकर वाली के शरीर पर गिरी। ३८२

कुङ्गुमङ् गॊट्टियऩ्ऩ कुविमुलैक् कुवट्टिऱ् कॊत्त
पॊङ्गुवॆङ् गुरुदि पोर्प्पप् पुरिहुऴल् शिवप्पप् पॊऱ्ऱोळ्
अङ्गव ऩलङ्गऩ् मार्बिऱ् पुरण्डऩ ळहऩ्ऱ शॆक्कर्
वॆङ्गदिर् विशुम्बिऱ् ऱोऩ्ऱु मिऩ्ऩॆऩ्ऩत् तुवळु मॅय्याळ् 383

कुवि मुलै–उठे हुए स्तनों के; कुवट्टिऱ्कु ऒत्त–पर्वतशिखरों के लिए उपयुक्त रीति से; कुङ्कुमम् कॊट्टि अऩ्ऩ–कुंकुम डाला गया हो, ऐसा; पॊङ्कु–उमगनेवाले; वॆम् कुरुति–गरम रक्त; पोर्प्प–(स्तनों पर) ढँककर जम गया; पुरि कुऴल्–घुँघराले बाल; चिवप्प–लाल हुए; अङ्कु–वहाँ; पॊऩ् तोळवऩ्–सुन्दरबाहु; अलङ्कल् मार्पिल्–(वाली के) माला से अलंकृत वक्ष पर; अकऩ्ऱ चॆक्कर्–विशाल लाल गगन में; वॆम् कतिर्–गरम सूर्यकिरणों के; विचुम्पिल्–आकाश में; तोऩ्ऱुम्–प्रकटित; मिऩ् ऎऩ्ऩ–विद्युत के समान; तुवळुम् मॅय्याळ्–तड़पनेवाले शरीर की होकर; पुरण्टऩळ्–लोटी। ३८३

पर्वतशिखरों के समान उसके स्तनों पर कुंकुम जम गया हो, ऐसा उमड़नेवाला गरम रक्त जम गया। उसके घुँघुराले केश भी लाल हो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गये। वह उस बिजली के समान सुन्दर कन्धों वाले वाली के शरीर पर पड़कर तड़पी, मानो लाल सन्ध्यागगन के विशाल आकाश में बिजली तड़प रही हो। ३८३

वेय्ङ्गुळल् विळरि नल्याळ् वीणैयॅन् रिऩैय नाण
एङ्गिऩ ळिरङ्गि विम्मि युरुहिऩ ळिरुहै कूप्पित्
ताङ्गिऩ डलैयिऱ् चोर्न्दु शरिन्दुताळ् कुळल्ह डळ्ळि
ओङ्गिय तुयराऱ् पऩ्ऩि यिऩ्ऩऩ वरऱ्ऱ लुऱ्ऱाळ् 384

वेय् कुळल्–वंशीनाद; विळरि नल् याळ्–'विळरि' (रुदन का) राग का 'याळ्' का स्वर; वीणै–वीणा का नाद; ऍऩ्ऱु इऩैय–ऐसे स्वरों को; नाण–शरमाते हुए; एङ्किऩळ्–रोती हुई; इरङ्कि–दुःखी होकर; विम्मि–सिसककर; उरुकिऩळ्–पानी-पानी होकर; तलैयिल्–सिर पर; इरु कै कूप्पि–दोनों हाथ जोड़े; ताङ्किऩळ्–रखकर; चोर्न्तु–थककर; ताळ् कुळल्कळ्–लटकनेवाले केशों को; तळ्ळि–हटाकर; ओङ्किय तुयराल्–बढ़ते दुःख से; पऩ्ऩि–विविध प्रकार से विलाप करते हुए; इऩ्ऩऩ–यों; अरऱ्ऱल् उऱ्ऱाळ्–रोने लगी। ३८४

उसके रुदन-स्वर के सामने वंशीनाद, 'विळरि' के शोकगीत निकालने वाली 'याळ्' का स्वर और वीणा की ध्वनि भी शरम का अनुभव करे, ऐसी मधुर ध्वनि में वह रो रही थी। असह्य दुःख से वह सिसकी। दोनों हाथ जोड़कर उसने अपने सिर पर रखे। शिथिलता का अनुभव किया। केश उसके मुख पर बिखर रहे थे, उसने उनको हटाया। बढ़ते दुःख से पीड़ित होकर वह विविध बातें कहते हुए विलाप करने लगी। ३८४

❀ वरैशेर् तोळिडै नाळुम् वैहुवेऩ्
करैशे राविड रॅल्लै कण्डिलेऩ्
उरैशे रायुयि रेयॅऩ् ऩुळ्ळमे
अरैशे यानिदु काण् वञ्जिऩेऩ् 385

उरै चेर्–प्रकीर्तित; आर् उयिरे–मेरे प्राण; ऍऩ् उळ्ळमे–मेरे मन; अरैचे–राजा; वरै चेर्–पर्वत-सम; तोळ् इटै–कन्धों में; नाळुम्–सदा; वैकुवेऩ्–रहनेवाली; करै चेरा–पार न पाऊँ, ऐसा; इटर्–दुःख; ऍल्लै कण्टिलेऩ्–इसका किनारा नहीं देखती; यानु–मैं; इतु काण–यह देखने से; अञ्चिऩेऩ्–डरती हूँ। ३८५

मेरे प्राण-सम और कीर्तिमान नाथ! मेरे मन (के वासी)! राजा! तुम्हारे पर्वत-सम कन्धों के मध्य सदा (निश्चिन्त और सुखी) रहती थी। अब अपार दुःख आ गया। उसका छोर देख नहीं पाती। इसको देखने से मैं भय खाती हूँ। ३८५

तुयरा लेतॊलै याद वॅऩ्ऩैयुम्
पयिरा योपहै याद पण्बिऩोय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॅयिर्तो राय्विदि यान दॅय्वमे
उयिर्पो नालुड लारु मुय्वरो 386

पकैयात–वैर न करनेवाले; पण्पित्तोय्–शीलवान; तुयराले–दुःख से; तॉलैयात–जो नहीं मरी; ऍन्नैयुम्–मुझे भी; पयिरायो–न बुलाओगे क्या; चॅयिर् तीराय्–मेरा अपराध भूल जाओ; विति आन–विधिदत्त; तॅय्वमे–मेरे देव; उयिर् पोनाल्–प्राणों के छूटने पर; उटलारुम्–शरीर भी; उय्वरो–टिकेगा क्या। ३८६

मुझसे कभी न खीझनेवाले मेरे पति ! इस दुःख में भी मैं नहीं मरी। ऐसे मुझे सम्बोधित न करोगे क्या ? मेरे अपराध का विस्मरण कर दो। विधिदत्त मेरे पतिदेव ! प्राण छूट जायँ तो शरीर भी रह सकेगा क्या ? 'उडलार्' में 'आर्' चेतनवाचक प्रत्यय लगा है; काकु है।)। ३८६

नऱिदा नल्लमिऴ् दुण्ण नल्हलिन्
पिऱिया विन्नुयिर् पॅऱ्ऱ पॅऱ्ऱिदाम्
अऱिया रोनम नार दन्ऱॅनिन्
शिऱिया रोवुब हारञ् जिन्दियार् 387

नमनार्–यमदेव; नऱितु आम्–स्वादिष्ट और सुवासपूर्ण; नल् अमिऴ्तु–श्रेष्ठ अमृत; उण्ण–खाने को; नल्कलिन्–(तुम्हारे) देने से; पिऱिया–अमर; इन्नु उयिर्–प्यारे प्राणों को; पॅऱ्ऱ पॅऱ्ऱि–प्राप्त करने का लाभ; ताम् अऱियारो–आप जानते नहीं क्या; अतु अन्ऱु ऍतिल्–वैसा नहीं तो; उपकारम् चिन्तियार्–कृतघ्न; चिऱियारो–अल्प जीव हैं क्या। ३८७

तुमने देवों को अमृत दिया। यमदेव ने भी सुगन्धित स्वादिष्ट अमृत तुमसे लेकर पिया था। तभी वे अमर बने। इस प्राप्ति की सच्ची स्थिति को वे नहीं जानते क्या ? नहीं तो वे क्या कृतघ्न और क्षुद्रप्रकृति हैं ? । ३८७

अणङ्गार् पाहनै याशै तोऱुमुऱ्
ऱुणङ्गा वॉण्मलर् कॉण्डु ळन्बॉडुम्
इणङ्गाक् काल मिरण्डॉ डॉन्ऱिनुम्
वणङ्गा दित्तुणै वैह वल्लैयो 388

आचै तोऱुम्–दिशा-दिशा में; उऱ्ऱु–जाकर; उळ् अन्पॉटुम्–आन्तरिक भक्ति के साथ; इणङ्का–रहकर; उणङ्का–अमलिन (ताजे); ऑळ् मलर्–प्रकाशमय पुष्पों को; कॉण्टु–ले; कालम् इरण्टॉटु–(प्रातः और सन्ध्या) दो कालों के साथ; ऑन्ऱिनुम्–(मध्याह्न) एक में; अणङ्कु आर्–नारी को दिये हुए; पाकनै–अर्द्धांग वाले (शिव) की; वणङ्कातु–पूजा किये बिना; इ तुणै–इतनी देर; वैक वल्लैयो–रह सकनेवाले हो क्या। ३८८

तुम्हारी आदत थी कि दिशा-दिशा में जाकर प्रातःकाल, मध्याह्न

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और सायंकाल, तीनों बेर अर्द्धनारीश्वर की नवीन सुगन्धित पुष्पों से पूजा करते थे। अब वह किये विना पड़े रहते हो। इतनी देर विना पूजा किये रह सकते हो क्या ? । ३८८

वरैयार् तोळ्पॊडि याड वैहुवाय्
तरैमे लायुऱु तऩ्मै यीदॆऩ
करैवे निऩ्ऱिडु पूशल् कण्डुमॊऩ्
ऱुरैया यॆऩ्वयि नूऩ मियावदो 389

तरै मेलाय्–धरती पर; वरै आर् तोळ्–पर्वतोपम कन्धों पर; पॊटि आट–धूल लगने देते हुए; वैकुवाय्–पड़े रहनेवाले; उऱु तऩ्मै–तुम्हारी प्राप्त दशा; ईतु ऍऩ–यही क्या, कहकर; करैवेऩ् नाऩ्–चिल्लाती मैं; इऩ्ऱु इटु–आज जो मचाती; पूचल्–वह शोर; कण्टुम्–देख (सुन) कर भी; ऒऩ्ऱु उरैयाय्–कुछ न कहते हो; ऍऩ् वयिऩ्–मेरे पास; ऊऩम्–कमी (अपराध, दोष); यावतो–क्या है तो। ३८९

कन्धों पर धूल लगने देते हुए धरती पर पड़े रहनेवाले ! तुम्हारी यह दशा हुई। यह कहते हुए मैं रो रही हूँ। मैं इतना रार मचा रही हूँ। तो भी तुम कुछ भी कह नहीं रहे हो ? मुझमें क्या दोष हो गया ? । ३८९

नैया निऩ्ऱऩैऩ् ऩाऩि रुऩ्दिङ्ङऩ्
मॆय्वा ऩोर्तिरु नाडु मेविऩाय्
ऐया नीयॆऩ दावि यॆऩ्ऱदुम्
पॊय्यो पॊय्युरै याद पुण्णिया 390

पॊय् उरैयात–असत्य न बोलनेवाले; पुण्णिया–पुण्यपुरुष; नाऩ्–मैं; इङ्ङऩ्–यहाँ; इरुऩ्तु–रहकर; नैया निऩ्ऱऩैऩ्–मलिन हो रही हूँ; मॆय् वाऩोर् तिरु नाटु–सत्यदेव की स्वर्गभूमि; मेविताय्–पहुँच गये; ऐया–नायक; नी–तुम; ऍऩ्तु आवि–मेरे प्राण हो; ऍऩ्ऱतुम्–(जो) कहा (तुमने) वह; पॊय्यो–झूठ ही है क्या। ३९०

कभी असत्य न बोलनेवाले पुण्यपुरुष ! मैं यहाँ रहकर कुम्हला रही हूँ और तुम सत्यदेव के वैकुण्ठलोक में पहुँच गये। हे नाथ ! तुम कहते रहे कि तुम (तारा) मेरे प्राण हो। वह असत्य हो गया क्या ? । ३९०

❀ शॆरुवार् तोळनिऩ् शिऩ्दैयु ळेऩॆऩिल्
मरुवार् वॆञ्जर मॆऩैयुम् वव्वुमाल्
ऒरुवे ऩुळ्ळुळै याहि लुय्दियाल्
इरुवे मुळ्ळिरु वेमि रुऩ्दिलेम् 391

चॆरु आर् तोळ–युद्धाभ्यस्त कन्धों वाले; निऩ् चिऩ्तै–तुम्हारे मन में; उळेऩ् ऍऩिल्–रही तो; मरुवार्–शत्रु (श्रीराम) का; वॆम् चरम्–क्रूर शर; ऍऩैयुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वव्वुमाल्–मुझे भी मारकर ले गया होता; **ऑरुवेन् उळ्**–अकेली मेरे मन में; **उळै आकिल्**–तुम रहते तो; **उय्ति आल्**–बचे रह जाते; **इरुवेम् उळ्**–दोनों के अन्दर; **इरुवेम् इरुन्तिलेम्**–परस्पर नहीं रहे हैं। ३९१

युद्धाभ्यस्त कन्धों वाले ! अगर मैं तुम्हारे मन में रहती होती तो शत्रु का क्रूर शर मुझे भी मार के जाता ! तुम ही मेरे, जो अब अकेली रह गयी हूँ, मन में रहते तो तुम अब बचे रहते। इसलिए साफ़ यह है कि न तुम मेरे मन के अन्दर रहे, न मैं तुम्हारे मन में। ३९१

❀ ऍन्दाय्	नीयमिऴ्	दीय	यामॅलाम्
उय्न्दे	मॅन्नुऱुब	हार	मुन्नुवार्
नन्दा	नाण्मलर्	शिन्दि	नण्बॉडु
वन्दा	रोवॅदिर्	वानु	ळोरॅलाम् 392

वान् उळोर् ऍलाम्–स्वर्गवासी (देव) सब; **उपकारम् उन्नुवार्**–उपकार मानकर; **ऍन्ताय्**–पिता-सम; **नी**–तुमने; **अमिऴ्तु**–अमृत; **ईय**–दिया; **याम् ऍलाम्**–(इससे) हम सब; **उय्न्तेम्**–अमर बने; **ऍन्नुऱ**–कहकर; **नन्ता**–कभी न मुरझानेवाले; **नाळ् मलर्**–नवीन (कल्प) पुष्प; **चिन्ति**–बरसाकर; **नण्पु ऑटु**–मैत्री के साथ; **ऍतिर् वन्तारो**–अगवानी करने आये क्या। ३९२

क्या सभी स्वर्गवासी कृतज्ञ बनकर तुम्हारी अगवानी करने आये ? क्या उन्होंने यह कहा कि पिता-सम ! तुमने अमृत दिया और हम अशन करके अमर रहते हैं ? क्या उन्होंने तुम पर कभी न मुरझानेवाले नवीन कल्पसुमन बरसाये। ३९२

ओया	वाळि	यॉळित्तुनिन्	ऱॅय्यवे
एया	वन्द	विराम	नॅन्नुऱुळान्
वाया	लेयिन	नॅन्निन्	वाळ्वॅलाम्
ईया	योवमिऴ्	देयु	मोहुवाय् 393

ऑळित्तु निन्ऱु–(आड़ में) छिपे रहकर; **ओया वाळि**–(बिना मारे) न चलनेवाला शर; **ऍय्यवे**–चलाने के हेतु; **एया वन्त**–(सुग्रीव द्वारा) प्रेरित जो आये; **इरामन् ऍन्नुऱु**–श्रीराम नाम के एक; **उळान्**–हैं; **वायाल्**–(वे) अपने मुख से; **एयिनन् ऍन्निन्**–माँगते तो; **अमिऴ्तु एयुम्**–अमृत ही; **ईकुवाय्**–दान देनेवाले तुम; **वाळ्वु ऍलाम्**–जीवनाधार सब सम्पत्ति (राज्य आदि); **ईयायो**–नहीं देते क्या। ३९३

श्रीराम सुग्रीव से प्रेरित होकर, आड़ से अपना अमोघ बाण चलाने आये। अगर वे राम अपना मुख खोलकर तुमसे माँगते तो अमृत को भी दूसरों को जो दे चुके वैसे तुम अपने जीवन का आधार, सब सम्पत्ति, राज्य आदि नहीं दे देते क्या ? । ३९३

शॉऱ्ऱेन्	मुन्दुऱ	वन्न	शॉऱ्कॉळाय्
अऱ्ऱा	नन्नदु	शॅय्ह	लानॅन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उऱ्ऱा युम्बियै यूळि काणुनी
इऱ्ऱाय् नानुनै यॅन्ऱु काण्बॅनो 394

मुन्तुऱ–पहले ही; चॉऱ्ऱेन्–मैंने कहा; अन्न चॉल्–वह कहना; कॉळाय्–तुमने नहीं माना; अऱ्ऱान्–वे; अन्नतु चॅय्कलान्–वह काम नहीं करेंगे; अॅन्न–कहकर; उम्पियै–अपने छोटे भाई के सामने; उऱ्ऱाय्–(लड़ने के लिए) आ पहुँचे; ऊळि काणुम्–अनेक युगपर्यन्त रहकर उनको देखने की आयु रखनेवाले तुम; इऱ्ऱाय्–चल बसे; नान्–मैं; उन्नै–तुम्हें; अॅन्ऱु–कब; काण्पॅनो–देखूँगी। ३९४

पहले ही, जब तुम जाने लगे तभी, मैंने कहा था (कि श्रीराम आये हैं)। पर तुमने वह कथन नहीं माना। 'वे वैसा करनेवाले नहीं हैं।' —यह कहकर भाई से लड़ने आ गये। तुम्हारी आयु इतनी लम्बी है कि युग-युग तक जीवित रहते। पर अब मर गये। कब मैं तुमको देखूँगी ?। ३९४

❀ नीऱा मेरुवु नीनॅ रुङ्गिन्नाल्
माऱोर् वाळियुन् मार्बै यीर्वदो
तेऱेन् यानिदु तेवर् मायमो
वेऱोर् वालि कॉलाम्वि ळिन्दुळान् 395

नी नॅरुङ्किन्नाल्–तुम नियराओ तो; मेरुवुम्–मेरुपर्वत भी; नीऱ आम्–भस्म हो जायगा; माऱ–तुम्हारे विरोध में; ओर् वाळि–एक बाण; उन् मार्पै–तुम्हारे वक्ष को; ईर्वतो–चीर गया, यह क्या; यान् इतु तेऱेन्–मैं यह नहीं मानूँगी; तेवर् मायमो–देवों की माया है क्या; विळिन्तु उळान्–मरे जो पड़े हैं; वेऱ–(व) दूसरे; ओरु–एक; वालि कॉलाम्–वाली ही हैं। ३९५

तुम पास जाओ तो मेरु भी भस्मीभूत हो जायगा। ऐसे तुम्हारे वक्ष को कोई बाण चीर गया क्या ? मैं विश्वास नहीं कर पाती। यह देवों की माया होगी ? ये जो मरे पड़े हैं शायद दूसरे कोई वाली हैं क्या ?। ३९५

तहैशेर् वण्बुहळ् तिन्ऱु तम्बियार्
पहैनेर् वारुळ रान पण्बिन्नाल्
उहवे शिन्दै युलन्द ळिन्ददाल्
महने कण्डिलै योनम् वाळ्वॅलाम् 396

मकने–पुत्र (अंगद); तम्पियार्–(तुम्हारे पिता के) छोटे भाई; तकै चेर्–आदर योग्य; वण् पुकळ्–श्रेष्ठ प्रशंसा को; तिन्ऱु–मिटाकर; पकै नेर्वार्–शत्रुता करनेवाले; उळर् आन–हैं, ऐसे; पण्पिन्नाल्–व्यवहार से; नम् वाळ्वु अॅलाम्–हमारा सारा जीवन; उकवे–चूर-चूर हो गया; चिन्तै–(इसलिए) मन भी; उलन्तु–कुम्हलाकर; अळिन्ततु–मर गया; कण्टिलैयो–नहीं देखा। ३९६

(तारा ने अपने पुत्र, अंगद, से कहा—) पुत्र अंगद ! देवर ने गौरवयोग्य विपुल यश को खा (मिटा) लिया और शत्रुता के व्यवहार से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हमारे जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। अब हमारा मन मुरझाया हुआ आक्रांत है। यह नहीं देखते क्या ?। ३९६

अरुमन् दर्र् महर्रुम् विल्लियार्
ऑरुमैन् दर्कु मडाद दुन्निनार्
तरुमम् बर्रिय तक्क वर्क्कॅलाम्
करुमङ् गट्टळै यॅन्रल् कट्टदो 397

अरुमन्तु–अपूर्व औषध के समान; अर्रम् अकर्रुम्–दुःख दूर करनेवाले; विल्लियार्–धनुर्धर श्रीराम ने; ऑरु मैन्तर्कुम्–किसी वीर के; अटाततु–न योग्य; उन्निनार्–(सोच) कर दिया है; तरुमम् पर्रिय–धर्मदृढ़; तक्कवर्क्कु ऍलाम्–सभी श्रेष्ठ लोगों के लिए; करुमम्–उनका कृत्य; कट्टळै–कसौटी है; ऍन्रल्–यह मसल; कट्टतो–मिटाया गया क्या। ३९७

श्रीराम अपूर्व औषध के समान दुःखनिवारक धनुर्धर हैं। पर उन्होंने ऐसा काम किया है, जो किसी भी वीर को नहीं सोहता। यह कथन है कि धर्मावलम्बी श्रेष्ठ लोगों के कृत्य ही उनकी श्रेष्ठता की कसौटी हैं। पर क्या वह कथन अब निरर्थक हो गया ?। ३९७

ऍन्रा ळिन्नन पन्नि यिन्नलो
डॉन्रा वुळ्ळुणर् वेदु मुर्रिलाळ्
निन्रा ळन्निलै नोक्कि नीदियाल्
वन्राण् माल्वरै यन्न मारुदि 398

ऍन्राळ्–कहकर; इन्नन–इस प्रकार; पन्नि–बार-बार कहकर; इन्नलोटु–दुःख के साथ; ऑन्रा–एक बनकर; उळ् उणर्वु–अन्तर्चेतना; एतुम् उर्रिलाळ्–कुछ भी न रखती हुई; निन्राळ्–भ्रमित खड़ी रही; अ निलै–वह स्थिति; नोक्कि–देखकर; नीतियाल्–न्याय (-व्यवहार) में; माल् वरै अन्न–बड़े मेरु के समान (उत्कृष्ट और दृढ़); वल् ताळ्–अपार कार्यशक्ति-सम्पन्न; मारुति–मारुति ने। ३९८

तारा ऐसी बहुत बातें बार-बार कहकर विलापती रही। उसका मानो दुःख के साथ एकाकार हो गया। सुध-बुध खो दी और भ्रमित खड़ी रह गयी। हनुमान ने, जो अपने न्यायपालन में मेरु के समान उन्नत और दृढ़ था और कर्मण्य भी, —। ३९८

मडवार् चूळ् मडन्दै तन्नैवाळ्
इडमे वुम्बडि येवि वालिपाल्
कडन्या वुङ्गडै हण्डु कण्णन्नो
डुडन्ना वुर्र वॅलामु णर्त्तिनान् 399

मटवार् चूळ्–स्त्रियों के मध्य रहनेवाली; अ मटन्तै तन्नै–उस स्त्री (तारा) को; वाळ् इटम्–वासस्थान; मेवुम्पटि–जाने को; एवि–प्रेषित करके; वालि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाल्–वाली के प्रति; कटन् यावुम्–कर्तव्य सब संस्कार; कटै कण्टु–पूरा कराकर; उटना–तुरत; कण्णन्नोटु–पद्माक्ष के पास; उर्र् ऍलाम्–जो हुआ, वह सब; उणर्त्तितान्–कह सुनाया। ३९९

स्त्रियों के मध्य रही उसको अपने अन्तःपुर में भिजवा दिया। फिर अंगद द्वारा वाली के प्रति कर्तव्य दाहकर्म आदि पूर्णरूप से कराया। पश्चात वह कमलाक्ष श्रीराम के पास गया और सारा वृत्तान्त समझा दिया। ३९९

(इसके बाद के तीन अतिरिक्त पदों का सार—) सूर्य अस्त हुआ। तब सूर्यमण्डल वाली के ही मुख के समान लाल था। श्रीराम ने रात का समय सीता का स्मरण करते हुए दुःख में बिताया। दूसरे दिन सवेरे सूर्य अपने पुत्र का अभिषेक देखने के इरादे से शीघ्र उदित हो गये। सुग्रीव के पास श्रीदेवी को पहुँचने में सुविधा हो, इस हेतु उन्होने कमलों का द्वार खोल दिया।

8. अरशियर् पडलम् (राज्य-शासन पटल)

अदुहा लत्तव् वरुट्कु नायहन्
मदिशा र्म्बियै वल्लै येवितान्
कदिरोन् मैन्दनै यैय कैहळाल्
विदियान् मौलि मिलैच्चु वायॅना 400

अतु कालत्तु–उस समय; अ अरुट्कु नायकन्–उन करुणानाथ श्रीराम ने; मति चाल्–बुद्धि-श्रेष्ठ; तम्पियै–अनुज से; ऐय–सुन्दर भाई; कतिरोन् मैन्तनै–सूर्यपुत्र का; कैकळाल्–अपने हाथों से; वितियाल्–विधिवत; मौलि–मुकुट; मिलैच्चुवाय्–धारण कराओ; ऍना–ऐसा; वल्लै–शीघ्र; एवितान्–आज्ञा सुनाई। ४००

तब करुणामय प्रभु श्रीराम ने बुद्धिश्रेष्ठ अपने कनिष्ठ को तुरन्त आज्ञा दी कि सुन्दर भाई! जाओ अपने हाथों से विधिवत सूर्यपुत्र सुग्रीव का मुकुटधारण कराओ। ४००

अप्पो दङ्गरु णिन्र् वण्णलुम्
मॅय्प्पोर् मारुदि तन्नै वीरनी
इप्पो देहॉण रिन्न शॅय्वितैक्
कॉप्पाम् यावैयु मॅन्रु णर्त्तलुम् 401

अरुळ् निन्र्–(श्रीराम की) कृपा (आज्ञा) माननेवाले; अण्णलुम्–महिमावान लक्ष्मण के भी; अप्पोतु–तभी; अङ्कु–वहीं; मॅय् पोर्–धर्म-योद्धा; मारुति तन्नै–मारुति से; वीर–वीर; नी–तुम; इन्न–इस; चॅय् वितैक्कु–कर्तव्य कृत्य के लिए;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऒप्पु आम्–योग्य; यावैयुम्–सभी उपकरणों को; इप्पोते कॊणर्–अभी लाओ; ऎऩ्ऱु उणर्त्तलुम्–ऐसा कहते ही । ४०१

श्रीराम की कृपापूर्ण आज्ञाओं के सदा माननेवाले महिमावान लक्ष्मण ने तभी और वहीं धर्मयुद्धनिपुण हनुमान से कहा कि वीर ! इस मंगल-कार्य के लिए योग्य और आवश्यक उपकरण जुटाकर अभी लाओ । ४०१

मण्णु नीर्मुदऩ् मङ्ग लङ्गळुम्
ऎण्णुम् बॊऩ्मुडि यादि यावैयुम्
नण्णुम् वेलैयि नम्बि तम्बियुम्
तिण्णञ् जॆय्वऩ शॆय्दु शॆम्मलै 402

मण्णुम्–अभिषेक का; नीर् मुतल्–पुण्यजल आदि; मङ्कलङ्कळुम्–मंगलद्रव्य; ऎण्णुम्–प्रशंसनीय; पॊऩ् मुटि–स्वर्णमुकुट; आति यावैयुम्–आदि सभी; नण्णुम् वेलैयिल्–जब आये तब; नम्पि–पुरुषनायक के; तम्पियुम्–अनुज भी; चॆम्मलै–(वानर-) नायक के लिए; तिण्णम् चॆय्वऩ–अवश्य कर्तव्य; चॆय्तु–(संस्कार) करवाकर । ४०२

उनकी आज्ञा सुनते ही हनुमान कार्यतत्पर हुआ और अभिषेक-जल आदि मंगलसाधन और गण्य स्वर्णमुकुट आदि उपकरण आ गये । तब पुरुषनायक श्रीराम के कनिष्ठ लक्ष्मण ने वानरनायक के प्रति आवश्यक अभिषेकपूर्व कर्तव्य संस्कार आदि करवाया । ४०२

मऱैयो राशि वळङ्ग वाऩुळोर्
नऱैदोय् नाण्मलर् तूव नऩ्ऩॆऱिक्
किऱैयोऩ् इऩ्ऩिळै योऩव् वेन्दलैत्
तुऱैयोर् नूऩ्मुऱै मौलि शूट्टिऩाऩ् 403

मऱैयोर्–विप्रों के; आचि वळङ्क–आशीर्वचन कहते; वाऩुळोर्–स्वर्गवासियों के; नऱै तोय् नाण् मलर् तूव–सुरभियुक्त ताज़े फूल बरसाते; नल् नॆऱिक्कु–श्रेष्ठ आचरण के; इऱैयोऩ्–नायक; तऩ्–के; इळैयोऩ्–अनुज ने; अ एन्तलै–उस राजा को; तुऱैयोर् नूल् मुऱै–आचार्यों के शास्त्रों के अनुसार; मौलि चूट्टिऩाऩ्–मुकुट धारण करवाया । ४०३

फिर धर्मावलम्बी श्रेष्ठ नायक के भाई ने उस सम्मानित सुग्रीव का विधिवत मुकुटधारण करवाया । तब विप्रों ने आशीर्वचन उच्चारे । स्वर्ग के देवों ने सुरभिमय ताज़े कल्पसुमन बरसाये । ४०३

पॊऩ्मा मौलि पुऩैन्दु पॊय्यिलाऩ्
तऩ्मा नक्कळ ऱाळुम् वेलैयिल्
नऩ्मार् बिऱ्ऱळु वुऱ्ऱु नायहऩ्
शॊऩ्ऩाऩ् मुऱ्ऱिय शॊल्लि नॆल्लैयाऩ् 404

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊन् मा मौलि पुनैन्तु–स्वर्ण के बड़े मुकुट को धारण करके; पॊय् इलान्–सत्यसंध; तन् मानम् कळल्–(श्रीराम के) आदरणीय चरणों पर; ताळुम् वेलैयिल्–(जब सुग्रीव) झुका तब; नल् मार्पिल्–अपने श्रेष्ठ वक्ष से; तळुवुऱ्ऱ–लगा लेकर; मुऱ्ऱिय चॊल्लिन्–वेदों के; ऍल्लैयान्–शीर्षस्थ; नायकन्–जगन्नायक; चॊन्नान्–बोले। ४०४

सुग्रीव स्वर्णनिर्मित बड़ा किरीट पहनकर सत्यसंध श्रीराम के आदरणीय चरणों पर आ झुका। श्रीराम ने उसे अपने श्रीवक्ष से लगा लिया। फिर अर्थपूर्णवेदों के शीर्षस्थ (या अर्थपूर्णशब्दों के सर्वोन्नत अधिकारी) जगन्नायक सुग्रीव को (निम्नलिखित) उपदेश देने लगे। ४०४

ईण्डुनिन् ऱेहि नीनिन् निन्निय लिरुक्कै यॆय्दि
वेण्डुव मरबि नॆण्णि विदिमुऱै यियऱ्ऱि वीर
पूण्डपे ररशुक् केऱ्ऱ यावैयुम् बुरिन्दु पोरिन्
माण्डवन् मैन्द नोडुम् वाळ्दिनऱ् ऱिरुविन् वैहि 405

वीर–वीर; नी–तुम; ईण्टु निन्ऱु–यहाँ से; एकि–जाकर; निन्–अपने; इन् इयल्–सुहावने; इरुक्कै–वासस्थान; ऍय्ति–पहुँचकर; वेण्टुव–कर्तव्य; मरपिन्–यथापरम्परा; ऍण्णि–विचारकर; विति मुऱै–विधिवत; इयऱ्ऱि–करके; पूण्ट–अपनाये गये; पेर् अरचुक्कु–बड़े शासन-कार्य के; एऱ्ऱ–योग्य; यावैयुम्–सभी; पुरिन्तु–सम्पन्न करते हुए; पोरिल्–युद्ध में; माण्टवन्–जो मरा, उसके; मैन्ततोटुम्–पुत्र (अंगद) के साथ; नल् तिरुविन्–श्रेष्ठ वैभव में; वैकि–रहकर; वाळ्ति–जीवन व्यतीत करो। ४०५

तुम यहाँ से सुखपूर्वक जाओ। अपने मधुर और निजी वासस्थान पहुँचो। कर्तव्य यथाक्रम सोचो और यथाविधि करो। अपनाये गये राज्यशासन के योग्य सभी कृत्य पूरा करते हुए युद्धनिहत वाली के पुत्र के साथ श्रेष्ठ सुख-वैभव में रहो। ४०५

वाय्मैशा लऱिविन् वाय्न्द मन्दिर मान्द रोडुम्
तीमैती रॊळुक्किन् निन्ऱु तॆऱ्दॊळिन् मऱव रोडुम्
तूय्मैशाल् पुणर्च्चि पेणित् तुहळऱु तॊळिलै याहिच्
चेय्मैयो डणिमै यिन्ऱित् तेवरिऱ् ऱैरिय निऱ्ऱि 406

वाय्मै चाल्–सत्यपूर्ण; अऱिविन् वाय्न्त–बुद्धिशाली; मन्तिरम् मान्तरोटुम्–मंत्रणा के (मन्त्री) लोगों के साथ; तीमै तीर्–बुराई-रहित; ऒळुक्किन्–आचरण में; निन्ऱु–रहकर; तॆऱ् तॊळिल्–संहारकारी; मऱवरोटुम्–(सेना) वीरों के साथ; तूय्मै चाल्–पवित्र; पुणर्च्चि पेणि–मेल का व्यवहार चाहकर; तुकळ् अऱु–दोषहीन; तॊळिलै–कर्मी; आकि–बनकर; चेय्मैयोटु–दूरी के साथ; अणिमै इन्ऱि–निकटता भी छोड़कर; तेवरिल् तॆरिय–देवों के समान; निऱ्ऱि–रहो। ४०६

सत्यसंध और बुद्धिमान मन्त्रियों के साथ बुराई-रहित आचरण करो,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और संहारकारी (सेना के) वीरों के साथ पवित्र मेल का व्यवहार करो। तुम स्वयं दोषरहित आचरण करो। प्रजाजनों से न बहुत दूर रहो, न अत्यधिक समीप रहो। देवों के समान सम्मानित रहो। ४०६

पुहैयुडैत् तॅन्नि नुण्डु पॉङ्गन लङ्गॅन् ऱुन्नुम्
मिहैयुडैत् तुलह नूलोर् वित्तयमुम् वेण्डऱ् पाऱ्ऱे
पहैयुडैच् चिन्दै यार्क्कुम् पयनुऱु पण्बिऱ् ऱीरा
नहैयुडै मुहत्तै याहि यिन्नुरै नल्हु नावाल् 407

उलकम्–संसार के (अनुभवी) लोग; पुकै उटैत्तु ऍन्निऩ्–धुआँ रहा तो; अङ्कु–वहाँ; पॉङ्कु अऩल्–लपलपानेवाली आग; उण्टु–है; ऍऩ्ऱु उऩ्ऩुम्–ऐसा (अनुमान) कहने का; मिकै उटैत्तु–ज्ञान रखते हैं; नूलोर् वित्तयमुम्–शास्त्रज्ञों के कहे कूटव्यवहार भी; वेण्टल् पाऱ्ऱे–अपेक्षित है; पकै उटै चिन्तैयार्क्कुम्–शत्रुता मन में रखनेवाले लोगों के प्रति भी; पयऩ् उऱु–फलदायक; पण्पिल् तीरा–व्यवहार से न हटकर; नकै उटै पुकऩ्तै–हासवदन; आकि–बनकर; नावाल्–जीभ से; इऩ् उरै–मधुर वचन; नल्कु–बोलो। ४०७

धुआँ दिखायी दिया तो लोग कहते हैं कि वहाँ भभक उठनेवाली आग भी है। यह अनुमान का प्रमाण है। यह भी आवश्यक है। साथ-साथ ग्रन्थों में शास्त्रज्ञों ने जो लिख रखा है, उस पर भी (आगम-प्रमाण में भी) विश्वास रखो। तुम्हारे प्रति शत्रुता रखनेवालों के प्रति सुफल-दायक बर्ताव करने का गुण मत छोड़ो। हँसमुख रहो। जिह्वा से मधुर वचन बोलो। ४०७

तेवरुम् वॅः(ह्)हऱ् कॊत्त शॅयिररु शॅल्व मः(ह्)दुऩ्
कावल दरुमैत् तॅन्ऱा लऩ्ऩदु करुदिक् काण्डि
एवरु मिऩ्निय नण्ब रयलवर् विरवा रॅऩ्ऱिम्
मूवहै यियलो रावर् मुऩैवर्क्कु मुलह मूऩ्ऱिऩ् 408

तेवरुम्–देव भी; वॅ.ः.कऱ्कु ऒत्त–अपने लिए चाहें, इस योग्य; चॅयिऱु अऱु–कमीहीन; चॅल्वम् अ.ः.तु–सम्पत्ति वह; उऩ कावलतु अरुमैत्तु–तुम्हारे संरक्षण में आ मिली है; ऍऩ्ऱाल्–कहें तो; अऩ्ततु करुति–वह सोचकर; काण्टि–देखो; मुऩैवर्क्कुम्–मुनियों के लिए भी; उलकम् मूऩ्ऱिऩ्–तीनों लोकों के; एवरुम्–कोई भी; इऩ्निय नण्पर्–मधुर मित्र; विरवार्–अरि; अयलवर्–अन्य (उदासीन); ऍऩ्ऱु–ऐसे; इ मूवकै–इन तीन प्रकारों के; इयलोर् आवर्–स्वभाव वाले होते हैं। ४०८

तुम्हारे पास ऐसी सम्पत्ति मिली है, जिसको देखकर देव भी अपने लिए चाहें। इसलिए तुम उसका महत्त्व जानो और उसका ठीक तरह से पालन करो। मुनियों के लिए भी अरि, मित्र, उदासी —इन तीनों तरह के लोगों से सम्बन्ध रखना पड़ता है। ४०८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॅय्वत़ शॅय्दल् याण्डुन् तीयत़ शिन्दि यामल्
वैवत़ वन्द पोदुम् वशैयिल विनिय कूऱल्
मॅय्शॊलल् वळङ्गल् यावुम् मेवित़ वॅः(ह्)ह लिन्मै
उय्वत़ वाक्कित् तम्मो डुयर्वत़ वुवन्दु शॅय्वाय् 409

याण्टुम्–(अरि, मित्र, उदासीन) सभी के प्रति; तीयत़ चिन्तियामल्–बुराई न सोचकर; चॅय्वत़ चॅय्तल्–करनी करना; वैवत़–निन्दा-कथनों के; वन्त पोतुम्–(कानों में) लगने पर भी; वचै इल–कटुवचन छोड़कर; इनिय कूऱल्–मधुर भाषण करना; मॅय् चॊलल्–सत्य ही बोलना; यावुम् वळङ्कल्–सबका दान देना; मेवित़–परधन; वॅ.ःकल् इन्मै– न ग्रसना; उय्वत़ आक्कि–(मनुष्यों का) उद्धार कराकर; तम्मोटु उयर्वत़–खुद भी उत्कृष्ट बनते हैं; उवन्तु चॅय्वाय्–(ऐसे व्यवहार) चाव के साथ करो। ४०९

अरि, मित्र उदासी —इन तीनों के प्रति कभी भी बुराई मत सोचो। कर्तव्य योग्य कृत्य करो। अपवाद कानों में पड़ें तो भी कटु शब्द मत कहो, पर मधुर भाषण ही करो। खूब दान करो। परधन मत चाहो। ऐसे कृत्य तुम्हें भी उभारेंगे और स्वयं भी उत्कृष्ट होते रहेंगे। इनको चाह के साथ करो। ४०९

शिऱियरॅन् ऱिहळ्न्दु नोवु शॅय्वत़ शॅय्यत़् मऱ्ऱिन्
नॅऱियिहन् दियाऩोर् तीमै यिळैत्तला लुणर्च्चि नीण्डु
कुऱियदा मेनि याय कूनियाऱ् कुववुत् तोळाय्
वॅऱियत़ वॅय्दि नॊय्दिन् वॅन्दुयर्क् कडलिन् वीळ्न्देन् 410

कुववु तोळाय्–पुष्ट कन्धों वाले; चिऱियर् अॅन्ऱु–छोटे (अल्प या लघु) ऐसा; इकळ्न्तु–(सोचकर) उपेक्षा करके; नोवु चॅय्वत़–दुःखदायी कृत्य; चॅय्यल्–मत करो; मऱ्ऱु–और भी; यान्–मैंने; इ नॅऱि–यह सिद्धान्त; इकन्तु–छोड़कर; ओर् तीमै–एक बुराई; इळैत्तलाल्–की, इसलिए; उणर्च्चि नीण्टु–(शत्रुता की) भावना बढ़कर; कुऱियतु आम्–छोटी; मेनि आय–देह वाली; कूनिवाल्–कुब्जा द्वारा; वॅऱियत़–अभाव; अॅय्ति–प्राप्त करके; नॊय्तिन्–शीघ्र; वॅम् तुयर्–कठोर दुःख के; कटलिन्–सागर में; वीळ्न्तेन्–गिरा। ४१०

पुष्ट कन्धों वाले ! अल्प (छोटा, या नीच, या लघु) समझकर किसी की उपेक्षा या अपमान मत करो और उनको दुःखी मत करो। देखो। मैंने इस सिद्धान्त का उल्लंघन कर एक बुराई की। इसलिए छोटी देह वाली कुब्जा का वैर-भाव बढ़ा और फलस्वरूप मुझे अभावों का सामना करना पड़ा और मैं क्रूर दुःख-सागर में गिर गया। ४१०

मङ्गैयर् पॊरुट्टा लॅय्दु मान्दर्क्कु मरण मॅन्ऱल्
शङ्गैयिन् ऱुणर्दि वालि शॅय्हैयाऱ् चालु मिन्नुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अङ्गवर् तिऱत्ति नाऩे यल्ललुम् बऴियु मादल्
ऍङ्गळिऱ् काण्डि यऩ्ऱे यिदऱ्कुवे ऱुवमै युण्डो 411

मङ्कैयर् पॊरुट्टाल्–नारियों के कारण; मान्तर्क्कु–पुरुषों को; मरणम् ऍय्तुम्–मरण प्राप्त होगा; ऍऩ्ऱल्–यह तथ्य; वालि चॆय्कैयाल्–वाली के कृत्य से; चङ्कै इऩ्ऱु–शंका के विना; : उणर्त्ति–जान लो; चालुम्–प्रमाण (पर्याप्त) होगा; इऩ्ऩुम्–और भी; अवर् तिऱत्तिऩाऩे–उनके निमित्त; अल्ललुम्–संकट और; पऴियुम् आतल्–अपकीर्ति होती है, यह; ऍङ्कळिल्–हममें; काण्टि अऩ्ऱे–देखते हो न; इतऱ्कु–इसके लिए; वेऱु–अन्य कोई; उवमै उण्टो–उपमा है क्या। ४११

स्त्रियों के कारण पुरुषों को मृत्यु भी प्राप्त होगी —यह तथ्य वाली के व्यवहार से शंका के विना जान लो। यही श्रेष्ठ प्रमाण है। और उनके ही निमित्त संकट और अपवाद प्राप्त हो सकते हैं —यह तथ्य हमारी बाबत साबित हुआ है। दूसरे उदाहरण भी चाहिएँ क्या ? । ४११

नायह नल्ल नम्मै नऩिपयन् दॆडुत्तु नल्हुम्
तायॆऩ विऩिदु पेणत् ताङ्गुदि ताङ्गु वारे
आयदु तऩ्मै येऩ् मऱवरम् बिहवा वण्णम्
तीयऩ वन्द पोदु शुडुदियाऱ् ऱीमै योरे 412

नायकऩ् अल्लऩ्–स्वामी नहीं; नम्मै–हमें; पयन्तु ऍटुत्तु–जनाकर; नऩि नल्कुम्–खूब पालनेवाली; ताय्–माता; ऍऩ–ऐसा (मानकर); इऩितु पेण–(प्रजा) तुमसे प्रेम-भरा व्यवहार करे, ऐसा; ताङ्कुवारे–भरणयोग्य प्रजाजनों का; ताङ्कुति–भरण करो; आयतु तऩ्मै एऩुम्–वैसे व्यवहार के होने पर भी; तीयऩ वन्त पोतु–हानि (किसी के द्वारा) आयी तो; तीमैयोरे–बुरा करनेवाले को; अऱम् वरम्पु–धर्म की सीमा; इकवा वण्णम्–लाँघे विना; चुटुति–जलाओ (दण्ड दो)। ४१२

प्रजा तुम्हें स्वामी न माने; पर अपनी जननी और पालन करने वाली धात्री समझे, और तुम्हारी सेवा करे। ऐसा तुम भरण-योग्य प्रजा का पालन करो। तो भी बुराई किसी के द्वारा आयी तो हानिकारी को, धर्म की सीमा का उल्लंघन किये विना, दण्ड दो। ४१२

इऱत्तलुम् पिऱत्त ऱानु मॆऩ्बऩ विरण्डुम् याण्डुम्
तिऱत्तुळि नोक्किऱ् चॆय्द विऩैदरत् तॆरिन्द वऩ्ऱे
पुऱत्तिऩि युरैप्प दॆऩ्ऩे पूविऩ्मेऱ् पुऩिदऱ् केऩुम्
अऱत्तिऩ दिऱुदि वाळ्नाट् किऱुदियः(ह्) दुऱुदि यऩ्ब 413

अऩ्प–स्नेही; तिऱत्तु उळि–समर्थ-रूप से; नोक्किऩ्–देखें तो; इऱत्तलुम्–मरना और; पिऱत्तल् ताऩुम्–जन्म लेना; ऍऩ्पऩ इरण्टुम्–दोनों; याण्टुम्–सदा; चॆय्त विऩै तर तॆरिन्त अऩ्ऱे–पूर्वकृत कर्म के फलस्वरूप होते हैं न; पूविऩ् मेल्–(कमल) पुष्प पर आसीन; पुऩितऱ्कु एऩुम्–पवित्र (ब्रह्मा) देव के लिए भी;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऱत्तितत्तु इऱुति–धर्म का अन्त; वाळ् नाट्कु इऱुति–आयु का अन्त है; अ.ऱ्तु उऱुति–वह निश्चित है; इत्ति–आगे; पुऱत्तु–अन्य; उरैप्पतु ऎऩ्ऩे–कहना क्या है ? । ४१३

प्रिय मित्र ! खूब विदग्धता के साथ सोचा जाय तो जन्म और मरण पूर्वकृत कर्मों के ही फल हैं। है न ? महाविष्णु के नाभि-कमल पर उदित पवित्र ब्रह्मा के लिए भी धर्म-कर्म का अन्त आयु का अन्त ला देगा। वह शाश्वत है और ध्रुव है। फिर क्या कहा जाय ? । ४१३

आक्कमुङ् गेडुन् दाऱ्जॆ यऱत्तॊडु पाव माय
पोक्किवे ऱुण्मै तेऱार् पॊरुवरुम् बुलमै नूलोर्
ताक्किऩ वॊऩ्ऱो डॊऩ्ऱु तरुक्करुऱ् जॆऱुविऱ् ऱक्कोय्
पाक्किय मऩ्ऱि यॆऩ्ऱुम् पावत्तैप् पऱ्ऱ लामो 414

तक्कोय्–योग्य; ऒऩ्ऱोटु ऒऩ्ऱु–एक दूसरे के साथ; ताक्किऩ–टकराकर; तरुक्कु उऱुम्–जहाँ गर्व दरसाया जाता है, उस; चॆऱुविल्–युद्ध में; आक्कमुम् केटुम्–उत्कर्ष और अपकर्ष; ताम् चॆय्–अपने से किये हुए; अऱत्तॊटु पावम् आय–धर्म और पाप के फलस्वरूप मिलनेवाले हैं; पोक्कि–वह छोड़कर; वेऱु उण्मै–अन्य कारणों का रहना; पॊरुवु अरुम्–अनुपम; पुलमै नूलोर्–विद्वान् शास्त्रज्ञ; तेऱार्–नहीं मानते; पाक्कियम् अऱ्ऱि–पुण्यकर्म छोड़कर; पावत्तै–पाप को; ऎऩ्ऱुम्–कभी; पऱ्ऱलामो–कर सकते हैं क्या। ४१४

योग्य सुग्रीव ! युद्ध में, जहाँ लोग परस्पर टकराते हैं और अभिमान दिखाते हैं, अभ्युदय और नाश अपने किये पुण्य और पाप के लाये हुए होते हैं। विद्वान् शास्त्रज्ञ लोग उसका और किसी कारण का होना नहीं मानते। इसलिए सौभाग्यकारी पुण्यकर्म छोड़कर नाशकारी पापकार्य कभी भी किये जा सकते हैं क्या ? । ४१४

इऩ्ऩवै तहैमै यॆऩ्ब वियल्बुळि मरबि ऩॆण्णि
मऩ्ऩर शियऱ्ऱि यॆऩ्गण् वरुवळि मारिक् कालम्
पिऩ्ऩुऱ मुऱैयि नुऩ्ऱुऩ् पॆरुङ्गडऱ् चेनै योडुम्
तुऩ्ऩुदि पोदि यॆऩ्ऱान् सुन्दर ऩवऩुऱ् जॊल्वान् 415

इऩ्ऩवै तकैमै–ये योग्यताएँ हैं; ऎऩ्प–कहते हैं (लोग); इयल्पु उळि–शास्त्र-सम्मत रीति से; मरपिऩ् ऎण्णि–यथाक्रम विचार कर; मऩ् अरचु–स्थायी राज्य; इयऱ्ऱि–(राज) करके; मारि कालम्–वर्षाकाल के; पिऩ् उऱ–बीतने पर; ऎऩ् कण्–मेरे पास; वरु वळि–जब आओगे तब; मुऱैयिऩ्–उचित प्रकार से; उऩ् तऩ्–अपनी; पॆरु कटल्–विशाल सागर-सम; चेनैयोटुम्–सेना के साथ; तुऩ्ऩुति–आ जाओ; पोति–अब जाओ; ऎऩ्ऱान्–कहा; चुन्दरऩ्–सुन्दर श्रीराम ने; अवऩुम्–वह भी; चॊल्वान्–बोला। ४१५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ये सब शासक के लिए योग्य विचार और व्यवहार हैं। ऐसा लोग कहते हैं। इसलिए शास्त्र में उक्त रीति से और परम्परा के क्रम के अनुसार शाश्वत राज्य करो। फिर वर्षाकाल के बीतने पर मेरे पास आ जाओ। जब आओ, तब अपनी विशाल सागर-सम सेना को भी साथ ले आओ। अब तुम जाओ। —सुन्दर श्रीराम ने कहा। तब सुग्रीव उत्तर में यों बोला। ४१५

कुरङ्गुऱै यिरुक्कै यॆऩ्ऩुङ् गुऱ्ऱमे कुऱ्ऱ मल्लाल्
अरङ्गॆऴिल् तुऱक्क नाट्टुक् करशॆऩ लाहु मऩ्ऱे
मरङ्गिळ ररुविक् कुऩ्ऱिऩ् वळ्ळऩी मऩत्ति नॆम्मै
इरङ्गिय पणियाऱ् जॆय्य विरुत्तियाऱ् चिऩ्ऩा ळॆम्बाल् 416

वळ्ळल्–वदान्य; कुरङ्कु उऱै–वानरों के रहने का; इरुक्कै–स्थान; ऍऩ्ऩुम्–कहा जाता है, यही; कुऱ्ऱमे–दोष; कुऱ्ऱम् अल्लाल्–दोष है, नहीं तो; ऍऴिल् अरङ्कु–सुन्दर मंच (सुधर्मा) से शोभित; तुरक्कम् नाट्टुक्कु–स्वर्गदेश का; अरचु ऍऩल्–राजा है, कहने योग्य; आकुम्–है; मरम् किळर्–तरुलसित; अरुवि कुऩ्ऱिऩ्–सरितापूर्ण पर्वत पर; नी–आप; मऩत्तिऩ्–चित्त में; ऍम्मै–हमारे प्रति; इरङ्किय–सहानुभूति के साथ दी गयी; पणि–सेवा की आज्ञाएँ; याम् चॆय्य–हमें करने देते हुए; चिल् नाळ्–कुछ दिन; ऍम् पाल्–हमारे पास; इरुत्ति–रहिए। ४१६

हमारे वासस्थान के सम्बन्ध में इतना ही दोष है कि वह वानरों का वासस्थान है, अगर वह दोष हो! नहीं तो वह 'सुधर्मा' नाम के सभाभवन के साथ शोभनेवाले स्वर्ग का भी नायक (स्वर्ग से अधिक भव्य) है। हमारे पर्वत पर तरु हैं और सरिताएँ हैं। आप जो भी आज्ञा देने की कृपा करेंगे, हम उनको कार्यान्वित कर देंगे। आप कुछ दिनों तक हमारे पास रहने की कृपा करें। ४१६

अरिन्दम निऩ्ऩै यण्मि यरुळुक्कु मुरिये माहिप्
पिरिन्दुवे ऱॆय्दुञ् जॆल्वम् वॆऱुमैयिऱ् पिऱिदऩ् ऱामाल्
करुन्दडङ् गण्णि ऩाळै नाडलाङ् गालङ् गाऱुम्
इरुन्दरु डरुदि यॆम्मो डॆऩ्ऱडि यिणैयिऩ् वीऴ्न्दाऩ् 417

अरिन्तम–शत्रुहंता; निऩ्ऩै अण्मि–आपकी शरण में आकर; अरुळुक्कुम्–कृपा के; उरियोमाकि–पात्र बनकर; पिरिन्तु–आपसे बिछुड़कर; वेऱु ऍय्तुम्–अलग रहकर भोगने का; चॆल्वम्–विभव; वॆऱुमैयिल् पिऱितु अऩ्ऱु आम्–अभाव से पृथक् नहीं है; करु तटम् कण्णिताळै–काली और आयत आँखों वाली (सीतादेवी) को; नाटल् आम्–खोजने का; कालम् काऱुम्–काल आते तक; ऍम्मोटु इरुऩ्तु–हमारे साथ रहकर; अरुळ् तरुति–उपकार करें; ऍऩ्ऱु–कहकर; अटि इणैयिऩ्–चरणद्वय पर; वीऴ्न्ताऩ्–गिरा। ४१७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शत्रुहन्ता वीर हे श्रीराम ! आपकी शरण में आकर, आपकी कृपा के पात्र रहने के बाद आपसे बिछुड़कर अलग जो भी भोग भोगेंगे, वे अभाव से भिन्न नहीं होंगे ! काली और विशाल आँखों वाली देवी सीता के अन्वेषण के लिए योग्य काल के आने तक आप हमारे साथ रहने की कृपा कीजिए। सुग्रीव ने यह विनय करते हुए श्रीराम के चरणयुगल पर गिरकर प्रणाम किया। ४१७

एन्दलु मिदऩैक् केळा विन्ऩिळ मुऱुव ऩाऱ
वेन्दमै यिरुक्कै यॆम्बोल् विरदियर् विऴैदऱ् कॊव्वा
पोन्दव णिरुप्पि नॆम्मैप् पोऱ्ऱवे पॊऴुदु पोमाल्
तेर्न्दिऩि दियऱ्ऱु मुन्ऱ ऩरशियऱ् ऱरुमन् दीर्दि 418

एन्तलुम्–राजाराम भी; **इतऩै केळा**–यह सुनकर; **इन् इळ मुऱुवल्**–मधुर मन्दहास; **नाऱ्**–प्रकट करते हुए; **वेन्तु अमै**–राजकीय; **इरुक्कै**–भवन में रहना; **ऎम् पोल्**–हम जैसे; **विरतियर्**–तपोव्रती लोगों के लिए; **विऴैतऱ्कु ऒव्वा**–चाहनीय नहीं है; **अवण् पोन्तु**–वहाँ आकर; **इरुप्पिन्**–रहें तो; **ऎम्मै पोऱ्ऱवे**–हमारे सत्कार करने में ही; **पॊऴुतु पोम्**–समय बीत जायगा; **आल्**–इसलिए; **तेर्न्तु**–छानबीन कर; **इऩितु इयऱ्ऱुम्**–सुख से जो करोगे; **उन् तन्**–उस तुम्हारे; **अरचियल् तरुमम्**–शासन-धर्म से; **तीर्ति**–तुम हट जाओगे। ४१८

श्रीराजाराम ने भी यह सुनकर मधुर मन्दहास करते हुए उत्तर दिया। हम तपोव्रती हैं। हमारे लिए राजकीय भवन में रहना चाहने योग्य काम नहीं है। और भी अगर हम वहाँ आकर रहें तो हमारी सेवा-टहल में तुम लोगों का सारा समय कट जायगा। और उससे तुम सोच-विचारकर करणीय अपने शासनकार्य के धर्म से च्युत हो जाओगे। ४१८

एऴिरण् डाण्डि यान्पोन् दॆरिवऩत् तिरुक्क वेन्ऱेन्
वाऴिया यरशर् वेहुम् वळनहर् वैह लॊल्लेन्
पाऴियन् दडन्दोळ् वीर पार्क्किलै पोलु मन्ऱे
याऴिशै मॊऴियो डन्ऱि यानुरु मिन्ब मॆन्ऩो 419

वाऴियाय्–जयजीव; **एऴ् इरण्टु आण्टु**–सात के दो (चौदह) साल; **यान् पोन्तु**–मैं जाकर; **ऎरि वऩत्तु**–जलते वन में; **इरुक्क**–रहना; **एन्ऱेन्**–मैंने मान लिया; **अरचर् वैकुम्**–राजा जहाँ रहते हैं; **वळ नकर्**–उस समृद्ध नगर में; **वैकल् ऒल्लेन्**–रहने को सम्मत नहीं होऊँगा; **पाऴि**–सबल; **अम्**–सुन्दर; **तटम् तोळ्**–विशाल कन्धों वाले; **वीर**–वीर; **याऴ् इचै**–'याऴ्'-ध्वनि-सी मधुर; **मॊऴियोटु अऩ्ऱि**–बोली की सीता के विना; **यान् उऱुम्**–मैं जो भोगूं, वह; **इऩ्पम्**–सुख; **ऎन्ऩो**–किस मूल्य का; **पार्क्किलै पोलुम्**–शायद तुमने नहीं सोचा क्या। ४१९

जयजीव ! मैंने चौदहों साल दाहक वन में वास करने का वचन दिया है। तब तक राजाओं के वासस्थान, समृद्ध नगरों में रहना नहीं मानूँगा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और भी, हे सबल सुन्दर विशाल कन्धों वाले वीर ! 'याऴ' की ध्वनि-सी मधुरभाषिणी सीता के विना जो भी मुझे सुख-भोग मिले, वह किस काम का ? यह तुम नहीं देखते शायद ! । ४१९

देविवे ऱरक्कन् वैत्त शिऱैयिनु ळिरुप्पत् तान्ऱन्
आवियन् दुणैव नोडु मऴविडऱ् करिय विन्बम्
मेविना निराम नॅन्ऱा लैयविव् वॅय्य माऱ्ऱम्
मूवहै युलह मुऱ्ऱुङ् गालत्तु मुऱ्ऱ वऱ्ऱो 420

ऐय–श्रेष्ठ सुग्रीव; तेवि–मेरी गृहिणी; वेऱु–अलग; अरक्कन् वैत्त–राक्षस-रक्षित; चिऱैयिनुळ्–कारागृह में; इरुप्प–रहती है, तब; इरामन्–श्रीराम; तान्–स्वयं; तन् आवि अम् तुणैवनोटुम्–अपने प्राणप्यारे सखा के साथ; अऴविटऱ्कु अरिय–अगण्य; इन्पम्–सुखभोग; मेवितान्–अपनाए रहा; ऍन्ऱाल्–लोग कहें तो; इ वॅय्य माऱ्ऱम्–यह कठोर अपवाद-कथन; मूवकै उलकम्–त्रिवर्ग के लोकों के; मुऱ्ऱुम् कालत्तुम्–मिटने के समय में भी; मुऱ्ऱवऱ्ऱो–मिटेगा क्या । ४२०

श्रेष्ठ सुग्रीव ! मेरी गृहिणी सीता रावणरक्षित कारागृह में है। तब 'राम अपने प्यारे प्राणसम सखा के साथ अपार सुख-भोग में मस्त रहा !' —यह अपवाद अगर लोग कहने लगें तो क्या वह अपयश त्रिवर्ग के लोकों के नाश होने पर भी मिटेगा ? । ४२०

इल्लऱन् दुऱन्दि लादो रियऱ्कैयै यिळन्दु पोरिन्
विल्लऱन् दुऱन्दु वाळ् वॅळ्हिनॅन् मेन्मै यल्लाच्
चिल्लऱम् बुरिन्दु निन्ऱ तीमैह डीरु माऱु
नल्लऱन् दॊडर्न्द नोन्बि नवैयऱ नोऱ्प नाळुम् 421

इल् अऱम्–गृहस्थधर्म; तुऱन्तिलातोर्–अमुक्त; इयऱ्कैयै–लोगों का आचार-व्यवहार; इळन्तु–छोड़कर; पोरिन्–युद्ध में; विल् अऱम्–धनुधर्म; तुऱन्तु–छोड़कर; वाळ् वॅळ्किनॅन्–जीने से शरमाता हूँ; मेन्मैयल्ला–जो उत्कृष्ट नहीं; चिल् अऱम्–क्षुद्र धर्म; पुरिन्तु निन्ऱ–जो मैंने आचरण किया है; तीमैकळ्–उनसे मिलनेवाले कष्ट; तीरुम् आऱु–दूर करने हेतु; नल् अऱम् तॊटर्न्त–सद्धर्मानुचारी; नोन्पिन्–व्रत के पालन में; नाळुम्–रोज; नवै अऱ–निर्दोष रीति से; नोऱ्पल्–तपस्या करूँगा । ४२१

गृहस्थी में रहनेवालों के योग्य रहन-सहन या व्यवहार मैंने त्याग दिया। साथ-साथ युद्ध में धनु-धर्म जो है, उसका भी उल्लंघन कर दिया। इस स्थिति में अपने जीवित रहने में मुझे शरम का अनुभव होता है। जो धर्म मैंने अब तक अपनाए वे अल्प हैं और श्रेष्ठ नहीं हैं। उनके पालन से जो हानियाँ सम्भवनीय हैं, उनको दूर करने के वास्ते मैं सदाचरण व्रत के पालन में स्थित होकर प्रतिदिन तप करूँगा, ताकि दोष सब दूर हों । ४२१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरशियऱ् कुरिय यावु माऱ्ऱुळि याऱ्ऱि यान्ऱ
करैशैयऱ् करिय शेनैक् कडलोडुन् दिङ्ग णान्गिन्
विरशुव दॆन्बा निन्नै वेण्डिनॆन् वीर वॆन्ऱान्
उरैशैयऱ् कॆळिदु माहि यरिदुमा मॊळुक्कि निन्ऱान् 422

उरै चॆयऱ्कु–कहने के लिए; ऍळितुम् आकि–सुलभ रहकर; अरितुम् आम्–(करने के लिए) कठिन जो है; ऒळुक्किल्–उस आचरण में; निन्ऱान्–स्थित रहनेवाले श्रीराम; वीर–वीर; अरचु इयऱ्कु–राजकाज के लिए; उरिय यावुम्–योग्य आवश्यक सभी; आऱ्ऱुळि–करनेयोग्य रीति से; आऱ्ऱि–करके; आन्ऱ–श्रेष्ठ; करै चॆयऱ्कु अरिय–पार पाने में कठिन; चेनै कटलोटुम्–सेना-सागर के साथ; तिङ्कळ् नान्किल्–महीनों, चार, में; ऍन् पाल्–मेरे पास; विरचुक–आ मिलो; निन्नै वेण्टिनॆन्–तुमसे याचना करता हूँ; ऍन्ऱान्–बोले। ४२२

सदाचार ऐसे हैं, जिनका कथन सुलभ है पर आचरण कठिन है। श्रीराम ऐसे सदाचरण में स्थिर रहनेवाले थे। उन्होंने सुग्रीव से कहा कि वीर! राजकाज ठीक सँभालो। फिर अपार सेना के सागर के साथ चार मास की अवधि में मेरे पास आ जाओ। तुमसे मेरी यह याचना है। ४२२

मऱित्तॊरु माऱ्ऱङ् गूऱान् वानुयर् तोऱ्ऱत् तन्नान्
कुऱिप्पऱिन् दॊळुहन् मादो कोदिल राद लॆन्ना
नॆऱिप्पडर् कण्गळ् पॊङ्गि नीर्वर नॆडिदु ताळ्न्दु
पॊऱिप्परुन् दुन्ब मुन्नाक् कविक्कुलत् तरशन् पोनान् 423

कविकुलत्तु अरचन्–कपिकुल का राजा; मऱित्तु–उत्तर में; ऒरु माऱ्ऱम्–कोई वचन; कूऱान्–न बोला; वान् उयर्–बहुत उत्कृष्ट; तोऱ्ऱत्तु–(तपो-) वेशधारी; अन्नान्–उनका; कुऱिप्पु अऱिन्तु–मनोभाव जानकर; ऒळुकल्–उसके अनुसार आचरण करना; कोतु इलर् आतल्–निर्दोष काम करनेवाले का गुण होगा; ऍन्ना–यह सोचकर; पटर् कण्कळ्–विशाल आँखों से; नीर् पॊङ्कि–जल को उमड़कर; नॆऱि वर–धारा में बहाते हुए; नॆटितु ताळ्न्तु–पट गिरकर; पॊऱिप्पु अरु–अकूत; तुन्पम् उन्ना–दुःख मन में रखे; पोनान्–गया। ४२३

यह सुनकर कपिकुलराज ने कुछ उत्तर नहीं दिया। अति श्रेष्ठ तपवेश-धारी श्रीराम का तात्पर्य समझा। माना कि उनका मन जानकर उसी के अनुकूल चलना निर्दोष आचरण वाले के लिए युक्त है। आँखों से आँसू बहाते हुए सुग्रीव श्रीराम के चरणों में पट गिरा। नमस्कार कर उठा और अपार दुःख लेकर किष्किन्धा की ओर चल दिया। ४२३

वालिहा दलनु माण्डु मलरडि वणङ्गि नानै
नीलमा मेह मन्न नॆडियव नरुळि नोक्किच्
चीलनी युडैयै याद लिवन्शिऱु तादै यॆन्ना
मूलमे तन्द नुन्दै यामॆन मुऱैयि निऱ्ऱि 424

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मलर् अटि–कमल-चरण पर; वणङ्कितान्–जिसने प्रणाम किया; वालि कातलनुम्–उस वाली के पुत्र को भी; आण्टु–वहाँ; नीलम् मा मेकम् अन्न–नीले, बड़े मेघ के समान; नॅटियवन्–उत्तम श्रीराम; अरुळिन्–कृपापूर्वक; नोक्कि–देखकर; नी–तुम; चीलम् उटैयै–शीलवान; आतल्–बनो; इवन्–इसे; चिऱु तातै अॅन्ना–छोटे पिता न मानकर; मूलमे तन्त–जन्म-दाता; नुन्तै आम् अॅन्न–अपने पिता ही मानकर; मुऱैयिन् निऱ्ऱि–उसी (बान्धव्य-) क्रम में बर्ताव करो। ४२४

तब वाली का पुत्र भी श्रीराम के चरणों पर नत हुआ। नीले, बड़े मेघ-सम श्रीराम ने उस पर कृपाकटाक्ष डालकर कहा कि तुम शीलवान बने रहो। इस सुग्रीव को छोटे पिता मत मानो। पर जनक पिता ही मानो। उस रिश्ते के गौरव का पालन करो। ४२४

अॅन्नमऱ् रिन्नैय कूऱि येहवऱ् ऱोडर वॅन्ऱान्
पोन्नडि वणङ्गि मऱ्ऱप् पुहळुडैक् कुरिशिल् पोनान्
पिन्नर्मा रुदियै नोक्किप् पेरॅळिल् वीर नीयुम्
अन्नव नरशुक् केऱ्ऱ दाऱ्ऱुदि यऱिवि नॅन्ऱान् 425

अॅन्न–कहकर; मऱ्ऱुम्–और; इन्नैय कूऱि–ऐसी बातें कहकर; अवन् तॊटर–उसका पीछा करके; एकु–जाओ; अॅन्ऱान्–कहा; मऱ्ऱु–उसके पश्चात्; अ पुकळ् उटै–वह कीर्तिमान; कुरिचिल्–कुँअर; पोन् अटि वणङ्कि–सुन्दर चरणों पर नमस्कार करके; पोनान्–गया; मारुतियै–मारुति को; नोक्कि–देखकर; पिन्नर्–फिर; पेर् अॅळिल् वीर–अतिसुन्दर वीर; नीयुम्–तुम भी; अन्नवन्–उसके; अरचुक्कु एऱ्ऱतु–राज्य के योग्य; अऱिवित्–अपनी बुद्धि से; आऱ्ऱुति–(काम) करो; अॅन्ऱान्–कहा। ४२५

श्रीराम ने यह कहा और भी ऐसे हित-वचन कहे। फिर आज्ञा दी कि सुग्रीव के पीछे जाओ। पश्चात वह प्रकीर्तित कुमार अंगद श्रीराम के सुन्दर चरणों पर नमस्कार करके किष्किन्धा की ओर चल पड़ा। श्रीराम ने मारुति से कहा कि अतिसुन्दर वीर! तुम भी जाओ और सुग्रीव के शासनकार्य में युक्त सहयोग के कार्य अपने बुद्धिबल के आधार पर साधो। ४२५

पॊय्त्तलि लुळ्ळत् तन्बु पॊऴिहिन्ऱ पुणर्च्चि यानुम्
इत्तलै यिरुन्दु नायेन्नैयिन वॅन्नक्कुत् तक्क
कॆत्तॊऴिल् शॆय्वॆ नॅन्ऱु कळलिणै वणङ्गुङ् गालै
मॆय्त्तलै निन्ऱ वीर निव्वुरै विळम्ब लुऱ्ऱान् 426

पॊयत्तल् इल्–असत्य जिसमें नहीं था; उळ्ळत्तु–ऐसे मन के; अन्पु पॊऴिकिन्ऱ–(और) भक्ति अधिक; पुणर्च्चियानुम्–रखनेवाले के; नायेन्–दास मैं; इ तलै इरुन्तु–यहीं रहकर; एयिन्न–आप जो आज्ञा देंगे, अॅन्नक्कु तक्क–और अपने योग्य; कॆत् तॊऴिल्–छोटी-मोटी सेवाएँ; चॆय्वॆन्–करूँगा; अॅन्ऱु–कहकर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कळल् इणै–चरणयुगल पर; वणङ्कुम् कालै–नमस्कार करते समय; मॅय् तलै निन्ऱ वीरन्–सत्यसंध वीर (श्रीराम); इ उरै–यह बात; विळम्पल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। ४२६

असत्यहीन और भक्ति से लबालब भरे मन वाले हनुमान ने विनय की कि दास मैं यहीं रह जाऊँ ! आप जो भी आज्ञा करेंगे, जो मुझसे साध्य है, वे छोटी-मोटी सेवाएँ बजाऊँगा। यह कहते हुए उसने श्रीराम के चरणों पर नमस्कार किया; तब सत्यसंध श्रीराम ने यों कहा। ४२६

निरम्बिना नॉरुवन् कात्त निऱैयर शिऱुदि निन्ऱ
वरम्बिला ददनै मऱ्ऱोर् तलैमहन् वलिदिऱ् कॉण्डाल्
अरुम्बुव नलतुन् दीङ्गु माहलि नैय निन्बोऱ्
पॅरुम्बॉऱै यऱिवि नोरा निलैयिनैप् पॅऱुव दम्मा 427

निरम्पितान्–पूर्णयोग्य; ऑरुवन्–एक (वाली); कात्त–द्वारा पालित; निऱै अरचु–समृद्ध राज्य; इऱुति निन्ऱ–अन्तिम; वरम्पु इलाततु–सीमा-रहित है; अतनै–उसे; मऱ्ऱु ओर् तलै मकन्–कोई दूसरा राजा; वलितिन् कॉण्टाल्–बलात् हथिया लेगा तो; नलतुम् तीङ्कुम्–लाभ और हानि; अरुम्पुव–होगी; आकलिन्–इसलिए; ऐय–महिमामय; निन्पोल्–तुम्हारे समान; पॅरुम् पॉऱै–बड़े सहनशील और; अऱिवितोराल्–बुद्धिमान लोगों द्वारा ही; निलैयिनै पॅऱुवतु–स्थिरता पा सकता है। ४२७

पूर्णकुशल वाली द्वारा पालित राज्य समृद्ध और निस्सीम है। उसको कोई अन्य राजा बलात् हथिया लेगा तो लाभ और हानियाँ निकल आयँगी। इसलिए उसे सुरक्षित करना है। महिमावान हनुमान ! वह स्थिरता देने का कार्य तुम जैसे बड़े ही सहनशील और बुद्धिमान के हाथों ही हो सकेगा। ४२७

आन्ऱवऱ् कुरिय दाय वरशिनै निऱुवि यप्पाल्
एन्ऱॅनक् कुरिय दाय करुममु मियऱ्ऱऱ् कॉत्त
शान्ऱवर् निन्ऱि निल्लै यादलाऱ् ऱुरुमन् दानै
पोन्ऱुनी याने वेण्ड वत्तलैप् पोदि यॅन्ऱान् 428

आन्ऱवऱ्कु–उत्तम सुग्रीव के; उरियतु आय–स्वत्व के; अरचिनै–राज्य को; निऱुवि–सुसंगठित करके; अप्पाल्–बाद; ऍनक्कु उरियतु आय–मेरे प्रति कर्तव्य; करुममुम्–कार्य भी; एन्ऱु–हाथ में लेकर; इयऱ्ऱऱ्कु ऑत्त–करने योग्य; चान्ऱवर्–श्रेष्ठ व्यक्ति; निन्ऱितिन् इल्लै–तुम्हारे समान कोई नहीं है; आतलाल्–इसलिए; तरुमम् तानै पोन्ऱ–धर्म ही-सम; नी–तुम; यानै वेण्ट–मेरी ही याचना से; अ तलै पोति–उधर जाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ४२८

श्रेष्ठ सुग्रीव के अधिकार में आये राज्य को पहले सुरक्षित करो।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

फिर मेरे प्रति कर्तव्य करो। इसके लिए तुमसे बड़ा श्रेष्ठ कोई नहीं है। इसलिए धर्मावतार-सम तुम मेरी याचना मानो और वहाँ जाओ। ४२८

आऴियाऩ् ऩऩैय कूऱ् वाणैयी दाहि ऩः(ह्)दे
वाऴियाय् पुरिवॆ ऩॆऩ्ऱु वणङ्गिमा रुदियुम् बोऩाऩ्
शूऴिमाल् याऩै यऩ्ऩ तम्बियो डॆऴुन्दु तॊल्लै
ऊऴिना यहऩुम् वेऱो रुयर्दडङ् गुऩ्ऱ मुऱ्ऱाऩ् 429

आऴियाऩ्–(सुदर्शन-) चक्रधारी श्रीराम (के); अऩैय कूऱ्–वैसा कहने पर; मारुतियुम्–हनुमान भी; वाऴियाय्–जयजीव; आणै–आज्ञा; ईतु आकिऩ्–यह हो तो; अ.ऱ्ते पुरिवॆऩ्–वही करूँगा; ऎऩ्ऱु–कहकर; वणङ्कि–नमस्कार करके; पोऩाऩ्–गये; तॊल्लै–पुरातन; ऊऴि नायकऩुम्–युगनायक श्रीराम भी; चूऴि माल्–मुखपट्ट पहने हुए और बड़े; याऩै अऩ्ऩ–गज के समान; तम्पियोटु ऎऴुन्दु–भाई के साथ उठकर; वेऱु ओर्–दूसरे एक; उयर् तट कुऩ्ऱम्–उन्नत विशाल पर्वत पर; उऱ्ऱाऩ्–पहुँचे। ४२९

सुदर्शन नाम के चक्रधारी श्रीराम के ऐसा कहने पर मारुति ने विनय के साथ कहा कि जयजीव ! यही आपकी आज्ञा है तो उसी के अनुसार चलूँगा। फिर वह उनको नमस्कार करके चला गया। बाद पुरातन युगों के नायक श्रीराम मुखपट्ट पहने हुए बड़े हाथी के समान अपने भाई लक्ष्मण को साथ लेकर दूसरे एक बड़े (प्रश्रवण) पर्वत पर जा पहुँचे। ४२९

आरिय ऩरुऴिऱ् पोयव् वहऩ्मलै यहऩ्त ऩाऩ
सूरियऩ् महऩु माऩत् तुणैवरुङ् गिऴैयुऱ् जुऱ्ऱत्
तारैयै वणङ्गि यऩ्ऩा डायॆऩत् तन्द शॊऱ्कळ्
शीरियर् शॊल्ले यॆऩ्ऩच् चॆव्विदि ऩरशु शॆय्दाऩ् 430

आरियऩ् अरुऴिऩ्–आर्यश्रेष्ठ श्रीराम की आज्ञा के अनुसार; पोय्–जाकर; अ अकऩ् मलै–उस विशाल (किष्किन्धा) पर्वत के; अकऩ्तऩ् आऩ–स्थल में रहनेवाला; चूरियऩ् मकऩुम्–सूर्य के पुत्र ने भी; माऩम् तुणैवरुम्–सम्मान्य साथी; किऴैयुम्–और बन्धु; चुऱ्ऱ–घेर आये; तारैयै वणङ्कि–तारा को नमस्कार करके; अऩ्ऩाळ् तायॆऩ–उसके द्वारा मातृ-सम; तन्त चॊऱ्कळ्–कहे हुए शब्दों को; चीरियर् चॊल्ले–उत्तम लोगों के उपदेश-वचन ही; ऎऩ्ऩ–मानकर; चॆव्वितिऩ्–उत्तम रूप से; अरचु चॆय्ताऩ्–राज्य किया। ४३०

आर्य श्रीराम की आज्ञा लेकर सुग्रीव अपने साथियों (मन्त्रियों आदि) और बान्धवों के साथ अपने पर्वत पर पहुँचा। वहाँ का होकर उसने तारा को नमस्कार किया। उसने जो भी माता के समान कहा उसे उत्तम, बड़े लोगों के उपदेशों का-सा गौरव देते हुए सुग्रीव राज्य करता रहा। ४३०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वळवर शॅय्दि मऱ्ऱ वानर वीरर् यारुम्
किळैञरि नुदव वाणै किळर्दिशै यळप्पक् केळो
डळविल वाऱ्ऱ लाण्मै यङ्गद नऱङ्गॊळ् शॅल्वत्
तिळवर शियऱ्ऱ वेवि यितिदिनि निरुन्दा निप्पाल् 431

वळम् अरचु अॅय्ति–सब तरह से समृद्ध राज्य पाकर; मऱ्ऱ–अन्य; वानर वीरर् यारुम्–सभी वानर वीरों के; किळैञरिन् उतव–रिश्तेदारों के समान साथ देते; आणै–आज्ञा के; किळर् तिचै–वर्तमान सभी दिशाओं में; अळप्प–मापते (मान्य रहते); अळवु इल आऱ्ऱल्–अपार शक्तिशाली; आण्मै अङ्कतन्–पौरुषयुक्त अंगद को; केळोटु–अपने बन्धु-बान्धवों के साथ; अऱम् कॊळ् चॅल्वत्तु–धर्मसम्मत रीति से प्राप्त वैभव के साथ; इळवरचु इयऱ्ऱ–युवराज का अधिकार चलाने की; एवि–आज्ञा देकर; इतितिन् इरुन्तान्–सुखपूर्वक रहा; इप्पाल्–इसके पश्चात् । ४३१

सुग्रीव सर्वसमृद्ध राज्य का राजा बना। अन्य वानरवीर उसका रिश्तेदारों के समान साथ दे रहे थे। उसकी आज्ञा वर्तमान सभी दिशाओं में मानी गयी। सुग्रीव ने अपार बल और पौरुष से युक्त अंगद को युवराज के पद पर रहकर अपने रिश्तों के साथ धर्मसम्मत रीति से प्राप्त धन-वैभव को भोगने की आज्ञा दी। इस स्थिति में सुग्रीव सुख के साथ राज्य करता रहा। ४३१

9. कार्कालप् पडलम् (वर्षाकाल पटल)

मावियल् वडदिशै निन्ऱुम् मानवन्
ओविय मेयॅन वॊळिक्क विन्गुलाम्
देवियै नाडिड मुन्दित् तॅन्ऱिशैक्
केविय तूवॅन विरवि येहिनान् 432

ओवियमे अॅन–चित्र के ही समान; ऒळि–प्रकाशमय; कविन् कुलाम्–सौन्दर्ययुक्त; तेवियै–देवी सीता को; नाटिट–ढूँढ़ने के लिए; मुन्ति–(किसी के जाने से) पूर्व ही; मानवन्–मनुकुल सम्भूत श्रीराम के द्वारा; तॅन् तिचैक्कु–दक्षिण दिशा में; एविय–प्रेषित; तूतु अॅन–दूत के समान; इरवि–सूर्य; मा इयल्–श्रेष्ठ मान्य; वट तिचै निन्ऱुम्–उत्तर दिशा से; एकितान्–(दक्षिण की तरफ़) गये। ४३२

दक्षिणायन आरम्भ हुआ। सूर्य ने अपना दक्षिण की ओर गमन आरम्भ किया। सूर्य श्रीराम के दूत के समान लगे, जिनको श्रीराम ने चित्र-सम सुन्दर देवी सीता को खोजने के लिए सबसे पहले भेजा हो। वे उत्तम उत्तर दिशा छोड़कर दक्षिण में गये। ४३२

पैविरि प:(ह्)ऱलैप् पान्द ळेन्दिय
मॊय्निलत् तहळियित् मुळङ्गु नीर्नॅयित्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆय्यवन् विळक्कमा मेरुप् पॊऱ्ऱिरि
मैयह लॊत्तदु मऴैत्त वानमे 433

मऴैत्त वानम्–मेघाच्छन्न आकाश; पै विरि–फन फैले हुए; पल् तलै–अनेक सिरों के; पान्तळ्–शेषनाग द्वारा; एन्तिय–वहित; मॊय् निलम्–सशक्त भूमि रूपी; तकळियिल्–दिये में; मुऴङ्कुम्–शब्दायमान; नीर् नॆयिन्–समुद्र रूपी घृत से; मेरु पॊन् तिरि–मेरु रूपी सुन्दर वर्तिका पर; वॆय्यवन् विळक्कम् आ–सूर्य की ज्वाला का; मै अकल्–काजल पारने के बर्तन; ऒत्ततु–के समान लगा। ४३३

आकाश मेघाच्छन्न था। वह काजल पारने के एक बहुत बड़े बर्तन के समान लगा। फैले हुए फनों वाले शेषनाग द्वारा वहित भूमि रूपी दिये में शब्दायमान समुद्रजल रूपी घृत डालकर मेरु की सुन्दर वर्तिका रखी गयी और सूरज की ज्वाला से जो धुआँ उठा वह आकाश पर जम गया। ४३३

नण्णुद लरुङ्गड ऩञ्ज नुङ्गिय
कण्णुदल् कण्डत्तिन् काळ मामॆन
विण्णह मिरुण्डदु वॆयिलिन् वॆङ्गदिर्
तण्णिय मॆलिन्दऩ तऴैत्त मेहमे 434

विण् अकम्–आकाश; नण्णुतल् अरु–अगम; कटल् नञ्चम्–(क्षीर-)सागरोत्पन्न विष के; नुङ्किय–खादक; कण्नुतल्–भालनेत्र शिवजी के; कण्टत्तिन्–कण्ठ में; काळम् आम् ऎन–(जो है) उस हलाहल के समान; इरुण्टतु–काला बना; वॆयिलिन्–सूर्य की; वॆम् कतिर्–गरम किरणें; तण्णिय–शीतल बनीं और; मॆलिन्तऩ–कृश (मन्द) पड़ गयीं; मेकम्–मेघ; तऴैत्त–पुष्ट हुए (घुमड़ आये)। ४३४

आकाश भालनेत्र शिवजी के कण्ठ के विष के समान काला बना, जो अतिभीषण था, क्षीरसागर से निकला था और जिसको उन्होंने निगल लिया था। सूर्य की गरम किरणें शीतल और कृश पड़ गयीं। वैसे मेघ घने रूप से इकट्ठे हुए। ४३४

नञ्जिऩि नऴिर्नॆडुङ् गडलि ऩङ्गैयर्
अञ्जऩ नयऩत्ति ऩविऴ्न्द कून्दलिन्
वञ्जऩै यरक्कर्दम् वडिविर् चॆय्हैयिन्
नॆञ्जिऩि ऩिरुण्डदु नील वानमे 435

नीलम् वानम्–नीला आकाश; नञ्चितिन्–विष के समान; नऴिर्–शीतल; नॆटु कटलिन्–विशाल सागर के समान, और; नङ्कैयर्–स्त्रियों के; अञ्चऩम् नयऩत्तिन्–कजरारे नेत्रों के समान; अविऴ्न्त कून्तलिन्–खुले केश के समान; वञ्चऩै अरक्कर् तम्–वंचक राक्षसों के; वटिविन्–शरीर के समान; चॆय्कैयिन्–उनके कृत्यों के समान; नॆञ्चिऩिन्–उनके मन के समान; इरुण्टतु–काला बना रहा। ४३५

नीला आकाश हलाहल के समान, शीतल व विशाल समुद्र के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समान, स्त्रियों के कजरारे नेत्र के समान, और उनके खुले केश के समान लगता था। और भी वह वंचक राक्षसों के शरीर के समान, उनके नृशंस कृत्यों के समान और उनके मन के समान काला बना हुआ था। ४३५

नाट्कळि नळिर्हड नार नावुऱ
वेट्कैयिऱ् परुहिय मेह मिन्नुव
वाट्कैहण् मयङ्गिय शॅरुविन् वार्मदप्
पूट्कैह णिऱत्तपुण् डिऱप्प पोन्ऱवे 436

नाळ् –(उसी या बहुत) दिन की; कळिन्–ताड़ी के समान; नळिर् कटल् नारम्–शीतल समुद्रजल को; ना–जीभ से; उऱ–अधिक; वेट्कैयिन्–चाव के साथ; परुकिय–(जिन्होंने) पिया था; मेकम्–वे मेघ; मिन्नुव–जो चमके; वाळ् कैकळ्–तलवारधारी हाथ; मयङ्किय–जिसमें टकराए; चॅरुविन्–लड़ाई में; वार् मत–बहनेवाले मदजल के; पूट्कैकळ्–हाथी; निऱत्त पुण्–छाती के व्रणों को; तिऱप्प–दिखाते हों; पोन्ऱ–जैसे दिखे। ४३६

मेघों ने (उसी दिन की या) बहुत दिनों की ताड़ी के समान शीतल समुद्रजल को बहुत ही चाव के साथ पी लिया था। उनमें रह-रहकर बिजलियाँ कौंध रही थीं। तब वे मेघ मदनीर बहाते हुए बड़े-बड़े हाथियों के समान लगे, जो युद्ध में तलवार लेकर लड़नेवाले वीरों के हाथ से चोटें खा चुके हों। बिजलियाँ उनके खुले व्रणों के समान लगीं। ४३६

नीऱिऱप् पॅरुङ्गरि निरैत्त नीर्त्तॅऩच्
चूऱिऱ मुहिऱ्कुलन् दुवन्ऱिच् चूळ्दर
मानिऱ नॅडुङ्गडल् वारि मूरिवान्
मेनिऱैन् दुळदॅऩ मुळक्क मिक्कदे 437

चूल्–जलगर्भ; निऱम्–काले रंग के; मुकिल्–मेघों के; कुलम्–समूह; नील् निऱम्–नीले रंग के; पॅरुम् करि–बड़े-बड़े हाथी; निरैत्त नीर्त्तु ऍऩ–पंक्तियों में खड़े किये गये हों, ऐसा; तुवन्ऱि–सटकर; चूळ् तर–घेर आये; माल् निऱम्–काले रंग के; नॅटु कटल्–विशाल सागर का; वारि–जल; मूरि वान् मेल्–विस्तृत आकाश में; निऱैन्तु उळतु ऍऩ–फैला रहा, ऐसा; मुळक्कम् मिक्कतु–अधिक शोर मचाते हुए रहे। ४३७

काली घटाओं के समूह पंक्तियों में स्थित हाथियों के समान आकाश में चारों ओर घेरे रहे। तब वज्र कड़क उठे। वह दृश्य ऐसा था, मानो विशाल समुद्र का जल आकाश में उठ फैलकर गर्जन कर रहा हो। ४३७

अरिप्पॅरुम् बॅयरवन् मुदलि ऩोरणि, विरिप्पवु मॊत्तऩ वॅऱ्पिन् मीदुती
ऍरिप्पवु मॊत्तऩ वेशि लाशैहळ्, शिरिप्पवु मॊत्तऩ तॅरिन्द मिन्नॅलाम् 438

तॅरिन्त मिन् ऍलाम्–प्रकटित सभी बिजली की रेखाएँ; अरि–हरि का; पॅरुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॅयरवन्–बड़ा नाम जिसका था; मुतलित्तोर्–उस इन्द्र आदि देवताओं के; अणि विरिप्पवुम् ऑत्तत–आभरणों की कान्ति फैलाती हों, जैसी भी रहीं; वॅऱ्पिन् मीतु–पर्वतों पर; ती ऍरिप्पवुम्–आग जलती हो; ऑत्तत–जैसी भी दिखीं; एच्च इल्–अनिन्द्य; आचैकळ्–दिशाएँ; चिरिप्पवुम्–हँसती हों; ऑत्तत–जैसी भी दिखीं। ४३८

बिजलियाँ, जो कौंध उठीं, हरि कहलानेवाले इन्द्र आदि देवों के आभरणों की चमक दिखती जैसी लगीं। वे ऐसा भी लगीं, मानो पर्वत पर आग जल रही हो। अनिंद्य दिशाएँ हँस रही हों, ऐसा भी लगीं। ४३८

मादिरक् करुमहन् मारिक् कार्मऴै
यादिनु मिरुण्डविण् णिरुन्दैक् कुप्पैयिन्
कूदिर्वॅङ् गाऩॅडुन् दुरुत्तिक् कोळमैत्
तूदुवॅङ् गऩलुमि ळुलैयु मॉत्तदे 439

यातितुम् इरुण्ट विण्–किसी भी वस्तु से (सबसे) अधिक जो काला रहा, वह आकाश; मातिरम् करुमकऩ्–दिशा रूपी लुहार; मारि कार् मऴै–वर्षाकालीन काले मेघों के; इरुन्तै कुप्पैयिल्–कोयलों के ढेर में; वॅम् कूतिर् काल्–वेगवान शारदीय पवन रूपी; नॅटुम् तुरुत्ति कोळ् अमैत्तु–बड़ी भाथी में जोर लगाकर; ऊतु–हवा चलाकर उभाड़ी गयी; वॅम् कऩल्–गरम आग के कणों को; उमिऴ्–निकालनेवाली; उलैयुम्–भट्ठी के भी; ऑत्ततु–समान था। ४३९

आकाश एक दम काले से काला हो गया। काला आकाश, मेघ, शारदीय पवन, बिजलियाँ —यह सब देखकर कवि कल्पना करते हैं कि दिशा लुहार बनी; वर्षाकालीन मेघ कोयलों का ढेर। अतिवेगवान उदीची पवन भाथी से निकलनेवाली हवा बनी और उस हवा द्वारा अग्नि प्रज्वलित हो उठी और ज्वालाएँ दिखीं। इस साज में आकाश लुहार की भट्ठी बन गया। ४३९

पिरिन्दुऱै महळिरुम् बिलत्त पान्दळुम्
ऍरिन्दुयिर् नडुङ्गिड विरवि यिन्गदिर्
अरिन्दऩ वामॅऩ वशनि नावॅऩ
विरिन्दऩ तिशैतॊऱु मिशैयिन् मिन्ऩॅलाम् 440

मिचैयिन्–आकाश में; तिचै तॊऱुम्–हर दिशा में; मिन् ऍलाम्–सभी बिजलियाँ; इरवियिन् कतिर्–रवि की किरणें; अरिन्तत आम् ऍऩ–जो काटकर रखी गयी हों, ऐसी; अचनि ना ऍऩ–अशनि की जिह्वाओं के समान; पिरिन्तु उऱै–बिछुड़कर रहनेवाली; मकळिरुम्–स्त्रियों को और; पिलत्त पान्तळुम्–बाँबियों में रहनेवाले साँपों को; ऍरिन्तु–झुलसकर; उयिर् नटुङ्किट–प्राणविकम्पित होने देते हुए; विरिन्तऩ–सर्वत्र फैली दिखायी दीं। ४४०

आकाश में सब ओर बिजलियाँ कौंध उठीं। वे रविकिरणों के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समान थीं, जिनको काटकर रखा गया हो। वे अशनि-जिह्वाओं के समान भी लगीं। पतिवियुक्त स्त्रियों और बिलों में रहनेवाले साँपों को भय-विकंपित करते हुए वे सब ओर कौंधती दिखायी दीं। ४४०

शूडिऩ मणिमुडित् तुहळिल् विऱ्ऱैयर्
कूडुऱै नीक्किय कुरुदि वाट्कळुम्
आडवर् पॅयर्दॊऱु माशै याऩैयिऩ्
ओडैह ळॊळिपिऱ्ऱ् वऩवु मॊत्तवे 441

चूटिऩ मणि मुटि–धृत-रत्न-किरीट; तुकळ् इल्–अनिन्द्य; विऱ्चैयर्–विद्याधर; कूटु उऱै–म्यानों से; नीक्किय–बाहर निकाली गयी; कुरुति वाट्कळुम्–रक्तरंजित तलवारों (के समान भी थीं); आटवर्–दिग्पालकों के; पॅयर् तॊऱुम्–स्थान-परिवर्तन के समय में; आचै याऩैयिऩ्–दिग्गजों के; ओटैकळ् ऒळि–मुखपट्ट अपनी कान्ति; पिऱ्ऱ्वऩवुम्–रह-रहकर प्रकट कर रहे हों, ऐसी भी लगीं। ४४१

वे बिजलियाँ रत्नमुकुटधारी विद्याधरों की म्यान से निकली हुई रक्तरंजित तलवारों के समान भी लगीं; और वे उन दिग्गजों के मुखपट्ट की कौंधों के समान भी दिखायी दीं, जो कि दिग्पालों के स्थान बदलकर जाते समय खुद जाते थे। (इन्द्र आदि आठ दिग्पाल हैं। उनके आठ गज हैं। इन्द्र का ऐरावत है; अग्नि का पुण्डरीक; यम का वामन; नैऋत का कुमुद; वरुण का अंजन; वायु का पुष्पदन्त; कुबेर का सार्वभौम और ईशान का सुप्रदीप है)। ४४१

ऍण्वहै नाहङ्ग डिशैह ळॆट्टैयुम्
नण्णिऩ नावळैत् तऩैय मिऩ्ऩहक्
कण्णुदऩ् मिडऱ्ऱैऩक् करुहिक् कार्विशुम्
बुण्णिऱै युयिर्प्पॆऩ वूदै यूदिऩ 442

ऍण् वकै नाकङ्कळ्–(आठों दिशाओं के) आठ प्रकार के नाग; तिचैकळ् ऍट्टैयुम्–आठों दिशाओं को; नण्णिऩ–पास जाकर; ना वळैत्तु अऩैय–जिह्वाएँ बढ़ाकर घेर लेते हों, ऐसा; मिऩ् नक–बिजली के चमकते; कार् विचुम्पु–काले मेघ; कण्णुतल् मिटऱु ऍऩ–भालनेत्र शिव के कण्ठ के समान; करुकि–झुलसकर काले बनकर; उळ् निऱै–अन्दर के; उयिर्प्पु ऍऩ–श्वास के समान; ऊतै–उदीची हवा को; ऊतिऩ–निकालते रहे। ४४२

बिजलियाँ आठ प्रकार के (वासुकी, अनन्त, तक्षक, शंखपाल, कुलिक, पद्म, महापद्म और कार्कोटक) सर्पों की जिह्वाओं के समान लगीं, जिनको वे सर्प निकालकर दिशाओं को चाटने के लिए अपने चपेट में ला रहे हों। काले मेघ भाल में अग्निमयनेत्र से भूषित शिव के कण्ठ के समान काले बने। मानो वे अपने अन्दर के श्वासों को निकाल रहे हों, ऐसी उदीची हवा बही। ४४२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तलैमयुङ् गीऴ्मैयुन् दविर्द लिन्ऱिये
मलयिनु मरत्तिनु मऱ्ऱु मुऱ्ऱिनुम्
विलैनिनैन् दुळवऴि विरुम्बुम् वेशैयर्
उलैवुऱु मुळमॅन्न वुलाय दूदैये 443

ऊतै–वह पवन; तलैमैयुम् कीऴ्मैयुम्–ऊँचे और नीचे स्थानों में; तविर्तल् इन्ऱिये–(भेद न करते हुए) किसी को न छोड़कर; मलैयिनुम्–पर्वतों पर; मरत्तिनुम्–तरुओं पर; मऱ्ऱुम् मुऱ्ऱिनुम्–अन्य सभी स्थानों पर; विलै निनैन्तु–सिर्फ़ दाम ही सोचकर; उळ वऴि–धन जहाँ हो वहीं; विरुम्पुम्–प्रेम दिखानेवाली; वेचैयर्–वेश्याओं के; उलैवु उऱुम्–चंचल; उळम् ॲन्न–मन के समान; उलायतु–संचार करता रहा। ४४३

वह हवा ऊँच-नीच का भेद नहीं करके पर्वतों, तरुओं और अन्य सभी स्थलों पर बही और केवल धन का ही बिचार करके (मनुष्य के गुणों का विचार किये विना ही) धन जहाँ से प्राप्त होता है, वहीं प्रेम दिखानेवाली वेश्याओं के चंचल मन के समान संचार करने लगी। ४४३

अऴुङ्गुऱु महळिर्द मन्बिऱ् ऱीर्न्दवर्
पुऴुङ्गुऱु पुणर्मुलै कॊदिप्पप् पुक्कुलाय्क्
कॊऴुङ्गुऱैत् तशैयिनै यरिन्दु कॊण्डदु
विऴुङ्गुऱु पेयॅन्न वाडै वीङ्गिऱ्ऱे 444

वाटै–उदीची (अतिशीतल) पवन; तम् अन्पिल् तीर्न्तवर्–अपने पति के प्रेम से बिछुड़कर; अऴुङ्कुऱु–दुःखित रहनेवाली; मकळिर्–स्त्रियों के; पुऴुङ्कुऱु पुणर् मुलै–तप्त स्तनद्वयों को; कॊतिप्प–और तप्त करते हुए; पुक्कु उलाय्–(उन पर) लगते हुए बहकर; कॊऴुम्–मांसल; कुऱै तचैयितै–(स्तनों के) मांसखण्डों को; अरिन्तु कॊण्टु–काट लेकर; अतु विऴुङ्कुऱु–उनको निगलने में लगे; पेय् ॲन्न–पिशाच के समान; वीङ्किऱ्ऱु–और अधिक चला। ४४४

वह उदीची शीतल हवा विरहिणी स्त्रियों के तप्त स्तनद्वयों को और भी ताप देती हुई उन पर लगी वर्द्धित होकर बही। तब वह पिशाच के समान लगी, जो उनके मांसल स्तनों को काटकर बोटी-बोटी खाना चाहता हो। ४४४

आर्त्तॅऴु तुहळ्विशुम् बडैत्त लानुमिन्
कूर्त्तॅऴु वाळॅन्नप् पिऱऴुङ् गॊट्पिनुम्
तार्प्पॅरुम् बणैयिन्विण् डऴङ्ग लानुमप्
पोर्प्पॅरुङ् गळमॅन्नप् पॊलिन्द दुम्बरे 445

आर्त्तु–नर्दन करते हुए; ॲऴु तुकळ्–उठनेवाली धूल; विचुम्पु–आकाश को; अटैत्तलानुम्–ढँक लेती, इसलिए और; मिन्–बिजलियाँ; कूर्त्तु ॲऴु–तीक्ष्णता लिये रहनेवाली; वाळ् ॲन्न–तलवार के समान; पिऱऴुम्–झमकते हुए;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कॊट्पितुम्—घूमती हैं, इसलिए; विण्—मेघ; तार्—हारालंकृत; पॆरुम् पणैयिन्—बड़े ढोलों के समान; तळङ्कलातुम्—शब्द करते हैं, इसलिए; उम्पर्—आकाश; अ पॆरु पोर् कळम् अॆत—रम्य समरभूमि के समान; पॊलिन्ततु—शोभा। ४४५

धूल ऊपर उठी और भीषण ध्वनि के साथ उठी। उसने आकाश को ढँक दिया। और बिजलियाँ तीक्ष्णता लिये घूमनेवाली तलवारों के समान कौंधीं। मेघ ढोलों के समान गरज उठे। इस साज के कारण आकाश सुन्दर और विशाल समरांगण-सा लगा। ४४५

इन्नहैच् चनहियैप् पिरिन्द वेन्दल्मेल्
मन्मदन् मलर्क्कणै वळङ्गि नानॆनप्
पॊन्नॆडुङ् गुन्रिन्मेऱ् पॊळिन्द तारैहळ्
मिन्नॊडुन् दुवन्रिन मेह राशिये 446

इन् नकै चनकियै—मधुर मन्दहास वाली जानकी से; पिरिन्त—विछुड़े रहनेवाले; एन्तल् मेल्—(राजा-) राम पर; मन्मतन्—मन्मथ ने; मलर् कणै—पुष्पशर; वळङ्किनान्—चलाये; अॆत—जैसे; मिन्नॊटुम्—बिजली के साथ; तुवन्रिन—मिले आये; मेक राचि—मेघों की राशियों ने; पॊन्—सुन्दर; नॆटुम् कुन्रिन् मेल्—बड़े पर्वत पर; तारैकळ्—धारें; पॊळिन्त—बरसायीं। ४४६

बिजलियोंसहित मेघराशियाँ पर्वतों पर जो धारें गिरा रही थीं, वह ऐसा था मानो मारदेव मधुर मन्दहासकारिणी सीताजी से वियुक्त राजाराम पर अपने पुष्प-शर छोड़ रहा हो। ४४६

कल्लिडैप् पडुन्दुळित् तिवलै कारिडुम्
विल्लिडैच् चरमॆत विशैयिन् वीळ्न्दन
शॆल्लिडैप् पिऱन्दशॆङ् गनल्हळ् शिन्दिन
अल्लिडै मणिशिदर्न् दळलि यऱ्ऱल्पोल् 447

कार् इटु—मेघ-मध्य; विल्लिटै चरम् अॆत—इन्द्रधनुष के शरों के समान; कल् इटै—चट्टानों के मध्य; पटुम्—गिरनेवाली; तुळि तिवलै—वर्षा की बूंदें; विचैयिन् वीळ्न्तत—बहुत वेग के साथ गिरीं; चॆल् इटै—अशनियों से; पिऱन्त—छूटे; चॆम् कनल्कळ्—लाल अंगारे; मणि—रत्न; अल्लिटै चितर्न्तु—अन्धकार में छितरकर; अळल् इयऱ्ऱल् पोल्—ज्वाला-सम प्रकाश फैलाते हों जैसे; चिन्तित—गिरे। ४४७

मेघों से गिरनेवाली बूंदें उनमें रहनेवाले इन्द्रधनुष से निकले शर के समान वेग के साथ गिरीं। मेघों से निकली अशनि के लाल अंगारे रात में रत्नों की ज्योतियों के समान यत्र-तत्र गिरे। ४४७

मळ्ळर्हण् मरुपडै मात यानैमेल्
वॆळ्ळिवे लॆऱिवत पोन्ऱ मेहङ्गळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तळ्ळरुन् दुळिपडत् तहर्न्दु शाय्हिरि
पुळ्ळिवॅङ् गडहरि पुरळ्व पोन्ऱवे 448

मरु पटै–योद्धा; मळ्ळर्कळ् मात–वीरों के समान; यानै मेल्–हाथियों पर; वॅळ्ळि वेल्–श्वेत शक्तियाँ (भाले); ऍऱिवत–फेंक रहे हों; पोन्ऱ मेकङ्कळ्–ऐसे मेघों की; तळ् अरुम्–दुर्निवार; तुळि–धारें; पट–लगीं, इससे; तकर्त्तु चाय्–ढहकर गिरती; किरि–गिरियाँ; पुळ्ळि–बिंदियों-सहित रहनेवाले (उत्तम लक्षण के); वॅम्–भयंकर; कट–मत्त; करि–हाथी; पुरळ्व पोन्ऱवे–लोटते जैसे लगे। ४४८

मेघ शत्रुसंहारक वीर थे। गिरियाँ हाथी थीं। मेघों ने श्वेत भालाओं के समान बूँदें गिरायीं। गिरियाँ उन दुर्निवार धारों के सामने टूटकर ऐसे लुढ़क पड़ीं, मानो लाल बिंदियों के अच्छे लक्षणों से भरे भयंकर और मस्त हाथी लोटते हों। ४४८

वानिडु तन्नॅडङ् गरुप्पु विन्मळै
मीनॅडुङ् गॉडियवन् पहळि वीळ्तुळि
तानॅडुञ् जार्तुणै पिरिन्द तन्मैयर्
ऊनुडै युडम्बॅला मुरुक्क लॉत्तवे 449

मळै–मेघ; मीन् नॅटु कॉटियवन्–मत्स्यांकित बड़ी पताका वाला बना; वान् इटु तन्–मेघमध्य प्रकट इन्द्रधनुष; नॅटु करुप्पु विल्–लम्बा इक्षु-धनुष; वीळ् तुळि–गिरती धारें; पकळि–(उसके) शर; नॅटुम् चार्–लम्बे पर्वत के पादप्रदेश; तुणै पिरिन्त–विरही; तन्मैयर–की हालत में; ऊन् उटै उटम्पु ऍलाम्–मांससहित शरीरों को; उरुक्कल् ऑत्त–गलाते हों जैसे। ४४९

मेघ मकरांकित ध्वजा वाला मार बना। इन्द्रधनुष उसका लम्बा इक्षु-धनुष बना; मेघों से गिरनेवाली बूँदें उसके शर बनीं। और लम्बे पर्वत-चरण-प्रदेश विरही जनों के समान विगलित शरीर और हड्डियों वाले हो रहे। ४४९

तीर्त्ततनुङ् गविहळुञ् जॅऱिन्दु नम्बहै
पेर्त्तत्त रिनियॅत्प् पेशि वानवर्
आर्त्तॅत्त वार्त्तत्त मेह मायमलर्
तूर्त्तत्त वॉत्तत्त तुळ्ळि वॅळ्ळमे 450

तीर्त्ततनुम्–पवित्र श्रीराम; कविकळुम्–और वानर; चॅऱिन्तु–एकत्र हुए, इसलिए; इनि–अब; नम् पकै–हमारे शत्रुओं को; पेर्त्तत्तर्–उन्होंने दूर कर दिया; ऍत पेचि–ऐसा कहकर; वानवर्–देवता लोग; आर्त्तु ऍत–आनन्दरव करते हों जैसे; मेकम्–मेघों ने; आर्त्तत्त–गर्जन किया; तुळ्ळि वॅळ्ळम्–बूंदों की राशियाँ; आय् मलर् तूर्त्तत्त–चुने हुए (उत्तम) पुष्प (जो) बरसाये गये; ऑत्तत्त–उनके समान लगीं। ४५०

मेघगर्जन देवों के आनन्दघोष के समान लगा, जो यह कह रहे हों कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीराम और वानरों का मेल हो गया और अब वे हमारे शत्रुओं (रावण आदि राक्षसों) को हटा देंगे। मेघ के गिरते जलकण देवों के आनन्द के साथ गिराये श्रेष्ठ चुने हुए पुष्पों के समान रहे। ४५०

वण्णविऱ् करदलत् तरक्कन् मण्णॊडुम्
विण्णिडैक् कडिदुहॊण् डेहुम् वेलैयिल्
पॆण्णिनुक् करुङ्गल मऩैय पॆय्वळै
कण्णॆऩप् पॊऴिन्ददु काल मारिये 451

वण्णम् विल्–सुन्दर धनु(-शोभित); करतलत्तु–हाथों वाले; अरक्कन्–राक्षस; मण्णोटुम्–धरती (के अंश) के साथ; कॊण्टु–लेकर; विण्णिटै–आकाश में; कटितु–सवेग; एकुम् वेलैयिल्–जब जाता रहा, तब; पॆण्णिनुक्कु–स्त्रियों के; अरु कलम् अऩैय–दुर्लभ आभरण के समान; पॆय्वळै–कंकणधारिणी सीता की; कण् ऍऩ–आँखों के समान; कालम् मारि–मौसमी बारिश; पॊऴिन्ततु–बरसी। ४५१

जब सुन्दर धनुर्धर रावण एक योजन धरती के अंश के साथ सीताजी को लेकर आकाश में जा रहा था, तब स्त्रियों का अलभ्य आभरण मानी जानेवाली [—दक्षिण की सधवाएँ मंगलसूत्र पहनती हैं, जिसमें श्रीलक्ष्मीदेवी की मूर्ति से अंकित तमग़े (पदक) के आकार का आभरण रहता है और ऐसा मंगलसूत्र आभरणों में श्रेष्ठ माना जाता है। वस्तुतः वही अन्य आभरण पहनने का अधिकार भी देता है।] और कंकणहस्ता सीतादेवी की आँखों ने अश्रु बरसाया। वर्षाकालीन मेघों ने उन्हीं नेत्रों की भाँति अधिक जल बरसाया। ४५१

परञ्जुडर्प् पण्णवऩ् पण्डु विण्डॊडर्
पुरञ्जुड विडुशरम् बुरैयु मिऩ्ऩिऩम्
अरञ्जुडप् पॊऱिनिमि रयिलि ऩाडवर्
उरञ्जुड वुळैन्दऩर् पिरिन्दु ळोरॆलाम् 452

परम् चुटर्–उत्तम ज्योतिर्मय; पण्णवऩ्–शिवदेव; पण्टु–प्राचीनकाल में; विण् तॊटर् पुरम्–आकाश में संचार करनेवाले त्रिपुरों को; चुट–जलाने के लिए; विटु चरम्–जो शर चलाते थे, उनकी; पुरैयुम्–समानता करनेवाली; मिऩ्ऩिऩम्–बिजलियों के समूह; अरम् चुट–रेती के रगड़ने से; पॊऱि निमिर्–अंगारे निकालनेवाले; अयिलिऩ्–भाले के समान; आटवर्–(विरही) पुरुषों के; उरम् चुट–दिल को जलाती थीं; पिरिन्तु उळोर् ऍलाम्–(उससे) विरही सभी; उळैन्ततऩर्–दुःखी हुए। ४५२

महान ज्योतिस्वरूप शिवजी के, आकाश-संचारी त्रिपुरों को जलाने हेतु छोड़े गये शरों-जैसी बिजलियों ने रेती से रगड़कर उज्ज्वल रहनेवाली बर्छियों के समान विरही पुरुषों के हृदयों को जलाया। वे सब उद्विग्न हुए। ४५२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊरुडरप् पोयिऩर्प् पिरिन्द पॊय्युडऱ्
कुरुडरु तेर्मिशै युयिर्हॊण् डुय्त्तलान्
मरुडरु पिरिवॆऩुम् माशु णङ्गॆडक्
करुडऩैप् पॊरुविऩ काल मारिये 453

पॊरुळ् तर–अर्थार्जन के लिए; पोयिऩर्–गये हुए नायकों से; पिरिन्त–वियुक्त; पॊय् उटऱ्कु–व निर्जीव शरीर वाली नायिकाओं के पास; उरुळ् तरु–लुढ़क चलनेवाले पहियों के; तेर् मिचै–रथों पर; उयिर् कॊण्टु–(उनके) प्राणों को लेकर; उय्त्तलान्–मिलाती है; कालम् मारि–(इसलिए) मौसमी बारिश; मरुळ् तरु–भ्रान्त करनेवाले; पिरिवु ऍऩुम्–वियोग रूपी; माचुणम् कॆट–साँप को नाश करते हुए (आगत); करुटऩै–गरुड़ की; पॊरुविऩ–समानता कर रही थी। ४५३

अर्थार्जन के लिए नायक प्रवास पर चले गये थे। उनके वियोग में स्त्रियाँ निर्जीव शरीरवत रहीं। अब उनके पास मानो उनकी जानें लेकर नायक घूमते आनेवाले चक्रों से युक्त रथों पर वापस आ गये। उनको लानेवाली वर्षा संज्ञाहीन करनेवाले विरह रूपी साँप का नाश करते हुए आगत गरुड़ के समान लगी। ४५३

मुऴङ्गिऩ मुऱैमुऱै मूरि मेहनीर्
वऴङ्गिऩ मिडैवऩ माऩ यानैहळ्
तऴङ्गिऩ पॊऴिमदत् तिवलै ताऴ्दरप्
पुऴुङ्गिऩ वॆदिरॆदिर् पॊरुव पोऩ्ऱवे 454

मूरि मेकम्–सबल मेघ; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; मुऴङ्किऩ–गरजे; नीर् वऴङ्किऩ–जल बरसाते हुए; मिटैवऩ–(जो) घुमड़ आये (वे); मातम् यानैकळ्–बड़े-बड़े हाथी; तऴङ्किऩ–चिंघाड़ते हुए; पॊऴि मतम् तिवलै–बहनेवाले मदनीर की धार के; ताऴ्तर–गिरते; पुऴुङ्किऩ–कोप करके; ऍतिर् ऍतिर्–आमने-सामने; पॊरुव पोऩ्ऱ–लड़ते-जैसे (दिखे)। ४५४

बड़े-बड़े मेघ रह-रहकर गरजे, जल बरसाते हुए घुमड़ आये। तब वे ऐसे बड़े गजों के समान लगे जो चिंघाड़ते और मदनीर बहाते हुए गुस्से के साथ आपस में टकरा रहे हों। ४५४

विशैहॊडु मारुद मऱित्तु वीशलाल्
अशैवुऱु शिऱुतुळि यप्पु मारियिऩ्
इशैवुऱऴ्ऩ् दॆडुप्पऩ विशैय वायिरुन्
दिशैयॊडु तिशैशॆरुच् चॆय्व पोऩ्ऱवे 455

विचै कॊटु–वेग के साथ; मारुतम्–हवा के; मऱित्तु वीचलाल्–रह-रहकर बहने से (मेघ); अप्पु मारियिऩ्–शर-वर्षा के समान; इचैवु उऱऴ्ऩ्तु–आपस में मनमुटाव के साथ; ऍटुप्पऩ–बढ़नेवाले; अचैवु उऱ–हिलनेवाले; चिऱु तुळि–छोटे-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

छोटे कणों के साथ; इचैय-युक्त हो; आय् इरुम्-सुन्दर बड़ी; तिचै ऑटु तिचै-दिशाएँ आपस में; चॅरु चॅय्व पोन्ऱ्-युद्ध करती जैसी (दिखीं)। ४५५

प्रबल प्रभञ्जन रह-रहकर अतिवेग के साथ बह रहा था। इसलिए शर-वर्षा के समान जल की बूँदें आपस में टकरा उठीं। तब ऐसा लगा, मानो सुन्दर व बड़ी दिशाएँ आपस में युद्ध कर रही हों। ४५५

विऴैयुऱु पॉरुडरप् पिरिन्द वेन्दर्वन्
दुऴैयुऱ वुयिरुऱ वुयिर्क्कु मादरिन्
मऴैयुऱ मणमुऱ मलर्न्दु तोन्ऱिन
कुऴैयुऱप् पॉलिन्दन वुलवैक् कॉम्बॅलाम् 456

विऴै उऱु-स्पृहणीय; पॉरुळ्-अर्थ; तर-अर्जन हेतु; पिरिन्त-वियुक्त हुए; वेन्तर्-नायकों के; वन्तु उऴै उऱ-लौट आकर मिलने पर; उयिर् उऱ-जान में जान आयी और; उयिर्क्कुम्-(सन्तोष की) साँसें जो छोड़ती हैं, उन; मातरिन्-(नायिकाओं) स्त्रियों के समान; उलवै कॉम्पु ऍलाम्-सूखे पेड़ों की सभी शाखाएँ; मऴै उऱ-बारिश के होने से; मणम् उऱ-सुगन्धि से भरकर; कुऴै उऱ-पत्तों से युक्त होकर; पॉलिन्तत-शोभायमान हुईं और; मलर्न्तु तोन्ऱिन-विकसित (मनोरम) रहीं। ४५६

इच्छित धनार्जन के लिए नायक अपनी प्रियतमाओं को छोड़कर गये थे। अब वे आकर मिल गये और विरहिणियों की जान में जान आ गयी। उनकी साँसें भी यथावत स्वस्थ लग गयीं। उनके समान सूखे पेड़ों की सभी शाखाएँ वर्षाकाल के आगमन से पल्लवों से भरकर प्रफुल्लमन दिखायी दीं। ४५६

पाडलम् वऱुमै कूरप् पहलवन् पशुमै कूरक्
कोडल्हळ् पॅरुमै कूरक् कुवलयञ् जिऱुमै कूर
आडिन मयिल्हळ् पेशा दडङ्गिन कुयिल्ह ळन्बर्क्
केडुऱत् तळर्न्दार् पोन्ऱुन् दिरुवुऱक् किळर्न्दार् पोन्ऱुम् 457

पाटलम्-पाटल वृक्ष; वऱुमै कूर-(पुष्पहीन हो) दीन हुए; पकलवन्-दिनकर; पचुमै कूर-शीतल बना; कोटल्कळ्-'कोडल' के पौधे; पॅरुमै कूर-(पुष्पित हो) शानदार लगे; कुवलयम्-कुवलय; चिऱुमै कूर-म्लान हुए; मयिल्कळ्-मोर; तिरु उऱ-श्रीसम्पन्न (धनी) होने पर; किळर्न्तार्-उत्साहित हुए; पोन्ऱु-जैसे; आटिन-नाच उठे; कुयिल्कळ्-कोयलें; अन्पर् केटुऱ-मित्रों की दुर्गति पर; तळर्न्तार्-जो शिथिल हुए हों; पोन्ऱु-उनके समान; पेचातु अटङ्कित-अवाक् रह गयीं। ४५७

पाटलवृक्ष हीनता को (पुष्पों से हीन होने के कारण) प्राप्त हो गये। सूर्य शीतलता को प्राप्त हो गये। 'कोडल' ('कांदळ्' भी कहते हैं। इनके पंचदलीय पुष्प अपने नालों के साथ स्त्री के हाथों के समान लगते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हैं।) पुष्प शानदार हो गये। कुवलय म्लान पड़ गये। मोर, सम्पत्ति के प्राप्त होने पर इतरानेवालों के समान नाच उठे। कोयलें, अपनों की दीन दशा देखकर शिथिल पड़नेवाले लोगों के समान मौन रह गयीं। ४५७

वाळॅयिऱ् ऱरवम् बोल वान्ऱलै तोन्ऱ वार्न्द
ताळुडैक् कोड ऱम्मै तऴीइयऩ काद ऱङ्ग
मीळल ववैयु मऩ्ऩ विऴैवऩ वुणर्वु वीन्द
कोळर वॅऩ्ऩप् पिऩ्ऩि यवऱ्ऱॊडुङ् गुऴैन्दु शाय्न्द 458

वाळ् ॲयिऱ् अरवम्–तलवार-जैसे दाँत वाले सर्प; वान् तलै पोल–अपने उठे हुए सिर के समान; तोन्ऱ वार्न्त–दिखते हुए जो बढ़े थे; ताळ् उटै–ऐसे तनों से युक्त; कोटल् तम्मै–'कोडल' पौधों से; कातल् तङ्क–प्रेम के साथ; तऴीइयऩ–लिपटकर; मीळल–अलग नहीं हुए; अवैयुम्–वे (पौधे) भी; अऩ्ऩ विऴैवऩ–वही चाह रखते हुए; उणर्वु वीन्त–काटने की स्वाभाविक भावना जिनसे दूर हो गयी थी, ऐसे; कोळ् अरवु ॲऩ्ऩ–बड़े सर्पों के समान; अवऱ्ऱॊटुम् पिऩ्ऩि–उनके साथ लिपटकर; कुऴैन्तु–झुके हुए; चाय्न्त–उन पर गिरे पड़े थे। ४५८

उठे हुए सिर वाले सर्पों के समान लम्बे नालों के 'कोडल' पुष्पों को तलवार-से दाँत वाले सर्पों ने सर्प ही समझ लिया। इसलिए वे बहुत ही प्रेम के साथ उनसे लिपटे, विना छोड़े, पड़े रहे। वे पुष्प भी, दंशनसंज्ञाशून्य सर्प-सम वैसे ही प्यार से उनके साथ लिपटकर झुके पड़े रहे। ४५८

नाऩिऱच् चुरुम्बुम् वण्डुम् नवमणि यणियिऱ् चारत्
तेऩुह मलर्न्दु शाय्न्द शेयिदऴ्क् कान्दट् चॅम्बू
वेऩिलै वॅन्ऱ दम्मा कारॅऩ वियन्दु नोक्कि
माऩिलक् किऴत्ति कैहण् मऱित्तऩ पोन्ऱ मऩ्ऩो 459

नाल् निऱम्–नाना रंग के; चुरुम्पुम् वण्टुम्–भ्रमर और भ्रमरियाँ; नवमणि अणियिऩ्–नवरत्नजटित आभरण के समान; चार–(उन फूलों पर) बैठे; तेऩु उक–शहद निकालते हुए; मलर्न्तु–फूलकर; चाय्न्त–झुके हुए; चेय् इतऴ्–लाल पंखुड़ियों के; कान्तऴ् चॅम्पू–रक्तकांतळ (या कोडल) के फूल; माल् निलम् किऴत्ति–महीयसी पृथ्वी-स्त्री के; नोक्कि–(ऋतु-उत्सव) देख; वेऩिलै–वसन्त को; वॅऩ्ऱु कार्–जीत लिया वर्षा ने; अम्मा–मैया री; मऱित्तऩ–(कहते हुए विस्मय-प्रकटन में) मोड़े हुए; कैकळ् पोन्ऱ–हाथों के समान थे। ४५९

'कोडल' पुष्पों पर भ्रमर और भ्रमरियाँ नवरत्नाभरण के समान बैठी थीं। शहद बरसाते हुए वे पुष्प झुके रहे। तब उन लाल पंखुड़ियों के रक्त 'कांदळ्' के पुष्प भूमिदेवी के हाथ के समान लगे, मानो भूमि ने विस्मय से यह कहते हुए अपने हाथों की तदनुकूल मुद्रा में मोड़ रखा हो कि वर्षा ने वसन्त को शोभा में हरा लिया है। ४५९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍळ्ळिड विडमॉन् रिन्रि यॆळुन्दन विलङ्गु कोबम्
तळ्ळुऱत् तलैवर् तम्मैप् पिरिन्दवर् तळुवत् तूय
कळ्ळुडै योदि यार्दङ् गलवियिऱ् पलहाऱ् कान्ऱ्
वॆळ्ळडैत् तम्बऱ् कुप्पै शिदर्न्दॆन विरिन्द मादो 460

ऍळ् इट–तिल डालने के लिए (भी); इटम् ऑन्ऱु इन्ऱि–स्थान न रहा, ऐसा; ऍळुन्तन–उठकर; इलङ्कु–प्रकट; कोपम्–इन्द्रगोप; तळ्ळुऱ–अलग होकर; तम्मै पिरिन्तवर्–अपने को छोड़कर जो गये थे; तलैवर्–वे नायक; तळुव–लौट आ मिले, तब; तूय कळ् उटै–शुद्ध शहद से युक्त; ओतियार्–केश वाली स्त्रियों की; तम् कलवियिल्–अपने समागम में; पल काल् कान्ऱ्–अनेक बार थूकी हुई; वॆळ् अटै–पान की; तम्पल् कुप्पै–पीक की अधिक छींटें; चितर्न्तु ऍन–बिखरी पड़ी हों, ऐसा; विरिन्त–फैले रहे। ४६०

सब जगह इन्द्रगोप के कीड़े प्रकट होकर ऐसा पड़े हुए थे कि तिल धरने को भी अन्तर नहीं मिलता था। वह दृश्य शहद-भरे केश वाली उन स्त्रियों की अनेक बार थूकी हुई व छितरी पड़ी पीकों के समान था, जिनके साथ उनसे थोड़े समय के लिए बाहर गये हुए उनके नायक आकर मिल रहे थे। ४६०

नन्नॆडुङ् गान्दट् पोदि नरैविरि कडुक्कै मॆन्बूत्
तुन्निय कोबत् तोडुन् दोन्ऱिय तोऱ्ऱन् दुम्बि
इन्निशै मुरल्व नोक्कि यिरुनिल महळ्कै येन्दिप्
पॊन्नॊडुङ् गाशै नीट्टिक् कॊडुप्पदे पोन्ऱ् दन्ऱे 461

नल्–सुन्दर; नॆटु–लम्बे; कान्तळ् पोतिल्–'कांदल' पुष्प पर; नऱै विरि–शहद-भरे; कटुक्कै मॆल् पू–अमलतास के कोमल फूल; तुन्तिय कोपत्तोटुम्–आकर मिले हुए इन्द्रगोपों के साथ; तोन्ऱिय–जो दिखते हैं; तोऱ्ऱम्–वह दृश्य; इन्इचै–मधुर गीत; मुरल्व–गुंजारनेवाले; तुम्पि नोक्कि–भ्रमरों को देखकर; इरुनिल मकळ्–महीयसी भूमिदेवी; कै एन्ति–हाथ उठाकर; नीट्टि–बढ़ाकर; पॊन्नॊटुम्–स्वर्ण के साथ; काचै–रत्नों को; कॊटुप्पते–दे रही हो, उसी के; पोन्ऱतु–समान था। ४६१

सुन्दर और लम्बे 'कांदल' पुष्पों पर शहद-भरे अमलतास के (पीले) फूल गिरे पड़े थे और इन्द्रगोप के (लाल) कीड़े भी रहे। वह दृश्य ऐसा था, मानो माननीय भूमिदेवी मधुर गीत गानेवाले भ्रमरों को उपहार देने के लिए अपने हाथों को बढ़ाकर स्वर्ण के साथ रत्न प्रदान कर रही हों। ४६१

तीङ्गनि नाव लोङ्गुऱ् जेणुयर् कुन्ऱिऱ् चॆम्बॊन्
वाङ्गिन कॊण्डु पारिन् मण्डुमाल् याऱु मान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेङ्गैनन् मलरुङ् गॊऩ्ऱै विरिन्दऩ वीयु मीर्त्तुत्
ताङ्गिऩ कलुऴि शॆऩ्ऱु तलैमयक् कुऱुव तम्मिल् 462

तीम्–मधुर; कऩि–फल (-धारी); नावल् ओङ्कुम्–जामुन के पेड़ जिस पर रहते हैं; चेण् उयर् कुऩ्ऱिऩ्–आकाश तक उन्नत मेरु पर्वत से; वाङ्किऩ–गृहीत; चॆम्पॊऩ् कॊण्टु–स्वर्ण बहाते हुए; पारिल्–धरती पर; मण्टु–पुष्कल रीति से बहनेवाली; माल् याऱु–बड़ी नदी (जम्बू नाम की ?); माऩ–के समान; वेङ्कै नल् मलरुम्–'वेंगै' पेड़ के पुष्पों और; कॊऩ्ऱै–अमलतास तरु पर; विरिन्तऩ वीयुम्–विकसित पुष्पों को; ईर्त्तु ताङ्किऩ–बहाते हुए ले आती हुई; कलुऴि–पंकिल बरसाती नदियाँ; चॆऩ्ऱु–बहकर; तम्मिल्–आपस में; तलै मयक्कु उऱुव–मिलकर मिश्रित हो जाती हैं। ४६२

मधुरफलयुक्त जामुन के पेड़ों से भरे मेरु के उन्नत पर्वत से जम्बू नदी स्वर्ण खींच लाते हुए नीचे की ओर बह रही है। इस पर्वत पर पंकिल नाले 'वेंगै' और 'कॊऩ्ऱै' (अमलतास ?) के फूलों को बहा लेते आ रहे थे और उस उत्तम जम्बू नदी की समानता करने का प्रयास कर रहे थे। ४६२

किळैत्तुणै मऴलै वण्डु किऩ्ऩर निहर्त्त मिऩ्ऩुम्
तुळिक्कुरऩ् मेहम् वऴ्वार्त् तूरियऩ् दुवैप्प पोऩ्ऱ
वळैक्कैयर् पोऩ्ऱ मञ्जै तोऩ्ऱिह ळरङ्गिऩ् माट्टु
विळक्किऩ मॊत्त काण्बोर् विऴियॊत्त विळैयिऩ् मॆऩ्बू 463

किळै–'किळै' नाम का राग; तुणै–सम; मऴलै वण्टु–मधुरस्वर भ्रमर; किऩ्ऩरम् निकर्त्त–किन्नर 'याऴ्'; निकर्त्त–के समान थे; मिऩ्ऩुम् तुळि–चमकती बूँदों से युक्त और; कुरल् मेकम्–गरजनेवाले मेघ; वऴ् वार् तूरियम्–स्थूल चमड़े के फ़ीतों से बँधे हुए ढोल; तुवैप्प पोऩ्ऱ–बजते जैसे हैं; मञ्जै–मोर; वळै कैयर् पोऩ्ऱ–कंकणधारिणी स्त्रियों के समान हैं; तोऩ्ऱिकऴ्–'कांदल'; अरङ्किऩ् माट्टु–रंगमंच पर; विळक्कु इऩम्–दीपावलियों; ऒत्त–के समान थे; विळैयिऩ् मॆल् पू–'विळै' के कोमल फूल; काण्पोर् विऴि ऒत्त–दर्शकों की आँखों के समान थे। ४६३

"कैक्किळै" राग-सी ध्वनि करनेवाले भ्रमर 'किन्नर याऴ्' (वीणा-सा वाद्य) की समानता करते थे। चमकनेवाले जलकणों से भरे गर्जनशील मेघों ने बजनेवाले चमड़े के फ़ीतों से बँधे ढोलों की समानता की। मोर कंकणधारिणी स्त्रियों के समान लगे। 'कांदल' पुष्प नाट्य मंच पर के दीपों के समान लगे। काले 'विळै' के फूलों ने दर्शकों की आँखों की समानता की। ४६३

पेडैयु ञिमिऱुम् बायप् पॆयर्वुऴिप् पिऱक्कु मोशै
ऊडुऱत् ताक्कुन् दोऱु मॊल्लॊलि पिऱप्प नल्लार्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आडियऱ् पाणिक् कॊक्कु मारिय वमिऴ्दप् पाडऱ्
कोडियर् ताळङ् गॊट्टऩ् मलर्न्दकू दाळ मॊत्त 464

जिमिऱुम्–भ्रमर और; पेटैयुम्–भ्रमरियाँ; पाय–टकराते हुए; पॆयर्वुऴि–जब उड़ती हैं; पिऱक्कुम् ओचै–तब निकलनेवाला शब्द; ऊटु उऱ–मध्य जाकर; ताक्कुम् तोऱुम्–गुंजार करती हैं, तब; पिऱप्प–निकलनेवाली; ऒल् ऒलि–'ऒल' की ध्वनि; नल्लार् आटु इयल्–देवांगनाओं के नृत्य से लयीभूत; पाणिक्कु ऒक्कुम्–करताल के समान रहती हैं; मलर्न्त् कूताळम्–विकसित 'कूदालि' के फूल; आरिय–कुशल; अमिऴ्तम्–नर्तकों के अमृत-सम; पाटल्–गीतों के अनुकूल; कोटियर्–नर्तक; ताळम् कॊट्टल् ऒत्त–ताल देते जैसे लगे। ४६४

जब भ्रमर और भ्रमरियाँ आपस में टकराते हुए उड़ती हैं, तब जो नाद उठता है, वह दोनों और परस्पर मिलते हुए जो शब्द करती हैं, वह देवांगनाओं के करताल के समान लगते हैं। 'कूदाली' के फूल उन श्रेष्ठ नर्तकियों के नृत्य के अनुकूल बजनेवाले झाल के समान दिखे। ४६४

वऴैदुऱु कान याऱु मानिलक् किऴत्ति मक्कट्
कुऴैदुऱु मलैमाक् कॊङ्गै शुरन्दपा लॊऴुक्कै यॊत्त
विऴैवुऱु वेट्कै नाळुम् वेण्डिऩर्क् कुदव वेण्डिक्
कुऴैदॊऱुङ् गऩहन् दूङ्गु कऱ्पह निहऱ्त्त कॊऩ्ऱै 465

वऴै तुऱु–पुन्नाग तरुओं के मध्य बहनेवाली; कानयाऱु–जंगली नदियाँ; मा निलम् किऴत्ति–सम्मान्य भूदेवी; मक्कट्कु–अपनी सन्तानों के लिए; उऴै तुऱु–पास में संकुलित रहनेवाले; मलै मा कॊङ्कै–पर्वत रूपी बड़े स्तनों से; चुरन्त–निस्रित; पाल् ऒऴुक्कै–दूध की धारा के; ऒत्त–समान थीं; कॊऩ्ऱै–अमलतास; विऴैवु उऱ–चाहनेवाली; वेट्कै–इच्छा के कारण; नाळुम्–प्रतिदिन; वेण्टिऩर्क्कु–याचना करनेवालों को; उतव वेण्टि–सहायता देना चाहकर; कुऴै तॊऱुम्–पत्ते-पत्ते पर; कऩकम् तूङ्कुम्–स्वर्ण लटकाये रहनेवाले; कऱ्पकम् निकऱ्त्त–कल्पतरुओं के समान थे। ४६५

पर्वत पर जंगली नदियाँ बह रही थीं। उनके कूलों पर घने पुन्नाग के पेड़ उगे थे। उन नदियों को देखने पर ऐसा लगा, मानो भूमिदेवी अपनी सन्तानों के लिए अपने गिरियों के स्तनों से दूध बहा रही हो और दूध की धाराएँ ही वे नदी हों। अमलतास के पेड़ उन कल्पतरुओं के समान लगे, जो अपने पत्तों के मध्य सतत याचकों को देने के लिए स्वर्ण लिये खड़े हों। ४६५

पूवियल् पुऱव मॆङ्गुम् पॊऱिवरि वण्डु पोऱ्प्पत्
तीविय कळिय वाहिच् चॆरुक्किऩ कामच् चॆव्वि
ऒविय माऩ्ग डोऱु मुरैत्तऱ वुरिञ्जि यॊण्गेऴ्
नावियिऩ् मणङ्ग णाऱक् कलैयॊडुम् बुलन्द नव्वि 466

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पू इयल् पुऱवम्–पुष्प-भरे वन; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; पॊऱि वरि–चित्तियों से भरे मधुरगायक; वण्टु पोऱ्ऱ्प–भ्रमर भीड़ लगाए हुए थे; तीविय कळिय आकि–मधुर आनन्ददायक बनकर; चॆरुक्कित–इतराते रहे; कामम् चॆव्वि–प्रेमाधिक्य के कारण; ओवियम्–चित्र-सम; मान्कळ् तोऱुम्–हर मृग पर; उरैत्तु–रगड़कर; अऱ उऱिञ्चि–खूब मलने से; ऑळ् केऴ्–परिपक्व; नाविय़िन् मणङ्कळ्–कस्तूरी की सुगन्ध; नार्–निकल रही थी, इसलिए; कलैयॊटुम्–उन मृगों से; नव्वि–मृगियाँ; पुलन्त–रूठ गयीं। ४६६

वहाँ के पुष्पतरुओं से पूर्ण वनों में, सर्वत्र चित्तियोंसहित शरीर वाले गुंजनशील भ्रमर आनन्द प्रदान करते हुए मँड़रा रहे थे। नरमृग प्रेम की भावना से प्रेरित होकर अन्य मृगों से रगड़-रगड़ाकर आये। उन पर परिपक्व कस्तूरी की गन्ध आ रही थी। उन मृगों से उनकी प्रिया मृगियाँ (यह समझकर) रूठ गयीं (कि ये कस्तूरीमृगियों से मिलकर आये हैं।)। ४६६

तेरि नऩ्ऩॆडुन् दिशैशॆलच् चॆरुक्कऴिन् दॊडुङ्गुम्
कूर यिऩ्ऩॆडुङ् गण्णॆऩक् कुविन्दऩ कुवळै
मार नऩ्ऩवर् वरवुहण् डुवक्किऩ्ऱ महळिर्
मूरऩ् मॆऩ्गुऱु मुऱुवलॊत् तरुम्बिऩ मुल्लै 467

तेरिऩ्ऩ्–रथी बनकर; नॆटु तिचै–बहुत दूर; चॆल–जाने से (अपने प्रिय के); चॆरुक्कु अऴिन्तु–दर्पहीन (आनन्दहीन) होकर; ऑटुङ्कुम्–कृश होनेवाली; कूर्–(नायिका के) तीक्ष्ण; अयिल्–भाले के समान; नॆटु कण् ऍऩ–लम्बी आँखों के समान; कुवळै–कुवलय; कुविन्तऩ–मुकुलित हुए; मारऩ् अऩ्ऩवर्–मन्मथ-सम; वरवु कण्टु–(नायकों का) आगमन देखकर; उवक्किऩ्ऱ–आनन्दित होनेवाली; मकळिर्–स्त्रियों के; मॆल्–कोमल; कुऱु मुऱुवल्–मन्दहास के; मूरल्–दाँतों; ऑत्तु–के समान; मुल्लै–कुंद; अरुम्पिऩ–पुष्पित हुए। ४६७

कुवलय, उन गर्वहीन और कृश हुई विरहिणियों की भाले-सी तीक्ष्ण और आयत आँखों के समान मुकुलित हो गये, जिनके पति रथारूढ़ हो बहुत दूर चले गये हैं। मन्मथ-सम अपने नायकों को आते देख हर्षित होनेवाली स्त्रियों के सहास दाँतों के समान कुन्दकलियाँ उग आयीं। ४६७

कळिक्कु मञ्ञैयैक् कण्णुळ रिऩमॆऩक् कण्णुऱ्
ऱळिक्कु मऩ्ऩरिऱ् पॊऩ्वऴङ् गिऩमलै यरुवि
वॆळिक्कण् वन्दकार् विरुन्दॆऩ विरुन्दुहण् डुळ्ळम्
कळिक्कु मङ्गैयर् मुहमॆऩप् पॊलिन्दऩ कमलम् 468

कळिक्कुम् मञ्ञैयै–हर्षित मोरों को; कण्णुळर् इऩम् ऍऩ–नटवर्ग समझकर; कण्णुऱ्ऱु–उनका नृत्य देखकर (उससे खुश होकर); अळिक्कुम्–पुरस्कार दान करनेवाले; मऩ्ऩरिऩ्–राजाओं की तरह; मलै अरुवि–पर्वत-सरिताएँ; पॊऩ् वऴङ्कित–स्वर्ण दे रही थीं; वॆळि कण् वन्त–आकाश में प्रकट; कार्–मेघों को;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विरुन्तु ऍत्त–अतिथि समझकर; निरुन्तु कण्टु–अतिथि (का आगमन) देखकर; उळ्ळम् कळिक्कुम्–मनमुदित; मङ्कैयर्–स्त्रियों के; मुकम् ऍन्न–मुखों के समान; कमलम्–कमल; पॊलितन्त–सुशोभित हुए ।-४६८

पर्वत-नदियों ने आनन्दनृत्य-लीन मयूरों को देखकर, बाँस गाड़कर खेल दिखानेवाले नटवृन्द को देखकर उपहार देनेवाले राजाओं के समान स्वर्ण को बहुतायत से छितरा दिये। आकाश में प्रकट मेघों को मेहमान समझकर कमल उन स्त्रियों के समान सुशोभित हुए, जो कि मेहमानों के आगमन से प्रफुल्लमन हो जाती हैं। ४६८

शरद नाण्मल रियावैयुङ् गुडैन्दन तडविच्
चुरद नूनॆऱि विडरॆनत् तेन्कॊण्डु तॊहुप्प
बरद नून्मुऱै नाडहम् बयनुऱप् पहुप्पान्
इरद मीट्टुरुङ् गविञरैप् पॊरुविन तेनी 469

चुरत नूल् नॆऱि–कामशास्त्रज्ञ; विटर् ऍन्न–विटपुरुषों के समान; नाळ् मलर् यावैयुम्–सद्यविकसित सभी फूलों को; चरतम् कुटैन्तत–मधु में घुसकर; तटवि–स्पर्श कर; तेन् कॊण्टु–रस लेकर; तॊकुप्प–संचय करनेवाले; तेनी–भ्रमर; परतम् नूल् मुऱै–भरत के (नाट्य) शास्त्र के क्रम से; नाटकम्–नाट्य; पयन् उऱ–उपादेय रीति से; पकुप्पान–बनाने के लिए; इरतम् ईट्टुरुम्–(नव-) रसों का सम्पादन करनेवाले; कविञरै–कवियों की; पॊरुविन–समानता करते थे। ४६९

मधुमक्खियों ने फूल-फूल पर बैठकर खूब पैठकर मधुर पुष्परस संचित किया। इसमें वे कोकशास्त्रज्ञ विटपुरुषों के समान थे। बाद उन्होंने उसे शहद में परिवर्तित कर दिया। इसमें वे भरत ऋषि के नाट्यशास्त्र में कहे अनुसार नाटक में रसों के सम्पादक कवियों के समान रहे। ४६९

नोक्कि नानमै नोक्कळि कण्डनुण् मरुङ्गुल्
ताक्क णङ्गरुञ् जीदैक्कुत् ताक्करुन् दुन्बम्
आक्कि नानम दुरुविनॆन् ऱरुम्बॆऱ लुवहै
वाक्कि नानुरै यामॆनक् कळित्तन मान्गळ् 470

नोक्कितान्–दर्शनीयता से; नमै–हमारी; नोक्कु–दृष्टि को; अळि कण्ट–हरानेवाली; नुण् मरुङ्कुल्–पतली कमर की; ताक्कु अणङ्कु–(चंचल-)लक्ष्मीदेवी के समान; अरुम् चीतैक्कु–अपूर्व सीताजी को; ताक्कु अऱु–असह्य; तुन्पम्–दुःख; नमतु उरुविन्–हमारा-सा रूप लेकर; आक्कितान्–(मारीच ने) दिलाया; ऍन्ऱु–यह सोचकर; पॆऱल् अरुम्–दुर्लभ; उवकै–आनन्द को; वाक्कितान् उरैयाम्–मुख से नहीं कहेंगे; ऍन्न–यह विचार कर; मान्कळ्–हरिण; कळित्तन–मौन रूप से हर्षित हुए। ४७०

हिरण इतराये। उन्हें इस बात का ठसक हो गया था कि मारीच ने अपनी दर्शनीयता से दर्शक की दृष्टि को हरनेवाली और पतली कमर से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शोभित लक्ष्मीदेवी से तुल्य सीताजी को असह्य दुःख देने की बात जब सोची, तब हमारा ही रूप धरकर कष्ट दिया। पर वे मौन ही रहे; क्योंकि उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि हम अपना मुख खोलकर अपना आनन्द प्रकट नहीं करेंगे। ४७०

नीडु नॅञ्जुऱु नेयत्ता नॅडिदुऱप् पिरिन्दु
वाडु हिन्ऱऩ मरुळ्ळुऱु कादलिन् मयङ्गिक्
कूडु नन्ऩदित् तडन्दॊऱुङ् गुडैन्दऩ पडिवुऱ्
ऱाडु हिन्ऱऩ कॊळुऩरैप् पॊरुविऩ वऩ्ऩम् 471

नॅटिदु उऱ–दीर्घ (बहुत) काल तक; पिरिन्दु–वियुक्त रहकर; नॅञ्चु उऱु–मन में रहनेवाले; नीटु नेयत्ताल्–गहन प्रेम से; वाटुकिऩ्ऱ–म्लान होकर; मरुळ् उऱु–मोहक; कातलिन् मयङ्कि–प्यार के साथ भ्रान्त हो; कूटुम्–जहाँ आ मिले हैं; नल् नति–उन उत्तम नदियों के; तटम् तॊऱुम्–तल-तल में; कुटैन्तऩ–गोते लगाते हुए; पटिवुऱ्ऱु–वहीं रहकर; आटुकिऩ्ऱऩ–(जो) क्रीड़ा करते हैं, वे; अऩ्ऩम्–हँस; कॊळुऩरै–पतियों की; पॊरुविऩ–समानता करते थे। ४७१

हंस बहुत काल तक दूर रहे। फिर मन के गम्भीर प्रेम के कारण व्याकुल और मोहक प्रेम के वश में होकर नदी-तटों पर आ जाते हैं और वे जल में गोते लगाकर क्रीड़ा करते हैं। वे विरही पतियों के समान हैं। अर्थश्लेष के द्वारा यह पद दोनों पर (हंसों और पतियों पर) लागू होता है। ४७१

कारॆ नुम्बॆयर्क् करियवऩ् मार्बिऩिऱ् कदिर्मुत्
तार मॆऩ्ऩवुम् बॊलिन्दऩ वळप्परु मळक्कर्
नीर्मु हन्दमा मेहत्ति नरुहुऱ निरैत्त
कूरुम् वॆण्णिऱत् तिरैयॆऩप् पऱप्पऩ कुऱण्डम् 472

अळप्प अरुम्–अगणित (अपार); अळक्कर्–समुद्र से; नीर् मुकन्त–जल सोखकर जानेवाले; मा मेकत्तिऩ्–काले मेघ के; अरुकु उऱ–पार्श्व में; निरैत्त–पंक्ति में; वॆळ् निऱम् कूरुम्–श्वेत रंग की; तिरैयऩ–लहरों के समान; पऱप्पऩ कुरण्टम्–उड़नेवाले बगुले; कार् ॲऩुम् पॆयर्–मेघश्याम नाम के; करियवऩ्–श्यामदेव महाविष्णु के; मार्पिऩिल्–वक्ष में रहनेवाले; कतिर् मुत्तु आरम् ॲऩ्ऩवुम्–शोभायमान मुक्ताहार के समान; पॊलिन्तऩ–शोभायमान थे। ४७२

अपार सागर से जल सोखकर काले मेघ आकाश में संचार करते हैं। उनके पास श्वेत तरंगों के समान पंक्तिबद्ध होकर बगुले उड़ते हैं। वे नीलमेघश्याम महाविष्णुवक्ष के मुक्ताहार के समान लगते हैं। ४७२

मरुवि नीङ्गल्शॆल् लाऩॆडु मालैय वाऩिऱ्
परुव मेहत्ति नरुहुऱक् कुरुहिऩम् बऱप्प

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरुवि नायह निवऩॆऩत् तेमऱै तॆरिक्कुम्
ऑरुवऩ् मार्बिऩि नुत्तरी यत्तैयु मॊत्त 473

मरुवि–इकट्ठा होकर; नीङ्कल् चॆल्ला–अन्तर न देकर; नॆटु मालैय–लम्बी पंक्ति बाँधकर; वाऩिऩ्–आकाश में; परुवम् मेकत्तिऩ्–मौसमी मेघों के; अरुकु उऱ–पास में लगे; पऱप्प–जो उड़ते हैं, वे; कुरुकु इऩम्–सारसों का वृन्द; तिरुविऩ् नायकऩ्–श्रीलक्ष्मी के नायक; इवऩ् ऎऩ–ये हैं, ऐसा; ते मऱै–दिव्य वेदों से; तॆरिक्कुम्–प्रतिपादित; ऑरुवऩ्–अप्रमेय (श्रीविष्णु) के; मार्पिऩिल्–वक्ष में; उत्तरीयत्तैयुम्–उत्तरीय की भी; ऑत्त–समानता करते थे। ४७३

सारस पक्षी भी पंक्तियों में उड़ते हैं। वे सटे हुए जाते हैं। वे आकाश में वर्षाकालीन काले मेघों के पास लगे हुए उड़ते हैं। वे वेदों द्वारा प्रतिपादित श्रियःपति महाविष्णु के वक्ष पर के उत्तरीय के समान भी लगते हैं। ४७३

तेऩ वामलर्त् तिशैमुहऩ् मुदलिऩर् तॆळिन्दोर्
ञाऩ नायह नवैयऱ नोक्किऩ नल्हक्
काऩम् यावैयुम् बरप्पिय कण्ऎऩच् चऩहऩ्
माऩै नाडिनिऩ् ऱळैप्पऩ पोऩ्ऱऩ मञ्ञै 474

तेऩ् अवाम्–मधु-भ्रमरों से इच्छित; मलर्–कमल पर के; तिचैमुकऩ्–चतुर्मुख; मुतलिऩर्–आदि; तॆळिन्तोर्–विशद ज्ञानियों के; ञाऩ नायकऩ्–ज्ञान के विषय, नायक श्रीराम का; नवै–दुःख; अऱल्–दूर होना; नोक्किऩ–चाहते हुए; नल्क–उनके पास सीताजी को ले आकर उपकार करने के विचार से; काऩम् यावैयुम्–जंगल भर में; परप्पिय कण् ऎऩ–फैलायी गयी आँखें हों, ऐसे; मञ्ञै–मोर; चनकऩ् माऩै–जनक की हरिणी को; नाटि निऩ्ऱु–खोजते हुए; अळैप्पऩ पोऩ्ऱऩ–बुलाते हों जैसे हैं। ४७४

श्रीराम भ्रमरावृत कमल पर आसीन ब्रह्मा आदि के ज्ञान का विषय हैं। उन्हें पत्नी के विरह से जनित अपार दुःख है। उसे दूर करने के लिए उनकी पत्नी को ढूँढ़कर ला देंगे। इस उपकार के लिए मयूर सर्वत्र अपनी आँखें (दृष्टि) भेजकर जनक की दुहिता हरिणी-सी सीता को ढूँढ़ रहे हों और बुला रहे हों, ऐसे लगे। ४७४

उऱवॆ दुप्पुरुङ् गॊडुन्दॊऴिल् वेऩिला नॊऴिय
तिऱनि ऩेप्पुरुङ् गारॆऩुञ् जॆव्वियोऩ् शेर
निऱम नत्तुरु कुऴिर्प्पिऩि नॆडुनिल मडन्वै
पुऱम यिर्त्तलम् बॊडित्तऩ पोऩ्ऱऩ पशुम्बुल् 475

पचुम् पुल्–हरी घासें; वॆतुप्पु उऱ–तप्त करते हुए; उरुम्–आनेवाले; कॊटुम् तॊऴिल्–क्रूरकर्म; वेऩिलाऩ्–ग्रीष्मराज के; तिऱम् ऒऴिय–बल को मिटाते हुए; निऩैप्पु उऱ–सबके मन में आनेवाले; कार् ऎऩुम् चॆव्वियोऩ्–वर्षाकाल रूपी श्रेष्ठ गुण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाले राजा के; चेर–आ जाने पर; नॆटु निऱम्–विशाल विस्तार की; निलम् मटन्तै–भूमिदेवी; मऩ्ऩतु उऱु–मन में हुई; कुळिर्प्पितिऩ्–शीतलता के कारण; पुऱम् मयिर् तलम्–शरीर के रोंगटे; पॊटित्तऩ–पुलकित हुए हों; पोऩ्ऱऩ–ऐसे लगीं। ४७५

घासें भूमिदेवी के पुलकित रोंगटों के समान लगीं। तप्त करनेवाले क्रूरकर्मी ग्रीष्मराज का आतंक दूर करते हुए सर्वप्रिय वर्षाकाल आ गया। इससे भूमि के विशाल शरीर भर में शीतलता (आनन्द) के कारण पुलक भर गये। ४७५

शॆञ्जॆ वेलवर् शऱिशिलैक् कुरिशिल रिरुण्ड
कुञ्जि शेयॊळि कदुवुऱप् पुदुनिऱङ् गॊडुक्कुम्
पञ्जि पोर्त्तमॆल् लडियॆऩप् पॊलिन्दऩ पदुमम्
वञ्जि पोलियर् मरुङ्गॆऩ नुडङ्गिऩ वल्लि 476

चॆम् चॆव्वेलवर्–(रक्त के कारण) लाल हुए तीक्ष्ण भालाओं के धारक; चॆऱि चिलै कुरिचिलर्–सबन्ध धनुर्धर वीर, इनके; इरुण्ट कुञ्चि–काले केश; चेय् ऒळि कतुवुऱ–लाल कान्ति से रंजित हो, ऐसा; पुतु निऱम् कॊटुक्कुम्–नई रौनक़ देनेवाला; पञ्चि पोर्त्त–लाक्षारसरंजित; वञ्चि पोलियर्–वल्लरी-सी स्त्रियों के; मॆल् अटि ऎऩ–कोमल चरणों के समान; पतुमम् पॊलिन्तऩ–कमल शोभे; मरुङ्कु ऎऩ–(उनकी) कमरों के समान; वल्लि नुटङ्किऩ–पुष्पलताएँ लचकीं। ४७६

कमल वल्लरी-तुल्य रमणियों के चरणों के समान कोमल रहे। लाक्षारसरंजित वे चरण, रक्तरंजित भालाधारी और सबन्ध धनुर्धर वीरों के काले केशों को (अपने आघातों से) नया रंग देनेवाले थे। उन स्त्रियों की कमर के समान लताएँ लचकीं। ४७६

नीयि रऩ्ऩवळ् कुदलैय रादलि ऩेडिप्
पोयत् तैयलैत् तरुदिरॆऩ् ऱिराहवऩ् पुहलत्
तेय मॆङ्गणुऩ् दिरिन्दऩ पोऩ्दिडैत् तेडिक्
कूय वाय्क्कुरल् कुऱैन्दबोऱ् कुऱैन्दऩ कुयिल्हळ् 477

नीयिर्–आप लोग; अऩ्ऩवर् कुतलैयर् आतलिऩ्–उनकी-सी मधुर (अस्पष्ट) तोतली बोली वाली हैं, इसलिए; नेटि पोय्–खोजते जाकर; अऩ्तैयलै–उन रमणी को; तरुतिर्–ला दीजिए; ऎऩ्ऱु–यह; इराकवऩ् पुकल–श्रीराम के कहने पर; कुयिल्कळ्–कोयलों ने; तेयम् ऎङ्कणुम्–देश भर में; तिरिन्तत पोऩ्तु–घूमते हुए जाकर; इटै तेटि–उन-उन स्थानों में खोजकर; कूय आय्–टेर लगाकर; कुरल्–गला; कुऱैन्त पोल्–बैठ गया हो, ऐसा; कुऱैन्तऩ–बोलना छोड़ दिया। ४७७

कोयलें अब मौन रहीं। क्यों? श्रीराघव ने उनसे कहा था कि सीताजी की बोली भी तुम्हारी जैसी है। उसे ढूँढ़कर लाओ। वे देश भर में टेर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लगाती हुई घूमीं। उन्होंने उसमें अपना गला फाड़ दिया, अब गले के बैठ जाने के कारण वे मौन हैं। यह कवि की उत्प्रेक्षा है। ४७७

पॉळिन्द मानिलम् बुऱ्ऱरक् कुमट्टिय पुनिऱ्ऱा
ऍळुन्द वाम्बिह ळिडऱिन्न शॅऱितयि रेय्त्त
मॉळिन्द तेनुडै मुहिळ्मुलै याय्च्चियर् मुळविऱ्
पिळिन्द पाल्वळि नुरैयिनैप् पॉरुविन्न पिडवम् 478

पॉळिन्त मा निलम्–वर्षा-प्राप्त भूमि ने; पुल् तर–घास उगायी, इसलिए; कुमट्टिय–उसे खाकर जो अघा गयीं; पुनिऱ् आ–हाल में ब्यायी हुई गायों ने; ऍळुन्त आम्पिकळ–उगे हुए कुकुरमुत्तों को; इटऱिन्त–ठोकर मारकर छितरा दिया; तयिर् चॅऱि–(वे) दहीखण्ड; एय्त्त–के समान लगे; पिटवम्–'पिडव' नामक पौधों के फूल; मॉळिन्त तेन् उटै–बोली के रूप में शहद बरसानेवाली; मुकिळ् मुलै–नवोदित स्तनों वाली; आय्च्चियर्–ग्वालबालाओं के; मुळविल् पिळिन्त–दुग्धपात्रों से निकले; पाल्–दूध से; वळि–छलकनेवाले; नुरैयिनै–झाग के; पॉरुवित–समान रहे। ४७८

भूमि को अधिक वर्षा प्राप्त हो गयी। उसने अधिक घास पैदा करायी। हाल में ब्यायी हुई गायों ने उस घास को खूब चरा और अघा गयीं। उन्होंने अपने पैरों से अपनी गति में कुकुरमुत्तों को तोड़कर छितरा दिया। वे कुकुरमुत्ते दहीखण्डों के समान दिखे। 'पिडव' नाम के फूल यत्र-तत्र दिखे। वे मधुमधुर बोली और नवोदित स्तनों वाली ग्वालबालाओं द्वारा दूध के पात्रों में ढाले गये दूध के झाग के समान लगे। ४७८

वेङ्गै नाऱिन्न कॉडिच्चियर् वडिक्कुळल् विरैवण्
डेङ्ग नाहमु नाऱिन्न नुळैच्चिय रैम्बाल्
आङ्गु नाण्मुल्लै नाऱिन्न वाय्च्चिय रोदि
आङ्ग रुऱ्पल मुळत्तियर् पित्तिहै नाऱ् 479

कॉटिच्चियर्–पर्वतीय स्त्रियों के; वटि कुळल्–कंघी करके बँधे केश; वेङ्कै विरै नाऱिन्न–'वेंगै' फूलों का गन्ध निकाल रहे थे; नुळैच्चियर्–(समुद्रतटीय प्रदेश की) धीवर स्त्रियों के; ऐम्पाल्–केश; वण्टु एङ्क–भ्रमर गुंजार करें, ऐसा; नाकमुम् नाऱिन्त–सुरपुन्नाग के (फूलों के कारण) सुबास से पूर्ण थे; आङ्कर्–पास; उळत्तियर्–(खेतों के प्रदेश की) कृषकबालाओं के; पित्तिकै–केश; उऱ्पलम् नाऱ्–उत्पल की गन्ध दे रहे थे; आङ्कु–वहाँ; आय्च्चियर्–ग्वालिनों के; ओति–केश; नाळ् मुल्लै नाऱिन्त–नवविकसित कुंदपुष्प का गन्ध दे रहे थे। ४७९

पार्वत्य देश वाली 'कॉडिच्ची' स्त्रियों के बँधे केश से 'वेंगै' फूलों का सुबास आ रहा था। समुद्रतटप्रदेश वाली धीवरबालाओं के केश से सुरपुन्नाग की गन्ध आ रही थी और उस पर भ्रमर मँड़रा रहे थे। पार्श्व में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कृषकस्त्रियों के केश से लाल उत्पल का सुबास आ रहा था। उन पर्वत-प्रदेशों में ग्वालिनों के केश कुन्दपुष्पगन्ध से भरे थे। ४७९

तेरैक् कॊण्डपे रल्हुला डिरुमुहङ् गाणान्
आरैक् कण्डुयि रार्रुवा नल्लुणर् वऴिन्दान्
मारऱ् कॆण्णिल्बल् लायिर मलर्क्कणै वहुत्त
कारैक् कण्डनन् वॆन्दुयर्क् कॊरुहरै काणान् 480

तेरै कॊण्ट–रथसदृश; पेर् अल्कुलाळ्–विशाल कटि वाली; तिरु मुकम् काणान्–(सीताजी का) श्रीमुख न देखकर; मारऱ्कु–मन्मथ के लिए; ऍण् इल्–अगण्य; पल् आयिरम्–अनेक सहस्र; मलर् कणै–पुष्पशर; वकुत्त–जिसने सृष्ट कर दिया, उस; कारै–वर्षाकाल को; कण्टनन्–देखकर; वॆम् तुयर्क्कु–कठोर दुःख (सागर) का; ऒरु करै–पार; काणान्–न देखकर; नल् उणर्वु–होश; अऴिन्तान्–खो गये; आरै कण्टु–किसको देखकर; उयिर् आऱ्ऱुवान्–प्राण धारण करेंगे। ४८०

रथ-सदृश विशाल कटिप्रदेश वाली सीताजी का मुख श्रीराम को देखने को नहीं मिला। लेकिन कामदेव के वास्ते असंख्य अनेक सहस्र पुष्प-शर उत्पन्न करनेवाले वर्षाकाल को देखा। वे अपने दुःख-सागर का अन्त नहीं देख पाये। अतः वे बेसुध हो गये। बेचारे श्रीराम किसको देखकर अपनी जान बचाते ? । ४८०

अळविल् कारॆन्नु मप्पॆरुम् बरुवम्वन् दणैन्दाल्
तळर्व रॆन्बदु तवम्बुरि वोरुक्कुन् दहुमाल्
किळवि तेनिनु ममिऴ्दिनुङ् गुऴैत्तवळ् किळैत्तोळ्
वळवि युण्डवन् वरुन्दुमॆन् ऱालदु वरुत्तो 481

अळवु इल्–अपार; कार् ऍन्नुम्–वर्षा की; अ पॆरुम् परुवम्–वह श्रेष्ठ ऋतु; वन्तु अणैन्ताल्–आ गयी तो; तळर्वर्–शिथिल पड़ जायँगे; ऍन्पतु–यह बात; तवम् पुरिवोरुक्कुम्–तपस्या करनेवालों के लिए भी; तकुम्–लागू होगी; आल्–इसलिए; वळ्किळै तोळ्–बड़े बाँस के समान कन्धों वाली (सीतादेवी) की; तेनिनुम्–शहद में; अमिऴ्तिनुम्–और अमृत में; कुऴैत्त–घुली; किळवि–(मधुर) बोली का; वळवि उण्टवन्–खूब स्वादन जिन्होंने किया था; वरुन्तुम् ऍन्ऱाल्–वे दुःखी रहे तो; अतु वरुत्तो–वह साधारण दुःख होगा क्या। ४८१

अतिगहन और अपार वर्षाकाल जब आता है, तब लोग शिथिलमन हो जाते हैं। यह कथन मुनियों के विषय में भी सत्य है। श्रीराम ने बाँस-सम कन्धों वाली सीताजी के मधु-सुधा-मिश्रित वचन जी भर सुने थे। अब वे दुःख से पीड़ित हैं, तो क्या वह दुःख साधारण दुःख होगा ? । ४८१

काबि युङ्गरुङ् गुवळैयु नॆय्दलुङ् गायाम्
बूवै युम्बॊरु वानवन् पुलम्बिनन् ऱळर्वान्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आवि युऱ्जिऱि दुण्डुहों लामॅऩ वयर्न्दान्
तूवि यऩ्ऩमऩ् ऩाडिऱ्त् तिवैयिवै शॊल्लुम् 482

काविय़ुम्–नीलोत्पल और; करुम् कुवळैयुम्–नीलकुवलय; नॅय्तलुम्–और 'नॅय्दल'; कायाम् पूवैयुम्–और अतसी पुष्पों की; पॊरुवान्–समानता करनेवाले; अवऩ्–वे श्रीराम; पुलम्पित्तऩ्–विलाप करते हुए; तळर्वान्–शिथिल हुए; आवियुम्–प्राण भी; चिऱ्रितु उण्टु कॊल् आम्–थोड़े हैं क्या; ऍऩ–ऐसा; अयर्न्तान्–बेसुध हुए; तूवि अऩ्ऩम् अऩ्ऩाळ्–मृदु पर वाली हंसिनी-सदृश; तिऱ्ततु–(सीताजी) के प्रति; इवै इवै चॊल्लुम्–ये बातें कहते। ४८२

नीलोत्पल, कुवलय, 'नॅय्दल' और अतसी पुष्पों के-से रंग वाले श्रीराम विलाप करते हुए बेसुध हो रहे। इस बात का भी संशय हो रहा कि प्राण हैं या नहीं। वे कोमलपंख हंसिनी-सी सीताजी के सम्बन्ध में निम्नोक्त बातें कहने लगे। ४८२

वारेय् मुलैया ळैमऱैक्कु नर्वाळ्
ऊरेयऱि येऩुयि रोडु ळल्वेऩ्
नीरे युडैया परुणिऩ् निलैयो
कारे यॅऩदा विहलक् कुवियो 483

कारे–काले मेघ; वार् एय् मुलैयाळै–अँगियाबद्ध स्तनों वाली सीता को; मऱैक्कुऩर्–छिपाये रखनेवालों की; वाळ् ऊरे–वास की बस्ती को भी; अऱियेऩ्–नहीं जानते हुए; उयिरोटु–प्राणसह; उळल्वेऩ्–घूमता फिरता हूँ; नीरे उटैयाय्–पानी (आन) रखते हो; अरुळ्–करुणा; निऩ् इलैयो–तुम्हारे पास नहीं है क्या; ऍऩतु आवि–मेरे प्राणों को; कलक्कुतियो–आकुलित करोगे क्या। ४८३

काले मेघ ! मैं अँगिया-बद्ध स्तनों वाली सीताजी को छिपाये रखने वालों का वासस्थान नहीं जानता। प्राण ढोकर घूम रहा हूँ। तुम जल (आन) से भरे हो ! पर तुममें दया (आर्द्रता) नहीं है क्या ? मेरे प्राणों को सताओगे क्या ? । ४८३

वॆप्पार् नॆडुमिऩ् निऩॆयिऱ् ऱैवॆहुण्
डॆप्पा लुम्विशुम् बिऩिरुण् डॆळुवाय्
अप्पा दहवञ् जवरक् करैये
ऑप्पा युयिर्हॊण् डुलदो वलैयो 484

वॆप्पु आर्–ज्वलन्त; नॆटु मिऩ्ऩिऩ्–लम्बी बिजलियों के; ऍयिऱ्ऱै–दाँतों वाले; इरुण्टु–काले होकर; वॆकुण्टु–कोप करके (गरजकर); विचुम्पिऩ्–आकाश में; ऍप्पालुम्–सभी ओर; ऍळुवाय्–प्रकट होते; अ पातकम्–उन पातक; वञ्चम्–कपटी; अरक्करैये ऑप्पाय्–राक्षसों की ही समता करते हो; उयिर् कॊण्टु अलतु–प्राण लिये विना; ओवलैयो–न हटोगे क्या। ४८४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कठोर और लम्बी बिजलियों रूपी दन्तोरे ! काले होकर, गुस्सा करते हुए (गरजते हुए) आकाश में सर्वत्र प्रकट हो ! तुम भी उन पातक और वंचक राक्षसों की समता करते हो ! मेरी जान लिये विना हटोगे नहीं क्या ? । ४८४

अयिलेय् विऴियार् विळैया रमिऴ्दिऩ्
कुयिलेय् मॊऴियार्क् कॊणराय् कॊडियाय्
तुयिले ऩॊरुवे ऩुयिर्शोर् वुणर्वाय्
मयिले यॆऩैनी वलिया डुदियो 485

मयिले–मोर; अयिल् एय् विऴियार्–भाला-जैसी आँखों वाली; विळै–(क्षीर-सागर-) उत्पन्न; आर्–मधुर; अमिऴ्तिऩ्–अमृत और; कुयिल् एय्–कोकिल की-सी; मॊऴियार्–बोली वाली सीता को; कॊणराय्–ढूँढ़कर नहीं लाओगे; कॊटियाय् नी–क्रूर हो तुम; तुयिलेऩ्–अनिद्र; ऒरुवेऩ्–(अकेला) विरही; उयिर् चोर्वु–मेरे प्राणों की शिथिल हालत; उणर्वाय्–जानते हो; ऎऩै–(ऐसे) मेरे प्रति; वलि–अपना (बल) सामर्थ्य; आटुतियो–दिखाओगे (सताओगे) क्या । ४८५

मयूर ! तुम भाले-सी आँख वाली और क्षीरसागरोत्पन्न अमृत-सम और कोयल की कूक की-सी बोली वाली सीताजी को ढूँढ़ नहीं लाओगे क्या ? तुम भी बहुत क्रूर हो ! मुझे नींद नहीं आती और मेरी शिथिलता जानते हो । तब भी तुम अपना बल दिखाओगे क्या ? । ४८५

मऴैवा डैयॊडा डिवलिन् दुयिर्मेल्
नुऴैवाय् मलर्वाय् नॊडियाय् कॊडिये
इऴैवा णुदला रिडैपो लिडैये
कुऴैवा यॆऩदा विहुऴैक् कुदियो 486

कॊटिये–लता; मऴै वाटैयॊटु–वर्षाकालीन (उदीची) हवा में; आटि–हिलकर; वलिऩ्तु–बलात्; उयिर् मेल्–मेरे प्राणों में; नुऴैवाय्–प्रवेश करोगी; मलर्वाय्–खिलोगी; इऴै–झूमर से अलंकृत; वाळ् नुतलार्–प्रकाशमय माथे वाली की; इटै पोल्–कमर के समान; इटैये–मध्य में; कुऴैवाय्–झुकते हुए; ऎऩ्तु आवि–मेरे प्राणों को; कुऴैक्कुतियो–निर्बल बनाओगी क्या; नॊटियाय्–कहो । ४८६

हे लताओ ! वर्षाकालीन हवा में हिलकर बलात् मेरे अन्दर घुस जाती हो ! पुष्पसहित (प्रफुल्ल) रहती हो । झूमर से अलंकृत भाल वाली सीताजी की कमर के समान लचकती हो ! मेरे प्राणों को भी लचकाओगी क्या ? बताओ । ४८६

विऴैयेऩ् विऴैवा ऩवैमॆय् मैयिऩिऩ्
ऱिऴैये ऩुणर्वे ऩवैयिऩ् मैयिऩाल्
पिऴैये ऩुयिरो डुपिरिऩ् दऩराल्
उऴैये यवरॆव् वुऴैया रुरैयाय् 487

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उळैये–हिरन; विळैवु–चाहनीय; आत्तवै–जो हैं; विळैयेन्–उनको नहीं चाहता; मॅय्मैयिन् निन्रु–सत्य से; इळैयेन्–नहीं हटूँगा; उणर्वेन्–(तथ्य) समझूँगा; अवै–वे ज्ञान; इन्मैयित्ताल्–नहीं रहे, इसलिए; पिळैयेन्–अपराधी हो गया; उयिरोटु पिरिन्तनर्–(सीता) प्राणों के साथ बिछुड़ गयीं; अवर्–वे; ऍ उळैयार्–किस स्थान में हैं; उरैयाय्–कहो। ४८७

हे हरिण ! प्यारी वस्तुओं की चाह नहीं रखता। सत्य-मार्ग से नहीं हटता। समझदार हूँ। पर ये सब गुण छूट गये; तभी तो मैंने अपराध किया और तभी तो जीते-जी मुझे वे छोड़कर चली गयीं। वे कहाँ हैं ? बताओ, भला। ४८७

पयिल्बा डहमॅल् लडिपञ् जन्नैयार्
शॅयिरे दुमिला रॉडुतो रुदियो
अयिरा दुडन्ने यहल्वा यलैयो
उयिरे कॅडुवा युऱवोर् हिलैयो 488

उयिरे–मेरे प्राण; पयिल्–शोभाकारी; पाटकम्–'पाडगम' नाम के (चरण के) आभरणों से भूषित; मॅल् अटि–कोमल चरण; पञ्चु अन्नैयार्–रुई के समान (जिनके) हैं; चॅयिर्–दोष; एतुम्–कुछ; इलारॉटु–(जिनका) नहीं है, उनके साथ; तीरुतियो–(मुझे छोड़कर) जाओगे क्या; अयिरातु–विना विलम्ब किये; उटन्ने–उनके साथ ही, तभी; अकल्वाय् अलैयो–हट गये होगे न; कॅटुवाय्–नाशवान; उऱवु–(मेरा-सीता का) सम्बन्ध; ओर्किलैयो–(तभी) न समझे क्या। ४८८

मेरे प्राण ! सुन्दर पादकटक-भूषित व रुई-से चरणों वाली, अनिंद्य सीताजी के साथ तुम भी मुझे छोड़ जाओगे क्या ? अगर जाने का विचार रखते तो अविलम्ब चले जाते ! हे नाशवान ! उनका मेरा नाता नहीं जानते ? । ४८८

ऑन्ऱैप् पहराय् कुळलुक् कुडैवाय्
वन्ऱैप् पुऱुनोळ् वयिरत् तिन्नैये
कॉन्ऱैक् कॉडियाय् कॉणर्हिन् ऱिलैये
ऍन्ऱैक् कुऱवा हविरुन् दन्नैये 489

कॉन्ऱै कॉटियाय्–अमलतास के क्रूर (तरु); कुळलुक्कु–सीताजी के केश के सामने; उटैवाय्–हार गया; वल्–दृढ़; तैप्पु उऱु–गड़े हुए; नोळ् वयिरत्तितै–गम्भीर वैर रखनेवाला है; ऑन्ऱै–एक भी; पकराय्–नहीं बोलता; कॉणर्किन्ऱिलै–(सीता को) नहीं लाता; ऍन्ऱैक्कु उऱवाक इरुन्ततै–किस दिन (कब) तू बन्धु (मित्र) रहा। ४८९

अमलतास, क्रूर ! तुम्हारे फल सीताजी के केशों के सामने हारे ! इसलिए मेरे साथ गम्भीर वैर पालते हो ! यह उत्तर दो ! उनको तुम मेरे पास ले नहीं आते। तुम कब मेरे मित्र रहे ? । ४८९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुरावरुम् बऩैय कूर्वा ळॆयिऱ्ऱुवॆङ् गुरुळै नाहम्
विरावुवॆङ् गडुविऱ् कॊल्लु मॆल्लिणर् मुल्लै वॆय्दिऩ्
उरावरुन् दुयर मूट्टि योय्वऱ मलैव दॊन्ऱो
इरावण कोब निऱ्क विन्दिर कोब मॆऩ्ऩो 490

कुरा अरुम्पु–"कुरा" तरु की कलियों के; अऩैय–समान; कूर् वाळ् ॲयिऱ्–तीक्ष्ण और उज्ज्वल दाँतों के; वॆम् नाकम्–भयंकर सर्प के; कुरुळै–बच्चे में; विराव्–(स्वाभाविक रूप से) रहनेवाले; वॆम् कटुविऩ्–भीषण विष के समान; कॊल्लुम्–मुझे मारनेवाली; मुल्लै–कुन्दलता की; मॆल् इणर्–कोमल कलियाँ; वॆय्तिऩ् उरावु–ताप देते हुए आनेवाले; अरुन्तुयरम्–असह्य दुःख को; मूट्टि–बढ़ाकर; ओय्वु अऱ–निरन्तर; मलैवतु–संघर्ष करती हैं; ऒऩ्ऱो–क्या वही एक है; इरावणऩ् कोपम् निऱ्क–रावण का कोप तो एक तरफ़ रहता है; इन्तिर कोपम् ऎऩ्ऩो–इन्द्र का कोप भी क्यों। ४९०

कुन्दलताओं की कोमल कलियाँ 'कुरबक' पुष्प-सदृश दाँतों वाले भयंकर बालसर्पों के विष के समान मुझे सन्तापक और असह्य दुःख देते हुए मेरे साथ अथक रीति से लड़ रही हैं ! क्या यही एक है ? रावण का कोप एक ओर रहता है तब ये असंख्यक इन्द्रगोप क्यों आ निकले हैं ? [इस पद के पिछले अंश का भाव-चमत्कार तमिऴ में गोप, कोप दोनों को एक ही समान लिखने पर आधारित है। पहले ही रावण का कोप (दुष्कृत्य) सता रहा है; अब ये इन्द्रगोप क्यों आकर सताने लगे ? कुन्दकली से सीताजी की दन्तावली की याद आ जाती है और इन्द्रगोप से उनके अधरों की स्मृति। दोनों उनको पीड़ा दे रही हैं]। ४९०

ओडैवा णुदलि ऩाळै यॊळिक्कला मुबाय मुऩ्ऩि
नाडिमा रीच ऩारो राडह नव्वि यान्ऩार्
वाडैयाय्क् कूऱ्ऱि ऩारु मुरुविऩै माऱ्ऱि वन्दार्
केडुशूळ् वार्क्कु वेण्डु मुरुक्कॊळक् किडैत्त वन्ऱे 491

मारीचऩार्–मारीच; ओटै वाळ्–ललाट-पट्ट से अलंकृत और उज्ज्वल; नुतलिऩाळै–भाल वाली सीता को; ऒळिक्कलाम् उपायम्–छिपाने का उपाय; उऩ्ऩि–सोचकर; नाटि–ढूँढ़कर; ओर्–अनुपम; आटकम् नव्वि–स्वर्णमृग; आऩार्–बने; कूऱ्ऱिऩारुम्–(महाशय) यम भी; वाटैयाय्–उदीची (जाड़े की) हवा के रूप में; उरुविऩै–अपना रूप; माऱ्ऱि–बदलकर; वऩ्तार्–आये; केटु चूळ्वार्क्कु–हानि करनेवालों को; वेण्टुम् उरु–मनचाहे रूप; कॊळ–लेना; किटैत्त अऩ्ऱे–सम्भव हो गया न। ४९१

मारीच महाशय ने (मुझे क्लेश देना चाहा और) ताज से अलंकृत उज्ज्वल भाल वाली सीता को (हर लेकर) छिपाने का मार्ग सोचा और कोई उपाय निर्णय किया और तदनुसार अनुपम स्वर्ण-मृग के रूप में अपना रूप बदल लिया ! वैसे ही यम महाराज भी उदीची (जाड़े का) पवन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

में रूप बदलकर आ पधारे ! हानि करना चाहनेवालों को मन-चाहा रूप लेने का मौका मिल गया न ! । ४९१

अरुविनै यरक्क रॅन्न वन्दर मदनिल् यावुम्
वॅरुवर मुळङ्गु हिन्ऱ मेहमे मिन्नु हिन्ऱाय्
तरुवलॅन् ऱिरङ्गि नायो तामरै तुऱन्द तैयल्
उरुविनैक् काट्टिक् काट्टि यॊळिक्किन्ऱा यॊळिक्किन् ऱायाल् 492

अरुविनै–दुष्कृत्य; अरक्कर् अॅन्न–राक्षसों के समान; अन्तरम् अतनिल्–आकाश में; यावुम् वॅरुवर–सबको भयभीत होने देते हुए; मुळङ्कुकिन्ऱ–गरजनेवाले; मेकमे–मेघ; मिन्नुकिन्ऱाय्–चमक दिखाते हो; तरुवल् अॅन्ऱ–उन्हें दिला दूंगा, ऐसा; इरङ्कितायो–दया दिखायी क्या; तामरै तुऱन्त–जिसने कमल त्यागा; तैयल्–उस दयिता के; उरुविनै काट्टि काट्टि–रूप को (बिजली के रूप में) दिखाते-दिखाते; ऒळिक्किन्ऱाय्–छिपाते; ऒळिक्किन्ऱाय्–छिपाते; (आल्–पूरक ध्वनि) । ४९२

हे मेघ ! जो दुष्कृत्य राक्षसों के समान आकाश में रहकर सबको डराते हुए गरज रहे हो ! तुम (सीतादेवी के समान) चमक दिखा रहे हो। पर तुमने उनको मेरे पास सौंपने की दया तो नहीं की न ? कमल त्यागकर जो आयी हैं उन देवी का रूप दिखाते, छिपाते; दिखाते और छिपाते हो ! । ४९२

उण्णिऱैन् दुयिर्क्कुम् वॅम्मै युयिर्शुड वुलैयु मुळ्ळम्
पुण्णुऱ वाळि तूर्त्तल् पळुदिनिप् पोदि मार
अॅण्णुऱु कल्वि युळ्ळत् तिळैयव निन्ने युन्नैक्
कण्णुऱु मायिऱ् पिन्नै यारवन् शीऱ्ऱङ् गाप्पार् 493

मार–मारदेव; उळ् निऱैन्तु–सारे शरीर में भरकर; उयिर्क्कुम्–निकलनेवाली; वॅम्मै–गरमी (तपन); उयिर् चुट–मेरे प्राणों को जलाती है; इति–आगे; उलैयुम् उळ्ळम्–दुखनेवाला मन; पुण् उऱ–व्रण-लगा हो, ऐसा; वाळि तूर्त्तल्–शर छिड़काना; पळुतु–व्यर्थ काम है; पोति–हट जाओ; अॅण् उऱु–मान्य; कल्वि उळ्ळत्तु–विद्या-पूर्ण मन वाले; इळैयवन्–मेरा छोटा भाई; इन्ने–अभी; उन्नै–तुमको; कण् उऱुम् आयिन्–देख लेगा तो; पिन्नै–बाद; अवन् चीऱ्ऱम्–उसके क्रोध को; काप्पार्–बचानेवाला (रोकनेवाला); यार्–कौन है । ४९३

मन्मथ ! विरहताप अन्दर सब जगह भरकर बाहर भी प्रकट हो गया और वह मेरे प्राणों को जला रहा है। उससे मेरा मन अत्यधिक जर्जर है। तिस पर चोट करते हुए शर छिड़काना व्यर्थ है। सम्मान्य विद्वान् मेरा छोटा भाई अभी तुम्हें देखेगा तो फिर उसके कोप को रोकनेवाला कौन होगा ? । ४९३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विल्लुम्वॆङ् गणैयुम् वीरा वॆञ्जमत् तञ्जि नार्मेल्
पुल्लुन वल्ल वार्ऱल् पोऱ्ऱलर्क् कुरित्तु पोलाम्
अल्लुनन् पहलु नीङ्गा यनङ्गनी यरुळिऱ् ऱीर्न्दाय्
शॆल्लुमॆन् ऱॆळिवन् दोर्मेऱ् शॆलुत्तलुञ् जीर्मैत् तामो 494

वीरा–वीर; वॆम् चमत्तु–भयंकर युद्ध में; अञ्चित्तार् मेल्–भयातुर मनुष्यों पर; विल्लुम्–धन और; वॆम् कणैयुम्–भयंकर शर (प्रयोग); पुल्लुन अल्ल–युक्त नहीं है; आऱ्ऱल्–शुद्ध वीरता का; पोऱ्ऱलर्क्कु–मान न करनेवालों के लिए; उरित्तु पोलाम्–उचित है शायद; अनङ्क–मन्मथ; नी–तुम; अरुळिन् तीर्न्ताय्–करुणा-त्यक्त हो; अल्लुम्–रात; नल् पकलुम्–और श्रेष्ठ दिन भी; नीङ्काय्–हट जाते नहीं; चॆल्लुम् अॆन्ऱु–चलेगा, यह समझकर; अॆळि वन्तोर् मेल्–निर्बलों पर; चॆलुत्तुतलुम्–(बल का) प्रयोग करना भी; चीर्मैत्तु आमो–अच्छा होगा क्या। ४९४

वीर ! घोर समर में भयभीत लोगों पर धनु-शर का प्रयोग उचित नहीं है। शायद यह वीरता को न माननेवालों के विषय में युक्त है ? अनंग ! तुम दया से तो छूट गये; पर दिन और रात मुझे छोड़ नहीं जाते ! वहीं बलप्रयोग कारगर होगा, यह समझकर निर्बलों पर प्रयोग करना श्लाघ्य काम होगा क्या ? । ४९४

अॆन्नवित् तहैय पन्नि यीडऴिन् दिरङ्गु हिन्ऱ
तन्नैयॊप् पान्नै नोक्कित् तहैयाऴिन् दयर्न्द तम्बि
निन्नैयॆत् तहैयै याह् निनैन्दनै नॆडियो येन्नाच्
चॆन्नियिऱ् चुमन्द कैयन् ऱेऱ्ऱुवान् शॆप्प लुऱ्ऱान् 495

अॆन्न–ऐसा; इत्तकैय–ऐसी बातें; पन्नि–कहकर; ईटु अऴिन्तु–शक्ति खोकर; इरङ्कुकिन्ऱ–रोनेवाले; तन्नै ऒप्पान्नै–स्वोपम (श्रीराम) को; नोक्कि–देखकर; तकै अऴिन्तु–दृढ़ता खोकर; अयर्न्त–थके हुए; तम्पि–लघुभ्राता; चॆन्नियिल् चुमन्त कैयन्–सिर-धृत-हस्त हो; तेऱ्ऱुवान्–ढाड़स देने हेतु; नॆटियोय्–महिमावान; निन्नै–अपने को; अॆन्तकैयै आक–कैसे मनुष्य; निनैन्तनै–समझ गये; अॆन्ना–कहकर; चॆप्पल् उऱ्ऱान्–बोलने लगे। ४९५

ऐसा, ऐसी विभिन्न बातें कहते हुए शक्ति खोकर श्रीराम दुःखी हो रहे थे। तब स्वोपम श्रीराम को देखकर उनके छोटे भाई लक्ष्मण ने, जो सब्र खोकर थक गये थे, सिर पर हाथ धरकर, कहा कि हे महिमामय ! आपने अपने को क्या और कैसा समझा है ? फिर वे उनको आगे ढाड़स दिलाने हेतु निम्न प्रकार बोले। ४९५

कालनीऴितु कारुमारियुम् वन्ददॆन्ऱ कवर्च्चियो
नीलमेनि यरक्कर्वीरम् निनैन्दऴुङ्गिय नीर्मैयो
वालिशेनै मडन्दैवैहिड नाडवारलि लामैयो
शालनूलुणर् केळ्विवीर तळर्न्ददॆन्नै तवत्तिनोय् 496

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चाल–खूब; नूल् उणर्–शास्त्रज्ञान; केळ्वि–श्रवणज्ञान के; वीर–वीर; तवत्तिनोय्–तपस्वी; कार् कालमुम् नीळितु–वर्षाकाल लम्बा है; मारियुम् वन्ततु–बारिश भी आ गयी; ऎन्ऱ्–यह; कवर्चियो–दुःख है क्या; नीलम् मेनि–काले शरीरों के; अरक्कर् वीरम् निनैन्तु–राक्षसों के पराक्रम को सोचकर; अळुङ्किय–क्षीण हुए; नीर्मैयो–मन वाले हो गये क्या; मटन्तै–देवी; वैकुम्–जहाँ रहती हैं; इटम्–वह स्थान; नाट–ढूँढ़ने के लिए; वालि चेनै–वाली की सेना का; वारल्–आगमन; इलामैयो–नहीं हुआ इसलिए क्या; तळर्न्ततु ऎन्नै–विगलित होना क्यों । ४९६

शास्त्र के पठन और श्रवण से प्राप्त पुष्कल ज्ञान के धनी ! वीर ! तपस्वी ! वर्षाकाल दीर्घ है; बारिश भी खूब आयी ! यह सोचकर आप चिन्ताग्रस्त हैं क्या ? या काले शरीरों के राक्षसों का प्रताप सोचकर मन टूट गया है ? या देवी का स्थान ढूँढ़ने के लिए वाली की सेना का आगमन नहीं हुआ, वही कारण है ? यह मन की शिथिलता क्यों ? । ४९६

मऱैतुळङ्गिनु मदितुळङ्गिनुम् वानुमाळ्हडल् वैयमुम्
निऱैतुळङ्गिनु निलैतुळङ्गुऱु निलैमैनिन्वयि निऱ्कुमो
पिऱैतुळङ्गुव वनैयपेरॆयि ऱुडैयपेदैयर् पॆरुमैनिन्
इऱैतुळङ्गुऱु पुरुववॆञ्जिलै यिडैतुळङ्गुऱ् विशैयुमो 497

मऱै तुळङ्किनुम्–वेद विपरीत बनें तो भी; मति तुळङ्किनुम्–चन्द्र भ्रमित हो जाय तो भी; वानुम्–आकाश और; आळ् कटल्–गहरे समुद्र-मध्य; वैयमुम्–भूमि; निऱै तुळङ्किनुम्–स्थिति खो दें तो भी; निलै तुळङ्कुऱुम् निलैमै–स्थिति खोने का स्वभाव; निन् वयिन्–आपके पास; निऱ्कुमो–रहेगा क्या; पिऱै–चन्द्रकलाएँ; तुळङ्कुव अनैय–चमकती-जैसे; पेर् ऎयिऱु–बड़े दाँतों के; उटैय–रखनेवाले; पेतैयर्–बुद्धिहीनों का; पॆरुमै–(शक्ति का) महत्त्व; निन्–आपके; इऱै तुळङ्कुऱु–स्वामीत्व-प्रदर्शक; पुरुवम् वॆञ्चिलै–भौंहें रूपी भयंकर धनुषों के; इटै तुळङ्कुऱ्–मध्यभाग के काँपने पर; इचैयुमो–(टिका) रहेगा क्या । ४९७

चाहे वेद ही अस्त-व्यस्त क्यों न हों; भले ही चन्द्र का स्थिति-विपर्यय हो आवे; आकाश और गम्भीर-सागरमध्यस्था भूमि अपनी स्थिति खो जाय तो भी स्थैर्यस्खलन आपके पास होगा क्या ? चन्द्रकलाओं के समान चमकने वाले दाँतों से युक्त राक्षसों का पराक्रम स्वामित्वद्योतक आपकी भौहों रूपी भयंकर धनुओं के मध्यभाग के काँपने पर टिक सकेगा क्या ? । ४९७

अनुमनॆन्बव नळवऱिन्दन मरिञवङ्गद नादियोर्
ऎनैयरॆन्बदॊ रिऱुदिहण्डिल मॆळुबदॆन्ऱॆणु मियलबिनार्
विनैयिन्वॆन्दुयर् विरवुतिङ्गळुम् विरैवुशॆन्ऱन वॆळिदिनिन्
तनुवॆनुन्दिऱु नुदलिवन्दनळ् शरदम्वन्ऱुयर् तविर्दिये 498

अऱिञ–ज्ञानी; अनुमन् ऎन्बवन्–हनुमान कहलानेवाले के; अळवु–(सामर्थ्य का) माप; अऱिन्तनम्–जान गये; अङ्कतन् आतियोर्–अंगद आदि; ऎळुपतु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऎऩ्ऱु ऎणुम्–सत्तर (वॆळ्ळम्) की गिनती में; इयल्पित्तार्–आनेवाले; ऎऩैयर्–कितने (वीर) हैं; ऎऩ्पतु–इसका; ओर् इऱुति–एक निर्णय; कण्टिलम्–हमने नहीं जाना; वितैयिऩ्–बुरे कर्म (फल) के समान; वॆम् तुयर्–तापक दुःख; विरवु–देनेवाले; तिङ्कळुम्–मास भी; विरैवु चॆऩ्ऱऩ–जल्दी बीत गये; निऩ्–आपके; तऩु ऎऩुम्–धनु-सम; तिरु नुतलि–श्रीयुक्त ललाट वाली; ऎळितितिल् वऩ्ततऩ्–सुगम रीति से आ गयीं; चरतम्–यह ध्रुव है; वल् तुयर्–कठोर दुःख; तविर्ति–छोड़ दीजिए। ४९८

ज्ञानी ! हमने जान लिया कि हनुमान (के प्रताप) का माप क्या है ! अंगद आदि वीरों की सेना सत्तर (वॆळ्ळम) की संख्या में बतायी गयी। पर असल में वे कितने हैं ? उनकी गणना की सीमा हमने नहीं देखी। बुरे कर्म-फल के समान कठोर दुःखदायी (शरत्ऋतु के) मास भी बीत गये। अब आपके धनु के समान ललाट वाली देवी आपसे सुगमता से आकर मिल गयीं, समझिए। यह ध्रुव है। इसलिए अब यह कठोर दुःख छोड़ दीजिए। ४९८

मऱैयऱिन्दवर् वरवुहण्डुमै वलियुम्वञ्जहर् वळियॊडुम्
कुऱैयवॆऩ्ऱिडर् कळैवॆऩ्ऩॆऩ्ऱऩै कुऱैमुडिन्ददु विदियिऩाल्
इऱैववङ्गव रिऱुदिहण्डिऩि दिशैपुऩैन्दिमै यवर्हडाम्
उऱैयुमुम्बरु मुदविनिऩ्ऱऱु ळुणर्वळिन्दिड लुऱुदियो 499

इऱैव–प्रभु; मऱै अऱिन्तवर्–(आपका) रहस्य जाननेवालों का; वरवु कण्टु–(दण्डक वन के ऋषिगणों का) आगमन देखकर; उमै वलियुम्–आप लोगों को त्रास देनेवाले; वञ्चकर्–राक्षसों के; वळियॊटुम् कुऱैय–सन्तति के साथ नाश हों, ऐसा; वॆऩ्ऱु–हराकर; इटर् कळैवॆऩ्ऩ–कष्ट दूर करूँगा; ऎऩ्ऱऩै–वचन दिया (आपने); बितियिऩाल्–विधिवशात्; कुऱै मुटिन्ततु–कष्ट दूर हो गया (या राक्षसों के हाथ अपराध हो गया और वे मरेंगे); इति–अब; अङ्कु अवर् इऱुति कण्टु–वहाँ उनका अन्त करके; इतितु–सुख से; इचै पुऩैन्तु–प्रशंसा पाकर; इमैयवर्कळुक्कुम्–देवों का भी; ताम् उऱैयुम् उम्परुम्–उनका वासस्थान स्वर्गलोक; उतवि निऩ्ऱु–बिलाकर; अरुळ्–उपकार करें; उणर्वु अऴिन्तिटल्–धैर्य खोना; उऱुतियो–हितकारी है क्या। ४९९

हे प्रभु ! आपका अवतार-रहस्य जिन्हें मालूम था वे आपके पास (शरण माँगने) आये। उनके आगमन पर आपने वादा किया कि हम आपके त्रासक कपटी राक्षसों को उनकी सन्तति के साथ नष्ट करते हुए हरायेंगे और आपका कष्ट दूर करेंगे। विधिवशात् (उसी वचन के अनुसार) उनका कष्ट दूर हो गया। (या राक्षस ने अपराध कर दिया और आप उसको विना किसी संकोच के दण्ड दे सकते हैं।) अब उनका अन्त कीजिए। सुख से यश अर्जन करते हुए देवों को भी उनका स्वर्ग दिला दीजिए। उसके विपरीत इस तरह धैर्य खोना हितकारी हो सकता है क्या ? । ४९९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कादुहॊऱ्ऱु निऩक्कलादु पिऱर्क्कॆव्वाऱु कलक्कुमो
वेदऩैक्किड मादल्वीरदै यऩ्ऱुपेदमै यामरो
पोदुपिऱ्पड लुण्डिदोर्पॊरु ळऩ्ऱियिऩ्ऱु पुणर्त्तियेल्
यादुऩक्किय लाददॆन्दै वरुन्दलॆऩ्ऩ वियम्बिऩान् 500

ऍऩ्ऱै–मेरे पिता (सदृश); कातु कॊऱ्ऱम्–संहारक विजय; निऩक्कु अलातु–आपको छोड़; पिऱर्क्कु–अन्यों (राक्षसों) को; ऍव्वाऱु कलक्कुमो–कैसे मिलेगी; वेदऩैक्कु इटम् आतल्–वेदना का शिकार होना; वीरतै अऩ्ऱु–वीरता नहीं; पेतैमै आम् अरो–अज्ञता नहीं होगा क्या; पोतु पिऩ्पटल्—समय का अनुकरण करना; इतु ओर् पॊरुळ् उण्टु–यह एक लोकरीति का विषय है; अऩ्ऱि–उसके अलावा; इऩ्ऱु पुणर्त्तियेल्–आज ही प्रयत्न करें तो; उऩक्कु इयलाततु–आपके लिए अशक्त; यातु–क्या है; वरुन्तल्–दुःख मत कीजिए; ऍऩ्ऩ–ऐसा; इयम्पिऩान्–(लक्ष्मण ने) कहा। ५००

मेरे पिता-तुल्य ! शत्रुसंहारजन्य विजय आपको छोड़ अन्य की हो कैसे सकेगी ? वेदनाग्रस्त होना वीरता नहीं है। यह अज्ञता होगा। हाँ ! समय का अनुसरण करना है, यह एक बात लोकमान्य है ! पर उसको न मानकर आज ही प्रयास करें तो आपके लिए असाध्य क्या है ? इसलिए मन मत मारिए। —लक्ष्मण यों बोले। ५००

शॊऱ्ऱतम्बि युरैक्कुणर्न्दुयिर् शोर्वॊडुङ्गिय तॊल्लैयोऩ्
इऱ्ऱविऩ्ऩ लियक्कमॆय्दिड वैहल्पऱ्पल वेहमेल्
उऱ्ऱुनिऩ्ऱु विऩैक्कॊडुम्बिणि यॊऩ्ऱिऩ्मेलुड ऩॊऩ्ऱुराय्
मऱ्ऱुम्वॆम्बिणि पऱ्ऱिनालॆऩ्ऩ वन्दॆदिर्न्ददु मारिये 501

उयिर् चोर्वु–जीवन के दुर्बल होने से; ऒटुङ्किय–शरीर और मन में शिथिल जो हुए; तॊल्लैयोऩ्–उन पुरुष-पुरातन के; तम्पि–छोटे भाई के; चॊऱ्ऱु उरैक्कु–कहे वचनों से; उणर्न्तु–सुध पाकर; इऱ्ऱु इऩ्ऩल्–त्यक्त-दुःख हो; इयक्कम् ऍय्तिट–चलते-फिरते हुए; पऱ्पल–अनेक; वैकल्–दिन; एक–बीते; मेल्–बाद; उऱ्ऱु निऩ्ऱु–आ लगे; विऩै–कर्म-सम; कॊटुम् पिणि–क्रूर रोग पर; मऱ्ऱुम् वॆम् पिणि ऒऩ्ऱु–और अन्य एक भयंकर रोग; उटऩ् उराय् पऱ्ऱिऩाल् ऍऩ्ऩ–साथ आकर पकड़ गया हो, ऐसा; मारि–(दुबारा) वर्षा; ऍतिर्न्तु वन्ततु–सामने आयी। ५०१

श्रीराम का शरीर निर्बल था और उनकी जान भी दुर्बल हो गयी थी। अब वे अपने छोटे भाई के वचन सुनकर थोड़ा आश्वस्त हुए और उनका मन साफ़ हुआ। दुःख-विमुक्त हुए और चलने-फिरने लगे। ऐसा अनेक दिन व्यतीत हुए। तब प्राप्त कर्मफल के समान, मानो एक रोग पर दूसरा आ लगा हो, ऐसा अपर-वर्षाकाल भी आ गया। (वर्षाऋतु के पूर्व अपर दोनों अंशों में वर्षा होती है। बीच में एक अंश ऐसा है जब पानी नहीं बरसता)। ५०१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निऱैन्दऩ नॆडुङ्गुळ नॆऱुङ्गिऩ तरङ्गम्
कुऱैन्दऩ करुङ्गुयिल् कुळिर्न्दवुयर् कुऩ्ऱम्
मऱैन्दऩ तडन्दिशै वरुन्दिऩर् पिरिन्दार्
उऱैन्दऩ महऩ्ऱिलुड नऩ्ऱिलुयि रौऩ्ऱि 502

नॆटुम् कुळऩ् निऱैन्ततऩ–बड़े-बड़े तालाब भर गये; तरङ्कम्–(उन पर) तरंगें; नॆऱुङ्कित–अधिक उठीं; करुङ्कुयिल्–काली कोयलें; कुऱैन्ततऩ–मौन हो रहीं; उयर् कुऩ्ऱम्–ऊँची गिरियाँ; कुळिर्न्त–शीतल हुईं; तट तिचै–विशाल दिशाएँ; मऱैन्ततऩ–(वर्षा में) छिप गयीं; पिरिन्तार्–बिछुड़े लोग; वरुन्तिऩर्–दुःखी हुए; मकऩ्ऱिल् पऱवैकळ्–'महऩ्ऱिल्' नामक जल-पक्षी; अऩ्ऱिलुटऩ्–मादा पक्षियों के साथ; उयिर् ऒऩ्ऱि–एकप्राण हो; मऱैन्ततऩ–छिप गये (संश्लिष्ट रहे)। ५०२

बारिश से सभी बड़े-बड़े तालाब भर गये। उन पर तरंगें लगातार उठीं। काले रंग की कोयलें मौन हुईं। ऊँचे पर्वत शीतल हुए। विशाल दिशाएँ (मेघों में) छिप गयीं। वियोगी लोग दुःखी हुए। क्रौंच पक्षी क्रौंचियों के प्राणों में प्राण मिलाकर ऐसे सटे रहे कि वे अदृश्य हो गये। ५०२

पाशिळै मडन्दैयर् पळिप्पिलह लल्हुल्
तूशुतॊड रूशऩति वॆम्मैतॊडर् वुऱ्ऱे
वीशियदु वाडैयॆरि वॆन्दविरि पुण्वीळ्
आशिलयिल् वाळियॆऩ वाशैपुरि वार्मेल् 503

आचै पुरिवार् मेल्–(विरह की अवस्था में) प्रेम से भरी; पळिप्पिल् अकल् अल्कुल्–निर्दोष विशाल कटिप्रदेश; पाचु इळै–सुन्दर आभरण (इनसे अलंकृत); मटन्तैयर् मेल्–स्त्रियों पर; तूचु–उनके वस्त्रों; तॊटर् ऊचल्–झूलनेवाले झूलों पर; नति तॊटर्वुऱ्ऱु–खूब लगकर; वॆन्त विरिपुण्–आग लगने से बने बड़े व्रण पर; वीळ्–लगनेवाले; आचु इल्–अचूक; अयिल् वाळि ऎऩ–तीक्ष्ण शर के समान; वाटै–उदीची (बरसाती) हवा ने; वॆम्मै–गरमी; वीचियतु–दिलायी। ५०३

उदीची हवा अनिंद्य विशाल जघनप्रदेशों से और उत्तम आभरणों से शोभित वियोगिनी स्त्रियों के कपड़ों पर और उनके झूलों पर खूब लगी और आग से बने व्रण में लगनेवाले दोषहीन और तीक्ष्ण भाले के समान उन्हें अपार ताप दे रही थी। ५०३

वेलैनिऱै वुऱ्ऱऩ वॆयिऱ्कदिर् वॆदुप्पुम्
शीलमळि वुऱ्ऱपुऩ लुऱ्ऱुरुवु शॆप्पिऩ्
कालमऱि वुऱ्ऱुणर्दल् कऩ्ऩलळ वल्लाल्
मालैपह लुऱ्ऱदॆऩ वोर्वरिदु मादो 504

वेलै–समुद्र; निऱैवु उऱ्ऱऩ–भर गये; वॆयिल् कतिर्–सूर्य की किरणें; वॆतुप्पुम् चीलम्–गरमी देने का गुण; अळिवुऱ्ऱ–छोड़ गयीं; पुऩल् उऱ्ऱु–जल जिसमें से गिरकर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उरुवु–निकलता है; चॆप्पिन् कन्नल्–उस तांबे के बने समयमापक पात्र के; अळवु–माप से; कालम् अरिवुरु–समय जानकर; उणर्तल् अल्लाल्–समझे बिना; मालै पकल्–शाम, सवेरा; उऱ्ऱतु–आया; ऎन्न ओर्वु–यह जानना; अरितु–कठिन हो गया; (मातु ओ–पूरक ध्वनियाँ)। ५०४

समुद्र भर गये। सूर्य की किरणों का तापक गुण नष्ट हो गया। समय का ज्ञान उस यन्त्र से ही प्राप्त हो सका, जिसमें जल ऊपर के पात्र से नीचे के पात्र में रंध्रों द्वारा गिरता है। नहीं तो सन्ध्या, दिन आदि काल का बोध होना असाध्य हो गया। ५०४

नॆऱ्किळिय नॆऱ्पॊदि निरम्बिन निरम्बाच्
चॊऱ्किळिय नऱ्किळिह डोहैयवर् तूयमिन्
पऱ्किळि मणिप्पडर् तिरैप्परदर् मुन्ऱिल्
पॊऱ्किळि विरित्तन शिन्नैप्पॊदुळु पुन्नै 505

तोकैयवर्–कलापी-सी स्त्रियों की; निरम्पा चॊऱ्कु–अपूर्ण (अस्पष्ट) बोली (तोतली) के सामने; इळिय–हार जाने से; नल् किळिकळ्–सुन्दर तोते; नॆल् किळिय–धान चीरते हुए; नॆल् पॊति निरम्पिन–धानों के ढेरों में छिप गये; तूय–(ललनाओं के) शुद्ध; मिन् पऱ्कु–चमकदार दाँतों के सामने; इळि–हारनेवाले; मणि–मोती; पटर् तिरै–फैलनेवाली सागर-लहरों से; परतर् मुन्ऱिल्–(स्पृष्ट) धीवरों के आँगनों में; चित्तै पॊतुळु–पुष्प-बहुल; पुन्नै –'पुन्नै' के तरु; पॊन् किळि–स्वर्ण-बँधे वस्त्र के समान; विरित्तन–लगे। ५०५

शुक जाकर धान की बालियों को तोड़ते हुए उनके बीच जा छिपे। (कवि की उत्प्रेक्षा है कि) वे मयूरसंकाश स्त्रियों की सुमधुर, अस्पष्ट तोतली बोली के सामने हारकर जा छिपे। स्त्रियों के चमकीले दाँतों के सामने जो हारे वे मुक्तागण समुद्रतटप्रदेश के लोगों के आँगनों में, जहाँ समुद्र की तरंगें बहती थीं, ऐसे पड़े दीखे, मानो पुष्प-भरी शाखादार 'पुन्नै' के वृक्षों ने स्वर्णभरी गाँठों को खोलकर बिखेर दिया हो। ५०५

निऱङ्गरुहु कङ्गुल्पह निन्ऱनिलै नीङ्गा
अऱङ्गरुदु शिन्दैमुनि यन्दणरि नालिप्
पिऱङ्गरु नॆडुन्दुळि पडप्पॆयर्विल् कुन्ऱिन्
उऱङ्गलिल् विलङ्गलिल निन्ऱवुयर् वेळम् 506

निऱम् करुकु–रंग में काली; कङ्कुल्–रात्रि में (और); पकल्–दिन में; निन्ऱ निलै नीङ्का–अपनी स्थिति से न हटकर; अऱम् करुतु चिन्तै–धर्म-चिन्तन-रत मन वाले हो; मुनि अन्तणरिन्–(कामादि को) तिरस्कृत करनेवाले मुनियों के समान और; पिऱङ्कु–शोभायमान; अरु–अपूर्व; नॆटु आलि तुळि पट–बड़ी-बड़ी जल की बूंदों के लगने से (पर भी); पॆयर्वु इल्–अचल (रहनेवाले); कुन्ऱिन्–पर्वत के समान; उयर् वेळम्–ऊँचे हाथी; उऱङ्कल् इल्–बिना सोये; विलङ्कल् इल–हिले बिना; निन्ऱ–खड़े रहे। ५०६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काली अँधेरी रात में और दिन में भी ऊँचे हाथी अनिद्र और अचल खड़े रहे। तब वे उन मुनियों के समान लगे जो अपने तप में अचल और धर्म पर स्थिरमन रहे, और जिन्होंने कामादि दोषों पर कोप दिखाया था (उनको हटा दिया था)। उनके ऊपर पानी की बूँदें गिर रही थीं। तब भी वे हाथी पर्वतों के समान अचल खड़े रहे। ५०६

शन्दिऩडै यिऱ्पडलै वेदिहै तडन्दो
ऱन्दियि डहिऱ्पुहै नुऴैन्दकुळि रऩ्नम्
मन्दितुयि लुऱ्ऱमुऴै वऩ्कडु वऩङ्गत्
तिन्दियम वित्ततऩि योहरि निरुन्द 507

कुळिर् अऩ्तम्–शीत (से प्रभावित) हंस; चन्तिऩ्–चन्दन के (तरु के); अटैयिऩ् पटलै–पत्रों के छाजन के झोंपड़ों में रहनेवाली; वेतिकै–वेदियों पर; तटम् तोऱ्–हर होमकुण्ड में; अन्ति इटु–सन्ध्याकालों में डाली गयी; अकिल्–अगरु की लकड़ियों के; पुकै–धुएँ में; नुऴैन्त–(ठण्ड से बचने) घुसे; मन्ति–वानरियाँ; मुऴै–गुफाओं में; वल् कटुवऩ्–बलवान वानरों की; अङ्कतुतु–गोद में; तुयिलुऱ्ऱ–सोयीं; इन्तियम् अवित्त–(वे वानर) इन्द्रियनिग्रही; तऩि योकरिऩ्–अनुपम योगियों के समान; इरुन्त–(निश्चल) रहे। ५०७

ठण्ड से हंस पीड़ित हुए तो वे चन्दन-पत्रों से आच्छादित ऋषियों के आश्रम के अन्दर गये। वहाँ सन्ध्याकालों में वेदियों पर होम-कुण्डों में अगरु की लकड़ियाँ जलायी जाती थीं। उनके धुएँ में घुसकर हंस घाम का अनुभव करते थे। वानरियाँ पर्वतकन्दराओं में तगड़े वानरों की गोदी में सोयीं। वे वानर भी इन्द्रियनिग्रही और उत्कृष्ट योगियों के समान अचल बैठे रहे। ५०७

आशिल्शुऩै वालरुवि यायिऴैय रैम्बाल्
वाशमण नाऱलिल वाऩमणि वऩ्गाल्
ऊशल्वऱि दाऩविद णॊण्मणिहळ् विण्मेल
वीशलिल वाऩिऩॆडु मारितुळि वीश 508

वाऩिऩ्–आकाश से; नॆटुतुळि–लम्बी धारों की; मारि वीच–बरसात होती रही, इसलिए; आचु इल्–निर्दोष; चुऩै–स्रोतें; वाल् अरुवि–(और) उत्तम सरिताएँ; आय् इऴैयर्–चुने हुए आभरणों से भूषित स्त्रियों के; ऐम्पाल् वाचम्–केशों की सुगन्धि से; मणम् नाऱल् इल–गन्ध देनेवाले नहीं; आऩ–बने; मणि वल् काल्–रत्नयुक्त दृढ़ खम्भों से बँधे; ऊचल्–झूले; वऱितु आऩ–खाली रहे; इतण्–मचान; ऒळ् मणिकळ–चमकदार रत्न; विण् मेल्–आकाश में; वीचल् इल–फेंकने (-वालियों) से हीन हुए। ५०८

आकाश से लम्बी धारों में पानी बरस रहा था। इसलिए अनिंद्य स्रोतों और श्रेष्ठ सरिताओं के जल से उत्तम आभरणधारिणी अंगनाओं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के केश का सुबास नहीं आ रहा था (क्योंकि वे उनमें स्नान करने नहीं गयीं)। नवरत्नखचित खम्भों पर झूलनेवाले झूले खाली रहे। मचानों से रत्न आकाश में फेंके नहीं गये (क्योंकि मचान पर बैठकर कोई रखवाली नहीं करता था और पत्थर के स्थान पर रत्न नहीं फेंकता था)। ५०८

करुन्दहैय तण्शिऩैय कैदैमडल् कादल्
तरुन्दहैय पोदुहिळै यिऱ्पुडै तयङ्गप्
पॆरुन्दहैय पॊऱ्चिऱैयॊ डुक्कियिडै पेरा
दिरुन्दकुरु हिन्पॆडैपि रिन्दवर्ह ळॆऩ्ऩ 509

करु तकैय–काले रंग की; तण् चिऩैय–शीतल डालों वाले; कैतै–केतकी के; मटल्–फूल; कातल् तरु तकैय–चाह पैदा करने योग्य; पोतु–कलियाँ; किळैयिल्–बन्धुओं के समान; पुटै तयङ्क–चारों ओर आसपास खड़ी रहीं; कुरुकिऩ् पॆटै–सारसी; पॆरु तकैय–बड़े और सुन्दर; पॊऩ् चिऱै–आकर्षक पंखों को; ऒटुक्कि–समेटकर; इटै पेरातु—अपने स्थान से न हटकर; पिरिन्तवर्कळ् ऎऩ्ऩ–वियोगिनियों की तरह; इरुन्त–विद्यमान रहीं। ५०९

सारसियाँ अपने पंखों को बन्द करके अपने-अपने स्थान पर वियोगिनियों की भाँति बैठी हुई थीं। उनके चारों ओर काले और शीतल पत्तों वाले केवड़े के झाड़ों के सुन्दर फूल और मनोहर कलियाँ रिश्तेदारों के समान (उन वियोगिनियों को ढाड़स बँधाती-सी) विद्यमान रहीं। ५०९

पदङ्गमुळ वॊत्तविशै पऩ्ञिमिऱ पऩ्ऩ
विदङ्गळि ऩडित्तिडु विहऱ्पवळि मेवुम्
मदङ्गियरै यॊत्तमयिल् वैहुमर मूलत्
तॊदुङ्गिऩ वुळैक्कुल मळैक्कुल मुळक्क 510

पतङ्कम्–विहंग; मुळवु ऒत्त–मृदंग के समान रहे; पल् ञिमिऱ–विविध भ्रमर; इचै–संगीत; पऩ्ऩ–गाये; मयिल्–मोर; वितङ्कळिऩ् नटित्तिटु–विविध रूप से नृत्य किये जानेवाले; विकऱ्पम् वळि–अनेक नाचों में; मेवुम्–विदग्ध; मतङ्कियरै नर्तकियों; ऒत्त–के समान रहे; मळै कुलम्–मेघकुल के; उळक्क–भीत करने से; उळै कुलम्–हरिणसमूह; वैकुम् मरम्–नाच जहाँ हो रहे थे, उन पेड़ों के; मूलत्तु–तले; ऒतुङ्किऩ–आ ठहरे। ५१०

विविध जलपक्षी अपनी ध्वनि के कारण मृदंग के समान लगे। विविध भ्रमर संगीत (का-सा नाद) उठा रहे थे। मोर उन नर्तकियों के समान नाच रहे थे, जो अनेक तरह के तालों के लय में होनेवाले विविध नृत्यों में दक्ष थीं। मेघ-गर्जन से भयभीत हुए हिरण-समूह उन पेड़ों के तले जा ठहरे जहाँ ये नृत्य और गान आदि हो रहे थे। ५१०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विळक्कॊळि यहिऱ्पुहै विऴुङ्गमळि मॆऩ्गॊम्
बिळैक्कुमिडै मङ्गैयरु मैन्दर्हळु मेऱत्
तळत्तहु मलर्त्तविशि कन्दुनहु शन्दिऩ्
तॊळैत्तुयिलु वन्दुतुयिल् वुऱ्ऱहुळिर् तुम्बि 511

मॆल् कॊम्पु–पतली लता भी; इळैक्कुम्–जिसकी उपमा बनने से बिछुड़ जाती है; इटै–ऐसी कमरों की; मङ्कैयरुम्–स्त्रियाँ और; मैन्तर्कळुम्–पुरुष; अकिल् पुकै–अगरु का धुआँ; विळक्कु ऒळि–दीपों के प्रकाश को; विऴुङ्कु–जहाँ निगल रहा था; अमळि–उस शय्या पर; एऱ–चढ़े; कुळिर् तुम्पि–शीतल भ्रमर; तळ तकु–त्यागने को मजबूर होकर; मलर् तविचु–फूलों की सेज; इकन्तु–त्यागकर; नकु चन्तिऩ्–सुन्दर रहनेवाले चन्दनतरुओं के; तॊळै–कोटरों में; तुयिल्–सोना; उवन्तु–चाहकर; तुयिल्वुऱ्ऱ–(आये और) सोये। ५११

पतली पुष्पलता से भी अधिक पतली कमर वाली दयिताएँ और उनके नायक पुरुष शय्याओं पर चढ़े। वहाँ अगरु का धुआँ दीप के प्रकाश को निगल रहा था। शीतल ('तुम्पि' जाति के) भ्रमरों को पुष्पशय्या त्यागना पड़ गया। वे चन्दनतरुओं के कोटरों में चाह के साथ जाकर सोये। ५११

तामरै मलर्त्तविशि कन्दुदहै यन्तम्
मामर निरैत्तॊहु पॊदुम्बरुळै बहत्
तेमर नडुक्किद णिडैच्चॆऱि कुरम्बैत्
तूमरु वॆयिऱ्ऱिय रॊडन्बर् तुयिल्वुऱ्ऱार् 512

तकै अन्तम्–उत्तम हंस; तामरै मलर्–कमल-पुष्प का; तविचु इकन्तु–अपना आसन त्यागकर; मा मरन् निरै–बड़े वृक्षों की पंक्तियों से; तॊकु–भरे; पॊतुम्पर् उळै–उपवनों में; वैक–ठहरते हैं और; तेम् मरन् अटुक्कु–सुगन्धपूर्ण लकड़ियाँ चुनकर बने; इतण् इटै चॆऱि–मचानों पर बने; कुरम्पै–छोटे-छोटे झोंपड़ों में; तू मरुवु–शुद्ध; ऍयिऱ्ऱियरॊटु–दाँतों वाली किरातिनियों के साथ; अन्पर्–उनके प्रेमी; तुयिल्वुऱ्ऱार्–सोये। ५१२

सुन्दर हंस विहंगों ने कमलशय्या त्याग दीं। वे जाकर बागों में रहे जहाँ बड़े-बड़े वृक्ष पंक्तियों में खड़े थे। सुबासपूर्ण काष्ठखण्डों को चुनकर उन ढेरों पर झोंपड़े बनाये गये थे। उन झोंपड़ों में वनप्रदेश-वासी व्याध लोग अपनी पवित्र दाँतों वाली स्त्रियों के साथ सोये। ५१२

वळ्ळिपुडै चुऱ्ऱियुयर् शिऱ्ऱिलै मरन्दो
ऱॆळ्ळरुम ऱिक्कुरुळॊ डण्डर्ह ळिरुन्दार्
कळ्ळरि नॊळित्तुऴ नॆडुङ्गळु दॊडुङ्गि
मुळ्ळॆयिऱु तिऩ्ऱुपशि मूऴ्हिड विरुन्द 513

वळ्ळि पुटै चुऱ्ऱि–'वळ्ळि' की लताओं से, चारों ओर से घिरे रहनेवाले; उयर्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऊँचे उगे; चिऱु इलै–छोटे-छोटे पत्तों के; मरम् तोऱु–पेड़-पेड़ के तले; ऍळ्ळ अरु–अनिद्य; मऱि कुरुळोटु–पालनयोग्य बाल-बकरियों के साथ; अण्टर्कळ्–गोप लोग; इरुन्तार्–ठहरे रहे; कळ्ळरिन्–चोरों के समान; ऒळित्तु उऴल्–छिपे-छिपे फिरनेवाले; नॅटु कळुतु–बड़े-बड़े भूत भी; ऒटुङ्कि–शिथिल होकर; मुळ् ऍयिऱु–काँटे-सदृश अपने दाँतों को; तिन्ऱु–खाते हुए; पचि मूऴकिट–भूख में मग्न; इरुन्त–रहे। ५१३

छोटे-छोटे पत्तों के साथ पेड़ खड़े थे। उनके चारों ओर 'वळ्ळी' नाम की लताएँ फैली थीं। उनके तले पालनयोग्य बाल-बकरों की रक्षा करते हुए गोपलोग रहे। चोरों के समान छिपे-छिपे घूमनेवाले भूत और पिशाच कहीं जा नहीं सके। उनको भूख सता रही थी। अतः वे अपने ही दाँतों को खाते हुए रह गये। ५१३

शरम्बयि नॅडुन्दुळि निमिर्न्दपुयल् शार
उरम्बॅयर् विल्वऩ्करि करन्दुऱ वॊडुङ्गा
वरम्बह नॅडुम्बिरशम् वैहल्पल वैहुम्
मुरम्बिऩि निरम्बल मुऴैञ्जिडै नुऴैन्द 514

निमिर्न्त पुयल्–ऊपर रहे मेघों से; चरम् पयिल्–शर-सम बरसनेवाली; नॅटु तुळि–लम्बी धारें; चार–पड़ीं तो; उरम् पॅयर्वु इल्–साहस न खोकर; वल् करि–बलवान हाथी भी; ऒटुङ्का–सिकुड़कर; वरम्पु अकल्–बड़े-बड़े; नॅटु पिरचम्–अनेक छत्ते; पल वैकल्–अनेक दिनों से; वैकुम्–जहाँ रहे, उन; मुरम्पिऩिल्–टीलों पर; निरम्पल–ठहर नहीं सके; करन्तु उऱ–(बरसात से) बचकर रहने हेतु; मुऴैञ्चु इटै–गुफाओं में; नुऴैन्त–घुसे। ५१४

उन्नत आकाश में ऊपर रहनेवाले मेघों से शरों के समान पानी की बूँदें गिर रही थीं और वे हाथियों पर ज़ोर से लगीं। हाथी मन में दृढ़ और शरीर में सबल थे। तो भी वे उन उन्नत भू-भागों पर नहीं रह सके, जहाँ बड़े-बड़े शहद के छत्ते अनेक दिनों से थे। वे छिपकर रहने के विचार से चट्टानों के बीच गुफाओं में जा रहे। ५१४

इत्तहैय मारियिडै तुन्ऩियिरु ळैय्द
मैत्तहु विऴिक्कुऱु नहैच्चऩहऩ् मान्मेल्
उयत्तवुणर् विऱ्ऱिऩ नॅरुप्पिडै युयिर्प्पाऩ्
वित्तह ऩिलक्कुवऩै मुन्ऩिऩऩ् विळम्बुम् 515

इत्तकैय मारियिटै–ऐसी वर्षा में; इरुळ् तुन्ऩि ऍय्त–अन्धकार आ गया, तब; वित्तकऩ्–विद्यासम्पन्न श्रीराम; मैतकु विऴि–अंजन-लगी आँखें; कुऱु नकै–मन्दहास (इनसे युक्त); चऩकऩ् मान् मेल्–जनक-दुहिता, हरिणी-सी जानकी पर; उय्त्त–रखे गये; उणर्वित्–(प्रेम के) भाव से; तिऩऩ्–रोज; नॅरुप्पिटै उयिर्प्पाऩ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आग-सा गरम उच्छ्वास छोड़ते हुए; इलक्कुवत्तै मुन्निन्न्–लक्ष्मण को देखकर; विळम्पुम्–बोले । ५१५

बारिश ऐसी थी और सर्वत्र अन्धकार का राज्य हो गया। तब विद्वान् श्रीराम अंजनरंजित सुन्दर आँखों और मृदु-मन्दहास के साथ मनोरम लगनेवाली जनकसुता पर के प्रेम के कारण आग के समान गरम उच्छ्वास छोड़ते हुए लक्ष्मण से (यों) बोले । ५१५

मऴैक्करु मिन्नॆयिऱ् ऱरक्कन् वञ्जनै
इऴैप्पॆरुङ् गॊङ्गैयु मॆदिर्वुऱ् ऱिन्नलिन्
उऴैत्तन ळुलैन्दुयि रुलक्कु मेलिनिप्
पिऴैप्परि दॆनक्कुमि दॆन्न पॆऱ्ऱियो 516

करु मऴै–काले मेघ-सम और; मिन् ॲयिऱु–बिजली-जैसे दाँत वाले; वञ्चनै–कपट से; इऴै पॆरु कॊङ्कैयुम्–भूषणमण्डित पुष्ट स्तनों की सीताजी भी; इन्नलिन् ॲतिर्वुऱ्ऱु–कष्ट का सामना करके; उऴैत्तनळ्–दुःखी होकर; उलैन्तु–मुरझाकर; उयिर् उलक्कुमेल्–प्राण छोड़ देंगी तो; ॲनक्कुम्–मेरे लिए भी; ऒन्ऱिनुम् पिऴैप्पु अरितु–किसी विध जीना दूभर हो जायगा; इतु ॲन्न पॆऱ्ऱियो–यह भी क्या भाग्य है। ५१६

काले मेघ के समान रंग के और बिजली के समान दाँतों के रावण के कपट-कार्य से आभरणभूषिता पीनस्तनी सीता कष्ट का सामना करते हुए अधिक दुःख के कारण मर जाय, तो मेरे लिए भी जीवित रहने का कोई मार्ग न रहेगा। यह कैसी स्थिति है ? । ५१६

तूनिऱच् चुटुशरन् दूणि तूङ्गिड
वानुऱप् पिऱङ्गिय वयिरत् तोळॊडुम्
यानुऱक् कडवदे यिदुवु मिन्निलै
वेनिऱत् तुऱ्ऱदॊत् तुऴियुम् वीहिलेन् 517

तू–पवित्र; निऱम्–और अच्छे रंग वाले; चुटु चरम्–सन्तापक शर; तूणि–तूणीर में; तूङ्किट–बेकार रहे; वान् उऱ–आकाश छूते हुए; पिऱङ्किय–उन्नत; वयिरम्–सुदृढ़; तोळॊटुम्–कन्धों के साथ; यान्–मैं; इतुवुम् उऱ कटवतु ए–यह (दुःख) भी भोगूँ क्या; इ निलै–यह स्थिति; वेल्–भाला; निऱत्तु उऱ्ऱतु ऒत्त–छाती पर लगा, ऐसी है; उऴियुम्–तो भी; वीकिलॆन्–नहीं मरा। ५१७

तूणीर में पवित्र, मनोरम रंग वाले और सन्तापक शरों को बेकार पड़े रहने देते हुए अपने आकाश छूते हुए-से ऊँचे बढ़े कन्धों के साथ मैं इस स्थिति में आने अर्ह हूँ क्या ? यह स्थिति, भाला वक्ष में घुस गया-जैसी है। तो भी (क्या आश्चर्य—) मैं मरा नहीं ! । ५१७

तॆरिहणै मलर्हळाऱ् ऱिऱन्द नॆञ्जॊडुम्
अरियवन् ऱुयरॊडुम् यानुम् वैहुवेन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍरियुमित् मिनिमणि विळक्कि निन्रुणैक्
कुरीइयिनम् बॅडैयॉडुन् दुयिल्व कूटटिनुळ् 518

कुरीइ इनम्–चिड़ियों का दल; ऍरियुम्–उज्ज्वल; मिन्मिनि–जुगुनू रूपी; मणि विळक्किन्–सुन्दर दीपों के प्रकाश में; इन् तुणै पॅटैयॉटुम्–अच्छी साथिन, मादा चिड़ियों के साथ; कूट्टिनुळ्–अपने घोंसलों में; तुयिल्व–सोते हैं; यानुम्–मैं तो; तॅरि कणै मलर्कळाल्–चुनकर फेंके गये (मन्मथ-) शरों से; तिऱन्त–विदीर्ण; नॅञ्चॉटुम्–हृदय के साथ; अरिय–असह्य; वल्–कठोर; तुयरॉटुम्–दुःख के साथ; वैकुवेन्–रह रहा हूँ। ५१८

देखो ! चिड़ियाँ भी अपने घोंसलों में अपनी प्यारी मादा चिड़ियों के साथ सुख से सोती हैं और जुगुनू के दीप उन घोंसलों में प्रकाश दे रहे हैं। इधर मैं हूँ जो कामदेव के चुने हुए पुष्पशरों से विदीर्ण हृदय के असह्य और कठोर दुःख के साथ रह रहा हूँ। ५१८

वानह मिन्निनु मळैमु ळङ्गिनुम्, यानह मॅलिहुवे नॅयिऱ्ऱ रावॅनक्
कानहम् पुहुन्दियान् मुडित्त कारियम्, मेनदुङ् गीळ्नहु मिनियॅन् वेण्डुमाल् 519

वान् अकम्–आकाश; मिन्निनुम्–चमकता तो भी; मळै–मेघ; मुळङ्किनुम्–गरजते तो भी; ऍयिऱ अरा ऍन–विषदन्त सर्प के समान; यान्–मैं; अकम् मॅलिकुवेन्–शिथिलमन पड़ जाता हूँ; यान्–मैं; कान् अकम्–जंगल में; पुकुन्तु–प्रवेश करके; मुटित्त कारियम्–जो पूरा किया वह कार्य; मेल् नकुम्–(देखकर) व्योमवासी हँसेंगे; कीळ्–नीचे के लोकवासी भी; नकुम्–हँसेंगे; इनि–अब; ऍन् वेण्टुम्–और (दुर्भाग्य) क्या चाहिए। ५१९

जब आकाश में बिजली चमकती है या वज्र कड़कता है, तो विष-दाँत सर्प के समान दहल उठता हूँ। यही जंगल में आकर मैंने जो किया वह काम है। इसको देखकर ऊपर व्योमवासी हँसेंगे और नीचे भूमिवासी भी हँसेंगे। आगे (मेरे लिए) और क्या चाहिए ? । ५१९

मऱन्दिरुन् दुय्हलॅन् मारि यीर्दनिन्, इऱन्दुविण् शेर्वदु शरद मिप्पळि
पिऱन्दुपिन् ऱीर्वलो पिन्न रन्नदु, तुऱन्दुशॅन् ऱुऱुवलो तुयरिन् वैहुवेन् 520

तुयरिन् वैकुवेन्–दुःखपीड़ित मैं; मऱन्तु इरुन्तु–(सीता को) भूले रहकर; उय्कलॅन्–जीवित नहीं रहूँगा; मारि–वर्षा; ईतु ऍनित्–ऐसी होगी तो; इऱन्तु–मरकर; विण् चेर्वतु–स्वर्ग पहुँचना; चरतम्–ध्रुव है; इ पळि–यह अपमान; पिऱन्तु–दूसरा जन्म लेकर; पिन्–बाद; तीर्वलो–दूर करूँगा क्या; पिन्नर्–बाद तब; चॅन्ऱु–जाकर; तुऱन्तु–संन्यासी बनकर; अन्नतु–(अपमान से छूटने की) वह दशा; उऱुवलो–पाऊँ क्या। ५२०

दुःखमग्न मैं सीता को भूलकर जीवित रह नहीं सकता। यही वर्षा है (वर्षा यही करती रहेगी), तो मेरा मरकर स्वर्ग जाना ध्रुव है ! फिर यह अपयश फिर एक जन्म लेकर (रावण को परास्त करके) दूर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किया जायेगा ? या दूसरे जन्म में गृहस्थी छोड़ जाकर, संन्यासी बनूँ और इस अपमान को दूर कर पाऊँ ? । ५२०

ईण्डुनिन् ऱरक्करद मिरुक्कै यामिनिक्
काण्डलिऱ् पऱ्पल कालङ् गाण्डुमाल्
वेण्डुव दऩ्ऱिदु वीर नोय्दॆऱ्
माण्डऩॆ नॆऩ्ऱदु माट्चिप् पालदाम् 521

वीर–वीर; याम्–हम; ईण्टु निऩ्ऱु–यहाँ से; इऩि–आगे; अरक्कर् तम् इरुक्कै–राक्षसों का स्थान; काण्टलिल्–ढूँढ़ पाना चाहें तो; पऱ्पल कालम्–अनेक दिन; काण्टुम्–बीतेंगे, देखेंगे; आल्–इसलिए; इतु–यह (खोज); वेण्टुवतु अऩ्ऱु–नहीं चाहिए; नोय्तॆऱ–(वियोग-) रोग के कष्ट देने से; माण्टऩॆऩ् ऎऩ्ऱतु–मर गया, यह; माट्चिप् पालतु आम्–श्रेयस्कर होगा । ५२१

वीर ! हम यहाँ रहकर राक्षस का वासस्थान ढूँढ़ पाना चाहें तो उसमें अनेक दिन लग जायँगे । इसलिए यह खोजने का काम नहीं चाहिए । (वियोग-) रोग के कारण मर जाऊँ, यही श्लाघ्य है, यशदायी काम है । ५२१

शॆप्पुरुक् कऩैयविम् मारिच् चीहरम्
वॆप्पुरुप् पुरञ्जुड वॆन्दु वीवदो
अप्पुरुक् कॊण्डवा णॆडुङ्ग णायिऴै
तुप्पुरुक् कुमुदवा यमुदन् दुय्त्तयान् 522

अप्पु उरु–शर का रूप; कॊण्ट–लेकर रहनेवाली; वाळ्–प्रकाशमान; नॆटुम् कण्–आयत आँखों वाली; आय् इऴै–चुने हुए आभरणभूषिता सीता के; तुप्पु उरु–प्रवाल-सम; कुमुतम् वाय्–कुमुद-सम अधरों का; अमुतम्–अमृत; तुय्त्त–जिसने पान किया, वह; यान्–मैं; इ मारि चीकरम्–इस वर्षा के सीकरों के; चॆम्पु उरुक्कु अऩैय–पिघले ताँबे के समान; वॆप्पु उरुप्पु–गर्मी के साथ; उरम् चुट–हृदय को जलाते; वॆन्तु–जलकर; वीवतो–मर जाऊँ क्या । ५२२

सीता की आँखें शर के रूप की हैं, आयत हैं और उज्ज्वल । उसके आभरण चुने हुए और मनोरम हैं । उसके अधर प्रवाल-सम लाल और कुमुद के समान सुन्दर हैं । उसके अधरों के रस का मैं पान कर चुका हूँ । ऐसा मैं पिघले ताँबे के समान गरमी के साथ गिरनेवाले इन वर्षा के सीकरों के मेरे हृदय को जलाते मन तपकर मर जाऊँ क्या ? । ५२२

नॆय्यडै तीयॆदिर् निऱुवि निऱ्किवळ्, कैयडै यॆऩ्ऱवच् चऩहऩ् कट्टुरै
पॊय्यडै याक्किय पॊऱियि लेऩॊडु, मॆय्यडै यादिऩि विळिद ऩऩ्ऱरो 523

नॆय् अटै–घृतवर्धित; ती ऎतिर्–(होम-) अग्नि के सामने; निऱुवि–स्थित कर; निऱ्कु–आपके पास; इवळ्–यह सीता; कैयटै–धरोहर है; ऎऩ्ऱ–ऐसा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(जिन्होंने) कहा; अ चत्तकन्-उन जनक के; कट्टुरै-वचन को; पॊय् अटै-असत्य-मिला; आक्किय-जिसने बनाया; पॊऱि इलॆऩॊटु-उस अभागे मेरे पास; मॆय्-सत्य; अटैयातु-नहीं ठहरेगा; इत्ति-अब; विळितल् नऩ्ऱु-मरना अच्छा है। ५२३

राजा जनक ने घृत-लगी होमाग्नि के सामने सीता को स्थित कर मुझसे कहा कि यह आपका धरोहर है ! मैंने उनके उस विश्वास के वचन को झूठा बना दिया। मैं बड़ा अभागा हूँ। मेरे पास सत्य नहीं रह सकता। इसलिए मर जाना ही अच्छा है ! । ५२३

तेऱ्ऱुवाय् नीयुळै याहत् तेऱिनिन्
ऱाऱ्ऱुवे ऩानुळ ऩाह वाय्बळै
तोऱ्ऱुवा ळल्लळित् तुऩ्ब मारिऩि
माऱ्ऱुवार् तुयर्क्कॊरु वरम्बुण् डाहुमो 524

तेऱ्ऱुवाय्-सान्त्वना देनेवाले; नी उळै-तुम हो; आक-ऐसा होने पर, और; तेऱि निऩ्ऱु-आश्वस्त हो; आऱ्ऱुवेऩ्-दृढ़ रहनेवाला; नान् उळऩ् आक-मैं रहूँ, तब; आय् वळै-चुने हुए कंकण पहने रहनेवाली सीता; तोऱ्ऱुवाळ् अल्लळ्-इधर आकर प्रकट होनेवाली नहीं; इ तुऩ्पम्-यह दुःख; इत्ति-अब; आर् माऱ्ऱुवार्-कौन दूर करेगा; तुयर्क्कु-इस दुःख का; ओर् वरम्पु-(एक) ठिकाना; उण्टाकुमो-होगा क्या। ५२४

भाई ! तुम मुझे सान्त्वना दो और मैं आश्वस्त होकर रहता रहूँ, तो क्या सीता स्वतः आकर प्रकट होगी ? नहीं। वह आनेवाली नहीं है। यह वियोगदुःख दूर करेगा कौन ? इस दुःख की कोई सीमा भी है ? । ५२४

विट्टपोर् वाळिहळ् विरिञ्जऩ् विण्णैयुम्
शुट्टपो दिमैयवर् मुदल तॊल्लैयोर्
पट्टपो दुलहमु मुयिरुम् बऱ्ऱऱक्
कट्टपो दल्लदु मयिलैक् काण्डुमो 525

पोर्-युद्ध में; विट्ट-प्रेषित; वाळिकळ्-शर; विरिञ्चऩ्-ब्रह्मा के; विण्णैयुम्-लोक को भी; चुट्ट पोतु-जला दें; इमैयवर् मुतल-सुर आदि; तॊल्लैयोर् प्राचीन लोग; पट्ट पोतु-मर जायें; उलकमुम् उयिरुम्-लोकों को और लोकवासियों को; पऱ्ऱु अऱ-निशान मिटाकर; चुट्ट पोतु-जला डालूँ; अल्लतु-नहीं तो; मयिलै काण्कुमो-मयूरनिभ सीता को देख सकूँगा क्या। ५२५

युद्ध हो, मैं शर छोड़ूँ और वे शर ब्रह्मा के सत्यलोक को जला दें; सुर आदि प्राचीन लोग मर जायँ; सभी लोक और लोकवासी नामोनिशान न छोड़कर मिट जायँ —विना ऐसा हुए मैं अपनी मोर-सी सुन्दरी सीता को देख पाऊँगा क्या ? । ५२५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दरुममॅन् ऱोरुपॊरु डऴ्ळ वञ्जियान्, तॅरुमरुहिऱ्पदु शॅऱ्ऱनर् देवरो
डॊरुमैयिन् वन्दन रेनु मुय्हलार्, उरुमॅन वॊलिपडु मुरवि लोयॅन्ऱान् 526

उरुम् ॲन–अशनि के समान; ऒलि पटुम् (ज्या-) स्वन देनेवाला; उरम्–दृढ़; विलोय्–धनु के धारक; यान्–मेरा; तॅरुमरुकिऱ्पतु–भ्रमित रहना; तरुमम् ॲन्ऱ ऒरु पॊरुळ्–धर्म नाम के उस चीज को; तळ्ळ–उपेक्षित करने से; अञ्चि–डरकर; चॅऱ्ऱनर्–शत्रु; तेवरोटु–देवों के साथ; ऒरुमैयिन्–एकत्र हो; वन्तनर् एनुम्–आयें तो भी; उय्कलार्–बचेंगे नहीं; ॲन्ऱान्–(श्रीराम ने) कहा। ५२६

वज्रघोष-सी टंकार से युक्त धनु के धारण करनेवाले ! मैं अब भ्रमित-सा चुप रहता हूँ, क्यों ? मालूम है ? धर्म नाम का जो मार्ग है, उसका उल्लंघन करने से डरता हूँ। ये शत्रु देवों से मिलकर एकत्र हो आयें तो भी वे बच नहीं पायेंगे। यह निश्चित है ! श्रीराम यों बोले। ५२६

इळवलु मुरैशॅय्वा नॅण्णु नाळिनि, उळवल कूदिरु मिऱुदि युऱ्ऱदाल्
कळवुशॅय् दवनुऱै काणुङ् गालमी, दळविऱन् दयर्वदॅ नाणै याऴियाय् 527

इळवलुम्–लघुस्वामी ने भी; उरै चॅय्वान्–उत्तर में कहा; आणै आऴियाय्–आज्ञाचक्रधर; ॲण्णुम् नाळ्–निर्धारित (अवधि) दिन; इनि उळ अल–अब नहीं रहे; कूतिरुम्–शरत्काल भी; इऱुति उऱ्ऱतु–अन्त हो गया; कळवु चॅय्तवन्–(देवी की) चोरी जिसने की, उसका; उऱै–वासस्थान; काणुम् कालम्–(ढूँढ़) लेने का काल; इतु–यह (आ गया); अळवु इऱन्तु–सीमा पारकर (अत्यधिक); अयर्वतु ॲन्–आयास करना क्यों। ५२७

लघुभ्राता ने भी उत्तर दिया कि आज्ञाचक्रधारी ! हमने जो अवधि बनायी थी उसके दिन अब बाकी नहीं रहे। शरत्काल भी व्यतीत हो गया। देवी सीता को जो चुरा ले गया है उसका वासस्थान ढूँढ़ पाने का समय अभी आ गया है। अब आपका अपार दुःख करना क्यों ? । ५२७

तिरैशॅयत् तिण्गड लमिऴ्दञ् जॅङ्गणान्
उरैशॅयत् तरिनुमत् तॊऴिलु वन्दिलन्
वरैमुदऱ् कलप्पैहण् माडु नाट्टित्तन्
कुरैमलर्त् तडक्कैयाऱ् कडैन्दु कॊण्डनन् 528

तिरै चॅय्–तरंगकारी; अ तिण् कटल्–वह सशक्त (क्षीर-) सागर; अमिऴ्तम्–अमृत को; चॅम् कणान्–अरुणाक्ष (श्रीविष्णु) के; उरै चॅय–(दे दो) कहने पर; तरिनुम्–दे सकता था, तो भी; अ तॊऴिल्–वह (आज्ञा चलाने का) काम; उवन्तिलन्–न चाहकर; वरै मुतल्–पर्वत आदि; कलप्पैकळ्–उपकरण; माटु नाट्टि–पार्श्व में स्थापित करके; तन्–अपने; कुरै–(आभरणों के कारण) ध्वनि उठानेवाले; मलर्–कमल-सम; तट कैयाल्–विशाल हाथों से; कटैन्तु–मथकर ही; कॊण्टनन्–(अमृत) पाया (श्रीविष्णुदेव ने)। ५२८

तरंगकारी वह सबल क्षीरसागर अरुणाक्ष श्रीविष्णु के कहने मात्र से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अमृत निकाल दे सकता था। पर श्रीविष्णु ने वैसा प्राप्त करना नहीं चाहा। (वे काल, उपकरण, प्रयास आदि के महत्त्व को स्थापित करना चाहते थे, इसलिए) मन्दरपर्वत आदि उपकरण यथास्थान स्थापित करके उन्होंने आभरणों के कारण ध्वनि निकालनेवाले अपने कमल-सम हस्तों से समुद्र को मथा। तब जाके अमृत ग्रहण किया। ५२८

मनत्तितिनि नुलहॅलाम् वहुत्तु वाय्प्पॅयुम्
निनैप्पिन नायिनु नेमि योडुवे
ऱॅनैप्पल पडैक्कल मेन्दि यारैयुम्
विनैप्पॅरुञ् जूळ्च्चियिऱ् पॉरुदु वॅल्लुमाल् 529

मनत्तितिनिन्–मन (के संकल्प मात्र) से; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों को; वकुत्तु–बनाकर; वाय् पॅयुम्–अपने मुख में डाल सकनेवाले; निनैप्पिनन्–संकल्प-शक्ति के हों तो भी; नेमियोटु–चक्र के साथ; वेऱु–अन्य; ॲनै–कितने ही; पल नॅटुम् पटैक्कलम्–अनेक हथियार; एन्ति–धारण करके; यारैयुम्–(दुष्कृत) सभी को; विनै–युद्धोचित; पॅरुम् चूळ्च्चियिन्–गम्भीर उपायों द्वारा; पॉरुतु–सामना करके; वॅल्लुम्–जीतते हैं। ५२९

और भी वे विष्णुदेव सारे लोकों की सृष्टि करके फिर उन्हें निगल लेने का भी सामर्थ्य रखते हैं। यह उनके संकल्प मात्र से हो सकता है। तो भी वे अपना चक्रायुध और अन्य कितने ही हथियारों का प्रयोग करके, और अनेक युद्धतंत्रों को अपनाकर किसी भी शत्रु का संहार करते हैं। ५२९

कण्णुडै नुदलिनन् कणिच्चि वानवन्, विण्णिडैप् पुरञ्जुड वॅहुण्ड मेलैनाळ्
ॲण्णिय शूळच्चियु मीट्टिक् कॉण्डवुम्, अण्णले यॉरुवरा लऱैयऱ् पालवो 530

अण्णले—महिमायुक्त; कण् उटै नुतलिनन्–भाल-नेत्र (शिवजी); कणिच्चि वानवन्–परशु शस्त्रधर; विण् इटै–आकाश में; पुरम् चुट–त्रिपुर जलाने हेतु; वॅकुण्ट–कुपित हुए, तब; मेलै नाळ्–उस पहले के दिन; ॲण्णिय चूळ्च्चियुम्–जो सोचे वे उपाय; ईट्टि—संग्रह कर; कॉण्टवुम्–जो लिये (वे उपकरण); ऑरुवराल् अऱैयऱ् पालवो–किसी से वर्णित हो सकते हैं क्या। ५३०

महिमावान ! भालनेत्र परशुधर शिवजी की बात लीजिए। त्रिपुर-दहन के लिए उन्होंने संकल्प किया। उन्हें क्रोध आया। तब क्या-क्या उपाय किये, क्या-क्या हथियारों को जुटा लिया —यह सब वर्ण्य हो सकता है क्या ? । ५३०

आहुनर् यारैयुन् दुणैव राक्किप्पिन्, एहुऱु नाळिडै यॅय्दि यॅण्णुव
शेहुऱप् पन्मुऱै तॅरुट्टिच् चॅय्दपिन्, वाहैयॅन् ऱॉरुपोरुळ् वळुवऱ् पालदो 531

आकुनर् यारैयुम्–(सहायक) बननेवाले सभी को; तुणैवर आक्कि–साथी बना लेकर; ॲण्णुव–विचारणीय; चेकु उऱ–दृढ़ रूप से; पल मुऱै तॅरुट्टि–अनेक बार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

स्पष्ट करके; पिन्-बाद; एकुऱु-जाने के; नाळ् इटै-दिन में; ऍय्ति—जाकर; चॅय्त पिन्-(कार्य) करने के उपरान्त; वाकै-विजय; ऍन्ऱ ऑरु पॊरुळ्-नामक एक विषय; वऴुवल् पालवो-चूक जा सकेगा क्या । ५३१

सहायकों को एकत्र कर लेना, विचारणीय बातों पर ध्यान देकर, बार-बार सोचना, बाद निश्चय पर आना, गमन के योग्य समय पर जाना, कार्यस्थल पर पहुँचना —इस रीति से काम होने पर विजय नामक चीज़ बच सकेगी क्या ? । ५३१

अऱत्तुऱै तिऱम्बिन राक्क राऱ्ऱलान्
मऱत्तुऱै नमक्कॆन वलिक्कुम् वन्मैयोर्
तिऱत्तुऱै नन्नॆऱि तिऱम्ब लुण्डॆनिन्
पुऱत्तिनि यार्तिऱम् बुहऴुम् वाहैयुम् 532

अऱम् तुऱै-धर्म-मार्ग; तिऱम्पित्तर्-जो छोड़ गये, वे; अरक्कर्-राक्षस; आऱ्ऱलान्-(शरीर, वर और सेना के) बल से; मऱम् तुऱै-पाप-मार्ग; नमक्कु ऍन्-हमारा, ऐसा; वलिक्कुम्-सोचनेवाले; वन्मैयोर्-कठोरमन हैं; तिऱम् तुऱै-उत्तम रीति के; नल् नॆऱि-सन्मार्ग से; तिऱम्पल् उण्टु-डिग जायँगे; ऍनिन्-तो; पुऱत्तु इति-फिर अब; पुकऴुम् वाकैयुम्-कीर्ति और विजय; यार् तिऱम्-किसके पास होगी । ५३२

धर्ममार्गातिक्रमी हैं राक्षस लोग । वे शरीर, वर और सेना के बल पर विश्वास रखते हैं और उनका मन पाप-मार्ग को अपना समझने की कठोरता रखता है ! वे उत्तम रीति के सन्मार्ग से हटकर व्यवहार करते हैं । फिर जीत और कीर्ति कहाँ जा सकेगी ? आपको छोड़कर उनकी हो सकती है क्या ? । ५३२

पॆन्दॊडिक् किडर्हळै परुवम् पैयवे, वन्दडुत् तुळदिनि वरुत्त नीङ्गुवाय्
अन्दणर्क् कामऱ मरक्करक् काहुमो, सुन्दरत् तनुवलाय् शॊल्लु नीयॆन्ऱान् 533

पॆन्तॊटिक्कु-कुन्दन-भूषण-अलंकृत सीताजी के; इटर् कळै-दुःख-निवारण का; परुवम्-काल; पैयवे वन्तु—धीरे आकर; अटुत्तु उळतु-पास पहुँचा है; इनि-अब; वरुत्तम्-दुःख; नीङ्कुवाय्-छोड़ दें; अऱम्-धर्म; अन्तणर्क्कु आम्-दयावानों का होगा; अरक्कर्क्कु-(नृशंस) राक्षसों का; आकुमो-होगा क्या; चुन्तरम्-सुन्दर; तनु वलाय्-धनु-समर्थ; नी चॊल्लु-आप कहिए; ऍन्ऱान्-(लक्ष्मण ने) कहा । ५३३

कुन्दन-निर्मित आभरण-भूषित सीतादेवी के कष्टों को दूर करने का समय अब धीरे-धीरे आकर पास पहुँच गया है । अब आप दुःख छोड़ दें । धर्म-मार्ग दयावानों का है । नृशंस राक्षसों का हो सकता है क्या ? हे सुन्दर धनुर्विद्याविशारद ! आप ही कहें । —लक्ष्मण यों बोले । ५३३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उऱुदियः(ह्) देयॆऩ वुणर्न्द वूऴियाऩ्
इऱुदियुण् डेहॊलिम् मारिक् कॆऩ्बदोर्
तॆऱुतुय रुऴुन्दऩन् ऱेयत् तेय्वुशॆऩ्
ऱऱुदियै यडैन्ददप् परुव माण्डुपोय् 534

अ.ं.तु उऱुतिये–(उनका कहा) वह हितकारी है; अॆऩ–ऐसा; उणर्न्त–जो समझे, वे; ऊऴियाऩ्–युगपति (जब); इ मारिक्कु–इस वर्षा का; इऱुति उण्टु कॊल्–अन्त होगा क्या; अॆऩ्पतु–ऐसा, सोचकर; ओर् तॆऱु तुयर्–एक गहन दुःख से; उऴुन्तऩ्–पीड़ित होकर; तेय–कृश हुए (तब); अ परुवम्–वह वर्षाकाल; आण्टु–अपना शासन पूरा करके; पोय्–जाकर; तेय्वु चॆऩ्ऱु–क्षीण होता हुआ; अऱुतियै अटैन्ततु–अन्त को प्राप्त हुआ। ५३४

श्रीराम ने अपने छोटे भाई के वचन सुने और माना कि उनके वचन हितकारी हैं। वे यह सोचकर दुःखी थे कि क्या इस वर्षा का अन्त भी कहीं होगा और उसी चिन्ता में घुलकर कृश हो रहे थे। अब वह काल अपना अधिकार चलाने के बाद धीरे-धीरे क्षीण होने लगा और अन्त को मिल गया। ५३४

मऴ्हलिल् पॆरुङ्गॊडै मरुवि मण्णुळोर्, उऴ्हिय पॊरुळॆला मुदवि यऱ्ऱपो
दॆऴ्हलि लिरवलर्क् कीव दिऩ्मैयाल्, वॆऴ्हिय मान्दरिऩ् वॆऴुत्त मेहमे 535

मऴ्कल् इल्–अक्षय; पॆरु कॊटै–बड़ी दानशीलता; मरुवि–जन्म से लेकर; मण् उळोर्–पृथ्वीलोकवासी; उऴ्किय–जो चाहते थे; पॊरुळ् अॆलाम्–पदार्थ सब; उतवि–देकर; अऱ्ऱ पोतु–धनहीन हो जाने पर; अॆऴ्कल् इल्–अनुपेक्षणीय; इरवलर्क्कु–याचकों को; ईवतु इऩ्मैयाल्–देने को न रहने के कारण; वॆऴ्किय–लाज का अनुभव करनेवाले; मान्तरिऩ्–(दानी) मनुष्यों के समान; मेकम्–मेघ; वॆऴुत्त–श्वेत बन गये। ५३५

तब मेघ श्वेत हो गये। वे उन दानशील उदार पुरुषों के समान श्वेत हो गये, जो जन्मजात अक्षय दानशीलता के कारण अपने सारे धन पृथ्वीवासी सभी याचकों को उनकी इच्छानुसार देने के बाद अब अनुपेक्षणीय याचक को देने के लिए कुछ न रहने के कारण लज्जायुक्त हो गये हों। ५३५

तीविऩै नल्विऩै यॆऩ्ऩत् तेऱियप्, पेय्विऩैप् पॊरुडऩै यऱिन्दु पॆऱ्ऱदोर्
आय्विऩै मॆय्युणर् वणुह वाशुऱु, मायैयिऩ् माय्न्ददु मारिप् पेरिरुळ् 536

तीविऩै–पापकृत्य; नल्विऩै–पुण्यकार्य; अॆऩ्ऩ तेऱि–क्या, यह सोच-विचारकर; पेय् विऩै–उस पिशाचकृत्यप्रेरक; पॊरुळ् तऩै–धन को; अऱिन्तु–पहचानकर; पॆऱ्ऱतु–प्राप्त; ओर्–अनुपम; आय्विऩै–विवेकशील; मॆय् उणर्वु–तत्त्वदर्शन; अणुक–आ जाने पर; आचु उऱु–दोषपूर्ण; मायैयिऩ्–माया (अविद्या) की तरह; मारि पेर् इरुळ्–मेघों के कारण उत्पन्न बड़ा अन्धकार; माय्न्ततु–मिट गया। ५३६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शरत्काल के आते ही मेघाच्छादन से बना रहा अन्धकार हट गया। वह वैसे हट ही गया, जैसे विवेकशील तत्त्वज्ञान के आने पर दोषपूर्ण मायाजन्य अविद्या हट जाती है। यह तत्त्वज्ञान कैसा ? पाप-पुण्य की विवेचना करके, शुद्धमन होने पर पापकारी धन का स्वभाव मालूम हो जाता है। उसके फलस्वरूप यह तत्त्वज्ञान प्राप्त होता है ! । ५३६

मूळमर् मुऱ्ऱुऱ मुरश विन्दबोल्, कोळमै कणमुहिल् कुमुऱ लोवित्त
नीळडु कणैयॅनत् तुळियु नीङ्गित्त, वाळुऱै युऱ्ऱॅन मऱैन्द मिन्नॅलाम् 537

मूळ् अमर्–छिड़ा हुआ युद्ध; मुऱ्ऱु उऱ–समाप्त होने पर; मुरचु–भेरियाँ; अविन्त पोल्–बन्द हुईं जैसे; कोळ् अमै–सबल; कणम् मुकिल्–मेघगण; कुमुऱल् ओवित्त–गर्जन-रहित हो गये; नीळ्–लम्बे; अटु–संहारक; कणै अॅत्त–शरों के समान; तुळियुम्–बूँदें भी; नीङ्कित्त–गिरने से रह गयीं; वाळ्–तलवारें; उऱै–म्यान में; उऱ्ऱु अॅत्त–चली गयीं, जैसे; मिन् अॅलाम्–सभी बिजलियाँ; मऱैन्त–छिप गयीं। ५३७

परस्पर वैर के कारण युद्ध छिड़ जाता है। जब युद्ध बन्द हो जाता है तब भेरियों का बजना भी बन्द हो जाता है और भेरियाँ चुप्पी साध लेती हैं न ! वैसे ही सशक्त मेघ गर्जनहीन हो गये। बूँदें, जो लम्बे संहारक शरों के समान गिरती थीं, रुक गयीं। तलवारें म्यानों में छिप जाती हैं न ! वैसे ही बिजलियाँ भी अदृश्य हो गयीं। ५३७

तडुत्तदा णॅडुन्दडङ् गिरिह डाळ्वरै, अडुत्तनी रॊळिन्दन वरुवि तूङ्गित्त
अॅडुत्तनू लुत्तरि यत्तॊ डॅय्दिनित्, ऱुडुत्तवा निऱत्तुहि लॊळिन्द पोन्ऱुवे 538

तटुत्त–मार्गरोधक; ताळ्–पाद-प्रदेश वाले; नॅटु तट किरिकळ्–ऊँचे और चौड़े पर्वतों की; ताळ्वरै–तराइयों में; अटुत्त–रहा; नीर्–जल; ऒळिन्तत–सूख गये; अरुवि–सरिताएँ; तूङ्कित्त–बहीं; अॅटुत्त–धृत; नूल् उत्तरियत्तॊटु–सूती उत्तरीय के साथ; अॅय्ति निऱ्ऱु–युक्त रहकर; उटुत्त–पहने हुए; वाल् निऱम् तुकिल्–श्वेत रंग के (अधो-)वस्त्र से; ऒळिन्त–रहित हुए; पोन्ऱु–जैसे रहे। ५३८

उन्नत और विशाल पर्वतों की तराइयों में जमा रहा जल बह गया। पर ऊपर से बहनेवाली सरिताओं में जल था। तब ऐसा लगता था मानो पर्वत के श्वेत अधोवस्त्र हट गये और वे श्वेत कपास के उत्तरीयों के साथ खड़े थे। ५३८

मेहमा मलैहळित् पुऱत्तु वीदलात्, माहमा ऱियावैयुम् वारि यऱ्ऱत्त
आहैयाऱ् ऱहविळन् दळिवि नत्बॊरुळ्, पोहवा ऱॊळुहलात् शॅल्वम् बोन्ऱुवे 539

माकम् याऱु–ऊपर बहनेवाली नदियाँ; यावैयुम्–सभी; मेकम्–मेघों के; मा मलैकळित् पुऱत्तु–बड़े पर्वतों के ऊपर से; वीतलाल्–हट जाने से; वारि अऱ्ऱत्त–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जलहीन हो गयीं; आकैयाल्–इसलिए; तकवु इऴन्तु–योग्यता खोकर; अऴिवु इल्–अमोघ; नल् पॊरुळ्–शुभकारी (पुण्य-) तत्त्व; पोक–रिक्त हो जाने से; आऱु ऒऴुकलान्–सन्मार्ग पर न चलनेवाले का; चॆल्वम्–धन (जो मिट जायगा); पोन्ऱ–उसके समान थीं। ५३९

मेघ छँट गये और पर्वत के ऊपरी भाग में बहनेवाली नदियाँ जलहीन हो रहीं। कोई आदमी कुमार्गगामी है, तब योग्य और अमोघ स्वभाव का पुण्य क्षीण हो जाता है और फलस्वरूप धन भी चला जाता है। उन नदियों का जल भी उसी तरह शून्य हो गया। ५३९

कडन्दिऱन् दॆऴुहळि ऱऩैय कार्मुहिल्
इडन्दुऱन् देहलिऱ् पॊलिन्द दिन्दुवुम्
नडन्दिऱ ऩविल्वुऱु नङ्गै मार्मुहम्
पडन्दिऱन् दुरुवलिऱ् पॊलियुम् पान्मैपोल् 540

कटम्–मदनीर; तिऱन्तु ऒऴु–अत्यधिक खुलकर जिन पर बहता है; कळिऱु अऩैय–उन हाथियों के समान; कार् मुकिल्–काले मेघ; इटम् तुऱन्तु–आकाश स्थल छोड़कर; एकलिन्–चले (जाने से); इन्तुवुम्–इन्दु भी; पटम् तिऱन्तु–पट खोलते हुए; उरुवलिन्–हटाने पर; तिऱम् नटन्–कलापूर्ण नृत्य; नविल्वुऱु–करनेवाली; नङ्कैमार्–नर्तकी स्त्रियों के; मुकम्–मुखों के; पॊलियुम् पान्मै पोल्–शोभने के प्रकार के समान; पॊलिन्ततु–शोभा। ५४०

काले मेघ अत्यधिक मद बहानेवाले गजों के समान थे। वे आकाश को छोड़कर चले गये। तब इन्दु उदित हुआ। पर्दे के खुलने पर चतुर नर्तकियों का मनोरम मुख जैसे शोभायमान दिखता है, वैसे ही वह इन्दु शोभायमान लगा। ५४०

पाशिऴै मडन्दैयर् पहट्टु वॆम्मुलै, पूशिय शन्दऩम् पुऴुहु कुङ्गुमम्
मूशिऩ मुयङ्गुशे ऱुलर मॊण्डुऱ, वीशिय नऱुम्बॊडि विण्डु वाडैये 541

पाचिऴै मटन्तैयर्–कुन्दन के बने आभरणों से भूषित स्त्रियों के; पकटु वॆम् मुलै–(हाथी के) कुम्भों-सम आकर्षक स्तनों पर; पूचिय–चर्चित; चन्ततम्–चन्दन का लेप और; पुऴुकु–कस्तूरी का लेप; कुङ्कुमम्–केसर का लेप; मूचित–इनके मिश्रण से; मुयङ्कु चेऱु–प्रणयोत्तेजन के लिए (वक्ष व स्तनों पर अंकित) चित्र का लेप; उलर–सुखाते हुए; विण्टु वाटै–पर्वतीय पवन; नऱुम् पॊटि–सुगन्धित मकरन्द; मॊण्टु–लेकर; उऱ–खूब; वीचिय–बहा। ५४१

अब पर्वतों पर से बहनेवाली जाड़े की हवा सुबासित मकरन्दकण को ले आकर स्त्रियों पर लीप देती थी। अतः उनके स्तनों और वक्षों पर जो चन्दन, कुंकुम और कस्तूरी का लेप लगा हुआ था, वह सूख गया। ५४१

मऩ्ऩवऩ् ऱलैमहन् वरुत्त मार्ऱुवान्
नऩ्ऩॆडुम् बरुवम्वन् दणहिऱ् ऱाहलाल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊन्निऩै नाडिय पोदु मॆऩ्बपोल्
अऩ्ऩमुन् दिशैदिशै यहऩ्ऱ विण्णिऩ्वाय् 542

मऩ्ऩवऩ्-चक्रवर्ती (दशरथ) के; तलै मकऩ्-ज्येष्ठ पुत्र श्रीराम के; वरुत्तम् माऱ्ऱुवाऩ्-दुःख को दूर करने के लिए; नल् नॆटु-अच्छा और लम्बा; परुवम्-काल; वऩ्तु अणुकिऱ्ऱु-आकर नियराया; आकलाल्-इसलिए; पॊऩ्निऩै-देवी को; नाटिय-खोजते; पोतुम्-हम जायँ; ऍऩ्प पोल्-कहते जैसे; अऩ्ऩमुम्-हंस भी; विण्णिऩ् वाय्-आकाश में; तिचै तिचै-दिशा-दिशा में; अकऩ्ऱ-दूर-दूर (उड़ते) गये। ५४२

हंस पंक्तियाँ बाँधे आकाश में दिशा-दिशा में उड़ रहे थे। 'चक्रवर्ती दशरथ के श्रेष्ठ पुत्र श्रीराम का दुःख दूर करने का दीर्घ रूप से अच्छा रहनेवाला काल आ गया है। अब हम भी जाकर स्वर्णसुन्दरी सीता को खोजें' —हंस शायद यही सोचकर उड़ रहे थे! । ५४२

तऱ्जिऱै यॊडुङ्गिऩ तऴुवु मिऩ्ऩलिऩ्, नॆञ्जुऱु मम्मरुम् निऩैप्पु नोडिऩ
मञ्जुऱु नॆडुमऴै पिरिद लाऩ्मयिल्, अॆञ्जिऩ मिदिलैनाट् टऩ्ऩ मॆऩ्ऩवे 543

मयिल्-मोर; मञ्चु उऱु-मेघों की; नॆटु मऴै-अधिक वर्षा; पिरितलाऩ्-रुक गयी, इसलिए; तम् चिऱै ऒटुङ्किऩ-बन्द किये हुए पंख वाले हो गये; तऴुवुम् इऩ्ऩलिऩ्-लगे दुःख के कारण; नॆञ्चु उऱु-मन में उठे; मम्मरुम्-भ्रम; निऩैप्पुम्-सोच; नीटिऩ-बढ़े; मितिलै नाट्टु अऩ्ऩम् ऍऩ्ऩ-मिथिला की हंसिनी (सीता) के समान; ऍञ्चिऩ-क्षीण-आनन्द हुए। ५४३

मेघ लुप्त हो गये और वर्षा रुक गयी। इसलिए मोरों ने अपने पंखों को समेट लिया। उनके मन में दुःख भर गया और भ्रम तथा धूमिल विचारों ने घर कर लिया। मिथिला में जनित, मोर (समान सीताजी) के समान वे सन्तोषहीन हो रहे। ५४३

वञ्जऩैत् तीविऩै मऱ्ऱद मादवर्
नॆञ्जॆऩत् तॆळिन्दनीर् निरन्दु तोऩ्ऱुव
पञ्जॆऩच् चिवक्कुमॆऩ् पादप् पेदैयर्
अञ्जऩक् कण्णॆऩप् पिऱऴुन्द वाडऩ्मीऩ् 544

वञ्चऩै तीविऩै-वंचक कार्योद्दीपक पाप-कर्म; मऱ्ऱ मातवर्-जिन्हें मालूम ही नहीं था, उन महान तपस्वियों के; नॆञ्चु ऍऩ-मन के समान; निरन्तु तोऩ्ऱुव-फैला पड़ा था; तॆळिन्त नीर्-स्वच्छ जल; आटल् मीऩ्-(उसमें) क्रीड़ा करनेवाली मछलियाँ; पञ्चु ऍऩ-लाल रुई कहने भर से; चिवक्कुम्-लाल होनेवाले; मॆल् पातम्-कोमल चरणों की; पेतैयर्-स्त्रियों की; अञ्चऩम् कण् ऍऩ-अंजन-लगी आँखों के समान; पिऱऴुन्त-चलित थीं। ५४४

सब जगह जल वंचना और पाप न जाननेवाले श्रेष्ठ तपोधनों के मन के समान शुद्ध स्वच्छ हो गया। उसमें मछलियाँ उन स्त्रियों की आँखों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के समान चलित थीं, जिनके पैर महावर का नाम लेते ही लाल हो जाते हैं (लाक्षारस लगाने की आवश्यकता ही नहीं होती थी)। ५४४

ऊडिय मडन्दैयर् वदऩ मॉत्तऩ, ताडॉऱु मलर्न्दऩ मुदिर्न्द तामरै
कूडिऩर् तुवरिदळ्क् कोलङ् गॉण्डऩ, शेडुऱु नऱुमुहै विरिन्द शॅङ्गिडै 545

ताळ् तॉऱुम्–नाल-नाल पर; मलर्न्तऩ–जो खिले थे; मुतिर्न्त–वर्धित; तामरै–कमल के फूल; ऊटिय–रूठी हुई; मटन्तैयर्–स्त्रियों के; वतऩम् ऑत्तत–मुखों के समान थे; चेटु उऱु–ऊँची उगी; नऱु मुकै विरिन्त–सुवासित कलियाँ जिन पर खिली थीं; चॅम् किटै–वे लाल "किटै" (खुखरी ?) नाम की जल-लताएँ; कूटिऩर्–प्रिय के साथ मिली हुई स्त्रियों के; तुवर् इतळ्–लाल अधरों की; कोलम् कॉण्टऩ–सुन्दरता से युक्त हो गयीं। ५४५

नाल-नाल पर कमल पूर्णता को प्राप्त होकर रूठी हुई स्त्रियों के मुखों के समान एक ओर झुक गये। लाल 'किटै' (खुखरी ?) नाम की लता, जिसमें सुबासित कलियाँ ऊपर खिल आयी थीं, स्त्रियों के लाल अधरों का-सा रूप दिखाने लगी। ५४५

कल्वियिऱ् ऱिहळ्हणक् कायर् कम्बलै
पल्विदच् चिऱाअरॅऩप् पहर्व वल्लरि
शॅल्लिडत् तल्लदॉऩ् ऱुरैत्तल् शॅय्हला
नल्लऱि वाळरि ऩविन्द नावॅलाम् 546

कल्वियिल् तिकळ्–विद्या के कारण प्रसिद्ध; कणक्कायर्–पाठशाला के अध्यापक के अधीन; कम्पलै–उच्च शोर के साथ सीखनेवाले; पल्वितच् चिऱार् ऍऩ–अनेक तरह के बालकों के समान; पकर्व–जो बोल (टेर) लगा रहे थे; वल् अरि यावुम्–ज़ोरदार मेंढक सब; चॅल् इटत्तु अल्लतु–जहाँ बात मानी जाय, उस स्थान को छोड़कर अन्यत्र; ऑऩ्ऱु–कोई बात; उरैत्तल् चॅय्या–न कहनेवाले; नल् अऱिवाळरिऩ्–चतुर विद्वानों के समान; ना अविन्त–मौन (-जिह्वा) हो गये। ५४६

पहले मेंढक अध्यापक के सामने उच्च स्वर में पाठ दुहरानेवाले बटुओं के समान टेर लगा रहे थे। अब वे उन विद्वानों के समान मौन-जिह्वा हो गये, जो अनुपयुक्त तथा सम्मानहीन स्थलों में कोई बात नहीं करते। ५४६

शॅऱिपुऩऱ् पूऩ्दुहि ऱिरैक्कै याऱ्ऱिरैत्
तुऱुदहक् काऩ्मडुत् तोडि योदनीर्
ऍऱुळ्वलिक् कणवऩै यॅय्दि याऱॅलाम्
मुऱुवलिक् किऩ्ऱऩ पोऩ्ऱ मुत्तॅलाम् 547

मुत्तु ऍलाम्–मोती सभी; चॅऱि पुऩल्–घने जल रूपी; पू तुकिल्–सुन्दर वस्त्रधारिणी; याऱु ऍलाम्–सभी नदियाँ; तिरै कैयाल्–तरंग रूपी हाथों से;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरैत्तु–समेटकर; उऱु तक–कसकर; काल् मटुत्तु–पैरों से लपेटकर; ओटि–दौड़कर; ओतम् नीर्–सरितापति रूपी; अँऱुऴ्वलि–अतिबली; कण्वत्तै अँय्ति–पति को मिलकर; मुऱुवलिक्किन्ऱ्ऱ–हँसती हों; पोन्ऱ–ऐसे लगे। ५४७

जल का स्वच्छ वस्त्र पहने हुए नदियाँ जो बह रही थीं, वे लहरों रूपी हाथों को उठाते हुए, नालों से होकर, सवेग बहीं और सरितापति, अपने पति का आलिंगन करके बहुत आनन्दित हुईं। उनकी हँसी के समान मोती चमकते थे। (काल में श्लेष है— पैर या चरण और नाला। स्त्रियाँ पैरों पर चलती हैं और नदियाँ नालों के रूप में बहती हैं।)। ५४७

शॊन्निऱै केळवियिऱ् ऱॊडर्न्द मान्दरिन्
इन्निऱप् पशलैयुऱ् ऱिऱुन्द मादरिन्
तन्निऱम् बयप्पय नीङ्गित् तळ्ळरुम्
पॊन्निऱम् बॊरुन्दिऩ पूहत् ताऱॆलाम् 548

पूकम् ताऱु–पूग-गुच्छे; अँलाम्–सभी; चॊल् निऱै–बहुप्रशंसित; केळ्वियिन्–शास्त्र-श्रवण के लिए; तॊटर्न्त–यात्रा पर निकले; मान्तरिन्–पुरुषों (के वियोग) से; इन् निऱम् पचलै–मनोरम हरे रंग को; उऱ्ऱिरुन्त–प्राप्त; मातरिन्–स्त्रियों के समान; तम् निऱम्–अपना हरा रंग; पयप्पय–धीरे-धीरे; नीङ्कि–खोकर; तळ्ळ अरुम्–अनिंद्य; पॊन्निऱम्–स्वर्ण के-से रंग से; पॊरुन्तिऩ–युक्त हुए। ५४८

पूग के गुच्छे अपना (हरा) रंग खोकर स्वर्ण-वर्ण हो गये। जब प्रेमी श्रेष्ठ गुरु से श्रवणज्ञानार्जन हेतु चला जाता है, तब उसकी वियोगिनी के शरीर में एक तरह का हरा रंग फैल जाता है। पूग के गुच्छों का रंग पहले वैसा (हरा) था। पीछे वह रंग बदल जाता है। ५४८

पयिन्ऱुडल् कुळिर्प्पवुम् बऴऩ नीत्तवण्
इयन्ऱिल विळवॆयि लॆऴुदु मॆय्यऩ
वयिन्ऱॊऱुम् वयिन्ऱॊरु मडित्त वायऩ
तुयिन्ऱऩ विडङ्गर्मात् तडङ्ग डोऱुमे 549

इटङ्कर् मा–मगर प्राणी; पयिन्ऱु–(जल में अधिक काल से) पड़े रहने के कारण; उटल् कुळिर्प्पवुम्–शरीर के ठण्डा होने से; अवण् इयन्ऱिल–गहरे स्थानों में न रहकर; पऴऩम् नीत्तु–तडागों को छोड़कर; इळ वॆयिल्–बालसूर्य-किरणों से; अँऴुतुम् मॆय्यऩ–लिप्त-शरीरी होकर; तटङ्कळ् तोऱुम्–तडागों के तटों पर; वयिन् तॊऱुम् वयिन् तॊऱुम्–स्थान-स्थान पर; मटित्त वायऩ–मुख बन्द कर; तुयिन्ऱऩ–सोये। ५४९

मगरों का शरीर अधिक गहरे जल में बहुत दिन पड़े रहने से ठण्डा हो गया। इसलिए वे तीरों पर यत्र-तत्र मुख बन्द किये सोते हुए दिखाई दिये और उनके शरीरों पर धूप पड़ रही थी। ५४९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कॊञ्जुरुङ् गिळिनॆडुङ् गुदलै कूडिन्, अञ्जिऱै यऱुपद वळह् वोळिय
ऍञ्जलिल् कुळैयन् विडैनु डङ्गुव, वञ्जिहळ् पॊलिन्दन् महळिर् मान्वे 550

वञ्चिकळ्–'वञ्जि' नाम की लताएँ; कॊञ्चुरुम् किळि–तुतलानेवाले शुकों के; नॆटु कुतलै–दीर्घ बोलों से; कूटिन्–युक्त होकर; अम् चिऱै–मनोरम पंखों के; अऱु पतम् अळकम्–षट्पदों के रूप में केश की; ओळिय–पंक्तियों के साथ रहतीं; ऍञ्चल् इऱ्–अक्षय; कुळैयन्–पत्रों सहित (आभरणों सहित); इटै नुटङ्कुव–मध्य में लचकती; मकळिर् मान्–स्त्रियों के समान; पॊलिन्तन्–शोभीं। ५५०

('वंजी' लताओं और स्त्रियों में श्लेष है।) 'वंजी' लताओं पर शुक बैठकर मधुर बोली में बोल रहे थे। भ्रमर पंक्तियों में लगे बैठे थे। वे ही केश थे। लता पर बहुत पत्ते थे और स्त्रियों पर बहुत आभरण पाये जाते हैं। ('कुळै' के 'छोटे पत्ते' और 'आभरण' दोनों अर्थ हैं।) लताएँ लचकीली थीं। स्त्रियों की कमरें लचकीली होती हैं। (अतः) वे लताएँ स्त्रियों के समान थीं। ५५०

मऴैपडप् पॊदुळिय मरुदत् तामरै
तऴैपडप् पेरिलैप् पुरैयिऱ् ऱङ्गुव
विऴैपडप् पॆडैयॊडु मॆळ्ळ नळ्ळिहळ्
पुऴैयडैत् तॊडुङ्गिन् पॊच्चं माक्कळ्बोल् 551

मऴै पट–बारिश के कारण; पॊतुळिय–पनपे; मरुतम् तामरै–'मरुद' प्रदेश के कमल की लताएँ; तऴै पट–पत्रों से युक्त हुईं; पेर् इलैयिल्–उनके बड़े पत्तों के; पुरैयिल्–मध्य; तङ्कुव–जो ठहरते हैं; नळ्ळिकळ्–केकड़े; विऴै पट–प्यार के होने से; पॆटैयॊटम्–केकड़ियों के साथ; पॊच्चं माक्कळ् पोल्–अपराधी लोगों के समान; पुऴै–अपनी बिलों को; मॆळ्ळ अटैत्तु–(मिट्टी से) चुपके से बन्द करके; ऒटुङ्किन्–छिपे रहे। ५५१

पानी खूब बरसा था। 'मरुदम' (खेत और बागों के) प्रदेश में कमल की लताओं पर पत्ते घने रूप से उग आये थे। केकड़े उनमें ठहरे थे। अब वे अपनी प्यारी केकड़ियों के साथ बाहर निकल आये और मिट्टी में बिल बनाकर उसमें घुस गये। और उसका मुख मिट्टी से बन्द करके वे अपराधी लोगों के समान छिपे रहने लगे। ५५१

अळित्तन् मुत्तिनन् दोऱ्प वानन्म्
वॆळित्तॆदिर् विऴिक्कवुम् वॆळ्हि मेन्मैयाल्
ऒळित्तन् वामॆन् वॊडुङ्गु हण्णन्
कुळित्तन् मण्णिडैक् कून् नन्दॆलाम् 552

कूनल् ननतु ऍलाम्–कूबड़ वाले घोंघे सभी; अळित्तन्–अपने जाये; मुत्तु इन्म्–मोतियों की राशि के; तोऱ्प–हार जाने से; आनन्म् ऍतिर्–(हरानेवाली स्त्रियों के) आननों के सामने; वॆळित्तु–प्रकट होकर; विऴिक्कवुम्–दृष्टि पड़ने से;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆळ्कि–लजाकर; मेन्मैयाल् ऒळित्तत आम्–मानो बड़प्पन के कारण छिपे; ऍत–ऐसा कहने योग्य रीति से; ऒटुङ्कु कण्णत–उन्मीलित आँखों के साथ; मण्णिटै–पंक के अन्दर; कुळित्तत–मग्न हुए। ५५२

घोंघे भी मिट्टी के अन्दर आँखें मूँदकर मग्न हो छिपे रहे। उन्होंने मोती दिये थे। वे मोती स्त्रियों के दाँतों से होड़ लगा नहीं सके और हार गये। इसलिए घोंघों को अपमान लगा! वे उन स्त्रियों के सामने प्रकट रूप से आना नहीं चाहते। यह किसी को मालूम नहीं था। सभी समझने लगे कि ये घोंघे अपने बड़प्पन के कारण स्वयं ही मिट्टी के अन्दर चले गये हैं। ५५२

10. किट्किन्दैप् पडलम् (किष्किन्धा पटल)

अन्न काल महलु मळवित्तिल्, मुन्न वीर त्तिळवलै मुन्बित्तोय्
शोन्न वॆल्लैयि नूङ्गिनुम् तूङ्गिनन्, मन्नन् वन्दिल नॆन्शॆय्द वाऱरो 553

अन्न कालम्–वैसा काल; अकलुम् अळवित्तिल्–जब बीता तब; मुन् अव् वीरन्–अग्रगण्य वीर श्रीराम; इळवलै (नोक्कि)–अपने छोटे भाई को देखकर; मुन्पित्तोय्–बली; चॊन्न ऍल्लैयिन्–कथित अवधि के; ऊङ्किनुम्–बीत जाने पर भी; मन्नन्–राजा (सुग्रीव); तूङ्किनन्–देर करता है; वन्तिलन्–नहीं आया; चॆय्त आऱु–(वचन-पालन) करने का ढंग भी; ऍन्–कैसा। ५५३

जब वह (वर्षा) काल बीता तब वीरों में अग्रगण्य वीर श्रीराम लघुभ्राता लक्ष्मण से बोले। बली वीर! हमने जो अवधि निर्धारित की थी, वह बीत गयी। उसके बाद भी राजा सुग्रीव देर करता है। नहीं आया है। उसका वचनपालनक्रम भी कैसा है, देखो। ५५३

पॆऱल रुन्दिरुप् पॆऱ्ऱुद विप्पॆरुम्, तिऱत्ति नॆन्दिलन् शीर्मैयिऱ् ऱीर्न्दनन्
अऱम ऱन्दन नन्बु किडक्कनम्, मऱन ऱिन्दिलन् वाळ्विन् मयङ्गिनान् 554

पॆऱल् अऱु–दुष्प्राप्य; तिरु पॆऱ्ऱु–(राज्य-) धन पाकर; उतवि–सहायता का; पॆरुम् तिऱल्–बड़ा महत्त्व; नित्तॆन्तिलन्–न सोचा (उसने); चीर्मैयिन्–सदाचरण से; तीर्न्ततन्–डिग गया; अऱम्–धर्म; मऱन्ततन्–भुला दिया; अन्पु किटक्क–स्नेह एक ओर रहे; नम् मऱन्–हमारी वीरता; अऱिन्तिलन्–नहीं जानी; वाळ्विन्–राज्य-जीवन में; मयङ्कितान्–भ्रमित रह गया। ५५४

हमारी सहायता से उसे दुष्प्राप्य राजधन मिला। वह इस सहायता का महत्त्व नहीं समझता। उचित आचरण से डिग गया। उसने कृतज्ञता, वचन-पालन आदि धर्म भी भुला दिया। स्नेह भी भूल गया, वह एक ओर रहे! हमारी वीरता भी भूलकर तो वह राज-जीवन में मोहित हो रहता है। ५५४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नन्ऱि कॊन्ऱरु नट्पिऩै नारऱुत्, तॊन्ऱु मॆय्म्मै शिदैत्तुरै पॊय्त्तुळान्
कॊन्ऱु नीक्कुदल् कुऱ्ऱत्तु नीङ्गुमाल्, शॆन्ऱु मऱ्ऱवऩ् शिन्दैयैत् तेर्हुवाय् 555

नन्ऱि कॊन्ऱु–कृतघ्न बनकर; अरु नट्पिऩै–अच्छी मित्रता का; नार् अऱुत्तु–बन्धन (सम्बन्ध) काटकर; ऒन्ऱुम्–सुबद्ध; मॆय्म्मै–सत्य को; पळुताक्कि–बिगाड़कर; उरै पॊय्त्तुळान्–जो वचन को भी झूठा बना चुका, उसे; कॊन्ऱु नीक्कुतल्–मारकर हटाना; कुऱ्ऱन्तु–अपराध से; नीङ्कुम्–हटा रहेगा; आल्–इसलिए; चॆन्ऱु–जाकर; अवऩ् चिन्तैयै–उसका मन; तेर्कुवाय्–परख आओ। ५५५

जो आदमी कृतघ्न बनता है, उत्तम मित्रता का सम्बन्ध तोड़ता और सबके लिए पालनयोग्य सत्य को भी बिगाड़ता है और वचन-भंग करता है, उसको मार-मिटाना अपराध नहीं होगा। इसलिए तुम जाकर उसका अभिप्राय जान आओ। ५५५

वॆम्बु कण्डहर् विण्बुह वेरऱुत्, तिम्बर् नल्लऱञ् शॆय्य वॆडुत्तविल्
कॊम्बु मुण्डरुङ् कूऱ्ऱमु मुण्डॆङ्गळ्, अम्बु मुण्डॆन्ऱु शॊल्लुनम् माणैये 556

वॆम्पु कण्टकर्–नृशंस दुष्टों को; विण् पुक–स्वर्ग पहुँचाते हुए; वेर् अऱुत्तु–निर्मूल बनाकर; इम्पर्–इहलोक में; नल् अऱम् चॆय्य–सद्धर्मस्थापन के लिए; ऎटुत्त–जो हाथ में लिया है, हमने; विल् कॊम्पुम्–धनुर्दण्ड भी; उण्टु–है; अरुम्–दुद्धर्ष; कूऱ्ऱमुम् उण्टु–यम भी है; ऎङ्कळ् अम्पुम् उण्टु–हमारे शर भी हैं; ऎन्ऱु–ऐसा; नम् आणै–हमारी शपथ; चॊल्लु–कहो। ५५६

हमारे पास यह धनुर्दण्ड है, जिसको हमने नृशंस दुष्कृतों को आकाश में भेजने और इस लोक में सद्धर्म-स्थापन करने के लिए रखा है। और यम भी है, मरा नहीं है। हमारे शर भी हैं। यह सब स्मरण कराके हमारी आज्ञा सुनाओ। ५५६

नञ्ज मन्न वरैनलिन् दालदु, वञ्ज मन्ऱु मनुवळक् कादलान्
अञ्जि लम्बदि लॊन्ऱऱि यादवऩ्, नॆञ्जि निन्ऱु निलाव निऱुत्तुवाय् 557

नञ्चम् अन्नवरै–विष-समान खलों को; नलिन्ताल्–दण्डित करें तो; अतु–वह; मनु वळक्कु–मनुनीति है; आतलाल्–इसलिए; वञ्चम् अन्ऱु–वंचना नहीं है; अञ्चिल् अम्पतिल्–पाँचवीं उमर में या पचासवीं उमर में; ऒन्ऱु अऱियातान्–जो (कर्तव्य) कुछ नहीं जानता; नॆञ्चिल्–उसके मन में; निन्ऱु निलाव–स्थिर रूप से रहे, ऐसा; निऱुत्तुवाय्–यह विचार रखो। ५५७

विष-सम खलों को दण्ड देना मनुधर्म-सम्मत कार्य है। वह कपट या वञ्चना नहीं होगा। सुग्रीव, लगता है कि पाँच (साल की आयु) में भी कुछ नहीं समझा (सीख चुका है); और पचास में भी कुछ नहीं जानता। उसके मन में बात बैठ जाय, ऐसा समझाओ। ५५७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऊरु माऴु मरशुनुञ् जुऱ्ऱमुम्, नीरु माऴुदि रेयॅनिल् नेर्न्दनाऴ्
वारुम् वार लिरेयॅनिन् वानरप्, पेरु माऴु मॅनुम्बोरुळ् पेशुवाय् 558

नीरुम्–तुम और; नुम् चुऱ्ऱमुम्–तुम्हारा परिवार; आऴुम्–जहाँ शासन करता है; ऊरुम्–वह नगर और; अरचुम्–राज्य; आऴुतिरे–(पर) शासन करना चाहो; ऍनिल्–तो; नेर्न्त नाऴ्–कथित दिन में; वारुम्–आओ; वारलिरे ऍनिन्–नहीं आओगे तो; वानरम् पेरुम् माऴुम्–वानर का नाम-निशान मिट जायगा; ऍनुम्–यह; पॊरुळ्–विषय; पेचुवाय्–कहो। ५५८

उनसे कहो— तुम और तुम्हारा शासकदल यह चाहता है कि किष्किन्धा नगरवास और राज्य-शासन टिका रहे तो निर्णीत समय में, (सीता के अन्वेषणार्थ) आ जाओ हमारे पास। अगर नहीं आओगे, तो वानर का नाम-निशान नहीं रहेगा और सब वानर मिट जायँगे। ५५८

इन्नु नाडुदु मिङ्गिवर्क् कुम्वलि, तुन्नि नारै यॅनत्तुणिन् दारॅनिन्
उन्नै यॊप्प वुलहॊरु मून्ऱिनुम्, निन्न लाऱ्पिऱ रिन्मै निहळ्त्तुवाय् 559

इङ्कु–यहाँ; इन्नुम्–और भी; इवर्क्कु–इन (श्रीराम और लक्ष्मण) से बढ़कर; वलि तुन्नितारै–बलवानों को; नाटुतुम्–ढूँढ़ लें (सहायक बना लें); अॅन–ऐसा; तुणिन्तार् ऍनिन्–निश्चय करते हैं, तो; उलकु ऒरु मून्ऱिनुम्–तीनों लोकों में; उन्नै ऒप्प–तुम्हारे समान; निन् अलाल्–तुम्हारे सिवा; पिऱ् इन्मै–दूसरे का अभाव; निकळ्त्तुवाय्–कहोगे। ५५९

समझो कि वे हमसे बलवानों की सहायता ढूँढ़ लेने का विचार रखते हैं, तो कहना, लक्ष्मण, कि तुम्हारे समान वीर इन तीनों लोकों में तुम्हारे सिवा नहीं मिल सकता। ऐसे वीर का अभाव उनसे कहो। ५५९

नीदि यादि निहळ्त्तिनै निन्ऱदु, वेदि याद पॊळ्दु वॅहुण्डिडल्
शादि यादवर् शॊऱ्ऱरत् तक्कनै, पोदि यादियॅन् ऱान्पुहळ्प् पूणिनान् 560

पुकळ् पूणिनान्–प्रशंसा-आभरण; निन्ऱु–अवधान करके; नीति आति–नीति आदि; निकळ्त्तिनै–समझाकर; अतु–वह; वेतियात पॊळ्तु–उनके मन में जब नहीं घुसा तो; नी–तुम; वॅकुण्टिटल्–क्रोध करना; चातियातु–न करके; अवर् चॊल्–उनका (उत्तर-) वचन; तर तक्कनै–(यहाँ मेरे पास) कहो; पोति आति–चलता बनो; ऍन्ऱान्–कहा। ५६०

श्रीराजाराम, जिनका आभरण प्रशंसा ही थी, ज़रा ठहरे। अवधान करके बोले कि लक्ष्मण नीति का उपदेश दो। अगर तुम्हारा वचन उनके मन में प्रवेश नहीं करता तो तुम क्रोध को मत अपनाओ। आकर मेरे पास उनका कथन कह दो। यही तुम्हारा कर्तव्य है। ५६०

आणै शूडि यडितॊळु दाण्डिऱै, पाणि यादु पडर्वोन् पळिपडात्
तूणि तूक्कित् तॊडुशिलै तॊटटरुञ्, जेणि नीङ्गिनन् शिन्दैयि नीङ्गलान् 561

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आणै चूटि–(श्रीराम की आज्ञा को) शिरोधार्य करके; अटि तॊऴुतु–पैरों पर नमन करके; आण्टु–वहाँ; इऱै–ज़रा भी; पाणियातु–विलम्ब किये विना; पटर्वोऩ्–जो चले; पऴि पटा–अनिंद्य (अक्षय); तूणि तूक्कि–तूणीर कन्धे पर लेकर; तॊटु चिलै–शरप्रेषक धनु; तॊट्टु–लेते हुए; चिन्तैयिऩ्–मन से; नीङ्कलाऩ्–(श्रीराम को) न हटाकर (स्मरण करते हुए); अरुम् चेणिल्–जहाँ पीछा करना कठिन है, उस लम्बे मार्ग में; नीङ्किऩऩ्–चले। ५६१

लक्ष्मण ने भगवान श्रीराम की आज्ञा को शिरोधार्य करके उनके चरणों पर प्रणाम किया। फिर वहाँ से विना विलम्ब किये जाने लगे। वे अक्षय तूणीर अपने कन्धे पर उठाते हुए, और शरप्रेषक धनु को साथ लिये हुए श्रीराम के स्मरण के साथ लम्बे मार्ग में ऐसे चले कि उनका उस मार्ग में पीछा कोई नहीं कर सकता था। ५६१

माऱु निऩ्ऱ मरऩु मलैहळुम्, नीऱु शॆऩ्ऱु नॆडुनॆऱि नीङ्गिड
वेऱु शॆऩ्ऱऩऩ् मॆय्म्मैयि ऩोङ्गिय, आऱु शॆऩ्ऱव ऩाणैयि ऩेहुवाऩ् 562

मॆय्म्मैयिऩ्–सत्य के; ओङ्किय आऱु–उत्तम मार्ग में; चॆऩ्ऱवऩ्–चलनेवाले श्रीराम की; आणैयिऩ् एकुवाऩ्–आज्ञा पर चलनेवाले लक्ष्मण; माऱु निऩ्ऱ–मार्ग में बाधा-रूप में रहे; मरऩुम् मलैकळुम्–वृक्ष और पर्वत; नीऱु चॆऩ्ऱु–चूर होकर; नीङ्किट–अलग हुए; वेऱु–अन्य; नॆटु नॆऱि–लम्बे मार्ग में; चॆऩ्ऱऩऩ्–गये। ५६२

सत्य के उन्नत मार्ग पर चलनेवाले श्रीराम की आज्ञा लेकर जो लक्ष्मण चले, उनके मार्ग में रहनेवाले पर्वत और वृक्ष उनकी गमन-गति से चूर होकर अलग हो गये। वे (ऐसे बने) दूसरे मार्ग से चले। (शायद वे पूर्वपरिचित अभ्यस्त मार्ग से जाना सुरक्षित नहीं समझे)। ५६२

विण्णु ऱत्तॊडर् मेरुविऩ् शीर्वरै, मण्णु ऱप्पुक्क ळुऩ्दिऩ मादिरम्
कण्णु ऱत्तॆरि वुऱ्ऱदु कट्चॆवि, उण्णि ऱक्कळऱ् चेवडि यूऩ्ऱलाल् 563

कट्चॆवि–नेत्र-कर्ण (आदिशेषनाग) के अवतार लक्ष्मण के; ऒळि निऱम्–उज्ज्वल रंग की; कळल्–पायल से अलंकृत; चेवटि–सुन्दर पैरों को; ऊऩ्ऱलाल्–रोपकर रखने से; विण् उऱ तॊटर्–आकाश स्पर्श करते हुए उन्नत; मेरुविऩ्–मेरु पर्वत की; चीर् वरै–ऊँचाई जितनी; कण् उऱ तॆरिवुऱ्ऱु–दृष्टिगोचर; मातिरम्–दिशाएँ; मण् उऱ–भूमि में; पुक्कु–जाकर; अळुऩ्तित–धँस गयीं। ५६३

आदिशेष नाग के अवतार लक्ष्मण के उज्ज्वल पायलों से अलंकृत सुन्दर पैरों के लगने से, आकाशस्पर्शी उन्नत मेरुपर्वत जितना ऊँचा था, उतना गहरा, संदृश्य दिशाएँ सब पाताल में धँस गयीं। ५६३

वॆम्बु कानिडैप् पोहिऩ्ऱ वेहत्ताल्, उम्बर् तोयु मरामरत् तूडुशॆल्
अम्बु पोऩ्ऱऩ ऩऩ्ऱडल् वालितऩ्, तम्बि मेऱ्चॆलु मानवऩ् ऱम्बिये 564

अऩ्ऱु–तब; अटलु वालि तऩ्–बलवान वाली के; तम्पि मेल्–सुग्रीव के प्रति;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चॆलुम्–चलनेवाले; मातवन् तम्पि–मनुकुल में उत्पन्न श्रीराम के लघुभ्राता लक्ष्मण के; पोकिन्ऱ–गमन के; वेकत्ताल्–वेग से; वॆम्पु काटिटै–गरम जंगल में; उम्पर् तोयुम्–गगन-चुम्बी; मरामरत्तु ऊटु चॆल्–सालवृक्षों के मध्य जानेवाले; अम्पु पोन्ऱनन्–शर के समान लगे। ५६४

तब बलवान वाली के लघु भ्राता सुग्रीव के पास, जो मनुवंश के श्रीराम के छोटे भाई चले, वे अपने चलने की तीव्र गति से, गरम जंगल में सालवृक्षों के मध्य चलते हुए श्रीराम के शर के समान लगे। ५६४

माडु वॆन्ऱियॊर् मादिर यानैयैच्, चेडु तुन्ऱु शॆडिलॊरु तिक्किन्मा
नाडु हिन्ऱदु नण्णिय काल्पिडित्, तोडु हिन्ऱदु मॊत्तुळ नायिनान् 565

चेटु तुन्ऱु–महिमायुक्त; ऒरु तिक्किन् मा–एक दिग्गज; माटु–पास रहनेवाले; ओर् वॆन्ऱि मातिरम् यानैयै–अनुपम और एक दिग्गज को; नाटुकिन्ऱतु–ढूँढ़ता; नण्णिय चॆटिल्–स्वाभाविक मद-गन्ध का; काल् पिटित्तु–मार्ग लेकर; ओटुकिन्ऱतुम्–जो दौड़ता है, उसके भी; ऒत्तु उळन् आयिनान्–समान बने। ५६५

एक महान दिग्गज अपूर्व विजयी और एक दिग्गज को ढूँढ़ते हुए, उसके स्वाभाविक मद की गन्ध द्वारा टोह लगाकर भाग रहा हो, लक्ष्मण वैसे भी लगे। ५६५

उरुक्कॊ ळॊण्गिरि यॊन्ऱिनिन् ऱॊन्ऱिनैप्
पॊरुक्क वॆय्दिनन् पॊन्नॊळिर् मेनियान्
अरुक्कन् मावुद यत्तिनिन् ऱत्तमाम्
परुप्प दत्तिनै यॆय्दिय पण्बिनाल् 566

अरुक्कन्–सूर्य; मा उतयत्तिन् निन्ऱु–बड़ी उदयगिरि से; अत्तम्–जहाँ अस्त होता है, उस; परुप्पतत्तिनै–पर्वत को; ऎय्तिय–जाता जिस रीति से; पण्पिनाल्–उस रीति से; पॊन् ऒळिर् मेनियान्–स्वर्णोज्ज्वल-शरीरी; उरु कॊळ्–बड़े आकार के; ऒळ् किरि–उज्ज्वल पर्वत; ऒन्ऱिन् निन्ऱु–एक से; ऒन्ऱिनै–दूसरे एक पर्वत पर; पॊरुक्क–जल्दी; ऎय्तिनन्–पहुँचे। ५६६

सूर्य बड़ी उदयगिरि से अस्तगिरि पर जिस रीति से जाता है, उसी रीति से स्वर्णोज्ज्वल-शरीरी लक्ष्मण बड़े आकार के और उन्नत और उज्ज्वल एक पर्वत (माल्यवान) से दूसरे पर्वत की तरफ़ (किष्किन्धा) की तरफ़ सवेग गये। ५६६

तन्ऱु णैत्तमै यन्ऱनि वाळियिऱ्, चॆन्ऱु शेणुयर् किट्किन्दै शेर्न्दवन्
कुन्ऱि निन्ऱॊरु कुन्ऱिनिऱ् कुप्पुरुम्, पॊन्ऱु ळङ्गुळैच् चीयमुम् बोन्ऱनन् 567

तन् तुणै–अपने साथी; तमैयन्–और बड़े भ्राता श्रीराम के; तति वाळियिन्–अप्रमेय शर के समान; चॆन्ऱु–जाकर; चेण् उयर्–गगन छूते हुए; उयर्–उन्नत; किट्किन्तै चेर्न्तवन्–जो किष्किन्धा पहुँचे; कुन्ऱिन् निन्ऱु–एक गिरि से; ऒरु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुन्ऱिनिल्–दूसरी एक गिरि पर; कुप्पुऱुम्–झपटनेवाले; पॊन् तुळङ्कु–स्वर्णवर्ण; उळै–अयाल वाले; चीयमुम्–सिंह के; पोन्ऱ्ऱन्–समान भी शोभे। ५६७

अपने साथी और बड़े भ्राता श्रीराम के अनुपम शर के समान बहुत तीव्र गति से चलकर गगनोन्नत किष्किन्धा पर जो पहुँचे, वे लक्ष्मण एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर झपटनेवाले स्वर्णोज्ज्वल अयाल के पुरुषकेसरी के समान भी शोभे। ५६७

कण्ड वान्ऱरङ् गालन्ऱैक् कण्डॆन्न, मण्डि योडिन्ऱ वालि मह्ऱ्कैया
कॊण्ड शीऱ्ऱत् तिळैयोन् कुऱुहिन्ऱान्, चण्ड वेहत्ति ऩान्ऱॆन्ऱु शाऱ्ऱुलुम् 568

कण्ट वान्ऱरम्–इनको जिन वानरों ने देखा, वे वानर; कालन्ऱै कण्टु–यम को देख गये; ऎन्ऱ–ऐसा; मण्टि ओटिन्ऱ–मिलकर भागे; वालि मकऱ्कु–वाली-पुत्र से; ऐया–सुन्दरराज; इळैयोन्–लघु भाई लक्ष्मण; कॊण्ट चीऱ्ऱत्तु–अपनाये क्रोध से; चण्ट वेकत्तिन्ऱान्–प्रचण्ड वेगवान बनकर; कुऱुकिन्ऱान्–आ गये; ऎन्ऱु–ऐसा; चाऱ्ऱुलुम्–कहते ही। ५६८

वानरों ने श्रीलक्ष्मण को देखा। मानो यम का साक्षात्कार कर लिया हो, ऐसा वे भागे और अंगद के पास गये। उससे बोले कि सुन्दर युवराज ! लक्ष्मण अत्यधिक क्रोधी बनकर प्रचण्ड वेग के साथ आ पहुँचे हैं। यह कहते ही— । ५६८

अन्ऱन् तोन्ऱुलु माण्डॊऴि लान्वर, विन्ऱन् दॆन्ऱऱि वान्मरुङ् गॆय्दिलान्
मन्ऱन् मैन्दन् मनक्करुत् तुट्कॊळाप्, पॊन्ऱिन् वार्हळर् ऱादैयिर् पोयिन्ऱान् 569

अन्ऱन् तोन्ऱुलुम्–वह राजकुमार भी; आण् तॊऴिलान् वरवु–पुरुषोचित कार्य करनेवाले (वीर) के आने का कारण; इन्ऱन्तु–(क्या) यही है; ऎन्ऱु अऱिवान्–यह जानने के लिए; मरुङ्कु–उनके पास; ऎय्तिलान्–नहीं गया; मन्ऱन् मैन्तन्–चक्रवर्ती के पुत्र का; मनम् करुत्तु–मनोभाव; उट् कॊळा–ताड़कर; पॊन्ऱिन्–स्वर्णनिर्मित; वार् कळल्–बड़ी पायल के धारक; तान्ऱै–पिता के; इल् पोयिन्ऱान्–महल में गया। ५६९

वह राजकुमार अंगद भी लक्ष्मण के पास यह जानने के लिए नहीं गया कि पौरुषकर्म लक्ष्मण किस अभिप्राय से आये हैं ? लेकिन वह ताड़ गया कि लक्ष्मण का मनोभाव क्या है। इसलिए वह दीर्घ स्वर्ण-पायलधारी अपने पिता (चाचा) के महल में गया। ५६९

नळऩि यऱ्ऱिय नायहक् कोयिलुळ्, तळम लर्त्तहैप् पळ्ळियिर् ऱाळ्हुळल्
इळमु लैच्चिय रेन्दडि तैवर, विळैतु यिऱ्कु विरुन्दु विरुम्बुवान् 570

नळऩ् इयऱ्ऱिय–नल-निर्मित; नायकम्–राजसी; कोयिलुळ्–महल में; तळम् मलर् तकै–पल्लव और पुष्पों से भरी; पळ्ळियिल्–शय्या पर; ताळ् कुळल्–प्रलम्ब केश; इळ मुलैच्चियर्–बालस्तनी स्त्रियों के; एन्तु अटि–स्तुत्य पैरों को;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तैवर–सहलाते; विळै–वर्तमान; तुयिऱ्कु–निद्रा का; विरुन्तु–अतिथि रहना; विरुम्पुवान्–चाहनेवाला और । ५७०

वानर नल के द्वारा निर्मित राजायोग्य महल के अन्दर पल्लव-पुष्प-शय्या पर सुग्रीव सो रहा था। प्रलम्ब केश और बालस्तनों से युक्त वानर-स्त्रियाँ उसके पूज्य पैरों को सहला रही थीं। वह ऐसा सो रहा था, मानो निद्रादेवी का मेहमान बना रहना चाहता हो। ५७०

तॆळ्ळि योर्हि लान्बॆरुञ् जॆल्वमाम्, कळ्ळि नालदि हङ्गळित् तान्कदिर्प्
पुळ्ळि मानॆडुम् पॊन्वरै पुक्कदोर्, वॆळ्ळि माल्वरै यॆन्न विळङ्गुवान् 571

तॆळ्ळि–खूब स्पष्ट; ओर्किलान्–विचार न करनेवाला; पॆरु चॆल्वम् आम्–विपुल धन रूपी; कळ्ळिनाल्–सुरा-पान के कारण; अतिकम् कळित्तान्–अधिक मत्त; कतिर् पुळ्ळि–किरणपुंज; मा नॆटु–अत्युन्नत; पॊन् वरै–स्वर्ण (मेरु) पर्वत में; पुक्कतु–प्रवेश करके रहनेवाले; ओर्–अनुपम; वॆळ्ळि माल् वरै ऍन्न–रजतपर्वत के समान; विळङ्कुवान्–शोभनेवाला। ५७१

(सुप्त सुग्रीव का वर्णन ५७०वें पद से लेकर सात पद्यों तक हुआ है।) सुग्रीव साफ़ सोचने में असमर्थ (था); अपार धन रूपी सुरा के पान से अतिमस्त; किरणपुञ्जों के साथ बहुत उन्नत हिमालय पर्वत के अन्दर घुसकर रहनेवाली एक श्वेत, उज्ज्वल और विपुल रजत-गिरि के समान शोभायमान (था)। ५७१

सिन्दु वारन् दिरुनऱै तेक्कहिल्, चन्द मामयिऱ् चायलर् ताळ्हुळल्
कन्द मामलर्क् काडुह डाविय, मन्द मारुदम् वन्दुऱ वैहुवान् 572

चिन्तुवारम्–'सिंदुवार' नामक तरु; तिरु नऱै–सुगन्धयुक्त लता; तेक्कु–सागौन के वृक्ष; अकिल्–अगरु; चन्तम्–सुन्दर; मा मयिल् चायलर्–श्रेष्ठ मोरों की-सी छटा वाली; ताळ्कुळल्–(स्त्रियों के) प्रलम्ब केश के; कन्तम्–वास से पूर्ण; मा मलर् काटुकळ्–विपुल पुष्प-वन; ताविय–(इन पर से) बहता आया; मन्त मारुतम्–मन्द मारुत; वन्तु उऱ–आ बहे, ऐसा; वैकुवान्–(सोता) जो रहा वह। ५७२

सिंधुवार-तरु, सुबासित लताएँ, सागौन, अगरु आदि वृक्ष और सुन्दर मयूरनिभ छटा वाली स्त्रियों के प्रलम्ब केश पर के पुष्पवन, इनके ऊपर से बहनेवाली हवा उसको सहला रही थी; वैसा सुप्त। ५७२

तित्ति यानिन्ऱ शॆङ्गनि वाय्च्चियर्, मुत्त वाणहै मुळ्ळॆयि रूऱुतेन्
पित्तु मालुम् पिऱवुम् पॆरुक्कलान्, मत्त वारण मॆन्न मयङ्गिनान् 573

तित्तिया निन्ऱ–मधुर रहनेवाले; चॆम् कनि–लाल (बिम्ब) फल के समान; वाय्च्चियर्–अधरों की स्वामिनियों के; मुत्तम्–मोती-सम; वाळ् नकै–उज्ज्वल हास के; मुळ् ऍयिऱ–तीक्ष्ण दाँतों से; ऊऱ–रिसनेवाले; तेन्–शहद-सम रसीला द्रव; पित्तुम् मालुम्–पागलपन, मोह और; पिऱवुम्–अन्य (कामादि) मनोविकारों को;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॆरुक्कलान्–बढ़ाता रहा, इसलिए; मत्त वारणम् ॲन्न–मत्तगज के समान; मयङ्कित्तान्–मोहित जो पड़ा रहा। ५७३

मधुर व लाल बिंब-सम अधरों वालियों के मुक्तासदृश उज्ज्वल हास दिखानेवाले तीक्ष्ण दाँतों के मध्य से, रिसनेवाला रस (जो) पागलपन, मोह और कामादि अन्य विकृति उत्पन्न करनेवाला था। (उसका) पान करने के कारण मत्त गज के समान मोह-मुग्ध। ५७३

महुड कुण्डल मेमुदन् मण्डनत्, तुहुनॆ डुञ्जुडर्क् कर्रै युलावलाल्
पहल वन्शुडर् पाय्पति माल्वरै, तहम लर्न्दु पॊलिन्दु तयङ्गुवान् 574

मकुट कुण्टलमे मुतल्–किरीट, कुण्डलादि; मण्टनत्तु–अलंकारों से; उकुम्–निकलनेवाले; नॆटु चुटर् कर्रै–लम्बी किरणों का समूह; उलावलाल्–(उसके) शरीर पर लगता चला, इसलिए; पकलवन्–सूर्य की; चुटर्–किरणें; पाय्–जिस पर लगती हैं, उस; माल्–बड़े; पति वरै तक–शीतल उदयाचल के समान; मलर्न्तु–प्रफुल्ल; पॊलिन्तु–शोभायमान हो; तयङ्कुवान्–रहनेवाला। ५७४

उस पर किरीट, कुण्डल आदि अलंकार के आभरणों से कान्ति की दीर्घ किरणों का पुंज लग रहा था। इसलिए सूर्य-रश्मिरंजित बड़े और शीतल उदयाचल के समान खिलता हुआ और उज्ज्वल रूप लिये हुए (सो रहा था)। ५७४

किडन्द नन्गिडन् दानॆक् किडॆत्तिरु
तडङ्गै कूप्पिनन् ऱारॆमिन् नाट्टन्द
मडङ्गल् वीरनन् मार्ऱम् विळम्बुवान्
तॊडङ्गि नानव नॆत्तुयि नीक्कुवान् 575

किटन्तनन्–लेटा रहा; किटन्तानै–पड़े रहे उसके; तारै–तारा-संज्ञित; मिन्नाळ्–बिजली-समाना के; तन्त–जाये; मटङ्कल् वीरन्–पुरुषसिंह-सम वीर ने; किटैत्तु–पास जाकर; इरु तटकै–दोनों विशाल हाथ; कूप्पिनन्–जोड़े; अवनै–उसको; तुयिल् नीक्कुवान्–निद्रा से जगाने के लिए; नल् मार्ऱम्–अच्छे वचन; विळम्पुवान्–कहने; तॊटङ्कित्तान्–लगा। ५७५

सुग्रीव ऐसा सो रहा था। विद्युत् के समान कान्तिमय शरीर वाली तारा का पुत्र पुरुष-केसरी अंगद उसके पास गया। वह अपने दोनों विशाल हाथों को जोड़कर सुग्रीव को निद्रा से जगाने के निमित्त अच्छे और हितकारी शब्द कहने लगा। ५७५

ॲन्दै केळव् विरामर् किळैयवन्, शिन्दै युण्णॆडुञ् जीर्ऱन् दिरुमुहम्
तन्द ळिप्पत् तडुप्परुम् वेहत्तान्, वन्द नन्नुन् मनक्करुत् तियादॆन्ऱान् 576

ॲन्तै–मेरे पिता; केळ्–सुनो; अ–उन; इरामर्कु–श्रीराम के; इळैयवन्–कनिष्ठ भ्राता; चिन्तैयुळ् नॆटु चीर्ऱम्–मन का गम्भीर कोप; तिरुमुकम्–श्रीमुख

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के; तन्तु अऴिप्प–बाहर प्रकट होने देते हुए; तटुप्पु अरु–दुर्वार; वेकत्तान्–वेग के साथ; वन्ततन्–आये हैं; उन् मनम् करुत्तु–आपके मन का भाव; यातु–क्या है; ऍन्ऱान्–(अंगद ने) पूछा। ५७६

मेरे पिताजी ! सुनिये। उन श्रीराम के भाई लक्ष्मण आये हैं। उनके मुख पर उनका आन्तरिक अत्यन्त कोप झलक रहा है। अदम्य वेग के साथ आये हैं। उनके सम्बन्ध में आपका विचार क्या है ? । ५७६

इनैय माऱ्ऱ मिशैत्तन नॅन्बदोर्, निनैवि लानॅडुञ् जॅल्व नॅरुक्कवुम्
ननैन रुन्दुळि नञ्जु मयक्कवुम्, तनैयु णर्न्दिलन् मॅल्लणैत् तङ्गिनान् 577

(सुग्रीव तो) नॅटु चॅल्वम्–विपुल धन-मद के; नॅरुक्कवुम्–मन को वश में रखने के कारण; नऱु नने तुळि–सुवासित सुरा की बूँदों रूपी; नञ्चु मयक्कवुम्–विष चेतना-हरण कर चुका, इसलिए; तनै उणर्न्तिलन्–(अपनी सुधि ले नहीं सका) होश में नहीं आया; इनैय माऱ्ऱम्–ऐसे वचन; इचैत्ततन्–(अंगद ने) कहा; ऍन्पतु ओर् निनैवु–यह कोई ज्ञान; इलान्–न रखनेवाला; मॅल् अणैयिल्–मृदु सेज पर; तङ्किनान्–पड़ा रहा। ५७७

विपुल धन का मद और सुरापान का मद —इन दोनों के उसके मन पर हावी आने के कारण सुग्रीव अपनी सुध-बुध नहीं रखता था। अंगद क्या कह रहा है, इसका भी उसको कुछ बोध नहीं हुआ। इसलिए वह कोमल शय्या पर निद्रामग्न रह गया। ५७७

आद लालव् वरशिळङ् गोळरि, यादु मुन्नि यियऱ्ऱुव दिन्मैयाल्
कोदिल् शिन्दै यनुमनैक् कूवुवान्, पोदन् मेयिनन् पोदह मेयनान् 578

आतलाल्–इसलिए; पोतकमे अनान्–बालगज-सम; अ इळ अरचु कोळरि–वह युवराजकेसरी (अंगद); मुन्नि–सोचकर; इयऱ्ऱुवतु–करणीय; यातुम् इन्मैयाल्–कुछ नहीं रहा, इसलिए; कोतु इल् चिन्तै–उलझन-रहित मन वाले; अनुमनै–हनुमान को; कूवुवान्–बुलाने; पोतल् मेयिनान्–जाने लगा। ५७८

सुग्रीव की यह स्थिति होने से कलभ-सम वह युवराज-केसरी सोचने लगा कि अब क्या किया जाय ? उसके सामने करने योग्य कोई काम नहीं सूझा। इसलिए वह निर्दोष-मन हनुमान को बुलाने चला। ५७८

मन्दि रत्तनि मारुदि तन्नॊडुम्, वॅन्दि ऱऱ्पडै वीरर् विराय्वर
अन्द रत्तिन्वन् दन्नदन् कोयिलै, इन्दि रऱ्कु महन्मह नॅय्दिनान् 579

इन्तिरऱ्कु मकन्–इन्द्रपुत्र का; मकन्–पुत्र; मन्तिरम्–मंत्रणा में; तनि–अद्वितीय; मारुति तन्नोटुम्–मारुति के साथ; वॅम् तिऱल्–अत्यधिक साहस के; पटै वीरर्–सेनावीरों के; विराय् वर–साथ लगे आते; अन्तरत्तिन् वन्तु–बाहर आया और; अन्नै तन् कोयिलै–माता के महल में; ऍय्तिनान्–पहुँचा। ५७९

इन्द्रपौत्र और मंत्रणाचतुर वायुकुमार दोनों वहाँ से बाहर निकले।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कठोर बल के वीरों की सेना उनके पीछे-पीछे आयी। अंगद अपनी माता के महल में गया। ५७९

ऍय्दि मेऱ्चॅयत् तक्कदॅन् नॅन्ऱलुम्, शॅय्दिर् शॅय्दऱ् करुनॅडुन् दीयत
नॉय्दि लन्नवै नोक्कवु नोक्कलिर्, उय्दिर् पोलु मुदविहॉन् ऱीरॅन्ना 580

ऍय्ति–पहुँचकर; मेल्–आगे; चॅय्यत् तक्कतु–करने योग्य; ऍन्–क्या है; ऍन्ऱलुम्–पूछने पर; चॅय्तऱ्कु अरु–अकरणीय; नॅटुम् तीयत–बहुत बुरे कामों को; नॉय्तिल् चॅय्तिर्–अनायास कर दिया (तुम लोगों ने); अन्नवै–उनको; नॉय्तिल् नीक्कवुम्–जल्दी दूर करने को; नोक्कलिर्–सोचा भी नहीं; उतवि कॉन्ऱीर्–कृतघ्न बने; उय्तिर् पोलुम्—बचोगे क्या; ऍन्ना–कहकर। ५८०

अंगद ने माता से पूछा कि अब क्या करना है ? यह पूछते ही तारा डाँट बताने लगी। तारा ने कहा— अकरणीय और बुरे काम को अनायास तुम लोगों ने कर दिया। करके भी उसका निवारण करने का उपाय नहीं सोचा। कृतघ्न हो तुम ! बच सकोगे क्या ? । ५८०

मीट्टु मॉन्ऱु विळम्बुहिन् ऱाळ्पडै
कूट्टु मॅन्ऱुमैक् कॉऱ्ऱवन् कूऱिय
नाट्टि ऱम्बिनुन् नाट्टिऱम् बुम्मॅन्नक्
केट्टि लीरिनिक् काण्डिर् किडैत्तिराल् 581

मीट्टुम्–और; ऑन्ऱु—एक बात; विळम्पुकिन्ऱाळ्—तारा कहती है; उमै–तुम लोगों से; पटै कूट्टुम्–सेना एकत्र करो; ऍन्ऱु–ऐसा; कॉऱ्ऱवन्–श्रीविजयराघव के; कूऱिय नाळ्–कथित दिन के; तिऱम्पिन्—बीत जाने पर; उम् नाळ्–तुम्हारे (जीवन के) दिन; तिऱम्पुम्–पूरे हो जायँगे; ऍन्न—कहने पर; केट्टिलीर्–नहीं सुना (तुम लोगों ने); इनि काण्टिर्–अब देखोगे; किटैत्तिर्–(अब) फँस गये। ५८१

तारा आगे बोली। मैंने तुमको समझाया था कि विजयी श्रीराम ने सेना-संग्रह की अवधि निर्धारित की है। और अगर वह अवधि बीत जायगी तो तुम्हारे जीवन की अवधि भी खतम हो जायगी। पर तुमने नहीं सुना। अब उसका फल भुगतोगे। अब खूब फँसे ! । ५८१

वालि यारुयिर् कालनुम् वाङ्गविऱ्, कोलि वालिय शॅल्वङ् गॉडुत्तवर्
पोलु मालुम्बु ऱत्तिरुप् पारिदु, शालु मालुङ्ग डन्मैयि नोर्क्कॅलाम् 582

वालि आरुयिर्–वाली के प्यारे प्राणों को; कालनुम् वाङ्क–कालदेव ले ले, ऐसा; विल् कोलि–धनु झुकाकर; वालिय–उज्ज्वल; चॅल्वम्–राजधन; कॉटुत्तवर् पोलुम्–जिन्होंने दिया वे क्या; उम् पुऱत्तु—आपसे उपेक्षित; इरुप्पार्–रहेंगे; इतु–यह उपेक्षा; उङ्कळ् पोलुम्–तुम्हारे समान; तन्मैयिनोर्क्कु–स्वभाव वालों को ही; ऍलाम्–सब तरह से; चालुम्–योग्य होगी। ५८२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीराम ने अपने धनु के बल से वाली के प्यारे प्राणों को कालदेव के हाथ में सौंप दिया। क्या वैसे राम तुमसे उपेक्षणीय हैं ? यह उपेक्षा शायद तुम जैसे कृतघ्नों को सोह सकती है ! । ५८२

देवि नीङ्गवत् तेवरिऱ् चोरियऩ्, आवि नीङ्गिऩऩ् पोलयर् वाऩदु
पावि यादु परुहुदिर् पोलुनुम्, कावि नाण्मलर्क् कण्णियर् कादऩीर् 583

तेवि नीङ्क–देवी के अलग होने पर; अ तेवरिल् चोरियऩ्–देवों में श्रेष्ठ श्रीराम; आवि नीङ्किऩऩ् पोल्–प्राणविहीन के समान; अयर्वाऩ्–शिथिल होते हैं; अतु पावियातु–उसकी चिन्ता न करके; नुम्–(तुम्हारी) अपनी; नाळ् कावि मलर्–सद्यविकसित नीलोत्पल फूल के समान; कण्णियर्–आँखों वाली (पत्नियों) के; कातल् नीर्–प्रेम-रस; परुकुतिर् पोलुम्–पान करते रहोगे क्या। ५८३

देवी के वियोग में देवों में श्रेष्ठ श्रीराम निर्जीव होकर शिथिल पड़े हुए हैं। तुम उसकी चिन्ता नहीं करके सद्य-विकसित नीलोत्पल के सदृश आँखों वाली अपनी पत्नियों का प्रेम-रस पान कर रहे हो न ? । ५८३

तिऱम्बि निऱ्मॅय् शिदैत्ती रुदवियै, निऱम्बॊ लीइरुङ्ग डीविऩै नेर्न्ददाल्
मऱञ्जॅय् वाऩुऱिऩ् माळुदिर् मऱ्ऱिनि, पुऱञ्जॅय् दावदॆ नॅऩ्गिऩ्ऱ पोदिऩ्वाय् 584

मॅय् तिऱम्पिऩीर्–सत्य लाँघ चुके; उतवियै चितैत्तीर्–कृतज्ञता को मार चुके हो; निऱम् पॊलीइर्–रंग ही (गौरव ही) नष्ट कर चुके हो; उङ्कळ् तीविऩै–तुम्हारा दुर्भाग्य; नेर्न्ततु–आ गया; मऱम् चॆय्वाऩ् उऱिऩ्–वीरता दिखाने (लड़ने) चलोगे तो; माळुतिर्–मर जाओगे; इऩि–अब; पुऱम् चॆय्तु–उपेक्षा करने से; आवतु–होगा; ऍऩ्–क्या है; ऍऩ्किऩ्ऱ पोतिऩ् वाय्–जब यह (तारा) बोल रही थी, तब। ५८४

तुम लोगों ने सत्य छोड़ दिया। कृतघ्न बन गये। इस बुरे गुण के कारण तुम्हारी छवि ही मिट गयी। बुरे कर्म अपने फल देने आ गये। अपनी वीरता के बल पर लड़ने जाओगे तो मर जाओगे। अब मुकरने से क्या होगा ? तारा यह कह ही रही थी कि—। ५८४

कोळु ऱुत्तऱ् करिय कुरक्किऩम्, नीळॆ ऴुत्तॊ डरुन्नॆडु वायिलैत्
ताळु ऱुत्तित् तडवरै तन्दऩ, मूळु ऱुत्ति यडुक्किऩ मॊय्म्बिऩाल् 585

कोळ् उऱुत्तऱ्कु अरिय–नाशदुस्साध्य; कुरक्कु इऩम्– वानरगणों ने; नीळ् ऍऴु–लम्बी लोहे की सिटकिनियों से; तॊटरुम्–बन्द होने योग्य; नॆटु वायिलै–विशाल द्वार को (कपाट को); ताळ् उऱुत्ति–सिटकिनी लगाकर; मॊय्म्पिऩाल्–शरीर-बल के ज़ोर से; तटवरै–चट्टानों को; तन्तऩ–ले आकर; मूळुऱुत्ति–जोड़कर; अटुक्किऩ–चुन रखा। ५८५

वहाँ वानरगणों ने, जिनको मारना आसान नहीं था, लोहे की लम्बी सिटकिनियों से बड़े द्वार-कपाट को सुरक्षित किया और उसके पीछे बड़ी-बड़ी चट्टानें, अपने बल से ले आकर, जोड़ रखीं। ५८५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शिक्कु ऱक्कडै शेमित्त शॅय्हैय, तॉक्कु ऱुत्त मरत्त तुवन्ऱिन
पुक्कु ऱुक्किप् पुडैत्तु मॅनप्पुऱम्, मिक्कि ऱुत्तन वीरनु मेयिनान् 586

कटै चिक्कुऱ–द्वार को खूब; चेमित्त–सुरक्षित करनेवाले; चॅय्कैय–कृत्यकारी वानर; पुक्कु उऱुक्कि–(अगर वह अन्दर किसी विध आ जायँ तो) सामने जाकर डाँटेंगे; पुटैत्तुम्–और पीटेंगे; ऍन–सोचकर; तोक्कुऱुत्त–पंक्तियों में रखे हुए; मरत्त–तरुओं के साथ; तुवन्ऱिन–मिल आये; पुऱम्–द्वार के पास; मिक्कु इऱुत्तन–खचाखच सटे रहे; वीरनुम् मेयिनान्–वीर लक्ष्मण भी आ गये। ५८६

इस तरह किले के द्वार को सुरक्षित रूप से बन्द करने के बाद वानर यह सोचकर कि अगर वह किसी तरह अन्दर आयगा तो डाँट-डपट करके पीटेंगे, बड़े-बड़े वृक्षों को लिये हुए दल बाँधे खड़े थे। तब तक वीर लक्ष्मण भी आ गये। ५८६

काक्क वोकरुत् तॅन्ऱु कदत्तिनाल्, पूक्कु मूरऱ् पुरवलर् पुङ्गवन्
ताक्क णङ्गुऱै तामरैत् ताळिनाल्, नूक्कि नानक् कदविनै नॉय्दिनिन् 587

कतत्तिनाल्–क्रोध की; मूरल् पूक्कुम्–हँसी प्रकट करते हुए; पुरवलर् पुङ्कवन्–राजश्रेष्ठ ने; काक्कवो करुत्तु–बचने का अभिप्राय है क्या; ऍन्ऱु–सोचकर; ताक्कणङ्कु उऱै–(विजय-) लक्ष्मी के आश्रय; तामरै ताळिनाल्–कमलों के जैसे चरणों से; अ कतविनै–उस कपाट को; नॉय्तिनिन्–लघु-प्रहार करके; नूक्किनान्–हटाया। ५८७

बन्द द्वार को देखकर लक्ष्मण ने एक क्रोध की हँसी हँसी। राज-पुंगव ने सोचा, यह स्वरक्षा का उपाय है क्या? अपने श्रीयुक्त कमल-चरण से उस किवाड़ पर लघु प्रहार किया। ५८७

कावन् मामदि लुङ्गद वुङ्गडि, मेवुम् वायि लडुक्किय वॅऱ्पॉडुम्
तेवु शेवडि तीण्डलुन् दीण्डरुम्, पाव मामॅनप् पऱ्ऱळिन् दिऱ्ऱवाल् 588

तेवु–दिव्य; चे अटि–सुन्दर चरणों के; तीण्टलुम्–स्पर्श करते ही; कावल् मा मतिलुम्–नगर-रक्षक प्राचीर; कतवुम्–और कपाट; कटि मेवुम्–सुरक्षा के लिए; वायिल् अटुक्किय–द्वार पर जोड़कर रखे हुए; वॅऱ्पॉटुम्–पत्थरों के साथ; तीण्टु अरुम्–अस्पृश्य; पावम् आम् ऍन–पाप के समान; पऱ्ऱु अळिन्तु–लगाव छोड़कर; इऱ्ऱ–मिट गये। ५८८

दिव्य और सुन्दर (लक्ष्मण के) चरणों के स्पर्श मात्र से नगर-रक्षक प्राचीर और किवाड़, किवाड़ के पीछे चुनी हुई चट्टानों के साथ पाप के समान जिनका स्पर्श भी भयंकर है, आधार खोकर गिरकर मिट गये। ५८८

नॉय्दि नोन्कद वुम्मुदु वायिलुम्, शॅय्द हन्मदि लुन्दिशै योशनै
ऐयि रण्डि तळवडि यऱ्ऱुह, वॅय्दि तिन्ऱु कुरङ्गु वॅरुक्कोळ 589

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नोन् कतवुम्–कठोर किवाड़; मुतु वायिलुम्–और प्राचीन द्वार; कल् चॆय्त मतिलुम्–पत्थरों का प्राचीर; नॊय्तिल्–आसानी से; अटि अऱ्ऱु–आधार खोकर; तिचै–दिशाओं में; ऐ इरण्टु–दस (पाँच के दो); योचनैयिन्–योजनों की दूरी तक; उक–गिरे, तो; कुरङ्कुम्–वानर भी; वॆरु कॊळा–भय खाकर; वॆय्तिन् निन्ऱ–तप्तमन रहे। ५८९

कपाट सशक्त था। पत्थर का बना नगर-द्वार भी प्राचीन था। पर वे सब लक्ष्मण के चरण-प्रहार से आधार खोकर गिर गये और दिशाओं में दस योजन तक छितर गये। वानर भय खाकर तप्त-मन खड़े रहे। ५८९

परिय मामदि लुम्बडर् वायिलुम्, शरिय वीऴ्न्दु तहर्न्द मुडित्तलै
नॆरिय नॆञ्जु पिळक्क नॆडुन्दिशै, इरिय लुऱ्ऱन विऱ्ऱिल विन्नुयिर् 590

परिय मा मतिलुम्–चौड़े बड़े प्राचीर भी; पटर् वायिलुम्–विशाल द्वार भी; चरिय–ढहकर; वीऴ्न्तु–गिरे; तकर्न्त–और मिटे; मुटि तलै–सिर का भाग; नॆरिय–टूटा; नॆञ्चु पिळप्प–विदीर्ण-मन हो; इन् उयिर्–प्यारे प्राणों से; इऱ्ऱिल–हीन नहीं हुए (वानर); नॆटु तिचै–दूर दिशाओं में; इरियल् उऱ्ऱन–छितरकर भाग गये। ५९०

चौड़ा और ऊँचा प्राचीर और विशाल द्वार ढहकर गिरे और मिटे। प्राचीरों के शिरोभागों पर दरार पड़ गयी। इसको देखकर वानरों का मन भी विदीर्ण हो गया। वे अपने प्यारे और बचे हुए प्राणों को लेकर सभी दिशाओं में अलग-अलग भाग गये। ५९०

पहर वेयु मरिदु परिन्दॆऴु, पुहरिल् वानर मञ्जिय पूशलान्
शिहर माल्वरै शॆन्ऱु तिरिन्दुऴि, महर वेलैयै यॊत्तदु मानहर् 591

परिन्तु–उद्विग्न होकर; ऎऴु–जो भागे; पुकर् इल्–निरपराध; वानरम्–वानरों ने; अञ्चिय पूचलान्–डर से जो शोर मचाया, उससे; मानकर्–वह बड़ा नगर; चिकरम् माल् वरै–शिखर-सहित बड़ा (मन्दर) पर्वत; चॆन्ऱु तिरिन्तुऴि–जब (सागर में) प्रविष्ट हो घूमा; मकरम् वेलैयै–तब के मकरालय के; ऒत्ततु–समान था; पकरवेयुम् अरितु–कहना दुस्साध्य है। ५९१

वानरसमूह बहुत दुःखी होकर अपना स्थान छोड़कर भागे। बेचारे वे वानर निरपराध थे। इनके भय के कारण नगर में बड़ा शोर मच गया। तब वह नगर उस मकरालय के समान लगा, जिसमें शिखरसहित बड़ा मन्दरपर्वत घुसकर घूम रहा था। ५९१

वान रङ्गळ् वॆरुवि मलैयॊरीइक्, कानॊ रुङ्गु पडरवक् कार्वरै
मीनॆ रुङ्गिय वानह मीनॆलाम्, पोन पिन्बॊलि वऱ्ऱदु पोन्ऱदे 592

वानरङ्कळ्–वानर; वॆरुवि–भयभीत होकर; मलै ऒरीइ–(किष्किन्धा)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पर्वत त्यागकर; ऒरुङ्कु–एक साथ; कान् पटर–(पास के) जंगल में चले गये, इसलिए; अ कार् वरै–वह मेघाच्छादित पर्वत; मीन् नॆरुङ्किय–उडुगणों से भरा; वानकम्–आकाश; मीन् ऎलाम् पोन पिन्–नक्षत्रों के जाने के बाद; पोलिवु अऱ्ऱतु–शोभा खो जाता; पोन्ऱतु–जैसे, वैसा लगा। ५९२

वानर भय से उस किष्किन्धा पर्वत को छोड़कर पास के जंगलों में, झुण्डों में भाग गये। इसलिए मेघाच्छादित वह किष्किन्धा गिरि उस नक्षत्रवान आकाश के समान दिखायी दी, जिसके सभी नक्षत्र लुप्त हो गये हों। ५९२

अन्न कालैयि नाण्डहै याळियान्, पॊन्नि नन्नहर् वीदियिऱ् पुक्कनन्
शॊन्न तारैयैच् चुऱ्ऱिनर् निन्ऱवर्, ऎन्न शॆय्हुव दॆय्दिन नॆन्ऱनर् 593

अन्न कालैयिन्–उस समय; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम के; आळियान्–(आज्ञा-) चक्र लक्ष्मण; पॊन्नि–सुन्दर; नल् नकर्–श्रेष्ठ नगर की; वीतियिल्–वीथी में; पुक्कनन्–प्रवेश करके चले; चॊन्न तारैयै–जिसने सचेतन-वचन कहे, उस तारा को; चुऱ्ऱिनर्–घेरे; निन्ऱवर्–जो खड़े थे, वे (अंगद आदि); ऎय्तिनन्–आ ही गये; ऎन्न चॆय्कुवतु–क्या करें; ऎन्ऱनर्–(ऐसा घबड़ाकर) बोले। ५९३

तब पुरुषश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र के आज्ञाचक्र के समान लक्ष्मण उस सुन्दर और अच्छे नगर की वीथी में प्रविष्ट हुए। पहले जिस तारा ने सचेतन के वचन कहे थे, उसको घेरे हुए अंगद आदि खड़े थे। जब उनको मालूम हुआ कि लक्ष्मण नगर में आ गये तो वे घबड़ाये और पूछने लगे कि आ ही गये, अब क्या करें ? । ५९३

नीरॆ लामय नीङ्गुमि नेर्न्दियान्, वीर नुळ्ळम् विनवुव लॆन्ऱलुम्
पेर निन्ऱनर् यावरुम् पेर्हलात्, तारै शॆन्ऱन डार्हुळ लारॊडुम् 594

नीर् ऎलाम्–तुम सभी; अयल् नीङ्कुमिन्–अलग हट जाओ; यान् नेर्न्तु–मैं मिलकर; वीरन् उळ्ळम्–वीर का अभिप्राय; विनवुवल्–पूछ लूंगी; ऎन्ऱलुम्–(तारा के) यह कहने पर; यावरुम्–सभी; पेर–हटकर; निन्ऱनर्–खड़े हुए; तारै–तारा; पेर्कला–पीछे नहीं (आगे); तार्कुळलारॊटुम्–पुष्पालंकृत केश वालियों के साथ; चॆन्ऱनळ्–गयी। ५९४

तारा ने उनसे कहा, तुम सब यहाँ से हट जाओ। मैं उनसे मिलूंगी और जान लूँगी कि वीर उनका अभिप्राय क्या है ? तारा के ऐसा कहने पर सभी वानर हटकर खड़े हो गये। तारा पीछे नहीं गयी, लेकिन पुष्पालंकृत केश वाली अपनी सखियों के साथ आगे बढ़ी। ५९४

उरैशॆय् वानर वीर रुवन्दुरै, अरैशर् वीदि कडन्दहन् कोयिलैप्
पुरशै यानैयन् नानुपुह लोडुमव्, विरैशॆय् वार्हुळऱ् ऱारै विलक्किनाळ् 595

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुरचै–गले की रस्सी (कलापक) सहित; यानै अन्नान्–गजसदृश लक्ष्मण; उरै चॅय्–प्रकीर्तित; वानर वीरर्–वानर वीर; उवन्तु उरै–जहाँ खुशी से रहे; अरैचर् वीति–उस राजवीथी को; कटन्तु–पार करके; अकल् कोयिलै–(सुग्रीव के) विशाल महल में; पुकलोटुम्–प्रवेश करते ही; अ–उस; विरै चॅय्–सुबासपूर्ण; वार् कुऴल्–लम्बे केश वाली; तारै–तारा ने; विल्क्कित्ताळ्–रोका। ५९५

कलापक (गले की रस्सी) सहित गजराज-सम लक्ष्मण प्रकीर्तित वानर वीरों के प्यारे वासस्थान, राजवीथी को पारकर सुग्रीव के विशाल महल में पहुँचे। तब प्राकृतिक-सुबास-भरे केश वाली तारा ने उसके मार्ग को रोका। ५९५

विलङ्गि मॅल्लियल् वॅण्णहै वॅळ्वळै
इलङ्गु नुण्णिडै येन्दिळ मॅन्मुलैक्
कुलङ्गॊ डोहै महळिर् कुऴात्तित्ताल्
वलङ्गॊळ् वीरन् वरुम्वऴि माऱ्ऱित्ताळ् 596

विलङ्कि–आड़े आकर; मॅल् इयल्–कोमल प्रकृति; वॅळ् नकै–श्वेत दाँत; वॅळ् वळै–श्वेत कंकण; इलङ्कुम्–(विद्युत् के समान) शोभायमान; नुण् इटै–सूक्ष्म कमर; एन्तु–उठे हुए; इळ–बाल; मॅल् मुलै–कोमल स्तन; कुलम् कॊळ्–श्रेष्ठ; तोकै–मयूर की-सी आभा; मकळिर्–(इनसे युक्त) स्त्रियों के; कुऴात्तित्ताल्–झुण्ड की सहायता से; वलम् कॊळ् वीरन्–दाहिनी ओर से जो आ रहे थे, उन वीर श्रीलक्ष्मण का; वरुम् वऴि–आने का मार्ग; माऱ्ऱित्ताळ्–रोका। ५९६

सुकुमारी, श्वेत दाँत, श्वेत कंकण, विद्युत-सम पतली कमर, उन्नत बाल-स्तन —इनके साथ शोभायमान मयूरनिभ स्त्रियों के समूहों का उपयोग करके तारा ने दाहिनी ओर से आनेवाले वीर लक्ष्मण का मार्ग रोका। ५९६

विल्लुम् वाळुम् मणियॊडु मिन्निड, मॅल्ल रिक्कुरन् मेहलै यार्त्तिडप्
पल्व हैप्पुरु वक्कॊडि पम्बिड, वल्लि यायम् वलत्तिनिल् वन्ददे 597

विल्लुम्–धनु-सम (वक्र); वाळुम्–तलवार-सम प्रकाशपुंज; अणियॊटु–आभरणों के साथ मिलकर; मिन्निट–चमके; मॅल् अरि कुरल्–नूपुर के अन्दर के छोटे कंकड़ों का स्वर; मेकलै–मेखला की ध्वनि; आर्त्तिट–(मारू) नारे से लगे; पल् वकै पुरुवम्–विविध भौंहें रूपी; कॊटि–(युद्ध के) झंडे; पम्पिट–घने रूप से भरे रहे; वल्लि आयम्–स्त्रियों की सेना; वलत्तिनिल्–दल-बल के साथ; वन्ततु–आयी। ५९७

वानर-स्त्रियों का समूह क्या था, वह एक अलंघ्य सेना थी। धनु-सम वक्र और तलवार के समान लम्बी कान्तियाँ आभरणों के साथ मिलकर विद्युत के समान चमक रही थीं। छोटे-छोटे कंकड़ों से भरे नूपुरों और मेखलाओं से उठनेवाला नाद भेरीनाद-सा था। विविध भौंहें युद्ध के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

झण्डों के समान दिखायी दीं। इस साज के साथ स्त्री-समूह की सेना ने दल-बल सहित आकर लक्ष्मण को घेर लिया। ५९७

आर्क्कुनू पुरङ्गळ् बेरि यल्हन्नऱ् ऱडन्दे रॊत्त
पोर्क्कण्वॆम् बुरुवम् विल्ला मॆल्लियर् वळैन्द पोदु
पेर्क्करुञ् जीऱ्ऱम् पेर मुहम्बॆयर्न् दॊदुङ्गिऱ् ऱल्लाल्
पार्क्कवु मञ्जि नान्नप् परुवरै यन्नैय तोळान् 598

आर्क्कुम्–स्वरित; नूपुरङ्कळ्–नूपुर; पेरि–भेरियाँ बने; ऒत्त अल्कुल्–सुडौल कटि-प्रदेश; तट तेर्–विशाल रथ; वॆम् पुरुवम्–प्यारी भौंहें; पोर् कण् विल्ला–युद्ध में धनुष (यह लेकर); मॆल्लियर्–सुकुमारियों ने; वळैन्त पोतु–जब घेर लिया तब; अ–वे; परु वरै–बड़े पर्वत; अन्नैय–समान; तोळान्–लक्ष्मण; पेर्क्क अरु–दुर्वार; चीऱ्ऱम्–कोप; पेर–छोड़कर; मुकम् पॆयर्न्तु–मुख मोड़कर; ऒतुङ्किऱ्ऱु–दूसरी तरफ़ करने; अल्लाल्–के सिवा; पार्क्कवुम्–देखने से भी; अञ्चिनान्–डरे। ५९८

स्वरित नूपुर भेरियाँ बने। सुडौल कटि-प्रदेश बड़े-बड़े रथ बने। प्यारी भौंहें युद्धकारी धनु बनीं। इनके साथ जब स्त्री-सेना ने लक्ष्मण को घेर लिया तब, विशाल पर्वत के समान उन्नत कन्धों वाले लक्ष्मण का दुर्वार क्रोध दूर हो गया। उनका मुख दूसरी ओर मुड़ गया। वे उनको देखने से भी डरे। ५९८

तामरै वदन्नञ् जाय्त्तुत् तन्नॆडुन् दरैयि न्नून्ऱि
मामियर् कुळुविन् वन्दा नामॆन्न मैन्दन् निऱ्पप्
पूमियि लणङ्ग न्नार्दम् पॊदुविडैप् पुहुन्दु पॊऱ्ऱोळ्
तूमन्न नॆडुङ्गट् टारै नडुङ्गुवा ळिन्नैय शॊन्नाळ् 599

मैन्तन्–वीर कुमार; तामरै वतन्नम् चाय्त्तु–कमल-सम वदन झुकाकर; नॆटु तन्नु–लम्बे धनु को; तरैयिल् ऊन्ऱि–भूमि पर टेककर; मामियर् कुळुविन्–सासों के समुदाय में; वन्तान् आम् ऎन्न–फँस गये जैसे; निऱ्प–संकुचित खड़े रहे; पॊन् तोळ्–सुन्दर भुजाओं; तू मनम्–पवित्र मन; नॆटुम्कण्–आयत आँखों वाली; तारै–तारा; पूमियिल् अणङ्कु अनार् तम्–भूलोक में सुरांगनाओं के समान रहनेवाली वानर-स्त्रियों के; पॊंतुविटै–दल में; पुकुन्तु–घुसकर; नटुङ्कुवाळ्–कंपन के साथ; इन्नैय–यों; चॊन्नाळ्–बोली। ५९९

वीर राजकुमार ने अपना सिर झुका लिया। वे भूमि पर अपने लम्बे धनुष को टेककर ऐसे खड़े रहे, मानो कोई जवान पुरुष सासों के मध्य फँस गया हो। तब सुन्दर भुजा वाली, पवित्र मन वाली और आयताक्षी तारा भूमि में रहनेवाली देवांगनाओं के समान उन रमणियों के दल को चीरकर सामने आयी और काँपती वाणी में बोलने लगी। ५९९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्दमिल् काल नोऱ्ऱ वाऱ्ऱलुण् डायि नऩ्ऱि
इन्दिरऩ् मुदलि ऩोर्क्कु मॆय्दला मियल्बिऱ् ऱऩ्ऱे
मैन्दनिऩ् पादङ् गॊण्डॆम् मऩैवरप् पॆऱ्ऱु वाऴ्न्देम्
उय्न्दऩम् विऩैयुन् दीर्न्दे मुऱुदिवे ऱिदऩ्मे लुण्डो 600

मैन्त–वीर कुमार; अन्तम् इल्–(आपका आगमन) अनन्त; कालम्–काल; नोऱ्ऱ–हमने तपस्या की, उसका; आऱ्ऱल्–बल; उण्टायिऩ् अऩ्ऱि–नहीं होगा तो; इन्तिरऩ् मुतलिऩोर्क्कुम्–इन्द्रादि देवों को भी; ऎय्तलाम्–प्राप्य; इयल्पिऱ्ऱु अऩ्ऱे–गुण का नहीं है न; निऩ् पातम् कॊण्टु–अपने श्रीचरण से (चलकर); ऎम् मऩै–हमारे घर में; वर पॆऱ्ऱु–आ पाये; वाऴ्न्तेम्–हम सफल-जन्म हो गये; विऩैयुम् तीर्न्तेम्–कर्म-मुक्त हुए; उय्न्तऩम्–हमारा उद्धार हो गया; इतऩ् मेल्–इससे बढ़कर; उऱुति–हित; वेऱु उण्टो–और कोई है क्या। ६००

हे वीरकुमार ! आप पैदल चलके इतनी दूर आये हैं। यह आपका आगमन, अनन्त काल तक तपस्या करो, तभी हो सकता है। नहीं तो इन्द्र आदि के लिए भी यह भाग्य प्राप्य रीति का नहीं है। आपके अपने पैरों से चलकर हमारे घर में आगमन से हम उत्कृष्ट जीवन पा गये। हमारा बुरा कर्म मिट गया। हमारा उद्धार हो गया। इससे बढ़कर हितकारी विषय और कुछ है क्या ? —नहीं है। ६००

वॆय्दिऩी वरुद ऩोक्कि वॆरुवुनुञ् जेऩै वीर
शॆय्दिदा नुणर्हि लादु तिरुवुळऩ् दॆरित्ति यॆऩ्ऩा
ऐयनी यरुळिऩ् वेन्द नडियिणै पिरिह लादाय्
ऎय्दिय दॆऩ्ऩै यॆऩ्ऱा ळिशैयिऩु मिऩिय शॊल्लाळ् 601

इचैयिऩुम्–संगीत से भी; इनिय–मधुर; चॊल्लाळ्–भाषिणी; वीर–वीर; नी–आपका; वॆय्तिऩ् वरुतल् नोक्कि–वेग के साथ आना देखकर; चॆय्ति ताऩ्–समाचार; उणर्किलातु–न जान सककर; नुम् चेऩै–आपकी सेना; वॆरुवुम्–डरती है; तिरु उळम्–अपने मन की बात; तॆरित्ति–बताइए; ऎऩ्ऩा–कहकर (आगे); ऐय–सुन्दर वीर; अरुळिऩ् वेन्तऩ्–करुणामय राजाराम के; अटि इणै–चरणद्वय; पिरिकलाताय् नी–छोड़ जो न सकते हैं, वैसे आपका; ऎय्तियतु–आगमन (का हेतु); ऎऩ्ऩै–क्या है; ऎऩ्ऱाळ्–बोली। ६०१

तारा की वाणी संगीत से भी मधुर थी। उसने लक्ष्मण से कहा कि हे वीर ! तुम्हारा सवेग आना देखकर समाचार न जानने के कारण आपकी वानर-सेना डरेगी। कृपया आप अपना मनोभाव कहें। उसने आगे जारी किया— सुन्दर कुमार ! आप तो दया के अधिपति श्रीराम के श्रीचरणों से कभी अलग होनेवाले नहीं हैं। ऐसे आप इधर पधारे हैं —उसका क्या हेतु है ? । ६०१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आर्हॊला वुरैशॆय् दारॆन् ऱरुळ्वरच् चीऱ्ऱ मः(ह्)हाप्
पार्हुला मुळुवॆण् डिङ्गळ् पहल्वन्द पडिवम् बोलुम्
एर्हुला मुहत्ति ऩाळै यिऱैमुह मॆडुत्तु नोक्किन्
तार्हुला मलङ्गऩ् मार्बन् तायरै निऩैन्दु नैन्दाऩ् 602

अलङ्कल्–हिलनेवाली; तार्–माला से; कुलाम मार्पऩ्–अलंकृत वक्ष वाले; अरुळ् वर–कृपा के होने पर; चीऱ्ऱम् अ.ं.का–क्रोध कम करके; उरै चॆय्तार्–भाषण किया; आर् कॊलो–किसने तो; ऎऩ्ऱु–ऐसा सोचकर; कुलाम्–गोल; मुळु–पूर्ण; वॆण् तिङ्कळ्–श्वेत चन्द्र; पकल्–दिन में; पार् वऩ्त–भूमि पर आया हो, ऐसा; पटिवम् पोलुम्–रूप वाली (को); एर् कुलाम्–सौंदर्यमय; मुकऩ्तिऩाळै–मुख वाली को; मुकम्–मुख; इऱै ऎंटुऩ्तु–थोड़ा उठाकर; नोक्कि–देखकर; तायरै निऩैऩ्तु–अपनी माताओं को स्मरण करके; नैऩ्ताऩ्–दुःखी हुए। ६०२

हिलनेवाली पुष्पमाला से भूषित लक्ष्मण के मन में दया आयी। क्रोध कम हुआ। ऐसा बोलनेवाली कौन होगी ? यह समझने के लिए जब उसने थोड़ा मुख उठाकर तारा का सुन्दर मुख देखा, जो गोल राका-चन्द्र, दिन में ही भूमि पर आया-सा (मन्दप्रभ) लगता था, तब उन्हें अपनी (विधवा) माताओं का स्मरण आया और वे बहुत दुःखी हुए। ६०२

मङ्गल वणियै नीक्कि मणियणि तुऱन्दु वाशक्
कॊङ्गलर् कोदै मार्ऱिक् कुङ्गुमञ् जान्दङ् गॊट्टा
पॊङ्गुवॆम् मुलैहळ् पूहक् कळुत्तॊडु मऱैयप् पोर्त्त
नङ्गैयैक् कण्ड वळ्ळल् नयऩङ्गळ् पऩिप्प निऩ्ऱाऩ् 603

मङ्कलम् अणियै–अहिवात के आभरणों को; नीक्कि–दूर करके; मणि अणि–नवरत्नाभरण; तुऱन्तु–त्यागकर; वाचम्–सुगन्धपूर्ण; कॊङ्कु अलर्–शहद-भरी; कोतै–पुष्पमाला को; मार्ऱि–हटाकर; कुङ्कुमम् चान्तम्–कुंकुम-चन्दन; कॊट्टा–न लगाकर; पॊङ्कु वॆम् मुलैकळ्–पीन और प्यारे स्तनों को; पूकम् कळुत्तॊटु–पूगतरु-सम कन्धों के साथ; मऱैय–छिपाते हुए; पोर्त्त–ओढ़े (रहनेवाली); नङ्कैयै–स्त्री तारा को; कण्ट–जिन्होंने देखा; वळ्ळल्–वे प्रभु; नयऩङ्कळ्–आँखों को; पऩिप्प–अश्रु से भरने देते हुए; निऩ्ऱाऩ्–खड़े रहे। ६०३

उस पर अहिवात के आभरण नहीं थे। मणियाँ नहीं थीं। सुवासित और शहद-भरे पुष्पों की मालाएँ त्याग दी गयी थीं। कुंकुम, चन्दन आदि के लेप का श्रृंगार नहीं था। पीन और गरम स्तनों को पूग-तरु-सम कन्धों के साथ ओढ़नी के अन्दर छिपाये रखकर तारा खड़ी थी। यह देखकर दयानिधि लक्ष्मण की आँखों से आँसू आ गये। वे वैसे ही स्तब्ध खड़े रहे। ६०३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इऩैयरा मऩ्ऩै यीऩ्ऱ विरुवरु मॆऩ्ऩ वॆन्द
निऩैविऩा ऩयर्प्पुच् चॆऩ्ऱ नॆञ्जिऩ ऩॆडिदु निऩ्ऱाऩ्
विऩविऩाट् कॆदिरोर् माऱ्ऱम् विळम्बवुम् वेण्डु मॆऩ्ऱप्
पुऩैहुऴ लाट्कु वन्द कारियम् पुहल्व दाऩाऩ् 604

अॆऩ्ऩै ईऩ्ऱ–मेरी जननियाँ; इरुवरुम्–दोनों; इऩैयर् आम्–ऐसी ही (विधवा-वेश में) होंगी; अॆऩ्ऩ–ऐसे; वॆन्त निऩैविऩाऩ्–झुलसानेवाले विचार से; अयर्प्पु चॆऩ्ऱ–थकित; नॆञ्चिऩाऩ्–मन वाले हो; नॆटिदु निऩ्ऱाऩ्–लम्बी देर तक जो खड़े रहे; विऩविऩाट्कु–अपने से प्रश्न करनेवाली से; अॆतिर् ओर् माऱ्ऱम्–उत्तर में एक बात; विळम्पवुम् वेण्टुम्–कहना भी है; अॆऩ्ऱु–यह सोचकर; अ पुऩै कुऴलाट्कु–उस सुन्दर केश वाली से; वन्त कारियम्–आगमन का हेतु; पुकल्वतु आऩाऩ्–कहने लगे। ६०४

वे सोचने लगे— मेरी दोनों माताएँ (कैकेयी का स्मरण नहीं हुआ) ऐसी ही दिखेंगी। इस तापक विचार से उनका मन दुर्बल हुआ। बहुत देर तक वैसे ही खड़े रहे। बाद सोचा कि प्रश्न करनेवाली को उत्तर देना चाहिए। इसलिए वे सुकेशिनी तारा से अपने आगमन का अभिप्राय इन शब्दों में कहने लगे। ६०४

शेऩैयुम् याऩुन् देडित् तेवियैत् तरुवॆ नॆऩ्ऱु
माऩवऱ् कुरैत्त माऱ्ऱ मऱन्दऩ ऩरुक्कऩ् मैन्दऩ्
आऩव ऩमैदि वल्लै यऱियॆऩ वरुळिऩ् वन्देऩ्
मेऩ्ऩिलै यऩैयाऩ् शॆय्है विळैन्दवा विळम्बु हॆऩ्ऱाऩ् 605

अरुक्कऩ् मैन्तऩ्–सूर्यसूनु ने; चेऩैयुम्–सेना और; याऩुम्–मैं; तेवियै–देवी सीता को; तेटि तरुवॆऩ्–खोज लाऊँगा; अॆऩ्ऱु–ऐसा; माऩवऱ्कु–मनुकुलोदित श्रीराम को; उरैत्त माऱ्ऱम्–जो दिया, वह वचन; मऱन्तऩऩ्–(सुग्रीव) भूल गया; आऩवऩ् अमैति–उसका अभिप्राय; वल्लै अऱिति–जल्दी जान आओ; अॆऩ्ऩ–ऐसा (श्रीराम के) कहने पर; अरुळिऩ्–उस आज्ञा को लेकर; वन्तेऩ्–आया; मेल् निलै–उच्चस्थिति के; अऩैयाऩ् चॆय्कै–उसका समाचार; विळैन्तवा–जैसे होता है; विळम्पुक–वैसा कहो; अॆऩ्ऱाऩ्–बोले। ६०५

"सूर्य-पुत्र ने मनुकुल-दीपक श्रीरामजी को वचन दिया था कि मैं और मेरी सेना देवी सीता को खोजकर लायगी। वह उसको भूल गया। उसका मन जान आओ।" श्रीराम ने मुझसे यह कहा और उनकी आज्ञा पर मैं इधर आया हूँ। उत्कृष्ट राजधन जिसे मिला है, उस सुग्रीव के कार्य के सम्बन्ध में आप ही कहें —लक्ष्मण ने यह कहा। ६०५

शीऱुवा यल्लै यैय शिऱियवर् तीमै शॆय्दाल्
आऱुवाय् नीय लाऩ्मऱ् ऱारुळ रयर्ऩ्दा ऩल्लऩ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेऱुवे ऱुलह मॅङ्गुन् दूदरै विडुत्त वल्लै
ऊऱुमा नोक्कित् ताळ्त्ता नुदविमा ऱुदवि युण्डो 606

ऐय–प्रभु; चिऱियवर्–छोटे लोग; तीमै चॅय्ताल्–अपराध करें तो; चीऱ्वाय् अल्लै–कोप मत करें; आऱ्वाय्–शान्त हों; नी अलाल्–(इस योग्य) आपके सिवा; मऱ्ऱ आर् उळर्–और कौन हैं; अयर्न्तात् अल्लन्–(सुग्रीव) भूले नहीं हैं; उलकम् ॲङ्कुम्–विश्व भर में; वेऱ वेऱ–अलग-अलग; तूतरै विटुत्तु–दूतों को भेजकर; अ ॲल्लै–उन स्थलों से; ऊऱुमा नोक्कि–उनके आने की प्रतीक्षा करते हुए; ताळ्त्तात्–विलम्ब किया (उन्होंने); उतवि–आपकी की हुई सहायता का; माऱ उतवि–प्रतीकार सहायता; उण्टो–भी (हो सकती) है क्या। ६०६

(तारा ने उत्तर दिया कि) प्रभु ! छोटे लोग बुराई करें तो बड़े आपको क्रोध नहीं करना चाहिए। शान्त हो जाइये। अगर आप शान्त नहीं हो सकेंगे, तो और कौन हैं जिनमें यह गुण होगा ? और भी सुग्रीव कुछ नहीं भूले हैं। संसार भर में उन्होंने दूत भेजे हैं। उनके आने की प्रतीक्षा में वे विलम्ब कर रहे हैं। आपने जो उपकार किया, उसका प्रत्युपकार हो भी सकता है क्या ? । ६०६

आयिर कोडि तूद ररिक्कण मळैप्प वाण
पोयिऩर् पुहुदु नाळुम् पुहुन्ददु पुहल्पुक् कोर्क्कुत्
तायिनु मिऩिय नीरे तणिदिरार् ऱरुम मः(ह्)दाल्
तीयऩ शॅय्या रायिऩ् यावरे शॅऱुन रावार् 607

आयिर कोटि तूतर्–सहस्र करोड़ (असंख्यक) दूत; अरि कणम् अळैप्प–वानर-गणों को बुला लाने; आणै पोयिऩर्–(सुग्रीव की) आज्ञा से चले हैं; पुकुतुम् नाळुम्–उनके आने का दिन भी; पुकुन्ततु–आ गया; पुकल् पुक्कोर्क्कु–शरणागतों के लिए; तायिनुम् इऩिय–माता से बढ़कर प्यारे रहनेवाले; नीरे–आप ही; तणितिर्–कोप शान्त करने अर्ह है; अ.ःतु तरुमम्–वही धर्म है; तीयत चॅय्यार् आयिऩ्–अगर बुरा काम करते ही नहीं; चॅऱ्तर् आवार्–कोपभाजन या दंड्य होगा; यावरे–कौन। ६०७

सहस्रकोटि (असंख्यक) दूत वानर-समूहों को ले आने के लिए सुग्रीव की आज्ञा लेकर चले हैं। उनके लौट आने का समय भी आ गया है। शरणागतों के लिए आप माता से भी प्यारे हैं। आपका क्रोध शान्त हो। वही धर्म है। बुरे काम करनेवाले होंगे ही नहीं तो क्रोध करने योग्य या दण्डनीय कौन होंगे ? (अपराध हो ही जाते हैं। तभी तो क्षमा की बात भी आती है।) । ६०७

अडैन्दवर्क् कबय नीवि ररुळिय वळविल् शॅल्वम्
तॊडर्न्दुनुम् बणियिर् ऱीर्न्दा लदुवुनुन् दॊळिले यऩ्ऱो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मडन्दैदन् पॊरुट्टाल् वन्द वाळमर्क् कळत्तु माण्डु
किडन्दिल रॆन्तिर् पिन्नु निर्कुमो केण्मै यम्मा 608

नीविर्–आप; अटैन्तवर्क्कु–आपकी शरण में आये हुए लोगों को; अपयम् अरुळिय–अभय के साथ जो दी; अळवु इल् चॆल्वम्–वह अनन्त सम्पत्ति; तॊटर्न्तु–मिली, उस कारण; नुम् पणियिन्–आपकी सेवा की; तीर्न्ताल्–उपेक्षा करें तो; अतुवुम्–वह भी; नुम् तॊऴिले–आपका ही कार्य; अन्ऱो–होगा न; मटन्तै तन्–रमणी सीता के; पॊरुट्टाल् वन्त–कारण प्राप्त; वाळ् अमर् कळत्तु–तलवार के युद्ध की भूमि में; माण्टु किटन्तिलर्–मरकर पड़े नहीं रहे; ऎन्तिन्–तो; पिन्नुम्–उसके बाद भी; केण्मै–मित्रता; निर्कुमो–टिकेगी क्या। ६०८

सुग्रीव आपकी शरण में आये थे। आपने उनको अभय प्रदान किया। और उन्हें फलस्वरूप अपार वैभव और सुख-भोग मिल गया। उसमें भूलकर अगर सुग्रीव आपकी सेवा त्यागेंगे तो वह भी आपके ही कृत्य का फल समझा जायगा न? सीतादेवी के कारण तलवार के साथ लड़ने योग्य युद्ध जो आयगा, उसमें वे मरे नहीं पड़ेंगे तो मित्रता भी टिकेगी क्या? । ६०८

शॆम्मैशे रुळ्ळत् तीर्हळ् शॆय्दपे रुदवि तीरा
वॆम्मैशेर् पहैयु मार्ऱि यरशुवीर् ऱिरुक्क विट्टीर्
उम्मैये यिहऴ्व रॆन्नि नॆऴिमैया यॊऴिव दॊन्ऱो
इम्मैये वरुमै यॆय्दि यिरुमैयु मिऴप्प रन्ऱे 609

चॆम्मै चेर् उळ्ळत्तीर्कळ्–निष्पक्षता से सुसंस्कृत मन वाले (आप) ने; चॆय्त पेर् उतवि–जो (उपकार) किया, वह बड़ा उपकार; तीरा–भुलाया नहीं जा सके, ऐसा; वॆम्मै चेर्–भयंकर; पकैयुम् मार्ऱि–शत्रु को मारकर; अरचु वीर्ऱिरुक्क विट्टीर्–राजा बन बैठने दिया (आपने सुग्रीव को); उम्मैये इकऴ्वर्–आपकी ही उपेक्षा करेंगे; ऎन्तिन्–तो; ऎऴिमैयाय् ऒऴिवतु ऒन्ऱो–(वह उपेक्षा) यों ही आसानी से चली जायगी क्या; इम्मैये वरुमै ऎय्ति–इसी जन्म में अभावग्रस्त होकर; इरुमैयुम्–इह-पर दोनों को; इऴप्पर् अन्ऱे–खो देंगे न। ६०९

उत्कृष्ट मन वाले आपने उपकार किया। वह बड़ा उपकार भुलाया न जाय, ऐसा आपने उनके सन्तापक शत्रु तो मारा और उन्हें राजसिंहासन पर शान के साथ आसीन कराया। अगर वे आपकी उपेक्षा करेंगे तो क्या वह आसानी से (विफल) हो जायगी? इसी जन्म में दरिद्र बनकर वे इह-पर दोनों हितों से वंचित न हो जायँगे? । ६०९

आण्डुपोर् वालि याऱ्ऱन् मार्ऱिय दम्बॊन् ऱायिन्
वेण्डुमो तुणैयु नुम्बाल् विल्लिनु मिक्क दुण्डो
तेण्डुवार्त् तेडु हिन्ऱीर् देवियै यदनैच् चॆव्वे
पूण्डुनिन् ऱुय्त्तऱ् पालार् नुङ्गऴल् पुहुन्दु ळोरुम् 610

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आण्टु–तब (वाली-युद्ध के समय); पोर् वालि–योद्धा वाली का; आऱ्ऱल्–बल का; माऱ्ऱियतु–नाश करना; अम्पु ऑन्ऱु–आपका ही एक शर है; आयिन्–तो; तुणैयुम्–सहायक भी; वेण्टुमो–चाहिए क्या; नुम् पाल्–आपके पास रहनेवाले; विल्लिनुम् मिक्कतु–धनु से बढ़कर बलवान; उण्टो–सहायक हैं क्या; तेवियै तेण्टुवार्–देवी सीता के अन्वेषक; तेटुकिन्ऱीर्–खोजते हैं (इतना ही); नुम् कळल्–आपके चरणों में; पुकुन्तुळोरुम्–आगत सुग्रीव आदि; अतनै–उस (सेवाकार्य) को; चॅव्वे पूण्टु निन्ऱु–अच्छे प्रकार से लेकर पूरा करके; उय्तल् पालार्–उद्धार पाने अहं हैं। ६१०

(असल में आप सहायक नहीं चाहते।) आपके एक ही शर ने योद्धा वाली के बल को नष्ट किया। तब आपको सहायक भी चाहिए क्या ? आपके धनु से बढ़कर कोई (सहायक) क्या होगा ? आप तो सीता देवी के अन्वेषकों की खोज में हैं। आपके शरणागत सुग्रीव आदि वह सेवाकार्य अच्छी तरह से करें —यह उनका कर्तव्य ही है। ६१०

ऍन्ऱव ळुरैत्त माऱ्ऱम् यावैयु मिन्निदु केट्टु
नन्ऱुणर् केळ्वि याळ नरुळ्वर नाणुट् कॉण्डान्
निन्ऱन निऱ्ऱ लोडु नीत्तनन् मुनिवॅन् ऱुन्ना
वन्ऱुणै वयिरत् तिण्डोण् मारुदि मरुङ्गु वन्दान् 611

ऍन्ऱु–ऐसा; अवळ् उरैत्त माऱ्ऱम्–उसके कहे वचन; यावैयुम्–सब; इनितु–ससंतोष; केट्टु–सुनकर; नन्ऱु उणर्–अच्छी तरह जाने हुए; केळ्वि–याळन्–श्रवण-ज्ञान के रखनेवाले लक्ष्मण; अरुळ् वर–करुणा के आने से; नाण् उळ् कॉण्टु–लाज से युक्त होकर; निन्ऱान्–खड़े रहे; निन्ऱलोटुम्–स्थित रहते ही; मुनिवु नीत्तनन्–क्रोध छोड़ गये; ऍन्ऱु उन्ना–ऐसा सोचकर; वल् तुणै–बलवान सहायक; वयिरम् तिण् तोळ्–सारयुक्त और कठोर भुजाओं वाला; मारुति–मारुति; मरुङ्कु वन्तान्–पास आया। ६११

तारा ने जो कुछ कहा, वह सब लक्ष्मण ने सन्तुष्ट होकर सुना। लक्ष्मण ने शास्त्र खूब सुने थे और उनको खूब समझ लिया था, यानी वे बड़े ही शिष्ट थे। उन्हें दया आ गयी और लज्जायुक्त हो खड़े रह गये। जब वे ऐसे खड़े हो गये, तब हनुमान को, जिसके युगल कन्धे बड़े और सुदृढ़ थे, आश्वासन हो गया कि लक्ष्मण का क्रोध दूर हो गया। इसलिए हनुमान उनके पास आया। ६११

वन्दडि वणङ्गि निन्ऱ मारुदि वदन नोक्कि
अन्दमिल् केळ्वि नीयु मयर्त्तनै याहु मन्ऱे
मुन्दिन शॅय्है यॅन्ऱान् मुनिविनु मुळैक्कु मन्बान्
ऍन्दैकेट् टरुळु हॅन्ना वियम्बिन नियम्ब वल्लान् 612

मुनिविनुम्–क्रोध में भी; मुळैक्कुम्–उत्पन्न; अन्पान्–स्नेह वाले (लक्ष्मण) ने; वन्तु–आकर; अटि वणङ्कि–पैरों पर नमस्कार करके; निन्ऱ–जो खड़ा रहा,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस; मारुति वतत्तम् नोक्कि–मारुति का मुख देख; अन्तम् इल्–अनंत; केळ्वि–श्रवण-ज्ञान रखनेवाले; नीयुम्–तुम भी; मुन्तित्त चॅय्कै–पहले (जो) हुआ (वह) काम; अयर्त्तत्तै अन्ऱे–भूल गये न; ऍन्ऱान्–कहा; इयम्प वल्लान्–वाग्विदग्ध; ऍन्तै–पिता-सम; केट्टु अरुळुक–सुनने की कृपा करें; ऍन्ऩा–यह कहकर; इयम्पिनन्–आगे बोला। ६१२

लक्ष्मण ऐसे थे कि क्रोध करते हुए भी प्रेम रखनेवाले थे। अपने पैरों पर नमन करनेवाले मारुति का मुख देखकर लक्ष्मण बोले— अपार श्रवण-ज्ञान रखनेवाले हो तुम ! तुमने भी पहले जो हुआ उसको भुला दिया न ? तब वाग्विदग्ध हनुमान ने कहा कि पिता (तुल्य) ! सुनने की कृपा करें। आगे वह यों बोला। ६१२

शिदैवहल् कादऱ् ऱायैत् तन्दैयैक् कुरुवैत् तॅय्वप्
पदवियन् दणरै यावैप् पालरैप् पावै मारै
वदैपुरि हुनर्क्कु मुण्डा माऱ्ऱला माऱ्ऱन् माया
उदविहीन् ऱार्क्कॅन् ऱेनु मॉऴिक्कला मुबाय मुण्डो 613

चितैवु अकल्–अक्षय; कातल् तायै–वात्सल्यभरी माता को; तन्तैयै–और पिता को; कुरुवै–गुरु को; तॅय्वम् पतवि–देवपदासीन; अन्तणरै–ब्राह्मणों को; आवै–गायों को; पालरै–बालों को; पावैमारै–स्त्रियों को; वतै पुरिकुत्तर्क्कुम्–जो मारते हैं (हत्या करते हैं), उनके लिए भी; माऱ्ऱलाम् आऱ्ऱल्–परिहार का उपाय; उण्टाम्–होता है; माया–अविस्मरणीय; उतवि कॊन्ऱार्क्कु–सहायता (मारनेवालों) भूलनेवालों (कृतघ्नों) के लिए; ऒऴिक्कलाम् उपायम्–निवारण का उपाय; ऒन्ऱेनुम्–एक भी; उण्टो–है क्या। ६१३

संसार में अक्षय प्रेम रखनेवाली माता की और पिता, गुरु, देवतुल्य ब्राह्मण, गाय, बालक, स्त्री —इनकी हत्या करना बड़ा पाप है। पर ऐसे पाप का भी प्रायश्चित्त हो सकता है। कृतघ्नता का परिहार कहीं एक भी है क्या ? । ६१३

ऐयनुम् मोडु मॅङ्ग ळरिक्कुलत् तरश नोडुम्
मॅय्युऱु केण्मै याह मेलैनाळ् विळैव दाय
शॅय्हैयॅन् शॅय्है यन्ऱो वन्नदु शिदैयु मायिन्
उय्वहै यॅवर्क्कु मुण्डो वुणर्वुमा शुण्ड दन्ऱो 614

ऐय–सुन्दर; नुम्मोटुम्–आपके; अरिकुलत्तु–और वानरकुल के; ऍङ्कळ् अरचनोटुम्–हमारे राजा सुग्रीव के बीच; मॅय् उऱु–सच्ची रीति से बनी; केण्मै–मित्रता; आक–हो ऐसा; मेलै नाळ्–पहले; विळैवतु आय–जो हुआ; चॅय्कै–वह काम; ऍन् चॅय्कै अन्ऱो–मेरा काम था न; अन्नतु–वह मित्रता; चितैयुम् आयिन्–टूट जायगी तो; उय्वकै–उद्धार का मार्ग; ऍवर्क्कुम्–किसी के लिए भी; उण्टो–होगा क्या; उणर्वु–हमारी बुद्धि; माचु उण्टतु अन्ऱो–कलंकित बन जायगी न। ६१४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुन्दर राजकुमार ! आपके साथ वानरकुल के हमारे राजा की सच्ची मित्रता स्थापित हुई। क्या वह काम मेरा नहीं है ? अगर वह टूट जायगी तो उससे जो पाप होगा उससे बचने का किसी के लिए क्या मार्ग होगा ? उसका अर्थ यही होगा न कि हमारी बुद्धि धूमिल हो गयी ! । ६१४

देवरुन् दवमुञ् जॅय्यु नल्लऱत् तिऱमु मऱ्ऱुम्
यावैयु नीरे यॅन्ब दॅन्वयिऱ् किडन्द दॅन्दाय्
आवदु निऱ्क शेरु मरणुण्डो वरुळुण् डन्ऱेल्
मूवहै युलहङ् गाक्कु मॉय्म्बिनीर् मुनिवुण् डानाल् 615

ॲन्ताय्–पिता (-सम); चॅय्युम् तवमुम्–हमारी की जानेवाली तपस्या; तेवरुम्–हमारे देव; मऱ्ऱुम् यावैयुम्–अन्य सभी कुछ; नीरे–आप ही हैं; ॲन्पतु–यह विचार; ॲन् वयिन्–मेरे मन में; किटन्ततु–घर किये है; आवतु निऱ्क–वह जो है एक ओर रहे; मूवकै उलकम्–त्रिवर्ग के लोकों का; काक्कुम्–पालन करने का; मॉय्म्पितीर्–बल रखनेवाले; अरुळ्–आपकी कृपा ही; उण्टु–हमारे लिए है; अन्ऱेल्–नहीं तो; मुनिवु उण्टाताल्–कोप करेंगे तो; चेरुम्–हम जा लगें, ऐसी; अरण् उण्टे–रक्षा का स्थान भी है क्या। ६१५

हमारे पिता (तुल्य) ! हमारे तप आप हैं। हमारे देव आप ही हैं। हमारे अन्य सभी कुछ आप ही हैं। यह विचार मेरे मन में घर किये है। वह एक ओर रहे— तीनों लोकों का पालन करने में समर्थ ! आपकी कृपा ही हमारी गति है ! अगर कृपा न रहे और क्रोध भी हो जाय तो हम कहाँ जायँगे, जहाँ हमें शरण मिलेगी ? । ६१५

मऱन्दिलन् कवियिन् वेन्दन् वयप्पडै वरुविप् पारै
तिऱन्दिऱ मेवि यन्नार् शेर्वदु पार्त्तुत् ताळ्त्तान्
अऱन्दुणै नुमक्कुत् तान्ऱन् वाय्मैयै यळिक्कु मायिन्
पिऱन्दिल नन्ऱे यॉन्ऱो नरहमुम् पिळैप्प दन्ऱाल् 616

कवियिन् वेन्तन्–कपिराज; मऱन्तिलन्–नहीं भूले; वय पटै–विजय-वाहिनी को; वरुविप्पारै–बुला लानेवालों को; तिऱम् तिऱम्–(पृथ्वी के) भाग-भाग में; एवि–भेजकर; अन्तार् चॅर्वतु–उनके आने की; पार्त्तु–(राह) देखते हुए; ताळ्त्तान्–विलम्ब किया (सुग्रीव ने); अऱम् तुणै–धर्म-मित्र; नुमक्कु–आपके विषय में; तान्–स्वयं; तन् वाय्मैयै–अपने सत्य का (वचन का); अळिक्कुम् आयिन्–भंग कर देंगे तो; पिऱन्तिलन् अन्ऱो–जनित नहीं है न (जन्म वृथा हो गया न); ऑन्ऱो–क्या वही एक है; नरकमुम्–नरक भी; पिळैप्पतु अन्ऱु–छोड़ेगा नहीं। ६१६

कपिकुलपति भूले नहीं हैं। विजयवाहिनी को बुलाने के लिए दूत भेजे जा चुके हैं। दूतों को स्थान-स्थान पर भेजकर वे उनके लौट आने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

का रास्ता देख रहे हैं। आप धर्मपालक हैं। अगर आपके प्रति सत्य व्यवहार को सुग्रीव बिगाड़ देंगे तो वे पैदा हुए ही नहीं, ऐसा न समझे जायँगे (जन्म असफल हुआ रहेगा न) ? यह एक बुरा नतीजा ही नहीं— उन्हें नरक का वास भी मिलने से नहीं चूकेगा। ६१६

उदवाम लॊरुवऩ् शॆय्द वुदविक्कुक् कैम्मा ऱाह
मदवाऩै यऩैय मैऩ्द मऱ्ऱु मॊऩ्ऱुलहि लुण्डो
शिदैयाद शॆरुवि लऩ्ऩाऩ् मुऩ्शॆऩ्ऱु शॆरुऩऱ् मार्बिऩ्
उदैयाऩे लुदैयुण् डावि युलैयाऩे लुऱवॆऩ् मऩ्ऩो 617

मतम् आऩै–मत्तगज; अऩैय मैऩ्त–समान वीर; उतवामल्—विना उपकृत हुए ही; ऒरुवऩ् चॆय्त–जिसने किया; उतविक्कु–उस उपकार के; कैम्माऱु आक–बदले में; मऱ्ऱुम् ऒऩ्ऱु–और कुछ; उलकिल्–संसार में; उण्टो–होगा क्या; चितैयात चॆरुविल्–पूर्ण युद्ध में; अऩ्ऩाऩ् मुऩ् चॆऩ्ऱु–उसके पूर्व ही जाकर; चॆरुनऱ मार्पिल्—शत्रु के वक्ष में; उऩैयाऩेल्–बाण गड़ा न दे तो भी; उऩै उण्टु–बाण से आहत होकर; आवि उलैयाऩेल्–प्राण नहीं छोड़ेगा तो; उऱवु ऎऩ्–(फिर) उससे नाता क्या; (मन्–ओ··· पूरक ध्वनियाँ)। ६१७

मत्तगज-सदृश महावीर ! अहेतुक उपकार का कोई प्रत्युपकार इस संसार में सम्भव है क्या ? घोर युद्ध में उन (उपकारी) के पहले ही जाकर शत्रु के वक्ष पर बाण चलाना (या लात मारना) चाहिए। अगर वह न हो सके तो शत्रु का शर वक्ष में लेकर प्राण छोड़ नहीं देगा तो ऐसे उपकृतों के साथ सम्बन्ध से क्या होनेवाला है ? । ६१७

ईण्डिऩि निऱ्ऱ लॆऩ्ब दिऩियदो रियल्बिऱ् ऱऩ्ऱाल्
वेण्डल रऱिव रेऩुङ् गेण्मैदीर् विऩैयिऱ् ऱामाल्
आण्डहै याळि मॊय्म्बि नैयनी रळित्त शॆल्वम्
काण्डिया लुऩ्मुऩ् वऩ्द कविक्कुलक् कोऩॊ डॆऩ्ऱाऩ् 618

आण् तकै–पौरुषयुक्त; आळि–'याळि' (नामक बलवान जानवर) के समान; मॊय्म्पित्–बलवान; ऐय–प्रभु; नी–आप; ईण्टु–यहाँ; इऩि–अब भी; निऱ्ऱल् ऎऩ्पतु–खड़े रहने का यह काम; इयल्पिऱ्ऱु अऩ्ऱु–(मित्रता के लिए) स्वाभाविक नहीं; वेण्टलर्–शत्रु लोग; अऱिवरेल्–जान लेंगे तो; नुम् केण्मै–आपकी मित्रता; तीर् विऩैयिऱ्ऱु आम्–टूट जाय, ऐसा अनर्थकारी हो जायगा; नीर् अळित्त चॆल्वम्–आपने दिया, यह धन; उऩ् मुऩ् वऩ्त–आपके अग्रज (के रूप में सम्मानित); कवि कुलम्–कपिकुल के; कोऩ् ऒटु–राजा के साथ; काण्टि–आकर निहार लें; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा (हनुमान ने)। ६१८

पौरुषयुक्त "याळि" सदृश बलवान प्रभु ! आप आगे भी यहाँ खड़े रहेंगे, तो वह मधुर-सम्बन्ध का लक्षण नहीं होगा। शत्रु जानेंगे तो हमारी मित्रता के नाश का कारण बन जायगा। आपने जो वैभव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हमें दिलाया उसे, और आपके बड़े भाई के रूप में स्वीकृत हमारे वानरयूथों के पति सुग्रीव को आकर निहारें। हनुमान ने आमन्त्रित किया। ६१८

मारुदि मार्ऱ्ऱङ् गेट्ट मलैपुरै वयिरत् तोळान्
तीर्विनै शॅन्ऱु निन्ऱ शीऱ्ऱत्तान् शिन्दै शॅय्दान्
आरिय नरुळिऱ् रीर्न्दा नल्लनवन् दडुत्त शॅल्वम्
पेर्वरि दाहच् चॅय्द शिऱुमैया नॅन्नुम् बॅर्ऱि 619

मारुति–मारुति का; मार्ऱ्ऱम् केट्ट–उत्तर सुननेवाले; मलै पुरै–पर्वत की समानता करनेवाले; वयिरम् तोळाऱ्–सारयुक्त कन्धों वाले; तीर् विनै चॅन्ऱु–हटने पर तत्पर; निन्ऱ–जो रहा; चीऱ्ऱत्तान्–वैसा क्रोध जिनका था (क्रोध-रहित हो); आरियन् अरुळिल्–आर्य श्रेष्ठ श्रीराम की आज्ञा की; तीर्न्तान् अल्लन्–उपेक्षा नहीं की है; वन्तु अडुत्त चॅल्वम्–अपने को प्राप्त वैभव-सुख-भोग को; पेर्वु अरितु आक–भूलना कठिन था, इसलिए; चॅय्त चिऱुमैयान्–अल्पकर्मा हो गया है; ऍन्नुम् पॅर्ऱि–यह स्वाभाविक फल; चिन्तै चॅय्तान्–मन में सोचा (लक्ष्मण ने)। ६१९

लक्ष्मण ने मारुति के वचन सुने। अब पर्वतोन्नत भुजा वाले वे गतक्रोध हो गये थे। उन्हें पता लग गया कि सुग्रीव ने श्रीराम की आज्ञा की उपेक्षा नहीं की है, वरन् यह नई प्राप्त सम्पत्ति का गुण था जो उसे सुख-भोग से अलग होने नहीं दे रहा था। इसके कारण वह गुणहीन हो गया था। लक्ष्मण ने इस तथ्य को समझा। ६१९

अनैयदु करुदिप् पिन्न रऱिक्कुलत् तवनै नोक्कि
निनैयॊरु मार्ऱ् मिन्ने निहळ्त्तुव दुळदु निन्बाल्
इनैयन वुरैत्तऱ् केऱ्ऱ वॅण्णुदि यिवैनी यॅन्ना
वनैहळल् वयिरत् तिण्डोण् मन्निळङ् गुमरन् शॊल्वान् 620

अनैयतु करुति–उसको सोचकर; पिन्नर्–बाद; वनै कळल्–सुनिर्मित वीर-कटक; वयिरम् तिण् तोळ्–हीर के समान कठोर कन्धे; मन् इळम् कुमरन्–(इनके साथ शोभायमान) चक्रवर्तीकुमार; अरि कुलत्तवनै–वानरकुल के उस (हनुमान) को; नोक्कि–देखकर; इन्ने–अभी; निनै–तुम्हें; ऒरु मार्ऱ्ऱम्–एक समाचार; निकळ्त्तुवतु–कहना; उळतु–(रहता) है; इनैयत–यह; निन्पाल् उरैत्तऱ्कु–तुम्हारे पास; एऱ्ऱ–कहने योग्य है; नी इवै ऍण्णुति–तुम ये बातें सोचो; ऍन्ना–कहकर; चॊल्वान्–कहने लगे। ६२०

यह सोचकर, कारीगरीयुक्त स्वर्ण-पायलों और वज्र-सम कठोर भुजाओं से भूषित राजकुमार लक्ष्मण ने वानरकुल के हनुमान से कहा कि मारुति! तुमसे कुछ बातें कहनी हैं। ये बातें तुम्हीं से कहने योग्य है। तुम सुनो और उन पर विचार करो। वे आगे यों बोले। ६२०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देवियैक् कुऱित्तुच् चॅऱ्ऱ शीऱ्ऱमु मानत् तीयुम्
आवियैक् कुऱित्तु निऩ्ऱ वैयऩै यदऩैक् कण्डेऩ्
कोवियऱ् ऱरुमम् नीङ्गक् कॉडुमैयो डुऱवु कूडिप्
पावियऱ्क् केऱ्ऱ शॅय्यक् करुदुवल् पऴियुम् पारेऩ् 621

तेवियै कुऱित्तु–देवी सीता (के हरण) के कारण; चॅऱ्ऱ–शत्रु के प्रति हुआ; चीऱ्ऱमुम्–रोष और; मानम्–(अप-) मान की; तीयुम्–आग दोनों; ऐयऩै आवियै कुऱित्तु–प्रभु श्रीराम के प्राणों को लक्ष्य बनाकर; निऩ्ऱ–(क्रियाशील) खड़े हैं; अतऩै कण्टेऩ्–इसको मैंने देखा; को इयल्–राजा के लिए उचित; तरुमम् नीङ्क–धर्म छोड़कर; कॉटुमैयोटु–क्रूरता से; उऱवु कूटि–सम्बन्ध स्थापित करके; पावियऱ्कु–पापी जनों के; एऱ्ऱ–योग्य; चॅय्य–(काम) करना; करुतुवल्–सोचूंगा; पऴियुम्–(उससे मिलनेवाली) निन्दा; पारेऩ्–की भी परवाह नहीं करूँगा। ६२१

श्रीराम की बात सोचो। देवी के अपहरण से उत्पन्न शत्रुता-भरा क्रोध और अपमान-भावना की आग उनके प्राणों को खाये जा रही है। उसको प्रत्यक्ष देखकर मेरे मन में यह भाव उठा कि राजधर्म छोड़ दूँ; क्रूरता के धर्म से नाता जोड़ लूँ और पापी-योग्य (आत्म-) घातक कार्य कर लूँ; और इसमें अपयश की परवाह नहीं करूँ। ६२१

आयितु मॅऩ्ऩै याऩै याऱ्ऱिनिऩ् ऱावि युय्नदु
नायहऩ् ऱऩैयुऩ् देऱ्ऱ नाळ्पल कऴिन्द वऩ्ऱेल्
तीयुमिव् वुलह मूऩ्ऱुऩ् देवरुम् वीव रॉऩ्ऱो
वीयुनल् लऱमुम् बोहा विदियैयार् विलक्कऱ् पालार् 622

आयितुम्–तो भी; ऍऩ्ऩै–अपने को; याऩै आऱ्ऱि निऩ्ऱु–स्वयं शान्त करके; आवि उय्नतु–प्राणधारण करके; नायकऩ् तऩैयुम्–नायक श्रीराम को भी; तेऱ्ऱ–ढाढ़स दिलाने में; नाळ् पल कऴिऩ्त–अनेक दिन बीत गये; अऩ्ऱेल्–नहीं तो; इ उलकम् मूऩ्ऱुम्–ये तीनों लोक; तीयुम्–जल जाते; तेवरुम् वीवर्–देव भी मर जाते; ऑऩ्ऱो–यही एक है क्या; नल् अऱमुम्–श्रेष्ठ धर्म भी; वीयुम्–मिट जाते; पोका–अटल; वितियै–विधि को; विलक्कल् पालार्–टाल सकनेवाले; यार्–कौन हैं। ६२२

तो भी मैंने स्वयं अपने को धीरज बँधा लिया। अपने प्राणों को रख लिया। नायक श्रीराम को भी ढाढ़स दिलाया। इसी में अनेक दिन बीत गये। नहीं तो (अगर हम अपना गुस्सा शान्त नहीं करते तो), ये तीनों लोक जल जाते! देवगण मिट जाते। क्या वहीं तक समाप्त होता? श्रेष्ठ धर्म भी मिट जाते। अनिवार्य प्रारब्ध कर्म का निवारण कौन कर सकता है?। ६२२

उऩ्ऩैक्कण् डुङ्गोऩ् ऱऩ्ऩै युऱ्ऱिडत् तुदवुम् बॅऱ्ऱिक्
कॅऩ्ऩैक्कण् डऩऩ्बोऱ् कण्डिङ् गित्तुणै नॅडिदु वैहित्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तन्नैक्कॉण् डिरुन्दे ताळ्त्ता नन्नॅनिर् ऱनुवॉन् ऱाले
मिन्नैक्कण् डनैया डन्नै नाडुदल् विलक्कर् पाऱ्ऱो 623

उन्नै कण्टु–(श्रीराम) तुम्हें देखकर; उऱ्ऱ इटत्तु–संकट के अवसर पर; उतवुम् पॅऱ्ऱिक्कु–उपकार करने के स्वभाव में: उम् कोन् तन्नै–तुम्हारे राजा को; ऍन्नै कण्टनन् पोल्–(जैसे) मुझे देखते हैं, वैसे (भाई) मानकर; इ तुणै–इतना; नॅटितु वैकि–लम्बा काल बिताकर; तन्नै कॉण्टु–अपने को (किसी तरह) जीवित; इरुन्ते ताळ्त्तान्–रखते हुए क्षमाशील रहे; अन्ऱु ऍनिन्–नहीं तो; तनु ऑन्ऱाले–धनु, एक से; मिन्नै कण्टु अनैयाळ् तन्नै–विद्युत्-सी दिखनेवाली सीताजी को; नाटुतल्–खोजना; विलक्कल् पाऱ्ऱो–रोका जा सकता है क्या। ६२३

श्रीराम ने तुम्हें देखकर तुम्हारे राजा को मेरे समान (अपना भाई) माना। अपने उपकारी स्वभाव के अनुकूल समय पर सहायता की। सुग्रीव के प्रति सम्मानभाव के ही कारण वे इतने दिन अपने प्राणों की रक्षा करते रह गये। नहीं तो वे अपने धनु की सहायता से ही अपनी विद्युत्-सम कान्ति वाली देवी को खोज लेते! उनको उस काम से रोका जा सकता है क्या ?। ६२३

ऑन्ऱुमो वान मन्ऱि युलहमुम् पदिना लुळ्ळ
वॅन्ऱिमाक् कडलु मेळेळ् मलैयुळ्ळ वॅन्न वेयाय्
निन्ऱदो रण्डत् तुळ्ळे यॅनिन्नदु नॅडिय दॉन्ऱो
अन्ऱुनीर् शॉन्न माऱ्ऱन् दाळ्वित्तल् करुम मन्ऱाल् 624

वानम्–आकाश; ऑन्ऱुमो–केवल एक है क्या; अन्ऱि–वही नहीं; पतिनाल् उळ्ळ–चौदह (की संख्या में) रहनेवाले; उलकमुम्–लोक और; वॅन्ऱि–विजयी; मा कटल्–बड़े समुद्र; एळुम्–सातों; मलै एळुम्–पर्वत सात; उळ्ळ–(इसके अन्दर) हैं; ऍन्नवे–ऐसा; आय् निन्ऱ–स्थित रहनेवाले; ओर् अण्टत्तु उळ्ळे–एक अण्ड में; ऍनिन्–(कहीं एक कोने में) रहती हैं तो; अतु–वह (वहाँ पहुँचना); नॅटियतु ऑन्ऱो–बड़ा काम है क्या; अन्ऱु–उस दिन; नीर् चॉन्न माऱ्ऱम्–तुमने जो दिया, वह वचन; ताळ्वित्तल्–(पालन करने में) देरी करना; करुमम् अन्ऱु–(योग्य) काम नहीं। ६२४

आकाश क्या ? चौदहों लोक, अजेय सातों समुद्र, सातों कुलगिरियाँ आदि से भरे इस अण्ड में कहीं किसी भी कोने में क्यों न हो, अगर देवी रहेंगी तो उनको ढूँढ़कर ले आना क्या कोई अतिकठिन काम होगा ? लेकिन तुम लोगों ने जो वचन दिया, उसकी उपेक्षा करके विलम्ब करना तुम्हारे लिए योग्य काम नहीं है ! । ६२४

ताळ्वित्ती रल्लीर् पन्ना डरुक्किय वरक्कर् तम्मै
वाळ्वित्ती रिमैयोर्क् किन्नल् वरुवित्तीर् मरबिऱ् ऱीराक्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

केळ्वित्ती याळर् तुन्बङ् गिळर्वित्तीर् पावन् दन्नै
मूळ्वित्तीर् मुनिया दानै मुनिवित्तीर् मुडिदि ऍन्रान् 625

ताळ्वित्तीर् अल्लीर्–विलम्ब (ही) नहीं किया; पल् नाळ् तरुक्किय–कई दिनों से घमण्ड के साथ फिरनेवाले; अरक्कर् तम्मै–राक्षसों को; वाळ्वित्तीर्–जीवित रख दिया; इमैयोर्क्कु–देवों को; इन्नल् वरुवित्तीर्–कष्ट दिलाया; मरपिन् तीरा–धर्म-क्रम से दूर न जानेवाले; केळ्वि–श्रवण-ज्ञानी; ती आळर्–अग्निहोत्री ब्राह्मणों के; तुन्पम् किळर्वित्तीर्–दुःख को बढ़ाया; पावम् तन्नै–पाप को; मूळ्वित्तीर्–उकसाया; मुनियातानै–जो (साधारण रूप से) क्रोध नहीं करते, उन श्रीराम को; मुनिवित्तीर्–क्रोध करने को मजबूर कर दिया; मुटिदिर्–मरो; ऍन्रान्–(लक्ष्मण ने) कहा। ६२५

तुमने केवल विलम्ब ही नहीं किया ! (तुम्हारे विलम्ब से अन्य अनर्थ भी हो गये।) बहुत काल से गर्व के साथ फिरनेवाले राक्षसों की आयु को तुमने बढ़ने दिया ! देवों को कष्ट दिलाया। यथाविधि अर्जित शास्त्रज्ञान रखनेवाले और यागाग्नि के पालक मुनियों का दुःख बढ़ाया। पाप को वर्धित कर दिया। जो साधारण रूप से कोप नहीं करते, उन श्रीराम को क्रोध से युक्त कर दिया। मरो सब ! —लक्ष्मण ने झुँझलाहट के साथ कहा। ६२५

तोन्रल:(ह्) दुरैत्त लोडु मारुदि तॊळुदु तॊल्लै
आन्रन् लरिञ पोय पॊरुण्मनत् तडैप्पा यल्लै
एन्रदु मुडिये मॆन्नि निरत्तुमित् तिरत्तुक् कॆल्लाम्
शान्रिनि याने पोन्दुन् रन्मुनैच् चार्दि यॆन्रान् 626

तोन्रल्–सुन्दर राजकुमार (के); अ.ंतु–वह; उरैत्तलोटुम्–कहते ही; मारुति–हनुमान; तॊळुतु–नमस्कार करके; तॊल्लै–प्राचीन; आन्रर्–श्रेष्ठ; नूल्–ग्रन्थों के; अरिञ–ज्ञाता; पोय पॊरुळ्–बीती बातें; मनत्तु–मन में; अटैप्पाय् अल्लै–रखें मत; एन्रदु–लिया हुआ काम; मुटियेम्–पूरा नहीं करेंगे; ऍन्निन्–तो; इरत्तुम्–प्राण छोड़ देंगे; इ तिरत्तुक्कु ऍल्लाम्–इन सब बातों के लिए; इनि–आगे; नाने चान्रु–मैं खुद साक्षी हूँ; पोन्तु–अन्दर पधारकर; उन् तन् मुनै चार्ति–अपने बड़े भाई से मिलिए; ऍन्रान्–कहा। ६२६

जब सुन्दर सुमित्रानन्दन ने यह बात कही, तब मारुति ने नमस्कार करके कहा कि हे प्राचीन और श्रेष्ठ शास्त्रों के विद्वान् ! बीती बातों को मन में मत रखिये। हम अपने वचन के अनुसार अपनायी हुई सेवा पूर्ण न करेंगे तो हम मर जायँगे। इन सबका मैं ही साक्षी रहूँगा। आप अन्दर पधारें और अपने बड़े भाई के स्थान में रहनेवाले सुग्रीव से मिलें। ६२६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुन्नुनी शॊल्लिर् रन्ऱो मुयन्ऱदु मुयऱ्चि दानुम्
इन्नुनी यिशैत्त शॆय्वा नियैन्दन मॆन्ऱु कूऱि
अन्नदो रमैदि यान्ऱ नरुळ्शिऱि दऱिवा नोक्किप्
पॊन्निन्वार् शिलैयि नानु मारुदि योडुम् बोनान् 627

पॊन्निन्–स्वर्ण के; वार् चिलैयिनानुम्–ढले धनु के धारक (लक्ष्मण) भी; मुन्नुम्–पहले भी; मुयन्ऱतु मुयऱ्चि तानुम्–हमने जो किया, वह कार्य भी; नी चॊल्लिऱ्ऱु अन्ऱो–तुम्हारा कहा हुआ था न; इन्नुम्–आगे भी; नी इचैत्त–तुम जो कहो; चॆय्वान्–वह करने को; इयैन्दनम्–सम्मत हैं; ऎन्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; अन्नतु ओर्–वैसी एक; अमैतियान् तन्–स्थिति में रहनेवाले; अरुळ् (सुग्रीव की) दया; चिऱितु–थोड़ा; अऱिवान्–समझने का; नोक्कि–विचारकर; मारुतियोटुम्–मारुति के साथ; पोनान्–गये। ६२७

पिघले स्वर्ण से निर्मित धनु के धारक लक्ष्मण ने हनुमान से यों कहा। पहले जो प्रयास हमने अपना लिये थे, वे भी तुम्हारे ही कहे हुए थे न ? वैसे ही आगे भी हमने तुम्हारी बात मानने को स्वीकार किया है। फिर वे पूर्वकथित स्थिति में रहनेवाले सुग्रीव का मनोभाव जानने के विचार से मारुति के साथ गये। ६२७

अयिल्विऴिक् कुमुदच् चॆव्वाय्च् चिलैनुद लन्नप् पोक्किन्
मयिलियऱ् कॊडित्ते रल्हुन् मणिनहैत् तिणिवेय् मॆन्ऱोट्
कुयिन्मॊऴिक् कलशक् कॊङ्गै मिन्निडैक् कुमिऴेर् मूक्किन्
पुयलियऱ् कून्दन् मादर् कुऴात्तॊडुन् दारै पोनाळ् 628

तारै–तारा; अयिल् विऴि–भाले के समान आँखें; कुमुतम् चॆव्वाय्–कुमुद जैसे लाल अधर; चिलै नुतल्–(और) धनुसदृश भौंहें; अन्नम् पोक्किन्–हंस की-सी चाल; मयिल् इयल्–कलापी-सी छटा; कॊटि तेर् अल्कुल्–पताकाओं से अलंकृत रथ के समान कटि-प्रदेश; मणि नकै–मुक्ता-सम दाँत; तिणि वेय्–सुदृढ़; मॆन् तोळ्–मृदुल कन्धे; कुयिल् मॊऴि–कोयल की-सी बोली; कलचम् कॊङ्कै–स्वर्णकलश-सम उरोज; मिन् इटै–विद्युत्-सी कमर; कुमिऴ्–'कुमिऴ्' नामक फूल के समान; एर्–सुन्दर; मूक्किन्–नाक; पुयल् इयल् कून्तल्–मेघ-सम केश; मातर् कुऴात्तॊटुम्–(इनसे युक्त) स्त्रियों के समूह के साथ; पोनाळ्–लौट चलीं। ६२८

तारा अपनी दासियों और सहेलियों के वृन्दों के साथ लौट चली। वे स्त्रियाँ भी कितनी सुन्दर थीं ! भाले के समान आँखें, कुमुद जैसे अधर, धनु के आकार की भौंहें, हंस की-सी चाल, मयूर-सम आभा, ध्वजालंकृत रथों के समान कटि-प्रदेश, मोतियों के समान दाँतों की सुन्दरता, सुदृढ़ वंशवृक्ष के समान कोमल कन्धे, कोकिल का-सा कण्ठस्वर, स्वर्ण कलश-सम उरोज, बिजली-सी कमर और 'कुमिऴ्' नामक फूल के समान नासिका और काले मेघ के समान केश —हर एक स्त्री का यह साज था।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(तारा की वैधव्य-स्थिति पर ध्यान आकर्षित करने के लिए स्त्रियों का यह वर्णन कवि द्वारा विशेष रूप से किया गया है।) । ६२८

वल्लमन् दिरिय रोडु वालिहा दलनु मैन्दन्
अल्लियङ् गमल मन्नन अडिपणिन् दच्चन् दीर्न्दान्
विल्लियु मवनै नोक्कि विरैविन्नॅन् वरवु वीर
शॊल्लुदि नुन्दैक् कॅन्ऱा नन्ऱॅनत् तॊऴुदु पोनान् 629

वालि कातलनुम्–वाली का प्यारा (पुत्र) भी; वल्ल–समर्थ; मन्तिरियरोटु–मन्त्रियों के साथ; मैन्तन्–(राजकुमार) लक्ष्मण के; अल्लि–पंखुड़ियों-सहित; अम् कमलम् अन्न–सुन्दर कमल के समान जो रहे; अटि पणिन्तु–(उनके) चरणों पर नमस्कार करके; अच्चम् तीर्न्तान्–भय-विमुक्त हुआ; विल्लियुम्–धनुर्धर (लक्ष्मण) ने भी; अवनै नोक्कि–उसको देखकर; वीर–वीर; ऍन् वरवु–मेरा आना; नुन्तैक्कु–अपने पिता को; विरैविन्–जल्दी; चॊल्लुति–कहो; ऍन्ऱान्–कहा; नन्ऱु–अच्छा; ऍन–कहकर; तॊऴुतु–नमस्कार करके; पोनान्–(अंगद) गया। ६२९

वाली के पुत्र अंगद ने लक्ष्मण को देखा, जो राजनीति और उससे सम्बन्धित शास्त्रों में कुशल मन्त्रियों के साथ आ रहे थे। उसने लक्ष्मण के पंखुड़ियों सहित खिले हुए सुन्दर कमल के समान चरणों पर झुककर नमस्कार किया। लक्ष्मण की करुणा देखकर उसका भय जाता रहा। धनुर्धर लक्ष्मण ने अंगद से कहा— वीर! तुम जाओ और अपने पिता से मेरा आना बताओ। अंगद, "अच्छा" कहकर नमस्कार करके चला। ६२९

पोनपिन् ऱादै कोयिल् पुक्कवन् पॊलन्गॊऴ् पादम्
तानुऱप् पऱ्ऱि मुऱ्ऱुन् दैवन्दु तडक्कै वीरन्
मानवर् किळैयोन् वन्दुन् वायिलिन् पुऱत्तान् चीऱ्ऱम्
मीनुयर् वेलै मेलुम् पॆरिदिदु विळैन्द दॆन्ऱान् 630

तट कै वीरन्–बड़े हाथों वाले (अंगद) ने; पोन् पिन्–जाने के पश्चात्; तातै कोयिल् पुक्कु–पिता के महल में जाकर; अवन्–उसके; पॊलम् कॊऴ् पातम्–सुन्दरता-युक्त चरणों को; तान् उऱ पऱ्ऱि–खूब पकड़कर; मुऱ्ऱुम् तै वन्तु–पूर्णरूप से सहलाकर; मानवर्क्कु–श्रीराम के; इळैयोन्–कनिष्ठ; वन्तु–आकर; उन् वायिलिन् पुऱत्तान्–आपके महल के द्वार के बाहर खड़े हैं; चीऱ्ऱम्–उनका क्रोध; मीन् उयर्–मकर-भरे; वेलै मेलुम्–समुद्र से बढ़कर; पॆरितु–अधिक है; इतु विळैन्ततु–यह (कार्य) हुआ है; ऍन्ऱान्–कहा। ६३०

विशाल और दीर्घ हाथों वाला वीर अंगद वहाँ से चलकर अपने (छोटे) पिता के महल के अन्दर गया। उसने सुग्रीव के स्वर्ण-सम पैरों को पकड़कर सहलाया और कहा कि सम्मान्य श्रीराम के छोटे भ्राता लक्ष्मण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुम्हारे महल के द्वार पर खड़े हैं। उनका क्रोध मकरालय से भी बड़ा है। यह समाचार है। ६३०

अऱिवुऱ्ऱ महळिर् वॆळ्ळ मलमरु ममलै नोक्किप्
पिऱिवुऱ्ऱ मयक्कत् तान्मुन् दुऱ्ऱदोर् पॆऱ्ऱि योरान्
शॆऱिपॊऱ्ऱा रलङ्गल् वीर शॆय्दिलङ् गुऱ्ऱ नम्मैक्
करुवुऱ्ऱ पॊरुळुक् कॆन्नो कारणङ् गण्ड दॆन्ऱान् 631

अऱिवु उऱ्ऱ मकळिर् वॆळ्ळम्–बात जो जान गयीं, उन स्त्रियों की भीड़ के; अलमरुम्–थर्राने के; अमलै–शोर को; नोक्कि–देखकर; पिऱिवु उऱ्ऱ मयक्कत्तान्–छूटे हुए भ्रम वाले (सुग्रीव) ने; मुन्तु–पहले; उऱ्ऱतु ओर् पॆऱ्ऱि–जो हुआ वह समाचार; ओरान्–न जानकर; चॆऱि पॊन् तार्–पक्के सोने के हारों से भूषित; अलङ्कल् वीर–मालाधारी वीर; कुऱ्ऱम् चॆय्तिलॆम्–(हमने) कोई अपराध नहीं किया; नम्मै–हम पर; करुवु उऱ्ऱ पॊरुळुक्कु–क्रोध करने की बात के लिए; कारणम् कण्टतु–हेतु देखा; ऎन्नतो–क्या; ऎन्ऱान्–पूछा। ६३१

सुग्रीव ने थोड़ा जागकर देखा। अंगद के वहाँ आने से वहाँ रहनेवाली स्त्रियों में खलबली-सी मची हुई थी। सुग्रीव अपने मोह से छूटकर पूर्ण रूप से जागा। उसको बीती बातों का कोई ज्ञान नहीं रहा। उसने अंगद से पूछा कि हे स्वर्णघनहारधारी वीर! हमने अपराध तो कुछ नहीं किया। फिर हम पर क्रोध करने का क्या कारण उन्हें मिला है? । ६३१

इयॆन्दना ळल्लै नीशॆन् ऱॆय्दलै शॆल्व मॆय्दि
वियन्दनै युदवि कॊन्ऱाय् मॆय्यिलै यॆन्न वीङ्गि
उयर्न्ददु शीऱ्ऱ मऱ्ऱ दुऱ्ऱदु शॆय्य मुऱ्ऱुम्
नयन्दॆरि यनुमन् वेण्ड नल्हिन्न नम्मै यिन्नुम् 632

इयॆन्त नाळ्–सहमत दिनों की; ऎल्लै–अवधि पर; नी–आप; चॆन्ऱु ऎय्तलै–जा नहीं पहुँचे; चॆल्वम् ऎय्ति–विभव प्राप्त कर; वियन्ततै–इतराते हैं; उतवि कॊन्ऱाय्–उपकार का हनन कर चुके; मॆय् इलै–सत्य पालन नहीं है; ऎन्नत–ऐसा सोचकर; चीऱ्ऱम्–क्रोध; वीङ्कि–बढ़कर; उयर्न्ततु–उठा; नयम् मुऱ्ऱुम्–नीति की सभी बातें; तॆरि अनुमन्–जो जानता है, उस हनुमान ने; अतु उऱ्ऱतु–उसके (शमन करने) योग्य (कार्य); चॆय्य–किया और; वेण्ट–प्रार्थना की, तब; नम्मै–हमको इन्नुम्–अब भी; नल्कितन्–जीवित रहने दिया। ६३२

अंगद ने सुग्रीव से आगे कहा कि आप निर्धारित अवधि के दिन में श्रीराम के पास नहीं गये। सुख-भोग में इतराते रहे। कृतघ्न बन गये। और झूठे हो गये। ऐसा समझकर लक्ष्मण का कोप बढ़ा-चढ़ा। तब नीति और न्याय-मार्ग सब जाननेवाले हनुमान ने लक्ष्मण के क्रोध को दूर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करने योग्य उपचार किये और लक्ष्मण से विनय की। उसी के फलस्वरूप आज उन्होंने हमको जीवित रहने दिया है। ६३२

वरुहिन्ऱ वेह नोक्कि वानर वीरर् वानैप्
पॊरुहिन्ऱ नहर वायिऱ् पॊऱ्कद वडैत्तुक् कऱ्कुन्
ऱरुहॊन्ऱु मिल्ला वण्णम् वाङ्गिन रडुक्कि मऱ्ऱुम्
तॆरिहिन्ऱ शिनत्ती पॊङ्गच् चॆरुच्चॆय्वान् शॆरुक्कि निन्ऱार् 633

वानर वीरर्–वानर वीर; वरुकिन्ऱ वेकल् नोक्कि–लक्ष्मण का आगमन देखकर; वानै पॊरुकिन्ऱ–गगनस्पर्शी; नकरम् वायिल्–नगर-द्वार; पॊन् कतवु–स्वर्णकपाट; अटैत्तु–बन्द करके; अरुकु–पास; ऒन्ऱुम् इल्ला वण्णम्–कोई न रहे, वैसा; कल् कुन्ऱु–चट्टानों को; वाङ्कितर्–ले आकर; अटुक्कि–जोड़कर रखा; मऱ्ऱुम्–और; तॆरिकिन्ऱ–प्रकट जो हो रहा; चिनम् ती–उस क्रोध की आग के; पॊङ्क–भभकते; चॆरु चॆय्वान्–युद्ध करने; चॆरुक्कि निन्ऱार्–गर्वोन्नत खड़े रहे। ६३३

लक्ष्मण बहुत तीव्र गति से आ रहे थे। उनकी गति देखकर वानर वीरों ने आकाश से टकरानेवाले हमारे नगर-द्वार को बन्द किया और वहाँ मिलनेवाली गिरियों को, विना एक को छोड़े ले आकर कपाट के पीछे जोड़ रखा। और वे अपनी क्रोधाग्नि को प्रकट करते हुए लक्ष्मण से लड़ने के लिए सन्नद्ध खड़े रहे। ६३३

आण्डहै यदनै नोक्कि यम्मलर्क् कमलत् ताळिल्
तीण्डिनन् ऱीण्डा मुन्नन् दॆऱ्कॊडु वडक्कुच् चॆल्ल
नीण्डहन् मदिलुङ् गॊऱ्ऱ वायिलु निरैत्त कुन्ऱुङ्
कीण्डन तहर्न्दु पिन्नैप् पॊडियॊडुङ् गॆळीइय वन्ऱे 634

आण् तकै–पौरुषयुक्त लक्ष्मण ने; अतनै नोक्कि–उसको देखकर; अम्–सुन्दर; कमलम् मलर्–कमलसुमन-सम; ताळिल्–चरणों से; तीण्टिनन्–स्पर्श किया; तीण्टा मुन्नम्–छूने से पहले; तॆऱ्कॊटु वटक्कु चॆल्ल–दक्षिण से उत्तर में खिंचा; नीण्ट कल् मतिलुम्–लम्बा पत्थर का प्राचीर और; कॊऱ्ऱम् वायिलुम्–विजयद्वार; निरैत्त कुन्ऱुम्–जोड़कर रखे हुए पर्वत भी; तकर्न्तु–टूटकर; कीण्टन–बिखर गये; पिन्नै–बाद; पॊटियॊटुम् कॆळीइय–धूल के साथ मिल गये। ६३४

पौरुषपूर्ण लक्ष्मण ने वानरों का वह कृत्य देखा और अपने सुन्दर कमल-चरणों से कपाट पर लात मारी। उनके चरण स्पर्श के लगने से पूर्व ही उत्तर-दक्षिण में फैले रहे वे पत्थर के प्राचीर और विजयद्वार और वहाँ जुड़ी रही गिरियाँ —सब टूटकर छितर गयीं और चूर होकर धूल से मिल गयीं। ६३४

अन्निलै कण्ड तिण्डो ळरिक्कुलत् तनिह मम्मा
ऎन्निलै युऱ्ऱ दॆन्गेन् याण्डुप्पुक् कॊळित्त दॆन्गेन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्निलै कण्ड वन्नै आयिळै यायत् तोडु
मिन्निलै विल्लि ऩाऩै वळियॆदिर् विलक्कि निऩ्ऱाळ् 635

अ विलै कण्ट—उस स्थिति को जिन्होंने देखा, उन; तिण् तोळ्—सुदृढ़ कन्धों वाले; अरिकुलत्तु—वानरकुल के वीरों की; अऩिकम्—सेना; ॲ निलै उऱ्ऱतु—किस स्थिति को पहुँच गयी; ॲऩ्केऩ्—कहूँगा; याण्टु पुक्कु—कहाँ जाकर; ऒळित्ततु—छिप गयी; ॲऩ्केऩ्—कहूँ; अ निलै कण्ट—(जिसने) उस स्थिति को देखा वह मेरी माता; आय् इळै—सुन्दर आभरणालंकृत; आयत्तोटु—स्त्रियों के समूह के साथ; मिऩ् इलै—विद्युत् की चमक का आश्रय; विल्लिऩाऩै—जो धनु था, उसके धारक के; ॲतिर्—सामने; वळि विलक्कि—मार्ग रोके; निऩ्ऱाळ्—खड़ी रहीं। ६३५

उस हालत को देखकर बली भुजाओं वाले वानर वीरों की उस सेना की क्या स्थिति हुई, यह मैं क्या कहूँ ? कहाँ जाके छिप गयी, यह कैसे कहूँ ? वानर-सेनाओं की वह स्थिति देखकर मेरी माता तारा चुने हुए आभरणों से अलंकृत स्त्रियों के समूह के साथ लक्ष्मणजी के, जिनके हाथ में विद्युच्छटाधारी धनु था, मार्ग में जाकर उनको रोका। ६३५

मङ्गैयर् मेऩि नोक्काऩ् मैन्दऩु मऩत्तु वन्द
पॊङ्गिय शीऱ्ऱ माऱ्ऱिप् पुहल्हिलऩ् पॊरुमि निऩ्ऱाऩ्
नङ्गैयु मिऩिदु कूऱि नायह नडन्द दॆऩ्ऩो
ॲङ्गळ्पा लॆऩ्ऩक् केट्टा ळिलवलुम् वरवु शॊऩ्ऩाऩ् 636

मैन्तऩुम्—कुमार; मङ्कैयर् मेऩि—रमणियों के रूप; नोक्काऩ्—नहीं देखते; मऩत्तु—मन में; वऩ्त पॊङ्किय—आकर जो उफन रहा था, वह; चीऱ्ऱम् माऱ्ऱि—क्रोध दूर करके; पुकल्किलऩ्—नहीं बोलते; पॊरुमि निऩ्ऱाऩ्—भाव-भरे खड़े रहे; नङ्कैयुम्—रमणी-नायिका तारा ने; इऩिदु कूऱि—मधुर वचन कहकर; नायक—नाथ; ॲङ्कळ् पाल्—हमारे पक्ष में; नटन्ततु ॲऩ्ऩो—हुआ क्या; ॲऩ्ऩ—ऐसा; केट्टाळ्—पूछा; इळवलुम्—कनिष्ठ राजा ने भी; वरवु—आने का कारण; चॊऩ्ऩाऩ्—बताया। ६३६

राजकुमार लक्ष्मण ने न उन स्त्रियों का रूप अपनी आँख उठाकर देखा, न अपने मन का क्रोध दबाते हुए कुछ कहा। लेकिन वे गुस्से से भरे खड़े रहे। तब स्त्रियों में नायिका (तारा) मेरी माता ने लक्ष्मण से मधुर वचन कहे। वे बोलीं— प्रभु ! आप हमारे पास (श्रीराम को अकेला छोड़कर) इधर पैदल आये हैं। वह क्यों ? इस प्रश्न के उत्तर में लक्ष्मण ने अपने आगमन का कारण बताया। ६३६

अदुपॆरि दऱिन्द वन्नै यऩ्ऩवऩ् शीऱ्ऱ माऱ्ऱि
विदिमुऱै मऱन्दा ऩल्लऩ् वॆञ्जिऩच् चेऩै वॆळळम्
कदुमॆऩक् कॊणरुन् दूदु कल्लदर् शॆल्ल वेवि
ॲदिर्मुऱै यिरुन्दा ऩॆऩ्ऱा ळिदुविङ्गुप् पुहुन्द दॆऩ्ऱाऩ् 637

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अतु–वह; पॅरितु–खूब (विस्तृत रूप से); अऱिन्त–(जिन्होंने) जान लिया उन; अन्नै–माता तारा ने; अन्नवन् चीऱ्ऱम्–उनका क्रोध; आऱ्ऱि–शान्त करके; विति मुऱै–आज्ञा का प्रकार; मऱन्तान् अल्लन्–भूले नहीं हैं; वॅम् चिनम्–भयंकर क्रोध-युक्त; चेनै वॅळ्ळम्–सेना की बाढ़ को; कतुमॅत–तुरन्त; कॉणरुम्–लानेवाले; तूतु–दूतों को; कल् अतर् चॅल्ल–पर्वत-मार्ग में जाने की; एवि–आज्ञा देकर; ऍतिर् मुऱै–उनकी प्रतीक्षा में; इरुन्तान्–रहे; ऍन्ऱाळ्–कहा; इतु–यही; इङ्कु–यहाँ; पुकुन्ततु–घटकर रहा; ऍन्ऱान्–कहा (अंगद ने)। ६३७

कारण को ठीक तरह से जानकर मेरी माता ने उनका क्रोध शान्त करते हुए कहा कि सुग्रीव श्रीराम की आज्ञा का प्रकार नहीं भूले हैं। अत्यन्त क्रोधशील वानर-सेना के बहुत बड़े अंश को जल्दी ले आने के लिए ऐसा करनेवाले दूतों को पर्वतमार्ग में जाने के लिए भेजकर वे उन दूतों की प्रतीक्षा में हैं। अंगद ने यह समाचार देकर सुग्रीव से कहा कि यही यहाँ हुआ समाचार है। ६३७

शॉऱ्ऱलु मरुक्कन् ऱोन्ऱल् शॉल्लुवान् मण्णिन् विण्णिन्
निऱ्कुरि यार्हळ् याव रनैयवर् शिनत्ति नेर्न्दाल्
विऱ्कुरि यारित् तन्मै वॅहुळियिन् विरैवि नॅय्द
ऍऱ्कुरै यादु नीरी दियऱ्ऱिय दॅन्गॊ लॅन्ऱान् 638

चॊऱ्ऱलुम्–कहने पर; अरुक्कन् तोन्ऱल्–अर्कपुत्र; चॊल्लुवान्–बोला; अनैयवर् चिनत्तिन्–वे क्रोध के साथ; नेर्न्ताल्–आएँ तो; मण्णिन्–भूलोक में; विण्णिन्–व्योमलोक में; निऱ्क उरियार्कळ्–खड़े रह सकनेवाले; यावर्–कौन होंगे; विऱ्कु उरियार्–धनुवीर; इ तन्मै–इस प्रकार; वॅकुळियिन्–कोप के साथ; विरैविन् ऍय्त–सवेग आयें और; ऍऱ्कु उरैयातु–मुझसे न कहकर; नीर्–तुम लोगों ने; ईतु इयऱ्ऱियतु–यह किया; ऍन् कॊल्–क्या कारण है; ऍन्ऱान्–पूछा। ६३८

अंगद के यह कहने पर सूर्यपुत्र बोला। अगर श्रीराम और लक्ष्मण कोप करके लड़ने आयें, तो उनके सामने टिक सकनेवाले भूमि पर या आकाश में कौन हैं? धनुर्धर वे वीर इतनी जल्दी कोप के साथ इधर आये हैं, इसकी खबर मुझे न देकर तुम लोगों ने ऐसा किया है। इसका कारण क्या है?। ६३८

उणर्त्तिनेन् मुन्नर् नीयः(ह्) दुणर्न्दिलै युणर्विर् ऱीर्न्दाय्
पुणर्प्पदॊन् ऱिन्मै नोक्कि मारुदिक् कुरैप्पान् पोनेन्
इणर्त्तॊहै यीन्ऱ पॊऱ्ऱा रॅऱुळ्वलित् तडन्दो ळॅन्दाय्
कणत्तिडै यवनै नीयुङ् गाणुदल् करुम मॅन्ऱान् 639

इणर् तॊकै ईन्ऱ–फूलों के गुच्छों से बनी; पॊन् तार्–सुन्दर माला से अलंकृत; ऍऱुळ् वलि–बहुत बल से युक्त; तट तोळ्–विशाल भुजा वाले; ऍन्ताय्–मेरे पिता; मुन्नर् उणर्त्तिनेन्–पहले समझाया; नी–आप; उणर्विल् तीर्न्ताय्–बेसुध रहे;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अ.ं.तु उणर्न्तिलै–वह नहीं समझे; पुणर्प्पतु–उपाय; ऒन्ऱु इन्मै–एक नहीं रहा, वह; नोक्कि–देखकर; मारुतिक्कु–हनुमान के पास; उरैप्पान्–कहने के लिए; पोतेन्–गया; कणत्तिटै–एक पल के अन्दर; अवत्तै–उनसे; नीयुम्–आप भी; काणुतल्–जा मिलें; करुमम्–(वही) कर्तव्य है; ऎन्ऱान्–कहा। ६३९

सुग्रीव के ऐसा पूछने पर अंगद ने उत्तर दिया— फूलों के गुच्छों की बनी सुन्दर माला से अलंकृत सशक्त कन्धों वाले मेरे तात ! मैंने आपसे पहले ही निवेदन किया। लेकिन आप बेसुध रहे। इसलिए आपने नहीं समझा। तब मैंने करने योग्य कोई काम नहीं रहा दिखा। इसलिए मैं मारुति के पास कहने गया। एक पल के अन्दर आप श्रीलक्ष्मणजी से जाकर मिलें। यही आपको अब करना है। ६३९

उऱवुण्ड शिन्दै यान्ऱु मुरैशॆय्वा ऩॊरुवर्क् किन्नम्
पॆऱुलुण्डे यवरा लीण्डियान् पॆऱ्ऱ पेरुदविच् चॆल्वम्
इऱवुण्डाळ् पॊरुट्टाऱ् ऱीरा दिरुन्दपे रिडरै यॆल्लाम्
नऱवुण्डु मऱन्देन् काण नाणुवॆन् मैन्द वॆन्ऱान् 640

उऱवु उण्ट–श्रीराम के प्रति मित्रता से युक्त; चिन्तैयान्तुम्–मन वाला; उरै चॆय्वान्–वचन बोला; मैन्त–पुत्र; अवराल्–उनके द्वारा; ईण्टु–यहाँ; यान् पॆऱ्ऱ–जो मैंने प्राप्त किया; पेर् उतवि चॆल्वम्–वह उपकार और धन-वैभव; ऒरुवऱ्कु–किसी से; इन्नम् पॆऱल्–और प्राप्त करना; उण्टे–हो सकता है क्या; इऱवु उण्टाळ्–अलग जो हो गयीं, उन; पॊरुट्टाल्–सीतादेवी के हेतु; तीरातु इरुन्त–बिना दूर हुए जो रहा, वह; पेर् इटरै ऎल्लाम्–सभी बड़ा दुःख; नऱवु उण्टु–सुरा पान कर; मऱन्तेन्–भूले रहा; काण–(लक्ष्मण से) भेंट करने से; नाणुवन्–शरमाता हूँ; ऎन्ऱान्–कहा। ६४०

श्रीराम के प्रति जिसके मन में मित्रता का नाता था, वह सुग्रीव अंगद से बोला— पुत्र, श्रीराम जी के द्वारा जो परमोपकार का धन मुझे मिला है, वह क्या किसी दूसरे को प्राप्य हो सकता है ? (मैं यह जानता हूँ। लेकिन) सीताजी के वियोग से श्रीराम पर जो अचल संकट आया है, उसको मैं सुरा पीकर उसके नशे में भूल गया था। इसलिए अब लक्ष्मणजी को देखने से शर्माता हूँ। ६४०

एयिऩ नऱवल् लाऩ्मऱ् ऱॆऴैमैप् पाल दॆन्ऩो
तायवळ् मऩैवि यॆन्ऩुन् दॆळिविऩ्ऱेऱ् ऱुरुम मॆन्ऩाम्
तीविऩै यैन्दि ऩॊन्ऱा मऩ्ऱियुन् दिरुक्कु नीङ्गा
मायियिन् मयङ्गु हिन्ऱाम् मयक्किऩ्मेन् मयक्कुम् वैत्ताम् 641

एयिऩ–मुझमें लगी हुई; नऱवु अल्लाल्–सुरापान की आदत के सिवा; मऱ्ऱु–और कोई; एऴैमैप्पालतु–मूर्खता की प्रवृत्ति; ऎन्ऩो–कौन सी है; तायवळ्–माता; मऩैवि–पत्नी; ऎन्ऩुम्–इनमें भेद करने की; तॆळिवु इन्ऱेल्–स्पष्ट बुद्धि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नहीं हो तो; तरुमम्–अन्य धर्मों का पालन; ऍन् आम्–क्या होगा; ती वित्तै–महापातक; एन्तिन् ऑन्ऱाम्–पाँच में एक है; अन्ऱियुम्–और भी; तिरुक्कु नीङ्का–वंचना से जुड़ी हुई; मायैयिल्–माया के वश में; मयङ्कुकिन्ऱाम्–मोहित हैं; मयक्किन् मेल्–(ऐसे) मोह के ऊपर; मयक्कुम् वैत्ताम्–सुरापान का नशा चढ़ा दिया (हमने)। ६४१

मेरे पास यही एक बुरी आदत लगी हुई है। इस सुरापान के अलावा और कोई दुर्गुण मेरे पास क्या है? यह सुरापान ऐसा है, जो माता और पत्नी में भी भेद जानने की बुद्धि को हर लेता है। फिर मनुष्य के पास अन्य धर्म रहा तो क्या लाभ है। यह सुरापान की आदत पाँच (हत्या, असत्य, चोरी, सुरापान और गुरु-निन्दा) महापातकों में एक है। और भी, हम पहले ही कपटी माया के वश में हैं। उस माया-मोह के ऊपर हमने यह नशा भी जोड़ दिया है। ६४१

तॆळिन्दुती वित्तैयैत् तीर्न्दोर् पिऱवियैत् तीर्व रॆन्ना
विळिन्दिला वुणर्वि नोरुम् वेदमुम् विळम्ब वेयुम्
नॆळिन्दुऱै पुळुवै नीक्कि नऱवुण्डु निऱैहिन् ऱेनाल्
अळिन्दहत् तॆरियुन् दीयै नॆय्यिना लविक्किन् ऱामाल् 642

तॆळिन्तु–मन में साफ़ होकर; तीवित्तैयै–बुरे कर्मों को; तीर्न्तोर्–जिन्होंने त्यागा है, वे; पिऱवियै तीर्वर्–जन्म से छूट जायँगे; ऍन्ना–ऐसा; विळिन्तिलर्–अभ्रान्त; उणर्वित्तोरुम्–ज्ञान रखनेवालों और; वेतमुम् वेदों का; विळम्पवेयुम्–कहा हुआ होने पर भी; नॆळिन्तु उऱै–रेंगते रहनेवाले; पुळुवै–कीड़ों को; नीक्कि–हटाकर; नऱवु उण्टु–ताड़ी पीकर; निऱैकिन्ऱेन्–संतुष्ट रहता हूँ; अळिन्तकम्–वेदी पर; ऍरियुम् तीयै–जलती आग को; नॆय्यिनाल्–घी द्वारा; अविक्किन्ऱाम्–बुझाते हैं। ६४२

विवेक प्राप्त कर जिनका मन शुद्ध हो गया है, और जिन्होंने उस विवेक के फलस्वरूप पाप-कर्म को छोड़ दिया है, वे जन्म-कर्म से छूट जाते हैं। अविनश्वर ज्ञान से युक्त तत्त्वज्ञ लोग और वेदों ने यही कहा है। उसको जानकर भी मैं ताड़ी से, उसमें रेंगते रहनेवाले कीड़ों को हटाकर उसे पीता हूँ और अघाता हूँ। यह ऐसा काम है कि हम यज्ञ-वेदी पर जलनेवाले आग को आग से बुझाने का (मूर्ख) प्रयास करें। ६४२

तन्नैत्ता नुणरत् तीरुन् दहैयऱु पिऱवि यॆन्ब
दॆन्नत्तान् मऱैयु मऱ्ऱैत् तुऱैहळु मिशैत्त वॆल्लाम्
मुन्नैत्तान् ऱन्नै योरा मुळुप्पिणि यळुक्किन् मेले
पिन्नैत्तान् पॆऱुव दम्मा नऱवुण्टु तिहैक्कुम् बित्ते 643

तान् तन्नै उणर–कोई अपना आत्मस्वरूप पहचाने तब; तकै अऱु–गौरवहीन; पिऱवि ऍन्पतु–जन्म; तीरुम्–छूट जाता है; ऍन्नत्तान्–ऐसा ही; मऱैयुम्–वेद

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और; मऱ्ऱै तुऱैकळुम्–अन्य शास्त्र; ऍल्लाम्–सभी; इचैत्त–कहते हैं; मुन्नै–पहले ही; तान् तन्नै ओरा–आत्मा को न पहचानने का; मुळु पिणि–पूर्ण रोग और; अळुक्कित् मेले–कल्मश जो है, उस पर; पिन्नै–फिर भी; नऱ्वु उण्टु–ताड़ी पीकर; तिकैक्कुम् पित्तु–भ्रमित हो रहने का पागलपन; पॅऱुवतु–पाना (उचित है क्या ?) । ६४३

स्वस्वरूप जानने पर यह क्षुद्र जन्म मिट जायगा। यही वेद और अन्य वेदांग, शास्त्र आदि समझाते हैं। पहले ही हमने शरीर पाया है, जो आत्मज्ञानहीनता के कारण हमें मिला है और जो रोगपूर्ण और मलिन है। तिस पर नशा पैदा करनेवाले पान से मोह का पागलपन ताड़ी पीकर प्राप्त कर लेना कैसा काम है ? मैया री ! । ६४३

चॅऱ्ऱदुम् बहैञर् नट्टार् शॅय्दपे रुदवि तानुम्
कऱ्ऱदुङ् गण्कू डाहक् कण्डदुङ् गलैव लाळर्
शॊऱ्ऱदु मानम् वन्दु तॊडर्न्ददुम् बडर्न्दु तुन्बम्
उऱ्ऱदु मुणर्व रायि नुऱुदिवे ऱिदनि नुण्डो 644

पकैञर् चॅऱ्ऱतुम्–शत्रु द्वारा किया हुआ और; नट्टार् चॅय्त–मित्रकृत; पेर् उतवि तानुम्–बड़ा उपकार; कऱ्ऱतुम्–सीखा हुआ; कण् कूटाक–अपनी आँखों से; कण्टतुम्–दर्शित; कलैवलाळर्–शास्त्रज्ञों का; चॊऱ्ऱतुम्–कहा हुआ और; मानम् वन्तु–गौरव का आकर; तॊटर्न्ततुम्–लगना; तुन्पम् पटर्न्तु–दुःख का आकर; उऱ्ऱतुम्–लगना; उणर्वर् आयिन्–(यह सब) परखकर जानेंगे तो; इततिन् वेऱु–इससे अलग; उऱुति उण्टो–कोई हित होगा क्या । ६४४

शत्रु का वैर करना, मित्रकृत बड़ा उपकार, विद्या का ज्ञान, अपनी आँखों से देखी हुई बात, शास्त्रोक्त विषय, सम्मान की प्राप्ति, दुःख का आगमन —इन बातों की स्थिति को कोई ठीक-ठीक जान ले, तो इससे बढ़कर हितकारी क्या हो सकता है ? । ६४४

वञ्जमुङ् गळवुम् बॊय्यु मयक्कमु मरबिल् कॊट्पुम्
तञ्जमॆन् ऱारै नीक्कुन् दन्मैयुङ् गळिप्पुन् दाक्कुम्
कञ्जमॆल् लणङ्गुन् दीरुङ् गळ्ळिना लरुन्दि नारै
नञ्जमुङ् गॊल्व दल्ला नरहिनै नल्हा दन्ऱे 645

कळ्ळिताल्–सुरा (-पान) से; वञ्चमुम्–छल; कळवुम्–चोरी; पॊय्युम्–असत्य; मयक्कमुम्–मोह; मरपिल्–परम्पराविरुद्ध; कॊट्पुम्–आचरणचक्र; तञ्चम् ऍन्ऱारै–शरणागतों को; नीक्कुम् तन्मैयुम्–छोड़ देने का दुर्गुण; कळिप्पुम्–मद; ताक्कुम्–(ये सब) दुःख देंगे; कञ्चम् मॆल् अणङ्कुम्–कमलवासिनी कोमल श्रीदेवी भी; तीरुम्–छोड़ जायगी; नञ्चमुम्–विष भी तो; अरुन्तितारै–पान करनेवाले को मारना छोड़; नरकिनै–नरक को; नल्कातु–नहीं दिलायगा । ६४५

इस सुरापान से छल, चोरी, झूठ, मोह, परम्पराविरुद्ध आचरणचक्र,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शरणागत को भगा देने का गुण, घमण्ड आदि मद्यप को सताते हैं। और भी कमल-निवासिनी कोमलांगी श्री भी उसको छोड़ जाती है। विष भी पीनेवाले को मारता है, पर नरक में नहीं भेजता। लेकिन यह ताड़ी नरक दिला देती है। ६४५

केट्टन नऱवाऱ् केडु वरुमॆऩक् किळत्तु मच्चॊल्
काट्टिय दनुम नीदिक् कल्वियाऱ् कडन्द दल्लाल्
मीट्टिनि युरैप्प दॆन्ने विरैविऩ्वन् दडैन्द वीरऩ्
मूट्टिय वॆंहुळि यानाम् मुडिवदऱ् कैय सुण्डो 646

नऱवाल्–ताड़ी (पीने) से; केटु वरुम्–हानि होगी; ऍऩ–ऐसा; केट्टनऩ्–(मैंने) सुना है; किळत्तुम्–कथित; अ चॊल्–उस बात ने; काट्टियतु–(अपनी यथार्थता) दिखा दी; मीट्टु इनि–और आगे; उरैप्पतु–कहना; ऍऩ्ऩे–क्या है; कटन्ततु–(आफ़त) पार की; अनुमऩ् नीति–हनुमान के नीतिशास्त्र के; कल्वियाल्–अध्ययन (-ज्ञान) से; अल्लाल्–नहीं तो; विरैविऩ् वन्तु–सवेग आ; अटैन्त वीरऩ्–जो पहुँचे उन वीर (लक्ष्मण) के; मूट्टिय वॆंकुळियाल्–उभरे हुए क्रोध से; नाम्–हमारे; मुटिवतऱ्कु–मर मिटने में; एयम् उण्टो–सन्देह रहा क्या। ६४६

ताड़ी पीने से हानि होगी, यह मैंने सुना भर था। अब देखता हूँ कि उसने अपना सारा बल दिखा दिया है। और आगे कहने को क्या है? जो संकट होनेवाला था उससे हम बचे, हनुमान की नीति-बुद्धि से। नहीं तो त्वरित गति से आगत वीर लक्ष्मण के उभरते क्रोध से हमारे मर जाने में कोई सन्देह रहा है क्या ?। ६४६

ऐयना नञ्जि नेऩिन् नऱविनि नरिय केडु
कैयिऩा लऩ्ऱि येयुङ् गरुदुदल् करुम मऩ्ऱाल्
वॆय्यदा मदुवै यिऩ्ऩम् विरुम्बिऩे नॆऩ्ऩिऩ् वीरऩ्
शॆय्यदा मरैह ळऩ्ऩ शेवडि शिदैत्ते नॆऩ्ऱाऩ् 647

ऐय–सुन्दर; इ नऱविनिऩ्–इस ताड़ी की; अरिय केटु–अवार्य हानि से; नाऩ् अञ्चिनेऩ्–मैं डरा; कैयिऩाल् अऩ्ऱिये–हाथ से ही नहीं; करुतुतलुम्–मन से स्पर्श करना भी; करुमम् अऩ्ऱु–करनेयोग्य काम नहीं है; वॆय्यतु आम्–भयंकर; मतुवै–मद्य को; इऩ्ऩुम् विरुम्पिनेऩ्–और चाहा; ऍऩ्ऩिऩ्–तो; वीरऩ्–वीर श्रीराम के; चॆय्य तामरैकळ्–लाल कमलों के; अऩ्ऩ–समान; चे अटि–लाल चरणों में (विश्वास); चितैत्तेऩ्–नष्ट करनेवाला बनूँगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (सुग्रीव ने)। ६४७

सुन्दर अंगद ! मैं इस मद्यपान के अहित करने के गुण से डरा। हाथ में लेना क्या, इसका मन में विचार लाना भी योग्य काम नहीं। यह सुरा बड़ी भयंकर है। आगे भी इसको चाहूँ तो वीर श्रीराम के लाल कमल-सम सुन्दर चरणों के प्रति अपराध करनेवाला बन जाऊँगा। —सुग्रीव ने यह सब कहा। ६४७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्ऱुकॊण् डियम्बि यण्णऱ् कॆदिर्हॊळऱ् कियैन्द वॆल्लाम्
नन्ऱुकॊण् डिन्ऱु नीये नणुहॆन वबनै येवित्
तन्ऱुणैत् तेवि मार्हळ् तमरॊडुन् दळुवत् तानुम्
निन्ऱनन् नॆडिय वायिऱ् कडैत्तलै निवन्द नीरान् 648

ऍन्ऱु–ऐसा; निवन्त नीरान्–उत्कृष्ट स्वभाव वाले; इयम्पि कॊण्टु–कहते हुए; अण्णऱ्कु–महिमावान (लक्ष्मण) के; ऍतिर्कॊळऱ्कु–स्वागत के लिए; इयैन्त ऍलाम्–योग्य सभी पदार्थ; नन्ऱु कॊण्टु–भलीभाँति लेकर; इन्नुम् नीये–अब भी तुम्हीं; नणुकु–पास जाओ; ऍन्ऱ–ऐसा; अवनै एवि–उस (अंगद) को भेजकर; तन् तुणै तेविमार्कळ्–अपनी संगिनी पत्नियों के; तमरॊटुम् तळुव–अपने रिश्तेदारों के साथ घेरकर आते; तानुम्–खुद भी; नॆटिय वायिल्–उन्नत द्वार के; कटैत्तलै–मुख पर; निन्ऱनन्–खड़ा रहा। ६४८

उत्कृष्ट गुण-प्राप्त सुग्रीव ऐसा कहते हुए उठा और अंगद से बोला कि लक्ष्मण के स्वागतार्ह सभी साज लेकर अभी तुम्हीं जाओ। अंगद को भेजने के बाद सुग्रीव आकर महल के गोद्वार पर प्रतीक्षा में खड़ा रहा। उसके साथ उसकी संगिनी पत्नियाँ अन्य रिश्तेदारों के साथ उसको घेरे खड़ी रहीं। ६४८

उरैत्तशॆऱ् जान्दुम् बूवुम् चुण्णमुम् बुहैयु मूळिन्
निरैत्तपॊऱ् कुडमुन् दीब शालमु निहरिल् मुत्तुम्
कुरैत्तॆळु विदानत् तोडु तॊङ्गलुङ् गॊडियुऱ् जङ्गुम्
इरैत्तिमिळ् मुरशुम् मुऱ्ऱु मियङ्गिन वीदि यॆल्लाम् 649

उरैत्त–घिसकर बना; चॆम् चान्तुम्–श्रेष्ठ चन्दन-लेप और; पूवुम्–फूल; चुण्णमुम्–सुगन्ध-चूर्ण; पुकैयुम्–धुआँ; ऊळिन् निरैत्त–पंक्ति में रखे हुए; पॊन् कुटमुम्–स्वर्णकलश (पूर्णकुम्भ); तीपचालमुम्–दीपजाल; निकर् इल्–अनुपम; मुत्तुम्–मोती; कुरैत्तु ऍळु–शब्दायमान; वितानत्तॊटु–वितानों के साथ; तोङ्कलुम्–झालर और; कॊटियुम्–ध्वजाएँ और; चङ्कुम्–शंखनाद; इरैत्तु इमिळ्–ज़ोर से शोर करनेवाली; मुरचुम्–भेरियाँ और; मुऱ्ऱुम्–सभी; वीति ऍल्लाम्–वीथियों भर में; इयङ्कित–भर गये। ६४९

तब किष्किन्धा नगर की वीथियों में सभी मंगल द्रव्य और अन्य साज भर गये। खूब पिसा हुआ लाल चन्दन-लेप, फूल, सुगन्धचूर्ण धूप, पंक्तियों में रखे हुए जल-भरे स्वर्णकलश, दीप-जाल, अनुपम मुक्तामालाएँ, शब्द के साथ उठनेवाले वितान, मोरपंखों के झालर, ध्वजाएँ —इनके साथ शंख और ज़ोर से बजनेवाली भेरियाँ आदि दिखायी दीं। ६४९

तूयतिण् पळिङ्गिऱ् चॆय्द शुवर्हळिऱ् ऱलत्तिऱ् चुऱ्ऱिल्
नायह मणियिऱ् चॆय्द नतिनॆडुन् दूणि नाप्पण्
शायैपुक् कुऱलार् कण्डो रयर्वुऱु तहैवि लोडुम्
आयिर मैन्दर् वन्दा रुळरॆनप् पॊलिन्द दव्वूर् 650

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अ ऊर्–वह नगर; तूय–पवित्र; तिण् पळिङ्किन्–कठिन स्फटिक की; चॆय्त चुवर्कळिन्–बनी हुई दीवारों के; तलत्तिल्–तल में; चुऱ्ऱिल्–और चारों ओर; नायकम् मणियिन् चॆय्त–अत्युत्कृष्ट मणियों के बने; नत्ति नॆटुम् तूणिन्–बहुत ऊँचे खम्भों के; नाप्पण–मध्य; चायै पुक्कु उऱलाल्–(श्रीलक्ष्मण के रूप की) परछाईं के जा लगने से; कण्टोर्–दर्शक; अयर्वु उऱु–थक जायँ, ऐसे; तकै विल्लोटुम्–महान धनु के साथ; आयिरम् मैन्तर्–सहस्र-सहस्र वीर कुमार; वन्तार् उळर्–आये हैं; ऍन्न–ऐसा; पॊलिन्ततु–शोभायमान हुआ। ६५०

(लक्ष्मण वीथी में आ रहे थे; तब) किष्किन्धा के घर की दीवारें दृढ़ और शुद्ध स्फटिक की बनी थीं। खम्भे भी श्रेष्ठ नवरत्न-जड़े थे। लक्ष्मण का रूप उन पर प्रतिबिम्बित हुआ। तब ऐसा लगा कि हज़ारों वीर कुमार दर्शकों के मन को भ्रांत करनेवाले धनु लेकर आ रहे हों। ६५०

अङ्गदन् पॆयर्त्तुम् वन्दाण् डडिदॊळु दानै यैयन्
ऍङ्गिरुन् दानुङ् गोमा नॆन्ऱलु मॆदिर्हो ळॆण्णि
मङ्गुऱोय् कोयिऱ् कॊऱ्ऱक् कडैत्तलै मरुङ्गु निन्ऱान्
शिङ्गवे ऱनैय वीर शॆय्दवच् चॆल्व नॆन्ऱान् 651

पॆयर्त्तुम्–लौटकर, फिर; आण्टु वन्तु–वहाँ आकर; अटि तॊळुतान्–जिसने चरणों पर सिर झुकाया; अङ्कतनै–उस अंगद को; ऐयन्–प्रभु लक्ष्मण (के); उम् कोमान्–तुम्हारे राजा; ऍङ्कु इरुन्तान्–कहाँ रहा; ऍन्ऱलुम्–पूछते ही; चिङ्कम् ऐऱु अनैय–पुरुषसिंह-सदृश; वीर–वीर; चॆय् तवम्–संपन्न तपस्वी; चॆल्वत्–धन के स्वामी; ऍतिर् कोळ् ऍण्णि–अगवानी करने के विचार से; मङ्कुल् तोय्–जिस पर मेघ ठहरते हैं; कोयिल्–उस महल के; कॊऱ्ऱम् कटैत्तलै–विजय-द्वार के; मरुङ्कु निन्ऱान्–पास खड़े हैं; ऍन्ऱान्–कहा। ६५१

अंगद ने फिर वहाँ आकर लक्ष्मण के चरणों पर नमस्कार किया। तब सुन्दर लक्ष्मण ने अंगद से पूछा कि तुम्हारा राजा रहा कहाँ? यह प्रश्न करने पर अंगद ने उत्तर दिया— पुरुषसिंह-सम वीर! पुण्यधन! सुग्रीव आपके स्वागत का विचार लेकर मेघाश्रय योग्य विजय द्वार के पास खड़े हैं। ६५१

शुण्णमुन् दूशुम् वीशिच् चूडहत् तॊडिक्कै मादर्
कण्णहन् कवरिक् कऱ्ऱैक् कालुऱक् कलैवॆण् डिङ्गळ्
विण्णुऱ वळर्न्द दॆन्न वॆण्गुडै विळङ्ग वीर
वण्णविऱ् करत्तान् मुन्नर्क् कविक्कुलत् तरशन् वन्दान् 652

चूटकम्–चूड़े; तॊटि–'तोडि' आदि; कै–जिन्होंने हाथ में पहने हैं; मातर्–वे स्त्रियाँ; चुण्णमुम्–सुगन्धचूर्ण और; तूचुम् वीचि–वस्त्र बिखेरकर; कण् अकल्–विशाल; कवरि कऱ्ऱै–चामरों की राशियों से; काल् उऱ–हवा करती हैं, वैसे; कलै–कलाओं से पूर्ण; वॆळ् तिङ्कळ्–श्वेत चाँद; विण् उऱ–आकाश स्पर्श

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करते हुए; वळर्न्ततु ऍत्त–बढ़ गया हो ऐसे; वॅळ् कुटै–श्वेतछत्र; विळङ्क–शोभायमान हैं, ऐसे; वीरम्–वीरोचित; वण्णम् विल्–सुन्दर धनु के; करत्तान्–धारक हस्तों वाले; मुन्तर्–के सामने; कविकुलत्तु अरचन्–कपिकुलराज; वन्तान्–आया। ६५२

सुग्रीव आया। (उसके जुलूस का ठाट देखिये।) चूड़े और "तॉड़ी" नाम के कंकणधारिणी वानर-नारियाँ सुगन्ध-चूर्ण और वस्त्र उछालते हुए और विशाल चामर डुलाकर हवा करते हुए आयीं। सोलहों कलाओं से पूर्ण श्वेत चन्द्र आकाश में लगे शोभित हो रहे हों —ऐसे श्वेतछत्र दिखायी दे रहे थे। इस ठाट के साथ कपिकुलाधिपति पौरुषयुक्त और सुन्दर धनुर्धर लक्ष्मण के सामने आया। ६५२

अरुक्किय मुदल वाय वरुच्चनैक् कमैन्द यावुम्
मुरुक्किदळ् महळि रेन्द मुरशिन मुहिलि नार्प्प
इरुक्किन मुनिव रोद विशैदिशै यळप्प याणर्त्
तिरुक्किळर् शॅल्व नोक्कित् तेवरु मरुळच् चॅन्ऱान् 653

मुरुक्कु इतळ्–कँटीले पलाश के फूल के समान अधरों की; मकळिर्–स्त्रियाँ; अरुक्कियम् मुतल आय–अर्घ्य आदि (पूजार्ह); यावुम् एन्त–सब लेती आयीं; मुरचु इनम्–भेरियों के समूहों ने; मुकिलिन्–मेघों के समान; आर्प्प–घोष किया; मुनिवर्–मुनियों ने; इरुक्कु इनम्–ऋचाओं (वेद-मन्त्रों) का; ओत–उच्चारण किया; इचै–संगीत; तिचै–दिशाओं को; अळप्प–मापता रहा; याणर् तिरु–नव वैभवयुक्त; किळर् चॅल्वम्–पुष्कल धन को; नोक्कि–देखकर; तेवरुम् मरुळ–देव भ्रमित हुए; चॅन्ऱान्–(इस साज के साथ) सुग्रीव चला। ६५३

कँटीले पलाश तरु के पुष्पों के समान अधर वाली अंगनाएँ अर्घ्य आदि पूजा की सामग्रियाँ हाथ में लेती हुई आयीं। भेरियों का समूह मेघों के समान गर्जन कर रहा था। मुनिगण वेदपारायण करते हुए आये। संगीत का नाद दिशाओं को माप (व्याप्त कर) रहा था। सुग्रीव के नव-वैभव को देखकर देव भी चकित हो गये। इस रीति से सुग्रीव गया। ६५३

वॅम्मुलै महळिर् वॅळ्ळ मीनॅन विळङ्ग विण्णिल्
शुम्मैवान् मदियङ् गुन्ऱिऱ् ऱोन्ऱिय वॅनवुन् दोन्ऱिच्
चॅम्मलै यॅदिर्हो ळॅण्णित् तिरुवॉडु मलर्न्द शॅल्वन्
अम्मलै युदयञ् जॅय्युन् दादॅयु मनॅय नान्तान् 654

चॅम्मलै–नायक को; ऍतिर् कोळ् ऍण्णि–स्वागत करना चाहकर; तिरुवॉटु मलर्न्त–राज्यश्री के साथ प्रफुल्ल; चॅल्वन्–धनी; वॅम्मुलै–मनोरम उरोजों वाली; मकळिर् वॅळ्ळम्–स्त्रियों की बाढ़ के; विण्णिल् मीन् ऍत–आकाश में नक्षत्रों के समान; विळङ्क–शोभित होते; कुन्ऱिल् तोन्ऱिय–(उदय-) गिरि पर प्रकट हुए; चुम्मै वान्–अधिक उज्ज्वल; मतियम् ऍनवुम्–चन्द्र के समान भी; तोन्ऱि–प्रकट होकर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अ मलै उतयम् चॆय्युम्–उस पर्वत पर उदीयमान; तातैयुम् अऩैयऩ्–पिता (सूर्य) के समान भी; आऩाऩ्–लगा। ६५४

नायक लक्ष्मण के स्वागतार्थ आनेवाला वैभवशाली सुग्रीव उदयगिरि पर उदित होनेवाले शोभायमान चन्द्र के समान दिखा। उसके चारों ओर मनोरम स्तन वाली स्त्रियों का बड़ा समूह आकाशस्थित नक्षत्र-वृन्द के समान शोभ रहे थे। सूर्यपुत्र उदयगिरि पर प्रकट अपने पिता सूर्य के समान भी शोभायमान दिखा। ६५४

तोऱ्ऱिय वरिक्कुलत् तरशैत् तोऩ्ऱलुम्
एऱ्ऱॆदिर् नोक्किऩ ऩॆऴुन्द दव्वऴि
शीऱ्ऱमङ् गदुदऩैत् तॆळिन्द शिन्दैयाल्
आऱ्ऱिऩऩ् करुमत्ति ऩमैदि युन्ऩुवाऩ् 655

तोऩ्ऱलुम्–कुमार (लक्ष्मण) ने भी; तोऱ्ऱिय अरि कुलत्तु अरचै–सामने प्रकट हुए वानरकुल के राजा को; ऎतिर् एऱ्ऱु–स्वागत करके; नोक्किऩऩ्–निहारा; अ वऴि–तब; चीऱ्ऱम् ऎऴुन्ततु–कोप हुआ; करुमत्तिऩ् अमैति–कार्य की स्थिति; उऩ्ऩुवाऩ्–सोचकर; अङ्कु–वहाँ; अतु तऩै–उस (क्रोध) को; तॆळिन्त चिन्तैयाल्–सुलझे हुए विवेक से; आऱ्ऱिऩऩ्–शान्त कर लिया। ६५५

महिमावान राजकुमार लक्ष्मण ने अपने सामने प्रकट हुए सुग्रीव को आँखों में आँख डालकर देखा। तब उनके मन में क्रोध उमड़ आया। लेकिन कर्तव्य की रीति का विचार कर लक्ष्मण ने क्रोध को अपने विवेक के बल से शान्त कर लिया। ६५५

ऎऴुविऩु मलैयिऩु मॆऴुन्द तोळ्हळाल्
तऴुविऩ रिरुवरुन् दऴुवित् तैयलार्
कुऴुवॊडुम् वीरर्दङ् गुऴात्ति ऩोडुम्बुक्
कॊऴिविलाप् पॊऱ्कुऴात् तुऱैयु ळॆय्दिऩार् 656

इरुवरुम्–दोनों; ऎऴुविऩुम्–लोहे के स्तम्भों; मलैयिऩुम्–और पर्वतों; ऎऩ्ऩ–के समान; ऎऴुन्त तोळ्कळाल्–बढ़ी हुई भुजाओं से; तऴुविऩर्–परस्पर गले लगे; तऴुवि–आलिंगन करके; तैयलार्–स्त्रियों के; कुऴुवॊटुम्–समूहों के साथ और; वीरर् तम्–वीरों के; कुऴात्तिऩोटुम्–दलों के साथ; ऒऴिवु इला–अक्षय; पॊऱ्कुऴात्तु–स्वर्णराशियों से भरे; उऱैयुळ–महल में; पुक्कु–प्रवेश करके; ऎय्तिऩार्–पहुँचे। ६५६

दोनों ने अपनी लोहे के खम्भे और पर्वत-जैसी भुजाओं से परस्पर आलिंगन किया। फिर परस्पर मिले हुए वे अक्षय स्वर्ण से भरे महल के अन्दर चले। उनके साथ वानर-नारी-वृन्द और वीरों के दल चले। ६५६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरियणै यमैन्ददु हाट्टि यैयवीण्
डिरुवॅऩक् कविक्कुलत् तरश ऩेवलुम्
तिरुमह डलैमहन् पुल्लिऱ् चेरवॅऱ्
कुरियदो वि:(ह)दॅऩ वुरैत्तुप् पिऩ्ऩरुम् 657

कवि कुलत्तु अरचऩ्–वानरकुलाधिपति (के); अमैन्ततु–सुरचित; अरि अणै–सिंहासन को; काट्टि–दिखाकर; ऐय–प्रभु; ईण्टु इरु–यहाँ विराजिए; अॅऩ–ऐसा; एवलुम्–प्रार्थना करने पर; तिरुमकळ् तलैमकऩ्–श्रीलक्ष्मी के पति के; पुल्लिल् चेर–घास पर बैठे रहते; इ.ऱ्तु–यह; अॅऱ्कु उरियतो–मेरे योग्य होगा क्या; अॅऩ उरैत्तु–ऐसा कहकर; पिऩ्ऩरुम्–फिर भी। ६५७

कपिकुल-पति सुग्रीव ने सुनिर्मित श्रेष्ठ सिंहासन को दिखाकर प्रार्थना की कि नाथ ! इस पर विराजिये। उसके उत्तर में लक्ष्मण ने कहा कि जब लक्ष्मीपति महाराज श्रीराम घास की भूमि पर बैठे रहें, तब यह मेरे योग्य होगा क्या ? और भी (आगे बोले।)। ६५७

कल्लणै मऩत्तिऩै युडैक्कै केशियाल्
अॅल्लणै मणिमुडि तुऱन्द वॅम्मुऩार्
पुल्लणै वैहयाऩ् पॊऩ्शॆय् पूत्तॊडर्
मॆल्लणै वैहलुम् वेण्डु मॊवॆत्ऱाऩ् 658

कल् अणै–पत्थर-सम; मऩत्तिऩै उटै–मन वाली; कैकेचियाल्–कैकेयी के कारण; अॅल् अणै–कांतिमय; मणि मुटि–सुन्दर किरीट; तुऱन्त–जिन्होंने त्याग दिया; अॅम् मुऩार्–मेरे ज्येष्ठ (के); पुल् अणै–घास की शय्या पर; वैक–रहते समय; याऩ्–मैं; पॊऩ् चॆय्–स्वर्णनिर्मित; पू तॊटर्–पुष्प-भरे; मॆल् अणै–कोमल आसन पर; वैकलुम्–आसीन होऊँ, यह भी; वेण्टुमो–करना चाहिए क्या; अॅऩ्ऱाऩ्–कहा। ६५८

प्रस्तरमना कैकेयी के वर के कारण मेरे ज्येष्ठ श्रीराम कांतिपूर्ण मुकुट को त्यागकर जंगल में आये। वे मेरे बड़े भाई घासों की बनी शय्या पर लेटते हैं। तब मैं स्वर्ण-निर्मित सुमन-भूषित इस कोमल आसन पर बैठूँ, क्या यह श्लाघ्य होगा ? । ६५८

अॅऩ्ऱव नुरैत्तलु मिरवि कादलऩ्
निऩ्ऱऩऩ् विम्मिऩऩ् मलर्क्कण् णीरुहक्
कुऩ्ऱॆऩ वुयर्न्दवक् कोयिऱ् कुट्टिम
वऩ्ऱलत् तिरुन्दऩऩ् मऩुविऩ् कोमहऩ् 659

अॅऩ्ऱु–ऐसा; अवऩ्–उनके; उरैत्तलुम्–कहने पर; इरवि कातलऩ्–सूर्य-सूनु; मलर् कण्–कमल-सी आँखों से; नीर् उक–आँसू गिराते हुए; विम्मिऩऩ्–दुःख से भरकर; निऩ्ऱऩऩ्–खड़ा रहा; मऩुविऩ् कोमकऩ्–मनुकुल के राजकुमार भी;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुन्रु अन्न–पर्वत के समान; उयर्न्त अ कोयिल्–उन्नत उस महल के; कुट्टिमम् वल् तलत्तु–कोष्ठ की कठोर भूमि पर; इरुन्तनन्–बैठे। ६५९

लक्ष्मण के वैसा कहने पर सूर्य का प्यारा पुत्र कमलदल के समान अपनी आँखों से आँसू बहाते हुए दुःख से भरा खड़ा रहा। तब मनु के कुल में उत्पन्न राजकुमार पर्वत के समान ऊँचे बने उस महल के अन्दर पत्थरों के बने एक कृत्रिम चबूतरे पर बैठ गये। ६५९

मैन्दरु मुदियरु महळिर् वॅळ्ळमुम्
अन्दमि नोक्किन्न रळुद कण्णिन्नर्
इन्दिय मवित्तव रॅन्नवि रुन्दन्नर्
नॉन्दन्नर् तळर्न्दन्नर् नुवल्व दोर्हिलर् 660

मैन्तरुम्–पुरुष और; मुतियरुम्–वृद्ध लोग; मकळिर्–स्त्रियों की; वॅळ्ळमुम्–भीड़; अन्तम् इल्–छविहीन; नोक्किन्नर्–दृष्टि और; अळुत कण्णिन्नर्–रोती आँखों वाले; नुवल्वतु–क्या कहना, यह; ओर्किलर्–नहीं जानते; नॉन्तन्नर्–दुःखी हो; तळर्न्तन्नर्–शिथिल होकर; इन्तियम् अवित्तवर् ॲन्न–इन्द्रिय-नाशक के समान; इरुन्तन्नर्–रहे। ६६०

उसको देखकर वहाँ रहनेवाले वयस्क पुरुष, ज्ञानवृद्ध लोग, स्त्रियों का बड़ा समूह —सभी की आँखों से पानी बरसने लगा और उनका सौन्दर्य ही मिट गया। वे कुछ भी कह नहीं सके, क्योंकि उन्हें मालूम ही नहीं हो रहा था— क्या कहना है ? वे चिन्ताकुल होकर शिथिल हो गये। इन्द्रिय-निग्रही मुनियों के समान वे (अचल) खड़े रहे। ६६०

मञ्जन विदिमुऱै मरबि ऩाडिये, ॲञ्जलि लिन्नमु दरुन्दिन् यामॅलाम्
उञ्जन मिनियॅन्न वरशु रैत्तलुम्, अञ्जन वण्णनुक् कनुशन् कूऱुवान् 661

अरचु–राजा (सुग्रीव) के; विति मुऱै मरपिन्–शास्त्रोक्त रीति से; मञ्चनम् आटिये–स्नान करके; ॲञ्चल् इल्–निर्दोष; इन् अमुतु–मधुर भोजन; अरुन्तिन्–भोग करेंगे तो; याम् ॲलाम्–हम सब; इति उय्ञ्चनम्–अब उद्धार पा जायँगे; ॲन्न–ऐसा; उरैत्तलुम्–कहने पर; अञ्चन वण्णनुक्कु–अंजनवर्ण (श्रीराम) के; अनुचन्–अनुज; कूऱुवान्–कहने लगे। ६६१

राजा सुग्रीव ने लक्ष्मण से प्रार्थना की। आप शास्त्रोक्त रीति से मज्जन करके खूब स्वादिष्ट भोजन करें तो हम कृतार्थ होंगे। जब सुग्रीव ने यह कहा, तब अञ्जनवर्ण अयोध्यापति श्रीराम के अनुज ने यों कहा। ६६१

वरुत्तमुम् पऴियुमे वयिऱु मीक्कॊळ
इरुत्तुमॅन्न रालॅमक् किन्निय दियावदो
अरुत्तियुण् डायिनु मवलन् दान्ऱऴीइक्
करुत्तुवे ऱुऱ्ऱपि नमिऴ्दुङ् गैक्कुमाल् 662

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वरुत्तमुम्–दुःख और; पळिधुमे–अपमान के; वयिऱु मी कॊळ–पेट में भरे रहते; इरुत्तुम्–हम जीवित हैं; ऍन्ऱाल्–तो; ऍमक्कु–हमें; इनियतु–सुख देनेवाला; यावतु–क्या है; अरुत्ति उण्टायिनुम्–इच्छा होने पर भी; अवलम् तळीइ–शोकग्रस्त हो; करुत्तु–मन; वेऱु उऱ्ऱ पिन्–बिगड़ गया तो; अमिऴ्तुम्–अमृत भी; कैक्कुम्–कड़ुआ लगेगा; (तान्, आल्)। ६६२

हमारा पेट दुःख और निन्दा से भरा है। हम ऐसे ही जीवित रहते हैं। तो हमको स्वादिष्ट लगनेवाला कौन सा पदार्थ होगा? जब इच्छा होगी तो भी अगर दुःख के कारण चित्त व्याकुल है तो अमृत भी कड़ुआ लगेगा न? । ६६२

मूट्टिय पऴियॆनु मुरुङ्गु तीयवित्, ताट्टिनै गङ्गैनी ररशन् ऱेवियैक्
काट्टिनै यॆनिनॆमैक् कडलि नारमु, दूट्टिनै याऱ्पिऱि दुयवु मिल्लैयाल् 663

अरचन् तेवियै–राजाराम की देवी को; काट्टिनै ऍनिन्–लाकर दिखाओ तो; ऍमै–हम पर; मूट्टिय–लगी हुई; पऴि ऍनुम्–कलंक रूपी; मुरुङ्कु ती–ऐंठकर जलनेवाली आग को; अवित्तु–बुझाकर; कङ्कै नीर्–गंगा-जल में; आट्टिनै–स्नान करा दिया (वैसा अनुभव होगा); कटलिन् आर् अमुतु–(क्षीर-) सागर के अतिश्रेष्ठ अमृत का; ऊट्टिनै–भोजन कराया; पिऱितु–बाद; उयवुम् इल्लै–कोई दुःख भी नहीं होगा। ६६३

अगर तुम राजाराम की रानी सीतादेवी को ढूँढ़ लाकर दिखा दो तो हमारे निन्दा रूपी ऐंठकर जलनेवाले अनल को बुझाकर गंगा-स्नान कराने वाले बन जाओगे। क्षीरसागर से उत्पन्न श्रेष्ठ अमृत को खिलानेवाले बन जाओगे। फिर हमारा कोई दुःख नहीं रहेगा। ६६३

पच्चिलै किऴङ्गुकाय् परम नुङ्गिय, मिच्चिले नुहर्वदु वेऱु तानॊन्ऱु
नच्चिले नच्चिने नायि नायुण्ड, ऍच्चिले यदुविदऱ् कैय मिल्लैयाल् 664

पचु इलै–शाक-पात; किऴङ्कु–(और) कन्द; काय्–कच्चे फल; परमन्–परममान्य श्रीराम के; नुङ्किय–खाने के बाद; मिच्चिले तान्–बचे हुए पदार्थ ही; नुकर्वतु–मेरे खाद्य हैं; वेऱु ऒन्ऱुम्–और कुछ; नच्चिलेन्–नहीं चाहूँगा; नच्चिनेन् आयिन्–चाहूँगा तो; अतु–वह; नाय् उण्ट ऍच्चिले–श्वान-जूठन होगा; इतऱ्कु ऐयम् इल्लै–इसमें संशय नहीं है। ६६४

हरा शाक, कन्द और कच्चे फल—यही श्रीराम भोजन करते हैं। उनके भोजन के बाद जो बचता है, वही जूठन मेरा खाद्य है। उसको छोड़कर, और कोई वस्तु मैं नहीं चाहूँगा। अगर चाहूँगा तो वह कुत्ते का जूठन होगा। इसमें कोई संशय नहीं है। ६६४

अन्ऱियु	मॊन्ऱुळ	दैय	यानिनिच्
चॆन्ऱनॆन्	कॊणर्न्दडै	तिरुत्ति	नालदु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नुन्ऱुणैक् कोमह नुहर्व दाहलान्
इन्ऱिरै ताऴ्त्तलु मिनिदन् ऱामॅन्ऱान् 665

ऐय–वानरनायक; अन्ऱियुम्–और भी; ऑन्ऱु उळतु–एक बात है; यान् इत्ति चॅन्ऱनॅन्–मैं अब जाऊँ; कॉणर्न्तु–फल-मूल लाऊँ; अटै तिरुत्तिनाल्–पत्तल परोसूँ तभी; अतु–वही; नुन् तुणै–तुम्हारे मित्र; कोमकन्–राजकुमार का; नुकर्वतु–भोज्य होगा; आकलान्–इसलिए; इन्ऱु–अब; इऱै ताऴ्त्तलुम्–थोड़ा भी विलम्ब करना; इत्तितु अन्ऱु आम्–भला नहीं होगा; ऍन्ऱान्–लक्ष्मण ने कहा। ६६५

अधिपति ! इसके अलावा और एक बात है। मैं अब जाकर कन्द-मूलादि ले आकर पत्र पर परोसूँ, तो वही तुम्हारे मित्र राजकुमार श्रीराम का भोजन होगा। इसलिए अब थोड़ा विलम्ब करना भी अच्छा नहीं होगा। ६६५

वानर वेन्दनु मिनिदिन् वैहुदल्, मानवर् तलैमह निडरिन् वैहवे
आनदु कुरक्किनत् तॅमर्हट् कामॅना, मेनिलै यऴिन्दहम् विम्मि नानरो 666

वानर वेन्तनुम्–वानराधिपति भी; मानवर्–मनुकुल के; तलै मकन्–श्रेष्ठ पुत्र के; इटरिन् वैक–दुःखी रहते; इनितित् वैकुतल्–सुख से (विलम्ब करता) रहना; आनतु–जो है वह; कुरङ्कु इनत्तु–वानर-जाति के; ऍमर्कट्कु आम्–हमारी प्रकृति है; ऍना–कहकर; मेल् निलै अऴिन्तु–अपना धैर्य खोकर; अकम् विम्मितान्–चित्तविह्वल हुआ। ६६६

लक्ष्मण का यह वचन सुनकर वानरराज सुग्रीव ने दुःख के साथ कहा कि हाँ ! ठीक है। मनुकुलश्रेष्ठ श्रीराम जब दुःख-मग्न हैं, तब सुख में समय बिताना वानर-जाति के हमें ही सोह सकता है। सुग्रीव विचलित होकर चित्ताकुलित हुआ। ६६६

ऍऴुन्दनन् पॊरुक्कॅन विरवि कानमुळै
विऴुन्दकण् णीरिनन् वॅऱुत्त वाऴ्विनन्
अऴिन्दयर् शिन्दैय ननुमर् काण्डॊन्ऱु
मॊऴिन्दनन् वरनुळैप् पोदन् मुन्नुवान् 667

इरवि काल् मुळै–सूर्यपुत्र सुग्रीव; पॊरुक्कॅन ऍऴुन्तनन्–तपाक से उठा; विऴुन्त कण् नीरिनन्–बहते आँसुओं वाला; वॅऱुत्त वाऴ्विनन्–और विरक्त जीवन वाला; अऴिन्तु अयर्–जो क्षीण होकर थक गया, ऐसे; चिन्तैयन्–मन वाला होकर; वरन् उळै–उत्तम श्रीराम के पास; पोतल् मुन्नुवान्–जाने को उद्यत हुआ और; आण्टु–तब; अनुमर्कु–हनुमान से; ऑन्ऱु मॊऴिन्तनन्–(उसने) एक (बात) कही। ६६७

फिर सुग्रीव ससंभ्रम उठा। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे। उसे अपने जीवन से ही विरक्ति होने लगी। वह विचलित और थकित मन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

का हो गया। श्रेष्ठ श्रीराम के पास जाने का विचार करके उसने हनुमान से एक बात कही। ६६७

पोयिन तूदरिऱ् पुहुदुऱ् जेनैयै, नीयुडन् कॊणरुदि नॆऱिव लोयॆन
एयिन ननुमनै यिरुत्ति योण्डॆन्, नायह निरुन्दुळिक् कडिदु नण्णिनान् 668

नॆऱिवलोय्–उपाय में समर्थ; पोयिन तूतरिन्–जो गये हैं, उन दूतों के साथ; पुकुतुम् चेनैयै–आनेवाली सेना को; नी–तुम; उटन् कॊणरुति–साथ ले आओ; ऎन–ऐसा और; ईण्टु इरुत्ति–(तब तक) यहाँ रहो; ऎन–ऐसा; अनुमनै–हनुमान को; एयिनन्–आज्ञापित करके; नायकन् इरुन्त उळि–जहाँ नायक श्रीराम रहे, उस स्थान को; कटितु–सवेग; नण्णिनान्–चला। ६६८

युद्ध-विज्ञान-विशारद वायुपुत्र! दूत सेना लाने गये हैं न? वे जो सेना लायेंगे उसे लेकर तुम आ जाना। तब तक यहीं रहो। हनुमान से यह आज्ञा सुनाने के बाद सुग्रीव, नायक श्रीराम के यहाँ सवेग जाने लगा। ६६८

अङ्गद नुडन्शॆल वरिहण् मुन्शॆल
मङ्गैय रुळ्ळमुम् वळियुम् बिन्शॆलच्
चङ्गैयि लिलक्कुवऱ् ऱळुवित् तम्मुनिल्
शॆङ्गदि रोन्महन् कडिदु शॆन्ऱनन् 669

चॆम् कतिरोन्–लाल किरणमाली का; मकन्–पुत्र सुग्रीव; चङ्कै इल्–संशयहीन (ज्ञानी); इलक्कुवन् तळुवि–लक्ष्मण का आलिंगन करते हुए; अङ्कतन् उटन् चॆल–अंगद के साथ आते; अरिकळ्–वानरों के; मुन् चॆल्–आगे जाते; मङ्कैयर् उळ्ळम्–स्त्रियों के मनों के; पिन् चॆलवुम्–पीछे आते; वळि पिन् चॆलवुम्–मार्ग के पीछे रह जाते; तम् मुन् इल्–अपने ज्येष्ठ भ्राता (मान्य) श्रीराम के यहाँ; कटितु चॆन्ऱनन्–शीघ्र गया। ६६९

लाल प्रकाश-किरणों वाले सूर्य का पुत्र सुग्रीव असंश्यमन लक्ष्मण को आलिंगन में लेकर जाने लगा। अंगद साथ गया। वानर आगे गये। वानर-नारियों का मन उसके पीछे-पीछे गया। मार्ग पीछे छूटता गया। इस रीति से सुग्रीव श्रीराम की तरफ़, जो कि उसके ज्येष्ठ भ्राता (के समान) थे, शीघ्र गया। ६६९

ऒन्बदि नायिर कोडि यूहन्दन्, मुन्शॆलप् पिन्शॆल ञाङ्गर् मॊय्प्पुऱ
मन्बॆरुङ् गिळैञरु मरुङ्गु शुऱ्ऱुऱ, मिन्बॊरु पूणिनान् शॆल्लुम् वेलैयिल् 670

ऒन्पतिन् आयिर कोटि–नौ सहस्र कोटि; यूकम्–सेना; तन् मुन् चॆल–उसके सामने गयी और; पिन् चॆल–पीछे गयी; ञाङ्कर्–(दोनों) पार्श्वों में; मॊय्प्पुऱ–घने रूप से मिल आयी; मन् पॆरु किळैञरुम्–और बहुत उत्कृष्ट बन्धु-बान्धव; चुऱ्ऱुऱ–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चारों ओर घेर आये; मिन् पॊरु पूणिनान्–बिजली-सम आभरण वाला; चॆल्लुम् वेलैयिल्–जब चला तब । ६७०

नौ सहस्र कोटि वानर वीर उसके आगे, पीछे, और पार्श्वों में सटे हुए चले। उत्तम बन्धु-बान्धव भी चारों ओर घेरकर चले। विद्युत् से होड़ लगानेवाले कान्तिमय आभरणों से भूषित सुग्रीव जब चलने लगा तब (आगे के पद में वाक्य जारी है)। ६७०

कॊडिवन मिडैन्दन कुमुऱु बेरियिन्, इडिवन मिडैन्दन पणिल मेङ्गिन
तडिवन मिडैन्दन तयङ्गु पूणॊळि, पॊडिवन मॆऴुन्दन वानम् बोर्क्कवे 671

कॊटि वनम्–ध्वजाओं के जंगल; मिटैन्तन–जुटे; कुमुऱुम् पेरियिन्–गरजनेवाली भेरियों के; इटि वनम्–वज्रघोष के जंगल; मिटैन्तन–मिल आये; पणिलम् एङ्कित–शंख बज उठे; तयङ्कु पूण्–चमकनेवाले आभरणों की; ऒलि तटि वनम्–कान्ति रूपी तड़ितों का वन; मिटैन्तन–भर आया; वानम् पोर्क्क–आकाश को ढँकते हुए; पॊटि वनम्–धूल का जंगल; ऎऴुन्तन–उठा । ६७१

ध्वजाओं का वन (समूह) मिल आया। नर्दन करनेवाली भेरियों के शब्दों का वन (समूह) भर आया। शंख बज उठे। प्रकाश-प्रसारक आभरणों की कान्तियों के पुञ्ज भरे। आकाश को ढँकते हुए धूलि-वन (समूह) उठकर फैला। ६७१

पॊन्निनिन् मुत्तिनिऱ् पुनैमॆन् ऱूशिनिन्
मिन्निन मणियिनिऱ् पळिङ्गिन् वॆळ्ळियिन्
पिन्निन विशुम्बिनुम् बॆरिय पॆट्पुऱत्
तुन्निन शिविहैवॆण् गविहै शुऱ्ऱिन 672

पॊन्निनिन्–स्वर्ण के; मुत्तिनिल्–मोतियों से; पुनै मॆल्–सुन्दर और महीन; तूचिनिन्–वस्त्रों से; मिन्निन मणियिनिल्–चमकती मणियों से; पळिङ्किन्–स्फटिक से; वॆळ्ळियिन्–चाँदी से; पिन्निन–बनी हुई; चिविकै–शिविकाएँ; तुन्निन–सटी हुई आयीं; वॆळ् कविकै–श्वेत छत्र; विचुम्पिनुम् पॆरिय–आकाश से भी बड़ी; पॆट्पु उऱ–मनोरम रीति से; चुऱ्ऱिन–घूमती आयीं । ६७२

शिविकाएँ मिल आयीं, जो स्वर्ण, मोती, सुन्दर महीन वस्त्र, चमकनेवाली मणियों, स्फटिक और चाँदी से निर्मित थीं। श्वेत-छत्र ऐसे और इतने घूमते आये कि उनका फैलाव आकाश से भी अधिक विशाल लगा। ६७२

वीरनुक् किळैयवन् विळङ्गु शेवडि, पारिनिऱ् चेऱलुम् परिदि मैन्दनुम्
तारिनिऱ् पॊलन्गळ ऱळङ्गत् तारणित्, तेरिनिऱ् चॆन्ऱनन् चिविकै पिन्शॆल 673

वीरनुक्कु इळैयवन्–वीर श्रीराम के लघुभ्राता के; विळङ्कु–शोभायमान; चे अटि–सुन्दर चरण; पारिनिल्–भूमि पर; चेऱलुम्–पड़ते चले तो; परिति मैन्तनुम्–सूर्यपुत्र भी; तारिनिल्–हारों और पायलों की; पॊलम् कळल्–मनोरम ध्वनि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को; तळङ्कुक–उठने देते हुए; चिविकै पिन्–पालकियों के (उसके) पीछे; चॅल–चलते; तारणि तेरिल्–भूमि रूपी रथ पर; चॅन्ऱनन्–चला । ६७३

वीर श्रीराघव के कनिष्ठ भ्राता के लाल चरण भूमि पर चलने लगे, तो सूर्यपुत्र भी धरती रूपी रथ पर (यानी भूमि पर पैदल) चलने लगा। तब उसके पैरों पर बँधी हुई वीर पायलें शब्दित हुईं। उसकी शिविका उसके पीछे आयी। ६७३

अॅय्दिनन् मानव निरुन्द माल्वरै
नॉय्दिनिऱ् चेनैपिन् बॉळिय नोन्गळल्
ऐयविऱ् कुमरनुन् दान् मङ्गदन्
कैतॉडर्न् दयल्शॅलक् कादन् मुन्शॅल 674

नोन् कळल्–तगड़े कड़ों के धारक; ऐय विल्–सुन्दर धनुर्धर; कुमरनुम्–कुमार लक्ष्मण भी; तानुम्–आप (सुग्रीव) के साथ; चेनै पिन्पु ऑळिय–सेना को पीछे छोड़कर; अङ्कतन्–अंगद के; कै तॉटर्न्तु–हाथ से लगे हुए (पास-पास); अयल् चॅल–साथ आते; कातल् मुन् चॅल–(श्रीराम के पास पहुँचने की) इच्छा के आगे जाते; मानवन्–सम्मान्य प्रभु श्रीराम; इरुन्त माल् वरै–जहाँ रहे, उस पर्वत पर; नॉय्तिनिल्–शीघ्र; अॅय्तिनन्–पहुँचे। ६७४

ठोस रूप से बनी पायल और सुन्दर धनु —इनके साथ शोभायमान लघुदेव लक्ष्मण और सुग्रीव साथ-साथ जाने लगे। अंगद उनके पार्श्व में उनसे लगा हुआ जा रहा था। वानर-सेना पीछे जा रही थी। और श्रीराम-मिलन की उत्कण्ठा उनके आगे (उनको ले) जा रही थी। वे मनुकुल-श्रेष्ठ श्रीराम जहाँ रहते थे, उस पर्वत पर जा पहुँचे। ६७४

कण्णिय कणिप्परुञ् जॅल्वक् कादल्विट्
टण्णलै यडिदॉळ वणैयु मन्बिनाल्
नण्णिय कविक्कुलत् तरश नामवेल्
पुण्णियऱ् ऱॉळवरुम् बरदन् पोन्ऱनन् 675

कण्णिय–सबको विस्मय में डालनेवाले; कणिप्पु अरुम्–अगणित; चॅल्वम् कातल्–धन का प्रेम; विट्टु–त्यागकर; अण्णलै–प्रभु श्रीराम के; अटि तॉळ–चरणों की पूजा करने हेतु; अणैयुम्–उठे हुए; अन्पिनाल्–भक्तिभाव के साथ; नण्णिय–जो आया; कवि कुलत्तु अरचन्–कपिकुलपति; नाम वेल्–डरावने भाले वाले; पुण्णियन्–पुण्य-मूर्ति श्रीराम को; तॉळ वरुम्–नमस्कार करने आनेवाले; परतन् पोन्ऱनन्–भरत के समान लगा। ६७५

सर्वमान्य और अगणित विपुल सम्पत्ति का प्यार त्यागकर कपिकुल-पति श्रीराम के श्रीचरणों पर नमस्कार करने के लिए उत्पन्न भक्ति के साथ श्रीराम के पास जा पहुँचा। तब वह भयावह भालाधारी श्रीराम के श्रीचरणों पर नमस्कार करने आनेवाले भरत के समान लगा। ६७५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पिऱिवरुन् दम्बियुम् बिरियप् पेरुल
हिऱुदियिऱ् ऱाऩ्ऩ विरुन्द वेन्दलै
अऱैमणित् तारिऩो डारम् बार्दोडच्
चॅऱिमलर्च् चेवडि मुडियिऱ् ऱीण्डिऩान् 676

पिऱिवु अऱु–कभी अलग न होनेवाले; तम्पियुम् पिरिय–कनिष्ठ भ्राता के भी अलग हो जाने से; पेर् उलकु इऱुतियिल्–बड़े लोकों के अन्तिम काल में (युगान्त में); तान् ऍऩ इरुन्त–अकेले, आप ही रहनेवाले (महाविष्णु के समान जो रहे); एन्तलै–उन महाप्रभु के; अऱै मणि तारिऩोटु आरम्–क्वणित मणियों की मालाओं के साथ मुक्ताहारों को भी; पार् तॊट–भूमि को स्पर्श करने देते हुए; चॅऱि मलर् चे अटि–उत्फुल्ल पद्म के समान लाल चरणों को; मुटियिऩ्–अपने सिर से; तीण्टिऩान्–स्पर्श किया। ६७६

लक्ष्मण किसी भी हालत में श्रीराम से अलग होनेवाले नहीं थे। अब वे भी इनको अकेले छोड़कर चले गये थे। इसलिए ये श्रीराम सृष्टि के अन्त में, जब सारे लोग लुप्त हो जाते हैं, निपट एकाकी रहनेवाले श्रीविष्णु के समान अकेले रहे। तब सुग्रीव ने उनके दल-लसित, कमलपुष्प-सम लाल चरणों पर अपना सिर लगाते हुए नमस्कार किया। तब उसके वक्ष में रहनेवाली रत्न और मोती की मालाएँ भी भूमि पर लगीं। उनके आपस में टकराने से शब्द निकल रहा था। ६७६

तीण्डिय कुरिशिलैच् चिलैयि राहवन्
नीण्डपॊऱ् ऱडक्कैया ऩॆडिदु पुल्लिऩान्
मूण्डॆऴु वॆहुळिपो यॊळिप्प मुन्बुपोल्
ईण्डिय करुणैतन् दिरुक्कै येविये 677

तीण्टिय कुरिचिलै–स्पर्श करनेवाले राजा को; चिलै इराकवन्–कोदण्डपाणी श्रीराघव ने; नीण्ट–दीर्घ; पॊऩ्–सुन्दर; तट–विशाल; कैयाल्–करों से; ऩॆटिदु–खूब; पुल्लिऩान–आलिंगन किया; मूण्टु ऍऴु–उफनकर उठा; वॆकुळि–क्रोध; पोय् ऒळिप्प–जाकर छिप गया; मुन्पु पोल्–पूर्व की तरह; ईण्टिय करुणै–अधिक स्नेह; तन्तु–दिखाकर; इरुक्कै एवि–बैठने की आज्ञा देकर। ६७७

अपने चरण-स्पर्शी महिमायुक्त सुग्रीव को कोदण्डपाणी श्रीराम ने अपने दीर्घ और सुन्दर हाथों से उठाकर गले लगा लिया। उनके मन में जो क्रोध उठा और बढ़ रहा था, वह ठण्डा पड़कर लुप्त हो गया। उन्होंने पहले का जैसा प्रेम दिखाया और बैठने की आज्ञा देकर; । ६७७

अयलिऩि दिरुत्तिनिन् ऩरशु माणैयुम्
इयल्बिऩि ऩियैन्दवे यिऩिदिऩ् वैहुमे
पुयल्बॊरु ऩडक्कैनो पुरक्कुम् बल्लुयिर्
वॆयिलिल देहुडै यॆऩ्ऩवि ऩायिऩान् 678

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अयल्–पास में; इनितु–सुख से; इरुत्ति–बिठा लेकर; निन् अरचुम्–तुम्हारा राज्य और; आणैयुम्–शासन; इयल्पिनिल्–शास्त्रोक्त रीति से; इयैन्तवे–मिलकर चलते हैं न; पुयल् पॉरु–मेघ-सम (दानी); तटकै नी–विशाल हस्त तुम; पुरक्कुम् पल् उयिर्–जिनका पालन करते, वे अनेक जीव; इनितिन् वैकुमे–सुख से रहते हैं न; कुटै–श्वेतछत्र; वॅयिल् इलते–आतपहीन है न; अॅन वितायितान्–ऐसा पूछा। ६७८

अपने पास सुख से बिठा लिया और पूछा कि तुम्हारा राज्य और शासन शास्त्रोक्त प्रकार से युक्त हैं। मेघसम (दानी) हाथों वाले तुमसे पालित होकर विविध जीव और प्राणी सुख से रहते हैं ? तुम्हारा श्वेतछत्र आतप-रहित है ? (क्या तुम प्रजा को किसी भी कष्ट से बचा रहे हो ?)। ६७८

पॉरुळुडै यव्वुरै केट्ट पोळ्दुवान्, उरुळुडैत् तेरिनान् पुदल्व नूळियाय्
इरुळुडै युलहिनुक् किरवि यन्ननिन्, अरुळुडै येऱ्कवै यरिय वोवॅन्ऱान् 679

पॉरुळ् उटै–अर्थ-भरा; अ उरै–वह वचन; केट्ट पोळ्तु–जब सुना तब; वान्–आकाश में; उरुळ् उटै–चलनेवाले; तेरिनान्–रथ के स्वामी सूर्य के; पुतल्वन्–पुत्र (ने); ऊळियाय्–युगपुरुष; इरुळ् उटै उलकिनुक्कु–अँधेरा-भरी दुनिया के; इरवि अन्न–रवि के समान; निन्–आपकी; अरुळुटैयेऱ्कु–कृपा के पात्र मुझे; अवै अरियवो–वे कार्य कठिन हैं क्या; अॅन्ऱान्–कहा। ६७९

श्रीराम के वचन अर्थ-भरे थे। यह सुनकर आकाशचारी एकचक्र-रथ के स्वामी सूर्यदेव के प्यारे पुत्र ने जवाब दिया कि युगान्त में अमर रहनेवाले, हे देवदेव ! अँधेरे से भरी रही भूमि के रवि के समान आप रहते हैं। ऐसे आपकी कृपा के पात्र मुझे यह काम कठिन है क्या ?। ६७९

पिन्नरुम् विळम्बुवान् पेदै येनुन, दिन्नरु ळुदविय शॅल्व मॅय्दिनेन्
मन्नव निन्बणि मऱत्तु वेहियॅन्, पुन्निलैक् कुरक्कियल् पुदुक्कि नेनॅन्ऱान् 680

पिन्नरुम्–आगे भी; विळम्पुवान्–कहा; मन्नव–राजन्; पेतैयेन्–जड़मति (मैं) ने; उन्नतु इन् अरुळ् उतविय–आपके कृपादत्त; चॅल्वम् अॅय्तिनेन्–धन पाया; निन् पणि–आपकी आज्ञा; मऱत्तु–भुलाकर; वैकि–रहा और; अॅन्–मेरा (अपना); पुल् निलै–क्षुद्र स्थिति का; कुरङ्कु इयल्–वानर-स्वभाव; पुतुक्कितेन्–नये रूप से दिखा दिया; अॅन्ऱान्–कहा। ६८०

सुग्रीव आगे बोला। रामराज ! मैं बुद्धिहीन हूँ। आपकी कृपा से मुझे अधिक सम्पत्ति मिली। तो भी मैंने आपकी आज्ञा की उपेक्षा कर दी और उसके द्वारा मैंने अपना क्षुद्र वानर का स्वभाव नये रूप से दिखला दिया। ६८०

पॅरुन्दिशै यनैत्तैयुम् पिशैन्दु नेडियान्
तरुन्दहै यमैन्दुमत् तन्मै शॅय्दिलेन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरुन्दिऴै तिऱत्तिनार् ऱॆऴिन्द शिन्दैनी
वरुन्दिनै यिरुप्पयान् वाऴ्विन् वैहिनेन् 681

पॆरुम् तिचै अनैत्तैयुम्–सभी बड़ी दिशाओं में; यान् पिचैन्तु नेटि–मैं खाक छानकर ढूँढ़कर; तरुम्–(देवी सीता को) लाऊँ; तकै–वह सामर्थ्य; अमैन्तुम्–रहता है तो भी; अ तन्मै–उस प्रकार; चॆय्तिलेन्–न करके; तिरुन्तु इऴै–श्रेष्ठ आभरण वाली (सीताजी); तिऱत्तिनाल्–के कारण; तॆऴिन्त चिन्तै–विवेकमन; नी–आप; वरुन्तिनै–दुःखी हो; इरुप्प–रहते; यान्–मैं; वाऴ्विल्–(सुखी) जीवन में; वैकिनेन्–डूबा रह गया। ६८१

सुग्रीव ने जारी किया। सभी लम्बी दिशाओं में जाऊँ, खाक छानूँ और देवी सीताजी को ले आऊँ —यह शक्ति मुझमें है। तो भी मैंने ऐसा नहीं किया। सुन्दर कारीगरी से युक्त आभरण-धारिणी सीताजी के कारण आपका सदा-विवेकी मन भी विचलित हुआ। आप दुःखी रहे, तब भी मैंने अपने सुखी जीवन में समय बिताया। ६८१

इनैयन यानुडै यियल्बु मॆण्णमुम्
निनैवुमॆन् ऱालिनि निन्ऱि यान्शॆयुम्
विनैयुनल् लाण्मैयु विळम्ब वेण्डुमो
वनैहऴल् वरिशिलै वळ्ळि योयॆन्ऱान् 682

वनै कऴल्–कारीगरीयुक्त पायलधारी; वरि चिलै–सबन्ध धनुर्धर; वळ्ळियोय्–वदान्य; यान् उटै–मेरे पास जो रहता है; इयल्पुम्–वह स्वभाव और; ऎण्णमुम्–विचार; निनैवुम्–स्मरण; इनैयत–ऐसे हैं; ऎन्ऱाल्–तो; इनि–आगे; यान्–मैं; निन्ऱु चॆयुम्–(मित्र की) स्थिति में जो करूँगा; विनैयुम्–वह कार्य; नल् आण्मैयुम्–और श्रेष्ठ पुरुषोचित सामर्थ्य भी; विळम्प वेण्टुमो–कहना भी चाहिए क्या; ऎन्ऱान्–कहा। ६८२

सुनिर्मित पायल और सबन्ध धनु के स्वामी, वदान्य ! मेरा स्वभाव, मेरे विचार और मेरे स्मरण ऐसे हैं तो आगे मैं आपका साथी बनकर जो करूँगा उन कार्यों का और मेरी श्रेष्ठ वीरता का क्या कहा जाय ? । ६८२

तिरुवुरै मार्बनुन् दीर्न्द देयुम्वन्, दॊरुवरुङ् गालमुन् नुरिमै योरुरै
तरुविनैत् ताहैयिऱ् ऱाऴ्विऱ् ऱाहुमो, बरदनी यिनैयन पहर्दियो वॆन्ऱान् 683

तिरु उरै–श्रीनिवास; मार्पनुम्–वक्ष वाले भी; ऒरुवु अरु–जल्दी जो नहीं बीतता; कालम्–वह वर्षाकाल; वन्तु–आकर; तीर्न्ततेयुम्–चला गया और; उन् उरिमै–अपना कर्तव्य पहचानकर; ओर् उरै–जो कहते हो, वह वचन; तरु विनैत्तु–सीता को लाकर देने का कार्यवाची है; आकैयिन्–इसलिए; ताऴ्विऱ्ऱु आकुमो–(तुम्हारे वचन और कार्य) नीच हो सकते हैं क्या; परतन् नी–भरत (समान) तुम; इनैयत–ऐसी बातें; पकर्तियो–क्यों कहो; ऎन्ऱान्–बोले। ६८३

(पछतावे के साथ सुग्रीव ने वे शब्द कहे थे।) श्रीवक्ष श्रीराम ने उत्तर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

में कहा— शीघ्र बीतनेवाला वर्षाकाल भी आकर चला गया। तुम अपना उत्तरदायित्व समझकर बात करने लगे। तुम्हारे वचनों में सीता को ढूँढ़ लाने का संकल्प झलकता है। फिर इसमें क्षुद्रता कहाँ ? तुम मेरे लिए भरत के समान हो। फिर ऐसी बातें क्यों कहो ? । ६८३

आरियन् पिन्नरु ममैन्दु नन्गुणर्, मारुदि यॆव्वळि मरुवि नानॆन्नच्
चूरियन् कान्मुळै तोन्रु मालवन्, नीरिरुम् परवैयि नॆडिय शेनैयान् 684

आरियन्–आर्य श्रीराम (के); पिन्नरुम्–फिर भी; अमैन्तु–कहने को उद्यत होकर; नन्कु उणर्–खूब समझदार; मारुति–मारुति; ऍ वळि–कहाँ; मरुवितान्–रहता है; ऍन्न–कहने पर; चूरियन् कान् मुळै–सूर्य का पुत्र; अवन्–वह; नीर् इरुम् परवैयिन्–जल-भरे बड़े समुद्र के समान; नॆटिय चेनैयान्–बहुत विशाल सेना वाला होकर; तोन्रुम्–आ जायगा। ६८४

आर्य श्रीराम ने और कुछ कहने को उद्यत होकर पूछा कि त्रिकालज्ञ और विवेकी मारुति कहाँ है ? उसके उत्तर में सूर्यसूनु ने कहा— वह जल-भरित सागर-सम विशाल सेना वाला बनकर आयगा। ६८४

कोडियो रायिरङ् गुरित्त तूदुवर्, ओडि नॆडुम्बडै कॊणर लुर्रदाल्
नाडरक् कुरित्तदु मिन्रु नाळैयव्, वाडलन् दानैयो डवनु मॆय्दुमाल् 685

ओर् आयिरम् कोटि–एक सहस्र कोटि; कुरित्त–गणित; तूतुवर्–दूत; नॆटु पटै–विशाल सेना; कॊणरल् ओटिनर्–लाने दौड़े हैं; तर–(सेना) लाने; कुरित्ततु नाळुम्–निर्धारित दिन भी; उर्रतु–आ गया; आल्–इसलिए; इन्रु नाळै–आज या कल; अ–उस; आटल् अम् तानैयोटु–शक्तिमान सेना के साथ; अवनुम् ऍय्तुम्–वह भी आ जायगा। ६८५

एक सहस्र कोटि गणित दूत विशाल वानर-सेना को ले आने के लिए वेग के साथ गये हैं। उनके लौट आने के लिए निर्धारित दिन भी आ गया। इसलिए आज या कल सशक्त उस बड़ी सेना के साथ हनुमान भी इधर आ जायगा। ६८५

विरुम्बिय विरामनुम् वीर निर्कदोर्, अरुम्बॊरु ळाहुमो वमैदि नन्रॆन्नाप्
पॆरुम्बह लिरन्ददु पॆयर्दि निन्बडै, पॊरुन्दुळि वावॆन्नत् तॊळुदु पोयिनान् 686

विरुम्पिय इरामनुम्–(सुग्रीव से) स्नेह करनेवाले श्रीराम (के); वीर–वीर; निर्कु–तुम्हारे लिए; अतु–वह; ओर् अरुम् पॊरुळ् आकुमो–एक कठिन काम होगा क्या; अमैति–विनय; नन्रु–भली है; ऍन्ना–कहकर; पॆरुम् पकल्–लम्बा दिन; इरन्ततु–पूरा हो गया; पॆयर्ति–निकलो; निन् पडै–तुम्हारी सेना; पॊरुन्तुळि–जब आकर मिल जायगी; वा–आओ; ऍन्न–कहने पर; तॊळुतु–नमस्कार करके; पोयितान्–चला। ६८६

सुग्रीव को प्यार करनेवाले श्रीराम ने सुग्रीव से प्रोत्साहन के शब्द में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कहा कि हे वीर ! तुम्हारे लिए यह काम कोई कठिन काम है क्या ? लेकिन तुम्हारी विनय श्लाघनीय है। उन्होंने आगे कहा कि देखो ! लम्बा दिन का समय पूरा हो गया। अब चलो और जब सेना एकत्रित हो आयगी तब आ जाओ। श्रीराम की यह आज्ञा लेकर सुग्रीव उनको नमस्कार करके चला। ६८६

अङ्गदऱ् किनियऩ वरुळि यैयपोय्त्, तङ्गुदि युन्दैयो डॅन्ऱु तामरैच्
चॅङ्गणान् ऱम्बियुन् दानुञ् जिन्दैयिन्, मङ्गैयु मव्वळि यन्ऱु वैहिनान् 687

तामरै–कमल-सी; चॅम् कणान्–लाल आँखों वाले; अङ्कतऱ्कु–अंगद से; इनियऩ–मधुर; अरुळि–(वचन) कहकर; ऐय–तात; पोय्–जाकर; उन्तैयोटु–अपने पिता के साथ; तङ्कुति–रहो; ऍन्ऱु–कहकर; तम्पियुम्–अपने छोटे भाई (के साथ जो प्रत्यक्ष थे) और; चिन्तैयिन् मङ्कैयुम्–(जो मन में रहीं उन) देवी (के साथ) और; तानुम्–स्वयं; अन्ऱु–उस निशा में; अव्वळि–वहाँ; वैकिनान्–ठहरे। ६८७

पद्माक्ष श्रीराम ने अंगद से मधुर वचन कहे और आज्ञा दी— सुन्दर वीर ! तुम भी जाओ और अपने पिता के साथ रहो। फिर वे मन में सीता की चिन्ता और पास में लक्ष्मण को रखते हुए अकेले वहाँ रहे। ६८७

अन्ऱव णिरुत्तन नलरि कीट्टिशैप्, पॊन्ऱिणि नॅडुवरै पॊलिवु ऱादमुन्
वन्ऱिऱर् ऱूदुवर् कूव वानरक्, कुन्ऱुरळ् नॅडुम्बडै यडैन्द कूऱुवाम् 688

अन्ऱु–उस रात; अवण्–वहाँ (माल्यवान पर्वत) पर; इरुत्तऩन्–ठहरे; अलरि–सूर्य (के); कीळ् तिचै–पूर्व दिशा में; पॊन् तिणि–स्वर्णमय; नॅटु वरै–बड़ी (उदय-) गिरि पर; पॊलिवु उऱात–शोभायमान होने से; मुन्–पहले; वल् तिऱल्–अधिक सशक्त; तूतुवर्–दूतों के; कूव–पुकारने पर; कुन्ऱु उऱळ्–पर्वत-सम; वानरम्–वानरों की; नॅटु पटै–विशाल सेना; अटैन्ततु–आ पहुँची; कूऱुवाम्–यह कहेंगे। ६८८

उस रात भर में वे उस माल्यवान पर्वत पर रहे। सूर्य के पूर्व दिशा की स्वर्णिम उदयगिरि पर शोभायमान दिखने से पूर्व ही बहुत बलवान दूतों के बुलाने पर पर्वत-सम वानरों की विशाल सेना कैसे आ पहुँची ? इसका अब विवरण देंगे। ६८८

11. तानैकाण् पडलम् (सेना-संदर्शन पटल)

आनै यायिर मायिरत् तॅऱुळ्वलि यमैन्द
वान रादिप रायिर रुडन्वर वहुत्त
कूनन् माक्कुरङ् गैयिरण् डायिर कोडित्
तानै योडमच् चदवलि यॅन्बवन् शार्न्दान् 689

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अ चत वलि अॅन्पवन्–वह शतबली नाम का वीर; आयिरम् आयिरत्तु–सहस्र-सहस्र (दस लाख); आनै–गजों के; अॅऴ्ळ् वलि अमैन्त–विकट बल से युक्त; आयिरर् वानर अतिपर्–सहस्र वानर-यूथप; उटन् वर–साथ आते; वकुत्त–दल-बद्ध; कूनल्–कूबड़े; मा–बड़े; ऐ इरण्टु–दस; आयिर–सहस्र; कोटि–कोटि; कुरङ्कु–वानरों की; तानैयोटु–सेना के साथ; वन्तान्–आया। ६८९

शतबली नामक वानर वीर आया; जिसके साथ दस-दस लाख गजों के-से बल वाले वानराधिपति आये। और उनके पीछे व्यूहों में बद्ध दस सहस्र करोड़ झुकी पीठ वाले वानरों की सेना आयी। ६८९

ऊन्ऱि मेरुवै यॅडुक्कुऱु मिडुक्किनुक् कुरिय
तेन् ऱॅरिन्दुण्डु तॅळिवुऱु वानरच् चेनै
आन्ऱ पत्तुनू ऱायिर कोडियो डमैयत्
तोन्ऱि नान्वन्दु शुशेडण नॅनुम्बॅयर्त् तोन्ऱल् 690

चुचेटणन् ऍनुम् पॅयर् तोन्ऱल्–सुषेण नामक वीर; मेरुवै–मेरुपर्वत को; ऊन्ऱि ऍटुक्कुम्–उखाड़कर उठा लेने की; मिटुक्किनुक्कु उरिय–शक्तिसम्पन्न; तेन् तॅरिन्तु उण्टु–सुरा का (परिमाण) जानकर पान करके; तेळिवु उऱु–स्वच्छ (मन वाली); आन्ऱ वानर चेनै–श्रेष्ठ वानर-सेना; पत्तु नूऱायिर कोटि योटु–दस लाख सहस्र के साथ; अमैय–युक्त होकर; वन्तु तोन्ऱिनान्–आकर प्रकट हुआ। ६९०

सुषेण नामक बड़े वीर आये। उसके साथ उत्कृष्ट दस लाख कोटि वानरों की सेना आयी। वे वीर मेरु को उखाड़ लेने की शक्ति रखते थें। मात्रा जानकर पिये हुए थे, उनके मन में कोई भ्रम नहीं था (ऐसे वीरों के साथ सुषेण आया।)। ६९०

ईऱिल् वेलैयै यिमैप्पुरु मॅल्लैयिऱ् कलक्किच्
चेऱु काण्गुऱुन् दिऱल्हॅळ् वानरच् चेनै
आऱॅ णायिर कोडिय दुडन्वर वमुदिन्
मारि लामॊळि युरुमैयैप् पयन्दवन् वन्दान् 691

ईऱु इल्–जिसके विस्तार का अन्त नहीं; वेलैयै–उस सागर को; इमैप्पुऱुम् ऍल्लैयिल्–पलक मारते समय के अन्दर; कलक्कि–विलोडकर; चेऱु काण्कुऱुम्–पंकिल बना सकनेवाले; माऱु इला–अनुपम; अमुतिन् मॊळि–अमृतवाणी; उरुमैयै–रुमा (सुग्रीव-पत्नी) को; पयन्तवन्–जिसने जन्म दिया था, वह; तिऱल् कॅळ्ळु–शक्तिसम्पन्न; वानर चेनै–वानर-सेना; आऱु ऍणायिर कॊटि–छः के आठ (अड़तालीस) की; अतु–उसके; उटन् वर–साथ आते; वन्तान्–आया। ६९१

बाद अनुपम अमृत-सम बोली वाली रुमा का पिता आया, जो अपार सागर को भी पलक मारते समय के अन्दर मथकर पंकिल बना सकता था। उसके साथ सशक्त अड़तालीस करोड़ की वानर-सेना आयी। ६९१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐम्ब दायनू ऱायिर कोडियॅण् णमैन्द
मॉय्म्बु माल्वरै पुरैनॅडु वानर मॉय्प्प
इम्बर् ञालत्तुम् वानत्तु मॅऴुदिय चीर्त्ति
नम्ब नैत्तन्द केशरि कडलॅऩ नडन्दान् 692

इम्पर् ञालत्तुम्–इस संसार में; वानत्तुम्–व्योम में; ऍऴुतिय चीर्त्ति–अंकित कीर्ति रूपी; नम्पनै तन्त–महिमावान वीर (हनुमान) को; तन्त–जन्म देनेवाला; केचरि–केसरी नाम का सेनापति; ऐम्पतु आय–पचास के; नूऱायिर कोटि–लाख करोड़; ऍण् अमैन्त–संख्या के; माल् वरै पुरै–श्रेष्ठ (कैलास) पर्वत-सम; मॉय्म्पु नॅटु वानरम्–भुजा वाले वानरों (की सेना) के; मॉय्प्प–साथ आते; कटल् ऍऩ–समुद्र के समान; नटन्तान्–आया । ६९२

भूलोक और व्योम-लोक में भी जिसकी कीर्ति अंकित थी, ऐसे यशस्वी श्रेष्ठ हनुमान के जनक केसरी पचास लाख कोटि में गिनी हुई, कैलास पर्वत-सम भुजा वाले और सशक्त वानरों की लम्बी सेना से घिरा हुआ आया । ६९२

मुऩियु मामॅऩि ऩरुक्कऩै मुरणऱ मुरुक्कुम्
तऩिमै ताङ्गिय वुलहैयुञ् जलम्वरिऱ् कुमैक्कुम्
कुऩियु माक्कुरङ् गीरिरण् डायिर कोडि
अऩिक मुन्वर वान्पॅयर्क् कण्णऩ्वन् दडैन्दान् 693

मुऩियुम् आम् ऍऩिऩ्–क्रोध करे तो; अरुक्कऩै–सूर्य को; मुरण् अऱ–निर्बल बनाते हुए; मुऱुक्कुम्–मार देगा; चलम् वरिऩ्–उग्र कोप होगा तो; तऩिमै–अकेले ही; ताङ्किय उलकैयुम्–(हमको) धरती रहनेवाली भूमि को भी; कुमैक्कुम्–ध्वस्त कर देगा; कुऩियुम्–(ऐसे) झुके रहनेवाले; मा कुरङ्कु–बड़े-बड़े वानर; ईर् इरण्टु–दो के दो (चार); आयिर कोटि–सहस्र कोटि (की); अऩिकम् मुन् वर–सेना के सामने जाते; आन् पॅयर् कण्णऩ्–गाय की आँख नाम का (गवाक्ष); वन्तु अटैन्तान्–आ पहुँचा । ६९३

गवाक्ष आया और उसके सामने एक बहुत बड़ी वानर-सेना आयी। उसकी संख्या चार सहस्र कोटि थी। उसके वीर ऐसे थे कि क्रोध करें तो सूर्य को भी निर्बल करके मार दें। और उग्र क्रोध हो तो हमको धारण करनेवाली धरती को भी ध्वस्त कर दें। वे वीर आकार में बड़े थे और उनकी पीठ झुकी हुई थी । ६९३

मण्गॊळ् वाळॅयिऱ् ऱेऩत्तिऩ् वलियॅऩ वयिरत्
तिण्गॊण् माल्वरै मयिर्प्पुऱत् तऩवॅऩत् तिरण्ड
कण्गॊ ळायिर कोडियि निरट्टियिऱ् कणित्त
ऍण्गि ऩीट्टङ्गॊण् डॅऱुळ्वलित् तूमिर निऱुत्तान् 694

ऍऱुळ वलि–अतिबली; तूमिरऩ्–धूम्र; मण् कॊळ्–भूमि को उखाड़नेवाले;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाळ् ऍयिऱु–श्वेत दाँतों से भूषित; एऩत्तिऩ्–(श्रीविष्णु के अवतार) वराह के समान; वलियऩ–बली; वयिरम्–सारयुक्त; तिण् कॊळ्–सशक्त; माल् वरै–बड़े पर्वत; मयिर् पुऱत्तऩ–इनके बाल की जड़ में समा जायँगे, ऐसा; तिरण्ट–मोटे-तगड़े; कण् कॊळ्–विशाल विस्तार के; आयिरम् कोटियिऩ् इरट्टियिल्–सहस्र कोटि के दुगुने; कणित्त–गिने हुए; ऍण्किऩ् ईट्टम् कॊण्टु–रीछों का दल लेकर; इऱुत्ताऩ्–आ पहुँचा। ६९४

अत्यधिक बली धूम्र भूमि को उत्पाटित करनेवाले श्रीविष्णु के वराहावतार के समान बड़े बलवान दो सहस्र कोटि में गणित रीछों का समूह ले आया। वे रीछ इतने तगड़े थे कि सुदृढ़ और कठोर बड़े पर्वत भी उनके एक रोम के मूल में समा सकते थे। ६९४

तऩिव रुन्दडङ् गिरियॆऩप् पॆरियवऩ् शलत्ताल्
निऩैयु नॆञ्जिऱ वुरुमॆऩ वुरुक्कुऱु निलैयऩ्
पऩश नॆऩ्बवऩ् पऩ्ऩिरण् डायिर कोडिप्
पुऩिद वॆञ्जिऩ वानरप् पडैहॊडु पुहुन्दाऩ् 695

तऩि वरुम् तट किरि ऍऩ–अकेले आनेवाला बड़ा पर्वत है, ऐसा मान्य; पॆरियवऩ्–भीमकाय; चलत्ताल्–अतिक्रोध से; निऩैयुम् नॆञ्चु इऱ–सोचनेवालों के मन को तोड़ दे, ऐसा; उरुम् ऍऩ–गाज के समान; उरुक्कुऱु–पिघलानेवाले; निलैयऩ्–स्वभाव का; पनचऩ्–पनस (नाम का यूथप); पऩ्ऩिरण्टु आयिर कोटि–द्वादश सहस्र कोटि; पुऩितम् वॆम् चिऩम्–पवित्र (पर) भयंकर क्रोधी; वानरम् पटै कॊंटु–वानर-सेना को साथ लेकर; पुकुन्ताऩ्–आ पहुँचा। ६९५

पनस नामक वानर यूथप बारह हज़ार करोड़ पवित्र पर भयंकर वानरों की सेना के साथ आ पहुँचा। वह यूथप अकेले उठकर आनेवाले पर्वत के-से आकार का था। उसका दुर्दम क्रोध सोचनेवाले के मन को भी तोड़ सकता था, और वज्र के समान उसको चूर-चूर कर सकता था। ६९५

इडियु माळ्हडऩ् मुऴक्कमुम् वॆरुक्कॊळ विशैक्कुम्
मुडिविल् पेर्मुऴक् कुडैयऩ विशैयऩ मुरण
कॊडिय कूऱ्ऱैयु मॊप्पऩ पदिऱ्ऱैन्दु कोडि
नॆडिय वानरप् पडैहॊण्डु पुहुन्दऩ ऩीलऩ् 696

नीलऩ्–नील; इटियुम्–वज्र-नाद; आऴ् कटल्–और गहरे समुद्र के; मुऴक्कमुम्–गर्जन को; वॆरु कॊळ–भयभीत करते हुए; इचैक्कुम्–उठनेवाले; मुटिवु इल्–अपार; पेर् मुऴक्कु–बड़ा शोर; उटैयऩ–रखनेवाले और; विचैयऩ–वेगवान; मुरण–विभिन्न; कॊटिय कूऱ्ऱैयुम्–क्रूर यम की भी; ऒप्पऩ–समता करनेवाले; पतिऱ्ऱैन्तु–दस के पाँच (पचास); कोटि–कोटि (की); नॆटिय वानरम् पटै–विशाल वानर-सेना; कॊण्टु–साथ लेकर; पुकुन्तऩऩ्–प्रविष्ट हुआ। ६९६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नील, वज्र और गम्भीर सागर के गर्जन को भय से स्तब्ध करते हुए उठनेवाले ज़ोर के घोष से युक्त, वेगवान, विविध प्रकार के, और क्रूर यम की बराबरी करनेवाले पचास करोड़ वानरों की सेना को लेकर पहुँचा। ६९६

इळैत्तु वेऱॊरु मानिलम् वेण्डुमॆन् ऱिरङ्ग
मुळैत्त मुप्पदि नायिर कोडियिन् मुऱ्ऱुम्
विळैत्त वॆञ्जिनत् तरियिनम् वॆरुवुऱ विऴिक्कुम्
अळक्क रोडुमक् कवयनॆन् बवनुम्वन् दडैन्दान् 697

अ कवयन् ऎन्पवनुम्–गवय नाम का वह भी; वेऱु ऒरु–अन्य एक; मा निलम् वेण्टुम्–बड़ी भूमि चाहिए; ऎन्ऱु–कहकर; इळैत्तु इरङ्क–दुःखी होकर मन कृश हो, ऐसा; मुळैत्त–जो प्रकट हुए; मुप्पतिन् आयिरम् कोटि–तीस सहस्र कोटि; मुऱ्ऱुम् विळैत्त–भूतल भर में व्याप्त; वॆम् चिनत्तु–भयंकर क्रोध से युक्त; अरि इनम्–वानर-समूह; वॆरुवु उऱ–भय उत्पन्न करते हुए; विऴिक्कुम्–तरेरनेवाले; अळक्करोटुम्–(सेना-) सागर के साथ; वन्तु अटैन्तान्–आ पहुँचा। ६९७

गवय (गज?) नामक वीर आया, और उसके साथ एक बड़ा सेना-सागर आया। उसको देखकर लोगों के मन में यह दया का भाव उठता था कि (यह भूमि उनके संचार के लिए पर्याप्त नहीं है और) दूसरी पृथ्वी चाहिए। उनकी संख्या तीस हज़ार करोड़ की थी। अत्युग्र सिंह भी डर जाय, ऐसा तरेरनेवाले वीर थे उस सेना के वानर। ६९७

माह रत्तन वरत्तन मलैयन निलैय
वेह रत्तवॆङ् गण्णुमिऴ् वॆयिलन मलैयिन्
आह रत्तिनुम् बॆरियन वाऱैन्दु कोडि
शाह रत्तॊडुन् दरीमुह नॆन्बवन् शार्न्दान् 698

तरीमुकन् ऎन्पवन्–दरीमुख नाम का वह; मा करत्तन–मोटी भुजाओं वाले; वरत्तन–अनेक वर जिन्हें प्राप्त थे; मलैयन–पर्वत-सम सुदृढ़; वेकरत्तन–उग्र; वॆम् कण्–भयंकर आँखों से; उमिऴ् वॆयिलन–निकलते अंगारों वाले; मलैयिन् आकरत्तिनुम्–पर्वताकार से; पॆरियन–बड़े; आऱु ऐन्तु कोटि–छः के पाँच (तीस) करोड़; चाकरत्तॊटुम्–(सेना-) सागर के साथ; चार्न्तान्–आ मिला। ६९८

दरीमुख तीस करोड़ सेना के समुद्र के साथ आ पहुँचा। उसके वीरों के हाथ बहुत मोटे थे। उन्हें श्रेष्ठ वर मिले थे। पर्वत से भी कठोर वे बहुत ही उग्र, आँखों से अंगारे उगलनेवाले और गिरियों से भी बड़े आकार के थे। ६९८

आयि रत्तऱु नूऱ्ऱो डियिऱ्कडै यमैन्द
पायि रप्पॆरुम् बडैहॊण्डु परवैयिऱ् ऱिरैयिन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तायु रुत्तुड नेवरत् तडनॅडु वरैयै
एयु रुप्पुयच् चाम्बऩॅन् बवऩुम्वन् दिरुत्तान् 699

तड़-विशाल; नॅटु-ऊँचे; वरै एय्-पर्वत के समान; उरु-आकार के; पुयम्-कन्धों वाले; चाम्पऩ् अॅऩ्पवऩुम्-जाम्बवान नाम का वह भी; परवैयिऩ् तिरैयिऩ्-सागर-तरंगों के समान; ताय्-छलाँग लगाते हुए; उरुत्तु-वैर के साथ; उटने वर-साथ आनेवाले; आयिरत्तु अऱु नूऱु-एक सहस्र छः सौ; कोटियिऩ्-करोड़ की संख्या के; कटै अमैन्त-सर्वत्र व्याप्त; पायिरम् पॅरुम् पटै-महिमामय बड़ी सेना; कॊण्टु-साथ लेकर; वऩ्तु इरुत्तान्-आ पहुँचा। ६९९

पर्वतोन्नत भुजाओं वाला जाम्बवान, समुद्र तरंगों के समान छलाँग मारते आनेवाले एक सहस्र छः सौ करोड़ की संख्या के वीरों की बड़ी सेना लिये आ पहुँचा। ६९९

वहुत्त तामरै मलरय निशिशरर् वाणाळ्
उहुत्ति नीयॅऩप् पॊरुवरुम् बॅरुवलि युडैयान्
पहुत्त पत्तुनू ऱायिरप् पत्तियि निरण्डु
तॊहुत्त कोडिवॅम् बडैहॊण्डु दुऩ्मुहऩ् तॊडर्न्दान् 700

पॊरुवु अरुम्-अप्रमेय; पॅरु वलि उटैयान्-बड़ा बली; तुऩ्मुकऩ्-दुर्मुख; वकुत्त-लोकसर्जक; तामरै मलर्-(विष्णु की नाभि रूपी) कमल-पुष्प पर आसीन; अयऩ्-ब्रह्माजी (के); निचिचरर् वाळ्नाळ्-निशिचरों की आयु के दिनों को; नी उकुत्ति-तुम ही समाप्त करो; अॅऩ-कहने पर; पकुत्त-व्यूह-बद्ध; पत्तु नूऱायिरम्-दस लाख; पत्तियिऩ्—पंक्तियों में; तॊकुत्त-लगे आनेवाले; इरण्टु कोटि-दो करोड़ की; वॅम् पटै कॊण्टु-भयंकर सेना लेकर; तॊटर्न्तान्-(उनका) अनुगमन करता आया। ७००

अप्रतिम बलशाली दुर्मुख ऐसे वीरों को ले आया, जिनको लोकसर्जक कमलासन ब्रह्मा ने शायद यह कहकर बनाया था कि तुम्हीं निशिचरों की आयु का अन्त कर दो। दस-दस लाखों के दलों में विभक्त उन वीरों की कुल संख्या दो करोड़ थी। ७००

कोडि कोडिनू ऱायिर वॅण्णॅऩक् कुविन्द
नीडु वॅञ्जिनत् तरियिऩ मिरुपुडै नॅरुङ्ग
मूडु मुम्बरु मिम्बरुम् बूळियिऩ् मूळ्हत्
तोडि वर्न्दतार्क् किरिपुरै दुमिन्दऩुन् दॊडर्न्दान् 701

तोटु इवर्न्त-दलयुक्त; तार्—पुष्पमालाधारी; किरिपुरै-पर्वत-सम; तुमिन्तऩम्-द्विविद भी; कोटि कोटि नूऱायिरम्-कोटि-कोटि लाख; अॅण् अॅऩ-संख्या में; कुविन्त-एकत्रित; नीटु वॅम् चिनत्तु-बहुत भयंकर क्रोधी; अरि इनम्-वानरवृन्द; इरु पुटै नॅरुङ्क-दोनों पार्श्वों में लगे आए; मूटुम् उम्परुम् इम्परुम्-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भूमि को ढँकनेवाला आकाश और भूमि दोनों को; पूऴियिल् मूऴ्क-धूल में छिपने देते हुए; तोटर्न्तान्-बाद आया। ७०१

दलयुक्त फूलों की माला पहने हुए पर्वत-सम द्विविद नामक वीर कोटि-कोटि लाखों के, अतिक्रोधी वानर यूथों के मध्य आया। उनके चलने के कारण जो धूल उठी, उसमें भूमि के ऊपर फैला हुआ आकाश और भूतल दोनों डूब गये। ७०१

इयैन्द पत्तुनू ऱायिरप् पत्तॅनुङ् गोडि
उयर्न्द वॅञ्जिऩ वानरप् पडैयॊडु मॊरुङ्गे
शयन्द ऩक्कॊरु वडिवॅऩत् तिऱल्हॊडु तऴैत्त
मयिन्दऩ् मऱ्कश कोमुहऩ् ऱऩ्ऩॊडुम् वन्दाऩ् 702

चयम् तऩक्कु ऒरु वटिवु ऎऩ-विजय को मिला एक रूप है, ऐसा लगनेवाले; तिऱल् कॊटु-बल के साथ; तऴैत्त-उत्कृष्ट; मयिन्तऩ्-मयन्द; मल्-मल्ल; कच कोमुकऩ् तऩ्ऩॊटुम्-गजगोमुख के साथ; इयैन्त-युक्त; पत्तु नूऱायिरम् पत्तु ऎऩुम्-सौ लाख; कोटि-कोटि; उयर्न्त वॅम् चिऩम्-अति भयंकर क्रोधी; वानरम् पटैयॊटुम्-वानर-सेना के साथ; ऒरुङ्के वन्ताऩ्-मिलकर आया। ७०२

मैंद आया जो विजय का ही साक्षात् रूप था। वह मल्ल गजगोमुख को भी साथ लाया। उनके साथ सौ सहस्र कोटि उत्कृष्ट और क्रोधी वानरों की सेना आयी। ७०२

कऱङ्गु पोल्वऩ काऱ्ऱिऩुङ् गूऱ्ऱिऩुङ् गडिय
पिऱङ्गु तॅण्डिरैक् कडल्पुडै पॅयर्न्दॅऩप् पॅयर्व
मऱङ्गॊळ् वानर मॊऩ्बदु कोडियॅण् वहुत्त
तिऱङ्गॊळ् वॅञ्जिऩप् पडैहॊडु कुमुदऩुञ् जेर्न्दाऩ् 703

कुमुतऩुम्-कुमुद; कऱङ्कु पोल्वऩ--पतंग के समान (उड़नेवाले); काऱ्ऱिऩुम् कूऱ्ऱिऩुम् कटिय-पवन से भी (तेज) और यम से भी क्रूर; पिऱङ्कु-शोभनेवाली; तॅळ् तिरै-स्वच्छ वीचियों का; कटल्-समुद्र; पुटै पॅयर्न्तु ऎऩ-स्थान बदला हो, ऐसा; पॅयर्व-स्थान बदलती जानेवाली; ऒऩ्पतु कोटि-नौ करोड़ की; ऎण् वकुत्त-संख्या में गणित; तिऱम् कॊळ्-बली; वॅम् चिऩम्-भयंकर क्रोधी; मऱम् कॊळ्-दूसरों की वीरता को परास्त करनेवाली; वानरम् कॊटु-वानर-सेना को साथ ले; चेर्न्ताऩ्-आ पहुँचा। ७०३

कुमुद, पतंग-सम, पवनदेव और यमराज से भी कठोर और ऐसा चलनेवाले मानो स्वच्छ वीची वाला समुद्र स्थान बदलकर आ रहा हो, नौ करोड़ वानरों की सेना ले आया। वे वानर मन और शरीर दोनों के बड़े बली और साहसी व क्रोधी थे। ७०३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कैयऱ् जाशर मुडैयवक् कडवुळैक् कण्डु
मॅय्यऱ् जादवऩ् मादिरऱ् जिऱिदॅऩ विरिन्द
वैयऱ् जाय्दरत् तिरिदुरु वानरच् चेऩै
ऐयऱ् जायिर कोडिहॉण् डनुमऩ्वन् दडैन्दाऩ् 704

अम् कै–सुन्दर किरणें; चाचरम् उटैय–हज़ारों के साथ रहनेवाले; अ कटवुळै–उस (सूर्य-) देव को; कण्टुम्–देखकर भी; मॅय् अऱ्चातवऩ्–शरीर में थोड़ा भी कम्पन न लानेवाले; अनुमऩ्–हनुमान; मातिरम् चिऱितु–दिशाएँ (इसके सामने) छोटी हैं; अॅऩ विरिन्त–ऐसा विशाल; वैयम्–भूमि; चाय्तर–एक ओर धँस जाय, ऐसा; तिरितरु–घूमनेवाली; ऐ अऱ्चु–पचीस; आयिरम् कोटि–सहस्र कोटि; वानर-चेऩै–वानर-सेना; कॉण्टु–साथ लिये; वऩ्तु अटैन्ताऩ्–आ पहुँचे। ७०४

सहस्रों सुन्दर किरणों को करों के रूप में रखनेवाले सूर्यदेव को सामने से देखकर भी जिसके शरीर में कोई कम्पन नहीं होता था, वह हनुमान दिशाओं को छोटा बनाते हुए और भूमि को एक ओर झुकाते हुए आनेवाले पचीस हज़ार करोड़ वानरों की सेना लेकर आया। ७०४

नॉय्दिऱ् कूडिय शेऩैनू ऱायिर कोडि
अॅय्दत् तेवरु मॅऩ्गॉलो मुडिवॅऩ्ब दॅण्ण
मैयऱ् चिन्दैया लन्दहऩ् मऱुक्कुऱ्ऱु मयङ्गत्
तॅय्वत् तच्चऩ्मॅय्त् तिरुनॅडुङ् गादलऩ् शेऱ्न्दाऩ् 705

तॅय्वम् तच्चऩ्–देवशिल्पी (विश्वकर्मा) का; मॅय् तिरु–सच्चा प्रतिरूप; नॅटु कातलऩ्–उसका बहुत प्यारा पुत्र (नल); तेवरुम्–देवता भी; मुटिवु अॅऩ् कॉलो–इसका पार कहाँ; अॅऩ्पतु अॅण्ण–यह सोचें, ऐसा; अऩ्तकऩ्–अन्तक (यम); मैयल् चिन्तैयाल्–भ्रमित मन में; मऱुक्कुऱ्ऱु–मोहित होकर; मयङ्क–चकित हो; नॉय्तिऩ् कूटिय–सहसा एकत्रित; नूऱायिर कोटि–सहस्र (सहस्र) कोटि; चेऩै अॅय्त–सेना को अपने साथ आने देते हुए; चेऱ्न्ताऩ्–आ पहुँचा। ७०५

देवशिल्पी का जो प्रतिरूप ही लगता था वह उसका पुत्र नल, अपने साथ एकत्रित लाख-लाख कोटि के वानरों की सेना लेकर आया। वह सेना इतनी विशाल थी कि देव भी यह विस्मय करने लगे कि इसका अन्त कहाँ और यम भी भ्रमित और अधीर हो गया। ७०५

कुम्ब नुङ्गुलच् चङ्गनु मुदलिऩर् कुरङ्गिऩ्
तम्बॅ रुम्बडैत् तलैवऱ्ह डरवन्द ताऩै
इम्बऱ् निऩ्ऱवऱ्क् कॅण्णरि दिराहव ऩावत्
तम्बॅ नुन्दुणैक् कुरियमऱ् ऱुरैप्परि दळवे 706

कुम्पऩुम्–कुम्ब व; कुलम् चङ्कऩुम्–कुलीन शंख; मुतलिऩर्–आदि; तम् पॅरु–अपनी-अपनी बड़ी; कुरङ्किऩ् पटै तलैवऱ्कळ्–वानर-सेना के पति; तर वऩ्त–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अपने साथ आयी; तानै–सेना; इम्पर् निन्ऱवर्क्कु–भूतलवासियों के लिए; ऍण्णरितु–गिनना असम्भव है; इराकवन् आवतु–श्रीराघव के तूणीर के; अम्पु ऍन्नुम् तुणैक्कु उरिय–अस्त्र जितने हैं, उतने लगनेवाले; अळवु मऱु–दूसरी गणना; उरैप्परितु–कहना कठिन है। ७०६

कुम्भ और कुलीन शंख आदि अपनी बड़ी-बड़ी वानर-सेनाओं के साथ आये। उनकी वानर-सेनाएँ इस लोक के वासियों द्वारा गिनी नहीं जा सकती थीं। श्रीराघव के तूणीर में रहनेवाले शरों के उतने हैं, यह कहा जा सकता था। और कोई गणना सम्भव नहीं। ७०६

तोयि लाऴियो रेऴुनीर् शुवऱिवॆण् डुहळाम्
शायि नण्डमु मेरुवु मॊरुङ्गुडन् शरियुम्
एयिन् मण्डल मॆळ्ळिड विडमिन्ऱि यिरियुम्
कायिन् वॆङ्गनऱ् कडवुळु मिरवियुङ् गरियुम् 707

तोयिल्–(यह सेना-समूह) गोता लगाएँ तो; आऴि–समुद्र; ओर् एऴुम्–सातों; नीर् चुवऱि–जल सूखकर; वॆळ् तुकळ् आम्–श्वेत धूल बन जावें; चायिन्–एक ओर झुकें तो; अण्टमुम्–यह अण्ड और; मरुवुम्–मेरु; ऒरुङ्कु–एक साथ; उटन् चरियुम्–उनके साथ झुक जाते; एयिन्–घूमने लगें तो; मण् तलम्–यह भूमि; ऍळ् इट–तिल धरने को; इटम् इन्ऱि–स्थान नहीं हो; इरियुम्–जायगी; कायिन्–क्रोध करें तो; वॆम् कनल् कटवुळुम्–भयंकर अग्निदेव और; इरवियुम्–रवि; करियुम्–झुलसेंगे। ७०७

ऐसी बड़ी सेना आकर एकत्रित हुई; अगर वह समुद्र में मग्न हो, तो सातों समुद्र सूख जायें और सफ़ेद धूल मात्र रह जायें। अगर वह एक ओर पिल पड़े तो भूमण्डल और मेरु उसके साथ उसी ओर धँस जायें। अगर वह संचार करने लगे तो भूतल पर तिल रखने को भी स्थान नहीं मिले। अगर वह क्रोध करे तो भयंकर अनलदेव और अर्कदेव जलकर काले पड़ जायें। ७०७

ऍण्णि नान्मुह रॆऴुपदि नायिरर्क् कियला
उण्णि नण्डङ्ग ळोर्बिडि युण्णवु मुदवा
कण्णि नोक्कुऱिर् कण्णुद लानुक्कुङ् गदुवा
मण्णिन् मेल्वन्द वानरत् तानैयिन् वरम्बे 708

मण्णिन् मेल्–भूमि पर; वन्त–एकत्रित हो आयी; वानर तानैयिन्–वानर-सेना का; वरम्पु–विस्तार (सीमा); ऍण्णिन्–विचार करें तो; नान्मुकर्–चतुर्मुख; ऍऴुपतिनायिरर्क्कु–सात सहस्रों के लिए भी; इयला–असम्भव है; उण्णिन्–खाने लगें; अण्टङ्कळ–सारे अण्ड; ओर् पिटि उण्णवुम्–एक ग्रास खाने के लिए भी; उतवा–पर्याप्त नहीं होंगे; कण्णिन् नोक्कुऱिन्–आँखों से देखने लगें तो; कण्णुतलानुक्कुम्–भालनेत्र (शिवजी) के लिए भी; कतुवा–देखना असम्भव है। ७०८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भूमि पर जो वानर-सेना एकत्रित हो आयी, उसकी संख्या गिनना हो तो सत्तर हज़ार चतुर्मुखों के लिए भी असम्भव है। इस सेना के लिए खाना हो तो सारे अण्ड एक ग्रास भी नहीं बनें। आँखों से देखना हो तो भाल-नेत्र शिवजी की दृष्टिपथ में न समा सके। ७०८

ऒडिक्कु मेल्वड मेरुवै वेरॊडु मॊडिक्कुम्
इडिक्कु मेऩ्ऱॆडु वाऩह मुहट्टैयु मिडिक्कुम्
पिडिक्कु मेऱ्पॆरुङ् काऱ्ऱैयुङ् गूऱ्ऱैयुम् बिडिक्कुम्
कुडिक्कु मेऱ्कड लेऴैयुङ् गुडङ्गैयिऱ् कुडिक्कुम् 709

ऒटिक्कुमेल–तोड़ने लगे; वट मेरुवै–तो उत्तर के मेरु को; वेरॊटुम् ऒटिक्कुम्–मूल से तोड़ देंगे; इटिक्कुमेल्–गिराना चाहें; ऩॆटु वाऩक मुकट्टैयुम्–विशाल आकाश की चोटी को भी; इटिक्कुम्–गिरा देंगे; पिटिक्कुमेल्–ग्रसना चाहें तो; पॆरु काऱ्ऱैयुम्–बड़े पवन को; कूऱ्ऱैयुम्–और यम को; पिटिक्कुम्–पकड़ लें; कुटिक्कुमेल्–पान करें तो; कटल् एऴैयुम्–सातों समुद्रों को; कुटङ्कैयिऩ्–हथेली में लेकर; कुटिक्कुम्–पी लेंगे। ७०९

वे सेनाएँ तोड़ने की इच्छा करें तो उत्तर के मेरु को जड़ से उखाड़ कर तोड़ लेतीं। आकाश की छत से भी टकरातीं। मन करें तो महान पवन और यम को भी पकड़ लें। पान करने की इच्छा करें तो सप्त समुद्रों के जल को चुल्लू में भरकर पी जायें। ७०९

आऱु पत्तॆऴु कोडियर् वानरर्क् कदिबर्
कूऱु तिक्किऩुक् कप्पुऱङ् गुप्पुऱर् कुरियार्
मारिल् कॊऱ्ऱव ऩिऩैत्तऩ मुडिक्कुऱुम् वलियर्
ऊऱु मिप्पॆरुञ् जेऩैहॊण् डॆळिदिऩ्वन् दुऱ्ऱार् 710

कूऱु तिक्किऩुक्कु–प्रथित चारों दिगन्त के; अप्पुऱम्–उस पार भी; कुप्पुऱ्क्कु–लपकने का; उरियार्–सामर्थ्य रखनेवाले; मारु इल्–अप्रमेय; कॊऱ्ऱवऩ्–उनके राजा (सुग्रीव); ऩिऩैत्तऩ–जो सोचेगा; मुटिक्कुऱुम्–उन सबको पूरा करने का; वलियर्–सामर्थ्य रखनेवाले; आऱु पत्तु ऎऴु–सड़सठ; कोटियर्–करोड़; वानरर्क्कु अतिपर्–वानर-सेनापति; ऊऱुम्–उत्तरोत्तर बढ़े आनेवाली; इ पॆरु चेऩै–इस बड़ी सेना को; कॊण्टु–लिये हुए; ऎळितिऩ्–अनायास; वन्तु उऱ्ऱार्–आ पहुँचे। ७१०

ऐसी बढ़ती जाती-सी लगनेवाली विपुल सेना को लेकर सड़सठ वानर यूथप आ पहुँचे। वे चतुर्दिशाओं के पार भी छलाँग मारकर पहुँच सकते थे। उनमें इतना साहस था कि उनका अनुपम राजा सुग्रीव जो भी सोचता था वह काम पूरा कर दिखाते। ७१०

एऴु माहडऱ् परप्पिऩुम् बरप्पॆऩ विशैप्पच्
चऴम् वानरप् पडैयॊडव् वीररुन् दुवऩ्ऱि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आऴि मापरित् तेरवन् कादल नडिहळ्
वाऴि वाऴियॅन् ऱुरैत्तनर् तूवितर् वणङ्गि 711

अ वीररुम्–उन वीरों ने भी; एऴु मा कटल् परप्पितुम्–सात महासमुद्रों के विस्तार से भी; परप्पु ऍत–इसका अधिक विस्तार है, ऐसा; इचैप्प–लोग कहें, इतनी बड़ी; चूऴुम् वानरम् पटैयॊटु–घेरे रहनेवाली वानर-सेना के साथ; तुवन्ऱि–पास आकर; आऴि मा परि–एक चक्र और बड़े अश्वों से युक्त; तेरवन् कातलन्–रथ के स्वामी सूर्य के प्यारे पुत्र के; अटिकळ्–श्रीचरण; वाऴि वाऴि–जिए, जिए; ऍन्ऱु उरैत्तु–ऐसा जयघोष करके; वणङ्कि–नमस्कार करके; अलर् तूवितर्–पुष्प बरसाए। ७११

वे वानर वीर सातों समुद्रों के विस्तार से भी अधिक विस्तृत कही जा सकनेवाली वानर-सेना के साथ मिलकर आये। उन्होंने एकचक्ररथी सूर्यदेव के प्यारे पुत्र सुग्रीव की यह कहते हुए स्तुति की कि आपके श्रीचरण जियें, जियें। उस पर पुष्प भी बरसाये। ७११

अनैय दाहिय शेनैवन् दिऱुत्तलु मरुक्कन्
तनैय नॊय्दिनिऱ् इयरदन् पुदल्वनैच् चार्न्दान्
निनैयु मुन्नम्वन् दडैन्ददु निन्बॆरुञ् जेनै
विनैयिन् कूऱ्ऱव कण्डरु णीयॅन विळम्बुम् 712

अनैयतु आकिय–ऐसी वह; चेनै वन्तु–सेना आकर; इऱुत्तलुम्–रही, तब; अरुक्कन् तनैयन्–अर्कपुत्र; तयरतन् पुतल्वनै–दाशरथी श्रीराम के पास; नॊय्तिनिल्–शीघ्र; चार्न्तान्–पहुँचा; विनैयिन् कूऱ्ऱव–पापारि; निनैयुम् मुन्नम्–स्मरण करने से पहले; निन् पॆरु चेनै–आपकी बड़ी सेना; वन्तु अटैन्ततु–आ गयी; कण्टरुळ् नी–कृपादर्शन कर लीजिए आप; ऍन विळम्पुम्–ऐसा कहा। ७१२

ऐसी सेना के आ एकत्रित होने पर अर्कपुत्र, सुग्रीव दशरथ के पुत्र श्रीराम के पास वेग के साथ आया। उसने उनसे निवेदन किया कि हे पाप के अन्तक ! आप सोचें, इसके पहले ही आपकी बड़ी सेना आ गयी। उस पर दृष्टि लगाने की कृपा करें। ७१२

ऐय नुम्मुवन् दहमॆन मुहमलर्न् दरुळित्
तैय लाळ्वरक् कण्डन नामॆनत् तळिर्प्पान्
ऍय्दि नानङ्गोर् नॆडुवरैच् चिहरत्ति निरुक्कै
वॆय्य वन्महन् पॆयर्त्तुमत् तानैयिन् मीण्डान् 713

ऐयतुम्–सुन्दरराज श्रीराम; उवन्तु–आनन्द करके; अकम् ऍन–भीतर जैसे; मुकम्–मुख भी; मलर्न्तु–मोद-विकसित करके; अरुळि–कृपा के साथ; तैयलाळ् वर–पत्नी को आते; कण्टतनाम् ऍन–देखा हो जैसे; तळिर्प्पान्–फूल उठे; अङ्कु–वहाँ; ओर् नॆटु वरै–एक बड़े पर्वत के; चिकरत्तिन् इरुक्कै–शिखर के स्थल पर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍय्तितान्–पहुँचे; वॅय्यवन्–आतपकारी (सूर्य) का; मकन्–पुत्र; पॅयर्त्तुम्–लौटकर; अ तान्नैयिन्–उस सेना के पास; मीण्टान्–चला। ७१३

सुन्दर श्रीराम मुदित हुए। जितना उनका मन मुदित हुआ, उतना ही उनका श्रीमुख भी प्रफुल्लित हुआ। देवी ही आ गयी हों, इस भाँति उत्साहित होकर वे एक उन्नत पर्वत के शिखर के स्थल पर जा पहुँचे। तब सूर्यपुत्र अपनी सेना के पास लौट आया। ७१३

ऍट्टुत् तिक्कैयु मिरुनिलप् परप्पैयु मिमैयोर्
वट्ट विण्णैयु मऱिहड लऩैत्तैयु मऱैयत्
तॉट्टु मेलॅळुन् दोङ्गिय तूळियिऱ् पूळि
अट्टिच् चॅम्मिय निऱैहुड मॉत्तदिव् वण्डम् 714

ऍट्टु तिक्कैयुम्–आठों दिशाओं को; इरु निल परप्पैयुम्–विशाल भूमि के विस्तार को; इमैयोर् वट्टम्–देवों के गोल; विण्णैयुम्–स्वर्गलोक को; मऱि कटल्–जिन पर लहरें मुड़-मुड़कर (तीर से) टकराती हैं, उन; अऩैत्तैयुम्–सभी (सातों) सागरों को; मऱैय–छिपाते हुए; तॉट्टु–भूमि पर और उससे; मेल् ऍळुन्तु–ऊपर व्याप्त करके; ओङ्किय–उठी हुई; तूळियिन्–धूल से; इ अण्टम्–यह अण्डगोल; पूळि अट्टि–धूल से भरकर; चॅम्मिय–सम्पूर्ण हुए; निऱै कुटम्–पूर्णकुम्भ; ऑत्ततु–के समान लगा। ७१४

सेना ने आठों दिशाओं, बड़ी भूमि के विस्तृत स्थल और देवों के गोल व्योम देश और समुद्रों को, जिन पर लहरें उठकर तीरों से टकराकर वापस मुड़ती थीं, एकदम ढक दिया। तब धूल बहुत उठी और ऊपर चढ़ी; जिससे यह अण्ड धूल-भरे पूर्णकलश के समान दिखा। ७१४

अत्ति यॉप्पॅऩि ऩऩ्ऩवै युणर्न्दव रुळराल्
वित्त हर्क्किऩि युरैक्कला मुवमैवे रियादो
पत्ति रट्टिनन् पहलिर वॉरुवलर् पार्प्पार्
ऍत्ति ऱत्तिऩु नडुवुहण् डिलर्मुडि वॅवऩो 715

अत्ति–अब्धि; ऑप्पु ऍऩिऩ्–सानी है, कहें तो; अऩ्ऩवै–उनको; उणर्न्तवर्–पूर्णरूप से जो देख (जान) चुके; उळर्–वे हैं; इऩि–अब; वित्तकर्क्कु–विद्वानों को; उरैक्कलाम् उवमै–कथनीय उपमा; वेऱु यातो–और दूसरी क्या है; पत्तु इरट्टि–दस के दुगुने (बीस) दिन; नल् पकल् इरवु–रात और दिन; ऑरुवलर्–बिना रुके; पार्प्पर्–जिन्होंने देखा, उन श्रीराम और लक्ष्मण ने; ऍ तिऱत्तितुम्–किसी विध; नटुवु कण्टिलर्–इन सेना का मध्य भाग नहीं देखा; मुटिवु ऍवऩो–फिर अन्त कहाँ (देखा जाय)। ७१५

इस सेना की सागर समानता कर सकते हैं —ऐसा कहें तो सागरों की सीमा के ज्ञाता मिलते हैं। (पर इस सेना का अन्त कोई देख नहीं सका।)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

फिर विद्याप्रवीणों के पास उल्लेख-योग्य उपमा कहाँ है ? श्रीराम और लक्ष्मण ने बीस दिन और बीस रात लगातार देखा तो भी किसी विध से इस सेना का मध्यभाग भी न देख सके। फिर इसका अन्त देखना कैसे हो सकता है ? । ७१५

विण्णिऱ् ऱीम्बुऩ लुलहत्ति ऩाहरिऩ् वॆऱ्ऱि
ऍण्णिऱ् ऱाऩल दॊप्पिल ऩॆऩ्गिऩ्ऱ विरामऩ्
कण्णिऱ् चिऩ्दैयिऱ् कल्वियिऩ् ञाऩत्तिऱ् करुदि
अण्णऱ् ऱम्बियै नोक्किऩ ऩुरैशॆय्व दाऩाऩ् 716

वॆऱ्ऱि ऍण्णिल्–विजयशीलता पर विचार करें; ताऩु अलतु–स्वयं उन्हीं को छोड़कर; विण्णिल्–व्योम में; तीम्पुऩल्–मधुर सागर-वलयित; उलकत्तिल्–भूतल में और; नाकरिऩ्–नागलोक में; ऑप्पु इलऩ्–कोई उपमा नहीं रखनेवाले; इरामऩ्–श्रीराम (ने); कण्णिऩ्–अपनी आँखों से; चिऩ्तैयिऩ्–मन से; कल्वियिऩ्–विद्या से; ञाऩत्तिऩ्–बुद्धि से; करुति–सोचकर; अण्णल् तम्पियै–महिमावान् भ्राता को; नोक्किऩऩ्–देखा और; उरै चॆय्वतु आऩाऩ्–वचन कहने लगे। ७१६

श्रीराम की विजयशीलता के सम्बन्ध में विचार करने लगें तो वे अपनी समानता स्वयं आप ही कर सकते हैं। नहीं तो आकाश में, सुखद समुद्र-वलयित भूमि में और नागों के पाताललोक में उनके समान कौन हैं ? ऐसे अप्रमेय श्रीराम ने अपनी आँखों से, मन से और शास्त्रज्ञान और विवेचना द्वारा उस सेना के विस्तार को देखा और समझा और अपने महिमामय भाई सुमित्रानन्दन से कहना आरम्भ किया। ७१६

अडल्हॊण् डोङ्गिय शॆऩैक्कु नामुनम् मऱिवाऩ्
उडल्हण् डोमिऩि मुडिवुळ काणुमा ऱुळदो
मडल्हॊण् डोङ्गिय वलङ्गलाय् मण्णिडै माक्कळ्
कडल्हण् डोमॆऩ्बर् यावरे मुडिवुऱक् कण्डार् 717

मटल् कॊण्टु–पंखुड़ियों से पूर्ण; ओङ्किय–श्रेष्ठ (फूलों की); अलङ्कलाय्–मालाधारी; नामुम्–हमने भी; नम् अऱिवाल्–अपनी बुद्धि से; अटल् कॊण्टु–बल लिये; ओङ्किय–बढ़ी हुई; चेऩैक्कु–इस सेना का; उटल् कण्टोम्–शरीर (मध्य भाग) देखा; इऩि उळ–आगे रहनेवाले; मुटिवु–अन्त को; काणुम् आऱु–देखने का मार्ग; उळतो–है क्या; मण् इटै–भूतल में; माक्कळ्–लोग; कटल् कण्टोम्–सागर देखा; ऍऩ्पर्–कहेंगे; मुटिवु उऱ–आर-पार पूरा करके; कण्टार्–जो देख चुके; यावरे–कौन हैं। ७१७

दल-लसे पुष्पों की बनी श्रेष्ठ माला के धारक ! हम दोनों ने अपने बुद्धिबल से वीरता के साथ उत्कृष्ट इस बड़ी वानर-सेना के मध्य भाग को एक तरह से देख लिया। उसका अन्तिम भाग देखने का कोई मार्ग भी है

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्या ? भूलोकवासी कहने को तो कह देते हैं कि हमने सागर देख लिया है, पर असल में कौन लोग हैं, जिन्होंने पूर्णरूप से समुद्र को देख चुके हैं ? । ७१७

ईशन् मेनियै यीरैन्दु दिशैहळै योण्डिव्
वाशिल् शेनैयै यैम्बेरुम् बूदत्तै यऱिवैप्
पेशुम् पेच्चिनैच् चमयङ्गळ् पिणक्कुरुम् पिणक्कै
वाश मालैया यावरे मुडिवॆण्ण वल्लार् 718

वाचम् मालैयाय्–सुबासपूर्ण मालाधारी; ईचन् मेनियै–ईश्वर के शरीर को; ईरैन्तु तिचैकळै–दसों दिशाओं को; ऐम् पॆरुम् पूतत्तै–पाँच महाभूतों को; अऱिवै–ज्ञान के विस्तार को; पेचुम् पेच्चिनै–कहे हुए वचनों को; चमयङ्कळ्–मतों के; पिणक्कुऱुम्–तर्क के; पिणक्कै–झगड़ों को और; ईण्टु–यहाँ; इ–इस; आचु इल्–अनिन्द्य; चेनैयै–सेना को; यावरे–कौन ही; मुटिवु ऍण्ण–गुनकर पूरा करने को; वल्लार्–समर्थ होंगे । ७१८

सुगन्ध-मालाधारी ! ईश्वर का श्रीरूप, दसों दिशाएँ, पञ्चमहाभूत, सूक्ष्मज्ञान, उच्चरित वचन, धर्मों का वैमनस्य और यहाँ यह अनिंद्य सेना ! इन सबको गुनकर अन्त बतानेवाला कौन है ? । ७१८

इन्न शेनैयै मुडिवुऱ विरुन्दिव णोक्किप्
पिन्नैक् कारियम् बुरिदुमे नाळ्पल पॆयरुम्
उन्निच् चॆय्हैमे लॊरुप्पड लुऱुवदे युऱुदि
ऍन्न वीरनैक् कैदॊऴु दिळैयव नियम्बुम् 719

इन्न चेनैयै–इस सेना को; इवण् इरुन्तु–यहाँ रहकर; मुटिवु उऱ–पूर्ण रूप से; नोक्कि–देखकर; पिन्नै–तदनन्तर; कारियम् पुरिदुमेल्–कार्य में लगें तो; नाळ् पल–अनेक दिन; पॆयरुम्–व्यतीत हो जायेंगे; उन्नि–विचारकर; चॆय्कै मेल्–कार्य पर; ऒरुप्पटल्–चित्त लगाकर; उऱुवते–लग जाना ही; उऱुति–हितकारी है; ऍन्न–ऐसा (श्रीराम ने) कहा, तब; इळैयवन्–कनिष्ठ; वीरनै–वीर श्रीराम से; कै तॊऴुतु–हाथ जोड़कर; इयम्पुम्–बोले । ७१९

ऐसी सेना को हम यहाँ रहकर पूर्णरूप से देखें और बाद को कोई कार्य करने को सोचें तो अनेक दिन बीत जायेंगे । इसलिए (सेना-संदर्शन को यहीं छोड़कर) आगे के कर्तव्य का विचारकर कार्य में लग जाना ही हित-कार्य है । श्रीराम का यह वचन सुनकर लक्ष्मण ने वीरराघव को नमस्कार किया और कहा । ७१९

याव दॆव्वुल हत्तिनि नीङ्गियवर्क् कियऱ्ऱल्
आव दाहुव दरियदॊन् ऱुळदॆन लामे
देव देवियैत् तेडुव दॆन्बदु शिऱिदाल्
पावन् दोऱ्ऱदु तरुममे वॆन्ऱदिप् पडैयाल् 720

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेव–देव; ईङ्कु–यहाँ; इवर्क्कु–इनके लिए; ऍ उलकत्तितिन्–किस लोक में; इयऱ्ऱल् यावतु–करना क्या है; आकुवतु–करणीय वह; आवतु–कृत हो जायगा; अरियतु–कठिन; ऒन्ऱु–एक काम; उळतु ऍन्नल्–है कहना; आमे–होगा क्या; तेवियै–देवी (सीता) को; तेटुवतु ऍन्पतु–खोजने का काम; चिऱितु–अल्प है; इ पटैयाल्–इस सेना के कारण; पावम् तोऱ्ऱतु–पाप हारा; तरुमम् वॆन्ऱतु–धर्म ही जीता। ७२०

देव ! किसी भी लोक में जो भी आवश्यक काम हैं, वे काम करना इस सेना के वीरों के लिए बाएँ हाथ का खेल हैं। उनके लिए असाध्य कहने योग्य कोई काम है क्या ? देवी को ढूँढ़ पाना इनके लिए बहुत छोटा काम है। इस सेना के कारण समझ लीजिये कि पाप हार गया और धर्म जीत गया। ७२०

तरङ्ग नीरॆऴु तामरै नान्मुहन् ऱन्द
वरङ्गॊळ् पेरुल हत्तितिन् मऱ्ऱैमन्
उरङ्गॊण् माल्वरै युयिर्पडैत् तॆऴुन्दन वॊक्कुम्
कुरङ्गिन् माप्पडैक् कुऱैयिडप् पडैत्तनन् कॊल्लाम् 721

तरङ्कम् नीरॆऴु–लहरों से युक्त जल में उगनेवाले; तामरै–कमल पर उदित; नान्मुकन्–चतुर्मुख ने; तन्त–सृष्ट; वरम् कॊळ्–वरीयता-प्राप्त; पेर् उलकत्तितिल्–बड़े जग (में) के; मऱ्ऱै–अन्य; मन् उयिर्कळ्–जीवसमूह को; उयिर् पटैत्तु ऍऴुन्तन–जीवित हो उठे हुए; उरम् कॊळ्–बलवान; माल् वरै ऒक्कुम्–बड़े पर्वतों की समता करनेवाले; कुरङ्किन् मा पटैक्कु–वानरों की बड़ी सेना के लिए; उऱैइट–मापन-संकेत के रूप में रखने के लिए; पटैत्तनन् कॊल् आम्–शायद सृष्ट किया था। ७२१

लहरोद्वेलित जल में उत्पन्न जलज-फूल में उद्भूत ब्रह्मदेव के द्वारा सृष्ट इस वर पृथ्वी में जो अन्य जीव हैं, उनकी संख्या अब जो उठ आये हैं, उन बलवान पर्वत-सम वानरों की सेना की गिनती के लिए निर्धारित प्रतिनिधि-मापक चिह्न हों, इस कारण ही ब्रह्मा ने संसार को सृष्ट किया है। [जब बड़ी संख्या को गिनना पड़ता है, तब यह प्रथा है कि बड़ी संख्या के एक अंश को किसी और पदार्थ की अदद को प्रतिनिधि-सूचक निशान (मापक) बनाया जाय। उदाहरणार्थ एक सहस्र रुपया गिनने पर एक कौड़ी रखी जाती। इस तरह से कौड़ियाँ रखते जाते हैं और आखिर में कौड़ियों को गिनकर कुल रुपयों का हिसाब लगाया जाता है। इस (मापक) कौड़ी को हम तमिऴ में "उऱै" कहते हैं। संसार का हर जीव वानर-सेना के एक अंश का प्रतिनिधि-चिह्न है। यह कवि का कथन है।]। ७२१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ईण्डु ताळ्क्किन्ऱ दॆन्निनि यॆण्डिशै मरुङ्गुम्
तेण्डु वार्हळै वल्लैयिऱ् चॆलुत्तुव दल्लाल्
नीण्ड नूल्वला यॆन्ऱन्न निळैयव नॆडियोन्
पूण्ड तेरवन् कादलऱ् कॊरुमॊळि पुहलुम् 722

नीण्ट नूल् वलाय्–श्रेष्ठ शास्त्रों में व्युत्पन्न; अॆण् तिचै मरुङ्कुम्–आठों दिशाओं के स्थानों में; तेण्टुवार्कळै–अन्वेषकों को; वल्लैयिन्–शीघ्र; चॆलुत्तुवतु अल्लाल–भेजे विना; इनि–अब; ईण्टु–यहाँ; ताळ्क्किन्ऱतु अॆन्–विलम्ब करना क्यों; अॆन्ऱन्नन्–कहा; इळैयवन्–लक्ष्मण ने; नॆटियोन्–त्रिविक्रम श्रीराम; पूण्ट तेरवन्–अश्व-जुते रथ के; कातलऱ्कु–सूर्यदेव के पुत्र सुग्रीव से; ऒरु मॊळि पुकलुम्–एक बात कही। ७२२

महिमायुक्त शास्त्रों के ज्ञाता ! अब चारों दिशाओं के स्थानों में अन्वेषण-कर्ताओं को प्रेषित करना छोड़कर विलम्ब क्यों किया जाय ? लक्ष्मण के ऐसा कहने पर त्रिविक्रम श्रीराम ने सप्तांश्वरथी सूर्य के पुत्र सुग्रीव से कहने लगे। ७२२

12. नाडविट्ट पडलम् (अन्वेषण-प्रेषण पटल)

वहैयु मानमु मारॆदिऱ्त् ताऱ्ऱु, पहैयु मिन्ऱि निरन्दु परन्दॆळु
तहैविल् शेनैक् कमैदि शमैन्ददोर्, तॊहैयु मुण्डुहॊ लोवॆन्नच् चॊल्लिनान् 723

वकैयुम्–व्यूह-रचना; मानमुम्–और देहाभिमान; माऱु अॆतिर्न्तु–वैर करके; आऱ्ऱु पकैयुम्–युद्ध करने की शत्रुता; इन्ऱि–विना; निरन्तु–व्यवस्थित होकर; परन्तु–व्याप्त होकर; अॆळु–जो उठ आयी है; तकैवु इल् चेनैक्कु–उस दुर्दम सेना की; अमैति चमैन्ततु–गिनती के लिए निर्धारित; ओर् तॊकैयुम्–एक संख्या भी; उण्टु कॊल्लो–है क्या; अॆन्न चॊल्लिनान्–ऐसा कहा (श्रीराम ने सुग्रीव से)। ७२३

श्रीराम ने सुग्रीव से बधाई के रूप में प्रश्न किया कि विना व्यूह-रचना, शरीराभिमान और परस्पर विरोध के जो दुर्वार वानर-सेना खुद पंक्ति-बद्ध होकर इधर उठ आ जुड़ी है, उसकी गिनती का हिसाब लगाने के लिए कोई संख्या भी है क्या ? । ७२३

एऱ्ऱ वॆळ्ळ मॆळुपदि निऱ्ऱवॆन्, ऱाऱ्ऱ लाळ रऱिविन मैत्तदोर्
माऱ्ऱ मुण्डदु वल्लदु मऱ्ऱुमोर्, ईऱ्ऱु मुण्डॆन् ऱिशैत्तिडऱ् कॊण्णुमो 724

एऱ्ऱ–योग्य; वॆळ्ळम् अॆळुपतिन्–सत्तर 'वॆळ्ळम्' की संख्या में; इऱ्ऱ–बनी है; अॆन्ऱु–ऐसा; आऱ्ऱलाळर् अऱिविन्–संख्या-शास्त्र में निपुण लोगों की समझ में; अमैन्ततु ओर् माऱ्ऱम्–बना एक कथन; उण्टु–रहता है; अतु अल्लतु–उसके सिवा; मऱ्ऱुम् ओर् ईऱ्ऱुम् उण्टु–और कोई संख्या-सीमा है; अॆन्ऱु इचैत्तिटऱ्कु–ऐसा कहने के लिए; ऒण्णुमो–साध्य है क्या। ७२४

सुग्रीव ने उत्तर दिया— गणितज्ञ विद्वानों ने कहा है कि सत्तर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"वॆळ्ळम्" (प्रवाह) वीरों की यह सेना है। उस कथन पर विश्वास करने के सिवा इस सेना का हिसाब लगाने के लिए और कोई मार्ग नहीं है। ७२४

ऍऩ्ऱु रैत्त वॆरिहदिर् मैन्दऩै, वॆऩ्ऱि विऱ्कै यिरामऩ् विरुप्पिऩाऩ्
निऩ्ऱि निप्पल पेशियॆऩ् ऩोऩॆऱि, शॆऩ्ऱि ळैप्पऩ शिन्दऩै शॆय्हॆऩ्ऱाऩ् 725

ऍऩ्ऱु उरैत्त–ऐसा जिसने कहा; ऍरि कतिर् मैनतऩै–तापक किरणमाली के पुत्र से; वॆऩ्ऱि विल् कै–विजयकोदण्डपाणी; इराकवऩ्–श्रीराघव ने; विरुप्पिऩाऩ्–प्यार के साथ; इऩि–अब; निऩ्ऱु पल पेचि–खड़े होकर अनेक तरह से बोलने से; ऍऩ्ऱो–लाभ क्या; ऩॆऱि चॆऩ्ऱु–मार्ग जाकर; इळैप्पऩ–कर्तव्य (कार्य); चिन्तऩै चॆय्क–सोचो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ७२५

तापक किरणमाली के पुत्र को, जिसने यह शब्द कहा, विजय कोदण्डपाणी श्रीराघव ने स्नेह के साथ देखकर उससे कहा— अब खड़े होकर विविध बातें बनाने से क्या लाभ होगा ? यथाक्रम कर्तव्य कार्य पर सोचो। ७२५

अवऩु मण्ण ऩनुमऩै यैयनी, पुवऩ मूऩ्ऱुनिऩ् ऱादैयिऱ् पुक्कुळल्
तवऩ वेहत् तॊरुतऩित् तऩ्मैयाल्, कवऩ माक्कुरङ् गिऩ्शॆयल् काट्टुवाय् 726

अवऩुम्–उसने भी; अण्णल् अनुमऩै–महिमावान हनुमान से; ऐय–तात; नी–तुम; पुवऩम् मूऩ्ऱुम्–तीनों लोकों में; निऩ् तातैयिऩ्–अपने पिता के समान; पुक्कु उळल्–प्रवेश कर घूमने की; तवऩम् वेकऩ्तु–धावन-गति के; ऒरु तऩि–एक विशिष्ट; तऩ्मैयाल्–स्वभाव से; कवऩम्–गमन में; मा कुरङ्किऩ् चॆयल्–बड़े वानर का कृत्य; काट्टुवाय्–दिखाओ। ७२६

तब उस सुग्रीव ने महान हनुमान से कहा, तुम अपने पिता के समान तीनों लोकों में घुसकर संचार करने की तीव्र गति रखते हो। अब अपनी बड़ी वानर-क्रिया दिखाओ। ७२६

एहि येऩ्दिळै तऩ्ऩै यिरुन्दुळि, नाह नाडुह नाऩिल ऩाडुह
पोह बूमियुम् नाडुह पुक्कुनिऩ्, वेह मीण्डु वॆळिप्पड वेण्डुमाल् 727

नी–तुम; एकि–जाकर; एऩ्तु इळै–अलंकारकारी आभरणधारिणी सीताजी के; इरुऩ्त उळि तऩ्ऩै–रहने के स्थान को; नाकम्–नागलोक में; नाटुक–ढूंढ़ो; नाऩिलऩ् नाटुक–चतुर्विधा-भूमि पर ढूंढ़ो; पोक पूमियुम्–भोगलोक (स्वर्गलोक) में ढूंढ़ो; निऩ् वेकम्–तुम्हारा वेग; ईण्टु–इसमें; वॆळिप्पट वेण्टुम्–प्रगट होना चाहिए। ७२७

तुम यहाँ से चलो और नागलोक में जाकर अलंकारकारी आभरण-भूषित अबोध सीतादेवी के रहने का स्थान ढूंढ़ो। चतुर्विधा इस पृथ्वी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पर भी खोजो, फिर भोग-भूमि स्वर्ग में भी अन्वेषण करो। इस काम में तुम्हारी गति का वेग प्रकट किया जाय। ७२७

तॆन्ऱि शैक्क णिरावणन् शेणहर्, ऍन्ऱि शैक्किन्ऱ दॆन्नऱि विन्नणम्
वन्ऱि शैक्किनि मारुदि नीयलाल्, वॆन्ऱि शैक्कुरि यार्पिऱर् वेण्डुमो 728

इरावणन् चेण् नकर्–रावण का लम्बा-चौड़ा नगर; तॆन् तिचै कण्–दक्षिण दिशा में; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍन् अऱिवु–मेरी बुद्धि; इन्नणम्–यों; इचैक्किन्ऱतु–समझाती है; मारुति–मारुति; इनि–अब; वल् तिचैक्कु–उस बलवान दिशा में (जाकर); वॆन्ऱु–विजय पाकर; इचैक्कु–यशस्वी बनने के लिए; उरियार्–योग्य; नी अलाल्–तुम्हारे सिवा; पिऱर् वेण्टुमो–दूसरा चाहिए क्या। ७२८

मेरा मन कहता है कि रावण का उन्नत और विशाल नगर कहीं दक्षिण में ही है। मारुति! इसलिए वह दिशा कठिन दिशा हो गयी है। तुम वहाँ जाओ और विजयी बनो। इस यश का योग्य पात्र तुम ही हो। और किसी का विचार करने की ज़रूरत है क्या ?। ७२८

तारै मैन्दनुञ् जाम्बनुन् दामुदल्, वीरर् यावरु मेम्बडु मेन्मैयार्
शेर्ह निन्नॊडुन् दिण्डिऱर् चेनैहळ्, पेर्ह वॆळ्ळ मिरण्डॊडुम् बॆऱ्ऱियाल् 729

तारै मैन्तनुम्–तारा का पुत्र; चाम्पनुम्–और जाम्बवान; मुतल्–आदि; मेम्पटु मेन्मैयोर्–उन्नत महिमामय; वीरर् यावरुम्–वीर सब; निन्नॊटुम् चेर्क–तुम्हारे साथ मिलें; वॆळ्ळम् इरण्टॊटुम्–दो 'वॆळ्ळम्' की संख्या में; तिण् तिऱल्–कठोर बल वाली; चेनैकळ्–सेनाएँ; पॆऱ्ऱियाल्–शान के साथ; पेर्क–उठें (तुम्हारे साथ)। ७२९

तारा-पुत्र अंगद, जाम्बवान आदि अतिश्रेष्ठ वीर तुम्हारे साथ मिलकर जायँ। दो "प्रवाह" संख्या की बलवान सेनाएँ युक्त शान के साथ तुम्हारी सहायता के लिए चलें। ७२९

वळ्ळ रेवियै वञ्जित्तु वौविय, कळ्ळ वाळरक् कन्शॆलक् कण्डदु
तेळ्ळि योयन्ऱु तॆन्ऱिशै यॆन्बदोर्, उळ्ळ मुम्मॆनक् कुण्डॆन वुन्नुवाय् 730

तॆळ्ळियोय्–सुलझी हुई बुद्धि वाले; वळ्ळल् तेवियै–उदार दानी प्रभु श्रीराम की देवी को; वञ्चित्तु–छल करके; वौविय–जिसने अपहरण किया; कळ्ळम् वाळ् अरक्कन्–उस चोर क्रूर राक्षस को; अन्ऱु चॆल–उस दिन जाते हुए; कण्टतु–(जिस दिशा में) देखा, वह; तॆन् तिचै–दक्षिण दिशा है; ऍन्पतु–यह; ओर् उळ्ळमुम्–एक स्मरण भी; ऍनक्कु उण्टु–मुझे है; ऍन–ऐसा; उन्नुवाय्–समझ लो। ७३०

सुलझी हुई बुद्धि वाले! वदान्य श्रीराम की देवी को धोखा देकर जो हर ले गया वह चोर, क्रूर राक्षस उस दिन जिस दिशा की ओर जाता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दिखायी दिया, वह दक्षिण दिशा है। ऐसा मेरा स्मरण है। यह भी तुम विचार लो। ७३०

ईण्डु निन्ऱेऴुन् दीरैन्दु नूऱेऴिल्, तूण्डु शोदिक् कॉडुमुडि तोन्ऱुमाल्
नीण्ड नेमिकॉ लामॅन नेर्तॉऴ, वेण्डुम् विन्दम लैयिनै मेवुवीर् 731

नीङ्कळ्–तुम लोग; ईण्टु निन्ऱु–यहाँ से; ऍऴुन्तु–निकलकर; ऍऴिल् तूण्टु चोति–सुन्दर और ज्योतिर्मय; ईर् ऐन्तु नूऱु–दस सौ; कॉटु मुटि तोन्ऱुमाल्–शिखरों के दिखने के कारण; नीण्ट नेमि कॉलाम्–बड़े आकार के विष्णु हैं क्या; ऍन–ऐसा समझकर; नेर् तॉऴ वेण्टुम्–सामने जाकर नमस्कार करने योग्य; विन्त मलैयिनै–विन्ध्यपर्वत को; मेवुवीर्–जा पहुँचो (गे)। ७३१

सुग्रीव ने उनसे कहा— तुम लोग यहाँ से चलकर विन्ध्यपर्वत पहुँच जाओ। विन्ध्यपर्वत के सुन्दर और उज्ज्वल सहस्र शिखर हैं। इसलिए वह बहुत ऊँचे क़द के श्रीविष्णु के समान वंद्य है। ७३१

तेडि यम्मलै तीर्न्दपिन् ऱेवरुम्, आडु हिन्ऱ दऱुपद मैन्दिनैप्
पाडु हिन्ऱदु पन्मणि यालिरुळ्, ओडु हिन्ऱ नरुमदै युन्नुवीर् 732

अ मलै–उस पर्वत पर; तेटि तीर्न्त पिन्–खोज चुकने के बाद; तेवरुम् आटुकिन्ऱतु–देव भी जिसमें आकर स्नान करते हैं; अऱु पतम्–षट्पद; ऐन्तिनै पाटुकिन्ऱतु–(जिसमें) पंचम स्वर में गाते हैं; पल् मणियाल्–(जिसमें रहनेवाली) विविध मणियों के कारण; इरुळ ओटुकिन्ऱ–अँधेरा भाग जाता है; नरुमनै–उस नर्मदा नदी को; उन्नुवीर–स्मरण रखो। ७३२

उस पर्वत पर खोज लेने के बाद उस नर्मदा नदी को जाओगे, जिसमें देवगण भी आकर स्नान करते हैं और जिसके ऊपर बहनेवाले फूलों पर बैठकर भ्रमर पंचमस्वर में गाते हैं; और जिसके अन्दर रहनेवाले विविध रत्नों के कारण अँधेरा भाग जाता है। ७३२

वाम मेहलै वान्ऱर मङ्गैयर्, काम वूशर् कळियिशैक् कळ्ळिनाल्
तूम मेनि यशुणन् दुयिल्वुऱुम्, एम कूड मॅनुमलै यॅय्दुवीर् 733

वामम् मेकलै–सुन्दर मेखलालंकृत; वान् अर मङ्कैयर्–देवांगनाओं के; कामम् ऊचल्–मोहक झूलों पर से; कळि इचै–आनन्द-संगीत रूपी; कळ्ळिनाल्–सुरा से; तूमम् मेनि–धुएँ के रंग का; अचुणम्–'अशुण' नाम का प्राणी; तुयिल्वु उऱुम्–निद्रारत जहाँ होता है; एम कूटम्–उस हेमकूट; ऍनुम् मलै–नामक पर्वत को; ऍय्तुवीर्–जाओगे। ७३३

फिर तुम हेमकूट पर पहुँच जाओ। वहाँ देखोगे कि मनोरम मेखला-धारिणी देवांगनाएँ प्यारे झूलों पर झूलते हुए मोद के वश होकर गाती हैं और उस गान की सुधा का पान कर धुएँ-से रंग वाले "अशुण" नामक प्राणी सोते हैं। ७३३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नॉय्दि नम्मलै नीङ्गि नुमरॉडुम्, पॉय्है यिन्गरै पिऱ्पडप् पोदिराल्
शॅय्य पॅण्णैक् करैप्पॅण्णै यिऱ्चिल, वैह ऱेडिक् कडिदु वळिक्कॉळ्वीर् 734

अम्मलै–उस पर्वत से; नॉय्तिन् नीङ्कि–शीघ्र हटकर; नुमरॉटुम्–अपने वानर वीरों के साथ; पॉय्कैयिन् करै–वहाँ के तालाब के तीर को; पिन् पट–पीछे रहने देते हुए; पोतिर्–जाकर; चॅय्य पॅण्णै–लाल (गोरे) रंग की देवी को; पॅण्णै करैयिल्–'पॅण्णै' नाम की नदी के तट पर; चिल वैकल्–कुछ दिन; तेटि–खोजकर; कटितु वळि कॉळ्वीर–जल्दी अपनी राह लो। ७३४

तुम लोग वहाँ से जल्दी हट जाओ और अपने साथी, वानर वीरों के साथ आगे चलो। वहाँ एक तालाब है, उसको पीछे छोड़कर बढ़ो। पश्चात् "पॅण्णै" नाम की नदी के कछार पर उन गोरे रंग की सीतादेवी को कुछ दिन खोजो। फिर आगे जल्दी चलो। ७३४

ताङ्गु मारहिऱ् ऱण्णरुञ् जन्दनम्, वीङ्गु वेलि विदर्प्पमु मॅल्लॅन्न
नीङ्गि नाडु नॅडियन्न पिऱ्पडत्, तेङ्गु वार्पुनऱ् ऱण्डहञ् जेर्दिराल् 735

ताङ्कुम्–गंध-भार-वाहक; आर्–अगस्त्य और; अकिल्–अगरुतरु; तण् नऱम् चन्ततम्–शीतल सुगन्धित चन्दन; वीङ्कु वेलि–जिसकी बाड़ बने हैं; वितर्प्पमुम्–विदर्भ देश को; मॅल्लॅन्न नीङ्कि–शान्ति के साथ पार करके; नॅटियन्न नाटु–विस्तृत (अनेक) देशों को; पिन् पट–पीछे छोड़ते हुए; तेङ्कु–अधिक; वार् पुनल्–जलसमृद्ध; तण्टकम्–दण्डक में; चेर्तिर्–पहुँच जाओ। ७३५

फिर विदर्भ देश आयगा। सुगन्धित अगरु वृक्ष और शीतल सुगन्धित चन्दन तरु उसकी बाड़ बने हुए हैं। उस देश को भी पार करो और बहुत विशाल अनेक प्रदेशों को पीछे छोड़ते हुए दण्डकवन में पहुँच जाओ, जो अत्यन्त जलसमृद्ध है। ७३५

पण्ड हत्तियन् वैहिय दाप्पहर्, तण्ड हत्तदु ताबदर् तम्मैयुट्
कण्ड हत्तुयर् तीर्वदु काण्डिराल्, मुण्ड हत्तुरै यॅन्ऱॊरु मॉय्म्बॊळिल् 736

मुण्टकत्तुरै–'मुण्डकघाट'; ऍन्ऱ–नाम का; ऒरु मॉय्म् पॊळिल्–एक घना उपवन; पण्टु अकत्तियन्–प्राचीन अगस्त्य का; वैकियतु–वासस्थान; आ पकर्–ऐसा कहा जाता है; तण्टकत्ततु–(वह) दण्डक वन में है; तापतर्–तपस्वी लोग; तम्मै उळ् कण्टु–अन्दर आत्मदर्शन करके; अकम् तुयर् तीर्वतु–(जहाँ) आध्यात्मिक ताप को हर लेते हैं; काण्टिर्–जाकर देखो। ७३६

वहाँ मुण्डक घाट नाम का एक वृक्षपूर्ण वन मिलेगा। वह दण्डकारण्य में है, जहाँ अगस्त्य रहे, कहे जाते हैं। वहीं तपस्वी लोग आत्मदर्शन करके अपने मन का ताप हर लेते हैं। उस स्थान को देखो। ७३६

आल नल्लऱत् तोरुन्नु नऱ्पॊरुळ्, पोल निन्ऱु पॊलिवदु पूम्बॊळिल्
शील मङ्गैयर् वायॅन्नत् तीङ्गन्नि, काल मिन्ऱिक् कन्निवदु काण्डिराल् 737

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पूम् पॊऴिल्–पुष्प-बहुल वह उपवन; आलम्–भूमि के; नल्लऱत्तोर्–सद्धर्मियों के; उन्नुम् नऱ्पॊऱुळ् पोल–मन के सद्विषयों के समान; निन्ऱु पॊलिवतु–शोभा के साथ रहता है; चीलम् मङ्कैयर् वाय् ऍऩ–शीलवती स्त्रियों के अधरों के समान; तीम् कऩि–मधुर फलों को; कालम् इऩ्ऱि–पर्व-बाहर भी (हमेशा); कऩिवतु–फलनेवाला है; काण्टिर्–देख लो। ७३७

वह पुष्पपूर्ण मुण्डक घाट उस श्रेष्ठ वस्तु के समान शोभायमान है, जिसे सद्धर्मी लोग चाहते हैं। उसमें शीलवती स्त्रियों के अधरों के समान मधुर फल फलते हैं, और अकाल में भी फलते हैं। उसको देख लो। ७३७

नयऩ नऩ्गिमै यार्तुयि लार्नऩि, अयऩ मिल्लै यरुक्कऩुक् कव्वऴि
शयऩ मादर् कलवि तलैत्तरुम्, पयऩु मिऩ्बमु नीरुम् पयक्कुमाल् 738

नयऩम्–(वहाँ रहनेवाले) अपनी आँखें; नऩ्कु इमैयार्–नहीं झपकाते; नऩि तुयिलार्–अधिक नहीं सोते; अरुक्कऩुक्कु–सूर्य का; अव्वऴि–वहाँ; अयऩम् इल्लै–मार्ग नहीं; चयऩम्–शय्या में; मातर् कलवि तलै–स्त्रियों के साथ संभोग से; तरुम्–प्राप्य; पयऩुम्–सुख; इऩ्पमुम्–और आनन्द; नीरुम्–और जल (से प्राप्य समृद्धि); पयक्कुम्–देनेवाला है (वह स्थान)। ७३८

वहाँ के वासी पलक नहीं गिराते हैं। खूब नहीं सोते। सूर्य को वहाँ मार्ग नहीं मिलता। वह स्थान भोग-शय्या में स्त्री-संगम का सुख, आनन्द और शीतल जल —सभी देनेवाला है। ७३८

आण्डि ऱऩ्दुपिऩ् नऩ्दरत् तिऩ्दुवैत्, तीण्डु हिऩ्ऱदु शॆङ्गदिर्च् चॆल्वऩुम्
ईण्डु ऱैऩ्दल देहल मॆऩ्बदु, पाण्डु विऩ्मलै यॆऩ्ऩुम् बरुप्पदम् 739

आण्टु इऱऩ्तु–वहाँ से चलकर; पिऩ्–बाद; अऩ्तरत्तु इऩ्तुवै–आकाश के चन्द्र को; तीण्टुकिऩ्ऱतु–स्पर्श करनेवाले; चॆम् कतिर् चॆल्वऩुम्–लाल किरणमाली भी; ईण्टु उऱैऩ्तु–यहाँ ठहरे; अलतु–विना; एकलम् ऍऩ्पतु–नहीं जायँगे, ऐसा (जिसको देखकर) सोचते हैं; पाण्टुविऩ् मलै ऍऩुम् परुप्पतम्–पाण्डुगिरि नामक पर्वत (है देखो)। ७३९

उस मुण्डकोपवन को छोड़कर आगे जाओ तो पाण्डुपर्वत नामक पर्वत देखोगे। वह आकाश के चन्द्र को स्पर्श करता हुआ रहता है। उसको देखकर लाल किरणमाली भी यह सोचता है कि हम यहाँ कुछ देर ठहरे विना आगे नहीं चलेंगे। ७३९

मुत्तीर्त्तुप् पॊऩ्ऱिरट्टि मणियुरुट्टि मुदुनीत्त मुऩ्ऱि लायर्
मत्तीर्त्तु मरऩीर्त्तु मलैयीर्त्तु माऩीर्त्तु वरुव दियार्क्कुम्
पुत्तीर्त्तिट् टलैयामर् पुलवर्ना डुदवुवदु पुऩिद माऩ
अत्तीर्त्त महऩ्गोदा विरियॆऩ्ब रम्मलैयि नरुहिऱ् ऱम्मा 740

मुतु नीत्तम्–प्राचीन प्रवाह; मुत्तु ईर्त्तु–मोती ले आता हुआ; पॊऩ् तिरट्टि–और स्वर्ण बहाता हुआ; मणि उरुट्टि–रत्न खींचता; आयर् मुऩ्ऱिल्–गोपों के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आँगनों से; मत्तु ईर्त्तुम्–मथानियों को लेता हुआ; मरत् ईर्त्तु–तरुओं को लाता हुआ; मलै ईर्त्तु–गिरियाँ लेता हुआ; मान् ईर्त्तु–और पशुओं को बहा ले आता हुआ; वरुवतु–आनेवाला है; यार्क्कुम्–किसी भी स्नान करनेवाले को; पुत्तु ईर्त्तिट्टु–'पुत्' नामक नरक से खिचकर; अलैयामल्–घूमे विना; पुलवर् नाटु–स्वर्गलोक; उतवुवतु–दिलानेवाला है; पुत्तितम् आत्त अ तीर्त्तम्–पवित्र वह तीर्थ (नदी); अकल् कोतावरि अँत्पर्–चौड़ी गोदावरी कहते; अ मलैयिन्–उस (पाण्डु) गिरि के; अरुकिर्ऱु–पास रहनेवाली है। ७४०

आगे जाओ। गोदावरी नदी मिलेगी। उसका सनातन प्रवाह मोती बहा ले आता है। स्वर्ण-कर्ण इकट्ठा कर लाता है। रत्नों को लुढ़काकर ले आता है। गोपों के आँगन से मथानी को, पेड़ों को, चट्टानों को और अनेक पशुओं को खींच ले आता है। उसमें जो भी स्नान करते हैं, वे (अपुत्र होने पर भी) "पुत्" नामक नरक से बच जाते हैं; और देवलोक पहुँच जाते हैं। वह गोदावरी पवित्र जल वाली है। और वह उस उपरोक्त पाण्डुपर्वत के पास बहती रहती है। ७४०

अव्वारु कडन्दप्पा लऱत्ताऱे यॅन्नत्तॅळिन्द वरुळि नाऱुम्
वॅव्वारु मॅन्नक्कुळिर्न्दु वॅयिलियङ्गा वहैयिलङ्गुम् विरिपूञ् जोलै
अॅव्वारु मुऱत्तुवन्ऱि यिरुळोड मणियिमैप्प दिमैयोर् वेण्डत्
तॅव्वारु मुहत्तॊरुवत् तन्निक्किडन्द शुवणत्तैच् चेर्दिर् मादो 741

अ आऱु कटन्तु–उस नदी को पार करके; अप्पाल्–बाद; अऱत्तु आऱे अॅन्–धर्ममार्ग ही सम, और; तॅळिन्त अरुळिन्–स्वच्छ करुणा पर; नाऱुम्–विकसित; वॅम्–प्यारा; आऱु अॅन्नवुम्–नीति के मार्ग के समान; कुळिर्न्तु–शीतल बना; वॅयिल् इयङ्का वकै–धूप न लगे, इस प्रकार; इलङ्कुम्–शोभायमान रहनेवाला; विरि पू चोलै–विकसित फूलों से भरा उद्यान; अॅ आऱुम्–सर्वत्र; उऱ तुवन्ऱि–खूब (जिसके किनारों पर) पाया जाता है; इरुळ् ओट–(और) अन्धकार को भगाते हुए; मणि इमैप्पतु–रत्न चमकते हैं (जिसमें); इमैयोर् वेण्ट–देवों की प्रार्थना पर; तॅव् आऱुमुकत्तु ऒरुवन्–शत्रुसंहारक, छः मुख वाले देव (षण्मुख); तन्नि किटन्त–अकेले जिस पर रहे; चुवणत्तै–उस सुवर्ण (सोन) नदी को; चेर्तिर्–जा पहुँचो। ७४१

उस गोदावरी नदी को भी पारकर तुम लोग "शोण" नदी पर पहुँच जाओ। वह धर्म-मार्ग और पवित्र कृपा के फलस्वरूप उपलब्ध होनेवाले सन्मार्ग के समान शीतल है। उसके दोनों ओर प्रफुल्ल पुष्पवह तरुओं से पूर्ण बाग हैं, जिनके अन्दर सूर्य की किरणें पहुँच नहीं पातीं। उसके दोनों कूलों पर मणियाँ प्रकाश फैलाती और अँधेरे को भगाती रहती हैं। उसी में देवताओं की प्रार्थना पर शत्रुसंहारक षण्मुख (या विघ्न-हर विनायक) पड़े रहे। ७४१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शुवणनदि कडन्दप्पाऱ् चूरियकान् दहमॅन्ऩत् तोन्ऱि मादर्
कवणुमिऴ्हल् वॅयिलियङ्गुङ् गऩवरैयुञ् जन्दिरहान् दहमुङ् गाण्बीर्
अवणवैनीत् तेहियपिन् ऩहऩाडु पलकडन्दा लऩन्द ऩॅन्बान्
उवणपदिक् कॊळित्तुऱैयुङ् गॊङ्गणमुङ् गुलिन्दमुञ्जॅन् ऱुरुदिर् मादो 742

चुवण नति कटन्तु–सुवर्ण नदी को पार करके; अप्पाल्–उस तरफ़; चूरिय कान्तकम् ऍन्ऩ तोन्ऱि–सूर्यकान्ति नाम से विख्यात (गिरि); मातर् कवण् उमिऴ् कल्–(जिस पर) स्त्रियों के ढेलाबाँसों से निकले पत्थर; वॅयिल् इयङ्कुम्–प्रकाश फैलाते हैं; कऩम् वरैयुम्–उस भारी पर्वत को और; चन्तिर कान्तकमुम्–चन्द्रकान्त को भी; काण्पीर्–देखोगे; अवण्–वहाँ; अवै नीत्तु–उनको छोड़कर; एकिय पिन्–जाने के बाद; अकल् नाटु–विस्तृत देश; पल कटन्ताल्–अनेक पार करेंगे तो; अनन्तऩ् ऍन्पाऩ्–अनन्तनाग; उवणपतिक्कु ऒळित्तु–खगपति गरुड़ से छिपकर; उऱैयुम्–जहाँ रहता है; कॊङ्कणमुम्–कोंकण देश को और; कुलिन्तमुम्–कुलिन्द देश को; चॅन्ऱु उऱुतिर्–जा पहुँचोगे। ७४२

"शोण" नदी को पारकर तुम सूर्यकान्तपर्वत पर पहुँचोगे। उस पर्वत पर खेतों की रखवाली करते हुए स्त्रियाँ पायी जाएँगी, जिनके ढेलेबाँसों से निकलनेवाले पत्थर (बहुमूल्य रत्न) धूप जैसा प्रकाश फैलाते हैं। आगे चन्द्रकान्तपर्वत पर भी खोज लगाओ। फिर उन पर्वतों को छोड़कर आगे अनेक विशाल पर्वतों को पार करो तो कोंकण देश में जाओगे, जहाँ आदिशेष खगपति गरुड़ से डरकर छिपा रहता है। उसके आगे कुलिन्द देश है, वहाँ पहुँचोगे। ७४२

अरऩदिह ऩुलहळन्द वरियदिह ऩॅन्ऱुऱैक्कु मऱिवि लोर्क्कुप्
परहदिशॅन् ऱडैवरिय परिशेपोऱ् पुहलरिय पण्बिर् ऱामाल्
सुरनदियि ऩयलदुवान् ऱोय्हुडुमिच् चुडर्त्तॊहैय तॊळुदोर्क् कॅल्लाम्
वरऩदिहन् दरुन्दहैय वरुन्ददिया नॅडुमलैयै वणङ्गि यप्पाल् 743

अरन् अतिकन्–हरदेव ही श्रेष्ठ हैं; उलकु अळन्त–लोकमापक; अरि अतिकन्–हरि ही श्रेष्ठ हैं; ऍन्ऱु उरैक्कुम्–ऐसा कहनेवाले; अऱिवु इलोर्क्कु–अज्ञों के लिए; परकति चॅन्ऱु–उत्तम गति में जाकर; अटैवु अरिय–रहना कठिन है; परिचे पाल्–वैसी रीति से; पुकल् अरिय पण्पिऱ्ऱु–प्रवेश पाना (जहाँ) कठिन; आम्–है; चुर नतियिन् अयलतु–सुरगंगा के पास रहनेवाली; वान् तोय्–आकाशस्पर्शी; कुटुमि–शिखरों पर (जिसके); चुटर् तॊकैयतु–प्रकाशपुंज (सूर्य व चन्द्र) ठहरते हैं; तॊळुतोर्क्कु ऍल्लाम्–नमन करनेवाले सभी को; अतिकम् वरन् तरुम्–अधिक वरदायी; तकैय–महिमा वाला; अरुन्तति आम्–अरुन्धती नाम का; नॅटुमलैयै–बड़ा पर्वत, उसे; वणङ्कि–नमस्कार करके; अप्पाल्–तदनन्तर। ७४३

उसके आगे अरुन्धती नाम का बड़ा और श्रेष्ठ पर्वत रहता है। वह इतना अगम है जितना श्रेष्ठ-गति उन लोगों के लिए अगम है, जो इस बात को लेकर झगड़ा करते हैं कि हरदेव श्रेष्ठ हैं या त्रिलोकमापक हरि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रेष्ठ हैं। वह सुरगंगा के बिल्कुल पास है। उसके गगनस्पर्शी शिखरों पर दोनों प्रकाशपुञ्ज, सूर्य और चन्द्र आश्रय लेते हैं। जो उसकी पूजा करते हैं, उसको वह उत्तम वर देनेवाला है। उस पर्वत को (दूर से) नमस्कार करके आगे— । ७४३

अञ्जुवरुम् वॅञ्जुवरतु माऱुमहन् पॅरुञ्जुनैयु महिलोङ् गारम्
मञ्जिवरु नॅडुङ्गिरियुम् वळनाडुम् पिऱ्पडप्पोय् वऴिमेऱ् चॅन्ऱाल्
नञ्जुवरु मिडऱ्ऱरवुक् कमिऴ्दुनति कॊडुत्तायैक् कलुऴ नीक्कुम्
ऍञ्जिन्मर हदप्पॊरुप्पै यिऱैञ्जियदन् पुऱञ्जार वेहिर् मादो 744

अञ्चवरुम्–डरावना; वॅम् चुरतुम्–कठोर मरुप्रदेश; आऱुम्–नदियों को; अकल् पॅरु चुतैयुम्–विशाल और बड़े तालाबों को; अकिल्–अगरु; ओङ्कु आरम्–ऊँचे चन्दनतरु; मञ्चु–मेघों तक; इवरुम्–जिन पर उगे हैं; नॅटुम् किरियुम्–ऊँचे पर्वतों को; वळम् नाटुम्–समृद्ध जनपदों को और; पिन् पट–पीछे छोड़कर; पोय्–जाकर; वऴि मेल् चॅन्ऱाल्–आगे मार्ग पर जाओगे तो; कलुऴन्–गरुड़ ने; नञ्चु वरुम्–विषैले; मिटऱु–दाँत वाले; अरवुक्कु–नागों को; अमिऴ्तु नति कॊटुत्तु–अमृत अधिक देकर; आयै नीक्कुम्–अपनी माता को (दासता से) छुड़ाया (जहाँ); ऍञ्चिल्–निर्दोष; मरकत पॊरुप्पै–मरकतगिरि को; इऱैञ्चि–नमस्कार करके; अतन् पुऱम् चार–उसके पार्श्व के मार्ग में; एकिर्–आगे जाओ। ७४४

सबको भयभीत करनेवाला मरुप्रदेश, नदियाँ और चौड़े झरने, अगरु और उन्नत चन्दन तरु जहाँ मेघों का स्पर्श करते हुए उगे हैं; उन पर्वतों और समृद्ध देशों को पीछे छोड़ते हुए जाओगे तो उस मरकतपर्वत को देखोगे, जहाँ गरुड़ ने विषदन्त नागों को अमृत दिलाकर अपनी माता को गुलामी से छुड़ाया था। उसको नमस्कृत करके उसके पास का मार्ग पकड़कर आगे जाओ। (पुराण की कथा है कि कश्यप मुनि की दो पत्नियों में गरुड़ की माता विनता अपनी सौत नागमाता कद्रू की दासी बनी थी। तो उसकी दासता को काटकर छुड़ाने के लिए कद्रू ने शर्त लगायी कि अमृत लाकर दो। गरुड़ ने अमृत-कलश लाकर दिया।) । ७४४

वडशॊऱ्कुन् दॅन्शॊऱ्कुम् वरम्बाहि नाऩ्मऱैयु मऱ्ऱै नूलुम्
इडैशॊऱ्ऱु पॊरुट्कॅल्ला मॅल्लैयदाय् नल्लऱत्तुक् कीऱाय् वेऱु
पुडैशुऱ्ऱुन् दुणैयिन्ऱिप् पुहऴ्पॊदिन्द मॅय्येपोऱ् पूत्तु निन्ऱु
उडैशुऱ्ऱुन् दण्शार लोङ्गियवेङ् गडत्तिऱ्चॅन् ऱुऱुदिर् मादो 745

वटचॊऱ्कुम् तॅन् चॊऱ्कुम्–संस्कृत और तमिऴ की; वरम्पु ओकि–सीमा बनकर; नाल् मऱैयुम्–चारों वेद और; मऱ्ऱै नूलुम्–अन्य शास्त्र; इटै चॊऱ्ऱु–अपने में जिनकी चर्चा करते हैं; पॊरुट्कॅल्लाम्–उन विषयों का; ऍल्लैयताय्–शीर्षस्थ और; नल् अऱत्तुक्कु–श्रेष्ठ धर्म का; ईऱाय्–प्रमाण और; पुटै चुऱ्ऱुम्–पास घेरे रहे; तुणै वेऱु इन्ऱि–जोड़ किसी के विना; पुकऴ् पॊतिन्त–प्रशंसा के पात्र; मॅय्ये पोल्–शरीर के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समान; पूत्तु निऱ्ऱ–शोभित रहनेवाले; उटै चुऱ्ऱुम्–वस्त्र के समान लपेटे रहनेवाले; तण्चारल्–शीतल चरण-प्रदेशों-सह; ओङ्किय–ऊँचे; वेङ्कटत्तिल्–श्रीवेंकटगिरि पर; चॆन्ऱु उऱ्ऱतिर्–जा पहुँचो। ७४५

आगे तुम श्री वेंकटगिरि के पास पहुँच जाओगे। वह संस्कृत और तमिऴ के प्रदेशों के बीच की सीमा है। उसमें चतुर्वेदों और अन्य शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित सर्वश्रेष्ठ "वस्तु" (परमतत्त्व) रहती है। वह सारे धर्मों की श्रेष्ठ व्याख्या है। उसके साथ मिलाने योग्य और कोई उपमान नहीं मिलता। यशवेष्टित शरीर के समान उसको शीतल तराइयाँ घेरे रहती हैं। वह उन्नत और पवित्र गिरि है। ७४५

इरुविऩैयु मिडैविडा वॆव्विऩैयु मियऱ्ऱादे यिमैयो रॆय्दुम्
तिरुविऩैयु मिडुपदन्देर् शिऱुमैयैयु मुऱैयॊप्पत् तॆळिन्दु नोक्किक्
करुविऩैय दिप्पिऱविक् कॆन्ऱुणर्न्दङ् गदुहळैयुङ् गडैयिऩ् ञाऩत्
तरुविऩैयिऩ् पॆरुम्बहैञ राण्डुळरीण् डिरुन्दुमडि वणङ्गऱ् पालार् 746

इरु विऩैयुम्–दोनों कर्म (पाप और पुण्य); इटै विटा–निरन्तर; ऎव् विऩैयुम्–कोई कर्म; इयऱ्ऱामे–विना किये; इमैयोर् ऎय्तुम्–देवों को प्राप्त; तिरुविऩैयुम्–भोग-कर्म और; इटु पतम् तेर्–(भीख में) दिये खाने की अपेक्षा में; चिऱुमैयैयुम्–रहनेवाले क्षुद्र जीवन को; मुऱै ऒप्प–सम क्रम से; तॆळिन्तु नोक्कि–साफ़ विवेचना करके; इ पिऱविक्कु–इस जन्म का; करुविऩै अतु–वह गर्भ का कर्म है; ऎऩ्ऱु–ऐसा; उणर्न्तु–समझकर; अतु–उस कर्म को; अङ्कु–वहीं; कळैयुम्–त्यागनेवाले; कटै इल् ञाऩत्तु–असीम ज्ञान के; अरु विऩैयिऩ्–दुर्निवार कर्म के; पॆरु पकैञर्–बड़े शत्रु; आण्टु उळर्–वहाँ रहते हैं; ईण्टु इरुन्तुम्–यहीं से भी; अटि वणङ्कल् पालार्–चरण-वन्द्य हैं। ७४६

उस पर्वत में दुर्वार, पाप-पुण्य दोनों कर्मों के प्रबल शत्रु, श्रेष्ठ महात्मा रहते हैं। उन्हें पाप-पुण्य और लगातार लग करके आनेवाले सभी कर्मों के सम्बन्ध में खूब ज्ञात है। इसलिए वे निष्काम हैं। वे देवों से प्राप्य भोगमय जीवन और भीख में मिलनेवाले भोजनापेक्षी और दुःखमय मानवजीवन, इन दोनों के समदर्शी हैं। जन्म का हेतु ये ही पाप और पुण्य हैं —इसको खूब जानकर उस कर्म-बन्धन को वही काटनेवाले अपार तत्त्वज्ञ हैं। वे महात्मा यहाँ से भी प्रणम्य हैं। ७४६

शूदहऱ्ऱुन् दिरुमऱैयोर् तुऱैयाडु निऱैयाऱुञ् जुरुदित् तॊऩ्ऩूल्
मादवत्तो रुऱैविडनु मळैयुऱङ्गु मणित्तडनु वाऩ मादर्
कीदमॊत्त किऩ्ऩरङ्ग ळिऩ्ऩरम्बु वरुडुदॊरुङ् गिळक्कु मोदै
पोदहत्तिऩ् मळक्कऩ्ऱुम् बुलिप्पऱळु मुऱङ्गिडनुम् बॊरुन्दिऱ् ऱम्मा 747

चूतु अकऱ्ऱुम्–कपट को त्यागनेवाले; तिरु मऱैयोर्–सुन्दर ब्राह्मण लोग; आटु–जहाँ स्नान करते हैं; तुऱै–उन घाटों से; निऱै–पूर्ण; आऱुम्–नदियाँ; चरुति–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेद; तॊल् नूल्–सनातन शास्त्र (के ज्ञाता); मातवत्तोर्–महान तपस्वी; उऱैवु इटत्तुम्–जहाँ वास करते हैं, वे आश्रम; मऴै उऱङ्कुम्–जहाँ मेघ आश्रय लेते हैं; मणि तटत्तुम्–वे रत्न-भरे स्थान; वान्नम् मातर्–(और) देवांगनाओं के; कीतम् ओत्त–गीत के समान; कित्तरङ्कळ्–किन्नर (वाद्यों) के; इन् नरम्पु–मधुर (नादोत्पादक) तन्त्रियों को; वरुटु तॊऱुम्–मींडते वक्त; किळक्कुम्–उठनेवाले; ओत्तै–नाद से; पोतकत्तित्–गज के; मऴ कन्ऱुम्–छोटे कलभ और; पुलि पऱ्ऴुम्–बाघ के शावक; उऱङ्कु–(जहाँ एक साथ) सोते हैं; इटत्तुम्–वे स्थान; पॊरुन्तिऱ्ऱु–इनसे युक्त है (वह तिरुवेंकटगिरि)। ७४७

उसमें छल-कपट छोड़कर रहनेवाले श्रेष्ठ ब्राह्मण जिनमें स्नान करते हैं, वे घाटों से भरी नदियाँ; श्रुति और पुराने शास्त्रों के विशिष्ट ज्ञाता बड़े तपस्वियों का वासस्थान; वे स्थल जो रत्नजड़ित हैं और जिन पर मेघ सुप्त रहते हैं; देवांगनाओं के गीत के लय के साथ किन्नर अपने वाद्य की तंत्रियों से जो स्वर निकालते हैं, उस स्वर को सुनकर कलभ और व्याघ्रशावक जहाँ साथ-साथ सोते हैं वे स्थल —ये सभी हैं। ७४७

कोडुऱुमाल् वरैयदत्तैक् कुऱुहुदिरे लुन्नॆडिय कॊडुमै नीङ्गि
वीडुऱुदि रादलान् विलङ्गुदिरप् पुऱत्तुनीर् मेवु तॊण्डै
नाडुऱुदि रुऱ्ऱदत्तै नाडियदऱ् पिन्नैयवै नऴिनीर्प् पॊन्नित्च्
चेडुऱुदण् पुनऱ्ऱैय्वत् तिरुनदियि निरुहरैयुन् दॆरिदिर् मादो 748

कोटु उऱु–शिखरोंसहित; माल् वरै अतत्तै–बड़े उस पर्वत के; कुऱुकुतिरेल्–पास जाओ तो; उम् नॆटिय कॊटुमै–तुम्हारा अधिक पाप; नीङ्कि–छूटेगा और; वीटु उऱुतिर्–मोक्ष पा जाओगे; आतलान्–इसलिए; विलङ्कुतिर्–दूर से ही हट जाकर; अप्पुऱत्तु–उस तरफ़ के; नीर् मेवु–जलसमृद्ध; तॊण्टै नाटु–"तॊण्डै" (नाम के) देश को; उऱुतिर्–जाओ; उऱ्ऱु–वहाँ पहुँचकर; अतत्तै नाटि–वहाँ खूब खोजकर; अतन् पिन्तै–उसके बाद; नऴि नीर्–उत्तम जल से पूर्ण; पॊन्नित्ति चेटु उऱु–'पॊन्नी' नाम की श्रेष्ठतायुक्त; तण् पुनल्–शीतल जल; तैय्वम् तिरु नतियित्–दिव्य श्रीनदी के; इरु करै अवैयुम्–दोनों तीरों पर; तॆरितिर्–देवी की खोज लगाओ। ७४८

शिखरों से भरे उस पर्वत के पास तुम लोग जाओगे तो तुम्हारे सारे पाप दूर हो जायँगे और तुम मोक्ष को प्राप्त हो जाओगे। इसलिए उससे बचकर आगे रहनेवाले जलसमृद्ध "तॊण्डै" (बिम्ब) प्रदेश में जाओ और वहाँ खूब अन्वेषण करो। फिर उस कावेरी नदी के दोनों किनारों पर खोजो जो "पॊन्नी" के नाम से विख्यात है और जो देखने में बहुत सुन्दर है। वह नदी शीतल जल से भरी और दिव्य है। ७४८

तुऱक्कमुऱ्ऱार् मन्नमॆन्नत् तुऱैहॆऴुनीर्च् चोणाडु कडन्दाऱ् रॊल्लै
मऱक्कमुऱ्ऱा रदन्नयले मऱैन्दुऱैव रव्वऴिनीर् वल्लै येहि
उऱक्कमुऱ्ऱार् ऍन्नुऱ्ऱा रॆन्नुमुणर्वि नॊडुमॊदुङ्गि मणिया रोङ्गऱ्
पिऱक्कमुऱ्ऱ मलैनाडु नाडियहन् ऱमिऴनाट्टिऱ् पॆयर्दिर् मादो 749

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुऱक्कम् उऱ्ऱार्–स्वर्गगत; मऩम् ऍऩ्ऩ–(लोगों के) मन के समान; तुऱै कॆऴु नीर्–घाटों से युक्त धारा वाली कावेरी के जल से; चोणाटु–(समृद्ध) 'चोऴ नाडु' (चोऴ देश); कटन्ताल्–पार करोगे तो; अतऩ् अयले–उसके समीप ही; तॊल्लै–पूर्व-कर्म; मऱक्कम् उऱ्ऱार्–जो भूल चुके हैं, वे; मऱैन्तु उऱैवर्–छिपे-छिपे वास करते होंगे; नीर्–तुम लोग; अ वऴि–उस मार्ग में; वल्लै एकि–शीघ्र जाकर; उऱक्कम् उऱ्ऱार्–निद्रा में रत रहनेवाले; ऍऩ् उऱ्ऱार्–क्या पाये; ऍऩुम् उणर्वितॊटुम्–इस समझ के साथ; ऒतुङ्कि–हट जाकर; मणि आर्–रत्न-भरे; ओङ्कल् पिऱक्कम्–पर्वतों के तलों से; उऱ्ऱ–युक्त; मलै नाटु–पर्वत-प्रदेश में; नाटि–खोजकर; पिऱकु–बाद; अकल् तमिऴ् नाट्टिल्–विस्तृत तमिऴनाडु में; पॆयर्तिर्–जाओ। ७४९

स्वर्गगत लोगों के मन के समान कावेरी का जल स्वच्छ है और वह देश पवित्र है, जिसमें यह नदी बहती है। उसके पार्श्व में पूर्व कर्म को जो भूले हुए हैं, वे मुनिवर छिपे-छिपे वास कर रहे हैं। तुम उस मार्ग को अविलम्ब पार कर लो। सुप्त रहनेवाले क्या पायेंगे ? —इस मसल का स्मरण करते हुए आगे रत्नमय उन्नत पर्वतों के देश में देवी का पता लगाओ। उसके बाद विशाल तमिऴ देश में (पाण्ड्य देश में) पहुँच जाओ। ७४९

तॆऩ्ऱमिऴ्नाट् टहऩ्पॊदियिऱ् ऱिरुमुऩिवऩ् ऱमिऴ्च्चङ्गञ् जेर्हिऱ् पीरेल्
ऍऩ्ऱुमव ऩुऱैविडमा मादलिऩा ऩम्मलैयै यिडत्तिट् टेहिप्
पॊऩ्ऱिणिन्द पुऩल्पॆरुहुम् पॊरुनैयॆऩुन् दिरुनदिपिऩ् बॊऴिय नाहक्
कऩ्ऱुवळर् तडञ्जारऩ् मयेन्दिरमा नॆडुवरैयुङ् गडलुङ् गाण्डिर् 750

तॆऩ् तमिऴ् नाडु–दाक्षिणात्य तमिऴ देश में; अकल् पॊतियिल्–विशाल 'पॊदिहै' गिरि पर; तिरु मुऩिवऩ्–श्री (अगस्त्य) मुनि के; तमिऴ् चङ्कम्–तमिऴ संघ में; चेर्किऱ्पीरेल्–पहुँचोगे तो; ऍऩ्ऱुम्–सदा; अवऩ् उऱैवु इटम् आम्–उनका रहने का स्थान है वह गिरि; आतलिऩाल्–इसलिए; अम् मलैयै–उस पर्वत को; इटत्तु इट्टु–बायीं ओर छोड़कर (परिक्रमा करते हुए); एकि–जाकर; पॊऩ् तिणिन्त–स्वर्ण-कणों से भरे; पुऩल् पॆरुकुम्–जल से पूर्ण; पॊरुनै ऍऩुम्–'पॊरुनै' नाम की (ताम्रपर्णी); तिरु नति–श्रीनदी; पिऩ्पु ऒऴिय–पीछे रह जाय, ऐसा आगे जाकर; नाकम् कऩ्ऱु–कलभ; वळर्–जहाँ पलते हैं; तट चारल्–वैसी विशाल तराइयों से युक्त; मयेन्तिरम् आम्–महेन्द्र की; नॆटु वरैयुम्–बड़ी गिरि को और; कटलुम्–समुद्र को; काण्टिर्–देखो (गे)। ७५०

उस देश में "पॊदिहै" का बड़ा पर्वत है। वहीं श्री अगस्त्य मुनि का तमिऴ-संग प्राप्त होगा। वही अगस्त्य का स्थायी वासस्थान है। उसके दाहिनी ओर से आगे जाओ और स्वर्णकण-मिश्रित जल वाली ताम्रपर्णी नाम की नदी को भी छोड़कर आगे बढ़ो। महेन्द्रपर्वत आयगा, जिसकी तराइयों में हाथी के बच्चे बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। उसके पास ही दक्षिणी समुद्र भी रहता है। ७५०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आण्डुकडन् दप्पुऱत्तु मॅप्पुऱत्तु मॊरुतिङ्ग ळवदि याहत्
तेण्डियिवण् वन्दडैदिर् विडैहोडिर् कडिदॆन्नच् चॆप्पुम् वेलै
नीण्डवनु मारुदियै निऱैयरुळा लुऱनोक्कि नीदि वल्लोय्
काण्डियॆन्निऱ् कुऱिकेट्टि यॆन्नवेऱु कॊण्डिरुन्दु कळऱ लुऱ्ऱान् 751

आण्टु कटन्तु–उस स्थान को पार करके; अ पुऱत्तुम्–उसके उस तरफ़; ॲ पुऱत्तुम्–सभी ओर; ऒरु तिङ्कळ्–एक महीना; अवति आक–अवधि बनाकर; तेण्टि–अन्वेषण करके; इवण् वन्तु–यहाँ आ; अटैतिर्–पहुँचो; कटितु–अविलम्ब; विटै कोटिर्–बिदा लो; ॲन्न चॆप्पुम् वेलै–(सुग्रीव के) यों कहते समय; नीण्टवतुम्–(लम्बोतरा श्रीत्रिविक्रम के अवतार) श्रीराम भी; मारुतियै–मारुति को; निऱै अरुळाल्–सम्पूर्ण कृपा के साथ; उऱ–खूब; नोक्कि–देखकर; नीति वल्लोय्–नीतिशास्त्र-विदग्ध; काण्टि ॲन्निन्–देखोगे तो; कुऱि केट्टि–लक्षण सुन लो; ॲन्न–कहकर; वेऱु कॊण्टु इरुन्तु–अलग ले जाकर रहे और; कळऱल् उऱ्ऱान्–बोलने लगे। ७५१

उस स्थान को पार कर उस तरफ़ और सब ओर एक मास की अवधि तक खोज लगाओ। फिर इधर आ पहुँचो। चलो, जल्दी बिदा लो। सुग्रीव ने जब यह आज्ञा सुनायी, तब विश्वाकार श्रीराम ने मारुति पर कृपा-दृष्टि दौड़ायी। और कहा— नीतिशास्त्रज्ञ ! सीता को देखो तो उसकी पहचान के लक्षण सुन लो। फिर उसे अलग ले जाकर श्रीराम सीताजी के (पादादिकेश) अंग-लक्षण बताने लगे। ७५१

पाऱ्कडऱ् पिऱन्द शॆय्य पवळत्तैप् पऱ्जि यूट्टि
मेऱ्पड मदियऱ् जूट्टि विरहुऱ निऱैन्द नॊय्य
काऱ्ऱै विरल्ह ळॆय कमलमुम् बिऱवुङ् गण्डाल्
एऱ्पिल वॆन्ब दन्ऱि यिणैयडिक् कुवमै यॆन्नो 752

ऐय–भद्र; नॊय्य–कोमल; काल् तकै विरल्कळ्–पैरों की उँगलियाँ; पाल् कटल् पिऱन्त–क्षीराब्धि में उत्पन्न; चॆय्य पवळत्तै–लाल प्रवाल-खण्डों को; पऱ्चि ऊट्टि–लाल लाक्षारस लगाकर; मेल् पट–उनके ऊपर; मतियम् चूट्टि–चन्द्रों को जड़ित कर; विरकु उऱ–शालीनता से युक्त रीति से; निऱैत्त–बनाया गया, ऐसे हैं; कमलमुम्–कमल और; पिऱवुम्–अन्य (उपमेय) वस्तुएँ; कण्टाल्–इनको देखें तो; एऱ्पिल–योग्य नहीं हैं; ॲन्नपतु अन्ऱि–ऐसा कहना छोड़कर; इणै अटिक्कु–चरण-युगल की; उवमै ॲन्नो–उपमेय (वस्तु) क्या है। ७५२

उत्तम वीर ! उसके मृदुल चरण की सुन्दर उँगलियों का लक्षण सुनो। क्षीरसागर में उत्पन्न श्रेष्ठ प्रवालखण्डों का लाक्षारस में सनकर उनके ऊपर चन्द्रों को टिकाकर बहुत ही कुशलता के साथ वे पंक्ति में बनायी गयी हैं। कमल और अन्य ऐसे पदार्थ, सोचने पर, उनके उपमान बनने के लिए योग्य नहीं हैं। यही कहना पड़ेगा। नहीं तो उसके दोनों चरणों के लिए योग्य उपमान कहाँ से मिलेगा ? । ७५२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुऱक्कम् उऱ्ऱार्–स्वर्गगत; मनम् ऍऩ्ऩ–(लोगों के) मन के समान; तुऱै कॅऴु नीर्–घाटों से युक्त धारा वाली कावेरी के जल से; चोणाटु–(समृद्ध) 'चोऴ नाडु' (चोऴ देश); कटन्ताल्–पार करोगे तो; अतऩ् अयले–उसके समीप ही; तॊल्लै–पूर्व-कर्म; मऱक्कम् उऱ्ऱार्–जो भूल चुके हैं, वे; मऱैन्तु उऱैवर्–छिपे-छिपे वास करते होंगे; नीर्–तुम लोग; अ वऴि–उस मार्ग में; वल्लै एकि–शीघ्र जाकर; उऱक्कम् उऱ्ऱार्–निद्रा में रत रहनेवाले; ऍऩ् उऱ्ऱार्–क्या पाये; ऍऩुम् उणर्वित्तॊटुम्–इस समझ के साथ; ऒतुङ्कि–हट जाकर; मणि आर्–रत्न-भरे; ओङ्कल् पिऱक्कम्–पर्वतों के तलों से; उऱ्ऱ–युक्त; मलै नाटु–पर्वत-प्रदेश में; नाटि–खोजकर; पिऱकु–बाद; अकल् तमिऴ् नाट्टिल्–विस्तृत तमिऴनाडु में; पॆयर्तिर्–जाओ। ७४९

स्वर्गगत लोगों के मन के समान कावेरी का जल स्वच्छ है और वह देश पवित्र है, जिसमें यह नदी बहती है। उसके पार्श्व में पूर्व कर्म को जो भूले हुए हैं, वे मुनिवर छिपे-छिपे वास कर रहे हैं। तुम उस मार्ग को अविलम्ब पार कर लो। सुप्त रहनेवाले क्या पायेंगे ? —इस मसल का स्मरण करते हुए आगे रत्नमय उन्नत पर्वतों के देश में देवी का पता लगाओ। उसके बाद विशाल तमिऴ देश में (पाण्ड्य देश में) पहुँच जाओ। ७४९

तॆऩ्ऱमिऴ्नाट् टहऩ्पॊदियिर् ऱिरुमुऩिवऩ् ऱमिऴ्च्चङ्गञ् जेर्हिर् पीरेल्
ऍऩ्ऱुमव ऩुऱैविडमा मादलिऩा ऩम्मलैयै यिडत्तिट् टेहिप्
पॊऩ्ऱिणिन्द पुऩल्पॆरुहुम् पॊरुनैयॆऩुन् दिरुनदिपिऩ् बॊऴिय नाहक्
कऩ्ऱुवळर् तडञ्जारऩ् मयेन्दिरमा नॆडुवरैयुङ् गडलुङ् गाण्डिर् 750

तॆऩ् तमिऴ् नाडु–दाक्षिणात्य तमिऴ देश में; अकल् पॊतियिल्–विशाल 'पॊदिहै' गिरि पर; तिरु मुऩिवऩ्–श्री (अगस्त्य) मुनि के; तमिऴ् चङ्कम्–तमिऴ संघ में; चेर्किऱ्पीरेल्–पहुँचोगे तो; ऍऩ्ऱुम्–सदा; अवऩ् उऱैवु इटम् आम्–उनका रहने का स्थान है वह गिरि; आतलिताल्–इसलिए; अम् मलैयै–उस पर्वत को; इटत्तु इट्टु–बायीं ओर छोड़कर (परिक्रमा करते हुए); एकि–जाकर; पॊऩ् तिणिन्त–स्वर्ण-कणों से भरे; पुऩल् पॆरुकुम्–जल से पूर्ण; पॊरुनै ऍऩुम्–'पॊरुनै' नाम की (ताम्रपर्णी); तिरु नति–श्रीनदी; पिऩ्पु ऒऴिय–पीछे रह जाय, ऐसा आगे जाकर; नाकम् कऩ्ऱु–कलभ; वळर्–जहाँ पलते हैं; तट चारल्–वैसी विशाल तराइयों से युक्त; मयेन्तिरम् आम्–महेन्द्र की; नॆटु वरैयुम्–बड़ी गिरि को और; कटलुम्–समुद्र को; काण्टिर्–देखो (गे)। ७५०

उस देश में "पॊदिहै" का बड़ा पर्वत है। वहीं श्री अगस्त्य मुनि का तमिऴ-संग प्राप्त होगा। वही अगस्त्य का स्थायी वासस्थान है। उसके दाहिनी ओर से आगे जाओ और स्वर्णकण-मिश्रित जल वाली ताम्रपर्णी नाम की नदी को भी छोड़कर आगे बढ़ो। महेन्द्रपर्वत आयगा, जिसकी तराइयों में हाथी के बच्चे बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। उसके पास ही दक्षिणी समुद्र भी रहता है। ७५०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आण्डुकडन् दप्पुऱत्तु मॅप्पुऱत्तु मॊरुतिङ्ग ळवदि याहत्
तेण्डियिवण् वन्दडैदिर् विडैहोडिर् कडिदॆन्नच् चॆप्पुम् वेलै
नीण्डवनु मारुदियै निऱैयरुळा लुऱनोक्कि नीदि वल्लोय्
काण्डियॆनिऱ् कुऱिकेट्टि यॆन्नवेऱु कॊण्डिरुन्दु कळऱ लुऱ्ऱान् 751

आण्टु कटन्तु–उस स्थान को पार करके; अ पुऱत्तुम्–उसके उस तरफ़; ॲ पुऱत्तुम्–सभी ओर; ऒरु तिङ्कळ्–एक महीना; अवति आक–अवधि बनाकर; तेण्टि–अन्वेषण करके; इवण् वन्तु–यहाँ आ; अटैतिर्–पहुँचो; कटितु–अविलम्ब; विटै कोटिर्–बिदा लो; ॲन्न चॆप्पुम् वेलै–(सुग्रीव के) यों कहते समय; नीण्टवनुम्–(लम्बोतरा श्रीत्रिविक्रम के अवतार) श्रीराम भी; मारुतियै–मारुति को; निऱै अरुळाल्–सम्पूर्ण कृपा के साथ; उऱ–खूब; नोक्कि–देखकर; नीति वल्लोय्–नीतिशास्त्र-विदग्ध; काण्टि ॲनिन्–देखोगे तो; कुऱि केट्टि–लक्षण सुन लो; ॲन्न–कहकर; वेऱु कॊण्टु इरुन्तु–अलग ले जाकर रहे और; कळऱल् उऱ्ऱान्–बोलने लगे। ७५१

उस स्थान को पार कर उस तरफ़ और सब ओर एक मास की अवधि तक खोज लगाओ। फिर इधर आ पहुँचो। चलो, जल्दी बिदा लो। सुग्रीव ने जब यह आज्ञा सुनायी, तब विश्वाकार श्रीराम ने मारुति पर कृपा-दृष्टि दौड़ायी। और कहा— नीतिशास्त्रज्ञ ! सीता को देखो तो उसकी पहचान के लक्षण सुन लो। फिर उसे अलग ले जाकर श्रीराम सीताजी के (पादादिकेश) अंग-लक्षण बताने लगे। ७५१

पाऱ्कडऱ् पिऱन्द शॆय्य पवळत्तैप् पऱ्जि यूट्टि
मेऱ्पड मदियऱ् जूट्टि विरहुऱ निऱैन्द नॊय्य
काऱ्ऱहै विरल्ह ळैय कमलमुम् बिऱवुङ् गण्डाल्
एऱ्पिल वॆन्ब दन्ऱि यिणैयडिक् कुवमै यॆन्नो 752

ऐय–भद्र; नॊय्य–कोमल; काल् तकै विरल्कळ्–पैरों की उँगलियाँ; पाल् कटल् पिऱन्त–क्षीराब्धि में उत्पन्न; चॆय्य पवळत्तै–लाल प्रवाल-खण्डों को; पऱ्चि ऊट्टि–लाल लाक्षारस लगाकर; मेल् पट–उनके ऊपर; मतियम् चूट्टि–चन्द्रों को जड़ित कर; विरकु उऱ–शालीनता से युक्त रीति से; निऱैत्त–बनाया गया, ऐसे हैं; कमलमुम्–कमल और; पिऱवुम्–अन्य (उपमेय) वस्तुएँ; कण्टाल्–इनको देखें तो; एऱ्पिल–योग्य नहीं हैं; ॲन्नपतु अन्ऱि–ऐसा कहना छोड़कर; इणै अटिक्कु–चरण-युगल की; उवमै ॲन्नो–उपमेय (वस्तु) क्या है। ७५२

उत्तम वीर ! उसके मृदुल चरण की सुन्दर उँगलियों का लक्षण सुनो। क्षीरसागर में उत्पन्न श्रेष्ठ प्रवालखण्डों का लाक्षारस में सनकर उनके ऊपर चन्द्रों को टिकाकर बहुत ही कुशलता के साथ वे पंक्ति में बनायी गयी हैं। कमल और अन्य ऐसे पदार्थ, सोचने पर, उनके उपमान बनने के लिए योग्य नहीं हैं। यही कहना पड़ेगा। नहीं तो उसके दोनों चरणों के लिए योग्य उपमान कहाँ से मिलेगा ? । ७५२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीमैया युणर्दि यैय निरैवळै महळिर्क् कॅल्लाम्
वाय्मैया लुवमै याह मदियरि पुलवर् वैत्त
आमैया मॅन्ऱ पोदु मल्लत शॊल्लि ऩालुम्
यामयाऴ् मऴलै याडऩ् पुऱवडिक् किऴुक्क मऩ्ऩो 753

ऐय—सौम्य; निरै वळै—पंक्तियों में पहने कंकणों की स्वामिनी; मकळिर्क्कु अॅल्लाम्—सभी स्त्रियों के (उत्चरणों के) लिए; उवमै आक—उपमा के रूप में; मति अरि पुलवर्—अपनी सूझ से सभी समझनेवाले विद्वान्; वाय्मैयाल् वैत्त—सच्चे रूप से जिसका निर्धारण कर चुके हैं; आमैयाम्—कछुआ है; अॅन्ऱ पोतुम्—कहें तब भी; अल्लत—इसके बिना अन्य भी; चॊल्लिऩालुम्—कहें; यामम् याऴ्—अर्धनिशा में सुनायी देनेवाली याऴ (वीणा) के नाद के समान; मऴलैयाऴ् तऩ्—मधुरभाषिणी सीता के; पुऱवटिक्कु—उत्चरणों के लिए; इऴुक्कम्—अगौरव ही है; नी—तुम; मॅयाय्—सच; उणर्ति—मानो। ७५३

महिमावान हनुमान ! पंक्तियों में कंकण पहननेवाली स्त्रियों के उत्चरणों के लिए अपनी बुद्धि से सभी विषयों का ग्रहण कर सकनेवाले विद्वान् लोगों ने कछुए को उपमान निर्दिष्ट किया है। वही कहो, या और कुछ कहो, अर्द्धरात्रि में मन को मोहनेवाली "याऴ" की ध्वनि के समान मधुर-वाणी सीतादेवी के उत्चरणों के लिए ऐसे उपमान कहना उन चरणों का अपमान ही होगा। ७५३

विऩैवरा लरिय कोदै पेदैमॅऩ् कणैक्काऩ् मॅय्य
निऩैवरा लरिय विऩ्ऩ नेर्पडप् पुलवर् पोऱुम्
शिऩैवराल् पहळि यावम् नॅऱ्चिऩै यॅऩ्ऩुऩ् जिऱ्पम्
ऍऩैवराऱ् पहरु मीट्ट याऩुरैत् तिऩ्ब मॅऩ्ऩो 754

मॅय्य—सत्यसंध; विऩैवराल्—चित्रकारों द्वारा; अरिय—चित्रणदुर्लभ; कोतै—केश वाली; पेतै—अबोध देवी की; मॅल्—कोमल; कणैक्काल्—पिण्डलियाँ; निऩैवराल्—अतिशय सूझ वालों के लिए भी; अरिय—उनकी उपमा ढूंढ़ना कठिन हो; इऩ्ऩ—इस प्रकार की हैं; पुलवर्—विद्वान्; नेर् पट—समान कहकर; पोऱुम्—जिनकी प्रशंसा करते हैं; चिऩै वराल्—वे गाभिन 'वराल' मछलियाँ भी; पकळि आवम्—शर-तरकश और; चिऩै नॅल्—धान का गाभा; ऍऩ्ऩुम्—ऐसे; चिऱ्पम्—कथन; ऍऩैवराल् पकरुम्—सबसे कहे जाते हैं; ईट्ट—युक्त भी हैं; याऩ् उरैत्तु—मैं भी कहूँ तो; इऩ्पम् ऍऩ्ऩो—आनन्द कहाँ। ७५४

सत्यवान ! उस सीतादेवी की, जिसके केश का चित्रकारों को चित्र बनाना कठिन है, मृदुल पिंडलियाँ ऐसी हैं जिनका ऊहापोह करनेवाले बड़े चतुर लोग भी उपमान नहीं ढूँढ़ सकते हैं। साधारण रूप से विद्वान् लोग गर्भिणी वराल नामक मछली, तूणीर कोश को और धानसहित (धान के) पौधे आदि की बातें करते हैं। वे तो साधारण रूप से योग्य उपमान हो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सकते हैं। पर उनको मैं दुहराऊँ, इसमें क्या आनन्द मिल सकता है? । ७५४

अरम्बैयॅन् ऱळह मादर् कुऱङ्गिनुक् कमैन्द वॉप्पिन्
वरम्बैयुङ् गडन्द पोदु मऱ्ऱुऱै वहुक्क लामो
नरम्बैयु ममिऴ्द नाऱु नऱवैयु नळिर्नीर्प् पण्णैक्
करुम्बैयुङ् गडन्द शॊल्लाळ् कवार्किदु करुदु कण्डाय् 755

अळकम् मातर्–अलकालंकृत स्त्रियों के; कुऱङ्कितुक्कु–ऊरुओं के लिए; अरम्पै ॲन्ऱु–कदली; अमैन्त–कथित; ॲप्पिन् वरम्पैयुम्–समानता की सीमा को भी; कटन्त पोतु–(सीता के ऊरु) लाँघ गये, तब; मऱ्ऱु उरै–और कोई बात; वकुक्कलामो–कही जा सकती है क्या; नरम्पैयुम्–तन्त्री (वीणा) को; अमिऴ्तम् नाऱुम्–अमृत की मिठास से भरे; नऱवैयुम्–मधु को; नळिर् नीर् पण्णै–शीतल जल-सिंचित खेतों के; करुम्पैयुम्—ईखों के रस को; कटन्त–जिसने अपनी मधुरता में हराया है; चॊल्लाळ्–ऐसी बोली वाली सीतादेवी के; कवार्कु–ऊरुओं के सम्बन्ध में; इतु–यह (मेरा कथन); करुतु–तुम सोच लो; (कण्टाय्–पूरक ध्वनि)। ७५५

अलकशोभिता स्त्रियों के ऊरुओं को कदली वृक्ष से उपमित करते हैं। लेकिन सीता के ऊरु इस उपमा को पार कर गये हैं। तो और कोई उपमान कहना हो सकता है क्या? तंत्री नाद, अमृत-सम मधुर मधु, जल-समृद्ध खेतों में उत्पन्न ईख का रस —इन सबको जिस सीता के वचनों ने हरा दिया है, उसके ऊरु के सौन्दर्य को मेरी बातों से जान लो। ७५५

वाराऴिक् कलशक् कॊङ्गै वञ्जिपोन् मरुङ्गु लाडन्
ताराऴिक् कलैशा रल्हु ऱडङ्गडऱ् कुवमै तक्कोय्
पाराऴिप् पिडरिऱ् ऱाङ्गुम् पान्दळुम् पन्निवॅन् ऱोङ्गुम्
ओराऴित् तेरुङ् गण्ड वुनक्कुना नुरैप्प दॅन्नो 756

तक्कोय्–सुयोग्य; वार्–अँगियाबद्ध; आऴि—चक्रवाक; कलचम्–और कलश-सम; कॊङ्कै–स्तनों और; वञ्चि पोल्–'वञ्जि' नाम की लता के समान; मरुङ्कुलाळ् तन्–कमर से भूषित (सीतादेवी) के; तार्–किंकिणी से अलंकृत; आऴि–गोल-गोल; कलै चार्–मेखला-वलयित; अल्कुल् तट कटऱ्कु–वरांग के विशाल सागर-प्रदेश की; उवमै–उपमा; आऴि पार्–सागर-मेखला पृथ्वी को; पिटरिल् ताङ्कुम्–अपने सिरों पर धारण करनेवाले; पान्तळुम्–शेषनाग को; पन्नि वॅन्ऱु–(और) हिम को जीतकर; ओङ्कुम्–उन्नत रहनेवाले; ओर् आऴि तेरुम्—एक चक्र (सूर्य) के रथ को; कण्ट–जिसने प्रत्यक्ष देखा है, उस; उनक्कु–तुमसे; नान् उरैप्पतु–मैं कहूँ, ऐसा; ॲन्नो–क्या है। ७५६

सुयोग्य! अँगियाबद्ध, चक्रवाक और स्वर्णकलश-सम स्तन और "वंजी" नाम की लता के समान कमर से शोभित सीतादेवी के किंकिणी हारों से अलंकृत भग रूपी बड़े समुद्र का उपमान मैं क्या कहूँ? तुमने समुद्र-मेखला पृथ्वी को अपने सिर पर धरनेवाले आदिशेष का फन देखा है। और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ओस को थमाकर ऊपर उठनेवाले सूर्य के एकचक्र-रथ का पीठ भी देखा है। (तुम जान सकते हो कि सीता का कटि-प्रदेश कैसे इनसे भी सुन्दर है।) ऐसे तुमसे मैं क्या कहूँ ? । ७५६

शट्टहन् दन्नै नोक्कि यारैयुञ् जमैक्कत् तक्काळ्
इट्टिडै यिरुक्कुन् दन्मै यियम्बक्केट् टुणर्दि यॅन्निन्
कट्टुरैत् तुवमै काट्टक् कट्पॉरि कदुवा कैयिल्
तॉट्टवॅर् कुणर लामर् रुण्डॅनुञ् जॉल्लु मिल्लै 757

चट्टकम् तन्नै नोक्कि–रूप-सौन्दर्य देखकर (आदर्श बनाकर); यारैयुम् चमैक्क–कितनी भी बड़ी सुन्दरी की सृष्टि की जा सके; तक्काळ्–ऐसी रूप वाली सीता की; इट्टु इटै–पतली कमर; इरुक्कुम् तन्मै–जैसा रहता है, वह प्रकार; इयम्प केट्टु–मैं कहूँ और तुम सुनो; उणर्ति–और समझो; ऍन्निन्–तो; कट्टु उरैत्तु–निश्चित रूप से कहकर; उवमै काट्ट–उपमा दिखाना हो तो; कण् पॉरि–आँख की इन्द्रिय; कतुवा–देख नहीं सकती; कैयिल् तॉट्ट–हाथ से जिसने स्पर्श किया है; ऍर्कु–उस मुझसे; उणरल् आम्–साध्य हो सकती है; मर्रु उण्टु–अन्यथा, 'है'; ऍन्नुम् चॉल्लुम्–ऐसा कथन; इल्लै–नहीं । ७५७

सीता के रूप को नमूना बनाकर ब्रह्मदेव कितनी ही बड़ी सुन्दरी की सृष्टि कर सकते हैं। ऐसी मनोरम रमणी की छोटी कमर का लक्षण मैं कहूँ और तुम सुनो —यह कठिन है। क्योंकि आँखों से देखा जाय, तभी न कल्पना के सहारे उपमान ढूँढ़ा जा सकता है। सिर्फ़ मैंने स्पर्श करके देखा है। इसलिए मैं कह सकता हूँ कि उसके कमर है। अन्यथा उसकी कमर के अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं है। ७५७

आलिलै पडिवन् दीट्टु मैयनुण् पलहै नॉय्य
पाल्निऱत् तट्टम् वट्टक् कण्णडि पलवु मिन्न
पोलुमॅन् ऱरैत्त पोदुम् पुनैन्दुरै पॉदुमै पार्क्किन्
एलुमॅन् ऱिशैक्कि नेला विदुवयिऱ् ऱियर्कै यिन्नुम् 758

पॉतुमै पार्क्किन्–सामान्य रूप से देखें तो; आल् इलै–वटपत्र; पटिवम् तीट्टुम्–चित्र खींचने के लिए उपयुक्त; ऐय नुण् पलकै–बहुत पतला फलक; नॉय्य–पतली; पाल् निऱम्–दुग्धवर्ण; तट्टम्–(चाँदनी की) थाली; वट्टम् कण्णटि–गोलाकार दर्पण; इन्न पलवुम्–और ऐसी अन्य वस्तुओं; पोलुम्–के समान रहेगा (उदर); ऍन्ऱु उरैत्त पोतुम्–ऐसा कहने पर भी; पुनैन्तुरै–यह सब मनगढ़न्त कथन हैं; एलुम् ऍन्ऱु–(उपमित) हो सकते हैं, ऐसा; इचैक्किन्–कहना चाहें तो; एला–नहीं हो सकते; इतु–यह; वयिऱ्ऱु इयर्कै–उनके उदर की प्रकृति है; इन्नुम्–और । ७५८

साधारण रूप से देखने पर स्त्रियों का उदर वटपत्र से, पतले चित्र-पलक से, बहुत ही पतले दुग्ध-सम श्वेत चाँदी की थाली से और गोल आईने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

से उपमित किया जाता है। लेकिन यह कोरी कल्पना है। वे उसकी समानता कर सकते हैं, ऐसा कहा जायगा क्या ? नहीं। समानता नहीं कर सकते, क्योंकि उसके उदर की प्रकृति ऐसी है। ७५८

शिङ्गलिल् शिऱुहू दाळि नन्दियिन् ऱिरट्पूच् चेर्न्द
पॊङ्गुपॊऱ् ऱॊळैयॆन् ऱालुम् बुल्लिय वुवमैत् तामाल्
अङ्गव ळुन्दि यॊक्कुञ् जुळियॆनक् कणित्त दुण्डाल्
गङ्गैयै नोक्किच् चेऱि कडलिनु नॆडिदु कऱ्ऱोय् 759

कटलिनुम्–सागर से भी; नॆटिनु–विशाल (शास्त्रों के); कऱ्ऱोय्–विद्वान्; चिङ्कल् इल्–सिकुड़न-रहित; चिऱु कूताळि–छोटा 'कूदाली' का फूल; नन्तियिन्–'नॆंदि' नाम के पौधे का; तिरळ् पू–वर्तुलाकार फूल; चेर्न्त–इनमें रहनेवाले; पॊङ्कु पॊत् तॊळै–बड़ा सुन्दर गड्ढा (सा भाग); ऎन्ऱालुम्–कहें तो भी; पुल्लिय उवमैत्तु–क्षुद्र उपमाएँ होगा; चुळि–(गंगा नदी की) भँवर; अवळ्–उसकी; उन्ति ऒक्कुम्–नाभि की समानता करेगी; ऎन–ऐसा; अङ्कु–वहाँ (जब मैंने गंगा पार की तब); कणित्ततु उण्टु–मैंने विचारा था; कङ्कैयै नोक्कि–(इसलिए) गंगा (की भँवर) को देखकर; चेऱि–सोच 'चलो'। ७५९

सागर से भी विशाल विद्या के स्वामी ! सीता की नाभि का उपमान असंकुचित "कूदाली" का फूल, या "नंदिवर्त" नाम के गोल फूल का सुन्दर कटोरा सा भाग कहा जा सकता है। लेकिन वे अल्प उपमान हैं। जब मैंने गंगा पार की तब मेरे मन में यह भाव उठा कि गंगा की भँवर सीता की नाभि की समानता कर सकती है। इसलिए तुम भी गंगा का स्मरण कर उसकी नाभि को पहचान चलो। ७५९

मयिरॊळुक् कॆनवॊन् ऱुण्डाल् वल्लिशेर् वयिऱ्ऱिन् मऱ्ऱॆन्
उयिरॊळुक् कदऱ्कु वेण्डु मुवमैयॊन् ऱुरैक्क वेण्डिन्
शॆयिरिल्शिऱ् ऱिडैया युऱ्ऱ शिऱुहॊडि नुडक्कन् दीरक्
कुयिलुऱुन् दमैय वैत्त कॊळ्हॊम्बॆन् ऱुणर्न्दु कोडि 760

वल्लि चेर्–वल्लरी-सम; वयिऱ्ऱिन्–उदर की; मयिर् ऒळुक्कु–रोमराजी; ऎन ऒन्ऱु उण्टु–ऐसा है; ऎन् उयिर् ऒळुक्कु–मेरे जीवन की ही राजि (रेखा) है; अतऱ्कु–उसकी; वेण्टुम् उवमै–सर्वमान्य उपमा; ऒन्ऱु–एक; उरैक्क वेण्टिनु–कहना हो; चॆयिर् इल्–अनिन्द्य; चिऱु इटैयाय्–क्षीण कमर; उऱ्ऱ–जो बनी; चिऱु कॊटि–छोटी लता का; नुटक्कम् तीर–संकोच छोड़ बढ़े, इस वास्ते; कुयिल् उऱ्ऱतु–खूब गाड़कर; अमैय वैत्त–स्थापित; कॊळ् कॊम्पु–अलान; ऎन्ऱु–ऐसा; कोटि–समझ लो। ७६०

लतासमाना देवी के दिव्य उदर में रोमराजी है। उसको मेरी ही जान का प्रवाह समझो। उसका सर्वमान्य उपमान कहना हो तो वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

असम्भव है। अनिंद्य कमर रूपी छोटी लता अपनी थकावट उतार ले, उसके लिए गड़े हुए आलम्ब के रूप में उसको समझ लो। ७६०

अल्लियून् ऱिडुमॅन्ऱञ्जि यरविन्दन् दुऱन्दाट् कम्बॊन्
वल्लिमून् ऱुळवाऱ् कोल वयिऱ्ऱिन्मऱ् ऱवैयु मार
विल्लिमून् ऱुलहिन् वाऴु मादरुन् दोऱ्ऱ मॅय्म्मै
शॊल्लियून् ऱियवाम् वॅऱ्ऱि वरैयॅऩत् तोन्ऱु मन्ऱे 761

अल्लि–पंखुड़ियाँ; ऊन्ऱिटुम्–चुभेंगी; ऍन्ऱु अञ्चि–ऐसा डरकर; अरविन्तम्–अरविन्द को; तुऱन्ताट्कु–जिसने त्यागा उस सीता के; कोलम् वयिऱ्ऱिल्–मनोहर उदर में; अम् पॊन्–सुन्दर स्वर्ण रंग की; मून्ऱु वल्लि–त्रिवली; उळ–है; अवैयुम्–वे बल; मारन् विल्लि–मन्मथ धनुर्धर द्वारा; मून्ऱु उलकिनुम्–तीनों लोकों में; वाऴुम्–रहनेवाली; मातर्–स्त्रियों का; तोऱ्ऱ–इनसे हारने का; मॅय्म्मै–सत्य समाचार; चॊल्लि–ढिंढोरा पीटकर; ऊन्ऱिय–स्थापित; वॅऱ्ऱि वरै–विजयसूचक लकीरें; आम्–हैं; ऍन–ऐसा; तोन्ऱुम्–विळङ्कुम्–लगती है। ७६१

सीता वही कमला है, जिसने इस डर से कमल छोड़ा कि उसकी पंखुड़ियाँ चुभेंगी और दर्द देंगी। उसके मनोरम उदर में त्रिबली है। वह स्वर्णलता के समान है। वे तीन बल धनुवीर मन्मथ की खींची हुई रेखाएँ हैं, जिनको उसने इस तथ्य को घोषित करने के लिए खींचा था कि तीनों लोकों की वासिनी स्त्रियाँ इस सीता के सामने सौन्दर्य में हार गयीं। ७६१

शॆप्पॆन्बॆन् कलश मॆन्बॆन् शॆव्विळ नीरुन् देर्वॆन्
तुप्पॊन्ऱु तिरळ्शू दॆन्बॆन् शॊल्लुवॆन् ऱुम्बिक् कॊम्बॆत्
तप्पिन्ऱिप् पहलिन् वन्द शक्कर वाह मॆन्बॆन्
ऒप्पॊन्ऱु मुलैक्कुक् काणेन् पलनिनैन् दुळल्वॆ निन्नुम् 762

मुलैक्कु–उरोजों की; ऒप्पु–उपमा; ऒन्ऱुम् काणेन्–कुछ नहीं देखता; चॆप्पु–रत्न की डिबिया; ऍन्पॆन्–कहूँगा; कलचम्–स्वर्ण-कलश; ऍन्पॆन्–कहूँगा; चॆव् इळनीरुम्–लाल डाभ; तेर्वॆन्–विचार करूँगा; तुप्पु ऒन्ऱु–प्रवाळ तराशकर; तिरळ्–गोल बनाया हुआ; चूतु ऍन्पॆन्–जुए का गोटा कहूँगा; तुम्पि–हाथी के; कॊम्पॆ–दन्त-द्वय; चॊल्लुवॆन्–कहूँगा; तप्पु इन्ऱि–बिना नागा के; पकलिल् वन्त–अह (दिन) में आये; चक्करवाकम् ऍन्पॆन्–चक्रवाक कहूँगा; इन्नुम् पल निनैन्तु–और अनेक (उपमाएँ) सोचता; उळल्वॆन्–फिरूँगा। ७६२

स्तनों का कोई उपमान मैं नहीं देखता। इसलिए रत्न-डिबिया कहता हूँ, कलश कहता हूँ, लाल और कच्चे नारियल के फलों को चुनता हूँ और प्रवाल का तराशकर गोल बनाया हुआ गोटा कहता हूँ। कभी गजदन्त-युगल को, कभी दिन में अचूक रीति से आये चक्रवाक को कहता हूँ। और कितने ही अन्य उपमानों को सोचता फिरता हूँ। ७६२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करुम्बुकण् डालुम् कान्शेर् काम्बुकण् डालु मालि
अरुम्बुकण् डारै शोर वळङ्गुवे न्रिव दुण्डो
शुरुम्बुकण् डालुङ् गोदै तोळिणैक् कुवमै शॊल्ल
इरुम्बुकण् डन्नैय नॆञ्ज मॆन्नक्किलै यिशैप्प दॆन्नो 763

करुम्पु कण्टालुम्–ईख को देखते समय और; कान् चेर्–वनों में उत्पन्न; काम्पु कण्टालुम्–बाँस को देखते समय; कण् अरुम्पु–आँखों से निकली; आलि तारै–अश्रुधारा; चोर–गिराते हुए; अळुङ्कुवेन्–दुःखमग्न हो रहा हूँ; अरिवतु उण्टो–(उसको छोड़कर) उपमा जानता हूँ क्या; चुरुम्पु कण्टु–भ्रमर देखकर; आलुम्–जिन पर मँड़राते हुए गुंजारते हैं, उन; कोतै तोळ् इणैक्कु–केशों से भूषित सीता के स्कन्धद्वय की; उवमै चॊल्ल–उपमा कहूँ; ऎन्नक्कु–मेरे; इरुम्पु कण्टन्नैय–लोहे के समान; नॆञ्चम् इलै–मन नहीं है; इचैप्पतु ऎन्नो–फिर कहूँ क्या। ७६३

ईख को देखता हूँ या जंगल में बाँसों को देखता हूँ तो मेरी आँखों से अश्रु की धारा बहती है और मैं उद्विग्न हो जाता हूँ। (ऐसा रोने के सिवा) उसके कन्धों के उपमान को समझ सकता हूँ क्या ? उस सुकेशिनी के दोनों कन्धों की, जिन पर भ्रमर गुंजार करते हैं, उपमा, सोच-समझकर बताने के लिए मेरे पास लोहा-सा दिल नहीं है। फिर मैं क्या कहूँ ? कैसे कहूँ ? । ७६३

मुन्गैये यॊप्प दॊन्रुम् उण्डुमून् रुलहत् तुळ्ळुम्
ऎन्गैये यिळुक्क मन्रे यियम्बिनुङ् गान्द ळॆन्रल्
वन्गैयाळ् मणिक्कै यॆन्रन् मर्रॊन्रै युणर्त्त लन्रि
नन्गैया डडक्कै यामो नलत्तिन्मे न्नलमुण् डामो 764

मून्रु उलकत्तुळ्ळुम्–तीनों में; मुन् कै–अग्रहस्त की; ऒप्पतु–समता करनेवाली; ऒन्रुम्–एक (वस्तु); उण्टु–है; ऎन्कैये–ऐसा कहना ही; इळुक्कम् अन्रे–गलत है न; इयम्पिनुम्–कहें तो भी; मणि कै–उसके सुन्दर अग्रहस्त को; कान्तळ् ऎन्रल्–'कान्दळ' पुष्प कहना; वन्कै–निर्मम वचन है; याळ् ऎन्रल्–'याळ' कहना; मर्रु ऒन्रै उणर्त्तल्–दूसरी किसी वस्तु को कहना होगा; अन्रि–उसके विना; नन् कैयाळ्–सुन्दर हाथों वाली सीता के; तटक्कै आमो–विशाल हस्त होंगे क्या (वे); नलत्तिन् मेल्–सुन्दरता से बढ़कर; नलम् उण्टामो–सुन्दर हो सकता है क्या। ७६४

तीनों लोकों में सीता के (अग्र) हस्त से उपमित होने योग्य कोई चीज़ है —यह कहना ही दोषपूर्ण है न ? इस मजबूरी से उसके सुन्दर हाथों को "कांदळ" पुष्प कहना निर्मम वचन है। "याळ" कहूँ तो वह किसी और बात का संकेत हो जायेगा। इसके सिवा वे देवी के हस्तों के उपमान हो सकेंगे क्या ? सौन्दर्य से बढ़कर कोई चीज़ सुन्दर हो सकती है कहीं ? । ७६४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एलक्को डीन्ऱ पिण्डि यिळन्दळिर् किडक्क याणर्क्
कोलक्कर् पहत्तिन् कामर् कुऴैनऱुङ् गमल मॅन्बू
नूलॉक्कु मरुङ्गु लाड नूबुर मलम्बु कोलक्
कालुक्कुत् तॉलैयु मॅन्ऱाऱ् कैक्कॉप्पु वैक्क लामो 765

पिण्टि—अशोक के; एल कोटु—सुबासित शाखाओं के; ईन्ऱ—दिए गये; इळम् तळिर्—छोटे पल्लव; किटक्क—एक ओर रहें; याणर् कोलम्—अनोखे सौंदर्य वाले; कऱ्पकत्तिन्—कल्पतरु के; कामर् कुऴै—मनोहर पत्ते और; कमलम् नऱुम् मॅन् पू—कमल के सुगन्धित और कोमल फूल; नूल् ऑक्कुम्—सूत्र (सूक्ष्म); मरुङ्कुलाळ् तन्—कमर वाली सीता के; नूपुरम् अलम्पुम्—जिन पर से नूपुर नाद करते हैं, उन; कोलम् कालुक्कुम्—अतिसुन्दर चरणों के सामने; तॉलैयुम्—हारकर हट जायँगे; ऍन्ऱाल्—तो; कैक्कु ऑप्पु—उसके हाथों की उपमा; वैक्कल्—कहना; आमो—(ठीक) होगा क्या। ७६५

अशोक-तरु की सुबासित शाखाओं में उगे पल्लव एक ओर रहें। नित-नवीन कल्पतरु के प्यारे पल्लव और सुगन्धित और कोमल कमल के फूल भी और सूत्र-सी कमर वाली सीता के नूपुर-क्वणन-द्योतित सुन्दर चरणों की उपमा नहीं बन सकते और हारकर पिछड़ जाते। तो उनको सीता के हस्तों से उपमित करना युक्त हो सकता है क्या ? । ७६५

वॅळ्ळिय मुऱुवऱ् चॅव्वाय् विळङ्गिऴै यिळम्बॉऱ् कॉम्बिन्
वळ्ळुहिर्क् कुवमै नम्मान् मयर्वऱ वहुक्क लामो
ऍळ्ळुदिर् नीरे मूक्कै यॅन्ऱुकॉण् डिवऱि यॅन्ऱुम्
किळ्ळैहण् मुरुक्किन् पूवैक् किऴिक्कुमे लुरैक्क लामो 766

वॅळ्ळिय मुऱुवल्—श्वेत दशन; चॅव्वाय्—अरुण अधर; विळङ्कु इऴै—(कान्ति के साथ) रहनेवाले आभूषण; इळ पॉन्—(इनसे युक्त) बाल, सुन्दर; कॉम्पिन्—पुष्पलता-सी जानकी के; वळ् उकिर्क्कु—तीक्ष्ण नखों की; उवमै—उपमा; नम्मान्—हमसे; मयर्वु अऱ—असंशय रीति से; वकुक्कलामो—दी जा सकती है क्या; किळ्ळैकळ्—तोते; नीरे—तुम; मूक्कै—हमारी चोंचों की; ऍळ्ळुतिर्—अवहेलना (इस बात पर कि हमारी चोंचें सीताजी के नखों की बराबरी नहीं कर सकतीं) करते हो; ऍन्ऱु कॉण्टु—ऐसा मानकर; इवऱि—गुस्सा करके; मुरुक्किन् पूवै—(काँटेदार) पलाशफूलों को; ऍन्ऱुम्—सदा; किऴिक्कुमेल्—चीरते हैं तो; उरैक्कलामो—(तोतों की चोंचों को सीताजी के नखों की उपमा) कह सकते हैं क्या। ७६६

श्वेत दन्त, लाल अधर और कान्तिपूर्ण आभरण से सुशोभित बाल स्वर्णलता, जानकी के तेज़ नखों की उपमा हम जैसों से भ्रमरहित रीति से रची जा सकती है क्या ? शुक, कंटक-पलाश-पुष्पों को सीता के अधर मानकर चोंचों से नोचकर फाड़ते हैं —वह इसलिए कि वे उनसे इस बात से क्रुद्ध हैं कि वे पुष्प उनकी चोंचों की निन्दा करते हैं। तो शुक-चोंच को उपमान कह सकते हैं क्या ? । ७६६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अङ्गैयु मडियुङ् गण्डा लरविन्द निनैयु मापोल्
शॅङ्गदिर् शिदरि नीलञ् जॅरुक्किय दॅय्व वाट्कण्
मङ्गैदन् कळुत्तै नोक्कि वळरिळङ् गमुहुम् वारिच्
चङ्गमु निनैदि यायि नवैयॅन्रु तुणिदि तक्कोय् 767

तक्कोय्–सुयोग्य; अम् कैयुम्–सुन्दर हाथों और; अटियुम् कण्टाल्–चरणों को देखें तो; अरविन्तम् निनैयुमा पोल्–जैसे अरविन्द याद आते हैं, वैसे ही; चॅम् कतिर् चितरि–लाल किरणें बिखेरते हुए; नीलम् चॅरुक्किय–नीले रंग से युक्त; तॅय्वम्–दिव्य; वाळ् कण् मङ्कै–तलवार-सी आँखों वाली सीता के; कळुत्तै नोक्कि–ग्रीवा को देखकर; वळर् इळ कमुकुम्–ऊँचा उगनेवाले सुपारी के पेड़ और; वारि–समुद्र में उत्पन्न; चङ्कमुम्–शंख को; निनैति आयिन्–(उपमेय) सोचोगे तो; नवै ॲन्रु–गलती है, ऐसा; तुणिति–निश्चय कर लो। ७६७

सुयोग्य मारुति ! सीता के सुन्दर हस्त और चरणों को देखें तो अरविन्द का स्मरण जैसे हो आता है, वैसे ही लाल कान्ति बिखेरते हुए नीले रंग वाले दिव्य तलवार-सम नेत्रों वाली सीता के कण्ठ को देखकर ऊँचे उगनेवाले गुवाक तरु और समुद्र में मिलनेवाले शंख को स्मरण करोगे तो समझ लो कि वे दोषपूर्ण हैं। ७६७

पवळमुङ् गिडैयुङ् गॊव्वैप् पळनुम्बैङ् गुमुदप् पोदुम्
तुवळ्विल विलवम् कोब मुरुक्कॅन्रित् तॊडक्कञ् जालत्
तवळमॅन् ऱुरैक्कुम् वण्णञ् जिवन्दुदॅन् ऱदुम्बु माहिन्
कुवळैयुण् कण्णि वण्ण वायदु कुरियु मः(ह्)दे 768

कुवळै उण् कण्णि–कुवलय-सम और काजल-लगी हुई आँखों वाली सीताजी का; वण्णम् वाय् अतु–सुन्दर मुख; पवळमुम्–प्रवाल; किटैयुम्–'किडै' (नाम की जल-लता) और; कॊव्वै पळनुम्–बिम्बफल; पै कुमत पोतुम्–ताज़ा कुमुद-सुमन और; तुवळ्वु इल–जिसमें सिकुड़न नहीं पड़ा हो; इलवम्–वह सेमर का फूल; कोपम्–इन्द्रगोप (कीड़े); मुरुक्कु–काँटेदार पलाश के फूल; ॲन्ऱ इ तॊटक्कम्–ये आदि; चाल तवळम्–(इसके सामने) धवल ही हैं; ॲन्ऱु उरैक्कुम् वण्णम्–ऐसा कहने योग्य रीति से; चिवन्तु–लाल बना; तेन् ततुम्पुम्–और शहद से भरा रहता है; आकिन्–तो; कुरियुम् अ.ंतु–निर्देश (उपमान) भी वही है। ७६८

नीलोत्पल-निभ और अञ्जनरंजित आँखों वाली सीता का मुख (अधर) इतना लाल है कि उसके सामने प्रवाल "किडै" (खुखरी ?) नाम की लता का तना, बिम्बफल, ताज़ा कुमुद, नवीन सेमर का फूल, इन्द्रगोप कीड़ा आदि सभी उसके सामने श्वेत कहे जायँगे। वह मधुभरा और शोभायमान है। बल्कि उसका उपमान भी वही है। ७६८

शिवन्ददो रमुद मिल्लैत् तेनिल्लै युळवॅन् ऱालुम्
कवर्न्दपो दन्ऱि युळ्ळ निनैप्पवोर् कळिप्पु नल्हा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पवर्न्दवा णुदलि नाडन् पवळवाय्क् कुवमै पावित्
तुवन्दपो दुवन्द वण्ण मुरैत्तपो दुरैत्त दामो 769

चिवन्ततु ओर–लाल रंग का कोई; अमुतम् इल्लै–अमृत नहीं; तेन् इल्लै–शहद नहीं; उळ ऍन्ऱालुम्–हों तो भी; कवर्न्त पोतु अन्ऱि–उठाकर खाये विना; उळ्ळम् निनैप्प–मन में सोचने मात्र से; ओर् कळिप्पु–अतुल आनन्द; नल्का–नहीं देंगे; पवर्न्त–सुनिर्मित; वाळ् नुतलिन्नाळ् तन्–उज्ज्वल ललाट वाली सीता के; पवळम् वाय्क्कु–प्रवाल-सम मुख (अधरों) का; उवमै पावित्तु–उपमान सोचकर; उवन्त पोतु–जब मन हुआ तब; उवन्त वण्णम्–अपनी कल्पना के अनुरूप; उरैत्त पोतु–कहा जाय तब; उरैत्ततु–वैसा सही कहा गया; आमो–हो जायगा क्या। ७६९

लाल रंग का अमृत नहीं होता। वैसा शहद भी नहीं होता। अगर होंगे तो भी उनको उठाकर विना खाये स्मरणमात्र से वे आनन्द नहीं देते। सुरचित, प्रकाशमय ललाट वाली सीता के प्रवालाधरों का उपमान सोचकर जैसा मन को रुचता है, वैसा कहने से ठीक तरह से कहना हो जायेगा क्या ? । ७६९

मुल्लैयु मुरुन्दु मुत्तु मुऱुवलॅन् ऱुरैत्त पोदु
शॊल्लैयु ममुदुम् बालुन् तेनुमॅन् ऱुरैक्कत् तोन्ऱुम्
अल्लदॊन् ऱाव दिल्लै यमुदिऱ्कु मुवमै युण्डो
वल्लैये लऱिन्दु कोडि माऱिला वाऱु शाल्ऱोय् 770

माऱु इला आऱु–अनुपम अनेक प्रकारों से; चान्ऱोय्–श्रेष्ठ; मुऱुवल्–सीताजी के दाँत; मुल्लैयुम्–कुन्दकलियाँ और; मुरुन्तुम्–मोरपंख (की रीढ़ का) सफ़ेद मूल; मुत्तुम्–और मोती हैं; ऍन्ऱु उरैत्त पोतु–ऐसा (उपमा) कहने पर; चॊल्लैयुम्–उसके वचन को; अमुतुम्–अमृत और; पालुम्–दूध और; तेनुम्–शहद को; ऍन्ऱु उरैक्क–(उपमान के रूप में) कहने को; तोन्ऱुम्–मन में सूझेगा; अल्लतु–(कहने का रीतिपालन मात्र) होने के सिवा; आवतु ऒन्ऱु इल्लै–सधता कुछ नहीं; अमुतिऱ्कुम् उवमै उण्टो–अमृत का भी उपमान है क्या; वल्लैयेल्–सामर्थ्य हो तो; अऱिन्तु कोटि–जान लो। ७७०

अनुपम अनेक प्रकार से श्रेष्ठ ! सीता के दाँत कुन्दकलियों और मोर-पंख के सफ़ेद नोक की समानता करेंगे। तो उसकी वाणी की तुलना में अमृत, दूध और शहद को कहने का विचार उठेगा। फिर कहने के लिए कहना छोड़कर (उपमा का) कोई कार्य सिद्ध नहीं होगा। अमृत का भी कोई उपमान है क्या ? तुममें सामर्थ्य हो तो तुम ही दाँतों का सौन्दर्य अनुमान कर लो। ७७०

ओदियु मॅळ्ळुन् दॊळ्ळैक् कुमिऴमूक् कॊक्कु मॅन्ऱाल्
शोदिशॅय् पॊन्नु मिन्नु मणियुम्बोऱ् ऱुळङ्गित् तोन्ऱा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एदुवु मिल्लै वल्ला रॅळुदुवार्क् कॅळुद वॉण्णा
नीदियै नोक्कि नीये निनैदिया नॅडिदु काण्बाय् 771

नॅटितु काण्पाय्–दीर्घदर्शी; ओतियुम्–गिरगिट (की नाक); अॅळ्ळुम्–तिल का फूल और; तॉळ्ळै कुमिळम्–रंध्रसहित 'कुमिल' नामक फूल; मूक्कु–सीता की नाक की; ऑक्कुम् अॅन्ऱाल्–समानता करेंगे कहें तो; चोति चॅय्–ज्योतिमय; पॉन्नुम्–स्वर्ण; मिन्नुम्–चमकती; मणियुम् पोल्–मणि की तरह; तुळङ्कि तोन्ऱा–(वे) प्रभापूर्ण नहीं दिखते; एतुवुम् इल्लै–उनमें हेतु भी नहीं है; अॅळुतुवार् वल्लार्क्कु–चित्र खींचने में समर्थ (चितेरे) के लिए भी; अॅळुत ऑण्णा–जिसका चित्र लिखना असम्भव है, उस; नीतियै नोक्कि–प्रकार को देखकर; नीये निनैति–तुम ही कल्पना कर लो। ७७१

दीर्घदर्शी ! गिरगिट, तिल का फूल, रन्ध्रसहित "कुमिळ" नामक फूल आदि देवी की नासिका की समानता करेंगे —अगर ऐसा कहें तो वे कान्तिमय स्वर्ण और चमकनेवाली मणियों के समान शोभासहित नहीं दिखते। उनमें ऐसी शोभा का कोई हेतु भी नहीं है। इस नासिका की सुन्दरता के, जिसका चतुर चितेरा भी चित्रण नहीं कर सकता, प्रकार को तुम ही नेक रीति से सोच-समझ लो। ७७१

वळ्ळैहत् तरिहै वाम मयिर्विनैक् करुवि यॅन्नप्
पिळ्ळैह ळुरैत्त वॉप्पैप् पॅरियव रुरैक्किऱ् पित्ताम्
वॅळ्ळिवॅण् डोडु शॅय्द विळुत्तवम् विळैन्द दॅन्ऱे
उळ्ळुवि युलहुक् कॅल्ला मुवमैक्कु मुवमै युण्डो 772

वळ्ळै–'वळ्ळै' (नाम की जललता के) पत्र; कत्तरिकै–कैंची (रूपी); वामम्–अच्छा; मयिर् विनै करुवि–बाल बनाने का औजार; अॅन्त–ऐसा; पिळ्ळैकळ्–बालकों के; उरैत्त–कथित; ऑप्पै–उपमान को; पॅरियवर्–बड़े विद्वान् लोग; उरैक्किन्–कहें तो; पित्तु आम्–पागलपन होगा; वॅळ्ळि वॅण् तोटु–अत्यधिक श्वेत कर्णाभरण; चॅय्त–कृत; विळु तवम्–महान तप ने; विळैत्ततु–पैदा किया; अॅन्ऱे उळ्ळुति–ऐसा ही समझो; उलकुक्कु अॅल्लाम्–सारे लोकों के; उवमैक्कुम्–उपमान का भी; उवमै उण्टो–अन्य उपमान हो सकता है क्या। ७७२

स्त्रियों के कानों को "वळ्ळै" नाम की जललता के पत्र के साथ और बाल काटनेवाली कैंची के साथ लोग उपमित करते हैं। ये बालकों के कहे उपमान हैं। बुद्धिमान बड़े लोग अगर ऐसा कहें तो वह पागलपन है। श्वेत चाँदी के ताटंकों ने कड़ी तपस्या की थी; वे ही सीता के कान के रूप में पैदा हो गयी हैं। सीता के कान दुनिया की सभी वस्तुओं के लिए उपमान हैं। उनके लिए और कोई उपमान हो सकता है क्या ? । ७७२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॅरियवाय्प् परवै यॊव्वा पिऱिदॊन्ऱु निनैन्दु पेश
उरियवा यॊरुव रुळ्ळत् तॊडुङ्गुव वल्ल वुण्मै
तॅरियवा यिरक्का नोक्किऱ् ऱेवर्क्कुन् देव नॅन्नक्
करियवाय् वॅळिय वाहुम् वाट्टडङ् गण्ग ळम्मा 773

तेवर्क्कुम् तेवन्–देवदेव (श्रीनारायण); ऍन्नं–जैसा; करिय आय्–काली बनकर; वॅळिय आकुम्–श्वेत भी रहनेवाली; वाळ् तट कण्कळ्–तलवार-सम विशाल आँखों को; उण्मै तॅरिय–सच्चाई जानने हेतु; आयिरम् काल् नोक्किन्–सहस्र बार देखें तो; पॅरिय आय्–विशाल; परवै–समुद्र भी; ऒव्वा–उपमान नहीं बन सकता; पिऱितु ऒन्ऱु–फिर अन्य कोई; निनैन्तु पेच–सोचकर कहने योग्य; ऒरुवर् उळ्ळत्तु–किसी के मन में; ऒटुङ्कुव अल्ल–समानेवाले नहीं हैं; अम्मा–मैया री। ७७३

देवाधिदेव विष्णु के समान नीले और श्वेत रंग से युक्त तलवार-सम उसकी बड़ी आँखों का सच्चा रूप देखने के इरादे से सहस्र बार देखो, तो भी वे विशाल सागर के उपमान को मान ही नहीं सकेंगी। उनकी आँखें ऐसी नहीं, जिनको कोई पूर्ण रूप से मनोगत करके अन्य उपमान द्वारा वर्णित कर सकें। ७७३

केळॊक्कि नन्ऱि यॊन्ऱु किळत्तिनाऱ् कीळ्मैत् तामे
कोळॊक्कु मॅन्नि नल्लाऱ् कुऱियॊप्पक् कूऱिऱ् ऱन्ऱाल्
वाळॊक्कुम् वडिक्क णाडन् पुरुवत्तुक् कुवमै वैक्किन्
ताळॊक्क वळैन्दु निऱ्प विरण्डिल्लै यनङ्ग शाबम् 774

वाळ् ऒक्कुम्–तलवार-सदृश; वटि कणाळ्–सुन्दर आँखों वाली; तन् पुरुवत्तुक्कु–की भौंहों की; उवमै वैक्किन्–उपमा कहें तो; केळ् ऒक्किन् अन्ऱि–परस्पर सम वे अपने ही समान हैं, इसके सिवा; ऒन्ऱु–अन्य किसी वस्तु को; किळत्तिनाल्–उपमान कहें तो; कीळ्मैत्तु आम्–अल्प ही होगा; कोळ् ऒक्कुम्–हमारी (मनोधर्म) कल्पना में समानता होगी; ऍन्निन् अल्लाल्–उसे छोड़कर; कुऱि ऒप्प–उपमा-धर्म के अनुसार; कूऱिऱु अन्ऱाल्–कहा गया नहीं होगा; ताळ् ऒक्क–दोनों छोर समान हैं; वळैन्तु निऱ्प–ऐसा झुके हुए जो हैं; इरण्टु अनङ्क चापम्–वे दो अनंगचाप; इल्लै–संसार में (प्राप्य) नहीं हैं। ७७४

तलवार के समान तीक्ष्ण नेत्रों वाली सीताजी की भौंहों की उपमा रचना चाहें तो कठिन है। क्योंकि परस्पर सम वे अपने ही समान हैं। दूसरी वस्तु को लेकर उपमित करने का प्रयास नीच काम है। ऐसा करना अपने-अपने विचार के अनुरूप कथन हो सकता है, पर सचमुच उपमा का कार्य अर्थपूर्ण नहीं होगा। दोनों ओर के दण्ड सुडौल रूप से झुके रहें—ऐसे दो अनंगचाप दुनिया में नहीं हैं। (इसलिए अनंगचाप भी कहा नहीं जा सकता।) । ७७४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नन्नाळु नळिन नाणु मुहत्तिनळ् नुदलै नाडिप्
पन्नाळुम् पन्नि याऱ्ऱा मदियॅनुम् पण्ब दाहि
मुन्नाळिन् मुळैवॅण् डिङ्गण् मुळनाळुङ् गुऱैये याहि
ॲन्नाळुम् वळरा दॅन्नि निऱैयॊक्कु मियल्बिऱ् ऱामे 775

मुन् नाळिल्–(शुक्ल पक्ष के) आरम्भ के दिनों में; मुळै–उदित; वॅळ् तिङ्कळ्–श्वेत (कला-चाँद); नल् नाळ्–अच्छे दिवा में; नळिनमुम्–कमल भी; नाणुम्–शरमायेगा; मुकत्तितळ्–ऐसी आनना; नुतलै–के ललाट को; नाटि–जाँच करके; पल् नाळुम् पन्नि–अनेक काल वही विचारकर; आऱ्ऱा–सह न सककर; मति ॲनुम् पण्पतु आकि–(चिन्तक) (पूर्ण-) चन्द्र कहलाने की योग्यता पाकर (भी); मुळु नाळुम् कुऱैये आकि–पूर्णिमा के दिन में भी कला से हीन रहता है; ॲ नाळुम् वळरातु–कभी भी पूर्ण नहीं बनता; ॲन्निन्–तो; इऱै ऒक्कुम्–तो जरा भी समानता करने का; इयल्पिऱ्ऱ आम् ए–भाग्यवान होगा क्या। ७७५

शुक्लपक्ष का कलाचन्द्र और मध्याह्न में खिला हुआ कमल भी जिसको देखकर लज्जा से युक्त होते हैं, वैसे मुख वाली सीता के ललाट के सौन्दर्य को अनेक दिन तक चन्द्र सोचता रहा और उसे असह्य लगा। वह चन्द्र तो कहाता है, लेकिन पूर्णिमा के दिन भी सारी कलाओं से पूर्ण नहीं रहता। तो वह सीता के ललाट की कुछ-कुछ ही समता कर सकेगा। (चन्द्र को तमिळ में "मदि" कहते हैं। मदि का अर्थ सतत चिन्तन है। वह चन्द्र सीता के ललाट का हमेशा चिन्तन करता रहा— इसलिए उसका "मदि" यानी 'चिन्तक' नाम उपयुक्त है।)। ७७५

वन्नैबव रिल्लै यन्ऱे वन्नत्तुणाम् वन्द पिन्नै
अन्नैयन्न वॅन्निनुन् दान्द मळहुक्को रळिवुण् डाहा
वित्तैशॅयक् कुळन्ऱ वल्ल विदिशॅय विळैन्द नीलम्
पुन्नैमणि यळह मॅन्ऱुम् पुदुमैया मुवमै पूणा 776

नाम्–हमारे; वन्नत्तुळ् वन्त पिन्नै–वन में आने के पश्चात्; वन्नैपवर् इल्लै–केशश्रृंगार करनेवाला नहीं है; अन्ऱे–न; ताम् अन्नैयन्न ॲन्निनुम्–केश ऐसे रहे तो भी; तम् अळकुक्कु–अपनी मनोहारिता में; ओर् अळिवु उण्टाका–कुछ कमी नहीं रखते; वित्तै चॅय कुळन्ऱ अल्ल–कलाकृत्य के आधार पर घुँघराले नहीं बने; विति चॅय–ब्रह्मा के ऐसा सृजन करने से; विळैन्त–ऐसे बने हैं; नीलम् मणि पुन्नै–नीली मणि के समान (ललाट पर हिलनेवाले); अळकम्–अलक; ॲन्ऱुम् पुतुमै आम्–नित-नवीन हैं; उवमै पूणा–किसी भी उपमान को धारण नहीं करेंगे। ७७६

हमारे वन में आने के बाद सीता के अलकों को सँवारने-सजाने वाले कोई नहीं हैं न ? ऐसी स्थिति में भी उनकी रमणीयता में कोई कमी नहीं हुई। क्योंकि उनका घुँघुरालापन कृत्रिम रूप से आया नहीं है। लेकिन ब्रह्मदेव की सृष्टि में ही वे केश ऐसे बने हैं। ऐसे नीले रत्न के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समान ललाट के ऊपर के वे अलक नित-नवीन हैं। वे किसी भी उपमान को सह नहीं सकते। ७७६

कॊण्डलिन् कुऴवि याम्बल् कुऩिशिलै वळ्ळै कॊऱ्ऱक्
कॆण्डैयॊण् डरळ मॆऩ्ऱिक् केण्मैयिऱ् किडन्द तिङ्गण्
मण्डिल वदऩ मॆऩ्ऱु वैत्तऩन् विदियो ऩीयप्
पुण्डरी हत्तै युऱ्ऱ पॊऴुददु पॊरुन्दित् तेर्वाय् 777

कॊण्टलिन् कुऴवि–मेघखण्ड; आम्पल्–लाल कुमुद; कुऩि चिलै–झुके धनुष; वळ्ळै–'वळ्ळै' (जल-लता) के पत्र; कॊऱ्ऱम् कॆण्टै–मत्त (कॆण्डै नाम की) मछलियाँ; ऒऴ् तरळम्–उज्ज्वल मोती; ऎऩ्ऱु–ऐसे; इक् केण्मैय–इनसे उपमेय वस्तुएँ; किटन्त–जिस पर रहती हैं; तिङ्कळ् मण्टिलम्–चन्द्रमण्डल को; वितियोऩ्–विधाता ने; वततम् ऎऩ्ऱु–वदन के नाम पर; वैत्तऩन्–रचित कर रखा; नी–तुम; अ पुण्टरीकत्तै–उस (मुख-) कमल को; उऱ्ऱ पॊऴुतु–जब पास से देखोगे तब; अतु पॊरुन्ति–उस (मेरे कथन) को सही लगता हुआ; तेर्वाय्–जानोगे। ७७७

ब्रह्मदेव ने ऐसे एक चन्द्रमण्डल को ही सीता के श्रीमुख के रूप में रच लिया था, जिसमें मेघखण्ड, रक्त कुमुद, वक्र धनुष, "वळ्ळै" लता, मत्त मत्स्य, कान्तिमय मुक्ताएँ आदि उपमान योग्य वस्तुएँ रहती हों। जब तुम उस कमल-मुख को पास से देखोगे तो समझ लोगे कि मैं सही वर्णन ही कर रहा हूँ। ७७७

कारिऩैक् कऴित्तुक् कट्टिक् कळ्ळिऩो डावि यूट्टिप्
पेरिरुट् पिऴम्बु तोय्त्तु नॆऱिवुऱीइप् पिऱङ्गु कऱ्ऱैच्
चोर्हुऴऱ् ऱॊहुदि यॆऩ्ऱु चुम्मैशॆय् दऩैय दम्मा
नेर्मैयैप् परुमै शॆय्द निऱैनऱुङ् गून्द ऩीत्तम् 778

नेर्मैयै–सूक्ष्मता को; परुमै चॆय्त–घनीभूत जो किये गये; निऱै नऱु–वे सुबासपूर्ण; कून्तल् नीत्तम्–केशों की राशि; कारिऩै–जल-भरे काले मेघ को; कऴित्तु कट्टि–काटकर, बाँधकर; कळ्ळिऩोटु–मधु के साथ; आवि–(अगरु आदि का) धुआँ; ऊट्टि–मिलाकर; पेर् इरुळ् पिऴम्पु–घने अन्धकार-पुंज में; तोय्त्तु–निमग्न करके; नॆऱिवु उऱीई–कुंचित करके; पिऱङ्कु–शोभायमान; कऱ्ऱै–घना; चोर् कुऴल् तॊकुति–लटकनेवाले केश का जाल; ऎऩ्ऱु–कहकर; चुम्मै चॆय्तु अऩैयतु–भार बनाया गया हो ऐसी है। ७७८

उसकी सुबासित केशराशि सूक्ष्म की घनीभूत वस्तु है। काले मेघ को चीरकर बाल बनाये गये और उनकी राशि बाँधी गयी। उसमें सुरा और धुआँ चढ़ाया गया। फिर उसको घने अन्धकार-पुञ्ज में सन लिया। फिर उसमें कुंचन रचित कर लटकनेवाला बनाकर केश नाम दिया गया और वह सीता का केश-भार बन गया (उसका केश वैसा ही है)। ७७८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुऴल्पडैत् तियाऴैच् चॆय्दु कुयिलॊडु किळियुङ् गूट्टि
मऴलैयुम् पिऱवुन् दन्दु वडित्तहैम् मलरिन् मेलान्
इऴैपॊरु मिडैयि नाड निन्शॊऱ्क ळियैयच् चॆय्दान्
पिऴैयिल दुवमै काट्टप् पॆऱ्ऱिलन् पॆऱुङ्गॊ लिन्नुम् 779

कुऴल् पटैत्तु–वंशी बनाकर; याऴै चॆय्तु–'याऴ' बनाकर; कुयिलॊटु किळियुम् कूट्टि–और कोयल के साथ शुक की सृष्टि करके; मऴलैयुम् पिऱवुम्–मधुर तुतली बोली और अन्य ऐसी मधुर वस्तुएँ; तन्तु–बनाकर; वटित्त–अभ्यस्त; कै–हाथों वाले; मलरिन् मेलान्–कमल पर आसीन (ब्रह्मा ने); इऴै पॊरुम्–सूत्र से लड़नेवाली; इटैयिनाळ् तन्–कमर वाली सीता के; इन् चॊऱ्कळ्–मधुर-भाषण को; इयैय–युक्त रीति से; चॆय्तान्–बनाया; पिऴै इलतु–निर्दोष; उवमै काट्ट–उपमान दिखाने (बनाने); पॆऱ्ऱिलन्–नहीं पाये; इन्नुम् पॆऱुम् कॊल्–आगे ही बनायेंगे क्या। ७७९

ब्रह्मा के हस्तों ने "वंशी" बनायी, "याऴ" बनायी और कोयल और शुक की सृष्टि की। अस्पष्ट तुतली वाणी का भी सृजन किया। इस तरह कमलासन ब्रह्मदेव के हाथ (सीता की वाणी से उपमित होने योग्य वस्तुओं की सृष्टि के) अभ्यस्त थे। सूत्र को भी पराजित करनेवाली पतली कमर से शोभित जानकी की मधुर वाणी तब जाकर बनायी। तो भी वह उनको निर्दोष रीति से उपमान बनने की शक्ति नहीं दे सका। आगे भी उपमानयोग्य वस्तु बनायेगा क्या ? —हम नहीं जानते। ७७९

वानिन्ऱ वुलह मून्ऱुम् वरम्बिन्ऱि वळर्न्द वेनुम्
नानिन्ऱ शुवैमऱ् ऱॊन्ऱो वमुदन्ऱि नल्ल दिल्लै
मीनिन्ऱ कण्णि नाडन् मॆन्मॊऴिक् कुवमै वेण्डिन्
तेनॊन्ऱो वमिऴ्द मॊन्ऱो ववैशॆविक् किन्बऱ् जॆय्या 780

वान् निन्ऱ उलकम् मून्ऱुम्–स्वर्ग आदि स्थायी त्रिलोक; वरम्पु इन्ऱि–असीम रूप से; वळर्न्त एनुम्–फैल गये हैं तो भी; मीन् निन्ऱ–मछली-सम; कण्णिनाळ् तन्–आँखों वाली सीता की; मॆल् मॊऴिक्कु–कोमल वाणी का; उवमै वेण्टिन्–उपमान चाहो तो; तेन् ऒन्ऱो–या तो शहद एक है; अमिऴ्तम् ऒन्ऱो–या दूध एक है; अवै–(पर) वे; चॆविक्कु–कानों को; इन्पम् चॆय्या–आनन्द नहीं दे सकते; मऱ्ऱॊन्ऱु अमुतो–अन्य देवामृत तो; ना निन्ऱ–जिह्वा का; चुवै अन्ऱि–स्वाद छोड़कर; नल्लतु इल्लै–अन्य गुण से युक्त नहीं है। ७८०

स्वर्ग आदि तीनों लोक असीम रीति से विस्तृत हैं। तो भी मीनाक्षी सीता की मृदुल वाणी के वचनों का उपमान कहना चाहें तो शहद एक है और दूध एक है। लेकिन वे श्रुतिमधुर नहीं हैं। और एक अमृत है, वह भी जीभ को मधुर लग सकता है, पर दूसरा गुण उसमें नहीं है। ७८०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पूवरु मऴलै यन्नम् पुन्नैमडप् पिडियॅन् ऱिन्न
तेवरु मरुळत् तक्क शॅलविन्न वॅन्निनुन् देऱेन्
पावरुङ् गिऴमैत् तॉन्मैप् परुणिदर् पहरुम् बत्ति
नावरुङ् गिळविच् चॅव्वि नडैवरु नडैय णल्लोय् 781

नल्लोय्–सत्पुरुष; पू वरुम्–कमल के फूलों के साथ सम्पर्क-रखनेवाले; मऴलै–मधुरभाषी; अन्नम्–हंस; पुन्नै–सुन्दर; मटम् पिटि–बाल-हथिनी; ऍन्ऱ इन्न–आदि ऐसे; तेवरुम् मरुळ तक्क–देवों को भी आश्चर्य में डालनेवाली; चॅलविन्न–चाल वाले हैं; ऍन्निनुम्–तो भी; तेऱेन्–उपमान नहीं चुनूँगा; पा वरुम् किळमै–(आशु) कविता बनाने की शक्ति के अधिकारी; तॉन्मै परुणितर्–सनातन और श्रेष्ठ विद्वान्; पकरुम्–जो रचना करते हैं; पत्ति–लगातार; ना वरुम् किळवि–जिह्वा से निकलनेवाली उस वाणी की; चॅव्वि नटै–प्रवाह-प्रसादपूर्ण शैली की; वरुम्–समानता करनेवाली; नटैयळ्–चाल की है। ७८१

भलेमानुस, कमल पर रहनेवाले और अस्पष्ट बोली वाले हंस, सुन्दर बाल-हथिनियाँ आदि की चाल ऐसी है कि देव भी देखकर चकित हो जाते हैं। तो भी मैं उनको उपमान मानने में तृप्ति नहीं पाता। आशु कविता बनानेवाले ज्ञानवृद्ध विद्वानों की जीभ से निकलनेवाले वाक्यों की रचना-शैली की समानता करनेवाली चाल से युक्त है सीता। ७८१

ऍन्निऱ मुरैक्केन् मावि निळन्दळिर् मुदिरु मऱ्ऱैप्
पॉन्निऱङ् गरुहु मॅन्ऱान् मणिनिऱ मुवमै पोदा
मिन्निर् नाणि यॅङ्गुम् वॅळिप्पडा दॉळिक्कुम् वेण्डिन्
तन्निऱन् दाने योक्कु मलर्निऱञ् जमळ्क्कु मन्ऱे 782

मावित्–आम्र का; इळम् तळिर्–कोमल पल्लव; मुतिरुम्–(सीता के शरीर की आभा के सामने) पका दिखेगा; पॉन् निऱम्–स्वर्ण का रंग भी; करुकुम्–काला दिखेगा; ऍन्ऱाल्–तो; मणि निऱम्–रत्नों की प्रभा में; उवमै पोता–उपमान बनने का दम नहीं; मिन् निऱम्–बिजली का रंग; नाणि–लजाकर; ऍङ्कुम् वॅळिप्पटातु–कहीं भी प्रकट न होकर; ऑळिक्कुम्–छिप जायगा; मलर् निऱम्–कमलपुष्प का रंग; चमळ्क्कुम्–खेद करेगा; ऍ निऱम् उरैक्केन्–कौन सा रंग बताऊँ; वेण्टिन्–कहना ही चाहिए तो; तन् निऱम्–उसकी ही शोभा (का रंग); तान्ने ऑक्कुम्–खुद उसी से उपमेय है। ७८२

आम्रपल्लव, उसके रंग के सामने पके और फीके लगते हैं। स्वर्ण का रंग काला लगता है, तो रत्न की उपमा योग्य छवि नहीं दिखा सकती। बिजली का रंग लजाकर कहीं प्रकट नहीं होगा और छिप जायगा। कमल की छटा पछताकर पीछे हट जायगी। तो कौन सा रंग कहूँ मैं ? उसका रंग उसी के रंग के समान है। ७८२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मङ्गैय रिवळै यॊप्पार् मऱ्ऱिल रॆन्नुम् वण्णम्
शङ्गैयि लुळ्ळन् दाने शान्ऱॆनक् कॊण्डु शान्ऱोय्
अङ्गव णिलैमै यॆल्ला मळन्दऱिन् दरुहु शार्न्दु
तिङ्गळ्वाण् मुहत्ति नाट्कुच् चॆप्पॆनप् पिन्नुम् जॆप्पुम् 783

चान्ऱोय्–श्रेष्ठ मारुति; इवळै ऒप्पार्–इसकी समानता करनेवाली; मऱ्ऱु मङ्कैयर्–कोई अन्य रमणियाँ; इलर्–नहीं; ऎन्नुम् वण्णम्–ऐसा कहने योग्य रीति से; चङ्कै इल्–संशयरहित; उळ्ळम् तान्–अपने ही मन को; चान्ऱु ऎन कॊण्टु–प्रमाण मानकर; अङ्कु–वहाँ; अवळ् निलैमै ऎल्लाम्–उसकी स्थिति सभी; अळन्तु अऱिन्तु–परखकर, समझकर; अरुकु चार्न्तु–समीप जाकर; तिङ्कळ्–चन्द्र-सम; वाळ् मुकत्तिनाट्कु–और उज्ज्वल मुख वाली उससे; चॆप्पु–कहो; ऎन–कहकर; पिन्नुम्–फिर भी; चॆप्पुम्–श्रीराम बोले। ७८३

श्रेष्ठ गुण वाले ! इसकी समानता करनेवाली और कोई स्त्री नहीं है। इस प्रकार अपने अशंकित मन को प्रमाण मानकर सीताजी को ढूँढ़ लो। वहाँ उसकी स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर, हो सके तो पास जाओ और चन्द्रानना से ये बातें कहो। यह कहने के बाद श्रीराम यों बोले। ७८३

मुन्नैनाण् मुनियॊडुम् मुदियनीर् मिदिलैवाय्च्
चॆन्निनीण् मालैयान् वेळ्विका णियशॆल
अन्नमा डुन्दुऱैक् करुहुनिन् ऱाडनैक्
कन्निमा डत्तिडैक् कण्डदुम् कळ्ऱुवाय् 784

मुन्नै नाळ्–पहले किसी दिन; मुनियॊटुम्–विश्वामित्र मुनि के साथ; मुतिय नीर्–पूर्ण-जल; मितिलै वाय्–मिथिला में; चॆन्नि–सिर पर; नीळ् मालैयान्–बड़ी माला धारण करनेवाले (जनक) का; वेळ्वि काणिय–यज्ञ देखने; नान् चॆल–जब मैं गया तब; अन्नम् आटु–जहाँ हंस खेल रहे थे, उस; तुऱैक्कु अरुकु–(कृत्रिम) जलाशय के पास; कन्नि माटत्तिटै–कन्या-सौध पर; निन्ऱाळ् तनै–स्थित उसको; कण्टतुम्–जो मैंने देखा; कळ्ऱुवाय्–वह (समाचार) कहो। ७८४

कभी पहले मैं मुनि विश्वामित्र के साथ जलसमृद्ध मिथिला में मालाधारी सिर के महाराजा जनक के यज्ञ को देखने गया। तब उस जलाशय के पास, जिसमें हंस क्रीडा कर रहे थे, "कन्यासौध" पर सीता खड़ी थी। उसको मैंने जो देखा, वह बात उससे कहो। ७८४

वरैशॆय्दाळ् विल्लिऱुत् तवत्तमा मुनियॊडुम्
विरशिन्ना ऩल्लनॆल् विडुवल्या नुयिरॆन्नाक्
करैशॆया वेलैयिऱ् पॆरियका दलडॆरिन्
दुरैशॆय्दा ळः(ह्)दॆला मुणरनी युरैशॆय्वाय् 785

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करै चॅया वेलैयिन्–अपार समुद्र-सम; पॅरिय कातलळ्–अतिगहन प्रेम करनेवाली; वरै चॅय् विल् ताळ्–(मेरु) पर्वत-सम धनु का दण्ड; इऱुत्तवन्–तोड़नेवाला; अ मा मुनियॉटुम्–उस महान (कौशिक) मुनि के साथ; विरचितान्–जो आया; अल्लनेल्–वह नहीं हो तो; यान् उयिरै विटुवल्–मैं अपना प्राण त्याग दूँगी; अॅता–ऐसा; तॅरिन्तु–समझदारी से विचारकर; उरै चॅय्ताळ्–(उसने) वचन कहा; अ.ं.तु अॅलाम्–वह सब; उणर–समझाते हुए; नी–तुम; उरै चॅय्वाय्–कहो। ७८५

सीता का प्रेम अपार सागर-सम विशाल है। उसने खूब सोचकर प्रण किया कि अगर पर्वत-धनु का भंजक उस दिव्य मुनि के साथ आया हुआ नहीं होगा तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगी। वह समाचार समझाकर कहो। ७८५

चूळिमाल् यानैयिन् ऱुणैमरुप् पिणैयॅनक्
केळिला वनमुलैक् किरिशुमन् ऱिडैवदोर्
वाळिवान् मिन्निळङ् गॉडियिन्वन् दाळैयन्
ऱाळिया नरशवैक् कण्डदुम् मऱैहुवाय् 786

चूळि माल्–मुखपट्ट से अलंकृत बड़े; यानैयिन्–गज के; तुणै मरुप्पु इणै अॅन–परस्पर सम दन्त-द्वय के समान; केळ् इला–पर उनसे जो उपमेय नहीं; वनम्–मनोरम; मुलै किरि–स्तनगिरियों को; चुमन्तु–ढोते हुए; इटैवतु–जो बल खाती है; ओर वान् मिन्–आकाश की एक बिजली की; इळ कॉटियिन्–एक लता के समान; वन्ताळै–आती हुई को; अन्ऱु–उस दिन; आळियान्–चक्रवर्ती (जनक) की; अरचवै–राजसभा में; कण्टतुम्–मेरा देखना भी; अऱैकुवाय्–कहना। ७८६

मैंने सीता को चक्रवर्ती जनक की राजसभा में उस दिन देखा, जब वह मुखपट्टालंकृत गजराज के दन्तद्वय-सम बल्कि उनसे अतुल्य स्तन-गिरियों को ढोने के कारण बल खाती हुई आकाश की अनुपम बिजली की बाललता-सदृश आ रही थी। ७८६

मुन्बुना नरिहिला मुळिनॅडुङ् गानिले
अॅन्बिने पोदुवान् निनैदियो वेळैनी
इन्बमा यारुयिर्क् किनियैया यिनैयिनित्
तुन्बमाय् मुडिदियो वॅन्ऱदुञ् जॉल्लुवाय् 787

ऐळै–अबोध; नी–तुम; मुन्पु–पहले; नान्–मैं; अऱिकिला–जिसको नहीं जानता; मुळि नॅटु–झुलसे, विशाल; कानिले–वन में; अॅन् पिने–मेरे पीछे; पोतुवान्–आने का; निनैतियो–विचार रखती हो क्या; इन्पम् आय्–(अब तक) सुख देनेवाली रहकर; आर् उयिर्क्कु इनियै आयिनै–प्राण-प्यारी रहीं; इनि–आगे; तुन्पम् आय्–दुःख (दायी) बनकर; मुटियियो–बन चुकोगी क्या; अॅन्ऱतुम्–ऐसा मेरा कहना भी; चॉल्लुवाय्–उससे कहो। ७८७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"अबोध ! जला-भुना जंगल मेरे लिए अपरिचित है। उस बड़े जंगल में मेरे पीछे आने की बात सोचती हो क्या ? अब तक तुम आनन्ददायिनी रहीं, प्राणप्यारी रहीं। आगे दुःख-कारण बन चुकोगी क्या ?" यह मैंने उससे जो कहा वह उसे बताओ। ७८७

आऩपे ररशिऴुन् दडविशेर् वायुऩक्
कियाऩला दऩवॅला मिऩियवो विऩियॅऩा
मीऩुला नॅडुमलर्क् कण्णिऩीर् विऴुविऴुन्
दूऩिला वुयिरिऩ्वॅन् दयर्वदु मुरैशॅय्वाय् 788

आऩ पेर् अरचु–तुम्हारा जो बना वह साम्राज्य; इऴुऩ्तु–खोकर; अटवि चेर्वाय्–वन जानेवाले; इऩि–आगे; यान् अलाऩ अॅलाम्–मेरे विना सभी; उऩक्कु इऩियवो–तुम्हारे लिए मीठे होंगे क्या; अॅऩा–ऐसा; कॊटुमै कूऱि–निष्ठुरता का वचन कहकर; मीऩ् उलाम्–मछली-सी; नॅटु मलर्–आयत कमल-सम; कण्णिऩ् नीर् विऴु–आँखों से आँसू बहने देते हुए; विऴुऩ्तु–नीचे गिरकर; ऊऩ् निला उयिरिऩ्–शरीर में न टिकनेवाली जान के समान; वॅन्तु–जलकर; अयर्वतुम्–उसका छटपटाना भी; उरै चॅय्वाय्–उससे कहो। ७८८

तब सीता ने कहा कि अपना जो हुआ, उस राज्य को खोकर जंगल जानेवाले ! आगे मुझसे रहित सभी वस्तुएँ सुखदायिनी हो रहेंगी क्या ! यह आर्तवचन कहते हुए उसने मछली के समान चंचल और आयत कमल-सम आँखों से आँसू बहाये और नीचे गिर गयी। शरीर छोड़कर जाने को उद्यत प्राणों के समान छटपटायी और दुःखतप्त होकर शिथिल हुई। यह सब बात उसे स्मरण कराओ। ७८८

मल्लऩ्मा नहर्दुऱऩ् देहुनाण् मदितॊडुम्
कल्लिऩ्मा मदिऩ्मणिक् कडैहडऩ् दिडुदऩ्मुऩ्
अॅल्लैतीर् वरियवॅङ् गाऩम्या दोवॅऩच्
चॊल्लिऩा ळः(ह्)दॅला मुणरनी शॊल्लुवाय् 789

मल्लल् मा नकर्–सर्वसमृद्ध बड़े नगर (अयोध्या) को; तुऱऩ्तु–त्यागकर; एकुम् नाळ्—(वन) जाने के दिन; मति तॊटुम्–चन्द्रस्पर्शी; कल्लिऩ् मा मतिल्–पत्थरों के बड़े प्राचीरों के; मणि कटै–रत्नमय गोद्वार को; कटऩ्तिटुतऩ् मुऩ्–पार करने के पूर्व ही; अॅल्लै तीर्वु अरिय–असीम; वॅम् काऩम्–भयंकर वन; यातो–कौन सा है; अॅऩ–ऐसा; चॊल्लिताळ्–पूछा (उसने); अ.ःतु अॅलाम्–वह सब; नी–तुम; उणर चॊल्लुवाय्–समझाकर कहो। ७८९

जब हम सर्वसमृद्ध, विशाल अयोध्या नगर छोड़कर जाने लगे तब चन्द्रस्पर्शी विशाल प्रस्तरप्राचीरों के गोद्वार को पार करने से पूर्व ही उसने प्रश्न किया कि असीम भयंकर जंगल कौन सा है ? उसका वह प्रश्न करना उसे समझाकर कहो। ७८९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इऩैयवा रुरैशैया विऩिदिऩे हुदियॆऩा
वऩैयुमा मणिनऩ्मो दिरमळित् तऱिञनिऩ्
विऩैयॆला मुडिहॆऩा विडैहॊडुत् तुदवलुम्
पुऩैयुम्वार् कऴलिऩा नरुळॊडुम् पोयिऩाऩ् 790

इऩैय आऱु–इस रीति से; उरै चॆया–बातें करके; इऩितिऩ्–सुख से; एकुति ऎऩा–चलो कहकर; मा मणि वऩैयुम्–उत्तम रत्न-जड़े; नल् मोतिरम्–श्रेष्ठ मुँदरी को; अळित्तु–देकर; अऱिञ–विद्वान्; निऩ् विऩै ऎलाम्–तुम्हारे सारे काम; मुटिक–पूरे हों; ऎऩा–कहकर; विटै कॊटुत्तु उतवलुम्–बिदा देकर कृपा दिखायी तो; पुऩैयुम् वार् कऴलिऩाऩ्–धृत पायल वाले चरणों के श्रीराम की; अरुळॊटुम्–कृपा को पुरस्सर करके; पोयिऩाऩ्–(हनुमान) चला। ७९०

श्रीराम ने हनुमान से ये सारे अभिज्ञान-समाचार कहे; 'सुख से जाओ' कहकर आशीर्वाद दिये। फिर श्रेष्ठ रत्नजटित मुँदरी उसके हाथ में धर कर उन्होंने कहा कि विज्ञ ! तुम्हारे कार्य सिद्ध हों ! यह कहकर बिदा दी। तब हनुमान सबन्ध पायलधारी श्रीराम की आज्ञा लेकर उनकी कृपा को पुरस्सर करके चल पड़ा। ७९०

अङ्गदक् कुरिशिलो डडुशिऩत् तुळवराम्
वॆङ्गदत् तलैवरुम् विरिहडऱ् पडैयॊडुम्
पॊङ्गुविऱ् ऱलैवरैत् तॊऴुदुमुऩ् पोयिऩार्
शॆङ्गदिर्च् चॆल्वऩैप् पणिवुरुञ् जॆऩ्ऩियार् 791

अङ्कतऩ् कुरिचिलोटु–कुमार अंगद के साथ; अटु चिऩत्तु–संहारक क्रोधी; उळवर् आम्–वीर; वॆम् कतम्–(और) भयंकर आवेगपूर्ण; तलैवरुम्–यूथप; चॆम् कतिर् चॆल्वऩै–लाल किरणमाली के पुत्र (सुग्रीव) के आगे; पणिवुरुम्–झुके हुए; चॆऩ्ऩियार्–सिरों वाले होकर; पॊङ्कु विल् तलैवरै–अतिश्रेष्ठ धनुवीरों को; तॊऴुतु–नमस्कृत करके; विरिकटल्–विशाल सागर-सम; पटैयॊटुम्–सेना के साथ; मुऩ् पोयिऩार्–आगे गये। ७९१

अंगद के साथ संहारक क्रोधशील अन्य आवेगपूर्ण भयंकर वानर वीर लाल किरणमाली सूर्य के पुत्र को नमस्कार करके, और श्रेष्ठ धनुवीर श्रीराम और लक्ष्मण के आगे सिर झुकाकर प्रणमन करने के बाद विशाल सागर-सम वानर-सेना लेकर प्रस्थान कर गये। ७९१

कुडदि शैक्कण् णिडबऩ् कुबेरऩ्वाळ्, वडदि शैक्कट् चदवलि वाशवऩ्
इडदि शैक्कण् विऩ्दऩ् विऱऱ्ऱरु, पडैयॊ डुऱ्ऱुप् पडर्हॆऩप् पऩ्ऩिऩाऩ् 792

कुट तिचैक्कण्–पश्चिम दिशा में; इटपऩ्–ऋषभ; कुपेरऩ् वाळ्–कुबेराबाद; वट तिचैक्कण्–उत्तर दिशा में; चतवलि–शतबली और; वाचवऩ् इटम्–वासवी; तिचैक्कण–(पूर्व) दिशा में; विऩ्तऩ्–विन्द; विऱल् तरु–विजयदायिनी; पटैयॊटु उऱ्ऱु–सेना को लेकर; पटर्क–चलें; ऎऩ–ऐसा; पऩ्ऩिऩाऩ्–कहा। ७९२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"पश्चिम दिशा में ऋषभ, कुबेर-दिशा (उत्तर) में शतबली, इन्द्र-दिशा (पूरब) में विंद विजयशील दो वॅळ्ळम् सेना को लेकर चलें।" —सुग्रीव ने यह आज्ञा सुनायी। ७९२

वॅऱ्ऱि वानर वॅळ्ळ मिरण्डॊडुञ्, जुऱ्ऱि योडित् तुरुवि यॊरुमदि
मुऱ्ऱु ऱादमुन् मुऱ्ऱुदि रिव्विडैक्, कॊऱ्ऱ वाहैयि नीरॅऩक् कूऱिऩान् 793

कॊऱ्ऱम् वाकैयिऩीर्–विजयी और 'वाहै' माला के धारण योग्य वीर; वॅऱ्ऱि वानरम्–विजयशील वानर; वॅळ्ळम् इरण्टुटऩ्–दो 'वॅळ्ळम्' (संख्या) के साथ; चुऱ्ऱि ओटि–घूम दौड़कर; तुरुवि–खूब खोज लगाकर; ऒरु मति–एक मास के; मुऱ्ऱुऱात मुऩ्–पूरा होने से पूर्व; इ इटै–यहाँ पर; मुऱ्ऱुतिर्–आ जाओ; ऎऩ कूऱिऩान्–ऐसा (सुग्रीव ने अन्य वानर वीरों से) कहा। ७९३

"विजय पाकर 'वाहै' की माला पहनने की क्षमता रखनेवाले वीर! तुम दो-दो 'वॅळ्ळम्' सेना के साथ जाओ। सब स्थानों में जाओ और ढूँढ़ो। एक मास के पूरा होने से पूर्व ही यहाँ लौट आ जाओ।" —सुग्रीव ने यह दृढ़ आज्ञा सुना दी। ७९३

13. पिलम् पुक्कु नीङ्गु पडलम् (बिल-प्रवेश व निर्गमन पटल)

पोयिऩार् पोयपिऩ् पुऱऩॅडुन् दिशैहडो, ऱेयिऩा ऩिरविहा दलऩुमे यिऩपॊरुट्
कायिऩा रवरुमङ् गऩ्ऩना ळवदियिऱ्, ऱायिऩा रुलहिऩैत् तहैनॅडुन् दाऩैयार् 794

पोयिऩार–वे सब चले गये; पोय पिऩ्–जाने के बाद; इरवि कातलऩुम्–रविपुत्र ने भी; पुऱम् नॅटु तिचैकळ् तोऱु–(दक्षिण से) इतर सभी लम्बी दिशाओं में; एयिऩाऩ्–आज्ञा देकर भेजा; एयित पॊरुट्टु–आज्ञा-पालन-रत; आयिऩार्–होकर; उलकिऩै–भूमि को; तकै–रोकने में समर्थ; नॅटु ताऩैयार्–बड़ी सेना वाले; अवरुम्–वे वानर-यूथप भी; अऩ्ऩ नाळ्–उतने दिनों की; अवतियिल्–अवधि का ध्यान करते हुए; तायिऩार्–भाग चले। ७९४

अंगदादि वीर, सुग्रीव की आज्ञा लेकर चले गये। उनके जाने के बाद सूर्यसूनु ने अन्य दिशाओं में जानेवाले वीरों को भी बिदा कर भेजा। वे भी राजाज्ञा पर सीतान्वेषण के काम में प्रवृत्त हो जाने लगे। उनके पास सारे संसार को रोक सकनेवाली बलवान सेना थी। वे निश्चित अवधि के अन्दर आने के विचार से जल्दी जाने लगे। ७९४

कुऩ्ऱिशैत् तऩवॅऩक् कुववुतोळ् वलियिऩार्
मिऩ्ऱिशैत् तिडुमिडैक् कॊडियैऩा डिऩर्विराय्
वऩ्ऱिशैप् पडरुमा रॊऴियवण् डमिऴुडैत्
तॅऩ्ऱिशैच् चॅऩ्ऱुळार् तिऱऩॅडुत् तुरैशॅय्वाम् 795

कुऩ्ऱु इचैतुऩत–पर्वत ही लगे हैं ऐसा; कुववु तोळिऩाऩ्–पुष्ट कन्धों वाले; मिऩ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिचैत्तिटम्–विद्युत् की भ्रान्ति उत्पन्न करनेवाली; इटै कॊटि–कमर वाली, लता-सी सीता को; नाटित्तर् विराय्–खोजनेवाले बनकर; वल् तिचै पटरुम्–अन्य दिशाओं में जो गये; आऱु ऒऴिय–उनका प्रकार छोड़कर; वण् तमिऴ् उटै–समृद्ध तमिऴ भाषा जहाँ प्रचलित है; तॆन् तिचै–उस दक्षिण दिशा में; चॆन्ऱु उळार्–जो गये उनका; तिऱन्–सामर्थ्य; ऎट्टुत्तु–लेकर; उरै चॆय्वाम्–बखानेंगे। ७९५

पर्वत-सम उनके कन्धे थे। और वे भुजबली विद्युत् को भ्रमित करनेवाली कमर से भूषित पुष्पलता-सी सीता की खोज में गये। हम उनकी बात छोड़ देंगे, जो दक्षिणेतर दिशाओं में गये। और तमिऴ-भाषी दक्षिण-दिशागामी वानर वीरों की बात कहेंगे। ७९५

शिन्दुरा हत्तॊडुन् दिरण्मणिच् चुडर्शॆऱिन्
दन्दिवा नत्तितिनिन् ऱविर्दला नरविन्नो
डिन्दिया ऱॆय्दला निऱैवन्मा मौलिपोल्
विन्दैना हत्तिन्मा डॆय्दिनार् वॆय्दिनाल् 796

चिन्तु राकत्तॊटुम्–सिन्दूर कणों के साथ; तिरळ् मणि चुटर्–वर्तुल रत्नों की कान्ति; चॆरिन्तु–मिश्रित हो; अन्ति वानत्तितन्–सन्ध्या-गगन के समान; निन्ऱु अविर्तलान्–शोभायमान है, इसलिए; अरविन्नोटु–सर्पों के साथ; इन्तु याऱु ऎय्तलान्–चन्द्र और आकाशगंगा भी है, इसलिए; इऱैवन् मा मौलि पोल्–परमेश्वर के जटाजूट के समान; विन्तै नाकत्तिन्–विन्ध्यपर्वत के; माटु–पार्श्व में; वॆय्तिनाल्–जल्दी; ऎय्तिनार्–जा पहुँचे। ७९६

वे विन्ध्यपर्वत के पास सवेग गये। विन्ध्यपर्वत शिवजी के बड़े जटाजूट के समान था। क्योंकि सिन्दूर और वर्तुल माणिक्यों की प्रभा के कारण सन्ध्यागगन के समान था। उस पर (शिवजी पर जैसे) सर्प, चन्द्र आकाश-गंगा थी। ७९६

अन्नॆडुङ् गुन्ऱमो डविर्मणिच् चिहरमुम्
पॊन्नॆडुङ् गॊडुमुडिप् पुरैहळुम् पुडैहळुम्
नन्नॆडुन् दाळ्वरै नाडिनार् नवैयिलार्
पन्नॆडुङ् गालमा मॆन्नवोर् पहलिडै 797

नवै इलार्–अनिन्द्य वे; अ नॆटु कुन्ऱमोटु–उस ऊँचे पर्वत के साथ; अविर् मणि चिकरमुम्–कान्तियुक्त रत्नों से पूर्ण शिखरों; पॊन् नॆटु कॊटु मुटि–सुन्दर उन बड़े शिखरों पर रहनेवाली; पुरैकळुम्–गुहाओं; पुटैकळुम्–और पास के स्थानों; नल् नॆटु ताळ्वरै–सुन्दर विशाल तराइयों में; ओर् पकलिटै–एक दिन; पल् नॆटु कालम् आम्–अनेक दिन हों; ऎन्न–ऐसा; नाटिनार्–खोजा। ७९७

अनिंद्य उन वीरों ने उस उन्नत विन्ध्यपर्वत पर उज्ज्वल रत्नमय शिखरों, उन सुन्दर शिखरों में पायी जानेवाली गुहाओं, पार्श्वों और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मनोरम तराइयों में एक दिन खोजा। उस एक दिन में इतना काम हो गया कि अनेक दिनों का काम हो गया हो, ऐसा लगा। ७९७

मल्लन्मा आलमोर् मऱुवुऱा वहैयिन्नच्
चिल्ललो दियैयिरुन् दुऱैविडन् देडुवार्
पुल्लिन्ना रुलहिन्नैप् पोदुविला वहैयिन्नाल्
अॅल्लैमा कडल्हळे याहुमा ऱॅय्दिन्नार् 798

मा कटल्कळे–बड़े समुद्र ही; अॅल्लै आकुम्–उपमान (सीमा) हैं; आऱु–इस प्रकार; अॅय्तिन्नार्–जो चले; मल्लल् मा आलम्–(वे) समृद्ध भूमिदेवी; ओर् मऱु उऱा–किंचित भी दोषयुक्त न हो; वकैयिन्–इस प्रकार अवतरित; अ चिल् अल् ओति–उन स्वर्णबन्धनयुक्त केश वाली सीताजी; इरुन्त–जहाँ ठहरीं, उस; उऱैविटम् ऐ–वासस्थान को; तेटुवार्–खोजते हुए; उलकिन्नै–सारी पृथ्वी पर; पोंतु इला वकैयिन्नाल्–अन्यों के लिए भी सम-स्थान न हो, ऐसा; अॅय्तिन्नार्–व्याप गये। ७९८

पृथ्वी की सीमाएँ, जो सागर हैं, उनके ही समान थे, वे वानर वीर। वे सर्वसमृद्ध भूदेवी को दोषहीन बनाने के लिए अवतरित सुन्दर शिरोभूषण-सज्जित अलका-भूषित सीतादेवी के स्थान को खोजते हुए सारे संसार में इस तरह फैले कि दूसरों के साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं रह गया। ७९८

विण्डुपो यिऴिवर्मे निमिर्वर्विण् पडर्वर्वेर्
उण्डमा मरनिन्नम् मलैयिन्वा युऱैयुन्नीर्
मण्डुपा रदनिन्वा ऴुयिर्हळम् मदियिन्नार्
कण्डिला दन्नवयन् कण्डिला दन्नहॊलाम् 799

अ मतियिन्नार्–सुमति वे; विण्टु–अलग-अलग दल बनकर; पोय् इऴिवर–नीचे की ओर जाते; मेल् निमिर्वार्–ऊपर उठते; विण् पटर्वर्–आकाश में उड़ते; वेर् उण्ट–जड़-द्वारा जल लेनेवाले; मा मरनिन्–बड़े तरुओं और; अ मलैयिन् वाय्–उस पर्वत पर; उऱैयुम् नीर् मण्टु–जमा होकर रहनेवाले जलाशयों से भरे; पार् अतनिन्–स्थलों में; वाऴ्–वास करनेवाले; उयिर्–जीव; कण्टिलातत–जिनको उन्होंने नहीं देखा हो, ऐसे हों तो; अयन् कण्टिलातत आम्–वे, वे ही होंगे जिनको अजदेव ने नहीं बनाया होगा। ७९९

बुद्धिशाली वीर, कभी अलग-अलग दलों में जाते, कभी नीचे उतरते, कभी चढ़कर ऊपर जाते थे, कभी आकाश में उछलते —इस तरह वे गये। (जड़ों के द्वारा जल सोखनेवाले) पादपों से भरे उस पर्वत पर जलाशयों से भरे थलों पर रहनेवाले अगर कोई जीव हों जिनको उन्होंने नहीं देखा, तो वे ही होंगे जिनको ब्रह्मा ने नहीं बनाया था। (यानी उन्होंने सभी जीवों को देख लिया।)। ७९९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एहिऩार् योशऩै येळॊ डेऴुपार्
शेकरत् तॆऩ्ऱिशैक् कडिदु शॆल्हिऩ्ऱार्
मेहमा लैयिऩॊडुम् विरवि मेदियिऩ्
नाहुशेर् नरुमदै याऱु नण्णिऩार् 800

पार् चेकरम्–पृथ्वी का शिरोभूषण-स्वरूप; तॆऩ् तिचै–दक्षिणी दिशा में; कटिदु चॆल्किऩ्ऱार्–तेज जानेवाले वे; एऴॊटु एऴु–सात और सात (चौदह); योचऩै–योजन; एकिऩार्–चले; मेतियिऩ् नाकु–भैंसों की पड़ियों; मेकम् मालैयिऩॊटुम्–मेघमालाओं के साथ; विरवि चेर्–जहाँ मिली रहती हैं; नरुमतै आऱु–उस नर्मदा नदी पर; नण्णिऩार्–आये। ८००

दक्षिण दिशा भूमि का शिरोभूषण है। उस दिशा में वे चौदह योजन जाकर नर्मदा नदी के तीर पर आये जहाँ छोटी आयु की भैंसें, काले मेघों के साथ मिश्रित रहती हैं। ८००

अऩ्ऩमा डिडङ्गळु ममरर् नाडियर्
तुऩ्ऩिया डिडङ्गळुऩ् दुऱक्क मेयवर्
मुऩ्ऩिया डिडङ्गळुम् जुरुम्बु मूशुदेऩ्
पऩ्ऩिया डिडङ्गळुम् बरन्दु शुऱ्ऱिऩार् 801

अऩ्ऩम् आटु इटङ्कळुम्–हंसों के क्रीडा-स्थलों; अमरर् नाटियर्–देवलोक-वासिनियों के; तुऩ्ऩि आटु–मिलकर स्नान करने योग्य; इटङ्कळुम्–स्थानों; तुऱक्कम् मेयवर्–स्वर्गवासी देवों के; मुऩ्ऩि आटु इटङ्कळुम्–चाह के साथ आकर जहाँ संचार करते हैं, उन स्थलों; चुरुम्पु–भ्रमर; मूचु तेऩ्–फूलों पर मँड़रानेवाली मधुमक्खियाँ; पऩ्ऩि आटु–भन्नाते हुए जहाँ उड़ती रहती हैं; इटङ्कळुम्–उन स्थानों में; परऩ्ऩु–व्यापकर; चुऱ्ऱिऩार्–घूमे (घूमकर देखा उन्होंने)। ८०१

हंसों के क्रीडा-स्थलों, देवांगनाओं के स्नान-घाटों, स्वर्ग-वासियों के संचार-स्थलों और उन स्थलों में जहाँ भ्रमर और मधुमक्खियाँ भनभनाते हुए उड़ती हैं —सभी स्थानों में वे ढूँढ़ते चले। ८०१

पॆऱलरुऩ् दॆरिवैयै नाडुम् बॆऱ्ऱियार्
अऱऩऱुङ् गूऩ्दलु मळह वण्डुशूऴ्
निऱैनरुऩ् दामरै मुहमु नित्तिल
मुऱुवलुङ् गाण्बराऩ् मुऴुदुङ् गाण्गिलार् 802

पॆऱल् अरु–अप्रतिम; तॆरिवैयै नाटुम्–देवी को खोजने के; पॆऱ्ऱियार्–काम में लगे उन्होंने; अऱल्–बालुका में; नऱु कूऩ्तलुम्–सुबासित केश; अळकम् वण्टु–(और) अलक रूपी भ्रमरों से; चूऴ्–आवृत; निऱै नऱु–सुगन्धपूर्ण; तामरै मुकमुम्–कमल में मुख; नित्तिलम् मुऱुवलुम्–मोती में दाँत; काण्पर्–देखा; मुऴुतुम् काण्किलार्–(उनका) सम्पूर्ण रूप नहीं देख पाये। ८०२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अप्रमेय सीताजी की खोज में लगे वे वीर सीताजी के केश को काले बालूकणों के विस्तार में, मुख को अलक-सम अलिकलित कमल के फूल में, दन्तावली को मुक्ताराशि में देख सके। पर उनका पूर्ण रूप वे कहीं देख न पाये। ८०२

शॅरुमद याक्कैयर् तिरुक्किल् शिन्दैयर्
तरुमद याविवै तळुवु तन्मैयर्
पॉरुमद यान्नैयुम् बिडियुम् पुक्कुळल्
नरुमदै यामॅन्नु नदियै नीङ्गिन्नार् 803

चॅरु मतम् याक्कैयर्–युद्ध-मत्त-शरीरी; तिरुक्कु इल्–वैषम्य-रहित; चिन्तैयर्–मन वाले; तरुमम्–धर्म; तया–दया; इवै तळुवुम् तन्मैयर्–इनसे युक्त स्वभाव वाले; पॉरुमतम् यान्नैयुम्–झगड़ालू मत्तगज (और); पिटियुम्–हथिनियाँ; पुक्कु उळल्–जहाँ उतरकर क्रीडा करते हैं; नरुमतै आम् ऍन्नुम्–नर्मदा संज्ञित; नतियै–नदी को; नीङ्कित्तार्–छोड़ (आगे) चले। ८०३

युद्धमदमत्तशरीरी, अनन्यमन, धर्म-दयावान स्वभाव वाले उन्होंने नर्मदा नदी को, जिसमें झगड़ालू गज और हथिनियाँ प्रवेशकर क्रीडा कर रहे थे, तैरकर पार किया। ८०३

तामकू डम्तिरै तीर्त्त शङ्गमुम्, नामकू डप्पॅरुन् दिशैयै नल्हिय
वामकू डच्चुडर् मणिव यङ्गुरुम्, एमकू डत्तडङ् गिरियै ऍय्दिन्नार् 804

ताम कूटम्–प्रभामय शिखरों से उत्पन्न; तिरै तीर्त्त चङ्कमुम्–लहर-भरे जलाशयों का जमघट; वामम् कूटम् चुटर् मणियुम्–(और) सुन्दर कान्ति-पुंज रत्नों की राशियाँ; वयङ्कुरुम्–जहाँ रहती हैं; नामम् कूटु–नामी; अ पॅरु तिचैयै–उस बड़ी दिशा का; नल्किय–रक्षक; एम कूटम्–हेमकूट; तट किरियै–(नामक) विशाल पर्वत पर; ऍय्तित्तार्–जा पहुँचे। ८०४

वे हेमकूट (सात कुलगिरियों में एक) पहुँचे, जिसके शिखरों से तरंगों से पूर्ण नदियाँ बह रही थीं; जिस पर तेजपुञ्ज मणियाँ रहती थीं और जो प्रसिद्ध उस (दक्षिण) दिशा का रक्षक था। ८०४

माडुरु गिरिहळु मरतु मर्र्वुम्, शूडुरु पॉन्नॅन्नप् पॉलिन्दु तोन्रुरुप्
पाडुरु शुडरॉळि परप्पु हिन्रदु, वीडुरु मुलहिन्नुम् विळङ्गु मॅय्यदु 805

माटु उरु–पार्श्वस्थित; किरिकळुम्–गिरियाँ; मरतुम्–तरु; मर्र्वुम्–और अन्य वस्तुएँ; चूटुरु पॉन् ऍन्न–तप्त स्वर्ण के समान; पॉलिन्तु तोन्रुरु–प्रभामय दिखें, ऐसा; पाटु उरु चुटर् ऑळि–महान उज्ज्वल प्रकाश; परप्पुकिन्रतु–फैलाता है; वीटु उरुम् उलकितुम्–स्वर्गलोक से भी; विळङ्कु मॅय्यतु–अधिक दर्शनीय रूप का है। ८०५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वह इतनी कान्ति बिखेरता था कि पास वाली गिरियाँ, तरुकुल और अन्य वस्तुएँ तप्त सोने के समान कान्तिमय लगीं। स्वर्गलोक से भी वह शानदार लगा। ८०५

पऱवैयुम् पल्वहै विलङ्गुम् पाडमैन्, दुऱैवऩ कऩहनुण् पूऴि यॊट्टलान्
निऱैनॆडु मेरुवैच् चेर्न्द नीरवाय्प्, पॊऱैनॆडुम् बॊऩ्नॊऴि पॊऴियुम् पॊऱ्पतु 806

पाटु–उसकी बगलों में; अमैन्तु–लगकर; उऱैवऩ–रहनेवाले; पऱवैयुम्–पक्षीगण; पल् वकै विलङ्कुम्–अनेक तरह के जानवर; कऩकम् नुण पूऴि–स्वर्ण के बारीक कणों के; ऒट्टलाल्–लगने से; निऱै नॆटु मेरुवै चेर्न्त–बड़े और ऊँचे मेरु पर्वतवासी हों; नीर आय्—ऐसे लगकर; पॊऱै नॆटु पॊऩ् ऒऴि–भारी स्वर्ण की कान्ति; पॊऴियुम्—बरसानेवाली; पॊऱपतु–शोभा से युक्त है। ८०६

उसमें इतने बृहत् रूप से स्वर्ण अपनी कान्ति फैला रहा था कि उसमें रहनेवाले पक्षी और विविध पशु, अपने ऊपर लगे हुए स्वर्णकणों के कारण मेरुपर्वतवासी ही-सम लगते थे। ८०६

परविय कऩहनुण् पराहम् पाडुऱ, ऎरिशुडर्च् चॆम्मणि यीट्टत् तोडिऴि
अरुवियु नदिहळु मलङ्गु तीयिडै, उरुहुपॊऩ् पाय्वपोऩ् ऱॊऴुहु हिऩ्ऱदु 807

परविय–बिखरे रहे; कऩकम् नुण् पराकम्–बारीक स्वर्णकण; पाटुऱ–उस पर जमे रहे, अतः; ऎरि चुटर्–कान्तिपूर्ण; चॆम् मणि–लाल पद्मरागों की; ईट्टत्तोटु–राशि के साथ; इऴि–उतरनेवाले; अरुवियुम् नतिकळुम्–झरने और नदियाँ; अलङ्कु ती इटै–जलती आग में; उरुकु–पिघला; पॊऩ्–स्वर्ण; पाय्व पोऩ्ऱु–बहता हो, ऐसा; ऒऴुकुकिऩ्ऱतु–बहनेवाली नदियों का है वह। ८०७

सर्वत्र फैले रहे स्वर्ण-सूक्ष्म-कणों और कान्तिमय पद्मरागों के साथ सरिताएँ बह रही थीं। वे भी जलती अग्नि के मध्य बहनेवाले पिघले स्वर्ण के समान लगीं। ८०७

विऱ्जैयर पाडलुम् विशुम्बिऩ् वॆळ्वळैप्,
पऱ्जिऩ्मॆल् लडियिऩा राडऱ् पाणियुम्
कुऱ्जर मुळक्कमुङ् गुमुऱु पेरियिऩ्
मऱ्जिऩ मुरऱ्ऱलुम् मयङ्गु माण्बदु 808

विऱ्चैयर् पाटलुम्–विद्याधरों के गाने; विचुम्पिऩ्–व्योमलोक की; वॆळ्वळै–श्वेत कंकणधारिणी; पऱ्चिऩ्–लाक्षारसरंजित (या रूई-समान); मॆल् अटियिऩार्–मृदुल चरणों वाली देवांगनाओं के; आटल् पाणियुम्–नृत्य और ताल के नाद; कुऱ्चरम् मुळक्कमुम्–हाथियों की चिंघाड़; कुमुऱु पेरियिऩ्–थर्रानेवाली भेरियों के समान; मऱ्चु इऩम्–मेघ-समूहों के; मुरऱ्ऱलुम्–वज्रनाद; मयङ्कुम्–जहाँ मिश्रित रहते हैं; माण्पतु–ऐसी महिमा का है वह पर्वत। ८०८

उस पर, विद्याधरों के गाने के स्वर, स्वर्ग की श्वेतकंकणधारिणी और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रूई-सम मृदुल चरणों वाली देवांगनाओं के नृत्यानुयायी ताल-स्वर, हाथियों की चिंघाड़, भेरी का-सा मेघसमूहों का गर्जन —यह सब सुनाई दे रहे थे। वह ऐसी विशिष्ट स्थिति का था। ८०८

अनैयदु नोक्किनार् रमर रञ्जुरुम्
विनैवल निरावण निरुक्कुम् वॅर्पॅनुम्
निनैविन रुवर्न्दुयर्न् दोङ्गु नॅञ्जिनर्
शिनमिहक् कनर्पॊरि शिन्दु शॅङ्गणार् 809

अनैयतु नोक्किनार्–उसको देखकर; अमरर् अञ्चुरुम्–देवों को भयभीत करनेवाले; विनैवलन्–अत्याचारी; इरावणन्–रावण का; इरुक्कुम् वॅर्पु–रहने का पर्वत है; ॲनुम् निनैविनर्–ऐसा सोचते मन के; उवन्तु–(और) संतोष करके; उयर्न्तु ओङ्कु–उमड़ उठनेवाले; नॅञ्चिनर्–चित्त (उत्साह) वाले; चिनम् मिक–कोप के बढ़ने से; कनल् पॊरि–अंगारे; चिन्तु–बरसानेवाली; चॅम् कणार्–लाल आँखों वाले (हो गये वे वानर वीर)। ८०९

उन्होंने उस हेमकूट को देखा और सोचा कि यह देवों को भी भयभीत करते हुए नृशंस कर्म करनेवाला रावण का (त्रिकोण) पर्वत है। उनका मन संतोष और उत्साह से भरकर उमंग में आया। साथ-साथ क्रोध के कारण उनकी आँखें कोप के अंगारे उगलती हुई लाल बन गयीं। ८०९

इम्मलै काणुदु मेळै मानैयच्
चॅम्मलै नीक्कुदुञ् शिन्दै तीदॅन
विम्मलुर् रुवहैयिन् विळङ्गु मुळ्ळत्तर्
अम्मलै येरिना रच्च नीङ्गिनार् 810

इम् मलै–इस पर्वत पर; एळै मानै–अबोध हरिणी-सी देवी को; काणुतुम्–देखेंगे; अ चॅम्मलै–उन महानुभाव के; चिन्तै तीतु–मन के दुःख को; नीक्कुतुम्–दूर कर लेंगे; ॲन–ऐसा सोचकर; विम्मल् उरुरु–(आशा से) भरकर; उवकैयिन् विळङ्कुम् उळ्ळत्तर्–प्रसन्नचित्त होकर; अच्चम् नीङ्किनार्–भयमुक्त होकर; अ मलै एरिनार्–उस पर्वत पर चढ़े। ८१०

"इस पर्वत पर हम अबोध हरिणी-सी सीताजी को ढूँढ़ेंगे। वे मिल जायँगी और हम प्रभु श्रीराम की चिन्ता दूर कर देगें।" ऐसा सोचकर वे हर्ष से फूल उठे। और भय से मुक्त हुए। ८१०

इरिन्दन करिहळुम् याळि यीट्टमुम्
विरिन्दको ळरिहळुम् वॅरुवि नीङ्गिन
तिरिन्दन रॅङ्गणुन् दिरुवैक् काण्गिलर्
पिरिन्दनर् शिन्दनै पिरिदॊन् रामॅन 811

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करिकळुम्–हाथी और; याळि ईट्टमुम्–'याळि' (कल्पित कोई जानवर जो सिंह के समान थे)-समूह; इरिन्तऩ–तितर-बितर हो गये; विरिन्त–व्याप्त; कोळ् अरिकळुम्–घातक सिंह; वॅरुवि नीङ्कित–डरकर भाग गये; ऍङ्कणुम्–पर्वत पर सर्वत्र; तिरिन्तऩर्–घूमे; तिरुवै–श्रीलक्ष्मी को; काण्किलर्–न देख पाकर; पिऱितु ऑऩ्ऱाम्–(यह नहीं) अन्य कोई स्थान है; ऍऩ चिन्ततै–ऐसा चिन्तन लेकर; पिरिन्ततर्–अलग जाने लगे। ८११

उन वानर वीरों को देखकर हाथी, 'याळि' नाम के (सिंह-समान) जानवरों के झुण्ड, घातक सिंह —सब भयभीत होकर भाग गये। वे सब पर्वत पर सर्वत्र घूमे। पर श्रीदेवी के दर्शन न पा सके। तभी उन्हें सूझा कि यह रावण का स्थान नहीं है, कोई दूसरा है। वे वहाँ से हट कर आगे चले। ८११

ऐम्बदिऱ् ऱिरट्टिहा वदत्ति ऩालहऩ्
ऱम्बरैत् तॊडुवदॊत् तुयर्वि ऩोङ्गिय
शॅम्बॊऩऱ् किरियैयोर् पहलिऱ् ऱेडिऩार्
कॊम्बिऩैक् कण्डिलर् कुप्पुऱ् ऱेहिऩार् 812

ऐम्पतिऱ्ऱु इरट्टि–पचास के दुगुने (सौ); कावततुतिऩाल्–काद (कोस); अकऩ्ऱु–चौड़ा; उम्परै तॊटुवतु ऑत्तु–आकाश को स्पर्श करता-सा; उयर्विऩ् ओङ्किय–उन्नत; चॅम् पॊऩ्–लाल स्वर्ण-सम (सुन्दर); नल् किरियै–उस हेमकूट पर्वत पर; ओर् पकलिल्–दिन भर; तेटिऩार्–खोजने पर भी; कॊम्पिऩै–पुष्पलता (सीताजी) को; कण्टिलर्–न देख पाये; कुप्पुऱ्ऱु–उतरकर; एकिऩार्–आगे चले। ८१२

उस पर्वत का विस्तार एक सौ कोस का था। वह गगनोन्नत था। वह लाल स्वर्णमय था। उस पर दिवा भर खोजने पर भी उन्हें पुष्पलता-सी देवी नहीं मिलीं। फिर वे उस पर से उतरकर आगे जाने लगे। ८१२

वॅळ्ळमो रिरण्डऩ विरिन्द शेऩैयैत्
तॅळ्ळुनी रुलहॅलान् दिरिन्दु तेडिनीर्
ऍळ्ळरु महेन्दिरत् तॅम्मिऱ् कूडुमॅऩ्
ऱुळ्ळिऩा रुयर्नॅडु मोङ्ग ऩोङ्गिऩार् 813

वॅळ्ळम् ओर् इरण्टु–दो 'वॅळ्ळम्'; ऍऩ विरिन्त–की संख्या में विस्तृत; चेऩैयै–सेना से; नीर्–तुम; तॅळ्ळुम् नीर्–स्वच्छ जल से आवृत; उलकु ऍलाम्–सारे लोक में; तिरिन्तु तेटि–घूमकर खोज लेने के बाद; ऍळ् अरु–अनिंद्य; मकेन्तिरत्तु–महेन्द्रपर्वत पर; ऍम्मिल् कूटुम्–हमारे पास आ मिलो; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उळ्ळिऩार्–विचार कहकर; उयर् नॅटुम् ओङ्कल्–उन्नत विशाल पर्वत से; नीङ्किऩार्–(अंगदादि नायक) हटे। ८१३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तब अंगद ने दो 'वॅळ्ळम्' संख्या वाली सेना से कहा कि तुम स्वच्छ जलावृत भूमि पर सर्वत्र जाकर खोजो। फिर अनिंद्य महेन्द्रपर्वत पर हमारे पास आकर मिलो। फिर वे हेमकूटपर्वत को छोड़कर चले। ८१३

मारुदि मुदलिय वयिरत् तोळ्वयप्
पोर्वलि वीररे कुळुमिप् पोहिन्ऱार्
नीरॅनुम् बॅयरुमन् नॅऱियि नीङ्गिडच्
चूरियन् वॅरुवुमोर् शुरत्तैत् तुन्नित्तार् 814

मारुति मुतलिय–मारुति आदि; वयिरम् तोळ्–सुदृढ़ कन्धों वाले; वयम् पोर्–विजयदायी युद्ध में; वलि वीररे–पराक्रम दिखानेवाले वीर ही; कुळुमि पोकिन्ऱार्–दल बाँधकर चले; अ नॅऱियिन्–उस मार्ग में; नीर् ऍनुम् पॅयरुम्–जल का नाम तक; नीङ्किट–नहीं रहा, इसलिए; चूरियन् वॅरुवुम्–सूर्य को भी भयभीत करनेवाले; ओर् चुरत्तै–एक मरुप्रदेश को; तुन्नित्तार्–जा पहुँचे। ८१४

मारुति आदि वज्रस्कन्ध युद्ध-विजयी वीर ही एक दल में चले। एक मरुप्रदेश में आये, जहाँ जल का निशान तक नहीं पाया गया और उस कारण गरम किरणमाली भी वहाँ आने से डरते थे। ८१४

पुळ्ळडै याविलङ् गरिय पुल्लॊडुम्, कळ्ळडै मरनिल कल्लुन् दीन्दुहुम्
उळ्ळिडै यावुनुण् पॊडियॊ डोडलिन्, वॅळ्ळिडै यल्लदॊन् ऱिल्लै वॅञ्जुरम् 815

अ वॅम् चुरम्–उस उष्ण मरुप्रदेश में; पुळ् अटैया–पक्षी नहीं आते; विलङ्कु अरिय–जानवर अदृश्य; पुल्लॊटुम्–घास के साथ; कळ् अटै–शहद-भरे पुष्पों के; मरन् इल–तरु प्राप्य नहीं; कल्लुम्–पत्थर भी; तीन्तु उकुम्–जलकर राख बन जाता; उळ् इटै यावुम्–अन्तर्गत सभी; नुण् पॊटियॊटु–चूर-चूर होकर; ओटलिन्–उड़ जाते हैं, इसलिए; वॅळ् इटै अल्लतु–खाली स्थान के सिवा; ऒन्ऱु इल्लै–कुछ नहीं। ८१५

उस रेगिस्तान में पक्षी नहीं आये। जानवर देखना दुर्लभ था। घास या शहद भरे-फूलों के वृक्ष नहीं दिखायी दिये। पत्थर भी जल-भुनकर राख बन गया। उसमें रहनेवाले सभी पदार्थ चूर-चूर होकर उड़ रहे थे; इसलिए वहाँ शून्य के अतिरिक्त कुछ नहीं था। ८१५

नन्बुल नड़क्कुऱ वुणर्वु नैन्दऱप्, पुन्बुऱ याक्कैहळ् पुळुङ्गिप् पॊङ्गुवार्
तॅन्बुलत् तवनॅरि नरहिऱ् चिन्दिय, ऍन्बिल्पल् लुयिरॅन वॅम्मै यॅय्दित्तार् 816

नल् पुलन्–स्वस्थ इन्द्रियाँ; नटुक्कुऱ–काँपीं; उणर्वु–बुद्धि; नैन्तु अऱ–क्षीण होकर मिट गयी; पॅरुम् पुन् पुऱ–प्रभाहीन, बड़े बाह्य; याक्कैकळ्–शरीर; पुळुङ्कि–स्वेद से भर गये; पॊङ्कुवार्–तप्तमन हुए; तॅन् पुलत्तवन्–दक्षिणी दिशा के अधिदेव (यम) के; ऍरि नरकिल्–जलते नरक में; चिन्तिय–गिरे हुए; ऍन्पु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इल्–अस्थिहीन; पल् उयिर् अॅत्त–अनेक जीवों के समान; वॅम्मै अॅय्तित्तार्–झुलसे। ८१६

वहाँ पहुँचकर उनकी इन्द्रियाँ काँप गयीं। चेतना खो गयी। बड़े बाह्यशरीर स्वेदयुक्त हो गये। उनका मन तप्त हो गया। दक्षिणी दिशा के स्वामी यम के जलते नरक में पड़े अस्थिहीन जीवों के समान वे शरीर और मन से तप्त-विगलित हो रहे। ८१६

नीट्टिय नावित्तर् निलत्तिऱ् ऱीण्डुदो
ऱूट्टिय वॅम्मैया लुलयुङ् गालित्तर्
काट्टिनुङ् गाय्न्दुदङ् गायन् दीदलाल्
शूट्टहन् मेलॅऴु पॉरियिऱ् ऱुऴ्ळित्तार् 817

नीट्टिय नावित्तर्–बाहर निकली जीभ वाले; निलत्तिल्–भूमि पर; तीण्टु तोऱु–ज्यों-ज्यों स्पर्श करते, त्यों-त्यों; ऊट्टिय–लगनेवाली; वॅम्मैयाल्–गरमी से; उलैयुम् कालित्तर–छाले-भरे पैरों वाले; काट्टिनुम्–मरुप्रदेश से भी; काय्न्तु–जलन पाकर; तम् कायम्–अपने शरीरों के; तीतलाल्–झुलसने से; चूट्ट कल् मेल्–तप्त प्रस्तर-पात्र से; अॅऴु पॉरियिन्–उठनेवाले खील के समान; तुऴ्ळित्तार्–उछले। ८१७

उनकी जीभें बाहर लटकने लगीं। जब कभी भूमि से उनका स्पर्श हुआ तो नीचे से लगनेवाली गर्मी की वजह से पैरों में छाले पड़ गये। उनका शरीर उस मरुप्रदेश से भी अधिक तप्त हो गया तो तप्त कुण्डी में से उछलनेवाली खीलों के समान छटपटाने लगे। ८१७

ऑतुङ्गला निऴलित्तैक् काण्गि लादुयिर्
पिदुङ्गला मुडलित्तर् मुडिविल् पीऴैयार्
पदङ्गडोप् परुहिडप् पदैक्किन् ऱार्पल
विदङ्गळा नॅडुम्बिल वऴियिन् मेवित्तार् 818

ऑतुङ्कल् आम्–पनाह लें, ऐसी; निऴलित्तै–छाँह को; काण्किलातु–न देखकर; उयिर् पितुङ्कल् आम्–जान जिनसे बाहर निकलने को थी, ऐसे; उटलित्तर्–शरीर वाले बनकर; मुटिवु इल्–असीम; पीऴैयार्–वेदनापीड़ित; पतङ्कळ्–पैरों को; ती परुकिट–आग खा लेती है, इसलिए; पतैक्किन्ऱार्–छटपटाते हैं; पल वितङ्कळाल्–अनेक प्रकारों से सोचकर; नॅटु पिलम् वऴियिल्–बड़ी बिल के मार्ग में; मेवित्तार्–बढ़े। ८१८

कहीं कोई छाँह नहीं दिखी जहाँ वे पनाह पा सकें। प्राण शरीर से बाहर निकलने को हो गये। असीम पीड़ा से, अग्निभुक्त पैरों के साथ वे तड़प उठे। उनसे बचने के विविध उपाय सोचने के बाद आखिर वे एक बिल के द्वार पर आये। ८१८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मीच्चॆल वरिदिऩि विळियि ऩल्लदु
तीच्चॆल वॊळियवुम् तडुक्कुन् दिण्बिल
वाय्च्चॆल ऩऩ्ऱॆऩ मऩत्ति ऩॆण्णिऩार्
पोय्च्चिल वऱिदुमॆऩ् ऱदनिऱ् पोयिऩार् 819

इऩि–अब; विळियिऩ् अल्लतु–मरना छोड़कर; मी चॆलवु–आगे जाना; अरितु–असम्भव है; तिण् पिलम्–बलवान बिल के; वाय् चॆलल्–द्वार से अन्दर जाना; ती–मरु की आग से युक्त; चॆलवु ऒळियवुम्–(मरुप्रदेश में) बढ़ने से भी; तटुक्कुम्–रोकेगी; नऩ्ऱु–(अतः) बिल में जाना ही अच्छा है; ऎऩ–ऐसा; मतत्तिऩ् ऎण्णिऩार–मन में सोचा; पोय्–जाकर; चिल अऱितुम्–कुछ जान लेंगे; ऎऩ्ऱु–कहते हुए; अतऩिल्–उसमें; पोयिऩार्–गये। ८१९

"मरने के सिवा अब आगे जाना असम्भव है। इस बड़े बिल के द्वार से अन्दर जाने से कम से कम सन्तापक मरु में जाने से बच सकेंगे। इसलिए इसमें घुस जाना ही भला है।" यह सोचकर वे उसमें घुस गये। उनका यह भी विचार था कि अन्दर जाकर थोड़ा देखें भी। ८१९

अक्कणत् तप्पिलत् तहणि यॆय्दिऩार्
तिक्किऩॊ डुलहुऱच् चॆऱिन्द देङ्गिरुळ्
ऎक्किय कदिरवऱ् कञ्जि येमुऱप्
पुक्कदे यऩैयदोर् पुरैपुक् कॆय्दिऩार् 820

अ कणत्तु–उस क्षण में; अ पिलत्तु अकणि–उस बिल के अन्दरूनी स्थान पर; ऎय्तिऩार्–जाकर; तिक्किऩॊटु–चारों दिशाओं के साथ; उलकु उऱ–लोकों में भी लगा रहा; चॆऱिन्त तेङ्कु इरुळ्–घना जमा अन्धकार; ऎक्किय–ऊपर चढ़े हुए; कतिरवऱ्कु अञ्चि–सूर्यदेव से डरकर; एमुऱ–रक्षा पाने के लिए; पुक्कते–इसमें घुस गया हो; अऩैयतु–ऐसी एक; पुरै–गुहा में; पुक्कु–प्रवेश करके; ऎय्तिऩार्–चले। ८२०

वे वीर जब अन्दर एक गुहा में आये, जहाँ का अँधेरा ऐसा लगा मानो सारी दिशाओं में और सारी पृथ्वी पर जमा हुआ अन्धकार आकाश में चढ़े सूर्य से डरकर अपने जीवन की सुरक्षा को उसी के अन्दर साध्य मानकर उधर आ गया हो। ८२०

ऎऴुहिलर् कालॆडुत् तेहु मॆण्णिलर्
वऴियुळ दामॆऩु मुणर्वु माऱिऩार्
इऴुहिय ऩॆय्यॆऩु मिरुट् पिऴम्बिऩुळ्
मुऴुहिय मॆय्यरा युयिर्प्पु मूट्टिऩार् 821

ऎऴुकिलर्–नहीं उठते; काल् ऎटत्तु–पैर रखकर; एकुम् ऎण् इलर्–बढ़ने की इच्छा नहीं करते; वऴि उळतु आमु–मार्ग भी है; ऎऩुम् उणर्वु–यह विचार; माऱिऩार्–बदल गया; इऴुकिय ऩॆय्–घने जमे हुए घी के समान; इरुळ् पिऴम्पिऩुळ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अँधेरे के पुंज में; मुऴुकिय-मग्न; मॆय्यराय्-शरीर वाले होकर; उयिर्प्पु मुट्टिनार्-ठण्डी आहें भरने लगे। ८२१

तब वे खड़े हो गये। उनके पैर नहीं उठे। आगे डग देने को मन नहीं हो रहा था। आगे मार्ग भी होगा —यह सोच नहीं सके। जमे हुए घी के समान उस अन्धकार में उनके शरीर मानो मग्न हो गये। उनका दम फूलने लगा। ८२१

निन्ऱनर् शॆय्वदोर् निलैमै योर्हलर्, पॊन्ऱिन रामॆनप् पॊरुमु पुन्दियर्
वन्ऱिऱन् मारुदि वल्लै योवॆमै, इन्ऱिदु काक्कवॆन् ऱिरन्दु कूऱिनार् 822

चॆय्वतु-करणीय; ओर् निलैमै-कोई निर्णय; ओर्कलर्-जान नहीं पाते; निन्ऱनर्-स्तब्ध खड़े रहे; पॊन्ऱिनर् आम् ऎन-मर गये, ऐसे; पॊरुमु पुन्तियर्-निराशा-भरे मन वाले होकर; वल् तिऱल् मारुति-अति बलिष्ठ मारुति; इन्ऱु-अब; ऎमै-हमें; इतु काक्क वल्लैयो-इस (दुःख) से बचा सकोगे क्या; ऎन्ऱु-कहकर; इरन्तु कूऱिनर्-प्रार्थना का वचन कहा (वानर वीरों ने)। ८२२

वे किंकर्तव्यमूढ़ हो खड़े रह गये। मरणावस्था को पहुँच गये हों, ऐसा दुःखी होकर अन्य वानर वीर हनुमान से विनय-याचना करने लगे कि हनुमान ! अब हमें इस संकट से बचा सकोगे क्या ? । ८२२

उय्वुऱुत् तुवॆन्मन मुलैयि रूऴिन्वाल्, मॆय्युऱप् पऱ्ऱुदिर् विडुहि लीरॆन
ऐयनक् कण्त्तिनि लहलु नीणॆऱि, कैयिनिऱ् ऱडविवॆङ् गालि नॆहिनान् 823

उय्वु उऱुत्तुवॆन्-जीवित करूँगा (बचाऊँगा); मनम् उलैयिर्—मन मत मारो; ऊऴिन्-क्रम से (एक के पीछे एक) खड़े होकर; वाल्-मेरी पूँछ को; मॆय् उऱ-दृढ़ रूप से; पऱ्ऱुतिर्-पकड़ लो; विटुकिलीर्-छोड़ो मत; ऎन-कहकर; अ कणत्तितिल्-उसी क्षण; ऐयन्-नायक; अकलुम् नीळ् नॆऱि-गम्य उस लम्बे मार्ग में; कैयिनाल् तटवि-अपने हाथ से टटोलते हुए; वॆम् कालिन्-जल्दी पैदल; एकिनान्-गया। ८२३

मारुति ने आश्वासन दिया कि बचाने का उपाय करूँगा। मन मत मारो। एक के पीछे एक खड़े होकर मेरी पूँछ पकड़ लो। मत छोड़ो। जब उन्होंने उसकी पूँछ को पकड़ लिया, तब हनुमान अपने हाथ से रास्ता टटोलते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ा। ८२३

पन्निरण् डियोशनै पडर्न्द मॆय्यिनन्
मिन्निरण् डनैयहुण् डलङ्गळ् विल्लिडत्
तुन्निरु डॊलैन्दिडत् तुरुवि येहिनान्
पॊन्नॆडुङ् गिरियॆनप् पॊलिन्द मेनियान् 824

नॆटु पॊन् किरि—बड़ी स्वर्णगिरि; ऎन पॊलिन्त—(के) समान छविपूर्ण-शरीरी; पन्निरण्टु योचनै-बारह योजन; पटर्न्त मॆय्यिनन्-विशाल देह का; मिन् इरण्टु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अतैय–दो बिजलियों के समान; कुण्टलङ्कळ्–कुण्डलों के; विल् इट–प्रकाश फैलाने से; तुन् इरुळ्–घना अन्धकार; तॊलैन्तिट–मिटा, तब; तुरुवि एकिन्नान्–खोजते हुए बढ़ा। ८२४

उन्नत स्वर्ण (मेरु) पर्वत-सम शोभायमान-शरीरी हनुमान का शरीर बारह योजन का बढ़ गया। बिजली के समान उसके दो कुण्डलों ने प्रकाश छिटकाया। उस प्रकाश में घना अन्धकार छँटा। उसी प्रकाश में मार्ग ढूँढ़ते हुए वह आगे गया। ८२४

कण्डनर् कडिनहर् कहनत् तॊण्गदिर्
मण्डल मऱैन्दुऱैन् दनैय माण्बदु
विण्डल नाणुऱ विळङ्गु हिन्ऱदु
पुण्डरि हत्तवळ् वदनम् बोन्ऱदु 825

कटि नकर् कण्टनर्–(अन्दर जाकर) उन्होंने एक सुन्दर नगर देखा; ककनतुतु–आकाश में; ऒळि कतिर् मण्टलम्–प्रकाशमय किरणों का सूर्यमण्डल; मऱैन्तु उऱैन्तु अतैय–छिपा रहता हो, ऐसा; माण्पतु–शानदार है; विण् तलम्–स्वर्गलोक; नाण् उऱ–लजावे, ऐसा; विळङ्कुकिन्ऱतु–शोभता है; पुण्टरिकतुतवळ्–कमला श्रीलक्ष्मी के; वतनम् पोन्ऱतु–वदन के समान है। ८२५

वहाँ वीरों ने एक श्रेष्ठ नगर को देखा। वह ऐसा शोभायमान था, मानो प्रकाश की किरणों का सूर्यमण्डल उधर आकर छिपा रह रहा हो। स्वर्ग को भी लजाते हुए वह शोभा दे रहा था। कमलनिवासिनी लक्ष्मी-देवी के श्रीवदन के समान लग रहा था। ८२५

कऱ्पहक् कावदु कमलक् काडदु, पॊऱ्पॆरुङ् गोपुरप् पुरिशै पुक्कदु
अऱ्पुद ममररु मॆय्द लावदु, शिऱ्पमु मयन्मनम् वरुन्दिच् चॆय्ददु 826

कऱ्पकम् कावतु–कल्प-काननयुक्त है; कमलम् काटतु–कमल-वन उसमें है; पॊत् पॆरु कोपुरम्–स्वर्णमय गुम्बजों के साथ; पुरिचै पुक्कतु–प्राचीर बने हैं; अमररुम्–अमरगण को भी; अऱ्पुतम् ऍय्तल् आवतु–विस्मित करनेवाला; चिऱपमुम्–शिल्प-कार्य; मयन्–मय का; मनम् वरुन्ति–मन को कष्ट देकर (मन लगाकर); चॆय्ततु–किया हुआ। ८२६

उसके अन्दर कल्पकानन था। कमलसर थे। स्वर्णिम मीनारों के साथ प्राचीर थे। अमर लोग भी उसको देखकर विस्मित हों —ऐसी शोभा वाला था वह। वहाँ कि शिल्पकारी मय के द्वारा परिश्रम उठाकर की गयी थी। ८२६

इन्दिर नहरमु मिणैयि लाददु, मन्दिर मणियिनिऱ् पॊन्निन् मन्नियै
अन्दरत् तविऱ्शुड रङ्गिन् ऱायिनुम्, उन्दरु मिरुडुरन् दॊळिर निऱ्पदु 827

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्तिरन् नकरमुम्–इन्द्र का नगर भी; इणै इलाततु–इसका साम्य नहीं कर सकता; अन्तरत्तु–आकाश में; अविर् चुटर्–उदित सूर्य व चन्द्र; अङ्कु इन्ऱु–वहाँ नहीं हैं; आयितुम्–तो भी; मन्तिरम् मणियिऩिल्–प्रासादों में जड़ित मणि-माणिकों और; पोन्ऩिन् मन्तिये–स्वर्ण से; उन्त अरुम्–जिसका निकालना कठिन हैं; इरुळ्–उस अन्धकार को; तुरन्तु–दूर करके; ऒळिर निऱ्पतु–प्रकाशमय रहता है। ८२७

इन्द्र की अमरावती भी उसकी समानता नहीं कर सकती थी। आकाश के प्रकाशमण्डल सूर्य और चन्द्र वहाँ नहीं थे; तो भी वह नगर अपने सौधों पर जड़ित मणियों और स्वर्ण के द्वारा दुर्निवार अन्धकार दूर करके प्रकाशमय रह रहा था। ८२७

पुविपुहऴ् शॆऩ्ऩिपे रबयन् ऱोळ्पुहऴ्, कविहड मनैयॆनक् कनह राशियुम्
शवियुडैत् तूशुमॆऩ् शान्दु मालैयुम्, अविरिऴैक् कुप्पैयु मळवि लाददु 828

पुवि पुकऴ्–लोकसंशित; चॆन्ऩि पेर् अपयन्–कुलोत्तुंग और अभय नामधारी चोळ राजा के; तोळ पुकऴ्–भुजबल की प्रशंसा में गानेवाले; कविकळ् तम् मनै–कवियों के भवनों; ऎऩ–के समान; कनकम् राचियुम्–स्वर्णराशि; चवि उटै तूचुम्–प्रकाशमय स्वर्णाम्बर और; मॆल् चान्तुम्–कोमल चन्दन का लेप; मालैयुम्–मालाएँ; अविर् इऴै कुप्पैयुम्–कान्तिमय आभरणों के ढेर; अळवु इलाततु–अपार हैं वहाँ। ८२८

लोकशंसित कुलोत्तुंग और अभय नाम के चोळ राजा के प्रशंसक भाट-कवियों के घरों के समान, कनकराशि, उज्ज्वल स्वर्णवस्त्र, चन्दन, सुबासित मालाएँ, कान्तिमय आभरणों के ढेर —इनसे वह इतना भरा था कि कोई गणना नहीं हो सकती थी। ('कुलोत्तुंग' का नाम देखकर कुछ विद्वान् कम्बन् के काल का अनुमान लगाते हैं। पर कुलोत्तुंग एक ही नहीं था।)। ८२८

पयिल्हुरऱ् किण्गिणिप पदत्त पावैयर्
इयल्पुडै मैन्दरॆऩ् ऱियक्कि लामैयाल्
तुयिलवुम् नोक्कवुम् तुणैय दऩ्ऱिये
उयिरिला वोविय मॆऩ्ऩिऩु मॊप्पदु 829

पयिल् कुरल्–क्वणनशील; किण्किणि पतत्त–मंजीरों से युक्त पैरों वाली; पावैयर्–रमणियाँ; इयल्पुटै मैन्तर्–(और) श्रेष्ठ गुणों के पुरुष; ऎऩ्ऱु–इनके; इयक्कु इलामैयाल्–संचार के न होने से; तुयिलवुम् नोक्कवुम्–मूँदने, खोलने के; तुणैयतु–दो परस्पर मिले कार्य के; अऩ्ऱिये–बिना ही; उयिर् इला–निर्जीव रहनेवाला; ओवियम् ऎऩ्ऩिऩुम्–चित्र कहो; ऒप्पतु–उसके योग्य है। ८२९

वहाँ क्वणनशील नूपुरचरणा स्त्रियों और सद्गुणपूर्ण पुरुषों का संचार नहीं पाया गया। इसलिए वह निर्जीव चित्र के समान था जो सो या जाग नहीं सकता है। ८२९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अमिऴ्दुऱ ऴयिऩियै यडुत्त वुण्डियुम्
तमिऴ्निहर् नऱवमुन् दऩित्तण् डेऱलुम्
इमिऴ्हऩिप् पिऱक्कमुम् पिऱवु मिऩ्ऩऩ
कमऴ्वुऱत् तोऩ्ऱिय कणक्किल् कॊट्पदु 830

अमिऴ्तु उऱऴ्–देवसुधा-सम; अयिऩियै अटुत्त–भात आदि; उण्टियुम्–भोजनपदार्थ; तमिऴ् निकर् नऱवमुम्–तमिऴ-सम मधुर मधु; तऩि तण् तेऱलुम्–विशेष शीतल सुरा; इमिऴ् कऩि पिऱक्कमुम्–मधुर फलों की राशि और; इऩ्ऩऩ पिऱवुम्–ऐसे अन्य पदार्थ; कमऴ्वु उऱ–मीठी गन्ध के साथ; तोऩ्ऱिय–जहाँ भरे थे; कणक्कु इल् कॊट्पतु–ऐसा अपार महिमामय है। ८३०

और उसमें यह विशेषता थी कि वहाँ देवामृत-सम भोजन, तमिऴ्-मधुर शहद, अनुपम शीतल मद्य, मधुर फलों की राशियाँ और ऐसी अन्य वस्तुएँ अपार रूप से प्राप्त थीं। ८३०

कऩ्ऩिऩॆडु मानहर मऩ्ऩदॆदिर् कण्डार्
इऩ्नहर मामिहलि रावणऩ दूरॆऩ्
ऱुऩ्ऩियुरै याडिऩरु वऩ्दऩर् वियऩ्दार्
पॊऩ्ऩिऩॆडु वायिलद नूडिऩिदु पुक्कार् 831

अऩ्ऩतु–वैसे; कऩ्ऩि–नितनवीन; नॆटु मा नकरम्–लम्बे-चौड़े नगर को; ऎतिर् कण्टार्–सामने देखा (वानरों ने); इ नकर्–यह नगर; इकल् इरावणऩतु–शत्रु रावण का; ऊर् आम्–नगर है; ऎऩ्ऱु उऩ्ऩि–ऐसा सोचकर; उरै आटिऩर्–आपस में बात करते हुए; उवऩ्तऩर्–खुश हुए; वियऩ्तार्–विस्मित हुए; पॊऩ्ऩिऩ् नॆटुवायिल्–स्वर्णपुरी के गोद्वार; अतऩ् ऊटु–से; इऩितु–सुख से; पुक्कार्–घुसकर गये। ८३१

ऐसे बहुत शानदार उस नित्यजीवी नगर को उन्होंने सामने जाकर देखा। सोचा कि यह रावण का नगर है। वे आपस में उस विचार के आधार पर बात करते हुए बहुत आनन्द और विस्मय से भर गये। फिर उस विशाल स्वर्णमय नगर के गोद्वार से सुख से प्रविष्ट होकर चले। ८३१

पुक्कनह रऩ्ऩिऩिदु नाडिऩर् पुहुऩ्दार्
मक्कळ्कडै तेवर्तलै वाऩुलहिऩ् वैयत्
तॊक्कवुऱै वोरुरुव मोवियम लाऩ्मऱ्
ऱॆक्कुऱियि नुळ्ळवुमॆ दिर्ऩ्दिलर् तिरिऩ्दार् 832

पुक्क नकरऩ्ऩु–प्रविष्ट नगर में; इऩितु–खूब; नाटिऩर् पुकुऩ्तार्–खोजना आरम्भ करके; तेवर् तलै–देवों से लेकर; मक्कळ् कटै–मानव तक; वाऩ् उलकिऩ्–स्वर्गलोक के; वैयऩ्तु ऒक्क–और भूलोक के साथ; उऱैवोर् उरुवम्–वासियों के रूप; ओवियम् अलाल्–चित्र बनकर रहे, इसके सिवा; मऱ्ऱु–कोई दूसरा; कुऱियिऩ् उळ्ळवुम्–जीवन के लक्षण के साथ रहनेवाले; ऎतिर्ऩ्तिलर्–किसी को नहीं देखा; तिरिऩ्तार्–घूमे। ८३२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस नगर में प्रविष्ट होकर उन्होंने उत्साह के साथ खोजना आरम्भ किया। देवों से लेकर मनुष्य तक, देवलोक और मानवलोक में रहनेवालों के चित्र थे, पर कहीं भी जीव का निशान नहीं मिला। वे ऐसे ही घूम-घूमकर देखने लगे। ८३२

वावियुळ पॊय्हैयुळ वाशमलर् नाऱुम्
कावुमुळ काविविऴि यार्मॊऴिह ळॆऩ्ऩक्
कूवुमिळ मॆऩ्कुयिल्हळ् पूवैकिळि कोलत्
तूविमड वऩ्ऩमुळ तोहैशुव डिल्लै 833

वावि उळ–वापियाँ हैं; पॊय्कै उळ–तडाग हैं; वाच मलर् नाऱुम्–पुष्प-सुगन्ध भरे; कावुम् ऊळ–बाग हैं; कावि विऴियार्–नीलोत्पलाक्षी; मॊऴिकळ् ऎऩ्ऩ–(रमणियों) की वाणी के समान; कूवुम्–कूकनेवाली; इळ मॆल् कुयिल्कळुम्–छोटी कोमल कोयलें हैं; पूवै–सारिकाएँ; किळि–शुक; कोलम् तूवि–सुन्दर परों वाले; मटम् अऩ्ऩम्–बाल-मराल; उळ–हैं; तोकै–कलापी-निभ; चुवटु–(सीता का) निशान; इल्लै–नहीं। ८३३

उस नगर में वापियाँ थीं; सरोवर थे। सुवासपूर्ण पुष्पों के उद्यान थे। नीलोत्पलाक्षियों के समान कूकनेवाली बाल, कोमल कोयलें, सारिकाएँ, शुक और मनोरम परों से युक्त बाल-मराल पाये गये। पर कलापी-सी सुन्दर सीता का कोई पता नहीं मिला। ८३३

आयनह रत्तितियल् बुळ्ळुऱ वऱिन्दार्
मायैहॊलॆ नक्करुदि मऱ्ऱुनिऩै वुऱ्ऱार्
तीयपिल नुट्पिऱवि शॆऩ्ऱविदु वॊऩ्ऱो
तूयदु तुऱक्कमॆऩ नॆञ्जुतुणि वुऱ्ऱार् 834

आय नकरत्तितु–उस नगर की; इयल्पु–सच्ची स्थिति को; उळ् उऱ अऱिन्तार्–अन्दर रहकर जिन्होंने जान लिया, उन्होंने; मायै कॊल–माया क्या; ऎऩ करुति–ऐसा सोचकर; तीय पिलनुळ्–बुरे विवर में; पिऱवि चॆऩ्ऱ–हमारा जन्म हो गया; मऱ्ऱु निऩैवुऱ्ऱार्–दूसरा विचार किया; इतु ऒऩ्ऱो–यही एक है; तूयतु तुऱक्कम्–पवित्र स्वर्ग है; ऎऩ–ऐसा; नॆञ्चु तुणिवुऱ्ऱार्–मन में दृढ़ कर लिया। ८३४

वे उस नगर की यथार्थ स्थिति को भीतर से जान गये। उन्हें सन्देह हुआ कि यह कोई माया है क्या? हमारा जन्म भयंकर पाताल में हो गया! यह भी विचार उनके मन में उठा। फिर सोचने लगे कि क्या वही एक विचार हो सकता है; नहीं! यह पवित्र स्वर्ग ही है। उनका यह दृढ़ विचार हो गया। ८३४

इऱन्दिल मिदऱ्कुरिय ऎण्णियिल मेदुम्
मऱन्दिल मयिर्प्पिऩॊ डिमैप्पुळ मयक्कम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पिऱन्दवर् शॅयऱ्कुरिय शॅय्दल्पिऴै यिन्ऱाल्
तिऱन्दॅरिव दॅन्नॅऩ विशैत्तऩर् तिहैत्तार् 835

इऱन्तिलम्–(स्वर्गवासी होना कैसे) हम मरे तो नहीं; इतऱ्कु–इसकी; उरियतु–बात; ऍण्णि इलम्–सोची नहीं; एतुम् मऱन्तिलम्–हम किसी बात को भूले नहीं; अयिर्प्पिऩोटु–संशय के साथ; इमैपपु उळ–पलक का गिरना भी चल रहा है; इऩ्ऱु–अब; मयक्कम् पिऱन्तवर्–भ्रमग्रस्त के; चॅयऱ्कु उरिय–करने योग्य काम; चॅय्तल् पिऴै–करना गलत है; ऍऩिऩ्–तो; तिऱम् तॅरिवतु—अपनी स्थिति जानना; ऍऩ्–कैसा; ऍऩ–ऐसा; इचैत्तऩर्–आपस में बोलते हुए; तिकैत्तार्–भ्रान्त हुए। ८३५

(उन्हें इस विचार पर आपत्ति लगी।) स्वर्ग पहुँचने के लिए हम मरे तो नहीं हैं। यहाँ आने की बात हमने सोची भी नहीं थी। बीती बातें हम याद करते हैं— वे नहीं भूलीं। मन में संकल्प-विकल्प उठते हैं और हमारी पलकें उठती-गिरती हैं। अब भ्रान्त लोगों के समान कार्य करना गलत होगा। तो हम सच्चा हाल जानें कैसे? यों आपस में बोलते हुए वे चकित खड़े रहे। ८३५

शाम्बऩव नॊऩ्ऱुऱैशॅय् वाऩॆऴु शलत्ताल्
काम्बऩैय तोळियै यॊळित्तपडु कळ्वऩ्
नाम्बुह वमैत्तपॊऱि नऩ्ऱुमुडि विन्ऱाल्
एम्बलिऩि मेलैविदि याऩ्मुडियु मॆऩ्ऱाऩ् 836

चाम्पऩ् अवऩ्–जाम्बवान जो था उसने; ऒऩ्ऱु–एक बात; उरै चॅय्वाऩ्–कही; ऍऴु चलत्ताल्–स्वाभाविक छल से; काम्पु अऩैय–बाल-बाँस के समान; तोळियै–कन्धों वाली सीता को; ऒळित्त–जिसने छिपाकर रखा; पटु कळ्वऩ्–बड़े चोर (रावण) का; नाम् पुक अमैत्त–हमारे प्रवेश के लिए रचित; पॊऱि–यन्त्रजाल; नऩ्ऱु–अच्छा है; मुटिवु इऩ्ऱु–इसका निस्तार नहीं; एम्पल्–हमारा सन्तोष; इऩि–अब; मेलै वितियाल्–पूर्व कर्म के फल-स्वरूप; मुटियुम्–दूर हो जायगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (जाम्बवान ने)। ८३६

तब जाम्बवान ने हताश होकर एक बात कही। हमें फँसाकर कष्ट देने के विचार से पक्के चोर रावण का, जिसने छल से वंशतरु-सम कन्धों वाली सीता को हर ले जाकर छिपा रखा है, बनाया हुआ यह फंदा भी बहुत भला है! इसका कोई अन्त नहीं दिखता। हमारा सन्तोष अब प्रारब्ध से दूर जायगा। ८३६

इऩ्ऱुपिल नीदिडैयि नेऱरि दॆऩिऱ्पार्
तिऩ्ऱुशह रर्क्कदिह माहिनऩि शेऱुम्
अऩ्ऱदॆनिऩ् वञ्जऩै यरक्करै यडङ्गक्
कॊऩ्ऱॆऴुदु मञ्जलॆऩ मारुदि त्कॊदिताऩ् 837

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मारुति–मारुति; इऩ्ऱु–अब; इटैयिऩ्–मध्यस्थित; पिलऩ् ईतु–इस बिल से; एऱु अरितु–ऊपर चढ़कर जाना दुस्तर है; ऍऩिऩ्–तो; चकरर्क्कु–सगर-पुत्रों से; नऩि अतिकम् आकि–बढ़कर अतिबली बनकर; पार् तिऩ्ऱु–भूमि को चीरकर; चेऱुम्–पहुँच जायँगे; अतु अऩ्ऱु ऍऩिऩ्–वह नहीं (हो सका) तो; वञ्चऩै अरक्करै–वंचक राक्षसों को; अटङ्क कॊऩ्ऱु–पूर्ण रूप से मारकर; ऍऴुतुम्–उठ चलेंगे; अञ्चल्–डरो मत; ऍऩ–ऐसा; कॊतिऩ्ऱाऩ्–(मारुति ने) तप्त होकर कहा। ८३७

तब मारुति ने वीर वचन कहे। इस बिल से साधारण रूप से, ऊपर पहुँचना दुस्साध्य है, तो हम सगरपुत्रों से भी अधिक बलवान होकर भूमि को चीरते हुए सुख से बाहर चले जायँगे। अगर वह सम्भव नहीं तो वंचक राक्षसों को समूल नष्ट करके छोड़ेंगे। मत डरो। हनुमान का मन कोपाक्रान्त था। ८३७

मऱ्ऱवरु मऱ्ऱदु मऩक्कॊळ वलित्तार्
उऱ्ऱऩर् पुरत्तिडैयव् वॊण्शुडरि ऩुळ्ळोर्
नऱ्ऱव मऩैत्तुमुरु नण्णियॊळि पॆऱ्ऱ
कऱ्ऱैविरि पॊऱ्चडैयि ऩाळैयॆदिर् कण्डार् 838

मऱ्ऱवरुम्–(अंगदादि) अन्य वीरों ने; अतु मऩम् कॊळ्ळ–उस वचन के मन में (ठीक) लगने से; वलित्तार्–(वैसा ही) संकल्प करके; पुरत्तु इटै–नगर-मध्य; उऱ्ऱऩर्–जाकर; अ ऒण् चुटरिऩुळ्–अतिप्रकाशमय उस नगर में; नल् तवम् अऩैत्तुम्–श्रेष्ठ तप सारा; ओर् उरु नण्णि–एक (स्त्री-) रूप लेकर; ऒळि पॆऱ्ऱ–प्रभाशालिनी जो रहा; कऱ्ऱै विरि–उलझे केशों की; पॊऩ् चटैयिऩाळै–स्वर्णमय जटा वाली (स्वयंप्रभा) को; ऍतिर् कण्टार्–सामने देखा (उन्होंने)। ८३८

यह सुनकर अंगदादि अन्य वीरों में ऐसा ही कोप उदित हुआ। उन्होंने भी वही संकल्प किया। फिर वे नगर के अन्दर गये। उस प्रकाशमय नगर के मध्य उन्होंने तपस्विनी स्वयंप्रभा को देखा। वह तपस्या की मूर्ति बनी थी। उसकी जटाजूट सुन्दर और बड़ी थी। ८३८

मरुङ्गलश वऱ्कलै वरिन्दुवरि वाळम्
पॊरुङ्गलश मॊक्कुमुलै माशुपुडै पूशिप्
पॆरुङ्गलै मदित्तिरु मुहत्तळ्पिऱळ् शॆङ्गेऴ्
करुङ्गयल् कळिऱ्ऱिहळ्हण् मूक्कुनुदि काण 839

पॆरु कलै मति–महिमामय सोलह कलापूर्णचन्द्र-सम; तिरु मुकत्तळ्–सुन्दर-मुखी; मरुङ्कु अलच–कमर को दुःख देते हुए; वऱ्कलै वरिऩ्तु–वल्कल बाँधे; वरि वाळम् पॊरुम्–रेखायुक्त चक्रवाक पक्षी के समान और; कलचम् ऒक्कुम्–कलश-सम; मुलै पुटै–स्तनों पर; माचु पूचि–धूल लगने देते हुए; पिऱळ्–चंचल; चॆम् केऴ्–लाल रंग की; करु कयल्कळिऩ्–काली मछलियों के समान; तिकऴ्–शोभित; कण्–आँखों; मूक्कु नुति काण–नासिकाग्र को देखती रहीं, वैसा। ८३९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसका श्रीमुख सोलहों कलाओं से पूर्ण चन्द्र के समान था। उसने कमर को दुःख देते हुए वल्कल बाँधा था। उसके रेखायुक्त, चक्रवाक और स्वर्ण-कलश के समान स्तनों पर गर्द जमी थी। चंचल और लालिमा और कालिमा के साथ शोभायमान 'कॅण्डै' मछलियों के समान उसकी आँखें नासिकाग्र पर लगी हुई थीं। ८३९

तेरत्तैय वल्हुल्शॅरि तिण्गदलि शॅप्पुम्
ऊरुविन्नॊ डॊडुङ्गुऱ वॊडुक्कियुऱ वॊल्हुम्
नेरिडै शलिप्पऱ निऱुत्तिनिमिर् कॊङ्गैप्
पारमु ळॊडुक्कुऱ वुयिर्प्पिडै परिप्प 840

तेर् अत्तैय अल्कुल्–रथ-सम कटिप्रदेश को; चॅरि–पुष्ट; तिण् कतलि चॅप्पुम्–प्रवृद्ध कदली-सम; ऊरुविन्नॊटु–ऊरुओं के साथ; ऒटुङ्कुऱ ऒटुक्कि–लगाकर दबाये हुए; उयिर्प्पु इटै परिपप–श्वास को रोकने से; उऱ ऒल्कुम्–खूब चलित होनेवाली; नेर् इटै चलिप्पु–पतली कमर का हिलना; अऱ निऱुत्ति–एक दम रोककर; निमिर् कॊङ्कै पारम्–उन्नत स्तन-भार को; उळ् ऒटुक्कुऱ–दबकर रहने देते हुए। ८४०

रथ-सदृश भगप्रदेश को उसने परस्पर सम रम्भोरुओं के मध्य दबाकर रख लिया था। प्राणायामसाधना से उसकी चंचल कमर भी स्थिर रही। उन्नत स्तनभार भी उस योगमुद्रा के अन्दर छिपे हुए थे। ८४०

तामरै मलर्क्कुवमै शाल्बुऱु तळिर्क्कैप्
पूमरुवु पॊऱ्चॅरि कुऱङ्गॊडु पॊरुन्दक्
काममुद लुऱ्ऱपहै काऱळर वाशै
नाममडि यप्पुलनु नल्लऱिवु पुल्ह 841

तामरै मलर्क्कु–कमल-फूल का; उवमै–उपमान बनने; चाल्पु उऱु–योग्य; तळिर् कै–पल्लवहस्त; पू मरुवु–सुन्दरतायुक्त; पॊन्–स्वर्णवर्ण; चॅरि कुऱङ्कॊटु–सटे हुए ऊरुद्वय से; पॊरुन्त–लगाए; कामम् मुतल्–कामादि; उऱ्ऱ पकै–अंतश्शत्रु; काल् तळर्–मिटाकर; आचै नामम् मटिय–राग का नाम तक नाश करके; पुलत्तम्–इन्द्रियों को भी; नल् अऱिवु पुल्क–श्रेष्ठ बुद्धि के वश में रखते हुए। ८४१

कमल के फूल के उपमान बन सकनेवाले पल्लव-हस्त सुन्दर, स्वर्णिम और परस्पर सम ऊरुओं पर लगे थे। कामादि अन्तःशत्रु नष्ट हो गये थे। राग का निशान भी न रहा। उनकी इन्द्रियाँ भी अच्छे मार्गगामिनी बनी थीं। ८४१

नॅरिन्दुनिमिर् कऱ्ऱैनिऱै योदिनॅडु नीलम्
शॅरिन्दशडै युऱ्ऱदु तलत्तिन्नॅरि शॅल्लप्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

परिन्दुविऩै पऱ्ऱऱ मऩप्पॆरिय पाशम्
पिरिन्दुपॆय रक्करुणै कण्वऴि पिऱङ्ग 842

नॆऱिन्तु–कुंचित होकर; निमिर्–उठे हुए; कऱ्ऱै–जटाओं (राशियों) में; निऱै–भरे; नॆटु नीलम् ओति–लम्बे काले केश; चॆरिन्त चटै उऱ्ऱतु–उलझी हुई जटाओं में परिवर्तित रहे; तलऱ्ऱिऩ् नॆऱि चॆल्ल–उनको भूमि पर लोटने देते हुए; विऩै पऱिन्तु–कर्मबन्धन छूटकर; पऱ्ऱु अऱ–मिट गया; मऩम्–मन का; पॆरिय पावम्–बलवान पाश; पिरिन्तु पॆयर–छूटकर अलग हो जाय, ऐसा; करुणै–करुणा; कण् वऴि–आँखों द्वारा; पिऱङ्क–प्रकट करते हुए। ८४२

घुँघराले, लम्बे केशजाल जटा बनकर लटक रहे थे और भूमि पर लोट रहे थे। पूर्वकर्म-फल उससे छूट गये थे। मन पाशों से मुक्त था। उनकी दृष्टि में करुणा व्यक्त हो रही थी। ८४२

इरुन्दऩ ळिरुन्दवळै यॆय्दिऩ रिऱैञ्जा
अरुन्ददि यॆऩत्तहैय शीदैयव ळाहप्
परिन्दऩर् पदैत्तऩर् पणित्तहुऱि पण्बिल्
तॆरिन्दुणर्दि मऱ्ऱिवळ्हो ऱेवियॆऩ लोडुम् 843

इरुन्ततऩळ्–रहीं; इरुन्तवळै–ऐसा जो रहीं, उनके; ऍय्तिऩर्–पास पहुँचकर; इऱैञ्चा–नमस्कार करके; अरुन्तति ऍऩ तकैय–अरुन्धती-सम सीता; अवळ् आक–वही हैं ऐसा; परिन्तऩर्–सोचकर (मन में) आदर किया; पतैत्तऩर्–उद्विग्न होकर; इवळ् तेवि कॊल्–यही देवी सीता हैं क्या; पणित्त कुऱि–श्रीराम निर्दिष्ट लक्षणों की कसौटी में; पण्पिल् तॆरिन्तु–कसकर परखो और; उणर्ति–समझो; ऍऩलोटुम्–कहने पर। ८४३

इस साज के साथ वह योगरत थी। वे वानर उसके पास गये और नमस्कार कर उठे। उसको सीता ही समझकर वे स्नेहार्द्र होकर उत्तेजित हुए। उन्होंने हनुमान से पूछा कि क्या यही देवी सीता हैं; श्रीराम ने उनके लक्षण तुमसे जो बताये हैं, उनके आधार पर परखकर कहो! तब। ८४३

ऍक्कुऱियॊ डॆक्कुण मॆडुत्तिव णिशैक्केऩ्
इक्कुऱि युडैक्कॊडि यिरामऩ्मऩै याळो
अक्कुवड मुत्तमणि यारमदऩ् नेर्निऩ्
ऱॊक्कुमॆऩि नॊक्कुमॆऩ मारुदि युरैत्ताऩ् 844

मारुति–मारुति; ऍ कुऱियॊटु–किस अंगलक्षण के साथ; ऍ कुणम्–कौन सा गुण; इवण् ऍटुत्तु–यहाँ लेकर; इचैक्केऩ–(इसके पास है) कहूँ; इ कुऱि उटै कॊटि–इन लक्षणों की यह लता; इरामऩ् मऩैयाळो–श्रीराम की पत्नी होगी क्या; अक्कु वटम्–अस्थिमाला; मुत्तम् मणि आरम् अतऩ्–मुक्ता व मणिमाला की; नेर् निऱ्ऱु ऒक्कुम्–समकक्ष बनकर समानता कर सकेगी; ऍऩिऩ्–तो; ऒक्कुम्–(यह भी) समानता करेगी; ऍऩ–ऐसा; उरैत्ताऩ्–बोला। ८४४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मारुति ने उत्तर दिया कि कौन से लक्षण कहूँ, जो इसके पास हैं ? ऐसे अंगों वाली लता यह श्रीरामकी देवी हो सकती है क्या ? अगर कहीं अस्थिमाला मुक्ताहार या रत्नहार की समानता कर सके तो यह सीताजी की समानता कर सकेगी । ८४४

अन्नपॊळु दिन्गणव णङ्गुमऱि वुऱ्ऱाळ्
मुन्नतनैय रल्लनॆऱि मुन्दिनऱ्ह ळॆन्नत्
तुन्नरिय पॊन्नहरि यिन्नुऱैवि रल्लीर्
ऎन्नवर वियावरुरै शॆय्म्मॆन विशैत्ताळ् 845

अन्न पॊळुतिन् कण्–उसी समय; अ अणङ्कुम्–वह स्वयंप्रभा; अऱिवुऱ्ऱाळ्–समाधि से जागी; मुन्–अपने सामने; अनैयर्–वे; अल्ल नॆऱि–अनुचित रीति से; मुन्तिनऱ्कळ्–आये हैं; ऎन्न–ऐसा सोचकर; तुन्न अरिय–अगम; पॊन् नकरियिन्–इस स्वर्णनगरी में; उऱैविर् अल्लीर्–वास करनेवाले नहीं हो; वरवु ऎन्न–आना कैसे; यावर्–कौन हो; उरै चॆय्म्–उत्तर कहो; ऎन–ऐसा; इचैत्ताळ्–प्रश्न किया । ८४५

तभी वह स्त्री भी समाधि से जागी । अपने सामने उनको देखकर उसने समझ लिया कि ये अनुचित मार्ग से इधर आए हुए हैं । उसने पूछा कि तुम अगम इस स्वर्णपुरी के वासी नहीं लगते हो ! फिर इधर आना क्योंकर हुआ ? तुम कौन हो ? उत्तर दो । ८४५

वेदनै यरक्करॊरु मायैविळै वित्तार्
शीदैयै यॊळित्तनर् मऱैत्तपुरै तेर्वुऱ्
ऱेदमि लऱत्तुऱै निऱुत्तिय विरामन्
तूदरुल हिऱ्ऱिरिदु मॆन्नुमुरै शॊन्नान् 846

वेतनै अरक्कर्–(संसार को) पीड़ा देनेवाले राक्षसों ने; ऒरु मायै–एक माया-कार्य; विळैवित्तार्–किया; चीतैयै ऒळित्ततर्–सीतादेवी को छिपा दिया; एतम् इल्–अनिन्द्य; अऱम् तुऱै–धर्ममार्ग; निऱुत्तिय–जिन्होंने स्थिर किया; इरामन् तूतर्–उन श्रीराम के दूत (हम); मऱैत्त पुरै–सीताजी को जहाँ छिपा रखा होगा, उन स्थानों का; तेर्वुऱ्ऱ–अन्वेषण करते हुए; उलकिल् तिरितुम्–संसार में घूमते हैं; ऎन्नुम् उरै–यह वचन; चॊन्नान्–(हनुमान ने) कहा । ८४६

हनुमान ने उत्तर दिया । आततायी राक्षसों ने एक माया रची और सीताजी को हर ले जाकर कहीं छिपा रखा है । निर्दोष धर्म के संस्थापक श्रीराम के दूत हैं हम । सीताजी के छिपे हुए स्थान की खोज में हम संसार में घूम रहे हैं । ८४६

ऎन्ऱलु मिरुन्दव ळॆऴुन्दन ळिरङ्गिक्
कुन्ऱनैय दायदॊरु पेरुवहै कॊण्डाळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नन्ऱुवर वाहनड नम्बुरिव लॅन्ऩा
निन्ऱऩ णॅडुङ्गणिणै नीर्हलुऴु नीराळ् 847

ऍन्ऱलुम्–कहते ही; इरुन्तवळ्–जो बैठी हुई थी; ऍऴुन्तऩळ्–वह स्वयंप्रभा उठी; इरङ्कि–आर्द्र होकर; कुन्ऱ अऩैयतु आयतु–पर्वत-सम; ऑरु पेर्–उतना अधिक; उवकै–आनन्द; कॉण्टाळ्–अनुभव किया; वरवु नन्ऱु आक–आगमन शुभ हो; नटऩम् पुरिवल्–आनन्द-नृत्य करूँगी; ऍऩ्ऩा–कहकर; नॅटु कण् इणै–आयत अक्षद्वय से; नीर् कलुऴुम् नीराळ्–अश्रु बहानेवाली होकर; निन्ऱऩळ्–खड़ी रही। ८४७

यह सुनते ही स्वयंप्रभा, जो बैठी थी, उठ खड़ी हुई। उन पर स्नेह करके 'पर्वत-जितने' आनन्द का अनुभव करने लगी। "तुम्हारा आगमन शुभ हो। मैं नाचूँगी!" उसने कहा और वह अपनी दोनों आयत आँखों से आनन्दाश्रु बहाती हुई ठक खड़ी रही। ८४७

ऍव्वुऴै यिरुन्दऩ निरामऩॅऩ याणर्च्
चॅव्वुऴै नॅडुङ्गणवळ् शॅप्पिडुद लोडुम्
अव्वुऴै निहऴ्न्दददै यादियिऩॊ डन्दम्
वॅव्विऴैविल् शिन्दैनॅडु मारुदि विरित्ताऩ् 848

इरामऩ्–श्रीराम; ऍ उऴै–कहाँ; इरुन्तऩऩ्–रहे; ऍऩ–ऐसा; याणर् चॅव् उऴै–विचित्र सुन्दर मृग की-सी; नॅटु कण् अवळ्–आयत आँखों वाली, उसके; चॅप्पिटुतलोटुम्–पूछते ही; वॅ विऴैवु इल्–तापक राग रूपी दोषरहित; चिन्तै–मन के; नॅटु मारुति–महिमावान मारुति ने; अ उऴै–उस स्थान पर; निकऴ्नऩतऩै–जो हुआ वह; आतियिऩॊटु–आदि से लेकर; अन्तम्–अन्त तक; विरित्ताऩ्–विस्तार के साथ कहा। ८४८

जवान और सुन्दर मृग की-सी आँखों वाली स्वयंप्रभा ने पूछा कि श्रीराम रहे कहाँ? तब हानिकारक राग-रहित मन वाले महिमामय हनुमान ने श्रीराम का चरित्र आद्योपान्त वर्णन किया। ८४८

केट्टवळु मॅऩ्ऩुडैय केडिऱव मिऩ्ऩे
काट्टियदु वीडॅऩ विरुम्बिनऩि काऩीर्
आट्टियमिऴ् दऩ्ऩशुवै यिऩ्ऩडिशि लऩ्बो
डूट्टिमऩ नुळ्हुळिर विऩ्ऩुरै युरैत्ताळ् 849

केट्टु–सुनकर; अवळुम्–उसने भी; ऍऩ्ऩुटैय केटु इल् तवम्–मेरे अनिन्द्य तप ने; इऩ्ऩे–आज ही; वीटु काट्टियतु–(शाप-) मुक्ति दिलायी; ऍऩ–कहकर; विरुम्पि–उन वीरों से स्नेह दिखाकर; काऩ् नीर्–सुगन्धमिश्रित जल से; नऩि आट्टि–खूब स्नान करवाकर; अमिऴ्तु अऩ्ऩ चुवै–अमृत-सम स्वादपूर्ण; इऩ् अटिचिल्–मधुर भोजन; अऩ्पोटु ऊट्टि–प्यार के साथ खिलाकर; मऩऩ् उळ कुळिर–उनके मन को आन्तरिक रूप से शीतलता (सुख) प्रदान करते हुए; इऩ् उरै–मधुर वचन; उरैत्ताळ्–कहे। ८४९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह श्रवण करके स्वयंप्रभा ने कहा कि मेरे निर्दोष तप ने आज मुझे शापमुक्ति दिला दी है ! उसे उन पर प्रेम उमड़ आया और उसने उनका सुगन्धयुक्त जल से स्नान करवाकर देवामृत-सम स्वादयुक्त भोजन खिलाया। उसने उनके मन को खुश करनेवाले मधुरवचन से अभिनन्दन किया। ८४९

मारुदियु मऱ्ऱवण मलर्च्चरण् वणङ्गा
यारिनह रुक्किऱैवर् यादुनि निय़ऱ्पेर्
पार्पुहळ् तवत्तिनै पणित्तरुळु हॆन्ऱान्
शोर्हुळलु मऱ्ऱवनॊ डुऱ्ऱपडि शॊन्नाळ् 850

मारुतियुम्–मारुति ने भी; अवळ् मलर् चरण् वणङ्का–उसके कमल-चरण पर नमस्कार करके; यार्–कौन; इ नकर्क्कु–इस नगर के; इऱैवर्–राजा हैं; निन् इयल् पेर्–आपका शुभनाम; यातु–क्या है; पार् पुकळ्–संसार-प्रशंसित; तवत्तिनै तपस्विनी; पणित्तु अरुळुक–कहने की कृपा करें; ऎन्ऱान्–पूछा; चोर् कुळलुम्–उसने भी, जिसकी जटा भूमि पर लोटती थी; अवनॊटु–उस (हनुमान) से; उऱ्ऱ पटि–जैसा हुआ वैसा; चॊन्नाळ्–बखाना। ८५०

मारुति ने उसके कमल-चरणों पर झुककर नमस्कार किया और यह जानना चाहा कि इस नगर के पति कौन हैं ? आपका नाम क्या है ? लोकशंसित तपस्विनी ! कहिए। तब स्वयंप्रभा ने, जिसका केश भूमि पर लोट रहा था, अपना चरित्र यथावत् कहा। ८५०

नन्मुह नुनित्तनॆऱि नूऱुवर नॊय्दा
मेन्मुह निमिर्न्दुवॆयिल् कालॊडु विळुङ्गा
मान्मुह नलत्तवन् मयन्शॆय्द तवत्ताल्
नान्मुह नळित्तुळदिम् मानहर नल्लोय् 851

नल्लोय्–साधु; मान् मुकम्–मृग-मुख; नलत्तवन्–श्रेष्ठ; मयन्–मय ने; नूल् मुकम्–योग-शास्त्र में; नुनित्त–सूक्ष्म रूप से कथित; नॆऱि नूऱु वर–सौ-सौ प्रकारों से; नॊय्तु आ–अनायास; मुकम् मेल् निमिर्त्तु–मुख ऊपर करके; वॆयिल् कालॊटु विळुङ्का–धूप और हवा का अशन करते हुए; चॆय्त–जो (तपस्या) की; तवत्ताल्–उस तपस्या से; इ मा नकरम्–यह बड़ा नगर; नान् मुकन् अळित्तुळतु–चतुर्मुख का दिया हुआ है। ८५१

साधु ! मृगमुख मय ने योगशास्त्रविहित सूक्ष्म प्रकारों के अनुसार अनायास मुख ऊपर करके धूप और पवन का ही अशन करते हुए कठोर तपस्या की। तब चतुर्मुख से तपस्या के फलस्वरूप यह नगर उसे प्रदान किया गया। ८५१

अन्नदिदु तानव नरम्बैयरु ळाङ्गोर्
नन्नुदलि नाण्मुलै नयन्दनन नल्लाळ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅन्नुयिर नाळवळै यानव निरप्पप्
पॉन्नुलहि निन्रिदु पिलत्तिडै पुणरत्तेन् 852

इतु अन्नतु–यह नगर ऐसा है; तानवन्–दानव (मय) ने; अरम्पैयरुळ्–अप्सराओं में; आङ्कु ओर्–वहाँ एक; नल् नुतलिनाळ्–सुन्दर भाल वाली (अप्सरा) के; मुलै नयन्तनन्–स्तन-(सुख) भोग चाहा; अ नल्लाळ्–वह सुन्दरी; अॅन् उयिर् अनाळ्–मेरी प्राण-समाना है; अवन् इरप्प–उस (मय) के प्रार्थना करने पर; यान् मैंने; अवळै–उसको; पॉन् उलकिन् निन्रु–स्वर्गलोक से; इतु पिलत्तिटै–इस बिल में; पुणरत्तेन्–पहुँचाया। ८५२

यह नगर ऐसा बना। उस दानव ने अप्सराओं में एक सुन्दर ललाट वाली के स्तनों (भोग) की इच्छा की। वह अतिसुन्दरी मेरी सहेली थी। उस दानव ने मेरी सहायता की याचना की और मैंने उस अप्सरा को स्वर्गलोक से यहाँ इस बिल में पहुँचाया। ८५२

पुणर्न्दवळु मन्नवनु मन्रिल्विळै पोहत्
तुणर्न्दिलर् नॅडुम्बहलिम् मानह रुऱैन्दार्
कणङ्गुळैयि नाळॊडुयर् कादलॊरु वादुऱ्
ऱिणङ्गिवरु पाशमुडै येनुड निरुन्देन् 853

अवळुम् अन्नवनुम्–वह (हेमा नामक अप्सरा) और मय; पुणर्न्तु–मिले; अन्रिल् विळै–क्रौंच पक्षियों का भी मन लुभानेवाले; पोकत्तु–भोग में; उणर्न्तिलर्–भूले रहे; नॅटु पकल्–लम्बे काल तक; इ मा नकर् उऱैन्तार्–इस बड़े नगर में रहे; कणम् कुळैयिनाळॊटु–मोटे कुण्डलों वाली उसके साथ; उयर् कातल् ऒरुवातु–श्रेष्ट प्रेम को न छोड़कर; उऱ्ऱु इणङ्कि वरु–उसके साथ मिली रहनेवाली; पाचम् उटैयेन्–और उस पर आसक्त मैं; उटन् इरुन्तेन्–उनके साथ रही। ८५३

वे इतने गहरे सम्भोग में लगे रहे कि क्रौंचपक्षी भी वैसे सम्भोग की कामना करे! सब कुछ भूलकर वे अनेक दिन अपने मिलन-वैभव में डूबे, इधर रह गये। भारी कुण्डलधारिणी से मेरा स्नेह गाढ़ा था, इसलिए मैं भी उसके साथ यहाँ रही। ८५३

इरुन्दुपल नाळ्हळियु मॅल्लैयिनि नल्लोय्
तिरुन्दिळैयै नाडिवरु देवरिऱै शीऱिप्
पॅरुन्दिऱलि नानैयुयि रुण्डुपिळै यॅन्नुऱम्
मुरुन्दुनिहर् मूरनहै याळैयु मुनिन्दान् 854

नल्लोय–साधु; इरुन्तु–उनको मिले रहकर; पल नाळ् कळियुम्–अनेक दिन जब बीते; अॅल्लैयितिन्–उस समय; तिरुन्तु इळैयै–श्रेष्ठ आभरणधारिणी (हेमा) को; नाटि वरु–चाहते हुए जो आया; तेवर् इऱै–वह देवेन्द्र; चीरि–कोप करके; पॅरु तिऱलिनानै–अतिबली (मय) को; उयिर् उण्टु–मारकर; अ मुरुन्तु निकर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मूरल्–मोरपंख के नीचे के श्वेत भाग के समान दाँतों और; नकैयाळैयुम्–मन्दहास से युक्त उस पर; पिळै ऎन्ऱु–अपराध कहकर; मुऩिन्ऱान्–कुपित हुआ। ८५४

श्रेष्ठ गुणों वाले ! लम्बे अरसे के बाद सुन्दर कारीगरी युक्त आभरणधारिणी की देवेन्द्र ने टोह लगायी। कोप करके उसने बली मय को मार दिया। फिर उससे, जिसके दाँत मोर-पंख के श्वेत मूलभाग के समान मनोरम थे, क्रोध से कहा कि तुमने बड़ा अपराध किया है। ८५४

मुऩिन्दवळै युऱ्ऱशैयल् मुऱुमॊऴि हॆऩ्ऩक्
कऩिन्दतुवर् वायवळु मॆऩ्ऩैयिवळ् कण्णाल्
वऩैन्दुमुडि वुऱ्ऱदॆऩ मऩ्ऩऩुमि दॆल्लाम्
निऩैन्दिव णिरुत्तिनहर् कावऩिऩ दॆऩ्ऱान् 855

मुऩिन्तु–क्रुद्ध होकर; अवळै–उससे; उऱ्ऱ चॆयल्–जो हुआ; मुऱुम् मॊऴिक–पूरा कहो; ऎऩ्ऩ–कहने पर; कऩिन्त–पके; तुवर् वायवळुम्–प्रवाल-सम अधर वाली ने; ऎऩ्ऩै–मुझे (दिखाकर); कण्णाल्–आँखों के इशारे से; इवळ् वऩैन्त–इसका आयोजित; मुटिवुऱ्ऱु–पूरा हुआ; ऎऩ–कहा, तब; मऩ्ऩऩुम्–देवराज ने; इतु ऎल्लाम् निऩैन्तु–यह सारा सोचकर; इवण् इरुत्ति–यहीं रह जाओ; नकर् कावल्–नगर-रक्षा का भार; निऩतु–तुम्हारे ऊपर है; ऎऩ्ऱान्–आज्ञा की। ८५५

गुस्से में उसने उससे पूछा कि सारा हाल बता दो। तब प्रवृद्ध प्रवालाधरा ने (जिसका नाम हेमा था) मुझे पकड़ लेकर आँखों के इशारे से जताया कि इसी के द्वारा यह कार्य सम्पन्न हुआ। देवराज ने सोचा और मुझसे कहा कि तुम यहीं अकेली रह जाओ। इस नगर का रक्षण-कार्य तुम्हारा है। ८५५

ऎऩ्ऱलुम् वणङ्गियिरु ळेहुऩॆऱि यॆऩ्नाळ्
ऒऩ्ऱुरै यॆऩक्कुमुडि वॆऩ्ऱुरैशॆ यामुऩ्
वऩ्ऱिऱलि रामऩरुळ् वाऩरर्हळ् वन्दाल्
अऩ्ऱुमुडि वाहुमिड रॆऩ्ऱव ऩहऩ्ऱान् 856

ऎऩ्ऱलुम्–कहने पर; वणङ्कि–नमस्कार करके; इरुळ् एकुम् नॆऱि–अन्धकार (दुःख) दूर होने का मार्ग; ऎ नाळ्–कब (होगा); ऎऩक्कु मुटिवु ऒऩ्ऱु–मुझे एक अवधि; उरै–बताइए; ऎऩ्ऱु–ऐसा; उरै चॆयामुऩ्–(मेरे) पूछने के पूर्व; अवऩ्–देवेन्द्र ने; वल् तिऱल् इरामऩ्–बहुत बलवान श्रीराम की; अरुळ् वानरर्कळ्–कृपापूर्ण आज्ञा लेकर आनेवाले वानर; वऩ्ऩाल्–आयँगे तो; इटर् मुटिवु आकुम्–दुःख अन्त को प्राप्त होगा; ऎऩ्ऱु–कहकर; अकऩ्ऱान्–अपने स्थान को चले गये। ८५६

इन्द्र ने यह आज्ञा सुनायी तो मैंने उससे, नमस्कार करके पूछा कि यह अन्धकार (शाप का दुःख) छूटेगा कब ? कुछ अवधि निर्धारित कर कहिए। उसके पूछने के पूर्व ही देवेन्द्र यह कहते हुए हट गया कि अतिसशक्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीराम की आज्ञा लेकर उनके दूत, वानर, जब यहाँ आयँगे तब तुम्हारा कष्ट दूर होगा। ८५६

उण्णवुळ पूशवुळ शूडवुळ वॊन्ऱो
वण्णमणि याडैयुळ मऱ्ऱुमुळ पॆऱ्ऱेन्
अण्णलवै विट्टुमै यडैन्दिडुदल् वेण्डि
ऍण्णरिय पल्पह लिरुन्दव मिऴैत्तेन् 857

अण्णल्–महिमामय; उण्ण उळ–इधर भोजन करने के लिए बहुत (वस्तुएँ) हैं; पूच उळ–शरीर पर मलने के लिए बहुत है; चूट उळ–सिर पर धारण करने के लिए बहुत हैं; ऒन्ऱो–यही क्या; वण्णम् मणि आटै–सुन्दर रंगों के मनोरम वस्त्र हैं; मऱ्ऱुम् उळ–अन्य पदार्थ भी हैं; पॆऱ्ऱेन्–ये सब प्राप्त हैं मुझे; अवै विट्टु–उनको त्यागकर; उमै अटैन्तिटुतल् वेणिटि–तुमसे मिलने की साध लेकर; ऍण् अरिय पल् पकल्–असंख्यक अनेक दिन; इरु तवम् इऴैत्तेन्–कठोर तप करती रही। ८५७

महात्मा ! यहाँ खाने के लिए खूब है। देह पर मलने के लिए चन्दन आदि है। केशालंकार के लिए आवश्यक वस्तुएँ हैं। यही हैं क्या ? रंग-बिरंगे सुन्दर वस्त्र हैं। अन्य कितने ही भोग-पदार्थ यहाँ प्राप्त हैं ! तो भी मैंने उन पर आसक्ति नहीं रखी। तुम लोगों को देखने की इच्छा लेकर मैं अनेक दिनों से अचिंत्य कठोर तप करती रही। ८५७

ऐयिरुब दोशनै यमैन्दपिल मैया
मॆय्युळदु मेलुलह मेरुनॆऱि काणेन्
उय्युनॆऱि युण्डुदवु वीरॆनि नुबायम्
शॆय्युम्वहै शिन्दैयि निनैत्तिर्शिऱि दॆन्ऱाळ् 858

ऐया–श्रेष्ठ; अमैन्त पिलम्–बना हुआ यह बिल; ऐ इरुपतु योचनै मॆय्–सौ योजन दूर के विस्तार का; उळतु–है; मेल् उलकम्–ऊपर के (सुर) लोक में; एऱ नॆऱि–चढ़ने का मार्ग; काणेन्–मुझे नहीं दिखता; उतवुवीर् ऍनिन्–सहायता करेंगे तो; उय्युम् नॆऱि–बचने का मार्ग; उण्टु–मिलेगा; उपायम् चॆय्युम् वकै–उपाय करने का प्रकार; चिन्तैयिन्–मन में; चिऱितु नितैत्तीर्–थोड़ा सोच लो; ऍन्ऱाळ्–कहा (स्वयंप्रभा ने)। ८५८

बड़े पुरुष ! यह बिल शतयोजन विस्तार का है। स्वर्ग जाने का मार्ग मुझे नहीं दिखता। तुम्हीं सहायता करोगे तभी निस्तार होगा। उसके उपाय के बारे में थोड़ा सोचो। स्वयंप्रभा ने यह याचना की। ८५८

अन्नदु कुऱित्तरिवै कूऱवनु मानुम्
मन्नुबुलन् वॆन्ऱुवरु मादवण् मलर्त्ताळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शॅन्नियिन् वणङ्गिनऩि वाऩवर्हळ् शेरुम्
पॊन्नुलह मीहुवॆ ऩिऩक्कॆऩल् पुहऩ्ऱान् 859

अऩ्ऩतु कुऱित्तु–उस मार्ग के बारे में; अरिवै कूऱ–स्त्री के कहने पर; अनुमाऩुम्–मारुति ने भी; मऩ्ऩु पुलम् वॆऩ्ऱ वरु–युक्त इन्द्रियों को जो जीत चुकी, उस; मातवळ्–महातपस्विनी के; मलर् ताळ्–कमल-चरणों को; चॆऩ्ऩियिन् वणङ्कि–सिर झुकाकर नमस्कार करके; ऩिऩक्कु–आपको; वाऩवर्कळ्–देव; नऩि चेरुम्–जहाँ खूब एकत्रित हैं; पॊन् उलकम्–उस देवलोक को; ईकुवऩ्–प्रदान करूँगा; ऎऩल् पुकऩ्ऱान्–यह कथन किया। ८५९

स्वर्गलोक-मार्ग की बात जब स्वयंप्रभा ने कही तब हनुमान ने शरीर के साथ लगी रहनेवाली इन्द्रियों की विजयिनी स्वयंप्रभा के चरणों को नमस्कार किया और कहा कि मैं आपको देवों से भरे स्वर्ग (-वास) को दिला दूँगा। ८५९

मुळैत्तलै यिरुट्कडलिन् मूळ्हिमुडि वेमैप्
पिळैत्तुयि रुयिर्क्कवरुळ् शॆय्द पॆरियोऩै
इळैत्तिशॆय लायविऩै यॆऩ्ऱऩ रिरन्दार्
वळुत्तरिय मारुदियु मऩ्ऩदु वलित्ताऩ् 860

मुळै तलै–इस बिल में; इरुळ् कटलिल्–अन्धकार-सागर में; मूळ्कि–डूबकर; मुटिवेमै–जो मरने को थे, ऐसे हमें; उयिर् पिळैत्तु उयिर्क्क–जान बचाकर जीवित रहने; अरुळ चॆय्त–देने की कृपा करनेवाले; पॆरियोऩै–श्रेष्ठ; चॆयल् आय विऩै–अब करणीय कृत्य; इळैत्ति–करो; ऎऩ्ऱऩर्–कहते हुए; इरन्तार्–(वानरों ने) याचना की; वळुत्तु अरिय–जिसकी पूर्ण प्रशंसा दुर्लभ है; मारुतियुम्–उस मारुति ने भी; अऩ्ऩतु वलित्ताऩ्–वही निश्चय किया। ८६०

तब अन्य वानर वीरों ने हनुमान से याचना की कि हे दयावान श्रेष्ठ गुणी! जिसने बिल के अन्दर अन्धकार में दम घुटकर मरणोन्मुख रहे हमें जीवन दिलाने की कृपा की! अब जो करना है वह शीघ्र करो। तब उस हनुमान ने वही करने का संकल्प कर लिया, जिसकी प्रशंसा पूर्ण रूप से करना असम्भव था। ८६०

नडुङ्गऩ्मि ऩॆऩुञ्जॊलै नविऩ्ऱुऩहै नाऱ
मडङ्गलि ऩॆळुन्दुमळै येऱरिय वाऩत्
तॊडुङ्गलिल् पॆरुन्दलै पुऱत्तुलहॊ डॊऩ्ऱु
ऩॆडुङ्गैहळ् शुमन्दुऩॆड् वाऩुऱ निमिर्न्दाऩ् 861

नटुङ्कऩ्मिऩ्–मत डरो; ऎऩुम् चॊलै–यह कथन; नविऩ्ऱु–करके; नकै नाऱ–मन्दहास को प्रकट होने देते हुए; मटङ्कलिऩ् ऎळुन्तु–सिंह के समान उठकर; मळै एऱ अरिय–जहाँ मेघों के लिए भी उठ जाना कठिन है, उस; वाऩत्तु उलकॊटु–व्योमलोक के साथ; ऒटुङ्कल् इल्–जो छोटा नहीं था उस; पॆरु तलै–बड़े सिर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को; पुऱत्तु उलकॊटु ऑन्ऱ–बाह्यलोक से लगाते हुए; नॆटु कैकळ् चुमन्तु–बड़े हाथों को उठा, बढ़ाकर; नॆटु वान् उऱ–अपने शरीर को आकाश भर में व्याप्त करता हुआ; निमिर्न्तान्–ऊँचा बढ़ा। ८६१

हनुमान ने आश्वासन का वचन दिया कि डरो मत। मन्दहास करते हुए वह पुरुषसिंह के समान उठा। तब उसका बहुत बड़ा सिर आकाश से जा लगा, जहाँ मेघों का चढ़ जाना भी कठिन था। उसने अपने हाथ ऊपर उठाये और वे बाह्यलोक को छू गये। आकाश में व्यापते हुए वह ऊँचा बढ़ा। ८६१

अॆडुत्तुयर् शुडर्प्पुय मिरण्डुमॆयि ऱॆन्न
मरुत्तुमह ऩप्पडि यिडन्दुऱ वळर्न्दान्
करुत्तुनिमिर् कण्णिऩॆदिर् कण्डवर् कलङ्ग
उरुत्तुल हॆडुत्तहरु माविनैयु मॊत्तान् 862

मरुत्तु मकन्–मरुतपुत्र; अॆटुत्तु उयर्–उठाये गये उन्नत; चुटर् पुयम् इरण्टुम्–दीप्तियुत दोनों हाथों को; अॆयिऱु अॆन्न–दाँतों के समान शोभित होने देते हुए; निमिर् कण्णिन् अॆतिर्–ऊँची उठी हुई आँखों के सामने; कण्टवर्–देखनेवाले; करुत्तु कलङ्क–चित्ताक्रान्त हों, ऐसा; अ पटि इटन्तु–उस बिल (के ऊपरी भाग) को चीरकर; उऱ वळर्न्तान्–ऊँचा बढ़ा; उलकु उरुत्तु अॆटुत्त–भूमि को क्रोध के साथ जिन्होंने उठाया; करु माविनैयुम्–बड़े आकार के वराह के; ऑत्तान्–समान लगा। ८६२

वायुपुत्र के दोनों उठे हुए उज्ज्वल हाथ दाँतों के समान लगे। वह ऐसा बढ़ गया कि उसको जिस किसी ने भी सामने से देखा उसका जी धक हो जाय। तब वह उस वराह (अवतार) के समान लगा, जिसने भूमि को (असुर पर) गुस्से के साथ अपने दाँतों के भीतर उठा लिया था। ८६२

मावडि वुडैक्कमल नान्मुहन् वहुक्कुम्
तूवडि वुडैच्चुडर्हॊळ् विण्डलै तॊळैक्कुम्
मूवडि कुऱित्तुमुऱै यीरडि मुडित्तान्
पूवडि वुडैप्पॊरुविल् शेवडि पुरैन्दान् 863

मा वटिवु उटै–श्रेष्ठ रूपवान; कमलम् नान् मुकन्–नाभिकमलभव चतुर्मुख द्वारा; वकुक्कुम्–सृष्ट; तू वटिवु उटै–पवित्र दृश्य; चुटर् कॊळ्–व (सूर्य और चन्द्र दो) तेजपुंजों से युक्त; विण्–आकाश के; तलै–उच्च भाग को; तॊळैक्कुम्–छेदकर; जो गया; मू अटि कुऱित्तु–तीन 'चरण' भर भूमि माँगकर; मुऱै–क्रम से; ईर् अटि मुटित्तान्–दो चरणों में ही नाप (जिन्होंने) लिया; पू वटिवु उटै–(उन) सुन्दर-रूप; पॊरुवु इल्–अप्रतिम; चे अटि–श्रीचरणों की; पुरैन्तान्–समानता कर रहा था। ८६३

बड़े ही सुरूप (विष्णु के) नाभि-कमल से उत्पन्न चतुर्मुख से रचित पवित्ररूप सूर्य आदि तेजपुंजों से युक्त आकाश की छत को चीरते हुए

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

त्रिविक्रम का सुन्दर चरण गया था, जिन्होंने बलि से तीन चरणों की उतनी भूमि माँगी थी और आकाश और भूमि को दो ही चरणों में नाप लिया। हनुमान उस सुन्दर और लाल श्रीचरण के समान भी लगा। ८६३

एऴिरुब दोशनै यिडन्दुपडि यिन्मेल्
ऊऴुऱ वॆऴुन्ददनै युम्बरु मॊडुङ्गप्
पाऴिपॊरु वन्बिलनु णिन्ऱुपडर् मेल्बाल्
आऴियि नॆऱिन्दनुम नाऴियॆन्न वार्त्तान् 864

अनुमन्–हनुमान; एऴ् इरुपतु योचनै इटन्तु–एक सौ चालीस योजन का छेद बनाकर; पाऴि पॊरु–गुहा-सम; वल् पिलतुऴ् निन्ऱु–कठोर बिल के अन्दर से; पटियिन् मेल्—भूमि पर; ऊऴ् उऱ ऎऴुन्तु–क्रम से चढ़कर; अतनै–उस बिल-नगर को; उम्परुम् ऒटुङ्क–देवों को भी भयभीत होने देते हुए; पटर् मेल् पाल् आऴियिन्–विशाल पश्चिमी सागर में; ऎऱिन्तु–फेंककर; आऴि ऎन्न–समुद्र के समान; आर्त्तान्–गरजा। ८६४

हनुमान उस बिल के एक सौ चालीस योजन विस्तार के भाग को चीरकर ऊपर भूमि पर आया। फिर उस नगर को उसने देवों के मन में भय भरते हुए उठाकर विस्तृत सागर में फेंक दिया। फिर वह सागर के समान नाद कर उठा। ८६४

ऎन्ऱुमुळ मेल्हड लियक्किल्बिल तीवा
निन्ऱुनिलै पॆऱ्ऱुळदु नीणुदलि योडुम्
कुन्ऱुपुरै तोळव रॆऴुन्दुनॆऱि कॊण्डार्
पॊन्ऱिणि विशुम्बिनिडै नन्नुदलि पोनाळ् 865

ऎन्ऱुम् उळ–सदा रहनेवाले; मेल् कटल्–पश्चिमी सागर में; इयक्कु इल्–अनश्वर; पिल तीवु आ–बिलद्वीप के नाम से; निन्ऱु निलै पॆऱ्ऱुळतु–विद्यमान और स्थायी है; नीळ् नुतलियोटुम्–लम्बे ललाट वाली (स्वयंप्रभा) के साथ; कुन्ऱु पुरै–पर्वत-सम; तोळवर्–कन्धों वालों ने; ऎऴुन्तु–निकलकर; नॆऱि कॊण्टार्–अपनी राह ली; नल् नुतलि–सुन्दर ललाट वाली; पॊन् तिणि–स्वर्णजड़ित; विचुम्पिनिटै–देवनगर में; पोनाळ्–चली। ८६५

वह नगर अब भी सदा रहनेवाले पश्चिमी सागर-मध्य बिलद्वीप नाम के साथ विद्यमान है। पर्वतोन्नत कन्धों वाले वानर वीर स्वयंप्रभा के साथ बाहर आये। उन्होंने आगे का मार्ग लिया। सुन्दर ललाट वाली स्वयंप्रभा स्वर्णमय स्वर्गपुरी चली। ८६५

मारुदिवलित् तहैमै पेशिमऱ वोरुम्
पारिडै नडन्दुपह लॆल्लबड रप्पोय्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीरुडैय पॊय्हैयिनि नीळ्हरै यडैन्दार्
तेरुडै नॆडुन्दहैयु मेलैमलै शॆन्ऱान् 866

मऱवोरुम्–वीर भी; मारुति वलि तकैमै–मारुति का बल-विक्रम; पेचि–कहते हुए; पकल् ऍल्लै पटर–दिन के अन्त तक; पारिटै नटन्तु–भूमि पर पैदल; पोय्–चलकर; नीर् उटैय पॊय्कैयिन्–जल-भरे एक तडाग के; नीळ् करै–दीर्घ तीर पर; अटैन्तार्–पहुँचे; तेरुटै नॆटु तकैयुम्–एकचक्ररथी महिमावान देव (सूर्य) भी; मेलै मलै–पश्चिमी (अस्त-) गिरि; चॆन्ऱान्–गये। ८६६

पराक्रमी वानर वीर हनुमान के बल की स्थिति की प्रशंसा के वचन कहते हुए दिन के अन्त तक चले और एक जलाशय के बड़े तट पर आये। तब एकचक्ररथी सूर्यदेवता भी पश्चिमी (अस्त) अचल पहुँच गया। ८६६

14. आऱु शॆल् पडलम् (मार्ग-गमन पटल)

कण्डार् पॊय्हैक् कण्णह नऩ्ऩीर् कैयार
उण्डार् तेऩु मॊण्गनि कायु मॊरुशूऴल्
कॊण्डा रऩ्ऱो विऩ्ऱुयिल् कॊण्ड कुऱियुऩ्ऩित्
तण्डा वॆऩ्ऱित् तानवऩ् वन्दाऩ् ऱहविल्लाऩ् 867

कण्टार्–देखकर; कण् अकल्–विशाल; पॊय्कै–जलाशय में; नल् नीर्–अच्छे जल को; कै आर–हाथों से खूब उठाकर; उण्टार्–(वानरों ने) पिया; तेऩुम्–शहद और; ऑण् कनि कायुम्–श्रेष्ठ फल और खाद्य कच्चे फलों को; उण्टार्–खाया; ऑरु चूऴल्–एक ओर; इऩ् तुयिल् कॊण्टार्–सुख से सो गये; कॊण्ट कुऱि उऩ्ऩि–उनके निद्रामग्न होने का आसरा पाकर; तण्टा वॆऩ्ऱि–अप्रतिहत विजयशील; तकवु इल्लाऩ्–गुणहीन; तानवऩ्–एक दानव; वऩ्ताऩ्–वहाँ आया। ८६७

वानर वीरों ने उस सरोवर को देखा और उस विशाल जलाशय से जल उठाकर जी-भर पिया। शहद पिया और वहाँ प्राप्त मधुर फलों को खाया। फिर वे वहाँ एक ओर लेटे और सो गये। उनके सोने की टोह पाकर एक दानव उधर आया, जो अच्छे गुण वाला नहीं था और जो अक्षुण्ण विजयशील था। ८६७

मलैये पोल्वाऩ् माल्हड लॊपपाऩ् मऱमुऱ्ऱिक्
कॊलैये शॆय्वाऩ् कूऱ्ऱै निहर्प्पाऩ् कॊडुमैक्कोर्
निलैये पोल्वा नीर्मै यिलादा ऩिमिर्तिङ्गळ्
कलैये पोलुङ् गाल वॆयिऱ्ऱाऩ् कऩल्कण्णाऩ् 868

मलैये पोल्वाऩ्–पर्वत ही सम; माल् कटल् ऑप्पाऩ्–विशाल समुद्र के समान; मऱम् मुऱ्ऱि–कठोरता में बढ़ा हुआ; कॊलैये चॆय्वाऩ्–हत्या करनेवाला; कूऱ्ऱै निकर्प्पाऩ्–यम की समानता करनेवाला; कॊटुमैक्कु–क्रूरता का; ओर् निलैये–एक आश्रयस्थान; पोल्वाऩ्–सम रहनेवाला; नीर्मै इलाताऩ्–किसी भी अच्छे गुण से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विहीन; निमिर्–आकाश में उठकर शोभित रहनेवाले; तिङ्कळ् कलैये पोल्म्–चन्द्र-कला के समान; काल ऍयिऱ्ऱान्–भयंकर दन्तुला; कतल् कण्णान्–अग्निसम आँखों वाला। ८६८

वह पर्वत के ही समान आकार का और समुद्र के समान काला और लम्बा-चौड़ा था। वह अत्यधिक नृशंसकारी घातक यम के समान था। अत्याचार का आगार था। अच्छा गुण उसमें कोई नहीं था। उसके वक्र दाँत आकाश में उठे अर्धचन्द्र के समान थे। धधकती आँखों वाला था। ८६८

करुवि मामऴै कैह डाविमी, दुरुव मेनिशॅन् ऱुलवि यॉऱ्ऱलाल्
पॉरुविन् मारिमे लॉऴुहु पॉऱ्पिनाल्, अरुवि पाय्दरुङ् गुन्ऱ मेयनान् 869

करुवि–(लोकवृद्धि का) साधन; मा मऴै–बड़े मेघ; कैकळ् तावि–उसके हाथों में कूदकर; मेनि मीतु–शरीर पर; उरुवि चॅन्ऱु–सरककर; उलवि–फैलकर; ऑऱ्ऱलाल्–जमे रहते हैं, इसलिए; पॉरुवु इल् मारि–समता-रहित बारिश; मेल् ऑऴुकु–उसके ऊपर गिरती है; पॉऱ्पिनाल्–उस शोभा से; अरुवि पाय् तरुम्–जिस पर सरिताएँ बहती हैं, वैसी; कुन्ऱमे अनान्–गिरि के ही समान रहनेवाला। ८६९

मेघ, जो लोकसमृद्धि के कारण हैं, उसके हाथों में कूदते और उसके शरीर पर चलते जम जाते। और उपमाहीन बारिश भी उस पर गिरती थी। इसलिए वह सरिताओं से युक्त पर्वत के समान लगता था। ८६९

वान वर्क्कुमऱ् ऱवर्व लिक्कुनेर्, तान वर्क्कुमे वरिय तन्मैयान्
आन वक्कल नवनॉ डाडवे, ऱेन वर्क्कुमॉन् ऱॅण्ण वॉण्णुमो 870

वानवर्क्कुम्–देवों; मऱ्ऱु–और; अवर् वलिक्कु–उनकी वीरता की; नेर् तानवर्क्कुम्–समानता करनेवाले दानवों के लिए भी; मेवु अरिय–अजेय; तन्मैयान् आन–स्वभाव वाला; अ कलन्–वह खल था; अवनॉटु आट–उसके साथ लड़ना; वेऱु एनवर्क्कुम्–अन्य किसी के लिए भी; ऑन्ऱु ऍण्ण ऑण्णुमो–कुछ सोचने योग्य हो सकेगा क्या। ८७०

वह इतना बलशाली था कि देव और उनके समान बली दानव उसको जीत नहीं सकते थे। तब उस खल के साथ युद्ध करने की बात कोई सोच ही सकता है क्या ? । ८७०

पिऱङ्गु पङ्गियान् पॅयरुम् बॅट्पिनिल्
कऱङ्गु पोन्ऱुळान् पिशैयुङ् गैयिनान्
अऱङ्गॉळ् शिन्दयार् नॅऱिशॅ लयर्विनाल्
उऱङ्गु वारैवन् दॉल्लै यॅय्दिनान् 871

पिऱङ्कु पङ्कियान्–ध्यानाकर्षक केश वाला; पॅयरुम् पॅट्पितिल्–चलने के प्रकार में; कऱङ्कु पोन्ऱुळान्–पतंग की गति वाला; पिचैयुम् कैयिनान्–हाथ मलते हुए;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऱम् कॊळ् चिन्तैयार्–धर्मरत मन वाले; नॆऱि चॆल् अयर्वित्ताल्–मार्ग-गमन की थकावट से; उऱङ्कुवारै–सोनेवाले उनके पास; ऒल्लै वन्तु–तेजी से आकर; ऎय्तित्तान्–पहुँचा। ८७१

ध्यान आकर्षित करते हुए विद्यमान केश वाला, गति में पतंग के समान वह अपने हाथों को मलता हुआ पथ-श्रान्त, निद्रामग्न, धर्म-चित्त वानरों के पास आया। ८७१

पॊय्है यॆन्नदॆन् ऱुणर्न्दुम् बुल्लियोर्
ऎय्दि नार्हळ्या रिदुवॆ नावॆन्ना
ऐय नङ्गद नलङ्गन् मार्बिनिल्
कैयिन् मोदिनान् काल नेयनान् 872

कालने अनान्–यम ही सम; पॊय्कै–जलाशय; ऎन्नतु ऎन्ऱु–मेरा है, यह; उणर्न्तुम्–जानकर भी; पुल्लियोर् क्षुद्र; यार् ऎय्तिनार्कळ्–कौन आये हैं; इतु ऎन्ना–यह क्या है; ऎन्ना–कहते हुए; ऐयन् अङ्कतन्–नायक अंगद के; अलङ्कल् मार्पिनिल्–मालाधारी वक्ष पर; कैयिन् मोतिनान्–हाथों से पीटा। ८७२

यम-सम उस दानव ने ऐसा कहते हुए अंगद के मालालंकृत वक्ष पर अपने हाथों से प्रहार किया कि ये क्षुद्र लोग कौन हैं, जो यह जानकर भी इस सरोवर पर आये हैं कि यह मेरा है। यह क्या है, क्या है यह ?। ८७२

मऱ्ऱ मैन्दनु मुऱक्क मारिनान्
इऱ्ऱि वन्गोला मिलङ्गै वेन्दॆन्ना
ऎऱ्ऱि नानैने रॆऱ्ऱि नानवन्
मुऱ्ऱि नानिहऱ् कादि मूर्त्तियान् 873

अ मैन्ततुम्–उस बलिष्ठ कुमार ने भी; मऱ्ऱु–उस पर; उऱक्कम् मारिनान्–निद्रा से छूटकर; इऱ्ऱु–अब; इवन्–यह; इलङ्कै वेन्तु कॊल् आम्–लंकाधिपति ही है शायद; ऎन्ना–ऐसा सोचकर; ऎऱ्ऱिनानै–पीटनेवाले उसे; नेर् ऎऱ्ऱिनान्–बदले में पीटा; इकऱ्कु–बल का; आति मूर्त्तियान्–आदिदेव-सम; अवन्–वह; मुऱ्ऱिनान्–समाप्त हुआ। ८७३

उस बली अंगद ने भी निद्रा से जागकर पीटनेवाले उस दानव का "क्या यही लंकाधिपति है शायद" —यह सोचते हुए प्रतिप्रहार किया। पराक्रम के अधिष्ठाता के समान लगनेवाला वह दानव इस प्रकार से आहत होकर मर गया। ८७३

इडियुण् डाङ्गणो रोङ्ग लिऱ्ऱदॊत्
तडियुण् डान्ऱळर्न् दलऱि वीळ्दलुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॊडियिन् ऱोळ्विशैत् तॆळुन्दु शुऱ्ऱिनार्
पिडियुण् डारॆनत् तुयिलुम् बॆऱ्ऱियार् 874

आङ्कण्–तब; ओर् ऒङ्कल्–एक पर्वत; इटि उण्टु–वज्राहत हो; इऱ्ऱतु ऒत्तु–ढहकर गिरा हो, ऐसा; अटि उण्टाऩ्–पीटा जाकर; तळर्न्तु–निर्बल हो; अलऱि वीळ्तलुम्–चिल्लाते हुए जब वह गिरा; पिटि उण्टार् ऎऩ–भूत-ग्रस्तों के समान; तुयिलुम् पॆऱ्ऱियार्–सोने की स्थिति में रहे वे; तॊटियिन् तोळ्–कंकणभूषित भुजाओं को; विचैत्तु–हिलाते हुए; ऎळुन्तु–उठकर आये और; चुऱ्ऱिनार्–उसे घेर गये। ८७४

अंगद से पीटा जाकर वह दानव वज्राहत पर्वत गिरता हो जैसा बल खोकर चिल्लाते हुए नीचे गिर गया। तब भूतग्रस्त के समान जो रहे थे, वे वानर जागे और वलयभूषित भुजाओं को हिलाते हुए आकर अंगद को घेर गये। ८७४

यार् हॊलामिव निळैत्त दॆन्नॆऩात्, तारै शेयिनैत् तनिवि नायिनान्
मारु देयन्मऱ् ऱवनुम् वाय्मैशाल्, आरि यादॆरिन् दऱिहि लेनॆन्ऱान् 875

इवऩ् यार् कॊल् आम्–यह कौन हो सकता है; इळैत्ततु ऎऩ्–इसका किया हुआ क्या; ऎऩा–ऐसा; मारुतेयऩ्–वायुपुत्र ने; तारै चेयितै–तारासुत से; तऩि वितायिनाऩ्–विशेष रूप से प्रश्न किया; अवऩुम्–उसने भी; वाय्मै चाल्–सत्यनिष्ठ; आरिया–श्रेष्ठ; तॆरिन्तु अऱिकिलेऩ्–जानता-समझता नहीं; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा (उत्तर में)। ८७५

वायुपुत्र ने तारापुत्र से विशेष रूप से प्रश्न किया कि यह कौन है ? इसने क्या किया ? तब अंगद ने उत्तर दिया कि हे सत्यसन्ध साधु ! मैं कुछ नहीं जानता-समझता। ८७५

यानि वऩ्ऱऩैत् तॆरिय वॆण्णिनेऩ्, तूनि वन्दवेऱ् ऱुमिर नॆऩ्ऩुम्बे
रानिव् वाळ्बुनऱ् पॊय्है याळुमोर्, तान् वन्नॆऩच् चाम्बन् शाऱ्ऱिनाऩ् 876

चाम्पऩ्–जाम्बवान ने; यान् इवऩ् तनै–मैंने इसके सम्बन्ध में; तॆरिय ऎण्णिनेऩ्–जानने के विचार से सोचा; तू निवन्त–(शत्रु-) मांसपूर्ण; वेल्–भालाधारी; तुमिरऩ् ऎऩ्ऩुम् पेराऩ्–धूम्र नाम का है; इ आळ् पुनल्–इस गहरे जल के; पॊय्कै–सरोवर का; आळुम्–शासन करनेवाला; ओर् तानवऩ्–एक दानव है; ऎऩ–ऐसा; चाऱ्ऱिनाऩ्–कहा। ८७६

तब जाम्बवान ने कहा कि मैंने इसके सम्बन्ध में खूब सोचकर देखा। शत्रु-मांसावृत भालाधारी यह धूम्र नाम का है। इस सरोवर का स्वामी और रक्षक है एक दानव। ८७६

वेऱु मॆय्दुवा रुळर्हॊ लामॆऩात्, तेऱि यिऩ्ऱुयिऱ् शॆलवु तीर्न्दुळार्
वीऱु शॆञ्जुडर्क् कडवुळ् वेलैवाय, नाऱ नाणमलर्प् पॆण्णै नाडुवार् 877

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेरुम्–अन्य भी; अॅय्तुवार् उळर्–आनेवाले होंगे; कॊलाम् अॅन्ना–शायद क्या, ऐसा शंकित होकर; इन् तुयिल् तेरि–मधुर निद्रा से जागकर; चॅलवु तीर्न्तु उळार्–आगे जाना जिन्होंने रोका था, वे वीर; वीऱु–गौरवमय; चॅम् चुटर् कटवुळ्–लाल किरणों के स्वामी सूर्य के; वेलै वाय् नाऱ–सागर के ऊपर उग आने पर; नाण् मलर्–सद्यविकसित कमल की; पॅण्णै–देवी की; नाटुवार्–खोज करते हुए चले। ८७७

वानर वीर यह शंका करते हुए आगे जाना रोककर खड़े रहे कि इसके अनुकरण में और कुछ लोग भी आ सकते हैं। अब गौरववान सूर्य पूर्वी सागर के ऊपर उग आया। इसलिए वे नवविकसित कमलासना श्री लक्ष्मीदेवी (के अवतार, सीता) की खोज में आगे जाने लगे। ८७७

पुण्णै वॅम्मुलैप् पुळिन मेय्तडत्, तुण्ण वाम्बलिन् नमिऴ्द मूऱुवाय्
वण्ण वॅण्णहैत् तरळ वाण्मुहप्, पॅण्णै नण्णिनार् पॅण्णै नाडुवार् 878

पॅण्णै नाटुवार्–देवी को खोजते जानेवाले; पुळ् नै–चक्रवाक पक्षी जिनको देखकर इस बात से दुःखी होते हैं (कि हम इनकी समानता न कर पाते); वॅम् मुलै–ऐसे स्तनों के स्थान में; पुळिनम् एय्–बालू के टीलों से युक्त; तटत्तु–तटों से; उण्ण–पान करने पर; अमिऴ्तम् ऊऱुम्–अमृत बहानेवाले; आम्पलिन् वाय्–लाल कुमुद रूपी अधरों से; वण्ण वॅळ् नकै–श्वेत रंग के दाँतों के स्थान में; तरळम्–मोतियों से; वाळ् मुकम्–कमल रूपी सुन्दर मुखों से शोभित; पॅण्णै–"पॅण्णै" (के पास); नण्णिनार्–पहुँचे। ८७८

सीताजी की खोज में लगे वे 'पॅण्णै' नाम की नदी पर आये। ('पॅण्' का अर्थ तमिऴ में 'स्त्री' है। उसका कर्म कारक 'पॅण्णै' होता है। कवि का चातुर्य यह बताता है कि 'पॅण्' की खोज में लगे वे 'पॅण्णै' के पास आ गये। फिर श्लेष के द्वारा उस नदी और 'पॅण्' या 'स्त्री' में साम्य दिखाता है।) नदी के मध्य बालू के टीले (पुलिन) थे, वे ऐसे स्तनों के स्थान में रहे, जिनके कारण चक्रवाक पक्षी दुःखी होते हैं। (मानव-स्तनों से हार मानकर वे दुःखी होते हैं। पुलिनों पर पहुँचने के लिए वे लालायित होते हैं।) पान करने पर अमृत स्रवनेवाले अधर कुमुद हैं। श्वेत मुक्ताएँ दाँत हैं। कमल मुख हैं। ८७८

तुऱैयुन् दोहैनिन् ऱाडु शूळ्लुम्, कुऱैयुञ् जोलैयुङ् गुळिर्न्द शारनीर्च्
चिऱैयुन् वॅळ्ळुपून् दडमुन् दॅण्बळिक्, कऱैयुन् देडिन्ना रऱिविन् कोडियार् 879

अऱिविन् कोटियार्–ज्ञानशिखर; तुऱैयुम्–घाटों; तोकै–मोर; निन्ऱु आटुम्–जहाँ स्थित होकर नाचते हैं; चूळ्लुम्–उन स्थानों; कुऱैयुम्–पुलिनों; चोलैयुम्–बागों; कुळिर्न्त चारल्–शीतल पवन करनेवाले; नीर् चिऱैयुम्–जलाशयों; तॅळ्ळु पूम् तटमुम्–स्वच्छ, सुन्दर उद्यानों; तॅळ् पळिक्कऱैयुम्–और शुद्ध स्फटिक चट्टानों पर; तेटिन्नार्–ढूँढ़ा। ८७९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वे वानर वीर मूर्धन्य ज्ञानी हैं। उन्होंने स्नानघाटों, मयूर-नृत्य-स्थलों, पुलिनों और पास के बागों में सीताजी के लिए ढूँढ़ा। पवन को शीतल करनेवाले जलाशयों और सुगन्धित करनेवाले पुष्पोद्यानों में भी उन्होंने ढूँढ़ देखा। ८७९

अणिहॊ ऴित्तुवन् देवरु माडिनार्, पिणिहॊ ऴित्तवॆम् बिऱवि वेरिन्वन्
तुणिहॊ ऴित्तरुञ् जुऴिह डोऱुनन्, मणिहॊ ऴित्तिडुन् दुऱैयिन् वैहिनार् 880

अणि कॊऴित्तु वन्तु–सुन्दरता को पछोड़ (संग्रह कर) लेते हुए; **आटिनार् ऎवरुम्**–स्नान करनेवाले हर किसी का; **पिणि कॊऴित्त**–व्याधिग्रस्त; **वॆम् पिऱवि वेरिन्**–भयंकर जन्ममूल के; **वन् तुणि कॊऴित्तु**–कठोर अंश लेते हुए; **अरुम् चुऴिकळ् तोऱुम्**–अगम भँवरों में; **नल् मणि कॊऴित्तिटुम्**–श्रेष्ठ रत्न लेते हुए आनेवाली नदी के; **तुऱैयिन्**–एक घाट में; **वैकिनार्**–(वे वानर वीर) ठहरे। ८८०

वह पवित्र नदी सुन्दरता को मानों छाँट लेकर ग्रहण किये बहती थी। (वह मनोरम थी।) जो भी उसमें स्नान करते उनके भवबाधा के मूल, कठोर जन्म की जड़ के अंशों, और भँवरों में मणियों को लेती हुई आ रही थी। वे उस नदी के तट पर एक ओर ठहरे। ८८०

आडु पॆण्णैनी राऱु मेऱिनार्, काडु नण्णिनार् मलैह डन्दुळार्
वीडु नण्णिना रॆन्ऩ वीशुनीर्, नाडु नण्णिनार् नाडु नण्णिनार् 881

नाटु नण्णिनार्–अन्वेषण में लगे; **आटु नीर्**–स्नानयोग्य जल से भरी; **पॆण्णै आऱुम्**–'पॆण्णै' नामक नदी को; **एऱिनार्**–पार करके; **काटु नण्णिनार्**–अनेक जंगल पार किये; **मलै कटन्तु उळार्**–पर्वत पार किये; **वीटु नण्णिनार् ऎन्त**–मानो मोक्षलोक गये हों, ऐसा; **वीचु नीर्**–जल-समृद्ध; **नाटु नण्णिनार्**–एक देश के पास आये। ८८१

फिर सीताजी की खोज में प्रवृत्त होकर वे उस पवित्र नदी को तैरकर ऊपर तट पर चढ़े, जिसके जल में लोग आकर स्नान करते थे। आगे अनेक पर्वतों और वनों को पार कर एक जलसमृद्ध देश पर ऐसे आये मानो मोक्षलोक को आ गये हों। ८८१

तशन वप्पॆयर्च् चरळ शण्बहत्, तशन वप्पुलत् तहणि नाडॊरीइ
उशन वप्पॆयर्क् कवियु दित्तपेर्, इशैवि दर्प्पना डॆळिदि नॆय्दिनार् 882

तचनवम् पॆयर्–दशनव नाम के; **चरळ चण्पकत्तु**–सुन्दर चम्पकतरुओं से भरे; **अचत अ पुलत्तु**–खाद्यपदार्थोत्पादक भूमि से युक्त; **अकणि नाटु**–'मरुदम' (खेतों के) प्रदेश को; **ऒरीइ**–पार कर; **उचन अ पॆयर्**–'उशनस' नाम के; **कवि**–कवि (भगवान शुक्र); **उतित्त**–जहाँ जनमे उस; **पेर् इचै**–बड़े नामी; **वितर्प्प नाटु**–विदर्भदेश; **ऎळितिन्**–अनायास; **ऎय्तिनार्**–जा पहुँचे। ८८२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस देश का नाम दशनव था। उसमें चम्पकवन अधिक थे और खाद्योत्पादक धान के खेतों का 'मरुदम्' प्रदेश था। उसको पार कर वे विदर्भ देश में अनायास आये, जो उशनस-संज्ञित कवि शुक्र का जन्म-स्थान था। ८८२

वैद रुप्पमण् डलत्तिल् वन्दुपुक्, कॅय्द रुप्पमत् तनैयु मॅय्दिनार्
पॅय्द रुप्पैनूल् पिऱ्ऴु मेनियार्, शॅय्द वत्तुळार् वडिविऱ् ऱेडिनार् 883

वैतरुप्प मण्टलत्तिल्—विदर्भ देश में; वन्तु पुक्कु—आ प्रवेश करके; अॅय्तु अरुप्पम् अत्ततैयुम्—जाने योग्य सभी स्थानों में; अॅय्तिनार्—गये; पॅय् तरुप्पै—(कमर में) दर्भ की बनी रस्सी और; नूल्—(वक्ष में) यज्ञोपवीत; पिऱ्ऴु मेनियार्—जिनको शोभित करते हैं, ऐसे शरीर वाले; चॅय् तवत्तु उळार्—श्रेष्ठ तप-मार्ग में प्रवृत्त; वटिविल्—ब्राह्मण (ब्रह्मचारियों के) वेश में; तेटिनार्—(उन्होंने) सीता को खोजा। ८८३

विदर्भ देश में आकर वे सभी स्थानों में गये, जहाँ जाना था। वहाँ उन्होंने दर्भ की बनी करधनी और यज्ञोपवीत पहने हुए तपस्वी ब्राह्मणों के वेश में घूमकर ढूँढ़ा। ८८३

अन्न तन्मैया लऱिञर् नाडियच्, चॅन्नॅल् वेलिशूऴ् तिरुनन् नाडॊरीइत्
तन्नै यॅण्णुमत् तहैपु हुन्दुळार्, तुन्नु दण्डहङ् गडिदु तुन्निनार् 884

अऱिञर्—विज्ञ वे; अन्न तन्मैयाल्—उस प्रकार से; नाटि—सीता का पता लगाने; अ—उस; चॅम् नॅल् वेलि चूऴ्—लाल रंग के धानों के खेतों से घिरे; तिरु नल् नाटु—श्रीसम्पन्न अच्छे देश को; ऒरीइ—छोड़कर; तन्नै अॅण्णुम्—आत्मध्यानलीन; अ तकै—रहने की उस स्थिति (समाधि) में; पुकुन्तुळार्—जो पहुँचे हैं; तुन्नु—उनसे भरे; तण्टकम्—दण्डक वन को; कटितु तुन्नितार्—शीघ्र पहुँचे। ८८४

विज्ञ वानर उस रीति से विदर्भ देश में सीताजी को खोजने के बाद लाल धानों के खेतों से पूर्ण उस देश को छोड़कर आगे चले। फिर दण्डकारण्य गये, जहाँ आत्मध्यानरत समाधिस्थ योगी बड़ी संख्या में रहते थे। ८८४

उण्ड हत्तुळा रुऱैयु मैम्बॊऱिक्, कण्ड हर्क्करुङ् गाल नायिनार्
दण्ड हत्तैयुन् दडवि येहिनार्, मुण्ड हत्तुऱै कडिदु मुऱ्ऱिनार् 885

उण्टु—विषय-सुख भोगते हुए; अकत्तुळ् आर्—शरीर में; उऱैयुम्—(रत) रहनेवाले; ऐम्पॊऱि कण्टकर्क्कु—पंचेन्द्रिय रूपी कंटकों के; अरुम् कालन् आयिनार्—प्रबल बम जो बने हैं; तण्टकत्तैयुम्—उनके (वास के) दण्डक वन में भी; तटवि—खोजकर; एकिनार्—आगे गये; मुण्टकत् तुऱै—मुण्डकघाट पर; कटितु मुऱ्ऱिनार्—शीघ्र जा ठहरे। ८८५

वे पाँच इन्द्रिय रूपी कंटकों के, जो विषय-भोग करते हुए शरीर में रहते हैं, प्रबल शत्रु थे। उनके दण्डक वन को भी उन वीरों ने खूब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

टटोलकर देखा। (सीताजी नहीं मिलीं।) वे आगे चले। फिर मुण्डकघाट नामक स्थान पर शीघ्र जा पहुँचे। ८८५

अळ्ळ नीरॅला ममरर् मादरार्, कॊळ्ळै मामुलैक् कलवै कोदैयिर्
कळ्ळु नाऱलिर् कमल वेलिवाळ्, पुळ्ळु मीनुणा पुलवु तीर्दलाल् 886

अळ्ळल् नीर् अॅलाम्–पंकिल जल सब; अमरर् मातरार्–देवांगनाओं के; मामुलै–पीन स्तनों पर के; कॊळ्ळै कलवै–अधिक चन्दन ले; कोतैयिल कळ्ळुम्–और माला के मधु की; नाऱलिल्–गन्ध से भरा है, इसलिए; कमल वेलि वाळ्–उस मुण्डकघाट में रहनेवाले; पुळ्ळुम्–पक्षी भी; पुलवु तीर्तलाल्–मांसगन्ध से रहित होने के कारण; मीन् उणा–मछलियाँ नहीं खाते। ८८६

वहाँ देवांगनाएँ आकर स्नान करती थीं। उनके स्तनों पर लगा अधिक चन्दनलेप और माला के फूलों पर का शहद वहाँ के जल के तल में रहनेवाला पंक को भी सुवासित कर देता था। अतः वहाँ की मछलियों ने अपनी स्वाभाविक दुर्गन्ध छोड़ दी और वहाँ के पक्षी उनको पकड़कर नहीं खाते थे। ८८६

कुञ्ज रङ्गुडैन् दॊळुहु कॊट्पदाल्, विञ्जै मन्नर्पाल् विरह मङ्गैमार्
नञ्जु वीणैयि नडत्तु पाडलाल्, अञ्जु वार्हणी ररुवि याऱरो 887

विञ्चै मन्तर् पाल्–विद्याधर राजाओं की; विरक मङ्कै मार्–विरहिणी विद्याधर-स्त्रियाँ; नञ्चु–मन विगलित होकर; वीणैयिन्–वीणा पर; नटत्तु पाटलाल्–जो गीत स्वरित करते हैं, उनसे; अञ्चुवार्–प्रभावित स्त्रियों की; कण् नीर् अरुवि आऱु–आँखों के जल की बहनेवाली नदी में; कुञ्चरम्–गज; कुटैन्तु ऒळुकुम्–गोते लगाकर स्नान करते हैं; कॊट्पु अतु–ऐसी स्थिति का है वह। ८८७

उस मुण्डकघाट पर विरहिणी विद्याधर स्त्रियों के अपने विद्याधर राजाओं के विरह में वीणा के साथ गाये गये गानों को सुनकर वहाँ की स्त्रियाँ दुःख करती थीं और उनकी आँखों से अश्रुजल झरनों के समान बहने लग जाता था। वे नदियाँ इतनी बड़ी और गहरी थीं कि मातंग भी उनमें गोते लगाकर स्नान करते थे। ८८७

कमुह वार्नॅडुङ् गन्ह बूशलिल्, कुमुद वायिन्तार् कुयिलै येशुवार्
शमुह वाळियुन् दनुवुम् वाण्मुहत्, तमुद पाडलार् मरुवि याडुवार् 888

कुमुत वायिन्तार्–कुमुदमुख; कुयिलै एचुवार्–पिकहासिनी; चमुकम् वाळियुम्–शरसमूहों (सी आँखों) और; तनुवुम्–धनुओं (भौंहों) वाली; वाळ् मुकत्तु–उज्ज्वल मुखों वाली; अमुत पाटलार्–अमृत-मधुर गान करनेवाली (स्त्रियाँ); कमुक–क्रमुकतरुओं से बद्ध; वार् नॅटुम् कन्क ऊचलिल्–लम्बे और ऊँचे झूलों पर; मरुवि आटुवार्–मिलकर झूलती हैं। ८८८

वहाँ क्रमुक पेड़ों से बद्ध स्वर्ण के झूलों पर स्त्रियाँ झूलती हुई आनन्द

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मना रही थीं। उन स्त्रियों के अधर लाल कुमुद के समान थे। उनकी वाणी कोयल का परिहास करती थी। उनके मुख उज्ज्वल थे, जिनमें शर-समूह के समान आँखें और धनुओं के समान भौंहें थीं। वे सुधा के समान मधुर गीत गाती हुई झूल रही थीं। ८८८

इऩैय वायवॊण् डुऱैयै यॆय्दिनार्, निऩैयुम् वेलैवाय् नॆडिदु तेडुवार्
वऩैयुम् वार्हुऴऩ् मादैक् कण्डिलार्, पुऩैयु नोयिऩार् कडिदु पोयिऩार् 889

इऩैय आय–ऐसे एक; ऒळ् तुऱैयै–सुन्दर घाट पर; ऎय्तिऩार्–पहुँचे; नॆटितु तेटुवार्–बहुत दूर और देर से खोज लगाते आनेवाले वे; वऩैयुम् वार् कुऴल्–सुन्दर लम्बे केश वाली; मातै–देवी को; कण्टिलार्–देख न पाये; पुऩैयुम् नोयिऩार्–अधिकृत दुःख वाले बनकर; निऩैयुम् वेलै वाय्–जब सोच रहे थे, तब; कटितु पोयिऩार्–शीघ्र चले। ८८९

ऐसे सुन्दर मुण्डकघाट पर आये और वे खूब छान-बीन कर खोजने लगे। बहुत देर तक खोजने पर भी वे सँवारे हुए केश वाली सीताजी को देख न पाये। दुःख से अभिभूत हो वे सोचने लगे। फिर वे वहाँ से आगे चले। ८८९

नीण्ड मेऩिया नॆडिय ताळिनिन्, ऱीण्डु कङ्गैवन् दिऴिव दॆऩ्नलाय्प्
पाण्डु वम्मलै पडर्वि शुम्बिऩैत्, तीण्डु हिऩ्ऱतण् शिहर मॆय्दिनार् 890

नीण्ट मेऩियान्–त्रिविक्रमावतार में जिन्होंने बहुत बड़ा रूप धरा उनके; नॆटिय ताळिऩ् निऩ्ऱु–दीर्घ चरण से; ईण्टु–यहाँ; कङ्कै वऩ्तु इऴिवतु–आकाशगंगा आकर गिरती है क्या; ऎऩ्तल् आय्–ऐसा मान्य; पाण्टु अम् मलै–पाण्डु नाम के उस पर्वत के; पटर् विचुम्पिऩै तीण्टुकिऩ्ऱऩ–विस्तृत आकाश को छूनेवाले; तण् चिकरम्–शीतल शिखर पर; ऎय्तिऩार्–पहुँचे ८९०

वे पाण्डुपर्वत के गगनचुम्बी शिखर पर पहुँचे। त्रिविक्रम के श्रीचरण को धोती हुई जो निकली वह गंगा मानो इधर आकर बह रही हो, वैसा शीतल लगता था वह (श्वेत वर्ण) पर्वत। ८९०

इरुळ ऱुत्तुमी दॆऴुन्द दॆण्णिला, मरुळु ऱुत्तुवण् शुडर्व ऴङ्गलाल्
अरुळु ऱुत्तिला वडल रक्कन्मेल्, उरुळु ऱुत्ततिण् कयिलै यॊत्तदाल् 891

इरुळ् अऱुत्तु–अन्धकार काटकर; मीतु ऎऴुन्त–आकाश में उठा हुआ; तॆळ्निला–स्वच्छ चाँद; मरुळ् उऱुत्तु–मोहक; वण् चुटर्–घना प्रकाश; वऴङ्कल् आल्–फैलाता है, इसलिए; अरुळ् उऱुत् तुईला–दया के अनुत्पादक मन वाले; अटल् अरक्कन् मेल्–बली राक्षस (रावण) पर; उरुळ् उऱुत्त–उसे लुढ़काते हुए जिसने उसको दबाया; तिण् कयिलै–उस कठोर कैलास; ऒत्तत–के समान थी (वह पाण्डु गिरि)। ८९१

वह उस कैलासपर्वत के समान लगा, जिसने निर्मम रावण को नीचे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लुढ़काते हुए दबोच दिया; क्योंकि उस पर संसार पर फैले हुए अन्धकार को मिटाते हुए जो चन्द्र आकाश पर उठा था, वह मादक और पुष्कल चाँदनी को उसके ऊपर बरसा रहा था। ८९१

विण्णुऱ निवन्द शोदि वॆळ्ळिय कुन्ऱ मेविक्
कण्णुऱ नोक्क लुऱ्ऱार् कळियुऱक् कऩिन्द कामर्प्
पण्णुऱु किळविच् चॆव्वाय्प् पडैयुऱु नोक्कि ऩाळै
ऍण्णुऱु तिऱत्तुङ् गाणा रिडरुऱु मऩत्त रॆय्त्दार् 892

विण् उऱ–गगन छूते हुए; निवन्त–उन्नत; चोति–ज्योतिर्मय; वॆळ्ळिय कुन्ऱम् –श्वेत रंग के उस (पाण्डु) पर्वत पर; मेवि–चढ़कर; कण् उऱ नोक्कल् उऱ्ऱार्–सीताजी को (ढूँढ़) देखने के काम में प्रवृत्त; कळि उऱ–उनको आनन्द देते हुए; कऩिन्त–सम्यक् बने; कामर् पण् उऱु–चाहनीय गीत के समान; किळवि चॆव्वाय्–बोली बोलनेवाले लाल अधर; पटै उऱु–(भाले, तलवार आदि) हथियारों के समान; नोक्किऩाळै–आँखों वाली सीताजी को; ऍण् उऱु तिऱत्तुम्–ध्यान के साथ ढूंढ़े हुए सभी स्थानों में; काणार्–(कहीं भी) न देख पाकर; इटर् उऱु मऩत्तर्–दुःख-ग्रस्त मन वाले होकर; ऍय्त्तार्–शिथिल हुए। ८९२

आकाश का स्पर्श करते हुए उन्नत ज्योतिमय उस श्वेत पर्वत पर जाकर खूब देखने लगे। पर मन को आनन्द देते हुए सुस्वरित मोहक गाने के समान बोली वाली और भाला, तलवार आदि के समान आँखों वाली सीताजी को न देख पाने के कारण दुःखी बनकर श्रान्त हुए। ८९२

ऊदैपोल् विशैयिन् वॆङ्ग णुळ्ळुवैपोल् वयव रोङ्गल्
आदियै यहन्ऱु शॆल्वा ररक्कऩाल् वञ्जिप् पुण्ड
शीदपो हिन्ऱाळ् कून्दल् वळीइवन्दु पुवऩञ् जेर्न्द
कोदैपोऱ् किडन्द कोदा वरियिऩैक् कुऱुहिच् चॆन्ऱार् 893

ऊतै पोल्–पवन-सदृश; विचैयिन्–वेगवान; वॆम् कण्–भयभीत करनेवाली आँखों के; उळ्ळुवै पोल्–बाघों के समान; वयवर्–वीर; ओङ्कल् आतियै–पर्वत आदि स्थान को; अकऩ्ऱु–छोड़कर; चॆल्वार्–आगे बढ़े; अरक्कऩाल्–राक्षस (रावण-) द्वारा; वञ्चिप्पु उण्ट–अपहृत; चीतै पोकिऩ्ऱाळ्–हो जानेवाली सीता के; कून्तल् वळीई वन्तु–केश से सरक आकर; पुवऩम् चेर्न्त–भूमि पर पड़ी; कोतै पोल्–माला के समान; किटन्त–पड़ी हुई; कोतावरियिऩै–गोदावरी के; कुऱुकिच् चॆन्ऱार्–समीप गये। ८९३

पवन के समान गति वाले और भयानक आँखों के बाघों के समान बलशाली वे वीर उस पर्वत को भी छोड़कर आगे बढ़े। सामने गोदावरी नदी दिखायी दी। वह सीताजी के, जो रावण से अपहृत हो जा रही थीं, केश से गिरी हुई माला के समान लगती थी। ८९३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍऴुहिन्ऱ तिरैयिऱ् ऱाहि यिऴिहिन्ऱ मणिनीर् याऱु
तॊऴुहिन्ऱ शनहन् वेळ्वि तॊडङ्गिय शुरुदिच् चॊल्लाल्
उऴुहिन्ऱ पॊऴुदि नीन्ऱ वॊरुमहट् किरङ्गि ञालम्
अऴुहिन्ऱ कलुऴि वारि यामॆनप् पॊलिन्द दन्ऱे 894

ऍऴुकिन्ऱ–उठनेवाली; तिरैयिऱ्ऱु आकि–तरंगों से युक्त होकर; इऴिकिन्ऱ–पर्वत से झरनेवाली; मणि नीर् याऱु–मणिसम जल की नदी; तॊऴुकिन्ऱ–वन्दनीय; चनकन् वेळ्वि तॊटङ्किय–जनकयज्ञारम्भार्थ; चुरुति चॊल्लाल्–वेदोक्त रीति से; उऴुकिन्ऱ पॊऴुतिन्–जोतते समय; ईन्ऱ–(भूमि द्वारा) दत्त; ऒरु मकट्कु–अप्रमेय देवी के; इरङ्कि–दुःख से सहानुभूति में कातर होकर; ञालम्–माता भूमि; अऴुकिन्ऱ–जो रोयीं उससे निकली; कलुऴि वारि आम्–अश्रुधारा है, ऐसा; पॊलिन्ततु–दृश्य देती रही। ८९४

उस पर तरंगें उठती-गिरती थीं। मणि-सम स्वच्छता के साथ वह नदी पर्वत से उतर रही थी। जब पूज्य जनक ने यज्ञारम्भ में वेदमन्त्रों के साथ हल चलाया तब भूमिदेवी ने सीता को जनाया था। उस अप्रतिम देवी को रावण हर ले गया और माता भूमि सहानुभूति से आँसू बहाने लगी। यह गोदावरी नदी उस भूमिदेवी की अश्रुधारा के समान लगती थी। ८९४

आशिल्पे रुलहिऱ् काण्बोर् अळवैनू लॆनलु माहिक्
काशॊडु कनहन् दूविक् कविनुऱक् किडन्द कान्या
ऱेशिल्पो ररक्कन् मार्बि निडैपऱित् तॆरुवं वेन्दन्
वीशिय वडह मीक्को ळीदॆन विळङ्गिऱ् ऱन्ऱे 895

काचॊटु कनकम् तूवि–रत्न व स्वर्ण छितराते हुए; कविन् उऱ–आकर्षणयुक्त; किटन्त कान् याऱु–बहनेवाली वह जंगली नदी; आचु इल्–दोषहीन; पेर् उलकिल्–इस बड़ी भूमि पर; काण्पोर्–उसको देखनेवाले; अळवै नूल् ऍनलुम् आकि–तर्कशास्त्र-सम बनकर; ऍरुवै वेन्तन्–गीधों के राजा द्वारा; एचु इल्–अनिन्द्य; पोर् अरक्कन्–युद्धचतुर राक्षस (रावण) के; मार्पिन् इटै–वक्षमध्य से; पऱित्तु वीचिय–छीनकर फेंके हुए; मी कोळ् वटकम् ईतु ऍन–श्रेष्ठ रत्नहार क्या यह, ऐसा; विळङ्किऱ्ऱु–शोभित रही। ८९५

वह उन्मत्त नदी अपनी लहर-हस्तों द्वारा रत्न के साथ स्वर्ण बिखेरती हुई बह रही थी। वह अनिंद्य इस भूमि पर दर्शकों के लिए तर्कशास्त्र के समान शोभायमान थी। (तर्कशास्त्र अनेक अर्थों को देनेवाला है, यह नदी भी अनेक वस्तुओं को देनेवाली है।) वह रावण के रत्नहार के समान भी लगी, जिसको गीधों के राजा जटायु ने छीनकर फेंक दिया था। ८९५

अन्नदि मुऴुदु नाडि याय्वलै मयिळै याण्डुम्
शन्निदि युऱ्ऱि लादार् नॆडिदुपिन् ऱविरच् चॆन्ऱार्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इऩ्ऩदी दिलाद दीदॆऩ् ऱियावैयु मॆण्णुङ् गोळार्
शॊऩ्ऩदी विऩैह डीर्क्कुञ् जुवणहत् तुऱैयिऱ् पुक्कार् 896

इऩ्ऩतु ईतु–यहाँ यह है; इलाततु ईतु–जो नहीं है, वह यह है; यावैयुम्–(ऐसा जानकर) सभी को; ऎण्णुम् कोळार्–सोचकर देखने की प्रवृत्ति वाले; अ नति मुऴुतुम्–उस नदी-प्रदेश भर में; नाटि–खोजकर; आय् वळै मयिलै–(श्रेष्ठ) चुने हुए कंकण-धारिणी मयूर-निभ सीता के; याण्टुम्–कहीं भी; चऩ्ऩितियुऱ्ऱिलातार्–दर्शन न करके; नॆटितु–लम्बे मार्ग को; पिऩ् तविर–पीछे छोड़ते हुए; चॆऩ्ऱार्–आगे बढ़े; चॊऩ्ऩ–शास्त्रों में कथित; तीविऩैकळ्–पापों का; तीर्क्कुम्–निवारण करनेवाली; चुवणकम्–शोणक (शोन); तुऱैयिऱ् पुक्कार्–के तट के प्रदेश में प्रविष्ट हुए। ८९६

वे वानर वीर बुद्धिमान थे। यहाँ रहता यह है, यहाँ यह नहीं रहता —इस तरह खूब सोच-समझनेवाले उन्होंने नदी तट पर सर्वत्र अन्वेषण किया। पर कहीं भी चुने हुए श्रेष्ठ कंकण वाली कलापी-सी सुन्दरी सीता को देख नहीं पाये। लम्बे मार्ग को तय करते हुए वे बढ़ते चले। फिर पापनाशक शोण नदी पर आये। ८९६

शुरुम्बॊडु तेऩुम् वण्डु मऩ्ऩमुन् दुवऩ्ऱिप् पुळ्ळुम्
करुम्बॊडु शॆऩ्ऩॆऱ् काडुङ् गमलवा विहळु मल्हिप्
पॆरुम्बुनऩ् मरुदञ् जूळ्ऩ्द किडक्कैपिऩ् किडक्कच् चॆऩ्ऱार्
कुरुम्बैनीर् मुरञ्जुञ् जोलैक् कुलिन्दमुम् पुऱत्तुक् कॊण्डार् 897

चुरुम्पॊट–भ्रमरों के साथ; तेऩुम् वण्टुम्–मधुमक्खियाँ और अलिकुल; अऩ्ऩमुम्–और हंस; पुळ्ळुम्–और अन्य पक्षी; तुवऩ्ऱि–मिलकर; करुम्पॊटु–ईख के साथ; चॆ नॆल् काटुम्–शालि के खेत; कमल वाविकळुम्–कमलसर; मल्कि–अधिक हैं; पॆरुम् पुऩल्–अधिक जल के साथ; मरुतम् चूळ्ऩत–'मरुदम्' प्रदेशों से आवृत; किटक्कै–स्थान; पिऩ् किटक्क–पीछे रह जाये, ऐसा; चॆऩ्ऱार्–जो गये; कुरुम्पै नीर्–डाभ; मुरञ्चुम्–जहाँ अधिक संख्या में हैं; चोलै–ऐसे नारियल के खेतों के बागों से पूर्ण; कुलिऩ्तमुम्–कुलिंद देश को भी; पुऱत्तु कॊण्टार्–पीछे छोड़ चले। ८९७

बाद वे उन जलसमृद्ध 'मरुदम' प्रदेशों को पार करके गये, जिनमें ईख और लाल धान के खेत भरपूर थे और जहाँ भ्रमर, मधुमक्खियाँ, हंस और अन्य पक्षी कसरत से पाये गये और अनेक कमल-सर थे। वे कुलिन्द देश में आये, जहाँ नारियल के फलों सहित नारियल के तरुओं के घने भाग थे। वहाँ खोजने के बाद उसको भी छोड़ वे बढ़े। ८९७

कॊङ्गण मेळु नीङ्गिक् कुडहडऱ् ऱरळक् कुप्पै
शङ्गणि पाऩ नॆय्द ऱुण्बुऩ ऱविर वेहित्
तिङ्गळिऩ् कॊळ्ऩ्दु शुऱ्ऱुञ् जिमयनीळ् कोट्टुत् तेवर्
अङ्गैहळ् कप्प निऩ्ऱ वरुन्ददिक् करुह रान्ऱार् 898

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कॊङ्कणम् एऴुम्–कोंकण के सातों भागों को; नीङ्कि–छोड़कर; कुट कटल्–पश्चिमी सागर में उत्पन्न; तरळक् कुप्पै–मुक्ताओं के ढेर; चङ्कु–शंख; अणि पाऱल्–सुन्दर नीलोत्पल पुष्प; नॆय्तल्–'नॆय्दल' के फूल; तण् पुऱल्–इनसे पूर्ण शीतल जलाशयों वाले प्रदेशों को; तविर एकि–छोड़ जाकर; तिङ्कळिऱ् कॊऴुनुतु–चन्द्र-पल्लव, चाँदनी से; चुऱ्ऱुम्–आवृत; चिमय–शिखरों वाले; नीळ् कोट्टु–लम्बे शीर्ष भागों से युक्त; तेवर् अङ्कैकळ्–देवों के सुन्दर हाथ; कूप्प–जुड़े रहें, ऐसे; निऱ्ऱ–उन्नत; अरुन्ततिक्कु–अरुन्धती गिरि; अरुकर् आऱार्–के समीपस्थ हुए। ८९८

फिर वे कोंकण देश के सातों भागों को पार करके उन स्थानों में गये जहाँ पश्चिमी सागर में उत्पन्न शंख, नीलोत्पल और 'नेय्दल' के फूल से भरी शीतल नीची ज़मीन थी। आगे वे अरुन्धती पर्वत के पास पहुँचे। उस पर्वत के शिखरों को चन्द्र का पल्लव रूपी चाँदनी आवृत करती थी। उसके शिखर ऊँचे थे। वह पर्वत इतना ऊँचा उठा हुआ था कि देवतागण भी उसके सामने अंजलिबद्ध खड़े रहे। ८९८

अरुन्ददिक् करुहु शॆन्ऱाण् डऴहिनुक् कऴहु शॆय्दाळ्
इरुन्ददिक् कुणर्न्दि लादा रेहिऩा रिडैयर् मादर्
पॆरुन्ददिक् करुन्देऩ् मारु मरहदप् पॆरुङ्गुऩ् ऱॆय्दि
इरुन्ददिऱ् ऱीर्न्दु शॆन्ऱार् वेङ्गडत् तिरुत्त कालै 899

अरुन्ततिक्कु–अरुन्धती गिरि के; अरुकु चॆन्ऱु–पास जाकर; आण्ट–वहाँ; अऴकिनुक्कु–सुन्दरता को; अऴकु चॆय्ताळ्–सुन्दरता प्रदान करनेवाली (अति सुन्दर); इरुन्त तिक्कु–(सीता) जहाँ रहीं, वह दिशा; उणर्न्तिलातार्–न जान सके; एकिऩार्–जो जाते हुए; इटैयर् मातर्–ग्वालिन-स्त्रियाँ; पॆरुम् ततिक्कु–अपने अधिक दही को; अरुम् तेऩ् माऱुम्–बदले में देकर जहाँ अप्राप्य शहद प्राप्त करती हैं; मरकत पॆरुम् कुन्ऱु–बड़ी मरकतिगिरि; ऍय्ति–पहुँचकर; इरुन्तु–(कुछ देर) ठहरकर; अतिल् तीरन्तु–उससे हटकर; चॆन्ऱार्–आगे जाते बने; वेङ्कटत्तु–वेंकटगिरि पर; इऱुत्त कालै–जब आये रहे, तब। ८९९

अरुंधती के पास जाने पर भी उन्हें 'सुन्दरता कहँ सुन्दरता दिलानेवाली' सीताजी का पता नहीं लगा! वे आगे जाकर मरकतपर्वत पर आये, जहाँ गोपांगनाएँ अपना जमा हुआ दधि देकर उसके बदले में पर्वत-कुमारियों से शहद लेती थीं। वहाँ कुछ देर ठहरने के बाद उसको भी त्यागकर जब वे श्रीवेंकटगिरि पर आये, तो (देखा)। ८९९

मुऩैवरु मऱैव लोरु मुन्दैनाट् चिन्दै मूण्ड
विऩैवरु नॆऱियै माऱुऱु मॆय्युणर् वोरुम् विण्णोर्
ऍऩैवरु ममरर् मादर् यावरुञ् जित्त ऱॆऩ्बोर्
अऩैवरु मरुवि नऩ्ऩीर् नाळम्वन् दाड हिऩ्ऱार् 900

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुत्तैवरुम्–महर्षियों; मऱैवलोरुम्–और वेदवित ब्राह्मणों ने; मुन्तै नाळ्–पूर्व-जन्म में; चिन्तै मूण्ट–मन लगाकर जो किया, उसके फलस्वरूप मिलनेवाले; वित्तै वरु नॆऱियै–जन्म-मार्ग को; माऱ्ऱुम्–बदलनेवाले; मॆय् उणर्वोरुम्–तत्त्वज्ञ और; विण्णोर् ॲत्तैवरुम्–सभी देवता; अमरर् मातर् यावरुम्–सभी देवांगनाएँ; चित्तर् ॲन्पोर् अत्तैवरुम्–सिद्ध जाति के सभी; अरुवि नल् नीर्–नदी के पवित्र जल में; नाळुम्–प्रतिदिन; वन्तु आटुकिन्ऱार्–आकर स्नान करते हैं। ९००

उस गिरि पर महर्षि लोग, वेदपाठी ब्राह्मण, वे तत्त्वज्ञ जो प्रारब्ध कर्म के फलस्वरूप मिलनेवाले नरक-मार्ग को रोककर सन्मार्ग अपना सकते हैं, देवता लोग, देवांगनाएँ और सिद्ध लोग आकर वहाँ की पवित्र नदी में स्नान करते हैं। ९००

पॆय्द वैम्बॊऱि युम्बॆरुङ् गाममुम्, वैद वॆञ्जॊलुम् मङ्गैयर् वाट्कणिन्
ॲय्द वञ्जह वाळियु मॆण्णऱच्, चॆय्द वम्बल शॆय्हुनर् देवराल् 901

तेवर्–देवता लोग; पॆय्त–मदमत्त; ऐम् पॊऱियुम्–पंचेन्द्रिय को; पॆरुम् काममुम्–बड़ी कामेच्छा को (और); वैत वॆम् चॊलुम्–गाली के कठोर वचनों; मङ्कैयर्–स्त्रियों के; वाळ् कणिन्–तलवार-सी आँखों से; ॲय्त–प्रेषित; वञ्चक वाळियुम्–वंचक (दृष्टि रूपी) शरों को; ॲण् अऱ–उनके अभिप्राय को नष्ट करते हुए (जीतकर); चॆय् तवम्–करणीय तप; पल चॆय्कुनर्–विविध रूप से करनेवाले बने हैं। ९०१

उस श्रीवेंकटाद्रि पर देवगण भोगाभिलाषी पञ्चेन्द्रिय, कामवासना, दूसरों की गाली के वचनों और स्त्रियों की तलवार-सम आँखों के फेंके हुए दृष्टि रूपी शरों पर विजय पाकर तपस्या कर रहे थे। ९०१

वलङ्गॊ णेमि मऴैनिऱ वात्तवन्
अलङ्गु ताळिणै ताङ्गिय वम्मलै
विलङ्गुम् वीडुऱु हिन्ऱत मॆय्न्नॆऱिप्
पुलन्गॊळ् वार्हट् कत्तैयदु पॊय्क्कुमो 902

वलम् कॊळ् नेमि–विजयशील सुदर्शन चक्रधर; मऴै निऱ वात्तवन्–मेघश्याम विष्णुदेव (वेंकटपति) के; अलङ्कु ताळ् इणै–शोभायमान चरणद्वय को; ताङ्किय–धारण करनेवाले; अ मलै–उस वेंकटाद्रि पर रहनेवाले; विलङ्कुम्–जानवर भी; वीटु उऱुकिन्ऱत–मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं; मॆय् नॆऱि–सच्चा मार्ग; पुलन् कॊळ्वार्क्कु–(पर) जाकर जितेंद्रिय बने हुओं के लिए; अत्तैयतु–वह मोक्षप्राप्ति; पॊय्क्कुमो–अप्राप्य हो सकती है क्या। ९०२

विजयशील सुदर्शनचक्रधर और मेघश्याम श्री विष्णुदेव के उज्ज्वल चरणद्वय के धारक उस वेंकटाचल पर रहनेवाले पशु भी मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं। तब उत्तम उपायों द्वारा इन्द्रियों का दमन जो कर चुके हैं, उन तपस्वियों के लिए मोक्ष चूका रहेगा क्या ? । ९०२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आय कुन्ऱिऩै यॆय्दि यरुन्दवम्, मेय शॆल्वरै मेविऩर् मॆय्न्नॆऱि
नाय हऩ्ऱऩै नाळुम् वणङ्गिय, तूय नऱ्ऱवर् पादङ्गळ् शूडिऩार् 903

आय कुन्ऱिऩै—ऐसे उस पर्वत को; ऍय्ति—पहुँचकर; अरुम् तवम् मेय—कठिन तप में लगे हुए; चॆल्वरै—तपोधनों के पास; मेविऩर्—जाकर; मॆय् नॆऱि नायकन् ऩै—मोक्षदायक स्वामी श्रीवेंकटनाथ की; नाळुम् वणङ्किय—प्रतिदिन जिन्होंने पूजा की उन; तूय नल् तवर्—पवित्र श्रेष्ठ तपस्वियों के; पातङ्कळ् चूटिऩार्—चरणों पर अपने सिर धरे। ९०३

वानरयूथप उस श्रीवेंकटाचल पर गये। कठिन तप में लीन उन तपोधनों के पास पहुँचे। वे प्रतिदिन मोक्ष के स्वामी श्रीवेंकटाचलपति की पूजा करनेवाले थे। वानरों ने उन पवित्र और उत्तम तपस्वियों के पादारविन्द को अपने शीशों में धर लिया (दण्डवत की)। ९०३

शूडि याण्डच् चुरिहुळऱ् ऱोहैयैत्, तेडि वार्पुऩऱ् ऱॆण्डिरैत् तॊण्डैनऩ्
ऩाडु नण्णुहिऩ् ऱार्मऱै नावलर्, वेड मेयिऩर् वेण्डुरु मेवुवार् 904

वेण्टु उरु—मनमाने रूप; मेवुवार्—ले सकनेवाले वे, चूटि-चरणों पर सिर नवाकर; आण्टु—उस पर्वत पर; अ चुरि कुळल् तोकैयै—उन घुँघराले केशों वाली (सीता) को; तेटि—खोजकर; मऱै नावलर्—वेदवित ब्राह्मणों का; वेटम् मेयिऩर्—वेश धरकर; तॆळ् तिरै—स्वच्छ लहरों वाले; वार् पुऩल्—अधिक जल से भरे; तॊण्टै नल् नाटु—'तोण्डै' नामक श्रेष्ठ देश में; नण्णुकिऩ्ऱार्—पहुँचते हैं। ९०४

वे वानर कामरूप थे। वे पूर्वोक्त तपस्वियों के चरणों को नमस्कार करके उस पर्वत पर घुँघराले केश वाली सीताजी की खोज में लगे। पर वे मिलीं नहीं। अतः वेदवित ब्राह्मणों का वेश धरकर आगे गये और 'तॊण्डै' प्रदेश में आये, जो तरंगों से पूर्ण श्रेष्ठ जलाशयों से समृद्ध था। ९०४

कुऩ्ऱु शूळ्न्द कडत्तॊडुङ् गोवलर्, मुऩ्ऱिल् शूळ्न्द पडप्पैयु मॊय्पुऩल्
शॆऩ्ऱु शूळ्न्द किडक्कैयुन् दॆण्डिरै, मऩ्ऱु शूळ्न्द परप्पु मरुङ्गॆलाम् 905

कुऩ्ऱु चूळ्न्त—पर्वतों से घिरे हुए; कटत्तॊटुम्—जंगली (कंकड़ीले) प्रदेश; कोवलर् मुऩ्ऱिल् चूळ्न्त—ग्वालों के आँगनों को घेरते हुए रहनेवाले; पटप्पैयुम्—बाग और; मॊय् पुऩल—अधिक जलराशि; चॆऩ्ऱु चूळ्न्त—जहाँ भरी रहती है; किटक्कैयुम्—ऐसे खेतों के प्रदेश; तॆळ् तिरै मऩ्ऱु—स्वच्छ तरंगों से आवृत; मऩ्ऱु चूळ्न्त—जहाँ बालू के टीले रहते हैं; परप्पुम्—ऐसे समुद्रतटीय प्रदेश; मरुङ्कु ऍलाम्—सर्वत्र (पाये जाते हैं, ऐसा देश है वह देश)। ९०५

उस 'तॊण्डै' देश में पाँचों प्रकार के भूभाग थे। पर्वतावृत कंकड़ीले जंगल (पालै); ग्वालों के आँगनों के सामने बाग; जलसमृद्ध 'मरुदम्' (खेतों के प्रदेश) और स्वच्छ समुद्री लहरों से आवृत बालू के स्थलों से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

युक्त 'नॅयदल' (समुद्र-तटीय प्रदेश) आदि पाँचों भूभाग, कुरिञ्जि, मुल्लै, मरुदम्, नॅय्दल और पालै उस देश में पाये गये। ९०५

शूल डिप्पल विन्शुळै तूङ्गुदेन्, कोल डिप्प वॅरीइक्कुल मळ्ळरेर्च्च
चाल डित्तरुञ् जालियिन् वॅण्मुळै, तोल डिक्किळै यन्नन् दुवैप्पन 906

कुलम् मळ्ळर्-झुण्डों में कृषक; एर् कोल् अटिप्प-जब जोतते और (बैलों को) वेत्र से मारते हैं; तोल् अटि—चमड़े से संयुक्त पैरों वाले; किळै अन्नम्-हंसों के समूह; वॅरीइ-डरकर; चूल् अटि-गर्भ (फल) को जड़ में ही धारण करनेवाले; पलविन् चुळै—कटहल के फलों से; तूङ्कु तेन्-चूनेवाले शहद द्वारा; चाल् अटि तरुम्-हल के द्वारा बने कूँड़ों में पले हुए; चालियिन् वॅळ् मुत्तै-शालि के श्वेत अंकुरों को; तुवैप्पन-पैरों से रौंदनेवाले बने हैं। ९०६

झुण्डों में कृषक हल जोतते हैं और बैलों को अपने बेंतों से पीटते हैं। उससे डरकर हंसकुल, जिनके पैर चमड़े से मिले हुए होते हैं, भागते हैं और कूँड़ों में उन शालि के अंकुरों को रौंद देते हैं। वे अंकुर उस कटहल के फलों के रस से उगे हैं। वे ऐसे कटहल के तरु हैं, जिनकी जड़ में ही कटहल के फल लगते हैं। ९०६

शॅरुहु ऱुङ्गणिऱ् ऱेङ्गु वळैक्कुलम्, अरुहु ऱङ्गुम् वयन्मरुङ् गाय्च्चियर्
इरुहु ऱङ्गु पिऱङ्गिय वाळैयिऱ्, कुरुहु ऱङ्गुङ् गुयिलुन् दुयिलुमाल् 907

वयन् मरुङ्कु-खेतों में; चॅरु कुऱुम् कणिल्-चंचल पुतलियों की आँखों के समान; तेम् कुवळै कुलम्-मधुमक्खियों-सहित कुवलय; अरुकु उऱङ्कुम्-पास-पास सोते हैं (बन्द रहते हैं); आय्च्चियर्-ग्वालिनों के; इरु कुऱङ्कु-दो ऊरुओं के समान; पिऱङ्किय-शोभायमान; वाळैयिल्-कदली तरुओं पर; कुरुकु उऱङ्कुम्-सारस सोते हैं; कुयिलुम् तुयिलुम्-कोयलें भी सोती हैं। ९०७

वहाँ के खेतों में कुमुद-कलियाँ मीलित हैं, जो अपने ऊपर रहनेवाली मधुमक्खियों के कारण ग्वालिनों की चंचल पुतलियोंसहित आँखों के समान लगती हैं। ग्वालिनों के पुष्ट ऊरुओं के समान केले के तरुओं पर सारस सोते हैं, कोयलें भी सोती हैं। ९०७

तॅरुवि नार्प्पुऱुम् बल्लियन् देर्मयिल्, करुवि मामळै यॅन्ऱु कळिप्पुऱा
पॉरुनर् तण्णुमैक् कन्नमुम् बोहल, मरुवि नार्क्कु मयक्कमुण् डाङ्गॉलो 908

तॅरुविन् आर्प्पु उऱुम् वीथियों में बजनेवाले; पल्लियम्-वाद्यों को; तेर्-सुनकर समझनेवाले; मयिल्-मोर; करुवि मा मळै ऍन्ऱु-बारिश के कारणभूत मेघ समझकर; कळिप्पु उऱा-मुदित नहीं होते; अन्नमुम्-हंस भी; पॉरुनर् तण्णुमैक्कु-नर्तकों के मृदंग-नाद से डरकर; पोकल-नहीं हटते; मरुवितार्क्कु-चिर-परिचितों में; मयक्कम् उण्टाम् कॉलो-भ्रम होगा क्या। ९०८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वीथियों में (सौधों के अन्दर से) विविध वाद्य बज उठते हैं। उनको सुनकर मोर यह समझकर खुश नहीं होते और नाचते कि वे बारिश के मूल-भूत कारण जो मेघ हैं उनका गर्जन है। वैसे ही नर्तक लोगों के मृदंग की ध्वनि सुनकर हंस इस डर से नहीं भागते कि वह मेघगर्जन है। क्योंकि लोगों को परिचित वस्तुओं के सम्बन्ध में संशय या भ्रम हो सकता है क्या ? । ९०८

तेरै वॅन्ऱुयर् तॅङ्गिऴम् पाळैयै, नारै यॅन्ऱिळङ् गॅण्डै नडुङ्गुव
तारै वन्ऱलैत् तण्णिळ वाम्बलैच्, चेरै यॅन्ऱु पुलम्बुव तेरैये 909

तेरै वॅन्ऱु–रथ को जीतकर; **उयर्**–ऊँचे उगे हुए; **तॅङ्कु**–नारियल के; **इळम् पाळैयै**–छोटे डण्ठलों को (बालों की); **इळम् कॅण्टै**–छोटी 'कॅण्डै' मछलियाँ; **नारै अॅन्ऱु**–सारस समझकर; **नटुङ्कुव**–भयभीत होती है; **तारै**–लम्बी; **वन् तलै**–बड़े अग्रभाग की; **तण् इळ आम्पलै**–शीतल छोटी कुमुदकलियों को; **तेरै**–दादुर (मेंढक); **चेरै अॅन्ऱु**–"शारै" साँप समझकर; **पुलम्पुव**–कलपते हैं। ९०९

रथों से भी ऊँचे नारियल के तरुओं पर सफ़ेद डंठल दिखायी देते हैं। उनको देखकर 'केण्डै' नाम की मछलियाँ सारस समझ लेती हैं और भय खाती हैं। वैसे ही शीतल और बाल-कुमुद-कलियों को 'शारै' सर्प समझकर दादुर (मेंढक) डरते हैं और चिल्लाते हैं। ९०९

नळ्ळि वाङ्गु कडयिळ नव्वियर्, वॅळ्ळि वाल्वळै वीशिय वॅण्मणि
पुळ्ळि नारै शिनैपॉरि यादवॅन्, रुळ्ळि यामै मुदुहि नुडैप्पराल् 910

नळ्ळि वाङ्कु–केकड़ों को पकड़नेवाली; **इळ**–जवान; **कटै नव्वियर्**–नीच जाति की मृगनयनियाँ; **वॅळ्ळि वाल् वळै**–श्वेत प्रकाशमय शंखों से; **वीचिय**–निकली हुई; **वॅण् मणि**–श्वेत मुक्ताओं को; **पुळ्ळि नारै**–चित्तियों वाले सारस के; **पॉरियात चिनै**–न टूटे अण्डे; **अॅन्ऱु**–समझकर; **आमै मुतुकिल्**–कछुओं की पीठ पर; **उटैप्पर्**–तोड़ती हैं। ९१०

उस देश में नीचकुल की मृगनयनी नारियाँ केकड़े पकड़ती हैं। तब श्वेतशंखों से निकले श्वेत मोती पाये जाते हैं। वे उनको चित्तियों से भरे सारस के अण्डे समझ लेती हैं और उनको कछुए की पीठ पर मारकर तोड़ने का प्रयास करती हैं। ९१०

शेट्टि ळङ्गडु वन्शिऱु पुन्गैयिर्, कोट्ट तेम्बल विन्गनिक् कून्शुळै
तोट्ट मैन्दबॉ दुम्बरिऱ् ऱूङ्गुतेन्, ईट्ट मङ्गदिऱ् ऱोय्त्तिनि दुण्णुमाल् 911

चेटु इळम् कटुवन्–बहुत छोटी उम्र का बन्दर; **चिऱु पुन् कैयिल्**–अपने बहुत छोटे हाथ से; **कोट्ट**–डाल पर के; **तेम् पलाविन् कनि**–मधुर कटहल के फल के; **कन् चुळै**–वक्र कोओं को; **तोट्टु**–नोच लेकर; **अमैन्त पॉतुम्परिल्**–जहाँ वह रहा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस बाग में; तूङ्कु तेन्-लगातार झरनेवाले शहद की; ईट्टम् अङ्कु अतिल्-वहाँ धार में; तोय्त्तु-मग्न कर लेकर; इनितु उण्णुम्-मज़े के साथ खाता था। ९११

(उस तॊण्डै देश की समृद्धता देखिए:) एक छोटा वानर अपने छोटे हाथ से मीठे कटहल के फल से कोए नोच लेता है। वहाँ बाग में शहद लगातार झर रहा है। उसमें मग्न करके उस कोए को खाता है। ९११

अन्न तॊण्डैनन् नाडु कडन्दहन्, पॊन्नि नाडु पॊरुविल दॆय्दिनार्
शॆन्नॆ लुङ्गरुम् बुङ्गमु हुज्जॆरिन्, दिन्नल् शॆय्यु नॆरियरि देहुवार् 912

अन्न-ऐसे; तॊण्टै नल् नाटु-'तॊण्डै' नाम के अच्छे देश को; कटन्तु-पार करके; अकल्-विस्तृत; पॊरुवु इलतु-और अनुपम; पॊन्नि नल् नाटु-काबेरी के श्रेष्ठ देश; ऍय्तिनार्-पहुँचे; चॆम् नॆलुम्-लाल शालि के धान और; करुम्पुम्-ईख; कमुकुम्-और गुवाक के तरुओं से; चॆरिन्तु-पूर्ण हो; इन्नल् चॆय्पुम्-जो मार्ग कष्ट देता था; नॆरि-उस मार्ग में; अरितु एकुवार्-सायास गये। ९१२

ऐसे समृद्ध उस देश को पार कर वे कावेरी (पॊन्नि) देश में आये। उस विशाल देश में मार्ग सुगम नहीं था, क्योंकि ईख, शालि, क्रमुकतरु आदि उतने घने रूप से उगे हुए थे। ९१२

कॊडिरु ताङ्गिय वाय्क्कुळु नारैवाळ्, तडरु ताङ्गिय कूनिळन् दाळैयिन्
मिडरु ताङ्गुम् विरुप्पुडैत् तीङ्गनि, इडरु वार्नरुन् देनि निळ्क्कुवार् 913

कॊटिरु ताङ्किय-जबड़ों के साथ युक्त; वाय्-चोंचों वाले; कुळु-झुण्डों में रहनेवाले; नारै वाळ्-सारस जहाँ रहते हैं; तटरु ताङ्किय-पत्ते ढोते हुए; कून-झुके हुए; इळम् ताळैयिन्-छोटी आयु के नारियल के पेड़ों के; मिटरु-गले में; ताङ्कुम्-धत; विरुप्पुटै-प्यारे लगनेवाले; तीम् कनि-मीठे फलों को (जो नीचे गिरे पड़े हैं); इटरु वार्-पैरों से ठोकर मारकर जो चलते हैं; नरुम् तेनिन्-वे वहाँ के सुवासित शहद में; इळ्क्कुवार्-फिसलते बनते हैं। ९१३

सारस की चोंचों से चमड़े की थैली का-सा अंग लगा हुआ है। ऐसी चोंचों से युक्त सारस पक्षी उस देश में कसरत से पाये जाते हैं। उस देश में सब जगह डंठलों वाले नारियल के तरुओं के ऊपर से नारियल के प्यारे लगनेवाले मीठे फल गिर पड़े हैं। लोग पैदल चलते हैं तो उनसे ठोकर खाते हैं; और, पास शहद बहता रहता है और उसमें फिसल जाते हैं। ९१३

कुळुवु मीन्वळर् कुट्ट मॆन्क्कॊळा, ऍळुवु पाड लिमिळ्हरुप् पेन्दिरत्
तॊळुहु शार्रहन् कूनैयि नूळ्मुरै, मुळुहि नीर्क्करुङ् गाक्कै मुळैक्कुमे 914

करु नीर् काक्कै-काले करंड; कुळुवु-मिलकर; मीन् वळर्-मछलियाँ जहाँ पलती हैं; कुट्टम् ऍत-छोटे कुण्ड; कॊळा-समझकर; ऍळुवु-उठकर; पाटल् इमिळ्-गाने के समान स्वर देनेवाले; करुप्पेन्तिरत्तु-ईख के यन्त्रों (कोल्हुओं)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

से; ऒऴुकु–निकलकर जो बह रहा था; चाऱु–वह रस; अकन् कूनैयिन्–भरे बड़े कुण्डों में; ऊऴ् मुऱै–क्रम से; मुऴुकि मुऴैक्कुम्–गोते लगाकर उठते थे। ९१४

वहाँ ईख के कोल्हुओं से बहनेवाले इक्षुरस से भरे कुण्डे हैं। उनको काले रंग के करंड पक्षी मछलियों के साथ रहनेवाले कुण्ड समझकर उनमें बारी-बारी से गोते लगाते और ऊपर उठते हैं। ९१४

पूनॆ रुङ्गिय पुऴऴुरै शोलैहऴ्, तेनॊ रुङ्गु शॊरिदलिऱ् ऱेर्विल
मीनॆ रुङ्गुऱुम् वॆऴ्ऴ मॆन्नावॆरीइ, वान रङ्गण् मरङ्गळिन् वैहुमाल् 915

पू नॆरुङ्किय–फूलों पर घने रूप से मिलकर मँड़रानेवाले; पुऴ् उऱै–भ्रमर जहाँ रहते हैं; चोलैकऴ्–वे बाग; तेन्–शहद; ऒरुङ्कु–अधिक; चॊरितलिन्–गिराते हैं, तो; तेर्विल–(सच्चाई) न जानकर; मीन् नॆरुङ्कुऱुम्–मछलियों से भरा; वॆऴ्ऴम् ऎन्ना–प्रवाह समझकर; वॆरीई–डरकर; वानरङ्कऴ्–वानर; मरङ्कळिन् वैकुम्–पेड़ों के ऊपर ही रह जाते हैं। ९१५

वहाँ के बागों में फूल अधिक हैं और उन पर भौंरे गूँजते, मँड़राते रहते हैं। वहाँ शहद इतना बहता है कि वानर उसमें मछलियों के साथ बहनेवाले प्रवाह का धोखा खाते हैं, और डर के मारे डालों से नीचे नहीं उतरते। ९१५

अनैय पॊन्नि यहन्बुऱ नाडॊरीइ, मनैयिन् माट्चि कुलामलै मण्डलम्
विनैयि नीङ्गिय पण्बिनर् मेयिन्नार्, इनिय शॆन्दमिऴ् नाडुशॆन् ऱॆय्दिन्नार् 916

विनैयिन् नीङ्किय–बुरे कर्म से छटे हुए; पण्पिनर्–श्रेष्ठ गुणी वे वानर; अनैय–उस समृद्ध; पॊन्नि अकल्–कावेरी-सिंचित विशाल; पुनल् नाटु–उर्वर प्रदेश (चोऴ देश) को; ऒरीई–छोड़कर; मनैयिन् माट्चि–गृहस्थी का गौरव; कुलाम्–जहाँ विद्यमान था; मलै मण्टलम्–पार्वत्य देश (चेर देश); मेयिन्नार्—पहुँचे; इनिय चॆन्तमिऴ् नाटु–मधुर श्रेष्ठ तमिऴ देश (पाण्ड्य देश); ऎय्तिन्नार्–पहुँचे। ९१६

बुरी प्रवृत्तियों से मुक्त और सुसंस्कृत वे वानरयूथप ऐसे समृद्ध, कावेरी-सिंचित और विशाल चोऴ देश को पारकर पार्वत्यप्रदेश चेर नाडु में आये, जहाँ गृहस्थी के सारे श्रेष्ठ गुण विद्यमान थे। बाद वे प्यारे और मधुर तमिऴ (पाण्ड्य) देश में आये। ९१६

अत्ति रुत्तहु नाट्टिनै यण्डर्ना, डॊत्ति रुक्कुमॆन् ऱालुरै यॊक्कुमो
ऎत्ति ऱत्तिनु मेऴुल हुम्बुहऴ्, मुत्तु मुत्तमि ऴुन्दन्दु मुन्दुमो 917

अ तिरु तकु–उस श्रीसम्पन्न; नाट्टिनै–देश को; अण्टर् नाटु–देवलोक की; ऒत्तिरुक्कुम्–समानता करनेवाला; ऎन्ऱाल्–कहें तो; उरै ऒक्कुमो–कथन योग्य होगा क्या; ऎ तिऱत्तिनुम्–किसी भी विध; एऴ् उलकुम् पुकऴ्–सातों लोकों में शंसित; मुत्तुम्–मोती और; मु तमिऴुम्–(गद्य, गीत, नाटक की) त्रिविधा तमिऴ; तन्तु–देकर; मुन्तुमो–वह देवलोक बढ़ सकेगा क्या। ९१७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'उस श्रेष्ठ श्रीसम्पन्न देश की देवलोक समानता कर सकता है' ऐसा कहें तो क्या वह कथन ठीक हो सकेगा ? नहीं। किसी भी तरह देखें— सभी लोकों में प्रशंसित मोती और त्रिविधा (गद्य, गीत और नाटक तीनों शैलियों में साहित्यसम्पन्न) तमिऴ के लिए वह कहाँ जायगा ? स्वर्ग ये दोनों दिला सके तभी न श्रेष्ठता में इतना बढ़ सकेगा ? । ९१७

ऍन्ऱ तॆन्ऱमिऴ् नाट्टिनै यॆङ्गणुम्, शॆन्ऱु नाडित् तिरिन्दु तिरुन्दिनार्
पॊन्ऱु वारिऱ् पॊरुन्दिनर् पोयिनार्, तुन्ऱ लोदियैक् कण्डिलर् तुन्बिनार् 918

तिरुन्तिनार्—सुसंस्कृत वे वीर; ऍन्ऱ—ऐसे उक्त (यशस्वी); तॆन् तमिऴ् नाट्टिनै—दक्षिणी तमिऴ देश में; ऍङ्कणुम् तिरिन्तु—सर्वत्र घूमकर; तुन्ऱ नल् ओतियै—घने काले केश वाली (सीता) को; कण्टिलर्—न देख पाते; तुन्पिनार्—दुःखी होकर; पॊन्ऱुवारिल्—मरणोन्मुख-से; पॊरुन्तिनर्—हतोत्साह; पोयिनार्—जाते रहे। ९१८

सुसंस्कृत उन वीरों ने दक्षिणी तमिऴ देश में सर्वत्र घूमकर अन्वेषण किया। लेकिन काले घने केश वाली देवी कहीं न मिलीं। वे दुःखमग्न होकर मरणोन्मुख से शिथिल बने जाने लगे। ९१८

वन्ऱि शैक्कलि इन्नम येन्दिरक्, कुन्ऱि शैत्तदु वल्लैयिऱ् कूडिनार्
तॆन्ऱि शैक्कडऱ् चीहर मारुदम्, निन्ऱि शैक्कु नॆडुनॆऱि नीङ्गिनार् 919

तॆन् तिचै कटल्—दक्षिणी सागर की; चीकर मारुतम्—सीकरों से युक्त वायु; निन्ऱु इचैक्कुम्—स्थिर रूप से शब्द के साथ जहाँ बह रही थी; नॆटु नॆऱि नीङ्कितार्—लम्बे मार्ग तय करके; वन् तिचै कळिऱु अन्न—सबल दक्षिणी दिशा के वाहक गज के समान; इचैत्ततु—(और सुग्रीव से) जो कहा गया था; मयेन्तिरक् कुन्ऱु—उस महेन्द्र पर्वत पर; वल्लैयिल् कूटिनार्—शीघ्र जा पहुँचे। ९१९

वे उस लम्बे मार्ग में गये, जहाँ दक्षिणी सागर की बूँदों से युक्त हवा शब्द के साथ चल रही थी। फिर वे शीघ्र महेन्द्रपर्वत पर आ गये, जिसका संकेत सुग्रीव ने दिया था और जो बलिष्ठ दक्षिणी दिशा के धारक दिग्गज के समान था। ९१९

15. समपादिप् पडलम् (सम्पाति पटल)

मळैत्तविण् णहमॆन मुळङ्गि वानुऱ
इळैत्तवॆण् डिरैक्कर मॆङ्तति लङ्गैयाळ्
उळैत्तडङ् गण्णियॆन् नुळैयॆन् ऱोडिवन्
दळैप्पदे कडुक्कुमव् वाळि नोक्किनार् 920

मळैत्त—वर्षागर्भ; विण् अकम् ऍन—मेघों के समान; मुळङ्कि—गर्जन करते हुए; वान् उऱ—आकाश से लगाकर; इळैत्त—उठी हुई; वॆण् तिरै करम्—श्वेत

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तरंग रूपी हाथों को; अॅटुत्तु–उछालते हुए; इलङ्कैयाळ्–लंकादेवी; उळै तट कण्णि–हरिण की-सी आयत आँखों वाली (सीता); अॅन् उऴै–मुझमें है; अॅन्ऱु–कहती हुई; ओटि वन्तु–दौड़ती आकर; अऴैप्पते–मानो बुला रही हो; कटुक्कुम्–ऐसा लगनेवाले; अ आऴि–उस समुद्र को; नोक्किनार्–देखा (उन्होंने)। ९२०

उन्होंने दक्षिणी समुद्र को देखा। वह मेघों के समान गर्जन करता हुआ ऐसा लगा, मानो अपने श्वेत तरंग रूपी हाथों को ऊपर उठाते हुए लंका की देवी उनको यह कहते हुए आमन्त्रित कर रही हो कि हरिणी की-सी, आयत आँखों वाली सीता मेरे यहाँ है। ९२०

विरिन्दुनी रॅण्डिशै मेवि नाडिऩिर्
पॊरुन्दुदिर् मयेन्दिरत् तॅन्ऱु पोक्किय
अरुन्दुणैक् कविहळा मलहिल् शेनैयुम्
पॅरुन्दिरैक् कडलॅनप् पॅयर्त्तुङ् गूडिऱ्ऱे 921

नीर्–तुम लोग; विरिन्तु–व्यापकर; अॅण् तिचै–आठों दिशाओं में; मेवि–जाकर; नाटिऩिर्–खोजने के बाद; मयेन्तिरत्तु–महेन्द्र पर्वत पर; पॊरुन्तुतिर्–आकर मिलो; अॅन्ऱु–ऐसा कहकर; पोक्किय–जिनको भेजा था; अरु तुणै–उन प्रिय साथी; कविकळ् आम्–वानरों की; अलकिल् चेनैयुम्–अपार सेना भी; पॅरु तिरै कटल् अॅन–उत्तुंग-तरंग-सागर के समान; पॅयर्त्तुम्–लौटकर; कूटिऱ्ऱु–आ मिली। ९२१

वहाँ वह सेना भी उनके पास आ मिल गयी, जिसको अंगदादि वीरों ने वहाँ यह कहकर भेज दिया था कि तुम सब आठों दिशाओं में जाकर सीतादेवी को ढूँढ़ो और बाद महेन्द्रपर्वत पर आकर हमसे मिल जाओ। वह सेना ऐसी आयी मानों बड़ी लहरों वाला दूसरा सागर आया हो। ९२१

अऱ्ऱदु नाळ्वरै यवदि काट्चियुम्
उऱ्ऱिल मिराहव नुयिरुम् बॊन्ऱुमाल्
कॊऱ्ऱव नाणैयुङ् गुऱित्तु निन्ऱनम्
इऱ्ऱदु नञ्जॅय लिनियॅन् ऱॅण्णिनार् 922

नाळ् वरै अवति–अवधि के दिन; अऱ्ऱतु–पूरे हो गये; काट्चियुम्–(सीता के) दर्शन भी; उऱ्ऱिलम्–न प्राप्त कर सके; इराकवन्–श्रीराघव के; उयिरुम्–प्राण भी; पॊन्ऱुम्–छूट जायँगे; नम् कॊऱ्ऱवन्–हमारे राजा की; आणैयुम्–आज्ञा; कुऱित्तु निन्ऱनम्–मानकर चले; इनि–अब; नम् चॅयल्–हमारा काम; इऱ्ऱतु–पूरा हो गया; अॅन्ऱु–ऐसा; अॅण्णिनार्–वीर सोचने लगे। ९२२

तब वानरयूथप सोच में पड़ गये। अवधि बीत गयी। देवी के दर्शन भी नहीं हो सके। यह समाचार पायँगे तो श्रीराम अपने प्राण त्याग देंगे। हमारे राजा की आज्ञा के हम बद्ध हैं। अब हमारा कार्य इति (अन्त) को पहुँच गया। ९२२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरुन्दवम् बुरिदुमो वऩ्ऩ दऩ्ऱॆऩिऩ्
मरुन्दरु नॆडुङ्गडु वुण्डु माय्दुमो
तिरुन्दिय दियादु शॆय्दु तीर्दुमॆऩ्
ऱिरुन्दऩर् तम्मुयिर्क् किऱुदि यॆण्णुवार् 923

तम् उयिर्क्कु–अपने प्राणों का अन्त; ऍण्णुवार्–संकल्प करके; अरुम् तवम्–कठोर तप; पुरितुमो–करें; अऩ्ऩतु–वह; अऩ्ऱु ऍऩिऩ्–नहीं तो; मरुनु अरुम्–लाइलाज; नॆटु–बहुत घातक; कटु–विष को; उण्टु–खाकर; माय्तुमो–मर जायँ; तिरुन्तियतु यातु–(इन दो में) श्रेष्ठ क्या है; अतु–वह; चॆय्तु तीर्तुम्–कर चुकेंगे; ऍऩ्ऱु–कहकर; इरुन्तऩर्–रहे। ९२३

वे अपने प्राण त्यागने की बात भी सोचने लगे। हम जाकर क्या कठोर तपस्या करें? नहीं तो क्या प्रत्यवाय-रहित भयंकर विष खाकर मर जायँ? इनमें बेहतर क्या है? वही कर जायँगे। —ऐसा निश्चय किया उन्होंने। ९२३

करैपॊरु कऩैहडल् कऩह माल्वरै
निरैतुवऩ् ऱियवॆऩ नॆडिदि रुन्दवर्क्
कुरैशॆयुम् बॊरुळुळ दॆऩवु णर्त्तिऩान्
अरशिळङ् गोळरि ययरुञ् जिन्दैयान् 924

अरचु इळम्—युवराज; कोळ् अरि–सिंह-सदृश (अंगद); अयरुम् चिन्तैयान्–व्याकुल-मन हो; करै पॊरु–तट से टकरानेवाले; कऩै कटल्–गर्जनशील सागर के पास; कऩक माल् वरै निरै–स्वर्ण मेरुपर्वतों की श्रेणियाँ; तुवऩ्ऱिय ऍऩ–भरी खड़ी हों जैसे; नॆटिदु इरुन्तवर्क्कु–बड़ी संख्या में रहे वीरों से; उरै चॆयुम् पॊरुळ्–कहने की एक बात; उळतु–है; ऍऩ–कहकर; उणर्त्तिऩान्–बताने लगा। ९२४

युवराजकेसरी अंगद बहुत शिथिल-मन हुआ। उसने उन वानर-नायकों से, जिनके कन्धे सागर-तीर के पास रहनेवाले स्वर्णपर्वत के शिखरों की लसी श्रेणियों के समान थे, कहा कि तुमसे कहने की एक बात है। वह कहने लगा। ९२४

नाडिनाङ् गॊणरुदु नळिऩत् ताळैवाऩ्, मूडिय वुलहिऩै मुऱ्ऱु मुट्टियॆऩ्
ऱाडवर् तिलहऩुक् कऩ्बि ऩारॆऩप्, पाडवम् विळम्बिऩम् पळ्ळियिऩ् मूळ्हिऩोम् 925

नाम्–हम सब; वाऩ् मूटिय–आकाश से आच्छन्न; उलकम्–संसार; मुऱ्ऱम् मुट्टि नाटि–भर में सामने जाकर खोजते हुए; नळिऩत्ताळै–कमलाजी को; कॊणरुतुम् ऍऩ्ऱु–लाएँगे, कहकर; आटवर् तिलकऩुक्कु–पुरुष-तिलक को; अऩ्पिऩार् ऍऩ–प्यारों के समान; पाटवम्–पटु वचन; विळम्पिऩम्–कहा; पळ्ळियिऩ् मूळ्कितोम्–अब निंदा में डूब गये। ९२५

हमने पुरुषतिलक श्रीराम से पटुता के साथ यह वादा किया कि हम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आकाश से आच्छादित भूमि पर सर्वत्र ढूँढ़कर सीताजी को लाकर समर्पित करेंगे; मानो हम बड़े स्नेही हों। पर अब अपयश में मग्न हो गये। ९२५

शॅय्दुमॅन् रमैन्ददु शॅय्दु तीर्न्दिलॅम्
नॉय्दुशॅन् रुर्रदु नुवल हिर्रिलॅम्
ऍय्दुम्वन् दॅऩ्बदो रिरैयुङ् गण्डिलॅम्
उय्दुमॅन् रालिदो रुरिमैत् ताहुमो 926

चॅय्तुम् ऍऩ्ऱु–कर देंगे, कहकर; अमैन्ततु–जिसको हाथ में लिया; चॅय्तु तीर्न्तिलॅम्–कर नहीं चुके; नॉय्तु चॅऩ्ऱु–शीघ्र (अवधि के बीत जाने के पहले) जाकर; उर्रतु–जो घटा उसको; नुवलकिर्रिलॅम्–निवेदन नहीं कर सके; वन्तु ऍय्तुम्–सिद्धि मिल जायगी; ओर् इरैयुम्–इसका कोई आसरा; कण्टिलॅम्–नहीं देखते; उय्तुम् ऍऩ्राल्–जीते रहेंगे तो; इतु–यह; ओर् उरिमैत्तु–कोई योग्य काम; आकुमो–होगा क्या। ९२६

जो कर चुकने का वादा किया, उसे हम कर नहीं पाये। न तो यही कर सके कि अवधि के पूर्व ही उनके पास जाकर सच्ची घटना कह देते। अब कार्यसिद्धि होने का कोई आसरा देखते नहीं। इस स्थिति में जीवित रहना चाहें तो वह क्या योग्य काम होगा ?। ९२६

ऍन्वैयु मुनियुमॅम् मिरैयि रामनुम्
शिन्दनै वरुन्दुमच् चॅय्है काण्गुरेऩ्
नुन्दुवॅ नुयिरिनै नुणङ्गु केळ्वियीर्
पुन्दियि नुर्रदु पुहल्वि रामॅन्ऱान् 927

ऍन्तैयुम् मुनियुम्–मेरे पिता भी कुपित होंगे; ऍम् इरै–हमारे प्रभु; इरामनुम्–श्रीराम भी; चिन्ततै वरुन्तुम्–खिन्न-मन होंगे; अ चॅय्कै–वह कार्य; काण्कुरेऩ्–(अपनी आँखों) देख न सकूँगा; उयिरिनै नुन्तुवॅऩ्–प्राण त्याग दूँगा; नुणङ्कु–सूक्ष्म; केळ्वियीर्–श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञान से युक्त; पुन्तियिऩ् उर्रतु–तुम्हारी बुद्धि में जो उठता है; पुकल्विर्–(वह विचार) कहो; ऍऩ्ऱान्–कहा। ९२७

इस स्थिति में हम उनके पास जायँगे तो मेरे पिता (चाचा) कुपित होंगे। हमारे प्रभु श्रीराम का मन दुःखी होगा। उनको मैं नहीं (देख) सह सकूँगा। इसलिए मैं अपने प्राण त्याग दूँगा। सूक्ष्म श्रवण से प्राप्त ज्ञान रखनेवाले ! तुम जो अपनी बुद्धि में आता है, वह कहो। अंगद ने उनसे कहा। ९२७

विळुमिय दुरैत्तनै विशयम् वीर्रिरुन्
दॅळुवॉडु मलैयॉडु मिहलुन् दोळिऩाय्
अळदुमो विरुन्दुनम् मऩ्बु पाळ्बडत्
तॉळदुमो शॅऩ्ऱॅनच् चाम्बऩ् शॉल्लिऩान् 928

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चाम्पत्-जाम्बवान; विचयम् वीऱ्ऱिरुन्तु-विजयांकित; ऍळुवॊटुम्-स्तम्भ और; मलैयॊटुम्-पर्वत के साथ; इकलुम्-टकरानेवाले (समान रहनेवाले); तोळिऩाय्-कन्धों के; विळुमियतु-श्रेष्ठ बात; उरैत्तऩै-कही; इरुन्तु-जीवित रहकर; अळुतुमो-रोयेंगे क्या; नम् अऩ्पु-अपने प्रेम को; पाळ् पट-कलंकित करते हुए; चॆऩ्ऱु-जाकर; तॊळुतुमो-(श्रीराम और सुग्रीव की) सेवा करेंगे; ऍऩ-ऐसा; चॊल्लिऩाऩ्-कहा। ९२८

तब जाम्बवान ने कहा। विजयांकित व स्तम्भ और पर्वत की टक्कर के कन्धों वाले! तुमने (क्या ही) उत्तम बात कही! (तुम मरो और उसके बाद) हम जीवित रहकर रोते रहें? अपने प्रेम को कलंकित करते हुए हम उनके पास जाकर उनकी सेवा करते रहेंगे क्या?। ९२८

मीण्डिऩि यॊऩ्ऱुनाम् विळम्ब मिक्कदॆऩ्
माण्डुऱु वदुनल मॆऩव लित्तऩॆम्
आण्डहै यरशिळङ् गुमर वऩ्ऩदु
वेण्डलि ऩिऩ्ऩुयिर्क् कुऱुदि वेण्डुदुम् 929

आण्टकै-पुरुषश्रेष्ठ; अरचु इळम् कुमर-युवराज कुमार; मीण्टु-लौट जाकर; इऩि-अब; नाम्-हमसे; ऒऩ्ऱु विळम्प-एक बात कहने के लिए; मिक्कतु ऍऩ्-बची क्या है; माण्टु उऱवतु-मर जाना; नलम् ऍऩ-श्लाघ्य है, ऐसा; वलित्तऩॆम्-निश्चय किया है हमने; अऩ्ऩतु वेण्टलिऩ्-वह चाहते हैं, इसलिए; निऩ् उयिर्क्कु-तुम्हारे प्राणों की; उऱुति-रक्षा का निश्चय; वेण्टुतुम्—चाहते हैं। ९२९

पुरुषश्रेष्ठ! राजकुमार अंगद! वहाँ लौटकर हमारे पास उन्हें देने के लिए क्या समाचार बाकी है? इसलिए हमने मरने का निश्चय किया है। जब हम मरना चाहते हैं तब हम यह निश्चय कर लेना चाहते हैं कि तुम्हारा जीवन सुरक्षित रहेगा। ९२९

ऍऩ्ऱव नुरैत्तलु मिरुन्द वालिशेय्
कुऩ्ऱुऱ्ऱळ्ऩ् दॆऩवळर् कुववुत् तोळिऩीर्
पॊऩ्ऱिनीर् मडियया ऩ् पोव ऩॆलदु
नऩ्ऱदो वुलहमु नयक्कर् पालदो 930

ऍऩ्ऱु अवऩु उरैत्तलुम्-ऐसा उसके कहते ही; इरुन्त वालि चेय्-उसको जो सुनता रहा वह वाली-पुत्र; कुऩ्ऱु उऱ्ऱळ् ऍऩ-पर्वत से टकराते-से; वळर्-बढ़े हुए; कुववु तोळिऩीर्-पुष्ट कन्धों वाले; नीर् पॊऩ्ऱि मडिय-तुम सब मर जाओ और; याऩ् पोवऩॆल्-मैं वहाँ जाऊँ तो; अतु नऩ्ऱतो-वह ठीक होगा क्या; उलकमुम्-लोक (श्रेष्ठ लोग) भी; नयक्कल् पालतो-स्वागत करें, ऐसा होगा क्या। ९३०

जाम्बवान ने यों कहा। अंगद जो सुनता रहा कहने लगा। पर्वत से टकरानेवाले के समान बढ़े हुए पुष्ट कन्धों वाले! तुम सबको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मरने देकर मैं अकेले वहाँ जाऊँ तो वह श्लाघ्य होगा क्या ? लोकसम्मत होगा क्या ? । ९३०

शान्ऱवर् पळियुरैक् कञ्जित् तन्नुयिर्
पोन्ऱवर् मडिदरप् पोन्दु ळाऩॆऩ
आन्ऱपे रुलहुळो ररैदन् मुन्नम्यान्
वान्ऱोडर् हुवॆऩॆऩ मऱित्तुङ् गूऱुवान् 931

चान्ऱवर्–श्रेष्ठ लोगों के; पळि उरैक्कु–निन्दा-वचन से; अञ्चि–डरकर; तन् उयिर् पोन्ऱवर्–अपने प्राण-सम लोगों को; मटि तर–मरने देकर; पोन्तुळान्–आ गया; ऎऩ–ऐसा; आन्ऱ–उत्कृष्ट; पेर् उलकु उळोर्–विशाल लोकों के वासी; अऱैतल् मुन्नम्–कहें, इसके पूर्व ही; यान्–मैं; वान् तॊटर्कुवॆन्–स्वर्ग चला जाऊँगा; ऎऩ–कहकर; मऱित्तुम् कूऱुवान्–और भी कहा । ९३१

" 'बड़े लोगों के अपवाद-कथन से डरकर अंगद अपने प्राण-सम मित्रों को मरने देकर स्वयं जीवित आ गया ।' संसार के श्रेष्ठ लोग यह निन्दा करें —इसके पूर्व ही मैं स्वर्गवासी हो जाऊँगा ।" —यह कहकर अंगद आगे बोला । ९३१

ऎल्लैनम् मिऱुदि याय्क्कु मॆन्दैक्कुम् याव रेनुम्
शॊल्लवुङ् गूडुङ् गेट्टाऱ् ऱुञ्जवु मडुक्कुङ् गण्ड
विल्लियु मिळय कोवुम् वीवदु तिण्ण मच्चॊल्
मल्लनी रयोत्ति पुक्काल् वाळ्वरो बरतन् मऱ्ऱोर् 932

नम् इऱुति ऎल्लै–हमारे अन्त का परिणाम; यावरेनुम्–कोई; याय्क्कुम्–मेरी माता को; ऎन्तैक्कुम्–मेरे पिता (सुग्रीव) को; चॊल्लवुम् कूटुम्–(समाचार) दिला सकेगा; केट्टाल्–वे सुनें तो; तुञ्चवुम् अटुक्कुम्–मर भी सकते हैं; कण्ट–देखकर; विल्लियुम्–धन्वी श्रीराम; इळैय कोवुम्–और छोटे राजा (लक्ष्मण) का; वीवतु–मरना; तिण्णम्–ध्रुव है; अ चॊल्–वह समाचार; मल्लल् नीर्–अधिक जलसमृद्ध; अयोत्ति पुक्काल्–अयोध्या पहुँचे तो; परतन् मऱ्ऱोर्–भरत आदि अन्य; वाळ्वरो–जीवित रहेंगे क्या । ९३२

समझो कि हम सब यहाँ मर गये । तो यह समाचार कोई न कोई मेरे पिता को सुना देगा । तब वे मर जायँगे । उसको देखकर हमारे प्रभु धन्वी श्रीराम और छोटे राजा लक्ष्मण मर जायँगे । यह ध्रुव है । यह समाचार समृद्ध अयोध्या जायगा तो भरत आदि और अन्य लोग जीवित रहेंगे क्या ? । ९३२

बरदनुम् पिन्नु ळोनुम् बयन्दॆडुत् तवरु मूरुम्
शरदमे मुडिवर् कॆट्टेन् शऩहियॆऩ् ऱुलहञ् जाऱ्ऱुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विरदमा दवत्तिन् मिक्क विळक्किन्ना लुलहत् तियार्क्कुम्
करैतेरि विलाद दुन्बम् विळैन्दवा वॅनक्क लुळ्न्दान् 933

परतनुम्–भरत; पिन् उळोनुम्–और उनके अनुज; पयन्तु ऍट्टुत्तवरुम्–और उनकी जननियाँ; ऊरुम्–और नगरवासी; चरतमे मुटिवर्–निश्चय ही मरेंगे; कॅट्टेन्–मैं मिटा; चतकि–जानकी; ऍन्ऱु उलकम् चाऱ्ऱुम्–ऐसा लोक-शंसित; विरत मातवत्तिन् मिक्क–व्रतधारिणी, तपस्या में श्रेष्ठ; विळक्किताल्–दीप-सी देवी के कारण; उलकत्तु–इस संसार में; यार्क्कुम्–सबके लिए; करै तॅरिवु इलात–जिसका पार नहीं दिखता, ऐसा (अपार); तुन्पम्–दुःख; विळैन्त आ–पैदा हो गया तो; ऍन्ऱ–ऐसा कहकर; कलुळ्न्तान्–उद्विग्न हुआ। ९३३

"भरत, उनके अनुज, इन भ्राताओं की जननियाँ और नगरवासी सभी निश्चय ही मर जायँगे। हाय ! मैं मिटा ! व्रतधारिणी महान तपस्विनी जानकी संज्ञित इन दीप-सी देवी के कारण संसार के सभी लोगों को कितना दुःख पैदा हो गया !" अंगद ऐसा कहते हुए अधीर हुआ। ९३३

पॉरुप्पुऱ्ऱ वयिरत् तिण्डोट् पॉरुशिनत् ताळि पोल्वान्
तरिप्पिला दुरैत्त माऱ्ऱन् दडुप्परुन् दहैमैत् ताय
नॅरुप्पॅये विळैत्त पोल नॅञ्जमु मरुहक् केट्टु
विरुप्पिन्ना लवनै नोक्कि विळम्बिन नॅण्गिन् वेन्दन् 934

पॉरुप्पु उऱ्ऱ–पर्वत-सम; वयिरम् तिण् तोळ्–वज्र-दृढ़ कन्धों वाला; पॉरु चिनत्तु–युद्ध-सन्नद्ध; आळि पोल्वान्–'याळि'-सा अंगद; तरिप्पु इलातु–अधीर होकर; उरैत्त माऱ्ऱम्–जो बोला, वह कथन; तटुप्पु अरुम् तकैमैत्तु आय–अवार्य प्रकार की; नॅरुप्पॅये–आग को ही; विळैत्त पोल–लगाया हो, ऐसा; नॅञ्चम् मरुक–चित्त के आक्रान्त होने से; केट्टु–सुनकर; ऍण्किन् वेन्तन्–रीछों का राजा; विरुप्पिताल्–प्यार से; अवनै नोक्कि–उसको देखकर; विळम्पितन्–बोला। ९३४

पर्वत-सम वज्रदृढ़ कन्धों वाला, युद्धरत 'याळि' के समान वह अंगद अधीर होकर ऐसा जो बोला वह वचन अवार्य आग के समान लगा और जाम्बवान का मन तप्त और उद्विग्न हुआ। रीछों के राजा जाम्बवान ने अंगद से प्यार के साथ यों कहा। ९३४

नीयुनिन् ऱादेयु नीङ्ग निन्गुलत्, तायम्वन् दवर्क्कॊरु तनय रिल्लैयाल्
आयदु करुदिनै मन्न दन्ऱॅनिन्, नायह रिऱुदियुम् नविलऱ् पालदो 935

नीयुम्–तुम्हारे और; निन् तातैयुम्–तुम्हारे पिता के; नीङ्क–सिवा; निन् कुल तायम् वन्तवर्क्कु–तुम्हारे कुल में अधिकार के साथ उत्पन्न; ऒरु तनयर् इल्लैयाल्–एक पुत्र नहीं है, इसलिए; आयतु करुतिनैम्–वैसा विचार किया हमने; अन्नतु अन्ऱु–वह नहीं; ऍनिल्–तो; नायकर् इऱुतियुम्–हमारे नायकों का मरना भी; नविलल् पालतो–कहना ठीक है क्या। ९३५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अंगद ! तुम भी मर जाओगे और तुम्हारे तात (सुग्रीव) भी चले गये तो तुम्हारे वंश में राजा बनने के लिए कोई पुत्र नहीं है। इसीलिए हमने चाहा कि तुम जीवित रहो। तुम अपने मरने की बात नहीं उठाते तो अपने प्रभुओं की मृत्यु की बात कहाँ उठती ? हमारा यह बात करना उचित भी होता ? । ९३५

एहिनी यव्वऴि यॆय्दि यिव्वऴित्, तोहैयॆक् कण्डिला वहैयुञ् जॊल्लियॆम्
शाहैयु मुणर्त्तुदि तविर्दि शोहम्बोर्, वाहैया यॆन्ऱ्ऱन् वरम्बि लाऱ्ऱलान् 936

वरम्पु इल् आऱ्ऱलान्–असीम बलशाली; पोर् वाकैयाय्–(अंगद से) युद्धविजयी; नी–तुम; एकि–जाओ; अ वऴि ऍय्ति–वहाँ पहुँचो; इ वऴि–इधर; तोकैयै कण्टिला–मयूराभा सीता की अप्राप्ति का; वकैयुम् चॊल्लि–प्रकार (समाचार) कहकर; ऍम् चाकैयुम्–हमारा मरना भी; उणर्त्तुति–समझा दो; तविर्ति चोकम्–छोड़ो शोक को; ऍन्ऱ्ऱन्–कहा। ९३६

असीम बली जाम्बवान ने अंगद को सलाह दी कि युद्ध-विजयी वीर ! तुम वहाँ जाओ। इधर हमारा सीतान्वेषण का विफल प्रयास कहो। हमारी मृत्यु का भी समाचार दो। तुम शोक करना छोड़ दो। ९३६

अवन्वै युरैत्तपिन् नुमन् शॊल्लुवान्
पुवन्मून् ऱिनुमॊरु पुडैयिऱ् पुक्किलॆम्
कवन्माण् डवरॆन्नक् करुत्ति लारॆन्नत्
तवन्वे हत्तुनीर् शलित्ति रोवॆन्ऱान् 937

अवन्–उस (जाम्बवान) के; अवै–वे वचन; उरैत्त पिन्–कहने के बाद; अनुमन्–हनुमान; चॊल्लुवान्–कहने लगा; पुवन्म् मून्ऱिनुम्–तीनों लोकों में; ऑरु पुटैयिल्–एक भाग में भी; पुक्किलॆम्–पूर्ण रूप से प्रवेश न कर पाये; तवन्वेकत्तु नीर्–सूर्य की-सी गति वाले तुम; कवन्म् माण्टवर् ऍन्–गमन-शक्ति मिट गयी हो, ऐसा; करुत्तु इलार् ऍन्–और मन नहीं हो, ऐसा; चलित्तिरो–चलित हो गये क्या; ऍन्ऱान्–बोला। ९३७

जब जाम्बवान ने अपनी बात कही तब हनुमान ने कहा कि वीरो ! हमने अभी तक तीनों लोकों में एक कोना भी पूर्णरूप से खोजा नहीं है ! सूर्य की-सी गति रखनेवाले तुम क्या कहने लग गये ? क्या ऐसे चलित गये मानो तुमने जाने की शक्ति खो दी हो, या आगे जाने का मन रखते नहीं हो। ९३७

पिन्नरुङ् गूऱुवान् पिलत्तिल् वान्नत्तिल्
पॊन्वरैक् कुडुमियिऱ् पुऱत्ति नण्डत्तिल्
नन्नुदर् ऱेवियैक् काण्डु नामॆन्निल्
शॊन्न नाळवदियै यिऱैवन् शॊल्लुमो 938

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पिन्नरुम् कूऱुवान्–और भी कहा; पिलत्तिल्–बिल (पाताल) में; वानत्तिल्–स्वर्ग में; पोन् वरै–स्वर्ण-पर्वत (मेरु) के; कुटुमियिल्–शिखर में; पुऱत्तिन् अण्टत्तिल्–बाह्यांड में; नल् नुतल् तेवियै–मनोरम भाल वाली देवी को; नाम् काण्टुम्–हम पा जायँगे; ऍन्निल्–तो; इऱैवन्–राजा से; चॊन्न नाळ् अवतियै–कथित दिनों की अवधि को; चॊल्लुमो–कहेंगे क्या (सुग्रीव आदि)। ९३८

हनुमान आगे बोला। पाताल में, स्वर्ग में और स्वर्णमय मेरुपर्वत के शिखर पर या बाह्याण्डों में जाकर सुन्दर भाल वाली को खोज पा लें तब भी क्या सुग्रीव अवधि के उल्लंघन की बात कहेंगे ? । ९३८

नाडुद लेनल मिन्नु नाडियत्, तोडलर् कुळलिदन् ऱुयरिऱ् चॆन्ऱमर्
वीडिय शडायुवैप् पोल वीडुदल्, पाडव मल्लदु पळियिऱ् ऱामॆन्ऱान् 939

नाटुतले नलम्–अन्वेषण करना ही अच्छा है; इन्नुम् नाटि–और खोजकर; अ–उन; तोटु अलर्–पुष्पालंकृत; कुळलि तन्–सुकेशिनी को; तुयरिल् चॆन्ऱु–दुःख में जाकर; अमर् वीटिय–जिसने युद्ध में प्राण दिये; चटायुवै पोल–उस जटायु के समान; वीटुतल्–हमारा मरना भी; पाटवम्–पाटव है; अल्लतु–नहीं तो; पळियिऱ्ऱु आम्–अपयशकारी होगा; ऍन्ऱान्–बोला। ९३९

इसलिए अन्वेषण ही अच्छा है। इसलिए आगे ढूँढ़ेंगे और उस जटायु के समान, जिसने सीता के दुःखनिवारणार्थ युद्ध करके अपने प्राण छोड़ दिये थे, अन्वेषण-कार्य में प्राण देना ही पाटव होगा। नहीं तो ऐसा मरना निन्दा का कारण बन जायगा। ९३९

ऍन्ऱलुङ् गेट्टन नॆरुवै वेन्दन्ऱन्, पिन्ऱुणै याहिय पिळैप्पिल् वाय्मैयान्
पॊन्ऱिन नॆन्ऱशॊर् पुलम्बु नॆञ्जिनन्, कुन्ऱॆन नडन्दवर्क् कुऱुहन् मेयिनान् 940

ऍन्ऱलुम्–कहने पर; ऍरुवै वेन्तन्–गीधों का राजा सम्पाति; तन् पिन् तुणैयाकिय–अपना अनुज; पिळैप्पु इल् वाय्मैयान्–अडिग सत्यसंध; पॊन्ऱिनन्–मरा; ऍन्ऱ चॊल्–यह समाचार; केट्टनन्–सुनकर; पुलम्पु नॆञ्चिनन्–रोते मन के साथ; कुन्ऱु ऍन–पर्वत के समान; नटन्तु–चलकर; अवर् कुऱुकल्–उनके समीप; मेयिनान्–आने लगा। ९४०

जब हनुमान ने जटायु का नाम लिया, तब सम्पाति उसे सुन रहा था। गीधों के राजा, सम्पाति ने सुना कि मेरा अनुज, प्रिय जटायु, अडिग सत्यसन्ध मरा। तो उसका मन दुःख से भर गया। वह रोने लगा। वह एक पर्वत के समान चलता हुआ उनके पास जाने लगा। ९४०

मुऱैयुडै यॆम्बियार् मुडिन्द वावॆनाप्, पऱैयिडु नॆञ्जिनन् पदैक्कु मेनियन्
इऱैयुडैक् कुलिशवे लॆऱिह लामुनम्, शिऱैयुऱु मलैयॆनच् चॆल्लुञ् जॆय्हैयान् 941

मुऱैयुटै–न्यायमार्गी; ऍम्पियार्–मेरा भाई; मुटिन्त आ–मरा कैसा; ऍन–ऐसा; पऱै इटु–(ढोल के समान) थर्रानेवाले; नॆञ्चिनन्–मन का; पतैक्कुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेतियत्–काँपनेवाले शरीर के साथ; इऱै उटै–देवेन्द्र का; कुलिच वेल्–कुलिश नामक हथियार के; ऍऱिकला मुत्तम्–फेंकने से पहले; चिऱै उऱु–पंखसहित; मलै ऍत्त–रहे पर्वत के समान; चॆल्लुम्–जाने का; चॆय्कैयान्–काम करनेवाला। ९४१

'न्यायमार्गी मेरा भाई मरा कैसे ?' इस संशय से उसका मन थर्राने लगा। शरीर काँपने लगा। वह उस पर्वत के समान तेज़ी से आया, जो देवेन्द्र के वज्रायुध फेंककर काटने से पहले पंखसहित था। ९४१

मिडलुडै यॆम्बियै वीट्टु वॆञ्जिऩप्, पडैयुळ रायिऩार् पारिल् यारॆऩा
उडलिऩै यिऴिन्दुपो युवरि नीरुहक्, कडलिऩैप् पुरैयुऱु मरुविक् कण्णिऩान् 942

मिटलुटै ऍम्पियै–शक्तिमन्त मेरे भाई को; वीट्टुम्–मार सकनेवाले; वॆम् चिऩम्–भयंकर क्रोध के साथ; पटैयुळर् आयिऩार्–हथियार रखनेवाले; पारिल्–इस संसार में; यार् ऍऩा–कौन है, ऐसा सोचते हुए; उटलिऩै इऴिन्तु–शरीर से गिरकर; पोय्–चलनेवाले; उवरि नीर् पुक–नमकीन अश्रु बहाने से; अ कटलिऩै–उस समुद्र की; पुरै उऱुम्–समानता करनेवाली; अरुवि कण्णिऩान्–सरिता-सी आँखों वाला। ९४२

उसके मन में बार-बार यह प्रश्न उठ रहा था कि अतिबली मेरे भाई को मार सकनेवाले, बड़े क्रोध के साथ हथियार चलानेवाले इस संसार में कौन हैं ? उसकी आँखों से नमकीन अश्रु निकलकर उसके शरीर पर से गिरा और भूमि पर जमा होने लगा। तब उसकी आँखें समुद्र के समान लगीं और अश्रु नदी के समान। ९४२

उऴुङ्गदिर् मणियणि युमिऴु मिऩ्ऩऩान्
मऴुङ्गिय नॆडुङ्गणिऩ् वऴङ्गु मारियान्
पुऴुङ्गुवा ऩऴुङ्गिऩान् पुडवि मीदिऩिल्
मुऴङ्गिवन् दिऴिवदोर् मुहिलुम् बोल्हिन्ऱान् 943

उऴुम् कतिर् मणि–तराशी हुई कान्तियुत मणियाँ; अणि–जिनमें जड़ित हों, ऐसे आभरणों से; उमिऴुम्–निःसृत; मिऩ् अऩान्–बिजली के समान रहनेवाला; मऴुङ्किय–कुण्ठित; नॆटु कणिऩ्–दीर्घ आँखों से; वऴङ्कु मारियान्–निकलनेवाली (अश्रु) धारा से युक्त; पुऴुङ्कुवान्–दुःखतप्त; अऴुङ्किऩान्–उद्विग्न; पुटवि मीतिऩिल्–भूमि पर; मुऴङ्कि वऩ्तु–शब्द करते हुए; इऴिवतु–उतरकर आनेवाले; ओर् मुकिलुम् पोल्किऩ्ऱान्–एक मेघ के समान दिखनेवाला। ९४३

उसके शरीर से मणि-जटित आभरण से जैसी कान्ति छूट रही थी। उसकी मन्द-प्रभ और दीर्घ आँखों से बारिश के समान आँसू गिर रहा था। उसका मन वेदनाविद्ध था। दुःख के साथ आता हुआ वह गर्जन के साथ आनेवाले एक मेघ के समान भी लग रहा था। ९४३

वऴ्ळियु मरङ्गळु मलैयु मण्णुऱत्
तॆळ्ळुनुण् पॊडिपडक् कडिदु शॆल्हिऩ्ऱान्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तळ्ळुवन् काल्बॊरत् तरणि यिऱ्ऱवळ्
वॆळ्ळियम् बॆरुमलै पॊरुवु मेनियान् 944

वळ्ळियुम्–लताएँ; मरङ्कळुम्–और वृक्ष; मण् उऱ–भूमि पर गिरते हैं; मलैयुम्–पर्वत भी; तॆळ्ळु नुण् पॊटि पट–स्वच्छ और महीन चूर्ण बनते हैं; कटितु चॆल्किन्ऱान्–ऐसा वेग के साथ चलता है; तळ्ळु वन् काल्–उत्पाटक बलवान पवन; पॊर–ढकेलता है, इसलिए; तरणियिल् तवळ्–भूमि पर मन्द गति से आनेवाले; वॆळ्ळि–चाँदी के; अम् पॆरु मलै–सुन्दर श्रेष्ठ (कैलास) पर्वत की; पॊरुवु–समानता करनेवाले; मेनियान्–आकार का। ९४४

वह इतनी तीव्र गति से आया कि लताएँ और तरु धराशायी हो गये। पर्वत चूर-चूर हो गये। वह सबको उखाड़ फेंक सकनेवाले पवन के ढकेलने से भूमि पर चलते आनेवाले कैलास के चाँदी के बड़े पर्वत के समान भी लग रहा था। ९४४

अॆय्दिन निरुन्दव रिरियल् पोयिनार्
ऐयनम् मारुदि यळ्ळुङ् गण्णिनान्
कैदव निशिशर कळ्ळ वेडत्तै
उय्दिहॊ लिनियॆना वुरुत्तु मुन्निन्ऱान् 945

अॆय्तितन्–आया; इरुन्तवर्–(वहाँ जो) रहे वे; इरियल् पोयिनार्–तितर-बितर हुए; ऐयन्–नायक; अ मारुति–वह मारुति; अळ्ळुम् कण्णिनान्–जलती आँखों के साथ; कैतव–वंचक; निचिचर–निशिचर; कळ्ळ वेटत्तै–कपटवेश-धारी; इनि उय्ति कॊल्–अब बचोगे क्या; अॆना–कहते हुए; उरुत्तु–कोप दिखाकर; मुन् निन्ऱान्–उसके सामने जा खड़ा रहा। ९४५

वह वानरों के पास आया। तब वानर डर के मारे तितर-बितर हो गये। तब नायक मारुति ने गुस्से से भरकर सम्पाति को डाँटा। उसकी आँखें जलती आग के समान थीं। उसने कहा— वञ्चक ! निशिचर ! कपटवेशधारी ! अब तुम बचोगे क्या ? ऐसा डाँटते हुए हनुमान उसके सामने जा खड़ा हुआ। ९४५

वॆङ्गदम् वीशिय मनत्तन् विम्मलन्
पॊङ्गिय शोरिनीर् पॊळियुङ् गण्णिनान्
शङ्गैयिऱ् चळक्किल नॆन्नुन् दन्मैयै
इङ्गिद वहैयिना लॆय्द नोक्किनान् 946

वॆम् कतम्–क्रूर कोप से; वीचिय–रिक्त; मनत्तन्–मन वाला; विम्मलन्–सिसकियाँ भरनेवाला; पॊङ्किय चोरी–ऊपर उठी हुई, वर्षा के समान; नीर् पॊळियुम् कण्णिनान्–अश्रुजल बहाती हुई आँखों वाला; चङ्कै इल्–निस्संदेह;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चऴक्कु इलन्–झगड़ालू नहीं; ऍन्नुम् तन्मैयै–ऐसे स्वभाव को; इङ्कित वकैयिनाल्–इंगितों के प्रकारों से; ऍय्त नोक्कितान्–खूब देख लिया (हनुमान ने)। ९४६

हनुमान ने उसे सावधानी से देखा। सम्पाति के मन में नृशंस क्रोध नहीं पाया गया। वह सिसकियाँ भर रहा था और उसकी आँखों से अश्रुजल की बारिश-सी हो रही थी। निस्सन्देह रूप से यह बुरा नहीं है। हनुमान ने उसके स्वभाव को इंगितों से जान लिया। ९४६

नोक्किन निन्ऱन नुणङ्गु केळ्वियान्
वाक्किना लॊरुमॊऴि वऴङ्ग लादमुन्
ताक्करुञ् जडायुवैत् तरुक्कि नालुयिर्
नीक्किन रियारदु निरप्पु वीरॆन्ऱान् 947

नुणङ्कु केळ्वियान्–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञानी; नोक्कितन्–देखते हुए; निन्ऱतन्–खड़ा रहा; वाक्किनाल्–मुख से; ऒरु मॊऴि–एक बात; वऴङ्कलात मुन्–कहने से पहले ही; ताक्करुम् चटायुवै–अप्रतिहत जटायु को; तरुक्किनाल्–अपने बल से; उयिर् नीक्कितर्–प्राणहीन करनेवाला; यार्–कौन था; अतु–उसको; निरप्पुवीर्–विस्तार से कहो; ऍन्ऱान्–(सम्पाति ने) प्रश्न किया। ९४७

हनुमान सूक्ष्मश्रवणज्ञानी था। जब वह सम्पाति को देखता ही खड़ा रहा तब उसके मुख से बात निकलने के पूर्व ही सम्पाति ने पूछ लिया कि जटायु पर कोई आक्रमण नहीं कर सकता। ऐसे जटायु के प्राण निकालनेवाला कौन है? ज़रा सविस्तार कहो। ९४७

उन्नैनी युळ्ळवा ऱुरैप्पि नुऱ्ऱदु
पिन्नैया निरप्पुदल् पिऴैप्पिन् ऱाहुमाल्
ऍन्नमा रुदियॆदि रॆरुवै वेन्दनुम्
तन्नैयान् दन्मैयैच् चाऱ्ऱन् मेयिनान् 948

मारुति–हनुमान (के); उन्नै–अपने को (सम्बन्ध में); नी–तुम; उळ्ळ आऱु–यथार्थ रीति से; उरैप्पिन्–कहोगे तो; पिन्नै–बाद; यान्–मैं; उऱ्ऱतु–जो हुआ; निरप्पुतल्–पूरा कहूँगा, यह कहना; पिऴैप्पु इन्ऱु–गलत नहीं; आकुम्–होगा; ऍन्न–कहने पर; ऍतिर्–उत्तर में; ऍरुवै वेन्तनुम्–गीधों का राजा भी; तन्नै आम्–अपनी; तन्मैयै–बात; चाऱ्ऱल् मेयिनान्–कहने लगा। ९४८

उस पर मारुति ने कहा कि अगर तुम अपने बारे में यथार्थ समाचार कहो तो मैं सारा विवरण दे दूँगा। वही गलती-रहित होगा। उसके उत्तर में गीधों के राजा ने अपना यथार्थ हाल कहा। ९४८

मिन्बिऱन् दालॆन विळङ्गॆ यिऱ्ऱिनाय्, अन्बिऱन् दार्हळि नदिह नाहियॆन्
पिन्बिऱन् दान्ऱुणैप् पिरिन्द पेदैयेन्, मुन्बिऱन् देनॆन मुडियक् कूऱिनान् 949

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मिन् पिऱन्ताल् ऍऩ–बिजली उठी जैसे; विळङ्कु–चमकनेवाले; ऍयिऱ्ऱिनाय्–दन्तुले; अऩ्पु इऱन्तार्कळिऩ्–स्नेहहीन; अतिकऩ् आकि–से बढ़कर; ऍऩ् पिऩ् पिऱन्ताऩ्–मेरे अनुज से; तुणै पिरिन्त–संग से त्यक्त; पेतैयेऩ्–बेचारा मैं; मुऩ् पिऱन्तेऩ्–उसका अग्रज हूँ; ऍऩ–कहकर; मुटिय–पूरा (वृत्तान्त); कूऱिताऩ्–कहा। ९४९

हनुमान से सम्पाति ने कहा कि हे विद्युत्-सम दाँत वाले ! अब मैं निर्ममों से अधिक निर्मम हो गया हूँ। अपने भाई के साथ से हीन हो गया हूँ। दयनीय मैं उसका ज्येष्ठ भाई हूँ। फिर उसने अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाया। ९४९

कूऱिय वाशहङ् गेट्ट कोदिलाऩ्, ऊऱिय तुऩ्बत्ति ऩुवरि युट्पुहा
एऱिऩ ऩुणर्त्तिऩ ऩिहलि रावणऩ्, वीऱिय वाळिडै विळैन्द दामॅऩ्ऱाऩ् 950

कूऱिय वाचकम्–(सम्पाति का) कहा वचन; केट्ट–जिसने सुना; कोतु इलाऩ्–अकलंक; ऊऱिय तुऩ्पत्तिऩ्–गहरे दुःख के; उवरियुळ् पुका–सागर में डूबकर; एऱिऩऩ्–कूल पर चढ़ा; इकल्–शत्रु रावण की; वीऱिय वाळ् इटै–शान के साथ चलायी हुई तलवार की वार से; विळैन्ततु आम्–(जटायु का मरण) हुआ; ऍऩ्ऱाऩ्–(हनुमान ने) कहकर; उणर्त्तिऩऩ्–समझाया। ९५०

सम्पाति का हाल सुनकर अकलंक हनुमान ने गहरे दुःख-सागर से डूबने के बाद कूल पर चढ़कर सम्पाति से कहा कि शत्रु रावण की शान के साथ चलायी गयी तलवार की वार से जटायु का मरण हो गया। ९५०

अव्वुरै केट्टलु मशनि येऱ्ऱिऩाल्, तव्विय गिरियॅऩऩ् तरैयिऩ् वीळ्ऩ्दऩऩ्
वॅव्वुयि रावुयर् पदैप्प विम्मिऩाऩ्, इव्वुरै यिव्वुरै यॅडुत्ति यम्बिऩाऩ् 951

अ उरै केट्टलुम्–उस वचन को सुनते ही; अचनि एऱ्ऱिऩाल्–भयंकर गाज से; तव्विय–चलित हुई; किरि ऍऩ–गिरि के समान; तरैयिल् वीळ्ऩ्तऩऩ्–भूमि पर गिरा; वॅव् उयिरा–गरम साँसें छोड़ते हुए; उयिर् पतैप्प–प्राणों के छटपटाते; विम्मिऩाऩ्–सिसकियाँ भरीं; इ उरै इ उरै–निम्न बातें; ऍट्टुतु इयम्पिऩाऩ्–बताने लगा (सम्पाति)। ९५१

वह समाचार सुनते ही सम्पाति वज्राहत गिरि के समान नीचे गिर गया। गरम साँसें निकलीं और प्राण छटपटाने लगे। सिसकते हुए वह यों बोला। ९५१

इळैया नीळ्शिऱ हऩ्ऱु वॅऩ्दुहत्, तळैया ऩऩुयिर् पोव ऱक्कदाल्
वळैया नेमियऩ् वऩ्मै शाल्वलिक्, किळैया ऩेयिदु वॅऩ्ऩ मायमो 952

इळैया–जो कभी नहीं थकते; नीळ् चिऱ्कु–वे मेरे पक्ष; अऩ्ऱु वॅऩ्तु उक–उस दिन जलकर गिर गये तब; तळैयाऩेऩ्–प्रतिबद्ध मेरे; उयिर् पोतल्–प्राण चले गये होते तो; तक्कतु–उचित होता; वळैया नेमियऩ्–नेक आज्ञाचक्रधर (दशरथ)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के; वन्मै चाल् वलिक्कु–कठोर बल से; इळैयात्ते–कम बली नहीं हो तुम; इतु ऍन्त्त मायमो–यह क्या ही माया है। ९५२

उस दिन जब मेरे बलवान पंख, जो कभी नहीं थकते थे, जलकर नष्ट हुए उसी दिन प्रतिबद्ध होकर जीवित रहने से मर जाता तो अच्छा होता। हे अनुज ! जिसका बल नेक दण्डधर दशरथ के बल से कुछ भी कम नहीं था ! यह क्या माया-कार्य हो गया ? । ९५२

मलरो नित्रुळन् मण्णुम् विण्णुमुण्, डुलैया नीडर मित्नु मुण्डरो
निलैयार् कर्पमु निन्र दिन्रुनी, इलैया नायिदु वॅन्त्त तन्मैयो 953

मलरोन्–कमलासन; नित्रुळन्–जीवित है; मण्णुम् विण्णुम्–भूमि और आकाश; उण्टु–ज्यों के त्यों हैं; उलैया नीटु अरम्–अक्षय श्रेष्ठ धर्म भी; इन्नुम् उण्टु–अब भी है; निलै आर्–स्थायी; कर्पमुम्–काल कल्प भी; निन्रतु–रहता है; इन्रु–आज; नी इलै आत्ताय्–तुम नहीं रहे हो गये; इतु–यह; ऍन्त्त तन्मैयो–क्या ही क्रम-गति है। ९५३

अभी कमलासन जीवित है ! भूमि, आकाश, अचल धर्म, सतत काल कल्प —सभी अविनष्ट हैं ! पर तुम नहीं रहे ! यह क्या विधिक्रम है ? । ९५३

उडन्ने यण्ड मिरण्डु मुन्दुयिर्त्, तिडनाम् वन्दिरु वेमु मॅय्दिन्नोम्
विडनी येदन्निच् चॅन्नर् वीरमुम्, कडन्नो वॅङ्गलु ळर्कु मेन्नमैयाय् 954

वॅम् कलुळर्कुम्–बली गरुड़ से भी; मेन्नमैयाय्–बढ़कर रहनेवाले; मुन्तु–पहले; अण्टम् इरण्टुम्–दो अण्डे; उयिर्त्तिट–हुए तब; उटन्ने–एक साथ; नाम् इरुवेमुम्–हम दोनों; वन्तु ऍय्तिन्नोम्–आकर पैदा हुए; विट–छोड़कर; नीये–तुम ही; तनि चॅन्र–अकेले गये; वीरमुम्–वह वीरता; कटन्नो–क्रम है क्या। ९५४

बलवान गरुड़ से भी अधिक बलशाली ! पहले दो अण्डे हुए जिनमें से हम दोनों एक साथ बाहर आये। अब तुम मुझे छोड़कर अकेले ही चले गये ! यह कैसा वीरकृत्य ? । ९५४

ऑन्रा मून्रुल हत्तु ळोरैयुम्, वॅन्रा नॅन्निनुम् वीर निर्कुनेर्
निन्रा नेयव् वरक्क निन्नैयुम्, कॉन्रा नेयिः(ह्) देन्न कॉळ्हैयो 955

वीर–वीर; ऑन्रा–अपनी अधीनता न माननेवाले; मून्रु उलकत्तु उळोरैयुम्–तीनों लोकों के वासियों को; अ अरक्कन्–उस राक्षस ने; वॅन्रान् ऍन्निनुम्–जीता तो भी; निर्कु नेर् निन्राने–तुम्हारे सामने खड़ा रह सका क्या; निन्नैयुम् कॉन्राने–तुम्हें मार भी सका क्या; इतु ऍन्त्त कॉळ्कैयो–यह क्या कुसमाचार सुनता हूँ। ९५५

वीर ! उस रावण ने अपनी अधीनता न माननेवाले तीनों लोकों को युद्ध में जीत लिया, सही। पर वह क्या युद्ध में तुम्हारे विरुद्ध खड़ा हो सका ? तुम्हें मार सका ? यह कैसा विचित्र समाचार है ? । ९५५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्ऱॆन् ऱेङ्गि यिरङ्गि यिन्नलाल्, पॊन्ऱुन् दन्मै पुहुन्द पोदवर्
कॊन्ऱुऱ् जॊर्कॊ डुणर्च्चि नल्हिनान्, वन्ऱिण् डोळ्वरै यन्न मारुदि 956

ऍन्ऱु ऍन्ऱु–ऐसा, ऐसा; एङ्कि इरङ्कि–तरसकर रोकर; इन्नलाल्–दुःख से; पॊन्ऱुम् तन्मै–मरण-स्थिति को; पुकुन्त पोतु–जब सम्पाति पहुँच गया तब; वन् तिण् वरै अन्न–कठोर सुदृढ़ पर्वत-सम; तोळ् मारुति–कन्धों वाले मारुति ने; अवर्कु–उससे; ऑन्ऱुम् चॊल् कॊटु–अनुकूल शब्दों से; उणर्च्चि नल्किनान्–धीरज बँधाया। ९५६

सम्पाति इस तरह विलाप करते हुए तरस और दुःख के बढ़ने से आसन्नमरण हो गया। तब कठोर सुदृढ़ पर्वत-सम कन्धों वाले हनुमान ने अनुकूल वचन कहकर धीरज दिलाया। ९५६

तेऱ्ऱत् तेऱि यिरुन्द शॆङ्गणान्, कूऱ्ऱॊप् पान्कॊलै वाळ रक्कनो
डेऱ्ऱुप् पोर्शॆय्द दॆन्नि मित्तॆन्नक्, कार्ऱिन् शेयिदु कट्टु रैक्कुमाल् 957

तेऱ्ऱ–धीरज देने पर; तेऱि इरुन्त–सँभला जो रहा, उस; चॆम् कणान्–अरुणाक्ष (सम्पाति) ने; कूऱ्ऱु ऑप्पान्–यम-सम (जटायु) को; कॊलै वाळ्–घातक तलवारधारी; अरक्कनोटु–राक्षस के; एऱ्ऱु–सामने जाकर; पोर् चॆय्ततु–युद्ध करना; ऍन् निमित्तु–(पड़ा) किस हेतु; ऍन्न–पूछने पर; कार्ऱिन् चेय्–पवन-पुत्र ने; इतु–यह; कट्टुरैक्कुम्–कहा। ९५७

हनुमान के धैर्य देने से सँभलकर उस अरुणाक्ष सम्पाति ने पूछा कि यम-सम जटायु का घातक तलवार (चन्द्रहास) के धारक रावण से लड़ना किस निमित्त हुआ ? हनुमान ने उत्तर दिया। ९५७

ऍङ्गो मानव् विराम निल्लुळाळ्, शॆङ्गो लान्महळ् शीदै शॆव्वियाळ्
वॆङ्गोल् वञ्जन् विळैत्त मायैयाल् तङ्गो नैप्पिरि वुऱ्ऱ तन्मैयाळ् 958

ऍम् कोमान्–हमारे नायक; अ इरामन्–उन श्रीराम की; इल् उळाळ्–गृहिणी; चॆम् कोलान्–न्यायसम्मत आज्ञा-दण्डधर; मकळ्–(जनक) की दुहिता; चॆव्वियाळ्–उत्तम; चीतै–सीतादेवी; वॆम् कोल् वञ्चन्–क्रूर दण्डधर वंचक रावण की; विळैत्त–की हुई; मायैयाल्–माया से; तन् कोनै–अपने राजा (पति) से; पिरिवुऱ्ऱ तन्मैयाळ्–बिछुड़ी हुई स्थिति वाली हो गयी। ९५८

हमारे प्रभु नायक श्रीराम की गृहिणी, नीतिसम्मत शासक जनकराज की दुहिता और उत्तम देवी सीता क्रूर शासक वञ्चक रावण के माया-कार्य से अपने पति से वियुक्त हो गयीं। ९५८

कॊण्डे हुङ्गॊलै वाळ रक्कनैक्, कण्डा नुम्बि यऱङ्ग इक्कलान्
वण्डार् कोदैयै वैत्तु नीङ्गॆनात्, तिण्डे रानैदिर् शिन्दै शोरिनान् 959

कॊण्टु एकुम्–उनको ले जानेवाले; कॊलै वाळ् अरक्कनै–घातक तलवारधारी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राक्षस को; अऱम् कटक्कलान्–धर्म का उल्लंघन न करनेवाले; उम्पि–तुम्हारे भाई ने; कण्टान्–देखा; वण्टु आर् कोतैयै–भ्रमरावृत मालाधारिणी सीता को; वैत्तु–छोड़कर; नीङ्कु–हट जाओ; ऍन्ना–कहकर; तिण् तेरान् ऍतिर्–सुदृढ़ रथ वाले (रावण) के विरुद्ध; चिन्तै चीऱ्ऱिनान्–मन का कोप दिखाया। ९५९

संहारक तलवारधारी रावण उन्हें ले जा रहा था। तब धर्म का उल्लंघन न करनेवाले तुम्हारे भाई जटायु ने उसे देख लिया। उसने रावण से कहा कि भ्रमरावृत मालाधारिणी देवी को यहीं छोड़कर भाग जाओ। फिर क्रुद्धमन उसने रथ पर जानेवाले रावण का सामना किया। ९५९

शीऱ्ऱित् तीयव नेऱु तेरैयुम्, कीऱ्ऱित् तोळ्हळ् किळ्ळित्त ळित्तपिन्
तेऱ्ऱित् तेवर्ह डेवन् तॅय्ववाळ्, वीऱप् पॊन्ऱिनन् मॅय्म्मै योनॅन्ऱान् 960

मॅय्म्मैयोन्–सत्यसंध जटायु; चीऱ्ऱि–कुपित होकर; तीयवन्–खल के; एऱु तेरैयुम्–सवार हुए रथ को; कीऱ्ऱि–तोड़कर; तोळ्कळ्–उसके कन्धों को; किळ्ळित्तु–चीरकर; अळ्ळित्त पिन्–मिटाने के बाद; तेऱ्ऱि–(रावण ने) धैर्य अवलम्बित कर; तेवर्कळ् तेवन्–देवाधिदेव की; तॅय्व वाळ्–दिव्य तलवार (चन्द्रहास) को; वीऱ–चलाया; पॊन्ऱिनन्–(तब जटायु) मरा; ऍन्ऱान्–कहा (हनुमान ने)। ९६०

सत्यसंध जटायु ने क्रोध के साथ रावण के वाहन रथ को तोड़ा; उसके कन्धों को क्षत-विक्षत किया। उसको हरा दिया। बाद रावण ने दृढ़संकल्प हो देवाधिदेव, परमेश्वर-प्रदत्त दिव्य तलवार से वार किया। तब जटायु (पंखों के कट जाने से) मर गया। ९६०

(मूल-टीकाकार इधर एक सरस बात कहते हैं। युद्ध के सिलसिले में रावण ने जटायु से जान लिया कि जटायु का मर्मस्थान पंखों में था। जटायु ने सत्य कह दिया था। पर रावण ने झूठ कहा कि मेरे प्राणों का मर्मस्थान पैर का अँगूठा है। यह वृत्तान्त एक शैवसंत ज्ञानसम्बन्ध मूर्ति के स्तुतिगीतों में पाया जाता है। इसी के आधार पर इस पद्य में जटायु को 'सत्यसंध' कहा गया है।)

पॆन्दार्त् तोळ निरामन् पत्तिनि, शॆन्दाळ् वञ्जि तिऱत्ति ऱन्दवन्
मैन्दा रॆम्बि वरम्बिल् शीर्त्तियो, डुय्न्दा नल्ल दुलन्द दुण्मैयो 961

पॆन्तार् तोळन्–नवीन पुष्पों की मालाधारी कन्धों वाले; इरामन् पत्तिनि–श्रीराम की धर्मपत्नी; चॆम् ताळ्–लाल चरण की; वञ्चि–वल्लरी-सी सीता; तिऱत्तु–के निमित्त; इऱन्तवन्–जो मरा; मैन्तु आर्–बलयुक्त; ऍम्पि–(वह) मेरा भाई; वरम्पु इल् चीर्त्ति योटु–अपार यश के साथ; उय्न्तान्–अमर हो गया; अल्लतु–ऐसा कहे बिना; उलन्ततु–मरा कहना; उण्मैयो–सत्य (कथन) होगा क्या। ९६१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नवीन पुष्पों की माला से अलंकृत श्रीराम की धर्मपत्नी, लाल (ललाई लिये) चरणों की, लता-सी देवी के निमित्त मरा मेरा भाई ! वह बड़ा बलशाली है। अपार यश के साथ वह तर गया ! ऐसा कहना छोड़कर 'हत हो गया' कहना क्या सत्यकथन होगा ? । ९६१

अऱमन् ऩाऩुड ऩॆम्बि यऩ्बिऩो, डुऱवुऩ् ऩावुयिर् ऑऩ्ऱ वोविऩाऩ्
पॆऱवॊण् णाददोर् पॆऱ्ऱि पॆऱ्ऱवऱ्, किऱवॆऩ् ऩामिदि लिऩ्ब मियावदे 962

ऎम्पि–मेरे अनुज भाई ने; अऱम् अऩ्ऩाऩुटऩ्–धर्म-विग्रह श्रीराम से; अऩ्पिऩोटु उऱवु उऩ्ऩा–प्रेम का नाता मानकर; उयिर् ऑऩ्ऱ–प्राण लगाने से; ओविऩाऩ्–(प्राण) दे दिये; पॆऱ ऑण्णाततु–अप्राप्य; ओर्–अनुपम; पॆऱ्ऱि–लाभ; पॆऱ्ऱवऱ्कु–जिसे मिला उस जटायु के लिए; इऱवु ऎऩ्ऩाम्–मरा कहना क्या गौरव देगा; इतिल्–इससे बढ़कर; इऩ्ऩपम्–सुखद; यावते–क्या होगा। ९६२

मेरे भाई ने धर्ममूर्ति श्रीराम के साथ अपना नाता जोड़ लिया। उसमें उसके प्राण मिले हुए थे। इसलिए उसने प्राण छोड़ दिये और सम्बन्ध निबाह लिया ! दुष्प्राप्य लाभ उसे मिल गया। ऐसे उसके सम्बन्ध में मृत्यु के शब्द का प्रयोग क्या अर्थ रखेगा ? इस मरण से बढ़कर आनन्द-दायक क्या हो सकता है ? । ९६२

वाऴ्वित् तीरॆऩै मैन्दर् वन्दुनीर्, आऴ्वित् तीरलिर् तुऩ्ब वाऴिवाय्
केऴ्वित् तीविऩै कीऱि ऩीरिरुळ, पोऴ्वित् तीरुरै पॊय्यि ऩीङ्गिऩीर् 963

केऴ्वि–श्रवण से; तीविऩै कीऱिऩीर्–पाप का नाश कर चुकनेवाले; इरुळ्–(अज्ञान-) तिमिर को; पोऴ्वित्तीर्–तोड़ चुके; उरै पॊय्यिऩ्–असत्य-कथन से; नीङ्किऩीर्–दूर रहनेवाले; मैन्तर्–वीर; नीर् वन्तु–तुम लोगों ने आकर; ऎऩै–मुझे; तुऩ्प आऴि वाय्–दुःख-सागर में; आऴ्वित्तीर् अलीर्–डुबो दिया नहीं; ऎऩै वाऴ्वित्तीर्–मुझे तार दिया। ९६३

तुम लोगों ने श्रवण-ज्ञान से अपना पाप नष्ट कर दिया है ! अज्ञान-तिमिर को भगा दिया है ! असत्य-कथन से दूर रहनेवाले हो गये। हे ऐसे वीर ! तुमने इधर आकर जटायु की मृत्यु का समाचार सुनाकर दुःख-सागर में मग्न नहीं कराया। पर मुझे तार दिया। ९६३

ऎल्ली रुम्मव् विराम नाममे, शॊल्ली रॆऩ्शिऱै तोऩ्ऱुञ् जोर्विला
नल्ली रप्पय ऩण्णु नल्लशॊल्, वल्लीर् वाय्मै वळर्क्कुम् माण्बिऩीर् 964

नल्ल चॊल् वल्लीर्–श्रेष्ठ वक्ता; वाय्मै वळर्क्कुम्–सत्यपालक; माण्पिऩीर्–गौरवपूर्ण; ऎल्लीरुम्–तुम सब; अ इराम नाममे–उन श्रीराम का ही नाम; चॊल्लीर्–कहो; ऎऩ् चिऱै–मेरे पंख; तोऩ्ऱुम्–प्रकट हो (उग) आयेंगे; चोर्वु इला–अक्षय; नल् ईर पयऩ्–अच्छी कृपा का फल; नण्णुम्–मिलेगा। ९६४

हे मंगलवक्ता ! सत्यपालक गौरवशाली ! तुम सब अब श्रीराम के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाम का उच्चारण करो। तो मेरे पंख उग आयँगे। श्रीराम की अचल कृपा का फल मिलेगा। ९६४

ऍन्ऱा नन्नदु काण्डुम् यामॅऩा, निन्ऱार् निन्ऱुऴि नील मेनियान्
नन्ऱा नाम नविन्ऱु नल्हिऩार्, वन्ऱो ळान्शिऱै वाऩन् दायवे 965

ऍन्ऱान्–(सम्पाति ने) ऐसा कहा; याम् अन्नतु काण्टुम्–हम वह देखेंगे; ऍऩा–कहकर; निन्ऱार्–स्थित हुए; निन्ऱुऴि–उसी स्थिति में; नील मेनियान्–नीलवर्ण; नन्ऱु आम् नामम्–(श्रीराम का) शुभ नाम; नविन्ऱु नल्किऩार्–उच्चारण कर हित किया; वन् तोळान् चिऱै–सबल कन्धों वाले सम्पाति के पंख; वाऩम् ताय–आकाश तक बढ़ गये। ९६५

सम्पाति ने ऐसा कहा। वानरों को कुतूहल हुआ। सोचा कि वह करामात देखेंगे। वहीं खड़े होकर उसी स्थिति में वे श्रीराम के शुभनाम का उच्चारण करने लगे, यह बड़ा उपकार हुआ। बलिष्ठ कन्धों वाले सम्पाति के पंख उगकर आकाश को छूते हुए बढ़ गये। ९६५

शिऱैबॅऱ् ऱान्ऱिहऴ् हिन्ऱ मेनियान्, मुऱैबॅऱ् ऱामुल हॅङ्गुम् मूडिऩान्
निऱैबॅऱ् ऱावि नॅरुप्पु यिर्क्कुम्वाळ्, उऱैपॅऱ् ऱालॅऩ लामु रुप्पिऩान् 966

चिऱै पॅऱ्ऱान्–पंख-प्राप्त; तिकऴ्किन्ऱ–शोभनेवाले; मेनियान्–शरीर का; मुऱै पॅऱ्ऱु आम्–क्रम से सृष्ट; उलकु ऍङ्कुम्–सारे भूतल को; मूटिऩान्–ढँककर; निऱै पॅऱ्ऱु–खूब वर्धित होकर; आवि नॅरुप्पु–धुआँ-सहित अग्नि; उयिर्क्कुम्–निकालनेवाली; वाळ्–तलवार; उऱै पॅऱ्ऱाल् ऍऩल् आम्–म्यान पा गयी जैसे; उरुप्पिऩान्–अंगों-सहित हुआ। ९६६

तब सम्पाति पंखसहित होकर शोभायमान दिखा। उसने क्रम से बढ़े हुए अपने पंखों से सारी भूमि को ढँक दिया। वह पूर्णरूप से सर्वांग-सम्पन्न होकर एक तलवार के समान लगा, जिससे धुआँसहित आग-सी निकल रही हो और जो म्यान में रखी जा चुकी हो। ९६६

तॅरुण्डान् मॅय्प्पॅयर् शॅप्प लोडुम्वन्, दुरुण्डा नुऱ्ऱ पयत्तै युन्ऩिऩार्
मरुण्डार् मानवर् कोनै वाळ्त्तिऩार्, वॅरुण्डार् शिन्दै वियन्दु विम्मुवार् 967

तॅरुण्टान्–ज्ञानियों द्वारा जो परब्रह्म बताये जाते हैं; मॅय्प्पॅयर्–उन श्रीराम का सत्य नाम; चॅप्पलोटुम्–उच्चारण (जप) करने पर; वन्तु उरुण्टान्–जो लोटता-पोटता आया; उऱ्ऱ पयत्तै–उसको मिली उपलब्धि; उन्ऩिऩार्–सोचकर; मरुण्टार्–विस्मय-विमूढ़ हुए; वॅरुण्टार्–डरे; वियन्तु–आश्चर्य से; चिन्तै विम्मुवार्–मन भरा हो; मानवर् कोनै–नरपुंगव की (या मनुकुलपुंगव की); वाळ्त्तिऩार्–स्तुति की। ९६७

वानर वीरों ने ज्ञानियों द्वारा परब्रह्मनिर्दिष्ट श्रीराम के नाम की महिमा देखी। सम्पाति लोटता-पोटता हुआ आया था। पर श्रीराम के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाम के जप करने से उसके पंख उग आये। उस करामात को देखकर वे विस्मित हुए। उन्हें भय भी हुआ। आश्चर्य से भरकर उन्होंने नरपुंगव मनुकुलश्रेष्ठ श्रीराम की स्तुति की। ९६७

अन्ना नैक्कडि दञ्ज लित्तुनी, मुन्ना ळुऱ्ऱदु मुऱ्ऱु मोदॅनच्
चॊन्नार् शॊऱ्ऱदु शिन्दै तोय्वुऱत्, तन्ना लुऱ्ऱदु तान्वि ळम्बुवान् 968

अन्नाऩै–उससे; कटितु–शीघ्र; अञ्चलित्तु–हाथ जोड़कर; नी–तुम; मुन् नाळ् उऱ्ऱतु–पहले जो घटनाएँ घटीं; मुऱ्ऱुम्–पूरा; ओतु–कहो; ॲन्न–ऐसा; चॊन्नार्–कहा; तान्–वह; चॊऱ्ऱतु–उनका कहना; चिन्तै तोय्वु उऱ–मन में प्रभाव कर गया, इसलिए; तन्नाल् उऱ्ऱतु–आप बीती को; विळम्पुवान्–कहने लगा। ९६८

उन्होंने तुरन्त पंख-प्राप्त सम्पाति को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और याचना की कि पहले जो हुआ वह सारा वृत्तान्त पूर्णरूप से कहो। उनकी बात ने उस पर प्रभाव किया। उसने आप-बीती बातों का यों विवरण दिया। ९६८

तायॅनत् तहैय नण्बीर् शम्बादि शडायु वॅन्बेम्
शेयॊळिच् चिऱैय वेहक् कळुहिनुक् करशु शॅय्वेम्
पाय्दिरैप् परवै ञालम् पडरिरुळ् परुहुम् पण्बिन्
आय्हदिर्क् कडवुट् टेरू ररुणनुक् कमैन्द मैन्दर् 969

ताय् ॲन्न तकैय–माता मानने योग्य; नण्पीर्–मित्रो; चम्पाति चटायु ॲन्पेम्–सम्पाति और जटायु नाम के हम; चेय् ऒळि चिऱैय–लाल प्रकाशमय पंखों वाले; वेक–अति वेगी; कळुकिनुक्कु–गीधों के; अरचु चॅय्वेम्–राजा रहे; पाय् तिरै परवै–लपकती आनेवाली लहरों वाले समुद्र से वलयित; ञालम्–भूमि पर; पटर् इरुळ्–व्याप्त अन्धकार को; परुकुम् पण्पिन्–दूर करने में समर्थ; आय् कतिर् कटवुळ्–श्रेष्ठ किरणों के सूर्यदेव के; तेर् ऊर्–रथ के सारथी; अरुणनुक्कु–अरुण के; अमैन्त मैन्तर्–योग्य पुत्र। ९६९

माता-सम मान्य मित्रो! हम सम्पाति और जटायु नाम के दो भाई हैं। हम लाल प्रकाशमय पंखों वाले और अतिवेगी गीधों पर शासन करनेवाले हैं। लहराती आनेवाली तरंगसंकुल सागर से वलयित इस भूमि के अन्धकार के नाशक किरणमाली सूर्यदेव के रथ के सारथी, अरुण के युक्त पुत्र हैं। ९६९

आयुय रुम्बर् नाडु काण्डुमॅन् ऱऱिवु तळ्ळ
मीयुयर् विशुम्बि नूडु मेक्कुऱच् चॅल्लुम् वेलै
काय्हदिर्क् कडवुट् टेरैक् कण्णुऱ्ऱेङ् गण्णु ऱामुन्
तीयैयुन् दीय्क्कुन् दॅय्वच् चॅङ्गदिर्च् चॅल्वन् शीऱि 970

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अ उयर् उम्पर् नाटु–उस उत्कृष्ट देवलोक को; काण्टुम् ऍन्ऱु–देखने को; ऍम् अऱिवु तळ्ळ–हमारी बुद्धि ने प्रेरित किया तो; मी उयर् विचुम्पिन् ऊटु—ऊपर रहनेवाले आकाश में; मेक्कु उऱ–ऊँचे; चॆल्लुम् वेलै–जब चले तब; काय् कतिर्–सन्तापक किरणों के; कटवुळ् तेरै–देव (सूर्य) के रथ को; कण् उऱ्ऱेम्–आँखों से देखा; कण्णुऱामुन्–देखने से पहले ही; तीयॆयुम् तीय्क्कुम्–आग को भी जला सकनेवाले; तॆय्वम्–देवता; चॆम् कतिर् चॆल्वन्–लाल किरणमाली के; चीऱि–कुपित होते। ९७०

हमारी इच्छा हुई की स्वर्गलोक जाकर देखें। उससे प्रेरित होकर हम आकाश में ऊपर उड़े। तब जलानेवाली किरणों के स्वामी सूर्यदेव का रथ दृष्टि में पड़ा। उसको देखते ही आग को भी जला सकनेवाले लाल किरणों के स्वामी सूर्य ने कोप करके—। ९७०

मुन्दिय वॆम्बि मेनि मुरुङ्गळन् मुडुहुम् वेलै
ऍन्दैनी कात्ति यॆन्ऱान् यानिरुञ् जिरैयु मेन्दि
वन्दनॆन् मऱैत्त लोडु मऱ्ऱवन् मऱैयप् पोनान्
वन्दुमॆय् यिऱहु तीयन्दु विळुन्दनॆन् विळिहि लादेन् 971

मुन्तिय–मेरे आगे जो गया; ऍम्पि मेनि–मेरे भाई के शरीर को; मुरुङ्कु अळल्–दाहक अग्नि से; मुटुकुम् वेलै–जलाने लगी, तब; ऍन्तै–तात; नी कात्ति–तुम बचाओ; ऍन्ऱान्–कहा; यान्–मैंने भी; इरुम् चिऱैयुम् एन्ति–दोनों पंखों पर (धूप) धारण करके; वन्तनॆन् आकर; मऱैत्तलोटुम्–उसको छिपा लिया तब; अवन् मऱैय पोनान्–वह (मेरे पंखों के नीचे) छिपे-छिपे गया; मॆय् वॆन्तु–(इसलिए मेरा) शरीर झुलस गया; इऱकु तीय्न्तु–पंख जल गये; विळिकिलातेन्–मरा नहीं; विळुन्तनॆन्–(भूमि पर) गिर गया। ९७१

मेरे आगे (मुझसे पहले) जानेवाले मेरे भाई के शरीर को अपनी किरण की दाहक आग से दग्ध किया। तब अनुज ने मुझसे याचना की कि तात ! मुझे बचाओ। मैंने अपने पंख फैला लिये और उसको उनके नीचे कर लिया। वह उनके नीचे छिपे-छिपे आने लगा। पर मेरा शरीर झुलस गया और पंख जल गये। भाग्य से मरा नहीं। मैं नीचे गिर गया। ९७१

मण्णिडै विळुन्द वॆन्नै वानिडै वयङ्गु वळ्ळल्
कण्णिडै नोक्कि युऱ्ऱ करुणैयाऱ् चनहन् कादऱ्
पॆण्णिडै यीट्टिन् वन्द वानर रिमान् पेरै
ऍण्णिडै युऱ्ऱ कालत् तिऱहुपॆऱ् ऱॆळुदि यॆन्ऱान् 972

मण् इटै विळुन्त–भूमि पर गिरे हुए; ऍन्नै–मुझे; वानिटै–आकाश में; वयङ्कुम् वळ्ळल्–शोभनेवाले देवता ने; कण्णिटै नोक्कि–आँखों से देखकर; उऱ्ऱ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करुणैयाल्–हुई करुणा के साथ; चत्तकत् कातल् पॅण्–जनक की प्यारी दुहिता; इटै ईट्टिन् वन्त–(के निमित्त) मध्य आनेवाले; वानरर्–वानर; इरामन् पेरै–श्रीराम नाम का; ऍण्णिटै उऱ्ऱ कालत्तु–जब जाप करेंगे, उस समय; इऱकु पॅऱ्ऱु–पंख पाकर; ऍऴुति–उठोगे; ऍन्ऱान्–यह करुणा-वचन कहा। ९७२

आकाशचारी सूर्यदेव ने भूमि पर गिरे हुए मुझे देखा और मुझ पर हुई करुणा से कृपावचन कहा कि जनक की प्यारी दुहिता के निमित्त (उनकी खोज में) वानर वीर आयँगे। जब वे श्रीराम के दिव्य नाम का जाप करेंगे तब तुम्हारे पंख उग आयँगे और तुम उड़ सकोगे। ९७२

ऍम्बियु मिडरिन् वीऴ्वा नेयदु मऱुक्क वञ्जि
अम्बरत् तियङ्गुम् याणर्क् कऴ्हिनुक् करश नानान्
नम्बिमी रीवंन् दन्मै नीरिव णडैन्द वाऱ्ऱै
उम्बरु मुवप्पत् तक्की रुणर्त्तुमि नुणर वॅन्ऱान् 973

उम्परुम् उवप्प तक्कीर्–देवों से भी प्रशंसनीय; नम्पिमीर्–श्रेष्ठ वीर; इटरिन् वीऴ्वान्–मेरे दुःख से दुःखमग्न; ऍम्पियुम्–मेरा भाई; एयतु मऱुक्क–मेरी आज्ञा इनकार करने से; अञ्चि–डरकर; अम्परत्तु–आकाश में; इयङ्कुम्–उड़नेवाले; याणर् कऴुकिनुक्कु–बलिष्ठ गीधों का; अरचन् आनान्–राजा बना; ईतु–यही; ऍम् तन्मै–हमारा वृत्तान्त है; नीर्–तुम्हारे; इवण्–यहाँ; अटैन्त आऱ्ऱै–पहुँचने का हाल; उणर उणर्त्तुमिन्–समझाकर बताओ; ऍन्ऱान्–कहा। ९७३

देवों से भी प्रशंसनीय काम करनेवाले ! श्रेष्ठ वीरो ! मेरा अनुज बहुत दुःखी हुआ। मेरी आज्ञा टालने से डरकर उसने मेरी बात मान ली और वह आकाशचारी बलिष्ठ पंखों वाले गीधों का राजा बना। यही हमारा वृत्तान्त है। अब कहो तुम्हारे इधर आने का वृतान्त। सम्पाति ने यह पूछा। ९७३

ऍन्ऱलु मिरामन् ऱन्नै येत्तिन रिऱैञ्जि यॅन्दाय्
पुन्ऱॊऴि लरक्कन् मऱ्ऱत् तेवियैक् कॊण्डु पोन्दान्
तॅन्ऱिशै यॅन्न वुन्निन् तेडिनाम् वन्दु मॅन्ऱार्
ननऱुनीर् वरुन्दल् वेण्डा नानिदु नविल्व लॅन्ऱान् 974

ऍन्ऱलुम्–(सम्पाति के यों) कहने पर; इरामन् तन्तै–श्रीराम की; एत्तिनर्–स्तुति की; इऱञ्चि–प्रार्थना करके; ऍन्ताय्–तात; पुन् तॊऴिल् अरक्कन्–नीचकर्मी राक्षस; अ तेवियै–उन देवी को; तॅन् तिचै कॊण्टु पोन्तान्–दक्षिण दिशा में ले गया; ऍन्न–ऐसा; उन्नि–विचार कर; नाम् तेटि वन्तुम्–हम खोजते हुए आये; ऍन्ऱार्–कहा (वानरों ने); नन्ऱु–अच्छा; नीर् वरुन्तल् वेण्टा–तुम दुःख न करना; नान् इतु नविल्वल्–मैं इसके सम्बन्ध में कहूँगा; ऍन्ऱान्–कहा। ९७४

सम्पाति के यों पूछने पर वानरों ने श्रीराम की स्तुति की और विनय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रकट की। फिर उन्होंने कहा कि तात ! वह क्षुद्रकर्मी राक्षस उन देवी सीता को दक्षिण की ओर ले गया। इस विचार से हम उनकी खोज में इधर आये। तब सम्पाति ने उत्तर में कहा कि अच्छा ! मैं इसके सम्बन्ध में कहूँगा। सुनो। ९७४

पाहॊऩ्ऱु कुदलै याळैप् पादह वरक्कन् पऱ्ऱिप्
पोहिऩ्ऱ पॊऴुदु कण्डेऩ् पुक्कन ऩिलङ्गै पुक्कु
वेहिऩ्ऱ वुळ्ळत् ताळै वॆञ्जिऱै यहत्तु वैत्तान्
एहुमिन् काण्डि राङ्गे यिरुन्दन ळिऱैवि यिऩ्ऩुम् 975

पाकु ऒऩ्ऱु–चासनी-सम; कुतलैयाळै–मधुरभाषिणी को; पातक अरक्कन्–पातक राक्षस; पऱ्ऱि–पकड़कर; पोकिऩ्ऱ पॊऴुतु–जब जा रहा था, तब; कण्टेऩ्–मैंने देखा; इलङ्कै पुक्कतऩ्–लंका में घुस गया; पुक्कु–वहाँ जाकर; वेकिऩ्ऱ उळ्ळत्ताळै–दग्धचित्त उनको; वॆम् चिऱै अकत्तु–कठोर कारागृह में; वैत्तान्–रख लिया; इऱैवि–देवी; इऩ्ऩुम्–अब भी; आङ्के–वहीं; इरुन्तऩळ्–रहती हैं; एकुमिन् काण्टिर्–जाकर देख लो। ९७५

जब रावण चासनी-सम मधुरभाषिणी सीता को ले जा रहा था तब मैंने उसे देखा। वह लंका में गया और वहाँ जाकर उसने दग्ध मन वाली सीतादेवी को भयंकर कारागृह में बन्दी बनाकर रखा है। ईश्वरी अब भी वहीं हैं। जाकर देखो। ९७५

ॲल्लीरुञ् जॆऱलॆऩ्ब दॆळिदऩ्ऱव् विलङ्गै मूदूर्
वल्लीरे लॊरुवरेहि मऱैन्दव णॊऴुहि वाय्मै
शॊल्लीरे तुयरै नीक्कित् तोहैयैत् तॆरुट्टि मीडिर्
अल्लीरे लॆऩ्शॊऱ् ऱेऱि युणर्त्तुमि नऴहर्क् कम्मा 976

अ इलङ्कै मूदूर–उस प्राचीन नगर, लंका में; ॲल्लीरुम्–तुम सबका; चेऱल् ॲऩ्पतु–पहुँचना; ॲळितु अऩ्ऱु–आसान नहीं; वल्लीरेल्–कर सको तो; ऒरुवर् एकि–एक जाकर; अवण् मऱैन्तु ऒऴुकि–वहाँ छिपे-छिपे चलकर; वाय्मै चॊल्लीर्–श्रीराम के वचनों को कहो; तोकैयै–मयूरनिभ देवी को; तुयरै नीक्कि–दुःखमुक्त करके; तॆरुट्टि–धीरज दिलाकर; मीटिर्–लौट आओ; अल्लीरेल्–नहीं तो; ॲऩ् चॊल् तेऱि–मेरे कहने पर विश्वास करके; अऴकर्कु–सुन्दरराज से; उणर्त्तुमिऩ्–बताओ; (अम्मा–पूरक ध्वनि)। ९७६

पर उस प्राचीन लंका नगर में तुम सबका जाना सुलभ काम नहीं है। अगर कर सको तो तुममें से एक जाओ। वहाँ छिपे-छिपे घूमो और देवी से मिलकर श्रीराम के कहे वचन कह दो। देवी को दुःख-मुक्त कर दो और लौट आओ। अगर यह नहीं कर सको तो तुम मेरी बात पर विश्वास करो और सुन्दरराज श्रीराम से जाकर निवेदन कर दो। ९७६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काक्कुन रिन्मै यालक् कळुहिन मुळुदुङ् गन्ऱिच्
चेक्कैविट् टिरियल् पोहित् तिरिदरु मदनैत् तीर्प्पान्
पोक्कैनक् कडुत्त दाहुम् नल्लदु पुरिमि नैन्ना
मेक्कुऱ विशैयिऱ् चैन्ऱान् शिऱैयिनाल् विशुम्बु पोर्प्पान् 977

काक्कुनर् इन्मैयाल्–रक्षक न होने से; अ कळुकु इनम्–वह गीधों का समूह; मुळुतुम्–सारा; कन्ऱि–दुःखी होकर; चेक्कै विट्टु–वासस्थान छोड़कर; इरियल् पोकि–तितर-बितर जाकर; तिरि तरुम्–फिरेगा; अतनै तीर्प्पान्–उस (स्थिति) को दूर करने; पोक्कु–उनके पास जाना; अैनक्कु अटुत्तत्तु आकुम्–मेरा योग्य कर्तव्य है; नल्लतु पुरिमिन्–जो बेहतर लगे वह करो; अैन्ना–कहकर; चिऱैयिनाल्–अपने पंखों से; विचुम्पु पोर्प्पान्–आकाश को छाता हुआ; मेक्कु उऱ–ऊपर; विचैयिल्–वेग के साथ; चैन्ऱान्–गया। ९७७

गीधों का कुलरक्षक राजा के विना दुःखी होगा और वासस्थान छोड़कर तितर-बितर हो जायगा। उसको कष्ट से बचाने के लिए मेरा उनके पास जाना आवश्यक है। मैंने जो दो उपाय कहे, उनमें जो बेहतर जँचता है वह करो। ऐसा कहकर उसने अपने पंख फलाये जिससे आकाश ही आच्छादित हो गया! वह ऊपर उड़कर अतिवेग से चला गया। ९७७

16 मयेन्दिरप् पडलम् (महेन्द्र पटल)

पोय्युर शैय्यान् पुळ्ळर शैन्ऱे पुहलुऱ्ऱार्
कय्युरै नैल्लित् तन्मैयि नैल्लाङ् गरैहण्डाम्
उय्युरै पैऱ्ऱा नल्लवै यैल्ला मुऱवैण्णिच्
चैय्युमि नोय्दिर् चैय्वहै यावुम् शैयवल्लीर् 978

पुळ् अरचु–गीधों का राजा; पोय् उरै चैय्यान्–झूठी बात नहीं कहेगा; अैन्ऱे–यही; पुकलुऱ्ऱार्–कहते हुए; कै उरै नैल्लि तन्मैयिन्–करतलामलकवत; अैल्लाम् करै कण्टाम्–सब साफ़ जान गये हैं; उय् उरै–बचानेवाला समाचार; पैऱ्ऱाम्–पा गये; नल्लवै अैल्लाम्–भलाकारी सब; उऱ अैण्णि–खूब सोचकर; चैय्वकै यावुम्–करणीय सब; नोय्तिल् चैय वल्लीर्–जो शीघ्र कर सकते हो; चैय्युमिन्–कर लो। ९७८

गीधों का राजा झूठ नहीं बोलेगा। इस विश्वास पर वे आपस में बोलने लगे। किन्हीं ने कहा कि करतलामलकवत हमने सब ठीक-ठीक जान लिया। हमको बचानेवाला शुभवचन मिल गया। अब जो अच्छा होगा वही सोचकर शीघ्र काम करने का सामर्थ्य जिनमें है, वे तुम लोग करो। ९७८

माळ वलित्ते मन्ऱुमिम् माळा वशैयोडु
मीळवु मुऱ्ऱे मन्नवै तीरुम् वेंळिपैऱ्ऱेम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काळ निऱत्तो डॊप्पवर् माळक् कडऱावुऱ्
ऱाऴु नलत्ती राऴुमि ऩॆम्मा रुयिरम्मा 979

माळ वलित्तेम्–मरने का निश्चय किया; ऍऩ्ऱुम्–सदा; इ–इस; माळा वचैयोटुम्–अचल अपयश के साथ; मीळवुम् उऱ्ऱेम्–लौट जाना भी सोचा; अऩ्ऩवै तीरुम्–उनको दूर करते हुए; वॆळि पॆऱ्ऱेम्–मार्ग पा लिया; काळ निऱत्तोटु–विष-वर्ण का; ऒप्पवर्–साम्य रखनेवाले (राक्षस); माळ–मरे, इसके निमित्त; कटल् तावुऱ्ऱु–समुद्र लाँघकर; आऴुम नलत्तीर–जाने का पौरुष रखनेवाले; ऍम् आरुयिर्–हमारे प्यारे प्राणों को; आऴुमिऩ्–सुरक्षित करो। ९७९

उन्होंने आगे कहा। हमने मरने की बात सोची थी। फिर देवी को खोजे विना हीं अचल अपयश लेकर लौट जाने का संकल्प भी किया। पर वे दोनों स्थितियाँ अब टल गयीं। कुछ अच्छा मार्ग दिखायी देने लगा है। इसलिए हममें, जिनमें काले विष के-से रंग वाले राक्षसों को मारने का मौका पैदा करने के निमित्त समुद्र लाँघकर जाने का सामर्थ्य है, वे हमारे प्राणों की रक्षा करें। ९७९

शूरियऩ् वॆऱ्ऱिक् कादल ऩोडुञ् जुडर्विऱ्कै
आरिय ऩैच्चॆऩ् ऱेदॊऴु दुऱ्ऱ दऱैहिऱ्पिऩ्
शीरिय दऩ्ऱु तेरुदल् कॊऱ्ऱच् चॆयलम्मा
वारिह डप्पार् याव ऱॆऩत्तम् वलिशॊल्वार् 980

वॆऱ्ऱि–विजयी; चूरियऩ् कातलऩोटुम्–सूर्य के प्यारे पुत्र के साथ; चुटर् विल्–उज्ज्वल धनु को; कै आरियऩै–हाथ में लिये रहनेवाले आर्य को; चॆऩ्ऱे–जाकर; तॊऴुतु–नमस्कार करके; उऱ्ऱतु–बीती बात; अऱैकिऱ्पिऩ्–कहेंगे तो; चीरियतु अऩ्ऱु–श्लाघ्य नहीं होगा; तेरुतल्–खोजना; कॊऱ्ऱ चॆयल्–विजयसूचक काम है; वारि कटप्पार्–समुद्र लाँघ सकनेवाले; यावर् ऍऩ–हममें कौन है, पूछने पर; तम् वलि–अपना-अपना बल; चॊल्वार्–बखानने लगे। ९८०

जिस कार्य को करने की आज्ञा ले आये, उसे पूरा किये विना हमारा सूर्य के प्यारे पुत्र सुग्रीव और उज्ज्वल धनु के धारक श्रीराम के पास जाना और नमस्कार करके बीती बातों को कहना श्लाघ्य नहीं होगा। सीताजी का अन्वेषण ही वीरोचित कार्य है। इसलिए हममें कौन हैं, जो इस समुद्र को लाँघ सकते हैं? इस प्रश्न पर सब अपने-अपने बल का प्रमाण देने लगे। ९८०

नीलऩ् मुदऱ्पेर् पोऱ्हॆऴु कॊऱ्ऱ ऩॆडुवीरर्
शाल वुरैत्तार् वारि हडक्कुऩ् दहविऩ्मै
वेलै कडप्पॆऩ् मीळ मिडुक्किऩ् ऱॆऩविट्टाऩ्
वालि यळिक्कुम् वीर वयप्पोर् वशैयिल्लाऩ् 981

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीलन् मुतल्–नील आदि; पेर्–बड़े; पोर् कॅळु–युद्ध-चतुर; कॉऱ्ऱम् नॅटु वीरर्–विजय पाने में श्रेष्ठ वीर; वारि कटक्कुम् तकवु–समुद्र लाँघने की शक्ति का; इन्मै–अभाव; चाल–खूब; उरैत्तार्–बोले; वालि अळिक्कुम्–वाली दत्त; वीर वयम् पोर्–वीरता और विजयशीलता के साथ युद्ध करनेवाला; वचै इल्लान्–अनिंद्य अंगद ने; वेलै कटप्पॅन्–समुद्र लाँघ जाऊँगा; मीळ–लौटने की; मिटुक्कु इन्ऱु–शक्ति नहीं; अॅन्ऱ–ऐसा; विट्टान्–पूरा किया (वचन)। ९८१

नील आदि युद्ध-समर्थ वीरों ने अपने में समुद्र-तरण की शक्ति का अभाव स्पष्ट रूप से मान लिया। वाली के पुत्र, वीरविजयी योद्धा अंगद ने कहा कि मैं समुद्र के उस पार चला जाऊँगा। पर लौट आने की शक्ति मुझमें नहीं है। ऐसा कहकर उसने अपने को छुड़ा लिया। ९८१

वेद मऩैत्तुन् देर्दर वॅट्टा वोरुमॅय्यन्
पूदल मुऱ्ऱु मोरडि वैत्तुप् पॉलिपोळ्दिन्
मादिर मॅट्टुम् जूळ्परै वैत्ते वरमेरु
मोद विळैत्ते ताळुळै वुऱ्ऱेन् विऱ्ऱुमॉय्म्बीर् 982

नालु [मुकत्तान्–चतुर्मुख के; उतवुऱ्ऱान्–दत्त पुत्र (जाम्बवान) ने; विऱल् मॉय्म्पोर्–बलवान कन्धों वाले; वेतम् अऩैत्तुम्–सारे वेद; तेर् तर–खोज देखें तब भी; अॅट्टा–अप्राप्य; ओरु मॅय्यन्–एक दिव्यशरीरी; पूतलम् मुऱ्ऱुम्–सारी भूमि को; ओर् अटि वैत्तु–एक पग में समाकर; पॉलि पोळ्तिन्–जब शोभायमान रहे, तब; मातिरम् अॅट्टुम्–आठों दिशाओं में; परै वैत्ते–ढिंढोरा पीटते हुए; चूळ् वर–घूमता गया; मेरु मोत–तब मेरु से टकराया और; इळैत्ते–थककर; ताळ् उळैवु उऱ्ऱेन्–मेरे पैरों में दर्द हुआ। ९८२

(चतुर्मुखपुत्र जाम्बवान ने कहा कि) हे शक्तिमन्त वीर! जब सारे वेदों के ज्ञान के परे रहनेवाले दिव्यशरीरी त्रिविक्रम सारी भूमि को एक चरण के अन्दर नापते हुए शोभ रहे थे तब मैं ही भूमि भर में उस बात का ढिंढोरा पीटते हुए घूमा। तब मेरु से टकराया और मेरे पैरों में दर्द हो गया। ९८२

आदलि ऩिप्पे रार्हलि कुप्पुऱ् ऱहळिऱ्जि
मीदु कडत्तित् तीयव रुट्कुम् विऩैयोडुम्
शीदै तऩैत्तेर्न् दिङ्गुडऩ् मीळुन् दिऱऩिन्ऱेन्
ऱोदि यिऱुत्ता नालु मुहत्ता ऩुदवुऱ्ऱान् 983

आतलिन्–इसलिए; इ पेर् आर् कलि–इस बड़े समुद्र को; कुप्पुऱ्ऱु–पारकर; अकळ् इऱ्चि–खाई और प्राचीरों के; मीतु कटत्ति–पार जाकर; तीयवर् उट्कुम्–क्रूर राक्षसों को भय देनेवाले; विऩैयोटुम्–कर्म के साथ; चीतै तऩै–सीताजी को; तेर्न्तु–खोज पाकर; इङ्कु उटऩ् मीळुम्–यहाँ तुरन्त लौट आने का; तिऱऩ्–बल; इऩ्ऱु–नहीं; अॅऩ्ऱु–ऐसा; ओति इऱुत्तान्–कह दिया। ९८३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इसलिए अब इस समुद्र को लाँघने, खाई और प्राचीरों को पार कर जाने और उन बुरे राक्षसों को भयभीत करते हुए साहस दिखाकर सीताजी को खोज पाकर लौट आने की शक्ति मुझमें आज नहीं है। (—कहा चतुर्मुख-सूनु ने)। ९८३

यामिऩि यिप्पो दारिडर् तुय्त्तिङ् गिऩियारैप्
पोमॅऩ वैप्पे मॅऩ्बदु पुऩ्मैप् पुहऴऩ्ऱे
कोमुदल् वर्क्के ऱाहिय कॊऱ्ऱक् कुमरानम्
नाम निऱुत्तिप् पेरिशै तैक्कु नवैयिल्लोऩ् 984

अयऩ् मैऩ्तऩ्–ब्रह्मा का पुत्र; को मुतल्वर्क्कु–वानर नायकों में; एऱाकिय–सिंह-सम; कॊऱ्ऱ कुमरा–राजकुमार; याम् इऩि इ पोतु–हम आगे अब; आर् इटर् तुय्ततु–बहुत कष्ट सहते हुए; इङ्कु–यहाँ से; इऩियारै–इच्छा करनेवालों को; पोम् ऍऩ वैप्पेम्–जाओ कह भेजें; ऍऩ्पतु–यह; पुऩ्मै पुकऴ् अऩ्ऱे–यश पर कलंक होगा न; नम् नामम् निऱुत्ति–हमारा नाम अमर करके; पेर् इचै–बड़ा यश; तैक्कुम्–दिलानेवाला; नवै इल्लोऩ्–निर्दोष। ९८४

जाम्बवान को हनुमान का स्मरण आया। उसने अंगद से कहा। वानरयूथपों में सिंह, अंगद! हम अब क्यों संकट उठा रहे हैं? जो जाने को सम्मत होंगे, उनको भेजने की बात सोच रहे हैं? यह हमारे यश पर बट्टा होगा न? हमारा नाम अमर करनेवाला, बड़ा यश दिलानेवाला निर्दोष—। ९८४

आरियऩ् मुऩ्ऩर्प् पोदुऱ वुऱ्ऱ वदऩाऩुम्
कारिय मॅण्णिच् चोर्वऱ मुऱ्ऱुङ् गडऩाऩुम्
मारुदि यॊप्पार् वेऱिलै यॅऩ्ऩा वयऩ्मैन्दऩ्
शीरियऩ् मऱ्ऱो ळाण्मै तॅरिप्पा ऩिवैशॅप्पुम् 985

आरियऩ्–श्रीराम से; मुऩ्ऩर्–पहले; पोतुऱ उऱ्ऱ–जाकर (सुग्रीव को) सखा बना दिया; अतऩाऩुम्–उस कारण; कारियम् ऍण्णि–कर्तव्य समझकर; चोर्वु अऱ–बिना किसी शैथिल्य के; मुऱ्ऱुम्–पूरा करनेवाली; कटऩाऩुम्–कर्तव्यपरता के कारण; मारुति ऒप्पार्–मारुति की समानता करनेवाला; वेऱु इलै–और कोई नहीं है; ऍऩ्ऩा–कहकर; अयऩ् मैऩ्तऩ्–ब्रह्मा के पुत्र ने; चीरियऩ्–श्रेष्ठ हनुमान का; मल् तोळ् आण्मै–मल्लयुद्ध में चतुर भुजबल; तॅरिप्पाऩ्–समझाने के लिए; इवै चॅप्पुम्–निम्नलिखित ये वचन कहने लगा। ९८५

और श्रीराम से नाता जोड़कर उस कारण और कर्तव्य को समझकर उसको पूरा करने में तत्पर रहनेवाला जो हनुमान है, उसके समान और कोई नहीं है। फिर जाम्बवान उस हनुमान से उस मल्लवीर के भजबल का वर्णन करते हुए यों बोला। ९८५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेलै विरिञ्जन् वीयिनुम् वीया मिहैनाळीर्
नूलै नयन्दु नुण्णि दुणर्न्दीर् नुवऱ्क्कीर्
कालनु मञ्जुङ् गाय्शिन मॉय्म्बीर् कडनिन्ऱीर्
आल नुहर्न्दा नॅन्न वयप्पो रडर्हिऱ्पीर् 986

मेलै विरिञ्चन्–सर्वश्रेष्ठ विरंचि; वीयिनुम्–मर जायँ तो भी; वीया–अक्षय; मिकै नाळीर–लम्बी आयु वाले हो; नूलै–शास्त्रों को; नयन्तु–चाहकर; नुण्णितु उणर्न्तीर्–सूक्ष्म रूप से जानते हो; नुवल् तक्कीर्–भाषण-समर्थ; कालनुम् अञ्चुम्–यम को भी डरानेवाले; काय् चिन–भयंकर क्रोध के साथ; मॉय्म्पीर–शक्ति रखनेवाले हो; कटन् निन्ऱीर्–कर्तव्य पर अटल रहनेवाले; आलम् नुकर्न्तानू ऍन्न–हलाहल-भोगी (शिवजी) के समान; वय पोर्–विजयी युद्ध में; अटर्किऱ्पीर्–सबका हनन कर सकनेवाले होओगे। ९८६

सर्वश्रेष्ठ देवता ब्रह्मा चाहे मिट जायँ तो भी तुम अचल, अक्षय आयु वाले हो ! शास्त्र के सूक्ष्म ज्ञान रखनेवाले; भाषणविदग्ध; यम को भी भयभीत करनेवाले क्रोधयुक्त बलवान; कर्तव्यपरायण और हलाहलभक्षक शिवजी के समान युद्ध में शत्रुसंहारक हो तुम। ९८६

वॅप्पुऱु शॅन्दी नीर्वळि यालुम् विळियादीर्
शॅप्पुऱु दॅय्वप् पल्बडै यालुञ् जिदैयादीर्
ऒप्पुऱि नॊप्पार् नुम्मल दिल्ली रॊरुहाले
कुप्पुऱि नण्डत् तप्पुऱ मेयुङ् गुदिहॊळ्वीर् 987

वॅप्पु उऱु–गरम; चॅम् ती–लाल आग से (और); नीर्–जल; वळियालुम्–और पवन से; विळियातीर्–तुम मरनेवाले नहीं; चॅप्पु उऱु–कथित; पल् तॅय्व पटैयालुम्–विविध दिव्यास्त्रों से; चितैयातीर्–तुम अभेद्य हो; ऒप्पुऱिन्–तुलना करके देखें तो; ऒप्पार्–तुम्हारे समान; नुम् अलतु–तुमको छोड़; इल्लीर्–कोई नहीं है; ऒरु काले कुप्पुऱिन्–एक ही छलाँग में; अण्टत्तु अप्पुऱमेयुम्–इस अण्ड के उस पार भी; कुति कॊळ्वीर्–जाकर कूद सकोगे। ९८७

गरम लाल अग्नि, जल और पवन से भी तुम मर नहीं सकते। प्रशंसित विविध दिव्यास्त्रों द्वारा भी तुम अभेद्य हो। उपमा ढूँढ़ने पर अपने समान तुम ही हो; और कोई तुम्हारी समानता नहीं कर सकता। एक ही छलाँग में तुम इस अण्ड के उस पार कूद सकते हो ! । ९८७

नल्लवु मॊन्ऱो तीयवु नाडि नवैतीरच्
चॊल्लवुम् वल्लीर् कारिय नीरे तुणिहिऱ्पीर्
वॅल्लवुम् वल्लीर् मीळवुम् वल्लीर् मिडलुण्डेल्
कॊल्लवुम् वल्लीर् तोळ्वलि यॅन्ऱुङ् गुऱैयादीर् 988

नल्लवम् ऒन्ऱो–अच्छे ही क्या; तीयवुम् नाटि–बुरे भी सोचकर; नवै तीर–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दोष दूरकर; चॊल्लवुम् वल्लीर्–बोलने में चतुर होओगे; कारियम् नीरे तुणिकिऱ्पीर्–कर्तव्य तुम ही निश्चय कर सकते हो; वॆल्लवुम् वल्लीर्–सफल भी होओगे; मीळवुम् वल्लीर्–(कार्य पूरा कर) लौट सकोगे; मिटल् उण्टेल्–युद्ध होगा तो; कॊल्लवुम् वल्लीर्–मार भी सकोगे; तोळ् वलि–भुजबल में; ऍन्ऱुम् कुऱैयातीर्–कभी हीन नहीं होओगे। ९८८

अच्छा, बुरा —सबकी विवेचना करके दोषहीन बातें कहने में तुम समर्थ हो। क्या करना है —यह तुम ही निश्चय करके उसको करने का सफलता पाने का और सफल होकर लौट आने का अद्भुत सामर्थ्य रखनेवाले हो। वहाँ कोई लड़ने आवे और युद्ध छिड़ जाय तो तुम उनको मार भी सकते हो। तुम्हारे भुजबल में कभी क्षीणता नहीं पड़ेगी। ९८८

मेरु किरिक्कु मीदुऱ निऱ्कुम् पॆरुमॆय्यीर्
मारि तुळिक्कुन् दारै यिडुक्कुम् वरवल्लीर्
पारै यॆडुक्कुम् नोन्मै वलत्तीर् पळियऱ्ऱीर्
शूरिय नैच्चॆन् ऱॊण्गै यहत्तुन् दॊडवल्लीर् 989

मेरु किरिक्कुम्–मेरु गिरि से भी; मीतु उऱ निऱ्कुम्–उन्नत रहनेवाले; पॆरु मॆय्यीर्–बड़े शरीर वाले; मारि तुळिक्कुम्–वर्षा से गिरनेवाली; तारै इटुक्कुम्–धार के बीच से भी; वरवल्लीर्–आ सकनेवाले हो; पारै ऍटुक्कुम्–भूमि को भी उठाने की; नोन्मै वलत्तीर्–बड़ी शक्ति रखनेवाले; पळि अऱ्ऱीर्–अनिंद्य हो; चॆन्ऱु–ऊपर जाकर; चूरियनै–सूर्यदेव को; ऒळ्–अपने उज्ज्वल; कै अकत्तुम्–हाथ से; तॊट वल्लीर्–स्पर्श कर सकते हो। ९८९

तुम्हारा शरीर मेरुपर्वत से भी बड़ा है। फिर भी बारिश की दो धारों के बीच से जा निकलने की शक्ति रखते हो! भूमि को उठाने की क्षमता तुममें है। इतना होते हुए भी अनिंद्य हो। ऊपर जाकर सूर्य को अपने उज्ज्वल हाथ से छूने की शक्ति रखनेवाले हो तुम। ९८९

अऱिन्दु तिऱत्ता ऱॆण्णि यऱत्ता ऱळियामै
मऱिन्दुरु ळप्पोर् वालियै वॆल्लु मदिवल्लीर्
पॊऱिन्दिमै यार्होन् वच्चिर बाणम् बुहमूळ्ह
ऍऱिन्दुळि यिऱ्ऱोर् पुन्मयि रेनु मिळवादीर् 990

तिऱत्तु आऱु–श्रेष्ठ मार्ग; ऍण्णि अऱिन्तु–सोच-समझकर; अऱत्तु आऱु अळियामै–धर्म-मार्ग न बिगाड़कर; वालियै–वाली को; पोर्–युद्ध में; मऱिन्तु उरुळ–औंधे गिरकर लोटने देते हुए; वॆल्लुम्–जिताने की; मति वल्लीर्–बुद्धिशक्ति से युक्त थे; इमैयार् कोन्–देवराज; वच्चिर पाणम्–वज्र-बाण; पॊऱिन्तु–आग उगलते हुए; पुक मूळ्क–शरीर में घुसकर धँस जाय ऐसा; ऍऱिन्तुळि–फेंकेगा तब भी; ओर् पुन् मयिरेनुम्–एक छोटा बाल भी; इऱ्ऱु इळवातीर्–नष्ट नहीं होगा, ऐसे बलवान हो तुम। ९९०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुमने ही श्रेष्ठ उपाय सोचकर धर्म का मार्ग बिगाड़े विना वाली को युद्ध में मरकर लोटने दिया। वह तुम्हारी ही बुद्धि-शक्ति का परिणाम था। देवराज का वज्र आग उगलते हुए आकर तुम्हारे शरीर पर घुस जाये तो भी वह तुम्हारा एक छोटा बाल भी नष्ट नहीं कर सकता —तुम ऐसे क्षमताशाली वीर हो। ९९०

पोर्मु नॅदिर्न्दान् मूवुल हेतुम् बॉरुळाहा
ओर्विल् वलङ्गॉण् डॉल्हलिल् वीरत् तुयर्दोळीर्
पारुल हॅङ्गुम् पेरिरुळ् शीक्कुम् पहलोन्मुन्
तेर्मु नडन्दे यारिय नूलुन् दॅरिवुऱ्ऱीर् 991

मू उलकेतुम्–तीनों लोक भी; पोर् मुन्–युद्ध में सामने; ॲतिर्न्ताल्–लड़ें तो; पॉरुळ् आका–कोई चीज न मानकर; ओर्वु इल्–दूसरों के लिए अगम; वलम् कॉण्टु–बल के साथ; ऑल्कल् इल्–अक्षुण्ण; वीरत्तु–साहस के साथ; उयर्–उन्नत रहनेवाले; तोळीर्–भुजाओं वाले; पार् उलकु ॲङ्कुम्–भूतलों के साथ अन्य लोकों में सर्वत्र; पेर् इरुळ्–घने अन्धकार को; चीक्कुम्–मिटानेवाले; पकलोन् मुन्–दिवाकर के सामने; तेर् मुन् नटन्ते–उसके रथ के सामने (मुख करते हुए) चलते-चलते ही; आरिय नूलुम्–संस्कृत के ग्रन्थों का भी; तॅरिवुऱ्ऱीर्–अध्ययन कर चुके हो। ९९१

तीनों लोक भी युद्ध में तुम्हारा सामना करेंगे तो भी वे कुछ चीज़ नहीं रहेंगे। तुम्हारा बल कोई जान भी नहीं सकता। बड़े बलिष्ठ और अक्षय साहसी हो! बल और साहसयुक्त कन्धों वाले! सभी लोकों के अन्धकारनाशक सूर्यदेव के सामने उनकी ओर मुख करके चलते हुए तुमने उनसे सभी संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन किया था। ९९१

नीदिय निन्ऱीर् वाय्मै यमैन्दीर् निनैवालुम्
मादर् नलम्बे णादु वळर्न्दीर् मऱैयॅल्लाम्
ओदि युणर्न्दी रूऴि हडन्दी रुलहीनुम्
आदि यन्ऱा नेयॅन यादु मऱैहिन्ऱीर् 992

नीतियिन् निन्ऱीर्–नीति पर अटल रहनेवाले; वाय्मै अमैन्तीर्–सत्यसंध; मातर् नलम्–स्त्री-सुख; निनैवालुम्–मन से भी; पेणातु–न चाहकर; वळर्न्तीर्–बड़े हुए हो; मऱै ॲल्लाम्–सारे वेदों का; ओति उणर्न्तीर्–अध्ययन करके अर्थ जानते हो; ऊऴि–युग को भी; कटन्तीर्–बिताकर रहनेवाले हो; उलकु ईतुम्–लोकसर्जक; आति अयन्–आदि ब्रह्मा; तातॅ–ये ही हैं; ॲन–ऐसा; यातुम्–सबसे; अऱैकिन्ऱीर्–कहे जाते हो। ९९२

तुम नीति पर अटल रहनेवाले हो; सत्यसंध हो। मन से भी स्त्री-सुख नहीं चाहकर बड़े हुए ब्रह्मचारी हो! वेदों को पढ़कर उनका अर्थ जान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चुके हो। तुम्हारी आयु युग से भी बड़ी है ! तुमको 'लोग ब्रह्मा ही मान लें', इतने गौरवशाली हो। ९९२

अण्णल मैन्दर् कन्बुशि ऱन्दी रदनान्
कण्णियु णर्न्दीर् करुमनु मक्के कडनॅन्नत्
तिण्णिद मैन्दीर् शॅय्दुमु डिप्पीर् शिदैयादीर्
पुण्णिय मॉन्ऱे यॅन्ऱु निलैक्कुम् पॉरुळ्हॉण्डीर् 993

अण्णल् अ मैन्तर्कु–महिमामय उन श्रीराम के प्रति; अन्पु चिऱन्तीर्–प्रेम में बढ़े हुए हो; अतनाले–उस निमित्त; करुमम्–कर्तव्य; कण्णि–सोचकर; उणर्न्तीर्–समझ गये; नुमक्के कटन् ऍन्न–अपना ही उत्तरदायित्व समझकर; तिण्णितु अमैन्तीर्–निश्चय कर लिया; चॅय्तु मुटिप्पीर्–पूरा कर चुकोगे; चितैयातीर्–अच्छेद्य हो; निलैक्कुम् पॉरुळ्–शाश्वत वस्तु; पुण्णियम् ऑन्ऱे–पुण्य ही है; ऍन्ऱु कॉण्टीर्–ऐसी धारणा बना ली है। ९९३

महिमामय श्रीराम के भक्तों में तुम सर्वश्रेष्ठ हो। उसी कारण तुमने यह कर्तव्य विचारकर अपना लिया। यह अपना उत्तरदायित्व समझकर कार्यरत हुए। तुम इसमें सफल भी हो जाओगे। तुम अच्छेद्य हो ! 'शाश्वत वस्तु पुण्य ही है' —इस तथ्य पर तुम विश्वास रखनेवाले हो। ९९३

अडङ्गवुम् वल्लीर् कालम दन्ऱे लमर्वन्दाल्
मडङ्गन् मुनिन्दा लन्न वलत्तीर् मदिनाडित्
तॉडङ्गिय दॉन्ऱो मुऱ्ऱुमु डिक्कुन् दॉळिल्वल्लीर्
इडङ्गॅड वॅव्वा यूऱुकि डैत्ता लिडैयादीर् 994

कालम् अतु अन्ऱेल्—अनुकूल काल नहीं है तो; अटङ्कवुम् वल्लीर्–सब्र करके दबे रह सकनेवाले हो; अमर् वन्ताल्–युद्ध हुआ तो; मटङ्कल् मुनिन्ताल् अन्न–मानो सिंह कुपित हो गया हो; वलत्तीर्–ऐसा बल दिखानेवाले हो; मति नाटि–बुद्धि से तर्क करके; तॉटङ्कियतु ऑन्ऱो–अकेला आरब्ध कर्म ही क्या; मुऱ्ऱुम्–उससे सम्बद्ध सभी कार्य; मुटिक्कुम्—पूरा करने के; तॉळिल् वल्लीर्–कार्य-कुशल हो; इटम् कॅट–संदर्भ बुरा हो; वॅम् वाय् ऊऱु–और भयंकर बाधा; किटैत्ताल्–आये तो भी; इटैयातीर्—पीछे हटनेवाले नहीं हो। ९९४

काल अनुकूल नहीं लगता तो तुम शान्त रहना जानते हो। युद्ध आया तो क्रुद्ध सिंह के समान बल का प्रयोग कर सकते हो। बुद्धि से सोचकर जो कार्य हाथ में लेते हो वही नहीं, उसके साथ संबद्ध सभी कार्यों को सफलतापूर्वक कर चुकने की कार्यकुशलता रखनेवाले हो। संदर्भ बिगड़ जाय और भयंकर बाधा उपस्थित हो तो तुम डरकर पिछड़नेवाले नहीं हो। ९९४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ईण्डिय कॊऱ्ऱत् तिन्दिर नॆन्बान् मुदल्यारुम्
पूण्डुन डक्कु नन्नॆऱि यानुम् पॊऱैयानुम्
पाण्डिदर् नीरे पार्त्तितिऩि दुय्क्कुम् बडिवल्लीर्
वेण्डिय पोदे वेण्डुरु वॆय्दुम् विऩैवल्लीर् 995

कॊऱ्ऱतु ईण्टिय–वीरतापूर्ण; इन्तिरन् ऍऩ्पान् मुतल्–इन्द्र आदि; यारुम्–सभी; पूण्टु नटक्कुम्–जिस मार्ग को अपनाकर चलते हैं; नल् नॆऱियानुम्–ऐसे अच्छे आचरण से; पॊऱैयानुम्–क्षमा से; पाण्टितर् नीरे–पण्डित तुम ही हो; पार्त्तु–खूब सोचकर; इऩितु उय्क्कुम्पटि–अच्छे प्रकार से (कार्य) करने में; वल्लीर्–चतुर हो; वेण्टिय पोते–इच्छा करते ही; वेण्टु उरु ऍय्तुम्–मनचाहा रूप लेने के; विऩै वल्लीर्–कार्य में भी कुशल हो। ९९५

बलसमृद्ध देवेन्द्र आदि जिस मार्ग को महत्त्व देते हैं, उसी मार्ग पर चलने और क्षमता रखने से तुम पंडित हो ! तर्क-वितर्क करके किसी भी काम को योग्य रीति से चलाने में तुम दक्ष हो। जब चाहो तभी मन-माना रूप लेने के कार्य में तुम बड़े कुशल हो। ९९५

एहुमि नॆहि यॆम्मुयिर् नल्ही रिशैकॊळ्ळीर्
ओहै कॊणर्न्दॆ मन्नैयु मिऩ्नर् कुऱैयिल्लाच्
चाहर मुऱ्ऱुन् दाविडुम् नीरिक् कडऱावुम्
वेहम मैन्दी रॆन्ऱुवि रिञ्जन् महऩ्विट्टान् 996

नीर्–तुम; ई–इस; कटल् तावुम्–समुद्र लाँघने की; वेकम् अमैन्तीर्–गमनगति से युक्त हो; एकुमिऩ्–तुम जाओ; ओकै कॊणर्न्तु–खुशखबरी लाकर; ऍम् उयिर्–हमारे प्राण; नल्कीर्–रक्षित करके; इचै कॊळ्ळीर्–यश अर्जित कर लो; ऍम् अऩ्तैयुम्–हमारी जननी (सीतादेवी) भी; कुऱैवु इल्ला–अक्षय; इऩ्तल् चाकरम्–दुःख-सागर; मुऱ्ऱुम्–पूरा लाँघ सकेंगी; ऍऩ्ऱु–कहकर; विरिञ्चऩ् मकऩ्–ब्रह्मा के पुत्र ने; विट्टाऩ्–अपनी बात समाप्त की। ९९६

तुम्हारे पास समुद्र-तरण की गमन-शक्ति है। तुम ही जाओ और सन्तोष-समाचार लाओ। हमारी जान बचाओ और यशस्वी बनो। हमारी जगज्जननी जानकी भी दुःख-सागर-तरण कर लेंगी। जाम्बवान ने अपनी बात यह कहकर समाप्त कीं। ९९६

चाम्बऩि यम्बत् ताळ्वद नत्ता मरैनाप्पण्
आम्बल्वि रिन्दा लऩ्ऩ शिरिप्पा ऩऱिवाळऩ्
कूम्बलॊ डुञ्जेर् कैक्कम लत्तऩ् कुलमॆल्लाम्
एम्बल्व रत्तऩ् शिन्दै तॆरिप्पा ऩिवैशॊऩ्ऩाऩ् 997

चाम्पऩ् इयम्प–जाम्बवान के कहने पर; अऱिवाळऩ्–बुद्धिमान-हनुमान; ताळ् वतऩम् तामरै–उतरे हुए चेहरे रूपी कमल; नाप्पण–के मध्य; आम्पल् विरिन्ताल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्नत-कुमुद विकसित हुआ जैसे; चिरिप्पान्-मन्दहास करते हुए; कूम्पलोटुम् चेर्-जोड़कर बन्द किये हुए; कै कमलत्तन्-हस्त-कमल; कुलम् ऍल्लाम्-सारे समूह के; एम्पल् वर-(वानरों को) आनन्द देते हुए; तन् चिन्तै-अपने मन की बात; तॆरिप्पान्-प्रकट करने हेतु; इवै चॊन्नान्-ये (निम्न) वचन कहे। ९९७

जाम्बवान की बात सुनकर बुद्धिमान हनुमान के उतरे हुए रहे कमल-मुख में कुमुद-सा एक मन्दहास छिटका। अपने दोनों हाथों को बन्द कमल के समान जोड़कर उसने अपने वानरकुल के सभी के मन में आनन्द भरते हुए निम्नोक्त बातें कहीं। ९९७

नीयिरे निनैयिन् मुन्ने नॆडुन्दिरैप् परवै येऴुम्
तायुल हनैत्तुम् वॆन्ऱु तैयलैत् तरुदऱ् कॊत्तीर्
पोयिदु पुरिदि यॆन्ऱु पुलमैतीर् पुन्मै काण्डऱ्
केयिनि रॆन्नि नॆन्निऱ् पिऱन्दवर् याव रिन्नुम् 998

नीयिरे निनैयिन्-आप स्वयं सोचें तो; मुन्ने-पहले ही; नॆटुम् तिरै-उत्तुंग तरंगों वाले; परवै एऴुम्-सातों समुद्रों को; ताय्-लाँघकर; उलकु अनैत्तुम् वॆन्ऱु-सभी लोकों को जीतकर; तैयलै-सीतादेवी को; तरुतऱ्कु-ले आने; ऒत्तिर्-योग्य हैं; पोय्-तुम जाओ; इतु पुरिति ऍन्ऱु-यह काम करो, कहकर; पुलमै तीर् पुन्मै-अपनी बुद्धिहीन जड़ता को; काण्टऱ्कु-देख-समझने को; एयिनिर्-(मुझे) प्रेरित किया, आपने; ऍन्निन्-तो; ऍन्निल्-मुझसे बढ़कर; पिऱन्तवर्-सफल-जन्म; इन्नुम् यावर्-और कौन हैं। ९९८

हे जाम्बवान! आप मन करते तो आप स्वयं पहले ही उत्तुंग तरंगोद्वेलित सातों सागरों का तरण करते, सारे लोकों को हरा देते और देवी को ला देते। आपमें इतनी सामर्थ्य है। लेकिन आपने मुझसे आज्ञा दी कि तुम जाओ और यह काम करो, ताकि मैं अपनी बुद्धि-हीनता को जान लूँ! तो मुझसे बढ़कर सफल-जन्म कौन होगा? । ९९८

मुऱ्ऱुनी रुलह मुऱ्ऱुम् विऴुङ्गुवान् मुऴङ्गि मुन्नीर्
उऱ्ऱदे यॆनिनु मण्ड मुडैन्दुपो युयर्न्द देनुम्
इऱ्ऱैनुम् मरुळु मॆङ्गो नेवलु मिरण्डु पालुम्
कऱ्ऱैवार् शिऱैह ळाहक् कलुऴनिऱ् कडप्पल् काण्डिर् 999

नीर् मुऱ्ऱुम्-जलवलयित; उलकम् मुऱ्ऱुम्-संसार भर को; विऴुङ्कुवान्-निगलने के लिए; मुऴङ्कि-गर्जन करते हुए; मुन्नीर् उऱ्ऱते-समुद्र उमग आये; ऍनिनुम्-तो भी; अण्टम्-अण्ड; उटैन्तु पोय्-टूटकर; उयर्न्ततेनुम्-आकाश ऊँचा हो जायगा तो भी; इऱ्ऱै-अब; नुम् अरुळुम्-आपकी कृपा और; ऍम् कोन्-हमारे नाथ श्रीराम की; एवलुम्-आज्ञा; इरण्टु पालुम्-दोनों बाजुओं में; कऱ्ऱै वार् चिऱैकळ् आक-संकुलित और लम्बे पंख बनाकर; कलुऴनिल्-गरुड़ के समान; कटप्पल्-तरण करूँगा; काण्टिर्-देखो। ९९९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अब जल-घिरे भूतल भर को लीलने के लिए (त्रि-विध जल का) समुद्र ही क्यों न उमड़ आए, या अण्ड ही फूटे और आकाश ऊपर उड़ जाए, तो भी आपके आशीर्वाद और हमारे प्रभु की आज्ञा दोनों को दो बाजुओं के पक्ष बनाकर मैं गरुड़ के समान इस सागर को लाँघ लूँगा। देखो। ९९९

ईण्डिनि दुऱैमिन् याने यॅऱिहड लिलङ्गै यॅय्दि
मीण्डिवण् वरुदल् काऱुम् विडैदम्मिन् विरैवि नॅन्ना
आण्डव रुवन्दु वाळ्त्त वलर्मळै यमरर् तूवच्
चेण्डॉडर् शिमयत् तॅय्व मयेन्दिरत् तुम्बर्च् चॅन्ऱान् 1000

याने–मैं ही; ऍऱि कटल्–तरंगाकुल समुद्र के मध्य रहनेवाली; इलङ्कै–लंका में; ऍय्ति–जाकर; मीण्टु इवण् वरुतल्–लौट यहाँ आऊँ; काऱुम्—तब तक; ईण्टु–यहाँ; इनितु—सुख से; उऱैमिन्–ठहरो; विरैविन्–शीघ्र; विटै तम्मिन्–विदा दो; ऍन्ना–कहने पर; आण्टु–तब; अवर्–उन वीरों के; उवन्तु वाळ्त्त–संतोष के साथ बधाई देते; अमरर्–देवों के; अलर् मळै–पुष्प-वर्षा; तूव–गिराते; चेण् तॉटर्–आकाशव्यापी; चिमय—शिखरों-सह; तॅय्व–दिव्य; मयेन्तिरत्तु–महेन्द्र के; उम्पर्–ऊपरी भाग पर; चॅन्ऱान्–गया। १०००

मेरे अकेले ही उठती तरंगों वाले समुद्र-मध्य-स्थित इस लंका में जाकर लौट आते तक तुम लोग निश्चिन्त होकर यहीं रहो। शीघ्र बिदा दो। —हनुमान ने यों कहा। तब उन वानर वीरों ने आनन्द के साथ बधाई दी। देवों ने फूल बरसाये। हनुमान गगनचुंबी शिखरों वाले उस महेन्द्रपर्वत पर चढ़ चला। १०००

पॉरुवरु वेलै तावुम् पुन्दियान् पुवत्तन् दाय
पॅरुवडि वुयर्न्द मायोन् मेक्कुऱप् पॅयर्न्द ताळ्पोल्
उरुवऱि वडिवि नुम्ब रोङ्गिन नुवमै यालुम्
तिरुवडि यॅन्नुन् दन्मै यावर्क्कुन् दॅरिय निन्ऱान् 1001

वेलै तावुम्–समुद्र-तरण में लगा हुआ; पॉरुवु अरु—अप्रतिम; पुन्तियान्—बुद्धिमान; पुवत्तम् ताय–भूमि को जिन्होंने नापा; पॅरुवटिवु उयर्न्त–बहुत बड़े आकार में वर्द्धित; मायोन्–उन मायावी श्रीविष्णु के; मेक्कु उऱ–ऊपर जाकर; पॅयर्न्त–व्याप्त; ताळ् पोल्–श्रीचरण के समान; उरुवु अऱि–सबके लिए दृश्य; वटिविन्–रूप में; उम्पर्–आकाश में; ओङ्कितन्–ऊँचा बढ़ा; तिरुवटि ऍन्नुम् तन्मै–'श्रीचरण' का युक्तत्व; उवमैयालुम्–उपमा के रूप में भी; यावर्क्कुम् तॅरिय—सबके दृष्टिगोचर होते हुए; निन्ऱान्–खड़ा रहा। १००१

तब समुद्र-तरण में प्रवृत्त बुद्धिमान हनुमान त्रिभुवन-मापक त्रिविक्रम-देव के श्रीचरण के समान लगा, जो आकाश में जाकर व्याप्त हुआ था। उसको विष्णुभक्त 'छोटे विष्णुपाद' (शिऱिय तिरुवडि) के नाम से आदर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करते हैं। वह "तिरुवडि (श्रीचरण)" नाम अब उपमा के रूप में भी सार्थक हुआ। उस स्थिति में वह ऐसा खड़ा रहा कि सब उसको देख सकें। १००१

पार्निऴल् परप्पुम् पॊऱ्ऱेर् वॆयिऱ्कदिर्प् परिदि मैन्दन्
पोर्निऴल् परप्प मेलोर् पुहऴॆन वुलहम् बुक्कुत्
तार्निऴल् परप्पुन् दोळान् ऱडङ्गड ऱावा मुन्नम्
नीर्निऴ लुवरि तावि यिलङ्गैमेऱ् चॆल्ल निन्ऱान् 1002

मेलोर् पुकऴ् अॆन्न–उत्तम लोगों के यश के समान; तार् निऴल्–हारों का प्रकाश; परप्पुम् तोळान्–छिटकानेवाली भुजाओं वाला; उलकम् पुक्कु—राक्षस-नगर में घुसकर; निऴल्–अपने प्रकाश को; पार् परप्पुम्–भूमि पर फैलानेवाले; पॊन् तेर्–स्वर्ण-रथ का; वॆयिल् कतिर्–और गरम धूप का स्वामी; परिति–सूर्य, उसके कुल के; मैन्तन्–पुत्र श्रीराम के; पोर् निऴल् परप्प–युद्ध का साहस फैलाने के लिए; तट कटल् तावा मुन्नम्–विशाल सागर को लाँघने से पूर्व; नीर् निऴल्–जल में उसकी छाया; उवरि तावि—समुद्र पार करके; इलङ्कै मेल् चॆल्ल–लंका पर गयी, ऐसा; निन्ऱान्–खड़ा रहा। १००२

श्रेष्ठ लोगों के यश के समान वह बहुत बड़ा, उत्कृष्ट और उन्नत था। उसके कन्धों से मणियों के हार की कांति छूट रही थी। वह लंका में प्रवेश करके, भूलोक में अपना प्रकाश फैलानेवाले सूर्यदेव के वंशज श्रीराम की युद्ध-वीरता की धूम मचाने हेतु उठनेवाला था। उसके काले सागर के तरण के पूर्व ही उसकी छाया नमक-समुद्र को पार कर लंका नगर पर जा रही। ऐसा खड़ा था वह। १००२

पहुवाय मडङ्गल् वॆहुम् पडर्वरै मुऴुदु मूऴ्ह
उहुवाय विडङ्गॊ णाहत् तॊत्तवाल् शुऱ्ऱि यूऴिन्
नॆहुवाय शिहर कोडि नॆरिवन्न तॆरिय निन्ऱान्
महवामै मुदुहिऱ् ऱोन्ऱु मन्दर मॆन्नलु मान्नान् 1003

पकु वाय–खुले मुख के; मटङ्कल् वॆकुम्–सिंह जहाँ रहते थे; पटर् वरै–वह विशाल पर्वत; मुऴुतुम्–पूर्ण रूप से; मूऴ्क–धँस गया; ऊऴिन्–क्रम से; नॆकुवाय–टूटे हुए; चिकर कोटि–अनेक शिखर; नॆरिवन्न–चूर हुए; विटम् उकुवाय—विष निकालनेवाले मुखों के; कॊळ् नाकत्तु–प्राणहर सर्प; ऒत्त वाल्–के समान अपनी पूँछ को; चुऱ्ऱि–अपने शरीर पर लपेटकर; तॆरिय निन्ऱान्–सब देख सकें, इस रीति से खड़ा रहा; मक आमै मुतुकिल्—(तब) वह श्रीविष्णु के अवतार कच्छप की पीठ पर; तोन्ऱुम्—जो खड़ा रहा उस; मन्तरम् अॆन्नलुम्–मन्दरपर्वत जैसा भी; आन्नान्–बना रहा। १००३

वह विशाल महेन्द्रपर्वत मुख-खोले अनेक सिंहों के साथ नीचे पूर्ण रूप से धँस गया। उसके शिखर सभी एक-एक करके फूटे और चूर-चूर हो गये। इस तरह हनुमान विषैले घातक सर्प के समान अपने लांगूल को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अपने शरीर पर लपेटे उस पर्वत पर सबके सामने ऐसा खड़ा रहा, मानो श्रीविष्णु के अवतार कच्छप पर स्थित मन्दर पर्वत हो। १००३

मिऩ्ऩॆडुङ् गॊण्ड ऱाळिऩ् वीक्किय कळलि ऩार्प्पत्
तऩ्ऩॆडुऩ् दोऱ्ऱम् वाऩोर् कट्पुलत् तॆल्लै ताव
वऩ्ऩॆडुञ् जिहर कोडि मयेन्दिर मण्डम् ताङ्गुम्
पॊऩ्ऩॆडुऩ् दूणिऩ् पाद शिलैयॆऩप् पॊलिय निऩ्ऱाऩ् 1004

मिऩ् नॆटुम् कॊण्टल्–बिजली-सहित बड़ा मेघ; ताळिऩ् वीक्किय–अपने पैरों में बद्ध; कळलिऩ्–पायल के समान; आर्प्प–स्वरित होते; तऩ् नॆटुम् तोऱ्ऱम्–अपने बड़े आकार के; वाऩोर् कण् पुलत्तु–देवों की दृष्टि-पथ के; ताव–पार जाते; वल् नॆटुम्–कठोर और बड़े; चिकर कोटि—अनेक शिखरों-सहित; मयेन्तिरम्–महेन्द्र पर्वत; पात चिलै ॲऩ–पादप्रदेश के समान; पॊलिय–प्रकाशमान दिखा; अण्टम् ताङ्कुम्–इस अण्डगोल को धारण करनेवाले; पॊऩ् नॆटुम् तूणिऩ्–स्वर्ण के ऊँचे खम्भे के समान; निऩ्ऱाऩ्–खड़ा रहा। १००४

विद्युत्सहित मेघ उनके चरणों में बद्ध चरणवलय के समान नाद कर रहे थे। उनका बड़ा रूप देवों के दृष्टिपथ के भी आगे दिख रहा था। शिखर-युत महेन्द्रपर्वत उसके चरणतल के समान लग रहा था। इस रीति से हनुमान अण्डगोल का वहन करते रहनेवाले स्वर्णस्तम्भ के समान खड़ा रहा। १००४

॥ किष्किन्धाकाण्ड समाप्त ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

सुन्दरकाण्डम्

1. कडल् तावु पडलम् (समुद्र-तरण पटल)

कडवुळ् वाळ्त्तु (ईश्वर-स्तुति)

❀ अलङ्गलिऱ् ऱोन्ऱुम् बॊय्म्मै यरवॆऩप् पूद मैन्दुम्
विलङ्गिय विहारप् पाट्टिऩ् वेऱुपा डुऱ्ऱ वीक्कम्
कलङ्गुव दॆवरैक् कण्डा लवरॆऩ्ब कैवि लेन्दि
इलङ्गैयिऱ् पॊरुदा रन्ऱे मऱैहळुक् किऱुदि यावार् 1

अलङ्कलिल्–माला पर; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; पॊय्म्मै अरवु–मिथ्या सर्प; ऍऩ–के समान; पूतम् ऐन्तुम्–पाँचों भूतों के; विलङ्किय–बने; विकारप्पाट्टिऩ्–परिवर्तन के; वेऱु पाटु उऱ्ऱ–बदले हुए; वीक्कम्–बहुत्व (के रूप); ऍवरै कण्टाल्–जिनके दर्शन से; कलङ्कुवतु–दूर होता है; अवर्–वे ही; मऱैकळुक्कु–वेदों के; इऱुति आवार्–अन्त (उपनिषद्-प्रतिपाद्य) विषय हैं; अन्ऱे–उन्होंने ही न; कै विल् एन्ति–हाथ में धनु लेकर; इलङ्कैयिल् पॊरुतार्–लंका में युद्ध भी किया; ऍऩ्प–ऐसा (तत्त्वदर्शी लोग) कहते हैं। १

माला पर सर्प का विपरीत ज्ञान जैसा होता हो वैसे पाँचों भूतों के परिवर्तन और मिश्रण पर बने इस प्रपञ्च का निराकरण किनके दर्शन के फलस्वरूप होगा ? वे ही वेदान्त (उपनिषद्)-प्रतिपादित परब्रह्म हैं और उन्होंने हाथ में धनुष लेकर लंका में युद्ध किया था। यही तत्त्वविदों का कहना है। १

नूल् (ग्रन्थ)

आण्डहै याण्ड वाऩोर् तुऱक्कना डरुहिऱ् कण्डाऩ्
ईण्डदु ताऩ्गॊल् वेलै यिलङ्गैयॆऩ् ऱैय मॆय्दा
वेण्डरुम् विण्णा डॆऩ्ऩुम् मॆय्म्मैहण् डुळ्ळ मीट्टाऩ्
काण्डहुङ् गॊळ्है युम्ब रिल्लॆऩक् करुत्तुट् कॊण्डाऩ् 2

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ (हनुमान) ने; आण्टु–वहाँ; वानोर् तुऱक्क नाटु–देवताओं का स्वर्गलोक; अरुकिल् कण्टान्–अपने पास में देखा; ईण्टतु तान् कॊल्–यहीं का तो क्या; वेलै इलङ्कै–समुद्रवलयित लंका नगर; ऍन्ऱु–ऐसा; ऐयम्–ऍय्ता–संशय करके; वेण्टु अरुम्–(फिर) जिसको देखने की आवश्यकता नहीं; विण्णॊटु–व्योमलोक; ऍन्ऱुम् मॆय्म्मै कण्टु–है, यह सत्य जानकर; उळ्ळम् मीट्टान्–अपने मन को फिरा लिया; काण् तकुम् कॊळ्कै–देखने का कार्य; उम्पर् इल्–आकाशलोक में नहीं; ऍन्ऱ–ऐसा; करुत्तु उट् कॊण्टान्–विचार मन में कर लिया। २

पुरुषश्रेष्ठ हनुमान ने वहाँ (जब वह अपने बड़े रूप में खड़ा रहा) पास में देवलोक को देखा। एक पल उसे भ्रम हुआ कि क्या यही समुद्र-वलयित लंका नगरी है। फिर उसे ज्ञात हो गया कि यह व्योमलोक है, जहाँ जाना आवश्यक नहीं है। यह सत्य जान लेने पर उसने अपने विचार को बदल लिया। उसने विचारा कि 'मेरा खोजने का कार्य स्वर्ग में नहीं है'। २

कण्डन निलङ्गै मूदूर्क् कडिपॊऴिऱ् कनह नाञ्जिल्
मण्डल मदिलुङ् गॊऱ्ऱ वायिलु मणियिऱ् चॆय्द
वॆण्डळक् कळब माड वीदियुम् बिऱवु मॆल्लाम्
अण्डमुन् दिशैह ळॆट्टु मदिरत्तोळ् कॊट्टि यार्त्तान् 3

इलङ्कै मूदूर्–लंका के प्राचीन नगर के; कटि पॊऴिल्–रक्षक उद्यान; कनक नाञ्चिल्–स्वर्णमय प्राचीरों के भाग; मण्टल मतिलुम्–और गोल परकोटे; कॊऱ्ऱम् वायिलुम्–विजयद्वार; मणियिऱ् चॆय्द–मणि-जड़ित; वॆण् तळ कळप–श्वेत चूना-लेप लगे हुए; माट वीतियुम्–सौधों की वीथियों; पिऱवुम् ऍल्लाम्–और अन्य सभी को; कण्टनन्–देखकर; अण्टमुम्–अण्डों और; तिचैकळ् ऍट्टुम्–आठों दिशाओं को; अतिर–कँपाते हुए; तोळ् कॊट्टि–भुजा ठोंककर; आर्त्तान्–नर्दन किया। ३

उसने पर्वत पर से देखा तो उसे प्राचीन लंका नगर के रक्षक उद्यान, स्वर्ण-प्राचीरों के विशिष्ट भाग, गोलाकार प्राचीर, विजयद्वार, श्वेत चूने की मणिमय दीवारों के बने सौधों वाली वीथियाँ और अन्य विषय भी दिखायी दिये। तब उसने आनन्द और उत्साह के साथ अपने कन्धे ठोकते हुए गर्जन किया, जिससे आठों दिशाएँ और अण्डगोल थर्रा उठे। ३

वन्ऱन्द वरिहॊ णाहम् वयङ्गळ् लुमिऴुम् वाय
पॊन्ऱन्द मुऴैह डोऱुम् पुऱत्तुरायप् पुरण्डु पोन्द
निन्ऱन्द मिल्ला नूनूऱ नॆरिन्दुकी ळ्ळुन्दि नीलक्
कुन्ऱन्दन् वयिऱु कीऱिप् पिदुङ्गिन कुडर्हण् मान 4

अन्तम् इल्लान्–चिरंजीव के; निन्ऱु ऊनूऱ–खड़े होकर पैर दबाने से; नील कुन्ऱम्–नीला पर्वत; नॆरिन्तु–टूटकर; कीऴ् अऴुन्ति–नीचे धँसकर; तन् वयिऱु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कीऱि–अपने पेट के चिरने से; पितुङ्कित्त कुटर्कळ् मात्त–बाहर निकली आँतों के समान; पॊन् तन्त–स्वर्णदायी; मुळैकळ् तोऱुम्–सभी गुहाओं से; वत् तन्त–कठोर दाँतों के; वरि कॊळ्–धारीदार; नाकम्–सर्प; वयङ्कु अळल्–जलती (विष की) आग; उमिळुम् वाय–उगलते मुख के साथ; पुऱत्तु–बाहर; उराय्–मलते हुए; पुरण्टु–लोटते हुए; पोन्त–आये । ४

चिरजीव हनुमान ने पर्वत को अपने पैर से दबाया और उससे नीले रंग का वह पर्वत नीचे धँसा । तब उसकी स्वर्णमय कन्दराओं से कठोर दाँतों वाले और धारीदार चमड़े वाले सर्प अपने मुखों से जलता विष निकालते हुए लोटते और टकराते हुए बाहर आये । वे उस पर्वत की आँतों के समान लगे, जो पर्वत के दबने से बाहर निकल रही हों । ४

पुहलरु मुळैयुट् टुञ्जुम् पॊङ्गुळैच् चीयम् बॊङ्गि
उहलरुङ् गुरुदि कक्कि युळ्ळुऱ नॆरिन्द वूऴिन्
अहलरुम् बरवै नाण वरर्ऱुऱु कुरल वाहिप्
पहलॊळि करप्प वाऩै मऱैत्तऩ पऱवै यॆल्लाम् 5

पुकल् अरुम्–प्रवेश-निरोधक; मुळैयुळ्–गुफाओं में; तुञ्चुम्–सुप्त; पॊङ्कु उळै–छिटके हुए अयाल वाले; चीयम्–सिंह; पॊङ्कि–उठकर; उकल् अरुम्–जिसको कभी उसने निकाला नहीं था; कुरुति कक्कि–रक्त वमन करते हुए; उळ्–अन्दर; उऱ नॆरिन्त–खूब दब गये; पऱवै ऎल्लाम्–सभी पक्षी; ऊऴिन्–युगान्त में; अकल्–विस्तृत; अरुम्–दुस्तर; परवै नाण–समुद्र को लजाते हुए; अरर्ऱुऱु कुरल–चिल्लाते कण्ठ के; आकि–बनकर; पकल् ऒळि करप्प–सूर्य का प्रकाश छिप जाए, ऐसा; वाऩै–आकाश को; मऱैत्तऩ–ढकते हुए छा गये । ५

उस पर्वत में कन्दराएँ थीं, जो दुर्गम थीं । उनमें सिंह सो रहे थे । अब वे सिंह अपने अयालों को उछालते हुए क्रोध और डर से उठे और रक्त बहाते हुए अन्दर ही दब गये और उनके शरीर से रक्त निकल आया, जो कभी बाहर दिख ही नहीं सका था । उस पर जो पक्षी थे, वे युगान्त-कालीन विशाल समुद्र के गर्जन के समान आर्तनाद उठाते हुए ऊपर उड़े और सूर्य का प्रकाश और आकाश छिप गये । ५

मॊय्युऱु शॆविह डाळ्न्दु मुदुहुऱ मुऱैका ऱळ्ळ
मैयुऱु विशुम्बि नूडु निमिर्न्दवात् मदिय मञ्ज
मॆय्युऱत् तळीइय मॆल्लॆऩ् पिडियॊडुम् वॆरुव लोडुम्
कैयुऱ मरङ्गळ् शुऱ्ऱिप् पिळिऱित्त कळिनल् याऩै 6

कळि नल् याऩै–मत्त और उत्तम गज; मॊय् उऱु–सबल; चॆविकळ्–कर्ण; ताळ्न्तु–झुककर; मुतुकु उऱ–पीठ से लगे रहें ऐसा; मुऱै काल् तळ्ळ–क्रम से पैर न रख सककर लड़खड़ाते; मै उऱु विचुम्पिन् ऊटु–मेघ-भरे आकाश में; निमिर्न्त वाल्–उठायी हुई दुम के कारण; मतियम् अञ्च–चन्द्र डर गया; मॆय् उऱ तळुविय–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शरीर पर लिपटी हुई; मॅल्लॅत् पिटियॊटुम्–कोमल हथिनियों-सहित और; वॅरुवलोटुम्–भय के साथ; मरङ्कळ् कै उऱ चुऱ्ऱि–पेड़ों को सूँड़ों से पकड़ते हुए; पिळिऱित्त–चिंघाड़ते रहे। ६

उसमें मत्तगज थे। वे डर से चलने लगे। उनके कान पीठ पर लगाये हुए थे। उनके पैर डगमगाये। उनकी दुम ऊपर को आकाश में उठी हुई थी, जिसको देखकर चन्द्र भी डर गया। उनको कोमल हथिनियाँ लपेटे हुए थीं। वे हाथी तरुओं को अपनी सूँड़ों से लपेटकर चिंघाड़े। ६

पॊन्पिऱळ् शिमैयक् कोडु पॊडियुऱप् पॊऱियुञ् जिन्द
मिन्पिऱळ् कुडुमिक् कुन्ऱम् वॅरिनुऱ नॅरियुम् वेलै
पुन्पुऱ मयिरुम् पूवाक् कट्पुलम् पुऱत्तु नाऱा
वन्पऱळ् वायिऱ् कौवि वल्लिय मिरिन्द मादो 7

पॊन् पिऱळ्–स्वर्णमय; चिमयम् कोटु–शिखर-चोटी; पॊटि उऱ–चूर हुई और; पॊऱियुम् चिन्त–अंगारे निकले; मिन् पिऱळ्–विद्युत्-सम चमकते; कुटुमि कुन्ऱम्–शिखर वाले पर्वत की; वॅरिन्–पीठ; उऱ नॅरियुम् वेलै–जब खूब दलकी तब; वल्लियम्–बाघ; पुऱम्–बाहर; पुन् मयिरुम्–छोटे बाल; पूवा–(जिनके) नहीं उगे थे; कण्–(जिनकी) आँखों की; पुलम्–इन्द्रिय; पुऱत्तु नाऱा–बाहर नहीं दिखती थी; वन् पऱळ्–(ऐसे अपने) बलिष्ठ शावकों को; वायिल् कौवि–अपने मुख में पकड़े हुए; इरिन्त–तितर-बितर भागे। ७

उसके स्वर्णमय शिखर चूर हुए और उनसे अंगारे निकलकर छिटके। विद्युत्-सी कान्ति वाले शिखर के उस पर्वत की पीठ खूब दलक गयी। तब बाघ उन शावकों को अपने मुख में पकड़कर ले भागे, जिनके शरीर के बाल उग नहीं आये थे और जिनकी आँखों की इन्द्रिय भी बाहर दिखती नहीं थी। ७

तेक्कुऱु शिहरक् कुन्ऱन् दिरिन्दुमॅय्न् नॅरिन्दु शिन्दत्
तूक्कुऱु तोलर् वाळर् तुरुदत्ति नॅळुन्द तोऱ्ऱम्
ताक्कुऱु शॅरुवि नेर्न्दार् ताळऱ वीशत् तावि
मेक्कुऱ विशैत्ता रॅन्नप् पॊलिन्दनर् विञ्जै वेन्दर् 8

तेक्कु उऱु–सागौन के पेड़ों से पूर्ण; चिकरम् कुन्ऱम्–शिखर-सह पर्वत के; तिरिन्तु मॅय् नॅरिन्तु–विकृत होकर टूटकर; चिन्त–गिरते; विञ्चै वेन्तर्–विद्याधर राजा; तूक्कुऱु–ऊपर उठाकर पकड़ी हुई; तोलर्–ढाल वाले; वाळर्–और तलवारधारी; तुरुतत्तिन्–त्वरितता से; ॲळुन्त तोऱ्ऱम्–जो उठे वह दृश्य; ताक्कु उऱु–टकरानेवाले; चॅरुविल् नेर्न्तार्–युद्ध में सामना करने आये हुओं के; ताळ् अऱ–प्रयत्नों को निष्फल करते हुए; वीच–तलवार चलाने के लिए; मेक्कु उऱ–ऊपर उछलते हुए; तावि विचैत्तार्–लपककर चले; ॲन्त–ऐसा; पॊलिन्ततर्–लगे। ८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वह महेन्द्रपर्वत, जिस पर सागौन के वृक्ष थे, विकृत होकर फट गया। तब विद्याधर राजा लोग तलवारों और ढालों को ऊपर उछालते हुए त्वरित-गति से उठे। वह दृश्य ऐसा लगा मानो वे युद्ध में लड़ने आये हुए शत्रुओं के प्रयासों को विफल बनाने के विचार से ऊपर उठते हुए लपककर जा रहे हों। ८

तारहै शुडर्हण् मेह मॅन्ऱिवै तविरत् ताळ्न्दु
पारिडै यळुन्दु हिन्ऱ पडर्नॅडुम् बऩिमाक् कुन्ऱम्
कूरुहिर्क् कुववुत् तोळान् कूम्बॅऩक् कुमिळि पॉङ्ग
आर्हलि यळुवत् ताळुङ् गलमॅऩ लायिऱ् ऱन्ऱे 9

तारकै–नक्षत्रमण्डल; चुटर्कळ्–सूर्य-चन्द्र-मण्डल; मेकम्–मेघमण्डल; ऍन्ऱ इवै–आदि इनको; तविर–छोड़कर; ताळ्न्तु–नीचे जाकर; पार् इटै–भूमि में; अळुन्तुकिन्ऱ–धँसनेवाला; नॅटुम् पटर्–लम्बा-चौड़ा; पऩि मा कुन्ऱम्–हिमाच्छादित महेन्द्रपर्वत; कूर् उकिर्–तीक्ष्ण नखों और; कुववु तोळान्–पुष्ट कन्धों वाला हनुमान; कूम्पु ऍऩ–मस्तूल हो ऐसा; आर् कलि अळुवत्तु–समुद्र में गहरे स्थान में; कुमिळि पॉङ्क–बुल्लों को उठाते हुए; आळुम् कलम्–डूबनेवाला पोत; ऍऩल् आयिऱु–हो, ऐसा बना। ९

वह पर्वत नक्षत्रमण्डल, सूर्यमण्डल, चन्द्रमण्डल और मेघमण्डल के निकट तक चला गया था। अब वह उस स्थान को छोड़कर नीचे जाने लगा। तब वह अतिविस्तृत शीतल पर्वत एक पोत के समान लगा, जो बुलबुलों को ऊपर निकालते हुए समुद्र की गहराई में डूब रहा हो; और हनुमान उस मग्नशील पोत के मस्तूल के समान लगा। ९

तादुहु नऱुमॅऩ् शान्दङ् गुङ्गुमङ् गुलिहन् दण्णॅऩ्
पोदुहु पॉलन्दा दॅऩ्ऱित् तॉडक्कत्त यावुम् पूशि
मीदुऱु शुऩैनी राडि यऱुविपो लॅहिऩम् वीळ्व
ओदिय कुन्ऱङ् गीऱिक् कुरुदिनीर् शॉरिव दॉत्त 10

तातु उकु–चूर्ण के रूप में गिरे; नऱु–सुबासित; मॅऩ् चान्तम्–मृदु चन्दन; कुङ्कुमम्–केसर; कुलिकम्–इंगुर; तण् ऍऩ् पोतु–शीतल पुष्पों के; उकु–गिराये; पॉलम् तातु–स्वर्णवर्ण मकरन्द; ऍऩ्ऱु इ तॉटक्कत्त यावुम्–आदि सभी; पूचि–मलते हुए; मीतु उऱु–ऊपर रहनेवाले; चुऩै नीर्–झरने के जल में; आटि–स्नान करके; अऱुवि वीळ्व पोल्–नदियाँ गिरतीं जैसे; ऍकितम् वीळ्व–हंस पक्षी गिरते हैं; ओतिय कुन्ऱम्–ऐसा वर्णित पर्वत; कीऱि–शरीर के फटने से; कुरुति नीर् चॉरिवतु–रक्त बहाता हो; ऑत्त–जैसे लगा। १०

उस पर्वत से हंस नीचे झरनों के समान गिरने लगे। उन पर चन्दन का चूर्ण, केसर, इंगुदी, शीतल पुष्पों का स्वर्णवर्ण मकरन्द और ऐसी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बुकनियाँ लगी हुई थीं। (ये सब उन अप्सराओं के शरीर से गिरी थीं, जो वहाँ स्नान करने आयी थीं।) वह दृश्य ऐसा लगा मानो पर्वत के शरीर के टूटने से रक्त की धारा बह रही हो। (इस पद्य में 'अॅहिऩम्' शब्द है, अतः हंसों की बात कही गयी है। पाठान्तर 'अरुवि' है। तब झरने ही रक्त की नदियों का दृश्य उपस्थित करते थे। यह अर्थ लगाया जा सकता है।)। १०

कडलुऱु मत्ति दॅऩ्ऩक् कार्वरै तिरियुङ् गालै
मिडलुऱु पुलन्गळ् वॅऩ्ऱ मॅय्त्तवर् विशुम्बि नुऱ्ऱार्
तिडलुऱु किऱियिऱ् ऱन्दऱ् जॅय्विनै मुऱ्ऱि मुऱ्ऱा
उडलुऱु पाशम् वीशा दुम्बर्च्चॅल् वारै यॊत्तार् 11

कार् वरै–काला पर्वत; कटल् उऱु मत्तु इतु अॅऩ्ऩ–समुद्र-मध्य मथानी है यह, ऐसा कहने योग्य रीति से; तिरियुम् कालै–घूमता रहा; मिटल् उऱु–शक्तिमान; पुलन्कळ् वॅऩ्ऱ–इन्द्रियविजेता; मॅय्तवर्–सच्चे तपस्वी; विचुम्पिऩ् उऱ्ऱार्–आकाश में चले गये; तिटल् उऱु–टीलों वाले; किरियिल्–उस पर्वत पर; तम् तम् चॅय्विनै मुऱ्ऱि–अपना-अपना कर्तव्य (तप) पूरा करके; उटल् उऱु पाचम्–देहाभिमान; मुऱ्ऱा वीचातु–पूर्ण रूप से न त्यागकर; उम्पर् चॅल्वारै–आकाश में (सशरीर) जानेवालों; ऒत्तार्–के समान दिखे। ११

मेघमण्डित होने से काला दिखनेवाला वह पर्वत समुद्र में मथानी के समान जब घूमा, तब सशक्त इन्द्रियों के निग्रही सच्चे तपस्वी आकाश में जाने लगे। तब वे ऐसे लगे मानो पर्वत के उन्नत समतल स्थलों पर अपना तपोकर्म पूरा करके सशरीर ही, शरीर-सम्बन्ध छोड़े विना ही ऊपर स्वर्ग में जा रहे हों। ११

वॅयिलियऱ् कुऩ्ऱङ् गीऱि वॅडित्तलु नडुक्क मॅय्दि
मयिलियऱ् ऱळिर्क्कै मादर् तळीइक्कॊळप् पॊलिन्द वाऩोर्
अयिलॅयिऱ् ऱरक्क ऩळ्ळत् तिरिन्दना ळणङ्गु पुल्लक्
कयिलॅयि लिरुन्द तेवैत् तऩित्तऩि कडुत्तल् शॅय्दार् 12

वॅयिल् इयल्–उज्ज्वल; कुऩ्ऱम्–पर्वत; कीऱि वॅटित्तलुम्–जब दरार पड़कर टूटा; मयिल् इयल्–कलापी-सी; तळिर्क्कै मातर्–पल्लव-समान हाथों वाली अप्सराओं ने; नटुक्कम् अॅय्ति–काँपती हुई; तळीइक् कॊळ–आलिंगन कर लिया तो; पॊलिन्त–उस स्थिति में शोभायमान; वाऩोर्–व्योमवासी; अयिल् अॅयिऱु–तीक्ष्ण दाँतोंवाले; अरक्कऩ्–राक्षस के; अळ्ळ–उठाने पर; तिरिन्त नाळ्–जब कैलास पर्वत घूम उठा, उस दिन; अणङ्कु–देवी उमा के; पुलल–आलिंगन कर लेने से; कयिलैयिल्–उस कैलास पर्वत पर; इरुन्त–रहे; तेवै–देव (शिव) के; तऩि तऩि–एक-एक; कटुत्तल् चॅय्तार्–समान दिखे। १२

वह उज्ज्वल पर्वत दरार खाकर फूटा। तब मयूरनिभ पल्लवहस्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देवतरुणियों ने डरकर अपने प्रेमियों का आलिंगन कर लिया। उनके साथ शोभनेवाले वे देवगण एक-एक उन परमेश्वर के समान लगे, जिनको उमादेवी ने तीक्ष्ण दाँतों वाले रावण के कैलासपर्वत को उखाड़ लेने और उस पर्वत के घूमने पर कैलासपति का आलिंगन कर लिया था। १२

ऊऱिय नऱवै युण्ड कुऱ्ऱन्द मुणर्व युण्णच्
शीऱिय मनत्तर् दॅय्व मडन्दैय रूड ऱीर्वुऱ्
ऱाऱिन रञ्जु हिन्ऱा रन्बरैत् तळुवि युम्बर्
एऱिन रिट्टु नीत्त पैङ्गिळिक् किरङ्गु हिन्ऱार् 13

ऊऱिय नऱवै–पुरानी सुरा को; **उण्ट कुऱ्ऱम्**–पीने के दोष से; **तम् उणर्वै**–अपनी चेतना को; **उण्ण**–नष्ट करने से; **चीऱिय मनत्तर्**–कुपित मन वाली; **तॅय्व मटन्तैयर्**–देवरमणियाँ; **ऊटल्**–रूठन (जो पालती थीं, उस) को; **तीर्वुऱ्ऱ**–(अब पर्वत की स्थिति के कारण) छोड़कर; **आऱिन्तर्**–शान्त हुईं; **अञ्चुकिन्ऱार्**–भय से त्रस्त हैं; **अन्पर तळुवि**–प्रियों को आलिंगन में ले; **उम्पर् एऱिन्तर्**–आकाश में चढ़ गयीं; **इट्टु नीत्त**–जो छोड़े गये हैं; **पैङ्किळिक्कु**–छोटे शुकों के लिए; **इरङ्कुकिन्ऱार्**–दुःखी होती हैं। १३

देवांगनाएँ अपने पतियों से रूठी हुई थीं, क्योंकि उन्होंने पुरातन सुरा का पान कर लिया था, जिसके फलस्वरूप देवों का मन भ्रान्त था और स्त्रियों की इच्छा पूरी नहीं हुई थी। अब चूँकि पर्वत हिलने और धँसने लगा, इसलिए वे अपनी रूठन छोड़कर शान्त हो गयीं और भय खाकर उनसे लिपटकर व्योमलोक जाने लगीं। जाते-जाते वे अपने शुकों को छोड़ जाने के कारण दुःखी हो रही थीं। १३

इत्तिऱ निहळुम् वेलै यिमैयवर् मुन्निवर् मऱ्ऱुम्
मुत्तिऱत् तुलहत् तारु मुऱैमुऱै विशुम्बिन् मॉय्त्तार्
तॉत्तुऱु मलरुञ् जान्दुञ् जुण्णमु मणियुन् दूवि
वित्तह शेऱि यॅन्ऱार् वीरनुम् विरैव दान्तान् 14

इ तिऱम् निकळुम् वेलै–इस तरह जब सब हो रहे थे, तब; **इमैयवर्**–व्योमवासी; **मुन्निवर्**–मुनि; **मऱ्ऱुम् मु तिऱत्तु उलकत्तारुम्**–और अन्य त्रिलोकवासी; **मुऱै मुऱै**–बारी-बारी से; **विचुम्पिन् मॉय्त्तार्**–आकाश में आकर जुट गये; **तॉत्तु उऱु मलरुम्**–गुच्छों में फूल; **चान्तुम्**–चन्दन; **चुण्णमुम्**—सुगन्ध-चूर्ण; **मणियुम्**–और रत्न; **तूवि**–बरसाकर; **वित्तक**–निपुण; **चेऱि**–चलो; **ऍन्ऱार्**–कहा (उन्होंने); **वीरनुम्**–वीर भी; **विरैवतु आन्तान्**–गतिमान हुआ। १४

जब ऐसी बातें हो रही थीं तब देवगण, मुनिवृन्द और तीनों लोकों के वासी पंक्तियों में आकाश में जमा हो गये। उन्होंने फूल के गुच्छों, चन्दन और सुगन्ध-चूर्ण बरसाते हुए हनुमान से कहा कि कार्यनिपुण ! चलो ! वीर हनुमान भी जाने में वेग दिखाने लगा। १४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुऱुमुनि कुडित्त वेलै कुप्पुऱु कॊळ्हैत् तादल्
वॆऱुविदु विशयम् वैहुम् विलङ्गऱ्ऱो ळलङ्गल् वीर
शिऱिदिदॆन् ऱिहळऱ् पालै यल्लैनी शेऱि यॆन्ऱाङ्
गुऱुवलित् तुणैवर् शॊन्ना रॊरुप्पट्टान् पॊरुप्पै यॊप्पान् 15

विचयम् वैकुम्–विजयनिलय; विलङ्कल् तोळ्–पर्वत-सम कन्धों; अलङ्कल् वीर–और माला से युक्त वीर; कुऱु मुनि कुटित्त–छोटे रूप के मुनि से (अगस्त्य से) जो पिया गया उस; वेलै–समुद्र को; कुप्पुऱु कॊळ्कैत्तु आतल्–लाँघने का उद्देश्य करना; वॆऱुवितु–व्यर्थ है; इतु चिऱितु–यह छोटा है; ऎन्ऱु–ऐसा सोचकर; इकळऱ् पालै अल्लै–अवहेलना करनेवाला मत बनो; नी चेऱि–तुम सावधानी से जाओ; ऎन्ऱु–ऐसा; उऱु वलि तुणैवर्–सबल साथियों ने; आङ्कु चॊन्नार्–तब कहा; पॊरुप्पै ऒप्पान्–पर्वत की समानता करनेवाला हनुमान; ऒरुप्पट्टान्–सम्मत हुआ। १५

"विजय-माला-भूषित कन्धों वाले वीर!" उसके अतिबलवान मित्रों ने चेतावनी दी। "छोटे आकार के ऋषि अगस्त्य ने इसको पी लिया था। अतः तुम इसे छोटा मत समझो। मत सोचो कि यह तरण-सुलभ है। वह व्यर्थ होगा। इसको छोटा समझकर इसकी अवहेलना मत करो। तुम सावधान होकर इसको लाँघो और उस पार पहुँच जाओ।" पर्वत-सम हनुमान ने उनकी बात मान ली। १५

इलङ्गैयि नळविऱ् ऱन्ऱा लिव्वुरु वॆडुत्त तोऱ्ऱम्
विलङ्गवु मुळदन् ऱॆन्ऱु विण्णवर् वियन्दु नोक्क
अलङ्गऱाळ् मार्बम् मुन्ऱाळन् दडित्तुणै यळुत्त लोडुम्
पुलन्दॆरि मलैयुन् दाळुम् बूदलम् बुक्क मादो 16

ऎटुत्त–जो उसने लिया था; इ उरु तोऱ्ऱम्–इस रूप की ऊँचाई; इलङ्कैयिन् अळविऱ्ऱु अन्ऱु–लंका में समानेवाली नहीं है; विलङ्कवुम् उळतु अन्ऱु–रोकी भी नहीं जा सकती; ऎन्ऱु–कहते हुए; विण्णवर्–व्योमवासी; वियन्तु–विस्मय करके; नोक्क–देखने लगे; अलङ्कल् ताळ्–मालाएँ जिस पर लटकती थीं; मार्पन्–वैसे वक्ष वाला; मुन् ताळ्न्तु–आगे की ओर झुककर; अटि तुणै अळुत्तलोटुम्–ज्योंही जोड़े के पैरों को दबाने लगा, त्योंही; पुलन् तॆरि मलैयुम्–जिसके कुछ भाग दिख रहे थे, वह पर्वत; ताळुम्–उसके पार्श्व के छोटे-छोटे शिखर भी; पूतलम् पुक्क–भूमि में धँस गये। १६

देवों ने उसका रूप देखा। विस्मित हुए कि हनुमान का इतना बड़ा रूप लंका में समा भी नहीं सकता। यह दुर्वार भी है। तब लटकती माला से अलंकृत वक्ष वाले हनुमान ने दोनों पैरों को दबाया। तो कुछ-कुछ ऊपर दिखनेवाले स्थलों का वह पर्वत भूमि में धँस गया और साथ-साथ पार्श्व में रही गिरियाँ भी धँस गयीं। १६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाल्विशैत् तॆडुत्तु वऩ्ऱाण् मडक्किमार् बॊडुक्कि मात्त्
तोल्विशैत् तुणैहळ् पॊङ्गक् कळुत्तित्तैच् चुरुक्कित् तूण्डिक्
काल्विशैत् तिमैप्पिल् लोर्क्कुम् कट्पुलन् दॆरिया वण्णम्
मेल्विशैत् तॆळुन्दा नुच्चि विरिञ्जऩा डुरिञ्ज वीरऩ् 17

वीरऩ्–वीर; वाल् विचैत्तु ऍटुत्तु–लांगूल को फटकारकर; वऩ् ताळ् मटक्कि–बलवान पैरों को मोड़कर; मार्पु ऒटुक्कि–वक्ष सिकोड़कर; मात्त–बड़े; विचै–विजयशील; तोल् तुणैकळ्–जोड़े के कन्धों को; पॊङ्क–फुलाकर; कळुत्तित्तै चुरुक्कि–ग्रीवा को अन्दर खींचकर; तूण्टि–फिर बाहर करके; काल् विचैत्तु–पवन-सी गति पैदा करके; इमैप्पु इल्लोर्क्कुम्–अपलक देवों के लिए भी; कण् पुलम् तॆरिया वण्णम्–आँखों से अदृश्य होकर; मेल् विचैत्तु–ऊपर की तरफ़ वेग करके; उच्चि विरिञ्चऩ् नाटु–बहुत ऊपर के ब्रह्मलोक से; उरिञ्च–टकराते हुए; ऍळुन्ताऩ्–उठा। १७

वीर हनुमान की मुद्रा देखिए। उसने अपना लांगूल फटकारा। अपने सीने को संकुचित किया। बड़े और विजयभूषित कन्धों को फुलाते हुए ग्रीवा को अन्दर खींचकर फिर बाहर उछाला। पवन के समान इतने वेग से वह ऊपर उठा कि अपलक देवों की आँखें भी उसे उठते हुए नहीं देख सकीं और सबसे ऊपर रहनेवाला ब्रह्मा का लोक उससे टकरा गया। १७

आयव नॆळुद लोडु मरुम्बण मरङ्ग डामुम्
वेयुयर् कुऩ्ऱुम् वॆऩ्ऱि वेळमुम् पिऱवु मॆल्लाम्
नायहऩ् पणियी दॆऩ्ऩा नळिर्हड लिलङ्गै तामुम्
पाय्वऩ वॆऩ्ऩ वाऩम् बडर्न्दऩ पळुव मात्त 18

आयवऩ्–उसके; ऍळुतलोटुम्–उछलने पर; अरुम् पणै–अपूर्व और बड़ी शाखाओं वाले; मरङ्कळ् तामुम्–तरु; वेय् उयर्–और बाँस के पेड़ों के साथ उन्नत रहे; कुऩ्ऱुम्–छोटे-छोटे पर्वत; वॆऩ्ऱि वेळमुम्–विजयी गज; पिऱवुम् ऍल्लाम्–अन्य सभी; नायकऩ् पणि ईतु–नायक (श्रीराम) का कार्य यह है; ऍऩ्ऩा–समझकर; तामुम्–वे खुद; नळिर् कटल् इलङ्कै पाय्वत ऍऩ्ऩ–शीतल समुद्र-मध्य लंका में कूदते-से; वाऩम् पळुवम् मात्त–आकाश को उद्यान-सा बनाते हुए (उछलकर); पटर्न्तऩ–फैले। १८

जब वह उछल उठा तब बड़ी-बड़ी डालों-सहित वृक्ष, ऊँचे बाँसों के पेड़ों के साथ गिरियाँ और विजयी गज और अन्य पदार्थ भी साथ उछल उठे और शीतल समुद्रवलयित लंका की ओर उड़े, मानो वे इसे नायक श्रीराम की सेवा समझकर उड़ते हों और आकाश को ही उपवन का दृश्य देते हुए फैल गये। १८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इशैयुडै यण्णल् शॅन्ऱ वेहत्ता लॅऴुन्द कुन्ऱुम्
पशैयुडै मरनु मावुम् पल्लुयिर्क् कुलमुम् वल्ले
तिशैयुऱच् चॅन्ऱु शॅन्ऱु शॅऱिहड लिलङ्गै शेरुम्
विशैयिल वाहित् ताऴुन्दु वीऴ्न्दन वॅन्न वीऴ्न्द 19

इचै उटै अण्णल्–यशस्वी, महान् हनुमान के; चॅन्ऱ वेकत्ताल्–जाने की गति से; अॅऴुन्त–खुद जो (उखड़) उठे; कुन्ऱुम्–चट्टानें; पचै उटै मरनुम्–नमीयुक्त तरु; मावुम्–और जानवर; पल् उयिर्क्कुलमुम्–अनेक जीवराशियाँ; वल्लै–वेग के साथ; तिचै उऱ–हनुमान की दिशा में बढ़ते-बढ़ते; चॅन्ऱु चॅन्ऱु–जा-जाकर; चॅऱि कटल्–पास रहनेवाले समुद्र से वलयित; इलङ्कै चेरुम् विचै–लंका में जाने की वेगशक्ति; इलवाकि–न होने से; ताऴुन्तु वीऴ्न्ततन–नीचे की ओर गिरे; अॅन्त–जैसे; वीऴ्न्त–गिरे। १९

प्रशंसित महानुभाव हनुमान के गति-वेग में फँसकर गिरियाँ और जीवन्त तरु, गज आदि जानवर और अन्य अनेक जीवराशियाँ जल्दी-जल्दी हनुमान की ओर चल-चलकर समुद्र में गिर गयीं, क्योंकि उनमें स्वतः समृद्ध जल वाले समुद्र से वलयित लंका पहुँचने की शक्ति नहीं थी। १९

मावॊडु मरमु मण्णुम् वल्लियु मऱ्ऱु मॅल्लाम्
पोवदु पुरिन्द वीरन् विशैयिनाऱ् पुणरि पोर्क्कत्
तूविन कीऴु मेलुन् दूर्न्दन शुरुदि यन्न
शेवहन् शीऱा मुन्नञ् जेदुवु मियन्ऱ मादो 20

वीरन् पोवतु–हनुमान ने चलने के लिए; पुरिन्त विचैयिताल्–जो वेग अपनाया उससे; मावॊटु मरमुम्–जानवरों के साथ वृक्ष; मण्णुम्–ज़मीन और; वल्लियुम्–लताएँ; मऱ्ऱुम् अॅल्लाम्–अन्य सभी; पुणरि पोर्क्क–समुद्र को पाटने के लिए; तूविन–बिखरे; कीऴुम् मेलुम्–नीचे और ऊपर; तूर्न्तन–फैले; चुरुति अन्न चेवकन्–वेद-सम प्रतापी श्रीराम; चीऱा मुन्नम्–वरुणदेव पर कोप करे, इसके पूर्व ही; चेतुवुम्–सेतु-रूप; इयन्ऱ–बने। २०

वीर हनुमान की गति के वेग के कारण जानवर, तरु, ज़मीन, लताएँ और अन्य वस्तुएँ इतनी उड़ीं और समुद्र और आकाश में, ऊपर और नीचे बिखरीं। उनको देखकर ऐसा लगा, मानो वेद-से श्रीराम के कोप करने से पूर्व ही सेतु बन रहा हो। २०

कीण्डदु वेलै नन्नीर् कीऴुऱक् किडन्द नाहर्
वेण्डिय वुलह मॅल्लाम् वॅळिप्पड मणिहळ् मिन्न
आण्डहै यदनै नोक्कि यरविनुक् करशन् वाऴ्वुम्
काण्डहु तवत्त नानेन् यानॅनक् करुत्तिऱ् कॊण्डान् 21

नल् वेलै नीर्–अच्छे समुद्र का जल; कीण्टतु–चिरा; कीऴ् उऱ किटन्त–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसके नीचे जो रहा; नाकर् वेण्टिय–नागों का प्यारा; अलकम् ऍत्लाम्–लोक सारा; वॅळिप्पट–बाहर प्रकट हो गया तो; मणिकळ् मिन्न्त–मणियाँ चमकने लगीं तब; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ ने; अतन्नै नोक्कि–उसको देखकर; यान्–मैं; अरवित्तुक्कु अरचन्–नागराज का; वाळ्वुम्–(वैभव) जीवन भी; काण् तकु–देखने का; तवत्तन् आनेन्–भाग्यवान हुआ; ऍन्न–ऐसा; करुत्तिल्–मन में; कॉण्टान्–विचार किया। २१

अच्छे समुद्र का जल फट गया। नीचे रहा नागों का प्यारा पाताल-लोक प्रकट हुआ और मणियाँ चमकीं। पुरुषश्रेष्ठ हनुमान ने उनको देखा और अपने को इस कारण बड़ा भाग्यवान समझा कि उसे नागराज के जीवन का वैभव देखने को मिला। २१

वॅय्दुवान् शिऱैयि नानीर् वेलैयैक् किळ्ळिय वीशि
नॉय्दिना लमुदङ् गॉण्ड नोन्मैयै नुवलु नाहर्
उय्दुना मॅन्ब दॅन्ने युऱुवलिक् कलुळ् नूळिन्
ऍय्दिना नामॅन् ऱञ्जि यलक्कणुर् ऱिरियल् पोनार् 22

वान् चिऱैयिनाल्–बड़े-बड़े पंखों को; नीर् वेलैयै–जलनिधि को; किळ्ळिय–चीरते हुए; वीचि–झटकाकर; वॅय्तु नॉय्तिनाल्–बहुत ही क्षिप्र गति से; अमुतम् कॉण्ट–(गरुड़ के) अमृत उठा लेने की; नोन्मैयै–कुशलता को; नुवलुम् नाकर्–हमेशा कहते थे जो, वे नाग; ऊळिन्–हमारे प्रारब्ध से; उऱुवलि–बड़ा पराक्रमी; कलुळन्–गरुड़; ऍय्तिनान् आम्–आ गया तो; नाम् उय्तुम् ऍन्पतु–हम बचेंगे कहना; ऍन्ने–कैसा, ऐसा; अञ्चि–डरकर; अलक्कण् उऱ्ऱु–उद्विग्न होकर; इरियल् पोनार्–तितर-बितर हो गये। २२

वहाँ के नाग सदा गरुड़ की बात लेकर बात कर रहे थे। गरुड़ ने अपने बड़े पक्षों को झटकाकर समुद्रजल को विभक्त किया और झट अमृत को शीघ्र और अनायास उठा लिया था। उसके बल की बात का स्मरण करते जो रहे वे नाग अब समुद्रजल को दो भागों में विभक्त करते हुए आनेवाले हनुमान को गरुड़ ही समझने लग गये। यह कहते हुए वे डरकर उद्विग्नता के साथ तितर-बितर हो गये कि हमारे प्रारब्ध के कारण भयानक बलयुक्त गरुड़ फिर से आ रहा है। हम बचेंगे कैसे ? । २२

तुळ्ळुऱु महर मीन्ग डुडिप्पुऱच् चुऱवु तूङ्ग
ऑळ्ळिय पनैमीन् ऱुञ्जत् तिवलैय दूळिक् कालिन्
वळ्ळुहिर् वीरन् शॅल्लुम् विशैपॉऱा मऱुहि वारि
तळ्ळिय तिरैहण् मुन्दुऱ् ऱिलङ्गैमेऱ् ऱवळ्न्द मादो 23

ऊळि–युगान्तकालीन; तिवलैयतु–सीकर-सहित; कालिन्–पवन के समान; वळ् उकिर् वीरन्–तीक्ष्ण-नख वीर की; चॅल्लुम् विचै–गमन-गति; पॉऱा–न सह सककर; तुळ्ळुऱु–उछलनेवाली; मकर मीन्कळ्–मगर-मछलियाँ; तुडिप्पु उऱ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

छटपटायीं; चुऱवु तूङ्क–'शुरा' नामक मच्छ निश्चेष्ट पड़े रहे; ऑळ्ळिय–रौनक-दार; पत्तै मीन्–'पत्तै' नामक मच्छ; तुञ्च–मर गये; वारि मरुकि–समुद्र विलोडित हुआ; तळ्ळिय तिरैकळ्–उससे चालित तरंगें; मुन्तु उऱ्ऱु–आगे जाकर; इलङ्कै मेल् तवऴ्न्त–लंका पर बहीं। २३

हनुमान युगान्तकालीन जलसीकरवाही पवन के समान जा रहा था। तीक्ष्ण नाखूनों से युक्त उस वीर के वेग को न सह सकने से चंचल मगरमच्छ छटपटाये। 'शुरा' नामक मच्छ अचेत पड़े रहे। प्रकाशमय 'पत्तै' नामक मच्छ मर गये। समुद्र आलोडित हुआ और तरंगें आगे जाकर लंका पर बहीं। २३

इडुक्कुरुम् बॉरुळ्ह ळॅन्ना मॅण्डिशै शुमन्द यात्तै
नडुक्कुऱ विशुम्बिऱ् चॅल्लु नायहन् रूद नाहम्
ऑडुक्कुरु काल वन्गाऱ् ऱडियॉडु मॉडित्त वन्नाळ्
मुडुक्कुऱक् कडलिऱ् चॅल्लु मुत्तलैक् किरियु मॉत्तान् 24

अॅण् तिचै चुमन्त–आठ दिशाओं के वाहक; यात्तै–दिग्गज; नटुक्कु उऱ–कोप गये; विचुम्पिल्–ऐसा, आकाश में; चॅल्लुम्–जानेवाला; नायकन् तूतन्–नायक श्रीराम का दूत; नाकम् ऑटुक्कुरु कालम्–(जब पवन के साथ स्पर्द्धा में) आदिशेषनाग ने (मेरु को) दबाये रखा था; वन् काल्–बलवान पवन ने; तटियॉटुम्–विद्युत् के साथ; ऑटित्त अ नाळ्–तोड़ा था, उस दिन; मुटुक्कुऱ–वेग के साथ; कटलिल् चॅल्लुम्–समुद्र में जानेवाले; मुत्तलै किरियुम्–त्रिकूट पर्वत के भी; ऑत्तान्–समान लगा; इटुक्कु उऱुम्–बीच में आनेवाली; पॉरुळ्कळ्–वस्तुओं का हाल; अॅन् आम्–क्या होगा। २४

अष्ट दिग्गज काँपे। इस तरह जो आकाश में उड़ा जा रहा था, वह श्रीराम नायक का दूत हनुमान त्रिकूट पर्वत के समान लगा, जो समुद्र की तरफ़ जा रहा था। एक बार शेषनाग और पवन में अपनी-अपनी शक्ति के प्रदर्शन में स्पर्द्धा हो गयी। शेषनाग ने मेरुपर्वत को लपेटकर दबा दिया था। सबल पवन ने उस दिन विद्युत् के साथ उस पर्वत को तोड़ दिया था। तब उस पर्वत का तीन शिखरों वाला अंश अलग टूटा और वही त्रिकोण या त्रिकूट पर्वत कहा गया। (वह समुद्र में जा गिरा। उसी के ऊपर लंका नगर का निर्माण हुआ।) हनुमान जाते हुए उस पर्वत के समान लगा। २४

कॉट्पुऱु पुरवित् तॅय्वक् कूर्नुदिक् कुलिशत् ताऱ्कुम्
कट्पुलङ् गदुव लाहा वेहत्ताऱ् कडलु मण्णुम्
उट्पडक् कूडि यण्ड मुऱवुळ शॅलवि नॉऱ्ऱैप्
पुट्पह विमानन् दानव् विलङ्गैमेऱ् पोव दॉत्तान् 25

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कॊट्पु उऱु–ज़ोर का चक्कर काटनेवाले; तॆय्व पुरवि–(उच्चैःश्रवा नाम के) दिव्य अश्व के; कूर् नुति–तीक्ष्ण नोक के; तॆय्व कुलिचत्ताऱ्कुम्–दिव्य कुलिश के स्वामी (इन्द्र) के लिए भी; कण् पुलम् कतुवल् आका–आँख की इन्द्रिय द्वारा ग्रहण न हो सके ऐसी; वेकत्ताल्–गति के कारण; कटलुम् मण्णुम्–समुद्र और भूमि; उट्पटक्कूटि–दोनों अपने अन्दर समा जायँ इतना बड़ा होकर; अण्टम् उऱ–अण्ड की चोटी के भाग को छूता हुआ; उळ चॆलवित्–चलने की गति के कारण; ऒऱ्ऱै पुट्पक विमानम् तान्–अनुपम पुष्पकयान स्वयं; अव् इलङ्कै मेल्–उस लंका पर; पोवतु ऒत्तान्–जाता हो, ऐसा लगा। २५

बहुत तेज़ घूमनेवाले (उच्चैःश्रवा नाम के) अश्व और तीक्ष्ण नोक वाले दिव्य वज्रायुध का स्वामी इन्द्र की आँखें भी उसको नहीं देख सकीं —हनुमान इतनी तेज़ी से उड़ा जा रहा था। वह इतने बड़े आकार का था कि भूमि और समुद्र दोनों एक साथ उसमें समा जायँ। अण्ड की चोटी के भाग से लगता हुआ वह महान् और अनुपम पुष्पक विमान के समान लगा जो लंका की तरफ़ जा रहा हो। २५

विण्णव रेत्त वेद मुनिवर्हळ् वियन्दु वाळ्त्त
मण्णव रिऱैञ्जच् चॆल्लु मारुदि मऱमुऱ् कूर
अण्णल्वा ळरक्कन् ऱन्नै यमुक्कुवॆ निन्न मॆन्नाक्
कण्णुद लॊळियच् चॆल्लुङ् गयिलैयङ् गिरियु मॊत्तान् 26

विण्णवर् एत्त–स्वर्गवासियों के स्तुति करते; वेत मुनिवर्कळ्–वेदज्ञ मुनियों के; वियन्तु वाळ्त्त–विस्मित होकर साधुवाद देते; मण्णवर् इऱैञ्च–भूलोकवासियों के प्रणमन करते; चॆल्लुम् मारुति–चलनेवाला हनुमान; मऱम् मुन् कूर–वैर-भावना के बढ़ने के कारण; इन्नम्–और भी; अण्णल् वाळ्–महिमामय (चन्द्रहास) तलवार के स्वामी; अरक्कन् तन्नै–राक्षस रावण को; अमुक्कुवॆन् ऎन्ना–दबाऊँगा कहकर; कण्णुतल् ऒळिय–भालनेत्र शिवजी से रहित होकर; चॆल्लुम्–जानेवाले; कयिलै अम् किरियुम्–श्रेष्ठ कैलास पर्वत के भी; ऒत्तान्–समान रहा। २६

देवलोग हनुमान की स्तुति कर रहे थे। वेदज्ञ मुनिगण साधुवाद कर रहे थे। भूमि के वासी नमस्कार कर रहे थे। इस रीति से जा रहा था हनुमान। उसके मन में वैर-भाव उमग आ रहा था। तब वह उस सुन्दर कैलास पर्वत के समान लगा जो यह संकल्प करके भालनेत्र शिवजी को त्याग कर दौड़ रहा हो कि मैं महिमामय चन्द्रहास तलवारधारी राक्षस रावण को और भी दबोच लूँगा। २६

केळ्ला मुळुनि लाविऱ् किळरॊळि यिरुळैक् कीऱप्
पाळिमा मेरु नाण विशुम्बिडैप् पडर्न्द तोळान्
आळिशू ळ्लह मॆल्ला मरुङ्गनन् मुरुङ्ग वुण्णुम्
ऊळिनाळ् वडपाऱ् ऱोन्ऱु मुवामुळ् मदियु मॊत्तान् 27

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

केऴ् उलाम्–श्वेत प्रकाशपूर्ण; मुऴु निलाविल्–पूर्णचन्द्र के समान; किळर् ऒळि–अपने में रहनेवाली कांति द्वारा; इरुळै कीऱ–अन्धकार को चीरते हुए; पाऴि–बहुत बड़े; मा मेरु नाण–महान् मेरु को लजाते हुए; विचुम्पिटै–आकाश में; पटर्न्त तोळान्–उड़नेवाले विशाल कन्धों का हनुमान; आऴि चूऴ्–समुद्रवलयित; उलकम् ऎल्लाम्–भूतल सभी; अरुङ्कनल्–असह्य अग्नि; मुरुङ्क उण्णुम्–जलाते हुए जिस दिन भक्षण कर लेती है, उस; ऊऴि नाळ्–युगान्तकाल में; वट पाल्–उत्तर में; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; उवा मुऴु मतियुम्–पौर्णिमा के पूर्णचन्द्र के भी; ऒत्तान्–समान लगा। २७

हनुमान में चाँदनी के समान तेज था। उसने अन्धकार को हटा दिया। उस प्रकाश के सहारे वह ऐसा उड़ रहा था कि महामेरु भी शरमा जाए। वह तब उस युगान्तकालीन पूर्णिमा के पूर्णचन्द्र के समान लगा जब इस समुद्र-मेखला पृथ्वी को असह्य आग नाश करके भक्षण कर रही हो। २७

माणियाम् वेडन् दाङ्गि मलरयऱ् करिवु माण्डोर्
आणिया वुलहुक् कॆल्ला मऱप्पॊरु णिरप्पु मण्णल्
शेणुयर् नॆडुनाट् टीर्न्द तिरिदलैच् चिऱुवन् ऱन्नैक्
काणिय विरैविऱ् चॆल्लुङ् गनहमाल् वरैयु मॊत्तान् 28

माणि आम्–ब्रह्मचारी (बटु) का; वेटम् ताङ्कि–वेश धरकर; मलर् अयऱ्कु–कमलासन ब्रह्मा के समान; अरिवु माण्टु–बुद्धि में श्रेष्ठ होकर; उलकुक्कु ऎल्लाम्–सारे लोकों के लिए; ओर् आणि आ–एक धुरी के समान; अऱप्पॊरुळ्–धर्म-विषय; निरप्पुम् अण्णल्–भरनेवाला महानुभाव; नॆटु नाळ् तीर्न्त–बहुत दिन से वियुक्त; चेण् उयर् तिरितलै चिऱुवन् तन्नै–श्रेष्ठ त्रिकूट पर्वत रूपी पुत्र को; काणिय–देखने के लिए; विरैविल् चॆल्लुम्–सवेग जानेवाले; कनक माल् वरैयुम्–स्वर्णपर्वत मेरु के भी; ऒत्तान्–समान लगा। २८

हनुमान ब्रह्मचारी बटु के वेश में था। वह कमलासन के समान बुद्धिमान था। वह धर्मधुरंधर था। वह तब उस कनकमेरुपर्वत के समान लगा, जो अपने से बहुत काल से वियुक्त अपने पुत्र त्रिकूट पर्वत से मिलने हेतु बहुत तेज़ी से लंका जा रहा हो। २८

मऴैहिऴित् तुदिर मीन्गण् मऱिहडल् पाय वानम्
कुऴैवुऱत् तिशैहळ् कीऱ मेरुवुङ् गुलुङ्गक् कोट्टिन्
मुऴैयुडैक् किरिहण् मुऱ्ऱु मुडिक्कुवान् मुडिवु कालत्
तऴिवुऱक् कडुहुम् वेहत् तादैयु मनैय नानान् 29

मीन्कळ्–(आकाश की मछलियाँ=) तारे; मऴै किऴित्तु–मेघों को छेदते हुए; उतिर–चू पड़ें; मऱि कट–मुड़ आनेवाली तरंगों का समुद्र; पाय–भूमि पर बहे; वानम्–स्वर्ग; कुऴैवु उऱ–अस्त-व्यस्त हों; तिचैकळ् कीऱ–दिशाएँ फट जायँ; मेरुवुम् कुलुङ्क–मेरु भी झकझोर जाय, ऐसा और; कोट्टिन्–शिखरों में; मुऴै उटै–कन्दराओं-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सहित रहनेवाले; किरिकळ् मुऱ्ऱुम् मुटिक्कुवात्–सारे पर्वतों का नाश करने के लिए; मुटिवु कालत्तु–युगान्तकाल में; अऴिवु उऱ–मिट जाने के लिए; कट्टुकुम्–वेग के साथ जानेवाले; वेक तातैयुम्–(उसके) वेगयुक्त पिता (वायु) के भी; अत्तैयत् आत्तात्–समान लगा। २९

युगान्तकाल में तारे मेघों को चीरकर चू पड़ते हैं। तीर से टकराकर मुड़नेवाली तरंगों का समुद्र भूमि पर फैलने लग जाता है। आकाश अस्त-व्यस्त हो जाता है। दिशाएँ टूट जाती हैं। मेरु हिल जाता है। पवन शिखरों और उनमें कन्दराओं-सहित रहनेवाले पर्वतों को चूर करने के लिए बहता है। हनुमान उस अपने पिता के समान युगान्तकालीन-सी स्थिति उत्पन्न करते हुए जा रहा था। २९

तडक्कैना लैन्दु पत्तुत् तलैहळु मुडैयान् ऱात्ते
अडक्कियैम् बुलन्गळ् वॆन्ऱ तवप्पय नऱुद लाले
कॆडक्कुऱि याहि माहम् किऴक्कॆऴु वऴक्कु नीङ्गि
वडक्कॆऴुन् दिलङ्गै शॆल्लुम् परुदिवा नवनु मॊत्तात् 30

नालैन्तु–(चौके पाँच) बीस; तट कै–विशाल हाथों और; पत्तु तलैकळुम् उटैयात्–दस सिरों वाला; तात्ते–स्वयं; ऐम् पुलन्कळ्–पाँचों इन्द्रियों का; अटक्कि–निग्रह कर; वॆन्ऱ–विजय पाने की; तव पयन्–तपस्या के फल; अऱुतलाले–रिक्त हो गये इसलिए; कॆट–उसके नष्ट होने का; कुऱि आकि–एक निशान बनकर; माकम्–आकाश में; किऴक्कु ऎऴु–पूर्व दिशा में उगने की; वऴक्कु नीङ्कि–प्रकृति छोड़कर; वटक्कु ऎऴुन्तु–उत्तर में उगकर; इलङ्कै चॆल्लुम्–लंका पर जानेवाले; परुति वात्तवत्तुम्–सूर्यदेव के भी; ऒत्तात्–समान था। ३०

बीस-हस्त, दस-सिर रावण ने इन्द्रिय-निग्रह करके उन इन्द्रियों पर विजय पाकर तपस्या की थी। उस तपस्या का फल अन्त को प्राप्त हो गया। इसलिए उसके नाश के निशान के रूप में सूर्य पूरब में उगना छोड़कर उत्तर में उग रहा हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करता हुआ हनुमान लंका की तरफ़ उड़ रहा था। ३०

पुऱत्तुऱ लञ्जि वेऱो ररणम्बुक् कुऱैदल् पोक्कि
मऱत्तॊऴि लरक्कन् वाऴु मानहर् मनुविन् वन्द
तिऱत्तहै यिराम नॆन्नुञ् जेवहऱ् पऱ्ऱिच् चॆल्लुम्
अऱत्तहै यरशन् ऱन्बो राऴियु मनैय नात्तात् 31

मऱम् तॊऴिल्–नृशंसकारी; अरक्कन् वाऴुम्–राक्षस जिसमें रहता था; मा नकर्–उस नगर के; पुऱत्तु उऱल्–बाहर रहने से भी; अञ्चि–डरकर; वेऱु ओर् अरणम्–किसी दूसरे रक्षित स्थान में; पुक्कु उऱैतल्–जाकर रहना; पोक्कि–छोड़कर मनुविन् वन्त–वैवश्वत मनु के कुल में उत्पन्न; तिऱत्तकै–प्रतापी; इरामन् ऎन्नुम् चेवकन्–श्रीराम नाम के वीर का; पऱ्ऱिच् चॆल्लुम्–अवलम्ब लेकर चलनेवाले;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऱत्तकै अरचन् तन्–धर्मदेवता के; पोर् आऴियुम्–समर-चक्र; अत्तैयन् आत्तान्–समान रहा। ३१

लगता है कि धर्मदेवता का चक्र क्रूरकर्मी राक्षसों के वासस्थान उस महानगर के बाहर रहने से भी डरकर कहीं दूसरे सुरक्षित स्थान में रहता था। अब वह उस स्थान से बाहर आकर मनुकुलोत्पन्न प्रतापी श्रीराम के बल का आश्रय लेकर लंका पर जा रहा है। ऐसे धर्मदेवता के समरयोग्य चक्र के समान भी लगा हनुमान। ३१

अडलुलान् दिहिरि मायऱ् कमैन्ददन् ताऱ्ऱल् काट्टक्
कुडलॅला मवुणर् शिन्दक् कुन्ऱॅनक् कुऱित्तु निन्ऱ
तिडलॅलान् तॉडर्न्दु शॅल्लच् चेण्विशुम् बॉदुङ्गत् तॅय्वक्
कडलॅलाङ् गडक्कत् तावुम् कलुऴनु मत्तैय तात्तान् 32

अटल् उलाम्–शक्तिसम्पन्न; तिकिरि–चक्रधारी; मायऱ्कु अमैन्त–मायावी देव श्रीविष्णु के अधीन रहनेवाले; तन् आऱ्ऱल् काट्ट–अपने पराक्रम दिखाते हुए; अवुणर् ऍल्लाम्–सभी असुरों की; कुटल् चिन्त–आँतों के गिरते; कुन्ऱु ऍन कुऱित्तु निन्ऱ्– पर्वत नाम के साथ रहनेवाले; तिटल् ऍलाम्–सभी टीलों को; तॉटर्न्तु चॅल्ल–लगातार पार करके; चेण् विचुम्पु–ऊपर का आकाश; ऑतुङ्क–दूर हटा; तॅय्वक् कटल् ऍलाम्–सभी दैवी सागरों को; कटक्क तावुम्–पार करने के लिए झपटनेवाले; कलुऴनुम् अत्तैयन् आत्तान्–गरुड़ के समान भी बना। ३२

प्रबल चक्रधारी मायावी श्रीविष्णु के अधीनस्थ अपना सारा बल प्रदर्शन करते हुए, गरुड़ अपनी माता की दासता के निवारणार्थ पहले गया था न ! तब असुरों की आँतें छितरीं। वह पर्वतों को टीलों के समान पार करता गया। आकाश भी दूर हट गया। सभी समुद्रों का उसने तरण किया। हनुमान उस गरुड़ के समान गया। (यह कहानी इसके पूर्व भी इंगित की गयी है।)। ३२

नालिन्नो डुलह मून्ऱु नडुक्कुऱ वडुक्कु नाहर्
मेलिन्मे निन्ऱ कारुञ् जॅन्ऱको लत्तिन् विण्डु
कालिन्ना लळन्द वात मुहट्टैयुङ् गडक्कक् काल
वालिन्ना लळन्दा नॅन्ऱु वात्तवर् मरुळच् चॅन्ऱान् 33

अटुक्कु मॅलिन् मेल्–एक के ऊपर एक; निन्ऱ नालित्तोट मून्ऱु–स्थित चार और तीन (सात); नाकर् उलकम् काऱुम्–सभी नाग (स्वर्ग) लोकों को; नटुक्कुऱच् चॅन्ऱु–कँपाते हुए जो बढ़ चले; कोलत्तिन्–अति सुन्दर; विण्टु–श्रीविष्णु ने; कालिताल् अळन्त–अपने पैरों से जिसको मापा; वात मुकट्टैयुम्–उस आकाश की चोटी को भी; कटक्क–पार करके; काल वालिताल्–कालदेव-सम अपनी पूंछ से;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अळन्तान्–(हनुमान ने) माप लिया; अॅन्ऱु–ऐसा; वानवर्–देवता; मरुळ–चकित हो जाएँ ऐसा; चॅन्ऱान्–गया। ३३

शोभायमान त्रिविक्रमदेव बनकर श्रीविष्णु ने एक के ऊपर एक रहनेवाले सातों देवलोकों को भय में डालते हुए अपने श्रीचरण से आकाश को नापा था। उस आकाश की चोटी को भी पार करने के निमित्त हनुमान अपनी कालदेव-सम पूँछ से उसको नाप रहा है क्या ? ऐसा सोचते हुए देव चकित हुए। ऐसा हनुमान जा रहा था। ३३

वॅळित्तुप्पिन् वेलै तावुम् वीरन्वाल् वेद मेय्क्कुम्
अळित्तुप्पि ननुम नॅन्नु मरुन्दुणै पॅऱ्ऱ तायुम्
कळित्तुप्पुन् ऱॊळिन्मे निन्ऱ वरक्करहण् णुऱुव रॅन्न
ऑळित्तुप्पिन् शॅल्लुङ् गाल पाशत्तै यॊत्त दन्ऱे 34

वॅळि तुप्पिन्–सविस्तार और प्रवालयुक्त; वेलै तावुम्–समुद्र लाँघनेवाले; वेतम् एय्क्कुम्–वेद से तुल्य; वीरन् वाल्–महावीर (हनुमान) का लांगूल; कळित्तु–ताड़ी पीकर; पुन् तॊळिल् मेल् निन्ऱ–नीच कर्म अपनाए रहनेवाले; अरक्कर् कण् उऱुवर्–राक्षस देख लेंगे; अॅन्न–ऐसा सोचकर; अळि–करुणा व; तुप्पिन्–बल से युक्त; अनुमन् अॅन्नुम्–हनुमान के रूप में; अरुन्तुणै पॅऱ्ऱताय्–अपूर्व सहायक पाकर; पिन् ऑळित्तु चॅल्लुम्–उसके पीछे-पीछे छिपे-छिपे जानेवाले; काल पाचत्तै–यम-पाश के; ऑत्ततु–समान रहा। ३४

बड़े विस्तार के और प्रवालयुक्त समुद्र को वेद-सम वीर हनुमान लाँघ रहा था। तब उसका लांगूल कालपाश के समान लगा। यह कालपाश (लांगूल) मद्यप और नीचकर्मी राक्षसों की दृष्टि में पड़ने से डरकर करुणामय प्रतापी हनुमान की सहायता पाकर उसके पीछे-पीछे छिपे-छिपे जा रहा हो —ऐसा लग रहा था। ३४

मेरुवै मुळुदुञ् जूळन्दु मीदुऱ्ऱ वेह नाहम्
कार्निऱत् तण्ण लेवक् कलुळन्वन् दुऱ्ऱ कालैच्
चोर्वुऱु मनत्त दाहिच् चुऱ्ऱिय चुऱुऱु नीङ्गिप्
पेर्वुऱु हिन्ऱ वाऱु मॊत्तदप् पिऱङ्गु पेळ्वाल् 35

पिऱङ्कु पेळ्–शोभायमान बड़ा; अ वाल्–वह लांगूल; कार् निऱत्तु–काले वर्ण के; अण्णल्–महिमावान श्रीविष्णु के; एव–आज्ञा देने पर; कलुळत् वन्तु उऱ्ऱ–गरुड़ जब आया; कालै–तब; मेरुवै–मेरुपर्वत को; मुळुतुम् चूळन्तु–पूरा लपेटकर; मीतुऱ्ऱ–उसके ऊपर फन फैलाये जो रहा; वेक नाकम्–भयंकर वेगवान शेषनाग; चोर्वुऱु मनत्ततु–थकित-मन; आकि–होकर; चुऱ्ऱिय चुऱुऱु नीङ्कि–अपनी लपेटें हटाकर; पेर्वु उऱुकिन्ऱ आऱुम्–अलग हटता जाता हो; ऑत्ततु–ऐसा भी लगा। ३५

एक बार नीलवर्ण श्रीविष्णु की प्रेरणा पर गरुड़ मेरुपर्वत के पास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आया। तब वहाँ शेषनाग उस पर्वत को पूरी तरह से लपेटकर उसके ऊपर अपना फन फैलाये हुए था। गरुड़ को देखकर डर के मारे वह अपनी लपेट निकालकर दूर भागने लगा। हनुमान की बड़ी और शोभायमान पूँछ उस शेषनाग के समान लगी। ३५

कुन्ऱोडु कुणिक्कुङ् गोऱ्ऱक् कुववुत्तोट् कुरक्कुच् चीयम्
शॅन्ऱुऱु वेहत् तिण्गा लॅऱिदरत् तेवर् वैहुम्
मिन्ऱोडर् वानत् तान विमानङ्गळ् विशैयिर् ऱम्मिल्
ऑन्ऱोडॊन् ऱुडैयत् ताक्कि माक्कड लुऱ्ऱ मादो 36

कुन्ऱोटु कुणिक्कुम्–पर्वत-तुल्य; कोऱ्ऱम्–विजय-वाहक; कुववु तोळ्–स्थूल कन्धों वाला; कुरक्कु चीयम्–वानर केसरी; चॅन्ऱु उऱु–उसके गमन से उत्पन्न; वेकम् तिण् काल्–वेगवान और प्रबल प्रभंजन; ऍऱितर–बहा, अतः; मिन् तोटर्–उज्ज्वल; वानत्तु आन–आकाश में उड़नेवाले; तेवर् वैकुम् विमानङ्कळ्–देवगण जिनमें बैठे हुए जाते थे, वे यान; विचैयिल्–पवन के झोंकों से; तम्मिल् ऑन्ऱोट ऑन्ऱु–आपस में एक दूसरे से; ताक्कि उटैय–टकराकर टूटे; मा कटल् उऱ्ऱ–बड़े समुद्र में गिरे। ३६

हनुमान के कन्धे विजय के आगर थे। पर्वत-सम थे। ऐसे वानर-केसरी के गमन से बहुत वेगवान प्रभंजन उठा। उसके झोंके खाकर आकाश में बिजली के साथ चलते रहे देव-यान आपस में टकराये, टूटे और समुद्र में गिर गये। ३६

वलङ्गैयिन् वयिर वेदि वैत्तवन् वैहु नाडुम्
कलङ्गुऱ वेहु वान्ऱन् करुत्तॆन्गॊ लॆन्नुङ् गऱ्पाल्
विलङ्गयि लॆयिऱ्ऱु वीरन् मुडुहिय वेहम् वॆय्योर्
इलङ्गैयि नळवन् ऱॆन्ना विम्बर्ना डिरिन्द दन्ऱे 37

वलङ्कैयिन्–दाहिने हाथ में; वयिर एति–वज्रायुध; वैत्तवन्–धारण करनेवाला (इन्द्र); वैकुम् नाटुम्–जहाँ रहता है वह लोक; कलङ्कुऱ–अस्त-व्यस्त हो; एकुवान् तन्–ऐसा जानेवाले का; करुत्तु ऍन् कॊल्–अभिप्राय क्या है; ऍन्नुम् कऱ्पाल्–इस विचार से; इम्पर् नाटु–यह लोक; विलङ्कु अयिल् ऍयिऱ्ऱु–अलग-अलग और तीक्ष्ण रहनेवाले दाँतों का; वीरन्–वीर; मुटुकिय वेकम्–जिसके साथ जाता है, वह वेग; वॆय्योर् इलङ्कैयिन्–क्रूर राक्षसों की लंका; अळवु अन्ऱु–तक का नहीं (को सीमा बनाकर नहीं); ऍन्ना–सोचकर; अन्ऱु–उस दिन; इरिन्ततु–डरकर भागा। ३७

उसे देखकर यह लोक सोचने लगा कि यह अपने दाहिने हाथ में वज्रायुध धारण करनेवाले इन्द्र के वासस्थान को भी भयभीत करता हुआ जा रहा है। इसका अभिप्राय क्या होगा ? बेढंगे दाँतों से युक्त इस वीर का वेग क्रूर राक्षसों की लंका तक सीमित होगा, ऐसा नहीं लगता। इस विचार से डरकर वह भाग गया। ३७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ओशत्तै युलप्पि लाद वुडम्बमैन् दुडय वॅन्नत्
तेशमु नूलुञ् जॉल्लुन् दिमिङ्गिल किलङ्ग ळोडुम्
आशैयै युऱ्ऱ वेलै कलङ्गवन् ऱण्णल् याक्कै
वीशिय कालिन् वीन्दु मिदन्दन मीन्ग ळॅल्लाम् 38

उलप्पिलात–अक्षुण्ण; उटम्पु–शरीर; ओचत्तै अमैन्तुटैय–एक योजन बड़ा है, ऐसा बना; अॅन्न–ऐसा; तेचमुम् नूलुम्–देशवासी और ग्रन्थ; चॉल्लुम्–जिनके बारे में कहते हैं; तिमिङ्किल किलङ्कळोटुम्–'तिमिंगिलगिलों' के साथ; आचैयै उऱ्ऱ वेलै–दिगन्त तक फैला हुआ सागर; कलङ्क–क्षुब्ध हुआ; अन्ऱ–तब; अण्णल् याक्कै–महान् हनुमान के शरीर से; वीचिय कालिन्–बहे पवन से; मीन्कळ् अॅल्लाम्–सभी मछलियाँ; वीन्तु मितन्तन–मरकर तिरे। ३८

उसके शरीर के वेग से चलने के कारण प्रबल रूप से पवन उठकर बहने लगा। तब ऐसे 'तिमिंगिलगिल' नामक जन्तुओं से, जिनके सम्बन्ध में लोक और ग्रन्थ कहते हैं कि उनका अक्षुण्ण शरीर एक योजन विस्तार का है, भरा समुद्र क्षुब्ध हो उठा। तब सभी मछलियाँ मरकर तिर गयीं। (तिमिंगिल से भी बड़े जन्तु को कवि तिमिंगिलगिल कहते हैं।)। ३८

पॉरुवरु मुरुवत् तन्नान् पोहिन्ऱ पोदु वेहम्
तरुवन्न तडक्कै तळ्ळा निमिर्च्चिय तम्मु ळॉप्प
ऑरुवरुङ् गुणत्तु वळ्ळ लोरुयिर्त् तम्बि यॅन्नुम्
इरुवरु मुन्नर्च् चॅन्ऱा लॉत्तदव् विरण्डु पालुम् 39

पॉरुवु अरुम्–अप्रमेय; उरुवत्तु अन्नान्–आकार वाला वह; पोकिन्ऱ पोतु–जब जाता रहा तब; वेकम् तरुवन्न–उसे वेग देनेवाले; तळ्ळा निमिर्च्चिय–विना थके बढ़े रहनेवाले; तम्मुळ् ऑप्प–परस्पर समान रहनेवाले; तटक्कै–विशाल हाथ; अ इरण्टु पालुम्–उसके दोनों पार्श्वों में; ऑरुवु अरुम्–अचल; कुणत्तु वळ्ळल्–गुणशील महानुभाव श्रीराम और; ओर् उयिर् तम्पि–उनका अनुपम प्राणप्यारे भाई लक्ष्मण; अॅन्नुम् इरुवरुम्–दोनों; मुन्नर् चॅन्ऱाल् ऑत्त–आगे जाते जैसे लगे। ३९

जब अतुल रूप से बढ़े अपने शरीर को ले हनुमान जा रहा था, तब उसके हस्त उसे गतिवेग दे रहे थे। वे हाथ परस्पर सम थे। वे थकते नहीं थे और सदा आगे रहते थे। उनको देखकर ऐसा लगा, मानो सद्गुण-सम्पन्न श्रीराम और उनके प्राणप्यारे अनुज लक्ष्मण दोनों उसकी रक्षा करते हुए बगल में आगे जा रहे हों। ३९

इन्नाह मन्ना नॅऱिहालॅन्न वेहुम् वेलॅत्
तिन्नाह माविऱ् चॅऱिकीळ्त्तिशै कावल् शॅय्युम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कैन्नाह मन्नाट् कडल्वन्ददीर् काट्चि तोन्ऱ्
मैन्नाह मॅन्नु मलैवानुऱ वन्द दन्ऱे 40

इ नाकम् अन्नान्–यह पर्वत-सम हनुमान; ऍऱि काल् ऍत–आँधी की तरह; एकुम् वेलै–जब जा रहा था; मैन्नाकम् ऍन्नुम् मलै–मैनाक कथित पर्वत; तिक् नाक माविल्–दिग्गजों में; चॅऱि कीऴ् तिचै–धनी पूर्व दिशा की; कावल् चॅय्युम्–रक्षा करनेवाला; कै नाकम्–शुण्डी; अ नाळ्–उस दिन; कटल् वन्ततु–(क्षीर-) सागर से उठ आये; ओर् काट्चि तोन्ऱ्–ऐसे एक दृश्य-सा उपस्थित करते हुए; वान् उऱ–आकाश को स्पर्श करते हुए; वन्ततु–आया। ४०

जब पर्वत-सम हनुमान आँधी के समान जा रहा था, तब मैनाकपर्वत आकाश को स्पर्श करता हुआ समुद्र से ऊपर उठ आया। तब वह उस ऐरावत गज के समान लगा जो आठ दिग्गजों में धनी पूर्व दिशा की रक्षा करनेवाला है। मैनाक का उठ आना, उस दिन ऐरावत के क्षीरसागर से उठ आने के समान लगा। ४०

मीयोङ्गु शॅम्बॊन् मुडियायिरम् मिन्नि मैप्प
ओया वरुवित् तिरळुत्तरि यत्तै यॊप्पत्
तीयो रुळरा हियकालवर् तीमै तीर्प्पान्
मायोन् महरक् कडन्निन्ऱॆऴु माण्ब दाहि 41

मी ओङ्कु–ऊपर उठे हुए; चॆम् पॊन् आयिरम् मुटि–लाल स्वर्णमय सहस्र शिखर; मिन् इमैप्प–चमक रहे थे; ओया अरुवित्तिरळ्–अक्षय नदी-समूह; उत्तरियत्तै ऒप्प–उत्तरीय के समान लगा; तीयोर् उळराकिय काल्–क्रूर लोग जब अत्याचार करते हैं तब; तीमै तीर्प्पान्–उनके दुष्कृत्यों के निराकरणार्थ; मायोन्–श्रीविष्णु; मकर कटल् निन्ऱ–मकरालय से; ऍऴुम् माण्पतु आकि–उठ आते, जैसी छवि के साथ। ४१

उस पर्वत का मकरालय से बाहर निकलकर आना मायावी श्रीविष्णु के 'दुष्कृतां विनाशाय' क्षीरसागर की शेषशय्या से उठकर आने के समान लगा। 'श्रीविष्णु सहस्रशीर्षाः पुरुषः' हैं। इस पर्वत के भी हज़ार लाल स्वर्णमय शिखर हैं, जिनसे कान्ति छूट रही है। श्रीविष्णु के उत्तरीय के स्थान पर पर्वत पर भी नित्य पूर्ण सरिताएँ बह रही हैं। मैनाक का एक नाम हिरण्यनाभ भी है। वह विष्णु का भी नाम है। ४१

नूलेन्दु केळ्वि नुहरार्पुल नोक्क लुऱ्ऱार्
पोलेन्दि निन्ऱ तनियाण्मॆय् पॊऱादु नीङ्गक्
कालाळ्न्द ऴुन्दिक् कडल्पुक्कुऴिक् कच्च माहि
मालेन्द वोङ्गु नॆऴमन्दर मेयु मान 42

नूल् एन्तु केळ्वि–शास्त्रोक्त ज्ञान; नुकरार्–जो नहीं सुनते; पुलन् नोक्कल् उऱ्ऱार्–और इन्द्रियानुयायी है उन; पोल्–के समान; एन्ति निन्ऱ–(क्षीरसागर-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मथन के समय मन्दरगिरि को) जो धारण करती रही; तऩियाळ्–वह निस्सहाय भूदेवी; मैय् पॊऱातु–शरीर न सह सकने से; नीङ्क–डगमगायी; काल्–मन्दरगिरि का नीचे का भाग; आऴुन्तु अऴुन्ति–गहरे धँसकर; कटल् पुक्कुऴि–समुद्र के अन्दर चला गया तब; माल्–मायापति (श्रीविष्णुदेव); कच्चम् आकि–कच्छप बनकर; एन्त–उसको अपनी पीठ पर धारण करने लगे; ओङ्कुम्–तब जो ऊपर आकर खड़ा रहा; नॆटु मन्तरमेयुम् मात–उस बड़े मन्दर के समान भी। ४२

क्षीरसागर-मथन के समय मन्दरपर्वत भूमि पर रखकर घुमाया गया। तब निस्सहाय भूदेवी उसको धारण नहीं कर सकी और मन्दरपर्वत उन लोगों की तरह नीचे जाने लगा, जो शास्त्रोक्त ज्ञान का अनुसरण न करके इन्द्रियों के दास बनकर विषय-भोग में लीन रहते हैं। तो श्रीविष्णु कच्छप बने और उन्होंने मन्दरपर्वत को अपनी पीठ पर रखवा लिया। उस मन्दरपर्वत के पुनः उठते वक़्त जैसा दृश्य था वैसा ही दृश्य अब इस उठते हुए मैनाक पर्वत का था। ४२

तळ्ळऱ् करुनऱ् चिऱैमाडु तऩैप्पॊ डोङ्ग
ऎळ्ळऱ् करुनऩ् निऱमॆल्लै यिलादु पॊङ्ग
वळ्ळऱ् कडलैक् कॆडनीक्कि मरुन्दु वौवि
उळ्ळुऱ् ऱॆऴुमो रुवणत्तर शेयु मॊप्प 43

तळ्ळऱ्कु अरु–दुर्निवार; नल् चिऱै–श्रेष्ठ पक्ष; माटु–पार्श्वों में; तऩैप्पॊटु ओङ्क–पुष्कल रीति से उठे हुए थे; ऎळ्ळऱ्कु अरु–अनिंद्य; नल् निऱम्–अच्छी छवि; ऎल्लै इलातु–असीम रीति से; पॊङ्क–बिखरी; वळ्ळल् कटलै–समृद्ध सागर को; कॆट नीक्कि–विकृत करते हुए चीरकर; मरुन्तु वौवि–अमृत पकड़ते हुए; उळ्ळुऱ्ऱु ऎऴुम्–समुद्र के अन्दर से बाहर उठ आनेवाले; ओर् उवणत्तु अरचेयुम्–अनुपम पक्षीराज गरुड़; ऒप्प–के भी समान। ४३

वह गरुड़राज के समान भी लगा। दुर्वार दो घने पक्षों को दोनों बाजुओं में ले, अनिंद्य आकर्षक देहकान्ति बिखेरते हुए जलसमृद्ध समुद्र को चीरकर गरुड़ गया और अमृत ग्रहणकर उस समुद्र से बाहर निकला था। उस समय का-सा दृश्य अब यह पर्वत उपस्थित कर रहा था। ४३

आऩ्ऱाऴ् नॆडुनीरिडै यादियॊ डन्द माहित्
तोऩ्ऱादु निऩ्ऱा नरुडोऩ्ऱिड मुन्दु तोन्ऱुम्
मूऩ्ऱा मुलहत् तॊडुमुऱ्ऱुयि राय मुऱ्ऱुम्
ईऩ्ऱानै यीऩ्ऱ शुवणत्तऩि यण्ड मॆन्न 44

आऩ्ऱु आऴ्–बहुत गहरे; नॆटु नीरिटै–प्रलयसागर में; आतियॊटु अन्तम् आकि–आदि व अन्त; तोऩ्ऱातु–न जानने देते हुए; निऩ्ऱाऩ्–जो खड़े रहे; अरुळ् तोऩ्ऱिट–उन श्रीविष्णु के मन में (सृष्टि की) कृपा के उदित होने पर; मुन्तु तोऩ्ऱुम्–सर्वप्रथम जो प्रकट हुए; मूऩ्ऱु आम् उलकत्तॊटम्–त्रिभुवनों के साथ; मुऱ्ऱु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उयिराय–पूर्ण जीवों के साथ; मुऱ्ऱुम् ईऩ्ऱानै–(जिन्होंने) सभी का सृजन किया; ईऩ्ऱ–उन ब्रह्मा को; ईऩ्ऱ–जिसने बाहर प्रकट कराया; तऩि चुवण अण्टम् अॅऩ–उस अप्रतिम स्वर्ण के अण्डे के समान। ४४

प्रलय के दिनों में आदि और अन्त प्रकट न होने देते हुए विश्वरूप में रहे श्रीनारायणदेव। उनके मन में सृष्टि रचने की इच्छा हुई। तब एक अण्ड हुआ, जिससे लोकसर्जक, आदिसृष्टि ब्रह्मा उद्भूत हुए। यह पर्वत उस स्वर्णअण्ड के समान लगा। ४४

इऩ्नीरि लॅऩ्नैत् तरुमॅऩ्दैयै यॅय्दि यऩ्ऱिच्
चॅऩ्नीर्मै शॅय्ये ऩॅऩच्चिऩ्दऩै शॅय्दु नॉय्दिऩ्
अऩ्नीरिल् वऩ्द मुदलऩ्दण ऩादि नाळम्
मुऩ्नीरिल् मूऴ्हित् तवमुऱ्ऱि मुळैत्त वापोल् 45

अऩ् नीरिल्–उस प्रलयजल में; नॉय्तिऩ् वऩ्त–शीघ्र जो प्रगट हुए; मुतल् अऩ्तणऩ्–पहले ब्राह्मण ब्रह्मा; इऩ्नीरिल्–इस जल में; अॅऩ्ऩै तरुम्–मेरे सर्जक; अॅऩ्तैयै–मेरे जनक को; अॅय्ति अऩ्ऱि–प्राप्त किये विना; चॅऩ्नीर्मै–अपना श्रेष्ठ काम; चॅय्येऩ् अॅऩ–नहीं करूँगा, ऐसा; चिऩ्तऩै चॅय्तु–सोचकर; आति नाळ्–प्रथम दिवस; अ मुऩ्नीरिऩ्–उस समुद्र में; मूऴ्कि–मग्न रहकर; तवम् मुऱ्ऱि–तप पूरा करके; मुळैत्तवा पोल्–बाहर उग आये, वैसे ही। ४५

उस प्रलयजल से उत्पन्न ब्रह्मा ने संकल्प किया कि अपने सर्जक नारायण के प्रत्यक्ष दर्शन किये विना मैं अपने सृष्टिकर्म में न लगूँगा; तो उसी प्रथम दिवस में वह उस जल के अन्दर तपस्या करने पैठ गये। तप पूरा करके जो वे बाहर निकल आये, उनके भी समान दिखा यह पर्वत। ४५

पूवालिडै यूऱु पुहुऩ्दु पॉऱादु नॅञ्जिल्
कोवामुऩि शीऱ्ऱिड वेलै कुळित्त वॅल्लाम्
मूवामुद ऩायहऩ् मीळ मुयऩ्ऱ वऩ्नाळ्
तेवाशुरर् वेलैयिल् वऩ्दॅऴु तिङ्ग ळॅऩ्ऩ 46

पूवाल्–माला के कारण; इटैयूऱु पुकुऩ्तु–बाधा आयी; नॅञ्चिल् पॉऱातु–मन की क्षमा खोकर; कोवा मुऩि–गुस्सेवर (दुर्वासा) मुनि के; चीऱ्ऱिट–कोप से शाप देने पर; वेलै कुळित्त–जो समुद्र में चले गये; अॅल्लाम्–वे सब; मीळ–फिर से मिलें, तदर्थ; मूवा–अमर; मुतल् नायकऩ्–आदिदेव (की आज्ञा से); तेवाचुरर् मुयऩ्ऱ–देवों और असुरों ने जिस दिन प्रयत्न किया; अनाळ्–उस दिन; वेलैयिल्–उस सागर से; वऩ्तु अॅऴु–उठ जो आया; तिङ्कळ् अॅऩ्ऩ–उस चन्द्र के समान। ४६

(दुर्वासा ने श्रीलक्ष्मी की भक्तिन से प्राप्त माला इन्द्र को दी। उसने उसे ऐरावत को पहना दिया।) उस माला सम्बन्धी (इन्द्र के दर्पपूर्ण अभद्र) व्यवहार से कष्ट हो गया। (अपमान न सह सककर क्रोधी स्वभाव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के) दुर्वासा कुपित हुए। उसके फलस्वरूप देव-वैभव सारे समुद्र में जाकर डूब गये। उनको फिर से बाहर लेने के लिए अमर आदिनायक श्रीविष्णु ने उपाय बताया और तदनुसार देवों और असुरों ने क्षीरसागर-मंथन किया। उस समय पूर्णचन्द्र उग आया था। उसी के समान लगा मैनाक। ४६

निऱङ्गुङ्गुम मॊप्पऩ नीनिऱम् वाय्न्द नीरिन्
इऱङ्गुम्बव ऴक्कॊडि शुऱ्ऱिऩ शॆम्बॊ ऩेय्न्द
पिऱङ्गुञ्जिह रप्पडर् मुन्ऱि ऱॊऱुम्बि णावो
डुऱङ्गुम्महृ रङ्ग ऴुयिर्प्पॊ डुणर्न्दु पेर 47

निऱम्–रंग में; कुङ्कुमम् ऒप्पऩ–कुंकुम के समान हैं; नील् नीऱम् वाय्न्त–नीले रंग से भी युक्त; नीरिन् इऱङ्कुम्–जल में फैलनेवाली; पवऴक्कॊटि–प्रवाल-लताओं से; चुऱ्ऱिऩ–आवृत; चॆम् पॊऩ् एय्न्त–लाल स्वर्णमय; पिऱङ्कुम्–शोभाशाली; चिकरम् पटर्–शिखरों के; मुन्ऱिल् तोऱुम्–अग्रभागों में; पिणाऒटु–अपनी स्त्री-जातियों के साथ; उऱङ्कुम्–सोनेवाले; मकरङ्कऴ्–मगरमच्छ; उयिर्प्पॊटु–निःश्वास के साथ; उणर्न्तु–जागकर; पेर–जाने लगे (ऐसा)। ४७

मैनाक के शिखर कुंकुम वर्ण के भी थे। उन पर नीला रंग भी फैला था। जल में फैलनेवाली प्रवाललताएँ उनको लपेटे थीं। उन पर लाल स्वर्ण जमा था और उनसे कान्ति छूट रही थी। उन शिखरों के तलों पर मगरमच्छ अपनी स्त्री-मच्छों के साथ जो रहे थे, अब वे जागकर इधर-उधर भागने लगे। ऐसे दृश्यों के साथ वह पर्वत निकल आ रहा था। ४७

कूऩ्शूऩ्मुदि रिप्पि कुरैक्क निरैत्त पाशि
वाऩ्शूऩ्मऴै यॊप्प वयङ्गु पळिङ्गु मुऩ्ऱिल्
ताऩ्शूलि ऩाळिऱ् ऱहैमुत्त मुयिर्त्त शङ्गम्
मीऩ्शूऴ्वरु मम्मुऴु वॆण्मदि वीऱु कीऱ 48

वाऩ् चूल् मऴै ऒप्प—आकाश के जलगर्भित मेघों के समान; निरैत्त पाचि–उस पर्वत पर जमी हुई परतों की काई; वयङ्कु–जिन पर रहती है उन; पळिङ्कु मुऩ्ऱिल्–स्फटिक पत्थर के आँगनों में; कूऩ्–वक्र; चूल् मुतिर्–पूर्ण-गर्भ; इप्पि–सीपियाँ; कुरैक्क–स्वर करती हैं; चङ्कम्–शंख; चूलि नाळिल्–प्रसव-समय; ताऩ् उयिर्त्त–जनित; तकै मुत्तम्–श्रेष्ठ मोतियों के साथ; मीऩ् चूऴ् वरुम्–ताराओं से घिरे हुए; अ वॆण् मुऴु मति–उस श्वेत पूर्ण चन्द्र का; वीऱु कीऱ–शान कम करते हुए। ४८

उस पर्वत के अग्रभाग के स्फटिक पत्थरों पर आकाश के जलगर्भित मेघों के समान काई फैली थी। उसमें रहकर वक्र रूप की गर्भिणी शुक्तियाँ नाद उठा रही थीं। शंखों के जनाये मोती बिखरे पड़े थे। इस साज में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वह पर्वत उस श्वेत पूर्णचन्द्र के शान को कम करता हुआ उठ रहा था, जिसके चारों ओर तारागण घेरे आ रहे हों। ४८

पल्लायिर मायिरङ् गाशिऩम् बाडि मैक्कुम्
कल्लार्शिम यत्तडङ् गैत्तल नीण्डु काट्टित्
तॊल्लार्हलि युट्पुह मूऴ्हि वयङ्गु तोऱ्ऱत्
तॆल्लामणि यीट्ट मुहन्दॆऴु वानु मॆऩ्ऩ 49

पल् आयिरम् आयिरम्–अनेक सहस्र-सहस्र; काचु इऩम्–रत्नराशियाँ; पाटु इमैक्कुम्–सुन्दर रूप से कान्ति बिखेरती हैं; कल् आर् चिमय तटम्–प्रस्तरमय शिखर-तल; कै तलम्–(रूपी) हाथों को; नीण्टु काट्टि–बढ़ाते हुए; तॊल् आर् कलियुऴ्–प्राचीन समुद्र में; पुक मूऴ्कि–(मोती-संग्रह करने हेतु) गोते लगाकर; वयङ्कु तोऱ्ऱत्तु–उज्ज्वल रूप के; ऎल्ला मणि ईट्टम्–सारे मोतियों के समूहों को; मुकन्तु–लेते हुए; ऎऴुवातुम् ऎऩ्ऩ–ऊपर उठ आनेवाले (गोताखोरों) के समान भी। ४९

उसके शिखर ऊपर बढ़े हुए थे और उन पर सहस्र-सहस्र रत्न चमक रहे थे। वे शिखर उसके हाथों के समान थे। इसलिए वह उस गोताखोर के समान लगा जो प्राचीन समुद्र में डूबकर अपने हाथों में अत्युज्ज्वल मणियों की राशियाँ लेते हुए बाहर निकल आ रहा हो। ४९

मऩैयिऱ्पॊलि माह नॆडुङ्गॊडि मालै येय्प्प
विऩैयिऱ्पॊलि वॆळ्ळरु वित्तिर डूङ्गि वीऴ
निऩैविऱ्कड लूडॆऴ लोडु मुणर्न्दु नीङ्गाच्
चुऩैयिऱ्पऩै मीऩ्ऱिमि लोडु तॊडर्न्दु तुळ्ळ 50

निऩैविल्–कुछ निश्चय करके; कटलूटु ऎऴलोटुम्–समुद्र से जब पर्वत उठ आया; मऩैयिल् पॊलि–भवनों में शोभा के साथ विद्यमान; माक नॆटुङ्कॊटि मालै–आकाश-व्यापी पताकाओं की श्रेणी; एय्प्प–के समान; विऩैयिल् पॊलि–पुण्य के समान रहनेवाले; वॆळ् अरुवि तिरळ्–श्वेत रंग के झरने; तूङ्कि वीऴ–ऊपर से नीचे बहते हैं; पऩै मीऩ् तिमिलोटु–(जिनमें) पऩै नामक मछलियाँ, तिमिल नामक मच्छों के साथ; नीङ्का–अटल रहती हैं; चुऩैयिल्–उन पर्वतीय तालाबों से; उणर्न्तु–बात समझकर; तॊटर्न्तु तुळ्ळ–क्रम से उछलती हैं, ऐसे। ५०

वह पर्वत कोई संकल्प लेकर उठ आ रहा था। तब उस पर बहनेवाली सरिताएँ भवनों पर फहरानेवाली आकाशव्यापी पताकाओं की राशियों और सत्कर्मों के समान (जो निरन्तर क्रियाशील हैं) लगीं। तब वहाँ के स्रोतों से 'पऩै' और 'तिमिल' नामक मच्छ स्थिति समझकर इधर-उधर तड़पकर भागने लगे। वे उन स्रोतों में बहुत दिनों से थे और उनसे कभी अलग नहीं हुए थे। ५०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कॊडुनालॊ डिरण्डु कुलप्पहै कुऱ्ऱ मूनऱुम्
शुडुञानम् वॆळिप्पड वुय्न्द तुयक्कि लार्बोल्
विडनाह मुळैत्तलै विम्म लुळन्दु वीङ्गि
नॆडुनाळ् पॊऱैयुऱ्ऱ वुयिर्प्पु निमिर्न्दु निऱ्प 51

कॊटुम्-क्रूर; नालॊटु इरण्टु-चार के साथ दो (छः); कुल पकै-शत्रुसमूह; मूनऱु कुऱ्ऱमुम्-तीन दोष; चुटु-दग्धकारी; ञानम्-ज्ञान के; वॆळिप्पट-प्रकट होने पर; उय्न्त-उससे बचे हुए; तुयक्किलार् पोल-निर्लिप्तों के समान; मुळैत्तलै-कन्दराओं में; नॆटु नाळ्-बहुत दिनों से; विम्मल् उळन्तु-दम घुटकर कष्ट उठाने से; वीङ्कि-शरीर सूझकर; पॊऱै उऱ्ऱ-बन्द रहे; विट नाकम्-विषैले सर्प के; उयिर्प्पु-साँस के; निमिर्न्तु निऱ्प-उत्थित होते (वह पर्वत उठा)। ५१

काम-क्रोधादि षड्रिपुओं को और त्रिदोषों (अज्ञान, अन्यथा ज्ञान और विपरीत ज्ञान) के दाहक, सच्चे ज्ञान-प्राप्त व निर्लिप्त महात्माओं के समान कन्दराओं में, जो बहुत दिन से दम घुटने से व्यथित पड़े थे, उन व्यालों के श्वास चलने लगे थे। यह साध्य करता हुआ वह पर्वत ऊपर उठा। ५१

ऎळुन्दोडि विण्णोडु मण्णॊक्क विलङ्गु माडि
उळुन्दोडु कालत् तिडैयुम्बरि नुम्ब रोङ्गिक्
कॊळुन्दोडि निन्ऱ कॊळुङ्गुन्ऱै वियन्दु नोक्कि
अळुन्दामनत् तण्ण लिदॆन्गॊ लॆनाव यिर्त्तान् 52

इलङ्कुम् आटि-प्रकाशमय आईने पर; उळुन्तु ओटु-उड़द के दौड़ने के; कालत्तु इटै-काल में; ऎळुन्तु ओटि-ऊपर आकर जो फैला रहा; विण्णॊटु मण् कालत्तु इटै-काल में; ऎळुन्तु ओटि-ऊपर आकर जो फैला रहा; विण्णॊटु मण् ऒक्क-आकाश-भूमि को एक करके; उम्परिन् उम्पर ओङ्कि-आकाश पर सर्वत्र छाकर; कॊळुन्तु ओटि-शिखर फैलाकर; निन्ऱ-जो स्थित रहा; कॊळुम् कुन्ऱै-बड़े पर्वत को; अळुन्ता मनत्तु-अदम्य-मन; अण्णल्-महिमावान ने; नोक्कि वियन्तु-देखकर विस्मित होकर; इतु ऎन् कॊल्-यह क्या है; ऎना-ऐसा; अयिर्त्तान्-संशय किया। ५२

एक शीशे पर उड़द का एक दाना जितनी कम देरी में लुढ़कता चला जायगा, उतनी देर के अन्दर मैनाक जल के ऊपर उठा और भूमि और आकाश में सर्वत्र व्याप गया। वह आकाश के ऊपर भी चला गया। अदम्य-मन महान् हनुमान ने इसको देखा, और विस्मित होकर संशय किया कि यह क्या है ? । ५२

नीर्मेऱ् पडर्नन् नॆडुङ्गुन्ऱु निमिर्न्दु निऱ्ऱल्
शीर्मेऱ् पडरा दॆनच्चिन्दै युणर्न्दु शॆल्वान्
वेर्मेऱ् पडवन् ऱलैकॊळ्प्पड नूक्कि विण्णोर्
ऊर्मेऱ् पडरक् कडिदुम्बरि नूडु पायन्दान् 53

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीर् मेल्–समुद्र-जल पर; पटर्–व्याप्त; नल् नॅटुम् कुन्ऱु–अच्छा और बड़ा पर्वत; निमिर्न्तु निऱ्ऱल्–जो उन्नत खड़ा रहा वह काम; चीर् मेल् पटरातु–अच्छे उद्देश्य का नहीं होगा; अॅन्ऱ–ऐसा; चिन्तै उणर्न्तु–मन में सोचकर; चॅल्वान्–जो जाता रहा वह; वेर् मेल् पट–निचले भाग को ऊपर; वत् तलै कीऴ् पट–बलवान सिर का भाग नीचे करके; नूक्कि–ढकेलकर; विण्णोर् ऊर् मेल् पटर–देवलोक पर व्यापने के विचार से; उम्परित् ऊटु–अन्तरिक्ष में; कटितु पाय्न्तान्–वेग से चला। ५३

इस तरह उस पर्वत का सामने आकर तनकर खड़ा रहना अच्छे आशय का नहीं हो सकता। यह सोचकर हनुमान ने आगे बढ़कर उसे ऐसा ढकेल दिया कि उसका सिर नीचे की ओर और तल ऊपर की ओर आ गया। हनुमान आकाश में देवलोक की ओर उठा। ५३

उन्दामु तुलैन्दुयर् वेलै यॊळित्त कुन्ऱम्
शिन्दाकुल मुऱ्ऱतु पिन्नरुन् दीर्वि लन्बाल्
वन्दोङ्गि याण्डोर् शिऱुमानिड वेड माहि
ऍन्दायिदु केळॅन् विन्न विशैत्त दन्ऱे 54

उयर् वेलै–उत्तुंग (तरंगों वाले) समुद्र में; ऒळित्त कुन्ऱम्–छिपा रहा वह (मैनाक) पर्वत; उन्ता मुन्–उससे ढकेला जाकर; उलैन्तु–संकटग्रस्त होकर; चिन्ताकुलम् उऱ्ऱतु–चिन्ताकुल हुआ; पिन्नरुम्–बाद भी; तीर्विल्–अक्षय; अन्पाल्–प्रेम से; आण्टु–वहाँ; ओर् चिऱु–एक छोटे; मानिट वेटम् आकि–मनुष्य का रूप ले; वन्तु ओङ्कि–आकर सीधे खड़े होकर; ऍन्ताय्–मेरे तात; इतु केळ्–यह सुनो; ऍन्ऱ–ऐसा कहकर; इन्न इचैत्ततु–यों बोला। ५४

इस व्यवहार से मैनाक के शरीर में चोट और मन में टीस लगी। बहुत दिन से समुद्र के अन्दर छिपा-लुका पड़ा रहा वह प्रेम से प्रेरित होकर उठ आया था। अब उस अटल प्रेम के कारण वह एक छोटा मानव-रूप धरकर हनुमान के पास आकर खड़ा हुआ और बोला। मेरे तात! सुनो। ५४

वेऱ्ऱुप् पुलत्तो नलनैय विलङ्ग लॅल्लाम्
माऱ्ऱुच् चिऱैयॅन् ऱरिवच्चिर माण वोच्च
वीऱ्ऱुप् पडनू रियवेलैयिन् वेलै युय्त्तुक्
काऱ्ऱुक् किऱैव नॅनैक्कात्तन नन्बु कान्द 55

ऐय–तात; वेऱ्ऱुप् पुलत्तोन्–शत्रु; अलन्–नहीं हूँ; अरि–इन्द्र ने; विलङ्कल् ऍल्लाम्–सभी पर्वतों के; चिऱै माऱ्ऱु–पक्षों को दूर करो; ऍन्ऱु–कहकर; वच्चिरम्–वज्रायुध को; माण ओच्च–खूब चलाया; वीऱ्ऱुप्पट–पक्ष अलग हों ऐसा; नूरिय वेलैयिन्–काटा जब गया तब; काऱ्ऱुक्कु इऱैवन्–पवनदेव ने; अन्पु कान्त–प्रेम प्रकट करके; ऍन्ऱै–मुझे; वेलै उय्त्तु–समुद्र में पहुँचाकर; कात्तनन्–बचाया। ५५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मित्र ! मैं विरोधी पक्ष का नहीं हूँ। जब इन्द्र ने पर्वतों के पक्षों को छेदने के लिए वज्र चलाया तब पवनदेव ने मुझ पर प्रेम प्रकट करके मुझे समुद्र में छोड़ा और मेरी जान बचायी। ५५

अन्नानरुङ् गादल नादलि नन्बु तूण्ड
ऍन्नालुनक् कीण्डु शॅयर्कुरित् ताय तन्मै
पॉन्नार्शिह रत्तिरै यारिनै पोदि यॅन्रे
उन्नावुयर्न् देनुयर् विर्कु मुयर्न्द तोळाय् 56

उयर्विर्कुम्–उन्नत से भी; उयर्न्त–बढ़े हुए; तोळाय्–कन्धों वाले; अन्नान्–उस (पवनदेव) के; अरुम् कातलन्–प्यारे पुत्र हो तुम; आतलिन्–इसलिए; अन्नपु तूण्ट–प्रेम से प्रेरित होकर; ऍन्नाल्–अपने से; उनक्कु–तुम्हारे प्रति; चॅयर्कु उरित्ताकिय–करणीय; तन्मै–काम; पॉन् आर् चिकरत्तु–स्वर्णमय शिखर-प्रदेश पर; इरै–थोड़ी देर; आरिनै–विश्राम कर लो और; पोति–जाओ; ऍन्रे–ऐसा; उन्ना–कहने के लिए ही; उयर्न्तेन्–समुद्र के ऊपर बढ़ आया। ५६

ऊँचे से ऊँचे कन्धों वाले ! तुम उस वायुदेव के प्यारे पुत्र हो। इसलिए प्रेम से प्रेरित होकर मैं तुम्हें कुछ करूँ वह यही है कि तुम मेरे स्वर्ण-भरे शिखर पर कुछ देर विश्राम करके जाओ। यही सोचकर मैं ऊपर आया हूँ। ५६

कार्मेहवण् णन्बणि पूण्डवन् कालिन् मैन्दन्
तेर्वान्वरु हिन्रनन् शीदैयैत् तेव रुय्यप्
पेर्वानयल् शेरि यिदिर्पॅरुम् बेरि लॅन्न
नीर्वेलैयु मिन्न दुरैत्तदु नीदि निन्राय् 57

नीति निन्राय्–नीतिनिष्ठ; नीर् वेलैयुम्–जलसमृद्ध समुद्र; कार् मेक वण्णन्–मेघश्याम की; पणि पूण्टवन्–सेवा का व्रती; कालिन् मैन्तन्–और पवनकुमार; तेवर् उय्य–देवों को तारने हेतु; चीतैयै तेर्वान्–सीता को खोजते हुए; पेर्वान्–जानेवाला; वरुकिन्रनन्–आ रहा है; अयल् चेरि–उसके पास जाओ; इतिल्–इससे; पॅरुम् पेरु–बड़ा भाग्य; इल्–नहीं; ऍन्न–ऐसा; इन्नतु–ये वचन; उरैत्तत्तु–बोला। ५७

हे नीतिनिष्ठ ! जल-भरे समुद्र ने भी मुझसे कहा कि मेघश्याम श्रीराम की सेवा में प्रवृत्त पवनकुमार देवों के रक्षणार्थ सीताजी की खोज में जाता हुआ आ रहा है। उसके पास जाओ। इससे बढ़कर कोई सौभाग्य नहीं है। ५७

नर्रायिनु नल्ल नमक्किव नॅन्रु नाडि
इर्रेयिरै यॅय्वियि शॅन्ददु कोडि यॅन्नाल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊऱ्ऱारहन् मार्बद मिल्लुऴै वन्द पोदे
उऱ्ऱार्शॆयन् मऱ्ऱुमुण् डोवॆऩ वुऱ्ऱु रैत्तान् 58

पॊन् तार्–स्वर्णहारालंकृत; अकल् मार्प–विशाल वक्ष वाले; इवन्–यह; नल् तायिनुम्–अच्छी माता से भी; नमक्कु नल्लन्–हमारे लिए हितकारी है; ऍऩ्ऱु नाटि–ऐसा मानकर; इऱ्ऱै–अभी; इऱै ऍय्ति–कुछ देर आकर; ऍऩ्ऩाल् इचैन्ततु–मुझसे जो हो सकता है; कोटि–उसको ग्रहण करो; तम् इल् उऴै–अपने गृह में; वन्त पोते–आते ही; उऱ्ऱार्–घर का स्वामी; चॆयल् मऱ्ऱुम् उण्टो–दूसरा काम करेगा क्या; ऍऩ–ऐसा; उऱ्ऱु–पास आकर; उरैत्तान्–(मैनाक ने) कहा। ५८

मैनाक आगे बोला। स्वर्णहारालंकृत विशाल वक्ष वाले! मेरे सम्बन्ध में यह मानो कि 'यह माता से भी हितू है!' अभी थोड़ी देर मुझ पर विश्राम करो और मेरा अल्प आतिथ्य ग्रहण करो। अपने घर पर किसी को आते देखकर तभी उसका आतिथ्य करो —इससे बढ़कर कर्तव्य क्या है?। ५८

उरैत्तानुरै यालिव ऩऱिल ऩॆन्ब दुऩ्ऩि
विरैत्तामरै वाण्मुहम् विट्टुवि ळङ्ग वीरन्
शिरित्तानळ वेशिऱि दत्तिशैच् चॆल्ल नोक्कि
वरैत्ताणॆडुम् पॊऱ्कुडु मित्तलै माडु कॊण्डान् 59

वीरन्–प्रतापी; उरैत्तान् उरैयाल्–वक्ता के वचन से; इवन् ऊऱु इलऩ्–यह निर्दोष है; ऍऩ्पतु उऩ्ऩि–यह बात मानकर; विरै तामरै मुकम्–सुगन्धित कमल-सा मुख; वाळ् विट्टु विळङ्क–उज्ज्वल रूप से शोभायमान हो, ऐसा (प्रसन्न) हो करके; चिऱितु अळवे चिरित्तान्–थोड़ा मुस्कुराया; अ तिचै नोक्कि–उस दिशा की तरफ़; चॆल्ल–गया; ताळ् वरै–तलहटियों-सहित; ऩॆटुम् पॊऩ् कुटुमि–उन्नत स्वर्णमय शिखरों वाले उस पर्वत के; तलै माटु कॊण्टान्—ऊपरी भाग के पास गया। ५९

महावीर ने मैनाक का वचन सुना। समझ गया कि यह अहित करनेवाला नहीं है। उसके सुगन्धित कमल-सम आनन को अधिक शोभित करते हुए हनुमान के मुख में एक मन्दहास उत्पन्न हुआ। वह उस मैनाक की दिशा में जाकर तलहटियों-सहित उस मैनाक के स्वर्णमय शिखर-प्रदेश में रुका। ५९

वरुन्देऩदु वॆऩ्ऱुणै वाऩवन् वैत्त कादल्
अरुन्देऩिऩि यादुमॆऩ् ऩाशै निरप्पि यल्लाल्
पॆरुन्देऩ्पिऴि शारनित् ऩऩ्बु पिणित्त पोदे
इरुन्देऩुहर्न् देऩिदन् मेलिऩि यीव दॆऩ्ऩो 60

वरुन्तेऩ्–संकट नहीं पाऊँगा; अतु–वह; ऍऩ् तुणै–मेरे सहायक; वाऩवऩ्–देव (श्रीराम); वैत्त कातल्–मुझ पर जो रखते हैं, उस प्रेम का फल है; इऩि–अब भी; ऍऩ् आचै निरप्पि अल्लाल्–अपनी कामना पूरी किये बिना; यातुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरुन्तेन्-कुछ नहीं खाऊँगा; निन् अन्पु-तुम्हारा प्यार; पॅरुम् तेन् पिऴि-अति मधुर मधु-रस; चार-मिला है; पिणित्त पोते—उसने जब मुझे बद्ध किया तभी; इरुन्तेन् नुकर्न्तेन्-ठहरकर भुगतनेवाला बन गया; इनि-अब; इतन् मेल्-इससे बढ़कर; ईवतु ऍन्नो-देने के लिए क्या रखा है। ६०

हनुमान ने कहा। मैं यात्रा से श्रांत नहीं होऊँगा। मेरे सहायक प्रभु श्रीराम की मुझ पर कृपा उसका कारण है। मेरी कामना पूरी नहीं हो तब तक कुछ नहीं खाऊँगा। तुम्हारे प्रेम ने बहुत ही प्रिय शहद के-से मधुर रस के साथ मुझे बद्ध कर लिया। उसी से मेरा ठहरना और आतिथ्य भोगना हो गया, समझो। इससे बढ़कर तुम दोगे क्या ?। ६०

मुन्बिर्चिरन् दारिडै युळ्ळवर् कादन् मुऱ्ऱप्
पिन्बिर्चिरन् दार्गुण नन्ऱिदु पॅऱ्ऱ याक्कैक्
कॅन्बिर्चिरन् दायदॊ रूऱ्ऱमुण् डॅन्न लामे
अन्बिर्चिरन् दायदॊर् पूशनै यार्ह णुण्डे 61

मुन्पिन्-बल में; चिऱन्तारिटै-श्रेष्ठ लोगों पर; कातल् उळ्ळवर्-प्यार रखनेवाले; मुऱ्ऱ-प्रेम के बढ़ने से; पिन्पिऱ् चिऱन्तार्—पीछे श्रेष्ठ बन जाते हैं; कुणम् नन्ऱितु-यह गुण उत्तम ही है; पॅऱ्ऱ याक्कैक्कु-प्राप्त शरीर को; ऍन्पिल् चिऱन्तायतु-अस्थि से बढ़कर; ओर् ऊऱ्ऱम्-बलदायक; उण्टु-और कोई है; ऍन्नलामे-ऐसा कहा जा सकता है क्या; पूचनै-पूजा-सत्कार में; अन्पिन् चिऱन्तु आयतु-प्यार से बढ़कर कुछ; ऊऱ्ऱम्-बल; यार्कण्-किसके पास; उण्टु-है। ६१

धार्मिक बल में श्रेष्ठ महानों के प्रति प्रेम रखनेवाले पीछे जीवन में श्रेष्ठ बन जाते हैं। यह गुण अच्छा ही है। (प्रारब्ध-) प्राप्त इस शरीर को बल देनेवाला, अस्थि को छोड़कर और किसी को कह सकते हैं क्या ? वैसे ही वन्दना के लिए प्रेम से बढ़कर बल किसके पास है ?। ६१

ईण्डेकडि देहि विलङ्ग लिलङ्गै यॅय्दि
आण्डानडि मैत्तॊऴि लाऱ्ऱलि नाऱ्ऱ लुण्डे
मीण्डानुहर् वेनुन् विरुन्दॅन वेण्डि मॅय्म्मै
पूण्डानवन् कट्पुलम् बिऱ्पड मुन्बु पोनान् 62

मॅय्म्मै पूण्टान्-सत्यवान; ईण्टे-अभी; कटितु एकि-शीघ्र जाकर; विलङ्कल् इलङ्कै-(त्रिकूट) पर्वत पर स्थित लंका में; ऍय्ति-जाकर; आण्टान्-मेरे स्वामी का; अटिमै तॊऴिल्-दास-योग्य काम; आऱ्ऱलिन्-पूरा करने से; आऱ्ऱल् उण्टे-दूसरा कार्य है क्या; मीण्टाल्-लौट आऊँ तब; नुन् विरुन्तु-तुम्हारी दावत; नुकर्वेन्-भोगूँगा; ऍन्न-कहकर; वेण्टि-प्रार्थना करके; अवन् कट्पुलम्-मैनाक की दृष्टि; पिन् पट-बिछुड़ जाय ऐसा; मुन्पु पोनान्-आगे गया। ६२

सत्यसंध हनुमान ने आगे कहा। अभी त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका जाऊँ, अपने स्वामी श्रीराम की सेवा का कर्तव्य अदा करूँ, इसके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अतिरिक्त कोई कर्तव्य है क्या ? वह काम पूरा करके लौट आऊँ, तब मैं तुम्हारा आतिथ्य स्वीकार अवश्य करूँगा। फिर उसने मैनाक से विदा माँगी और वह इतनी तेज़ी से इतनी दूर आगे बढ़ गया कि मैनाक की दृष्टि पीछे रह गयी। ६२

शॆव्वान्कदि रुङ्गुळिर् तिङ्गळुन् देवर् वैहुम्
वॆव्वेरु विमानमु मीनॊडु मेह मऱ्ऱुम्
ऍव्वायुल हत्तवु मीण्डि यिरिन्द तम्मिल्
ऒव्वादन वॊत्तिड वूळिवॆङ् गालु मॊत्तान् 63

चॆव् वान् कतिरुम्–लाल गगन में शोभित किरणमाली; कुळिर् तिङ्कळुम्–और शीतल चन्द्र; तेवर् वैकुम्–देव जिनमें वास करते थे; वॆव्वेरु विमानमुम्–वे विविध विमान; मीनॊटु–नक्षत्र; मेकम्–मेघ; मऱ्ऱुम् ऍवायवुम्–और अन्य सभी स्थानों में रहनेवाले; उलकत्तवुम्–लोकों के; ईण्टि–एक स्थान पर आकृष्ट होकर; इरिन्त तम्मिल्–फिर जो तितर-बितर हुए; ऒव्वातन–कभी जो पहले साथ नहीं थे; ऒत्तिट–उनको साथ करते हुए; ऊळि वॆम् कालुम् ऒत्तान्–युगान्त की वायु के समान भी रहा। ६३

युगान्त के पवन के वेग में सब वस्तुएँ तितर-बितर हो जाती हैं और आपस में इस तरह मिल जाती हैं जैसे वे पहले नहीं मिली थीं। उसी पवन के समान हनुमान बढ़ता चला कि लाल गगन के किरणमाली और शीतल चन्द्र, नक्षत्र, देवों के यान और मेघ और अन्य सारे लोकों के सभी पदार्थ ऐसे विक्षिप्त हुए कि उनमें अभूतपूर्व सहवास हो गया। ६३

नीर्मेऱ्कडन् मेनिमिर् हिन्ऱ निमिर्च्चि नोक्काप्
पार्मेऱ्ऱवळ् शेवडि पाय्नड वाप्प दत्तॆन्
तेर्मेऱ्कुदि कॊण्डव नित्तिऱञ् जिन्दै शॆय्दान्
आर्मेऱ्कॊलॆन् ऱॆण्णि यरुक्कनु मैय मुऱ्ऱान् 64

नीर् मेल् कटल् मेल्–जल को अपने ऊपर धारण करनेवाले समुद्र पर; निमिर्किन्ऱ–ऊपर चलनेवाले (हनुमान) की; निमिर्च्चि नोक्का–ऊपर की स्थिति देखकर; तवळ् चेवटि–घुटनों चलनेवाले लाल (मृदु) चरण; पार् मेल् पाय्–भूमि पर दौड़कर; नटवा पतत्तु–जब चले नहीं उस पर्व में; ऍन् तेर् मेल्–मेरे रथ पर; कुति कॊण्टवन्–उछलकर कूदा था; इ तिऱम्–यह इस तरह; आर् मेल् चिन्तै चॆय्तान् कॊल्–किस पर (झपटने का) संकल्प करता है; ऍन्ऱु–ऐसा; अरुक्कनुम् ऍण्णि–सूर्य ने भी सोचकर; एयम् उऱ्ऱान्–संशय किया। ६४

जलधि के ऊपर चलनेवाले हनुमान का वेग और उत्थान देखा अर्क ने। वह सोचने लगा कि यह वही है जो उस शैशव में, जबकि उसके मृदुल चरण भूमि पर नहीं चलने लगे थे, उछलकर मेरे रथ पर कूदा था। सूर्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के मन में प्रश्न उठा कि यह अब किस पर कूदने का संकल्प लिये जाता है ? । ६४

वाळॊत्तॊळिर् वालॆयि रूळिन् मरुङ्गि मैप्प
नीळॊत्तुयर् तोळिन् विशुम्बु निऱैन्द मॆय्यिल्
कोळॊत्तवन् मेनि विशुम्बिरु कूऱु शॆय्युम्
नाळॊत्तदु मेलॊळि कीळिरु ळुऱ्ऱ ञालम् 65

वाळ् ऒत्तु–तलवार के समान; ऒळिर् वाल् ऎयिऱु–चमकनेवाले बड़े दाँत; मरुङ्कु–(दोनों) बाजुओं में; ऊळिन्–क्रम से; इमैप्प–प्रकाश छिटकाते हैं; नीळ् ऒत्तु–लम्बाई में सम; उयर् तोळिन्–उन्नत कन्धों के साथ; कोळ् ऒत्तवन्–(राहु या केतु के) ग्रह के समान; मेनि–(हनुमान का) शरीर; विचुम्पु निऱैन्त–जो आकाश भर में व्यापा; मॆय्यिल्–उस प्रकार में; विचुम्पु–आकाश को; इरु कूऱु चॆय्युम्–दो भागों में विभक्त जिस दिन किया गया; नाळ् ऒत्तत्तु–उस दिन के समान लगा; मेल् ञालम्–उसके ऊपर के लोकों को; ऒळि–प्रकाश; कीळ् ञालम्–नीचे के लोकों को; इरुळ्–अन्धकार; उऱ्ऱ–प्राप्त हो गया। ६५

हनुमान के दाँत तलवार के समान थे। और वे दोनों बाजुओं में चमक रहे थे। उसकी भुजाएँ परस्पर सम थीं और उसके कन्धे ऊपर उठे हुए थे। उसका शरीर (राहु या केतु के) ग्रह के समान था। ऐसा वह आकाश भर में छा गया था। इसलिए आकाश को दो भागों में विभक्त करनेवाले काल के समान लगा। उसके ऊपर के लोक प्रकाश से भरे और नीचे के लोक अन्धकार से भर गये। ६५

मून्ऱुऱ्ऱ तलत्तिडै मुऱ्ऱिय तुन्बम् वीप्पान्
एन्ऱुऱ्ऱु वन्दान् वलिमॆय्मै युणर्त्तु नीयॆन्
ऱान्ऱुऱ्ऱ वानोर् कुऱैनेर वरक्कि याहित्
तोन्ऱुऱ्ऱु निन्ऱाळ् शुरशैप्पॆयर्च् चिन्दै तूयाळ् 66

आन्ऱु–भीड़ लगाये; उऱ्ऱ–आगत; वानोर्–देवों ने; मून्ऱु उऱ्ऱ तलत्तिटै–तीनों (स्वर्ग, मध्य, पाताल) तलों में; मुऱ्ऱिय तुन्पम्–प्रवृद्ध दुःख को; वीप्पान्–नाश करने के लिए; एन्ऱुऱ्ऱु–दायित्व लेकर; वन्तान्–जो आया है; वलि मॆय्मै–उसके बल की स्थिति को; नी उणर्त्तु–तुम बताओ; ऎन्ऱु–ऐसा; कुऱै नेर–प्रार्थना की तब; चुरचै पॆयर्–सुरसा नाम की; चिन्तै तूयाळ्–पवित्रमना; अरक्कि आकि–राक्षसी बनकर; तोन्ऱुऱ्ऱु–प्रकट होकर; निन्ऱाळ्–खड़ी रही। ६६

तब देव उधर एकत्र हो आये। उन्होंने सुरसा से कहा कि यह हनुमान तीनों लोकों की ग्लानि दूर करने का दायित्व अपनाकर आया है। उसकी सच्ची शक्ति की परीक्षा लो और हमको बताओ। इस पर सुरसा नाम की नेक मन वाली देवी एक राक्षसी का रूप धरकर मारुति के सामने आकर प्रकट हुई। (सुरसा को वाल्मीकि नागमाता कहते हैं।) । ६६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पेळ्वायॊ ररक्कि युरुक्कॊडु पॆट्पि ऩोङ्गिक्
कोळ्वायरि यिऩ्गुलत् ताय्हॊडुङ् गूऱ्ऱु मुट्क
वाळ्वायॆऩक् कामिड माय्वरु वाय्हॊ लॆऩ्ऩा
नीळ्वाय्विशुम् बिऱ्ऱऩ दुच्चि नॆरुक्कि निऩ्ऱाळ् 67

पेळ् वाय्–बड़े मुख की; ओर् अरक्कि उरु–एक राक्षसी का रूप; कॊटु–लेकर; पॆट्पिऩ् ओङ्कि–शान के साथ ऊँचा उठकर; कोळ् वाय्–पराक्रमी; अरियिऩ् कुलत्ताय्–वानरकुलज; कॊटुम् कूऱ्ऱुम्–क्रूर यम को भी; उट्क वाळ्–भयभीत करते हुए रहनेवाले; वाय् ऍऩक्कु–मुख वाली मुझे; आमिटमाय्–आमिष भोजन बनकर; वरुवाय् कॊल्–आये क्या; ऍऩ्ऩा–ऐसा कहती हुई; तऩतु उच्चिवाय्–अपने सिर से; नीळ् विचुम्पिऩ् नॆरुक्कि–विशाल आकाश को दबाते हुए; निऩ्ऱाळ्–खड़ी रही। ६७

बहुत ही बड़े मुख के साथ राक्षसी का रूप लेकर वह शान से खड़ी हुई और हनुमान से बोली। हे बलवान वानरकुलोद्भव ! आओ ! यम को भी भयभीत करनेवाले मेरे मुख का आमिष बनकर आये हो ? —यह कहकर अपने सिर को आकाश से लगाती हुई स्थित हो गयी। ६७

तीयेयॆऩ लाय पशिप्पिणि तीर्त्तल् शॆय्वाऩ्
आयेविरै वुऱ्ऱॆऩै यण्मिऩै वण्मै याळ
नीयेयिऩि वऩ्दु निणङ्गॊळ् पिणङ्गॆ यिऱ्ऱिऩ्
वायेपुहु वाय्वऴि मऱ्ऱिलै वाऩि ऩॆऩ्ऱाळ् 68

वण्मैयाळ–दानशील; तीये ऍऩलाय–आग ही कहो, ऐसी; पचिप्पिणि–भूख के रोग को; तीर्त्तल् चॆय्वाऩ् आये–दूर करनेवाले ही बनकर; विरैवुऱ्ऱु–शीघ्रता अपनाकर; ऍऩै–मेरे; अण्मिऩै–पास आये; इऩि–आगे भी; नीये–तुम ही; वऩ्तु–आकर; निणम् कॊळ्–मांसयुक्त; पिणङ्कु ऍयिऱ्ऱिऩ्–बेढंगे रूप से रहनेवाली दन्त-पंक्तियों के; वाये–मुख में हो; पुकुवाय्–घुस जाओ; वाऩिऩ्–आकाश में; मऱ्ऱ वऴि–दूसरा मार्ग; इलै ऍऩ्ऱाळ्–नहीं है कहा। ६८

बड़े उपकारी दाता ! आग ही कहने योग्य है मेरी बुभुक्षा ! उस रोग को शान्त करने के निमित्त तुम त्वरा के साथ मेरे पास आये हो ! और भी आप ही आप इस मुख में आ जाओ, जिसके दाँत पंक्तियों में नहीं हैं और जिसके दाँतों के बीच मांस फँसा हुआ है ! आकाश में और कोई रास्ता नहीं, जिससे तुम बच निकलो। ६८

पॆण्बालॊरु नीपशिप् पीळै यॊरुक्क ऩॊऩ्दाय्
उण्बायॆऩ दाक्कैयै यानुद वऱ्कु नेर्वल्
विण्बालवर् नायह ऩेव लिळैत्तु मीण्डाल्
नण्बालॆऩच् चॊल्लिऩ ऩल्लऱि वाळ ऩक्काळ् 69

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नल् अऱिवाळन्–सद्बुद्धि के स्वामी (ने); नी ऒरु पॆण्पाल्–तुम स्त्री-जाति हो; पचि पीळै–भूख का कष्ट; ऒऱुक्क–सताने से; नॊन्ताय्–पीड़ित हो; विण्पालवर्–स्वर्गवासियों के; नायकन्–नायक श्रीराम की; एवल्–आज्ञा; इळैत्तु–पूरा करके; मीण्टाल्–लौट आऊँ तो; ऎन्तु आक्कैयै–अपने शरीर को; यान्–मैं; उण्पाय् ऎन्ऱ–खाओ कहकर; नण्पाल्–मित्रता के साथ; उतवऱ्कु नेर्वल्–देने को सम्मत हो जाऊँगा; ऎन्ऱ चॊल्लिनन्–ऐसा कहा हनुमान ने; नक्काळ्–सुरसा हँसी। ६९

अच्छे बुद्धिमान हनुमान ने इसके उत्तर में कहा कि तुम स्त्री-जाति हो ! बेचारी तुम्हें भूख का दुःख सता रहा है और तुम पीड़ित हो रही हो। देवों के नायक श्रीराम की आज्ञा पूरा करके लौट आऊँ तब मैं अपने शरीर को स्नेह के साथ तुम्हें खाने के लिए सौंप दूँगा। यह सुनकर सुरसा हँसी। ('हनुमान यह कहकर हँसा' का भी पाठ है।)। ६९

काय्न्देळुल हङ्गळुङ् गाणनिन् याक्कै तन्नै
आर्न्देपशि तीर्वॆनि दाणैयॆन् ऱन्नळ् शॊन्नाळ्
ओर्न्दानुमु वन्दॊरु वेनिन दूळिळ् पेळ्वाय्च्
चेर्न्देहु हिन्ऱे नॆनैयामॆनिऱ् ऱिन्ऱि डॆन्ऱान् 70

अन्नळ्–उसने; एळुलकङ्कळुम् काण–सातों लोकों के देखते; काय्न्तु–कोप दिखाकर; निन् याक्कै तन्नै–तुम्हारे शरीर को; आर्न्ते पचि तीर्वॆन्–खाकर ही भूख मिटाऊँगी; इतु आणै–यह निश्चित है; ऎन्ऱ चॊन्नाळ्–ऐसा कहा; ओर्न्तानुम्–उसका आशय जिसने ताड़ लिया, उसने भी; उवन्तु–सन्तुष्ट होकर; ऒऱुवेन्–बचकर नहीं जाऊँगा; निनतु–तुम्हारे; ऊळिल्–बेढंगे; पेळ् वाय्–बड़े मुख में; चेर्न्तु एकुकिन्ऱेन्–घुसकर जाऊँगा; आम् ऎनिल्–हो सका तो; ऎनै तिन्ऱिटु–मुझे खा लो; ऎन्ऱान्–कहा। ७०

सुरसा ने कहा कि मैं तुम्हारे शरीर को सातों लोकों के देखते कोप के साथ खाकर ही अपनी भूख मिटाऊँगी। यह निश्चित है। हनुमान ने उसका मन ताड़ लिया। उत्साह के साथ कहा कि ठीक है। मैं हटकर नहीं चलूँगा। तुम्हारे बेढंगे और बड़े मुख से होकर ही जाऊँगा। हो सके तो मुझे खा लो। ७०

अक्कालै यरक्कियु मण्ड मनन्द माहप्
पुक्कानिऱै याद पुळैप्पॆरु वाय्ति ऱन्दु
विक्कादुवि ळुङ्गनिन् ऱाळदु नोक्कि वीरन्
तिक्कानॆऱि वाय्शिऱि दाम्वहै शेणि नीण्डान् 71

अक्कालै–उस समय; अरक्कियुम्–राक्षसी भी; अण्टम् अनन्तमाक पुक्काल्–अनन्त अण्ड भी घुसें तो; निऱैयात पुळै–न भरनेवाले द्वार के; पॆरुवाय् तिर्न्तु–बड़े मुख को खोलकर; विक्कातु–विना हिचकी लिये ही; विळुङ्क–निगलने के लिए; निन्ऱाळ्–खड़ी रही; वीरन्–महावीर ने; अतु नोक्कि–वह देखकर; तिक्काम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नॆऱि–दिगन्त तक व्याप्त; वाय्–उसके मुख को; चिऱितु आम् वकै–छोटा (अपर्याप्त) बनाते हुए; चेणिन्–आकाश में; नीण्टान्–बड़ा रूप लिया। ७१

तब सुरसा ने अपना मुख इतना बढ़ाया कि अगणित अण्ड घुसें तो भी वह पूर्ण न हो। विना हिचकी के ही हनुमान को निगल लेने के लिए वह सन्नद्ध खड़ी रही। वीर ने देखा और दिगंतों में फैले हुए उसके मुख-विवर को छोटा बनाते हुए (यानी उससे बढ़कर) वह आकाश में प्रवृद्ध हुआ। ७१

नीण्डा नुडऩे शुरुङ्गानिमिर् वायि डत्तिन्
ऊण्डा नॆऩवुऱ् ऱौरुयिर्प्पुयि राद मुन्नम्
मीण्डा नदुकण् डऩर्विण्णुऱै वोर्ह ळॆम्मै
आण्डा निवनॆन् ऱलर्तूय्नॆडि दाशि शॊन्नार् 72

नीण्टान्–जो बड़ा हुआ; उटऩे चुरुङ्का–तुरन्त छोटा बना; निमिर् वायिटत्तिन्–बढ़े हुए सुरसा के मुखविवर में; ऊण् तान् ऎन्ऩ–ग्रास के समान; उऱ्ऱु–प्रविष्ट होकर; ऒरु उयिर्प्पु–एक श्वास के; उयिरात मुन्नम्–निकलने से पहले ही; मीण्टान्–बाहर आ गया; विण् उऱैवोर्कळ्–आकाशवासी देवों ने; अतु कण्टऩर्–उसको देखकर; इवन् ऎम्मै आण्टान्–इसने हमको पालित कर लिया; ऎन्ऱु–कहकर; अलर् तूय्–पुष्प बरसाकर; नॆटितु–पुष्कल; आचि चॊन्नार्–आशीर्वाद दिये। ७२

ऐसा बड़ा रूप लेकर हनुमान झट छोटा बन गया और सुरसा के बहुत बड़े मुख में उसके ग्रास के रूप में घुसा और साँस भरने से पहले ही बाहर आ गया। देवों ने यह अद्भुत कार्य देखा और कहा कि इसने हमें पालित कर लिया। उन्होंने उस पर फूल बरसाये और आशीर्वाद के वचन कहे। ७२

मॆन्मेऱ् पडर्मॆय् यिऩतानवळ् वीक्क नीङ्गित्
तन्मे निय़ळा यवळ्तायिनु मन्बु ताळ्
ऎन्मेन् मुडिया दऩवॆन्ऱिऩि देत्ति निन्ऱाळ्
पॊन्मे निय़नु मिऩिदाशि पुऩैन्दु पोऩान् 73

मॆत् मेल् पटर्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; मॆय्यिऩतु–शरीर वाली; आऩवळ्–जो बनी थी, वह; वीक्कम् नीङ्कि–सूजन छोड़कर; अवळ् तन् मेऩियळाय्–अपना निजी रूप लेकर; तायिनुम् अन्पु ताळ्–माता से भी अधिक वात्सल्य के साथ; मेल् मुटियातऩ–आगे तुमसे जो न हो सके ऐसा; ऎन्–क्या है; ऎन्ऱु–कहकर; इऩितु एत्ति–सुखद रूप से प्रशंसा करती; निन्ऱाळ्–खड़ी रही; पॊन् मेऩियनुम्–स्वर्णवर्ण हनुमान भी; इऩितु–सुखद; आचि पुऩैन्तु–आशीर्वचन कहकर; पोऩान्–चला। ७३

सुरसा का शरीर उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। अब वह मोटापा कम करके यथावत बनी। माता से भी अधिक स्नेह के साथ उसने हनुमान को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

साधुवाद दिया कि आगे तुमसे जो न हो सकेंगे, ऐसे कौन कार्य हैं ? उसने हनुमान को मुदित करते हुए उसकी संस्तुति की। स्वर्णवर्ण हनुमान भी उसको आशीर्वाद देकर (या उसके आशीर्वाद लेकर) आगे चला। ७३

कीदङ्ग ळिशैत्तनर् किन्नरर् कीद निन्ऱ
पेदङ्ग ळियम्बिनर् पेदैय राडन् मिक्क
पूदङ्ग डॊडर्न्दु पुकळ्न्दन पूशु रेशर्
वेदङ्ग ळियम्बिनर् तॆन्ऱल् विरुन्दु शॆय्य 74

तॆन्ऱल्–दक्षिणी (मलय) पवन के; विरुन्तु चॆय्य–दावत (आनन्द) देते; किन्नरर्–किन्नर लोगों ने; कीतङ्कळ् इचैत्तनर्–गीत गाये; पेतैयर्–स्त्रियों ने; कीतम् निन्ऱ पेतङ्कळ्–गीतों के भेद; इयम्पिनर्–गाये; आटल् मिक्क पूतङ्कळ्–नर्तनशील भूत; तॊटर्न्तु–लगातार; पुकळ्न्तन–स्तुति करते रहे; पूचुरेचर्–भूसुरेशों ने (ब्राह्मण-श्रेष्ठों ने); वेतङ्कळ्–वेदमन्त्र; इयम्पिनर्–उच्चारे (मन्त्र-आशीर्वाद कहे)। ७४

मलयपवन ने हनुमान को आनन्दित किया। किन्नर गाये। स्त्रियों ने भेद-प्रभेद के साथ गीत गाये। नर्तनसमर्थ भूतों ने उनके अनुरूप प्रशंसा के वचन उच्चारे। भूसुरों ने वेदमन्त्र उच्चारण कर आशीर्वाद दिया। ७४

मन्दार मुन्दु महरन्द मणन्द वाडै
शॆन्दा मरैवाण् मुहत्तुच् चॆऱिवेर् शिदैक्कत्
तन्दा मुलहत् तिडैविञ्जैयर् पाणि ताळाक्
कन्दार वीणैक्कळि शॆञ्जॆविक् कादु नुङ्ग 75

मन्तारम् उन्तु–मन्दार-निःसृत; मकरन्तम् मणन्त–मकरन्द-सुगन्धित; वाटै–उदीची हवा ने; चॆन्तामरै–लाल कमल-सम; वाळ् मुकत्तु–(हनुमान के) उज्ज्वल मुख पर; चॆऱि–बहुत रहनेवाले; वेर् चितैक्क–स्वेदकणों को दूर किया; विञ्चैयर्–विद्याधरों के; तम् ताम् उलकत्तिटै–अपने-अपने लोक में रहकर; पाणि ताळा–तालबद्ध; कन्तारम्–गान्धारस्वरकारी; वीणैक् कळि–वीणा का मधु (आनन्द); चॆम् चॆवि कातु–हनुमान के श्रेष्ठ श्रवणेन्द्रियों ने; नुङ्क–सुना (सुनते हुए हनुमान गया)। ७५

मन्दार-सुगन्ध-वाही पराग से युक्त पवन ने (हनुमान के) अरुणकमल-सम और उज्ज्वल मुख में रहे स्वेदकणों को सुखाया। विद्याधर लोग अपने-अपने लोक में स्थित होकर ताल-बद्ध गांधार राग में वीणा के सहारे गा रहे थे। हनुमान अपने कानों में उस मधुर-गीत मधु का ग्रहण करता हुआ चला। ७५

वॆङ्गार् निऱप्पुणरि वेऱेयु मॊन्ऱुप्
पॊङ्गार् कलिप्पुन ऱरप्पॊलिव देपोल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इङ्गार् कडत्तिरॆऩै यॆऩ्ऩा वॆऴुन्दाळ्
अङ्गार तारॆपिऱि दालाल मऩ्ऩाळ् 76

पिऱितु–अन्य एक; आलालम् अऩ्ऩाळ्–हलाहल-समाना; अङ्कारतारै–अंगारतारा नाम की राक्षसी; ऎऩै–मुझे; इङ्कु कटत्तिर्–उपेक्षित करके जानेवाले; आर्–कौन हो; ऎऩ्ऩा–कहती हुई; अ पॊङ्कु आर्कलि पुऩल्–उस उमंगभरे समुद्र के जल के; वेऱेयुम् ऒऩ्ऱु–दूसरे ही एक; कार् निऱ–काले रंग के; पुणरि–समुद्र को; तर–पैदा करने से; पॊलिवते पोल्–विद्यमान उसके समान; ऎऴुन्ताळ्–(उस समुद्र में से) उठ आयी। ७६

तब हलाहल-समाना अंगारतारा नाम की राक्षसी बाधा बनकर आयी। यहाँ कौन है मुझे पार कर जानेवाला ? वह समुद्र के ऊपर ऐसे उठ आयी मानो उमड़ते हुए उस समुद्र ने एक और काले समुद्र को पैदा कर दिया हो। (इसका नाम मूल में सिंहिका है।)। ७६

कादक् कडुङ्गुऱि कणक्किऱुदि कण्णाळ्
पादच् चिलम्बिऩॊलि वेलैयॊलि पम्ब
वेदक् कॊऴुञ्जुडरै नाडिनॆऱि मेऩाळ्
ओदत्ति नोडुमदु कैडवरै यॊत्ताळ् 77

कात कणक्कु–दस मील के हिसाब की; इऱुति–दूरी के अन्त तक; कटुम् कुऱि कण्णाळ्–वेग से देखनेवाली आँखों-सहित वह; पात चिलम्पिऩ् ऒलि–पायलों की ध्वनि के; वेलै ऒलि–समुद्र-स्वर के समान; पम्प–स्वरित होते; मेल् नाळ्–प्राचीन दिनों में; वेत कॊऴुम् चुटरै–वेदान्त-विषय श्रीविष्णु को उद्देश्य करके; नॆऱि नाटि–मार्ग अन्वेषण करते हुए; ओतत्तिऩ् ओटु–समुद्र में जो दौड़े; मतु कैटवरै–उन मधु-कैटभों के; ऒत्ताळ्–समान थी। ७७

उसकी दृष्टि इतनी तीव्र थी कि वह एक 'काद' (दस मील) की दूरी तक की वस्तुओं को पहचान सके। उसकी पायल की ध्वनि समुद्र-गर्जन के समान उठ रही थी। वह उन मधु-कैटभों के समान थी, जो प्राचीन समय में वेदान्त के विषय श्रीविष्णु की खोज में समुद्र-मार्ग में दौड़े आये थे। ७७

तुण्डप् पिऱैत्तुणै यॆऩच्चुड रॆयिऱ्ऱाळ्
कण्डत् तिडैक्करै युडैक्कडवऴ् कैम्मा
मुण्डत् तुरित्तवुरि यान्मुळरि वन्दान्
अण्डत् तिऩुक्कुऱै यमैत्तऩैय वायाळ् 78

पिऱै तुणै तुण्टम् ऎऩ–चन्द्र के दो खण्डों के समान; चुटर्–प्रकाश छिटकानेवाले; ऎयिऱ्ऱाळ्–वक्र दाँतों से युक्त थी; कण्टत्तु इटै–कण्ठ में; करै उटै–(विष) कलंकसहित; कटवुळ्–देव शिवजी; कैम्मा मुण्टत्तु–शुंडी के शरीर से; उरित्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उरियाल्–उधेड़ी गयी खाल से; मुळरि वन्तान्–कमलभव ब्रह्माजी द्वारा सृष्ट; अण्टत्तितुक्कु–अण्ड के लिए; उऱै अमैत्ततैय–एक आवरण बनाया गया हो ऐसे; वायाळ्–मुखविवर वाली। ७८

उसके दो खड्गदाँत थे, जो चन्द्र के दो खण्डों के समान थे। उसका मुख बहुत बड़ा था और वह भूमि पर आच्छादित उस गज-चर्म के समान था जिसको नीलकण्ठ शिव ने गज से उधेड़कर भूमि को ढँक दिया हो। ७८

निन्ऱा णिमिर्न्दलै नडुङ्गडलि नीर्दन्
वन्ऱा ळलम्बमुडि वान्मुहडु वौव
अन्ऱाय् तिऱत्तव नऱत्तै यरुळोडुम्
तिन्ऱा ळॊरुत्तियिव ळॆन्बदु तॆरिन्दान् 79

नॆटुम् अलै–लम्बी लहरों के; कटलिन् नीर्–समुद्र का जल; तन् वन् ताळ् अलम्प–उसके कठोर पैरों को धो रहा था; मुटि–सिर; वान् मुकट्टु–आकाश की चोटी से; वौव–टकरा गया; निमिर्न्तु निन्ऱाळ्–ऊँची होकर खड़ी रही; आय् तिऱत्तवन्–विवेकपूर्ण हनुमान; अन्ऱु–तब; इवळ्–यह; अऱत्तै–धर्म को; अरुळोटुम्–दया के साथ; तिन्ऱाळ् ऒरुत्ति–भक्षण कर लिया (जिसने) ऐसी एक है; ऎन्पतु–यह बात; तॆरिन्तान्–ताड़ ली। ७९

बहुत बड़ी तरंगों वाला समुद्र उसके सबल पैरों को धो रहा था। उसका सिर आकाश की चोटी को छू रहा था। इस तरह आकर जो खड़ी हुई उसको बुद्धिमान हनुमान ने देखा तो समझ लिया कि यह धर्म-दया की भक्षिका है! । ७९

पेळ्वा यहत्तलदु पेरुलह मूडुम्
नीळ्वा नहत्तितिडै येहुनॆऱि नेरा
आळ्वा नणुक्कनव ळाळ्पिल वयिऱ्ऱैप्
पोळ्वा निनैत्तिनैय वाय्मॊऴि पुहन्ऱान् 80

आळ्वान्–स्वामी श्रीराम के; अणुक्कन्–अन्तरंग सेवक ने; पेर् उलकम् मूटुम्–विशाल विश्व के आच्छादक; नीळ् वानकत्तिन् इटै–विस्तृत आकाश में; पेळ् वाय् अकत्तु अलतु–इसके बड़े मुखविवर से होकर नहीं तो; एकुम् नॆऱि–गम्य मार्ग; नेरा–न पाकर; अवळ् आळ् पिल वयिऱ्ऱै–उसके गहरे बिल के समान पेट को; पोळ्वान् निनैत्तु–चीरने का विचार करके; इनैय वाय्मॊऴि–ये वचन; पुकन्ऱान्–कहे। ८०

स्वामी श्रीराम के अन्तरंग सेवक हनुमान ने यह भी जान लिया कि विशाल विश्व के आच्छादक आकाश में आगे जाने का अंगारतारा के मुख-विवर के अलावा कोई मार्ग नहीं है। उसने निश्चय कर लिया कि उसके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बिल-सम गहरे पेट को चीरकर जाना पड़ेगा। उसने अंगारतारा से यों कहा। ८०

शाया वरन्दळुवि नाय्तळिय पिन्नुम्
ओया वुयर्न्दविशै कण्डुमुणर् किल्लाय्
वाया लळन्दुनॅडु वान्वळि यडैत्ताय्
नीयारै यॅन्नैयिव णिन्रनिलै यॅन्रान् 81

चाया वरम् तळुविताय्–छाया (द्वारा) ग्रहण-शक्ति के वर से तुमने मुझे खींच लिया; तळिय पिन्नुम्–खींचने के बाद भी; ओया उयर्न्त–जो थमता नहीं पर बढ़ता है, वह; विचै कण्टुम्–वेग देखकर भी; उणर्किल्लाय्–नहीं समझीं (मेरी शक्ति); नॅटु वान्–बड़े आकाश में; वायाल् अळन्तु–मुख फैलाकर; वळि अटैत्ताय्–मार्ग अवरोध किया; नी यारै–तुम कौन हो; इवण् निन्र निलै–इधर खड़े होने का कारण; ऍन्नै–क्या है; ऍन्रान्–पूछा (हनुमान ने)। ८१

तुम्हें किसी की छाया पकड़कर उसे खींच लेने का वर प्राप्त है। उसके बल से तुमने मुझे खींच लिया। तब भी मेरा वेग कम न हुआ। उसको देखकर भी तुम मेरा बल सोच नहीं सकीं। लम्बे आकाश को अपने मुख से व्याप्त कर मार्ग रोक दिया। कौन हो तुम? यहाँ खड़े होने का कारण क्या है? हनुमान ने यह प्रश्न किया। ८१

पॅण्बा लॅन्नक्करुदु पॅऱ्ऱियॊळि युऱ्ऱाल्
विण्बा लवर्क्कुमुयिर् वीडुवदु मॅय्ये
कण्बा लडुक्कवुयर् कालन्वरु मेन्नुम्
उण्बा लरुत्तियदॊ ळिप्परि दॅन्ऱाळ् 82

पॅण्पाल्–स्त्री-जात; ऍन्न करुतु पॅऱ्ऱि–ऐसा मानने का भाव; ऒळि–त्याग दो; उऱ्ऱाल्–मैं सामने आयी तो; विण्पाल् अवर्क्कुम्–व्योमलोकवासियों का भी; उयिर् विटुवतु–प्राण त्यागना; मॅय्ये–ध्रुव है; उयर् कालन्–बलवर्धित यम भी; कण् पाल् अटुक्क–मेरी आँख में पास; वरुमेन्नुम्–आया तो; उण्पाल् अरुत्तियतु—खाने की इच्छा; ऒळिप्पतु अरितु–निवारण करना कठिन है; ऍन्ऱाळ्–कहा। ८२

अंगारतारा ने उत्तर दिया कि तुम मुझे स्त्री समझने की बात छोड़ दो। मेरे साथ टकरायें तो देवगणों की जानें भी चली जायँगी, यह निश्चित है। बल में बढ़ा हुआ यम भी मेरी आँखों में पड़ जाय तो उसे खा लेने की मेरी इच्छा दुर्निवार है। ८२

तिऱन्दाळ् वयिऱ्ऱिन्वळि यण्णलिडै शॅन्ऱान्
अऱन्दा नरर्ऱिय दयर्त्तमर रॅय्त्तार्
इऱन्दा नॅन्नक्कॊडा रिमैप्पदन्निन् मुन्नम्
पिऱन्दा नॅन्नप्पॅरिय कोळरि पॅयर्न्दान् 83

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिऱन्ताळ्–(उसने अपना मुख) खोला; अण्णल्–महिमावान; इटै वळि–उससे होकर; वयिऱ्ऱिऩ् ऩैऩ्ऱाऩ्–पेट में गया; अऱम्–धर्मदेवता; अयर्त्तु–थकित होकर; अरऱ्ऱियतु–रोया; इऱन्ताऩ् ऎऩ कॊटु–मर गया समझ लेकर; अमरर् ऎय्त्तार्–देवगण व्याकुल हुए; इमैप्पतऩिऩ् मुऩ्ऩम्–पलक मारने के अन्दर; पिऱन्ताऩ् ऎऩ–जन्म लिये, ऐसा कहने योग्य रीति से; पॆरिय कोळरि–महान् सिंह; पॆयर्न्ताऩ्–बाहर आया। ८३

यह कहकर अंगारतारा ने अपना मुख खोला। महिमावान हनुमान उस मुख में घुसकर उसके पेट में चला गया। तब धर्मदेवता स्वयं डरकर श्रान्त हुआ और रोने लगा। देव लोग यह सोचकर थकित हुए कि हनुमान मर गया है। पर पलक मारने के अन्दर बली सिंह, हनुमान मानो दूसरा जन्म लिया हो ऐसा, बाहर आ गया। ८३

कळ्वा यरक्किकद ऱक्कुडर् कणत्तिल्
कॊळ्वार् तडक्कैयऩ् विशुम्बिऩ्मिशै कॊण्डाऩ्
मुळ्वाय् पॊरुप्पिऩ्मुळै यॆय्दिमिह नॊय्दिऩ्
उळ्वा ऴरक्कॊडॆऴु तिण्कलुऴ नॊत्ताऩ् 84

कळ् वाय् अरक्कि–ताड़ी पीनेवाले मुख की वह राक्षसी; कतऱ–चिल्लायी; वार् कुटर्–लम्बी आँतों को; कॊळ् तटक्कैयऩ्–जिनमें ले लिया था, ऐसे विशाल हाथों वाला; कणत्तिल्–एक पल में; विचुम्पिऩ् मिचै कॊण्टाऩ्–आकाश पर चला गया; मुळ् वाय्–काँटों-सहित; पॊरुप्पिऩ् मुळै–पर्वत-कन्दरा में; ऎय्ति–घुसकर; मिक नॊय्तिऩ्–बहुत सुगम रीति से; उळ् वाऴ्–(कन्दरा के) अन्दर रहनेवाले; अरकॊटु ऎऴु–साँपों के साथ उठनेवाले; तिण्–बलवान; कलुऴऩ् ऒत्ताऩ्–गरुड़ के समान लगा। ८४

सुरापायी मुख वाली अंगारतारा को चिल्लाने देते हुए हनुमान उसकी आँतों को पकड़ लेकर आकाश में उठा। एक ही पल में इस तरह उठते हुए उसे देखकर बलवान गरुड़ का स्मरण आया, जो कंटकाकीर्ण कन्दरा में घुसकर बहुत ही सुगमता से कन्दरा के अन्दर रहे साँपों को पकड़कर ऊपर उठ आ रहा हो। ८४

शाहा वरत्तलैव रिऱ्ऱिलह मऩ्ऩाऩ्
एहा वरक्किकुडर् कॊण्डुड नॆऴुन्दाऩ्
माहाल् विशैक्कवड मण्णिलुऱ वालो
डाहाय मुऱ्ऱकद लिक्कुवमै याऩाऩ् 85

चाका वर तलैवरिल्–चिरंजीवी वर-प्राप्त लोगों में; तिलकम् अऩ्ताऩ्–तिलक-सम हनुमान; एका–(राक्षसी के पेट में) जाकर; अरक्कि कुटर्–राक्षसी की आँतें; उटऩ् कॊण्टु–साथ लेकर; ऎऴुन्ताऩ्–(जो) उठ आया; माकाल् विचैक्क–बड़े पवन के चलने से; वटम् मण्णिल् उऱ–डोरी को भूमि पर छोड़कर; वालोटु आकायम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उऱ्ऱ–दुम के साथ आकाश में गये; कतलिक्कु–पतंग का; उवमै आऩान्–उपमान बना। ८५

चिरंजीवी महानों में तिलक-सम हनुमान, जो उसके पेट में घुसकर आँतें लेकर ऊपर उड़ रहा था, उस पतंग के समान लगा जो वेगवान पवन से चालित हो, जिसका डोरा नीचे भूमि पर पड़ा हो और जो पूँछ के साथ आकाश में उड़ रहा हो। ८५

आर्त्तऩर्हळ् वाऩवर्ह डाऩव रऴुङ्गा
वेर्त्तऩर् विरिञ्जऩुम् वियन्दुमलर् वॅळ्ळम्
तूर्त्तऩ ऩहऩ्कयिलै यिऱ्ऱॊलै विलोऩुम्
पार्त्तऩऩ् मुऩित्तलैव राशिहळ् पहर्न्दार् 86

वाऩवर्कळ् आर्त्तऩर्कळ्–व्योमवासियों ने आनन्दघोष किये; ताऩवर्–दानव; अऴुङ्का–दुःखी हुए; वेर्त्तऩर्–पसीने से युक्त हो गये; विरिञ्चऩुम्–ब्रह्मा ने भी; वियऩ्तु–विस्मित होकर; मलर् वॅळ्ळम्–पुष्पवर्षा; तूर्त्तऩऩ्–(बरसाकर समुद्र को) पाट दिया; अकऩ् कयिलैयिल्–विशाल कैलास पर्वत पर (से); तॊलैविलोऩुम्–अक्षर पुरुष (श्रीशिव) ने; पार्त्तऩऩ्–भी देखा; मुऩि तलैवर्कळ्–ऋषिश्रेष्ठों ने; आचिकळ् पकर्न्तार्–आशीर्वाद दिया। ८६

देवों ने आनन्दनाद उठाया। दानव व्याकुल हुए और उनके शरीर पसीने से भर गये। विरंचि ने भी विस्मित होकर इतने सुमन बरसाये कि समुद्र ही पट गया। विशाल कैलासपर्वतवासी अमर श्रीशिवजी ने भी देखकर आनन्द का अनुभव किया। मुनिवरों ने आशीर्वचन कहे। ८६

माण्डा ळरक्कियवळ् वाय्वयिऱु काऱुम्
कीण्डा ऩिमैप्पिडैयिऩ् मेरुकिरि कीऴाय्
नीण्डाऩ् वयक्कदि निऩैप्पिऩॆडि दॆऩ्ऩप्
पूण्डा ऩऱुक्कऩुयर् वाऩिऩ्वऴि पोऩाऩ् 87

अरक्कि माण्टाळ्–(अंगारतारा) राक्षसी मर गयी; अवळ् वाय्–उसके मुख को; वयिऱु काऱुम्–उदर तक; कीण्टाऩ्–चीर दिया; इमैप्पिटैयिऩ्–पलक मारने के समय के अन्दर; मेरु किरि–मेरुपर्वत को; कीऴाय्–नीचा बनाकर; नीण्टाऩ्–विशाल रूप धर लिया; निऩैप्पिऩ्–मन (की गति) से भी; नॆटिऩु–बड़ी है; ऍऩ्ऩ–ऐसी; वयक्कति–गमन-गति; पूण्टाऩ्–अपना ली; अऱुक्कऩ् उयर्–सूर्य के ऊँचे; वाऩिऩ् वऴि–आकाश-मार्ग में; पोऩाऩ्—गया। ८७

राक्षसी अंगारतारा मर गयी। हनुमान ने उसका मुख पेट तक चीर लिया। फिर एक ही पल में अपना शरीर इतना बढ़ा लिया कि मेरु भी उसके सामने छोटा लगा। मनोवेग से भी अधिक वेग बनाकर वह सूर्य के आकाश के मार्ग में चला। ८७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चॊऱ्ऱार्हळ् चॊऱ्ऱपहै पल्तॊहैय दऩ्ऱो
मुऱ्ऱा मुडिन्दनॆडु वाऩिऩिडै मुन्नीर्
इऱ्ऱावि यॆऱ्ऱॆऩिऩुम् यानिऩि यिलङ्गै
उऱ्ऱाल् विलङ्गुमिडै यूऱॆऩ वुणर्न्दान् 88

चॊऱ्ऱार्कळ्–जिन्होंने मुझसे कहा; चॊऱ्ऱ–उन्होंने जो कहा; पकै–बाधाएँ; पल् तॊकैयतु अऩ्ऱो–अनेक समूहों की है न; ऎऱ्ऱु ऎऩिऩुम्–जो भी हों; मुऱ्ऱा मुटिन्त–अनन्त बने; मुन्नीरिल्–समुद्र के ऊपर; नॆटु वाऩिऩ् इटै–लम्बे आकाश में; तावि–लाँघ जाकर; यान् इलङ्कै उऱ्ऱाल्–मैं लंका जाऊँ तो; इऩि–उस पर; इटैयूऱु–बाधाएँ; विलङ्कुम्–दूर होंगी; ऎऩ उणर्न्तान्–ऐसा समझा। ८८

हनुमान ने तब सोचा कि सुग्रीव आदि ने जो कहा वह ठीक ही है। बाधाओं के समूह बहुत होते हैं। चाहे जो हों इस अनन्त समुद्र को लाँघकर लंका में पहुँच जायँगे तभी बाधाएँ दूर होंगी। हनुमान ने यह समझा। ८८

ऊऱुकडि दूऱुवऩ वूऱिलऱ मुऩ्ऩात्
तेऱलि लरक्कर्पुरि तीमैयवै तीर
एऱुम्वहै यिङ्गुळदि रामवॆऩ वॆल्लाम्
माऱुमदिन् माऱुपिऱि दिल्लॆऩ वलित्तान् 89

ऊऱु–कष्ट; कटितु ऊऱुवऩ–शीघ्र हो जाते हैं; ऊऱु इल् अऱम्–अक्षय धर्म; उऩ्ऩा–न माननेवाले; तेऱल् इल्–विवेकहीन; अरक्कर्–राक्षस; पुरि–जो करते हैं; तीमै अवै तीर–उन हानियों को दूर करने के लिए; एऱुम् वकै–तरण के मार्ग; इङ्कु उळतु–यहाँ है; इराम ऎऩ–'राम' कहने पर; ऎल्लाम् माऱुम्–सब बदल जायेंगे; अतिऩ्–उससे बढ़कर; माऱु पिऱितु इल्–विकल्प अन्य नहीं; ऎऩ–ऐसा; वलित्तान्–निश्चय किया। ८९

कष्ट अकस्मात आ जाते हैं। अक्षय धर्ममार्ग न जाननेवाले और विवेकहीन राक्षसों द्वारा दिये जानेवाले संकटों का सागर तारकर उद्धार पाने का एक मार्ग यही है। वह है 'श्रीराम' नाम का जाप। उससे सभी बाधाएँ दूर हो जायँगी। इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं। हनुमान ने ऐसा निश्चय कर लिया। ८९

तशुम्बुडैक् कऩह नाञ्जिऱ् कडिमदि ऱणित्तु नोक्का
अशुम्बुडैप् पिरशत् तॆय्वक् कऱ्पह नाट्टै यण्मि
विशुम्बिडैच् चॆल्लुम् वीरऩ् विलङ्गिवे ऱिलङ्गै मूदूऱ्प्
पशुम्बुडैच् चोलैत् ताङ्गोर् पवळमाल् वरैयिऱ् पाय्न्दान् 90

अचुम्पु उटै–चिपचिपे; पिरचम्–शहद-भरे; कऱ्पक–कल्पतरुओं से पूर्ण; तॆय्व नाट्टै–देवलोक के; अण्मि–पास जाकर; विचुम्पु इटै–व्योममार्ग में; चॆल्लुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वीरन्—जानेवाले वीर; तणित्तु-झुककर; तचुम्पु उटै-स्वर्णकलशों से युक्त; नाञ्चिल्-'नांजिल' नाम के अंगों के; कतक कटि मतिल्-स्वर्णनिर्मित रक्षा-प्राचीर को; नोक्का-देखा; वेऱु विलङ्कि-मार्ग बदलकर; इलङ्कै मूतूर् अङ्कु-लंका के प्राचीन नगर में एक ओर; पुटै पचुम् चोलैत्तु-पास में हरे बागों के साथ रहनेवाले; ओर् पवळ माल् वरैयिल्-एक प्रवाल गिरि पर; पाय्न्तान्-कूदा। ९०

हनुमान देवलोक के समीप से जा रहा था, जिसमें चिपचिपे शहद से युक्त कल्पतरु कसरत से पाये जाते हैं। उसने नीचे झुककर लंका के 'नांजिल' नाम के अंगों और स्वर्ण-कलशों से युक्त नगररक्षक प्राचीरों को देखा। फिर उसने अपना मार्ग बदल लिया। आगे जाकर वह एक प्रवालगिरि पर कूदा, जो प्राचीन लंका नगरी के एक भाग में था और जिस पर हरे-हरे बाग थे। ९०

मेक्कुऱच् चॆल्वोन् पाय वेलैमे लिलङ्गै वॆऱ्पु
नूक्कुऱुत् तङ्गु मिङ्गुन् दळ्ळुऱत् तुळङ्गु नोन्मै
पोक्कुऱऱ् किडैयू ऱाहप् पुयलॊडु पॊदिन्द वाडै
ताक्कुऱत् तहर्न्दु शायुङ् गलमॆन वायिऱ् ऱन्ऱे 91

वेलै मेल्-समुद्र पर; मेक्कु उऱ चॆल्वोन्-ऊपर जो चलता रहा वह; पाय-नीचे जब कूदा; इलङ्कै वॆऱ्पु-लंका का (विद्रुम) पर्वत; नूक्कुऱुत्तु-झुककर; अङ्कुम् इङ्कुम्-इधर-उधर; तळ्ळुऱ-हिला; तुळङ्कुम्-डुला; नोन्मै-वह प्रकार; पुयलॊटु पॊतिन्त वाटै-वर्षा-सह झंझा से; पोक्कुऱऱ्कु-गमन में; इटैयूऱु आक-बाधा पाकर; ताक्कु उऱ-झकझोरे जाने पर; तकर्न्तु-टूटकर; चायुम्-डूबनेवाले; कलम् ऍत-पोत के समान; आयिऱ्ऱु-हो गया। ९१

ऊपर जो उड़ रहा था वह हनुमान ज्योंही उस गिरि पर वेग से कूदा तो वह एक ओर झुक गया। इधर-उधर उसके हिलने-डुलने के ढंग से वह उस पोत के समान लगा, जो मेघसहित झंझा द्वारा गमन में बाधा पाकर झकझोरे जाने से टूटकर समुद्र में डूब रहा हो। ९१

मण्णडि युऱ्ऱु मीदु वानुऱु वरम्बिन् ऱन्मै
ऍण्णडि यऱ्ऱ कुन्ऱि निलैत्तुनिन् ऱुऱ्ऱु नोक्कि
विण्णिडै युलह मॆन्नु मॆल्लियन् मेनि नोक्कक्
कण्णडि वैत्त दन्न विलङ्गयैत् तॆरियक् कण्डान् 92

अटि मण् उऱ्ऱु-पैर भूमि में लगा रहा; मीतु-चोटी; वान् उऱुम्-आकाश से लगा जो रहा; वरम्पिन् तन्मै-उसकी माप का हिसाब; ऍण् अटि उऱ्ऱ-न हो सका ऐसे; कुन्ऱिन्-पर्वत पर; निलैत्तु निन्ऱु-स्थिर खड़ा होकर; उऱ्ऱु नोक्कि-ध्यान से देखकर; विण्णिटै उलकम् ऍन्ऱुम्-व्योमलोक रूपी; मॆल्लियल्—कोमल स्त्री; मेनि नोक्क-अपना शरीर (प्रतिबिम्ब) देखने के लिए; कण्णटि वैत्ततु-आईना रखा गया; अन्न-जैसी; इलङ्कैयै-लंकापुरी को; तॆरिय कण्टान्-सामने से देखा। ९२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस पर्वत का पैर भूमि पर था और उसका सिर आकाश को छू रहा था। उसके आकार का नापना कठिन था। उस पर हनुमान स्थिर-रूप से खड़ा हुआ। उसने वहीं से लंका को देखा, जो स्वर्गलोक रूपी अंगना के अपने शरीर का सौन्दर्य देखने के वास्ते रखे हुए आईने के समान लगा। ९२

नन्नहर् तन्नै नोक्कि नळिनक्कै मरित्तु नाहर्
पॊन्नह रिदनै यॊक्कु मॆन्बदु पुल्लि दम्मा
अन्नह रिदनि नन्रे यण्डत्तै मुळुदु माळ्वान्
इन्नह रिरुन्दु वाळ्वा निदुवदऱ् केदु वॆन्रान् 93

नल् नकर् तन्नै–श्रेष्ठ नगर को; नोक्कि–देखकर; नळिन कै मरित्तु–कमलहस्त हिलाकर; नाकर् पॊन्नकर्–देवों की स्वर्णपुरी (अमरावती); इतनै ऒक्कुम्–इसके समान रहेगी; ऎन्पतु–कहना; पुल्लितु–अर्थहीन है; इतनिन्–इससे बढ़कर; अ नकर्–वह नगर; नन्रे–सुन्दर होगी क्या; अण्टत्तै मुळुतुम्–सारे अण्डों पर; आळ्वान्–शासन करनेवाला; इन् नकर् इरुन्तु वाळ्वान्–इस नगर में रहता है; इ–यह गौरव; अतऱ्कु एतु–उसका हेतु है; ऎन्रान्–कहा (अम्मा–विस्मय ध्वनि)। ९३

हनुमान ने उस श्रेष्ठ नगर को देखकर अपने कमलहस्तों को विस्मय-सूचक मुद्राओं में हिलाता हुआ अपने आप कहा कि देवों की स्वर्ण-नगरी अमरावती इसके समान होगी क्या? ऐसा कहना दोषपूर्ण होगा। क्या वह नगर इससे बढ़कर सुन्दर हो सकेगा? सारे अण्ड का शासन रावण यहीं रहकर करता है, उसका हेतु ही इसका अमरावती से अधिक सुन्दर होना है! । ९३

माण्डदोर् निलत्तिऱ् ऱामॆन् ऱुणर्त्तुदल् वाय्मैत् तन्ऱाल्
वेण्डिय वेण्डि नॆय्दि वॆऱुप्पित्ऱि विळैन्दु तुय्क्कुम्
ईण्डरुम् बोह विन्ब मीऱिल दियाण्डुक् कण्डाम्
आण्डदु तुऱक्क मः(ह्)दे यरुमऱै त् तुणिवु मम्मा 94

वेण्टिय–इच्छित वस्तुएँ; वेण्टिन् ऎय्ति–इच्छित प्रकार से प्राप्त करके; वॆऱुप्पु इन्ऱि–अघाये विना; विळैन्तु–चाह के साथ; तुय्क्कुम्–भोगा जानेवाला; ईण्ट अरुम्–अलभ्य; पोक इन्पम्–भोगसुख; ईऱु इलतु–अनन्त रूप से; याण्टु कण्टोम्–जहाँ देखते हैं हम; आण्टतु तुऱक्कम्–वही स्वर्ग है; अरु मऱै–श्रेष्ठ वेदों का भी; तुणिवुम् अ॰ते–निर्णय भी वही है; अतु–वह; माण्ट–महिमावान; ओर् निलत्तिऱ्ऱु आम्–एक स्थान में होगा; ऎन्ऱु–ऐसा उणर्त्तुतल्–समझाना; वाय्मैत्तु अन्ऱु–सच्चा नहीं होगा। ९४

स्वर्ग क्या है? जो भी चाहें वह सब वैसे ही जहाँ प्राप्त हों; और जहाँ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उनका अलभ्य सुख-भोग अन्तहीन प्रकार से सम्भव हो —उसी को स्वर्ग कहा जाता है। श्रेष्ठ वेद भी वैसा ही कहते हैं। उस स्वर्ग को एक स्थान विशेष में रहता हुआ बताना सच नहीं है ! । ९४

उट्पुल मऴनू ऱॆन्ब रोशऩै युलह मून्ऱिल्
तॆट्पुऱु पॊरुळ्ह ऎल्ला मिदनुऴैच् चॆऱिन्द वॆन्ऱाल्
नुट्पुल नुणङ्गु केळ्वि नुऴैविऩ ऱऱिवि ऩोङ्गुम्
कट्पुल वरम्बिऱ् ऱऩ्ऱे काट्चियुङ् गरैयिऱ् ऱम्मा 95

उट्पुलम्–(लंका का) आन्तरिक विस्तार; ऎऴु नूऱु ओचऩै–सात सौ योजन; ऎऩ्पर्–कहते हैं; उलकु मून्ऱिल्–तीनों लोकों में; तॆट्पु उऱु पॊरुळ्कळ्–साफ़ जाने जानेवाली वस्तुएँ; ऎल्लाम्–सभी; इतऩ् उऴै–इसमें; चॆऱिन्त–पूर्ण रूप से पायी जाती हैं; ऎऩ्ऱाल्–कहें तो; नुण् पुलम्–सूक्ष्मबुद्धि; नुणङ्कु केळ्वि–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञानी; नुऴैवित्तर्–अन्वेषकों के; अऱिविऩ् ओङ्कुम्–बुद्धि से बढ़े हुए; कण् पुल–मन के करण की; वरम्पिऱ्ऱु अऩ्ऱु–सीमा के अन्दर आनेवाला नहीं है; काट्चियुम्–दृष्टि-गत की भी; करैयिऱ्ऱु–सीमा हो जायगी । ९५

लंका नगर का आन्तरिक विस्तार सात सौ योजन का बताया जाता है। तीनों लोकों में प्राप्य सभी चुने हुए पदार्थ इस लंका में भरपूर हैं। तो यह उन लोगों की मनो-दृष्टि में भी समानेवाला नहीं है, जिनकी सूक्ष्म-बुद्धि का श्रेष्ठ श्रवण-ज्ञान द्वारा खूब विकास हुआ है। आँखों द्वारा दृश्य विस्तार की भी सीमाएँ होती हैं। ९५

2. ऊर् तेडु पडलम् (लंका-नगर-अन्वेषण पटल)

❀ पॊऩ्गॊण् डिऴैत्तमणि यैक्कॊडु पॊदिन्द
मिऩ्गॊण् डमैत्तवॆयि लैक्कॊडु शमैत्त
ऎऩ्गॊण् डियऱ्ऱियवॆ ऩत्तॆरि विलाद
वऩ्गॊण्डल् विट्टुमदि मुट्टुवऩ माडम् 96

माटम्–सौध; पॊऩ् कॊण्टु इऴैत्त–स्वर्णनिर्मित हैं; मणियै कॊटु पॊतिन्त–मणि-जड़ित हैं; मिऩ् कॊण्टु अमैत्त–विद्युत् से रचित हैं; वॆयिलै कॊटु चमैत्त–धूप के बने; ऎऩ् कॊण्टु इयऱ्ऱिय ऎऩ–किसके (साथ) निर्मित हैं; ऎऩ–यह; तॆरिवु इलात–अज्ञात है; वऩ् कॊण्टल् विट्टु–बलवान मेघों को पार करके; मति मुट्टुवत–चन्द्र से टकरानेवाले हैं। ९६

लंका नगर के प्रासाद स्वर्णनिर्मित हैं। मणिजड़ित हैं। या विद्युत् के बने हुए हैं ! शायद सूर्य-रश्मि के बने हैं ! उनको देखकर ऐसे भाव उठते हैं। पर असल में वे किसके बने हैं —यह जानना कठिन है ! वे मेघमण्डल को पारकर चन्द्रमण्डल से टकरा रहे हैं। ९६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाहाल यङ्गळोडु नाहरुल हुन्दम्
पाहार् मरुङ्गुतुयि लॅन्नवुयर् पण्ब
आहाय मञ्जवहन् मेरुवै यनुक्कुम्
माहाल् वळङ्गुशिरु तॅन्रलॅन निन्रु 97

नाकालयङ्कळोटु–देव-प्रासादाओं के साथ; नाकर् उलकुम्–सुरलोक; तम्–लंका के; पाकु आर् मरुङ्कु–आंशिक रिक्त स्थानों में; तुयिल् ऍन्न–रहते हों, ऐसा; उयर् पण्प–ऊँचाई रखते हैं; आकायम् अञ्च–आकाश को डराते हुए; अकल् मेरुवै–विशाल मेरु को; अनुक्कुम्–शिथिल होने देते हैं; मा काल्–प्रबल प्रभंजन को; वळङ्कु चिरु तॅन्रल् ऍन–बहनेवाले मन्द मलयपवन बनाते हुए; निन्रु–स्थित थे (वे लंका के सौध)। ९७

देवों के महलों के साथ देवलोक इन सौधों के मध्य स्थलों में हों, इस तरह ये उन्नत हैं। आकाश को डराते हुए जो खड़ा रहता है, वह मेरुपर्वत भी इसको देखकर काँप जाता है। बहुत प्रबल प्रभञ्जन भी उनके विषय में मन्द दक्षिणी पवन के समान शक्तिहीन बन जाय, ऐसी दृढ़ता के साथ वे खड़े हैं। ९७

माहारिन् मिन्गोडि मडक्किन रडुक्कि
मीहार मॅङ्गणु नरुन्दुहळ् विळक्कि
आहाय कङ्गैयिनै यङ्गैयिनि लळ्ळिप्
पाहाय शॅञ्जॊलवर् वीशुपडु कारम् 98

कारम्–वे सौध; पाकु आय–चासनी-सम; चॅञ् चॊलवर्–मधुर बोली वाली दासियों द्वारा; मा कारिन्–बड़े मेघों की; मिन् कॊटि–बिजली की लताओं को; मटक्कितर् अटुक्कि–मोड़कर गट्ठा बाँधकर; मी कारम् ऍङ्कणुम्–सौधों के ऊपरी भागों में सर्वत्र; नरुम् तुकळ्–सुगन्धित धूल; विळक्कि–झाड़ देकर; अङ्कैयिनिल्–चुल्लू में; आकाय कङ्कैयिनै–आकाशगंगा (के जल) को; अळ्ळि–भर लेकर; वीचु पटु–छिड़के जाते हैं। ९८

उन प्रासादों में चासनी-सम बोली वाली दासियाँ विद्युत्-किरणों का बना झाड़ू लेकर बुहारती हैं और वहाँ कूड़े के रूप में जो पड़ा है, उस सुगन्ध-चूर्ण को दूर करती हैं। आकाशगंगा से हाथ में जल लेकर छिड़कती हैं। ९८

पञ्जि यूट्टिय पाडमै किण्किणिप् पदुमच्
चॅञ्जॆ विच्चॆळुम् बवळत्तिन् कॊळुञ्जुडर् चिदरि
मञ्जि नञ्जन निरमरैत् तरक्कियर् वडित्त
अञ्जि लोदियो डमैवन वर्वैदमक् कुवमै 99

पञ्चि ऊट्टिय–लाक्षारस-रंजित; पाटु अमै–कारीगरीयुक्त; किण्किणि–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पायलों से अलंकृत; पतुमम्–पद्मचरणों की; चॅम् चॅवि–ललाई; चॅऴुम् पवऴत्तितऩ्–पुष्ट विद्रुम की; कॊऴुम् चुटर्–प्रवृद्ध कांति; चितऱि–बिखेरकर; मऱ्चित्–मेघों का; अऱ्चत्त निऱम्–अंजनवर्ण; मऱैत्तु–छिपाकर; अरक्कियर् वटित्त–राक्षसियों के अलंकृत; अम् चिल् ओतियॊटु–सुन्दर (लाल रंग के) अल्प केशों से; अवै तमक्कु–उनसे; उवमै अमैवत्त–उपमित होने योग्य बने हैं। ९९

वहाँ देवांगनाएँ दासी का काम कर रही हैं। लाक्षारस-रंजित और कारीगरीयुक्त पायलों से अलंकृत उनके चरणों की विद्रुमलालिमा मेघों पर पड़ती है, जिससे मेघों की कालिमा छिप जाती है। तब वे मेघ राक्षसियों के अलंकृत (ताम्रवर्ण के) अल्प केशों के समान लगते हैं। ९९

नात्त नाण्मलर्क् कऱ्पह नऱुविरै नात्तऱ्
पात्तम् वायुऱ् वॅऱुत्तदा ळाऱुडैप् पऱवै
तेऩ् वाम्विरैच् चॅऴुङ्गऴु नीर्त्तुयिल् शॅय्य
वात्त याऱुदम् मरमियत् तलन्दॊऱु मडुप्प 100

नात्त कऱ्पक–कस्तूरीगन्ध-सुगन्धित कल्पतरु के; नाळ् मलर्–नवविकसित पुष्पों के; नऱु विरै नात्तऱ्–अच्छी सुगन्धि से युक्त; पात्तम्–शहद; वाय् ऊऱ्–उनके मुख में झरता है; वॅऱुत्त–उचटकर; आऱु ताळ् उटै पऱवै–षड्पदी (भ्रमर); तेऩ्–भ्रमरियाँ; अवाम्–जिसको बहुत चाहती हैं; वात्त याऱु–आकाशगंगा के; विरै चॅऴुम्–सुवासित और बड़े; कऴुनीर्–'कऴुनीर' नाम के पुष्प में; तुयिल् चॅय्य–सुलाने देते हुए; तम् अरमिय तलम् तॊऱुम्–उनके सभी हर्म्यों में; मटुप्प–आकर भर गये (ऐसे सौध स्थित हैं)। १००

उन सौधों के हर्म्यों में भ्रमर आकर बसते हैं। उनके मुख से कस्तूरी-गन्ध से भरपूर कल्पतरु के नवविकसित फूलों के अच्छे बास के साथ शहद चूता है। वे भ्रमर उसको पीते-पीते उचट जाते हैं। भ्रमरियाँ आकाश-गंगा के सुगन्धित लाल कुमुद फूलों पर सोना चाहती हैं। इसीलिए वे षड्पद उन हर्म्यों पर आकर ठहरते हैं। १००

कुऴलुम् वीणैयुम् याऴुमॅऩ् ऱिऩैयत्त कुऴैय
मऴलै मॅऩ्मॊऴि किळिक्किरुन् दळिक्किऩ्ऱ महळिर्
शुऴलुम् नऩ्ऩॆडुन् दडमणिच् चुवर्दॊऱुन् दुवऩ्ऱुम्
निऴलुन् दम्मैयुम् मॅय्म्मैनिऩ् ऱऱिवरु निलैय 101

कुऴलुम्–वंशी और; वीणैयुम्–वीणा और; याऴुम्–'याऴ' नामक वाद्य; ऎऩ्ऱिऩैयत्त–आदि ऐसे वाद्य; कुऴैय–शिथिल पड़ जायँ ऐसा; मॅऩ् मऴलै मॊऴि–कोमल तुतली बोली; इरुऩ्तु–स्वयं रहकर; किळिक्कु–शुकों को; अळिक्किऩ्ऱ मकळिर्–जो सिखा रही थीं, वे स्त्रियाँ; चुऴलुम्–प्रकाशवलयित; नल्–श्रेष्ठ; नॆटुम्–बड़े; तटमणि–बड़े रत्नों से युक्त; चुवर् तॊऱुम्–सभी दीवारों पर; तुवऩ्ऱुम्–(बड़ी संख्या में) दिखनेवाले; निऴलुम्–प्रतिबिम्बों और; तम्मैयुम्–अपनों को;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मॆय्म्मै निन्ऱ–सच्चे रूप से; अऱिवु अरु–जानना कठिन है; निलैय–ऐसे प्रासाद थे वे। १०१

उन प्रासादों में स्त्रियाँ रहकर शुकों को वंशी, वीणा और 'याळ्' नामक वाद्य को मधुरता में हरानेवाली बोली सिखाती रहती हैं। तब उनके प्रतिबिम्ब प्रकाश-भरी, ऊँची और सुन्दर दीवारों पर पड़ जाते हैं। ये स्त्रियाँ उनमें और अपने में भेद नहीं कर पातीं। १०१

इऩैय माडङ्ग ळिन्दिरऱ् कमैवर वॆडुत्तु
वऩैयु माट्चिय वॆऩ्ऩिलच् चॊल्लुमा शुण्णुम्
अऩैय दामॆऩि ऩरक्करदन् दिरुवुक्कु मळवै
निऩैय लामऩ्ऱि युवमैयु मऩ्ऩदा निऱ्कुम् 102

इऩैय माटङ्कळ्–ऐसे प्रासाद; इन्तिरऱ्कु अमैवर–इन्द्र के वास के योग्य रीति से; ऍटुत्तु वऩैयुम्–रचित और सज्जित; माट्चिय–शानदार है; ऍऩ्ऩिल्–कहें तो; अ चॊल्लुम्–वह कथन भी; माचु उण्णुम्–दोषपूर्ण होगा; अऩैयताम् ऍऩिऩ्–वैसा है तो; अरक्कर् तम् तिरुवुक्कुम्–राक्षसों के वैभव की; अळवै–सीमा; निऩैयलाम् अऩ्ऱि–कल्पना कर सकें तो कर सकते हैं, उसको छोड़; उवमैयुम्–उपमा कहने लगें; अऩ्ऩता निऱ्कुम्–वह भी (वैसी) दोषपूर्ण होगी। १०२

ये सौध इन्द्र के रहने योग्य रीति से बने हैं क्या ? ऐसा कहना दोषपूर्ण होगा। तब सोचिए ऐसे सौधों के स्वामी राक्षसों के वैभव का क्या कहा जाय ? मन से अनुमान लगा सकते हैं, बस। उसको छोड़कर उपमान कहें तो वह भी असफल और निरर्थक ही होगा। १०२

मणिह ळॆत्तुणै पॆरियऩ माल्तिरु मार्बिऩ्
अणियुङ् गाशिऩु महऩ्ऱऩ वुळवॆऩि लरिदाल्
तिणियु नऩ्ऩॆडुन् दिरुनहर् दॆय्वमात् तच्चऩ्
तुणिविऩ् वऩ्दवऩ् तॊट्टळ हिळैत्तवत् तॊळिल्हळ् 103

मणिकळ् ऍत्ततै पॆरियऩ–मणियाँ कितनी ही बड़ी क्यों न हों; माल्–विष्णुदेव के; तिरु मार्पिऩ्–श्रीवक्ष में; अणियुम् काचिऩुम्–जो पहनते हैं, उस (कौस्तुभ-) मणि से; अकऩ्ऱऩ उळ–बड़ी हैं; ऍऩिल् अरिऩु–कहा जाय, यह कहना दुर्लभ है; तॆय्व मा तच्चऩ्–श्रेष्ठ देवशिल्पी; तुणिविऩ् वऩ्ऩु–निश्चय लेकर आया; नल् नॆटुम् तिरु नकर्–अच्छा और बड़ा श्रीनगर (लंका) में; अवऩ् तॊट्टु–उसने अपने हाथ से स्पर्श करके; अळकु इळैत्त–जिन्हें सुन्दर बनाया; अऩ् तॊळिल् कळ्–वे शिल्पकार्य; तिणियुम्–सौन्दर्य से कूट-कूटकर भरे हैं। १०३

अन्यत्र प्राप्य मणियाँ चाहे जितनी बड़ी या उत्कृष्ट हों पर श्रीविष्णु के वक्षःस्थल की कौस्तुभमणि से बड़ी हो ऐसी मणि का मिलना दुर्लभ है। वैसे ही बहुत ही कुशल देवशिल्पी ने इस उत्तम लक्षणों से पूर्ण सुन्दर लंका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नगरी में अपनी कला की जो कारीगरियाँ स्वयं रची हैं, वे अत्यन्त सौन्दर्य से भरपूर हैं। १०३

मरम डङ्गलुङ् गर्पह मनैयॅलाङ् गऩहम्
अरम डन्दैयर् शिलदिय ररक्कियर्क् कमरर्
उरम डङ्गिवन् दुऴैयरा युऴल्हुव रॉरुवर्
तरम डङ्गुव दऩ्ऱिदु तवञ्जॅयत् तहुमाल् 104

मरम् अटङ्कलुम्–वहाँ के सारे वृक्ष; कर्पकम्–कल्पतरु हैं; मऩै अँलाम्–सारे गृह; कऩकम्–स्वर्णनिर्मित हैं; अरक्कियर्क्कु–राक्षसियों की; अरमटन्तैयर्–देवस्त्रियाँ; चिलतियर्–दासियाँ हैं; अमरर्–सुर लोग; उरम् अटङ्कि वन्तु–बल खोकर आये; उऴैयराय् उऴल्कुवर्–चपरासियों के रूप में घेरकर आते हैं; इतु–यह; ऑरुवर्–किसी की; तरम् अटङ्कुवतु अऩ्ऱु–योग्यता के अधीन होनेवाला नहीं है; तवम् चॅयतकुम्–तप ही कर्तव्य है। १०४

वहाँ तरु सब कल्पतरु हैं। भवन सब स्वर्णभवन हैं। राक्षसियों की दासियाँ देवांगनाएँ हैं। देवता लोग अपना अधिकार खोकर सेवा-टहल करते घूमते हैं। यह सब किसी की योग्यता के अधीनस्थ हो सकते हैं क्या ? नहीं यह सब तपस्या के ही फलस्वरूप मिल सकते हैं। इसलिए तप ही सबके लिए करणीय काम है। १०४

तेव रॅऩ्बवर् यारुमित् तिरुनहर्क् किऱैवर्
केवल् शॅय्बवर् शॅय्हिला दवरॅव रॅऩ्ऩित्
मूवर् तम्मुऴु मिरुवरॅऩ् ऱालिऩि मुयलिल्
ताविन् मादव मल्लदु पिऱिदॊऩ्ऱु तहुमो 105

तेवर् अँऩ्पवर् यारुम्–देव सभी; इ तिरुनकर्क्कु–इस श्रीनगर के; इऱैवर्क्कु–राजा के; एवल् चॅय्पवर्–कैंकर्य करनेवाले हैं; चॅय्किलातवर्–न करते; अँवर्–कौन; अँऩ्ऩित्–पूछें तो; मूवर् तम्मुऴुम्–त्रिदेवों में; इरुवर्–दो हैं; अँऩ्ऱाल्–तो; इऩि मुयलिल्–अब प्रयास करने; ता इल्–निर्दोष; मा तवम्–महान् तप; अल्लतु–छोड़कर; पिऱितु ऑऩ्ऱु–दूसरा कोई; तकुमो–योग्य हो सकता है क्या। १०५

सारे देवता इस श्रीनगर के स्वामी रावण की दासता करनेवाले ही हैं। कौन हैं जो वैसा नहीं करते ? त्रिमूर्तियों में दो ही हैं —श्रीविष्णु और शिवजी। तो फिर प्रयत्न किस बात का करना है ? निर्दोष महान् तप को छोड़कर और कोई प्रयत्न करने योग्य है क्या ? । १०५

पोरि यऩ्ऱऩ तोऱ्ऱवॅऩ् ऱिहऴ्दलिऱ् पुऱम्बोय्
नेरि यऩ्ऱवऩ् ऱिशैदॊऱु निऩ्ऱमा निऱ्क
आरि यऩ्ऱऩित् तॅय्वमाक् कळिऱुमो राऴिच्
चूरि यऩ्ऱऩित् तेरुमे यिऩ्नहर्त् तॊहाद 106

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पोर् इयन्ऱन्न–युद्ध करके; तोर्ऱ–हार गये; ऍन्ऱु–ऐसा; इकळ्तलिल्–अवमाने जाने से; पुऱम् पोय्–अलग एक ओर जाकर; नेर् इयन्ऱ–आमने-सामने; वन् तिचै तॊऱुम्–सुदृढ़ दिशा-दिशा में; निन्ऱ मा–जो दिग्गज खड़े हैं, वे; निऱ्क–एक ओर रहें; आरियन्–हरिहर-पुत्र शास्ता का; तत्ति–अप्रमेय; तॆय्व–दिव्य; मा कळिऱुम्–महान् (वाहन) गज और; चूरियन्–सूर्य का; ओर आऴि तत्ति तेरुमे–अनुपम एक-चक्र-रथ ही; इ नकर्–इस नगर में; तॊकात–न मिल पाये। १०६

लंका में सभी गज और रथ थे। पर उनमें केवल निम्नांकित गज और रथ नहीं मिले थे। आठ दिग्गज जो रावण से लड़कर हार गये और अपमानित होकर सभी दिशाओं में जाकर खड़े हो गये थे; और वह उत्तम गज जो हरिहर-पुत्र 'शास्ता' का वाहन है। रथों में सूर्य का एकचक्र-रथ नहीं मिला था। (क्षीरसागर-मंथन से उद्भूत अमृत को प्राप्त करने के लिए देवासुरों में लड़ाई मची। तब विष्णु मोहनी का रूप धर आये थे। तब शिवजी उन पर मोहित हो गये। उनके पुत्र पैदा हो गया। दक्षिण में उन हरिहरपुत्र देव की बड़ी महिमा है। वे 'शास्ता' कहे जाते हैं।)। १०६

वाऴु मन्नुयिर् यावैयु मॊरुवऴि वाऴुम्
ऊऴि नायहन् ऱिरुवयि ऱॊत्तुळ दिव्वूर्
आऴि यण्डत्ति ऩरुक्कन्ऱ ऩलङ्गुदेर्प् पुरवि
एऴु मल्लऩ वीण्डुळ कुदिरैह ळॆल्लाम् 107

इव् वूर्–यह नगर; वाऴुम् मन् उयिर् यावैयुम्–संसार में जीनेवाले अक्षय सभी जीव; ऒरु वऴि वाऴुम्–जिसमें एक साथ मिलकर रहते हैं; ऊऴि नायकन्–युगान्त में श्रीविष्णु के; तिरु वयिऱु ऒत्तुळतु–दिव्य उदर के समान था; आऴि अण्टत्तिन्–गोल अण्ड के (अश्वों में); अरुक्कन् तन्–सूर्य के; अलङ्कु तेर्–हिलनेवाले रथ में जुते हुए; पुरवि एऴुम्–सातों अश्व; अल्लऩ–जो नहीं थे; कुतिरैकळ् ऍल्लाम्–वे सभी अश्व; ईण्टु उळ–यहाँ हैं। १०७

यह लंका नगर युगान्तकाल में सभी जीवों का वासस्थान जो श्रीविष्णु का श्रीउदर है, उसके समान लगा। इसमें अण्ड के सभी अश्व पाये गये; केवल सूर्य के हिलते चलनेवाले रथ के सातों अश्व उनमें नहीं मिले थे। १०७

तऴङ्गु पेरियि ऩरवमुम् तहैनॆडुङ् गळिऱु
मुऴङ्गु मोदैयु मूरिनीर् मुऴक्कॊडु मुऴङ्गुम्
कॊऴुङ्गु रऱ्पुदुक् कुदलैयर् नूबुरक् कुरलुम्
वऴङ्गु पेररुञ् जदिहळु वयिन्ऱॊऱु मऱैयुम् 108

तऴङ्कु–बजनेवाली; पेरियिन् अरवमुम्–भेरी का नाद; तकै–श्रेष्ठ; नॆटुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कळिऱु–बड़े गजों की; मुळङ्कुम् ओतैयुम्–चिंघाड़ का नाद; मूरि नीर्–अत्यधिक जल से भरे समुद्र के; मुळक्कोटु मुळङ्कुम्–गर्जन के साथ मिलकर उठते हैं; कोळुम् कुरल्–गम्भीर कण्ठ के साथ; पुतु कुतलैयर–नित-नवीन रूप से मधुर लगनेवाली तुतली बोली वाली स्त्रियों की; नूपुर कुरलुम्–नपुर की ध्वनि; वळङ्कु–उनके किये; पेर् अरुम् चतिकळुम्–श्रेष्ठ नर्तन के अपूर्व पदन्यास से उत्पन्न ध्वनि; वयिन् तोरुम्–स्थान-स्थान पर; ओलिक्कुम्–सुनायी देती है। १०८

उस नगर में भेरियों का नाद और श्रेष्ठ गजों के चिंघाड़ने की ध्वनि दोनों विस्तृत जल-तल से युक्त समुद्र के गर्जन के साथ मिलकर सुनाई देते हैं। नितनवीन लगनेवाले पुष्कल, मधुर कंठस्वर वाली स्त्रियों के नूपुरों का मोहक नाद उनके नृत्य-मुद्रा में मञ्च पर पड़नेवाले चरण चापों की ध्वनि के साथ मिलकर यत्र-तत्र सुनाई देता है। १०८

मरह दत्तिनु मऱुळ मणियिनु ममैत्त
कुरह दत्तनित् तेरैला मुऱैन्दिडुङ् गूडम्
इरवि वॅट्किड विमैक्किन्ऱ वियऱ्कैय
नरह मोक्कुमा नन्नंडुन् दुऱक्कमिन् नहर्क्कु 109

मरकतत्तिनुम्–मरकत और; मऱुळ मणियिनुम्–अन्य मणियों की; अमैत्त–रचित; कुरकत तनि तेर् ऍलाम्–अनुपम सभी अश्वरथ; उऱैन्तिटुम्—जहाँ रहते हैं; कूटम्–वे शालाएँ; इरवि वॅट्किट–सूर्य को लजाते हुए; इमैक्किन्ऱ इयऱ्कैय–छटा बिखेरती हैं, ऐसे स्वभाव की हैं; ऍन्ऱाल्—तो; इ नकर्क्कु–इस नगर के सामने; नल् नॅटुम् तुऱक्कम्–बड़ा अच्छा कहलानेवाला स्वर्ग; नरकम् ऑक्कुम्–नरक के समान लगेगा। १०९

वहाँ की रथ-शालाएँ, जो मरकत और अन्य रत्नों के साथ निर्मित थीं और जिनमें अश्व-जुते रथ रहते थे, सूर्य को भी लजाते हुए तेजोमय लगती थीं। तो सोचें ! बहुत ही श्रेष्ठ कहकर प्रशंसित स्वर्ग भी इसके सामने नरक था। १०९

तिरुहु वॅञ्जिनत् तरक्करुङ् गरुनिऱन् दीर्न्दार्
अरुहु पोहिन्ऱ तिङ्गळु मऱुवऱ्ऱ दळहैप्
परुहु मिन्नहर्त् तुन्नॊळि परत्तलिऱ् पशुम्बॊन्
उरुहु हिन्ऱदु पोन्ऱुळ दुलहुशू ळुवरि 110

अळकै परुकुम्–सौन्दर्य-समन्वित; इ नकर्–इस नगर की; तुन् ऒळि–पुष्कल कान्ति; परत्तलिन्–व्यापती है, इसलिए; तिरुकु वॅम् चिनत्तु–बुरे और भयंकर कोप वाले; अरक्करुम्–राक्षस भी; करु निऱम् तीर्न्तार्–काले रंग से मुक्त हो गये; अरुकु पोकिन्ऱ–पास से जानेवाला; तिङ्कळुम्–चन्द्र भी; मऱु अऱ्ऱतु–कलंकहीन हो गया; उलकु चूळ् उवरि–पृथ्वी को घेरे रहनेवाला समुद्र; पचुम् पॊन्–चोखा स्वर्ण; उरुकुकिन्ऱतु पोन्ऱु उळतु–पिघलता-सा है। ११०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सौन्दर्य को जिसने अपने में समाहित कर लिया था, उस लंका नगरी की कान्ति के पड़ने से राक्षस भी काले रंग से मुक्त हो गये थे। पास से जानेवाला चन्द्र भी कलंक-हीन हो गया। पृथ्वी को घेरे रहनेवाला सागर भी पिघलते स्वर्ण के समान लगा। ११०

अण्ड मुऱ्ऱवुम् विळ्ळङ्गिरु ळहऱ्ऱिनिन् ऱहल्वान्
कण्ड वत्तनिक् कडिनहर् नॅडुमनै कदिर्हट्
कुण्ड वाऱ्ऱलॅन् ऱुरैप्परि दॊप्पिडिऱ् ऱम्मुन्
विण्ड वाय्च्चिऱु मिन्मिनि यॅन्नवुम् विळङ्गा 111

अ तति कटि नकर्—उस अनुपम सुरक्षित नगर के; नॅटु मतै—उन्नत प्रासाद; अण्टम् मुऱ्ऱवुम्—अण्ड भर को; विळ्ळङ्कु इरुळ्—लीलनेवाले अन्धकार को; अकऱ्ऱि निन्ऱु—दूर करके खड़े हैं; अकल् वान् कण्ट—विस्तृत आकाश को स्पर्श करते हैं; अ आऱ्ऱल्—वह शक्ति; कतिर् कट्कु—अन्य (सूर्य आदि) ज्योतिपुंजों के पास; उण्टु—है; ऍन्ऱु—ऐसा; उरैप्परितु—कहना कठिन है; ऒप्पिटिल्—तुलना करें तो; तम्मुन्—उनके सामने; विण्ट वाय्—खले मुख के; चिऱु मिन्मिति—छोटे खद्योत; ऍन्नवुम्—सम भी; विळङ्का—प्रकाशमान नहीं होंगे। १११

उस अनुपम व सुरक्षित नगर के उच्च प्रासाद अण्डग्रासक अँधेरे को भगाते हुए और विशाल आकाश में व्याप्त खड़े थे। वह शक्ति द्वादश आदित्य आदि तेजोवानों के पास है —यह कहना ठीक नहीं होगा। तुलना करेंगे तो वे इनके सामने विदीर्ण (खुले) मुख वाले खद्योत-सम भी नहीं रह सकेंगे। १११

तेनुञ् जान्दमु मान्मदच् चॅऱिनऱुञ् जेऱुम्
वान नाण्मलर् कऱ्पह मलर्हळु वयमात्
तान वारियि नीरॊडुम् बडुत्तलिऱ् ऱळीइय
मीनुन् दानुमोर् वॅऱिमणङ् गमळुमाल् वेलै 112

तेनुम्—शहद; चान्तमुम्—चन्दन; मान्मत—कस्तूरी; चॅऱि—मिश्रित; नऱुम् चेऱुम्—सुगन्धित लेप; वान मलर्—स्वर्ग में पुष्पित; नाळ् कऱ्पक मलर्कळुम्—सद्यविकसित कल्पसुमन; वय मा—सशक्त गजों के; तान वारियिन् नीरॊटुम्—मद-धार के जल के साथ; वेलै पटुत्तलिल्—बहकर समुद्र में जा मिलते हैं, अतः; तानुम्—वह समुद्र और; तळीइय मीनुम्—उस पर रहनेवाली मछलियाँ; ओर् वॅऱि मणम्—अनुपम गम्भीर सुगन्ध; कमळुम्—देती हैं। ११२

शहद, चाँद, मृग-कस्तूरी का लेप, स्वर्गलोक के सदाबहार कल्पतरु के नवविकसित फूल —ये सब सशक्त गजों के मद-नीर के साथ मिलकर समुद्र में पहुँच जाते हैं। इस कारण समुद्र और समुद्र में रहनेवाली मछलियों से एक अनुपम सुगन्ध छिटकती है। ११२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॆय्वत् तच्चनैप् पुहळ्दुमो शॆङ्गण्वा ळरक्कन्
मॆय्यॊत् तार्रिय तवत्तॆये वियत्तुमो विरिञ्जन्
ऐयप् पाडिला वरत्तॆये मदित्तुमो वरियात्
तॊय्यऱ चिन्दैयेम् यावरै यावदॆन्ऱु तुदिप्पेम् 113

तॆय्व तच्चनै–देवशिल्पी विश्वकर्मा की; पुकळ्तुमो–प्रशंसा करें; चॆङ्कण् वाळ् अरक्कन्–रक्ताक्ष भयंकर राक्षस; मॆय् ऒत्तु–(की) शरीर को कष्ट देते हुए की गयी; तवत्तॆये वियत्तुमो–तपस्या से विस्मित होंगे; विरिञ्चन्–विरंचि के दिये; ऐयप्पाटु इला–अमोघ; वरत्तॆये–वर की ही; मतित्तुमो–गणना करें; अरियान जानते; तॊय्यल् चिन्तैयेम्–निर्बल मन वाले हम; यावरै–किसकी; यातु ऎन्ऱु–क्या ही कहकर; तुतिप्पेम्–प्रशंसा करें। ११३

इसको देखकर क्या देवशिल्पी विश्वकर्मा की प्रशंसा करें ? या भयंकर रक्ताक्ष रावण की कायक्लेश-सहित की गयी तपस्या की महिमा पर विस्मय करें ? या विरंचि के द्वारा दिये गये अमोघ वरों को मान्यता दें ? किंकर्तव्यविमूढ़ होकर लटनेवाले मन को लेकर हम इन तीनों में किसकी और कैसी प्रशंसा करें ? । ११३

वानुम् निलनुम् बॆरुमारिनि मऱ्ऱु मुण्डो
कानुम् बॊळिलु मिवैशॆङ्गन हत्ति नालुम्
एनैम् मणियालु मियऱ्ऱिय वेनुम् यावुम्
तेनुम् मलरुङ् गनियुन्दरच् चॆय्द शॆय्है 114

कानुम् पॊळिलुम् इवै–वन, उपवन ये हैं; चॆम् कनकत्तितालुम्–लाल (चोखे) कनक से; एनै मणियालुम्–अन्य मणियों से; इयऱ्ऱियवेनुम्–निर्मित तो भी; यावुम्–वे सब; तेनुम् मलरुम्–शहद और पुष्प; कनियुम् तर–फल देते हैं; चॆय्त चॆय्कै–ऐसा कार्य; वानुम् निलनुम्–आकाश और भूमि; इनि पॆऱुमाऱु–अब कर पायें; मऱ्ऱुम् उण्टो–यह और कहीं है क्या। ११४

लंका के वन और उद्यान लाल (चोखे) स्वर्ण और अन्य मणियों के पादपों आदि के बने हैं। तो भी उनसे शहद, फूल और फल प्राप्त होते हैं। ऐसा (रत्न-स्वर्ण तरुओं और लताओं से इनको दिलाने का) काम स्वर्ग या भूलोक में और कहीं हो, इसका कोई मार्ग है क्या ? । ११४

नीरुम् वैयमु नॆरुप्पुमे निमिर्नॆडुङ् गालुम्
मारि वानमुम् वळङ्गल वाहुन्दम् वळर्च्चि
ऊरि निन्नॆडुङ् गोबुरत् तुयर्च्चिहण् डुणर्न्दाल्
मेरु वॆङ्ङनम् विळर्क्कुमो मुळुमुऱ्ऱुम् वॆळ्हि 115

ऊरिन्–लंकापुरी में की; इ नॆटुम् कोपुरम्–ये लम्बी मीनारें; तम् वळर्च्चि–अपनी ऊँचाई से; नीरुम्–जल; वैयमुम–भूमि; नॆरुप्पुम्–अनल और; मेल् निमिर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नॆटुङ्कालुम्–ऊपर उठकर फैलनेवाला पवन; मारि वान्मुम्–और मेघों से युक्त आकाश; वळङ्कल आकुम्–इनको आने से रोकती हैं; उयर्च्चि कण्टु–ऊँचाई देखकर; उणर्न्ताल्–समझना हो तो; मेरु–मेरुपर्वत; वॆळ्कि–लजाकर; मुळु मुऱुम्–पूर्ण रूप से; ऍङ्ङनम् विळर्क्कुमो—कितना ही पांडुर हो जायगा। ११५

इस नगर की मीनारें बहुत उन्नत रहकर जल, भूमि, अग्नि ऊपर उठकर बहनेवाला पवन और मेघाश्रय आकाश —किसी को लंका के अन्दर आकर संचार करने नहीं देतीं। उनकी ऊँचाई की बात मेरु सोचे तो वह मन में लज्जा का अनुभव कर शरीर का कितना ही पांडुर हो जायगा ? (भय या लाज से शरीर का रंग श्वेत हो जाता है।)। ११५

मुन्नम् यावरु मिरावणन् मुन्नियुमॆन् ऱॆण्णिप्
पॊन्निन् मानहर् मीच्चॆलान् कदिरॆन्नप् पुहल्वार्
कन्नि यारैयि नुयर्च्चिहण् डिदुकडप् परिदॆन्
ऱुन्नि नाडॊऱुम् विलङ्गिनन् पोदलै युणरार् 116

मुन्नम्–पहले; यावरुम्–सब; कतिर्–सूर्य का; कन्नि आरैयिन्–सुरक्षा के प्राचीरों की; उयर्च्चि कण्टु–ऊँचाई देखकर; इतु कटप्परितु–यह लाँघना कठिन है; ऍन्ऱु उन्नि–ऐसा सोचकर; नाटॊऱुम्–प्रतिदिन; विलङ्कितन्–हटकर; पोतलै–जाना; उणरार्–न जानकर; इरावणन् मुन्नियुम्–रावण कोप करेगा; ऍन्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; पॊन्निन् मा नकर्–श्रेष्ठ स्वर्णपुरी के; मी चॆलान्–ऊपर से नहीं जाता; ऍन्न पुकल्वार्–ऐसा कहते रहे। ११६

लंका नगर के रक्षक प्राचीरों की ऊँचाई को देखकर सूर्य ने सोचा कि इसको पार करना असम्भव है। अतः वह प्रतिदिन उनसे हटकर दूर जाता था। पर पहले सबको यह बात नहीं विदित हुई। वे तो यही कहते थे कि 'रावण कोप करेगा' —इस विचार से सूर्य स्वर्णपुरी लंका के ऊपर से नहीं जाता था। ११६

तीय शॆय्हुन रमररा लन्नैयवर् शेरुम्
वायि लल्लदोर् वरम्बमैक् कुवॆन्नॆन मदियाक्
काय मॆन्नुमक् कणक्करु पदत्तैयुङ् गडक्क
एयु नन्मदि लिट्टनन् कयिलैयन् ऱॆडुत्तान् 117

अन्ऱु—उस दिन; कयिलै ऍटुत्तान्–जिसने कैलास को उठा लिया; तीय चॆय्कुतर् अमरर्–हमारी हानि करनेवाले देव हैं; अन्नैयवर्–वे; चेरुम् ओर् वायिल् अल्लतु–आवें तो एक ही मार्ग से आवें, यह सोचकर उसको छोड़कर; (ओर्) वरम्पु अमैक्कुवॆन्–रुकावट डालूँगा; ऍन्न मतिया–यह सोचकर; कायम् ऍन्नुम्–आकाश के; कणक्कु अऱु–असीम; अ पतत्तैयुम् कटक्क–स्थान को भी पार करके; एयुम् नल् मतिल्–बहुत ही बलवान प्राचीर; इट्टनन्–बनाया (उस रावण ने)। ११७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कैलास के उत्थापक रावण ने सोचा कि देवगण हमारे हानिकारक हैं। वे व्योमलोक में हैं और सुगमता से लंका में आ सकते हैं। उनका आने का मार्ग एक ही होना चाहिए। अतः राजद्वार को छोड़कर आकाश का मार्ग बन्द कर दूँगा। इसलिए उसने उन प्राचीरों को आकाश से भी अधिक ऊँचा और बलवान बनवा दिया था। ११७

कऱङ्गु कालपुहा कार्पुहा कदिर्पुहा कनलि
मऱम्बु हावॆऩिन् वाऩवर् पुहारॆऩल् वम्बे
तिऱम्बु कालत्तुम् यावॆयुञ् जिदॆयिनुञ् जिदॆया
अऱम्बु हामैया लऴियुमिप् पदियॆऩ वयिर्त्ताऩ् 118

कऱङ्कु काल्–ववण्डर बनाकर बहनेवाली हवा; पुका–वहाँ प्रवेश नहीं कर सकती; कार्–मेघ; पुका–घुसेंगे नहीं; कतिर् पुका–सूर्य की किरणें अन्दर नहीं जा सकतीं; कऩलि–आग के; मऱम्–क्रूर काम; पुका–नहीं चल सकते; ऍऩिऩ्–तो; वाऩवर् पुकार्–सुर नहीं आयेंगे; ऍऩल्–कहना; वम्पे–व्यर्थ है; तिऱम्पु कालत्तुम्–प्रपंचनाश के समय में भी; यावैयुम् चितैयितुम्–अन्य सभी मिट जायँगे तो भी; चितैया अऱम्–जो नष्ट नहीं होगा, वह धर्म भी; पुकामैयाल्–नहीं पहुँचता, इसलिए; इप्पति अऴियुम्–(उसी कारण) यह पुर नष्ट होगा; ऍऩ–ऐसा; अयिर्त्ताऩ्–संशय किया (मारुति ने)। ११८

इस नगर के अन्दर चक्रवात प्रवेश नहीं कर सकता। मेघ नहीं घुसते। किरणें अन्दर नहीं जातीं। आग की क्रूर करनियाँ नहीं पहुँचतीं। ऐसा कहने के बाद यह कहना कि 'देव नहीं आयेंगे' व्यर्थ है! लोक-नाश के समय में भी, जब सभी मिट जाते हैं, जो नहीं मिटता वह धर्म भी नहीं प्रवेश कर पाता! उसी एक कारण से यह लंका नगरी नष्ट हो जायगी! यह सोचकर हनुमान ने सन्देह किया। ११८

कॊण्डल् वाऩ्ऱिरैक् कुरैहड लिडैयदाय्क् कुडुमि
ऍण्ड वाविशुम् बॆट्टनिऩ् ऱिमैक्किऩ्ऱ वियल्बाल्
पण्ड रावणैप् पळ्ळियाऩ् ऩुऩ्दियिर् पयऩ्द
अण्ड मेयुमॊत् तिरुऩ्ददिव् वणिनह रमैदि 119

कॊण्टल्–मेघमिश्रित; वाऩ् तिरै–बड़ी तरंगें; कुरै कटल्–जिसमें गरजती हैं, उस समुद्र के; इटैयतु आय्–मध्य में स्थित; कुटुमि–मकानों के शिखर; ऍण् तवा–अमाप; विचुम्पु ऍट्ट–आकाश को छूते हुए; निऩ्ऱ–खड़े हैं; इमैक्किऩ्ऱ इयल्पाल्–और प्रकाश बिखेरते हैं, उस रीति से; इ अणि नकर्–इस सुन्दर नगर की; अमैति–रचना; अरावणै पळ्ळियाऩ्–शेषशायी (श्रीविष्णु) ने; पण्टु–पहले; उऩ्तियिल् पयऩ्त–अपने उदर से जो जनाया था; अण्टमेयुम् ऒत्तिरुऩ्ततु–उस (हिरण्यगर्भ के) अण्ड के समान भी था। ११९

यह नगर उस समुद्र के मध्य में था, जिसमें मेघ जमे थे और लहरें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गरज रही थीं। उसके सौधों के शिखर अनन्त आकाश को पहुँचे हुए थे और प्रकाशमय थे। इससे वह नगर उस (हिरण्यगर्भ के) अण्ड के समान लगा, जो शेषशायी भगवान श्रीविष्णु के श्रीउदर से उत्पन्न हुआ था। ११९

पाडु वार्पल रॆऩ्ऩिऩ्मऱ् ऱवरिऩुम् बलराल्
आडु वारॆऩि ऩवरिऩुम् बलरुळ रमैदि
कूडु वारिडै यिऩ्ऩियङ् गॊट्टुवार् वीडिल्
वीडु काण्गुऱुन् देवराल् विऴुनडङ् गाण्बार् 120

पाटुवार्–गानेवाले; पलर्–अनेक हैं; ऎऩ्ऩिऩ्–तो; अवरिऩुम् मऱ्ऱु–उनसे अधिक अन्य; पलर्–अनेक; आटुवार्–नाचते हैं; ऎऩिऩ्–तो; अमैति कूटुवार्–ताल-मेल (समाँ) बैठानेवाले; इटै–मध्य में; इऩ्ऩियम् कॊट्टुवार्–मृदंग आदि बजानेवाले; अवरिऩुम् पलर् उळर्–उनसे अनेक हैं; वीटिल् वीटु–अबाध मोक्ष; काण्कुऱुम्–देखना चाहनेवाले; तेवराल्–देवों द्वारा; विऴु नटम्–श्रेष्ठ नृत्य; काण्पार्–देखते हैं। १२०

गानेवाले बहुसंख्यक हैं तो नाचनेवाले उनसे भी अधिक संख्या में हैं। तो लयन-क्रिया में लगे हुए और 'मर्दल' नामक (ढोल-सा) वाद्य बजानेवाले उनसे भी अधिक संख्या में। ये सब देव (करते) थे, जो अबाध मोक्ष के आकांक्षी थे। राक्षस लोग उनके ये नृत्य देखकर आनन्दानुभव कर रहे थे। १२०

वाऩ मादरो डिहलुवर् विज्जैयर् महळिर्
आऩ मादरो डाडुव रियक्किय रवरॆच्
चोऩै वार्हुऴ लरक्कियर् तॊडर्हुवर् तॊडर्न्दाल्
एऩै नाहिय ररुनडक् किरियैयाय्न् दिरुप्पार् 121

विज्चैयर् मकळिर्–विद्याधर-स्त्रियाँ; वाऩ मातरोटु–अप्सराओं से; इकलुवर्–(नाच में) होड़ लगातीं; आऩ मातरोटु–उन (विद्याधर-स्त्रियों) से; इयक्कियर् आटुवर्–यक्षबालाएँ (स्पर्द्धा करके) नाचतीं; अवरै–उनका; चोऩै वार् कुऴल्–मेघ-सम और लम्बे केश वाली; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; तॊटर्कुवर्–अनुकरण करके नाचती हैं; अव्वाऱु तॊटर्न्ताल्–वैसा सिलसिला जब रहता; एऩै–जो छूटी रहीं वे; नाकियर्–नाग-स्त्रियाँ; अरु नट किरियै–श्रेष्ठ नृत्यकार्य का; आय्न्तु इरुप्पार्–विश्लेषण करती रहतीं। १२१

विद्याधरियाँ देवांगनाओं से स्पर्द्धा करके नाचती हैं। यक्षकन्याएँ उन विद्याधरियों से स्पर्द्धा करती हैं। काले मेघों के समान केश वाली राक्षसबालाएँ उन यक्षस्त्रियों से स्पर्द्धा करके नाचती हैं। जब वे सब ऐसा नाच रही हैं तब जो बची रहीं वे नागकन्याएँ उस नृत्य-कार्य के अनुकूल क्रियाओं में ध्यान देती रहतीं। १२१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इऴैयु माडैयु मालैयुञ् जान्दमु मेन्दि
उऴैय रॅन्ननिन् ऱुदवुव निदियङ्ग ळॊरुवर्
विऴैयुम् बोहमे यिङ्गिदु वाय्हॊडु विळम्बिल्
कुऴैयु नॅञ्जिनाल् निनैयिनु माशॅन्ऱु कॊळ्ळुम् 122

नितियङ्कळ्–नव निधियाँ; उऴैयर् अॅन्नन–पार्श्ववर्ती दासों के समान; निन्ऱु–रहकर; इऴैयुम्–आभरणों; आटैयुम्–वस्त्रों; मालैयुम्–मालाओं और; चान्तमुम्–चन्दन को; एन्ति–उठाकर; उतवुव–देती हैं (राक्षस-स्त्रियों को); इङ्कु–यहाँ (लंका में); ऒरुवर् विऴैयुम्–एक राक्षसी जो इच्छा करती और पा लेती है; पोकमे–वह भोग ही; इतु–इतना है (तो); वाय् कॊटु विळम्पिल्–(भोग की महिमा) मुख से कहने लगें तो; कुऴैयुम्–(मुख) थक जायगा; नॅञ्चिनाल् निनैयिनुम्–मन से सोचने लगें तो; माचॅन्ऱु कॊळ्ळुम्–सोचना भी अपराध होगा। १२२

(महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, वर आदि) नवनिधियाँ हमेशा साथ रहनेवाली दासियों की तरह आभरणों, वस्त्रों, मालाओं और चन्दन को उठाते हुए पास रहती हैं और राक्षसियों को यथा-समय देती हैं। यही वहाँ की एक-एक राक्षसी के मनमाने भोग की स्थिति है। शब्दों द्वारा वर्णन करने का प्रयास करेंगे तो वाणी थक जायगी। मन में सोचना भी अपराध ही होगा। १२२

पॊन्निन् माल्वरै मेन्मणि पॊऴिन्दन पॊरुव
उन्नि नान्मुहत् तॊरुवनिन् ऱूऴ्मुऱै युरैप्पप्
पन्नि नाळ्बल पणियुऴन् दरिदिनिऱ् पडैत्तान्
शॊन्न वानवर् तच्चना मिन्नहर् तुदिप्पान् 123

इन् नकर्–इस (लंका) नगर को; नान् मुकत्तॊरुवन्–चतुर्मुख; उन्नि निन्ऱु–सोचकर; ऊऴ् मुऱै–रचना-क्रम को; पन्नि उरैप्प–ज्यों-ज्यों कहते रहे; चॊन्न–जिससे कहा गया; वानवर् तच्चन्–उस देवशिल्पी (विश्वकर्मा) ने; तुतिप्पान्–स्तुत्य रीति से; पॊन्निन् माल् वरै मेऱ्–स्वर्ण (मेरु) महापर्वत पर; मणि पॊऴिन्तन पॊरुव–रत्न बरसाये गये हों जैसे; पल नाळ्–अनेक दिन; पणि उऴन्तु–परिश्रम करके; अरितिनिल्–अपूर्व रीति से; पटैत्तान्–रचा। १२३

चतुर्मुख ब्रह्मा खूब सोच-सोचकर रचना का क्रम बताते रहे और देवशिल्पी विश्वकर्मा ने अनेक दिन परिश्रम करके इस नगर को सबसे स्तुत्य रीति से ऐसा अपूर्व रच लिया मानो स्वर्णमेरु पर अनेक रत्न बरसाये गये हों। १२३

महर वीणैयिन् मन्दर कीदत्तु मऱैन्द
शहर वेलैयि नार्हलि दिशैमुहन् दळुवुम्
शिहर माळिहैत् तलन्दॊऱुन् दॆरिवैयर् तीऱ्ऱुम्
अहरु तूमत्ति नऴन्दिन मुहिऱ्कुल मनैत्तुम् 124

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मकर वीणैयिन्–मकराकार वीणा के; मन्तर कीतत्तु–मन्द स्वर में; चकर वेलैयिन्–सागर की; आर् कलि–बड़ी ध्वनि; मऱैन्त–छिप गयी; चिकर माळिकै–सशिखर महलों के; तिचै मुकम् तळुवुम्–दिशाओं के अन्तों को छूनेवाले; तलम् तोऱुम्–तलों में; तॅरिवैयर्–स्त्रियाँ; तीऱ्ऱुम्–जो अपने केशों को रमा रही थीं; अकरु तूमत्तिन्–उस अगरु के धूप में; मुकिऱ् कुलम्–मेघराशियाँ; अळुन्तित–दब गयीं। १२४

मकर के आकार की वीणा से जो मंथरस्वर उठा उसमें सगरपुत्र-खनित सागर के गर्जन लीन हो गये। सौध-शिखरों के दिगंत तक व्याप्त तलों पर स्त्रियाँ अपने केशों को जो अगरु-धूप लगा रही थीं, उस धूप में मेघसमूह छिप गये। १२४

पळिक्कु माणिहैत् तलन्दोऱु मिडन्दोऱुम् बशुन्देन्
तुळिक्कुङ् गऱ्पहत् तण्णऱुञ् जोलैह डोऱुम्
अळिक्कुन् देऱ्लुण् डाडिनर् पाडिन राहिक्
कळिक्किन् ऱारलाऱ् कवल्हिन्ऱा रॊरुवरैक् काणेम् 125

पळिङ्कु माळिकै–स्फटिकनिर्मित महलों के; तलम् तोऱुम्–स्थल-स्थल में; कऱ्पकम्–कल्पतरु; इटम् तोऱुम्–यत्र-तत्र; पचुम् तेन्–ताजे शहद को; तुळिक्कुम्–जिनमें गिराते थे; तण् नऱुम्–(उन) शीतल सुगन्धित; चोलैकळ् तोऱुम्–नन्दनवनों में; अळिक्कुम्–(जो प्रेमी) देते हैं; तेऱल् उण्टु–ताड़ी को पीकर; आटिनर् पाटिनर् आकि–नाचनेवाली, गानेवाली बनकर; कळिक्किन्ऱार् अलाल्–मत्त जो रहती हैं (राक्षसियाँ) उनको छोड़कर; कवल्किन्ऱार्–चिन्तित रहनेवाली; ऒरुवरै काणेम्–किसी (एक) को नहीं देखते। १२५

स्फटिक-निर्मित प्रासादों में सर्वत्र, और ऐसे शीतल-सुगन्धित उद्यानों में सर्वत्र, जहाँ कल्पवृक्ष ताज़ा शहद गिराते हैं, प्रेमियों द्वारा दी गयी ताड़ी को पीकर नारियाँ मत्त हो नाचती-गाती हैं। उनको छोड़कर कोई चिन्ता-मग्न रहनेवाले नहीं दिखते। १२५

तेऱन् मान्दिनर् तेनिशै मान्दिनर् शॅव्वाय्
ऊऱन् मान्दिन रिन्नुरै मान्दिन रूडल्
कूऱन् मान्दिन रनैयवर्त् तॊळुदवर् कोबत्
ताऱन् मान्दिन ररक्कियर्क् कुयिरन्न वरक्कर् 126

अरक्कियर्क्कु–राक्षसियों के लिए; उयिर् अन्न–प्राण-सम; अरक्कर्–राक्षसों ने; तेऱल् मान्तितर्–ताड़ी पी; तेनिचै मान्तितर्–मधु (मधुर) गीत सुना; चॅव्वाय् ऊऱल्–लाल अधर-रस का; मान्तितर्–पान किया; इन् उरै–मधुर वाणी का; मान्तितर्–भोग किया; ऊटल् कूऱल्–रूठन के वचन; मान्तितर्–सन्तोष के साथ सुने; अनैयवर् तॊळुतु–उनको नमस्कार करके; अवर् कोपत्तु आऱल्–उनके कोप का शान्त होना; मान्तितर्–देख आनन्द पाया। १२६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राक्षसियों के प्राणप्यारे राक्षसों ने उनका दिया मद्यपान किया; मधुमधुर संगीत का (पान) स्वादन किया; लाल अधरों के रस का पान किया। उनकी मीठी वाणी का रस पिया। फिर रूठन के समय के कठोर वचन भी आनन्द के साथ सुन लिये। उस पर उनको नमस्कार करके उनके शान्त होने का मोद-रस भोगा। १२६

ऍऱित्त कुङ्गुमत् तिळमुलै यॆऴुदिय तॊयिल्हळ्
करुत्त मेनियिऱ् पॊलिन्दत्त वूडलिऱ् कनत्तुऱु
मऱिक्क णोक्कियर् मलरडिप् पङ्गयप् पञ्जिल्
कुऱित्त कोलङ्गळ् पॊलिन्दिल वरक्करतङ् गुञ्जि 127

इळमुलै–बाल स्तनों पर; कुङ्कुमत्तु ऍऴुतिय–कुंकुम से लिखित; ऍऱित्त–प्रकाशमय; तॊयिल्कळ–शृंगारचित्र; करुत्त मेनियिल्–(राक्षसियों के) काले शरीर पर; पोलिन्तत–शोभे; ऊटलिल् कनत्तुऱु–रूठन में कोप करके; मऱिक्कण् नोक्कियर्–जो तरेरीं उन मृगनयना राक्षसियों के; पङ्कय मलरटि–पंकज-सम चरणों में; कुऱित्त कोलङ्कळ्–(महावर के) लिखित चित्र; अरक्कर् तम् कुञ्चि–राक्षसों के सिरों पर; पॊलिन्तिल–शोभित नहीं लगे। १२७

स्त्रियों के तरुण स्तनों पर कुंकुम-लेप से चित्रकारी जो बनी थी, उसके उज्ज्वल चित्र राक्षसों के काले शरीर पर लगे और चमके। पर रूठकर गुस्से के साथ देखनेवाली राक्षसी-नारियों के पंकज-चरणों पर चित्रित चित्रकारी राक्षसों के सिर पर लगी (राक्षसियों के प्रणय-कलह की चेष्टा में लात मारने से); पर उनके केशों पर नहीं चमकी (क्योंकि उनके केश का रंग पहले ही लाल था)। १२७

विळरिच् चॊल्लियर् कोदैयाल् वेलैयुण् मिडैन्द
पवळक् काडॆनप् पॊलिन्ददु पडैनॆडुङ् गण्णाल्
कुवळैक् कोट्टहङ् गडुत्तदु कुळिर्मुहक् कुळुवाल्
मुळरिक् कानह मानदु मुळङ्गुनी रिलङ्गै 128

मुळङ्कु नीर् इलङ्कै–शब्दायमान समुद्र से वलयित लंका; विळरिच् चॊल्लियर्–'विळरि' नाम की तान के समान बोली वाली; कोतैयाल्–(राक्षसियों के) ताम्र-केशों से; वेलैयुळ् मिटैन्त–समुद्र के अन्दर रहनेवाले; पवळक्काटु–प्रवालवन; ऍन–के समान; पॊलिन्ततु–शोभी; पटै नॆटुम् कण्णाल्–हथियारों-सदृश आयत आँखों के कारण; कुवळै कोट्टकम्–कुवलय-भरे तडाग; कटुत्ततु–के समान रही; कुळिर् मुक कुळुवाल्–उनके शीतल (मनोरम) मुखों के समूहों के कारण; मुळरि कानकम् आनतु–कमल-वन बनी। १२८

गर्जनशील जलमय सागर के मध्य लंका प्रवाल वन के समान दिखी, वहाँ की 'विळरि' राग के समान मीठी बोलनेवाली राक्षस-नारियों के सिर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के केशों के कारण। उनके हथियार-सम नेत्रों के कारण कुवलयसंकुल जलाशय के समान लगी और शीतल (मनोरम) मुखों को लेकर कमलवन (-सी) बन गयी। १२८

अॅळुन्दनर् तिरिन्दु वैहु मिडत्तदा यिन्रु कारुम्
किळिन्दिल तण्ड मॅन्नु मिदनैये किळप्प दल्लाल्
अळिन्दुनिन् ऱाव दॅन्ने यलरुळो नादि याह
ऑळिन्दवे ऱुयिर्ह ळॅल्ला मरक्करुक् कुऱैयुम् बोदा 129

अण्टम्–यह अण्ड; इन्ऱु काऱुम्–आज तक; अॅळुन्तनर्–(राक्षस) उठे; तिरिन्तु–घूमे; वैकुम्–और रहे; इटत्तताय्–उनको स्थान देती रही; किळिन्तिलतु–तो भी फटी नहीं; अॅन्नुम् इतनैये–इस बात को; किळप्पतु अल्लाल्–विस्मय के साथ कहने के सिवा; अळिन्तु निन्ऱु–मन में थक जाने से; आवतु अॅन्ने–होगा क्या; अलर् उळोन् आतियाक–कमलासन आदि; ऑळिन्त वेऱु–बाकी अन्य सभी; उयिर्कळ् अॅल्लाम्–जीवराशियाँ; अरक्करुक्कु–राक्षसों के लिए; उऱैयुम् पोता–गिनती के निशान भी नहीं बन सकतीं। १२९

यह अण्ड आज तक राक्षसों के घूमने, फिरने और रहने का स्थान रहकर भी बिना चिरे वैसे ही यथावत रहता है! यह विस्मय प्रकट करके मन को तृप्त कर लेने के सिवाय मन मारे रहने से क्या मिलनेवाला है? कमलासन ब्रह्मा से लेकर सारे जीव लंका के राक्षसों की संख्या के प्रतिनिधि-चिह्न भी नहीं बन सकते। १२९

कायत्ताऱ् पॅरियर् वीरङ् गणक्किल रुलहङ् गल्लुम्
आयत्तार् वरत्तिन् ऱन्मै यळवऱ्ऱा रऱिद ऱेऱ्ऱा
मायत्ता रवर्क्कॅङ् गेनुम् वरम्बुमुण् डामे मऱ्ऱोर्
तेयत्तार् तेयञ् जेऱल् तॅऱुविलार् शॅऱुविऱ् चेऱल् 130

कायत्ताल्–(लंकावासी सभी) आकार में; पॅरियर्–बड़े हैं; वीरम्–वीरता में; कणक्कु इलर्–अमाप हैं; उलकम् कल्लुम्–पृथ्वी को भी उखाड़नेवाले; आयत्तार्–कार्यचतुर हैं; वरत्तिन् तन्मै–वरों की संख्या; अळवऱ्ऱार्–अनगिनत (वाले) हैं; अऱितल् तेऱ्ऱा–न जानने योग्य; मायत्तार्–मायावी हैं; अवर्क्कु वरम्पुम्–उनकी सीमा भी; अॅङ्केनुम् उण्टामे–कहीं हो सकती है क्या; मऱ्ऱोर् तेयत्तार्–अन्य देश के लोगों का; तेयम् चेऱल्–इस देश में पहुँचना; तॅऱुविलार्–बलहीन लोगों का; चॅऱुविल् चेऱल्–युद्ध में जाना (सा) होगा। १३०

लंका नगर के राक्षस आकार में बड़े हैं। वीरता में भी अमाप हैं। संसार को ही खोद लेने का उपाय रच सकनेवाले हैं। उनसे प्राप्त वरों की गणना नहीं। ऐसे माया-कार्य करनेवाले, जिन्हें दूसरे जान नहीं सकते। उनकी संख्या या वीरता की सीमा भी है? अन्य देशवासियों का इस लंका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

में आना युद्ध-सामर्थ्य न रखनेवाले दुर्बलों का युद्ध में जाने के समान होगा। (तॆऱुविलार् चॆऱुविऱ् चेऱल्— का यह अर्थ है। पाठान्तर तॆऱुविलोर् तॆऱुविऱ् चेऱल्— का अर्थ होगा— एक वीथी से दूसरी वीथी में जाना देश से देश जाने के समान होगा।) । १३०

कऴलुलाङ् गालुङ् गाल वेलुलाङ् गैयुम् कान्दुम्
अऴलुलाङ् गण्णु मिल्ला वाडव रिल्लै यन्नार्
कुऴलुलाङ् गळिवण् डार्क्कुङ् गुञ्जियाऱ् पञ्जि कुन्ऱा
मऴलैयाऴ्क् कुदलैच् चॆव्वाय् मादरु मिल्लै मादो 131

कळल् उलाम्–पायलें जिन पर हिलती रहती हैं; कालुम्–वे पैर और; काल वेल्–यम-से भाले; उलाम् कैयुम्–जिनमें क्रियाशील रहते हैं वे हाथ; कान्तुम् अळल्–धधकती आग; उलाम्–जिनमें जलती रहती है; कण्णुम्–वे आँखें; इल्ला–जिनके नहीं हैं; आटवर् इल्लै–ऐसे पुरुष नहीं हैं; अन्नार्–उनके; कळि वण्टु–मत्त भ्रमर; आर्क्कुम्–जिन पर गुंजार करते (मँड़राते) हैं; कुळल् उलाम्–घुँघुराले और हिलनेवाले; कुञ्चियाल्–केशों से; पञ्चि कुन्ऱा–महावर जिनका पोंछा नहीं गया हो; मऴलै याऴ् कुतलै–(ऐसी) सुस्वर वीणा की-सी बोली और; चॆव्वाय्–लाल अधरों वाली; मातरुम्–स्त्रियाँ; इल्लै–नहीं हैं। १३१

वहाँ ऐसे पुरुष नहीं पाये जाते जिनके पैरों में पायलें रहकर नहीं हिलतीं; जिनके हाथों में यम के समान भयंकर भाले नहीं घूमते; और जिनकी आँखों में आग (तेज़) नहीं जलती। ऐसी राक्षस-नारियाँ भी पायी नहीं जातीं, जो मधुर वीणा के स्वर के समान मीठी वाणी और लाल अधरों से युक्त नहीं थीं और जिनके चरणों का महावर उन पुरुषों के मदमत्त भ्रमरों से गुञ्जित और लच्छेदार केशों द्वारा मिटा नहीं हो। १३१

कळ्ळुऱक् कऩिन्द पङ्गि यरक्करैक् कडुत्त कादल्
पुळ्ळुऱत् तॊडरु मेऩि पुलालुऱक् कडिदु पोव
वॆळ्ळुरुप् पॆयिऱ्ऱ चॆय्य तलैयिऩ करिय मॆय्य
उळ्ळुरुक् कळित्त कुन्ऱि नुयर्च्चिय वोडै याऩै 132

ओटै याऩै–मुखपट्टों से अलंकृत गज; कातल्–चाह के साथ; पुळ् उऱ–भ्रमर साथ लगकर; तॊटरुम्–जिनके पीछे जाते हैं; मेऩि–शरीर; पुलाल् उऱ–मांस-गन्ध से युक्त हैं, जैसे; कटितु पोव–तेज़ी से जाते हैं; वॆळ् उरुप्पु ऍयिऱ्ऱ–श्वेत दाँत वाले हैं; चॆय्य तलैयिऩ–ताम्र रंग के सिर वाले हैं; करिय मॆय्य—काले शरीर वाले हैं; उळ् उऱ–अन्दर से; कळित्त–मोद-भरे हैं; कुन्ऱिऩ् उयर्च्चिय–पर्वत-सम ऊँचे हैं; कळ् उऱ–शहद-सम; कऩिन्त–लाल; पङ्कि–केश वाले; अरक्करै–राक्षसों; कटुत्त–के समान हैं। १३२

मुखपट्टालंकृत गज तेज़ भागते हैं। उनके शरीर से मांस की गन्ध निकलती है और कामना के साथ भ्रमर उनके पीछे चलते हैं। वे श्वेतवर्ण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दाँतों वाले हैं; लाल सिरों वाले काले शरीरी; मन में मस्ती लिये हुए; पर्वत के समान ऊँचे। इससे वे शहद के समान लाल रंग वाले केशों से युक्त राक्षसों के समान लगते थे। १३२

वळ्ळिनुण् मरुङ्गु लॅन्न वानवर् महळि रुळ्ळम्
तळ्ळुऱप् पाणि तळ्ळा नडम्बुरि तडङ्गण् मादर्
वॅळ्ळिवॅण् मुऱुव ऱोन्ऱु मुहत्तियर् वॅळ्हु हिन्ऱार्
कळ्ळिशै यरक्कर् मादर् कळित्तिडु कुरवै काण्बार् 133

वळ्ळि–लता-समान; नुण् मरुङ्कुल् ऍन्न–अपनी क्षीण कमरों के समान; उळ्ळम् तळ्ळुऱ–मन के लचकते; पाणि तळ्ळा नटम्–तालबद्ध नृत्य; पुरि–करनेवाली; तटङ्कण् मातर्–आयतनयना स्त्रियाँ; वानवर् मकळिर्–देवांगनाएँ; वॅळ्ळि वॅण्–चाँदी-सम श्वेत; मुऱुवल्–हास; तोन्ऱुम्–जिन पर प्रकट है; मुकत्तियर्–ऐसे मुख वाली; वॅळ्कुकिन्ऱार्–लजाते हुए; कळ इच–ताड़ी पीकर गानेवाली; अरक्कर् मातर्–राक्षस-स्त्रियों के; कळित्तिटु कुरवै–किये 'कुरवै' नाम के नाच को; काण्पार्–देखती हैं। १३३

सुरनंदिनियाँ राक्षस-कुमारियों का 'कुरवै' नृत्य लज्जा का अनुभव करती हुई देख रही हैं। विशाल आँखों वाली देवांगनाएँ अपनी कमरों के समान लचकते मन के साथ तालबद्ध लय-सहित नाच सकनेवालियाँ हैं। वे अब श्वेत दाँतों को प्रकट करती हुई उनका नाच देख रही हैं! 'कुरवै' नृत्य में स्त्रियाँ परस्पर तालियाँ पीटते हुए नाचती हैं। (देवांगनाएँ इसलिए लज्जा का अनुभव करतीं और मन्दहास करती हैं कि वे राक्षसियाँ नशे में रहती हैं और उनके शरीरों पर वस्त्र ठीक नहीं रहते।)। १३३

ऑऱुत्तलो निऱ्क मऱॅम् मुयर्पडैक् कॉरुङ्गिव् वूर्वन्
दिऱुत्तलु मॅळिदा मऱुम् यावर्क्कु मियक्क मुण्डे
कऱुत्तवा ळरक्कि मारु मरक्करुङ् गळित्तु वीशि
वॅऱुत्तपूण् वॅऱुक्कै याले तूरुमिव् वीदि यॅल्लाम् 134

ऑऱुत्तलो निऱ्क–युद्ध करना एक ओर रहे; ऍम् उयर् पटैक्कु–हमारी श्रेष्ठ (वानर) सेना के लिए; इव्वूर्–इस नगर में; ऑरुङ्कु वन्तु–एक साथ आकर; इऱुत्तलुम्–आ पहुँचना भी; ऍळितु आम्–सुलभ हो सकता है; मऱुम्–तो भी; यावर्क्कुम्–उन सबके लिए; इयक्कम् उण्टे–संचार के लिए स्थान मिलेगा क्या; कऱुत्त वाळ्–काली छटा से युक्त; अरक्कि मारुम् अरक्करुम्–राक्षसियों और राक्षसों ने; कळित्तु–उतारकर; वीचि वॅऱुत्त–जिनको फेंक दूर किया है; पूण् वॅऱुक्कैयाले–आभरणों की पुष्कल राशि से; इ वीति ऍल्लाम्–ये सारी वीथियाँ; तूरुम्–पट गयी हैं। १३४

(हनुमान सोचता है—) हमारी सेना का इधर आकर युद्ध करना एक ओर रहे; शायद उनका एकत्र होकर इधर आना सुगम होगा। पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन वीरों के लिए इधर चलना-फिरना सुगम होगा क्या ? सभी वीथियाँ तो उन आभरणों से पटी हुई हैं, जिनको काले प्रकाश वाले राक्षसों और राक्षसियों ने उकताकर उतार फेंका था । १३४

वडङ्गळुङ् गुऴैयुम् बूणु मालैयुञ् जान्दुम् यानैक्
कडङ्गळुङ् गलिन मावि लाऴियुङ् गणक्कि लाद
इडङ्गाळि निडङ्ग डोरुम् यारॊडु मडुत्त वॆल्लाम्
अडङ्गिय दॆन्नि लॆन्ने याऴियि नाऴ्न्द दुण्डो 135

वटङ्कळुम्–हार और; कुऴैयुम्–कुण्डल और; पूणुम्–आभरण; मालैयुम्–मालाएँ; चान्तुम्–चन्दन; यानैक् कटङ्कळुम्–गजों के मदनीर की धाराएँ; कलिन मा–रास से युक्त अश्वों की; विलाऴियुम्–लार और झाग; कणक्किलात–अमाप हैं; इटङ्कळिन् इटङ्कळ् तोरुम्–अनेक स्थलों में; यारॊटु मटुत्त–नदियों से मिलकर; ऎल्लाम्–सभी; अटङ्कियतु ऎन्निन्–(इस समुद्र में) समा गये तो; आऴियिन् आऴ्न्ततु–इस समुद्र से अधिक गहरा; ऎन्ने उण्टु–क्या ही है । १३५

(इस पद्य में समुद्र की गहराई का संकेत है ।) हार, कुण्डल, आभरण, पुष्प-मालाएँ, चन्दन, हाथियों का मदजल, लगाम-लगे अश्वों के मुख से निकलनेवाला झाग —ये सब यत्र-तत्र अत्यधिक परिमाण में नदियों से मिलकर समुद्र में आ समाहित हो गये । तो उस समुद्र से गहरा क्या है ? । १३५

विऱ्पडै पॆरिदॆन् गेनो वेऱ्पडै मिहुमॆन् गेनो
मऱ्पडै युडैत्तॆन् गेनो वाट्पडै मलिवॆन् गेनो
कऱ्पणन् दण्डु पिण्डि पालमॆन् ऱिनैय कान्दु
नऱ्पडै पॆरिदॆन् गेनो नायहऱ् कुरैक्कु नाळिल् 136

नायकऱ्कु–अपने स्वामी से; उरैक्कुम् नाळिल्–जब कहूँ तब; विऱ्पटै–धनुर्धर वीरों की सेना; पॆरितु–बड़ी है; ऎन्केनो–कहूँ क्या; वेऱ्पटै–भालाधारी वीरों की सेना; मिकुम् ऎन्केनो–अधिक है कहूँ; मल् पटै उटैत्तु–मल्लों की सेना रखता है; ऎन्केनो–कहूँ; वाळ् पटै–तलवार-धारी वीरों की सेना; मलिवु ऎन्केनो–अधिक है कहूँ; कऱ्पणम्–काँटेदार गदा; तण्टु–दण्ड; पिण्टिपालम्–भिंदिपाल; ऎन्ऱु–आदि; इनैय कान्तुम्–ऐसे हथियारों से भूषित; नऱ्पटै–(वीरों की) अच्छी सेना; पॆरितु–बड़ी है; ऎन्केनो–कहूँ क्या । १३६

(हनुमान अपने आप कहने लगा ।) जब मैं अपने स्वामी श्रीराम से जा मिलूँ और यहाँ की सेना-स्थिति बताऊँ तो क्या कहूँगा ? धनुर्धर वीरों की सेना बड़ी है, कहूँ ? या भालाधारी वीरों की सेना बड़ी है —कहूँ ? मल्लों की सेना को बड़ा कहूँ या तलवारधारी वीरों की सेना को ? या यही कहूँगा कि 'कर्पणम्' नामक काँटेदार गदा, दण्ड, भिंदिपाल आदि चलानेवाले वीरों की सेना बड़ी है ? । १३६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅन्ऱन निलङ्गै नोक्कि यिनैयन पिऱवु मॅण्णि
निन्ऱव णरक्कर् वन्दु नेरिनु नेर्व रॅन्नात्
तन्ऱहै यरिय मेनि शुरुक्कियच् चारल् शार्न्दु
कुन्ऱिडै यिरुन्दान् वॅय्योन् कुडकडऱ् कुळिप्प दानान् 137

इलङ्कै नोक्कि–लंका को देखकर; अॅन्ऱनन्–ऐसा कहते हुए; इनैयन–यों; पिऱवुम्–और अन्य बातें; अॅण्णि निन्ऱ–सोचते हुए खड़े रहकर; अवण्–वहाँ; अरक्कर् वन्तु–राक्षस आकर; नेरिनुम्–मिलें तो; नेर्वर्–मिल सकेंगे; अॅन्नता–सोचकर; तन् तकै अरिय–अपने ही सम अपूर्व; मेनि–शरीर को; चुरुक्कि–संग्रह करके; अ कुन्ऱिटै–उस (प्रवाल) पर्वत के; चारल्–पार्श्व में; चार्न्तु इरुन्तान्–जाकर रहा; वॅय्योन्–किरणमाली; कुट कटल्–पश्चिमी सागर में; कुळिप्पतु आनान्–डूबने लगा। १३७

हनुमान प्रवाल पर्वत पर विराजे हुए यह सब सोच रहा था। तब उसे विचार आया कि राक्षस लोग वहाँ आ सकेंगे —इसकी सम्भावना है। इसलिए उसने अपने आकार को, जो उसके उन्नत स्वभाव के ही अनुरूप बड़ा था, छोटा कर लिया। फिर वह पर्वत के पार्श्वस्थल में जाकर रहा। तभी उष्णकिरण सूर्य भी पश्चिमी सागर में डूबा। १३७

एय्विनै यिऱुदियिऱ् चॅल्व मॅय्दिनान्
आय्विनै मनत्तिला नऱिञर् शॉऱ्कॉळान्
वीविनै निनैक्किला नॉरुवन् मॅय्यिलान्
तीविनै यॅनविरुळ् शॅऱिन्द दॅङ्गुमे 138

एय्विनै–पूर्वकर्म से; इऱुति इल् चॅल्वम्–अपार धन; अॅय्तिनान्–जिसे प्राप्त हो; मनत्तु आय्विनै–मन में सोचकर कार्य करनेवाला; इलान्–जो नहीं है; अऱिञर् चॉल्–विद्वानों का कहना; कॉळान्–जो ग्रहण नहीं करता; वीविनै–अपने मरण को; निनैक्किलान्–जो नहीं सोचता; मॅय्यिलान्–जो सत्यसंध नहीं; ऑरुवन्–ऐसे एक के; तीविनै अॅन–पाप के समान; अॅङ्कुम्–सर्वत्र; इरुळ्–अन्धकार; चॅऱिन्ततु–घने रूप से छा गया। १३८

तब अन्धकार छाने लगा। वह अन्धकार उस पापी के पाप के समान फैला जिसके पास पूर्व-सुकृत्य के फलस्वरूप धन मिला था; पर जिस अविवेकी असत्यवादी और ज्ञानी के उपदेशों को न सुननेवाले ने अपने सम्भाव्य मरण की बात भी नहीं सोची और पापकर्म करना आरम्भ कर दिया। १३८

करित्तमून् रॅयिलुडैक् कणिच्चि वानवन्
अॅरित्तलै यन्दण रिळैत्त यानैयै
उरित्तपे रुरिवैया लुलहुक् कोरुरै
पुरित्तन नान्मुह नॅन्नम् बॉऱपदे 139

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करित्त मूनु ऍयिल्–दग्ध-त्रिपुर; उटै–जिनके द्वारा बना; कणिच्चि वान्नवन्–"तप्त लोहा" के आयुध-धारी देव श्री शिवजी ने; ऍरितलै–यागाग्नि में; अन्तणर्–(दारुका वन के) ऋषियों ने; इऴैत्त–जिसको सृष्ट किया; यान्नैयै–उस गज को; उरित्त–उधेड़कर; पेर् उरिवैयाल्–उस बड़े चर्म से; नान्मुकन् उलकुक्कु–चतुर्मुख-सृष्ट इस संसार पर; ओर् उरै पुरित्तनन्–एक चादर उढ़ा ली; ऍन्नुम्–ऐसा कहने योग्य; पोऱ्पतु–रीति का था (वह अन्धकार)। १३९

दारुका वन के ऋषियों ने त्रिपुरांतक, परशु (या तप्त लोहे को हथियार के रूप में) रखनेवाले शिवजी को मारने के लिए होमाग्नि में एक हाथी को सृष्ट कराया था। शिवजी ने उस गज को मारकर उसका चर्म उधेड़ लिया। अब यह अंधकार उस गजचर्म के समान था, जिसे शिवजी ने चतुर्मुखरचित संसार पर उढ़ा दिया हो। १३९

अणङ्गरा वरशर्हो नलवि लाण्डॅलाम्
पणङ्गिळर् तलैतोऱु मुयिर्त्त पाय्विडम्
उणङ्गलि लुलहॅला मुऱैयि नुण्डुवन्
दिणङ्गॅरि पुहैयोडु मॅऴुन्द दॅन्नवे 140

अणङ्कु अरा–परपीड़क सर्पों का; अरचर् कोन्–राजा ने; अळविल् आण्टु ऍलाम्–असंख्यक वर्षों से; पणम् किळर् तलै तोऱुम्–खुले फनों के अपने सिरों से; उयिर्त्त–जो निकाला; पाय् विटम्–वह बहनेवाला विष; उणङ्कल् इल्–अक्षय; उलकॅलाम्–लोकों को; मुऱैयिन्–क्रम से; उण्टु वन्तु–नाश करके आकर; इणङ्कु–मिलित; ऍरि पुकैयोटुम्–आग और धुएँ के साथ; ऍऴुन्ततु–छा उठा हो; ऍन्नवे–इस रीति से (छाया)। १४०

और भी वह अंधकार विष के समान भी लगा। कष्टदायक सर्पों के राजा आदिशेषनाग के खुले फनों वाले सिरों से अब तक जितना विष निकला था वह सब मिलकर अक्षय लोकों को क्रम से लीलकर आया हो और आग और धुएँ के साथ छा उठा हो —ऐसा लगा वह अंधकार। १४०

वण्मैनीङ् गानॅडु मरबिन् वन्दवप्
पॅण्मैनीङ् गादहर् पुडैय पेदैयैत्
तिण्मैनीङ् गादवन् शिऱैवैत् तान्नॅनुम्
वॅण्मैनीङ् गियपुहऴ् विरिन्द दॅन्नवे 141

वण्मै नीङ्का–दानशीलता से जो रहित न हुआ; नॅटु मरपिन् वन्त–उस लम्बे कुल में उत्पन्न; अ पॅण्मै नीङ्कात–उस स्त्रीत्व-संयुक्त; कऱ्पुटैय पेतैयै–चरित्रवती अबोध बाला सीताजी को; तिण्मै नीङ्कातवन्–जो बलहीन नहीं रहा उस (सबल रावण) ने; चिऱै वैत्तान्–कारागृह में बन्द किया; ऍन्नुम्–यह; वॅण्मै नीङ्किय पुकऴ्–(असित यश=) निन्दा; विरिन्ततु–फैली; ऍन्नवे–जैसे (अन्धकार फैला)। १४१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वह अन्धकार प्रकाश (गौरव) से रहित उस अपयश के समान फैला कि दानशीलता से अविच्छिन्न दीर्घ कुल में उत्पन्न और स्त्रीत्व के गौरव से अत्यक्त चरित्रवती सती सीता को अबलहीन रावण ने कठोर कारा में बन्द कर रखा। (वॅण्मै नीङ्किय पुकळ की शब्द-योजना अनूठी है। उसका सीधा अर्थ 'यश, जिससे श्वेतता दूर हो गयी हो' —है)। १४१

अव्वळि यव्विरुळ् परन्द वायिडै
ॲव्वळि मरुङ्गिनु मरक्क रॅय्दिनार्
शॅव्वळि मन्दिरत् तिशैय राहैयाल्
वॅव्वळि यिरुडर मदित्तु मीच्चॅल्वार् 142

अ वळि–उस रीति से; अ इरुळ्–वह अन्धकार; परन्त आ इटै–जब फैला तब; अरक्कर्–राक्षस; ॲ वळि मरुङ्कितुम्–सब स्थानों में; ॲय्तिनार्–आये; मन्तिर चॅम् वळि–मन्त्रों के बल से अच्छे मार्ग बनाकर; तिचैयर्–सभी दिशाओं में जा सकनेवाले होने के कारण; वॅम् इरुळ् वळि तर–भयंकर अन्धकार ने भी मार्ग दिया; मतित्तु–उसका मथन करके; मी चॅल्वार्–आगे गये। १४२

जब अन्धकार वैसा फैल रहा था तब राक्षस सब स्थानों में आ गये और मन्त्रबल से जाने का सामर्थ्य रखने के कारण अन्धकार उन्हें रोक नहीं सका; बल्कि उसने मार्ग दिये। वे उस अन्धकार को रौंदते और पीसते हुए आगे जाने लगे। १४२

इन्दिरन् वळनहर्क् केहु वारॅळिल्, चन्दिर नुलहिनैच् चार्हु वार्शलत्
तन्दह नुरैयुळै यणुहु वारयिल्, वॅन्दॊळि लरक्कन देवन् मेयिनार् 143

अयिल्–भालाधारी; वॅम् तॊळिल्–क्रूरकर्मा; अरक्कनतु–राक्षस रावण की; एवल् मेयिनार्–आज्ञा धारण कर; इन्तिरन् वळ नकर्क्कु–इन्द्र के समृद्ध नगर; एकुवार्–जाते; ॲळिल्–सुन्दर; चन्तिरन् उलकितै–चन्द्रलोक; चार्कुवार्–पहुँचते; चलत्तु–कोपिष्ठ; अन्तकन् उरैयुळै–यम के वासस्थान के; अणुकुवार्–निकट जाते। १४३

वे राक्षस क्रूरकर्मा रावण के आज्ञाकारी थे। वे इन्द्र के समृद्ध नगर जाते; सुन्दर चन्द्रलोक पहुँचते। क्रोधशील यम के वासस्थान में ही जा पहुँचते थे। १४३

पॊन्नहर् मडन्दैयर् विञ्जैप् पूवैयर्
पन्नह वनिदैय रियक्कर् पावैयर्
मुन्निनर् पणिमुरै मारि मुन्दुवार्
मिन्निन मिडैन्दॆन विशुम्बिन् मेर्चॆल्वार् 144

पॊन्नकर् मटन्तैयर्–सुररमणियाँ; विञ्चै पूवैयर्–विद्याधर-विलासिनियाँ; पन्नक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वऩितैयर्–पन्नग-कन्याएँ; इयक्कर् पावैयर्–यक्षनन्दिनियाँ; पणि मुऱै माऱि–अपनी सेवाएँ पूरा करके; मुऩ्ऩितर्–एक के पहले एक; मुऩ्ऩुवार्–लौट जातीं; मिऩ् इऩम् मिटैन्तॆऩ–बिजली के समूह एकत्र हो जाएँ, जैसे; विचुम्पिऩ् मेल्–आकाश में; चॆल्वार्–गयीं। १४४

सुरनन्दिनियाँ, विद्याधरबालाएँ, पन्नगकन्याएँ, यक्षकुमारियाँ —ये सब लंका में अपनी सेवाएँ समाप्त करके एक के पहले एक अपने-अपने स्थान को जा रही थीं। वे बिजलियों के समूह के समान आपस में मिलकर आकाशमार्ग में जा रही थीं। १४४

तेवरु मवुणरुञ् जॆङ्ग णाहरुम्
मेवरु मियक्करुम् विञ्जै वेन्दरुम्
एवरुम् विशुम्बिरु ळिरिय वीण्डिनार्
तावरुम् बणिमुऱै तळुवुन् दऩ्मैयार् 145

ता अरुम्–निरन्तर; पणि मुऱै तळुवुम्–सेवा-क्रम अपनाने के; तऩ्मैयार्–स्वभाव वाले; तेवरुम् अवुणरुम्–देव और दानव; चॆम् कण् नाकरुम्–लाल आँखों के नाग लोग; मेवरुम् इयक्करुम्–प्यारे लगनेवाले यक्षगण और; विञ्चै वेन्तरुम्–विद्याधर राजा; एवरुम्–आदि सभी; विचुम्पु इरुळ् इरिय–आकाश से अन्धकार को दूर करते हुए; ईण्टिनार्–एकत्रित हुए। १४५

देवता लोग, दानव, लाल आँखों वाले नाग, मोहक शरीर वाले यक्ष, विद्याधर राजा आदि विविध देव जातियों के समूह भी आकाश में अन्धकार को दूर करते हुए जा रहे थे। वे सब विना भूल-चूक के अपनी-अपनी सेवाएँ पूरा करके जा रहे थे। १४५

चित्तिरप् पत्तियिऱ् ऱेवर् चॆऩ्ऱऩर्
इत्तुणै ताळ्त्तऩम् मुऩियु मॆऩ्ऱुऩम्
मुत्तिऩा रङ्गळुम् मुडियु मालैयुम्
उत्तरी यङ्गळुम् शरिय वोडुवार् 146

चित्तिर पत्तियिल्–चित्रों की पंक्तियों में जैसे; चॆऩ्ऱऩर्–जो गये; तेवर्–वे देव लोग; इ तुणै ताळ्त्तऩम्–इतनी देर विलम्ब कर लिया; मुऩियुम्–गुस्सा करेगा (रावण); ऍऩ्ऱु–ऐसा सोचकर; तम् मुत्तिऩ् आरङ्कळुम्–उनके मुक्ताहार और; मुटियुम्–किरीट; मालैयुम्–मालाएँ; उत्तरीयङ्कळुम्–और उत्तरीय; चरिय–इनको गिरने देते हुए; ओटुवार्–भागते चले। १४६

चित्रों की पंक्तियों के समान वे देव जाते रहे। "आज इतना विलम्ब हो गया; रावण कुपित होगा।" इस विचार से वे इतनी त्वरित गति से भागे कि उनके मुक्ताहार, किरीट, पुष्पमालाएँ और उत्तरीय शरीर पर से खिसककर नीचे गिरते जाते थे। १४६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तीण्डरुन् दीविनै तीक्कत् तीन्दुपोय्
माण्डऱ वुलर्न्ददु मारु दिप्पॅयर्
आण्डहै मारिवन् दळिक्क वायिडै
ईण्डऱ मुळैत्तॅन मुळैत्त दिन्दुवे 147

तीण्ट अरुम्–जिनके पास जाना असम्भव है; तीविनै तीक्क–उन पापों के जलाने से; अऱम्–धर्म; तीन्तु पोय्–जल गया और; माण्टु–मरकर; अऱ उलर्न्ततु–पूरा-पूरा सूख गया; मारुति पॅयर्–मारुति नामक; आण्टकै मारि–पुरुषश्रेष्ठ रूपी वर्षा ने; वन्तु अळिक्क–आकर कृपा की, इससे; आयिटै–तब; ईण्टु (अऱम्) मुळैत्तु–फिर से (धर्म) अंकुरित हुआ; अॅन–ऐसा कहने योग्य रीति से; इन्तु मुळैत्तु–चन्द्र उग आया। १४७

(तब चन्द्र उग आया— उसका वर्णन देखिए।) मानो धर्म को अस्पृश्य भयंकर पाप ने जला दिया। वह जला, मरा और एक दम सूख गया। अब मारुति नाम की वर्षा ने आकर कृपा बरसायी तो वह फिर से जीवित हो आया। उस धर्म के जैसे इन्दु उदित हुआ। १४७

वन्दन निराहवन् रूदन् वाळ्न्दनन्
अॅन्दैये यिन्दिर नामॅन् ऱेमुऱा
अन्दमिल् कीळ्त्तिशै यळह वाणुदल्
शुन्दरि मुहमॅनप् पॊलिन्दु तोन्ऱिऱ्ऱे 148

इराकवन् तूतन् वन्ततन्–श्रीराघव-दूत आया; अॅन्तैये इन्तिरन्–हमारे धाता इन्द्र; वाळ्न्ततन् आम्–जीवन्त हो गये; अॅन्ऱु–कहकर; एमुऱा–मुदित होकर; अन्तम् इल् कीळ्त्तिचै–अनन्त पूर्व दिशा रूपी; अळक वाळ् नुतल्–अलकावृत उज्ज्वल भाल वाली; चुन्तरि–सुन्दरी के; मुकम् अॅन–आनन के समान; इन्तु–चन्द्र; पॊलिन्तु तोन्ऱिऱ्ऱु–शोभायमान लगा। १४८

वह चन्द्र पूर्वदिशा रूपी श्वेत भाल वाली सुन्दरी के मुख के समान शोभा, जो इस विचार से प्रफुल्लित हुई थी कि श्रीराघव का दूत आ गया और मेरे धाता इन्द्र जीवन्त हो गये। १४८

कऱ्ऱैवॅण् कवरिपोल् कडलिन् वॅण्डिरै
चुऱ्ऱुनिन् ऱलमरप् पॊलिन्दु तोन्ऱिऱ्ऱाल्
इऱ्ऱदॅन् पहैयॅन वॅळुन्द विन्दिरन्
कॊऱ्ऱवॅण् गुडैयॅनक् कुळिर्वॅण् डिङ्गळे 149

अॅन् पकै–मेरा शत्रु; इऱ्ऱतु–मिट गया; अॅन अॅळुन्त–ऐसा सोचकर जो उठा; इन्तिरन्–इन्द्र के; वॅण् कॊऱ्ऱ कुटै अॅन–श्वेत विजय-छत्र के समान; कुळिर् वॅण् तिङ्कळ्–शीतल श्वेत चन्द्र; कटलिन् वॅण् तिरै कऱ्ऱै–समुद्र की श्वेत तरंगों के समूह के; वॅण् कवरि पोल्–श्वेत चँवर के समान; चुऱ्ऱुम् नित्ऱु–चारों ओर रहकर; अलमर–हिलते; पॊलिन्तु तोन्ऱिऱ्ऱु–शोभायमान प्रकट हुआ। १४९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वह चन्द्र इन्द्र के विजयी श्वेत छत्र के समान उगा जो इस विचार से प्रफुल्लित हो उठे थे कि अब मेरा शत्रु मिट गया। जैसे उस छत्र के आसपास चँवर डुलाये जाते हैं और हिलते हैं, वैसे ही इस उदीयमान चन्द्र के चारों तरफ़ समुद्र की श्वेत तरंगें लहर रही थीं। १४९

तॅरिन्दॊळिर् तिङ्गळ्वॅण् कुडत्ति ऩाऱ्ऱिरै
मुरिन्दुयर् पाऱ्कडऩ् मुहन्दु मूरिवाऩ्
शॊरिन्ददे यामॅऩत् तुळ्ळि मीऩॊडुम्
विरिन्ददु वॅण्णिला मेलुङ् गीऴुमे 150

वॅण्णिला–श्वेत चाँदनी; मूरि वाऩ्–बड़ा आकाश; तेरिन्तु–जान-बूझकर; ऒळिर् तिङ्कळ्–ज्वलन्त चन्द्र रूपी; वॅण् कुटत्तिऩाल्–सफ़ेद घट द्वारा; तिरै मुरिन्तु उयर्–जिसमें लहरें टूटकर गिरतीं और फिर उठती हैं; पाल् कटल् मुकन्तु–उस क्षीर-सागर से भरकर; चॊरिन्तते आम् ऍऩ–उलीच रहा हो, ऐसा; तुळ्ळि मीऩॊटुम्–बूँदों रूपी नक्षत्रों के साथ; मेलुम् कीऴुम्–ऊपर और नीचे; विरिन्तत्तु–फैली। १५०

(चाँदनी कैसी थी ?) मानो बड़े आकाश ने सोच-विचारकर उज्ज्वल चन्द्र रूपी घट में उठती-गिरती लहरों से भरे क्षीरसागर से क्षीर भर लेकर उड़ेल दिया। नक्षत्र रूपी बूँदों के साथ वह चाँदनी ऊपर-नीचे सब जगह फैली। १५०

अरुन्दवऩ् शुरबिये यादि वाऩमा
विरिन्दपे रुदयमा मडिवॅण् डिङ्गळा
वरुन्दलिल् पशुङ्गदिर् वऴङ्गु तारैयाच्
चॊरिन्दपा लॊत्तदु निलविऩ् ऱोऱ्ऱमे 151

अरुन्तवऩ् चुरपिये–अपूर्व तपस्वी वसिष्ठ की सुरभि ही; आति वाऩमा–क्षितिज हो; मटि–उसका थन; विरिन्त पेर् उतयमाम्–विशाल और बड़े 'उदय' का; वॅण् तिङ्कळा–श्वेत चन्द्र हो; वरुन्तलिल्–विना कष्ट के; वऴङ्कु तारै–निकलनेवाली (दुग्ध) धारा ही; पचुम् कतिरा–चन्द्र की बालकिरणें हों; चॊरिन्त पाल् ऒत्ततु–ऐसे गिरे दूध के समान रहा; निलविऩ् तोऱ्ऱम्–चाँदनी का दृश्य। १५१

(कवि की कल्पना में वह चाँदनी सुरभि के दूध के समान भी थी।) अतिश्रेष्ठ तपस्वी (वशिष्ठ मुनि) की कामधेनु ही अन्तरिक्ष बनी हो; उसका थन बड़ा श्वेत चन्द्र हो; उससे अनायास निकलनेवाले दूध की धारा ही चाँदनी हो —ऐसा लगा वह चाँदनी का दृश्य। १५१

ऍण्णुडै यनुमऩ्मे लिऴिन्द पूमऴ
मण्णिडै वीऴ्हिल मऱित्तुम् बोहिल
अण्णल्वा ळरक्कऩै यऱ्जि याय्हदिर्
विण्णिडैत् तॊत्तिऩ पोऩ्ऱ मीऩॆलाम् 152

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मीन् ऍलाम्–आकाश के नक्षत्र सब; ऍण् उटै–कर्तव्य की चिन्ता में रत; अनुमन् मेल्–हनुमान पर; इळिन्त पू मळै–गिरी पुष्प-वर्षाएँ हैं; अण्णल् वाळ् अरक्कनै–गौरवयुक्त तलवारधारी राक्षस (रावण) से; अञ्चि–डरकर; मण्णिटै वीळ्किल–भूमि पर नहीं गिरीं; मऱित्तुम् पोकिल–लौटकर ऊपर भी नहीं गयीं; आय् कतिर्–शुद्ध किरणों से युक्त; विण् इटै—अन्तरिक्ष में; तोंत्तिन पोन्ऱ–लटकती जैसे लगीं। १५२

आकाश में तारे प्रकट हुए। वे कर्तव्य-रत हनुमान के ऊपर देवों द्वारा बरसाये गये पुष्पों के समान लगे, जो तलवारधारी रावण से डरकर न नीचे पृथ्वी पर गिरे, न ऊपर ही जा सके और जो बीच में लटके रहे। १५२

ऍल्लियि निमिरिरुट् कुऱैयु मिव्विरुळ्
कल्लिय निलविन्वॅण् मुऱियुङ् गौविन
पुल्लिय पहैयॅनप् पॉरुव पोन्ऱन
मल्लिहै मलर्तॉऱुम् वदिन्द वण्डॅलाम् 153

मल्लिकै मलर् तॉऱुम्–चमेली के सभी फूलों पर; वतिन्त वण्टु ऍलाम्–जो रहे वे सभी भ्रमर; ऍल्लियिन्–रात के; निमिर् इरुळ् कुऱैयुम्–भरे अन्धकार के खण्ड; इ इरुळ् कल्लिय–इस अन्धकार द्वारा खोदकर लिये गये; निलविन् वॅण् मुऱियुम्–चाँदनी के सफ़ेद खण्ड; कौविन–आपस में दाँतों से पकड़ लेकर; पुल्लिय पकै ऍन–पकड़ में आये शत्रुओं के समान; पॉरुव पोन्ऱन–झगड़ते जैसे लगे। १५३

चमेली के फूलों पर भ्रमरों को देखकर ऐसा लगा, मानो रात में व्याप्त अन्धकार के खण्ड और उस अन्धकार को नोचनेवाली चाँदनी के खण्ड आपस में प्रबल शत्रुता के साथ परस्पर ग्रसकर भिड़ रहे हों। १५३

वीशुऱु पशुङ्गदिर्क् कऱ्ऱै वॅण्णिला
आशुऱ वॅङ्गणु नुळैन्द ळायदु
काशुऱु कडिमदि लिलङ्गैक् कावलूर्त्
तूशुऱै यिट्टदु पोन्ऱु तोन्ऱिऱ्ऱे 154

पचुम् कतिर् कऱ्ऱै–शीतल किरणों की राशियों को; वीचुऱु वॅण् निला–छिटकानेवाली श्वेत चाँदनी; आचु उऱ–शीघ्रता से; ऍङ्कणुम् नुळैन्तु–सर्वत्र घुसकर; अळायतु–फैली जो; काचु उऱु–रत्नजड़ित; मतिल् इलङ्कै–प्राचीरों की (घिरी) लंका; कटि कावल् ऊर्–(के) सुरक्षित नगर के; तूचु उऱै–वस्त्रावरण; इट्टतु पोन्ऱु–लगाया गया हो, ऐसा; तोन्ऱिऱ्ऱु–लगी। १५४

शीतल किरणों की राशियाँ बिखरनेवाली चाँदनी शीघ्र सर्वत्र घुसकर व्याप गयी। उसको देखकर ऐसा लगा मानो मणिमण्डित प्राचीरों वाली व पहरे से सुरक्षित लंका पर श्वेत वस्त्र का खोल चढ़ा दिया गया हो। १५४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इहऴ्वरुम् बॆरुङ्गुणत् तिराम नॆय्ददोर्
पहऴियिन् शॆलवॆन्न वनुमन् पऱ्ऱिनाल्
अहऴ्पुहुन् दरण्पुहुन् दिलङ्गै याङ्गवन्
पुहऴ्पुहुन् दुलायदोर् पॊलिवुम् बोन्ऱदे 155

इकऴ्वु अरुम्–अनिंद्य; पॆरुङ् कुणत्तु–उन्नत गुणों के; इरामन् ऍय्ततु–श्रीराम के चलाये हुए; ओर् पकऴियिन्–एक बाण के; चॆलवु ऍन्न–जाने के समान; अनुमन्–हनुमान के; पऱ्ऱिनाल्–संग से; इलङ्कै–लंका की; अकऴ् पुकुन्तु–परिखा में घुसकर; अरण् पुकुन्तुम्–अन्य रक्षण-स्थलों में घुसकर; आङ्कु–वहाँ; अवन् पुकऴ्–उनका यश; पुकुन्तु उलायतु–घुसकर फैला हो; ओर् पॊलिवुम् पोन्ऱतु–ऐसी एक शोभा के समान भी लगी। १५५

अनिंद्य गुणश्रेष्ठ श्रीराम के चलाये एक अमोघ बाण की भाँति हनुमान जा रहा था। उसकी संगति के बल से चाँदनी लंका की खाई में घुसी, और अन्य सुरक्षा के स्थलों में घुसी और ऐसी महिमा पा गयी मानो वह श्रीराम का यश हो जो सर्वत्र व्याप गया था। १५५

अव्वऴि यनुमनु मणुह लाम्वऴि
ऍव्वऴि यॆन्बदै युणर्वि नॆण्णिनान्
शॆव्वऴि यॊदुङ्गिनन् ऱेव रेत्तप्पोय्
वॆव्वऴि यरक्करूर् मेवन् मेयिनान् 156

चॆव्वऴि–श्रेष्ठ मार्ग पर; ऒतुङ्किनन्–चलने के स्वभाव का; अनुमनुम्–हनुमान भी; तेवर् एत्त–देवों के स्तुति करते; पोय्–जाकर; वॆम् वऴि अरक्कर्–पर-पीड़क मार्ग (व्यवहार) का अवलम्बन करनेवाले राक्षसों के; ऊर् मेवल् मेयिनान्–नगर में जाना चाहकर; अव् वऴि–तब; ऍव् वऴि–किस मार्ग से; अणुकल् आम् वऴि–अन्दर जाने का रास्ता है; ऍन्पतै–उसको; उणर्वित् ऍण्णिनान्–मन में सोचने लगा। १५६

उत्तम मार्गगामी हनुमान का संकल्प था कि देवों की स्तुति का भागी बनकर मैं भयंकर मार्ग पर चलनेवाले राक्षसों की लंका में जाऊँ, इसलिए वह विचारने लगा कि किस विध वहाँ जाऊँ ? । १५६

आऴियह ळाहवरु कावमरर् वाऴुम्
एऴुलहिन् मेलैवॆऴि कारुमुह डेऱिक्
केऴरिय पॊन्कॊडु शमैत्तकिळर् वॆळ्ळत्
तूऴिदिरि नाऴुमुलै यामदिलै युऱ्ऱान् 157

आऴि अकळाक–समुद्र को ही परिखा बनाकर; अरुका–अक्षय; अमरर् वाऴुम्–देवों के वासस्थान; एऴ् उलकिन्–सातों लोकों के; मेलै वॆऴि कारुम्–ऊपर के अन्तस्थल तक; मुकटु एऱि–अपनी चोटी पहुँचाकर; अरिय–अपूर्व; केऴ् पॊन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कॊटु–रंग के स्वर्ण से; चमैत्त–निर्मित; ऊऴि किऴर् वॆळ्ळत्तु–युगान्त में उठनेवाले प्रलय-समुद्र के कारण; तिरि नाळुम्–जब लोक मिट जाते हैं उस दिन में भी; उलैया–जो नष्ट नहीं होता; मतिलै–उस प्राचीर पर; उऱ्ऱान्–पहुँचा। १५७

वह लंका के प्राचीर पर जा पहुँचा। उस प्राचीर की खाई समुद्र ही था। वह देवों के वास के सातों लोकों के ऊपर के खुले आकाश तक ऊँचा उठा था। बहुत सुन्दर वर्ण वाले स्वर्ण से निर्मित था। युगांतकालीन व उफनकर आनेवाले प्रवाह में भी वह नष्ट होनेवाला नहीं था। १५७

कलङ्गलिल्ह डुङ्गदिर्हण् मीदुकडि देहा
अलङ्गलयिल् वञ्जहत्तै यञ्जियॆन्नि नन्ऱाल्
इलङ्गैमदि लिङ्गिदत्तै येऱलरि दॆन्ऱे
विलङ्गियहल् हिन्ऱन्नवि रैन्दॆत्त वियन्दान् 158

अलङ्कल्–मालाधारी; अयिल् वञ्चकत्तै–भाला रखनेवाले वंचक से; अञ्चि–डरकर; कलङ्कल् इल्–अचल; कटुम् कतिर्कळ्–गरम (सूर्य-) किरणें; मीतु–इस प्राचीर पर; कटितु एका–शीघ्र नहीं जा सकतीं; ऍत्तिन्–कहें तो; अन्ऱु–नहीं; इङ्कु–यहाँ; इलङ्कै मतिल् इत्तै–लंका के प्राचीर इस पर; एऱल् अरितु–चढ़ना कठिन है; ऍन्ऱे–समझकर ही; विलङ्कि–उससे हटकर; विरैन्तु अकल्किन्ऱत्त–शीघ्र दूर चलती हैं; ऍत्त–ऐसा सोचकर; वियन्तान्–विस्मित हुआ (हनुमान)। १५८

मालालंकृत भालाधारी रावण से डरकर धीर सूर्य किरणें भी इस प्राचीर के ऊपर से शीघ्र नहीं जायँगी —ऐसा कहना युक्तिसंगत नहीं होगा। उन्हें यह विदित था कि वे इस प्राचीर के ऊपर चढ़ नहीं पायँगी। इसलिए वे दूर से ही शीघ्र चली जाती हैं। यह सोचकर हनुमान विस्मय-विभोर हुआ। १५८

तॆव्वळवि लादविऱै तेऱलरि दम्मा
अव्वळव दन्ऱरण मण्डमिडै याह
ऍव्वळवि नुण्डुवॆळि यीऱुमदु वॆन्ऱा
वॆव्वळ वरक्कत्तै मनक्कॊळ वियन्दान् 159

तॆव् अळवु इलात–शत्रु असंख्यक हैं; इऱै–थोड़ा भी; तेऱल्–जानना; अरितु–कठिन है; अरणम्–गढ़; अण्टम्–अण्ड को; इटैयाक–अपने मध्य में लेने के लिए; वॆळि–अन्तरिक्ष; ऍ अळविऱ् उण्टु–जितना है; अ अळवल् अन्ऱु–केवल उतना विस्तृत नहीं है; ईऱुम् अतु–उसका अन्त भी वैसे ही (अपार है); ऍन्ऱा–ऐसा सोचकर; वॆम् वळ अरक्कत्तै–भयंकर और धनी राक्षस (रावण की समृद्धि) को; मनम् कॊळ–मन में सोचकर; वियन्तान्–विस्मित हुआ। १५९

(हनुमान आगे सोचता है—) शत्रु असंख्यक हैं। उनका बल ताड़ना बहुत कठिन लगता है। गढ़ ऐसा बड़ा है कि उसके मध्य सारा अण्ड समा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जाय —उतने तक सीमित नहीं। उसका अन्त पाना भी वैसे ही कठिन है। इस तरह सोचते-सोचते हनुमान ने भयानक रूप से वैभवशाली रहनेवाले रावण की बात सोची और वह विस्मय से भर गया। १५९

मडङ्गलरि येऱुमद माल्हळिऱु नाण
नडन्दुदऩि येपुहुदु नम्बिनऩि मूदूर्
अडङ्गरिय तात्तैययि लन्दहऩ दाणैक्
कडुन्दिशैयिऩ् वायऩैय वायिलैदिर् कण्डाऩ् 160

मटङ्कल्–यम के समान; अरि एऱु–नरसिंह और; मत माल् कळिऱुम्–मत्त और बड़े गज को; नाण–शरम का अनुभव करने देते हुए; नटन्तु–चलकर; नऩि मूतूर्–अति प्राचीन नगर में; तऩियै पुकुतुम्–अकेले जानेवाले; नम्पि–महिमामय हनुमान ने; अटङ्करिय तात्तै–गिनती में न आनेवाली सेना के; अयिल् अन्तकऩतु–भालाधारी यम की; आणै–आज्ञा के अधीन रहनेवाले; कटुम् तिचैयिऩ् वाय् अऩैय–क्रूर (दक्षिण) दिशा के द्वार के समान; वायिल्–(लंका के) राजद्वार को; ऍतिर् कण्टाऩ्–सामने देखा। १६०

महिमावान हनुमान पैदल चलकर पुरातन नगरी लंका की ओर गया। उसकी चाल देखकर स्वयं नरकेसरी और बड़ा तथा मत्त गज भी लज्जा का अनुभव करते थे। वह गोद्वार पर पहुँचा जो उस भयंकर (दक्षिण) दिशा के द्वार के समान था, जो असंख्य सेना का स्वामी और भाले के धारक यम की है। १६०

मेरुवै निऱुत्तिवॆळि शॆय्ददुहॊल् विण्णोर्
ऊर्बुह वमैत्तपडु काल्हॊलुल हेळुम्
शोर्विल निलैक्कनडु विट्टदॊरु तूणो
नीर्बुहु कडऱ्कुवळि योवॆऩ निनैन्दाऩ् 161

मेरुवै निऱुत्ति–मेरुपर्वत को खड़ा करके; वॆळि चॆय्ततु कॊल्–द्वार बनाया गया क्या शायद; विण्णोर् ऊर् पुक–देवलोक में पहुँचने के लिए; अमैत्त–रचित; पटु काल् कॊल्–सीढ़ियाँ हैं क्या; उलकु एळुम्–सातों लोकों को; चोर्विल निलैक्क–शिथिल न होकर स्थिर रखने के लिए; नटु विट्टतु–बीच में निर्मित; ऒरु तूणो–एक खम्भा है क्या; कटऱ्कु—समुद्र का; नीर् पुकु–जल-प्रवेश के लिए; वळियो–मार्ग है क्या; ऍऩ–ऐसा-ऐसा; निनैन्ताऩ्–सोचा। १६१

मेरुपर्वत को लाकर खड़ा किया गया और उसके मध्य (द्वार का) खुला स्थान खोदकर बनाया गया क्या ? क्या यह देवों के लंका में प्रवेश करने के लिए रखी गयी सीढ़ी है ? सातों लोक शिथिल होकर अस्तव्यस्त गिर न जायँ, तदर्थ उनके मध्य गाड़ा गया खम्भा है ? या समुद्र को भरने के लिए जल बहे उसके लिए बनाया गया मार्ग है ? —हनुमान तोरण-द्वार के बारे में ऐसा सोचने लगा। १६१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एळुलहिन् वाळुमुयिर् यावैयु मॅदिर्न्दाल्
ऊळिन्मुऱै यिन्ऱियुड नेपुहुमि दॊन्ऱो
वाळियरि यङ्गुवळि यीदॅन्न वहुत्ताल्
आळियुळ वेळिन्नळ वन्ऱुपहै यॅन्ऱान् 162

एळ् उलकिन्–सातों लोकों के; वाळुम् उयिर् यावैयुम्–वासी सभी जीव; ऍतिर्न्ताल्–सामने आवें तो; ऊळिन् मुऱै इन्ऱि–विना किसी क्रम के; उटन्ने पुकुम्–एक साथ घुस सकेंगे; इतु ऒन्ऱो–यही एक है क्या; वाळियर्–यहाँ रहनेवाले; इयङ्कुम् वळि ईतु–आते-जाते हैं इसी मार्ग से; ऍन्न–ऐसा; वकुत्ताल्–विचार करके सोचें; पकै–तो हमारे शत्रु की शत्रुता का परिमाण; आळि एळिन् अळवु–सातों समुद्रों की नाप का; उळ अन्ऱु–है नहीं (उससे अधिक है); ऍन्ऱान्–कहा। १६२

मानो कि सातों लोकों के जीव एक साथ इस नगर में घुसने आयँ तो वे विना क्रम से जाने की आवश्यकता के एक साथ प्रवेश कर सकेंगे — ऐसा विशाल है यह द्वार। उसका गौरव क्या यही एक है ? यह लंका नगर के वासियों के आने-जाने का द्वार है –इसको लेकर सोचा जाय तो हमारे शत्रु की शत्रुता का परिमाण सातों समुद्रों का उतना बड़ा है, यह मानना भी सही नहीं होगा (यानी यह उनसे भी अधिक विपुल है)। हनुमान ने यों सोचा। १६२

वॅळ्ळमॊरु नूऱॊडिरु नूऱुमिडै वीरर्
कळ्ळविनै वॅव्वलि यरक्करिरु कैयुम्
मुळ्ळॅयिऱुम् वाळुमुऱ मुन्नमुऱै निन्ऱार्
ऍळ्ळरिय कावलिनै यण्णलु मॅदिर्न्दान् 163

ऒरु नूऱॊटु इरु नूऱु–तीन सौ; वॅळ्ळम्–'वॅळ्ळम' संख्या के; मिटै वीरर्–योद्धा वीर; कळ्ळ विनै–वंचक काम; वॅम् वलि–और गजब का बल; अरक्कर्–इनसे युक्त राक्षस; इरु कैयुम्–दोनों ओर; मुळ् ऍयिऱुम्–काँटे के समान दाँत; वाळुम्–तलवारें; उऱ–लेकर; मुन्न मुऱै–युद्धसन्नद्ध; निन्ऱार्–खड़े थे; ऍळ् अरिय–अनुपेक्षणीय; कावलिनै–पहरे को; अण्णलुम्–महिमावान ने भी; ऍतिर्न्तान्–सामने देखा। १६३

उस द्वार के दोनों ओर राक्षस खड़े थे। उनकी संख्या (एक और दो) तीन सौ 'वॅळ्ळम्' थी। वे मायावी थे और भयंकर वीर थे। उनके मुखों में काँटों के समान तेज़ दाँत थे और हाथों में तलवारें थीं। वे ऐसे खड़े थे मानो युद्ध-सन्नद्ध हों। हनुमान ने उस अनिन्द्य पहरे को अपनी आँखों से देखा। १६३

शूलमळु वाळॊडयि ऱोमर मुलक्कै
कालवरि विऱ्पहळि कप्पण मुशुण्डि
कोलकणै नेमिकुलि शञ्जुरिहै कुन्दम्
पालमुद लायुदम् वलत्तिनर् परित्तार 164

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चूलम्–त्रिशूल; मऴु–परशु; वाळॊटु–तलवार के साथ; अयिल्–भाले; तोमरम्–तोमर; उलक्कै–मूसल; काल वरिविल्–यम-सम सबन्ध धनु; पकऴि–अस्त्र; कप्पणम्–काँटेदार गदा; मुचुण्टि–भुशुण्डी नाम का हथियार; कोल कणै–सुन्दर वक्र दण्ड; नेमि–चक्र; कुलिचम्–कुलिश; चुरिकै–छुरा; कुन्तम्–कुन्त; पालम्–भिंदिपाल; मुतल् आयुतम्–आदि आयुध; वलत्तिऩर्–बली वे; परित्तार्–अपने हाथों में लिये रहे। १६४

वे अपने हाथों में निम्नांकित हथियार रखते थे— शूल, परशु, तलवार, भाला, तोमर, मूसल, यम-सम सबन्ध धनु; अस्त्र, काँटेदार गदा, "भुशुण्डी" नाम का हथियार, सुन्दर वक्र-दण्ड, चक्र, कुलिश, छुरी, कुंत और भिंदिपाल आदि। १६४

अङ्गुश नॆडुङ्गव णडुत्तुडल् विशिक्कुम्
वॆङ्गुशैय पाशमिवै वॆय्यपयिल् कैयर्
शॆङ्गुरुदि यऩनशॆऱि कुञ्जियर् शिऩत्तोर्
पङ्गुऩि मलर्न्दॊळिर् पलाशवऩ मॊत्तार् 165

अङ्कुचम्–अंकुश; नॆटुम् कवण्–लम्बे ढेलबाँस; अटुत्तु–पास जाकर; उटल् विचिक्कुम्–शरीर को बाँधनेवाला; वॆम् कुचैय पाचम्–भयंकर रास के समान पाश; इवै–आदि इनको; पयिल्–लेकर अभ्यस्त; वॆय्य कैयर्–कठोर हाथों वाले; चॆम् कुरुति अऩऩ–लाल रक्त के समान; चॆऱि कुञ्चियर्–घने बाल वाले; चिऩत्तोर्–क्रोधी; पङ्कुऩि–फाल्गुन में; मलर्नतु–खिलकर; ऒळिर्–प्रकाश छिटकानेवाले; पलाच वऩम् ऒत्तार्–काँटेदार पलाश-वन के समान रहे। १६५

अंकुश, लम्बे ढेलबाँस (गोफना) शत्रु को शरीर में लगकर कसनेवाला भयंकर बन्धन-सा पाश —इनके साथ अभ्यस्त सशक्त हाथों वाले थे वे राक्षस। उनके केश रक्त-सम लाल थे। विना कारण के क्रोध करनेवाले थे। फाल्गुन महीने में फूल-खिले काँटेदार पलाश-तरु-वन के समान लगे। १६५

अळक्कवरि दाहिय कणत्तॊडय निऱ्कुम्
विळक्किऩ मिरुट्टिऩै विऴुङ्गियॊळि काल
वळक्करिय कालऩ्मऩ मुट्कुमणि वायिल्
इळक्कमिल् कडऱ्पडै यिरुक्कैयै यॆदिर्न्दाऩ् 166

अयल्–उनके पास; अळक्क अरिताकिय–असंख्यक; कणत्तॊटु–गणों के साथ; निऱ्कुम्–रखे हुए; विळक्कु इऩम्–दीपों के समूह; इरुट्टिऩै–अन्धकार को; विऴुङ्कि–निगलकर; ऒळि काल–प्रकाश दे रहे थे; वळ–घने; करिय–काले रंग के; कालऩ्–यमदेव के; मऩम् उट्कुम्–मन को डरानेवाले; मणि वायिल्–सुन्दर द्वार पर; इळक्कम् इल्–अशिथिल; कटल् पटै–सागर-सी सेना का; इरुक्कैयै–रहना; ऎतिर्न्तऩ्–सामने देखा। १६६

हनुमान ने उनके पास और एक अचल सागर-सम सेना का विस्तार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पड़ा हुआ देखा। वहाँ असंख्यक दीप जल रहे थे, जो अन्धकार को लील रहे थे। वह सेना उस द्वार के समीप ही थी, जिसे देखकर अत्यन्त काले रंग का यम भी डर जाता था और जो रत्नों से खचित सुन्दर था। १६६

ऍव्वमर रॅव्ववुण रॅव्वरुळ रॅऩ्ऩे
कव्वैमुदु वायिलि ऩॅडुङ्गडै कडप्पार्
ऩॅव्वरिवर् शेममिदु शेवहऩुम् यामुम्
वॅव्वमरिऩ् मेलिऩियॅ ऩाय्विळैयु मॅऩ्ऱाऩ् 167

कव्वै—आरवयुक्त; मुतु वायिलिऩ्—प्राचीन किले के द्वार के; ऩॅटुङ्कटै—लम्बे किनारे को; ऍ अमरर्—कौन देव; ऍ अवुणर्—कौन दानव; कटप्पार्—पार करेंगे; ऍव्वर् उळर्—कौन हैं (अन्य); ऍऩ्ऩे—क्या ही खूब है; इवर् ऩॅव्वर्—ये हैं शत्रु; इतु चेमम्—यह उनका संरक्षण; चेवकऩुम्—नायक श्रीराम और; यामुम्—हम; इऩि मेल्—आगे जो करेंगे; वॅम् अमरिऩ्—उस भयंकर युद्ध में; ऍऩाय् विळैयुम्—क्या होने वाला है; ऍऩ्ऱाऩ्—हनुमान ने आप ही आप कहा। १६७

वह द्वार आरवपूर्ण था। उसका किनारा बहुत लम्बा था। उसको कौन देव पार कर सकता था? कौन असुर था जो उसे पार कर जाये? फिर कितनों के पास इतना साहस था? इसका महत्त्व कितना है? ऐसे हैं हमारे शत्रु! उनके पहरे का बल ऐसा है! तो जब हमारे स्वामी और हम आकर युद्ध छेड़ देंगे तो उस भयंकर युद्ध का फल क्या होगा? —हनुमान इस भाँति अपने आप शंका के स्वर में बोला। १६७

करुङ्गडल् कडप्पतरि दऩ्ऱुऩहर्क् कावल्
पॅरुङ्गडल् कडप्पदरि दॅण्णमिऱै पेरा
दरुङ्गडऩ् मुडिप्परि दारमर् किडैप्पिऩ्
ऩॅरुङ्गमर् विळैप्पर्ऩॅडु नाळॅऩ निऩैन्दाऩ् 168

करुम् कटल्—काले सागर को; कटप्पतु—पार करना; अरितु अऩ्ऱु—असाध्य काम नहीं; नकर् कावल्—नगर की रक्षा (रक्षक सेना) का; पॅरुम् कटल्—बड़ा सागर; कटप्पतु अरितु—पार करना कठिन है; आर् अमर् किटैप्पिऩ्—बड़ा युद्ध होगा तो; ऩॅटु नाळ्—अनेक दिनों तक; ऩॅरुङ्कु अमर् विळैप्पर्—घमासान युद्ध करेंगे; ऍण्णम्—(सीताजी के अन्वेषण का) मेरा संकल्प; इऱै पेरातु—किंचित भी पूरा नहीं होगा; अरुम् कटऩ्—और मेरा महान् कर्तव्य; मुटिप्पतु अरितु—पूरा करना असाध्य होगा; ऍऩ निऩैन्ताऩ्—ऐसा सोचा। १६८

हनुमान ने और सोचा— इस काले सागर का तरण कठिन नहीं होगा। पर नगर-रक्षक सेना-सागर को पार करना अवश्य दुस्तर होगा। अगर बड़ा युद्ध छिड़ जायगा तो ये लोग बहुत काल तक घमासान युद्ध करेंगे। तब सीताजी के अन्वेषण का मेरा मंन्शा कुछ भी सफल नहीं होगा और अपना कर्तव्य पूरा करना दुःसाध्य हो जायगा। १६८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वायिल्वऴि शेऱलरि दऩ्ऱियुम् वलत्तोर्
आयिलवर् वैत्तवऴि येहलऴ हऩ्ऱाल्
काय्हदि रियक्किऩ्मदि लैक्कडिदु ताविप्
पोयिनहर् पुक्किडुवॆ ऩॆऩ्ऱॊरयल् पोऩाऩ् 169

वायिल् वऴि–तोरण द्वारा; चेऱल् अरितु–अन्दर जाना असाध्य है; अऩ्ऱियुम्–और भी; वलत्तोर् आयिल्–बलवान हों तो; अवर् वैत्त वऴि–उनके द्वारा निर्मित मार्ग से; एकल्–जाना; अऴकऩ्ऱु–ठीक नहीं होगा; काय् कतिर्–जलानेवाले सूर्य का; इयक्कु इल्–संचार जिस पर नहीं है; मतिलै–उस प्राचीर को; कटितु ताविशीघ्र लाँघकर; पोय्–(पार) जाकर; इ नकर्–इस नगर में; पुक्किटुवॆऩ्–प्रवेश कर लूँगा; ऎऩ्ऱु–ऐसा निश्चय करके; ओर् अयल्–एक तरफ़; पोऩाऩ्–गया। १६९

इस किले के द्वार से होकर अन्दर जाना असाध्य है! और भी बलवान वीरों के लिए शत्रु के निर्मित द्वार का उपयोग करना अच्छा नहीं होगा। यह प्राचीर ऐसा है कि जलानेवाले सूर्य की किरणें भी इस पर सञ्चार नहीं करतीं। इसको कूदकर पार करूँगा और अन्दर पहुँच जाऊँगा। —ऐसा सोचकर हनुमान द्वार को छोड़कर प्राचीर के पास दूसरे स्थान पर गया। १६९

नाणा ऴुन्दा ऩल्हिय काव ऩऩिमूदूर्
वाणा ऴन्ऩाळ् पोवदऩ् मेले वऴिनिऩ्ऱाळ्
तूणा मॆऩ्ऩुन् दोळुडै यानैच् चुडरोनैक्
काणा वन्द कट्चॆवि यॆऩ्ऩक् कऩल्हण्णाळ् 170

नाळ् नाळुम्—दिने-दिने; तान् कावल् नल्किय–अपने द्वारा संरक्षित; नति मूतूर–बहुत पुरातन नगर की; वाळ् नाळ् अऩ्ऩाळ्–आयु-सी रहनेवाली; कऩल् कण्णाळ्–अंगार उगलनेवाली आँखों की; चुटरोनै काणा वन्त–सूर्य को देखकर आये; कट्चॆवि ऎऩ्ऩ–श्रवणाक्ष (सर्प) राहु के समान; तूण् आम् ऎऩ्ऩुम्—खम्भे ही माने जाने योग्य; तोळ् उटैयानै–कन्धों वाले के; मेले पोवतऩ् वऴि–आगे जाने के मार्ग में; निऩ्ऱाळ्–(आकर) खड़ी हुई। १७०

(तब लंकादेवी सामने आयी।) लंकादेवी अपनी संरक्षित नगरी की आयु के ही समान थी। उसकी आँखों से अंगारे निकल रहे थे। वह लंकादेवी स्तम्भ-सम कन्धों वाले हनुमान के सामने इस तरह आयी मानो सूर्य को देखकर राहु सर्प आ रहा हो और उसके मार्ग में उसे रोकती हुई खड़ी हो गयी। १७०

ऎट्टुत् तोळा णालु मुहत्ता ळुलहेऴुम्
तॊट्टुप् पेरुञ् जोदि निऱत्ताळ् शुऴल्कण्णाळ्
मुट्टिप् पोरिऩ् मूवुल हत्तै मुदलोडुम्
कट्टिच् चीऱुङ् गालऩ् वलत्ताळ् कमैयिल्लाळ् 171

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऎट्टु तोळाळ्–अष्टभुजा; नालु मुकत्ताळ्–चतुर्मुखी; उलकु एळुम्–सातों लोकों को; तोट्टु पेरुम्–स्पर्श कर लौटनेवाले; चोति निऱ्ऱताळ्–प्रकाशमय वक्ष वाली; चुळल् कण्णाळ्–चारों ओर घूमनेवाली दृष्टि की; मूवुलकत्तै–तीनों लोकों से; पोरिन् मुट्टि–युद्ध में टकराकर; मुतलोटुम् कट्टि–मूल से बाँधकर; चीऱुम्–कोप करनेवाली; कालन् वलत्ताळ्–यम का-सा बल रखनेवाली; कमै इल्लाळ्–क्षमा न करनेवाली। १७१

(१७०वें पद से १७६वें पद तक लगातार उस लंकादेवी का वर्णन है।) उसके आठ भुजाएँ थीं। चार मुखों की उसका वक्ष ज्योतिर्मय था और वह तेज़ सातों लोकों को छूकर आ सकता था। उसकी आँखें घूम रही थीं। वह इतनी शक्तिमती दिखी कि वह तीनों लोकों को युद्ध में समूल बाँध ले सकती थी। उसका क्रोध भी उतना भयंकर था। यम की-सी शक्ति रखनेवाली उसमें क्षमा करने का गुण नहीं था। १७१

पारा निन्ऱा ळॆण्डिशै तोऱुम् बलरप्पाल्
वारा निन्ऱा रोवॆन्ऱ मारि मळैयेपोल्
आरा निन्ऱा णूबुर मच्चन् दरुताळाळ्
वेरा मॆय्याळ् मिन्नि निमैक्कु मिळिर्पूणाळ् 172

अच्चम् तरु–भय पैदा करनेवाले; ताळाळ्–पैरों की; नूपुरम्–नूपुर; मारि मळैये पोल्–वर्षाऋतु की वर्षा के समान; आरा निन्ऱाळ्–बजाते हुए खड़ी रही; वेरा मॆय्याळ्–स्वेद-पूर्ण शरीर वाली; मिन्निन् इमैक्कुम्–बिजली-से चमकनेवाले; मिळिर् पूणाळ्–प्रकाशमय आभरण वाली; ऎण् तिचै तोऱुम्–आठों दिशाओं के; अप्पाल्–उधर से; पलर्–अनेक; वारा निन्ऱारो ऎन्ऱ–आ रहे हैं क्या; पारा निन्ऱाळ्–ऐसा देखती रही। १७२

उसके भयंकर पैरों पर पायलें पड़ी थीं। वह उन्हें हिला रही थी; जिससे वर्षाऋतु की वर्षा के समान शब्द निकल रहा था। उसके शरीर पर स्वेद बह रहा था। विद्युत्-से चमकनेवाले उज्ज्वल आभरणों से वह अलंकृत थी। वह सारी दिशाओं को देख रही थी। यह टोह लगाने के लिए कि क्या दूर से कोई आ तो नहीं रहा हो ?। १७२

वेल्वाळ् शूलम् वॆङ्गदै पाशम् विळिशङ्गम्
कोल्वाळ् शाबङ् गॊण्ड करत्ताळ् वडकुन्ऱम्
पोल्वा डिङ्गट् पोळि नॆयिऱ्ऱाळ् पुहैवायिल्
काल्वाळ् काणिऱ् कालनु मुट्कुङ् गदमिक्काळ् 173

वेल्–भाला; वाळ्–तलवार; चूलम्–शूल; वॆम् कतै–भयंकर गदा; पाचम्–पाश; विळि चङ्कम्–बजनेवाला शंख; कोल्–बाण; वाळ् चापम्–उज्ज्वल चाप; कॊण्ट करत्ताळ्–लिये हुए हाथों वाली; वट कुन्ऱम् पोल्वाळ्–उत्तर के मेरु के समान रहनेवाली; तिङ्कळ् पोळिन्–चन्द्र के खण्डों के समान; ऎयिऱ्ऱाळ्–दाँतों वाली; वायिल्–मुख से; पुकै काल्वाळ्–धुआँ निकालनेवाली; काणिल्–देखने पर; कालनुम् उट्कुम्–काल भी डर जाए; कतम् मिक्काळ्–ऐसा अधिक क्रोध से युक्त। १७३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसके हाथों में भाला, तलवार, शूल, भयानक गदा, पाश, शंख, अस्त्र और प्रकाशमय धनु थे। उत्तर के मेरु पर्वत के समान आकार वाली उसके दाँत चन्द्र के टुकड़ों के समान थे। उसके मुख से धुआँ-सा निकल रहा था। वह इतना क्रोधी लगी कि यम भी देखे तो डर जाय ! । १७३

अञ्जु वणत्ति नाडै युडुत्ता ळरवॆल्लाम्
अञ्जु वणत्तिऩ् वेह मिहुत्ता ळरुळिल्लाळ्
अञ्जु वणत्ति नुत्तरि यत्ता ळलैयारुम्
अञ्जु वणत्तिऩ् मुत्तॊळि रारत् तणिकॊण्डाळ् 174

अञ्चु वणत्तिऩ्–पंचरंगी; आटै उटुत्ताळ्–वस्त्र पहने हुए थी; अरवॆल्लाम्–सभी सर्प; अञ्चु–डरें; उवणत्तिऩ्–ऐसे गरुड़ की; वेकम् मिकुत्ताळ्–सी गति में बढ़ी हुई; अरुळ् इल्लाळ्–करुणा से हीन; अम् चुवणत्तिऩ्—श्रेष्ठ स्वर्ण के; उत्तरियत्ताळ्–उत्तरीय से भूषित थी; अलै आरुम्–तरंगों से युक्त; अम्–(समुद्र-) जल में; चु–सुन्दर; वळ्–प्रकाशमय; नत्तिऩ् मुत्तु–शंख-जनित; ऒळिर्–जिसमें प्रकाश देते रहते हैं, ऐसे; आरत्तु अणि–हार रूपी आभरण; कॊण्टाळ्–धारण किये हुए थी। १७४

वह पञ्चरंगी वस्त्र पहने थी। उसकी गति गरुड़ की-सी थी जिसे देखकर सारे सर्प डर जाते हैं। वह अकरुण थी। स्वर्णोत्तरीय और लहरसंकुल समुद्र-शंख-जनित मोतियों का हार उसके शरीर को अलंकृत कर रहे थे। (इस पद में यमकालंकार है)। १७४

शिन्दा रत्तिऩ् शॆच्चै यणिन्दा डॆळिनूल्याळ्
अन्दा रत्तिऩ् नेर्वरु शॊल्ला ळरैतुम्बि
कन्दा रत्ति निऩ्निशै पऩ्निक् कळिकूरुम्
मन्दा रत्तिऩ् मालै यलम्बु महुडत्ताळ् 175

आरत्तिऩ्–चन्दन के; चिन्तु–छलककर फैले; चॆच्चै–लेप को; अणिन्ताळ्–मले हुए थी; याळ् तॆळि नूल्–'याळ्' (एक तरह की वीणा) सम्बन्धी शास्त्रों में उक्त; अश् तारत्तिऩ्–सुन्दर "तारा" स्वर के; नेर् वरु चॊल्लाळ्–समान निकलनेवाली वाणी की; अरै तुम्पि–गुंजारनेवाले भ्रमर; इऩ् कन्तारत्तिऩ् इचै–मधुर 'गांधार' स्वर; इचै पऩ्नि–संगीत गाते हुए; कळि कूरुम्–(जिन पर) मत्त रहते थे; मन्तारत्तिऩ्–(वैसे) मन्दार-पुष्पों की; मालै अलम्पुम्–माला हिल रही थी; मकुटत्ताळ्–ऐसे मुकुट वाली। १७५

वह चन्दन-लेप से चर्चित थी। 'याळ्' (वीणा) के स्वरों के सम्बन्ध में बतानेवाले संगीतशास्त्र में वर्णित 'दारा' स्वर (उच्च स्वर) के से स्वर में बोलनेवाली थी। उसके सिर पर एक मुकुट था। उस पर मन्दार-पुष्पों की माला हिल रही थी। उस माला पर गांधार-स्वर में गुंजारते हुए भ्रमर मद-मत्त हो बैठे हुए थे। १७५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍल्ला मुट्कु माळियि लङ्गै यिहन्मूदूर्
नल्ला ळव्वूर् वैहुरै पोलुम् नयनत्ताळ्
निल्लाय् निल्ला यॅन्ऱुरै नेरा निनैयामुन्
वल्ले शॅन्ऱाण् मारुदि कण्डान् वरुहॅन्ऱान् 176

ऍल्लाम् उट्कुम्–सभी जीवों को भय दिलाते हुए; आळि इलङ्कै इकल् मूतूर्–समुद्रवलयित प्राचीन व बलवान (लंका) नगर का; नल्लाळ्–हित करनेवाली; अव्वूर वैकु–उस नगर के रहने के; उरै पोलुम्–स्थान के समान; नयनत्ताळ्–आँखों वाली; निल्लाय् निल्लाय्–खड़े रहो, खड़े रहो; ऍन्ऱु उरै नेरा–कहते हुए; निनैया मुन्–सोचने की देर के अन्दर; वल्ले चॅन्ऱाळ्–शीघ्र गयी; मारुति–हनुमान ने; कण्टान्–देखा; वरुक–आओ; ऍन्ऱान्–कहा। १७६

वह सबको भयभीत करनेवाले समुद्र से वलयित प्राचीन नगर लंका की हितैषिणी थी। उसकी आँखें मानो लंका का वासस्थान थीं। उसने हनुमान को देख लिया। रुको, खड़े हो जाओ —चिल्लाती हुई वह सोचने की देर के अन्दर तेज़ चली। हनुमान ने भी उसे देख लिया और बुलाया कि आओ। १७६

आहा शॅय्दा यञ्जलै पोलु मऱिविल्लाय्
शाहा मूलन् दिन्ऱुळल् वार्मेऱ् चलमॅन्नाम्
पाहा रिञ्जिप् पॊन्मदि ऱाविप् पहैयादे
पोहा यॅन्ऱाळ् पॊङ्गळ् लॅन्नप् पुहैकण्णाळ् 177

पॊङ्कु अळल् ऍन्न–दहकती आग के समान; पुकै कण्णाळ्–धुएँ-सहित आँखों वाली; चाका मूलम्–शाक और कन्द; तिन्ऱु उळल्वार् मेल्–खाते फिरनेवालों पर; चलम् ऍन् आम्–क्रोध करने से क्या होगा; अऱिविल्लाय्–बुद्धिहीन; आका–जो करना नहीं चाहिए; चॅय्ताय्–वह काम किया है (तूने); अञ्चलै पोलुम्–शायद भय का अनुभव नहीं किया क्या; पाकु आर्–सुन्दरता से युक्त; पॊन् इञ्चि मतिल्–स्वर्ण-निर्मित किले के प्राचीर को; ताबि–लाँघकर; पकैयाते–शत्रुता मत करो; पोकाय्–चले जाओ; ऍन्ऱाळ्–(डाँटकर) कहा। १७७

उसकी आँखें धूम निकाल रही थीं, मानो वे भभककर जलती आग हों। उसने सोचा कि शाखामृग (पेड़ों पर रहनेवाले पशु या शाक-भाजी खानेवाला जीव) पर कोप करके क्या मिलेगा ? तो भी उसने डाँट बतायी–मूर्ख ! तुमने वह काम किया जो किसी को इस नगर में नहीं करना चाहिए। तुममें भय नहीं है शायद क्या ? सुन्दर और स्वर्णमय प्राचीर पर कूदकर मेरी शत्रुता मोल मत लो। चलो दूर। १७७

कळिया वुळ्ळत् तण्णन् मनत्तिऱ् कदमूळ
विळिया निन्ऱे नीदि नलत्तिन् विनैयोर्वान्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अळिया निव्वूर् काणु नलत्ता लणैहिन्रेन्
ऍळिये नुऱ्ऱाल् याव दुनक्किङ् गिळवॅन्ऱान् 178

कळिया उळ्ळत्तु–स्वाभाविक रूप से जिसका मन गर्वोन्मत्त न होता था; अण्णल्–उस महिमावान हनुमान ने; मनत्तिल् कतम् मूळ–मन में क्रोध के उठने से; विळिया निन्ऱु–उसको रोककर; नीति नलत्तिन्–न्यायमार्ग के हित; वित्तै ओर्वान्–कार्य का महत्त्व जाननेवाला बनकर; अळियान्–(लंका-दर्शन का) इच्छुक बनकर; इव् ऊर् काणुम्–इस पुरी को देखने की; नलत्ताल्–सदिच्छा से; अणैकिन्रेन्–आता हूँ; ऍळियेन्–गरीब मैं; उऱ्ऱाल्–आया तो; उनक्कु–तेरा; इङ्कु–यहाँ; इळवु–नुक़सान; यावतु–क्या है; ऍन्ऱान्–पूछा। १७८

महिमामय हनुमान अनुद्विग्नमन (या कभी डींग मारनेवाला नहीं) था। उसके मन में कोप उठा। पर उसने उसे दबा दिया। नीति-मार्ग के कार्य को जाननेवाले उसने उस लंकादेवी से शांति के साथ कहा कि मैं लंका देखने की अच्छी इच्छा करके यहाँ आया। मैं गरीब आया तो तुम्हारी क्या हानि हो गयी ?। १७८

ऍन्ना मुन्न मेहॅन वेहा वॅदिर्माऱ्ऱम्
शॊन्नाय् नीये याव नडातॊल् पुरमट्टान्
अन्ना रॅय्दऱ् कञ्जुव रम्मा यळियत्ताय्
उन्ना लॅय्दु मूर्हॊ लिव्वूरॅन् ऱुऱनक्काळ् 179

ऍन्ना मुन्नम्–यह कह चुकने के पूर्व ही; एकु ऍन–जाओ कहूँ तब भी; नीये एकातु–तुम ही, न चलकर; ऍतिर् माऱ्ऱम् चॊन्नाय्–उत्तर में बोलते हो; अटा–रे; नी–तुम; यावन्–कौन हो; तॊल्–प्राचीन; पुरम्–त्रिपुरों को; अट्टान्–जिन्होंने जलाया था; अन्नार्–उन शिवजी के समान (लोग) भी; ऍय्तऱ्कु–यहाँ आने से; अञ्चुवर्–डरते हैं; अळियत्ताय्–करुणा योग्य; इ ऊर्–यह पुर; उन्नाल् ऍय्तुम् ऊर् कॊल्–तुम्हारे आने योग्य पुर है क्या; ऍन्ऱु–कहकर; उऱ–खूब; नक्काळ्–हँसी। १७९

हनुमान अपना वचन पूरा करे इसके पूर्व ही उसने कहा कि जाओ, कहती हूँ; पर जाते नहीं और बात बनाते हो ! रे तुम कौन हो ? त्रिपुरान्तक जैसे देव भी इधर आने से डरते हैं ! तुम करुणा के योग्य हो ! यह क्या ऐसा सस्ता नगर है कि तुम आओ ? यह कहकर वह खूब हँसी (अम्मा-मैया री !)। १७९

नक्का ळैक्कण् डैयन् मनत्तोर् नहैकॊण्डान्
अक्का नीदा नार्शॊल वन्दा युन्नदावि
उक्का लन्ऱि योडलै यॅन्ऱा ळिनियिव्वूर्
पुक्का लन्ऱिप् पोहलॅ नॅन्ऱान् पुहळ्हॊण्डान् 180

ऐयन्–आदरणीय; नक्काळै कण्टु–हँसनेवाली को देखकर; मनत्तु–मन में;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ओर् नकै कॊण्टान्–हँसा; अक्काल्–तब; आर् तान् चॊल–किसके ही कहने से; नी वन्ताय्–तुम आये; उत्तु आवि–तुम्हारे प्राण; उक्काल् अन्ऱि–मिटे विना; ओटलै–नहीं भागोगे; ऎन्ऱाळ्–कहा (लंकादेवी ने); पुकळ् कॊण्टान्–यशस्वी हनुमान ने; इऩि–इतना होने के बाद; इ ऊर् पुक्काल् अन्ऱि–इस पुरी में घुसे विना; पोकलॆन्–नहीं जाऊँगा; ऎन्ऱान्–कहा। १८०

हँसती हुई उसको देखकर महिमावान हनुमान मन में हँसा। तब उससे लंकादेवी ने पूछा कि तुम किसकी आज्ञा से यहाँ आये? मरोगे तभी भागोगे? नहीं तो चलोगे नहीं क्या? तिस पर यशस्वी हनुमान ने अपना हठ दिखाया— अब इसको देखे बग़ैर लौट नहीं जाऊँगा। १८०

वञ्जङ् गॊण्डान् वाऩर मल्लन् वरुहालन्
तुञ्जुङ् गण्डा लॆन्नै यिवन्शूळ् तिरैयाळि
नञ्जङ् गॊण्ड कण्णुद लैप्पो नहुहिन्ऱान्
नॆञ्जङ् गण्डे कल्लॆऩ निन्ऱे निनैहिन्ऱाळ् 181

वरु कालन्–(मेरा शत्रु बनकर) आनेवाला यम भी; ऎन्नै कण्टाल्–मुझे देखे तो; तुञ्चुम्–मर जायगा; इवन्–यह तो; तिरै चूळ् आऴि–लहरों से आवृत समुद्र के; नञ्चम् उण्ट–विष के खादक; कण्णुतलै पोल्–भाल-नेत्र (शिवजी) के समान; नकुकिन्ऱान्–हँसता है; वञ्चम् कॊण्टान्–मन में वंचना रखता है; वाऩरम् अल्लन्–वानर नहीं है; नॆञ्चम् कण्टु–मन ताड़कर; कल् ऎऩ–पत्थर के समान; निन्ऱु–अचल खड़ा रहकर; निनैकिन्ऱाळ्–सोचती है। १८१

यह सुनकर लंकादेवी सोचने लगी। मुझसे शत्रुता करने यम आयगा तो वह मर जायगा। यह तो भालनेत्र शिव के समान हँसता है, जिन्होंने लहरावृत समुद्र से निकले विष को निगल लिया। यह वंचक है। सचमुच वानर नहीं होगा। वह हनुमान का मन समझने का प्रयास करती हुई पत्थर के समान अचल खड़ी रही। १८१

कॊल्वा मन्ऱेऱ् कोळुऱु मिव्वू ऱॆऩल्कॊण्डाळ्
वॆल्वाय् नीयेल् वेऱि यॆऩत्तन् विऴितोऱुम्
वल्वाय् तोऱुम् वॆङ्गऩल् पॊङ्ग मदिवाऩिल्
शॆल्वा यॆन्ऩा मूविलै वेलैच् चॆलविट्टाळ् 182

कॊल्वाम्–इसको मार देंगे; अन्ऱेल्–नहीं तो; इव्वूर्–यह पुर; कोळुऱुम्–नष्ट हो जायगा; ऎऩल्–ऐसा; कोण्टाळ्–सोचकर; नी वॆल्वायेल्–तुम जीत सको तो; वेऱि–जीत लो; ऎऩ–ऐसा कहकर; वॆम् कऩल्–भयंकर (कोप की) अग्नि; तन् विऴि तोऱुम्–अपनी आँख-आँख में; वल् वाय् तोऱुम्–बलवान मुखों से; पॊङ्क–निकलने देते हुए; मति वाऩिल्–चन्द्र के आकाश में; चॆल्वाय् ऎन्ऩा–जाओ कहते हुए; मू इलै वेलै–त्रिशूल को; चॆल विट्टाळ्–(उसने) जाने को फेंका। १८२

उसने संकल्प किया कि हम इसे मार दें। नहीं तो इस नगर का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाश हो जायगा। उसने हनुमान से कहा कि तुम जीत सकते हो तो जीतो ! फिर उसने अपनी आँखों और बलवान (आठों) मुखों से आग उगलती हुई त्रिशूल को उस पर चलाया और चिल्लायी कि चलो चन्द्र के आकाश में (= स्वर्ग में = मरो।)। १८२

तडित्ता मॅन्नत् तन्नॅदिर् शॅल्लुन् दऴल्वेलैक्
कडित्ता ऩाहम् विण्णिऩ् मुरिक्कुङ् गलुऴन्बोल्
ऑडित्तान् कैया लुम्ब रुवप्प वुयर्कालम्
पिडित्ता णॅञ्जन् दुण्णॅऩ वॅण्णम् बिऴैयादान् 183

तटित्तु आम् ऍऩ्ऩ–तडित् ही कहने योग्य; तऩ् ऍतिर् चॅल्लुम्–अपनी ओर आनेवाले; तऴल् वेलै–अग्नि-सम शूल को; ऍण्णम् पिऴैयाताऩ्–अपने संकल्प में कभी न चूकनेवाले ने; कटित्ताऩ्–अपने दाँतों से काटा; उम्पर् उवप्प–देवों को आनन्द देते हुए; उयर् कालम् पिटित्ताळ्–बहुत काल जो जीवित रह गयी उसके; नॅञ्चम् तुण्णॅऩ–मन को भय से भरते हुए; कैयाल्–हाथों से; विण्णिल्–आकाश में; कलुऴऩ्–गरुड़; नाकम् मुरिक्कुम् पोल्–सर्प को जैसे तोड़ता हो; ऑटित्ताऩ्–तोड़ दिया। १८३

वह शूल तडित् के समान हनुमान की ओर आ रहा था। दृढ़संकल्प हनुमान ने उस अग्नि-सम शूल को अपने दाँतों से पकड़ लिया। फिर उसने उसको आकाश में गरुड़ साँप को जैसे तोड़े वैसे हाथ से पकड़कर तोड़ दिया। उसे देखकर देव हर्षित हुए और लम्बी आयु वाली लंका का मन दहल उठा। १८३

इऱ्ऱुच् चूल नीऱॅऴल् काणा वॅरियॊप्पाळ्
मऱ्ऱुत् तॅय्वप् पल्बडै कॊण्डे मलैवाळै
उऱ्ऱुक् कैया लायुद मॅल्ला मॊऴियामल्
पऱ्ऱिक् कॊळ्ळा विण्णि लॅऱिन्दाऩ् पऴियिल्लाऩ् 184

चूलम् इऱ्ऱु–शूल टूटकर; नीऱु ऍऴल् कण्टु–चूर्ण हुआ देखकर; ऍरि ऒप्पाळ्–आग के समान भभककर; मऱ्ऱु–अन्य; पल् तॅय्व पटै–अनेक दिव्य आयुधों को; कॊण्टे–ले; मलैवाळै–लड़नेवाली उसके; उऱ्ऱु–पास जाकर; आयुतम् ऍल्लाम्–सभी आयुधों को; पऴियिल्लाऩ्–अपयश से हीन हनुमान ने; ऒऴियामल्–विना बाकी छोड़े; कैयाल् पऱ्ऱि कॊळ्ळा–अपने हाथों से पकड़कर; विण्णिल् ऍऱिन्ताऩ्–आकाश में फेंक दिया। १८४

शूल को टूटकर चूर्ण होते देख अग्निसमाना लंकादेवी अन्य दिव्य आयुध चलाकर युद्ध करने लगी। अनिंद्य हनुमान ने उन सबको पकड़कर आकाश में फेंक दिया। १८४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वळङ्गुन् दॆय्वप् पलबडै काणाण् मळैवान्मेल्
मुळङ्गुम् मेह मॆन्न मुरऱ्ऱि मुन्निहिन्ऱाळ्
कळङ्गुम् बन्दुम् कुन्ऱुहौ डाडुङ् गरमोच्चित्
तळङ्गुज् जॆन्दोच् चिन्द वडित्ता डहविल्लाळ् 185

तकवु इल्लाळ्–योग्यताहीन (लंकादेवी); वळङ्कुम्–अपने द्वारा चलाये गये; तॆय्वप् पल् पटै–अनेक दिव्यायुधों को; काणाळ्–न देखकर; मेल् वान्–ऊपर आकाश में; मुळङ्कुम्–गरजनेवाले; मळै मेकम् ऍन्न–जल-भरे मेघ के समान; मुरऱ्ऱि–नारे लगाते हुए; मुन्निकिन्ऱाळ्–कोप करके; तळङ्कुम् चॆन् ती–शब्द के साथ लाल आग; चिन्त–बरसाती हुई; कुन्ऱु कॊटु–गिरियों से; कळङ्कुम् पन्तुम्–"कळङ्कु" नाम के गोल बीजों और गेंदों को ले; आटुम्–खेलनेवाले; करम् ओच्चि–हाथों को उठाकर; अटित्ताळ्–मारा । १८५

लंका ने देखा कि वह जो भी हथियार फेंक रही थी उनका कहीं पता नहीं। वह बरसनेवाले घटाटोप के समान गरजकर कोप के साथ पर्वतों को उखाड़कर फेंकने लगी; मानो वह गेंद या 'कळङ्गु' नाम के गोल बीज को खेल में उछाल रही हो। उनमें से आग निकलने लगी। वह हाथ उठाकर ज़ोर से हनुमान को उन पर्वतों से मारने लगी। १८५

अडिया मुन्न मङ्गै यनैत्तु मॊरुकैयाल्
पिडिया वॆन्ने पॆण्णिवळ् कॊल्लिऱ् पिळैयॆन्ना
ऒडिया नॆञ्जत् तोरडि कॊण्डा नुयिरोडुम्
इडिये रुण्ड माल्वरै पोन्मण् णिडैवीळ्न्दाळ् 186

अटिया मुन्नम्–मारने से पहले; अङ्कै अनैत्तुम्–उसके सुन्दर सभी (आठों) हाथों को; ऒरु कैयाल्–अपने एक हाथ में; पिटिया–पकड़ लेकर; ऍन्ने–यह क्या है; इवळ् पॆण्–यह स्त्री है; कॊल्लिल् पिळै–मारने पर (ही तो) अपराध लगेगा; ऍन्ना–सोचकर; ऒटियान्–न हिचककर; नॆञ्चत्तु–उसके हृदय पर; ओर् अटि कॊण्टान्–एक प्रहार किया; इटि एरु–बहुत बड़े वज्र से; उण्ट–आहत; माल् वरै पोल्–बड़े पर्वत के समान; उयिरोटुम्–प्राणों के साथ; मण्णिटै वीळ्न्ताळ्–पृथ्वी पर गिरी। १८६

लंका के उन्हें छोड़ने से पूर्व ही हनुमान ने अपने हाथ से उसके आठों हाथों को ग्रस लिया। वह इस विचार से थकित नहीं हुआ कि यह क्या ? यह तो स्त्री है। इसको जान से मारना ही तो अपराध होगा। (हम जान से नहीं मारेंगे)। उसने लंका के वक्ष पर एक प्रहार किया। वह प्रहार पाकर अशनि-प्रहरित बड़े पर्वत के समान लंका पृथ्वी पर गिर गयी। उसके प्राण नहीं गये। १८६

विळुन्दा णॊन्दाळ् वॆङ्गुरु दिच्चॆम् बुनल्वॆळ्ळत्
तळुन्दा निन्ऱा णान्मुह नारद मरुळून्ऱि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅऴुन्दाळ् यारुम् यावैयु मॅल्ला वुलहत्तुम्
तॊऴुन्दाळ् वीरन् रूदुवन् मुनऩिन् ऱिवैशॊऩ्नाळ् 187

विऴुन्ताळ्–गिरी और; नॊन्ताळ्–पीड़ित हुई; वॅम् कुरुति–गरम रक्त के; चॅम् पुनल् वॅळ्ळत्तु–लाल जल के प्रवाह में; अऴुन्ता निन्ऱाळ्–मग्न हुई; नान् मुकऩार्तम्–चतुर्मुख ब्रह्मा का; अरुळ् ऊन्ऱि–कृपावचन मन में ले; अॅऴुन्ताळ्–उठी; अॅल्ला उलकत्तुम्–सभी लोकों में; यारुम् यावैयुम्–सभी विवेकी जीव (देव, मानव आदि) और सभी अविवेकी जीव (पशु, पक्षी आदि); तॊऴुम्–जिनकी स्तुति करते हैं; ताळ्–ऐसे चरणों के; वीरन्–वीर नायक श्रीराम के; तूतुवन् मुन् निन्ऱु–दूत के सामने खड़ी होकर; इवै–ये बातें; चॊऩ्नाळ्–कहीं। १८७

लंकादेवी जो, नीचे गिरी, बहुत दुःखी हुई। गरम रक्त के प्रवाह में डूबी। फिर चतुर्मुख ब्रह्माजी ने कृपा करके जो कहा था उसका चिंतन करती हुई वह उठी। फिर सर्ववन्द्यचरण श्रीराम के दूत हनुमान के सामने खड़ी होकर यों बोली। १८७

ऐयके ळबय नल्हु मयऩरु ळमैदि याहि
अॅय्दियिम् मूदूर् काप्पॅ ऩिलङ्गैया वेऩुम् याऩे
शॅय्दॊऴि लिऴुक्कि युळ्ळन् दिहैत्तिन्दच् चिऱुमै युऱ्ऱेऩ्
उय्दियॅऩ् ऱळित्ति याऩु मुणर्त्तुव लुण्मै यॅऩ्ऱाळ् 188

ऐय–आदरणीय; केळ्–सुनो; अपयम् नल्कुम्–अभयप्रदान करनेवाले; अयऩ्–ब्रह्माजी की; अरुळ् अमैतियाकि–कृपा का सम्बल लेकर; इ मूतूर अॅय्ति–इस प्राचीन नगर में आकर; काप्पॅऩ्–संरक्षण करती आ रही हूँ; याऩे इलङ्कै आवेऩुम्–मैं स्वयं लंका (नाम की) हूँ; चॅय् तॊऴिल्–अपने कर्तव्य (संरक्षण) कार्य में; इऴुक्कि–चूक गयी; उळ्ळम् तिकैत्तु–मन भ्रमित हो गया; इऩ्त चिऱुमै–यह लघुता; उऱ्ऱेऩ्–पा गयी; उय्ति–बच जाओ; अॅऩ्ऱु–कहकर; अळित्ति–अभयदान दो; याऩुम्–मैं भी; उण्मै–सत्य; उणर्त्तुवल्–बता दूँगी; अॅऩ्ऱाळ्–कहा। १८८

आदरणीय! सुनो। अभयप्रदायक अजदेव की कृपा का सम्बल लेकर मैं इस लंका का संरक्षण करती आयी। मेरा नाम भी लंका है। अपने पहरे के काम में ज़रा-सी चूक हुई और मन भ्रमित हो गया। उसके फलस्वरूप इस लघुता को पहुँच गयी हूँ। तुम अभयदान दो और मुझे जीवित छोड़ दो। मैं तुमको सत्य घटना बताऊँगी। १८८

अॅत्तऩै कालङ् गाप्पॅऩ् याऩिन्द मूदू रॅऩ्ऱु
मुत्तऩै विऩवि ऩेऱ्कु मुरण्वलिक् कुरङ्गॊऩ् ऱुऩ्ऩैक्
कॅत्तलन् दऩ्ऩाऱ् ऱीण्डिक् कायन्दवन् ऱॅऩ्ऩैक् काण्डि
चित्तिर नहरम् बिऩ्ऩैच् चिदैवदु तिण्ण मॅऩ्ऱाऩ् 189

मुत्तऩै–मुक्त (उन ब्रह्माजी) से; याऩ्–मैं; इऩ्त मूतूर्–इस प्राचीन नगर की; अॅत्तऩै कालम्–कितना समय; काप्पॅऩ्–रक्षा करूँगी; अॅऩ्ऱु–ऐसा;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वितवित्तेऱ्कु–पूछनेवाली मुझसे; मुरण् वलि–बहुत सबल; कुरङ्कु ऑन्ऱु–एक वानर; उन्नै–तुम्हें; कै तलम् तन्नाल्–हाथ से; तीण्टि–स्पर्श कर; काय्न्त अन्ऱु–जब क्रोध दिखायगा; ऍन्नै काण्टि–उस दिन मुझसे मिलोगी; चित्तिर नकरम्–सुन्दर (लंका) नगर; पिन्नै–बाद; चितैवतु–मिट जायगा; तिण्णम्–ध्रुव है; ऍन्ऱान्–कहा (ब्रह्मा ने)। १८९

मुक्त ब्रह्माजी से मैंने पूछा कि मैं कितने दिन इस प्राचीन नगर पर पहरा दूँ ? तब उन्होंने कहा कि अति बलिष्ठ एक वानर आयगा और अपने हाथ से स्पर्श कर तुम्हें दण्ड देगा। तब तुम अपना कार्य छोड़कर मुझसे आकर मिलोगी। उसके पश्चात उस सुन्दर नगर का नाश हो जायेगा। यह ध्रुव है। १८९

अन्नदे मुडिन्द दैय वऱम्वॅल्लुम् बावन् दोऱ्कुम्
ऍन्नुमी दियम्ब वेण्डुन् दहैयदो यिनिमऱ् ऱुन्नाल्
उन्निय वॅल्ला मुऱ्ऱु मुनक्कुमुऱ् ऱाद दुण्डो
पॊन्नहर् पुहुदि यॅन्नाप् पुहळ्न्दव ळिऱैञ्जिप् पोनाळ् 190

ऐय–आदरणीय; अन्नते–वही; मुटिन्ततु–क्रियान्वित हुआ; अऱम् वॅल्लुम्–धर्म की जय होगी; पावम् तोऱ्कुम्–पाप की पराजय होगी; ऍन्नुम् ईतु–यह कथन; इयम्प वेण्टुम् तकैयतो–समझाने की आवश्यकता भी है क्या; इनि–आगे; उन्नाल्–तुमसे; उन्निय ऍल्लाम्–सोचा जो जायगा वह सभी; मुऱ्ऱुम्–पूरा होगा; उनक्कुम्–तुमसे; मुऱ्ऱातत्तु–असाध्य; उण्टो–कुछ होगा क्या; पॊन् नकर् पुकुति–स्वर्णनगरी में प्रवेश करो; ऍन्ना–ऐसा; पुकळ्न्तवळ्–उसकी महिमा गाकर; इऱैञ्चि–विनय करके; पोनाळ्–चली। १९०

महिमावान ! ब्रह्माजी की वाणी अब चरितार्थ हो गयी। हाँ ! धर्म जीतेगा और पाप हार जायगा। यह कथन दुहराने की आवश्यकता भी है क्या ? आगे तुम जो भी चाहोगे वह सब पूरा होगा। तुमसे बन नहीं पड़े, ऐसा कोई कार्य भी होगा क्या ? जाओ ! स्वर्णनगर में प्रवेश करो। यह कहकर लंकादेवी ने हनुमान की सम्मान-सहित स्तुति की और विनय प्रदर्शन करके चली गयी। १९०

वीरनुम् विरुम्बि नोक्कि मॅय्म्मैये विळैवु मः(ह्)दॅन्
ऱारियन् कमल पाद महत्तुऱ वणङ्गि याण्डप्
पूरिय रिलङ्गै मूदूऱ्प् पॊन्मदि ऱाविप् पुक्कान्
शीरिय पालिन् वेलैच् चिऱुपिरै तॅळित्त दन्नान् 191

वीरनुम्–वीर हनुमान; विरुम्पि नोक्कि–प्यार से देखकर; मॅय्म्मैये–सच ही; विळैवुम् अ.ंतु–सम्भाव्य भी वही; ऍन्ऱु–सोचकर; आरियन् कमल पातम्–आर्य श्रीराम के कमल-चरणों का; अकत्तु उऱ–मन में लगाकर (स्मरण कर); वणङ्कि–नमस्कार करके; चीरिय–श्रेष्ठ; पालिन् वेलै–क्षीर-सागर में; चिऱु पिरै–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

छोटा-सा जामन; तॅळित्ततु अन्नान्–जो छिड़का गया हो उसके समान; आण्टु–तब; अ–उन; पूरियर्–नीच लोगों के; इलङ्कै मूतूर्–प्राचीन लंका नगर में; पॊन् मतिल् तावि–स्वर्ण-प्राचीर को लाँघकर; पुक्कान्–प्रविष्ट हुआ। १९१

वीर हनुमान ने उस पर प्यार की दृष्टि डाली। मन में सोचा कि उसका कहना सच है। वही होनेवाला है। उसने आर्य श्रेष्ठ श्रीराम के चरण-कमलों का ध्यान किया। फिर उसने जग-विख्यात नीच राक्षस लोगों के उस प्राचीन लंका नगर में, स्वर्णप्राचीर को लाँघकर प्रवेश किया। उसका प्रवेश श्रेष्ठ क्षीरसागर में जामन की बूँद के छिड़कने के समान था (सब बिगड़ जानेवाला है)। १९१

वान्ऱॊडर् मणियिऱ् चॅय्द मैयऱु माड कोडि
आन्ऱपे रिरुळैच् चीत्तुप् पहल्शॅय्द वळहै नोक्कि
ऊन्ऱिय वुदयत् तुच्चि यॊऱ्ऱॆवा नुरुळैत् तेरोन्
तोन्ऱिनन् कॊल्लो वॆन्ना वऱिवनुन् दुणुक्कङ् गॊण्डान् 192

वान् तॊटर्–आकाश से लगे; मणियिऱ् चॅय्त–रत्ननिर्मित; मै अऱु–निर्दोष; माट कोटि–(कोटि-कोटि) असंख्यक सौध; आन्ऱ–घने; पेर् इरुळै–गहरे अन्धकार को; चीत्तु–दूर करके; पकल् चॅय्त–(रात को) दिन में बदल रहे थे, उस; अळकै नोक्कि–सौन्दर्य को देखकर; ऊन्ऱिय–स्थायी; उतयत्तु उच्चि–उदय के वर्धन में; वान्–आकाशचारी; ऒऱ्ऱै उरुळैत्तेरोन्–एकचक्ररथी; तोन्ऱिनन् कॊल्लो–उग आया क्या; ऎन्ना–ऐसा; अऱिवनुम्–बुद्धिमान हनुमान भी; तुणुक्कम् कॊण्टान्–ठिठक गया। १९२

उस नगर में कितने ही प्रासाद थे। सब गगनव्यापी थे। रत्नों से जड़ित थे। वे घने और विशाल अन्धकार को दूर करके दिन-सा बना रहे थे। उस सौंदर्य को देखकर बुद्धिमान हनुमान भी ज़रा ठिठक गया कि क्या स्थायी और उदयकालीन वर्धन ले एकचक्ररथी सूर्य आ गया है! । १९२

मॊय्म्मणि माड मूदूर् मुळुदिरु ळहऱ्ऱुन् दान्ऱे
मॆय्म्मैयै युणर्वि नान्नो मिहैयॆन्न विलङ्गिप् पोनान्
इम्मदि लिलङ्गै नाप्प पॆय्दुमेऱ् ऱन्मु नॆय्दुम्
मिम्मिनि यल्ल नोवव् वॆयिऱ्कदिर् वेन्द नम्मा 193

मॊय् मणि–घने रत्नों से जड़ित; माट–सौधों से भरे; मूतूर्–वह प्राचीन नगर; तान्ऱे–अकेले; इरुळ् मुळुतु–सारे अन्धकार को; अकऱ्ऱुम् मॆय्म्मैयै–हटा रहा था, इस तथ्य को; उणर्वितान्–समझकर; अ–वह; वॆयिल् कतिर् वेन्तन्–गरम किरणों का अधिपति (सूर्य); मिकै–(अपना आना) अनावश्यक; ऎन्न–समझकर; विलङ्किप् पोनान्–दूर से चला गया; इ मतिल् इलङ्कै नाप्पण्–इस प्राचीरवलयित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लंका के मध्य; अॅय्तुमेल्–आयगा तो; तन् मुन्–उसके सामने; अॅय्तुम्–आनेवाले; मिम्मिनि अल्लनो—खद्योत नहीं होगा क्या । १९३

घने रूप से रत्नों से निर्मित सौधों से भरा नगर स्वयं और अकेले सारे अन्धकार को मिटा रहा था। इस तत्त्व को हनुमान ने देखा और सोचा कि गरम किरणों का स्वामी सूर्य यह सोचकर लंका के पास न आकर दूर ही से चला गया कि वहाँ मेरा जाना अनावश्यक है। अगर वह प्राचीरों से युक्त इस नगर के मध्य आयगा तो वह खद्योत के समान क्या अल्प-प्रकाश न हो जायगा ? । १९३

पॉशिवुरु पशुम्बॉर् कुन्रिर् पॉन्मदि नडुवट् पूत्तु
वशैयर् विळङ्गुञ् जोदि मणियिना लमैत्त माडत्
तशैविलिव् विलङ्गै मुद्दू रारिरु ळिन्मै यालो
निशिशर रायि नारन् नॅडुनहर् निरुद रॅल्लाम् 194

पॉचिवु उरु–पिघलनेवाले; पचुम् पॉन्–हरे (चोखे और पीले) स्वर्ण के; कुन्रिल्–(त्रिकूट) पर्वत पर; पॉन् मतिल् नटुवण्–स्वर्ण-प्राचीरों के मध्य; पूत्तु–खिलकर; वचैयर्–निर्दोष; विळङ्कुम्–शोभित; चोति मणियिनाल्–ज्योतिमय मणियों से निर्मित; माटत्तु–सौधों से युक्त; अचैवु इल्–अचल; इ इलङ्कै मूतूर्–इस प्राचीन लंका में; आर् इरुळ्–भरा अन्धकार; इन्मैयालो–नहीं है, क्या इसलिए; अ नॅटु नकर्–उस विशाल नगर के; निरुतर् अॅल्लाम्–राक्षस सभी; निचिचरर् आयिनार्–निशिचर बन गये । १९४

पिघलने का स्वभाव रखनेवाले उस पीले स्वर्ण के पर्वत पर वह प्राचीन लंका बसा था। स्वर्ण प्राचीरों के मध्य था। उसमें निर्दोष रत्नों से युक्त और प्रकाश फैलानेवाले अनेक प्रासाद थे। वह अकंपन था। उस नगर में कभी अँधेरा नहीं होता था। हनुमान ने यह सोचा तो उसे एक बात सूझी। "तब क्या इसी कारण इस विशाल नगर के राक्षस लोग निशाचर (रात में चलनेवाले) बन गये ?" । १९४

अॅन्रन नियम्बि वीदि येहुद लिळुक्क मॅन्नात्
तन्रहै यरिय मेनि शुरुक्किमा ळिहैयिर् चारच्
चॅन्रन नॅन्ब मन्नो तेवरुक् कमुद मीन्द
कुन्रॅन वयोत्ति वेन्दन् पुहळॅनक कुववुत् तोळान् 195

तेवरुक्कु–देवों को; अमुतम् ईन्त—जिसने अमृत दिलाया; कुन्रु अॅन–उस मन्दर पर्वत के समान रहनेवाले; अयोत्ति वेन्तन्–अयोध्याधिपति के; पुकळ् अॅन–यश के समान; कुववु–विशाल; तोळान्–भुजा वाला; अॅन्रनन् इयम्पि–ऐसा आप ही आप कहते हुए; वीति एकुतल्–वीथियों पर जाना; इळुक्कम् अॅन्ना–गलत समझकर; तन् तकै–अपने स्वभाव के अनुरूप रहनेवाले; अरिय–अतिशय बृहत्; मेनि–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शरीर को; चुरुक्कि–छोटा बनाकर; माळिकैयिल् चार–प्रासादों से लगे-लगे; चॆन्ऱ्रतन्–गया; ऎन्ऩ्प–ऐसा लोग कहते हैं। १९५

हनुमान के कन्धे देवों को अमृत दिलानेवाले मन्दरपर्वत के समान (ऊँचे) थे और अयोध्याधिप के यश के समान विशाल। ऐसे हनुमान ने यह सोचा कि वीथियों के मध्य से जाना गलत होगा। उसने अपने गुणों के अनुरूप वृहत्, अपने अनोखे शरीर को छोटा कर लिया। वह भवनों के पास लगे-लगे जाने लगा। १९५

आत्तुऱु शालै तोऱु मानैयिन् कूडन् दोऱुम्
मात्तुऱु माडन् दोऱुम् वाशियिन् पन्दि तोऱुम्
कात्तुऱुञ् जोलै तोऱुङ् गरुङ्गडल् कडन्द कालाल्
पूत्तोऱुम् वाविच् चॆल्लुम् बॊऱिवरि वण्डिऱ् पोऩान् 196

करुम् कटल्–काले (रंग के) समुद्र को; कटन्त कालाल्–जिन (पैरों) से लाँघा उन पैरों से; आ तुऱु–गायों से भरी; चालै तोऱुम्–गोशालाओं में; आनैयिन् कूटम् तोऱुम्–गजशालाओं में; मा तुऱु–अनेक पशुओं के; माटम् तोऱुम्–स्थलों में; वाचियिन् पन्ति तोऱुम्–अश्वशालाओं में; का तुऱुम्–संरक्षित; चोलै तोऱुम्–उद्यानों में; पू तोऱुम्–हर फूल पर; वावि चॆल्लुम्–बैठकर फिर उड़ जानेवाले; पॊऱि वरि वण्टिन्–चित्तियों और रेखाओं से युक्त भ्रमर की भाँति; पोऩान्–हनुमान गया। १९६

हनुमान पैदल चलकर गया। उसके वे पैर थे जिन्होंने काले सागर को लाँघकर पार किया था। गोशालाएँ, गजशालाएँ, विविध पशुओं के बाँधने के स्थान, अश्वशालाएँ आदि देखता चला। संरक्षण-युक्त उद्यानों में भी अन्वेषण करता हुआ वह बिन्दियों और धारियों से युक्त भ्रमर के समान चला जा रहा था। १९६

पॆरियना ळॊळिकॊ णाऩा विदमणिप् पित्तिप् पत्ति
शॊरियुमा निऴलङ् गङ्गे शुऱ्ऱलाल् कालिन् ऱोन्ऱल्
करियऩाय् वॆळिय ऩाहिच् चॆय्यऩाय्क् काट्टुङ् गाण्डऱ्
करियऩा यॆळिय ऩान्दऩ् ऩहत्तुऱै यऴह ऩेपोल् 197

पॆरिय–बड़े; नाळ्–नक्षत्रों के; ऒळि कॊळ्–प्रकाश से युक्त; नानावित मणि पित्ति पत्ति–विविध मणि-जड़ित भित्तियों की पंक्तियाँ; चॊरियुम्–जो छिटकाती हैं; मा निऴल्–वे श्रेष्ठ ज्योतियाँ; अङ्कङ्के–यत्र-तत्र; चुऱ्ऱलाल्–घेरती हैं, इसलिए; कालिन् तोन्ऱल्–वायुपुत्र; काण्टऱ्कु–देखने के लिए; अरियऩाय्–दुर्लभ; ऎळियऩाम्–पर सुलभप्राप्य रहकर; तन् अकत्तु उऱै–अपने हृदय में स्थित; अऴकऩे पोल्–सुन्दर श्रीराम के समान; करियऩाय्–(एक स्थान पर विष्णु की भाँति) काला; वॆळियन् आकि–दूसरे स्थान श्वेत (ब्रह्मा) बनता; चॆय्यऩाय्–(तीसरे स्थान पर रुद्र की तरह) लाल; काट्टम्–दरसाता। १९७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वहाँ के प्रासादों की दीवारें नाना मणियों से जड़ित थीं, जो नक्षत्रों के समान प्रकाश बिखेर रही थीं। स्थल-स्थल पर वह प्रकाश पुञ्जीभूत था। उनके बीच से जाते हुए हनुमान कभी लाल, कभी काला और कभी श्वेत वर्ण का हो जाता था। तब वह शिवजी, विष्णु और ब्रह्माजी के समान लगा। ये तीनों उन सुन्दर श्रीराम के ही विविध रूप हैं जो कि प्रत्यक्ष देखने को कठिन और ध्यान में प्राप्त करने को सुलभ होकर हनुमान के मन में विराजे हुए थे। १९७

ईट्टुवार् तवम लान्मर् ऱीट्टिना लियैव दिन्मै
काट्टुवार् विदिया रिन्नुङ् गाण्गिऱ्पार् काण्मि नम्मा
पूट्टुवार् मुलैपॊ ऱाद पॊय्यिडै नैयप् पूनीर्
आट्टुवा रमरर् माद राडुवा ररक्कर् मादर् 198

वितियार्–विधाता; ईट्टुवार्–अर्जन करनेवाले; तवम् अलाल्–तप के सिवा; मऱ्ऱु ईट्टिनाल्–अन्य (धन आदि) अर्जन करें तो; इयैवतु इन्नमै–युक्त नहीं होता इसको; काट्टुवार्–अनेक प्रकार से दरसा देंगे; इन्नुम् काण्किऱ्पार्–और भी देखना चाहनेवाले; काण्मिन्–देख लें; अमरर् मातर्–देवांगनाएँ; पूट्टु वार् मुलै–अँगियाबद्ध स्तनों के; पॊऱात पॊय् इटै–भार को न सह सकनेवाली, और नहीं है ऐसा क्षीण रहनेवाली कमर के; नैय–दुःखी होते; पू नीर्–पुष्प-मिले जल से; आट्टुवार्–स्नान करातीं; अरक्कर् मातर्–राक्षस-स्त्रियाँ; आटुवार्–स्नान करतीं; अम्मा–आश्चर्य है मैया। १९८

विधाता लोगों को यह दरसाते हैं कि कमाना हो तो तप का फल कमाना है। अन्य धन आदि कमाने में कोई युक्तता नहीं है। यह आगे भी वे साबित करते रहेंगे। और जो इस बात का प्रमाण देखना चाहते हैं वे इधर देख लें। देवांगनाएँ अँगियाबद्ध भारी कुचों को सह न सकनेवाली और अभाव का सन्देह पैदा करने की उतनी क्षीण अपनी कमरों को दुःख देती हुई राक्षस-स्त्रियों को पुष्प (वास) -भरे जल से नहलाती हैं और वे राक्षस-स्त्रियाँ स्नान कर रही हैं। १९८

कानह मयिल्ह ळॆन्नक् कळिमड वन्न मॆन्न
आनन कमलप् पोदु पॊलिदर वरक्कर् मादर्
तेनुहु शरळच् चोलैत् तॆय्वनी राऱ्ऱिऱ् ऱॆण्णीर्
वानवर् महळि राट्ट मञ्जन माडु वारै 199

तेन् उकु–शहद जहाँ चूता है; चरळ चोलै–(तरुओं से भरे) उन उद्यानों में; तॆय्व नीर्–दैवी जल से भरी; आऱ्ऱु–(आकाशगंगा) नदी के; तॆळ् नीरिल्–स्वच्छ जल में; वानवर् मकळिर्–देवबालाएँ; मञ्चनम् आट्ट–मज्जन कराती हैं और; कानक मयिल्कळ् ऍन्न–वन-मयूरों के समान; कळि मट अन्नम् अन्न–मत्त बाल-मरालों के भी समान; अरक्कर् मातर्–राक्षस-स्त्रियाँ; आनन कमलम् पोदु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुख-कमल; पॊलितर–शोभें ऐसा; मञ्चत्तम् आटुवारै–मज्जन करनेवाली जो हैं, उनको। १९९

शहद चूनेवाले पेड़ों से भरे उद्यानों में देवललनाएँ दिव्य आकाशगंगा के स्वच्छ जल में राक्षसियों को स्नान करा रही हैं और वे राक्षसियाँ वन-मयूरों और मत्त बालमरालों के समान मुख रूपी कमलों को खिलाते हुए स्नान कर रही थीं। हनुमान ने उनको देखा। १९९

इलक्कण मरबिऱ् केऱ्ऱ वॆऴुवहै नरम्बि नल्याऴ्
अलत्तहत् तळिर्क्कै नोव वळन्दॆडुत् तमैत्त पाडल्
कलक्कुऱ मुळङ्ग नोक्किक् कन्नियर् शेडि मार्हळ्
मलर्क्कैयान् माडत् तुम्बर् मऴैयिन्वाय् पॊत्तु वारै 200

इलक्कण मरपिऱ्कु–शास्त्रोक्त रीति से; एऱ्ऱ–युक्त; ऎऴु वकै–सात तरह के; नरम्पिन्–(स्वर निकालनेवाली) तन्त्रियों के साथ रहनेवाली; नल् याऴ्–श्रेष्ठ 'याऴ्' नाम की वीणा को; अलत्तक–लाक्षारससिक्त; तळिर्क्कै–पल्लव-समान उँगलियों को; नोव–दुखाते हुए; अळन्तु ऎदुत्तु–ताल के अनुसार मापकर; अमैत्त पाटल–गाया गाना; कलक्कुऱ–बिगाड़ते हुए; मुऴङ्क–(मेघ) गरजे तब; नोक्कि–देखकर; कन्नियर् चेटिमार्कळ्–देवकन्याएँ जो चेरियाँ थीं; मलर् कैयाल्–अपने पुष्पहस्तों से; माटत्तु उम्पर्–सौधों के ऊपर; मऴैयिन् वाय्–मेघों के मुखों को; पॊत्तुवारै–बन्द करनेवालियों को। २००

स्त्रियाँ (याऴ् नाम की) वीणा का वादन कर रही थीं। उनमें सात स्वरों के लिए सात तंत्रियाँ लगी थीं। उनका वादन शास्त्र-शुद्ध था। उस संगीत में खलल पहुँचाते हुए प्रासादों के ऊपर आकाश में मेघ गरजने लगे तो चेरियों ने अपने पुष्प-सम हाथों से उनका मुख बन्द कराया। २००

शन्दप्पूम् बन्दर् वेय्न्द तमन्निय वरङ्गिऱ् ऱङ्गिच्
चिन्दित्त दुदवुम् दॆय्व मणिविळक् कॊळिरुञ् जेक्कै
वन्दुऱ्ऱ निरुत्त माक्कळ् विळम्बिन नॆऱिव ऴामल्
कन्दर्प्प महळि राडु नाडहङ् गाण्गिन् ऱारै 201

चन्त–सुन्दर; पूम् पन्तर् वेय्न्त–पुष्पों के वितान जहाँ तने थे; तमन्निय अरङ्किल्–स्वर्णनिर्मित नाट्यभवनों में; चिन्तित्तत्तु उतवुम्–मन की चाही चीज देनेवाला; तॆय्व मणि विळक्कु–दिव्य मणिदीप; ऒळिरुम्–प्रकाश दे रहा था; चेक्कै तङ्कि–आसनों पर आसीन होकर; वन्तुऱ्ऱ निरुत्त माक्कळ्–आकर खड़े हुए नृत्य-आचार्यों के; विळम्पिन नॆऱि–कहे मार्ग से; वऴामल्–न डिगकर; कन्तर्प्प मकळिर्–गन्धर्वकन्याएँ; आटुम् नाटकम्–जो नाटक प्रदर्शन करती हैं, उन नाटकों को; काण्किन्ऱारै–देखनेवालों को (हनुमान देखता गया)। २०१

(हनुमान कैसे-कैसे लोगों को देखता गया ? —उनकी सूची दी जाती

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है।) स्वर्ण-निर्मित रंगमञ्च है। उसमें सुन्दर पुष्पों का वितान तना है। चिन्तामणि (जो माँगी हुई वस्तु दिला सकती है) दीप का काम दे रही है। उधर आसनों पर बैठे हैं राक्षस लोग। गंधर्व-स्त्रियाँ नर्तन-शास्त्र के ज्ञाताओं के निर्दिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार नाच दिखा रही हैं। उनको और राक्षस दर्शकों को (हनुमान ने देखा)। २०१

तिरुत्तिय पळिक्कु वेदित् तॅळ्ळिय वेल्ह ळॅन्नक्
करुत्तियल् पुरैक्कु मुण्गट् करुङ्गयल् शॅम्मै काट्ट
वरुत्तिय कॊळुनर् तम्बाल् वरम्बिन्रि वळर्न्द काममम्
अरुत्तिय पयिर्क्कु नीर्पो लरुनर वरुन्दु वारै 202

तिरुत्तिय–सुनिर्मित; पळिङ्कु वेति–स्फटिक वेदियों पर; तॅळ्ळिय वेल्कळ् अॅन्न–साफ़ (तीक्ष्ण) भालों के समान; करुत्तु इयल्पु–मन की बात; उरैक्कुम्–कहनेवाले; उण् कण्–काजलयुक्त; करुम् कयल्–काली आँखें रूपी कयल मछलियाँ; चॅम्मै काट्ट–लाल दिखें ऐसा; वरुत्तिय–दुःख देनेवाले; कॊळुनर्–पति लोग; तम् पाल्–अपने पास; वरम्पु इन्रि–सीमा-रहित; अरुत्तिय–प्यार से जनाकर; वळर्न्त–पालित; काम पयिर्क्कु–काम रूपी पौधे को; नीर् पोल्-जलवत; अरु नरवु–श्रेष्ठ सुरा को; अरुन्तुवारै–पीनेवालियों को। २०२

उसने सुरचित स्फटिक-वेदियों पर राक्षस-स्त्रियों को देखा जो सुरापान कर रही थीं। (उनके पति उनको दुःख देकर चले गये थे। अब लौटने पर स्त्रियाँ रूठी हुई थीं।) उनकी कजरारी आँखें भाले के समान तीक्ष्ण थीं और उनके मन (के रोष) को प्रतिबिम्बित कर रही थीं। पतियों ने मनवा लिया और उन्हें असीम प्रेम (काम की तृप्ति द्वारा) दे रहे थे। उस काम रूपी पौधे को मानो वे सुरा रूपी जल से सींच रही थीं। २०२

कोदरु कुवळै नाट्टङ् गॊळुनर्हण् वण्णम् कॊळ्ळत्
तूदुळङ् गनियै वॅन्रु तुवर्त्तवाय् वॅण्मै तोन्रु
मादरु मैन्दर् तामु मॊरुवर्पा लॊरुवर् वॅत्त
कादलङ् गळ्ळुण् डार्पोन् मुरैमुरै कळिक्किन् रारै 203

कोतु अरु–निर्दोष; कुवळै नाट्टम्–कुवलय-सी आँखों ने (राक्षसियों की); कॊळुनर्–प्रेमी पतियों की; कण् वण्णम्–आँखों का रंग; कॊळ्ळ–अपना लिया; तूतुळङ् कनियै वॅन्रु–"तूदुळम्" नाम की लता के लाल फलों को (रंग में) हराकर; तुवर्त्त वाय्–जो लाल था, उस मुख के; वॅण्मै तोन्रु–श्वेत दिखते; मातरुम् मैन्तर् तामुम्–पुरुष और स्त्रियाँ जो; ऒरुवर् पाल् ऒरुवर् वॅत्त–परस्पर करते थे; कातल् अम् कळ्ळुण्टार् पोल्–उस प्रेम रूपी सुरा का पान कर रहे हों; मुरै मुरै कळिक्किन्रारै–बारी-बारी से सुखानुभव करनेवालों को। २०३

(इस पद्य में भी संगम का दृश्य है।) स्त्रियों की निर्दोष नील

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुवलय-सी आँखों में वीर पतियों की आँखों का रंग उतर आया। (उनकी आँखें लाल हो गयीं।) 'तूदुळम्' नामक लता के लाल फलों के समान जो उनके लाल अधर थे वे अब श्वेत हो गये। स्त्रियाँ और पुरुष आपसी प्रेम की सुरा को पान कर बारी-बारी से सुखभोग का रस लूट रहे थे। उनको हनुमान ने देखा। २०३

विऱ्पडर् पवळप् पादत् तलत्तह मॆऴुदि मेऩि
पॊऱ्पळ विल्ला वाशम् बुऩैनऱुङ् गलवै पूशि
अऱ्पुद वडिक्कण् वाळिक् कञ्जऩ मॆऴुदि यम्बॊऩ्
कऱ्पहङ् गॊडुक्क वाङ्गिक् कलन्ऱॆरिन् दणिहिऩ् ऱारै 204

विल् पटर्–शोभा छिटकानेवाले; पवळ पातत्तु–प्रवाल-सम पैरों पर; अलत्तकम् ऎऴुति–महावर लगाकर; अळवु इल्ला–असीम; पॊऱ्पु मेऩि–सुन्दरता से शोभनेवाले अपने शरीरों पर; वाचम् पुऩै–सुवासित; नऱुङ् कलवै–श्रेष्ठ चन्दन; पूचि–चर्चित करके; अऱ्पुत कण्–अद्भुत आँखों रूपी; वटि वाळिक्कु–तीक्ष्ण शरों पर; अञ्चऩम् ऎऴुति–अंजन लगाकर; अम् पॊऩ् कऱ्पकम्–श्रेष्ठ स्वर्ण-कल्पतरु; कलऩ् कॊटुक्क–आभरण देते; वाङ्कि–उन्हें लेकर; तॆरिन्तु–उनमें से चुनकर; अणिकिऩ्ऱारै–जो पहनती हैं उनको। २०४

कुछ राक्षसियाँ श्रृंगार कर रही हैं। कान्ति फैलाते रहे प्रवालरंग के चरणों पर महावर लगातीं; अपार सुन्दर शरीर पर सुगन्धित चन्दन का लेप लगा लेतीं; विस्मयकारी आँखों के शरों में अञ्जन लगातीं और मनोरम स्वर्ण कल्पतरु के दिये हुए आभरण लेकर अपने को विभूषित करतीं। इस दृश्य को हनुमान ने देखा। २०४

पुलियडु मदुहै मैन्दर् पुदुप्पिऴै युयिरैप् पुक्कु
नलिविड वमुद वाया ऩच्चुयिर्त् तयिऱ्क णल्लार्
मॆलिवुडै मरुङ्गुऩ् मिऩ्ऩि ऩलमरच् चिलम्बु विम्मि
ऒळिपड वुदैक्कुऩ् दोऱु मयिर्पुळ हुदिक्किऩ् ऱारै 205

अयिल् कण् नल्लार्–भाले के समान आँखों वाली राक्षसियाँ; पुलि अटु–व्याघ्र-जेता; मतुकै मैन्तर्–बलवान (उनके) वीर पतियों द्वारा; पुतु पिऴै–(कृत) नवीन अपराध; पुक्कु–मन में घुसकर; उयिरै नलिवु इट–प्राणों को त्रस्त कर रहा है, इसलिए; अमुत वायाल्–अमृत-मुख से; नच्चु उयिर्त्तु–विष निकालते हुए; मॆलिवु उटै मरुङ्कुल्–क्षीण कमर को; मिऩ्ऩिऩ् अलमर–बिजली के समान तड़पने देते हुए; चिलम्पु–नूपुरों के; विम्मि ऒळि पट–उमग कर शब्द देते; उतैक्कुम् तोऱुम्–(पतियों पर) लातें लगाते समय; मयिर् पुळकु उतिक्किऩ्ऱारै–जिनके शरीर पुलकित होते हैं, उनको। २०५

भाले-सी आँखों वाली राक्षसी नारियाँ अपने व्याघ्रजयी वीर पतियों के किसी नये अपराध से रूठ गयीं। वह अपराध उनके मर्म पर लग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गया। प्राण विह्वल हो गये। वे अब अमृत-भरे मुख के द्वारा विष-भरी लम्बी साँसें छोड़ने लगीं। उनकी कमरें बिजली के समान तड़पकर शिथिल हुईं। तब वे नूपुरों को शब्दित करते हुए लातें मारने लगीं तो उन स्त्रियों के (या पतियों के) शरीर पुलक से भर गये। २०५

उळ्ळुडै मयक्का लुण्गण् शिवन्दुवाय् वॅण्मै यूरित्
तुळ्ळिडैप् पुरुवङ् गोट्टित् तुडिक्कवेर् पॊडिक्कत् तूय
वॅळ्ळिडै मरुङ्गु लार्दम् मदिमुहम् वेऱॊऩ् ऱाहिक्
कळ्ळिडैत् तोऩ्ऱ नोक्किक् कणवरैक् कऩल्हिऩ् ऱारै 206

तूय–स्वच्छ; वॅळ् इटै–शून्य स्थान के समान; मरुङ्कुलार्–कमर वालियाँ; उळ् उटै मयक्काल्–(सुरा-पान के) आन्तरिक नशे से; उण् कण्–कजरारी आँखें; चिवन्तु–लाल करके; वाय् वॅण्मै ऊरि–मुखों के सफ़ेद बनते; तुळ् पुरुवम्–चलित भौंहों के; इटै कोट्टि–मध्यभाग के कुंचित होकर; तुटिक्क–तड़पते; वेर् पॊटिक्क–स्वेद के बूँदों में निकलते; कळ् इटै–सुरा के (पात्र के) अन्दर; तन् मति मुकम्–उनके मुख के; वेऱॊऩ्ऱाकित् तोऩ्ऱ–दूसरे रूप में प्रतिबिंबित होते; नोक्कि–उसको देखकर; कणवरै–अपने पतियों के साथ; कऩल्कित्ऱारै–(उस प्रतिबिंब को अपने पति द्वारा छिपाये रखी गयी अन्य स्त्री समझकर) कोप करनेवालियों को। २०६

राक्षसी नारियों की कमरें इतनी महीन थीं कि स्वच्छ शून्य स्थान-सी लग रही थीं। सुरापान से उत्पन्न नशे में उनकी आँखें लाल हो गयीं, अधर श्वेत बन गये। चञ्चल भौंहों के मध्यभाग कुंचित होकर फड़क उठे। शरीर पर स्वेदकण भर आये। उन्होंने अपने सुरापात्र के अन्दर अपने ही मुखों को देखा। पर उनके चन्द्रानन विकृत लगे। तो उन्होंने समझ लिया कि उनके पतियों ने अन्य स्त्री को छिपा रखा है। वे अपने पतियों से कोप करने लगीं। ऐसी नारियों को भी हनुमान ने देखा। २०६

आलैयिऩ् मलैयिऱ् चालि मुळैयिऩि लमुद वाशच्
चोलैयिऱ् ऱुवश रिल्लिऱ् चोऩहर् मऩैयिऱ् ऱूय
वेलैयिऱ् कॊळवॊ णाद वेऱ्कणार् कुमुदच् चॅव्वाय्
वालॅयिऱ् ऱूऱु तीन्देऩ् मान्दिऩर् मयङ्गु वारै 207

आलैयिल्–ईख में; मलैयिल्–पर्वत में; चालि मुळैयिऩिल्–शालि के अंकुर में; अमुत वाच–मधुर सुगन्धित; चोलैयिल्–उद्यानों में; तुवचर् इल्लिल्–मधु-विक्रेता के घर में; चोऩकर् मऩैयिल्–यवनों के घरों में; तूय वेलैयिल्–पवित्र क्षीरसागर में; कॊळ ऒणात–अप्राप्य; वेल् कणार्–भाला-सी आँखों वाली स्त्रियों के; कुमुत चॅव्वाय्–कुमुद-मुख के; वाल् ऍयिऱ्ऱु–श्वेत दाँतों के मध्य; ऊऱु तीन्तेऩ्–बहनेवाले मधुर रस को; मान्तिऩर्–पान करके; मयङ्कुवारै–मोहित रहनेवालों को। २०७

उसने पुरुषों को भी देखा, जो अपनी प्रेमिकाओं का अधर-रस पी कर मदमत्त हुए थे। वह रस ऐसा था, जो ईख में, पर्वतों पर, शालि के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अंकुरों में, सुवासित उद्यानों में मधुविक्रेता के घर में, यवनों के भवनों में या पवित्र क्षीरसागर से भी प्राप्य नहीं था। २०७

नलनुऱु कणवर् तम्मै नवैयुऱप् पिरिन्दु विम्मुम्
मुलैयुऱु कलवै तीय मुळ्ळिला मुळरिच् चॆङ्गेऴ्
मलर्मिशै मलर्पूत् तॆन्न वळैक्कैयाल् वदनन् दाङ्गि
अलमरु मुयिरि नोडु नॆडिदुयिर्त् तयर्हिन् ऱारै 208

नलन् उऱु–हित करनेवाले; कणवर् तम्मै–पतियों से; नवै उऱ–दुःखग्रस्त होकर; पिरिन्तु–बिछुड़कर; विम्मुम्–उभर उठनेवाले; मुलै उऱु–स्तनों में लिप्त; कलवै तीय–लेप के सूखते; मुळ्ळिल्ला–काँटा-हीन; चॆम् केऴ् मुळरि मलर् मिचै–लाल, सुन्दर कमल फूल पर; मलर् पूतॆन्न–और एक फूल फूला हो जैसे; वळै कैयाल्–कंकणमण्डित हाथ पर; वतनम् ताङ्कि–वदन का धारण करके; अलमरुम् उयिरितोटुम्–अकुलाते प्राणों के साथ; नॆटितु उयिर्त्तु–ठंडी लम्बी आहें भरकर; अयर्किन्ऱारै–थकित होनेवालियों को। २०८

कुछ स्त्रियाँ अपने प्रेमियों से बिछुड़ी थीं। वे अच्छे और अच्छे गुणों से भरे प्रेमी थे। प्रेमिकाओं को वियोग-दुःख सताने लगा। उनके फड़कते स्तनों का चन्दन-लेप सूख गया। उनके प्राण छटपटाने लगे। इस स्थिति में वे अपनी हथेलियों पर मुख रखे गुमसुम बैठी थीं। तब ऐसा लगा मानो काँटे-रहित नाल वाले कमल के एक लाल फूल पर और एक कमल फूला हो। वे निःश्वास छोड़ते हुए शोक-थकित हो रही थीं। २०८

एदियङ् गॊऴुनर् दम्बा लॆय्दिय काद लाले
तादियङ् गमळिच् चेक्कै युयिरिला वुडलिऱ् चार्वार्
मादुयर् काद रूण्ड वऴियिन्मेल् वैत्त कण्णार्
तूदियर् मुऱुव नोक्कि युयिर्वन्दु तुडिक्किन् ऱारै 209

एति–आयुधधारी; अम्–रूपवान; कॊऴुनर् तम् पाल्–पतियों पर; ऍय्तिय–रखे हुए; कातलाले–प्रेम के कारण; उयिरिला उटलिऱ्–निर्जीव शरीर के समान; तातु इयङ्कु–पराग से भरी; अमळि चेक्कै–गद्देदार शय्या पर; चार्वार्–जा गिरतीं; मा तुयर्–बहुत दुःख देनेवाली; कातल् तूण्ट–कामेच्छा की प्रेरणा से; वऴियिन् मेल्–राह पर; वैत्त कण्णार्—बिछाई आँखों के साथ; तूतियर् मुऱुवल् नोक्कि–दूतियों की मुस्कुराहट देखने से; उयिर् वन्तु–प्राण फिर से पाकर; तुटिक्किन्ऱारै–तड़पनेवालियों को। २०९

(और कुछ विरहिणियों का चित्रण है—) ये स्त्रियाँ अपने प्यारे वीर पतियों पर अगाध प्रेम रखती हैं। वे वीर हथियारधारी हैं। वे दूर गये हैं और ये विरहिणियाँ अपनी सुध-बुध खोकर निर्जीव-सी बन जाती हैं और शय्या पर जाकर गिर जाती हैं, जिस पर पराग फैलाया गया है। उनकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कामेच्छा तीव्र हो जाती है और उनकी आँखें पतियों के आने की राह पर लगी हुई हैं। तब दूतियाँ आती हैं और उनके मुखों में हँसी की झलक देखकर नायिकाएँ आश्वासन पाती हैं। उनके गये प्राण फिर आ जाते हैं और वे बेचैन होती हैं। हनुमान ने उनको देखा। २०९

शङ्गॊडु शिलम्बु नूलुम् बादशा लहमुन् दाळप्
पॊङ्गुपेर् मुरश मार्प्प विल्लुऱै तॆय्वम् बोऱ्ऱिक्
कॊङ्गलर् कून्दऱ् चॆव्वा यरम्बैयर् पाणि कॊट्टि
मङ्गल कीदम् पाड मलर्प्पलि वहुक्किन् ऱारै 210

चङ्कॊटु–शंख-कंगनों के साथ; नूलुम् चिलम्पुम्–मंगलसूत्र और नूपुर; पातचालकमुम्–'पादजालक' नामक पैंजनियाँ; ताळ–लटकीं; पॊङ्कु पेर् मुरचम्–ऊँचा शब्द करनेवाली भेरियाँ; आर्प्प–बजीं; कॊङ्कु अलर्–सुगन्धित फूलों के साथ शोभनेवाले; कून्तल्–केश; चॆव्वाय्–लाल अधर; अरम्पॆयर्–(इनसे युक्त) अप्सराएँ; पाणि कॊट्टि–तालियाँ पीटती हुई; मङ्कल कीतम् पाट–मंगल-गीत गा रही हैं; इल् उऱै तॆय्वम्–गृहस्थ देवताओं की; पोऱ्ऱि–पूजा करके; मलर् पलि–फूलों की बलि; वकुक्किन्ऱारै–जो चढ़ाते हैं उन लोगों को। २१०

अप्सराएँ तालियाँ पीटकर मंगल-गीत गा रही थीं। तब उनके शंख-कंगन, मंगलसूत्र, पैरों के नूपुर, पैंजनी आदि आभरण लटके। भेरियाँ ठनकती थीं। सुवासित पुष्पों से अलंकृत केश और लाल अधरों वाली अप्सराएँ गा रही थीं और राक्षसियाँ अपने घर के देवताओं को पुष्प-बलि (पुष्पाञ्जलि) चढ़ा रही थीं। हनुमान ने उनको देखा। २१०

इळैतॊडर् विल्लुम् वाळु मिरुळॊडु मलैय याणर्क्
कुळैतॊडर् नयनक् कूर्वेल् कुमरर्नॆञ् जुरुवक् कोट्टि
मुळैतॊडर् शङ्गु पेरि मुहिलॆन मुळङ्ग मूरि
मळैतॊडर् मञ्जै यॆन्न विळावॊडु वरुहिन् ऱारै 211

इळै तॊटर्–आभरणों से छूटनेवाले; विल्लुम् वाळुम्–धनु और तलवार के आकार के प्रकाश की रेखाएँ; इरुळॊटु मलैय–अन्धकार के साथ युद्ध करतीं; याणर् कुळै तॊटर्–सुन्दर कुण्डलों तक आयत; नयनम्–आँखें; कूर् वेल्–रूपी तीक्ष्ण भालों को; कुमरर्–वीर तरुणों के; नॆञ्चु उरुव–वक्षों को छेदते हुए; कोट्टि–वक्र गति से चलाकर; मुळै तॊटर् चङ्कु–अन्दर छेद के साथ रहनेवाले शंख; पेरि–भेरियाँ; मुकिलॆन मुळङ्क–मेघों के समान गरजती हैं; मूरि मळै तॊटर्–मेघ को देखकर नाचनेवाले; मञ्जै ऍन्न–मोरों के समान; विळावॊटु–मंगल उत्सव मनाते हुए; वरुकिन्ऱारै–आनेवाली नवोढ़ा स्त्रियों को। २११

हनुमान ने नवोढ़ा युवतियों को देखा। उनके अंगों में आभरण शोभ रहे थे, जिनसे प्रकाश छूटता था और वह प्रकाश तलवारों और धनुओं के रूप में था और अन्धकार से युद्ध कर रहा था। वे सुन्दर कर्ण-कुण्डलों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तक आयत आँखों रूपी तीक्ष्ण भालों को अपने तरुण प्रेमियों के दिलों को निफर जाय, ऐसा वक्र-रीति से फेंक रही थीं। भेरियाँ और शंख मेघों के गर्जन के समान नाद उठा रहे थे। इस साज के साथ वे मेघ देखकर नाचनेवाले मोरों के समान विवाहोत्सव में लगे आ रही थीं। २११

पळ्ळियिन् मैन्द रोडु मूडिय पण्बु नीङ्गि
उळ्ळिय कलविप् पूश लुडर्ऱुदर् कुरिय नॅञ्जर्
मॅळ्ळवे यिमैयै नीक्कि यञ्जन विऴुदु वेय्न्द
कळ्ळवा णयन मॅऩ्ऩुम् वाळुऱै कऴिक्किन् ऱारै 212

पळ्ळियिल्–शय्या में; मैन्तरोटु–अपने प्रेमियों के साथ; ऊटिय पण्पु–रूठने की बात; नीङ्कि–छोड़कर; उळ्ळिय–वांछित; कलविप् पूचल्–संगम-समर; उटऱ्ऱुतऱ्कु उरिय–करने में दत्त; नॅञ्चर्–चित्तवालियाँ; मॅळ्ळवे–धीरे-धीरे; इमैयै नीक्कि–पलकें खोलकर; अञ्चन इऴुतु वेय्न्त–अंजनरंजित; कळ्ळ वाळ् नयत्तम्–वंचक और उज्ज्वल आँखों; ऍऩ्ऩुम्–रूपी; वाळ्–तलवारों को; उऱै कऴिक्किऩ्ऱारै–म्यान से बाहर जो निकालती रहीं, उनको। २१२

शय्या में विनोदपूर्ण दृश्य उपस्थित हो रहे थे। प्रेमिका, जो पति से रूठ गयी थी, अब रूठन छोड़कर सम्भोग की इच्छा करती है। वह धीरे-धीरे मनोरम नयन रूपी तलवारों को अपनी (म्यान-) पलकों को खोलकर बाहर निकाल रही है! ऐसी प्रेमिकाओं को हनुमान ने देखा। २१२

ओविय मऩैय माद रूडिऩ रुणर्वो डुळ्ळम्
मेविय करण मऱ्ऱुङ् गॊऴुनरो डॊऴिय मीण्डु
तूवियम् वेडै यॆऩ्ऩ मिऩ्ऩिडै तुवळ वेहि
आवियुन् दामु मेपुक् करुङ्गद वडैक्किऩ् ऱारै 213

ओवियम् अऩैय मातर्–चित्र-सम स्त्रियाँ; ऊटिऩर्–रूठीं; उणर्वोटु–बोध के साथ; उळ्ळम् मेविय करणम् मऱ्ऱुम्–मन आदि अन्तःकरण और अन्य सब; कॊऴुनरोटु ऒऴिय–प्रेमियों के साथ चले गये; तूवि अम् पेटै–मृदु पर वाली हंसिनी; ऍऩ्ऩत–के समान; मिऩ् इटै–बिजली-सी कमर; तुवळ–बल खा गयी; मीण्टु–फिर; आवियुम् तामुमे–प्राण और स्वयं; पुक्कु एकि–प्रविष्ट हो, जाकर; अरुम् कतवु–कष्ट के साथ कपाट को; अटैक्किऩ्ऱारै–बन्द करनेवालियों को। २१३

चित्र-सम स्त्रियाँ अपने प्रेमियों के चले जाने से रुष्ट थीं। वे बाहर आकर खड़ी रहीं। उनके मन आदि अन्तःकरण प्रेमियों के साथ चले गये। अब वे ठहरना निरर्थक समझकर अन्दर आयीं। तब वे कोमल परों वाली हंसिनी के समान कमरों को लचकाती हुई केवल अपने प्राणों को अपने साथ ले बहुत कष्ट के साथ किवाड़ बन्द कर रही थीं। हनुमान ने ऐसी स्त्रियों को देखा। २१३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किन्नर मिदुनम् बाडक् किळर्मळै किळित्तुत् तोन्रुम्
मिन्नॅनत् तरळम् वेय्न्द वॅण्णिऱ विमान मूर्न्दु
पन्नह महळिर् शुऱ्ऱिप् पलाण्डिशै परवप् पण्णैप्
पॊन्नहर् वीदि तोऱुम् बुदुमनै पुहुहिन् ऱारै 214

पण्णै–स्त्रियों की भीड़ से भरी; पॊन्नकर्–स्वर्णनगरी की; वीति तोऱुम्–सड़क-सड़क में; किन्नर मितुनम् पाट–किन्नर-मिथुन गा रहे हैं; चुऱ्ऱि–घेरकर; पन्नक मकळिर्–पन्नगकन्याएँ; पलाण्टिचै परव–'अनेक बरस जिओ' (जयजीव) का मंगल-गान गाती हैं; किळर् मळै–शोभायमान मेघों को; किळित्तु तोन्रुम्–चीरकर प्रकट होनेवाली; मिन् ॲन–बिजली के समान; तरळम् वेय्न्त–मुक्ताओं से अलंकृत; वॅण्णिऱ विमानम् ऊर्न्तु–श्वेतवर्ण विमानों पर सवार होकर; पुतु मनै पुकुकिन्ऱारै–नये घरों में प्रवेश करनेवालों को। २१४

उस स्वर्ण नगरी की, जिसमें नारियाँ बहुत संख्या में पायी गयीं, वीथी-वीथी में किन्नर (जाति के पक्षी) -जोड़े गाते पाये गये। पन्नग-रमणियाँ घूम-घूमकर जयजीव के गान गा रही थीं। मेघ चीरकर प्रकट होनेवाली बिजली के समान मुक्ताओं से अलंकृत यानों पर बैठे हुए लोग अपने नये घरों में प्रवेश कर रहे थे। हनुमान ने उनको देखा। २१४

कोवैयुङ् गुळैयु मिन्नक् कॊण्डलिन् मुरश मार्प्पत्
तेवर्निन् ऱाशि कूऱ मुनिवर्शो बनङ्गळ् शॆप्पप्
पावैयर् कुळाङ्गळ् शूळप् पाट्टॊडु वान नाट्टुप्
पूवैयर् पलाण्डु कूऱप् पुदुमणम् बुणर्हिन् ऱारै 215

कॊण्टलिन्–मेघ के समान; मुरचम् आर्प्प–भेरियाँ बजती हैं; तेवर्–देव; निन्ऱु–खड़े होकर; आचि कूऱ–आशीर्वाद देते हैं; मुनिवर्–मुनिगण; चोपनङ्कळ्–चॆप्प–वेदमन्त्र द्वारा मंगल शब्द उच्चारण करते हैं; पावैयर् कुळाङ्कळ्–स्त्रियों के समूह; पाट्टॊटु–गाना गाते हुए; चूळ–घेरकर आते हैं; वान नाट्टुप् पूवैयर्–व्योमलोक की अंगनाएँ; पलाण्टु कूऱ–जयजीव का गान करती हैं; कोवैयुम् कुळैयुम्–हार और कुण्डल; मिन्न–चमकते हैं; पुतु मणम् पुणर्किन्ऱारै–इस साज के साथ अभिनव विवाहोत्सव में लगे हुओं को। २१५

जल-भरे मेघों के समान भेरियाँ नर्दन कर उठीं। देवगण स्थित होकर आशीर्वाद दे रहे थे। मुनिगण मंगल-वचन कह रहे थे। स्त्रियों के समूह गाते हुए घेरे आये। अप्सराएँ जयजीव के गान गा रही थीं। इस साज के साथ आभरणों और कुण्डलों को चमकने देते हुए नवविवाह में लगे रहे लोगों को भी देखा, हनुमान ने। २१५

इयक्किय ररक्कि मार्ह णाहिय रॆञ्जिल् विञ्जै
मुयऱ्कऱै यिलाद तिङ्गण् मुहत्तियर् मुदलि नोरै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मयक्कर नाडि यॆङ्गुम् मारुदि मलैयिऩ् वैहुम्
कयक्कमि ऱुयिऱ्चिक् कुम्ब कऩ्ऩनैक् कण्णिऱ् कण्डाऩ् 216

इयक्कियर्–यक्षस्त्रियाँ; अरक्किमार्कळ्–राक्षसनारियाँ; नाकियर्–नाग-कन्याएँ; ऍऩ्चिल् विञ्चै–निर्दोष विद्या के लोक की; मुयल् कऱै इलात–शशककलंक से हीन; तिङ्कळ् मुकत्तियर्–पूर्णचन्द्र के समान आननवालियाँ; मुतलित्तोरै–आदि स्त्रियों को; ऍङ्कुम् मयक्कु अऱ–विना कहीं भूल-चूक के; नाटि–खोजकर; मारुति–हनुमान ने; मलैयिऩ् वैकुम्–पर्वत के समान रहनेवाले; कयक्कम् इल्–अचल; तुयऱ्चि–निद्रा में मग्न; कुम्पकऩ्ऩनै–कुम्भकर्ण को; कण्णिल् कण्टाऩ्–अपनी आँखों से देखा। २१६

हनुमान ने इस रीति से सीताजी को यक्ष-स्त्रियों में खोजा। राक्षसियों, नागिनों, विद्याधर लोक की शशक-कलंक-हीन चन्द्रानना स्त्रियों और अन्य स्त्रीवृन्दों में खोजा। कोई सन्देह का स्थान न छोड़कर सर्वत्र और सावधानी के साथ उसने खोज लगायी। फिर उसकी आँखें कुम्भकर्ण पर लगीं, जो बड़े पर्वत के समान आकार के साथ अचल और गहरी निद्रा में चूर पड़ा था। २१६

ओशनै येऴहऩ् ऱुयर्न्द दुम्बरिऩ्, वाशवऩ् मणिमुडि कवित्त मण्डबम्
एशऱ विळङ्गुव दिरुळै यॆण्वहै, आशैयि ऩिलैहॆड वहऱ्ऱि याऩ्ऱदु 217

वाचवऩ् मणि मुटि–देवेन्द्र का रत्नकिरीट; उम्परिऩ् कवित्त–जिसके ऊपर औंधा रखा हुआ था; मण्टपम्–वह मण्डप; एऴु योचनै–सात योजन; अकऩ्ऱु उयर्न्ततु–चौड़ा और ऊँचा था; एचऱ–अक्षय; विळङ्कुवतु–शोभा से भरा था; इरुळै–अन्धकार को; निलै कॆट–स्थान न देकर; ऍण् वकै आचैयिऩ्–आठों दिशाओं में; अकऱ्ऱि–भगाकर; आऩ्ऱतु–उज्ज्वल बना रहता था। २१७

(कुम्भकर्ण का वर्णन—)कुम्भकर्ण जिस महल में सो रहा था, उसकी ऊँचाई और चौड़ाई सात योजन थी। उस मण्डप के ऊपर इन्द्र का मणि-मुकुट रखा हुआ था। वह निरन्तर शुद्ध प्रकाश फैला रहा था। अन्धकार को रहने का स्थान न देकर आठों दिशाओं में भगाते हुए उन्नत खड़ा था वह मकान। २१७

अऩ्ऩद नडुवणो रमळि मीमिशैप्, पऩ्ऩह वरशॆऩप् परवै ताऩॆऩत्
तुऩ्ऩिरु ळॊरुवऴित् तॊक्क दामॆऩ, उऩ्ऩरुन् दीविनै युरुक्कॊण् डॆऩ्ऩवे 218

अऩ्ऩतऩ् नटुवण्–उसके मध्य; ओर् अमळि मीमिचै–एक शय्या पर; पऩ्ऩक अरचु ऍऩ–नागराज के समान; परवै ताऩ् ऍऩ–समुद्र ही की भाँति; तुऩ् इरुळ्–घना अन्धकार; ऒरु वऴि–एक स्थान में; तॊक्कतु आम् ऍऩ–पुंजीभूत हो गया हो ऐसा; उऩ्ऩ अरुम् तीवितै–अचिन्त्य पाप; उरु कॊण्टॆऩ्ऩवे–साकार बन आये हों ऐसा। २१८

उस भवन के मध्य एक शय्या थी। उस पर वह पन्नग-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राजा के समान लेटा हुआ था। वह समुद्र के भी समान लगा। सारा अन्धकार एक स्थान पर एकत्र हो गया हो, ऐसा और सभी पापों ने आकार लिया हो, ऐसा भी (वह दिख रहा था)। २१८

मुन्निय कऩैहडऩ् मुऴुहि मूवहैत्, तऩ्ऩियल् कदियॊडुऩ् दऴुवित् तादुहु
मऩ्ऩॆडुङ् गऱ्पह वऩत्तु वैहिय, इऩ्ऩिळऩ् दॆऩ्ऱल्वऩ् दिऴुहि येहवे 219

तातु उकु–पराग चूनेवाले; मऩ् नॆटुम्–स्थायी तथा विशाल; कऱ्पक वऩत्तु–कल्पक तरुओं के वन में; वैकिय–जो रहा; इऩ् इळम् तॆऩ्ऱल्–वह मधुर मन्द मलयपवन; मुऩ्ऩिय–अपने सामने रहे; कऩै कटल् मुऴुकि–गर्जनशील सागर में डूबकर; तऩ् इयल्–अपने स्वभाव की; मूवकै कतियॊटुम् तऴुवि–त्रिविध (मन्द, साधारण, त्वरित) गति अपनाकर; वऩ्तु इऴुकि–आकर (उसके शरीर में) लगकर; एकवे–जाता रहा, तब। २१९

मन्द मलयपवन, जो पराग चूनेवाले अमर कल्पवन में संचार कर रहा था, समक्ष रहे शब्दायमान समुद्र में डूबकर अपनी त्रिविध (मन्द, साधारण और तीव्र) गतियों में आता था और उसके शरीर का स्पर्श करके जाता था। २१९

वाऩवर् महळिर्हाल् वरुड मामदि, आऩऩङ् गण्डमण् डबत्तु ळाय्हदिर्क्
काऩहु कान्दमीक् काऩ्ऱ कामर्नीर्त्, तूनिऱ नऱुन्दुळि मुहत्तिऱ् ऱोर्ऱवे 220

वाऩवर् मकळिर्–सुरनन्दिनियाँ; काल् वरुट–उसके पैर सहला रही थीं; आऩऩम् मामति–उनके आनन रूपी श्रेष्ठ चन्द्र को; कण्ट–जहाँ देख सके; मण्टपत्तुळ्–उस मण्डप के अन्दर; आय् कतिर्–श्रेष्ठ प्रकाश-किरणों को; काल्–प्रकट करनेवाले; नकु–शोभायमान; कान्तम्—चन्द्रकान्त पत्थर; मी काऩ्ऱ–ऊपर जो निकाला; कामर्–मधुर; तू निऱ–स्वच्छ रंग की; नऱुम्–सुबासित; नीर् तुळि–जल की बूँदें; मुकत्तिल् तोर्ऱवे–उसके मुख पर पड़कर झलक रही हैं, उस स्थिति में। २२०

देवललनाएँ उसके पैर सहला रही थीं। उनके आनन रूपी चन्द्र की सन्निधि के कारण, उस मण्डप के अन्दर श्रेष्ठ प्रभा फैलानेवाली चन्द्रकान्त मणियों से जल की बूँदें निस्रित हुईं। वे शुद्ध और सुगन्धित बूँदें कुम्भकर्ण के मुख पर छितरी दिखीं। २२०

मूशिय वुयिर्प्पॆऩु मुडुहु वादमुम्
आशैयिऩ् पुऱत्तिडै यळवि वऩ्मैयाल्
नाशियि ऩळवैयि ऩडत्तक् कण्डवऩ्
कूशिऩऩ् कॊदित्तऩऩ् विदिर्त्त कैयिऩाऩ् 221

मूचिय–गहरा; उयिर्प्पु ऎऩुम्–साँस रूपी; मुटुकु वातमुम्–तीव्र पवन भी; आचैयिऩ् पुऱत्तिटै–दिशाओं के पार; अळवि–फैलकर; वऩ्मैयाल्–जोर के कारण;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाचियिन् अळवैयिन्–नाक तक; नटत्तक् कण्टु–लौटाना देखकर; अवन्–वह (हनुमान); वितिर्त्त कैयितान्–हाथ उछालते हुए; कूचिनन्–हवा के लगने से डरकर; कोतित्तनन्–कुपित हुआ। २२१

उसका श्वास बहुत ही घना, झञ्झा के समान था और वह दिगन्त तक फैलता गया। फिर कुम्भकर्ण के अन्दर खींचने के बल से लौट आया। उसको उसकी नासिका से छूटने और लौट आने का प्रकार देखकर हनुमान हाथ हिलाते हुए प्रभावित हुआ। उसे भय लगा और उसने उस हवा के मार्ग से अपने को बचाये रखा। उसे अपार क्रोध आया। २२१

पूऴियिन् ऱोहैविशुम् बणवप् पोय्प्पुहुम्
केऴिल्वेङ् गोडियव नुयिर्प्पुक् केडिला
वाऴिय वुलहॆलान् दुडैक्कु मारुदम्
ऊऴियिन् वरवुपार्त् तुऴल्व दोत्तवे 222

पूऴियिन् तोकै–धूल का समूह; विचुम्पु अणव–आकाश छूते हुए; पोय् पुकुम्–जा लगता है; केऴ् इल्–अनुपम; वॆम् कोटियवन्–भयंकर क्रूर (कुम्भकर्ण) का; उयिर्प्पु–श्वास; केटिला–अक्षय रीति से; वाऴिय–रहनेवाले; उलकॆलाम्–सारे लोकों को; तुटैक्कुम् मारुतम्–मिटानेवाला चण्डमारुत है; ऊऴियिन् वरवु–प्रलय का आगमन; पार्त्तु–देखकर (प्रतीक्षा करते हुए); उऴल्वतु ओत्त–घूम रहा हो, ऐसा लगा। २२२

कुम्भकर्ण ने जो उच्छ्वास छोड़े उनके कारण धूलपटल उठी और आकाश तक छा गयी। उस अनुपम क्रूर राक्षस के भयंकर श्वास क्या थे साक्षात् लोकनाशक चण्डमारुत थे, जो युगान्त की प्रतीक्षा में घूमता रहा हो। २२२

पहैयॆन मदियिनैप् पहुत्तुप पाडुऱ
अहैयिल्पेऴ् वायमडुत् तरुन्दु वानॆनप्
पुहैयोडु मुऴङ्गुपे रुयिर्प्पुप् पोङ्गिय
नहैयिला मुऴुमुहत् तॆयिऱु नाऱवे 223

मतियितै–चन्द्र को; पकै ऎन पकुत्तु–शत्रु समझकर उसको दो भागों में चीरकर; अकै इल्–न बिगड़नेवाले; पेऴ् वाय्–अपने बड़े मुख के (दोनों ओर); पाटु उऱ–युक्त रीति से; मटुत्तु–घुसाकर; अरुन्तुवान् ऎन–खाता हो जैसे; पुकैयोटु मुऴङ्कु–धुएँ के साथ शब्द करनेवाला; पेर् उयिर्प्पु–बड़ा श्वास; पोङ्किय–जिसमें उभर आता था; नकैयिला–उस हास-हीन; मुऴुमुकत्तु–बड़े मुख में; ऎयिऱु तोन्ऱ–वक्र दांत प्रकट करते हुए। २२३

उसके मुख के दोनों ओर वक्रदन्त दिखायी दिये। वे पूर्णचन्द्र के दो खण्डों के समान लगे। ऐसा लगा कि कुम्भकर्ण ने चन्द्र को शत्रु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मानकर उसके दो टुकड़े किये और अपने मुख में दोनों कोरों में डालकर उसे खा रहा हो ! धुएँ के साथ (खुर्राटे के) शब्द निकालनेवाले उसके हास-हीन भयंकर बड़े मुख में उसके वक्रदाँत ऐसे लगे । २२३

तडैपुहु मन्दिरन् दहैन्द नाहम्बोल्
इडैपुह लरियदो रुऱक्क मॅय्दिऩान्
कडैयुह मुडिवॅनुङ् गाल मोर्न्दयल्
पुडैपॅय रानॅडुङ् गडलुम् बोलवे 224

तटै पुकु मन्तिरम्–वेग मिटानेवाले मन्त्र द्वारा; तकैन्त नाकम् पोल्–रोके गये नाग की तरह; कटै युक मुटिवॅतुम्–(चौथे) आख़िरी युग का अन्त; कालम्–काल; ओर्न्तु–देखकर (प्रतीक्षा करके); अयल् पुटै पॅयरा–बाजू में न हटनेवाले (और चुप पड़े रहनेवाले); नॅटुम् कटलुम्–विशाल सागर; पोल–के समान; इटै पुकल् अरियतु–मध्य पहुँचकर जिसका भंग न किया जा सका; ओर् उऱक्कम्–ऐसी एक निद्रा में; अॅय्तिऩान्–मग्न रहा । २२४

अवरोधनमन्त्र-बद्ध नाग के समान, और युगांत की प्रतीक्षा में, इधर-उधर न चलकर अवरुद्ध पड़े हुए विशाल सागर के समान कुम्भकर्ण अभग्न, गहरी निद्रा में मग्न पड़ा था । २२४

आव दाहिय तन्मैय वरक्कऩै यरक्कर्
कोवॅ ऩानिन्ऱ कुणमिलि यिवऩॅऩक् कॉण्डान्
काव ऩाट्टङ्गळ् पॉऱियुहक् कऩलॅऩक् कऩन्ऱान्
एव ऩोविव ऩिऱैवर् मूवर्हळॅ ऩुमीट्टान् 225

आवताकिय–ऐसी; तन्मैय–स्थिति में रहे; अरक्कऩै–राक्षस (कुम्भकर्ण) को; इवन् मूवर् इऱैवर्कळ्–यह तीन राक्षस-पतियों के; अॅतुम् ईट्टान्–समूह में एक है; एवऩो–कौन है; इवन्–यह; अरक्कर् को अॅऩा निन्ऱ–राक्षसों का राजा जो है वह; कुणमिलि–गुणहीन (रावण) ही; अॅऩक् कॉण्टान्–ऐसा मान लिया; कावल् नाट्टङ्कळ्–रक्षणसमर्थ आँखों में; पॉऱि उक–अंगारे उगलते हुए; कऩलॅऩ–आग के समान; कऩन्ऱान्–कुपित हुआ । २२५

हनुमान ने इस तरह सोते हुए कुम्भकर्ण को देखकर विचार किया कि यह तीन राक्षसों में एक होगा । वह उनमें कौन होगा ? फिर उसने सोचा कि यही वह राक्षसाधिपति, गुणहीन रावण होगा । यह विचार करते ही उसके मन में अत्यन्त क्रोध उमड़ उठा । उसकी आँखों से अंगारे छूटने लगे । वह ऐसा आग-बबूला हो गया मानो वही आग बना हो । २२५

कुऱुहि नोक्किमऱ् ऱवन्ऱलै यॉऱुबदुङ् गुन्ऱत्
तिऱुहु तिण्बुय मिऱुबदु मिवऱ्किलै यॅन्ऩा
मऱुहि येऱिय मुऩिवॅनुम् वडवॅवॅङ् गऩलै
अऱिवॅ ऩम्बॅऱुम् बरवैयम् बुऩलिऩा लवित्तान् 226

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मऱ्ऱु–फिर; कुऱुकि नोक्कि–पास जा, देखकर; अवऩ्–उसके; तलै ऒरु पतुम्–दस सिर; कुऩ्ऱतुतु इऱुकु–पर्वत सम सुदृढ़; तिण् पुयम्–कठोर भुजाएँ; इरुपतुम्–बीसों; इवऩ् कु इलै–इसके नहीं हैं; ऎऩ्ऩा–यह देखकर; मऱुकि–अस्त-व्यस्त होकर; एऱिय–जो चढ़ा; मुऩ्ऩिवु ऎऩ्ऩुम्–उस क्रोध रूपी; वटवै वॆम् कऩलै–भयंकर बड़वाग्नि को; अऱिवु ऎऩ्ऩुम्–विवेक रूपी; पॆरुम् अम् परवै–विशाल, सुन्दर सागर के; पुऩलिऩाल्–जल से; अवित्ताऩ्–बुझा दिया। २२६

हनुमान ने फिर भी उसके निकट जाकर निहारा। इसके रावणोचित दस सिर और पर्वत-सम कठोर बीस हाथ नहीं थे। तब वह भ्रमित हुआ और उसने क्रोध रूपी बड़वाग्नि को विवेक के विशाल समुद्र के जल से शान्त किया। २२६

अवित्तु निऩ्ऱॆव ऩाहिलु माहवॆऩ् ऱङ्गै
कवित्तु नीङ्गिडच् चिलपह लॆऩ्बदु करुदाच्
चॆविक्कुत् तेऩॆऩ विराहवन् पुहऴिऩैत् तिरुत्तुम्
कविक्कु नायह ऩऩैयव ऩुऱैयुळैक् कडन्दाऩ् 227

इराकवऩ् पुकऴिऩै–श्रीराम के यशोगान को; चॆविक्कु–कानों के लिए; तेऩॆऩ–मधु के रूप में; तिरुत्तुम्–जो बना रहा था; कविक्कु नायकऩ्–वह कपिश्रेष्ठ; अवित्तु निऩ्ऱु–कोप को शान्त करके; ऎवऩाकिलुम् आक–कोई भी हो; ऎऩ्ऱु–कहकर; चिल पकल्–कुछ दिन; नीङ्किट–जायँ; ऎऩ्पतु करुता–यह सोचकर; अङ्कै कवित्तु–हथेली को औंधा करके (मुद्रा दिखाकर); अऩैयवऩ्–उसके; उऱैयुळै–वासस्थान, भवन को; कटन्ताऩ्–पार कर गया। २२७

वानरनायक हनुमान, जो श्रीराम के यश को श्रवणामृतकारी बनाता था, अपने क्रोध को बुझाकर कुछ देर खड़ा रहा। फिर सोचा कि खैर! चाहे जो कोई भी हो! बेचारा कुछ दिन निश्चिन्त सोये! अपनी हथेली को तदनुकूल मुद्रा बनाकर अभयदान किया और तत्पश्चात वह कुम्भकर्ण के वासगृह को पार कर आगे गया। २२७

माड कूडङ्गण् माळिहै योळिहण् महळिर्
आड रङ्गुह ळम्बलन् देवरा लयङ्गळ्
पाडल् वेदिहै पट्टिमण् डबमुदऱ् पलवुम्
नाडि येहिऩ ऩिराहवऩ् पुहऴॆऩु नलत्ताऩ् 228

इराकवऩ् पुकऴ्–यह श्रीराम के यश का ही दूसरा रूप है; ऎऩुम्–ऐसा मान्य; नलत्ताऩ्–गुणों वाला; माटम् कूटङ्कळ्–अट्टालिकाओं, भवनों; माळिकै ओळिकळ्–भवनों की कतारों में; मकळिर्–स्त्रियों के; आटु अरङ्कुकळ्–खेल के मंचों; अम्पलम्–सभामण्डपों; तेवरालयङ्कळ्–देवालयों; पाटल् वेतिकै–गान के भवनों; पट्टि मण्टपम्–विद्या-विवादमण्डपों; मुतल् पलवुम्–आदि अनेक स्थानों में; नाटि–खोजता हुआ; एकिऩऩ्–गया। २२८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हनुमान श्रीराम का यश ही माना जाय ऐसा श्रेष्ठ और गुणपूर्ण था। वह सीताजी को खोजते हुए अनेक सौधों, भवनों की पंक्तियों, स्त्रियों के खेल के मञ्चों, विद्या-विवादमण्डपों, देवालयों, संगीतसभामण्डपों आदि सभी स्थानों में भ्रमण करता गया। २२८

मणिहॊळ् वायिलिऱ् चाळरत् तलङ्गळिन् मलरिल्
कणिहॊ णाळत्तिऱ् कालॆन्प् पुहैयॆन्क् कलक्कुम्
नुणुहुम् वीङ्गुमऱ् ऱिवनिलै यावरे नुवल्वार्
अणुविन् मेरुवि ऩाळिया ऩॆनच्चॆलु मऱिवोन् 229

आळियान् ऍन्न-चक्रधारी (विष्णु भगवान) के समान; अणुविन्-अणु के रूप में; मेरुविन्-मेरु के समान; चॆलुम्-जा सकनेवाला; अऱिवोन्-बुद्धिमान; मणि कॊळ् वायिलिल्-रत्नालंकृत द्वारों; चाळरत् तलङ्कळिल्-झरोखों में; मलरिल्-पुष्पों; कणि कॊळ्-सूक्ष्म; नाळत्तिल्-नालों में; काल् ऍन्न-हवा के समान; पुकै ऍन्न-धुएँ के समान; कलक्कुम्-जाता; नुणुकुम्-बहुत ही महीन रूप में पहुँचता; वीङ्कुम्-स्थूल हो जाता; इवन् निलै-इसकी स्थिति; यावरे-कौन ही; नुवल्वार्-बता सकता है। २२९

हनुमान बुद्धिमान और चतुर था। वह कभी धुएँ के समान जाता, कभी हवा के समान। मणिमण्डित कपाटों वाले द्वारों, झरोखों में ही क्या ? सूक्ष्म नालों में और फूलों पर भी खोज लगाता जा रहा था। अणु से भी छोटा और मेरु से भी बड़ा बनकर चक्रधारी विष्णुदेव के समान जाने का सामर्थ्य रखनेवाले उसके सम्बन्ध में कौन बता सकेगा ? । २२९

एन्द लिव्वहै यॆव्वळि मरुङ्गिनु मॆय्दिक्
कान्दण् मॆल्विरन् मडन्दैयर् यारैयुङ् गाण्बान्
वेन्दर् वेदियर् मेलुळोर् कीळुळोर् विरुम्बप्
पोन्द पुण्णियन् कण्णहन् कोयिलुट् पुक्कान् 230

एन्तल्-सम्मान्य; कान्तळ् मॆल् विरल्-'कान्दळ' (नामक पुष्प) के समान मृदु उँगलियों वाली; मटन्तैयर्-रमणियाँ; यारैयुम्-सभी को; काण्पान्-देखता; इव्वकै-इस रीति से; ऍ वळि मरुङ्कितुम्-सभी मार्गों व स्थलों में; ऍय्ति-जाकर; वेन्तर्-राजा; वेतियर्-ब्राह्मण; मेलुळोर्-उच्च; कीळुळोर्-और नीच; विरुम्प-सभी के प्रिय; पोन्त पुण्णियन्-जो प्रकट हुआ था, उस धर्मात्मा (विभीषण) के; कण् अकन् कोयिलुळ्-विशाल महल में; पुक्कान्-प्रविष्ट हुआ। २३०

सम्मान्य हनुमान 'कान्दळ' पुष्प के समान उँगली वाली रमणियों में भी सीताजी की खोज करता चला। इस तरह सभी भागों और स्थलों में घूमते हुए वह विभीषण के विशाल महल में आया। विभीषण राजा लोग, ब्राह्मण, देव, नाग सभी लोगों के प्यार और सम्मान का पात्र था। २३०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पळिक्कु वेदिहैप् पवळत्तिन् कूडत्तुप् पशुन्देन्
तुळिक्कुङ् गऱ्पहप् पन्दरिऱ् करुनिऱत् तोर्बाल्
वॆळुत्तु वैहुद लरिदॆन्न ववरुरु मेवि
ऒळित्तु वाऴ्हिन्ऱ दरुममन् नान्ऱनै युऱ्ऱान् 231

पळिङ्कु वेतिकै–स्फटिक के चबूतरे पर; पवळत्तिन् कूटत्तु–प्रवाल-मण्डप में; पचुन् तेन्–नव मधु; तुळिक्कुम्–बूंदों में गिरानेवाले; कऱ्पक पन्तरिल्–कल्पपुष्प-वितान के नीचे; करु निऱत्तोर् पाल्–काले रंग वाले राक्षसों के मध्य; वॆळुत्तु–श्वेत-रंग में; वैकुतल् अरितु–रहना कठिन है; ऎन्न–समझकर; अवर् उरु–उनका रंग; मेवि–लेकर; ऒळित्तु–छिपे; वाऴ्किन्ऱ–रहनेवाले; तरुमम् अन्नान् तनै–धर्म-सम उसके; उऱ्ऱान्–पास आया। २३१

विभीषण धर्मदेवता के समान लगा, जो काले रंग वाले राक्षसों के मध्य श्वेत रंग के साथ रहना ख़तरे की बात समझकर उनका-सा काला रंग अपनाये हुए रहा ! एक प्रवालमण्डप में मधुवर्षी कल्प सुमनों के वितान के नीचे स्फटिक के चबूतरे पर विभीषण सो रहा था। हनुमान ने उसको देखा। २३१

उऱ्ऱु निन्ऱव नुणर्वैत्तन् नुणर्विना लुणर्न्दान्
कुऱ्ऱ मिल्लदोर् कुणत्तिन नि़वनॆनक् कॊण्डान्
शॆऱ्ऱ नीङ्गिय मनत्तिन नॊरुदिशै शॆन्ऱान्
पॊऱ्ऱै माडङ्गळ् कोडियोर् नॊडियिडैप् पुक्कान् 232

उऱ्ऱु निन्ऱु–पास स्थित होकर; अवन् उणर्वै–उसके मनोभाव को; तन् उणर्वित्ताल्–अपनी मनोशक्ति द्वारा; उणर्न्तान्–समझ गया; इवन्–यह; कुऱ्ऱम् इल्लतु–अकलंक; ओर् कुणत्तितन्–गुण वाला सज्जन है; ऎन्न कॊण्टान्–यह जान लिया; चॆऱ्ऱम् नीङ्किय–क्रोधहीन; मनत्तितन्–मन वाला बनकर; ऒरु तिचै चॆन्ऱान्–एक ओर गया; ओर् नॊटि इटै–एक पल में; पॊऱ्ऱै माटङ्कळ् कोटि–पर्वत-सम सौधों की पंक्ति में; पुक्कान्–जाकर खोजने लगा। २३२

हनुमान ने विभीषण के निकट जाकर अपने मन की शक्ति से उसका सच्चा स्वभाव समझ लिया। यह अकलंक गुणश्रेष्ठ सज्जन है। यह जानकर हनुमान का क्रोध दूर हो गया। वहाँ से निकलकर वह एक ही पल के अन्दर अनेक पर्वतोपम प्रासादों में घुसकर सीताजी की खोज लगाता चला। २३२

मुन्द रम्बैयर् मुदलिनर् मुळुमदि मुहत्तुच्
चिन्दु रम्बयिल् वायच्चियर् पलरैयुन् दॆरिन्दु
मन्दि रम्बल कडन्दुदन् मनत्तिन्मुन् शॆल्वान्
इन्दि रन्शिऱै यिरुन्दवा यिलिन्कडै यॆदिर्न्दान् 233

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुन्तु–पहली श्रेणी के; मुळुमति मुकत्तु–पूर्णचन्द्र के समान आननों में; चिन्तुरम् पयिल्–लाल रंग के; वाय्च्चियर्–अधरों के साथ रहनेवाली; अरम्पैयर् मुतलित्तर् पलरैयुम्–रम्भा आदि अनेक स्त्रियों को; तॅरिन्तु–देखकर; पल मन्तिरम् कटन्तु–अनेक घरों को पार कर; तन् मनत्तिन् मुन् चॅल्वान्–अपने मन से भी आगे जाता हुआ; इन्तिरन् इरुन्त–(पहले) इन्द्र जहाँ कैद रहा; चिऱै वायिलिन् कटै–उस कारागृह के द्वार को; ऍतिर्न्तान्–सामने देखा। २३३

उनमें रम्भा आदि चन्द्रानना सिंदूराधरा देवांगनाओं को देखकर हनुमान आगे गया। अनेक प्रासादों को पार करके हनुमान अपने मन की गति से भी अधिक तीव्र गति से चलकर उस कारागृह के द्वार पर पहुँचा जिसमें देवेन्द्र कभी बन्दी रहा। २३३

एदि येन्दिय तडक्कैयर् पिऱैयॅयि ऱिलङ्ग
मूदु रैप्पॅरुङ् गदैहळुम् बिदिर्हळु मॉळिवार्
ओदि लायिर मायिर मुऱुवलि यरक्कर्
कादु वॅञ्जिऩक कळियिऩर् कावलैक् कडन्दान् 234

ओतिल्–कहें तो; एति एन्तिय–आयुधधारी; तटक्कैयर्–विशाल हाथों के; कातु वॅञ्चिऩ–घातक भयंकर क्रोध रूपी सुरापान से; कळियिऩर्–मत्त; पिऱै ऍयिऱ इलङ्क–अर्धचन्द्राकार (वक्र) दाँतों को प्रकट करते हुए; मूतुरै पॅरु कतैकळुम्–पुराने बड़े चरित्रों और; पितिर्कळुम्–पहेलियों को; मॉळिवार्–आपस में कहते हुए; आयिरम् आयिरम्–सहस्र-सहस्र; उऱु वलि अरक्कर्–अतिबली राक्षसों के बने; कावलै–पहरे को; कटन्तान्–पार करके अन्दर गया। २३४

वहाँ की स्थिति कहनी हो— तो आयुधधारी, शत्रुसंहारक और क्रोध रूपी आसवपान से मत्त सहस्र-सहस्र अति बली राक्षस आपस में पुराने चरित्र और पहेलियाँ कहते हुए पहरा दे रहे थे। हनुमान उस पहरे को पार कर आगे गया। २३४

मुक्क णोक्किऩन् मुऱैमह नऱुवहै मुहमुम्
तिक्कु नोक्किय पुयङ्गळुञ् जिलकरन् दऩैयान्
ऑक्क नोक्कियर् कुळात्तिडै युऱङ्गुहिन् ऱाऩैप्
पुक्कु नोक्किऩन् पुहैपुहा वायिऩुम् बुहुवान् 235

पुकै पुका–जहाँ धुआँ भी प्रवेश नहीं कर सकता; वायिऩुम्–वहाँ भी; पुकुवान्–जो घुस सकता था, वह हनुमान; पुक्कु–प्रविष्ट होकर; मुक्कण् नोक्किऩन्–त्रिनेत्र शिवजी के; मुऱै मकन्–औरस पुत्र; अरुवकै मुकमुम्–(कार्तिकेय) छः मुखों; तिक्कु नोक्किय पुयङ्कळुम्–दिशाओं की ओर बढ़े हुए करों में; चिल करन्ततैयान्–कुछ को छिपा लिया हो ऐसा; ऑक्क नोक्कियर्–एक समान उसकी ओर आँखें किये; कुळात्तिटै–सोनेवाली स्त्रियों के समूह के मध्य; उऱङ्कुकिन्ऱाऩै–जो सो रहा था उसको (इन्द्रजित् को); नोक्किऩन्–देखा (हनुमान ने)। २३५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धुएँ के लिए भी अगम्य स्थानों में घुसकर जा सकनेवाला हनुमान इन्द्रजित् के शय्यागृह में भी घुस गया। परमेश्वर के औरस पुत्र कार्तिकेय के समान इन्द्रजित् पड़ा हुआ सो रहा था, जिन्होंने अपने अन्य हाथों और दिशाव्यापी करों को छिपा लिया हो। उसके पास उसी की ओर आँखें लगाये रहनेवाली स्त्रियों का समूह लेटा था। २३५

वळैयुम् वाळॆयिऱ् ऱरक्कनो कणिच्चियान् महनो
अळैयिल् वाळरि यनैयवन् यावनो वऱियेन्
इळैय वीरनु मेन्दलु मिरुवरुम् बलनाळ्
उळैयुम् वॆञ्जम मिवनुड नुळदॆन वुणर्न्दान् 236

अळैयिल्–कन्दरा में; **वाळ् अरि**–भयंकर सिंह; **अनैयवन्**–सदृश यह; **वळैयुम्**–वक्र; **वाळ् ऍयिऱु**–उज्ज्वल दाँतों का; **अरक्कनो**–राक्षस है क्या; **कणिच्चियान् मकनो**–परशुधर (या जलते लोहे का आयुध रखनेवाले शिवजी) का पुत्र है: **यावनो**–और कौन है; **अऱियेन्**–नहीं जानता; **इळैय वीरनुम्**–छोटे वीर (लक्ष्मण); **एन्तलुम्**–और सम्मान्य बड़े वीर श्रीराम; **इरुवरुम्**–दोनों; **पलनाळ्**–अनेक दिन; **इवनुटन् उळैयुम्**–इसके साथ भिड़ेंगे; **वॆम् चमम्**–ऐसा भयंकर युद्ध; **उळतु**–होने को है; **ऍन उणर्न्तान्**–ऐसा अनुमान कर लिया, हनुमान ने। २३६

हनुमान ने उसको देखकर मन में सन्देह किया— क्या यह, जो कन्दरा में रहनेवाले क्रूर सिंह के समान सो रहा है, वक्रदन्त राक्षस है ? या शिवजी का सुपुत्र 'मुरुगन' (कार्तिकेय) ही है ? कौन है ? मैं नहीं जान पाता। जो हो, इसके साथ छोटे राजा लक्ष्मण और सम्मान्य श्रीराम को अनेक दिन लड़ना पड़ेगा। ऐसा घमासान युद्ध होने को है ! —हनुमान ने यह विश्वास कर लिया। २३६

इवनै यिन्ऱुणै युडैयपो रिरावण नॆन्नै
पुवन मून्ऱैयुम् वॆन्ऱदोर् पॊरुळॆनप् पुहऱल्
शिवनै नान्मुहत् तॊरुवनैत् तिरुनॆडु मालाम्
अवनै यल्लवर् निहर्प्पव रॆन्बदु मऱिवो 237

चिवनै–शिवजी को; **नान् मुकत्तु ऒरुवनै**–चतुर्मुख ब्रह्मा को; **तिरु नॆटु मालाम् अवनै**–श्री त्रिविक्रम विष्णु को; **अल्लवर्**–छोड़ अन्य कोई; **निकर्प्पवर्**–इसकी समानता करेंगे; **ऍन्पतुम्**–ऐसा कहना भी; **अऱिवो**–बुद्धिमत्ता होगा क्या; **इवनै**–इसको; **इन् तुणै**–विश्वस्त सहायक के रूप में; **उटैय**–जिसने प्राप्त किया है; **पोर् इरावणन्**–युद्धोत्साही रावण; **पुवनम् मून्ऱैयुम्**–तीनों लोकों का; **वॆन्ऱतु**–जयी हुआ; **ओर् पॊरुळ्**–(सो) कोई (बड़ी) बात हो; **ऍन पुकऱल्**–ऐसा कहना; **ऍन्नै**–क्या बात है। २३७

इसकी समानता शिव, चतुर्मुख और त्रिविक्रम इन त्रिदेवों से अन्य कोई भी कर सकेंगे —यह कहना बुद्धिसंगत होगा क्या ? (नहीं होगा)। इसको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रावण ने अपने सहायक के रूप में पाया है, तो युद्धप्रिय उसके तीनों लोकों के जीतने में कौन सी बड़ाई है ? । २३७

ऎन्ऱु कैम्मऱित् तिडैनिन्ऱु कालत्तै यिहप्प
दन्ऱु पोवदॆन् ऱायिर मायिरत् तडङ्गात्
तुन्ऱु माळिहै योळिह डुरिशऱत् तुरुविच्
चॆन्ऱु तेडिन निन्दिर शित्तिनैत् तीर्न्दान् 238

ऎन्ऱु–ऐसा कहकर; कै मऱित्तु–हाथ मटकाकर; इटै निन्ऱु–बीच में खड़ा रहकर; कालत्तै इकप्पतु–समय नष्ट करना; अन्ऱु–(उचित) नहीं; पोवतु–जाना; ऎन्ऱु–सोचकर; इन्तिर चित्तितै–इन्द्रजित् को; तीर्न्तान्–छोड़ गया; आयिरम् आयिरत्तु–सहस्र-सहस्र की गिनती में भी; अटङ्का–जो समा नहीं सके; तुन्ऱु–सटे रहे; माळिकै ओळिकळ्–सौधों की पंक्तियों में; तुरिचु अऱ–विना भूल-चूक के; तुरुवि चॆन्ऱु–टटोलते हुए जाकर; तेटिनन्–खोजा । २३८

यह कहते हुए उस भाव के समर्थन में उसने अपना हाथ झटकाया । फिर विचार किया कि स्थान-स्थान में खड़ा होकर समय नष्ट करना अच्छा नहीं है, पर जाना ही कर्तव्य है । उसने इन्द्रजित् को रहने देकर आगे सहस्र-सहस्र सौधों की पंक्तियों में घुस-घुसकर विना भूल या चूक के टटोलता हुआ जाता रहा । २३८

अक्कन् माळिहै कडन्दुपोय् मेलदि हायन्
तॊक्क कोयिलुन् दम्बिय रिल्लमुन् दुरुवित्
तक्क मन्दिरत् तलैवर्हण् मनैहळुन् दडविप्
पुक्कु नीङ्गिन निराहवन् शरमॆन्नप् पुहळोन् 239

पुकळोन्–यशस्वी; अक्कन् माळिकै–अक्षकुमार के महल को; कटन्तु–पार करके; मेल् पोय्–आगे जाकर; अतिकायन् तॊक्क–अतिकायनिवसित; कोयिलुम्–प्रासाद में भी; तम्पियर् इल्लमुम्–कनिष्ठ भ्राताओं के गृहों में भी; तुरुवि–खोजकर; तक्क–योग्य; मन्तिरत् तलैवर्कळ्–मन्त्रीश्रेष्ठों के; मनैकळुम्–गृहों में भी; इराकवन् चरमॆन–श्रीराघव के बाण की तरह; पुक्कु–प्रवेश करके; तटवि–खोजकर; नीङ्कितन्–आगे गया । २३९

यशस्वी हनुमान अक्षकुमार के महल को पार कर अतिकाय के प्रासाद में आया । उसको भी छोड़कर उनके कनिष्ठ भ्राताओं के भवनों में गया । वहाँ खोजने के बाद सुयोग्य मन्त्रीवर्यों के महलों में जाकर खोज लगायी । वह श्रीराघव के शर के समान चलता रहा । २३९

इन्न रामिरुम् बॆरुम्बडैत् तलैवर्ह ळिरुक्कैप्
पॊन्निन् माळिहै यायिर कोडियुम् बुक्कान्
कन्नि मामदिऱ् पुऱत्तवन् करन्दुऱै काण्बान्
शॊन्न मून्ऱिनु णडुवण दहळियैत् तॊडर्न्दान् 240

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इन्नत्तर् आम्–ऐसे ही; इरुम्पॆरुम्–बहुत बड़े; पटैत्तलैवर्कळ्–सेनापतियों के; इरुक्कै–वासस्थान; आयिर कोटि–सहस्र कोटि; पॊन्नित्तिन् माळिकैयुम्–स्वर्णप्रासादों में भी; पुक्कान्–प्रवेश करके; कन्नि मा मतिल् पुऱत्तु–नित्य और बड़े प्राचीरों के अन्दर; अवन्–रावण के; करन्तु उऱै–छिपकर रहने का स्थान; काण्पान्–देखने के लिए; चॊन्न मून्ऱिनुळ्–(पहले) कथित तीन रक्षक खाइयों में; नटुवणतु–बीच की; अकऴियै–खाई के पास; तॊटर्न्तान्–जा पहुँचा। २४०

इस तरह ऐसे बहुत बड़े-बड़े सेनापतियों के सहस्र-सहस्र स्वर्णनिर्मित सौधों में गया। वह रावण के स्थान को देखने को उत्सुक था, जहाँ रावण छिपा रहता था। पहले ही कहा गया है कि उस अचल और अविनश्वर प्राचीर के अन्दर तीन महल थे, जो तीन खाइयों के मध्य थे। अब वह उनके बीच में रहनेवाली खाई के पास गया। २४०

तन्निक्क डक्कळि ऱैनवॊरु तुणैयिलान् ऱाय
पन्निक्क डऱ्पॆरुङ् गडवुडन् परिबवन् दुडैप्पान्
इन्निक्क डप्पदन् ऱेळ्हडल् किडन्ददॆन् ऱिशैत्तान्
कन्निक्क डऱ्कदिर् तॊडर्न्दव न्हऴियैक् कण्डान् 241

कन्निक्कु–(सूर्य को फल समझकर उस) फल के लिए; अटल् कतिर्–गरम किरणमाली पर; तॊटर्न्तवन्–जो झपटा था; तन्नि–अप्रमेय; कटम् कळिरु ऍन्न–मत्त गज के समान; ऒरु तुणैयिलान्–अकेला; ताय–लाँघ गया, इसलिए; पन्निक् कटल् पॆरुम् कटवुळ्–शीतल सागर का अधिष्ठाता बड़ा देवता (वरुण); तन् परिपवम् तुटैप्पान्–(हनुमान के तरण से प्राप्त) अपने परिभव को पोंछने के लिए; इन्नि कटप्पतु अन्ऱु–अब नहीं लाँघ सकेगा; एळ् कटल् किटन्ततु–सात समुद्र मिलकर एक हो पड़ा है; ऍन्ऱु इचैत्तान्–ऐसा सोचा (हनुमान ने); अकऴियै कण्टान्–उस खाई को देखा। २४१

यह हनुमान वही है जिसने अपने बचपन में सूर्य को फल समझकर उस पर छलाँग मारी थी। वह अकेले मदमत्त गज के समान समुद्र लाँघ आया था। इस पर जल के अधिष्ठाता वरुणदेव ने अपना अपमान मान लिया और अब सातों समुद्र अलंघ्य बनकर हनुमान के सामने आकर पड़े रहे! ऐसी खाई को हनुमान ने सामने देखा। २४१

पाऴि नन्नॆडुङ् गिडङ्गॆन्न वुणर्वॆनेल् पल्पेर्
ऊऴि कालनिन् ऱुलहॆलाङ् गल्लिनु मुलवा
आऴि वॆञ्जिनत् तरक्कनै यञ्जियाळ् कडल्हळ्
एऴु मिन्नहर्च् चुलायकॊ लामॆन्न निन्नैन्दान् 242

पाऴि–बड़ी; नल् नॆटुम् किटङ्कु–अच्छी और लम्बी परिखा; ऍन्न–ऐसा; उणर्वॆनेल्–मानूँगा तो (नहीं); पल् पेर् निन्ऱु–अनेक लोग खड़े होकर; ऊऴि कालम्–युगों तक; उलकॆलाम् कल्लितुम्–सारे लोकों को खोद डालें; उलवा–तो भी ऐसा नहीं बन सकता; आऴ् कटल्कळ् एऴुम्–सातों गहरे समुद्र; आऴि वॆम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चित्तत्तु–आज्ञाचक्र चलानेवाले क्रूर क्रोधी; अरक्कनै अञ्चि–राक्षस से डरकर; इ नकर्–इस नगर को; चुलाय कोल् आम्–घेर आये हैं शायद क्या; ऍन्न नितैन्तान्–ऐसा सोचा (हनुमान ने)। २४२

हनुमान ने विस्मय के साथ विचारा। इसको लम्बी खाई समझना कोई मतलब नहीं रखता! अनेक लोग युग-युगान्तर में सारे लोकों को खोद डालें तब भी ऐसी खाई नहीं बन सकती। लगता है कि सातों समुद्र आज्ञाचक्रधारी, क्रूर और क्रोधी रावण से डरकर इस नगर को घेरे पड़े हैं! । २४२

आय दाहिय वहन्बुन लहळियै यडैन्दान्
ताय वेलैयि निरुमडि विशैकोण्डु ताविप्
पोय कालत्तुम् बोक्करि दामॅन्रु पुहन्रान्
नाय हन्पुहळ् नडायपे रुलहॅला नडन्दान् 243

नायकन् पुकळ् नटाय–नायक श्रीराम का यश जहाँ फैला था; पेरुलकॅलाम्–उस बड़े विश्व में सर्वत्र; नटन्तान्–जो घूम आया; आयतु आकिय–ऐसी; अकन् पुनल्–विशाल जलराशि को; अकळियै अटैन्तान्–खाई को पहुँचा; ताय वेलैयिन्–पहले तरित समुद्र से; इरु मटि विचै–दुगुनी तीव्र-गति; कोण्टु–अपनाकर; ताबि पोय कालत्तुम्–लाँघ चलूँ तो भी; पोक्कु अरितु आम्–तारना कठिन होगा; ऍन्रु पूकन्रान्–ऐसा (आप ही आप) बोला। २४३

हनुमान उन सभी लोकों में घूम आया था (या व्याप आया था), जहाँ हमारे नायक प्रभु श्रीराम का यश व्याप्त है। वह उस खाई के पास आया। आप ही आप कहने लगा कि जिस गति से मैंने समुद्र को लाँघा उसकी दुगुनी तीव्र गति से लाँघने पर भी यह खाई पार नहीं कर सकूँगा। २४३

मेक्कु नाल्वहै मेहमुङ् गीळ्विळत्, तूक्कि नालन्न तोयत्त दायत्तुयर्
आक्कि नान्बडै यन्न वहळियै, वाक्कि नालुरै वैक्कवु माहुमो 244

मेक्कु–ऊपर के; नाल् वकै मेकमुम्–नानाविध मेघ; कीळ् विळ–नीचे गिरे; तूक्किनाल् अन्न–उनको उठा रही हो ऐसी; तोयत्तताय्–जलमय; तुयर् आक्कितान्–लोकों को क्षुब्ध करनेवाली; पटै अन्न–(रावण की) सेना के समान रही; अकळियै–खाई को; वाक्किनाल्–शब्दों से; उरै वैक्कवुम् आकुमो–वर्णित किया जा सकता है क्या। २४४

उसमें इतना जल भरा था कि लगता था कि नानाविध मेघ नीचे गिर गये हों और उस खाई ने उन्हें अपने में धारण कर लिया हो। वह लोक-त्रासक रावण की सेना के समान विशाल थी। उस खाई की महिमा शब्दों द्वारा वर्ण्य हो सकेगी क्या? । २४४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आऩै मुम्मद मुम्बरि याऴियुम्, मान मङ्गैयर् कुङ्गुम वारियुम्
नाऩ मादर् नऱैहुऴ ऩावियुम्, तेऩु मारमुन् देय्वैयु नाऱुमे 245

आऩै मुम्मतमुम्–गजों के त्रिमद-नीर; परि आऴियुम्–अश्वों के मुख का झाग; मान–मान्य; मङ्कैयर् कुङ्कुम वारियुम्–स्त्रियों के कुंकुम-जल के प्रवाह; नाऩम् मातर्–स्नान करनेवाली स्त्रियों के; कुऴल् नऱै नावियुम्–केशों पर लगी खुशबूदार कस्तूरी; तेऩुम्–शहद; आरमुम्–और मालाएँ; तेय्वैयुम्–और अन्य लेप; नाऱुम्–(उसमें) गन्ध देते थे। २४५

उसमें गजों के (बीज, आँखों और गण्डस्थल के) तीनों मदनीर; अश्वों की लारें, मान्य महिलाओं के कुंकुम का जल, स्नान करनेवाली स्त्रियों के केश में मली कस्तूरी, शहद, मालाएँ; अन्य सुगन्धित लेप —सभी की गन्ध पायी गयी। २४५

उऩ्ऩ नारै महऩ्ऱिल् पुदावुऴिल्, अऩ्ऩम् कोऴिवण् डाऩङ्ग ळाऴिप्पुऴ्
किऩ्ऩ रङ्गुरण् डङ्गिलुक् कञ्जिरल्, चॆऩ्ऩङ् गाहङ् गुणालम् शिलम्बुमे 246

उऩ्ऩम्–(एक तरह का) हंस; नारै–सारस; मकऩ्ऱिल्–करांकुल पक्षी; पुता–'पुता' नामक (बड़ा) पक्षी; उऴिल्–'उऴ्ऴु' नामक पक्षी; अऩ्ऩम्–हंस; कोऴि–जलमुर्गा; वण्टाऩम्–और एक तरह के बड़े सारस; आऴिप् पुऴ्–चक्रवाक; किऩ्ऩरम्–किन्नर; कुरण्टम्–करंड; किलुक्कम्–किलुक नामक पक्षी; अम् चिरल् चॆऩ्ऩम्–चिरल और चेन्नम नाम के पक्षीगण; काकम्–कौए; कुणालम्–कुणाल नामक पक्षी; चिलम्पुमे–चहकते रहे। २४६

उसमें सभी जलपक्षी चहक रहे थे। 'उन्नम', नारै (सारस), करांकुल, पुदा (दूसरी तरह का सारस), 'उऴिल', हंस, 'जलकुक्कुट', 'वंडानम' (तीसरी तरह का बड़ा सारस), चक्रवाक, किन्नर, करण्ड, 'किलुक', चिरल, चेन्नम, कौए, कुणाल आदि पक्षी थे। २४६

नलत्त मादर् नऱैयहि लावियुम्, अलत्त हक्कुऴम् बुञ्जॆऱिन् दाडिऩ
इलक्क णक्करि योडिळ मॆऩ्ऩडैक्, कुलप्पि डिक्कुमॊ रूडल् कॊडुक्कुमाल् 247

नलत्त मातर्–मनोरम रमणियों के; नऱै अकिल्–सुबासित अगरु का; आवियुम्–धुआँ और; अलत्तक्क कुऴम्पुम्–लाक्षा का लेप; चॆऱिन्तु आटिऩ–खूब अपने शरीरों पर लग जाएँ, ऐसा जो स्नान कर आये; इलक्कणक् करियोटु–उन लक्षणयुक्त हाथियों से; इळ मॆऩ्ऩटै–अतिमन्द गति वाली; कुल पिटिक्कुम्–उत्तम जाति की करिणियों को; ओर् ऊटल् कॊटुक्कुम्–रूठन पैदा कर देते। २४७

उसमें सुलक्षण मत्तगज स्नान कर आए तो उनके शरीर पर से सौंदर्यगुणपूर्ण स्त्रियों के केश का अगरुधूम, लाक्षारस आदि की गन्ध लग गयी। वह छोटी आयु की मन्द गति वाली हथिनियों की, इन हाथियों से रूठन का कारण बन गयी और वे रूठ गयीं। २४७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नऱवु नाऱिय नाणऱुन् दामरै, तुऱैह डोऱु मुहिळ्त्तत़न तोन्ऱुमाल्
शिऱैयि नॅय्दिय शॅल्वि मुहत्तिऩो, डुऱवु तामुडै यारॊडुङ् गार्हळो 248

नऱवु नाऱिय–मधु-गन्ध भरे; नाळ् नऱुम् तामरै–नवविकसित सुगन्धित कमल; तुऱैकळ् तोऱुम्–सभी घाटों में; मुकिळ्त्तत़न–बन्द; तोन्ऱुम्–दिखते हैं; चिऱैयिऩ् ऍय्तिय–कारा में आयी; चॅल्वि–देवी के; मुकत्तिऩोटु उऱवु उटैयार्–मुख से रिश्ता माननेवाले; ताम् ऒटुङ्कार्कळो–स्वयं म्लान नहीं होंगे क्या। २४८

उस खाई के घाट में शहद की गन्ध से युक्त उसी दिन खिले कमल बन्द दिखे। कारण ? कारा में बन्दिनी रही देवी सीता के मुख के साथ नाता रखनेवाले कौन म्लान हुए विना रह सकेंगे ? । २४८

पळिङ्गु शॅऱ्ऱिक् कुयिऱ्ऱिय पायॊळि, विळिम्बुम् वॅळ्ळमु मॅय्दॅरि यादुमाल्
तॅळिन्त शिन्दैय रुञ्जिऱि यार्हळो, डळिन्द पोदऱि दऱ्कॅळि दावरो 249

पळिङ्कु चॅऱ्ऱि–स्फटिक पत्थर खूब सटा बिछाकर; कुयिऱ्ऱिय–सम बनाया गया; पाय् ऒळि–उज्ज्वल; विळिम्पुम्–किनारा और; वॅळ्ळमुम्–जल; मॅय् तॅरियातु–सत्य न जाना जाय ऐसा रहते हैं; माल् तॅळिन्त चिन्तैयरुम्–मोह-रहित शुद्धमन; चिऱियार्कळोटु–अशुद्धमन नीचों के साथ; अळिन्त पोतु–जब मिले रहते हैं; अऱितऱ्कु–पृथक्-पृथक् जानने के लिए; ऍळितु आवरो–सुलभ रहेंगे क्या। २४९

खाई के किनारे स्फटिक-पत्थरों से निर्मित थे। अतः जल में और उसमें भेद नहीं दिखायी दे रहा था। वह ऐसा है मानो मोहमुक्त परिशुद्ध मन वाले ज्ञानी कलंक-मन नीच लोगों से मिल गये हों ! तब उनमें भेद परखना सुलभ होगा क्या ? २४९

नील मेमुद नऩ्मणि नित्तिलम्, मेल कीळयल् माऱॊळि वीशलाल्
पालिऩ् वेलै मुदऱ्पल वेलैयुम्, काल्ह लन्दऩ वेयॅऩक् काट्टुमाल् 250

नीलमे मुतल्–नीलम आदि; नऩ्मणि–श्रेष्ठ रत्न; नित्तिलम्–मोती; मेल् कीळ्–ऊपर, नीचे; अयल्–पार्श्वों में; माऱु ऒळि–विभिन्न प्रकाश; वीचलाल्–बिखेरते हैं, इसलिए; पालिऩ् वेलै मुतल्–क्षीर-सागर आदि; पल वेलैयुम्–अनेक सागर; काल्–युगान्त के पवन के कारण; कलन्तऩवे–मिश्रित हो गये; ऍऩ–ऐसा; काट्टुम्–दरसाते हैं। २५०

उस खाई में नीलम आदि श्रेष्ठ रत्न बारी-बारी से विभिन्न तथा विविध छटाएँ बिखेर रहे थे। इसलिए वह, क्षीरसागर आदि अनेक समुद्र पवनचालित हो एक हो गये हों —ऐसी लगी। (समुद्र सात हैं —लवण, इक्षु, सुरा, घृत, दधि, क्षीर और जल के)। २५०

अऩ्ऩ वेलै यहळियै यार्हलि, ऍऩ्ऩ वेहडन् दिञ्जियुम् बिऱ्पडत्
तुऩ्ऩ रुङ्गडि मानहर् तुऩ्ऩिऩाऩ्, पिऩ्ऩ रॅय्दिय तऩ्मैयुम् बेशुवाम् 251

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनृत–ऐसी; वेलै अकऴियै–सागर-सम खाई को; आर् कलि ऍन्नृतवे–बड़े शब्दायमान सागर को जैसे; कटन्तु–लाँघकर; इऱ्चियुम् पिऱ्पट–प्राचीरों को भी पीछे छोड़ करके; तुन्नृतरुम्–अगम; कटि मा नकर्–सुरक्षित बड़े नगर में; तुन्नृतिनान्–पहुँचा; पिन्नृतर्–उसके बाद; ऍय्तिय तन्मैयुम्–जो हुआ वह समाचार; पेचुवाम्–कहेंगे। २५१

ऐसी परिखा को हनुमान ने शब्दायमान सागर को जैसे लाँघकर पार किया। फिर प्राचीरों को भी पार करके अगम उस सुरक्षित नगर में प्रविष्ट हुआ। फिर क्या हुआ ? —यह बताएँगे। २५१

करिय नाऴिहै पादियिल् कालनुम्, वॅरुवि योडु मरक्कर्दम् वॅम्बदि
ऑरुव नेयॉरु पन्निरण् डियोशनैत्, तॅरुवु मुम्मैनू ऱायिरन् देडिनान् 252

कालनुम्–यम भी; वॅरुवि ओटुम्–डर कर भाग जाए, ऐसा; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; वॅम् पति–उस भयंकर नगर में; करिय नाऴिकै–काली रात के समय; पातियिल्–के आधे में; ऑरु पन्निरण्टु योचनै–बारह योजन की; मुम्मै नूऱायिरम् तॅरुवुम्–तीन लाख की वीथियों में; ऑरुवनै–अकेले ही; तेटिनान्–(हनुमान ने) खोजा। २५२

वह राक्षसों का भयंकर नगर यम को मन में भय भरकर भगानेवाला था। उसमें काली अँधेरी रात के आधे समय के अन्दर वह अकेले बारह योजन लम्बी तीन लाख वीथियों में सीताजी की खोज कर चुका। २५२

वेरियु मडङ्गिन नॅडुङ्गऴि विऴैक्कुम्
पारियु मडङ्गिन वडङ्गियदु पाडल्
कारिय मडङ्गिनर्हळ् कम्मियर्हण् मुम्मैत्
तूरिय मडङ्गिन तॉडङ्गिय दुऱक्कम् 253

वेरियुम् अटङ्कित–मद्यपों का शब्द थम गया; नॅटुम् कऴि विऴैक्कुम्–अधिक आनन्ददायी; पारियुम्–वाद्य भी; अटङ्कित–थम गये; पाटल् अटङ्कियतु–गाने बन्द हुए; कम्मियर्कळ्–कारीगरों ने; कारियम् अटङ्कितर्कळ्–अपने काम बन्द किये; मुम्मै तूरियम्–तीन तरह की भेरियाँ; अटङ्कित–रुक गयीं; उऱक्कम्–नींद; तॉटङ्कियतु–आरम्भ हो गयी। २५३

उस अर्धनिशा में सुरापायी लोगों का शोर बन्द हो गया। अधिक आनन्ददायी वाद्यों का बजना बन्द हो गया। गाने, कारीगरों के कार्य और तीनों तरह की भेरी-ध्वनियाँ —सभी बन्द हो गये। सबको निद्रा ने घेर लिया। २५३

इऱङ्गिन निऱङ्गॉळ्परि येममुऱ वॅङ्गुम्
कऱङ्गिन मऱङ्गॉळॅयिल् कावलर् तुडिक्कण्
पिऱङ्गिन नऱुङ्गुऴल रन्नबर्पिरि यादोर्
उऱङ्गिनर् पिणङ्गियॅदि रूडिनर्ह ळल्लार् 254

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निऱम् कॊळ् परि–विविध रंगों के अश्व; इऱङ्कित–सिर लटकाकर सोये; मऱम् कॊळ्–वीरता युक्त; अॅयिल् कावलर्–प्राचीरों के रक्षकों के; तुटि कण्–डमरुओं की आँखों ने; एमम् उऱ–सुरक्षा प्रदान करते हुए; अॅङ्कुम् कऱङ्कित–सर्वत्र शब्द किये; अॅतिर् पिणङ्कि–सामने से झगड़ा करके; ऊटित्तर्कळ् अल्लार्–जो नहीं रूठीं वे; अन्पर् पिरियातोर्–प्रेमियों से जो अलग नहीं रहीं वे; पिऱङ्कित्त नरुङ्कुळलर्–घने और सुवासित केश वालियाँ; उऱङ्कित्तर्–सोयीं। २५४

विविध रंगों के अश्व सिर लटकाकर सो गये। प्राचीरों के रक्षक, वीरता-भरे पहरेदारों के डमरू का नाद सबको रक्षा का आश्वासन दिलाते हुए सर्वत्र फैला। जो अपने पतियों से नहीं रूठी थीं और जो अपने प्रेमियों से अलग नहीं हुई थीं वे शोभायमान सुगन्धित केशिनियाँ सोयीं। २५४

वडन्दरु तडङ्गॊळ्पुय मैन्दर्कल विप्पोर्
कडन्दऩ रिडैन्दऩर् कळित्तमयिल् पोलुम्
मडन्दैयर् तडन्दऩ मुहट्टिडै मयङ्गिक्
किडन्दऩर् नडन्ददु पुणर्च्चितरु केदम् 255

वटम् तरु–(हार की) लड़ियों से भूषित; तटम् कॊळ–विशाल; पुय मैन्तर्–भुजाओं वाले तरुण; कलविप् पोर् कटन्तऩर्–सम्भोग-समर पूरा करके; इटैन्तऩर्–थकित हुए; कळित्त मयिल् पोलुम्–मत्त मयूरों के समान; मटन्तैयर्–जो मनोहर थीं, उन अपनी प्रियतमा स्त्रियों के; तटम् तऩ मुकट्टिटै–विशाल स्तनों की चोटी पर; मयङ्कि किटन्तऩर्–मोहित पड़े रहे; पुणर्च्चि तरु–संसर्गजनित; केतम्–थकावट; नटन्ततु–क्रियमाण रही। २५५

हारालंकृत विशाल भुजा वाले कुलीन राक्षस तरुण संभोग-समर पूरा कर थक चुके। वे मत्त मयूरों की-सी आभा वाली अपनी प्रेमिकाओं के विशाल स्तनशिखरों पर सिर रखे सोये। संसर्ग-आयास अपना राज्य चला रहा था। २५५

वामनऱै यिऩ्ऱुऱै नुहर्न्दवर् मऱन्दार्
कामनऱै यिऩ्ऱिऱम् नुहर्न्दवर् कळित्तार्
पूमनऱै वण्डुऱै यिलङ्गमळि पुक्कार्
तूमनऱै यिऩ्ऱुऱै ययिऩ्ऱिलर् तुयिऩ्ऱार् 256

वाम तुऱैयिऩ्–वाममार्ग की; नऱै नुकर्न्तवर्–सुरा जिन्होंने पी थी वे; मऱन्तार्–विस्मृति की दशा में थे; काम नऱैयिऩ् तिऱम्–काम-भोग की सुरा का पान; नुकर्न्तवर्–जिन्होंने किया था वे; कळित्तार्–मत्त होकर; पूम नऱै–अति सुगन्धित; वण् तुऱै–समृद्ध शय्यागृह में; इलङ्कु अमळि–मनोरम रहनेवाली शय्या में; पुक्कार्–लेटकर; तूम नऱैयिऩ् तुऱै–धुएँ के बास के सुख को; अयिऩ्ऱिलर्–न भोगते हुए; तुयिऩ्ऱार्–सोये। २५६

वाममार्गावलम्बी लोग उसके अंग के रूप में सुरापान करके अपने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को भूले सोते रहे। कामोत्तेजक के रूप में मद्य जो पी चुके वे अधिक सुवासपूर्ण शय्यागृह में सुन्दर लगनेवाली शय्या में लेटे, अगरुधूम आदि का भी सुख न भोगते हुए निद्रा में चूर हो गये। २५६

पण्णिमै यडैत्तपल कट्पॊरुनर् पाडल्
विण्णिमै यडैत्तत़ विळैन्ददिरुळ् वीणैत्
तण्णिमै यडैत्तत़ तऴङ्गिशै वऴङ्गुम्
कण्णिमै यडैत्तत़ वडैत्तत़ कबाडम् 257

पल कट् पॊरुनर्–अनेक सुरापायी नर्तकों के; पाटल् पण्–गाने के स्वर; इमै अटैत्त–(पलक बद्ध) बन्द हुए; विण् इमै अटैत्तत़–आकाश ने पलकें गिरा दीं; इरुळ् विळैन्ततु–अँधेरा बढ़ा; तऴङ्कु इचै–स्वरित संगीत; वऴङ्कुम्–निकालनेवाली; वीणै–वीणा के; तण् इमै–श्रुति मधुर स्वरस्थान; अटैत्तत़–बन्द हुए; कण्–लोगों की आँखों को; इमै अटैत्तत़–पलकों ने बन्द कर दिया; कपाटम् अटैत्तत़–किवाड़ भी बन्द हुए। २५७

अनेक मद्यप नर्तकों के गाने के स्वर थम गये। आकाश ने भी पलकें गिरा लीं (मन्द हो गया)। अन्धकार घना फैल आया। स्वरमय वीणा के श्रुतिमधुर स्वरस्थल बन्द हुए। लोगों की आँखें भी पलकों के अन्दर बन्द हो गयीं। घरों के कपाट भी बन्द हो गये। २५७

विरिन्दत़ नरन्दमुदल् मॆन्मलर् हळाहत्
तुरिञ्जिवरु तॆन्ऱलुणर् वुण्डय लुलावच्
चॊरिन्दत़ करुङ्गण्वरु तुळ्ळिदरु वॆळ्ळम्
ऎरिन्दत़ पिरिन्दवर्द मॆञ्जुतऩि नॆञ्जम् 258

नरन्तम् मुतल्–'नरंद' आदि के; मॆन् मलर्कळ्–कोमल पुष्प; विरिन्तत़–विकसित हुए; पिरिन्तवर् तम्–वियोगिनियों के; आकत्तु–शरीरों में; उरिञ्चि–लगकर; वरु–आनेवाला; तॆन्ऱल्–दक्षिणी (मलय) पवन; उणर्वु उण्टु–उनकी सुध को हरकर; अयल् उलाव–बाहर चला तो; करुङ्कण्–उनके काले नेत्रों से; वरु–आनेवाली; तुळ्ळि तरु वॆळ्ळम्–(आँसू की) बूँदों का प्रवाह; चॊरिन्तत़–बह निकला; ऎञ्चु तऩि नॆञ्चम्–बचे रहे मन; ऎरिन्तत़–विरह-ताप से जल रहे थे। २५८

'नरन्द' आदि कोमल (रात के फूलनेवाले) पुष्प फूले। मलयपवन वियोगिनियों के शरीर से लगकर उनकी सुध हर लेकर बहा। तब उनकी आँखों से निकली अश्रुबिंदुएँ धारा बनकर बहीं। उनके मन जो बचे थे विरहाग्नि में जल रहे थे। २५८

इळक्कमिऴु दॆञ्जविऴु मॆण्णरु विळक्कॆत्
तुळक्कियदु तॆन्ऱल्पहै शोरवुयर् वोरिऩ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अळक्करॊ डळक्करिय वाशैयुऱ वीया
विळक्कॆऩ विळङ्गुमणि मॆय्युऱु विळक्कम् 259

पकै चोर–शत्रुओं के शिथिल पड़ते समय; उयर्वोरिऩ्–ऊँचा उठनेवालों के समान; इळक्कम् इऴुतु–स्निग्ध तेल के; ऎञ्च–बाकी न रहने पर; विऴुम्–बुझनेवाले; ऎण् अरुम् विळक्कै–असंख्यक दीपों को; तॆऩ्ऱल्–मलयपवन ने; तुळक्कियतु–पूर्णरूप से शान्त कर दिया; अळक्करॊटु–समुद्र-सदृश; अळक्करिय–अपार; आचै उऱ–प्रेम बढ़ाते हुए; मणि मॆय् उऱु विळक्कम्–सुन्दर (स्त्रियों के) शरीरों की कान्ति; वीया विळक्कु ऎऩ–अमर दीप के समान; विळङ्कुम्–छिटकी। २५९

घृत पूरा हो गया और असंख्य दीप बुझ गये। तब मलयपवन ने उनको बुझा दिया। यह ऐसा था मानो शत्रु के शिथिल पड़ते समय कोई अपना सिर उठाए आरूढ़ हो रहा हो! तब भी सागर की समानता पार कर जो प्रेम बढ़ गया था उसको उत्तेजना देते हुए सुन्दरी प्रेमिकाओं के मनोरम शरीरों की कांति अक्षय दीप के समान उज्ज्वल बनी रही। २५९

नित्तनिय मत्तॊऴिल रायनिऱैयु ञाऩत्
तुत्तमरु ऱङ्गिऩर्हळ् योहियर् तुयिऩ्ऱार्
मत्तमद वॆङ्गळि ऱुऱङ्गिऩ मयङ्गिप्
पित्तरु मुऱङ्गिऩ रिऩिप्पिऱरि दॆऩ्ऩाम् 260

नित्त नियमत् तॊऴिलराय्–नित्य नियमित कर्म पूरा करते हुए; निऱैयुम्–पूर्ण बने; ञाऩत्तु उत्तमर्–ज्ञान श्रेष्ठ; उऱङ्कित्तर्कळ्–सोये; योकियऱ तुयिऩ्ऱार्–योगी भी सुप्त रहे; मत्त मत वॆम् कळिऱु–मद मत्त भयंकर गज; मयङ्कि उऱङ्कित–मुग्ध हो सोये; पित्तरुम् उऱङ्कित्तर्–पागल लोग भी सोये; इति–इस स्थिति में; पिऱर् इतु–अन्यों की यह (निद्रित दशा); ऎऩ् आम्–क्या होगी। २६०

ज्ञान में बढ़े हुए वे नित्य-नियम करनेवाले कर्मयोगी भी सो गये। योगियों को भी निद्रा ने अपनी चपेट में ले लिया। मदमत्त मातंग भी निद्रित हो गये। दीवाने भी सो गये। फिर दूसरों की निद्रा की स्थिति का क्या कहना है? । २६०

आयपॊऴु दम्मदि लहत्तरशर् वैहुम्
तूयतॆरु वॊऩ्ऱॊडॊरु कोडितुरु विप्पोयत्
तीयव ऩिरुक्कैययल् शॆय्दवह ळिञ्जि
मेयदु कडन्दऩऩ् विऩैप्पहैयै वॆऩ्ऱाऩ् 261

आय पॊऴुतु–ऐसे उस समय; विऩैप् पकैयै वॆऩ्ऱाऩ्–कर्म रूपी शत्रु का विजेता; अम् मतिल् अकत्तु–(मध्य स्थित उस नगर के) प्राचीर के अन्दर; अरचर् वैकुम्–राजा लोग जहाँ रहते थे; तूय–उन साफ़; ऒऩ्ऱॊटु ऒरु कोटि तॆरु–दो करोड़ वीथियाँ; तुरुवि पोय्–खोज लगाते पार कर; तीयवऩ्–खल (रावण) के; इरुक्कै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अयल् चॅय्त–वासस्थान के निकट बनी; मेयतु अकऴ् इञ्चि–युक्त खाई और प्राचीर को; कटन्ततन्–पार कर गया। २६१

जब इस भाँति सारा नगर निद्रा के वश में रहता था, तब कर्म-शत्रु-विजेता हनुमान उस प्राचीर-वलय के मध्य में स्थित नगर की राजवीथियों में गया, जहाँ राजा लोगों का निवास था। वैसी दो करोड़ वीथियों में खोज लेने के बाद वह क्रूर रावण के महल की खाई और प्राचीर को पार कर अन्दर गया। २६१

पोरि यऱ्कै यिरावणन् पॊन्मनै, शीरि यऱ्कै निरम्बिय तिङ्गळाय्त्
तार हैक्कुऴु विऱ्ऱऴैत् तोङ्गिय, नारि यऱ्क्कुऱै वामिड नण्णिनान् 262

पोर् इयऱ्कै–युद्ध करना जिसका स्वभाव था; इरावणन् पॊन् मनै–उस रावण का प्रासाद; चीर् इयऱ्कै निरम्पिय–श्रेष्ठताओं (कलाओं) से युक्त; तिङ्कळाय्–चन्द्र बना; तारकै कुऴुविल्–ताराओं के समूह के समान; तऴैत्तु ओङ्किय–प्रकाशमय और उन्नत रहे; नारियर्क्कु उऱैवु आम् इटम्–उसकी स्त्रियों के वासस्थानों; नण्णिनान्–के पास पहुँचा। २६२

रावण स्वभाव से युद्धप्रिय था। उसका स्वर्णमहल सभी कला-कृतियों व वैभवों से पूर्ण था। उसके चारों ओर उसकी प्रिय नारियों के निवासस्थान थे। रावण का महल कलापूर्ण चन्द्र के समान लगा और नारियों के भवन उज्ज्वल तारा-समूह के समान लगे। २६२

मुयऱ्क रुङ्गऱै नीङ्गिय मॊय्म्मदि, अयिर्क्कुम् वाण्मुहत् तारमु दन्नवर्
इयक्कर् मङ्गैयर् यावरु मिन्बुऱ, नयक्कुम् माळिहै वीदियै नण्णिनान् 263

मुयल्–शशक के; करुम् कऱै नीङ्किय–कलंक से रहित; मॊय् मति–प्रकाशमय पूर्णचन्द्र; अयिर्क्कुम्–जिसको देखकर मोहित हो जाए; वाळ् मुकत्तु–ऐसे सुन्दर मुख को; आर् अमुतु अन्नवर्–पूर्ण अमृत के समान; इयक्कर् मङ्कैयर् यावरुम्–यक्षकन्याएँ सब; इन्पुऱ नयक्कुम्–जिनको बहुत पसन्द करती थीं; माळिकै वीतियै–उन सौधों की वीथी को; नण्णिनान्–पहुँचा। २६३

पहले वह यक्ष-रमणियों के प्रासादों की वीथी में गया। वे यक्षिणियाँ अति सुन्दर थीं। शशकलंकहीन चन्द्र भी उनके मुख को देखकर स्तब्ध रह जाता! कांतिमय आनन वाली वे समृद्ध अमृत-समान थीं। २६३

तऴैन्द पेरॊळि मॊय्मणित् ताडॊऱुम्, इऴैन्द नूलिनु मिन्निळङ् गालिनुम्
नुऴैन्दु नॊय्दिनिन् मैयऱ नोक्किनान्, विऴैन्द तीविनै वेरऱ वीशिनान् 264

विऴैन्त तीविनै–राग के कारण उत्पन्न पाप को; वेर् अऱ वीचिनान्–जिसने निर्मूल कर दिया था (उसने); पेर् ऒळि तऴैन्त–बहुत प्रकाशमय; मॊय् मणि ताळ् तॊऱुम्–घने रूप से रत्नों को जड़कर निर्मित ताले-ताले में; इऴैन्त नूलिनुम्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पतले कते सूत्र से भी; इन् इळम् कालितुम्–मन्द मधुर पवन से भी; नॉय्तितिन्–महीन रूप से; नुळैन्तु–घुसकर; मै अऱ–विना चूक के; नोक्कितान्–देखा। २६४

हनुमान रागविमुक्त था और उसने राग से उत्पन्न होनेवाले सभी पापों को दूर कर दिया था। ऐसा वह सूत्र और पवन से भी महीन रूप में रत्नजटित तालों के द्वार में घुसकर अन्दर गया और विना नागा के सब जगह खोजने लगा। २६४

अत्ति रम्बुनै यानै यरक्कन्मेल्, वैत्त शिन्दैयर् वाङ्गु मुयिर्प्पितर्
पत्ति रम्बुरै नाट्टम् बदैप्पऱच्, चित्ति रङ्ग ळैनविरुन् दार्शिलर् 265

चिलर्–(उन यक्षनन्दिनियों में) कुछ; अत्तिरम् पुनै–कामास्त्र लगे; यानै अरक्कन् मेल्–गज-सम राक्षस पर; वैत्त चिन्तैयर्–मन ललचाकर; वाङ्कुम् उयिर्प्पितर्–निःश्वास छोड़ती हुई; पत्तिरम् पुरै नाट्टम्–अस्त्र-सम आँखें; पतैप्पऱ–निश्चेष्ट रखते हुए; चित्तिरङ्कळ् ऐन–चित्रवत; इरुन्तार्–रहीं। २६५

(वे कैसी स्थिति में थीं? —इसका वर्णन देखिए।) उनमें कुछ अपना मन मदनास्त्राहत गज के समान रहनेवाले रावण पर लगाए दीर्घ निःश्वास छोड़ रही थीं। उनकी आँखें टकटकी लगाये निस्पंद थीं। वे चित्रवत रहीं। २६५

अळ्ळल् वॅऱ्जिलै मारनै यऱ्जियो, मॅळ्ळ वित्गन विन्बयन् वेण्डियो
कळ्ळ मॅन्गॊ लऱिन्दिलङ् गण्मुहिळ्त्, तुळ्ळ मिन्ऱि युऱङ्गुहिन् ऱार्शिलर् 266

चिलर्–और कुछ; कण् मुकिळ्त्तु–आँखें बन्द करके; उळ्ळमिन्ऱि–विना इच्छा के; उऱङ्कुकिन्ऱार्–सोने का बहाना करती हैं; अळ्ळल्–पंकीले खेत में उत्पन्न होनेवाली ईख का; वॅम् चिलै–भयानक धनु; मारनै अऱ्चियो–रखनेवाले कामदेव से डरकर क्या; मॅळ्ळ–चुपके-चुपके; इन् कनविन्–(रावण सम्बन्धी) मधुर स्वप्न; पयन् वेण्टियो–का सुख चाहकर; कळ्ळम्–वंचना; ऐन् कॊल्–क्या है; अऱिन्तिलम्–नहीं जानते। २६६

और कुछ थीं, जो आँखें बन्द किये पड़ी थीं; पर सो नहीं रही थीं। सोने का बहाना कर रही थीं। वे क्यों ऐसा कर रही थीं? पंकजनित इक्षुधनुधर काम से डरकर? या कोई मधुर स्वप्न देख रही थीं जिसका सुख छोड़ना नहीं चाह रही थीं? हम उनकी वञ्चना क्या जानें? । २६६

पळुदिन् मन्मद नेय्हणै पन्मुऱै, उळुद कॊङ्गैय रूश लुयिर्प्पितर्
अळुदु शॅय्वदॆ नाणै यरक्कनै, ऐळुद लाङ्गॊलॆन् ऱॆण्णुहिन् ऱार्शिलर् 267

चिलर्–और कुछ; मन्मतन् ऐय्–मन्मथप्रेषित; पळुतिल् कणै–अचूक शर; पल् मुऱै उळुत–जिनको अनेक बार जोत (विद्ध कर) चुके; कॊङ्कैयर्–उन स्तनों के साथ; ऊचल्–झूले की तरह आने-जानेवाले; उयिर्प्पितर्–श्वास छोड़ती हुई;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अळुतु चॅय्वतु ऍन्त–रोकर करें क्या; आणै अरक्कतै–आज्ञाकारी रावण का चित्र; ऍळुतलाम् कोल्–लिखें क्या; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍण्णुकिन्ऱार्–सोच रही हैं। २६७

और कुछ स्त्रियों की हालत देखिए। उनके स्तन बार-बार मन्मथ-शर द्वारा विद्ध हो चुके। उनके प्राण झूले के समान झूल रहे थे। वे सोच रही थीं कि अब रोने से क्या होनेवाला है ? आज्ञापति रावण का चित्र बना लें। २६७

आव दॊन्ऱरु ळायॅन दावियैक्, कूवु हिन्ऱिलै कूऱलै शॅन्ऱॅनाप्
पावै पेशुव पोर्कण् पनिप्पुऱप्, पूवै योडुम् बुलम्बुहिन् ऱार्शिलर् 268

चिलर्–और कुछ; कण् पनिप्पु उऱ–आँखों से आँसू बहाते हुए; पूवैयोटुम्–सारिका के साथ; पावै पेचुव पोल्–चित्र भाषण करते हों जैसे; आवतु–होनेवाला कार्य; ऑन्ऱु अरुळाय्–एक करने की दया नहीं करते; ऍन्नतु आवियै–मेरे प्राण (-सम रावण) को; कूवुकिन्ऱिलै–नहीं पुकारते; चॅन्ऱु कूऱलै–जाकर नहीं कहते; ऍन्ना–ऐसा कहकर; पुलम्पुकिन्ऱार्–विलापती हैं। २६८

और कुछ यक्षांगनाएँ गीली आँखों से आँसू बहाते हुए अपनी सारिकाओं को बोलते चित्र के समान उलाहना दे रही थीं। तू मेरा कोई हित नहीं करती ! मेरे प्राण, रावण को नहीं बुलाती। ऐसा कहते हुए वे विलाप रही थीं। २६८

ईरत् तॅन्ऱ लिळुह मॅलिन्दुतम्, पारक् कॊङ्गैयैप् पार्त्तन्दप् पादहन्
वीरत् तोळ्हळिन् वीक्कमॅण्णावुयिर्, शोरच् चोरत् तुळङ्गुहिन् ऱार्शिलर् 269

ईर–शीतल; तॅन्ऱल्–दक्षिणी (मलय) पवन; इळुक–मन्द-मन्द बह रहा है; मॅलिन्तु–पतली होकर; तम् पार कॊङ्कैयैप् पार्त्तु–अपने भारी स्तनों को देखकर; अन्त पातकन्–उस पातक (रावण) के; वीर तोळ्कळिन्–वीर भुजाओं का; वीक्कम्–सूजन (मुटापा); ऍण्णा–सोचकर; उयिर् चोर चोर–प्राणों के शिथिल पड़ते; चिलर् तुळङ्कुकिन्ऱार्–कुछ यक्ष स्त्रियाँ छटपटाती हैं। २६९

शीतल मलयपवन मन्द-मन्द बह रहा था। उससे कुछ स्त्रियों के शरीर कृश हो गये। उन्होंने अपने भारी स्तनों को देखा और रावण के स्थूल कन्धों का स्मरण किया। प्राण सूखने-से लगे और वे तड़पने लगीं। २६९

नक्क शॅम्मणि नाऱिय नीणिळल्, पक्कम् वीशुऱु पळ्ळियिर् पल्पहल्
ऑक्क वाशै युलर्त्त वुलर्न्दवर्, शॅक्क वान्ऱुरुन् दिङ्गळॊत् तार्शिलर् 270

चिलर्–कुछ; नक्क–उज्ज्वल; चॅम्मणि–लाल माणिक पत्थरों से; नाऱिय–प्रकट; नीळ् निळल्–लम्बी कान्तियाँ; पक्कम् वीचुऱु–जिसके पार्श्व में पड़ती हैं उस; पळ्ळियिल्–शय्या में; पल् पकल्–अनेक दिनों से; ऑक्क आचै उलर्त्त–लगातार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding ; IKS

उनकी कामना के सूख जाने (असफल रह जाने) से; उलर्न्तवर्–सूखकर; चॆक्क वान् तरुम्–लाल गगन में उदित; तिङ्कळ् ऒत्तार्–(अर्ध) चन्द्र के समान दिखीं। २७०

कुछ पलंग पर लेटी हुई थीं। पलंग के चारों ओर लाल पत्थर कांति दे रहे थे। वे स्त्रियाँ अनेक दिनों से वियोगाग्नि में तप चुकी थीं, सूखकर काँटे हो गयी थीं। उस स्थिति में वे अपनी शय्याओं पर लाल गगन में प्रकट अर्द्धचन्द्र के समान लगीं। २७०

वाळि नार्रिय कर्पह वल्लियर्, तोळि नार्रिय तूङ्गम ळित्तुयिल्
नाळि नार्चॆवि यिर्पुहु नामयाळ्त्, तेळि नार्रिहैप् पॆय्दुहिन् रार्शिलर् 271

वाळिन्–कान्ति के द्वारा; आर्रिय–प्रदत्त; कर्पक वल्लियर्–कल्पलताएँ-सी (यक्ष बालाएँ); तोळिन्–दोले के समान; नार्रिय–लटकाये जाकर; तूङ्कु–लटकनेवाली (झूलनेवाली); अमळि तुयिल् नाळिनाल्–शय्या पर सोते समय; चॆवियिल् पकु–कानों में घुसनेवाले; नाम याळ् तेळिनाल्–भयावह 'याळ्' के स्वर रूपी बिच्छ से; चिलर्–कुछ; तिकैप्पु ऍय्तुकिन्रार्–भ्रान्त और बेसुध हो जाती हैं। २७१

कुछ प्रकाश की बनी कल्पवल्ली-सी यक्षस्त्रियाँ झूले की तरह की लटकनेवाली शय्या में पड़ी 'याळ्' नामक वीणा के मधुर स्वर से ऐसा कष्ट पाती हैं और बेसुध हो जाती हैं, मानो वह संगीत बिच्छू हो। २७१

कव्वु तीक्कणै मेरुवैक् काल्वळैत्, तॆव्वि नान्मलै येन्दिय वेन्दरोळ्
वव्वु शान्दुदम् मामुलै वौविय, शॆव्वि कण्डु कुलावुहिन् रार्शिलर् 272

चिलर्–कुछ; मेरुवै काल् वळैत्तु–मेरु को धनु के रूप में झुकाकर; कव्वु–उस पर चढ़ाये गये; ती कणै–अग्नि-सदृश (विष्णु रूपी) अस्त्र को; ऍव्वितान्–जिन्होंने चलाया था; मलै–उन शिवजी के कैलास पर्वत को; एन्तिय–जिसने उखाड़कर उठाया; एन्तल्–उस राजा रावण के; तोळ्–कन्धों में; वव्वु चान्तु–जो लग गया था वह चन्दन का लेप; तम् मा मुलै वौविय–अपने स्तनों ने जो अपनों पर मलवा लिया था (आलिंगन के समय); चॆव्वि कण्टु–उस सौष्ठव को देखकर; कुलावुकिन्रार्–मोद का अनुभव कर रही हैं। २७२

शिवजी ने मेरु को धनु के रूप में दोनों बाजुओं में झुकाया था और श्रीविष्णु को अग्निवर्षक अस्त्र बनाकर चलाया था। ऐसे शिवजी के कलास पर्वत को रावण ने उखाड़कर अपने हाथों पर उठा लिया। कुछ यक्षस्त्रियाँ अपने स्तनों पर उस रावण के सबल कन्धों पर लिप्त चन्दन को मला देखती हैं। यह तब मला था, जब रावण ने उन्हें आलिंगन किया था। अब ये यक्षस्त्रियाँ उस चन्दनापहरण की खूबी पर इठला रही हैं। २७२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कूडि नान्गुयर् वेलैयुङ् गोक्कनिन्, ऱाडि नान्पुह ऴङ्गै नरम्बिनाल्
नाडि नाऱ्पॅरुम् बण्णु नयप्पुऱप्, पाडि नान्बुहऴ् पाडुहिन् ऱार्शिलर् 273

चिलर्–(और) कुछ (यक्ष ललनाएँ); नान्कु–चारों ओर के; उयर् वेलैयुम्–बड़े समुद्रों के; कूटि कोक्क–मिलकर प्रलय बनते समय; निन्ऱु आटिनान्–जिन्होंने ताण्डव नृत्य किया; पुकऴ्–उस शिवजी के यश को; नाटि–स्मरण व अन्वेषण करके; अङ्कै नरम्पिनाल्–अपने सुन्दर हाथों की नसों को मीड़कर; नाल् पॅरुम् पण्णुम्–चारों श्रेष्ठ रागों को; नयप्पु उऱ पाटिनान्–जिसने मनोहारी रूप से गाया था; पुकऴ्–उस रावण के यश का; पाटुकिन्ऱार्–गान करती हैं। २७३

कुछ यक्षांगनाएँ रावण के यशोगान में मन बहला रही हैं। रावण ने शिवजी के यश का गान किया था। शिवजी ऐसे थे, जिन्होंने प्रलय के समय में, जब चारों ओर के बड़े-बड़े समुद्र मिलकर एक हो गये थे, ताण्डव नृत्य किया था। २७३

इनैय तन्मै यियक्किय रीण्डिय, मनैयॊ रायिर मायिरम् वायिल्पोय्
अनैय वन्गुलत् ताय्वळै यारिडम्, निनैवि नॅय्दिन नीदियि नॅय्दिनान् 274

नीतियिन् ऍय्तिनान्–न्यायमार्गगामी; इनैय तन्मै इयक्कियर्–ऐसी स्थितियों में जो रहीं, उन यक्षिणियों की; ईण्टिय–भरी; ओर् आयिरम् आयिरम्–सहस्र-सहस्र; मनै वायिल् पोय्–ड्योढ़ियों में घुसकर; अनैयवन् कुलत्तु–(पश्चात) उसके कुल की; आय् वळैयारिटम्–चुने हुए कंकणों की धारिणी राक्षसियों के स्थान में; निनैविन्–सीतान्वेषणचित्त होकर; ऍय्तिनन्–पहुँचा। २७४

न्यायमार्गगामी हनुमान ऐसी स्थितियों में रहनेवाली सहस्र-सहस्र यक्षिणियों के घरों में जाकर देखा। पश्चात वह सीतान्वेषण में चित्त देकर रावण के ही कुल की (राक्षस-) नारियों के वासस्थान पर गया। २७४

ऍरिशुडर् मणियिन् शङ्गे ऴिळवॅयि लिडैवि डादु
विरियिरुळ् परुहि नाळुम् विळक्किन्ऱि विळङ्गु माडत्
तरिवैयर् कुऴुवु नीङ्ग वाशैयुन् दामु मेयाय्
ऑरुशिऱै यिरुन्दु पोन वुळ्ळत्तो डूडु वारुम् 275

विळक्कु इन्ऱि–दीप के विना ही; ऍरि चुटर्–रोशनी देनेवाले; मणियिन्–लाल पत्थरों की; चॆम् केऴ्–लाल और सुन्दर; इळ वॆयिल्–शीतल प्रभा; इटै विटातु विरि–निरन्तर जहाँ फैल रही थी; इरुळ् नाळुम् परुकि–अँधेरे को सदा चाटती; विळङ्कुम् माटत्तु–रहती थी (जहाँ) उस प्रासाद के; ऒरु चिऱै–एक ओर; अरिवैयर् कुऴुवु–चेरियों के समूहों के; नीङ्क–हट जाने पर; आचैयुम् तामुमेयाय्–कामना और स्वयं अकेले रहकर; पोन–उसके पास गये; उळ्ळत्तोटु–मन के साथ; ऊटुवारुम्–रुष्ट जो रहीं, वे। २७५

वे क्या कर रही थीं? एक महल था। उसमें दीप नहीं थे, पर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रकाश देनेवाले लाल पत्थर थे। उनसे लाल रंग की सुखद रोशनी छूट रही थी। उसमें एक नायिका अकेली खड़ी थी। उसने दासीवृन्दों को हटा दिया था। वह केवल अपने प्रेम को ही संगिनी बनाकर अकेली खड़ी अपने मन से रूठ रही थी। ऐसी कुछ राक्षसियों को हनुमान ने देखा। २७५

नहैयॅरिक् कऱ्ऱै नॅऱ्ऱि नावितोय्न् दनॅय वोदि
पुहैयॅनत् तुम्बि शुऱ्ऱप् पुदुमलर् पॊङ्गु शेक्कै
पहैयॅन वेहि यान्ऱ पळिङ्गुडैच् चीदप् पळ्ळि
मिहैयॊडुङ् गाद काम विम्मलिन् वॅदुम्बु वारुम् 276

नकै ॲरि कऱ्ऱै–ज्वलन्त अग्नि-लपट के; नॅऱ्ऱि–छोर में; नावि तोय्न्ततॅय–कस्तूरी-मले से; ओति–केश को; पुकै ॲत–धुआँ समझकर; तुम्पि–भ्रमर; चुऱ्ऱ–घूमकर भागते हैं; पुतु मलर् पॊङ्कु–ताजे सुमनों से भरी; चेक्कै–शय्या को; पकै ॲन–शत्रुवत; एकि–छोड़ दूर जाकर; आन्ऱ पळिङ्कु उटै–चौड़े स्फटिक-पत्थरों से बनी; चीत पळ्ळि–शीतल शय्या पर; मिकै ऑटुङ्कात–बढ़ना कम जिसका नहीं हुआ; काम विम्मलिन्–काम के वर्धन से; वॅतुम्पुवारुम्–जो तप रही थीं, वे और। २७६

राक्षसियों के केश कस्तूरी-लगी आग की लपटों के समान थे। उसे देखकर भ्रमर धुआँ समझते और डरकर उड़ जाते। उन राक्षसियों ने नवीन सुमनों की शय्या को भी शत्रुवत त्याग दिया। फिर वे स्फटिक के चबूतरे पर जाकर लेटीं, जो शीतल था। तो भी उनका ताप कम नहीं हुआ और वे झुलस रही थीं। २७६

शविपडु तहैशाल् वानम् तानॊरु मेनि याहक्
कुवियुमी नार माह मिन्कॊडि मरुङ्गु लाहक्
कविरॊळिच् चॅक्कर् कऱ्ऱै योदिया मळैयॊण् कण्णा
अविर्मदि नॅऱ्ऱि याह वन्दिया ळॊक्किन् ऱारुम् 277

चवि पटु–छविमान; तकै चाल् वानम् तान्–श्रेष्ठ आकाश ही; ऑरु–अद्वितीय; मेनि आक–शरीर बना और; कुवियुम् मीन्–भीड़ बने रहनेवाले तारे; आरमाक–हार बने; मिन् कॊटि–बिजली की लताएँ; मरुङ्कुल् आक–कमर बनीं; कविर् ऑळि–कटिदार पलाश के फूलों की-सी; चॅक्कर् कऱ्ऱै–लाल गगन की ज्योति; ओति आ–केश बनी; मळै–मेघ; ऑण् कण् आ–प्रकाशमय आँखें बने; अविर् मति–न्यून कला चन्द्र; नॅऱ्ऱि आक–ललाट बना; अन्तियाळ्–ऐसी सन्ध्यादेवी की; ऑक्किन्ऱारुम्–समता करनेवाली राक्षसियाँ और। २७७

कुछ राक्षसियाँ स्वयं सायं सन्ध्यादेवी के समान लगीं, जो ज्वलंत आकाश का शरीर ले, तारागणों का हार पहने हुए, विद्युत् की कमर से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

युक्त और काँटेदार पलाशफूलों के समान लाल गगन के केश से शोभित और मेघों के उज्ज्वल नेत्रों के साथ और अर्द्धचन्द्र के भाल से युक्त पायी जाती हों। २७७

पाऩलुण् कण्णुम् वण्णप् पडिमुऱै माऱप् पण्णैच्
चोऩैपोऩ् ऱळिहळ् पम्बुम् जुरिहुऴऱ् कऱ्ऱै शोर
मेऩिवन् ऩॆऴुन्द माड वॆण्णिला मुऩ्ऱि ऩण्णि
वाऩमीऩ् कैयिऩ् वारि मणिक्कऴङ् गाडु वारुम् 278

मेल् निवन्तु ऎऴुन्त–ऊपर की ओर उन्नत उठे हुए; माट–प्रासादों की; वॆळ् निला मुऩ्ऱिल्–चन्द्रशाला; नण्णि–जाकर; कैयिऩ्–अपने हाथों से; वाऩ मीऩ् वारि–आकाश के तारों को उठा लेकर; पाऩल् उण् वण्ण कण्णुम्–नीलोत्पलजयी रंग वाली आँखें; पटि मुऱै माऱ–ऊपर नीचे देखें ऐसा; पण्णै अळिकळ्–झुण्डों में अलि; चोऩै पोऩ्ऱ–मेघ के समान; पम्पुम्–जिन पर मँड़राते हैं; चुरि कुऴल् कऱ्ऱै–वे घुँघराले बाल की लटें; चोर–शिथिल पड़ें ऐसा; मणि कऴङ्कु–उन नक्षत्रों के गेंद; आटुवारुम्–खेलनेवाली नारियाँ। २७८

कुछ राक्षसियाँ ताराओं को लेकर 'कऴङ्गु' का खेल खेल रही थीं। (यह तीन या उससे भी अधिक काठ के रंगीन गोल गेंदों से खेला जाता है। कुछ विशिष्ट बीज भी ऐसे होते हैं। स्त्रियाँ अपने एक या दोनों हथेलियों से उन गेंदों को उछालती हैं और पकड़ती हैं। यह उनके उठने या गिरने का क्रम कुछ इतना तीव्र और विचित्र व मनोरम लगता है।) वे उन्नत सौधों की चन्द्रशालाओं में गयीं। वे जब ताराओं से 'कऴङ्गु' खेलती हैं तब उनकी नीलोत्पल-सी आँखें ऊपर-नीचे जाती हैं। उनके केश, जिन पर झुंडों में भ्रमर मँड़राते हैं, खुलकर शिथिल पड़ जाते हैं। २७८

उऴैयुऴैप् परन्द वाऩ याऱ्ऱुनिऩ् ऱुम्बर् नाट्टुक्
कुऴैमुहत् तवर्ह डन्द पुऩल्कुळिर्प् पिलवॆऩ् ऱूडि
इऴैतॊडुत् तिलङ्गु माडत् तिडैतडु माऱ वेऱि
मऴैपॊडुत् तॊऴुहु नीराऩ् मऱ्ऱऩ माडु वारुम् 279

उऴै उऴै–सर्वत्र; परन्त–फैली; वाऩ याऱ्ऱ–आकाशगंगा नदी से; उम्पर् नाट्टु–व्योम लोक की; कुऴै मुकत्तवर्कळ्–स्निग्ध मुख वाली; तन्त–(देवांगनाओं ने) जो लाकर दिया; पुऩल्–वह जल; कुळिर्प्पु इल–शीतल नहीं; ऎऩ्ऱ–कहकर; ऊटि–रुष्ट होकर; इऴै तॊटुत्तु इलङ्कुम्–पंक्तियों में आभरणों से अलंकृत रहनेवाली; माटत्तु–अटारी पर; इटै तटुमाऱ–कमरों को दुःख देती हुई; एऱि–चढ़ जाकर; मऴै पॊतुत्तु–मेघ को छेदकर; ऒऴुकुम् नीराल्–गिरनेवाले जल से; मऱ्ऱऩम् आटुवारुम्–स्नान करनेवाली नारियाँ। २७९

राक्षसियों के सौधों पर सर्वत्र आकाशगंगा फली बहती है। देवांगनाएँ मुखों पर खुश रहने का भाव दिखाती हुई उससे जल लाकर राक्षसियों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को दे रही हैं। पर वे 'पर्याप्त शीतल नहीं' कहकर रुष्ट हो जाती हैं और सीढ़ियों पर कमर को दुखाते हुए चढ़ती हैं और मेघों में छेद बनाकर गिरनेवाले जल में स्नान करती हैं। २७९

पन्नह वरशऱ् चॅङ्गेळ्प् पणामणि वलियिऱ् पऱ्ऱि
इन्नुयिर्क् कणव नीन्दा नीदॅन विरुत्ति विज्जै
मन्नवर् मुडियुम् बूणु मारमुम् बणैय माहप्
पॊन्निनम् बलहैच् चूदु तुयिल्हिलर् पॊरुहिन् ऱारुम् 280

तुयिल्किलर्–नहीं सोतीं; इन् उयिर् कणवन्–बड़े मधुर प्राणप्यारे पति ने; पन्नक अरचन्–पन्नगराज के; पणा चॅम् केळ् मणि–फनों पर के लाल सुन्दर रत्नों को; वलियिल् पऱ्ऱि–बलात छीनकर; ईन्तान्–मुझे दिया; ईतु ऍन–यही कहकर; इरुत्ति–दाँव पर चढ़ाकर; विज्चै मन्नवर्–विद्याधर राजाओं के; मुटियुम्–मुकुटों; पूणुम्–आभरणों और; आरमुम्–हारों को; पणैयमाक–दाँव के रूप में; पॊन्निन् अम् पलकै–स्वर्ण के चौपट में; चूतु पॊरुकिन्ऱारुम्–जुआ खेलनेवाली राक्षसनारियाँ और। २८०

कुछ राक्षसियाँ थीं जो सो नहीं पायीं। वे द्यूत खेल रही हैं। बाज़ी क्या लगाती हैं ? मेरे प्राणप्यारे रावण ने ये रत्न पन्नगराजा के फनों से छीनकर मुझे दिये थे। लो इसे दाँव पर चढ़ाती हूँ। या ये लो— विद्याधर-राजाओं के किरीट, हार और अन्य आभरण ! ऐसी वस्तुएँ वे दाँव पर लगा रही हैं। उनकी बिसात स्वर्णनिर्मित हैं। ऐसी स्त्रियों को हनुमान ने देखा। २८०

तॅन्नवॅन् ऱमुदप् पाडल् शित्तिय रिशैप्पत् तीञ्जॊल्
पन्नह महळिर् वळ्वार्त् तणणुमैप् पाणि पेणप्
पॊन्नहर्त् तरळप् पन्दर्क् कऱ्पहप् पॊदुम्बऱ्प् पॊऱ्ऱोळ्
इन्नहै यरम्बै मारै याडल्हण् डिरुक्किन् ऱारुम् 281

कऱ्पक पॊतुम्पर्–कल्पोद्यान में; पॊन्तकर्–स्वर्णनगरी अमरावती से लाये गये; तरळ पन्तर्–मोतियों के वितान के नीचे; चित्तियर्—सिद्धजाति की स्त्रियाँ; तॅन्न ऍन्ऱ–'तेन्न' के संगीत संकेत के साथ; अमुत पाटल् इचैप्प–अमृत-सम मधुर गीत गा रही थीं; तीम् चॊल्–मधुर स्वर वाली; पन्नक मकळिर्–पन्नग-नारियाँ; वळ्–घने; वार्–फीतों से बँधे; तण्णुमै–मर्दल के; पाणि पेण–ताल देते; पॊन् तोळ्–मनोरम भुजा वाली; इन् नकै अरम्पै मारै–मनोहर दाँतों वाली अप्सराओं को; आटल् कण्टु–नर्तन करने की आज्ञा देकर उसे देखकर; इरुक्किन्ऱारुम्–आनन्द के साथ रहनेवालियों को। २८१

और कुछ स्त्रियाँ नाच-गान का आनन्द भोग रही थीं। कल्पवन में स्वर्णनगरी अमरावती से लाये गये मोतियों से निर्मित वितान के नीचे सिद्ध जाति की स्त्रियाँ 'तेन्न' नाम के संगीत-संकेत के अनुसार अमृत-सम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गान गा रही थीं। मधुर वाणी पन्नगकन्याएँ 'मर्दल' बजा रही थीं। और मनोरम कन्धों वाली और मनोहर दाँतों वाली अप्सराएँ नाच रही थीं। २८१

आणियिऱ् किडन्द काद लहऱ्ऱुड वरुवि युण्गण्
शेणुय रुऱक्कन् दीर्न्द शिन्दैयर् शॅय्व दोरार्
वीणैयुम् कुळ्ळुन् दत्तम् मिडऱुम्वेऱ् ऱुमैयिऱ् ऱीर्न्द
पाणितळ् ळाद पाड लमुदुहप् पाडु वारुम् 282

आणियिल्—कील के समान; किटन्त कातल्—गड़ा रहा जो प्रेम; अकम् चुट—हृदय को जलाता है; अरुवि उण् कण्—सरिता के समान आँसू बहाती आँखों में; चेण् उयर् उऱक्कम्—गहरी नींद; तीर्न्त—नहीं रही; चिन्तैयर्—चिन्तित रहने वालियाँ; चॅय्वतु ओरार्—क्या करना यह नहीं जानतीं; वीणैयुम् कुळ्ळुम्—वीणा और वंशी; तत्तम् मिटऱुम्—और उनके कण्ठ; वेऱ्ऱुमैयिल् तीर्न्त—परस्पर भिन्न न रहे; पाणि तळ्ळात—ताल से अबद्ध जो नहीं; पाटल्—वैसे गाने; अमुतु उक—अमृत बरसाते हुए; पाटुवारुम्—जो गाती रहीं उनको। २८२

कुछ स्त्रियाँ वीणा और वंशी के साथ अपने कण्ठ को भी मिलाकर समाँ बँधाकर तालमेल के साथ गा रही थीं। उनके मन में कील के समान रावण-प्रेम गड़ा पड़ा था। विरह-वेदना उनके हृदय को जला रही थी। आँखों से सरिता के समान आँसू बह रहा था। मन दुःखी था। नहीं मालूम हुआ कि क्या किया जाय! तब वे गाने में समय बिताने लगीं। हनुमान ने उनको भी देखा। २८२

तण्डलै वाळै यन्न कुऱङ्गिडै यलहुऱ् ऱट्टिल्
कॊण्डपून् दुहिलुङ् गोवैक् कलन्गळुञ् जोरक् कूऱङ्गळ्
उण्डल मन्द कण्णा रूशलिट् टुलावु हिन्ऱु
कुण्डलन् दिरुविल् वीशक् कुरवैयिऱ् कुळ्ळुरु वारुम् 283

कूऱ्म् कळ्—अति मादक ताड़ी; उण्टु—पीकर; अलमन्त कण्णार्—उससे चञ्चल बनी आँखों वाली कुछ राक्षसियाँ; तण्टलै वाळै अन्न—बाग के केले के समान; कुऱङ्किटै—ऊरुओं पर; तट्टु अल्कुलिल्—रथ के समान भगों पर; कॊण्ट—पहने हुए; पूम् तुकिलुम्—महीन वस्त्र; कोवै कलन्कळुम्—मेखला आदि आभरण; चोर—शिथिल पड़ जाते; ऊचलिट्टु उलावुकिन्ऱु—झूलते हुए डोलनेवाले; कुण्टलम्—कुण्डल; तिरु विल् वीच—मनोहर आभा बिखेरते; कुरवैयिल—"कुरवै" गीत गाते हुए नाचने में; कुळ्ळुरुवारुम्—लड़खड़ाती जो हैं उनको भी। २८३

कुछ स्त्रियों ने खूब मादक ताड़ी पी ली। वे 'कुरवै' नाच गीतों के साथ नाच रही थीं। उनके बाग के केले के पेड़ के समान अपने ऊरुओं और रथ के समान जघन-प्रदेशों पर पहने हुए वस्त्र खिसक गये। मेखला आदि आभरण भी गिर गये। इस स्थिति में वे 'कुरवै' नाच नाचने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लगीं तो उनके कानों के कुण्डल ज़ोर से डोल रहे थे और वे स्वयं लड़खड़ा रही थीं। २८३

नच्चॅनक् कॊडिय कण्णार् कळ्ळॊडु कुरुदि नक्किप्
पिच्चरिऱ् पिदऱ्ऱि यल्हुऱ् पून्दुहिऱ् कलाबम् बीऱिक्
कुच्चरित् तिऱत्ति ऩोशै कळङ्गॊळक् कुळ्क्कॊण् डीण्डिच्
चच्चरिप् पाणि कॊट्टि निऱैतडु माऱु वारुम् 284

नच्चु ऍऩ–विष के समान; कॊटिय कण्णार्–घातक आँखों वाली कुछ राक्षसियाँ; कळ्ळॊटु कुरुति नक्कि–ताड़ी के साथ रक्त चाटकर; पिच्चरिल्–पागल के समान; पितऱ्ऱि–बकती हुई; अल्कुल्–कटि प्रदेश के; पून् तुकिल्–महीन वस्त्रों और; कलापम् पीऱि–मेखला को चीरकर; कुच्चरि तिऱत्तिऩ्–'गुर्जर' राग में; ओचै–जो गाती हैं वह ध्वनि; कळम् कॊळ–उनके गलों में निकलता है; कुळ्क् कॊण्टु–समूह बनाकर; ईण्टि–जमा हो; चच्चरि पाणि कॊट्टि–चञ्चरी नामक वाद्य को बजाते हुए; निऱै तटुमाऱुवारुम्–मन में अस्त-व्यस्त रहनेवालियों को भी। २८४

कुछ विष-सी घातक (मादक) आँखों वाली राक्षसियों ने ताड़ी के साथ रक्त भी पी लिया। पागलों के समान बकते हुए उन्होंने अपनी कटि के वस्त्र को और मेखला आदि आभरणों को उतार फेंका। वे सब मिलकर 'गुर्जर' राग में 'चञ्चरी' के वाद्य को बजाते हुए चंचल मन के साथ लड़खड़ा रही थीं। २८४

तयिर्निऱक् कळ्ळुण् डुळ्ळन् दळ्ळत्त मऱिवु तळ्ळप्
पयिरुऱत् तॆय्व मॆऩ्मेऱ् पडिन्ददु पार्मि ऩॆऩ्ऩा
उयिरुयिर्त् तिरण्डु कैयु मुच्चिमे लुयर नीट्टि
मयिर्शिलिर्त् तुडलङ् गूशि वाय्विरित् तॊडुङ्गु वारुम् 285

तयिर् निऱ–दही के रंग की; कळ् उण्टु–ताड़ी पीकर; उळ्ळम् तळ्ळ–मन के झूलते; तम् अऱिवु तळ्ळ–विवेक के भ्रमित होते; पयिर् उऱ–पुकार मचाते हुए; तॆय्वम् ऍऩ् मेल् पटिन्ततु–देव मुझ पर उतर आया है; पार्मिऩ्–देखो; ऍऩ्ऩा–कहकर; उयिर् उयिर्त्तु–लम्बी साँसें छोड़कर; उच्चि मेल्–सिर पर; इरण्टु कैयुम्–दोनों हाथों को; उयर–ऊँचा; नीट्टि–बढ़ाते हुए; मयिर् चिलिर्त्तु–पुलक से भरकर; उटलम् कूचि–शरीर के कम्पन के साथ; वाय् विरित्तु–मुख बाकर; ऒटुङ्कुवारुम्–फिर थकी हो जानेवालियाँ और। २८५

कुछ स्त्रियों ने दही के समान ताड़ी पी ली थी। उनका मन चकित हुआ और बुद्धि भ्रमित हो गयी। वे चिल्ला रही थीं— मुझ पर देवता का आवेश हुआ है! देखो। वे लम्बी श्वास छोड़ रही थीं। उनके हाथ सिर के ऊपर बढ़े हुए थे। उनके रोंगटे खड़े हुए थे। शरीर काँप रहा था और मुख खुला। कुछ देर के बाद वे थकी गिर गयीं। २८५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इत्तिऱत् तरक्कि मार्ह ळीरिरु कोडि यीट्टम्
पत्तियि नुऱैयुम् बत्तिप् पडर्नॆडुन् दॆरुवुम् बार्त्तान्
चित्तिय रुऱैयुम् माडत् तॆरुवुम्बिन् नाहच् चॆन्ऱान्
उत्तिशै विञ्जै माद रुऱैयुळै मुऱैयि लुऱ्ऱान् 286

इत्तिऱत्तु–इस प्रकार ऐसी स्थितियों में; ईरिरु कोटि ईट्टम्–(दो के दो) चार करोड़ की संख्या की; अरक्किमार्कळ्–राक्षसियाँ; पत्तियिन्–रावण के प्रति भक्ति के साथ; उऱैयुम्–जिनमें रहती थीं; पत्ति पटर्–उन प्रासादों की पंक्तियों के साथ; नॆटुम्–चलनेवाली बड़ी; तॆरुवुम्–वीथी में भी; पार्त्तान्–(हनुमान ने खोजकर) देखा; चित्तियर् उऱैयुम्–सिद्धस्त्रियाँ जहाँ रहती थीं; माट तॆरुवुम्–मंज़िल वाले मकानों की वीथी को भी; पिन्नाक–पीछे छोड़कर; चॆन्ऱान्–(पार करके) गया; उत्तिचै–उस बीच; विञ्चै मातर् उऱैयुळै–विद्याधरस्त्रियों के वासस्थान को; मुऱैयिल्–गमन से सिलसिले में; उऱ्ऱान्–जा पहुँचा। २८६

ऐसी स्थिति में रही चार करोड़ राक्षसनारियों के प्रासादों की लम्बी वीथी में हनुमान सीताजी को खोजता हुआ गया। फिर सिद्धस्त्रियों के घरों में ढूँढ़ते हुए उनकी वीथी पार कर आगे गया। उसी दिशा में वह विद्याधरस्त्रियों के प्रासादों में भी गया। २८६

वळर्न्द कादलिन् महळिर्हण् मणिमुडि यरक्कनै वरक्काणार्
तळर्न्द शिन्दैद मिडैयिनुम् नुडङ्गिड वुयिर्कॊडु तडुमाऱिक्
कळन्द वानॆडुङ् गरुवियिऱ् कैहळिऱ् चॆयिरियर् कळैकण्णा
अळन्द पाडल्वॆव् वरवुदञ् जॆविपुह वलम्वर वुयिर्क्किन्ऱार् 287

मकळिर्कळ्–विद्याधरस्त्रियाँ; वळर्न्त कातलिल्–बढ़े हुए रावण-प्रेम से; मणि मुटि अरक्कनै–रत्नकिरीटधारी राक्षस को; वर काणार्–न आता देख; तळर्न्त चिन्तै–शिथिल हुए मन को; तम् इटैयिनुम् नुटङ्किट–अपनी कमर से भी अधिक काँपने देते हुए; उयिर् कॊटु तटुमाऱि–प्राण न छोड़कर तड़पतीं; चॆयिरियर्–गानेवालियों के; कळम् तवा–गले के स्वर से अभिन्न; नॆटुम् करुवियिल्–स्वर देनेवाले लम्बे वाद्य (याळ्) में; कळै कण्णा–सहारे के रूप में पकड़कर; कैकळिल् अळन्त पाटल्–उँगली चलाकर जो गीत गाया वह उचित काल-गणित संगीत; वॆव् अरवु–रूपी भयंकर नाग; तम् चॆवि पुक–अपने कानों में जब घुसा तब; अलम् वर–दुःख के होने से; उयिर्क्किन्ऱार्–ठण्डी आहें भरती हैं। २८७

उधर विद्याधरस्त्रियों की भी हालत देखिए। उनके मन में प्रेम खूब वर्द्धित था। उन्होंने रावण को न आते देख बहुत वेदना का अनुभव किया। उनका मन उनकी कमर से भी अधिक क्षीण होकर काँपने लगा। प्राण तो नहीं गए पर वे अस्त-व्यस्त थीं। तब गानेवाली स्त्रियाँ वीणा का सहारा लेकर कण्ठस्वर के साथ मिलाकर गीत स्वरित कर रही थीं। वह स्वर इनके कानों में नाग के समान घुसा और दुःख पाकर ये ठण्डी आहें भरने लगीं। २८७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुरियु नन्नॅऱि मुनिवरुम् पुलवरुम् पुहलिलाप् पॉऱैहूर
ऍरियुम् वॅञ्जिनत् तिहलडु कॉडुन्दिऱत् तिरावणऱ् कॅञ्ञान्ऱुम्
परियु नॅञ्जिन रिवरॅन वयिर्त्तॉरु पहैयॉडु पनित्तिङ्गळ्
शॉरियुम् वॅङ्गदिर्प् पणैमुलैक् कुवैशुड वमळियिऱ् ऱुडिक्किन्ऱार् 288

पनि तिङ्कळ्–शीतल चन्द्र; इवर्–ये स्त्रियाँ; ऍरियुम् वॅम् चिनत्तु–आग-से जलनेवाले क्रोध के साथ; इकल् अटु–शत्रु का संहार करनेवाले; कॉटुम् तिऱत्तु–भयंकर बलशाली; इरावणऱ्कु–रावण के प्रति; नन्नॅऱि पुरियुम्–सत्कार्य ही करनेवाले; मुनिवरुम् पुलवरुम्–मुनि और देवता लोग; पुकल्किला–विना खोलकर कहे; पॉऱै कूर–सहते रहे; ऍञ्ञान्ऱुम्–सदा; पारियुम् नॅञ्चिनर्–प्रेम करनेवाले मन की हैं; ऍन अयिर्त्तु–ऐसा सन्देह करके; ओरु पकैयॉटुम्–एक शत्रुता के साथ; चॉरियुम् वॅम् कतिर्–जो छिटकाता है वह गरम किरणें; पणै मुलै कुवै–पीन स्तनों के समूहों को; चुट–जलाती हैं; अमळियिल्–शय्या में; तुटिक्किन्ऱार्–(उस गरमी से) तड़पती हैं। २८८

शीतल चन्द्र को यह गुस्सा था कि ये स्त्रियाँ अग्नि के समान दाहक और बड़े क्रोध के साथ शत्रु का संहार करनेवाले रावण पर सदा प्रेम रखती हैं। उसके द्वारा सत्कार्यरत ऋषि और देवगण अपार कष्ट पाते हैं, पर भय से मुख तक न खोलकर कष्ट सह रहे हैं। अतः वह एक शत्रुता के साथ उनके पीन स्तनों के समूह को अपनी क्रूर किरणों से जला रहा था। वे इससे आहत होकर अपनी-अपनी शय्या में पड़ी तड़प रही थीं। २८८

शिऱुहु कालङ्ग ळूळिह ळाम्वहै तिरिन्दुशिन् दनैशिन्द
मुऱुहु कादलिन् वेदनै युळप्पवर् मुयङ्गिय मुलैमुन्ऱिल्
इऱुहु शान्दमु मॅळुदिय कुऱिहळु मिन्नुयिर्प् पॉऱैयीर
मऱुहु वाट्कण्गळ् शिवप्पुऱ नोक्किनर् मयङ्गिन रुयिर्क्किन्ऱार् 289

मुऱुकु कातलिन्–परिपक्व प्रेम से; चिऱुकु कालङ्कळ्–छोटी-छोटी अवधियाँ भी; ऊळिकळ् आम् वकै–युग दिखें ऐसा; चिन्ततै–मन के; तिरिन्तु चिन्त–बदलकर टूटने पर; वेतनै उळप्पवर्–पीड़ित हो; मुयङ्किय–पहले रावण के साथ संश्लिष्ट जो रहे; मुलै मुन्ऱिल्–उन स्तनों के तटों में; इऱुकु चान्तमुम्–जमा चन्दन; ऍळुतिय कुऱिकळुम्–और बने नखक्षत; इन् उयिर्प्पॉऱै ईर–प्यारे प्राणों को चीरते हैं; मऱुकु वाळ् कण्कळ्–चंचल और उज्ज्वल नेत्र; चिवप्पु उऱ–लाल करते; नोक्किनर्–देखतीं; मयङ्किनर्–मोहित होतीं और; उयिर्क्किन्ऱार्–आहें भरती हैं। २८९

कुछ विद्याधरियों को रावण-विरह में अल्पकाल भी युग के समान लग रहा था। उनका मन टूट गया। रावणालिंगनसुखमुक्त स्तन वेदनाविद्ध हो गये और उन पर का चन्दन-लेप और उन पर पड़े नखक्षत उनके शरीरों को चीर रहे थे। उनके दुःखविलोडित नेत्र लाल हो गये। वे उन आँखों से देखती हुई भ्रमित होकर लम्बी साँसें छोड़ रही थीं। २८९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आय विज्जैयर् मडन्दैय रुऱैविड माऱिरण् डमैकोडि
तूय माळिहै नॅडुन्दॅरुत् तुरुविप्पोय्त् तॉलैविन्मून् ऱुलहिऱ्कुम्
नाय हन्बॅरुङ् गोयिलै नण्णुवान् कण्डन ऩळिर्तिङ्गळ्
माय नन्दिय वाण्मुहत् तॉरुदऩि मयन्महण् मणिमाडम् 290

आय–ऐसी; विज्चैयर् मटन्तैयर्–विद्याधर स्त्रियों का; उऱैविटम्–वासस्थान; आऱिरण्टु कोटि–बारह करोड़; तूय माळिकै अमै–पवित्र प्रासादों की; नॅटुम् तॅरु–लम्बी सड़क में; तुरुवि पोय्–टटोलते जाकर; तॉलैवु इल्–जो कभी न हारता उस; मून्ऱु उलकिऱ्कुम्–तीनों लोकों के; नायकन्–नायक रावण के; पॅरुम् कोयिलै–बड़े महल को; नण्णुवान्–जा पहुँचा; नळिर् तिङ्कळ्–शीतल चाँद; माय–मरा सा हो जाय, ऐसा; नन्तिय–शोभाशाली; वाळ् मुकत्तु–आभामय मुख की; ऑरु तऩि–अनुपम; मयन् मकळ्–मयसुता के; मणि माटम्–रत्नमय प्रासाद को; कण्टऩन्–देखा (हनुमान ने)। २९०

ऐसी विद्याधरी स्त्रियों के प्रासाद बारह करोड़ थे। उन पवित्र मकानों की वीथी में हनुमान सीताजी को ढूँढ़ता हुआ गया। वह तीनों लोकों का अजेय नायक रावण के महल को जाना चाहता था। उसके पहले वह मयसुता मन्दोदरी के सुन्दर महल में आया। मन्दोदरी ऐसे शोभा-भरे मुख की थी कि शीतल चन्द्र भी उसके सामने लज्जा से मर जाय!। २९०

कण्डु कण्णॉडुङ् गरुत्तॉडुङ् गडायिऩन् कारणङ् गडैनिन्ऱ
दुण्डु वेऱॊरु शिऱप्पॅङ्ग णायहऱ् कुयिरिनु मिऩियाळैक्
कॊण्डु पोन्दवन् वैत्ततो रुऱैयुळाङ् गुलमणि मऩैक्कॅल्लाम्
विण्डु विन्ऱिरु मार्बिनिन् मणियॊत्त दिदुवॅऩ वियप्पुऱ्ऱान् 291

कण्टु–उस महल को देखकर; कण्णॊटुम्–आँखों से और; करुत्तॊटुम्–मन से; कटायिऩन्–मापा; वेऱॊरु चिऱप्पु–एक अनोखी विशेषता; उण्टु–(इस प्रासाद की) है; कुल मणि मऩैक्कॅल्लाम्–सभी श्रेष्ठ रत्नमय प्रासादों में; इतु–यह; विण्टुविन्–श्रीविष्णु के; तिरु मार्पिऩिन्–श्रीवक्ष की; मणि ऑत्तऩु–(श्री कौस्तुभ) मणि के समान है; कारणम् कटै निन्ऱतु–उद्देश्य अपनी मंज़िल पर आया है; ऍङ्कळ् नायकऱ्कु–हमारे नायक की; उयिरिऩुम् इऩियाळै–प्राणों से प्यारी सीताजी को; अवन् कॊण्टु पोन्तु–उसने ले आकर; वैत्ततु–जहाँ रखा है; ओर् उऱैयुळ् आम्–वह स्थान यही है; ऍऩ–ऐसा सोचकर; वियप्पुऱ्ऱान्–विस्मित हुआ। २९१

हनुमान ने उस महल को अपनी आँखों से खूब देखा और मन से उस पर सोच-विचार करने लगा। उसे लगा कि इस महल की अनोखी विशेषता है। मणियों में जैसे श्रीविष्णुवक्ष की श्रीकौस्तुभमणि श्रेष्ठतम है, वैसे यह महल सर्वश्रेष्ठ है। मेरी यात्रा का उद्देश्य यहाँ पूर्ण हो गया। यह वही स्थान है, जहाँ रावण ने हमारे नायक श्रीराम की प्राणों से भी प्यारी सीताजी को लाकर रखा है। हनुमान विस्मयाभिभूत हो गया। २९१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरम्बै मेनहै तिलोत्तमै युरुप्पशि यादिया यवर्कामन्
शरम्बॅय् तूणिपॉऱ् ऱळिरडि करन्दॉडच् चामरै तडुमाऱ्क्
करुम्बै यिन्शुवै कऱ्पित्त शॉल्लियर् कामरङ् गनिहिन्ऱ
नरम्बि निन्निशै शॅविपुह नाशियिऱ् कऱ्पह विरैनाऱ 292

अरम्पै–रम्भा; मेनकै–मेनका; तिलोत्तमै–तिलोत्तमा; उरुप्पचि–उर्वशी; आतियायवर्–आदि अप्सराएँ; कामन् चरम् पॅय् तूणि–कामशरों का पात्र, तूणीर-सी; कणैक्कालिल् विळङ्कुम्–पिंडलियों के नीचे रहनेवाले; पॉन् तळिरटि–सुन्दर पल्लव-चरणों को; करम् तॉट–अपने हाथों से सहला रही थीं; चामरै तट्माऱ–चँवर बारी-बारी से डुल रहे थे; करुम्पै इन् चुवै कऱ्पित्त–ईख को जिसने मधुरता सिखा दी; चॉल्लियर्–ऐसी मधुर वाणी बोलनेवाली स्त्रियाँ; कामरम् कनिकिन्ऱ–'कामर' नामक राग में गाये जानेवाले; नरम्पिन् इन् इचै–(याळ्) तन्त्री से उत्पन्न संगीत; चॅवि पुक–कानों में प्रवेश कर रहा था; नाचियिल्–नाकों में; कऱ्पक विरै नाऱ–कल्पसुमन की सुगन्धि घुस रही थी। २९२

रम्भा, मेनका, तिलोत्तमा और उर्वशी आदि अप्सराएँ उस स्त्री के कामदेव के तूणीर-सम पिंडलियों-सहित पल्लव-चरणों को सहला रही थीं। चँवर डुल रहे थे। इक्षुरस-सम मधुरवाणी स्त्रियाँ 'कामर' राग में वीणा पर गा रही थीं और उस स्वर को अपने कानों से सुनती हुई और कल्पसुमन की सुगन्धि को नाक से सूँघती हुई वह लेटी हुई थी। हनुमान ने उसको देखा। २९२

विळैवु नीङ्गिय मेन्मैयो रायिनुङ् गीळ्मैयोर् वॅहुळ्वुऱ्ऱाल्
पिळैहो नन्मैहॉल् पॅऱुवदॅन् ऱैयुऱु पीळैबोऱ् पॅरुन्दॅन्ऱल्
उळैयर् कूवप्पुक् केहॅनप् पॅयर्वदो रूशलि नुळदाहुम्
पळैयम् यामॅनप् पण्बिल शॅय्वरो परिणदर् पयमोर्वार् 293

विळैवु नीङ्किय–वैरागी; मेन्मैयोर् आयिनुम्–श्रेष्ठ लोग हों तो भी; कीळ्मैयोर् वॅकुळ्वुऱ्ऱाल्–नीच लोग गुस्सा करें तब; पॅऱुवतु–जो मिलेगा वह फल; पिळै कॉल् नन्मै कॉल्–बुरा होगा या अच्छा; ऍन्ऱु–ऐसा; ऐयुऱु पीळै पेरल्–संदेह करके दुःखी होते जैसे; पॅरुन् तॅन्ऱल्–गौरवयुक्त मलयपवन; उळैयर् कव–मन्दोदरी की पास वाली दासियों के बुलाने पर; पुक्कु–प्रवेश करके; एकु ऍन–जाओ कहने पर; पॅयर्वतु–लौट जो जाता है वह; ओर् ऊचलिन् उळताकुम्–एक झूले का-सा काम था; परिणतर्–परिपक्व लोग; पयम् ओर्वार्–फल का विचार करके; याम् पळैयम् ऍन–हम चिर परिचित हैं, ऐसा समझकर; पण्पु इल–अनुचित काम; चॅय्वरो–करेंगे क्या। २९३

(और भी आश्चर्य की बात देखी।) गौरवमय मलयपवन उसकी दासियों के 'आओ' कहने पर आता, 'जाओ' कहने पर जाता और झूले की तरह पेंग भरता रहता। उसको देखकर उन वैरागी बड़ों का स्मरण हो आता जो नीच लोगों के क्रोध दिखाने पर इस पसोपेश में पड़ जाते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हैं कि इसका फल क्या होगा, अच्छा या बुरा ? परिपक्व लोग भय का नतीजा जानते हैं और परिचितों के साथ भी सतर्क व्यवहार करते हैं ! अनुचित काम नहीं करते । २९३

इन्न तन्मैयि नॅरिमणि विळक्कङ्ग ळॅऴिल्हॅडप् पॉलिहिन्ऱ
दन्न दिन्नॉळि तऴैप्पुऱत् तुयिलुऱुन् दैयलैत् तहैविल्लान्
अन्न ळाहिय शानहि यिवळॅन्न वयिर्त्तहत् तॅऴुवॅन्दी
तुन्नु तन्नुयि रुडलॉडु शुडुवदोर् तुयरुऴन् दिवैशॊन्नान् 294

तकैवु इल्लान्–अनवरुद्ध; इन्न तन्मैयिन्–इस तरह; ॲरि मणि विळक्कङ्कळ्–प्रकाश देनेवाले मणि-दीपों के; ॲऴिल् कॅट–प्रकाश को मन्द करते हुए; पॉलिकिन्ऱतु अन्नतु–प्रकाश देता है, ऐसा कहने योग्य; इन् ऑळि–शरीर की ज्योति; तऴैप्पु उऱ–बढ़ी रहती है, इस स्थिति में; तुयिलुऱुम् तैयलै–निद्रित रमणी को; इवळ्–यह; अन्नळ् आकिय–वह; चानकि–जानकी है क्या; ॲन्न–ऐसा; अयिर्त्तु–संशय करके; अकत्तु ॲऴु–मन में उठनेवाली; वॅम् ती–भयंकर आग; तन् उटलॉटु–अपने शरीर के साथ; तुन्नु उयिर्–लगी जान को भी; चुटुवतु–जलाती हो ऐसा; ओर् तुयर्–एक वेदना में; उऴन्तु–पड़कर संकट उठाते हुए; इवै चॊन्नान्–ये बातें कहने लगा । २९४

हनुमान को रोक सकनेवाला कोई नहीं था । वह इस तरह सोनेवाली को देखकर, जिसके शरीर की आभा मणि-दीपों के प्रकाश को निष्प्रभ बनाती हुई फूट रही थी, अनुमान करने लगा कि क्या यह स्त्री देवी सीता होगी ? इस संशय पर उसके मन में आग-सी लग गयी । उसे इतनी पीड़ा हुई कि 'मैं जल रहा हूँ' ऐसा लगा । उस विषम दुःख से पीड़ित होकर वह कहने लगा । २९४

ॲऱ्पु वान्ऱॊडर् याक्कैयार् पॅऱुम्बय निऴन्दॅन्न निदुनिऱ्क
अऱ्पु वान्ऱळै यिऱ्पिऱप् पदनॉडु मिहन्दुतन् नऱुन्दॅय्वक्
कऱ्पु नीङ्गिय कनङ्गुऴै यिवळॅनिऱ् काहुत्तन् बुहऴोडुम्
पॉऱ्पुम् यानुमिव् विलङ्गॅयु मरक्करुम् पॉन्ऱुदु मिन्ऱॅन्ऱान् 295

ॲन्पु तॊटर्–अस्थिसंकुल; वान् याक्कैयाल्–इस श्रेष्ठ शरीर के लेने से; पॅऱुम् पयन् इऴन्ततॅन्–प्राप्य फल खो दिया; इतु निऱ्क–यह एक ओर रहे; इ कनङ्कुऴै–यह भारी कुण्डलधारिणी; अन्पु वान् तऴै–प्रेम के पवित्र बन्धन को; अततॊटु इल् पिऱप्पुम्–और उसके साथ श्रेष्ठ कुल में जन्म को; इकन्तु–उपेक्षित करके; तन् अरुम् तॅय्व कऱ्पुम्–अपने उत्तम दिव्य पातिव्रत से भी; नीङ्कियवळ्–च्युत है; ॲनिन्–तो; काकुत्तन् पुकऴोटुम्–काकुत्स्थ के यश के साथ; पॉऱ्पुम्–गौरव की उज्ज्वलता भी; यानुम्–मैं; इव् इलङ्कैयुम् अरक्करुम्–यह लंका और राक्षस भी; इन्ऱु–अभी; पॊन्ऱुतुम्–मिट जायँगे; ॲन्ऱान्–कहा । २९५

यह दृश्य देखकर मेरे अस्थिसंकुल यह शरीर लेने से प्राप्य सौभाग्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मिट गया। वह एक ओर रहे ! भारी कर्णकुण्डलधारिणी ने श्रेष्ठ प्रेम-बन्धन को, उत्तम कुल में जन्म (के गौरव) को छोड़ दिया और दिव्य पातिव्रत धर्म को भी तिलाञ्जलि दे दी, ऐसा लगता है। अगर यह बात सच हुई तो सब गया— श्रीराम का यश और गौरव; मैं, यह लंका और उसके राक्षस सभी अभी मिट जायँगे। २९५

मानु यर्त्तिरु वडिवित्त ळवळिवण् मारुहॉण् डनळ्कूऱिल्
तानि यक्कियो तानवर् तैयलो वेयुरुन् दहैयानाळ्
कानु यिर्त्तदा रिरामन्मे नोक्किय कादलॉन् ऱुडुकाणेन्
मीनु यर्त्तवन् मरुङ्गुऱा निऱ्कुमे निनैन्ददु मिहैयॅन्ऱान् 296

अवळ्–वे; मानुयर्–मानव-स्त्री; तिरु वटिवित्तळ्–के पवित्र रूप वाली हैं; इवळ्–यह तो; मारु कॉण्टत्तळ्–भिन्न रूपधारिणी है; कूऱिल्–कहें तो; तान्–यह; इयक्कियो–यक्षिणी है; तानवर् तैयलो–दानव-स्त्री है; ऐयुरुम्–ऐसी संशय योग्य; तकैयानाळ्–स्त्री लगती है; कान् उयिर्त्त तार्–सुगन्धित मालाधारी; इरामन् मेल् नोक्किय–श्रीराम पर रखा हुआ; कातल् ऑन्ऱु अतु काणेन्–कोई प्रेम नहीं देखता; मीन् उयर्त्तवन्–मकरध्वज; मरुङ्कु उऱा निऱ्कुमे–पास आये बिना रहेगा क्या; निनैन्ततु मिकै–हमारा विचार सत्य का उल्लंघन कर गया है; ऍन्ऱान्–हनुमान ने ऐसा सोचा। २९६

(फिर भी बुद्धिमान उसने गहराई से विचारा और अपना अभिप्राय बदल लिया।) सीता तो मानवशरीरी हैं। यह भिन्न शरीर वाली है। विचारकर कहें तो इसके सम्बन्ध में यही संशय हो सकता है कि यह यक्षिणी है या दानवदयिता ? पुष्पमालाधारी श्रीराम पर प्रेम रहता हो या विरह का अनुभव कर रही हो, ऐसा कोई लक्षण नहीं दिखता ! मकरध्वज इतना निष्क्रिय होकर पास खड़ा रहेगा क्या ? नहीं, नहीं ! यह देवी जानकी नहीं है। मेरा विचार उद्दण्ड था, असत्य था। हनुमान को यही ठीक लगा। २९६

इलक्क णङ्गळुञ् जिलवुळ वॅन्नितु मॅल्लैशॅन् ऱिरुक्किल्ला
अलक्क णॅय्दुव दणियदुण् डॅन्ऱॅडुत् तऱैहिन्ऱ दिवळ्याक्कै
मलर्क्क रुङ्गुळल् शोर्न्दुवाय् वॅरीइच्चिल माऱ्ऱङ्गळ् परैहिन्ऱाळ्
उलक्कु मिङ्गिवळ् कणवनु मऴिवुमिव् वियनहर्क् कुळवॅन्ऱान् 297

चिल इलक्कणङ्कळुम् उळ–और भी कुछ लक्षण हैं; ऍन्नितुम्–तो भी; इवळ् याक्कै–इसका शरीर; ऍल्लै चॅन्ऱु–सीमा तक जाकर भी; इऱुक्कु इल्ला–जिसका अन्त नहीं होगा ऐसे; अलक्कण् ऍय्तुवतु–दुःख की प्राप्ति; अणियतु उण्टु–पास ही है; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍटुत्तु अरैकिन्ऱतु–साफ़ बताता है; इवळ् मलर् करुङ्कुळल्–इसका पुष्पालंकृत केश; चोर्न्तु–खुला है; वाय् वॅरीइ–जोभ लड़खड़ाती है; चिल माऱ्ऱङ्कळ्–कुछ शब्द; परैकिन्ऱाळ्–बोलती है; इवळ् कणवनुम्–इसका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पति भी; इङ्कु उलक्कुम्—यहाँ मरेगा; इ वियन् नकर्क्कुम्—इस विशाल नगर का भी; अऴिवु उळतु—नाश होनेवाला है। २९७

हनुमान ने आगे भी सोचा। इसके पास उत्तम स्त्रीलक्षण कुछ पाये जाते हैं। फिर भी इसके शरीर को देखने पर ऐसा लगता है कि इसके असीम दुःख पाने का समय निकट ही है। इसके पुष्पालंकृत केश अस्त-व्यस्त हैं। जीभ लड़खड़ाती है और कुछ अपशब्द उच्चारण करती है। लगता है कि इसका पति भी शीघ्र यहाँ मर जायगा। इस विशाल नगर का नाश भी निश्चित है। हनुमान ने यह भविष्यवाणी कही। २९७

ऍन्ऱु णर्न्दुनिन् ऱेमुऱु निनैवित निऱ्कवित् तिऱनैन्नाप्
पिन्ऱु शिन्दैयन् पॅयर्न्दत नम्मनै पिऱ्पडप् पॅरुमेरुक्
कुन्ऱु यर्न्ददऱ् कैयुऱ वोङ्गिय कॉऱ्ऱत्तु मणिक्कोयिल्
शॅन्ऱु पुक्कत निरावणऱ् कॅडुप्परुङ् गिरियॅनत् तिरडोळान् 298

इरावणऱ्कु ऍटुप्प अरुम्—रावण के लिए उखाड़ने में कठिन; किरि ऍत—गिरि-सम; तिरळ् तोळान्—पुष्ट कन्धों वाला; ऍन्ऱु—ऐसा; उणर्न्तु निन्ऱु—(भविष्यवाणी) समझकर खड़ा रहा; एम् उऱु निनैवितन्—सन्तोषयुक्त मन के साथ; इ तिऱन् निऱ्क ऍन्ऩा—यह बात रहे, कहकर; पिन्ऱु चिन्तैयन्—मन को लौटाकर; अ मनै पिऱ्पट—उस महल को पीछे छोड़कर; पॅयर्न्ततन्—आगे गया; पॅरु मेरु कुन्ऱु—बड़ा मेरुपर्वत; उयर्न्ततऱ्कु—(महल के रूप में) उन्नत हो गया क्या; ऐयुऱ—इस तरह संशय दिलाते हुए; ओङ्किय—जो ऊँचा बना था; कॉऱ्ऱत्तु—(रावण के) विजयी और; मणि कोयिल्—रत्नमय प्रासाद; चॅन्ऱु पुक्कतन्—जा पहुँचा। २९८

हनुमान के कन्धे ऐसे पर्वत थे, जिन्हें रावण भी हिला नहीं सके। जब उसे यह भविष्यवाणी सूझी तो उसे सुख हुआ। फिर उस विचार के सिलसिले को, रहे यह, कहकर छोड़ दिया। फिर वह मन्दोदरी का महल त्यागकर आगे गया। फिर रावण के महल में घुसा, जो मणिमण्डित था और इतना ऊँचा था कि भ्रम होता था कि मेरुपर्वत महल के रूप में बढ़ा खड़ा है!। २९८

निलन्दु डित्तन नॅडुवरै तुडित्तन निरुदर्दङ् गुलमादर्
पॉलन्दु डित्तनुण् मरुङ्गुल्पोऱ् कण्गळुम् बुरुवमुम् बॉऱ्ऱोळुम्
वलन्दु डित्तन मादिरन् दुडित्तन तडित्तिन्ऱि मदिवानम्
कलन्दि डित्तन वॅडित्तन पूरण मङ्गलक् कलशङ्गळ् 299

निलम् तुटित्तत—अनेक स्थल कंपित हुए; नॅटु वरै—बड़े पर्वत; तुटित्तत—काँपे; निरुतर् तम् कुलमातर्—राक्षसों की कुलीन स्त्रियों के; पॉलम् तुटित्त—सौन्दर्य-भरे (शरीरों में); नुण् मरुङ्कुल् पोल्—क्षीण कटि के समान; कण्कळुम् पुरुवमुम्—आँखें, भौंहें और; पॉऱ् तोळुम्—सुन्दर कन्धे; वलम् तुटित्तत—दायीं ओर फड़के; मातिरम् तुटित्तत—दिशाएँ काँपीं; मति वानम्—चन्द्र-सहित आकाश के मेघ;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कलन्तु–मिलकर; तटित्तु इन्ऱि–विद्युत् के विना ही; इटित्तत–गरजे; मङ्कल पूरण कलचङ्कळ्–मंगलद्योतक पूर्णकुम्भ; वॆटित्तत–आप ही आप टूट गये। २९९

जब वह रावण के महल में प्रविष्ट हुआ तब भूमि के कुछ भागों में कम्पन हुआ। बड़े-बड़े पर्वत हिल उठे। राक्षसियों के बायें अंग, आँखें, भौंहें और मनोरम कन्धे— उनकी कमरों के समान फड़के। दिशाएँ काँप उठीं। चन्द्र-सहित आकाश के घटाटोप से, विना विद्युत् के ही गाजें गिरीं। मंगलकलश स्वतः फूटे। २९९

पुक्कु निन्ऱुदन् पुलन्गॊळ नोक्किनन् पॊरुवरुन् दिरुवुळ्ळम्
नॆक्कु निन्ऱन नीङ्गुमन् दोविन्द नॆडुनहर्त् तिरुवॆन्ना
ऍक्कु लङ्गळिल् यावरे यायिनु मिरुविनै यॆल्लार्क्कुम्
ऒक्कु मूळ्मुऱै यल्लदु वलियदॊन् ऱिल्लॆन वुणर्वुऱ्ऱान् 300

पुक्कु निन्ऱु–प्रवेश करके स्थित होकर; तन् पुलन् कॊळ–अपनी बुद्धि को खूब लगाकर; नोक्कितत्–उसको (हनुमान ने) देखा; पॊरुवु अरुम्–अनुपम; तिरु उळ्ळम्–श्रेष्ठ मन; नॆक्कु निन्ऱनन्–पिघला, ऐसा खड़ा रहा; अन्तो–हन्त; इन्त नॆटु नकर्–इस बड़े नगर की; तिरु–श्री; नीङ्कुम्–मिट जायगी; ऍन्ना–ऐसा सोचकर; ऍक्कुलङ्कळिल् यावरे आयिनुम्–किसी भी कुल का कोई भी क्यों न हो; इरु विनै ऍल्लार्क्कुम् ऒक्कुम्–दोनों (पाप व पुण्य) कर्म सब पर समान रूप से लागू होगा; ऊळ् मुऱै अल्लतु–विधि के क्रम को छोड़; वलियतु ऒन्ऱु–बलवान अन्य कुछ; इल्–नहीं है; ऍन्न–ऐसा; उणर्वुऱ्ऱान्–सोचा। ३००

रावण के प्रासाद में प्रवेश करके हनुमान ने रावण पर खूब दृष्टि गड़ाकर देखा। उसका अनुपम मन पिघल उठा। उसे यह सोचते हुए दुःख हुआ कि हन्त! इस विशाल नगर की सारी श्री और सारे वैभव इसके कारण मिट जायँगे। उसे यह मसल सूझा कि चाहे जो हों, जिस किसी कुल के भी हों, पाप और पुण्य के दोनों कर्म सभी पर समान रूप से अपना प्रभाव डालेंगे ही। विधि के विधान से अधिक बलवान कोई वस्तु नहीं है। ३००

नूऱ्पॆ रुङ्गड नुणङ्गिय केळ्विया नोक्किनन् मऱङ्गूरुम्
वेऱ्पॆ रुम्बडै पुडैपरन् दीण्डिय वॆळ्ळिडै वियन्गोयिल्
पाऱ्पॆ रुङ्गडऱ् पन्मणिप् पः(ह्)ऱलैप् पाप्पिडैप् पडर्वेलै
माऱ्करुङ् गडल् वदिन्ददे यन्नैयदोर् वन्नप्पिनिऱ् ऱुयिल्वान्नै 301

पॆरुङ् कटल्—विशाल सागर-सम; नल्–शास्त्रों का; नुणङ्किय केळ्वियात्—सूक्ष्म श्रवण-ज्ञान रखनेवाले ने; मऱम् कूरुम्–वीरता से पूर्ण; वेल् पॆरुम् पटै–भालाधारियों की बड़ी सेना; पुटै परन्तु ईण्टिय–जिसको पार्श्वों से घेरकर ठस खड़ी रही; वॆळ्ळिटै–ऐसे खुले मैदान के मध्य रहनेवाले; वियन् कोयिल्–बड़े राजमहल में; पॆरुम् पाल् कटल्–बड़े क्षीर-सागर मध्य; पल् मणि–अनेक रत्नों के साथ; पल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तलै पाप्पु इटै–अनेक सिरों के पन्नगराज पर; पटर् वेलै–लम्बे किनारे वाले; माल् करुङ्कटल्–बड़ा काला समुद्र; वतिन्ततै–पड़ा हो; अत्तैयतु ओर् वत्तप्पित्तिल्–ऐसी सुन्दरता के साथ; तुयिल्वात्तै–जो सो रहा था, उसको; नोक्कित्तन्–देखा। ३०१

हनुमान ने देखा। रावण सो रहा था। हनुमान विशाल सागर-सम शास्त्रों का सूक्ष्म श्रौतज्ञानी था। रावण का बड़ा राजमहल विशाल मैदान के मध्य था। उस मैदान में वीरता में अत्यधिक बढ़े भालाधारी राक्षस महल को घेरे रहकर पहरा दे रहे थे। महल के अन्दर विशाल क्षीरसागर-मध्य अनेक रत्न-सहित फनों वाले नाग पर लम्बे किनारे वाला बड़ा काला सागर फैला पड़ा हो, ऐसे दर्शनीय आकर्षण के साथ रावण सो रहा था। ३०१

कुऴवि ञायिऱु कुन्ऱिवर्न् दत्तैयत्त कुरुमणि नॅडुमोलि
इऴैह ळोडुनिन् ऱिळवॅयि लॅऱिन्दिड विरवॅन्नुम् बॊरुळ्वीय
मुऴैहॊण् मेरुवित् मुहट्टिडैक् कत्तहत्तै मुरुक्किय मुरट्चीयम्
तऴैहॊ डोळॊडुन् दलैपल परप्पिमुन् ऱुयिल्वदोर् तहैयात्तै 302

कुऴवि ञायिऱु–बालसूर्य; कुन्ऱु इवर्न्तत्तैयत्त–उदयाचल पर चढ़ा हो ऐसे; कुरुमणि नॅटु मोलि–रंगीन रत्नों से युक्त बड़े किरीट; इऴैकळोटु निन्ऱु–आभरणों के साथ रहकर; इळ वॅयिल्–सुखद प्रकाश; ऍऱित्तिट–छिटक रहे थे; इरवु ऍन्नुम् पॊरुळ्–(उससे) रात्रि नामक वस्तु; वीय–मिटी; मुऴै कॊळ् मेरुवित्–कन्दराओं से युक्त मेरु के; मुकट्टिटै–शिखर पर; कत्तकत्तै–हिरण्य को; मुरुक्किय मुरण् चीयम्–जिन्होंने मार दिया, वे सशक्त नृसिंह; मुन्–पहले; तऴै कॊळ्–अनेक; तोळॊटुम्–कन्धों के साथ; पल तलै परप्पि–अनेक सिरों को रखते हुए; तुयिल्वतोर् तकैयात्तै–सो रहे हों, इस प्रकार सोते रहनेवाले को। ३०२

उदयगिरि पर उगे चन्द्रों के समान श्रेष्ठ रंगों के रत्न-जड़ित मुकुट अन्य आभरणों के साथ मिलकर बालातप-सा प्रकाश बिखेर रहे थे। रात नामक वस्तु 'नहीं' हो रही थी। कन्दरापूर्ण मेरुपर्वत की चोटी पर, कनककश्यप के संहारक नृसिंह-मूर्ति जैसे अनेक भुजाओं के साथ, अनेक हाथों को फैलाये रखकर जो सो रहा था उस रावण को (हनुमान ने देखा)। ३०२

कुऴन्दै वॅण्मदिक् कुडुमिय नॅडुवरै कुलुक्किय कुलत्तोळैक्
कळिन्दु पुक्किडै करन्दत्त वत्तङ्गवेळ् कडुङ्गणै पलपाय
उऴन्द वॅञ्जमत् तुयर्दिशै यात्तैयि नॊळिर्मरुप् पुऱिऱ्ऱ
पऴन्द ऴम्बिनुक् किडैयिडै येशिल पशुम्बुणग ळशुम्बूऱ 303

कुऴन्तै वॅण्मति–बालचन्द्र को; कुटुमियन्–सिर पर धारण करनेवाले शिवजी के; नॅटुवरै–बड़े पर्वत (कैलास) को; कुलुक्किय–जिन्होंने हिला दिया; कुलत्तोळै–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन श्रेष्ठ भुजाओं को; कळिन्तु–पार करके; पुक्कु–प्रवेश करके; इटै करन्तत–शरीर में जो छिपे रहे; अनङ्क नेळ् कटुम् कणै–मारदेव के भयंकर शर; पाय–निफर गये; वेम् चमत्तु उळ्ळन्त–भयंकर युद्ध में जो पीड़ित हुए; तिचै उयर् यानैयिन्–उन बड़े दिग्गजों के; ओळिर् मरुप्पु उर्रु–उज्ज्वल दाँत गये; इर्र–जहाँ टूटे; पळुम् तळुम्पिनुक्कु इटै इटैये–उन पुराने चिह्नों के बीच-बीच; चिल पचुम्पुण्कळ्–कुछ ताज़े घाव; अचुम्पु ऊर–रक्त बहा रहे थे, (इस भाँति सो रहा था रावण, उसे) । ३०३

बालचन्द्रशेखर शिवजी के कैलास को जिन्होंने हिला दिया, उन रावण की भुजाओं को पार कर क्रूर अनंगशर उसके शरीर के अन्दर घुस रहे थे। कठोर युद्ध में रावण ने कभी दिग्गजों को त्रस्त किया था। तब उनके उज्ज्वल दाँत इसके वक्ष में गड़ गये थे। उन दागों के मध्य अब ताज़े घाव लगे थे और उनसे होकर रक्त रिस रहा था। ३०३

आय पॊर्र्लत् ताय्वळै यरम्बैय रायिर रणिनिन्रु
तूय पॊर्कव रित्तिर ळियक्किडच् चुळिपडु पशुङ्गार्रिन्
वीय कर्पहत् तेन्रुळि विरायत वीळ्तॊरु नॆडमेनि
तीय नर्रॊडिच् चीदैयै निनैतॊरु मुयिर्त्तुयिर् तेय्वानै 304

पॊन् तलत्तु आय–स्वर्णनगरी अमरावती-वासिनी; आय् वळै–श्रेष्ठ कंकणधारिणी; अरम्पैयर् आयिरर्–सहस्र अप्सराएँ; अणि निन्रु–पास खड़ी होकर; तूय पॊर्कवरित्तिरळ्–शुद्ध, स्वर्णमूठ वाले चँवर डोल रही हैं; चुळि पटु–उससे वर्तुल उठनेवाले; पचुम् कार्रिन्–मन्द पवन से; कर्पक वीय–कल्पसुमन के; तॆन् तुळि–शहद की बूँदें; विरायत वीळ् तॊरुम्–जब-जब छितरकर गिरती हैं; नॆटु मेनि तीय–उसका बड़ा शरीर झुलसता है; नल् तॊटि–श्रेष्ठ कंकणधारिणी; चीतैयै निनैतॊरुम्–सीता का ज्यों-ज्यों स्मरण करता है; उयिर्त्तु–त्यों-त्यों लम्बी साँसें छोड़ते हुए; उयिर् तेय्वानै–जिसके प्राण क्षीण हो रहे थे, उसको । ३०४

स्वर्णनगरी अमरावती की वासिनी और श्रेष्ठ चुने हुए कंकणधारिणी अप्सराएँ उसके पास खड़े होकर स्वर्णमूठ के चँवर डुला रही थीं। उससे जो घूमकर पवन उठा उससे कल्पसुमन से शहद चूने लगा। ज्यों-ज्यों वे शहद-कण उसके शरीर पर गिरे, त्यों-त्यों उसका शरीर तप्त हो उठा। ज्यों-ज्यों वह सीताजी का स्मरण करता, त्यों-त्यों उसकी ठण्डी आहें निकलीं और उसके प्राण क्षीण होते जा रहे थे। (ऐसे रावण को हनुमान ने देखा) । ३०४

चान्द ळाविय कलवैमेर् र्वळ्वुरु तण्डमिळ्प् पशुन्दॆन्र्रल्
एन्दु कामवॆङ् गनलिनुक् कुमिळतट् टुरुत्तियि नुयिर्प्पेर्क्
कान्दण् मॆन्विरर् चनहिमेन् मनमुदर् करणङ्गळ् कडिदोडप्
पान्द णीङ्गिय मुळैयॆनक् कुळैवुरु नॆञ्जुपाळ् पट्टानै 305

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कलवै अळाविय–अनेक गन्धद्रव्य-मिश्रित; चान्तु मेल्–चन्दन के लेप पर; तवऴ्वुऱु–मन्द-मन्द बहनेवाली; तण् तमिऴ् पचुम् तॆन्ऱल्–शीतल मधुर मन्द दक्षिणी हवा (मलयपवन); एन्तु काम–सही हुई काम रूपी; वॆम् कन्नलिन्तुक्कु–गरम आग के लिए; उमिऴ् अतळ तुरुत्तियिन्–लगनेवाली चमड़े की भाथी की; उयिर्प्पु–हवा के समान; एऱ–लगने से; मन्नम् मुतल् करणङ्कळ्–मन आदि अंतःकरण; कान्तळ् मॆन् विरल् चन्नकि मेल्–'कांदळ' पुष्प-सदृश उँगली वाली देवी जानकी के प्रति; कटितु ओट–दौड़ते हैं, इसलिए; पान्तळ् नीङ्किय–सर्प जिससे बाहर चला गया हो उस; मुऴै अॆन्त–बाँबी के समान; कुऴैवुऱु नॆञ्चु–दुर्बल हुए हृदय के साथ; पाऴ् पट्टान्नै–छिन्नबल जो हो गया, उसको। ३०५

उसके शरीर पर विविध गन्ध-द्रव्य से मिश्रित चन्दन-लेप पड़ा था। उसके ऊपर से मधुर मलयपवन मन्द-मन्द बहा। वह रावण के अवलम्बित काम की अग्नि के लिए आँधी की हवा के समान लगा। तब उसके मन आदि अन्तःकरण 'कांदळ' के समान उँगली वाली जानकी के पास कूच कर गये। सर्पविहीन बाँबी के समान उसका हृदय सारहीन बन गया। उसका पिघला दिल दुर्बल हो गया। (ऐसा उसको)। ३०५

कॊण्डपे रूक्क मूळत् तिशैदॊऱुङ् गुऱित्तु मेन्नाळ्
मण्डिय शॆरुविन् मानत् तोळ्हळाल् वारि वारि
उण्डदु तॆविट्टिप् पेऴ्वाय्क् कडैहडो रॊऴुहिप् पायुम्
अण्डर्दम् बुहऴिऱ् ऱोन्ऱुम् वॆळ्ळॆयिऱ् ऱमैदि यान्नै 306

कॊण्ट–जो अपनाया; पेर् ऊक्कम्–बड़ा उत्साह; मूळ–और बढ़ा; मेल् नाळ्–प्राचीन दिन; तिचै तॊऱुम्–दिशा-दिशा में; कुऱित्तु–लक्ष्य बनाकर; मण्टिय चॆरुविन्–घने युद्ध में; मान तोळ्कळाल्–अपनी बड़ी भुजाओं से; वारि वारि उण्टतु–उठा-उठाकर जिसको खाया; पेऴ् वाय् तॆविट्टि–बड़ा मुख अघा गया; कटैकळ् तोऱुम्–मुख के कोनों से; ऒऴुकि–रिसकर; पायुम्–जो बहा; अण्टर् तम् पुकऴिल्–उस देवों के यश के समान; तोन्ऱुम्–जो लगे; वॆळ् ऎयिऱ्ऱु अमैतियान्नै–उन श्वेत (वक्र) दाँतों के साथ रहनेवाले को। ३०६

पहले बढ़ते उत्साह के साथ रावण ने दिग्विजय की और सभी दिशाओं में घमासान युद्ध किया। तब अपने बड़े हाथों से उसने उठा-उठाकर विजययश का अशन किया था। वह यश इतने अधिक परिमाण में अन्दर लिया गया कि उसका बहुत बड़ा मुख भी उसको समा नहीं सका और उसके दोनों कोरों से वह बहने लगा। उस यश के समान प्रकट रहे खड्ग दाँतों के साथ वह सो रहा था। (उसको)। ३०६

वॆळ्ळिवॆण् शेक्कै वॆन्दु पॊऱियॆऴ वॆदुम्बु मेन्नि
पुऴ्ळिवॆण् मॊक्कु ळॆन्नप् पॊडित्तुवेर् कॊदित्तुप् पॊङ्गक्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कळ्ळविळ् मालै तुम्बि वण्डॊडुङ् गरिन्दु शाम्ब
ऒळ्ळिय मालै तीय वुयिर्क्किन्ऱ वुयिर्प्पि नाऩै 307

वॆळ्ळि वॆण् चेक्कै–चाँदी के समान श्वेत शय्या; वॆन्तु–झुलसी; पॊऱि ऎळ्–अंगारे छूटे; वॆतुम्पुम् मेनि–तप्त शरीर में; वेर्–स्वेद; पुळ्ळि–बूँदों में; वॆण् मॊक्कुळ् ऎऩ्ऩ–श्वेत फफोलों के समान; पॊटिऩ्तु–छिटककर; कॊतिऩ्तु पॊङ्क–उबलकर उभरी; कळ् अविळ् मालै–मधु-चूती मालाएँ; तुम्पि वण्टॊटुम्–अलियों और भ्रमरों के साथ; करिन्तु चाम्प–जलकर मिटीं; ऒळ्ळिय मालै–उज्ज्वल (मुक्ता-) हार; तीय–झुलस गये; उयिर्क्किन्ऱ उयिर्प्पिनाऩै–ऐसा साँस छोड़नेवाले को। ३०७

उसकी शय्या चाँदी के समान श्वेत थी। उसके शरीर के ताप से वह जली और उससे अंगारे छूटने लगे। उसके तप्त शरीर पर स्वेदकण फफोले के समान खिल गये। उनसे गरमी उठी जिससे शहदस्रावी मालाएँ सूखकर राख बनीं। उनके साथ भ्रमर और अलिकुल झुलसे। हार भी राख बन जायँ, ऐसा जो साँसें छोड़ रहा था उसको (देखा हनुमान ने)। ३०७

तेविय नेमि यानिऱ् चिन्दैमॆय्त् तिरुवि नेहप्
पूविय लमळि मेलाप् पॊय्युऱक् कुऱङ्गु वानैप्
काविय़ङ् गण्णि तन्बाऱ् कण्णिय काद नीरिन्
आविय़ै युयिर्प्पॆऩ् ऱोदु मम्मियिट् टरैक्किन् ऱानै 308

ते इयल्–दिव्य; नेमियानिल्–चक्रधारी श्रीविष्णु के समान; चिन्तै–मन; मॆय् तिरुविन् एक–सच्ची श्रीसीता की ओर गया; पू इयल् अमळि मेला–पुष्पमय शय्या पर; पॊय् उऱक्कु–झूठी नींद; उऱङ्कुवानै–सोनेवाले को; कावि अम् कण्णि तम् पाल्–नीलकमल-सम आँख वाली के प्रति; कण्णिय कातल् नीरिन्–रखे हुए प्रेम के जल से; आविय़ै–अपने प्राणों को; उयिर्प्पु ऎऩ्ऱु ओतुम्–साँस कहलानेवाले; अम्मि इट्टु–सिल पर रखकर; अरैक्किन्ऱानै–जो पीस रहा था, उसको। ३०८

दिव्य चक्रधारी श्रीविष्णु के मन के समान इसका चित्त सच्ची श्री सीताजी के पास चला गया था। वह पुष्पकलित शय्या पर झूठी नींद सो रहा था। नीले कमल के समान आँखों वाली सीता के प्रति प्रेम रूपी जल सींच-सींचकर वह अपने प्राणों को साँस रूपी सिल पर रखकर पीस रहा था। (उसको—)। ३०८

मिहुन्दहै निनैप्पु मुऱ्ऱ वुरुवळिप् पट्ट वेलै
नहुन्दहै मुहत्तन् काद नडुक्कुऱु मनत्तन् वान्ऱेन्
उहुन्दहै मॊऴियाण् मुन्नि यॊरुवहै युळ्ळि नुळ्ळे
पुहुन्दन ळन्ऱो वॆऩ्ऱु मयिर्पुऱम् बॊडिक्किन् ऱानै 309

निनैप्पु मुऱ्ऱ मिकुम् तकै–(सीता का) स्मरण अधिक होता गया; उरु वळि पट्ट वेलै–(सीता का) रूप आँखों में लगा तब; कातल्–प्रेम से; नकुम् तकै मुकत्तन्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सहास मुख वाला; नटुक्कुरु मनत्तन्–कम्पित मन वाला; वान् तेन् उकुम् तकै–उत्कृष्ट मधु बरसाती-सी; मॊळियाळ्–बोली वाली; ऒरु वकै मुन्नि–एक तरह से सोचकर; उळ्ळिन् उळ्ळे पुकुन्तनळ् अन्रो–अपने मन में घुस गयी है न; ऎन्रु–ऐसा सोचकर; पुरम् मयिर् पॊटिक्किन्रानै–बाहर बालों को पुलकित पानेवाले को। ३०९

स्मरण की तीव्रता के बढ़ने से रावण की आँखों के पथ पर सीता का रूप आया। उसका मुख हास के साथ खिल उठा। और मन कम्पित हुआ। उसके रोंगटे खड़े हो गये शायद इस विचार से कि श्रेष्ठ मधुवर्षी बोली वाली वह देवी मेरे अन्दर घुस गयी। ३०९

मॆन्रॊळिर् कलाब मञ्जै वेट्कैमीक् कूर मेलुम्
कुन्रॊळित् तॊरुमाक् कुन्रि नरिदिर्चेर् कॊळ्है पोल
वन्रॊळिर् कॊर्रप् पॊर्रोळ् मणन्दिडु मडन्दै मार्हट्
कॊन्रॊळित् तॊन्रि नेह वरियदो ळॊळुक्कि· नानै 310

मॆल् तॊळिल्–सूक्ष्म कलात्मकता-से पूर्ण; कलाप मञ्जै-कलाप-सहित मयूर; वेट्कै मी कूर–इच्छा के बढ़ने से; कुन्रु ऒळित्तु–गिरि से उतरकर; मेलुम् ऒरु मा कुन्रिन्–और एक बड़े पर्वत पर; अरितिल् चेर् कॊळ्कै पोल–प्रयास करके जाने में असफल रह जाता जैसे; वन् तॊळिल्–कठिन कार्य करनेवाली; कॊर्रम्–विजयी; पॊन्तोळ् मणन्तिटुम्–सुन्दर भुजाओं पर आश्रित; मटन्तैमार्कट्कु–स्त्रियों के लिए; ऒन्रु ऒळित्तु–एक को छोड़कर; ऒन्रिन् एक–दूसरी पर चढ़ने में; अरिय–दुर्लभ; तोळ् ऒळुक्कितानै–भुजाओं की पंक्ति वाले को। ३१०

सूक्ष्म कलापूर्ण कलाप वाला मोर, जब इच्छा होती है तब एक गिरि से उतरकर दूसरे अधिक उच्च पर्वत पर जाने का श्रम करता है, पर असफल रह जाता है। उसी तरह उसकी विजयी और मनोरम भुजाओं की आश्रिता नारियाँ एक भुजा को छोड़कर दूसरी का अवलम्बन लेने में असमर्थ हैं। ऐसी भुजाओं की पंक्ति के स्वामी, उसको (हनुमान ने देखा)। ३१०

तळुवा निन्रु करुङ्गडन्मी दुदय गिरियिर् चुडर्तयङ्ग
ऎळुवा नॆन्न मिन्निमैक्कु मार्बत् तिहळु मियल्बिर्रा
मुळुवा नवरा युलहमॊरु मून्रुङ् गाक्कु मुदर्रेवर्
मळुवा णेमि कुलिशत्तिन् वाय्मै तुडैत्त वलियानै 311

तळुवा निन्रु–अपने (उदयाचल) से लगे रहे; करुम् कटल् मीतु–काले रंग के सागर-मध्य; उतय किरियिल्–उदयाचल पर; चुटर् तयङ्क–किरणों को प्रकाश फैलाने देते हुए; ऎळुवान् ऎन्न–उगनेवाले सूर्य के समान; मिन् इमैक्कुम्–विद्युत् जैसा चमकनेवाला; मार्पम्–वक्ष; तिकळुम् इयल्पिर्रु आ–शोभनेवाला बन; मुळु वानवराय्–पूर्ण रूप से देवी बनकर; ऒरु मून्रु उलकुम्–तीनों लोकों की; काक्कुम्–रक्षा करनेवाले; मुतल् तेवर्–प्रथम त्रिदेवों के; मळुवाळ्–परशु; नेमि–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुदर्शन चक्र; कुलिचत्तितत्—कुलिश के; वाय्मै—बल को; तुटैत्त—जिसने मिटाया; वलियातै—उस बलिष्ठ रावण को । ३११

रावण का वक्ष आभरणों से भूषित था, जो उसको घेरे लगे रहे काले सागर के मध्य रहनेवाले उदयाचल पर उगे सूर्य के समान आभा बिखेर रहे थे। और उस वक्ष ने पूर्ण देवत्व का भागी तीनों देवों के परशु, चक्र और कुलिश की सच्ची शक्ति को निकम्मा बना दिया था। ऐसे बलवान रावण को हनुमान ने देखा। ३११

तोडुळुद तार्वण्डुन् दिशैयातै मदन्दुदैन्द वण्डुऱ् जुऱ्ऱि
माडुळुद नऱुङ्गलवै वयक्कळिऱ्ऱिन् शिन्दुरत्तै माऱु हॊळ्ळक्
कोडुळुद मार्बातैक् कॊलैयुळुद वडिवेलिन् कॊऱ्ऱु मञ्जित्
ताडॊळुद पहैवेन्दर् मुडियुळुद तळुम्बिरुन्द शरणत्तातै 312

तार् तोटु—(रावण के वक्ष की) माला के फूलों को; उळुत वण्टुम्—जो कुरेद रहे थे, वे भ्रमर; तिचै यातै मतम्—दिग्गजों के मद पर; तुतैन्त वण्टुम्—जो अधिक मँड़रा रहे थे, वे भ्रमर; चुऱ्ऱि—मिलकर मँड़राते हुए; माटु उळुत—पार्श्वों में जिसकी कुरेद रहे थे; नऱुम् कलवै—वह चन्दन का लेप; वय कळिऱ्ऱिन्—सशक्त गजों के (मस्तक पर मले); चिन्तुरत्तै—सिन्दूर से; माऱुकॊळ्ळ—स्थान बदल ले ऐसा; कोटु उळुत मार्पातै—हाथी दाँतो से कुरेदे गये वक्ष वाले को; कॊलै उळुत—संहारक; वटि वेलिन्—तीक्ष्ण भाले की; कॊऱ्ऱम् अञ्चि—विजयशीलता से डरकर; ताळ् तॊळुत—पैरों पर जिन्होंने विनय की; पकै वेन्तर्—उन शत्रु राजाओं के; मुटि उळुत—किरीटों के रगड़ने से; तळुम्पिरुन्त—बने चिह्न जिन पर रहे; चरणत्तातै—उन चरणों वाले को। ३१२

उसने कभी दिग्गजों से युद्ध किया था। तब उसकी माला के फूलों को जो कुरेद रहे थे वे भ्रमर और दिग्गजों के मदजल पर जो मँड़रा रहे थे वे भ्रमर आपस में स्थान बदलते हुए मँड़राने लगे। तब दिग्गजों के मस्तक के सिन्दूर में और रावण के वक्षःस्थल के चन्दन-लेप में स्थानांतरण हुआ था। ऐसे, दिग्गजों के दाँतों द्वारा जिसका वक्ष खुद गया था उस रावण को; और जिसके चरणों में उसके संहारक तीक्ष्ण भाले से डरकर (उसके चरणों में) पड़े राजाओं के किरीटों के रगड़ने के दाग लगे थे उसे (हनुमान ने देखा)। ३१२

कण्डनन् काण्ड लोडुङ् गरुत्तिन्मुन् कालच् चॆन्दी
विण्डन कण्गळ् शिन्दि वॆडित्तन कोळु मेलुम्
कॊण्डदो रुरुव मायोन् कुऱळिनुङ् गुऱुहि निन्ऱान्
तिण्डलै पत्तुन् दोळ्ह ळिरुबदुन् वॆरिय नोक्कि 313

मायोत् कॊण्टतु—मायावी विष्णु ने जो लिया था; ओर् उरुव—उस रूप; कुऱळितुम्—वामन से; कुऱुकि निन्ऱान्—जो छोटा बना रहा; तिण् तलै पत्तुम्—

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुदृढ़ दसों सिर; तोळ्कळ् इरुपतुम्–बीसों कन्धे; ऍरिय–प्रकट; नोक्कि–देखकर; कण्टऩऩ्–समझा; काण्टल् ओटुम्–समझते ही; करुत्तिऩ् मुऩ्–उसके मन के पहले ही; कण्कळ्–उसकी आँखें; कीळुम् मेलुम्–नीचे और ऊपर; वॆटित्तऩ–विस्फारित हुईं; काल चॆम्ती–युगान्तकालीन अग्नि उगलकर; विण्टऩ–खुलीं। ३१३

हनुमान मायावी श्रीविष्णु के अपनाये वामन-रूप से भी छोटे रूप में था। उसने रावण को दस सिरों और बीस हाथों के साथ पड़ा हुआ देखा तो समझ लिया कि यही रावण है। यह ज्ञान पाते ही उसका मन क्रोध से फूटने लगा। उसके पहले ही उसकी आँखें ऊपर और नीचे विस्फारित हुईं। उनसे लाल आग निकली और वे और भी खुल गयीं। ३१३

तोळाऱ्ऱ लॆऩ्ऩाहु मेऩिऱ्कुऱ् जॊल्लॆऩ्ऩाम्
वाळाऱ्ऱऱ् कण्णाळै वञ्जित्ताऩ् मणिमुडियॆऩ्
ताळाऱ्ऱ लालिडित्तुत् तलैपत्तुन् दहर्त्तुरुट्टि
आळाऱ्ऱल् काट्टेऩे लडियेऩाय् मुडियेऩे 314

वाळ् आऱ्ऱल्–तलवार की शक्ति का प्रदर्शन करनेवाली; कण्णाळै–आँखों वाली (सीताजी) को; वञ्चित्ताऩ्–जो छल से हर लाया; मणि मुटि–उसके रत्न-किरीटों को; ऍऩ् ताळ् आऱ्ऱलाल्–अपने पैरों के बल से; इटित्तु–छितराकर; तलै पत्तुम्–दसों सिरों को; तकर्त्तु–तोड़ गिराकर; उरुट्टि–लुढ़काकर; आळ् आऱ्ऱल्–अपनी पुरुष-शक्ति; काट्टेऩेल्–प्रदर्शित नहीं करूँ तो; अटियेऩाय्–श्रीराम का दास; मुटियेऩे–नहीं बनूँगा; तोळ् आऱ्ऱल्–भुजबल; ऍऩ्ऩ आकुम्–क्या होगा; मेल् निऱ्कुम् चॊल्–आगे का यश-वचन; ऍऩ् आम्–क्या होगा। ३१४

तैश में आकर हनुमान ने यों सोचा। तलवार की-सी शक्ति रखनेवाली आँखों की स्वामिनी सीतादेवी को छल से हर लानेवाले इसके मणिमय किरीटों को अपने पैरों के बल से ठुकराकर, दसों सिरों को गिराकर भूमि पर लुढ़का न दूँ और इस तरह अपने बल का प्रदर्शन न कराऊँ तो श्रीराम का दास कहाँ रहूँगा मैं ! बना नहीं रहूँगा ! और मेरा बाहुबल क्या होगा ? मेरा भावी यश भी क्या होगा ? । ३१४

नडित्तुवाळ् तहैमैयदो वडिमैता नऩ्ऩुदलैप्
पिडित्तवा ळरक्कऩार् याऩ्कण्डुम् बिळैप्पारो
ऒडित्तुवाऩ् ऱोळऩैत्तुन् दलैपत्तु मुदैत्तुरुट्टि
मुडित्तिव्वूर् मुडित्ताऩ्मेऩ् मुडिन्दवा मुडिन्दॊळिह 315

अटिमै ताऩ्–सेवकाई; नटित्तु वाळ्–बनावटी जीवन के; तकैमैयतो–स्वभाव की है क्या; नऩ्ऩुतलै–सुन्दर भाल वाली देवी को; पिटित्त–जो पकड़ लाया; वाळ् अरक्कऩार्–क्रूर राक्षस; याऩ् कण्टुम्–मेरे दृष्टिगोचर होने के बाद भी; पिळैप्पारो–बचा रहे क्या; वाऩ् तोळ् अऩैत्तुम् ऒटित्तु–उसकी सभी बड़ी भुजाओं को तोड़कर; तलै पत्तुम्–दसों सिरों को; उतैत्तु उरुट्टि–लात मारकर लुढ़काकर; इव्वर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुटित्तु–इस नगर का नाश करके; मुटित्ताल्–कार्य पूरा करूँ तो; मेल् मुटिन्तवा–आगे जो होगा; मुटिन्तु ऑळिक–हो जाय। ३१५

सेवा क्या केवल अभिनय की वस्तु है ? यह क्रूर राक्षस, जिसने सुरम्य भाल वाली देवी को हर लिया, मेरी दृष्टि लगने के बाद भी जी जाए ? उसकी सारी बड़ी भुजाओं को तोड़ दूँगा; उसके सारे सिरों को लात मारकर लुढ़का दूँगा और इस नगर को ही मिटा दूँगा। आगे जो होगा वही हो ! । ३१५

ऍन्ऱूक्कि यॆयिऱुकडित् तिरुहरमुम् बिशैन्दॆळुन्दु
निन्ऱूक्कि युणर्न्दुरैप्पा नेमिया नरुळन्ऱाल्
ऑन्ऱूक्कि यॊन्ऱिळैत्त लुणर्वुडैयोर्क् कुरित्तन्ऱाल्
पिन्ऱूक्कि लिवैशालप् पिळैपयक्कु मॆन्नप्पॆयर्न्दान् 316

ऍन्ऱु–ऐसा कहते हुए; ऊक्कि–(मन में) उमंग से भरकर; ऍयिऱु कटित्तु–दाँत पीसकर; इरु करमुम् पिचैन्तु–दोनों हाथों को मलकर; ऍळुन्तु निन्ऱु–ऊँचा खड़ा होकर; ऊक्कि उणर्न्तु–फिर उद्बुद्ध हो विचारकर; उरैप्पान्–कहने लगा; ऑन्ऱु ऊक्कि–एक संकल्प करके; ऑन्ऱु इळैत्तल्–दूसरा कार्य करना; उणर्वुटैयोर्क्कु–समझदारों के लिए; उरित्तन्ऱु–उचित नहीं होगा; नेमियान्–चक्रधारी श्रीराम की; अरुळ् अन्ऱु–आज्ञा भी नहीं; पिन्–फिर; तूक्किल्–तोलकर देखें तो; इवै–ये कार्य; चाल–बहुत; पिळै–अपराधों को; पयक्कुम्–पैदा कर देंगे; ऍन्न–सोचकर; पॆयर्न्तान्–(शान्तचित्त हो) कोप छोड़ गया। ३१६

ऐसा कहते-कहते उसका मन उमंग से भर गया। उसने दाँत पीसे और हाथ मले। इस तरह उमड़ने के बाद वह थोड़ा शान्त हुआ। विचार कर कहने लगा कि एक कार्य करने को उत्साह से बढ़ना और मध्य में दूसरे कार्य में प्रवृत्त होना समझदार को नहीं सोहता। यह प्रभु श्रीराम की आज्ञा के अनुसार भी नहीं होगा। सोचकर देखा जाय तो ये कृत्य बहुत ही दुष्ट हैं; अपराध होंगे। तब वह कोप को लाँघ गया। ३१६

आलम्बार्त् तुण्डवन्बो लाऱ्ऱलमैन् दुळरॆनिनुम्
शीलम्बार्क् कुरियोर्ह ळॆण्णादु शॆय्बवो
मूलम्बार्क् कुऱिनुलहै मुऱ्ऱुविक्कु मुऱैतॆरिनुम्
कालम्बार्त् तिऱैवेलै कडवादक् कडलॊत्तान् 317

चीलम्–शील-चरित्र पर; पार्क्क उरियोर्कळ्–दृष्टि रखने अर्ह लोग; आलम् पार्त्तु उण्ट्वन् पोल्–हलाहल निकलता देख उसको जिन्होंने खाया, उन शिवजी के समान; आऱ्ऱल् अमैन्तुळर् ऍनिनुम्–शक्तिमन्त हों तो भी; ऍण्णातु–विचारे बिना; चॆय्पवो–कर्म करेंगे क्या; मूलम् पार्क्कुऱिन्–आधार देखना हो तो; उलकै मुऱ्ऱुविक्कुम् मुऱै–लोक-संहार का उपाय; तॆरिनुम्–जानने पर भी; कालम् पार्त्तु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समय देखकर; वेलै–समुद्र; इऱै कटवातु–उल्लंघन नहीं करता; अ कटल् ऑत्तान्–(हनुमान भी) उसी समुद्र के समान था। ३१७

शील-चरित्र का आचरण करना चाहनेवाले, हलाहल को क्षीरसागर से निकलता देखकर जिन्होंने पी लिया, उसके समान बलयुक्त होने पर भी फल का विचार किये विना कार्य करेंगे क्या ? इस तथ्य का आधार (मिसाल) देखना हो तो समुद्र को देखो। सारे प्रपञ्च को लीलने का सामर्थ्य रखने पर भी सागर समय की प्रतीक्षा करता रहता है और ज़रा भी तीर को पार नहीं करता। हनुमान उस सागर के समान था। ३१७

इऱ्ऱैप्पोर्प् पॅरुञ्जीऱ्ऱ मॅन्नोडु मुडिन्दिडुह्
कऱ्ऱैप्पूङ् गुऴलाळैच् चिऱैवैत्त कण्डहन्नै
मुऱ्ऱप्पोर् मुडित्तदॊरु कुरङ्गॅन्ऱान् मुन्नैवीरन्
कॊऱ्ऱप्पोर्च् चिलैत्तॊऴिऱ्कुक् कुऱैयुण्डा मॅन्नक्कुऱैन्दान् 318

इऱ्ऱै–अब; पोर्–युद्ध का; पॅरुम् चीऱ्ऱम्–बड़ा क्रोध; ऍन्नोटु मुटिन्तिटुक–मुझमें ही दब जाय; पूङ् कऱ्ऱै कुऴलाळै–कोमल घने केश वाली (सीता) को; चिऱै वैत्त–जिसने कारा में बन्द किया; कण्टकत्तै–उस कंटक को; ऒरु कुरङ्कु–एक वानर ने; मुऱ्ऱ–मिटाते हुए; पोर् मुटित्ततु–युद्ध किया; ऍन्ऱाल्–तो; मुन्नै वीरन्–श्रेष्ठ वीर के; कॊऱ्ऱप् पोर्–विजयदायी युद्ध करनेवाले; चिलै तॊऴिऱ्कु–धनु के कर्म पर; कुऱै उण्टाम्–बट्टा लगेगा; ऍन्न–सोचकर; कुऱैन्तान्–कोप को शान्त कर लिया। ३१८

अब जो युद्ध करने का बड़ा कोप मुझमें उठा वह मुझी में दब जाए ! सौम्य और घने केश वाली सीताजी को जिसने कारागृह में बन्द कर रखा, उस कण्टक को एक छोटे वानर ने मिटाते हुए युद्ध किया तो योद्धा वीर श्रीराम के युद्ध विजयशील धनु पर बट्टा लग जायगा। इस विचार से उसका कोप शान्त हो गया। ३१८

अन्निलैयान् पॅयर्न्दुरैप्पा नाय्वळैक्कै यणियिळैयार्
इन्निलैया नुडन्रुयिल्वा रुळरल्ल रिवनिलैयुम्
पुन्निलैय कामत्ताऱ् पुलर्हिन्ऱ निलैपूवै
नन्निलैयि नुळळॅन्नु नलन्नॅन्नक्कु नल्हुमाल् 319

अन् निलैयान्–वैसी स्थिति का; पॅयर्न्तु उरैप्पान्–फिर भी बोला; आय् वळै कै–चुने हुए कंकणधारी हस्तों की; अणि इळैयार्–और सुन्दर आभरणभूषिता स्त्रियाँ; इन् निलैयान् उटन्–इस स्थिति वाले के पास; तुयिल्वार् उळर् अल्लर्–सोती नहीं रहतीं; इवन् निलैयुम्–इसकी स्थिति भी; पुल् निलैय कामत्ताल्–अल्प काम-वासना से; पुलर्किन्ऱ निलै–सूखने की दशा है; पूवै–चिड़िया-सी सीता; नल् निलैयिल् उळळ्–कुशल-स्थिति में है; ऍन्नुम् नलन्–यह संतोष-समाचार; ऍन्नक्कु नल्कुम्–मुझे दे रही है। ३१९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस (शान्त) स्थिति में खड़ा रहा वह आगे यों बोला। चुने हुए कंकणों की धारिणी और आभरणभूषिता स्त्रियाँ इसके साथ सोती नहीं। इसकी स्थिति भी घृणायोग्य कामताप से तपनेवाली स्थिति है और यह बता रही है कि चिड़िया-सी सीता स्वस्थ दशा में हैं। ३१९

ऍन्ऱॆण्णि यीण्डिनियोर् पयनिल्लै यॆननिनैयाक्
कुन्ऱन्न तोळवन्ऱन् कॊडुङ्गोयिऱ् पुऱङ्गॊण्डान्
निन्ऱॆण्णि युन्नुवा नन्दोविन् नॆडुनहरिल्
पॊन्ऱुन्नु मणिप्पूणा ळिलळॆन्नप् पॊरुमुवान् 320

ऍन्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; इनि ईण्टु–अब यहाँ; ऒर् पयन् इल्लै–कोई काम नहीं; ऍन नितैया–ऐसा सोचकर; कुन्ऱु अन्न–पर्वत-सम; तोळवन् तन्–भुजाओं वाले रावण के; कॊटुङ् कोयिल्–गोलाकार महल को; पुऱम् कॊण्टान्–छोड़ जाकर; निन्ऱु ऍण्णि–खड़ा होकर सोचने; उन्नुवान्–विचारने लगा; अन्तो–हंत; इ नॆटु नकरिल्–बड़े नगर में; पॊन् तुन्नुम्–स्वर्ण में जड़ित; मणि पूणाळ्–रत्नमय आभरण-भूषिता; इलळ्–नहीं है; ऍन्न–यह सोचकर; पॊरुमुवान्–दुःख से भर गया। ३२०

इस तरह विचार करके उसने निश्चय किया कि अब यहाँ रहने से कोई लाभ नहीं। वह पर्वत-सम भुजा वाले रावण के गोलाकार महल को छोड़कर आगे गया। फिर चिन्ता उसे सताने लगी। हन्त ! शायद इस विशाल नगर में स्वर्ण-रत्न आभरणधारिणी सीताजी नहीं हैं। उसके मन में दुःख उमड़ आया। ३२०

कॊन्ऱानो कऱ्पऴियाक् कुलमहळैक् कॊडुन्दॊऴिलाल्
तिन्ऱानो वप्पुऱत्तो शॆऱित्तानो शिऱैयऱियेन्
ऒन्ऱानु मुणरहिलेन् मीण्डिनिप्पो यॆन्नुरैक्केन्
पॊन्ऱाद पॊऴुदॆनक्किक् कॊडुन्दुयरम् बोहादाल् 321

कऱ्पु अऴियाँ–अच्युतचरित्रा; कुल मकळै–श्रेष्ठ कुल-जाता सीता को; कॊटुम् तॊऴिलाल्–क्रूर घातक कर्म करके; कॊन्ऱानो–मार दिया क्या; तिन्ऱानो–खा लिया क्या; अ पुऱत्ते–उधर दूर पर; चिऱै चॆऱित्तानो–जेल में डाल दिया क्या; अऱियेन्–जान नहीं पाता; ऒन्ऱानुम् उणरकिलेन्–किसी भी विध समझ नहीं सकता; इनि–आगे; मीण्टु पोय्–लौट जाकर; ऍन् उरैक्केन्–क्या बताऊँ; इ कॊटुम् तुयरम्–यह कठोर दुःख; पॊन्ऱात पॊऴुतु–नहीं मरने पर; ऍनक्कु पोकातु–मुझसे दूर नहीं होगा। ३२१

(हनुमान पसोपेश में पड़ गया। उसे सन्देह होने लगा।) क्या रावण ने अच्युतशीला श्रेष्ठकुलकन्या सीताजी की हत्या करके मिटा दिया ? या उसे खा लिया ? या उनको सुदूर कहीं बन्द कर रखा है ? कुछ समझ में नहीं आता, जान नहीं पाता। जानने का कोई मार्ग भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नहीं दीखता ! अब लौट जाकर मैं क्या कहूँगा ? यह असफलता का दुःख मेरे मरे विना मुझे नहीं छोड़ेगा । ३२१

कण्डुवरु मॆन्ऱिरुक्कुङ् गाहुत्तन् कविक्कुलक्कोन्
कॊण्डुवरु मॆन्ऱिरुक्कुम् यान्मुडित्त कोळिदुवाल्
पुण्डरिह नयनत्तान् बालिनियान् पोवेनो
विण्डवरो डुडन्वीया दियान्वाळा विळिवेनो 322

काकुत्तन्–काकुत्स्थ श्रीराम; कण्टु वरुम्–देख आएगा; ऎन्ऱु इरुक्कुम्–ऐसा सोचते रहेंगे; कवि कुल कोन्–कपिकुलपति; कॊण्टु वरुम्–सीता को लिवा लायगा; ऎन्ऱु इरुक्कुम्–यह सोचते रहेंगे; यान् मुटित्त कोळ्–पर जो मैं कर चुका वह अनर्थ; इतु–यही है; पुण्टरिक नयनत्तान्–पुण्डरीकाक्ष; पाल्–के पास; यान् इनि पोवेनो–मैं अब जाऊँ क्या; विण्टवरोटु–जो मुझे कहकर इधर भेज चुके उनके साथ; यान्–मैं; उटन् वीयातु–समकाल में मरे विना; वाळा–वृथा; विळिवेनो–मरूँ क्या । ३२२

काकुत्स्थ श्रीराम यही सोचते रहेंगे कि मैं सीताजी को देखकर समाचार लाऊँगा । वानरकुलपति सोचते होंगे कि मैं सीताजी को लिवा लाऊँगा । पर मेरा किया हुआ अनर्थ यही है ! पुण्डरीकाक्ष श्रीराम के पास जाऊँ ? जिन्होंने मुझे साहस के वचन कहकर यहाँ भेजा उन वानर यूथपों के साथ मैं नहीं मरा । अब अकेले व्यर्थ मर जाऊँगा क्या ? । ३२२

कण्णियनाळ् कळिन्दुळवाऱ् कण्डिलॆनाऱ् कनङ्गुळैयै
विण्णडैदु मॆन्ऱारै याण्डिरुत्ति विरैन्दयान्
ऎण्णियदु मुडिक्कहिलेन् यान्मुडिया दिरुप्पेनो
पुण्णियमॆन् ऱॊरुपॊरुळॆन् नुळॆनिन्ऱुम् बोयदाल् 323

कण्णिय नाळ्–निर्धारित दिन; कळिन्तुळ–बीत गये; कनङ्कुळैयै कण्टिलॆन्–भारी कुण्डलधारिणी को देख नहीं पाया; विण् अटैतुम् ऎन्ऱारै–जो वहाँ स्वर्ग जाना (मरना) चाहते थे उन्हें; याण्टु–वहाँ; इरुत्ति–ठहराकर; विरैन्त–जो यहाँ शीघ्र आया; यान्–वह मैं; ऎण्णियतु मुटिक्ककिलेन्–सोचा पूरा नहीं कर सका; यान् मुटियातु इरुप्पेनो–मैं मरे विना रहूँ; पुण्णियम् ऎन्ऱु ऒरु पॊरुळ्–पुण्यभाग्य नाम की एक वस्तु; ऎन् उळै निन्ऱुम्–मेरे पास से; पोयतु–हट गयी । ३२३

सुग्रीव द्वारा निर्धारित दिन बीत गये । भारी कुण्डलधारिणी सीताजी के दर्शन नहीं हुए । महेन्द्र पर्वत पर वानर वीर मरने को उद्यत हुए । मैंने उनको वहीं रोका और मैं इधर शीघ्र आया । पर मैं अपने कार्य में असफल हो गया । मैं अपना अन्त किये विना रहूँगा क्या ? पुण्य-भाग्य नाम की वस्तु मेरे पास से दूर हो गयी । ३२३

एळुनू ऱोशनैशूळ्न् दॆयिल्हिडन्द विव्विलङ्गै
वाळुमा मन्नयिर्यान् काणाद मऱ्ऱिल्लै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऊऴियान् पॆरुन्देवि यॊरुत्तियुमे यान्गाणन्
आऴिता यिडराऴिक् किडैयेवीऴ्न् दऴिवेऩो 324

एऴु नूऱु ओचऩै–सात सौ योजन; चूऴ्नतु–घेराव के; ऍयिल्–प्राचीर के साथ; किटन्त–रहनेवाले; इ इलङ्कै–इस लंका नगर में; वाऴुम्–जीनेवाले; मा मन् उयिर्–श्रेष्ठ नित्य जीवन के प्राणियों में; यान् काणात इल्लै–जो मैंने नहीं देखा, वह कोई नहीं है; ऊऴियान्–युगान्त के बाद भी रहनेवाले देव की; पॆरुन् तेवि ऑरुत्तियुमे–आदरणीय देवी एक को; यान् काणेन्–मैंने नहीं देखा; आऴि ताय्–(जल का) समुद्र लाँघकर; इटर् आऴिक्कु इटैये–दुःख के समुद्रमध्य; वीऴ्नतु अऴिवेऩो–गिरकर मर जाऊँगा क्या। ३२४

सात सौ योजन लम्बे प्राचीर के अन्दर रहनेवाली इस लंका नगरी के जीवों में कोई नहीं बचा, जिसको मैंने नहीं देखा हो ! पर युगान्त में अमर रहनेवाले श्रीराम की आदरणीया देवी, एक ही दृष्टि में नहीं आयीं। जल का समुद्र पार करके दुःख-सागर में गिरकर मर जाऊँगा क्या ? । ३२४

वल्लरक्कन् ऱऩैप्पऱ्ऱि वाय्पत्तुङ् गुरुदिवरक्
कल्लरक्कुङ् गरदलत्ताऱ् काट्टॆन्ऱु काण्गेऩो
ऍल्लरक्कु मयिलार्वे लिरावणनु मिव्वूरुम्
मॆल्लरक्कि नुरुहिविऴ वॆन्दऴलिट् टेहेऩो 325

वल् अरक्कन् ततै–क्रूर राक्षस को; कल् अरक्कुम्–चट्टान को चूर कर सकनेवाले; कर तलत्ताल्–करतल से; वाय् पत्तुम्–दसों मुखों से; कुरुति वर–रक्त बहता आए ऐसा; पऱ्ऱि–पकड़कर; काट्टु ऍन्ऱु–दिखाओ उन्हें, कहकर; काण्केऩो–नहीं देखूँ क्या; ऍल्–सूर्य को; अरक्कुम्–त्रास देनेवाले; अयिल् आर्–तीक्ष्णता से युक्त; वेल् इरावणनुम्–भालाधारी रावण और; इ ऊरुम्–यह नगर; मॆल् अरक्किऩ्–कोमल लाख के समान; उरुकि विऴ–पिघलकर गिर जाएँ ऐसा; वॆम् तऴल् इट्टु–गरम आग लगाकर; एकेऩो–नहीं जाऊँगा क्या। ३२५

कितना चाहता हूँ कि पर्वत-चूर्णकारी अपने हाथों से निर्मम राक्षस रावण को उसके मुखों से रक्त बहने देते हुए पकड़ूँ और कहूँ कि सीताजी को दिखाओ और उसके दिखाने पर देवी को देख लूँ ! सूर्य को भी अपनी चमक से कष्ट देनेवाले तीक्ष्ण भाले के धारक रावण को और इस नगर को क्या आग लगा देकर नहीं जाऊँगा, ताकि वे लाख के समान पिघलकर गिर जाएँ ? । ३२५

वाऩवरे मुदलोरै विऩवुवॆऩेल् वल्लरक्कन्
ताऩॊरुव नुळऩाह वुरैशॆय्युन् दरुक्किलराल्
एऩैयव रॆङ्गुरैप्पा रॆव्वण्णन् दॆरिक्केऩो
ऊऩॊऴिय नीङ्गाद वुयिर्शुमन्द वुणर्विलियेऩ् 326

ऊन् ऒऴिय–यह शरीर छूट जाए ऐसा; नीङ्कात–जो नहीं जाता; उयिर्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस जान को; चुमन्त—जो ढो रहा हूँ; उणर्विलियेन्—वह भावहीन मैं; वानवरे मुतलोरै—देवों आदि से; वित्तवॅन्नेल्—पूछूँ तो; वल् अरक्कन् तान्—कठोर राक्षस; ऒरुवन्—एक; उळन् आक—जब रहता है तब; उरै चॅयुम् तरुक्कु इलर्—उनमें उत्तर देने का साहस नहीं; एन्नैयवर्—अन्य कोई; ऍङ्कु उरैप्पार्—कहाँ बताएँगे; ऍव् वण्णम् तॅरिक्केन्नो—कैसे जान पाऊँगा। ३२६

मेरा शरीर नहीं छूटता। प्राण नहीं निकलते और मैं उन्हें व्यर्थ ढो रहा हूँ। निर्लज्ज मैं देवों से पूछूँ तो उनमें क्रूर राक्षस की उपस्थिति में सच्ची बात बताने का साहस नहीं रहेगा। फिर और कोई कहाँ कहेंगे? फिर मैं कैसे जान लूँगा?। ३२६

ऍरुवैक्कु मुदलाय शम्बादि यिलङ्गैयिलत्
तिरुवैक्कण् डन्नॅन्नॅन्रा नवनुरैयुञ् जिदॅन्ददाल्
करुवैक्कु नॅडुनहरैक्. कडलिडैये करैयादे
उरुवैक्कॊण् डिन्नमुना नुळॅन्नाहि युळल्वेन्नो 327

ऍरुवैक्कु मुतलाय—गीधों के अधिपति; चम्पाति—सम्पाति (ने); अ तिरुवै—उन श्री को; इलङ्कैयिल् कण्टन्नॅन्—लंका में देखा; ऍन्ऱान्—कहा; अवन् उरैयुम् चितैन्ततु—उसका वचन वृथा हो गया; करु वैक्कुम् नॅटु नकरै—(ब्रह्मा द्वारा) जिसकी रत्न-गर्भ-नेमि-क्रिया की गयी उस बड़े नगर को; कटलिटैये करैयाते—समुद्र के बीच में गलाये विना; नान्—मैं; इन्नमुम्—अब भी; उरुवै कॊण्टु उळॅन् आकि—अपना शरीर धारण करनेवाला बना; उळल्वेन्नो—कष्ट उठाता रहूँ क्या। ३२७

गीधों के नायक सम्पाती ने तो कहा था कि मैंने सीताजी को लंका में देखा है। उसका कहा भी झूठा हो गया है। ब्रह्मदेव ने नीवँ के "गर्भ" में रत्न आदि रखने का रस्म अदा करके इस नगर की सृष्टि करायी थी। इस नगर को समुद्र में गलाये विना मैं अपना शरीर ढोता हुआ दुःख करता फिरूँगा क्या? ("करु वैक्कु" के गर्भ रखकर; गर्भ में रख कर दोनों अर्थ हैं। "नीवँ" डालते समय रत्न, स्वर्ण आदि रखकर उसके ऊपर दीवार चुनना प्रचलित है। उसके आधार पर इस पद्य में हमने ब्रह्मा द्वारा "गर्भ" न्यास का अर्थ किया है। अपने गर्भ में यानी अपने अन्दर सुरक्षित स्थान में जो लंका नगर सीताजी को रखता था उस नगर को —यह अर्थ भी संगत है ही।)। ३२७

वडित्तार्पूङ् गुळलाळै वानरिय मणणरियप्
पिडित्तानिव् वडलरक्क नॅनुमार्ऱम् बिळैयादाल्
ऍडुत्ताऴि यिलङ्गैयिनै यिरुङ्गडलि निट्टिवनै
मुडित्ताले यान्मुडिदन् मुरैमन्ऱ वॅन्नुरुणर्वान् 328

वटित्तु आर्—सजाए-सँवारे; पूङ् कुळलाळै—मनोरम केश वाली सीता को;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इ अटल् अरक्कन्–इस बलिष्ठ राक्षस ने; वान् अऱिय–स्वर्ग के लोक के जानते; मण् अऱिय–भूलोक के जाने; पिटित्तान्–ग्रस लिया; ऍन्नुम् मार्ऱम्–यह प्रवाद; पिऴैयातु–झूठा नहीं होगा; आऴि इलङ्कैयिन्नै–समुद्रवलयित लंका को; ऍट्टुतु–उत्पाटित कर; इरुम् कटलिन् इट्टु–विशाल सागर में डालकर; इवन्नै मुटित्ताले–इसका अन्त करूँ, तभी; यान् मुटितल्–मेरा मरना; मन्ऱ मुऱै–उत्तम क्रम होगा; ऍन्ऱु उणर्वान्–ऐसा विचार किया। ३२८

सँवारे-सँजोये सुन्दर केश वाली सीताजी को यह बलिष्ठ राक्षस देवों के और भूलोकवासियों के जाने, ग्रस लाया था। यह अपवाद दूर नहीं होगा। इसलिए समुद्रमध्य लंका को उखाड़ लेकर समुद्र में फेंक कर इसको भी मारकर मिटा दूँ तभी जाकर अपना अन्त कर लूँ, यही श्रेष्ठ मार्ग है। ३२८

ऍऴ्ऴुऱैयु मॊऴियामल् याण्डैयिनु मुळनाहि
उऴ्ऴुऱैयु मॊरुवन्नैप्पो लॆम्मरुङ्गु मुलाविनान्
पुऴ्ऴुऱैयु मानत्तै युऱनोक्किप् पुऱम्बेर्वान्
कऴ्ऴुऱैयु नऱुञ्जोलै ययलॊन्ऱु कण्णुऱ्ऱान् 329

ऍऴ् उऱैयुम्–तिल जहाँ रह सकता है, उस छोटे स्थान को भी; ऒऴियामल्–विना छोड़े; याण्टैयिनुम्–सर्वत्र; उळनाकि–विद्यमान होकर; उऴ् उऱैयुम् ऒरुवन्नैप् पोल्–अन्तर्यामी की तरह; ऍ मरुङ्कुम् उलाविनान्–सब स्थानों में घूमा; पुऴ् उऱैयुम्–जहाँ पक्षी रहे; मानत्तै–एक चैत्य को; उऱ नोक्कि–ध्यान से देखकर; पुऱम् पेर्वान्–बाहर जो आया; कऴ् उऱैयुम्–शहद जहाँ था; नऱुम् चोलै ऒन्ऱु–ऐसे सुगन्धपूर्ण एक उद्यान को; अयल्–पास में; कण् उऱ्ऱान्–(उसने) देखा। ३२९

वह अन्तर्यामी श्रीराम के समान तिल रखने का उतना स्थान भी नहीं छोड़कर सर्वत्र घूमकर आया। फिर एक चैत्य में गया जिसके गुम्बज में पक्षी रहते थे और उसे ध्यान से देखने के बाद बाहर गया। वहाँ उसके पास उसने एक उपवन को देखा, जो शहद और सुबास से भरा था। ३२९

3. काट्चिप् पडलम् (सीता-दर्शन पटल)

माडु निन्ऱवम् मणिमलर्च् चोलैयै मरुवित्
तेडि यिव्वऴिक् काण्बॆन्नेऱ् ऱीरुमॆन् शिऱुमै
ऊडु कण्डिलॆ नॆन्ऱपि नुरियदॊन् ऱिल्लै
वीडु वॆन्मर्ऱिव् विलङ्गन्मे लिलङ्गैयै वीट्टि 330

माटु निन्ऱ–पार्श्व में स्थित; अ मणि मलर् चोलैयै–उस सुन्दर पुष्पोद्यान को; मरुवि–जाकर; इ वऴि तेटि–यहाँ खोजकर; काण्पॆन्नेल्–देखूंगा तो; ऍन् चिऱुमै–मेरा दुःख; तीरुम्–दूर होगा; ऊटु–उसके अन्दर; कण्टिलॆन् ऍन्ऱ पिन्–नहीं देख पाया तो फिर; इ विलङ्कल् मेल् इलङ्कैयै–इस पर्वत की लंका को; वीट्टि–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाश करके; वीटुवॅन्-मैं भी मर जाऊँगा; मऱ्ऱु-और; उरियतु-करने योग्य; ऑन्ऱु-कुछ; इल्लै-नहीं। ३३०

हनुमान (चैत्य के) पास रहे उस वन में गया। उसने सोचा कि मैं यहाँ खोजूँगा। अगर देवी मिल गयीं तो मेरा कष्ट दूर हो जायगा। नहीं तो त्रिकूट पर्वतस्थ इस लंका को मिटाकर मैं भी खुद अपना अन्त कर लूँगा। कोई मेरा दूसरा करने योग्य कार्य नहीं है। ३३०

ऍन्ऱु शोलैपुक् कॅय्दिन निराहवन् ऱूदन्
ऑन्ऱि वानवर् पूमऴै पॊऴिन्दन रुवन्दार्
अन्ऱु वाळरक् कन्शिऱै यव्वऴि वैत्त
तुन्ऱ लोदितन् निलैयिनिच् चॊल्लुवान् ऱुणिन्दाम् 331

ऍन्ऱु-ऐसा निश्चय करके; इराकवन् तूतन्-श्रीराघव का दूत; चोलै पुक्कु-उद्यान में पहुँच; ऍय्तितन्-गया; वानवर्-देव; ऑन्ऱि-जमा होकर; पू मऴै-पुष्पवर्षा; पॊऴिन्तनर्-करके; उवन्तार्-नन्दित हुए; वाळ् अरक्कन्-तलवार-धारी राक्षस रावण ने; अन्ऱु-उस दिन; अ वऴि-वहाँ; चिऱै वैत्त-जिनको बन्दी बनाकर रखा था; तुन्ऱु अल् ओति तन्-घने काले केश वाली की; निलै-स्थिति; इनि-अब; चॊल्लुवान् तुणिन्ताम्-कहने को ठाना (हमने)। ३३१

प्रभु श्रीराघव का दूत हनुमान ऐसा सोचकर उस उद्यान में जा पहुँचा। सभी देवों ने मिलकर उस पर फूल बरसाये। और वे हर्षित हुए। हम (कवि) अब उन घने अन्धकार-सम केश वाली सीताजी का हाल बयान करने का साहस करते हैं, जिन्हें तलवारधारी रावण ने उस उपवन में बन्दी बना के रखा था। (साहस करना पड़ता है इसलिए कि देवी का दुःख असह्य है।)। ३३१

वन्म रुङ्गिल्वा ळरक्कियर् नॅरुक्कवङ् गिरुन्दाळ्
कन्म रुङ्गॅऴुन् दॅन्ऱुमोर् तुळिवरक् काणा
नन्म रुन्दुपो नलनऱ वुणङ्गिय नङ्गै
मॅन्म रुङ्गुल्पोल् वेऱुळ वङ्गमु मॅलिन्दाळ् 332

कल् मरुङ्कु-पत्थर में; ऍऴुन्तु-उगकर; ऍन्ऱुम्-कभी भी; ओर् तुळि-(जल की) एक बूँद भी; वर काणा-आती जो न देखती; नल् मरुन्तु पोल्-उस श्रेष्ठ ओषधि के समान; नलन् अऱ-सुभीते से रहित; उणङ्किय-जो मुरझायी रहीं; नङ्कै-देवी; मॅल् मरुङ्कुल् पोल्-क्षीण कमर के समान; वेऱु उळ अङ्कमुम्-अन्य अंगों में भी; मॅलिन्ताळ्-क्षीणता पाकर; मरुङ्किल्-पास में; वल्-कठोर; वाळ्-तलवारधारिणी; अरक्कियर् नॅरुक्क-राक्षसियों के त्रास देते; अङ्कु इरुन्ताळ्-वहाँ रहीं। ३३२

देवी उस श्रेष्ठ ओषधि के समान मुरझायी हुई थीं, जो पत्थर के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मध्य उगी थी और जिसे जल की एक बूँद भी देखने का भाग्य नहीं हुआ था। विगतसौन्दर्य उन देवी के सारे अंग उनकी ही कमर के समान क्षीण हो गये थे। उनके पास चारों ओर कठोर और तलवारधारिणी निशाचरियाँ रहकर उनको त्रास दे रही थीं। देवी उस स्थिति में पायी गयीं। ३३२

तुयिलॆ तक्कण्ग ळिमैत्तलु मुहिळ्त्तलुन् दुऱन्दाळ्
वॆयिलि डैत्तन्द विळक्कॆऩ वॊळियिला मॆय्याळ्
मयिलि यऱ्कुयिऩ् मळलैयाण् मानिळम् बेडै
अयिलॆ यिऱ्ऱुवॆम् बुलिक्कुळात् तहप्पट्ट दऩ्ऩाळ् 333

तुयिल् ऍऩ्त–नींद के नाम पर; कण्कळ् इमैत्तलुम्–पलक उठाना और; मुकिळ्त्तलुम्–बन्द करना; तुऱन्ताळ्–जिन्होंने छोड़ दिया था; वॆयिल् इटै–धूप में; तन्त विळक्कु ऍऩ्त–रखे हुए दीप के समान; ऒळि इला मॆय्याळ्–निष्प्रभ शरीर वाली; मयिल् इयल्–मयूराभा; कुयिल् मळलैयाळ्–कोकिल-मधुरभाषिणी; इळम् मान् पेटै–बाल-हरिणी; अयिल् ऍयिऱ्ऱु–तीक्ष्ण दाँत वाले; वॆम् पुलि कुळात्तु–भयंकर व्याघ्रों के झुण्ड में; अकप्पट्टतु अऩ्ऩाळ्–फँस गयी हो, ऐसी स्थिति में रहीं। ३३३

देवी ने नींद के नाम पर पलकें बन्द करना और खोलना छोड़ दिया था। वे आतप-मध्य दीप के समान निष्प्रभ-शरीर थीं। मयूर-सम सुन्दरी और कोकिल-सम मधुर-वाणी देवी उस बाल-हरिणी के समान लग रही थीं, जो तीक्ष्ण दाँत वाले क्रूर व्याघ्रों के झुण्ड के मध्य फँस गयी हो। ३३३

विळुदल् विम्मुदऩ् मॆय्युऱ वॆदुम्बुदल् वॆरुवा
ऍऴुद लेङ्गुद लिरङ्गुद लिरामऩै यॆण्णित्
तॊऴुदल् शोरुद ऱुळङ्गुद ऱुयरुळऩ् दुयिर्त्तल्
अऴुद लऩ्ऱिमऱ् ऱयलॊऩ्ऱुऱ् जॆय्हुव दऱियाळ् 334

विळुतल्–गिरना; विम्मुतल्–सिसकना; मॆय्–शरीर का; उऱ वॆतुम्पुतल्–बहुत तप्त होना; वॆरुवा–डरकर; ऍऴुतल्–उठना; एङ्कुतल्–तरसना; इरङ्कुतल्–रोना; इरामऩै ऍण्णि–श्रीराम का स्मरण करके; तॊऴुतल्–नमस्कार करना; चोरुतल्–शिथिल पड़ना; तुळङ्कुतल्–काँपना; तुयर् उळऩ्तु–दुःखपीड़ित हो; उयिर्त्तल्–निःश्वास छोड़ना; अऴुतल्–मुख खोलकर रोना; अऱ्ऱि–अलावा; मऱ्ऱु अयल् ऒऩ्ऱुम्–अन्य कोई काम; चॆय्कुवतु अऱियाळ्–करना नहीं जानतीं। ३३४

नीचे गिरना, सिसक-सिसककर रोना, शरीर का तप्त होना, डरकर फिर उठना, तरसना, दुःखी होकर रोना, श्रीराम का स्मरण करके नमस्कार करना, शिथिल पड़ना, काँपना, वेदना-विदग्ध हो निःश्वास छोड़ना, फूट-फूटकर रोना —इनको छोड़कर वे और कोई काम ही नहीं जानती हों, ऐसा व्यवहार कर रही थीं। ३३४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तऴैत्त पॊन्मुलैत् तडङ्गडन् दरुविपोऱ् ऱाऴप्
पुऴैत्त पोलनीर् निरन्दरम् बॊऴिहिन्ऱ पॊलिवाल्
इऴैक्कु नुण्णिय मरुङ्गुला ळिणैनॆडुङ् गण्गळ्
मऴैक्क णॆन्बदु कारणक् कुऱियिन्ऱाल् वहुत्ताळ् 335

इऴैक्कुम् नुण्णिय–सूत्र से भी महीन; मरुङ्कुलाळ्–कमर वाली; नीर्–(अश्रु) जल; पुऴैत्त पोल–छेदकर जाता हो जैसे; तऴैत्त–पुष्ट; पॊन् मुलै तटम्–स्वर्ण-स्तन-तट; कटन्तु–पार कर; अरुवि पोल्–सरिता के समान; ताऴ्–नीचे की ओर बहता है; निरन्तरम्–निरन्तर; पॊऴिकिन्ऱ–गिरता रहता है जो; पॊलिवाल्–उस दृश्य से; इणै नॆटुम् कण्कळ्–आयत अक्षद्वय को; मऴैक्कण् ऍन्पतु–'बरसाती आँखें' की उपाधि के; कारणक् कुऱियिन्ऱाल्–हेतुबोधक नाम के अनुकूल; वकुत्ताळ्–(देवी ने) बना लिया था। ३३५

सूत्र से भी क्षीण कटि वाली देवी का अश्रुजल स्तन-तटों पर छेदते-से गिरकर सरिता के समान बहा। उस दृश्य से "बरसाती आँखें" का नाम उनकी आँखों के लिए सार्थक साबित हो रहा था। "बरसाती आँखें या मेघ-सदृश आँखें" इस अर्थ में कही जाती हैं— 'कृपा बरसानेवाली शीतल आँखें'। इधर बरसात के समान आँसू बहता था। अतः यह नाम सार्थक बन गया। ३३५

❀अरिय मञ्जिन्ऱो डञ्जन मिवैमुद लदिहम्
करिय काण्डलुङ् गण्णिन्ऱीर् कडल्पुहक् कलुऴ्वाळ्
उरिय कादल रॊरुवरो डॊरुवरै युलहिल्
पिरिवॆ नुन्दुय रुरुवुहॊण् डालन्न पिणियाळ् 336

अरिय मञ्चित्तोटु—अपूर्व मेघों के साथ; अञ्चनम् मुतल्—अंजन आदि; इवै अतिकम् करिय—ऐसे अधिक काले पदार्थों को; काण्टलुम्–देखने पर; कण्णिन् नीर्–आँखों के अश्रु; कटल् पुक–सागर में प्रवेश कर जायँ ऐसा (इतना); कलुऴ्वाळ्–दुःख करती रोतीं; उलकिन्–इस संसार में; उरिय कातलर् ऒरुवरोटु ऒरुवरै–प्रणय-बद्ध प्रेमी एक-दूसरे से; पिरिवु ऍन्तम् तुयर्–वियोगजन्य दुःख (ने); उरुवु कॊण्टाल् अन्त—मानो रूप धरा हो ऐसा; पिणियाळ्–रोगपीड़ित लगीं। ३३६

सीताजी काले मेघों, अंजन आदि को देखतीं तो उनको श्रीराम का स्मरण हो आता। तब उनकी आँखों से आँसू जो बहता वह समुद्र में जाकर मिले इतना अधिक होता। देवी परस्पर वशवर्ती सच्चे प्रेमी-युगलों के वियोग-दुःख के साकार रोग के समान लग रही थीं। ३३६

तुप्पि नाऱ्चॆय्द कैयॊडु काल्पॆऱ्ऱ तुळिमञ्
जॊप्पि नान्ऱनै निनैतॊऱुम् नॆडुङ्गण्ग ळुहुत्त
अप्पि नाननैन् दरुन्दुय रुयिर्प्पुडै याक्कै
वॆप्पि नाऱ्पुलर्न् दॊरुनिलै युऱादमॆन् ऱुहिलाळ् 337

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुप्पित्ताल् चॅय्त–प्रवाल के बने; कैयॉटु काल् पॅऱ्ऱ–हाथों के साथ पैर पाये हुए; तुळि मऱ्चु–जलकण बरसानेवाले मेघों के; ऑप्पित्तान् तनै–समान रहनेवाले श्रीराम को; निनै तॉऱुम्–जब-जब स्मरण करतीं; नॅटुम् कण्कळ्—दीर्घ आँखों ने; उकुत्त–जो आँसू गिराये; अप्पित्ताल्–उस जल से; ननैन्तु–भीगकर; अरुम् तुयर्–कठोर दुःख के कारण; उयिर्प्पु उटै याक्कै–निःश्वास छोड़नेवाले शरीर के; वॅप्पित्ताल्–ताप से; पुलर्न्तु–सूखकर; ऑरु निलै उऱात–एक स्थिति में जो नहीं रहा; मॅन् तुकिलाळ्–वैसे महीन वस्त्रावृता । ३३७

जब कभी वे विद्रुमनिर्मित चरणों और हस्तों-सहित मेघ के समान शोभनेवाले श्रीराम का स्मरण करतीं तब उनकी आँखों से जल बहता। उस जल से उनका महीन वस्त्र भीग जाता। फिर गरम निःश्वास छोड़नेवाली उनके शरीर का ताप उस वस्त्र को सुखा देता। इस तरह वे ऐसे महीन वस्त्र से आवृत थीं, जो एक स्थिति में नहीं रह पाता था। ३३७

❀अरिदु पोहवो विदिवलि कडत्तलॅन् ऱञ्जिप्
परिदि वानवन् कुलत्तैयुम् बळियैयुम् बाराच्
चुरुदि नायहन् वरुम्वरु मॅन्बदोर् तुणिवाल्
करुदि मादिर मनैत्तैयु मळक्किन्ऱ कण्णाळ् 338

वितिवलि कटत्तल्–विधि के बल को परास्त करना; पोकवो अरितु–अगम है; ऍन्ऱु–ऐसा; अञ्चि–डरकर; चुरुति नायकन्–वेदनायक; परिति वानवन् कुलत्तैयुम्–सूर्यकुल का और; पळियैयुम्–उस पर (अपने कारण) लगे कलंक का; पारा–विचार करके; वरुम् वरुम्–आयँगे, आयँगे; ऍन्पतोर् तुणिवाल्—ऐसे एक निश्चय से; करुति–सोचकर; मातिरम् अनैत्तैयुम्–सारी दिशाओं को; अळक्किन्ऱ कण्णाळ्–नाप रही आँखों वाली। ३३८

वे दिशा-दिशा में दृष्टि डालकर श्रीराम के आने की बाट जोह रही थीं। उनका विचार था कि वेदनायक श्रीराम अवार्य विधि-बल को मानकर अपने सूर्यकुल के अपयश को दूर करने हेतु अवश्य और शीघ्र आ जायँगे। ३३८

कमैयि नाडिरु मुहत्तयऱ् कदुप्पुऱक् कदुविच्
चुमैयु डैक्कऱ्ऱै निलत्तिडैक् किडन्दतू मदियै
अमैय वायिऱ्पॅय् दुमिळ्हिन्ऱ वयिलॅयिऱ् ऱरविल्
कुमैयु ऱत्तिरण् डॉरुशडै याहिय कुळलाळ् 339

कमैयित्ताळ्–क्षमाशालिनी के; तिरुमुकत्तु अयल्–श्रीमुख के दोनों ओर; कतुप्पु उऱ–गालों पर लगे; कतुवि–पकड़कर; चुमै उटै–भारी; कऱ्ऱै–केश-लटों की राशि; निलत्तु इटै किटन्त–भूमि पर रहे; तू मतियै–पवित्र पूर्णचन्द्र को; अमैय–खब लगे; वायिल् पॅय्तु–मुख में निगलकर; उमिळ्किन्ऱ–जो उगलता है; अयिल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍयिऱ्ऱु—उस तीक्ष्णदाँत; अरविल्—(राहु) सर्प के समान; कुमै उऱ—पुष्ट; तिरण्टु—मिलकर; ऑरु चटै आकिय—एक ही जटा जो बने थे; कुऴलाऴ्—वैसे केश वाली। ३३९

क्षमाशीला श्री सीतादेवी के मुख के पार्श्व में भारी केशों की लटें मानो उनके गालों को ग्रसे हुए थीं। वे बटकर जटा की एक लड़ी बनी हुई थीं। उसे देखकर ऐसा लगा मानो तीक्ष्ण दाँत वाला राहु सर्प भूमि पर रहे अकलंक चन्द्र को निगलकर फिर उगल रहा हो ! । ३३९

आवि यन्दुहिल् पुनैवदॊऩ् ऱऩ्ऱिवे ऱऱियाऴ्
तूवि यऩ्ऩमॆऩ् पुनलिडैत् तोय्हिला मॆय्याऴ्
तेवु तॆण्कड लमिऴ्दुहॊण् डनङ्गवेऴ् शॆय्द
ओवि यम्बुहै युण्डदे यॊक्किऩ्ऱ वुरुवाऴ् 340

आवि अम् तुकिल्—प्राण-सम श्रेष्ठ वस्त्र; पुनैवतु ऑऩ्ऱु अऩ्ऱि—जो पहना है उस एक को छोड़; वेऱु अऱियाऴ्—दूसरा नहीं जानतीं; तूवि अऩ्ऩ—परों के समान; मॆऩ् पुनलिटै—स्वच्छ जल में; तोय्किला—जो नहीं डूबा; मॆय्याऴ्—वैसे शरीर वाली; तेवु तॆण् कटल्—दिव्य स्वच्छ क्षीरसागर से सम्भूत; अमिऴ्तु कॊण्टु—अमृत लेकर; अनङ्क वेऴ् चॆय्त—अनंगदेव द्वारा निर्मित; ओवियम्—चित्र; पुकै उण्टते ऑक्किऩ्ऱ—धूमाच्छन्न हो गया हो जैसे; उरुवाऴ्—आकार वाली। ३४०

सीताजी के पास एक ही वस्त्र था, जो पवित्र और शरीर के लिए प्राण-सम था। उनका शरीर (काग-) पर के समान स्वच्छ जल में स्नान किया हुआ नहीं था। उनका रूप-रंग ऐसा था मानो दिव्य स्वच्छ क्षीरसागर से उत्पन्न अमृत का मन्मथ द्वारा निर्मित चित्र धूमिल पड़ा हुआ हो। ३४०

❀ कण्डि लऩ्गॊला मिळवलुङ् गऩैहड ऩडुवण्
उण्डि लङ्गैयॆऩ् ऱुणर्न्दिल रुलहॆला मॊऱुप्पाऩ्
कॊण्डि ऱऩ्दमै यऱिन्दिल रामॆऩक् कुऴैयाप्
पुण्डि ऱऩ्ददि ऩॆरिनुऴैन् दालॆऩप् पुहैवाऴ् 341

इळवलुम्—लघुराज ने भी; कण्टिलऩ् कॊल्—(श्रीराम को) नहीं देखा है क्या शायद; कऩैकटल् नटुवण्—गरजनेवाले सागर-मध्य; इलङ्कै उण्टु—लंका है; ऍऩ्ऱु—ऐसा; उणर्न्तिलर् आम्—नहीं जाना है; उलकु ऍलाम्—सारे लोकों को; ऑऱुप्पाऩ्—त्रस्त करनेवाला रावण; कॊण्टु इऱन्तमै—लाया यह बात; अऱिन्तिलर् आम्—नहीं जानते; ऍऩ—यह सोचकर; कुऴैया—दुःख कर; पुण् तिऱन्ततिल्—खुले व्रण में; ऍरि नुऴैन्ताल् ऍऩ—आग घुसी हो जैसे; पुकैवाऴ्—वेदनायुक्त हुई। ३४१

सीताजी सोचने लगीं। शायद देवर लक्ष्मण ने मेरे नाथ को नहीं देखा क्या ? शायद दोनों गरजते सागर-मध्य रहनेवाली लंका की बात नहीं जानते। लोकनिकायत्रासक रावण के मुझे हर ले आने की बात शायद

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नहीं जानते ! ऐसी बात सोचती हुई वह इस तरह वेदनाविद्ध हुई मानो खुले व्रण में आग घुस गयी हो । ३४१

❀माण्डु पोयित्त नॅरुवैयर्क् करशन्मऱ् ऱवरो
डाण्डै यॅन्नित्तलै युरैप्पव रिल्लैयिप् पिऱप्पिल्
काण्ड लोवरि दॅन्ऱुळम् विम्मुऱुङ् गलङ्गुम्
मीण्डु मीण्डुपुक् कॅरिनुळैन् दालॅत्त मॅलिवाळ् 342

अॅरुवैयर्क्कु अरचन्–गीधों के राजा; माण्टु पोयित्तन्–मर गये शायद; अवरोटु–श्रीराम के पास; अॅन् निलै–मेरी स्थिति; आण्टै–वहाँ; उरैप्पवर् इल्लै–कहनेवाले नहीं रहे; इप्पिऱप्पिल्–इस जन्म में; काण्टलो अरितु–दर्शन दुर्लभ है; अॅन्ऱु–कहती हुई; उळम् विम्मुऱुम्–चिन्ता से भर जातीं; कलङ्कुम्–व्याकुल बनतीं; मीण्टुम् मीण्टुम्–फिर-फिर; अॅरि पुक्कु नुळैन्ताल् अॅन्त्त–आग (व्रण में) घुस गयी हो जैसे; मॅलिवाळ्–दुर्बल पड़तीं । ३४२

गीधों के राजा जटायु भी मर गये शायद ! उनके सिवा उधर कोई नहीं हैं, जो मेरे पति से मेरा हाल कहे । इसलिए इस जन्म में फिर उनसे मिलना असम्भव हो गया । यह सोचकर वे पीड़ा से भर जातीं । उनका मन आकुलित हो जाता । फिर-फिर आग घुस रही हो, ऐसा वे दुर्बल पड़ती जातीं । ३४२

अॅन्नै नायह त्तिळवलै यॅण्णिला वित्तैयेन्
शॊन्न वार्त्तैकेट् टऱिविल ळॅत्तत्तुऱन् दात्तो
मुन्नै यूळ्विनै मुडिन्ददो वॅन्ऱॅन्ऱु मुऱैयाल्
पन्नि वाय्पुलर्न् दुणर्वुतेयन् दारुयिर् पदैप्पाळ् 343

अॅण् इला वित्तैयेन्–अगणित पापकर्म जो कर चुकी उस मैंने; इळवलै चॊत्त–लघु भाई के प्रति जो कहे; वार्त्तै केट्टु–वे वचन सुनकर; नायकन्–मेरे नाथ; अॅन्नै–मुझे; अऱिवु इलळ्–बुद्धिहीन; अॅत्त–समझकर; तुऱन्तात्तो–छोड़ गये क्या; मुन्नै ऊळ्वित्तै–मेरे पूर्वकर्मों का; मुटिन्ततो–फल मिला है क्या; अॅन्ऱु अॅन्ऱु–ऐसा; मुऱैयाल्–क्रम से; पन्नि–कहकर; वाय् पुलर्न्तु–मुख सूखा; उणर्वु तेय्न्तु–सुध क्षीण हुई; आरुयिर् पतैप्पाळ्–प्राण छटपटाने लगें ऐसा, तड़प रही थीं । ३४३

मैं बड़ी पापिनी हूँ, जिसने असंख्यक पाप किये हैं । मैंने देवर से कुवचन कहे । शायद मेरे पति ने वह बात सुनकर मुझे मूर्ख समझकर त्याग दिया है क्या ? मेरे पूर्वजन्म के पाप ने अब फल दे दिया क्या ? वे क्रम से ऐसे विचार प्रकट करती हुई सूखते मुख और क्षीण होती सुध लेकर विकलप्राण हो रही थीं । ३४३

अरुन्दुम् मॅल्लड हारिड वरुन्दुमॅन् ऱळुङ्गुम्
विरुन्दु कण्डपो दॅन्नुऱु मोवॅन्ऱु विम्मुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मरुन्दु मुण्डुकॊल् यान्कॊण्ड नोय्क्कॆन्ऱु मयङ्गुम्
इरुन्द मानिलञ् जॆल्लरित् तॆऴुवुमाण् डॆऴादाळ् 344

इरुन्त मानिलम्–जहाँ बैठी थीं उस स्थान को; चॆल् अरित्तु ऍऴुवुम्–दीमकों ने खोखला बनाकर बिल बना लिया; आण्टु ऍऴाताळ्–तो भी वे वहाँ से नहीं उठीं; अरुन्तुम् मॆल् अटकु–भोग्य नरम भोजन को; आर्–कौन; इट–(पत्तल पर) परोसे और; अरुन्तुम्–श्रीराम खाएँ; ऍन्ऱु अऴुङ्कुम्–कहकर रोतीं; विरुन्तु कण्ट पोतु–अतिथि के आने पर; ऍन् उऱुमो–क्या करेंगे; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; विम्मुम्–दुःख से भर जातीं; यान् कॊण्ट नोय्क्कु–मेरे प्राप्त रोग का; मरुन्तुम् उण्टु कॊल्–औषध भी है क्या; ऍन्ऱु–यह सोचकर; मयङ्कुम्–बेहोश हो जातीं। ३४४

सीताजी जहाँ बैठी थीं, वहाँ दीमकों ने मिट्टी काटकर बाँबी बनायी थीं तो भी वे वहाँ से नहीं उठीं। वे इस प्रश्न को लेकर चिंतित थीं कि श्रीराम पत्तल पर किसके द्वारा परोसा भोजन खायँगे ? कोई अतिथि आया तो कितने दुःखी होंगे ? यह कहते हुए वे अकुलाहट से भर गयीं। 'मेरे दुःख-रोग की कोई दवा भी होगी क्या ?' —इस विचार पर वे सुध-बुध खो जातीं। ३४४

वन्गण् वञ्जनै यरक्करित् तुणैप्पहल् वैयार्
तिन्ब रॆन्निनिच् चॆयत्तक्क दॆन्ऱुदीर्न् दानो
तन्गु लप्पॊऱै तन्बॊऱै यॆन्नत्तणिन् दानो
ऍन्गो लॆण्णुव दॆन्नुमङ् गिराप्पह लिल्लाळ् 345

अङ्कु–वहाँ; इरा पकल् इल्लाळ्–रात-दिन का भेद जो नहीं करती थीं; वन्कण्–क्रूर; वञ्चनै–वंचक; अरक्कर्–राक्षस; इत्तुणै पकल्–इतने दिन; वैयार्–जीवित नहीं छोड़ेंगे; तिन्पर्–खा लेंगे; ऍन् इनि चॆयत्तक्कतु–अब क्या करने को है; ऍन्ऱु तीर्न्तानो–ऐसा सोचकर विरत हो गये हैं क्या; तन् कुलप्पॊऱै–अपने कुल की स्वाभाविक क्षमाशीलता को; तन् पॊऱै ऍन्न–अपनी क्षमाशीलता बनाकर; तणिन्तानो–कोप छोड़ शान्त हो गये क्या; ऍन् कॊल् ऍण्णुवतु–मैं क्या सोचूँ; ऍन्नुम्–ऐसा सोचकर दुःखी होतीं। ३४५

सीताजी दिन और रात में कोई भेद किये विना सदा रोती रहीं। वे सोचतीं— क्रूर और ठग राक्षस लोग सीता को उतने दिन जीवित नहीं छोड़ेंगे। उसे मारकर खा लेंगे अवश्य। अब क्या करने को है मेरे पास —ऐसा सोचकर श्रीराम ने मुझे त्याग दिया क्या ? या अपने कुल के भूषण-रूप क्षमा को अपनाकर रोष को त्याग दिया है ? क्या सोचूँ ? वे ऐसा-ऐसा सोचती हुई दुःख-मग्न हो रही थीं। ३४५

पॆऱ्ऱ तायरुन् दम्बियुम् बॆयर्त्तुम्वन् दॆय्दिक्
कॊऱ्ऱ मानहर्क् कॊण्डॆऴुन् दार्हळो कुऱित्तुच्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चोऱ्ऱ वाण्डॅला मुऱैन्दऩ्ऱि यऩ्नहर्त् तुऩ्ऩान्
उऱ्ऱ दुण्डॅऩाप् पडरुळ्ऩ् दुऱादऩ वुऱुवाळ् 346

पॅऱ्ऱ तायरुम्–जननी माताएँ; तम्पियुम्–छोटे भाई भरत; पॅयर्त्तुम् वन्तु अॅय्ति–फिरकर आ पहुँचकर; कॊऱ्ऱ मा नकर् कॊण्टु–विजयी नगर को लेकर; अॅळुन्तार्कळो–गये हैं क्या; कुऱित्तु चॊऱ्ऱ–निर्धारित कर कहे हुए; आण्टु अॅलाम्–पूरे वर्ष; उऱैन्तु अऩ्ऱि–(जंगल में) रहे विना; अ नकर् तुऩ्ऩाऩ्–उस नगर को नहीं जायँगे; उऱ्ऱतु उण्टु–(इसलिए) कुछ आफ़त होगी; अॅऩा–ऐसा विचार करके; पटर् उळ्ऩ्तु–दुःख में पड़कर; उऱातऩ–अभूतपूर्व; उऱुवाळ्–कष्ट से पीड़ित हुईं। ३४६

उधेड़बुन में लगकर वे आगे सोचतीं कि क्या उनकी जननी माताएँ और अनुज भरत फिर से वहाँ आकर उन्हें विजयशील बड़े नगर अयोध्या लिवा ले गये हैं ? पर श्रीराम तो अवधि पूरा होते तक अयोध्या नहीं लौटेंगे। तब इसलिए लगता है कि कुछ (अनिष्ट) हो अवश्य गया है। इस विचार के आते ही वे बहुत उद्विग्न हो गयीं और उन्हें अभूतपूर्व दुःख सताने लगा। ३४६

मुरऩॆ ऩत्तहु मॊय्म्बिऩोर् मुऩ्बॊरु दवर्पोल्
वरऩुम् मायमुम् वञ्जमुम् वरम्बिल वल्लार्
पॊरनि हळ्ऩ्ददोर् पूशलुण् डामॆऩप् पॊरुमाक्
करऩॆ दिर्न्ददु कण्डऩ ळामॆऩक् कवल्वाळ् 347

मुरऩ् अॅऩत्तकुम्–मुर आदि; मॊय्म्पिऩोर्–सबल; मुऩ् पॊरुतवर् पोल्–पहले श्रीविष्णु से जो लड़े उनके समान; वरम्पु इल वरऩुम्–असीम वर-प्राप्त; मायमुम् वञ्चमुम्–माया और वञ्चना में; वल्लार्–समर्थ; पॊर–लड़ने आए हों; निकळ्ऩ्ततोर् पूचल् उण्टाम्–और युद्ध हुआ हो; अॅऩ–सोचकर; पॊरुमा–दुःखी होकर; करऩ् अॅतिर्न्ततु–खर ने जो सामना किया; कण्टऩळ् आम् अॅऩ–उसको (फिर से) प्रत्यक्ष मानो देखतीं; कवल्वाळ्–वैसे पीड़ित होतीं। ३४७

'मुर' नामक राक्षस आदि अनेक बलवानों ने जैसे (श्रीविष्णु से) युद्ध किया था वैसे अगाध वर, माया और वंचना के धनी राक्षस आकर भिड़ गये हैं; इसलिए घमासान युद्ध हो गया है ! यह सन्देह मन में उठा तो वे ऐसे उद्विग्न हुईं, मानो अभी खर के साथ हुए युद्ध को फिर से देख रही हों। ३४७

❀ तॆम्म डङ्गिय शेणिलङ् गेहयर्, तम्म डन्दैनिऩ् ऱम्बिय दामॆऩ
मुम्म डङ्गु पॊलिन्द मुहत्तिऩऩ्, वंम्म डङ्गलै युऩ्ऩि वॆदुम्बुवाळ् 348

केकयर् तम् मटन्तै–केकयपुत्री ने; तॆम् मटङ्किय–शत्रु जिसको देखकर फिरकर भाग जाएँ वह; चेण् निलम्–श्रेष्ठ (कोसल) देश; निऩ् तम्पियतु आम्–तुम्हारे भाई का होगा; अॅऩ–कहा तो; मु मटङ्कु–तिगुना; पॊलिन्त मुकत्तिऩऩ्–शोभायमान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुख जिनका बना उन; वॆम् मटङ्कलै–बहादुर सिंह (श्रीराम) को; उन्ऩि–स्मरण करके; वॆंतुम्पुवाळ्–मुरझा जातीं। ३४८

केकयराजकुमारी (कैकेयी) ने जब कहा कि यह कोसल देश, जिससे शत्रु लोग डर से मुड़कर भाग जाते हैं, तुम्हारे भाई का होगा तब श्रीराम का श्रीमुख तिगुना शोभायमान हुआ। ऐसे सबल केसरी का स्मरण करके वे मुरझायीं। ३४८

❀मॆय्त्ति रुप्पद मेवॆन्ऱ पोदिनुम्, इत्ति रुत्तुऱन् देहॆन्ऱ पोदिनुम्
शित्ति रत्तिऩ लर्न्दशॆन् दामरै, ऒत्ति रुन्दमु हत्तिनै युन्नुवाळ् 349

मॆय् तिरुप्पतम्–अक्षय श्रीमन्त राजा के पद को; मेवु ऎन्ऱ पोतिनुम्–ले लो, कहने पर भी; इ तिरु–यह श्री; तुऱन्तु–छोड़कर; एकु–जाओ; ऎन्ऱ पोतिनुम्–यह कहते समय भी; चित्तिरत्तिऩ् अलर्न्त–चित्र में के खिले; चॆन्तामरै–लाल कमल की; ऒत्तिरुन्त–समानता करनेवाले; मुकत्तिनै–मुख की सुन्दरता को; उन्नुवाळ्–बार-बार स्मरण करतीं। ३४९

जब उनसे कहा गया कि सच्ची राज्यश्री को तुम अपना लो; या यह कहा गया कि इस श्री को त्यागकर चले जाओ, दोनों हालतों में चित्रलिखित सुन्दर कमल के समान उनका श्रीमुख खिला ही था। उस श्रीमुख की सुन्दरता का स्मरण करके उनका मन कचोट उठा। ३४९

तेङ्गु कङ्गैत् तिरुमुडिच् चॆङ्गणान्, वाङ्गु कोल वडवरै वार्शिलै
एङ्गु मात्तिरत् तिऱ्ऱिरण् डाय्विऴ, वीङ्गु तोळै निनैत्तु मॆलिन्दुळाळ् 350

कङ्कै तेङ्कु–गंगा जिस पर ठहरी हैं; तिरुमुटि–ऐसी जटाधारी और; चॆङ्कणान्–अरुणाक्ष शिवजी के; वाङ्कु कोल–झुके हुए सुन्दर; वटवरै वार् चिलै–उत्तर के मेरुपर्वत के समान लम्बे धनुष को; एङ्कु मात्तिरत्तु–जब जनक आदि संशय करके दुःखी हो रहे थे तब; इऱ्ऱु इरण्टाय् विऴ–टूटकर दो टुकड़े बनकर गिरे तब; वीङ्कु तोळै–जो कन्धे वर्धित हुए उन कन्धों को; निनैन्तु–सोचकर; मॆलिन्तुळाळ्–दुबली-पतली हुई थीं। ३५०

गंगाधारी जटाजूट वाले और अरुणाक्ष शिवजी के झुके हुए उत्तर के मेरु-समान रहे धनु को क्या कोई उठा सकेगा ? इस सन्देह में जब जनक आदि पड़कर चिन्तित रहे, तब जिन भुजाओं ने उसे दो टुकड़े बनाते हुए तोड़ दिया उन फूले कन्धों का स्मरण करके वे दुर्बल हो गयी थीं। ३५०

इन्ऩ	लम्बर	वेन्दर्	कियऱ्ऱिय
पऩ्ऩ	लम्बदि	ऩालायि	रम्बडै
कऩ्ऩऩ्	मून्ऱिऱ्	कळप्पडक्	काल्वळै
विऩ्ऩ	लम्बुहळ्ऩ्	देङ्गि	वॆंदुम्बुवाळ् 351

अमृपर वेन्तऱ्कु–देवराज को; इऩ्ऩल् इयऱ्ऱिय–जिन्होंने त्रास दिया; पल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नलम्–उन अनेक विशेषताओं से युक्त; **पतितालायिरम् पटै**–चौदह सहस्र सेनाओं को; **कन्नल् मून्ऱिल्**–तीन (घड़ियों) 'नाळियों' के अन्दर; **कळप्पट**–खेत रहे ऐसा; **काल् वळै**–पार्श्वों में झुके; **विल् नलम्**–धनु के युद्ध की कुशलता की; **पुकळ्न्तु**–प्रशंसा करते हुए; **एङ्कि**–तरसकर; **वॅतुम्पुवाळ्**–मुरझायीं। ३५१

सीताजी ने श्रीराम के खर-दूषण आदि के साथ युद्ध का स्मरण किया। उनका धनुष— जिसने देवेन्द्र को भी त्रास देनेवाली और विशेष रूप से विविध गुणों से युक्त चौदह सहस्र सेनाओं का एक ही मुहूर्त में नाश किया। वे उसकी प्रशंसा करतीं और तरसतीं और मुरझा जातीं। ३५१

❀आळ नीर्क्कङ्गै यम्बि कडाविय, एळै वेडनुक् कॅम्बिनिन् ऱम्बिनी
तोळन् मङ्गै कॉळुन्दि यॅनच्चॉन्न, वाळि नण्बिनै युन्नि मयङ्गुवाळ् 352

आळम् नीर् कङ्कै–गहरे जल की गंगा पर; **अम्पि कटाविय**–नावें चलानेवाले; **एळै वेटनुक्कु**–साधारण निषाद से; **अॅम्पि**–मेरा छोटा भाई; **निन् तम्पि**–तुम्हारा छोटा भाई है; **नी तोळन्**–तुम मेरे मित्र हो; **मङ्कै**–यह देवी; **कॉळुन्ति**–तुम्हारी भाभी है; **अॅन चॉन्न**–ऐसा जो कहा; **नण्पिनै**–उस मित्रता को; **उन्नि**–सोचकर; **मयङ्कुवाळ्**–दुःख-विह्वल होतीं.। ३५२

(सीताजी ने प्रभु की शक्ति का स्मरण किया। अब वे शील व सौलभ्य गुण का स्मरण करती हैं।) गहरी गंगा नदी पर नाव चलानेवाला था गरीब निषाद गुह। श्रीराम ने उससे कहा कि यह जो मेरा छोटा भाई लक्ष्मण है, वह तुम्हारा छोटा भाई है। तुम मेरे मित्र हो। यह देवी तुम्हारी भाभी है। उस मित्रता का स्मरण करके सीताजी व्याकुल हुईं। ३५२

मॅय्न्त तादै विरुप्पिन नीट्टिय, कैन्त लङ्गळैक् कैहळि नीक्किवे
रुय्न्त पोदु तरुप्पैयि लॉण्पदम्, वैन्त वैदिहच् चॅय्है मनक्कॉळ्वाळ् 353

मॅय्न्त तातै–सत्यज्ञानी जनक के; **विरुप्पिनन्**–चाह के साथ; **नीट्टिय कै तलङ्कळै**–बढ़ाये (सीता के) करतलों को; **कैकळिन् नीक्कि**–उनके करों से अलग करके; **वेऱु उय्न्त पोतु**–दूसरे स्थान पर जब (उन्हें) रखा तब; **तरुप्पैयिल्**–दर्भ पर; **ऑळ् पतम् वैन्त**–उज्ज्वल उनके चरण को जो पकड़कर रखा; **वैतिक चॅय्कै**–उस वैदिक-क्रिया को; **मनक्कॉळ्वाळ्**–मन में लातीं। ३५३

(अब वे अपने विवाह के समय हुए रस्मों का स्मरण करती हैं।) विवाह के अवसर पर सत्यज्ञ जनक ने बड़ी ही उत्कंठा तथा प्यार के साथ सीताजी के हाथों को अपने हाथों में ले उनको आगे किया। श्रीराम ने जनक के हाथों को दूर कर सीताजी के करतलों को ग्रहण कर लिया। फिर सीता के दक्षिण चरण को पकड़कर सिल पर रखे दर्भ पर रखवाया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(यह रस्म सप्तपदी कहाता है।) उस वैदिक अनुष्ठान का अब सीताजी ने स्मरण किया। ३५३

❀उरङ्गौ डेमलर्च् चॅन्नि युरिमैशाल्
वरङ्गौळ् पॊन्मुडि तम्बि वनैन्दिलन्
तिरङ्गु शॅञ्जडै कट्टिय शॅय्विनैक्
किरङ्गि येङ्गिय देण्णि यिरङ्गुवाळ् 354

तम्पि–भाई भरत ने; उरिमै चाल्–अपने हक़ में आये; वरम् कॊळ्–वर द्वारा प्राप्त; उरम् कॊळ् पॊन् मुटि–सारयुक्त स्वर्णकिरीट को; ते मलर्–सुन्दर पुष्पों से अलंकृत; चॅन्नि–सिर पर; वनैन्तिलन्–धारण नहीं किया; तिरङ्कु–बटी हुई; चॅञ्चटै कट्टिय–श्रेष्ठ जटा जो बना ली; चॅय् विनैक्कु–उस कृत्य पर; इरङ्कि–दुःखी होकर; एङ्कियतु–श्रीराम जो व्याकुल हुए; ॲण्णि–वह सोचकर; इरङ्कुवाळ्–व्यग्र होतीं। ३५४

उनके भाई भरत ने वर द्वारा प्राप्त अधिकार होते हुए भी श्रेष्ठ स्वर्ण-निर्मित किरीट धारण नहीं किया; वरन् बटी हुई जटा धर ली। यह देखकर श्रीराम अत्यन्त दुःखी हो उठे। प्रभु का वह काम सोचकर देवी व्यग्र हुईं। ३५४

परित्त शॅल्व मॊऴियप् पडरुनाळ्
अरुत्ति वेदियर् कान्गुल मीन्दवन्
करुत्ति नाशै करैयिन्मै कण्डिरै
शिरित्त शॅय्है निनैन्दऴि शिन्दैयाळ् 355

परित्त–जिसका भरण-भार उठा लिया गया; चॅल्वम्–उस राज्यश्री को; ऒऴिय–दूर कर; पटरुम् नाळ्–जब वन को गये उस दिन; अरुत्ति वेतियर्कु–याचक ब्राह्मण को; आन् कुलम् ईन्तु—गोवृन्द दान करके; अवन् करुत्तिन् आचै–उसके मन की इच्छा को; करै इन्मै–अपारता को; कण्ट–देखकर; इरै चिरित्त चॅय्कै–प्रभु जो थोड़ा हँसे वह कार्य; निनैन्तु–सोचकर; अऴि चिन्तैयाळ्–मरनेवाले मन की बनीं। ३५५

श्रीराम अपने भरण में आये राज्य को त्यागकर जब वनगमन की तैयारी में थे, तब लालसा से भरे (त्रिजट नाम के) ब्राह्मण को गोदान किया। तब उस ब्राह्मण की बड़ी लालसा को देखकर प्रभु को हँसी आ गयी। तब वे किञ्चित हँसे। उस हँसी का स्मरण करके देवी खिन्नमना हुईं। (यह समाचार अयोध्याकाण्ड में नहीं कहा गया है। उसके लालच की कल्पित कहानी यों है— उस ब्राह्मण ने कहा कि मैं अपनी छड़ी फेंकूँगा। वह जहाँ गिरती है वहाँ तक की गायों का समूह मुझे दान में दिये जायँ। श्रीराम ने उसकी आकृति देखकर सोचा कि यह आखिर कितनी दूर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तक फेंकेगा ? पर उस शरीर से दुर्बल ब्राह्मण के लालच का बल इतना था कि छड़ी अप्रतीक्षित दूरी पर जा गिरी। तब श्रीराम मुस्करा उठे।) । ३५५

मऴुवि नान्मुन् मन्नरै मूवॆऴु
पॊऴुदु नूऱिप् पुलवुऱु पुण्णिन्नीर्
मुऴुहि नान्ऱवम् मॊय्म्बॊडु मूरिविल्
तऴुवु मेन्मै निनैन्दुयिर् शाम्बुवाळ् 356

मऴुवितान्–परशुधर; मन्नरै–राजाओं को; मुन्–पहले; मू ऍऴु पॊऴुतु–तीन के सात (इक्कीस) बार; नूऱि–मारकर; पुलवु उऱु–मांसगन्ध; पुण्णिन् नीर्–रक्त में; मुऴुकिनान्–जिसने स्नान किया; तवम्–उसके तप को; मॊय्म्पु ऑटु–उसके बल के साथ; मूरि विल्–सशक्त उसके धनुष को; तऴुवु–हस्तगत कर लेने का; मेन्मै निनैन्तु–श्रेष्ठ सामर्थ्य सोचकर; उयिर् चाम्पुवाळ्–प्राण जिनके क्षीण हो रहे थे, वे। ३५६

सीताजी अपने नाथ की परशुराम-विजय की स्मृति करती हैं। परशुधर ने राजाओं को इक्कीस पीढ़ियों तक लगातार मारकर उनके मांसगन्धयुक्त रक्त में स्नान किया था। श्रीराम का उनके तप के साथ बल और धनु को भी हथिया लेना सोचकर वे क्षीणप्राण हुईं। ३५६

एह वाळियव् विन्दिरन् शॆम्मन्मेल्
पोह वेवि यदुकण् पॊडित्तनाळ्
काह मुऱुमोर् कण्णिल वाक्किय
वेह वॆन्ऱियैत् तन्ऱलै मेऱ्कॊळ्वाळ् 357

एक वाळि–एक ही बाण; अ इन्तिरन् चॆम्मल् मेल्–उस इन्द्रकुमार (जयन्त) पर; पोक एवि–जा लगे ऐसा प्रेषित करके; अतु–वह बाण; कण् पॊटित्त नाळ्–जिस दिन उसकी आँख का नाश कर गया उस दिन; काकम् मुऱुम्–सारे कागों को; ओर् कण् इल–एक आँख से हीन; आक्किय–जो बना दिया; वेक वॆन्ऱियै–उस शीघ्र की विजय को; तन् तलै मेल् कॊळ्वाळ्–अपने सिर चढ़ाकर गर्व का जो अनुभव करतीं। ३५७

श्रीराम ने इन्द्र के प्रिय पुत्र जयन्त पर एक बाण प्रेरित किया और उससे उसकी ही एक आँख नहीं गयी, बल्कि सारे कौए काने हो गये। अतिशीघ्र सम्पन्न उस विजय की बात का स्मरण करके सीताजी इतना हर्ष मानीं, मानो उस विजय के गौरव का भार उन्हीं के सिर पर लगा हो। ३५७

वॆव्वि रादनै मेवरुन् दीविनै
वव्वि माऱ्ऱरुञ् जाबमुम् माऱऱिय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अव्वि रामनै युन्नित्तन् नारुयिर्
शॅव्वि रादुणर् वोय्न्दुड ऱेम्बुवाळ् 358

वॅम् विरातनै—क्रूर विराध को; मेवु अरुम्तीवित्तै—उस पर लगे कठोर पाप को; वव्वि—पकड़कर दूर करके; मारुऱु अरुम्—अवार्य; चापमुम् मारुऱिय—शाप का भी निवारण जिन्होंने किया; अ इरामनै—उन श्रीराम का; उन्नि—स्मरण करके; तन् आरुयिर्—अपने प्राणों के; चॅव् इरातु—स्थिर न रहते; उणर्वु ओय्न्तु—सुध-बुध खोकर; उटल् तेम्पुवाळ्—शरीर को कँपाते हुए सिसकतीं। ३५८

विराध भयंकर राक्षस था। उस पर लगे कठोर पाप का और शाप का निराकरण किया श्रीराम ने। उन श्रीराम को बार-बार सोचकर अस्थिर-प्राण हुईं; बेसुध हुईं और शरीर कँपाती हुई रोयीं। ३५८

इरुन्दन्न डिरिशडै यॅन्नु मिन्शॊलाल्
तिरुन्दिना ळॊऴियमऱ् ऱिरुन्द तीविनै
अरुन्दिऱ् लरक्किय रल्लु नळ्ळुऱप्
पॊरुन्दलुन् दुयिन्ऱैक् कळिपॊ रुन्दिनार् 359

इरुन्तनळ्—(सीताजी पर प्रेम रखती) रहनेवाली; तिरिचटै ॲन्नुम्—त्रिजटा नाम की; इन् चॊलाल्—मधुर भाषण से; तिरुन्तिनाळ्—श्रेष्ठ जो बनी थी; ऒऴिय—उसको छोड़कर; मऱु इरुन्त—अन्य जो रहीं; ती वित्तै—क्रूर-कर्म; अरुम् तिऱल्—अधिक बल रखनेवाली; अरक्कियर्—राक्षसियाँ; अल्लुम्—रात के; नळ् उऱ—मध्य में; पॊरुन्तलुम्—आते ही; तुयिल् नऱैक्कळि—निद्रा रूपी नशे में; पॊरुन्तिनार्—मग्न हो गयीं। ३५९

तब उनके साथ त्रिजटा नाम की राक्षसी थी, जो हितभाषिणी थी। उसे छोड़ जो अन्य क्रूर और नृशंसकारिणी राक्षसियाँ थीं वे सब, अर्द्धरात्रि के होने पर निद्रा के नशे में डूबी रहीं। ३५९

आयिडैत् तिरिशडै यॅन्नु मन्बिनाल्
तायिनु मिनियव डन्नै नोक्किनाळ्
तूयनी केट्टियॅन् ऱुणैवि यामॅना
मेयदोर् कट्टुरै विळम्बन् मेयिनाळ् 360

आयिटै—तब; तिरिचटै ॲन्नुम्—त्रिजटा नाम की; अन्पिनाल्—वात्सल्य में; तायिनुम् इनियवळ् तन्नै—माता से भी बढ़कर प्यारी को; नोक्किनाळ्—देखा (सीता ने); ॲन् तुणैवि आम्—मेरी सखी; तूय नी—पवित्र तुम; केट्टि—सुनो; ॲना—कहकर; मेयतु ओर् कट्टुरै—योग्य एक वचन; विळम्पल् मेयिनाळ्—कहने लगीं। ३६०

तब सीताजी ने माँ से भी प्यारी त्रिजटा को देखकर उससे कहा कि मेरी साथिन, पवित्र त्रिजटा! सुनो। फिर वे अर्थ-भरा संकल्प-वचन कहने लगीं। ३६०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नलन्दुडिक् किन्ऱदो नान्शॅय् तीविनै
शलन्दुडित् तिन्नमुन् दरुव दुण्मैयो
पॊलन्दुडि मरुङ्गुलाय् पुरुवङ् गण्णुदल्
वलन्दुडिक् किन्ऱिल वरुव दोर्हिलेन् 361

पॊलन् तुटि–स्वर्ण-डमरू-सम; मरुङ्कुलाय्–कमर वाली; पुरुवम् कण् नुतल्–भौंहें, आँखें और भाल; वलम् तुटिक्किन्ऱिल्–दायीं ओर नहीं फड़कते; नलम् तुटिक्किन्ऱतो–सौभाग्य आने को है क्या; नान् चॅय् तीविनै–मेरा कृत कुकर्म; तुटित्तु–उठकर; इन्नमुम् चलम् तरुवतु–और दुःख देने को है; उण्मैयो–वही होगा क्या; वरुवतु ओर्किलेन्–भविष्य नहीं जानती। ३६१

स्वर्ण के डमरू-सी कटि वाली त्रिजटा ! मेरी दाहिनी भौंह, आँखें और मेरा दाहिनी तरफ़ का भाल नहीं फड़कता। (यानी बायें अंग फड़कते हैं।) क्या कोई हित आनेवाला है ? या मेरा पूर्वकृत पाप जल्दी आकर कष्ट देने को है ? क्या आनेवाला है, समझ नहीं पाती। ३६१

मुनियॊडु मिदिलैयिन् मुनैवन् मुन्दुनाळ्
तुनियऱु पुरुवमुन् दोळु नाट्टमुम्
इनियन तुडित्तन वीण्डु माण्डॅन
ननितुडिक् किन्ऱन वायि नल्हुवाय् 362

मुनैवन्–मेरे नायक; मुनियॊटु–(विश्वामित्र) मुनि के साथ; मितिलैयिन् मुन्तु नाळ्–जब मिथिला में आये उस दिन; तुनि अऱु–अकलंक; पुरुवमुम् तोळुम् नाट्टमुम्–भौंहें, भुजाएँ और आँखें; इनियन तुटित्तन–सुखद रूप से फड़कीं; ईण्टुम्–अब भी; आण्टु अॅन–वहाँ के समान; नति तुटिक्किन्ऱन–खूब फड़कती हैं; वायिल् नल्कुवाय्–हेतु बताओ। ३६२

मेरे नाथ जब विश्वामित्र ऋषि के साथ मिथिला पधारे, उस दिन मेरी अनिन्द्य भौंह, भुजा और आँख (बायीं) हित का संकेत देती हुई फड़की थीं। अब भी मिथिला में जैसे बायें अंग अच्छे फड़कते हैं। इसका हेतु क्या है ? बताओ। ३६२

मऱन्दनॅ निदुवुमोर् माऱ्ऱङ् गेट्टियाल्
अऱन्दरु शिन्दैयॅन् नावि नायहन्
पिऱन्दपार् मुळुवदुन् दम्बि येपॅऱत्
तुऱन्दुहान् पुहुन्दनाळ् वलन्दु डित्तदे 363

मऱन्ततॅन्–भूल गयी; इतुवुम् ओर् माऱ्ऱम् केट्टि–यह भी एक बात सुनो; अऱम् तरु चिन्तै–धर्मचित्त; अॅन् आवि नायकन्–मेरे प्राणनाथ; पिऱन्त पार्–जन्म-सिद्ध अधिकार जिस पर था, उस भूमि को; मुळुवतुम्–पूर्ण; तम्पिये पॅऱ–कनिष्ठ भ्राता को लेने देते हुए; तुऱन्तु–त्यागकर; कान् पुकुन्त नाळ्–जिस दिन जंगल आये उस दिन; वलम् तुटित्ततु–मेरे दाहिने अंग फड़के। ३६३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मैं तुमसे एक बात कहना भूल गयी थी। वह बात भी सुन लो। धर्ममन मेरे प्राणनाथ जन्मसिद्ध-अधिकार से प्राप्त अपने राज्य को अपने भाई को लेने देकर जिस दिन वन में पधारे, उस दिन मेरे दाहिने अंग फड़के थे। ३६३

नञ्जनै यान्वनत् तिऴैक्क नण्णिय
वञ्जनै नाळ्वलन् दुडित्त वाय्मैयाल्
ऍञ्जलिल् नन्मैया लिडन्दु डिक्कुमाल्
अञ्जलॅन् रिरङ्गुवा यडुप्पदि यार्दॅन्ऱाळ् 364

नञ्चु अनैयान्–विष-सदृश; वञ्चनै इऴैक्क–वंचक कार्य करने; वनत्तु नण्णिय नाळ्–जिस दिन जंगल में आया उस दिन; वलम् तुटित्त वाय्मैयाल्–दाहिने अंग जो फड़के उस तथ्य से; ऍञ्चलिल् नन्मैयाल्–अक्षुण्ण हित के लिए; इटम् तुटिक्कुमाल्–बाएँ फड़कते हैं, इसलिए; अञ्चल्–मत डरो; ऍन्ऱु इरङ्कुवाय्–ऐसा तुम सहानुभूति करो तदर्थ; अटुप्पतु—जो आयगा; यातु–वह कौन होगा; ऍन्ऱाळ्–(सीताजी ने) पूछा। ३६४

जिस दिन विष-सा क्रूर रावण प्रवंचना करने वन में आया था तब मेरे दाहिने अंग फड़के थे। उस बात से, और आज बायें अंग फड़कते हैं इस बात से, तुम क्या समझती हो? मुझ पर तरस खाकर 'मत डरो' का आश्वासन देना साध्य बनाता हुआ आनेवाला हित क्या हो सकता है?। ३६४

ऍन्ऱलुन् दिरिशडै यियैन्द शोबनम्
नन्ऱिदु नन्ऱॅऩा नयन्द शिन्दैयाळ्
उन्ऱुणैक् कणवनै युऱुव दुण्मैयाल्
अन्ऱियुङ् गेट्टियॅन् ऱऱैदत् मेयिऩाळ् 365

ऍन्ऱलुम्–ऐसा कहते ही; तिरिचटै–त्रिजटा; इयैन्त चोपनम्–आया शोभन; नन्ऱितु नन्ऱु–अच्छा होगा अच्छा; ऍऩा–कहकर; नयन्त चिन्तैयाळ्–(सीता के प्रति) स्निग्ध मन वाली; उन् तुणै–अपने साजन; कणवनै–नाथ को; उऱुवतु–प्राप्त करो; उण्मै–यह अवश्य होगा; अन्ऱियुम्–और भी; केट्टि ऍन्ऱु–सुनो कहकर; अऱैतल् मेयिऩाळ्–कहने लगी। ३६५

देवी के यों कहते ही त्रिजटा ने उत्तर में कहा। यह सब तुम्हारे शोभन के लक्षण हैं! बहुत ही मंगलकारी लक्षण हैं। यह कहकर सीता के प्रति प्यार रखनेवाली वह बोली— तुम अपने संगी प्यारे नाथ को प्राप्त कर लोगी यह निश्चित है। और भी सुनो। वह आगे कहने लगी। ३६५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन्निऱम् बशप्पऱ वुयिरु यिर्प्पुऱ
इन्निऱत् तॅन्निशै यिनिय नण्बिनाल्
मिन्निऱ मरुङ्गुलाय् शॅवियिन् मॅळ्ळवे
पॊन्निऱत् तुम्बिवन् दूदिप् पोयदाल् 366

मिन् निऱ–विद्युत्-से रंग वाली; मरुङ्कुलाय्–कमर वाली; उन् निऱम् पचप्पु–आपके रंग में हुई (विरह-जन्य) विवर्णता; अऱ–दूर हो; उयिर् उयिर्प्पु उऱ–प्राणवन्त रहें इसलिए; इन् निऱ–मधुर स्वभाव और; तॅन् इचै–मीठे स्वर का; पॊन् निऱ तुम्पि–स्वर्णवर्ण भ्रमर; वन्तु–आपके पास आकर; चॅवियिल्–आपके कान में; इनिय नण्पिनाल्–मधुर मित्रता से; मॅळ्ळ ऊति–धीमे-धीमे फूंककर; पोयतु–गया। ३६६

विद्युत्-सी (रंग में और आकार में) कटि वाली ! मैंने एक स्वर्णवर्ण भ्रमर को आपके कान के पास आकर फूंकते हुए (गुंजारते हुए) देखा। उसका आशय था कि आपके शरीर में विरहजन्य पाण्डुरता जो फैली है, वह दूर होगी और आपके प्राण नहीं जायँगे। वह भ्रमर मधुर और हितकर प्रेम के साथ धीरे-धीरे गुंजार कर गया। ३६६

आयदु तेरिनुन् नावि नायहन्, एयदु तूदुवन् दॅदिर्द लुण्मैयाल्
तीयदु तीयवर्क् कॅय्द रिण्णमॅन्, वायदु केळॅन मऱित्तुङ् गूऱुवाळ् 367

आयतु तेरिन्–उस पर सोचें तो; उन् आवि नायकन्–आपके प्राणनाथ द्वारा; एयतु–प्रेषित; तूतु वन्तु–दूत आकर; ऍतिर्तल्–भेंट करेगा; उण्मै–वह ध्रुव है; तीयवर्क्कु–बुरों को; तीयतु ऍय्तल्–हानि मिलना; तिण्णम्–निश्चित है; ऍन् वायतु केळ्–मेरा समाचार भी सुनो; ऍन्–कहकर; मऱित्तुम्–फिर भी; कूऱुवाळ्–कहने लगी। ३६७

उसके कृत्य पर विचार किया जाय तो यह निश्चित है कि आपके प्राणपति द्वारा प्रेषित एक दूत आयगा और आपसे भेंट करेगा। खलों का नाश निश्चित है। और भी मुझ पर बीते समाचार सुनिए। ३६७

तुयिलिलै यादलिऱ् कनवु तोन्ऱल
अयिल्विऴि यन्नैकण् णमैय नोक्किनेन्
पयिल्वन पळुदिल पण्बि नाण्डन
वॅयिलिलु मॅय्यन विळम्बक् केट्टियाल् 368

अयिल् विऴि अन्नै–भाले-सी आँख वाली माते; तुयिल् इलै आतलिल्–अनिद्र हो, इसलिए; कनवु तोन्ऱल–स्वप्न नहीं आते; कण् अमैय–खूब आँखों में प्रकट; नोक्किनेन्–मैंने देखा; पयिल्वन–देखे सो; पळुतु इल–व्यर्थ नहीं जायेंगे; पण्पिन् आण्टन–श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण हैं; वॅयिलिलुम् मॅय्यन–सूर्य जैसे सत्य हैं; विळम्प केट्टि–कहूँगी, सुनो। ३६८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भाले-सी आँखों वाली माते ! आप कभी सोती नहीं। अतः स्वप्न होता नहीं। पर मैंने खूब दृष्टि लगाकर देखा। मेरे स्वप्न में हुए समाचार व्यर्थ नहीं जायँगे। और वे श्रेष्ठ गुणों से भरे हैं। सूर्य से भी सत्य हैं। कहती हूँ, सुनिए। ३६८

अॅण्णॅय्दऩ् मुडितॊऱु मिऴुहि येऱिये
तिण्णॅडुङ् गऴुदॅपेय् पूण्ड तेरिऩ्मेल्
अण्णल्वे लिरावण ऩरत्त वाडैयऩ्
नण्णिऩऩ् ऱॆऩ्बुलम् नवैयिल् कऱ्पिऩाय् 369

नवै इल् कऱ्पिऩाय्–अनिंद्य पातिव्रत्यशीले; अण्णल् वेल्–सम्मान्य भाले का; इरावणऩ्–रावण; अरत्त आटैयऩ्–रक्तवस्त्र पहनकर; अॅण्णॅय्–तेल को; तऩ् मुटि तॊऱुम्–अपने सभी सिरों पर; इऴुकि–ऐसा लगाये हुए कि वह झरता आये; कऴुतै पेय् पूण्ट–खरों और भूतों के जुते; तिण् नॅटुम्–सबल और बड़े; तेरिऩ् मेल् एऱि–रथ पर चढ़कर; तॆऩ् पुलम्–दक्षिण दिशा में; नण्णिऩऩ्–जा पहुँचा। ३६९

निर्दोष पातिव्रत्यशीले ! सम्मान्य भालाधारी है रावण। वह रक्त-वर्ण वस्त्र धारण कर, अपने सिरों पर तेल कसरत से मले, खरों और पिशाचों के जुते सबल और बड़े रथ पर सवार हो दक्षिण दिशा में जा रहा था। (मैंने ऐसा स्वप्न देखा)। ३६९

मक्कळुञ् जुऱ्ऱमुम् मऱ्ऱु ळोर्हळुम्
पुक्कऩ रप्पुलम् बोऩ्द दिल्लैयाल्
चिक्कऱ् नोक्किऩॆऩ् ऱीय विऩ्ऩमुम्
मिक्कऩ केट्कॆऩ विळम्बऩ् मेयिऩाळ् 370

मक्कळुम् चुऱ्ऱमुम्–उसके पुत्र और बन्धु; मऱ्ऱुळोर्कळुम्–और अन्य परिवार; अ पुलम्–उसी दिशा को; पुक्कऩर्–चले गये; पोऩ्ततु इल्लै–लौटना नहीं हुआ; चिक्कु अऱ्–अबाध रूप से; नोक्किऩॆऩ्–देखा; तीय–ये बुरे हैं; इऩ्ऩमुम् मिक्कऩ–और भी अधिक बुरे; केट्कु अॆऩ–सुनो कहकर; विळम्पल् मेयिऩाळ्–कहने लगी। ३७०

रावण के पुत्र, बन्धु-बान्धव और परिवार भी उसी दिशा में गये। वे लौट आये नहीं। अबाध रूप से मैंने देखा। ये अवश्य खलों के पक्ष में अहितकारी है। इससे भी अधिक बुरा समाचार भी है, सुनिए। ३७०

आण्डहै यिरावणऩ् वळर्क्कु मव्वऩल्
ईण्डिल पिऱन्दवा लिऩङ्गॊळ् शॆऱ्जिदल्
तूण्डरु मणिविळक् कऴलुऩ् दॊऩ्मऩै
कोण्डदाल् वाऩवे ऱॆऱियक् कीऴैनाळ् 371

आणटकै–पुरुषश्रेष्ठ; इरावणऩ् वळर्क्कुम्–रावणपालित; अ अऩल्–वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अग्नि; ईण्टिल–वर्द्धित नहीं हुई; इत़म् कॊळ्–झुण्डों में; चॆम् चितल्–लाल दीमकें; पिऱन्त–निकलीं; तूण्टु अरु–जिनकी बत्तियों को तेज़ करने की आवश्यकता न हो ऐसे; मणि विळक्कु–मणिमय दीप; अऴलुम्–जिनमें जलते हैं; तॊल् मत़ै–प्राचीन प्रासाद; वात एऱु–आकाश के वज्र के; ऍऱिय–प्रहार से; कीऴै नाळ्–उषाकाल में; कीण्टतु–टूट गये। ३७१

रावण पुरुषश्रेष्ठ है। वह अपने घर में अग्नि का पालन करता है। वह वैदिकी अनुष्ठान की अग्नि वर्धित नहीं हुई पर बुझ चली। उस स्थान में लाल दीमकों के झुण्ड पैदा हो आये। जिन दीपकों को उकसाने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती, वे मणिमय दीप प्रासादों में जलते रहते थे। वे प्रासाद आकाश के वज्र के उन पर गिरने से, सवेरे-सवेरे, टूट गिरे। ३७१

पिडिमदम् पिऱन्दत़ पिऱङ्गु पेरियुम्
इडियॆऩ मुऴङ्गिऩ विरट्ट लिऩ्ऱिये
तडियुडै मुहिऱ्कुल मिऩ्ऱित् ताविल्वाऩ्
वॆडिपड वदिरुमा लुदिरु मीऩॆलाम् 372

पिटि मतम् पिऱन्तत़–हथिनियाँ मत्त हुईं; पिऱङ्कु पेरियुम्–श्रेष्ठ भेरियाँ; इरट्टल् इऩ्ऱिये–विना पिटे ही; इटि ऍऩ–वज्र के समान; मुऴङ्कित–नर्दित हुईं; तटि उटै–तडित्-सह; मुकिल् कुलम् इऩ्ऱि–मेघ समूह के विना ही; ताबु इल् वाऩ्–निराधार आकाश; वॆटि पट–दलक जाय ऐसा; अतिरुम्–थर्रा उठा; मीऩ् ऍलाम्–नक्षत्र, सभी; उतिरुम्–गिर गये। ३७२

(यह विपरीत बात देखने में आयी कि) हथिनियाँ मदमत्त हो गयीं। श्रेष्ठ भेरियाँ विना बजाये ही नर्दन कर उठीं। निराधार आकाश, तडित्-सहित मेघों के विना ही फट गया और थर्रा गया। नक्षत्र सब चू गये। ३७२

विऱ्पह लिऩ्ऱिये यिरवु विण्डऱ
ऍऱ्पह लॆऱित्तुळ दॆऩ्ऩत् तोऩ्ऱुमाल्
मऱ्पह मलर्ऩ्ददोण् मैऩ्दर् शूडिय
कऱ्पह मालैयुम् बुलवु कालुमाल् 373

विल् पकल्–प्रकाशमय अहस्; इऩ्ऱिये–नहीं हुआ तभी; इरवु–रात्रि; विण्टु अऱ–मिट जाए ऐसा; ऍल् पकल्–सूर्य दिन में; ऍऱित्तुळतु–जल रहा है; ऍऩ्ऩ–ऐसा; तोऩ्ऱुम्–दिखनेवाले; मल् पक मलर्ऩ्त–सशक्त; तोळ्–कन्धों के; मैऩ्तर् चूटिय–राक्षस-युवकों की पहनी हुई; कऱ्पक मालैयुम्–कल्पसुमन-मालाएँ भी; पुलवु कालुम्–मांसगन्ध निकालती हैं। ३७३

राक्षस युवकों के कन्धे इतने प्रकाशमय हैं, मानो दिन के अभाव में भी रात को भगाते हुए सूर्य अहस् के अवसर पर प्रकाश दे रहा हो।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐसे सबल स्कन्धों के राक्षस-वीरों की पहनी हुई कल्पसुमन मालाएँ अपनी स्वाभाविक गन्ध छोड़कर मांस-दुर्गन्ध निसृत करने लगीं। ३७३

तिरियुमा लिलङ्गैयुम् मदिलुन् दिक्कॅलाम्
अॅरियुमाऱ् कन्दर्प्प नहर मॅङ्गणुम्
तॅरियुमान् मङ्गल कलशञ् जिन्दिन
विरियुमाल् विळक्किनै विळुङ्गु मालिरुळ् 374

इलङ्कैयुम्–लंका नगर और; मतिलुम्–प्राचीर; तिरियुम्–घूम जाते; तिक्कु अॅलाम्–सारी दिशाएँ; अॅरियुम्–जल उठीं; अॅङ्कणुम्–सर्वत्र; कन्तर्प्प नकरम्–गन्धर्वनगर; तॅरियुम्–दिखायी देते; मङ्कल कलचम्–मंगल-कलश; चिन्तिन विरियुम्–जल बहाते हुए फूट जाते; विळक्किनै–दीपों को; इरुळ् विळुङ्कुम्–अन्धकार लील जाता (बुझ जाते)। ३७४

लंका नगर और प्राचीर घूम उठे। सारी दिशाएँ जल उठीं। सर्वत्र गन्धर्व-नगर दिखे। (यह बहुत ही बुरा स्वप्न समझा जाता है।) मंगल-कलश टूट पड़े और उनका पवित्र जल बह गया। दीपों को अँधेरे ने निगल लिया। दीप बुझ गये। ३७४

तोरण मुऱियुमाऱ् ऱुळङ्गिच् चूळिमा
वारण मुऱियुमाल् वलत्त वान्मरुप्
पारण मन्दिरत् तऱिञर् नाट्टिय
पूरण कुडत्तुनीर् नऱविऱ् पॊङ्गुमाल् 375

तोरणम् मुऱियुम्–तोरण-स्तम्भ टूट जाते; चूळि–मुखपट्टालंकृत; मा वारणम्–बड़े गजों के; वलत्त वान् मरुप्पु–सबल श्वेत दाँत; तुळङ्कि–काँपकर; मुऱियुम्–टूटते; आरण मन्तिरत्तु–वेदमन्त्रविदग्ध; अऱिञर् नाट्टिय–ब्राह्मणों द्वारा स्थापित; पूरण कुटत्तु–पूर्णकुम्भ का; नीर्–पवित्र जल; नऱविल् पॊङ्कुम्–सुरा के समान उफनता। ३७५

मैंने देखा— तोरण खम्भे टूटते। मुखपट्टालंकृत बड़े-बड़े गजों के सबल श्वेत दाँत लचकते और टूटते। वेदमंत्रविदों द्वारा स्थापित पूर्ण-कुम्भों के पवित्र जल में ताड़ी के समान उफन पैदा होता। ३७५

विण्डॊडर् मदियिऩैप् पिळन्दु मीऩॆऴुम्
पुण्डॊडर् कुरुदियिऱ् पॊऴियुम् बोर्मऴै
तण्डॊडु तिहिरिवा डनुवॆन् ऱिन्तन
मण्डमर् पुरियुमा लाळि मारुऱ 376

मीन्–नक्षत्र; विण् तॊटर्–आकाश में चलायमान; मतियिऩै पिळन्तु–चन्द्र को चीरते हुए; अॆऴुम्–ऊपर जाते; पोर् मऴै–आच्छादित रहनेवाले मेघ; पुण् तॊटर् कुरुतियिल्–व्रण के रक्त के समान; पॊऴियुम्–(जल) बरसाते; तण्टु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऑटु–दण्ड और; तिकिरि–चक्र; वाळ्–तलवार; तनु ऍन्ऱु–धनु आदि; इन्नत्त–ऐसे (हथियार); आऴि माऱु उऱ—समुद्र अस्थिर हो जाए ऐसा; मण्टु अमर् पुरियुम्–आपस में स्वतः भिड़ जाते। ३७६

नक्षत्र आकाशचारी चन्द्रमण्डल को भेदकर ऊपर जाते। आच्छादित-से रहनेवाले मेघों से व्रण से बहनेवाले रक्त के समान बारिश होती। दण्ड के साथ चक्र, तलवार, धनु आदि ऐसे हथियार आपस में युद्ध करते और सागर में उथल-पुथल मच जाता। ३७६

मङ्गैयर् मङ्गलत् तालि मऱ्ऱवर्
अङ्गैयिन् वाङ्गुवा रॅवरु मन्ऱिये
कॉङ्गैयिन् वीऴ्न्दन कुऱित्त वाऱ्ऱिनाल्
इङ्गिदि नऱ्पुद मिन्नुङ् गेट्टियाल् 377

मङ्कैयर्–राक्षस-दयिताओं का; मङ्कल तालि–मंगलमय अहिवात-सूत्र; मऱ्ऱवर् ऍवरुम्–दूसरे किसी के; अङ्कैयिन् वाङ्कुवार् अन्ऱि–अपने हाथ से छीने विना ही; कॉङ्कैयिन्–(कटकर) स्तनों पर; वीऴ्न्तत–गिरे; कुऱित्त आऱ्ऱिनाल्–मेरे सूचित इन कार्यों से; इङ्कु–यहाँ; इतिन् अऱ्पुतम्–इन दुर्निमित्तों से भी (विपरीत और) विचित्र; इन्नुम् केट्टि–और भी सुनिए। ३७७

राक्षस-स्त्रियों के मंगलसूत्र स्वयं विना किसी के छीने ही कट जाते और उनके स्तनों पर गिरते। मैं जो कह रहीं हूँ, उसी रीति से और भी क्या-क्या विस्मयकारी कुनिमित्त हुए, सुनिए। (त्रिजटा आगे भी अपने स्वप्नदृष्ट विषय बताने लगी।)। ३७७

मन्नवन् रेवियम् मयन्म डन्दैतन्
पिन्नवि ऴोदियुम् बिऱङ्गि वीऴ्न्दन
तुन्नरुञ् जुडर्शुडच् चुऱुक्कॉण् डेऱिऱ्ऱाल्
इन्नलुण् डॅन्नुमिदऱ् केदु वॅन्बदे 378

मन्नवन् तेवि–राक्षसराज की देवी; अम् मयन् मटन्तै तन्–उस मयसुता (मन्दोदरी) के; पिन् अविऴ् ओतियुम्–बिखरे और पीछे लटकते केश भी; पिऱङ्कि वीऴ्न्तत–फैलकर गिरे; तुन् अरुम् चुटर्–अगम अग्नि के; चुट–जलाने से; चुऱुक् कॉण्टु ऐऱिऱ्ऱु—दुर्गन्ध के साथ ऊपर उठे; इतऱ्कु एतु–इसका हेतु है; इन्नल् उण्टु–अवश्य कष्ट होगा; ऍन्नुम् ऍन्पते–यही बताना है। ३७८

राक्षसराज रावण की पत्नी मयसुता, मन्दोदरी के वेणी-बने केश खुले और बेतरह बिखरे। उनमें आग लगी और दुर्गन्ध निकालती हुई बढ़ी। इसका अर्थ 'अनर्थ होगा' यही है। ३७८

ऍन्ऱिवै यियम्बिवे ऱिन्नुङ् गेट्टियाल्
इन्ऱिव णिपपॉऴ् दॅदिर्न्द दोर्कन्ना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वन्रुणैक् कोळरि यिरण्डु माऱिलाक्
कुन्ऱिडै युऴुवैयाङ् गुऴुक्कॊण् डीण्डिये 379

ऍन्ऱु इवै इयम्पि–ऐसा यों कहकर; इन्नुम् वेऱु केट्टि–और भी अन्य बातें सुनिए; इन्ऱु इवण् इप्पॊऴुतु–आज, यहाँ, अब; ऍतिर्न्ततु ओर् कना–एक स्वप्न हुआ; वन् तुणै कोळरि इरण्टु–सबल और जोड़ी के दो सिंह; माऱ इला–बेमिसाल; कुन्ऱु इटै–पर्वत पर; उऴुवै आम् कुऴु कॊण्टु–बाधों को सहायता के लिए लेकर; ईण्टिये–सटे हुए। ३७९

त्रिजटा ने ये स्वप्न-समाचार वर्णित किये। आगे भी बोली कि और भी समाचार सुनिए। अब मेरे जागने से तुरन्त पूर्व जो स्वप्न हुआ उसका विषय बताऊँगी। दो परस्पर मित्र बलवान सिंह व्याघ्रवृन्दों को लेकर आये और एक अनुपम पर्वत को घेर गये। ३७९

उरम्बॊरु मदमलै युऱैयु मव्वनम्
निरम्बुऱ वळैन्दन नॆरुक्कि नेर्न्दन
वरम्बऱु पिणम्बडक् कॊन्ऱु वाऴुन्दम्
पुरम्बुह मयिलैयुङ् गॊण्डु पोनवाल् 380

उरम् पॊरु मतमलै–कठोर रूप से भिड़नेवाले मत्तगज; उऱैयुम्–जिसमें रहते हैं; अ वनम्–वह वन; निरम्पु उऱ–भर जाए ऐसा; वळैन्तन–घेर आये (सिंह तथा व्याघ्रों का समूह); नॆरुक्कि नेर्न्तन–आक्रमण करके लड़े; वरम्पु अऱु–असंख्यक; पिणम् पट–शव हो जायँ ऐसा; कॊन्ऱु–मारकर; वाऴुम् तम् पुरम्–अपने वासस्थान को; पुक–चले गये; मयिलैयुम् कॊण्टु पोन–एक मयूर को भी साथ ले गये। ३८०

वह एक वन था, जिसमें ज़ोर के साथ लड़नेवाले मत्तगज रहते थे। उसमें आकर सिंहों और व्याघ्रवृन्दों ने आक्रमण किया। कठोर युद्ध किया और उनको अनगिनत संख्या में मारकर शवों को गिराया। फिर वे अपने वासस्थान को लौट गये। वे अपने साथ एक मयूर को भी ले गये। ३८०

आयिरन् दिरिविळक् कमैय माट्टिय
शेयॊळि विळक्कमॊन् ऱेन्दिच् चॆय्यवळ्
नायहन् ऱनिमनै निन्ऱु नण्णुदल्
मेयिनळ् वीडणन् कोयिन् मॆन्शॊलाय् 381

मॆन् चॊलाय्–मधुरभाषिणी; आयिरम् तिरि विळक्कु–सहस्र वर्तिकाओं से युक्त दीपक; अमैय–सुन्दर रूप से; माट्टिय–जिसमें लगे थे; चेय् ऒळि विळक्कम्–लाल रोशनी की एक दीपावली; ऒन्ऱु एन्ति–एक लेते हुए; चॆय्यवळ्–लाल रंग की एक स्त्री; नायकन् तनि मनै निन्ऱु–राक्षसपति (रावण) के अद्वितीय महल से; वीटणन् कोयिल्–विभीषण के महल में; नण्णुतल् मेयिनळ्–जाने लगी। ३८१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मधुरभाषिणी भामिनी सीते ! एक लाल रंग की स्त्री सहस्र बत्तियों की लाल रोशनी की एक दीपावली हाथ में लिये राक्षसनायक रावण के महल से निकली और विभीषण के प्रासाद में घुसी । ३८१

पॊन्मनै पुक्कवप् पॊरुविऱ् पोदिनिल्
ऍन्नैनी युणर्त्तिनै मुडिन्द दिल्लॆन
अन्नैये यदन्कुऱै काणॆन् ऱायिळै
इन्नमुन् दुयिलॆन विरुहै कूप्पिनाळ् 382

पॊन्मनै पुक्क–स्वर्ण-प्रासाद में जो प्रविष्ट हुई; अ पॊरुव् इल् पोतिनिल्–उस अनुपम शुभ घड़ी में; ऍन्नै नी उणर्त्तिनै–तुमने मुझे जगा दिया; मुटिन्ततु इल्–स्वप्न पूर्ण नहीं हुआ; ऍन–(त्रिजटा के) यों कहने पर; आयिळै–चुने हुए आभरणों से अलंकृत देवी ने; अन्नैये–माते; अतन् कुऱै काण्–उसका बचा भाग देखो; ऍन्ऱु–कहकर; इन्नमुम् तुयिल् ऍन–और भी सोओ; ऍन्ऱु–प्रार्थना करके; इरु कै कूप्पिनाळ्–अपने दोनों हाथ जोड़े । ३८२

विभीषण का महल स्वर्णमहल था । जब वह उस प्रासाद में घुसी तभी तुमने मुझे जगा दिया । मेरा देखा स्वप्न अधूरा रह गया । तब चुने हुए आभरणधारिणी सीताजी ने उससे हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि माते ! बाकी स्वप्न को भी देख लो । और तुम सोओ । ३८२

❀ इव्विडै यण्णलव् विराम नविय
वॆव्विडै यनैयपोर् वीरत् तूदनुम्
अव्विडै यॆय्दिन नरिदि नोक्कुवान्
नॊव्विडै मडन्दैदन् निरुक्कै नोक्किनान् 383

इ इटै–इतने में; अण्णल् अ इरामन्–महिमावान उन श्रीराम का; एविय–प्रेषित; वॆम् विटै अनैय–भयंकर ऋषभ-सम; पोर् वीर–युद्धवीर; तूततुम्–दूत हनुमान भी; अरितिन् नोक्कुवान्–कष्ट के साथ सर्वत्र खोजते हुए; अ इटै ऍय्तिनन्–वहाँ आ पहुँचा; नॊ इटै मटन्तै तन्–उस क्षीणकटि देवी के; इरुक्कै–रहने का स्थान; नोक्किनान्–देखा । ३८३

इसी समय महिमावान श्रीराम से प्रेषित, दर्शक के दिल में भय उत्पन्न कर सकनेवाले ऋषभ-सम दूत हनुमान भी सर्वत्र कष्ट के साथ खोज लेने के बाद वहाँ आ पहुँचा । उसने क्षीणकटि देवी सीता के रहने के स्थान को देख लिया । ३८३

अव्वयि नरक्किय रऱिवुऱ् ऱम्मवो
शॆव्वैयि रुयिनमैच् चॆय्द तीङ्गॆन
ऍव्वयिन् मरुङ्गिनु मॆळुन्दु वीङ्गिनार्
वॆव्वयिन् मळुवॆळुच् चूल मेन्दिये 384

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अ वयित्-तब; अरक्कियर्-राक्षस-स्त्रियाँ; अऱिवुऱ्ऱु—जाग्रत् होकर; अम्मवो-हाय, हाय; चॆव्वै इल् तुयिल्-जो अच्छी नहीं, उस नींद ने; नमै ईङ्कु चॆय्ततु-हमें अब यह (दुर्गत) करा दी; अॆऩ-कहती हुई; अॆऴुन्तु-उठकर; वॆम् अयिल्-भयंकर भाले; मऴु-परशु; अॆऴु-वक्रदण्ड; चूलम् एन्ति-शूल आदि उठाये हुए; अॆ वयित् मरुङ्किलुम्-सब ओर; वीङ्कित्तार्-भीड़ में खड़ी हो गयीं। ३८४

तभी राक्षसियाँ भी जाग उठीं। वे भयातुर हो गयीं। हाय! यह बुरी नींद है। उसने हमारी यह दुर्गत कर दी है। वे उठीं। हाथ में शूल, भाले, परशु, वक्रदण्ड आदि हथियार लेकर चारों ओर से आ जुट गयीं। ३८४

वयिऱ्ऱिडै वायित्तर् वळैन्द नऱ्ऱियिल्
कुयिऱ्ऱिय विऴियित्तर् कॊडिय नोक्कित्तर्
अॆयिऱ्ऱिनुक् किडैयिडै यानै याळिपेय्
तुयिऱ्कॊळ्वॆम् बिलत्तॆऩत् तॊट्ट वायित्तार् 385

वयिऱ्ऱिटै वायित्तर्-पेट-मध्य मुखवालियाँ; वळैन्त नॆऱ्ऱियिल्-बाहर निकले भाले पर; कुयिऱ्ऱिय-जड़ित; विऴियित्तर्-आँखों वालियाँ; कॊटिय नोक्कित्तर्—क्रूर दृष्टि वालियाँ; अॆयिऱ्ऱिनुक्कु इटै इटै-दाँत के मध्य; यानै-गज; याळि-शरभ; पेय्-भूत; तुयिल् कॊळ्-सोते रहे ऐसे; वॆय् पिलत् अॆऩ-भयंकर गुफा के समान; तॊट्ट वायित्तर्-बड़े मुखों वालियाँ। ३८५

(वे भी भयंकर तथा स्वभाव-विपरीत आकृति वालियाँ थीं।) कुछ के पेटों के मध्य मुख थे। कुछ के भाल बाहर निकले हुए थे और उनमें आँखें जड़ी हुई-सी लगती थीं। उनकी दृष्टि बड़ी क्रूर थी। उनके बड़े, भयंकर गुहा के समान मुखों के अन्दर दाँत-दाँत के मध्य गज, 'याळि' (शरभ) नामक भयंकर जानवर, भूत आदि सोते थे। ३८५

ऒरुपदु कैयित्त रॊऱ्ऱैच् चॆन्ऩियर्
इरुबदु तलैयित्त रिरण्डु कैयित्तर्
वॆरुवरु तोऱ्ऱत्तर् विहड वेडत्तर्
परुवरै यॆऩमुलै पलवु नाऱ्ऱित्तार् 386

ऒरुपतु कैयित्तर्-दस हाथों वालियाँ; ऒऱ्ऱै चॆऩ्ऩियर्-(वे) एक ही सिर वालियाँ थीं; इरुपतु तलैयित्तर्-बीस हाथों वालियाँ; इरण्टु कैयित्तर्-पर दो हाथों वालियाँ; वॆरुवरु तोऱ्ऱत्तर्-भयावने आकार वालियाँ; विकट वेटत्तर्-विचित्र रूप वालियाँ; परुवरै अॆऩ-मोटे पर्वत के समान; मुलै पलवुम्-अनेक स्तनों को; नाऱ्ऱित्तर्-लटकाते रहनेवालियाँ। ३८६

किन्हीं के सिर तो एक-एक ही थे, पर हाथ दस-दस थे। किन्हीं के सिर बीस-बीस थे, पर हाथ तो दो-दो ही थे। भयभीत करनेवाले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आकार की थीं राक्षसियाँ। निपट विधि-विपरीत रूप वाली थीं। उनके स्तन बड़े-बड़े पर्वतों के समान थे और लटकते थे। ३८६

शूलम्वाळ् शक्करन् दोट्टि तोमरम्
कालवेल् कप्पणङ् गर्र कैयित्तार्
आलमे युरुवुहौण् डत्तैय मेत्तियार्
पालमे तरित्तवन् वॅरुवुम् बान्मैयार् 387

चूलम्–शूल; वाळ्–तलवार; चक्करम्–चक्र; तोट्टि–अंकुश; तोमरम्–तोमर; काल्वेल्–यम-से भाले; कप्पणम्–'कप्पण' नामक हथियार; कर्र–चलाने में अभ्यस्त; कैयित्तार्–हाथों वालियाँ; आलमे उरुवु कॊण्टत्तैय–हलाहल के ही साकार बने से; मेत्तियार्–शरीर वालियाँ; पालमे तरित्तवन्–कपालधारी (भैरव); वॅरुवुम्–डरे ऐसे; पान्मैयर्–स्वभाव वाली। ३८७

इन राक्षसियों के हाथ शूल, चक्र, अंकुश, तोमर, यम-से भाले, कप्पण नामक हथियार आदि चलाने के अभ्यस्त थे। हलाहल के ही मूर्तरूप-सम थीं। कपाली भैरवजी को भी भयातुर करनेवाले स्वभाव वालियाँ थीं। ३८७

करिपरि वेङ्गैमाक् करडि याळिपेय्
अरिनरि नायॅत्त वणिमु हत्तित्तर्
वॅरिनुरु मुहत्तित्तर् विळिहण् मून्रित्तर्
पुरितरु कॊडुमैयर् पुहैयुम् वायित्तार् 388

करि–गज; परि–अश्व; वेङ्कै–व्याघ्र; मा करटि–बड़े रीछ; याळि–'याळि' (नाम के जानवर); पेय्–भूत; अरि–सिंह; नरि–गीदड़; नाय ऍत्त–कुत्ते आदि; अणि मुकत्तित्तर्–पहने हुए मुखों वालियाँ; वॅरित् उरु–पीठ पर बने; मुकत्तित्तर्–मुख वालियाँ; विळिकळ् मून्रित्तर्–तीन आँखों वालियाँ; पुरि तरु कॊटुमैयर्–क्रूर काम करनेवालियाँ हैं; पुकैयुम् वायित्तार्–धुआँ निकालनेवाले मुखों वालियाँ। ३८८

गज, अश्व, बाघ, बड़ा रीछ, 'याळि', पिशाच, सिंह, शृगाल और कुत्ते आदियों के (-से) मुखों से वे युक्त थीं। उनकी पीठ के मध्य मुख भी थे। वे बड़े ही क्रूर काम करनेवालियाँ थीं। उनके मुखों से धुआँ निकलता था। ३८८

ऍण्णिनुक् कळविड लरिय वीट्टित्तार्
कण्णिनुक् कळविड लरिय काट्चियार्
पॅण्णॅत्तप् पॅयर्हौडु तिरियुम् बॅर्रियार्
तुण्णॅनत् तुयिलुणर्न् दॅळुन्दु शुर्रित्तार् 389

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍण्णिऩुक्कु अळवु इटल् अरिय–संख्या कहकर गिनने में असाध्य (अपार); ईट्टिऩार्–बलशालिनियाँ; कण्णिऩुक्कु–आँखों द्वारा; अळवु इटल् अरिय–मापा नहीं जा सके, ऐसे; काट्चियार्–आकार वालियाँ; पॆण् ऍऩ पॆयर् कॊटु–स्त्री नाम धारण करके; तिरियुम् पॆऱ्ऱियार्–घूम-फिरने का भाग्य-प्राप्त; तुण् ऍऩ–अकस्मात; तुयिल् उणर्ऩ्तु–नींद से जागकर; ऍऴुऩ्तु–उठीं और; चुऱ्ऱिऩार्–सीता को घेर आयीं। ३८९

वे अपार शक्ति से समन्वित थीं। आँखें पूरा देख नहीं सकें —ऐसे डील-डौल वालियाँ थीं। विडम्बना यह थी कि स्त्री नामधारिणी होकर फिरती थीं। वे झट नींद से जागीं और उठकर सीताजी को घेर आयीं। ३८९

आयिडै युरैयविन् दळहऩ् ऱेवियुम्
तीयऩै यवर्मुह नोक्कित् तेम्बिऩाळ्
नायहऩ् ऱूदऩुम् विरैवि ऩण्णिऩाऩ्
ओय्विल ऩुयर्मरप् पणैयि ऩुम्बराऩ् 390

आयिटै–तब; अळकऩ् तेवियुम्–सुन्दर श्रीराम की देवी; उरै अविऩ्तु–अवाक् होकर; ती अऩैयवर् मुकम् नोक्कि–अग्नि-सम उनके मुखों को देखकर; तेम्पिऩाळ्–संकटग्रस्त हुईं; नायकऩ् तूतऩुम्–नायक श्रीराम का दूत भी; विरैविल् नण्णिऩाऩ्–शीघ्र आया; ओय्वु इलऩ्–अविलम्ब; उयर् मर–ऊँचे वृक्ष की; पणैयिऩ् उम्पराऩ्–शाखा पर का (स्थित) होकर। ३९०

तब सुन्दर पुरुष श्रीराम की देवी उनको देख स्तब्ध और अवाक् रह गयीं। उनके अग्नि-सम मुखों को देखकर संकटग्रस्त हुईं और सहमीं। नायक का दूत हनुमान भी शीघ्र आया और अविलम्ब एक अत्युन्नत तरु की शाखा पर चढ़ बैठा (और —)। ३९०

अरक्किय रयिऩ्मुद लेऩ्दु मङ्गैयर्
ऩॆरुक्किय कुळुविऩर् तुयिलु नीङ्गिऩार्
इरुक्कुऩर् मऱ्ऱिदऱ् केदु वॆऩ्ऩॆऩप्
पॊरुक्कॆऩ वविरिडैप् पॊरुऩ्द नोक्किऩाऩ् 391

अरक्कियर्–(पहरा देती रही) राक्षसियाँ; अयिल् मुतल्–भाला आदि; एऩ्तुम् अङ्कैयर्–धारण करनेवाले हाथों की होकर; ऩॆरुक्किय कुळुविऩर्–भरी भीड़ की; तुयिलुम् नीङ्किऩार्–निद्रा त्यागकर; इरुक्कुऩर्–(सतर्क) रहती हैं; इतऱ्कु एतु ऍऩ्–इसका हेतु क्या है; ऍऩ–सोचकर; पॊरुक्कु ऍऩ–शीघ्र; अवर् इटै–उनके मध्य; पॊरुऩ्त नोक्किऩाऩ्–ध्यान के साथ देखा। ३९१

पहरे में रही राक्षसियाँ हाथों में भाले आदि लिये हुए, सटे समूह में मिले निद्रा त्यागकर सचेत रहीं। इसका हेतु क्या है ? यह जानने के लिए हनुमान ने शीघ्र उन राक्षसियों के बीच में सावधानी से दृष्टि लगाकर देखा। ३९१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ विरिमळैक् कुलङ्गिळित् तॊळिरु मिन्नॆन्नक्
करुनिऱत् तरक्कियर् कुळुविऱ् कण्डनन्
कुरुनिऱत् तॊरुदनिक् कॊण्ड लामॆन्नत्
तिरुवुऱप् पॊलियुमोर् शॆल्वन् ऱॆवियै 392

कुरु निऱत्तु–गहरे रंग के साथ; ऒरु तनि कॊण्टल् आम् ऎन्न–एक अनुपम मेघ के समान; तिरु उऱ–अतिसौन्दर्य के साथ; पॊलियुम्–शोभनेवाले; ओर् चॆल्वन्–श्रियःपति की; तेवियै–देवी को; विरि मळै कुलम्–फैले हुए मेघसमूह को; किळित्तु–चीरकर; ऒळिरुम्–चमकनेवाली; मिन् ऎन्न–विद्युत् के समान; करु निऱत्तु अरक्कियर्–काले रंग की राक्षसियों के; कुळुविल्–दल में; कण्टनन्–(हनुमान ने) देखा। ३९२

उसने गहरे नीले रंग के श्रेष्ठ मेघ-सम सौन्दर्ययुक्त श्रियःपति श्रीराम की देवी सीता को विशाल मेघसमूह को चीरकर प्रकाश छिटकानेवाली विद्युत् के समान राक्षसियों के समूह-मध्य देखा। ३९२

कडक्करु मरक्कियर् कावऱ् चुऱ्ऱुळाळ्
मडक्कॊडि शीदैया माद रेहॊलाम्
कडऱ्ऱुणै नॆडियदन् कण्णि नीर्प्पॆरुन्
दडत्तिडै यिरुन्ददो रन्नत् तन्मैयाळ् 393

कटल् तुणै नॆटिय–सागर-सम विशाल; तन् कण्णिन्–अपनी आँखों के; नीर् पॆरुम् तटत्तिटै–अश्रुजल के बड़े जलाशय-मध्य; इरुन्ततु–जो रही; ओर् अन्न तन्मैयाळ्–एक हंसिनी-सी ये; कटक्करुम्–अलंघ्य; अरक्कियर् कावल् चुऱ्ऱु–राक्षसियों के पहरे के घेरे में; उळाळ्–रहती हैं; मटक्कॊटि–बाल-लता; चीतैयाम् मातरे आम्–सीतादेवी ही होंगी। ३९३

उनकी समुद्र-सम विशाल आँखों से जो अश्रुजल बहता रहा वह विशाल जलाशय के समान था, और उसके मध्य सीताजी हंसिनी के समान रहती हैं तथा राक्षसियों के अलंघ्य पहरे के अन्दर रहती हैं। इसलिए यह अवश्य वही बाल-लता सीताजी ही होंगी। हनुमान ने अनुमान किया। ३९३

❀ ऎळ्ळरु मुरुवुळ विलक्क णङ्गळुम्
वळ्ळऱन् नुरैयॊडु मारु कॊण्डिल
कळ्ळवा ळरक्कनक् कमलक् कण्णनार्
उळ्ळुऱै युयिरिनै यॊळित्तु वैत्तवा 394

ऎळ्ळरुम्–अनिंद्य; उरु उळ–अंगलक्षण हैं; इलक्कणङ्कळुम्–वे लक्षण भी; वळ्ळल् तन् उरैयॊटु–वदान्य श्रीराम के वर्णन से; मारु कॊण्टिल–भिन्न नहीं हैं; कळ्ळ वाळ् अरक्कन्–वंचक और तलवारधारी राक्षस ने; अ कमल कण्णनार्–उन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुण्डरीकाक्ष के; उळ् उऱै उयिरिऩै-हृदयस्थ प्राण (सीता) को; ऑळित्तु वैत्त आ-छिपा रखा है, क्या ही अन्याय है। ३९४

इनके अंग-लक्षण अनिंद्य हैं। और भी वे लक्षण वदान्य श्रीराम के वर्णन से भिन्न नहीं हैं। हा! तलवारधारी वंचक रावण ने उन पुण्डरीकाक्ष श्रीराम के हृदयस्थ प्राणों-सी इनको लाकर छिपा रखा है! क्या ही अन्याय है! । ३९४

मूवकै युलकैयुम् मुऱैयि नीक्किय
पावियऱ् ऱुयिर्कॊळ्वा निऴैत्त पण्बिदाल्
आवदे यरवणैत् तुयिलि नीङ्गिय
तेवऩे यवनिवळ् कमलच् चॆल्विये 395

मूवकै उलकैयुम्-त्रिविध लोकों को; मुऱैयिऩ् नीक्किय-सन्मार्ग से जिन्होंने हटा दिया; पावियऱ्-उन पापियों के; उयिर् कॊळ्वाऩ्-प्राण हरने हेतु; इऴैत्त पण्पु-किया गया काम; इतु आवते-यह है अवश्य; अवऩ्-वे; अरवणै तुयिलिऩ् नीङ्किय-शेषनागनिद्रात्यागी; तेवऩे-श्रीविष्णु भगवान ही हैं; इवळ् कमलच् चॆल्विये-ये कमलासना लक्ष्मीदेवी ही हैं। ३९५

हा! यह कार्य त्रिलोकवासियों को अपने अच्छे मार्ग से हटानेवाले पापी राक्षसों के नाश का हेतु बन गया। श्रीराम शेषनागनिद्रात्यागी श्रीविष्णुदेव ही हैं। और ये देवी कमलासना श्री ही हैं। ३९५

वीडिऩ वऩ्ऱऱऩ् यानुम् वीहलेऩ्
तेडिऩॆऩ् कण्डऩॆऩ् ऱेवि येयॆऩा
आडिऩऩ् पाडिऩ ऩाण्डु मीण्डुम्बाय्न्
दोडिऩ ऩुलाविऩ नुवहैत् तेनुण्डाऩ् 396

अऱऩ् वीटिऩतु अऩ्ऱु-धर्म मिटा नहीं; यानुम् वीकलेऩ्-मैं भी नहीं मरूँगा; तेटिऩॆऩ्-अन्वेषण किया; कण्टऩॆऩ्-देख लिया; तेवियॆऩा-देवी सीता ही हैं, कहकर; उवकै तेऩ्-मोदमधु; उण्टाऩ्-पीकर हनुमान; आटिऩऩ्-नाचा; पाटिऩऩ्-गाया; आण्टुम् ईण्टुम्-उधर और इधर; पाय्न्तु ओटिऩऩ्-छलाँग मारकर दौड़ा; उलाविऩऩ्-घूमा। ३९६

अच्छा, अब धर्म नष्ट नहीं होगा। मैं भी मरूँगा नहीं। जिनकी खोज लगाता रहा उनको मैंने देख लिया। ये अवश्य सीतादेवी ही हैं। हनुमान ने ऐसा दृढ़ विचार कर लिया तो मोदमधुपीत हो गया। नाचने-गाने लग गया। इधर से उधर दौड़ता हुआ घूमा। ३९६

माशुण्ड मणियऩाळ् वयङ्गु वॆङ्गदिर्त्
तेशुण्ड तिङ्गळ मॆऩ्ऩत् तेय्न्दुळाळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काशुण्ड कून्दलाळ् कऱ्पुङ् गावलुम्
एशुण्ड दिल्लैया लऱत्तुक् कीऱुण्डो 397

माचु उण्ट–मैल-लगे; मणि अन्नाळ्–रत्न-सम; वयङ्कु वॆम् कतिर् तेचु उण्ट–पृथुल गरम (सूर्य-) किरणों में डूबे; तिङ्कळुम् ऍऩ्ऩ–(नष्टप्रभ) चन्द्र के समान; तेय्ऩ्ऩु उळाळ्–जो मलिन हुई थीं; काचु उण्ट कून्तलाळ्–धूलि-धूसरित केशिनी की; कऱ्पुम्–चरित्र-दृढ़ता और; कावलुम्–उसके पालन की रीति पर; एचु उण्टतु इल्लै–दोष नहीं लगा है; आल्–इसलिए; अऱत्तुक्कु ईऱु–धर्म का नाश; उण्टो–होगा क्या (नहीं)। ३९७

सीताजी मैल-लगे रत्न के समान और सूर्य की गरम किरणों से मन्दप्रद बने चन्द्र के समान लगीं। वे मलिन थीं और उनके केश पर धूल जमी थी। उनके चरित्र और चरित्र-पालन-दृढ़ता पर कोई आँच नहीं आयी थी। अतः धर्म नष्ट होगा क्या ? नष्ट नहीं होगा। ३९७

पुऩैहळ् लिराहवऩ् पॊऱ्पु यत्तैयो
वऩिदैयर् तिलहत्तिऩ् मऩत्तिऩ् माण्बैयो
वऩैहळ् लरशरिऩ् वण्मै मिक्किडुम्
जऩहर्दङ् गुलत्तैयो यादु शाऱ्ऱुहेऩ् 398

कळल् पुऩै–पायलधारी; इराकवऩ् पॊऩ् पुयत्तैयो–श्रीराघव की मनोरम भुजाओं को; वऩितैयर् तिलकत्तिऩ्–स्त्री-तिलक सीता के; मऩत्तिऩ् माण्पैयो–मन की दृढ़ता के गौरव को; वऩैकळल् अरचरिऩ्–पायलधारी राजाओं से; वण्मै मिक्किटुम्–अधिक उदार; चऩकर् तम् कुलत्तैयो–जनक के कुल को; यातु चाऱ्ऱुकेऩ्–किसको गाऊँ। ३९८

अब हनुमान विस्मय से अभिभूत हो गया। पायलधारी श्रीराम की भुजाओं की प्रशंसा की जाय, या स्त्रीतिलक सीताजी के मन की दृढ़ता की ? या पायलधारी राजाओं में सर्वश्रेष्ठ उदार दानी जनक के कुल के गौरव का यशोगान किया जाय ? किसका गान करूँगा ? हनुमान ने कहा। ३९८

तेवरुम् बिळैत्तिलर् तॆय्व वेदियर्
एवरुम् बिळैत्तिल रऱमु मीऱिऩ्ऱाल्
यावदिङ् गिनिच्चॆय लरिय दॆम्बिराऱ्
कावॆऩ् ऩडिमैयुम् बिळैप्पिऩ् ऱामरो 399

तेवरुम् पिळैत्तिलर्–देव भी अपराधी नहीं बने; तॆय्व वेतियर् ऍवरुम्–दिव्य ब्राह्मण कोई भी; पिळैत्तिलर्–दोषी नहीं बने; अऱमुम् ईऱु इऩ्ऱु–धर्म का भी अन्त नहीं हुआ; ऍम्पिराऱ्कु आव–मेरे आराध्य के प्रति; ऍऩ् अटिमैयुम्–मेरी दासता भी; पिळैप्पिऩ्ऱाम्–निर्दोष रही; इऩि–अब; इङ्कु–यहाँ; चॆयल् अरियतु–कार्य असाध्य; यावतु–क्या है (कुछ भी नहीं)। ३९९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देव अपराधी नहीं रहे। दिव्य गुणी ब्राह्मण भी अपराधी नहीं रहे। धर्म का अन्त नहीं हुआ। मेरे आराध्य नायक की मेरी दासता भी निर्दोष हो रही। अब कौन सा कार्य है, जो दुस्साध्य होगा ? । ३९९

केऴिला णिऱैयिऱै कीण्ड दामॅऩिऩ्
आऴियान् मुऩिवॅऩु माऴि मीक्कॊळ
ऊऴियि निऱ्दिवन् दुऱुमॅन् ऱुऩ्ऩिऩेन्
वाऴिय वुलहिऩि वरम्बि ऩाळॅलाम् 400

केऴ् इलाऴ्–अप्रतिम; निऱै–(सीताजी का) संयम; इऱै कीण्टतु आम् ऍऩिऩ्–थोड़ा भी दरार खा गया तो; आऴियाऩ्–चक्रधर श्रीराम का; मुऩिवु ऍऩुम् आऴि–कोपसागर; मी कॊळ–उमग उठेगा; ऊऴियिऩ् इऱुति–युगान्त; वऩ्तु उऱुम्–आ जायगा; ऍऩ्ऱु उऩ्ऩिऩेऩ्–ऐसा सोचा; इति–अब; उलकु–संसार; वरम्पिल् नाळ् ऍलाम्–अनन्त काल तक; वाऴिय–जीते रहें। ४००

हनुमान ने विचार व्यक्त किया कि मैंने सोचा था कि अप्रतिम देवी के चरित्र में कियत् अंश में दरार पड़ गयी तो चक्रधर श्रीराम के कोपसागर के उमँग आने से सारे लोकों का अन्त करनेवाला प्रलय हो जायगा। अब ऐसा कुछ नहीं होगा। अब लोक अनन्त काल तक जिएँ ! । ४००

वॅङ्गऩल् मुऴुहियुम् पुलऩ्गळ् वीक्कियुम्
नुङ्गुव वरुऩ्दुव नीक्कि नोऱ्ऱवर्
ऍङ्गुळर् कुलत्तिल्वऩ् दिल्लिऩ् माण्बुडै
नङ्गैयर् मऩत्तव नविलऱ् पालदे 401

वॅम् कऩल्–संतापक पंचाग्नि में; मुऴुकियुम्–रहकर (तपस्या करके); पुलऩ्कळ् वीक्कियुम्–इन्द्रिय-निग्रह करके और; नुङ्कुव अरुऩ्तुव–निगलने योग्य और पेय भोजन; नीक्कि–त्यागकर; नोऱ्ऱवर्–व्रतपालन करनेवाले; ऍङ्कुळर्–कहाँ हैं; कुलत्तिल् वऩ्तु–श्रेष्ठकुल में पैदा होकर; इल्लिऩ् माण्पु उटै–गृहस्थी योग्य श्रेष्ठता से युक्त; नङ्कैयर् मऩ तवम्–स्त्रियों का मनोतप; नविलल् पालते–वर्णन योग्य है क्या (वर्णनातीत है)। ४०१

कठोर पंचाग्नि-मध्य स्थित हो तपस्या करनेवाले इन्द्रियनिग्रही, निगलने योग्य या पेय भोजन-पदार्थों के त्यागी तपस्वी कहाँ मिलते हैं ? श्रेष्ठकुलजाता, गृहस्थधर्म-परिपालिका के मनोतप का वर्णन करना हमारे बस का है क्या ? । ४०१

❀पेणनोऱ् ऱदुमऩैप् पिऱवि पॅण्मैपोल्
नाणनोऱ् ऱुयर्ऩ्दद्दु नङ्गै तोऩ्ऱलाल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

माणनोऱ् ऱीण्डिव ळिरुन्द वाऱैलाम्
काणनोऱ् ऱिलऩवन् कमलक् कण्गळाल् 402

नङ्कै तोऩ्ऱलाल्–इस देवी के जन्म होने से; मऩै पिऱवि–कुलजन्म; पेण–सबके द्वारा पालन-योग्य हो; नोऱ्ऱतु–इसका तप कर चुका; पॆण्मै पोल्–स्त्रीत्व के समान; नाणम्–लज्जा भी; नोऱ्ऱु उयर्न्ततु–तपस्या करके श्रेष्ठ हो गयी; ईण्टु–यहाँ; इवळ्–ये; माण नोऱ्ऱु–चरित्रतपस्या करती; इरुन्त–रहीं; आऱु ऎलाम्–वह प्रकार सब; अवऩ्–उन्होंने (श्रीराम ने); कमल कण्कळाल्–अपने कमल-नेत्रों से; काण–देखने का; नोऱ्ऱिलऩ्–व्रत (भाग्य) नहीं किया। ४०२

इन देवी के जन्म से उत्तम कुल में जन्म लेना तप कर गया, जिसके फलस्वरूप सब उसका पालन करेंगे। (सब उत्तम कुल में जन्म लेना चाहेंगे।) स्त्रीत्व के समान लज्जा भी भाग्यशालिनी बन गयी। ये देवी इधर जो तपस्या कर रहीं हैं, इसकी रीति अपनी आँखों से देखने का भाग्य पुण्डरीकाक्ष श्रीराम का नहीं रहा। ४०२

मुऩिवर्ह ळरुन्दवर् मुऱैयिऩ् निऩ्ऱुळार्
इऩियव डाऩला दियारु मिल्लैयाल्
तऩिमैयुम् पॆण्मैयुन् दवमु मिऩ्ऩदे
वऩिदैयर्क् काहनल् लऱ्ऱतिऩ् माण्बॆलाम् 403

अवळ् ताऩ् अलातु–उनके सिवा; यारुम् इल्लैयाल्–कोई अन्य नहीं हैं ये, इसलिए; मुऩिवर्कळ् अरुन्तवर्–मुनि जो श्रेष्ठ तपस्वी हैं; इऩि मुऱैयिऩ् निऩ्ऱुळार्–अब व्रती जीवन के क्रम में स्थिर रहेंगे; तऩिमैयुम्–एकाकीपन; पॆण्मैयुम्–स्त्रीत्व; तवमुम्–पातिव्रत्य तप; इऩ्ऩते–यही हैं; नल्ल अऱ्ऱतिऩ् माण्पु ऎलाम्–श्रेष्ठ धर्म का सारा गौरव; वऩितैयर्क्कु आक–स्त्रियों का हो। ४०३

अवश्य ये सीताजी हैं। अन्य कोई नहीं। इससे यह ध्रुव हो गया कि कठिन तपस्यारत मुनि लोग अपने आचरण में स्थिर रहेंगे। यही एकाकीपन, स्त्रीत्व और (पातिव्रत्य के) सद्धर्म का गौरव (इनका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण) हैं। अच्छे धर्म की सारी श्रेष्ठताएँ स्त्रियों को प्राप्त हो जायँ। ४०३

तरुममे कात्ततो जऩह ऩल्विऩैक्
करुममे कात्ततो कऱ्पिऩ् कावलो
अरुमैये यरुमैये यारि दाऱ्ऱुवार्
ऒरुमैये यॆम्मऩोर्क् कुरैक्कऱ् पालदो 404

तरुममे कात्ततो–धर्मदेवता ने (इनके शील को) बचाया; चऩकऩ् नल् विऩै करुममे–जनक के सत्कर्म ने; कात्ततो–बचाया; कऱ्पिऩ् कावलो–इनके पातिव्रत्य-पालन ने रक्षा की; अरुमैये अरुमैये–अपूर्व है, अपूर्व है; इतु आऱ्ऱुवार् यार्–यह करनेवाला कौन होगा; ऒरुमैये–अद्वितीय है; ऎम्मऩोर्क्कु–हम जैसों के लिए; उरैक्कल् पालतो–कथनशक्य है क्या। ४०४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इनकी इस तरह रक्षा कैसे हो सकी ? धर्म ने इसकी रक्षा की ? या जनक के कर्मों के पुण्य ने इसका पालन किया ? या इसके चरित्र की दृढ़ता इसकी रक्षक हुई ? ओह ! अपूर्व, कितना अपूर्व ? ऐसा कौन कर सकेगा? यह इनकी अद्वितीय विशेषता है। हम जैसों से अवर्ण्य है ! । ४०४

शॆल्वमो वदुववर् तीमै योविदु
अल्लुनऩ् पहलुनिऩ् ऱमर राट्चॆय्वार्
ऒल्लुमो वॊरुवर्क्की दुऱहण् यादिऩि
वॆल्लुमो तीविऩै यऱत्तै मॆय्म्मैयाल् 405

चॆल्वमो अतु–(राक्षसों का) वैभव वैसा है; अवर् तीमैयो इतु–उनका नृशंस कार्य है यह; अमरर्–देव; अल्लुम् नल् पकलुम्–अहोरात्रि; निऩ्ऱु आळ् चॆय्वार्–स्थित होकर गुलामी करते हैं; ईतु ऒल्लुमो ऒरुवर्क्कु–यह (चरित्र-पालन) किसी के लिए शक्य हो सकता है क्या; उऱुकण् इऩि यातु–(इससे बढ़कर) संकट क्या हो सकेगा; मॆय्मैयाल्–असल में; तो विऩै अऱत्तै वॆल्लुमो–पाप धर्म को जीत सकेगा क्या। ४०५

वहाँ मैंने देखा— राक्षसों का वैभव वहाँ वैसा। उनका क्रूर-कार्य ऐसा। देवगण अहोरात्र रहकर उनकी गुलामी कर रहे हैं। इस स्थिति में ऐसा अपना पालन करा लेना किसी के लिए साध्य होगा क्या ? देवी ही यह असाध्य कार्य कर सकीं। इससे बढ़कर इन पर क्या कष्ट आ सकेगा ? सच है पाप पुण्य को जीत नहीं सकता। ४०५

ऎऩ्ऱिवै यिऩैयऩ वॆण्णि वण्णवाऩ्
पॊऩ्ऱिणि मुदुमरप् पॊदुम्बर्प् पुक्कवण्
निऩ्ऱऩ ऩव्वळि निहळ्ऩ्ददि यादॆऩिल्
तुऩ्ऱुपूञ् जोलैवा यरक्कऩ् ऱोऩ्ऱिऩाऩ् 406

ऎऩ्ऱु–यों; इवै इऩैयऩ–ये और ऐसी बातें; ऎण्णि–सोचकर; वण्ण वाऩ्–सुन्दर और उन्नत; पॊऩ् तिणि–स्वर्णलसित; मुतु मर पॊतुम्पर्–प्राचीन तरु के कोटर में; पुक्कु–घुसकर; अवण् निऩ्ऱऩऩ्–वहाँ रहा; अ वळि–वहाँ (तब); निकळ्ऩ्ततु–घटा; यातु ऎऩिल्–क्या है पूछो तो; तुऩ्ऱु पूम् चोलै वाय्–पुष्प-भरे उस अशोकवन में; अरक्कऩ् तोऩ्ऱिऩाऩ्–राक्षस (रावण) प्रकट हुआ। ४०६

हनुमान इस तरह की बातें सोचते हुए एक सुन्दर और ऊँचे सुनहले तरु के कोटर में जाकर ठहरा। तब हुआ क्या ? स्वयं राक्षसाधिपति रावण उस पुष्पकलित अशोक वन में आया। ४०६

शिहरवण् कुडुमि नॆडुवरै यॆवैयु मॊरुवळित् तिरण्डऩ शिवण
महरिहै वयिर कुण्डल मलम्बु तिण्डिऱल् तोळ्पुडै वयङ्गच्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शहरनीर् वेलै तळुविय कदिरि ऱलैदोऱुन् दलैदोऱुन् दयङ्गुम्
वहैयपन् महुड मिळवेयि लॅऱिप्पक् कङ्गुलुम् बहल्पड वन्दान् 407

चिकर वण् कुटुमि–शिखर रूपी समृद्ध चोटियों वाले; नॅटुवरै ऍवैयुम्–सभी पर्वत; ऑरु वळि तिरण्टत्त–एक स्थान पर इकट्ठे हुए; चिवण–जैसे; मकरिकै–मकराकार बाहुवलय; वयिर कुण्डलम्–हीरे के कुण्डल; अलम्पु–जिन पर हिलते थे; तिण् तिरळ् तोळ्–बहुत बलवान कन्धे; पुटै वयङ्क–पार्श्व में शोभे; चकर नीर् वेलै–सगरपुत्र-खनित जल-भरे सागर को; तळुविय कतिरिन्–आलिंगन करते हुए उठनेवाले सूर्य की तरह; तलै तोऱुम् तलै तोऱुम्–हर सिर पर; तयङ्कुम् वकैय–शोभायमान; पल् मकुटम्–अनेक किरीट; इळ वॅयिल् ऍऱिप्प–बाल आतप-समान प्रभा छिटकाते रहे; कङ्कुलुम् पकल् पट–रात भी दिन बनी; वन्तान्–(ऐसा) आया। ४०७

उसके कन्धे, शिखर-सहित लम्बे पर्वत सभी एकत्र हुए हों, ऐसे शोभ रहे थे। उनको मकराकार बाहुवलय अलंकृत कर रहे थे और कानों के हीरे के कुण्डल उन पर लगे डोल रहे थे। ऐसी बीस भुजाएँ उसके दोनों बाजुओं में विद्यमान थीं। उसके सिरों पर मुकुट जो थे, वे सगरपुत्र-खनित सागर से उठनेवाले सूर्य के समान लगे और बालआतप-सी कान्ति बिखेर रहे थे; जिसके कारण रात भी दिन में बदली हुई लगी। इस ठाट के साथ रावण आया। ४०७

उरुप्पशि युडैवा ळेन्दित्त डॉडर मेनहै वॅळ्ळडै युदवच्
चॅरुप्पिनैत् ताङ्गित् तिलोत्तमै शॅल्ल वरम्बैयर् कुळाम्बुडै शुऱ्ऱक्
करुप्पुरञ् जान्दुङ् गलवैयु मलरुङ् गलन्दुमिळ् परिमळ गन्दम्
मरुप्पुडैप् पॉरुप्पेर् मादिरक् कळिऱ्ऱिन् वरिक्कैवाय् मूक्किडै मडुप्प 408

उरुप्पचि–उर्वशी के; उटैवाळ् एन्तितळ्–तलवार लिये हुए; तॉटर–पीछे आते; मेनकै–मेनका के; वॅळ्ळटै उतव–पान देते रहते; चॅरुप्पितै ताङ्कि–चप्पलें उठाए हुए; तिलोत्तमै चॅल्ल–तिलोत्तमा के साथ आते; अरम्पैयर् कुळाम्–अप्सराओं के समूह के; पुटै चुऱ्ऱ–चारों ओर घेरे आते; करुप्पुर चान्तुम् कलवैयुम्–कर्पूर-चन्दन-लेप; मलरुम्–और पुष्प; कलन्तु–मिलकर; उमिळ्–जो निकालते हैं; परिमळ कन्तम्–श्रेष्ठ गन्ध; मरुप्पु उटै–दाँतों से युक्त; पॉरुप्पु एर्–पर्वत-सम; मातिर कळिऱ्ऱिन्–दिग्गजों की; वरि कै–झुर्रियों से युक्त, सूँड़ों के; वाय् मूक्किटै–मुख और नाकों में; मटुप्प–भरकर ठहरी, ऐसा। ४०८

(और भी) उर्वशी तलवार लिये साथ आ रही थी। मेनका ताम्बूलवाहिनी के रूप में उसे पान देती आ रही थी। तिलोत्तमा चप्पल लिये जा रही थी। अन्य अप्सराओं के समूह उसके चारों ओर घेरे आ रहे थे। कर्पूरचन्दन-लेप और विविध फूलों से उठती महक दाँत-सहित पर्वतों के समान रहनेवाले दिग्गजों की झुर्रियों-सहित सूँड़ों के द्वारों और मुखों में जा भर रही थी। ४०८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नात्तनॅय् विळक्क नालिरु कोडि नङ्गैय रङ्गैया लॅडुप्प
मेत्तिमिर्न् दुयर्न्द मुडिहळिन् मणियिन् विरिहदि रिरुळॅलाम् विऴुङ्ग
कान्मुद ऱॊडर्न्द नूबुरञ् जिलम्बक् किण्किणि कलैयॊडुङ् गलित्तप्
पात्तिरत् तन्नक् कुळाम्बडर्न् दॅन्नप् पऱ्पल मऴलैयुम् बहर 409

नात नॅय् विळक्कम्—कस्तूरी आदि से मिश्रित घी के दीपक; नाल् इरु कोटि—आठ करोड़; नङ्कैयर्—सुन्दरी स्त्रियाँ; अम् कैयाल् अॅटुप्प—मनोरम हाथ में लेती आयीं; मेल् निमिर्न्तु—ऊपर उठे और; उयर्न्त—उन्नत; मुटिकळिन्—किरीटों के; मणियिन्—रत्नों से; विरि कतिर्—छूटी प्रभा; इरुळ् अॅलाम्—सारा अन्धकार; विऴुङ्क—निगल लेती है; काल् मुतल्—पैर से; तॊटर्न्तु—लगातार (पहने); नपुरम् चिलम्प—नूपुर आदि के क्वणित होते; किण्किणि—घण्टियों के; कलैयॊटुम्—मेखलाओं के साथ; कलित्त—ध्वनित होते; पाल् निऱत्तु—दुग्धधवल; अन्नक् कुळाम्—हंससमूह; पटर्न्तॅन्न—फैले जैसे; पऱ्पल मऴलैयुम् पकर—विविध तुतली मधुर बोलियाँ बोलते आते। ४०९

सुन्दर स्त्रियाँ अपने मनोरम हाथों पर कस्तूरीगन्धद्रव्य-मिश्रित घी के दीये लिये आ रही थीं। रावण के किरीटों में जटित रत्नों की फैलती कान्ति अन्धकार को निगल रही थी। स्त्रियों के पादादि केश आभरणों से अलंकृत थे। नूपुर बोल रहे थे और घंटियों के साथ मेखलाएँ क्वणन कर रही थीं। वे भी आपस में तुतली और मधुर बोलियों में बात करती आ रही थीं। उनका समूह दुग्ध-धवल हंसों के समूहों के समान लगा। ४०९

अन्दरम् बुहुन्द दुण्डॅन्न मुत्तिवुऱ् ऱरुन्दुयि नीङ्गिन्ना तन्ऱो
शन्दिर वदनत् तरुन्ददि यिरुन्द तण्णरुम् शोलैयिऱ् ऱान्ो
मन्दिरम् यादो यारॊडुम् बोमो वॅन्ऱुदम् मनमरु हुदलाल्
इन्दिरन् मुदलो रिमैप्पिला नाट्टत् तॅन्नैवरु मुयिर्प्पविन् दिरुप्प 410

अन्तरम् पुकुन्ततु उण्टु—(कोई) आफ़त आ गयी है; अॅन्न—ऐसा; मुत्तिवुऱु—कोप करके; अरुन्तुयिल्—प्यारी नींद को; नीङ्कित्तान् अन्ऱो—छोड़कर इधर आया न (रावण); चन्तिर वतनत्तु—चन्द्रवदना; अरुन्तति इरुन्त—अरुन्धती-सम सीता जहाँ रहीं; तण् नरुम्—शीतल सुगन्धित; चोलैयिल् तान्ो—उद्यान में क्या; मन्तिरम् यातो—रहस्य क्या; यारॊटुम् पोमो—किसके सिर पर उतरेगा; अॅन्ऱु—ऐसा; तम् मनम् मरुकुतलाल्—मन के व्यग्र होकर संकट करने से; इन्तिरन् मुतलोर्—इन्द्र आदि; इमैप्पिला नाट्टत्तु अॅन्नैवरुम्—उन आँखों के जिनकी पलकें न गिरतीं, वे देव सब; उयिर्प्पु अविन्तु इरुप्प—श्वास रोके रहे। ४१०

रावण का अशोक वन में आना जानकर देवगण डर गये। कोई संकट आया है—ऐसा समझकर रावण कुपित हो गया और प्यारी नींद त्यागकर इधर आया है न? तब क्या उसका उद्देश्य इसी वन में आना था, जहाँ चन्द्रवदना अरुन्धती-समाना सीताजी हैं? तब इसका रहस्य क्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है ? इसका क्रोध किस पर उतरने के बाद किसके अहित के बाद शान्त होगा ? ऐसा सोचकर देव व्यग्र हुए और अपलक वे श्वास को भी रोके रहे। ४१०

नीऩिऱक् कुऩ्ऱि ऩॆडिदुडऩ् ऱाऴ्ऩ्द नीत्तवॆळ् ळरुविय ऩिमिर्ऩ्द
पाऩिऱप् पट्टु मालैयुत् तरियम् पशप्पुऱ पशुम्बॊऩा रत्तिऩ्
माऩिऱ मणिह ळिडैयुऱप् पडर्ऩ्दु वरुहदि रिळवॆयिल् पॊरुवच्
चूऩिऱक् कॊण्मूच् चुऴित्तिडै किऴिक्कु मिऩ्ऩॆऩ मार्बिऩू ऱुळङ्ग 411

नील् निऱ कुऩ्ऱिऩ्–नीले पर्वत पर; ऩॆटिदु उटऩ् ताऴ्ऩ्त–अधिक लम्बे आकार की; नीत्त वॆळ् अरुवियिऩ्–प्रवहमान श्वेत सरिता के समान; निमिर्ऩ्त–लम्बी; पाल् निऱ–दुग्धवर्ण; पट्टु–कौशेय; मालै उत्तरियम्–माला के समान उत्तरीय; पचप्पु उऱ–वर्ण बदलकर रहा; पचुम् पॊऩ् आरत्तिऩ्–चोखे स्वर्ण के हार के; माल् निऱ मणिकळ्–श्रेष्ठ रंग के रत्न; इटैपुऱ–बीच-बीच में; पटर्ऩ्तु–रहकर; वरु कतिर्–उदीयमान सूर्य की; इळवॆयिल् पॊरुव–बाल-किरणों के समान; चूल् निऱ–गर्भ-सहित और घने रंग के; कॊण्मू–मेघ को; चुऴित्तु–लपेटकर; इटै किऴिक्कुम्–बीच में चीरकर चमकनेवाली; मिऩ् ऎऩ–बिजली के समान; मार्पिऩ्–वक्ष में; नूल् तुळङ्क–यज्ञोपवीत हिल रहा था, इस रीति से। ४११

उसका श्वेत कौशेय उत्तरीय उसके वक्षःस्थल पर ऐसा लग रहा था, जैसे नीले रंग के पर्वत पर लम्बी सरिता गिर रही हो। उसके रंग को बदलते हुए चोखे स्वर्णहार में जटित श्रेष्ठ कान्तिमय रत्न बीच-बीच में रहकर उदय-सूर्य की किरणों के समान प्रकाश फैला रहे थे। उसके वक्ष में यज्ञोपवीत शोभ रहा था, जो जलगर्भित मेघ को लपेटे रहकर उसको चीर कर चमकनेवाली बिजली के समान शोभायमान था। ४११

तोडॊऱुऩ् दॊडर्ऩ्द महरवाय् वयिरक् किम्बुरि वलयमाच् चुडर्हळ्
नाडॊऱुञ् जुडरुङ् गलिहॆळु विशुम्बि ऩाळॊडु कोळिऩै नक्कत्
ताडॊऱुऩ् दॊडर्ऩ्दु तळङ्गुपॊऱ् कळलिऩ् तहैयॊळि ऩॆडुनिलऩ् दडवक्
केडॊऱुऩ् दॊडर्ऩ्द मुऱुवल्वॆण् णिलविऩ् मुहमल रिरविऩुङ् गिळर 412

तोळ् तॊऱुम् तॊटर्ऩ्त–हर भुजा में पहने हुए; मकरवाय्–मकरमुख के; वयिर किम्पुरि वलय–हीरे-जड़ित किंपुरी नामक वलयों के; मा चुटर्कळ्–पृथुल प्रकाश; नाळ् तॊऱुम् चुटरुम्–हर दिन प्रकाश देनेवाले; कलि कॆळु विचुम्पिऩ्–खूब विशाल आकाश के; नाळॊटु कोळिऩै नक्क–नक्षत्रों को और ग्रहों को मानो चाट लेते हैं; ताळ् तॊऱुम् तॊटर्ऩ्तु–दोनों पैरों में लगाये जाकर; तळङ्कु–जो स्वर निकालती हैं; पॊऱ्कळलिऩ्–उन स्वर्ण-पायलों की; तकै ऒळि–श्रेष्ठ प्रभा; ऩॆटु निलम् तटव–लम्बी भूमि को सहलाती आती है; केळ् तॊऱुम् तॊटर्ऩ्त–(उसके साथ आनेवाले) परिवार के हर सदस्य के प्रति दिखाये गये; मुऱुवल् वॆळ् निलविऩ्–हास रूपी श्वेत चाँदनी से; मुक मलर्–मुख रूपी सुमन; इरविऩुम् किळर–रात के समय में भी खिला रहता है, इस रीति से। ४१२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसकी सभी भुजाओं में मकरमुख के आकार के किंपुरी नामक बाहुवलय थे। उनमें हीरे के रत्न जड़े थे। उनसे जो कान्ति छूटी वह घने आकाश में प्रतिदिन चमकनेवाले तारों और ग्रहों को चाट रही थी। उसके परों में क्वणनशील स्वर्ण-पायलें थीं। उनसे जो कान्ति छूट रही थी, वह भूमि को सहलाती-सी लग रही थी। वह अपने साथ आनेवाले परिवार के हर सदस्य को हासयुक्त वदन के साथ देख रहा था। उस हास रूपी श्वेत चाँदनी में उसके मुखसुमन रात में भी खिल रहे थे। ४१२

तन्निऱत् तोडु माऱुतन् दिमैक्कु नीवियिन् ऱऴैपड वुडुत्त
पॊन्निऱत् तूशु करुवरै मरुङ्गि ऱऴुविय विळवॆयिल् पॊरुव
मिन्निऱक् कदिरिऱ् चुऱऱिय पशुम्बॊन् विरऱ्ऱलै वीऱॊळिक् काशिन्
कन्निऱक् कऱ्ऱै नॆडुनिऴल् पूत्त कऱ्पह मुऴुवनङ् गविन 413

तन् निऱत्तोटु–उसके रंग से; माऱु तन्तु–विपरीत बनकर; इमैक्कुम्–छवि देनेवाला; नीवियिन् तऴैपट–नीवि में बद्ध होकर अधिक घने सिलवटों से युक्त; उटुत्त–पहने हुए; पॊन् निऱ तूचु–सुनहले वस्त्र; करुवरै मरुङ्किल्–काले पर्वत-मध्य; तऴुविय–पड़े; इळ वॆयिल् पॊरुव–बाल आतप-से लगे; मिन् निऱ–बिजली के रंग की; कतिरिन्–प्रभा से; चुऱऱिय–घिरी; पचुम् पॊन्–चोखे स्वर्ण की; विरल् तलै–उँगलियों पर की; वीऱ ऒळि काचिन्–(मुँदरियों की) चमकदार श्रेष्ठ रत्न रूपी; कल् निऱ कऱ्ऱै–पत्थरों की प्रभा की लटें; नॆटु निऴल्–दीर्घ प्रकाश-सहित; पूत्त–विकसित; कऱ्पक मुऴुवनम् कविन–बड़े कल्पवन के समान शोभीं। ४१३

उसकी धोती में नीवि के नीचे सिलवटें अधिक लगी थीं। वह सुनहला रेशमी वस्त्र था। वह काले पर्वत पर पड़नेवाली बालसूर्य की रोशनी के समान लग रहा था। बिजली के-से रंग वाले, चमकदार स्वर्ण की, उँगलियों पर पहनी हुई मुँदरियों के रत्नों से निकलनेवाली कान्ति की लटें दीर्घ प्रकाश से शोभायमान कल्पवन के समान लगीं। ४१३

शन्नवी रत्त कोवैवॆण् डरळ मूऴियि निऱुदियिऱ् ऱऴुवि
पॊन्नॆडु वरैयै तॊत्तिय कोळु नाळुमॊत् तिडैयिडै पॊलिय
मिन्नॊळिर् मौलि युदयमाल् वरैयिन् मीप्पडर् वॆङ्गदिर्च् चॆल्वर्
पन्निरु वरिनु मिरुवरुन् दविर वुदित्तदोर् पडियॊळि परप्प 414

चन्न वीरत्त–'शन्नवीर' नामक हार के; कोवै वॆळ् तरळम्–लड़ियों में रहे श्वेत मोती; ऊऴियिन् इऱुतियिल्–युगान्त में; पॊन् नॆटु वरैयै–स्वर्ण के बड़े (मेरु) पर्वत को; तऴुवि तॊत्तिय–लपेटकर जो लटक रहे हैं; कोळुम् नाळुम् ऒत्तु–तारे और ग्रहों की समानता पाकर; इटै इटै पॊलिय–मध्य-मध्य चमकते हैं; मिन् ऒळिर् मौलि–विद्युत् के समान चमकनेवाले किरीट; उतयमाल् वरैयिन् मी–उदयगिरि पर; पटर्–फैली रही; वॆम् कतिर्–गरम किरणों के; चॆल्वर्–देवता (द्वादश) रुद्रों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

में; पन्निरुवरिनुम् इरुवरुम् तविर–दो को छोड़ अन्य; उतित्तु ओर् पटि–उदित हों जैसे; ऑळि परप्प–प्रकाश फैला रहे थे, इस रीति से। ४१४

उसने 'शन्नवीर' नाम का हार पहन रखा था। उसमें मोती लड़ियों में लगे थे, वे युगान्त में स्वर्ण-मेरुपर्वत पर लगे लटकनेवाले नक्षत्रों और ग्रहों के समान उस हार में मध्य-मध्य लग रहे थे। बिजली के समान कान्ति बिखेरनेवाले किरीट बारह आदित्यों में दो कम करके बाकी दस आदित्यों के समान लगे, जो बड़ी उदयगिरि पर दिखायी देते हों। किरीट उनके समान प्रकाश बिखेर रहे थे। ४१४

पयिलॅयिऱ् ऱिरट्टैप् पणैमरुप् पोडियप् पडियिनिऱ् परिबवञ् जुमन्द
मयिलडित् तॊळुक्कि नन्नैयमा मदत्त मादिरक् कावन्माल् यानै
कयिलैयिऱ् ऱिरण्ड मुरण्डॊडर् तडन्दोळ् कन्नहन्न दुयर्वरङ् गडन्द
अयिलॅयिऱ् ऱरियिन् शुवडुतन् करत्ता लळैन्दमाक् करियिनिन् ऱञ्ज 415

पयिल् ऍयिऱ्ऱु इरट्टै–युक्त दो-दो; पणै मरुप्पु–बलवान दाँत; ऒटिय–टूटे; इसलिए; पटियिनिल्–भूमि पर; परिपवम् चुमन्त–अयश धारण करनेवाले; मयिल् अटित्तु–मोर के पैर के; ऒळुक्किन् अन्नैय–प्रकार के समान तीन धाराओं में बहनेवाले; मा मतत्त–अधिक बहाव से मदयुक्त; मातिर कावल्–दिग्पालक; मा यानै–बड़े गज; कयिलैयिल् तिरण्ट–कैलास पर्वत के समान पुष्ट; मुरण् तॊटर्–सबल; तटम् तोळ् कन्नकन्नतु–विशाल भुजा वाले कनककशिपु के; उयर् वरम् कटन्त–बहुत श्रेष्ठ वरों को जीतनेवाले; अयिल् ऍयिऱ्ऱु–तीक्ष्ण दाँतों से युक्त; अरियिन्–नृसिंह की; चुवटु–पदछाप को; तन् करत्ताल्–अपनी सूँड़ से; अळैन्त–टटोलने वाले; मा करियिन्–बड़े गज; निन्ऱु अञ्च–खड़े होकर डर रहे हैं; इस रीति से रावण आया। ४१५

दिग्गजों के चार-चार दाँत (रावण के साथ युद्ध में) टूटे और उन्हें अपमान लगा। उनके गण्डस्थल में तीन धाराओं में मदनीर बह रहा था, जो मोर के पैरों के तीन नाखूनों का-सा दृश्य उपस्थित कर रहा था। वे दिग्गज रावण की पद-छाप को देखकर ऐसे डरे, मानो कैलासपर्वत के समान कठोर और बलवान कन्धों वाले हिरण्यकशिपु के बहुत श्रेष्ठ वरों को भी जो व्यर्थ कर चुके थे, उन नृसिंह की पद-छाप को अपनी सूँड़ों से टटोलते हुए डर रहे हों। ४१५

अङ्गयऱ् करुङ्ग णियक्कियर् तुयक्कि लरम्बैयर् विञ्जैयर्क् कमैन्द
नङ्गैयर् नाह मडन्दैयर् शित्त नारिय ररक्कियर् मुदलाम्
कुङ्गुमक् कॊम्मैक् कुविमुलैक् कनिवायक् कोहिलन् दुयरुऱुङ् गुदलै
मङ्गैय रीट्ट माल्वरै तळीइय मञ्जैयङ् गुळुवैन्त वयङ्ग 416

अम् कयल्–सुन्दर 'कयल' मछली-सी; करुम् कण् इयक्कियर्–काली आँखों की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यक्षस्त्रियाँ; तुयक्कु इल्–अथक; अरम्पैयर्–अप्सराएँ; विज्चैयर्क्कु अमैन्त नङ्कैयर्–विद्याधर कुल की दयिताएँ; नाक मटन्तैयर्–नागांगनाएँ; चित्त नारियर्–सिद्धस्त्रियाँ; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; मुतलाम्–आदि; कुङ्कुम–कुंकुम-लिप्त; कॊम्मै–पीन; कुवि मुलै–सुडौल स्तन; कनिवाय्–बिम्बाधर; कोकिलम् तुयरुरुम्–कोकिल को दुःखी करनेवाली; कुतलै–मधुर वाणी; मङ्कैयर् ईट्टम्–इनसे युक्त स्त्रियों के समूह; माल् वरै तऴीइय–बड़े पर्वत पर रहे; मञ्ञै अम् कुऴु–मोरों के मनोरम वृन्दों; ऍत–के समान; वयङ्क–शोभायमान लगे । ४१६

रावण के साथ स्त्रियों का समूह आ रहा था । यक्षस्त्रियाँ, जिनकी काली आँखें मनोहर कयल मछली के समान थीं; अथक अप्सराएँ; विद्याधर जाति की स्त्रियाँ; नागकन्याएँ; सिद्धनारियाँ; राक्षसियाँ आदि उस समूह में थीं । सबकी सब सुन्दरियाँ थीं, कुंकुम-लिप्त पुष्टस्तनी, बिंबाधरा और कोकिलपीडक मधुरवाणी रमणियाँ । वे उन मोरनीयों के समान थीं, जो किसी पर्वत का आश्रय लेकर उसी पर रहती हैं । वे रावण के साथ मिली आ रही थीं । (रावण ऐसा आ रहा था ।) । ४१६

तॊळैयुऱु पुऴैवेय् तूङ्गिशैक् कानम् तुयलुऱा दॊरुनिलै तॊडर
इळैयवर् मिडऱु मिन्निलै यियक्क किन्नर मुऱैनिऱुत् तॆडुत्त
किळैयुऱु पाडल् चिल्लरिप् पाण्डि ऱऴुविय मुऴवॊडुङ् गॆऴुमि
अळैयुऱै अरवु ममुदुवा युहुप्प वण्डमुम् वैयमु मळप्प 417

तॊळै उऱु–रन्ध्र-सहित; पुऴै वेय्–पोली बाँस की वंशी से उत्पन्न; तूङ्कु इचै कानम्–मृदु स्वर का गाना; तुयल् उऱातु–विना बिगड़े; ऒरु निलै तॊटर–समान रीति से हो रहा था; इळैयवर्–छोटी उम्र की कन्याओं का; मिटऱुम्–कण्ठस्वर भी; इन् निलै इयक्क–मनोहर रीति से गा रहा था; किन्नरम्–किन्नर नाम की वीणा का; मुऱै निऱुत्तु ऍटुत्त–उचित प्रकार से निकाला; किळै उऱु पाटल्–स्वर-शुद्ध संगीत; चिल्लरि पाण्टिल् तऴुविय–छोटे कंकड़-भरे 'पांडिल' नामक वाद्य से मिलकर निकली; मुऴवॊटुम्–मृदंग(-ध्वनि) के साथ; कॆऴुमि–लय होकर; अळै उऱै अरवुम्–बाँबी में रहनेवाले नाग भी; अमुतु वाय् उकुप्प–अमृत अपने मुख से उगले ऐसा; अण्टमुम्–बाह्याण्डों और; वैयमुम्–इस भूमि को; अळप्प–मानो माप रहा हो (अण्डों और भूमि पर सर्वत्र वह संगीत व्याप्त हो रहा था) । ४१७

अनेक छिद्रों से युक्त बाँस की बनी वंशी का मृदु संगीत विना किसी दोष या रुकावट के, समरस हो सुनायी दे रहा था । कमसिन रमणियों का कण्ठस्वर-संगीत भी साथ-साथ हो रहा था । 'किन्नर' नामक वाद्य का संगीत, जो तंत्रियों के मीड़ने से होता है, छोटे कंकड़ों से भरे 'पांडिल' नामक तालवाद्य के तालस्वर के और मर्दल के नाद के साथ मिलकर ऐसा मधुर चल रहा था कि बाँबी के सर्प का मुख भी (विष के बदले) अमृत बहावे । यह संगीत-स्वर मानो बाह्यांडों और इस अण्ड को भी नाप रहा था (यानी सर्वत्र व्याप्त हो रहा था) । ४१७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्नपूञ् जवुक्कञ् जामरै युक्क मादियाय् वरिशैयि नमैन्द
उन्नरुम् पॊन्निन् मणियिनिऱ् पुनैन्द वुळैक्कुलम् मळैक्कुल मनैय
मिन्निडैच् चॆव्वायक् कुविमुलैप् पणैत्तोळ् वीङ्गुदे रल्हुलार् ताङ्गि
नन्निऱक् कारिन् वरवुहण् डुवक्कुम् नाडह मयिलॆन नडप्प 418

अन्न–इस भाँति; मळैक्कुलम् अनैय–मेघवृन्दों के समान; मिन् इटै–बिजली-सी कमर; चॆव्वाय्–लाल अधर; कुवि मुलै–और सुडौल स्तन; पणै तोळ्–बाँस के समान कन्धे; वीङ्कु तेर्–बड़े रथ के समान; अल्कुलार्–भग, इनके साथ शोभित राक्षसियाँ; पूम् चवुक्कम्–पुष्प-चतुष्कोण वितान; चामरै–चँवर; उक्कम्–पंखे; आतियाय् वरिचैयिन् अमैन्त–आदि यथाक्रम जो थे वे; उन्नरुम्–अचिंत्य रूप से उत्कृष्ट; पॊन्निन्–स्वर्ण से; मणियिनिल्–और रत्नों से; पुनैन्त–रचित; उळै कुलम्–हरिणों को; ताङ्कि–धारण करके; नल् निऱ कारिन्–अच्छे रंग के मेघ का; वरवु कण्टु–प्रकट होना देखकर; उवक्कुम्–मुदित होनेवाले; नाटक मयिल् ॲन–नर्तक मयूर के समान; नटप्प–साथ चलती आतीं। ४१८

इस रीति से रावण जा रहा था। उसके साथ मेघसमूह के समान राक्षसियों का झुण्ड भी जा रहा था। वे राक्षसियाँ, विद्युत्कटि, अरुणाधरा, पीनस्तनी, वंशस्कन्धा, रथनितंबिनी स्त्रियाँ थीं। वे चौकोर पुष्पवितान, चामर, पंखे आदि राजोचित मर्यादा-चिह्न और अत्यन्त मनोहर स्वर्ण और रत्नों से निर्मित हरिणों को लेकर श्रेष्ठ काली घटा को देखकर मुदित होनेवाले नर्तनशील मोरों के समान जा रही थीं। ४१८

तन्दिरिक् कण्णिऱ् ऱाक्कुऱु करुवि तूक्किन रॆळुविय शदियिन्
मुन्दुऱु कुणिलो डियैवुऱु कुऱट्टिऱ् चिल्लरिप् पाण्डिलिन् मुऱैयिन्
मन्दर कीदत् तिशैप्पदन् दॊडर्न्द वहैयुऱु कट्टळै वळामल्
अन्दर वानत् तरम्बैयर् करुम्बिन् पाडला ररुहुवन् दाड 419

तन्तिरिक् कण्णिल्–तन्त्रियों पर; ताक्कुऱु करुवि–जो चोट खाती है (और स्वर निकालती है), उस वीणा आदि वाद्यों को; तूक्कितर्–बजानेवाले; ॲळुविय चतियिन्–जो 'यति' निर्धारित करते हैं, उनके अनुरूप; मुन्तुऱु–पहले शब्दित होनेवाले; कुणिलोटु इयैवु उऱु–चोब के प्रहार से स्वर निकालनेवाले; कुऱट्टिल्–'कुऱडु' नाम के चमड़े के वाद्य के; चिल्लरि पाण्टिलिन्–छोटे कंकड़-भरे 'पाण्डिल' नामक वाद्य के; मुऱैयिन्–उचित क्रम से; मन्तर कीतत्तु–मध्य स्वर के गीत के; इचै पतम् तॊटर्न्त–स्वरित शब्दों के अनुरूप; वकै उऱु कट्टळै–विधिक्रम का; वळामल्–उल्लंघन किये विना; अन्तर वानत्तु–अन्तरिक्ष की; अरम्पैयर्–अप्सराएँ; करुम्पिन् पाटलार्–इक्षु-सदृश मधुर संगीत जाननेवालियाँ; अरुकिल् वन्तु–रावण के पास आकर; आट–नाचती आयीं। ४१९

व्योमलोक की अप्सराएँ, जो इक्षुरसमधुर गान में भी चतुर थीं, रावण के पास-पास नाचती हुई आ रही थीं। तब तंत्रीनाद-वीणावादक भी आ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रहे थे। उन अप्सराओं का नाच उनके वादन द्वारा निर्धारित 'यति' के अनुरूप हो रहा था। चोब से प्रताड़ित 'कुरडु' नामक चमड़ा-मढ़े वाद्य से निकला नाद, छोटे कंकड़ों से भरे 'पांडिल' नामक वाद्य से निकला नाद, शास्त्रनिर्धारित और मद्धिम स्वर में गाया कण्ठ-संगीत —इन सबका अच्छा समाँ बँधा था और नाच उससे ताल-मेल के साथ हो रहा था। ४१९

अन्दियि नऩङ्ग नऴल्पडत् तुरन्द वयिऩ्मुहप् पहऴिवा यऱुत्त
वॆन्दुऱु पुण्णिन् वेल्नुऴैन् दॆऩऩ् वॆण्मदिप् पशुङ्गदिर् विरव
मन्दमा रुदम्बोय् मलर्तॊऱुम् वारि वयङ्गुनीर् मारियिऩ् वरुतेऩ्
शिन्दुनुण् डुऴियिऩ् शीहरत् तिवलै युरुक्किय शॆम्बॆऩत् तॆऱिप्प 420

अन्तियिऩ्–सायंकाल में; अऩङ्कऩ्–मन्मथ द्वारा; अऴल् पट–जलाने के लिए; तुरन्त–प्रेरित; अयिल् मुक–तीक्ष्णमुख; पकऴि वाय्–शरों से; अऱुत्त–काटकर बने; वॆन्तुऱु पुण्णिऩ्–ताजे व्रणों में; वेल् नुऴैन्तॆऩ्ऩ–भाला घुसा हो जैसे; वॆण् मति पचुम् कतिर्–श्वेत चन्द्र की शीतल किरणें; विरव–मिल गयीं; मन्त मारुतम्–मन्दमारुत; मलर् तॊऱुम् पोय्–पुष्प-पुष्प पर जाकर; वारि वरु–जो ले आता है; वयङ्कु नीर् वारियिऩ्–अंगीभूत रहनेवाले जल की मेघ-वर्षा के समान; तेऩ्–शहद की; चिन्तु नुण् तुऴियिऩ्–टपकनेवाली छोटी बूँदों के; चीकर तिवलै–छोटे कणों के; उरुक्किय चॆम्पु–पिघले ताम्र; ऍऩ–के समान; तॆऱिप्प–छिटकते (रावण आया)। ४२०

श्वेत चाँद की शीतल चाँदनी छिटक रही थी, वह रावण को ऐसा लग रहा था, मानो सन्ध्या-वेला में मन्मथ द्वारा जलाने के लिए प्रेषित शरविद्ध व्रण में भाला घुसा हो। मन्द मलयमारुत के साथ पुष्प-पुष्प पर जा संगृहीत मधु-धारा के छोटे-छोटे कण आ रहे थे और वे रावण पर पिघले ताम्र के कणों के समान पड़कर ताप दे रहे थे। ४२०

इऴैपुरै मरुङ्गु लिऱुमिऱु मॆऩवु मिऱुहिला वऩमुलै यिरट्टै
उऴैपुहु शॆप्पि नॊळिदर मऱैत्त बुत्तरी यत्तिऩ रॊल्हिक्
कुऴैपॊरुङ् गमलक् कोट्टिऩर् नोक्कुङ् गुऱुनहैक् कुमुदवाय् महळिर्
मऴैपुरै यॊण्गण् शंङ्गडै यीट्ट मार्बिनुन् दोळिनुम् वयङ्ग 421

इऴैपुरै–सूत्रसम; मरुङ्कुल्–कमर; इऱुम् इऱुम् ऍऩवुम्–टूटेगी, टूटेगी, ऐसा कहने योग्य; इऱुकिला–तो भी नहीं टूटेंगे, ऐसा (कठिन); वऩ मुलै इरट्टै–मनोरम स्तनद्वय; उऴै पुकु–अन्दर धँसे हुए; चॆप्पिऩ्–कटोरियों के समान; ऒळिदर–शोभा देते हैं; मऱैत्त–उनको आच्छादित करनेवाले; उत्तरीयत्तिऩर्–उत्तरीयों से अलंकृत; ऒल्कि–नरम बनकर; कुऴै पॊरुम्–कुण्डलों से टकरानेवाली; कमलम्–कमलनयनों वालियाँ (जो); कोट्टिऩर् नोक्कुम्–तिरछी रीति से रावण को देखती हैं; कुऱुनकै–मन्दहास-सहित; कुमुत वाय् मकळिर्–कुमुदाधरा स्त्रियों के; मऴै पुरै–मेघ-सम (काली); ऒण् कण्–प्रकाशमय आँखों की; चॆम् कटै ईट्टम्–लाल कोरों का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समूह; मार्पितुम् तोळितुम्–(रावण के) वक्ष और भुजाओं पर; वयङ्क–लगा रहता है, ऐसा। ४२१

सुन्दरी स्त्रियों की दृष्टि रावण पर लगी हुई थी। सूत्र-सम उनकी कमरें अभी टूटी, अभी टूटी की स्थिति में थीं। तो भी नहीं टूटीं। सुदृढ़ स्तनद्वय वक्षों में धँसे हुए कटोरों के समान शोभ रहे थे। उन स्तनों को उत्तरीय आच्छादित कर रहा था। उनकी आँखें कुण्डलों तक गयी थीं, मानो उनसे भिड़ने चली हों। मन्दहासवदना कुमुदाधरा स्त्रियाँ अपनी आँखें तिरछी करके मेघ-सम काली, उज्ज्वल उन आँखों की लाल बनी कोरों से रावण पर अपनी दृष्टियों को डाले जा रही थीं। ४२१

मालैयुऱ् जान्दुङ् गलवैयुम् बूणुम् वयङ्गुनुण् डूशॊडु काशुम्
शोलैयिन् ऱॊळदिक् कऱ्पहत् तरुवु निदिहळुङ् गॊण्डुपिन् ऱॊडरप्
पालिन्वॆण् परवैत् तिरैकरुङ् गिरिमेऱ् परन्दॆन्नच् चामरै पदैप्प
वेलैनिन् ऱुयरु मुयलिल्वान् मदियिन् वॆण्गुडै मीदुऱ विळङ्ग 422

चोलैयिन् तॊळुति–वन के समान घने; कऱ्पक तरुवुम्–कल्पतरु; निधिकळुम्–(शंख, पद्म आदि नव) निधियाँ; मालैयुम्–मालाएँ; चान्तुम्–चन्दन; कलवैयुम्–मिश्रित लेप; पूणुम्–आभरण; वयङ्कु नुण् तूचॊटु–शोभायमान महीन वस्त्रों के साथ; काचुम्–और रत्न; कॊण्टु पिन् तॊटर–लेकर पीछे आते हैं; पालिन्–क्षीर; परवै वॆण् तिरै–सागर की श्वेत तरंगें; करुम् किरि मेल्–काले पर्वत पर; परन्तॆत–फैलीं जैसे; चामरै पतैप्प–चामर डुलते हैं; वेलै निन्ऱु–समुद्र से; उयरुम्–उत्तरोत्तर ऊँचा चढ़नेवाले; मुयल् इल्–शशकहीन; वाल् मतियिन्–श्वेत चन्द्र के समान; वॆण् कुटै–श्वेत छत्र; मीतु उऱ विळङ्क–ऊपर सुन्दर रूप से शोभता है, इस तरह। ४२२

वन के समान अधिक संख्या में कल्पतरु और शंख, पद्म आदि नव-निधियाँ भी साथ आ रही थीं। वे मालाएँ, चन्दन, मिश्रगन्ध-लेप, आभरण, शोभायमान महीन वस्त्र, रत्न आदि लेकर उसका अनुगमन कर रही थीं। चामर डुल रहे थे, और वे क्षीरसागर की तरंगों के काले पर्वत पर फैलने का दृश्य पैदा कर रहे थे। श्वेत छत्र उसके ऊपर एक कलंकहीन चन्द्र के समान शोभित हो रहा था, जो समुद्र से उत्तरोत्तर ऊपर उठ रहा हो। ४२२

आऱ्हलि यहळि यरुवरै यिलङ्गै यडिपॆयर्त् तिडुतॊऱु मळत्त
नेऱ्करुम् बरवैप् पिऱळ्दिरै तवळ्न्दु नॆडुन्दडन् दिशैतॊऱुम् निमिरच्
चाऱ्वरुङ् गडुवि नॆयिऱुडैप् पहुवा यन्नन्दनुन् दलैतडु माऱ
मूरिनी राडै यिरुनिलप् पावै मुदुहुळुक् कुऱ्ऱन्न णॆळिय 423

आऱ् कलि अकळि–समुद्र जिसकी परिखा हो; अरु वरै इलङ्कै–श्रेष्ठ (त्रिकूट) पर्वत पर बसी लंका; अटि पॆयर्त्तिटुम् तॊऱुम्–जब पग धरता है; अळत्त–दबाने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

से; नेर्–सामने के; करुम् परवै–काले सागर पर; पिऱऴ् तिरै–लहरानेवाली तरंगें; तवऴ्न्तु–चलकर; नॆटुम् तटम्–उसकी लम्बी और चौड़ी; तिचै तॊऱुम्–सारी दिशाओं में; निमिर–भर जाती हैं; चार्वु अरुम्–अगम; कटुविन् ऍयिऱुटै–विषैले दाँतों वाले; पकुवाय् अतन्ततुम्–फटे जैसे बड़े मुख वाले अनन्तनाग के भी; तलै तटुमाऱ–भार के कारण (अपने) सिर लड़खड़ाते हैं; मूरि नीर्–सबल जल; आटै–जिसका वसन है; इरु निल पावै–वह भूदेवी; मुतुकु उळुक्कुऱ्ऱऩ्ऱळ्–पीठ पर बल पड़ने से; नॆऴिय–हिल उठी। ४२३

लंका नगरी बड़े त्रिकूट पर्वत पर स्थित थी और उसके चारों ओर शब्दायमान सागर घेरे हुए था। ज्यों-ज्यों रावण अपना एक चरण उठाकर दूसरा रखता, त्यों-त्यों लंका दब जाती। तब सामने के बड़े सागर पर उठनेवाली तरंगें चारों दिशाओं में फैलतीं और विकट तथा विषैले दाँतों के और फटे हुए-से दिखनेवाले बड़े मुखों के अनन्तनाग के सिर डगमगा जाते और भूदेवी की पीठ में वेदना के साथ बल पड़ जाता। ४२३

केडहत् तोडु मऴुवॆऴुच् चूल मङ्गुशङ् गप्पणङ् गिडुहो
डाडहच् चुडर्वा ळयिल्शिलै कुलिश मुदलिय वायुद मनैत्तुम्
ताडहैक् किरट्टि यॆऱुऴ्वलि तळैत्त तहैमैयर् तडवरै पॊऱुक्कुम्
चूडहत् तडक्कैच् चुडुशिनत् तडुपो ररक्कियर् तलैदॊऱुञ् जुमप्प 424

ताटकैक्कु इरट्टि–ताड़का के दुगुने; ऍऱुऴ्वलि तळैत्त–अधिक बलसंयुक्त; तकैमैयर्–योग्य; तटवरै पॊऱुक्कुम्–बड़े पर्वतों को धारण करनेवाले; चूटक तटकै–कंकणालंकृत बड़े हाथों से युक्त; चुटु चिनत्तु–संतापक क्रोधी; अटु पोर् अरक्कियर्–संहारक युद्धकुशल राक्षसियाँ; केटकत्तोटु–ढालों के साथ; मऴु–परशु; ऍऴु–मूसल; चूलम्–और शूल; अङ्कुचम्–अंकुश; कप्पणम्–और 'कप्पण' नामक हथियार; किटुकु ओटु–'किटुकु' नामक हथियार के साथ; आटक चुटर् वाळ्–सुनहली उज्ज्वल तलवार; अयिल्–और भाला; चिलै–धनु; कुलिचम्–और कुलिश; मुतलिय–आदि; आयुतम् अनैत्तुम्–सारे हथियार; तलै तॊऱुम्–अपने-अपने सिर पर; चुमप्प–धारण किये आ रही हैं। ४२४

उस रावण के साथ ताड़का से दुगने बल से संयुक्त, बड़े-बड़े पर्वतों को भी उठा सकनेवाले कंकणशोभित हाथों की और संतापक क्रोधशीला और युद्ध में त्रास मचानेवाली अनेक राक्षसियाँ ढाल, परशु, लोहे का मूसल, त्रिशूल, अंकुश और 'कप्पण' नामक काँटेदार गदा, काठ की बनी 'किडुहु' नामक ढाल और सुनहली उज्ज्वल तलवारें आदि सभी हथियार अपने-अपने सिर पर ढोते हुए जा रही थीं। ४२४

विरितळिर् मुहैपूक् कॊम्बडै मुदल्वे रिवैयॆला मणिपॊऩाल् वेय्न्द
तरुवुयर् शोलै तिशैदॊऱुङ् गरियत् तळलुमि ळयिर्प्पुमुन् ऱवऴत्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरुमह ळिरुन्द दिशैयरिन् दिरुन्दुन् दिहैप्पुरु शिन्दैयाल् कॅडुत्त
दॉरुमणि नेडुम् पः(ह्)रलै यरवि नुळैदॉरु मुळैदॉरु मुलावि 425

विरि तळिर्–विकसित पल्लव; मुकै–कलियाँ; पू–और फूल; कॉम्पु–और टहनियाँ; अटै–पत्ते; मुतल्–तने; वेर्–जड़ें; इवै ऍलाम्–ये सब; मणि पॉन्नाल् वेय्न्त–रत्न और स्वर्ण-निर्मित जैसे (जिसमें थे); तरु उयर् चोलै–तरुलसित वन; तिचै तॉरुम्–(रावण जिस-जिस दिशा में देखता है) उस-उस दिशा में; करिय–झुलस जाता है, ऐसा; तळल् उमिळ्–आग उगलता हुआ; उयिर्प्पु–श्वास जो छोड़ता है; मुन् तवळ–वह आगे-आगे जाता है; तिरु मकळ् इरुन्त–जहाँ श्रीलक्ष्मी रहीं वह; तिचै–दिशा; अरिन्तिरुन्तुम्–जानता था तो भी; तिकैप्पु उरु चिन्तैयाल्–भ्रान्त मन का था, इसलिए; कॅटुत्ततु ऑरु मणि–खोयी हुई श्रेष्ठ मणि को; नेटुम्–खोजनेवाले; पः.रलै अरविन्–अनेक सिरों के सर्प के समान; उळैतॉरुम् उळैतॉरुम्–स्थान-स्थान पर; उलावि–फिरता हुआ। ४२५

विकसित कल किसलय, कुडमल, सुमन, छोटी टहनियाँ, पत्ते, तने और जड़ें ये सब मानो स्वर्ण और रत्न के बने लगे। ऐसे तरुओं से परिपूर्ण वह वन, जिस दिशा में रावण की दृष्टि पड़ी, उस दिशा में जल, झुलस जाता था। ऐसा अग्निमय श्वास को आगे जाने देते हुए वह जा रहा था। उसे मालूम था कि देवी कहाँ थीं। तो भी उसका मन वश में नहीं रहा इसलिए भ्रमित होकर खोई हुई अपनी मणि की खोज में जानेवाले बहुसिर नागसर्प के समान स्थान-स्थान पर घूमता फिरता। ४२५

इत्तैयदोर् तन्मै यॅरुळ्वलि यरक्क रेन्दल्वन् दॅय्दुहित् रात्तै
अत्तैयदोर् तन्मै यञ्जनैच् चिरुवन् कण्डन नमैवुर नोक्कि
वित्तैयमुञ् जॅयलुम् मेल्विळै पॉरुळु मिव्वळि विळङ्गुमॅन् रॅण्णि
वत्तैहळ लिरामन् पॅरुम्बॅय रोदि यिरुन्दनन् वन्दयन् मरैन्दे 426

इत्तैयतु ओर् तन्मै–ऐसे अपूर्व स्वभाव का; ऍरुळ् वलि–अपार बल का; अरक्कर् एत्तल्–राक्षसों का राजा (रावण); वन्तु ऍय्तुकित्रात्तै–वहाँ जो आ रहा था उसे; अत्तैयतु ओर् तन्मै–वैसे स्वभाव के; अञ्चनै चिरुवन्–अंजनासुत ने; कण्टनन्–देखा; अमै उर नोक्कि–सावधानी से सोचकर; वित्तैयमुम् चॅयलुम्–उपाय, कार्य और; मेल् विळै पॉरुळुम्–आगे होनेवाला नतीजा; इ वळि विळङ्कुम्–अब विदित हो जायगा; ऍन्रु ऍण्णि–यह सोचकर; वत्तै कळल् इरामन्–वीरपायलधारी श्रीराम के; पॅरुम् पॅयर् ओति–श्रेष्ठ पावन नाम का जप करके; अयल् वन्तु–पास आकर; मरैन्तु इरुन्तनन्–छिपा बैठा रहा। ४२६

इस तरह के ठाट के साथ अपार बलवान राक्षसों का राजा रावण वहाँ आ रहा था और ऊपर वर्णित अञ्जनासुत ने उसे देखा। मन लगाकर सोचा। रावण क्या करेगा, क्या नीति अपनाएगा और उसका फल क्या होगा —आदि बातें अब ज्ञात हो जायँगी। ऐसा सोचकर हनुमान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वीर पायलधारी श्रीराम के पावन नाम का जप करता हुआ पास आकर एक स्थान पर छिपा रहा। ४२६

आयिडै यरक्क ऩरम्बैयर् कुऴुवु मल्लवुम् वेऱय लहल
मेयिऩऩ् पॆण्णिऩ् विळक्कॆऩुऩ् दहैया ळिरुन्दुऴि याण्डवळ् वॆरुविप्
पोयिऩ युयिर ळामॆऩ नडुङ्गिप् पॊऱिवरि यॆऱुऴ्वलिप् पुहैक्कण्
काय्शिऩ् वुऴुवै तिऩ्ऩिय वन्द कलैयिळम् बिणैयॆऩक् करैन्दाळ् 427

आ इटै–तब; अरक्कऩ्–राक्षस (रावण); अरम्पैयर् कुऴुवुम्–अप्सराओं के समूह; अल्लवुम्–और अन्य वृन्दों के; वेऱु अयल् अकल–अलग दूर जाते; पॆण्णिऩ् विळक्कु–स्त्रियों में दीपक; ऎऩुम् तकैयाळ्–कहने योग्य सीतादेवी; इरुन्तुऴि–जहाँ रहीं वहाँ; मेयिऩऩ्–गया; आण्टु–तब; अवळ्–देवी; वॆरुवि–डरकर; पोयिऩ उयिरळ् आम् ऎऩ–विगतप्राणा-सी; नटुङ्कि–काँपकर; पॊऱि वरि–बिंदियों और धारियों से युक्त; ऎऱुऴ् वलि–अपार बलवान; पुकै कण्–धुआँ निकालनेवाली आँखों के; काय् चिऩ–त्रासक क्रोध वाले; उऴुवै–व्याघ्र के; तिऩ्ऩिय वन्त–खाने के लिए (रूप में) आयी; कलै इळम् पिणै ऎऩ–बाल-मृगी के समान; करैन्ताळ्–दुर्बल पड़ गयीं। ४२७

तब अप्सरा स्त्रियों और अन्य स्त्रियों के दल रावण से अलग दूर हो गये। रावण वहाँ गया, जहाँ स्त्रीकुलदीपक-सी सीताजी रहीं। तब सीताजी डरकर विगतप्राणा हुई-सी काँप उठीं। वह उस मृगी के समान दुर्बल पड़ीं, जो बिंदियों और धारियों से युक्त, धुआँ निकालनेवाली आँखों और तापक क्रोध के अपार शक्तियुत व्याघ्र के सामने उसके खाने के रूप में आयी हो। ४२७

❀ कूशि याबि कुलैवुऱु वाळैयुम्
आशै यालुयि राशऱु वाऩैयुम्
काशिल् कण्णिणै शाऩ्ऱॆऩक् कण्डऩऩ्
ऊश लाड लॊऴिन्द वुळ्ळत्ताऩ् 428

ऊचल् आटल्–झूले की तरह चंचलता से; ऒऴिन्त उळ्ळत्ताऩ्–रहित मन वाला; कूचि–सिमटकर; आवि कुलैवु उऱुवाळैयुम्–प्राण जिनके डोल रहे हैं, उन सीता को और; आचैयाल्–कामना के कारण; उयिर् आचु–प्राणबन्धन; अऱुवाऩैयुम्–जिसका नष्ट हो रहा था उस (रावण) को; काचु इल्–निर्दोष; कण् इणै–अक्षद्वय; चाऩ्ऱु ऎऩ–साक्षी बनाकर; कण्टऩऩ्–देखा। ४२८

अचंचल-मन हनुमान ने, सिमटकर प्राणविकम्पित रहनेवाली सीता को और कामेच्छा के कारण प्राणबन्धन-विमुक्त होनेवाले रावण को अपने निर्दोष नेत्रद्वय को साक्षी बनाकर (यानी निर्विकल्प रीति से) देखा। ४२८

❀ वाऴि शाऩहि वाऴियि राहवऩ्, वाऴि नाऩ्मऱै वाऴिय रन्दणर्
वाऴि नल्लऱ मॆऩ्ऱॆऩ्ऱु वाळ्त्तिऩाऩ्, ऊऴि तोऱु मुयर्वऱुङ् गीर्त्तियाऩ् 429

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऊऴि तोऱम्–प्रतियुग; उयर्वु उऱम्–उत्तरोत्तर उन्नत होनेवाले; कीर्त्तियान्–यशस्वी; वाऴि चातकि–जानकी जिएँ; वाऴि इराकवन्–श्रीराघव जिएँ; वाऴि नान्मऱै–जिएँ चतुर्वेद; वाऴियर् अन्तणर्–ब्राह्मण जिएँ; वाऴि नल्लऱम्–जिए सद्धर्म; ऍन्ऱु ऍन्ऱु–ऐसा अनेक बार; वाऴ्त्तिनान्–जय बोला। ४२९

हनुमान एकदम भावोद्वेलित हो गया। प्रतियुगविवर्धितयश उसने जय-जयकार किया; जानकी जिएँ; श्रीराघव की जय हो। चतुर्वेद जिएँ; ब्राह्मण जिएँ ! सद्धर्म जीता रहे ! । ४२९

अव्वि डत्तरु ह्ॅय्दिय रक्कन्ऱान्, ऍव्वि डत्तॅऩक् किन्ऩरु ळीवदु
नॉव्वि डैक्कुयि लेनुवल् ह्ॅन्ऱऩन्, वॅव्वि डत्तै यमुदॅऩ वेण्डुवान् 430

वॅम् विटत्तै–भयंकर गरल को; अमुतु ऍऩ–अमृत समझकर; वेण्टुवान्–चाहनेवाले; अरक्कन्–राक्षस ने; अ इटत्तु अरुकु–उस स्थान के पास; ऍय्ति–पहुँचकर; नॉ इटै कुयिले–क्षीणकटि कोकिला; ऍऩक्कु–मुझे; इन् अरुळ् ईवतु–मधुर करुणा का दान करना; ऍ इटत्तु–कब; नुवल्क–बताओ; ऍन्ऱऩन्–पूछा। ४३०

रावण भयंकर गरल को अमृत समझकर कामना करता था। वह श्रीसीताजी के पास आकर बोला— क्षीणकटि सीते ! मुझ पर दया करोगी कब ? कहो न। ४३०

❀ ईशऱ् कायिनु मीडऴि वुऱ्ऱिऱै, वाशिप् पाडऴि याद मनत्तिनान्
आशैप् पाडमॅय्न् नाणु मडर्त्तिडक्, कूशिक् कूशि यिवैयिवै कूऱिनान् 431

ईचऱ्कु आयिनुम्–शिवजी के सम्बन्ध में भी; ईटु अऴिवु उऱ्ऱु–बल खोकर; इऱै–थोड़ा भी; वाचिप्पाटु अऴियात–अहंभाव जिसने नहीं खोया वैसे; मनत्तिनान्–मन वाला रावण; आचैप्पाटुम्–कामना; मॅय् नाणुम्–और (असफलता पर) सच्ची शरम के; अटर्त्तिट–कष्ट देने से; कूचि कूचि–सकुचाकर-सकुचाकर; इवै इवै कूऱिनान्–यों, यों बोला। ४३१

शिवजी के सामने हारकर भी उसका मन अहंभाव नहीं छोड़ता था। अब उसे सीता-प्रेम और उसे प्राप्त करने में असफलता के कारण उठी शरम क्लेश दे रही थी। इसलिए वह सकुचाते हुए यों कहने लगा। ४३१

इन्ऱि ऱन्दऩ नाळैयि ऱन्दऩ, ऍन्ऱि ऱन्दरुन् दऩमैयि दालॅऩैक्
कॊन्ऱि ऱन्दपिन् कूडुदि योकुळै, शॅन्ऱि ऱङ्गि मऱन्दरु शॅङ्गणाय् 432

कुळै चॅन्ऱु इऱङ्कि–कर्णकुण्डल तक जाकर; मऱम् तरु–(मुझे) कष्ट देनेवाली; चॅम् कणाय्–अरुण आँखों की देवी; इऩ्ऱु इऱन्तत–'आज' अनेक अदृश्य हो गये; नाळै इऱन्तत–अनेक 'कल' भी बीत चले; ऍऩ् तिऱम्–मेरे प्रति; तरुम् तऩमै–जो तुम दया करती हो वह; इताल्–इस प्रकार है तो; ऍऩै कॊन्ऱु–मुझे मारकर; इऱन्त पिन्–मेरे मरने के बाद; कूटतियो–मिलोगी क्या। ४३२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कर्णकुण्डल तक आयत और मेरे साथ क्रूरता बरतनेवाली आँखों की सीते ! आज कहके कितने ही दिन बीत गये ! वैसे ही कितने 'कल' भी बीत गये ! यही मेरे प्रति तुम्हारा रुख है तो क्या तुम्हारे मारने के कारण मेरे मरने के बाद ही मुझे प्राप्त होओगी ? । ४३२

उलह मॊऩ्ऱॊ डिरण्डु मोम्बुमॆऩ्, अलहिल् शॆल्वत् तरशिय लाणैयिल्
तिलह मेयुऩ् ऱिऱ्ततऩङ् गऩ्ऱरु, कलह मल्ल ऎळिमैयुङ् गाण्डियो 433

उलकम् ऒऩ्ऱॊटु इरण्टुम्–(एक और दो) तीनों लोकों का; ओम्पुम्–पालन करनेवाले; ऎऩ्–मेरे; अलकु इल् चॆल्वत्तु–अगणित सम्पत्ति के; अरचियल् आणैयिल्–राज्यशासन में; तिलकमे–स्त्रीतिलक; उऩ् तिऱत्तु–तुम्हारे लिए; अऩङ्कऩ् तरु–मन्मथ-दत्त; कलकम् अल्लतु–कलह छोड़कर; ऎळिमैयुम्–अन्य लघुता; काण्टियो–देखती हो क्या । ४३३

मैं त्रिलोकाधिपति हूँ । मेरे अनन्त वैभवपूर्ण राज्य-शासन में, हे स्त्रीकुलतिलक ! अनंग-कलह को छोड़ कोई दूसरा मुझे लघुता दिलानेवाला कार्य होता हुआ देखती हो क्या ? । ४३३

पून्दण् वार्हुऴऱ् पॊऱ्कॊऴुन् देपुहऴ्, एन्दु शॆल्व मिहऴ्न्दऩै यिऩ्नुयिर्क्
कान्दऩ् माण्डिलऩ् काडुह डन्दुपोय्, वाय्न्दु वाऴ्वदु मानिड रोडन्ऱो 434

पूम् तण् वार्कुऴल्–पुष्पालंकृत शीतल लम्बे केश वाली; पॊऩ् कॊऴुन्ते–स्वर्ण-किसलय; पुकऴ् एन्तु–प्रकीर्तित; चॆल्वम् इकऴ्न्तऩै–धन-वैभव की निन्दा करती हो; इऩ् उयिर् कान्तऩ्–मधुर प्राणनाथ; इरामऩ्–राम; माण्टिलऩ्–विना मरे; काटु कटन्तु पोय्–वनवास पूरा करके जाकर; वाय्न्तु वाऴ्वतु–सुख के साथ जीना भी; मानिटरोटु अऩ्ऱो–मनुज के साथ ही न । ४३४

पुष्पालंकृत लम्बे केश की स्वर्णकिसलय-समान सीते ! यशोधर मेरे वैभव की अवहेलना करती हो ! (पर सोचो) तुम्हारा प्यारा प्राणनाथ वनवास की अवधि पूरा करके अयोध्या जाएगा और तुम उसके साथ मिलकर रहोगी— समझो ! तो भी तुम्हारा जीवन एक मानव के साथ ही न होगा ? । ४३४

नोऱ्किऩ् ऱार्हऴु नुण्बॊरु णुण्णिदिल्
पार्क्किऩ् ऱारुम् पॆऱुम्बयऩ् पार्त्तियेल्
वार्क्कुऩ् ऱामुलै यॆऩ्शॊऩ् मवुलियाल्
एऱ्किऩ् ऱारी डुडनुऱै यिऩ्बमाल् 435

वार् कुऩ्ऱा मुलै–अँगिया में न समानेवाले स्तनों की सीते; नोऱ्किऩ्ऱार्कऴुम्–व्रतपालन करनेवाले और; नुण् पॊरुऴ्–सूक्ष्म तत्त्वों के; नुण्णितिल् पार्क्किऩ्ऱारुम्–सूक्ष्मदर्शी भी; पॆऱुम् पयऩ्–जो प्राप्त करेंगे वह फल; पार्त्तियेल्–देखोगी तो;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅन् चोल्–मेरी आज्ञा; मवुलियाल्–सिर पर; एऱ्किन्ऱारोटु–धारण करनेवाले; उटन् उऱै–(देवों) के साथ रहने का; इन्पम्–सुख ही है। ४३५

अँगिया में न समानेवाले स्तनों से शोभित सीते ! सोचो ! व्रतधारी और सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी लोग आखिर क्या पद पाते हैं ? देवों का सहवास ही न ? वे देव आखिर मेरी आज्ञा को अपने सिर पर धारण करनेवाले ही हैं ? । ४३५

पॉरुळुम् याळुम् विळरियुम् बूवैयुम्, मरुळ नाळु मळलै वळङ्गुवाय्
तॅरुळु नान्मुहन् शॅय्ददुन् शिन्दैयिल्, अरुळु मिन्मरुङ् गुम्मरि दाक्कियो 436

पॉरुळुम्–(तोतले) बच्चे और; याळुम्–वीणा; विळरियुम्–'धैवत' स्वर; पूवैयुम्–सारिका; मरुळ–भ्रमित रह जाएँ ऐसा; नाळुम्–हमेशा; मळलै वळङ्कुवाय्–मधुर वचन बोलनेवाली; तॅरुळुम्–सुलझी हुई बुद्धिवाले; नान्मुकन्–ब्रह्मा ने; उन् चिन्तैयिल्–तुम्हारे मन में; अरुळुम्–कृपा; मिन् मरुङ्कुम्–और बिजली-सी कमर; अरितु आक्कियो–अभाव करके (तुम्हें) रचा है क्या। ४३६

ऐसी मधुरभाषिणी, जिसके सामने तोतले शिशु, वीणा, धैवत स्वर और सारिका आदि मधुर स्वरवाले भ्रमित होकर तरसें ! सुलझी हुई बुद्धि वाले ब्रह्मा ने तुम्हारे शरीर में विद्युत्-सी कमर के और मन में दया के विना ही तुम्हारी सृष्टि की क्या ? । ४३६

ईण्डु नाळु मिळमैयु मीण्डिल, माण्डु माण्डु पिऱिदुऱु मालैय
वेण्डु नाळ्वॅऱि देविळिन् दालिऩि, याण्डु वाळ्व दिडरुळन् ऱाळ्दियो 437

ईण्टु–इस संसार में; नाळुम्–जीवन के दिन; इळमैयुम्–और यौवन के दिन; मीण्टिल–लौट नहीं आते; माण्टु माण्टु–धीरे-धीरे बीतकर; पिऱितु उऱु मालैय–बिगड़कर नष्ट होनेवाले स्वभाव के हैं; वेण्टु नाळ्–वांछनीय यौवन के दिन; वॅऱिते विळिन्ताल्–व्यर्थ बीत गये तो; इऩि–फिर; याण्टु वाळ्वतु–कहाँ सुखी रहना; इटर् उळन्ऱु–संकट में पड़कर; आळ्तियो–मग्न रहना चाहती हो क्या। ४३७

इस संसार में आयु और यौवन अगर बीत गये तो फिर लौट नहीं आयँगे। उनकी प्रकृति भी धीरे-धीरे बिगड़कर नष्ट होने की है। वांछनीय यौवन व्यर्थ बीत गया तो तुम्हें सुखी जीवन कब मिलेगा और तुम संतुष्ट कैसे रहोगी ? संकटमग्न ही रहोगी क्या ? । ४३७

पॅण्मै युम्मळ हुम्बिऱ ळामऩत्, तिण्मै युम्मुदल् यावैयुञ् जॅय्यवाय्क्
कण्मै युम्बॉरुन् दिक्करु णॅप्पडा, वण्मै यॅन्गॉल् शऩहन् मडन्दैये 438

चतकत् मटन्तैये–जनकसुता; पॅण्मैयुम्–स्त्रीत्व; अळकुम्–सौन्दर्य; पिऱळा–अचंचल; मत तिण्मैयुम्–मन की दृढ़ता; मुतल् यावैयुम्–आदि सभी गुणों से; चॅय्यवाय्–खूब भरी होकर भी; कण्मैयुम् पॉरुन्ति–दाक्षिण्ययुक्त हो; करुणैप्पटा वण्मै–करुणा-सह न रहने का स्वभाव; अॅन् कॉल्–क्यों। ४३८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हे जनकराजदुहिते ! स्त्रीत्व, सौन्दर्य और अचंचल मन की स्थिरता आदि अच्छे गुण तुममें खूब भरे हैं। तो भी दाक्षिण्य और दया से रहित क्यों हो ? । ४३८

इऴवॆं नक्कुयि रॆय्दिनु मॆय्दुह, कुऴैमु हत्तुनिन् शिन्दनै कोडिनाल्
पऴहि निऱ्पुऱु पण्बियै कामत्तो, डऴहि नुक्किनि यारुळ रावरो 439

कुऴै मुकत्तु–मुरझाये मन की; निन्–तुम्हारा; चिन्तनै कोटिनाल्–मन भी विमुख हुआ तो; ऍतक्कु उयिर् इऴवु ऍय्तिनुम्–मुझे प्राणनाश मिला तो भी; ऍय्तुक–मिल जाए; पऴकि निऱ्पु उऱु–मेरे साथ हिल-मिलकर रहनेवाली; पण्पु इयै–सुसंस्कृत; कामत्तॊटु अऴकितुक्कु–प्यार और कमनीयता के लिए; इनि यार् उळर् आवर्–(मुझे छोड़) आगे कौन होगा। ४३९

मुरझाये मुख वाली तुम्हारे मन की विमुखता के कारण मेरी मृत्यु हो तो हो जाय ! पर तुम्हें कौन मिलेगा, जिसमें मेरे पास लगा रहनेवाला प्रेम और सौन्दर्य पाया जाय ? । ४३९

वीट्टुङ् गालत् तलऱिय मॆय्क्कुरल्
केट्टुङ् गाण्डऱ् किरुत्तिहॊल् किळ्ळैनी
नाट्टुङ् गानॆडु नल्लऱत् तिन्बयन्
ऊट्टुङ् गालत् तिहऴ्व दुऱुङ्गॊलो 440

किळ्ळै–शुक; वीट्टुम् कालत्तु–(जब राम ने मारीच को) मारा उस समय; अलऱिय–राम चिल्लाया; मॆय् कुरल्–उसका सच्चा स्वर; केट्टुम्–सुनकर भी; नी–तुम; काण्टऱ्कु–देखने की इच्छा लेकर; इरुत्ति कॊल्–रहतीं क्या; नाट्टुम् काल्–दृढ़ रूप से समझाऊँ तो; नॆटु नल् अऱत्तिन्–दीर्घ श्रेष्ठ धर्म के; पयन्–फल को; ऊट्टुम् कालत्तु–जब तुमको भुगताया जा रहा है तब; इकऴ्वतु उऱुम् कॊलो–अवहेलना करना, उचित काम करना (हुआ) क्या। ४४०

शुक-समाना ! मारीच के मरते समय तुमने श्रीराम की चिल्लाहट में राम का ही असली स्वर सुना था। तो भी क्या आशा करती हो कि उसे देख सकोगी ? सच्ची बात कहूँ तो दीर्घ और अच्छे धर्मों का फल तुम्हारे पास तुम्हारे भोगने के लिए आया है। तब उसकी उपेक्षा करना उचित काम होगा क्या ? । ४४०

तक्क ऍन्नुयिर् वीडुऱत् ताऴ्हिलात्, तॊक्क शॆल्वन् दॊलैयु मॊरुत्तिनी
पुक्कु यऱ्नद ऍनुम्बुहऴ् पोक्किवे, ऱुक्क ऍन्नु मुऱुपऴि कोडियो 441

तक्कतु ऍन् उयिर्–श्रेष्ठ मेरे प्राण; वीटु उऱ–छूट जाएँ; ताऴ्किला–बिना कम हुए; तॊक्क चॆल्वम्–जुटी सम्पत्ति; तॊलैयुम्–नष्ट हो जाएगी; ऒरुत्ति नी–अनुपम तुम; पुक्कु–मेरे घर में आयीं; उयर्न्ततु–और मेरा कुल उन्नत हुआ;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍन्तुम् पुकळ् पोक्कि–ऐसी कीर्ति छोड़कर; वेऱु उक्कतु–उसके विपरीत नष्ट हुआ; ऍन्नुम्–ऐसा; उऱु पऴि–बड़ा अपयश; कोटियो–लोगी क्या। ४४१

सब तरह से श्रेष्ठ मेरे प्राण छूट जायँगे तो मेरी अक्षय धनराशि भी नष्ट हो जायगी। तुम मेरे गृह में आयीं और मेरा कुल उन्नत हुआ, तो तुम्हें उसका यश मिलेगा। उसे त्यागकर, "उसका नाश हो गया"—यह बड़ा अपयश लेना चाहोगी क्या ? । ४४१

❀ तेवर् तेवियर् शेवडि कैतॊऴुम्, ताविन् मूवुल हिन्ऱनि नायहम्
मेवु हिन्ऱदु नुन्नगण् विलक्किनै, एव रेऴैयर् निन्नि निलङ्गिऴाय् 442

इलङ्किऴाय्–शोभनेवाले आभरणधारिणी; तेवर् तेवियर्–देवता और देवियाँ; चेवटि कै तॊऴुम्–तुम्हारे मनोरम पैरों के आगे हाथ जोड़ें, ऐसा; तावु इल्–अक्षय; मू उलकिन्–तीनों लोकों का; तनि नायकम्–अद्वितीय आधिपत्य; नुन् कण् मेवुकिन्ऱतु–तुम्हारे हाथ में आ रहा है; विलक्किनै–तुम उसे दूर हटा रही हो; निन्निन्–तुमसे बढ़कर; एवर्–कौन; एऴैयर्–अबोध है। ४४२

शोभायमान आभरणधारिणी ! निर्दोष त्रिलोकाधिपत्य तुम्हारे पास आ रहा है, जिससे देवी और देवता तुम्हारे लाल (मनोरम) चरणों में गिरकर नमस्कार करेंगे। पर तुम उसको छोड़ रही हो ! तुमसे बढ़कर बुद्धिहीन कौन होगा ? । ४४२

❀ कुडिमै मून्ऱुल गुऱ्ऱॆयुङ् गॊऱ्ऱत्तॆन्
अडिमै कोडि यरुळुदि यालॆन्ना
मुडियिन् मीदु मुहिऴ्त्तुयर् कैयिनन्
पडियिन् मेऱ्पडिन् दान्पऴि पार्क्ककलान् 443

पऴि पार्क्ककलान्–अपयश की परवाह न करनेवाला; मून्ऱु उलकुम्–तीनों लोक; कुटिमै चॆय्युम्–अपनी प्रजा बनाकर शासन करनेवाली; कॊऱ्ऱत्तु–विजयशीलता का स्वामी; ऍन् अटिमै–मेरी दासता; कोटि–अपनाकर; अरुळुति–कृपा करो; ऍन्ना–कहकर; मुटियिन् मीतु–सिर पर; मुकिऴ्त्तु उयर्–जुड़कर बढ़े; कैयिनन्–हाथों वाला बनकर; पटियिन् मेल्–धरती पर; पटिन्तान्–गिरा। ४४३

रावण अपने कार्य में कोई दोष या उससे मिलनेवाले अपयश को देख नहीं रहा था। तीनों लोकों को प्रजा बनाकर पालने की विजयशीलता के स्वामी, मुझे अपना दास बना लो और मुझ पर कृपा करो —कहकर वह सिर पर हाथ जोड़े भूमि पर गिरा। ४४३

❀ काय्न्दन शलाहै यन्न वुरैवन्दु कदुवा मुन्नम्
तीन्दन शॆविह ळुळ्ळन् दिरिन्ददु शिवन्द शोरि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाय्न्दत़ कण्ग ळॊन्ऱुम् बरिन्दिल ऴुयिर्क्कुम् बॆण्मैक्
केय्न्दत़ वल्ल वॆय्य माऱ्ऱङ्ग ळिऩैय शॊऩ्ऩाळ् 444

काय्न्तत चलाकै अन्त-तप्त शलाकाओं के समान; उरै-वचन; वन्तु कतुवा मुन्तम्-आकर लगें, इसके पूर्व ही; चॆविकळ् तीन्तत-(देवी के) कान जल उठे; उळ्ळम् तिरिन्तत-मन व्यथित हुआ; चिवन्त चोरि-लाल रक्त; कण्कळ् पाय्न्तत-आँखों में बहा; उयिर्क्कुम्-अपनी जान का; ऒन्ऱुम् परिन्तिलळ्-कुछ भी विचार नहीं करतीं; पॆण्मैक्कु एय्न्तत-स्त्रीत्व के लिए उचित; वल्ल-और समर्थ; वॆय्य-और कठोर; इऩैय माऱ्ऱङ्कळ्-ऐसे वचन; चॊऩ्ऩाळ्-कहे (सीता ने)। ४४४

रावण के वचन के तप्त शलाकाओं के समान सीताजी के कानों में लगते ही उनके कान मानो जल गये। मन विकल हुआ। लाल रक्त आँखों में बह आया। उन्होंने अपनी जान की कोई चिन्ता नहीं की; पर स्त्री के लिए उचित, सराहनीय और कठोर ये (निम्न) शब्द कहे। ४४४

मल्लॊडु तिरडोण् मैन्दर् मनम्बिऱि दाहुम् वण्णम्
कल्लॊडुन् दॊडर्न्द नॆञ्जङ् गऱ्पिऩ्मेऱ् कण्ड दुण्डो
इल्लॊडुन् दॊडर्न्द मादर्क् केय्वत़ वल्ल वॆय्य
शॊल्लॊडुन् दॊडर्है केट्टुत् तुरुम्बिऩै नोक्किच् चॊल्वाळ् 445

इल् ऒटुम् तॊटर्न्त-गृहस्थी में लगी; मातर्क्कु-स्त्रियों के लिए; एय्वत़ अत्ल-अयोग्य; वॆय्य-क्रूर; चॊल्लॊटुम् तॊटर्कै-शब्दों से युक्त वचन; केट्टु-सुनकर; तुरुम्पिऩै नोक्कि-(सामने रखे) तृण को देखकर; चॊल्वाळ्-कहने लगीं; मल् ऒटुम्-बल के साथ; तिरळ् तोळ् मैन्तर्-पुष्ट कन्धों वाले वीरों का; मनम्-मन; पिऱिताकुम् वण्णम्-बदलकर सन्मार्ग पर जाए, ऐसा; कल्लॊटुम् तॊटर्न्त-पत्थर के समान अडिग; नॆञ्चम्-दिलेर; कऱ्पिऩ् मेल्-पातिव्रत्य से श्रेष्ठ कुछ; कण्टतु उण्टो-किसी ने देखा है क्या। ४४५

रावण के वचन गृहस्थी में लगी श्रेष्ठ कुलस्त्रियों के सामने कहने योग्य वचन नहीं थे। ऐसे वचनों को सुनकर सीताजी ने अपने सामने एक तृण डालकर उसे (और रावण को तृण बनाकर) सम्बोधित कर कहा। सबल पुष्ट कन्धों वाले वीरों के (कुमार्गगामी) मन को बदलने में समर्थ पत्थर-सम दृढ़ मन के पातिव्रत्य से अन्य किसी को किसी ने देखा है क्या ?। ४४५

❀ मेरुवै युरुव वेण्डिऩ् विण्पिळन् देह वेण्डिऩ्
ईरॆऴु पुवनम् यावुम् मुऱ्ऱुवित् तिडुदल् वेण्डिऩ्
आरियऩ् पहऴि वल्ल दऱिन्दिरुन् दऱिवि लादाय्
शीरिय वल्ल शॊल्लित् तलैपत्तुञ् जिन्दु वायो 446

अऱिवु इलाताय्-मतिहीन; आरियऩ् पकऴि-आर्य (श्रीराम) का बाण; मेरुवै उरुव वेण्टिऩ्-मेरु को निफर जाना चाहे; विण् पिळत्तु-आकाश फाड़कर; एक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेण्टिऩ्–जाना चाहे; ईर् एऴु–चौदह; पुवनम् यावुम्–भुवनों में सभी को; मुऱ्ऱु वित्तिटुतल्–नष्ट करना; वेण्टिऩ्–चाहे; वल्लतु–समर्थ है; अऱिन्तिरुन्तु–जानते हो तो भी; चीरिय अल्ल चॊल्लि–अशिष्ट कहकर; तलै पत्तुम्–दसों सिरों को; चिन्तुवायो–गिरा लोगे क्या । ४४६

मूर्ख ! आर्य श्रीराम का शर मेरु को वेध चलना चाहे, या आकाश को चीर चलना चाहे, या सातों लोकों का अन्त करना चाहे तो करने में समर्थ है। यह तुम जानते हो। तो भी अशिष्ट (अनर्थकारी) वचन कहकर दसों सिरों को गिराना चाहते हो क्या ? । ४४६

अञ्जिऩै याद लाले याण्डहै यऱ्ऱ नोक्कि
वञ्जऩै मान्ऩोऩ् ऱेवि मायैयाल् मऱैत्तु वन्दाय्
उञ्जऩै पोदि याहिल् विडुदियुऩ् कुलत्तुक् कॆल्लाम्
नञ्जिऩै यॆदिर्न्द पोदु नोक्कुमे निऩदु नाट्टम् 447

अञ्चिऩै आतलाल्–डरे थे, इसलिए; वञ्चऩै मान् ऒऩ्ऱु–मायामृग एक; एवि–भेजकर; आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ की; अऱ्ऱम् नोक्कि–अनुपस्थिति जानकर; मायैयाल्–माया से; मऱैत्तु वन्ताय–छद्मवेश में आये; उञ्चऩै–बचकर; पोति आकिल्–जाना चाहो तो; विटुति–(मुझे रामचन्द्रजी के पास ले जा) छोड़ो; उऩ् कुलत्तुक्कॆल्लाम्–तुम्हारे कुल के सारे लोगों के लिए; नञ्चिऩै–विष (-सदृश श्रीराम) का; ऎतिर्न्त पोतु–सामना करोगे तो; नोक्कुमे–देख सकेंगी क्या; निऩतु नाट्टम्–तुम्हारी आँखें उन्हें । ४४७

तुम भयभीत थे; तभी तो तुम वंचक मृग को प्रेरित करके श्रीराम की अनुपस्थिति कराके रूप छिपाकर आये ! तुम बचना चाहो तो मुझे छोड़ दो। तुम्हारे कुल के राक्षसों के लिए घातक विष (के समान) हैं श्रीराम। जब उनका सामना करोगे तब क्या तुममें इतनी हिम्मत होगी कि तुम अपनी आँखें उठाकर उन्हें देख सको ? । ४४७

❀ पत्तुळ तलैयुऩ् दोळुम् पलवुळ पहऴि तूवि
वित्तह विल्लि ऩाऱ्कुत् तिरुविळै याडऱ् केऱ्ऱ
चित्तिर विलक्क माहु मल्लदु शॆरुवि लेऱ्कुम्
शत्तियै पोलु मेऩाट् चडायुवाऱ् ऱरैयिऩ् वीऴ्न्दाय् 448

मेल् नाळ्–पहले (उस) दिन; चटायुवाल्–जटायु द्वारा; तरैयिल् वीऴ्न्ताय्–भूमि पर गिरे; पत्तु उळ तलैयुम्–दहाई के सिर; तोळुम्–और हाथ; पलवुळ पकऴि–विविध शर; तूवि–छितराकर; वित्तक विल्लिऩाऱ्कु–अपूर्व कोदण्ड धनु के धारक के लिए; तिरु विळैयाटऱ्कु एऱ्ऱ–श्री केलि के लिए; चित्तिर–चित्र; इलक्कमाकुम्–लक्ष्य बनेंगे; अल्लतु–नहीं तो; चॆरुविल् एऱ्कुम्–युद्धयोग्य; चत्तियै पोलुम्–शक्तिमान हो क्या । ४४८

(मुझे जब ले आये) उस दिन जटायु द्वारा प्रहरित होकर तुम धरती

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पर गिरे। तुम्हारे दहाई के सिर और हाथ धनुर्विद्या-विदग्ध श्रीराम के लिए विविध अस्त्र प्रेरित करके खेलने के योग्य खिलौने मात्र हैं! वे चित्रमय लक्ष्य बनेंगे। नहीं तो क्या तुम युद्ध करने की शक्ति भी रखते हो? । ४४८

❀ तोऱ्ऱनै पऱवैक् कन्ऱु तुळ्ळुनीर् वॅळ्ळम् शॅन्ऩि
एऱ्ऱवन् वाळाल् वॅन्ऱा यिन्ऱॅऩि निऱत्ति यन्ऱे
नोऱ्ऱनोन् बुडैय वाणाळ् वरमिवै नुऩित्त वॅल्लाम्
कूऱ्ऱिऩुक् कन्ऱे वीरन् शरत्तुक्कुङ् गूऱिऱ् ऱुण्डो 449

अन्ऱु–उस दिन; पऱवैक्कु तोऱ्ऱनै–एक पक्षी से हारे; तुळ्ळुनीर्–उछलते आनेवाले जल के; वॅळ्ळम्–प्रवाह (गंगा) को; चॅन्ऩि एऱ्ऱवन्–जिन्होंने सिर पर धारण किया उनकी; वाळाल् वॅन्ऱाय्–तलवार का प्रयोग करके जीते; इन्ऱु ऍऩिन्–नहीं तो; इऱत्ति अन्ऱे–मर जाते न; नोऱ्ऱ नोऩ्ऩुटैय–तपोव्रतप्राप्त; वाणाळ् वरम्–आयु का वर; इवै नुऩित्त ऍल्लाम्–आदि प्राप्त सभी; कूऱ्ऱिऩुक्कु अन्ऱे कूऱिऱ्ऱु–यम के सम्बन्ध में ही न कहे गये; वीरन् चरत्तुक्कुम्–वीर (श्रीराघव) के शर के सम्बन्ध में भी; कूऱिऱ्ऱु उण्टो–कहे गये क्या। ४४९

उस दिन तुम एक पक्षी से हारे! प्रवाहमय जल की गंगा को अपने सिर पर धारण करनेवाले शिवजी की दी गयी चन्द्रहास तलवार के बल से तुम जटायु पर जीत पा सके! नहीं तो मर जाते न? तपस्या के कारण जो वर और आयु आदि तुम्हें दिये गये हैं, वे यम की बनिस्बत दिये गये हैं। श्रीवीरराघव के शरों को उद्देश्य मानकर कहे गये थे क्या? । ४४९

पॅऱ्ऱुडै वरऩुम् नाळुम् पिऱन्दुडै युरऩुम् बिऩ्ऩुम्
मऱ्ऱुडै यॅवैयुन् दन्द मलरवऩ् मुदलोर् वाऱ्ऱै
विऱ्ऱॊडै यिरामऩ् कोत्तु विडुदलुम् विलक्कुण् डॅल्लाम्
इऱ्ऱुडैन् दिऱुदऩ् मॅय्ये विळक्किऩ्मुऩ् निऱुळुण् डामो 450

पॅऱ्ऱुटै वरऩुम्–प्राप्त वर और; नाळुम्–आयु के दिन; पिऱन्ऩु उटै उरऩुम्–जन्मप्राप्त बल; पिऩ्ऩुम् मऱ्ऱु उटै ऍवैयुम्–और अन्य सभी; तन्त–जिन्होंने दिया; मलरवऩ् मुतलोर् वाऱ्ऱै–कमलासन आदि के वचन; इरामऩ्–श्रीराम (जब); विल् तॊटै कोत्तु–धनु में शर संधान कर; विटुतलुम्–छोड़ेंगे तब; ऍल्लाम् विलक्कु उण्टु–सभी निवारित होकर; इऱ्ऱु उटैन्ऩु–बन्धन टूटकर; इऱुतल् मॅय्ये–नष्ट होंगे, यह सत्य है; विळक्किऩ् मुऩ्–दीपक के सामने; इरुळ् उण्टामो–अन्धकार रहेगा क्या। ४५०

तुम्हारे प्राप्त वर, आयु के दिन, जन्मसिद्ध बल और अन्य सभी विषय जिनके वर से प्राप्त हुए वे चतुर्मुख आदि के वचनों द्वारा दिये गये हैं। वे सब श्रीराम के शर को धनु पर रखकर छोड़ते ही अपनी रक्षणशक्ति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

खो देंगे और तुम्हारा नाश होगा। यह ध्रुव सत्य है। दीपक के सामने अन्धकार ठहर सकेगा क्या ? । ४५०

कुन्रुनी यॅडुत्त नाडन् शेवडिक् कॉळुन्दा लुन्नै
वॅन्रवन् पुरङ्गळ् वेवत् तन्निच्चरन् दुरन्द मेरु
ऍन्रुणैक् कणव नाऱ्ऱ् कुरनिला दिऱ्रु वीळ्न्द
अन्ऱॅळुन् दुयर्न्द वोशै केट्टिलै पोलु मम्मा 451

नी कुन्रु ऍटुत्त नाळ्–जब तुमने कैलासपर्वत को उठाया, उस दिन; तन् चेवटि कॉळुन्ताल्–अपने दिव्य चरण की उँगली के छोर से; उन्नै वॅन्ऱवन्–जिन्होंने तुमको हराया, उन शिवजी ने; पुरङ्कळ् वेव–त्रिपुर जलाते हुए; तन्नि चरम् तुरन्त–(जिस पर रखकर) अनुपम शर छोड़ा वह; मेरु–मेरु जैसे त्र्यंबक धनु; ऍन् तुणै कणवन्–मेरे संगी प्रिय नाथ के; आऱ्ऱ्कु–बल के सामने; उरन् इलातु–शक्ति के विना; इऱ्रु वीळ्न्त अन्ऱु–जिस दिन टूटकर गिरा उस दिन; ऍळुन्तु उयर्न्त ओचै–जो उठा और बढ़ा वह नाद; केट्टिलै पोलुम्–तुमने सुना नहीं शायद क्या। ४५१

शिवजी के त्र्यंबक धनुष में मेरे प्रिय संगी पति श्रीराम की शक्ति के सामने ठहरने की शक्ति नहीं थी और वह टूट गया। वे शिव कौन थे ? जब तुमने कैलास को उठाया तब अपने श्रीचरण की उँगली के छोर से उन्होंने तुम्हारे ऊपर जीत पायी थी। वह धनु भी वही धनु था, जिस पर शर रखकर शिवजी ने छोड़े थे और त्रिपुर को जलाया था। उस धनु के टूटने के दिन जो उच्च नाद उठा और फैला उसे शायद तुमने सुना नहीं था क्या ? । ४५१

मलैयॅडुत् तॅण्डिशै काक्कु माक्कळै
निलैहॅडुत् तेन्नॅनु माऱ्ऱ नेरुनी
शिलैयॅडुत् तिळैयव निऱ्कच् चेर्न्दिलै
तलैयॅडुत् तिन्नमु महळिर्त् ताळ्दियो 452

मलै ऍटुत्तु–पर्वत उठाकर; ऍण् तिचै काक्कुम्–आठ दिशाओं के पालक; माक्कळै–गजों की; निलै कॅटुत्तेन्–स्थिति मैंने बिगाड़ दी; ऍन्नुम् माऱ्ऱम् नेरुम् नी–ऐसी डींग के वचन कहनेवाले तुम; इळैयवन्–(श्रीराम के) कनिष्ठ भ्राता; चिलै ऍटुत्तु निऱ्क–जब धनु लेकर खड़े थे; चेर्न्तिलै–नहीं आये; तलै ऍटुत्तु–सिरों को लेकर; इन्नमुम्–अब भी; मकळिर् ताळ्तियो–स्त्रियों के सामने झुकाओगे क्या। ४५२

तुम डींग मारते हो कि मैंने कैलास को उठाया था और आठों दिशाओं के पालक, गजों की दुर्गति करा दी थी। ऐसे तुम तब नहीं आये जब मेरे देवर लक्ष्मण धनु लेकर मेरी रक्षा में खड़े थे। अब भी सिर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उठाए हुए रहोगे और स्त्रियों के सामने वह सिर झुकाओगे क्या ? (शरम नहीं होती ?) । ४५२

एऴैनो यॊळित्तुऱै यिन्नि डत्तॆऩ, वाऴियॆङ् गोमह ऩऱिय वन्दनाळ्
आऴियु मिलङ्गैयु मऴियत् ताऴुमो, ऊऴियुन् दिरियुनिन् ऩुयिरो डोयुमो 453

एऴै–मूर्ख; नी–तुम; ऒळित्तु उऱै–जहाँ छिपे रहते हो वह स्थान; इन् इटत्तु–कहाँ है; ऎऩ–यह बात; वाऴि–संसार को जीवन दिलानेवाले; ऎम् कोमकऩ्–हमारे चक्रवर्ती-सुत; अऱिय वन्त नाळ्–जिस दिन समझेंगे उस दिन; आऴियुम्–समुद्र और; इलङ्कैयुम्–लंका; अऴिय–मिट जायगी, उसी तक; ताऴुमो–रुक जायगा क्या; निन् उयिरोटु–तुम्हारे प्राणों को लेकर; ओयुमो–समाप्त होगा; ऊऴियुम् तिरियुम्–युग का काल भी बिगड़ जायगा । ४५३

मूर्ख ! जब मेरे चक्रवर्तीसुत जान लेंगे कि वह स्थान यहाँ है, जिसमें तुम छिपे-छिपे जीते हो तब क्या इस समुद्र और इस लंका के नष्ट होने तक से अनर्थ रुक जायगा ? तुम्हारी जान लेकर समाप्त होगा ? नहीं ! युग भी बिगड़ जायगा ! । ४५३

वॆञ्जिऩ वरक्करै वीय्त्तुम् वीयुमो, वञ्जऩै नीशॆय वळ्ळल् शीऱ्ऱन्दान्
ऎञ्जलि लुलहॆला मॆञ्जु मॆञ्जुमॆऩ्, ऱञ्जुहिऩ् ऱेऩिदऱ् करमुञ् जाऩ्ऱरो 454

वञ्चऩै नीचॆय–वंचना तुमने की, इससे; वळ्ळल् चीऱ्ऱम् ताऩ्–उदार प्रभु का जो होगा वह कोप; वॆम् चिऩ–भयंकर क्रोधी; अरक्करै–राक्षसों को; वीय्त्तुम्–मारने तक से; वीयुमो–शान्त होगा क्या; ऎञ्चल् इल्–अक्षय; उलकु ऎलाम्–सारे लोकों का; ऎञ्चुम् ऎञ्चुम्–क्षय हो जायगा, नष्ट हो जायगा; ऎऩ्ऱु–ऐसा; अञ्चुकिऩ्ऱेऩ्–डरती हूँ; इतऱ्कु–इसके; अऱमुम् चाऩ्ऱु–धर्मग्रन्थ प्रमाण होंगे । ४५४

तुमने जो वंचक काम किया उससे प्रभु का कोप होगा । क्या वह कोप भयंकर क्रोधी राक्षससमूह को नष्ट कर शान्त हो जायगा ? अक्षय लोकों का क्षय हो जायगा, अवश्य क्षय हो जायगा । यह ध्रुव सत्य है । यही मेरा डर है । इसके धर्मग्रन्थ ही प्रमाण हैं । ४५४

अङ्गण्मा ञालमुम् विशुम्बु मञ्जवाळ्
वॆङ्गणाय् पुऩ्ऱॊऴिल् विलक्क वुट्कॊळाय्
शॆङ्गण्मा ऩाऩ्मुहऩ् शिवऩॆऩ् ऱेहॊलो
एङ्गणा यहऩैयु निऩैन्द देऴैनो 455

अम् कण् मा ञालमुम्–विशाल स्थल का भूतल और; विचुम्पुम्–आकाश को; अञ्च–डरने को मजबूर करते हुए; वाऴ्–जीवन बितानेवाले; वॆङ्कणाय्–क्रूर; एऴै नी–मूर्ख तुमने; ऎङ्कळ् नायकऩैयुम्–हमारे नाथ को भी; चॆम् कण् माल्–अरुणाक्ष श्रीविष्णु; नाऩ् मुकऩ्–चतुर्मुख और; चिवऩ्–शिव; ऎऩ्ऱे कॊल्–ही;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निनैन्ततु–समझ लिया क्या; पुन् तॊळिल् विलक्क–नीच कार्य छोड़ना; उळ् कॊळाय्–ठानो। ४५५

रे क्रूर ! जो विशाल स्थल के भूतल को और आकाश को भयभीत करते हुए जी रहे हो ! मूर्ख ! तुमने मेरे श्रीराम को भी अरुणाक्ष विष्णु समझ रखा है ? या चतुर्मुख, या शिव ? अपना नीच काम छोड़ने का विचार करो। ४५५

मानुय रिवरॆन मनक्कॊण् डायॆनिन्
कानुयर् वरैनिहर् कार्त्त वीरियन्
तानॊरु मनिदनाल् तळर्न्दु ळानॆनिल्
तेनुयर् तॆरियलान् इन्मै तेर्दियाल् 456

इवर्–ये; मानुयर् ऍन–मनुष्य है, ऐसा; मनम्–मन में; कॊण्टाय् ऍनिन्–विचार रखोगे तो; कान्–जंगल में; उयर् वरै निकर्–उन्नत बाँस के पेड़ों के समान; कार्त्त वीरियन् तान्–(हाथों वाले) कार्तवीर्य स्वयं; ऒरु मनितनाल्–एक मानव से; तळर्न्तुळान्–नष्ट हुआ; ऍनिल्–तो; तेन् उयर्–अधिक शहद से युक्त; तॆरियलान्–मालाधारी श्रीराम के; तन्मै–महत्व को; तेर्ति–जान लो। ४५६

अगर तुम इनको मानव मानकर हेय समझोगे तो जंगली बाँसों के समान उन्नत हाथों वाला कार्तवीर्य स्वयं एक मानव (परशुराम) द्वारा पराजित हुआ, यह सोचो और शहद बरसानेवाली माला के धारक श्रीराम का (परशुराम को पराजित करनेवाला) बल-पराक्रम जान लो। ४५६

इरुवरॆन् रिहळ्न्दनै यॆन्निन् याण्डिनुम्
ऒरुवनन् ऱेयुल हळिक्कु मूळियान्
शॆरुवरुङ् गालमॆन् मॆय्मै तेर्दियाल्
पॊरुवरुन् दिरुविळन् दावि पॊन्ऱुवाय् 457

पॊरुवु अरुम्–उपमाहीन; तिरु इळन्तु–श्री खोकर; आवि पॊन्ऱुवाय्–प्राण खोनेवाले; इरुवर्–दो ही हैं; ऍन्ऱु–ऐसा इकळ्न्ततै–हेय मानोगे; ऍन्निन्–तो; याण्टिनुम्–सर्वत्र; उलकु अळिक्कुम्–लोकनाशक; ऊळियान्–प्रलयकारी रुद्र; ऒरुवन् अन्ऱे–अकेला है न; चॆरु वरुम् कालम्–युद्ध प्राप्ति के दिन; ऍन मॆय्मै–मेरे वचन का सत्य; तेर्ति–जान लोगे। ४५७

हे, अनुपम श्री को भी खोकर प्राण छोड़ने को उद्यत मूर्ख ! अगर तुम समझते हो कि वे केवल दो ही हैं और हेय हैं तो युगनाशक प्रलयंकर रुद्र सदा अकेले ही हैं न ? जब श्रीराम से युद्ध करने का समय आयगा, तब मेरी बात की सत्यता जान लोगे। ४५७

पॊऱ्कणान् ऱम्बियॆन् ऱिनैय पोर्त्तॊळिल्
विऱ्कणाण् पॊरुददो ळवुणर् वेऱुळार्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नऱ्कणार् नल्लऱन् दुऱन्द नाळिनुम्
इऱ्कणा रिऱन्दिल रिऱन्दु नीङ्गिनार् 458

पॊन् कणान्-हिरण्याक्ष; तम्पि ऍन्ऱु-उसका भाई मानित; इनैय-ऐसे; पोर्त् तॊळिल् विल्कण्-युद्ध योग्य धनु के; नाण्-डोरे से; पॊरुत तोळ्-रगड़े हुए कन्धे जिनके थे; वेऱु उळार् अवुणर्-अन्य दानव; नल् कण् आर्-सन्मार्गरत; नल्लऱम् तुऱन्त नाळितुम्-जिस दिन धर्मच्युत हुए; इल् कणार्-परदारा से; इऱन्तिलर्-अभद्र व्यवहार किये विना रहने पर भी; इऱन्तु नीङ्किनार्-मर गये। ४५८

हिरण्याक्ष, उसका भाई आदि दानव, जिनके कन्धे युद्धयोग्य धनु के डोरे से रगड़े गये थे, सन्मार्ग का सद्धर्म छोड़ने पर परदारा-प्रेम का पाप न करने पर भी मर गये। ४५८

पूविलो नादि याहप् पुलन्गळ्पो नॆऱियिऱ् पोहात्
तेवरो ववुणर् तामो निलैनिन्ऱु विनैयिऱ् ऱीर्न्दार्
एवलॆव् वुलहुञ् जॆय्यच् चॆल्वनिऱ् किशैन्द दॆन्ऱाल्
पावमो मुन्नी शॆय्द तरुममो तॆरियप् पाराय् 459

पुलन्कळ् पोम्-इन्द्रियाँ जिस मार्ग में जाती हैं; नॆऱियिल् पोका-उसमें न जानेवाले; पूविलोन् आतियाक-कमलदेव आदि; तेवरो-देव हों या; अवुणर् तामो-(इन्द्रियाराम) दानव हों; निलै निन्ऱु-स्थायी रहकर; विनैयिल् तीर्न्तार्-(कौन) कर्ममुक्त हुए; ऍव् उलकुम्-सारे लोक; निऱ्कु एवल् चॆय्य-तुम्हारी आज्ञा मानते हैं; चॆल्वम इचैन्ततु-ऐसा वैभव से युक्त हो; ऍन्ऱाल्-तो; मुन् नी चॆय्त-पहले जो तुमने किया; तरुममो-वह धर्म है या; पावमो-पाप (के कारण) है; तॆरिय पाराय्-खूब समझकर देखो। ४५९

इन्द्रिय-निग्रही ब्रह्मा आदि देव हों चाहे दानव, कौन स्थायी रहकर कर्ममुक्त हुए? तुम्हें ऐसा धनवैभव मिला है कि सारे लोक तुम्हारे आज्ञाकारी बने हैं —तो यह तुम्हारे पूर्वकृत पुण्य का फल है या पाप का। खूब सोचो और समझो। ४५९

इप्पॆरुञ् जॆल्व निन्ग णीन्दपे रीशन् याण्डुम्
अप्पॆरुञ् जॆल्वन् दुय्प्पा निन्ऱुमा दवत्ति नन्ऱे
ऒप्परुन् दिरुवु नीङ्गि युऱवॊडु मुलक्क वुन्निन्
तप्पुदि यऱत्तै येळाय् तरुमत्तैक् कामि यादे 460

पेर् ईचन्-महेश्वर ने; निन् कण ईन्त-जो तुम्हारे पास दिया है; इ पॆरुम् चॆल्वम्-यह विशाल धन; मातवत्तित्-महान् तप में; याण्टुम् निन्ऱु-हमेशा स्थित रहकर; अ पॆरुम् चॆल्वम्-उस विशाल धन को; तुय्प्पात् अन्ऱे-भोगने के लिए न; एळाय्-मूर्ख; ऒप्पु अरुम्-अनुपम; तिरुवु नीङ्कि-श्री को त्यागकर; उऱवॊटुम् उलक्क उन्नि-बन्धुओं के साथ मरना सोचकर; तरुमत्तै कामियाते-धर्म पर आस्था छोड़कर; अऱत्तै तप्पुति-धर्म से हट जाते हो। ४६०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह परमेश्वर की दी हुई विशाल धन-सम्पत्ति क्या इसीलिए नहीं कि तुम महान् तप के मार्ग में स्थित रहकर उस विपुल धन का भोग करो। मूर्ख ! अनुपम इस श्री से हाथ धोकर अपने बन्धुजनों के साथ मर-मिटने के लिए धर्म पर आस्था छोड़कर धर्म से हट रहे हो ! । ४६०

मऱन्दिऱम् बाद तोला वलियिऩ रॅऩिऩु माण्डार्
अऱन्दिऱम् बिऩरु मक्कट् करुडिऱम् बिऩरु मऩ्ऱे
पिऱन्दिऱन् दुळ्ळुम् बाशप् पिणक्कुडैप् पिणियिऱ् ऱीर्न्दार्
तुऱन्दरुम् बहैहळ् मूऩ्ऱुऩ् दुडैत्तवर् पिऱर्यार् शॊल्लाय् 461

मऱम् तिऱम्पात–बल में निरन्तर स्थिर रहनेवाले; तोला–कभी न हारनेवाले; वलियिऩर् ऍऩिऩुम्–बलवान हों तो भी; अऱम् तिर्म्पिऩरुम्–धर्मच्युत और; मक्कट्कु–लोगों के प्रति; अऱ्ळ् तिर्म्पिऩरुम्–दया न दिखानेवाले; माण्टार् अऩ्ऱे–मर गये न; तुऱऩ्तु–आसक्ति छोड़कर; अरुम् पकैकळ् मूऩ्ऱुम्–अन्तशत्रु तीनों को; तुटैत्तवर्–मिटा चुकनेवाले; पिऱऩ्तु इऱऩ्तु–मरकर जन्म लेकर; उळ्ळुम्–संकट उठाना जिसमें हो; पाच पिणक्कु उटै–पाशबन्ध रूपी; पिणियिल्–रोग से; तीर्न्तार्–मुक्त हुए; पिऱर् यार्–अन्य कौन; चॊल्लाय्–कहो । ४६१

जो बलवान अपने बल-पराक्रम में विना किसी परिवर्तन के रहते हैं और कभी नहीं हारते वे अगर धर्ममार्ग छोड़नेवाले, लोगों पर दया न दिखाने वाले हों तो वे मर ही गये न ? अनासक्त और तीनों शत्रुओं (काम, क्रोध, मोह) के जयी ही जन्म-मरण-कष्ट रूपी पाशबन्धन के रोग से विमुक्त हुए। फिर कौन है ? तुम ही कहो । ४६१

तॆऩ्ऱमि ळुरैत्तोऩ् मुऩ्ऩात् तोदुतीर् मुऩिवर् यारुम्
पुऩ्ऱॊळि लरक्करक् काऱ्ऱे नोऱ्किलम् बुहुन्द पोदे
कॊऩ्ऱरु ळुऩ्ऩा लऩ्ऩार् कुऱैवदु शरदङ् गोवे
ऍऩ्ऱऩर् याऩे केट्टे ऩीयदऱ् कियैव शॆय्दाय् 462

पुकुन्त पोते–जब (श्रीराम दण्डकवन में) प्रविष्ट हुए तभी; तॆऩ् तमिळ् उरैत्तोऩ्–दक्षिणी (मधुर) तमिळ् के व्याकरणकार (अगस्त्य) के; मुऩ्ऩा–नेतृत्व में; तीतु तीर्–निर्दोष; मुऩिवर् यारुम्–सभी मुनि; पुऩ् तॊळिल् अरक्करक्कु–नीच-कर्मी राक्षसों (के दुष्कृत्यों) का; आऱ्ऱेम्–सहन नहीं कर सकते; नोऱ्किलम्–व्रतपालन नहीं करते; कॊऩ्ऱु अरुळ्–उनका नाश कर हम पर कृपा कीजिए; कोवे–राजा; उऩ्ऩाल्–तुमसे; अऩ्ऩार् कुऱैवतु–उनका मरना; चरतम्–निश्चित है; ऍऩ्ऱऩर्–बोले; याऩे केट्टेऩ्–मैंने स्वयं सुना; नी–तुमने; अतऱ्कु इयैव–उसके ही अनुरूप; चॆय्ताय्–(कार्य) किया है । ४६२

जब श्रीराम दण्डकारण्य में घुसे तभी तमिळ के (व्याकरण के) रचयिता अगस्त्य के नेतृत्व में निर्दोष मुनिगण आये और उन्होंने श्रीराम से निवेदन किया कि नीचकर्मी राक्षसों से हम बेचैन हैं। उनके दिये कष्ट सह नहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सकते हैं। व्रत आदि का पालन भी कर नहीं पाते। उनको मारो और हम पर दया करो, हे राजन! तुम्हारे हाथ वे मरेंगे। यह निश्चित है। यह मैंने अपने कानों से ही सुना था। तुमने भी वैसे ही, उनकी शिकायत को सत्य प्रमाणित करते हुए काम किये हैं। ४६२

उन्नैयुङ् गेट्टु मऱुन् नूऱ्ऱमु मुडैय नाळुम्
पिन्नैयिव् वरक्कर् शेनैप् पॅरुमैयु मुनिवर् पेणिच्
चॊन्नबि नुङ्गै मूक्कु मुम्बियर् तोळुन् दाळुम्
चिन्नबिन् नङ्गळ् शॆय्द वदनैनी शिन्दि यायो 463

मुनिवर्–मुनियों के; पेणि–आतुर होकर; उन्नैयुम्–तुम्हारा चरित्र; उन् ऊऱ्ऱमुम्–तुम्हारा बल; उटैय नाळुम्–तुम्हारी आयु के दिन; इ अरक्कर् चेनै पॅरुमैयुम्–इस राक्षस-सेना का गौरव; चॊन्नपिन्–कहने पर; केट्टु–(अन्य सूत्रों से भी) सुनकर; पिन्नै–उसके बाद; उङ्कै मूक्कुम्–तुम्हारी बहन की नाक को और; उम्पियर् तोळुम्–तुम्हारे भाइयों के कन्धों को; ताळुम्–पैरों को; चिन्न पिन्नङ्कळ् चॆय्त–जो खण्ड-खण्ड किया; अतनै–उस (श्रीराम और लक्ष्मण के) काम को; नी चिन्तियायो–तुम सोचोगे नहीं क्या। ४६३

उन मुनियों ने आतुरता के साथ तुम्हारा चरित्र, बल, तुम्हारी आयु की बात, इन राक्षसों की सेना का गौरव आदि कहा। श्रीराम ने अन्य सूत्रों से भी वे बातें सुनीं। इसके बाद ही उन्होंने तुम्हारी बहिन की नाक के और तुम्हारे भाइयों के कन्धों और पैरों के खण्ड-खण्ड किये थे। उस पराक्रम के कार्य को तुम सोचोगे नहीं क्या ? । ४६३

आयिरन् दडक्कै यानिन् नैन्नान्गु करमुम् बऱ्ऱि
वाय्वळि कुरुदि शोरक् कुत्तिवान् शिऱैयिल् वैतत
तूयवन् वयिरत् तोळ्ह डुणित्तवन् ऱॊलैन्द माऱ्ऱम्
नीयऱिन् दिलैयो नीदि नॆऱियऱिन् दिलाद नीशा 464

नीति नॆऱि–धर्मन्याय; अऱिन्तिलात–न जाननेवाले; नीचा–नीच; निन्–तुम्हारे; ऐ नान्कु करमुम्–बीसों हाथों को; पऱ्ऱि–पकड़कर; वाय् वळि–मुख से; कुरुति चोर–खून बह निकले ऐसा; कुत्ति–घूँसा मारकर; वान् चिऱैयिल् वैतत–बड़ी कारा में जिसने बन्द किया; तूयवन्–उस श्रेष्ठ; आयिरम् तट कैयान्–सहस्र बड़े हाथों वाले (कार्तवीर्य) के; वयिर तोळ्कळ्–वज्र (-कठोर) कन्धों को; तुणित्तवन्–जिन्होंने काट दिया; तॊलैन्त माऱ्ऱम्–उन परशुराम के हारने का समाचार; नी अऱिन्तिलैयो–तुमने जाना नहीं है क्या। ४६४

नीति-न्याय न जाननेवाले नीच ! श्रेष्ठ और सहस्रहस्त कार्तवीर्य ने तुम्हारे बीसों हाथों को पकड़कर, तुम्हारे मुखों से रक्त बहाते हुए घूँसा मारा और तुम्हें बड़े कारागृह में बन्दी बनाकर रखा। उसके वज्र-कठोर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कन्धों को जिन्होंने काटा था वे परशुराम श्रीराम से हारकर भागे। क्या यह समाचार तुमने नहीं जाना ? । ४६४

❀ कडिक्कुम्वा ळरवुङ् गेट्कु मन्दिरङ् गळिक्किन् ऱोयै
अडुक्कुमो दडाद दीदेन् ऱऱिविऩा लेदुक् काट्टि
इडिक्कुन रिल्लै नीये यॆण्णिय दॆण्णि युन्ऩै
मुडिक्कुन रॆन्ऱ पोदु मुडिविन्ऱि मुडिव दुण्डो 465

कटिक्कुम् वाळ् अरवुम्–डसनेवाला क्रूर सर्प भी; मन्तिरम् केट्कुम्–मन्त्र सुनता है (मानकर चुप रहता है); कळिक्किन्ऱोयै–मदमत्त तुम्हें; अटुक्कुम् ईतु–यह कर्तव्य है; अटाततु ईतु–अकर्तव्य यह है; ऎऩ्ऱु–ऐसा; अऱिविऩाल् एतु काट्टि–बुद्धि से हेतु समझाकर; इटिक्कुनर् इल्लै–टोकनेवाले नहीं हैं; नी–तुम; ऎण्णियते ऎण्णि–जैसा सोचते हो वैसा ही खुद सोचकर; उऩ्ऩै मुटिक्कुनर्–तुम्हें मिटानेवाले (मन्त्री) हैं; ऎऩ्ऱु पोतु–ऐसी स्थिति में; मुटिवु इऩ्ऱि–सर्वनाश के सिवा; मुटिवतु उण्टो–कोई (अन्य) अन्त होगा क्या। ४६५

काटनेवाला सर्प भी मन्त्र सुनकर दबा रहता है ! तुम मदमत्त हो। तुम्हें यह कर्तव्य है, यह अकर्तव्य —ऐसा कहकर टोकनेवाले नहीं हैं। जो तुम्हारे मन्त्री हैं वे तुम जैसा सोचते हो, वैसा ही सोचते हैं और तुम्हारा नाश कर रहे हैं। उस हालत में सर्वनाश के सिवा अन्त क्या (शुभ) होगा ? । ४६५

❀ ऎऩ्ऱु ऱत्तुरै केट्टलु मिरुबदु नयऩम्
मिन्ऱि ऱप्पऩ वॊत्तऩ वॆयिल्विडु पहुवाय्
कुऩ्ऱि ऱत्तॆळित् दुरप्पिऩऩ् कुऱिप्पदॆऩ् कामऩ्
तऩ्ऱि ऱत्तैयुङ् गडन्ददु शीऱ्ऱत्तिऩ् ऱहैमै 466

ऎऩ्ऱु–ऐसा; अऱत्तु उरै–धर्म-वचन; केट्टलुम्–सुनते ही; इरुपतु नयऩम्–बीसों आँखें; मिऩ् तिऱप्पऩ–बिजली प्रगटी; ऒत्तऩ–जैसे लगीं; वॆयिल् विटु–धूप-सा निकालनेवाले; पकुवाय्–फटे बड़े मुखों से; कुऩ्ऱु इऱ–पर्वतों को फोड़कर; तॆळित्तु उरप्पिऩऩ्–(रावण ने) डाँट बतायी और गर्जन किया; कुऱिप्पतु ऎऩ्–क्या कहा जाय; चीऱ्ऱत्तिऩ् तकैमै–कोप का प्रकार; कामऩ् तऩ् तिऱत्तैयुम्–मन्मथ की शक्ति को भी; कटऩ्ततु–पार कर गया। ४६६

सीताजी के ये धर्मोपदेश-वचन कहते ही रावण की बीसों आँखों से बिजली-सी छूटी। उसने अपने मुख खोलकर धूप-सा निकालते हुए गरज कर डाँट बतायी कि पर्वत भी टूट गये। तात्पर्य क्या बताया जाय ? कोप का वेग मन्मथ की शक्ति को भी लाँघ गया। ४६६

वळऱ्ऩद ताळिऩऩ् मादिर मऩैत्तैयु मऱैवित्
तळऩ्द तोळिऩ ऩऩल्शॊरि कण्णिऩ ऩिवळैप्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पिळन्दु तिन्बॅनॅन् ऱुडन्ऱुनिन् ऱ्ऱनऩडि पॅयरान्
किळर्न्द शीऱ्ऱमुङ् गादलु मॅदिरॅदिर् किडैप्प 467

वळर्न्त ताळिऩन्–लम्बे पैरों वाला; मातिरम् अऩैत्तैयुम्–सभी दिशाओं को; मऱैवित्तु अळन्त–समा लेकर नापनेवाले; तोळिऩन्–कन्धों का; अऩल् चॉरि कण्णिऩन्–आग उगलनेवाली आँखों का; इवळै पिळन्तु तिन्पॅन्–इसको खण्ड बनाकर खाऊँगा; ऍऩ्ऱु–कहकर; किळर्न्त चीऱ्ऱमुम्–उमगते क्रोध; कातलुम्–और प्रेम के; ऍतिर् ऍतिर् किटैप्प–आमने-सामने हो टकराते; अटि पॅयरान्–आगे कदम न रखता हुआ; उटन्ऱु निन्ऱऩन्–कोप कर खड़ा रहा। ४६७

कोप के कारण वह उछला तो उसके पैर अधिक लम्बे दिखे। भुजाएँ दिशाओं को छिपाते हुए दिशाओं को मानो नाप रही थीं। अंगारे निकालती आँखों के साथ उसने कहा कि मैं इसे तोड़कर खा लूँगा। पर उसके मन में वर्धनशील काम और क्रोध का संघर्ष हो गया। इसलिए वह आगे नहीं बढ़ा, पर कोप के साथ खड़ा रह गया। ४६७

अऩ्ऩ कालैयि लनुमनु मरुन्ददिक् कऱ्पिन्
ऍऩ्ऩै याळुडै नायहऩ् ऱेवियै यॅऩ्मुऩ्
शॊऩ्ऩ नीशऩ्कै तॊडुवदऩ् मुऩ्ऱुहैत् तुळक्किप्
पिऩ्ऩै निऩ्ऱदु शॅय्हुवॅ ऩॅऩ्बदु पिडित्ताऩ् 468

अऩ्ऩ कालैयिल्–तब; अनुमऩुम्–हनुमान ने भी; अरुन्तति कऱ्पिन्–अरुन्धती के समान पतिव्रता; ऍऩ्ऩै आळुटै–मुझे अपना दास बनाये रखनेवाले; नायकऩ् तेवियै–नायक श्रीराम की देवी को; ऍऩ् मुऩ्–मेरे ही सामने; चॊऩ्ऩ नीचऩ्–ऐसे वचन जिसने कहे, उस नीच के; कै तॊटुवतऩ् मुऩ्–हाथ से स्पर्श करने के पहले; तुकैत्तु उळक्कि–उसको रौंदकर मारकर; पिऩ्ऩै निऩ्ऱतु–बाद जो हो; चॅय्कुवॅऩ्–कर लूँगा; ऍऩ्पतु पिटित्ताऩ्–ऐसा ठान लिया। ४६८

तब हनुमान ने सोचा कि मेरे ही सामने अनुचित वचन कहनेवाला यह नीच राक्षस अरुन्धती-सी सीताजी को, जो मुझे दास का गौरव देनेवाले मेरे स्वामी श्रीराम की देवी हैं, हाथ से स्पर्श करे, इसके पूर्व ही मैं उसे रौंदकर मार दूँगा और बाद जो करना है वह करूँगा। हनुमान ने मन में ठाना। ४६८

तऩियऩ् निऩ्ऱऩऩ् ऱ्ऱलैपत्तुङ् गडिदुहत् ताक्किप्
पऩियिऩ् वेलयि लिलङ्गैयैक् कीळुऱ्ऱुप् पाय्च्चिप्
पुऩिद मादवत् तणङ्गऩैच् चुमन्दऩऩ् पोवॅऩ्
इऩिदि ऩॅऩ्बदु निऩैन्दुदऩ् करम्बिशैन् दिरुन्दाऩ् 469

तऩियऩ्–एकाकी मैं; निऩ्ऱऩऩ्–सामने स्थित; तलै पत्तुम्–दसों सिरों को; कटितु उक–शीघ्र गिराते हुए; ताक्कि–प्रहरित कर; इलङ्कैयै–लंका को; पऩियिऩ् वेलैयिल्–शीतल समुद्र के अन्दर; कीळ् उऱ पाय्च्चि–धँसाते हुए भिजवाकर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुनित–पावन; मा तवत्तु–महती तपस्विनी; अणङ्कित्तै–देवी को; चुमन्ततन्–धारण करके; इतितिन् पोवेन्–सुख से जाऊँगा; अॅन्पतुम् नित्तैन्तु–यह भी सोचकर; तन् करम् पिचैन्तु–अपने हाथ मलते हुए; इरुन्तान्–(मौके की ताक में) रहा। ४६९

एकाकी मैं सामने स्थित रावण के दसों सिरों को गिराते हुए प्रहार करूँगा; लंका को शीतल सागर के अन्दर नीचे पहुँचा दूँगा और पवित्र महान् तपस्विनी देवी को धारण कर सुख से चला जाऊँगा। यह भी सोचकर हनुमान अपने हाथ मलते हुए मौके की ताक में बैठा रहा। ४६९

आण्ड वाळरक् कन्नहत् तण्डत्तै यळिप्पान्
मूण्ड कालवॅन् दीयॅन मुऱ्ऱिय शीऱ्ऱम्
नीण्ड कामनीर् नीत्तत्तिन् वीवुऱ निनैविन्
मीण्डु निन्ऱॊरु तन्मैया लिनैयन विळम्बुम् 470

आणटु–तब; अ वाळ् अरक्कन्–उस निर्मम राक्षस के; अकत्तु–मन में जो उठा; अण्टत्तै अळिप्पान्–अण्डों का नाश करने; मूण्ट–उठी; काल वॅम् ती अॅन–युगान्त की भयंकर आग के समान; मुऱ्ऱिय चीऱ्ऱम्–सुवर्धित कोप; नीण्ट काम नीर् नीत्तत्तिन्–दीर्घ काम रूपी जलप्रवाह में; वीवु उऱ–बुझ गया; निनैविन् मीण्टु निन्ऱु–अपनी सुध में फिर आकर; ऒरु तन्मैयाल्–एक प्रकार से; इनैयत विळम्पुम्–यों कहने लगा। ४७०

तब क्रूर रावण के मन में जो गम्भीर क्रोध अण्डनाशक युगान्त की भयंकर अग्नि के समान उठा था, वह दीर्घ प्रेम रूपी जल-प्रवाह में बुझ गया। फिर अपनी पुरानी स्मृति पाकर एक स्थिति में वह यों कहने लगा। ४७०

कॊल्वॅनॅन् ऱुडन्ऱे नुन्नैक् कोऱलॅन् कुऱित्तुच् चॊन्न
शॊल्लुळ ववऱ्ऱुक् कॅल्लाङ् गारणन् दॅरियच् चॊल्लिन्
ऒल्वदी दॊल्ला दीदॅन् ऱॅनक्कुमॊन् ऱुलहत् तुण्डो
वॅल्वदुन् दोऱ्ऱ ऱानुम् विळैयाट्टिन् विळैन्द मेनाळ् 471

उन्नै कॊल्वॅन् ऎन्ऱु–तुमको मारूँगा कहकर; उटन्ऱेन्–कुपित हो उठा; कोऱलॅन्–पर नहीं मारूँगा; कुऱित्तु चॊन्न–मुझे उद्देश्य करके जो तुमने कहा; अवऱ्ऱिक्कु ऎल्लाम्–उस सबका; कारणम् तॅरिय चॊल्लिन्–कारण समझाकर कहना चाहूँ तो; चॊल् उळ–मेरे पास कहने को विषय हैं; ऎनक्कु ऒल्वतु ईतु–मुझसे साध्य यह; ऒल्लातु ईतु–असाध्य यह; ऎन्ऱु–ऐसा; ऒन्ऱु–कुछ; उलकत्तु उणटो–दुनिया में है क्या; मेनाळ्–पहले; वॅल्वतुम् तोऱ्ऱल् तानुम्–जीतना या हारना; विळैयाट्टिन् विळैन्त–खेल में हुए थे। ४७१

मैंने कोप के कारण तुम्हें मारने की बात कही। पर अब मैं तुम्हें नहीं मारूँगा। तुमने जो भी अपराध मुझ पर लगाये, उन सबका हेतु-सहित खण्डन करूँ, इसके लिए मेरे पास विषय (तर्क) हैं। इस संसार में

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरे लिए साध्य-असाध्य ऐसा कुछ है क्या ? आगे जो जय या पराजय हुई, वे सब खेल-खेल में हुई बातें हैं। ४७१

ऒऩ्ऱुके ळुरैक्क निऱ्को रुयिरॆऩ वुरियोऩ् ऱऩ्ऩैक्
कॊऩ्ऱुको ळिऴैत्ता ऩीनिऩ् ऩुयिर्विडिऱ् कुऱ्ऱङ् गूडुम्
ऎऩ्ऱऩा रुयिरु नीङ्गु मॆऩ्बदै यियॆय वॆण्णि
अऩ्ऱुनाऩ् वञ्जञ् जॆय्द दारॆऩक् कमरि नेर्वार् 472

ऒऩ्ऱु उरैक्क केळ्–एक बात कहूँगा, सुनो; निऱ्कु ओर् उयिरॆऩ–तुम्हारे श्रेष्ठ प्राण-सम; उरियोऩ् तऩ्ऩै–तुम्हारे स्वामी को; कॊऩ्ऱु–मारकर; कोळ् इऴैत्ताल्–अपना बल दिखाऊँ तो; नी–तुम; निऩ् उयिर् विटिल्–अपने प्राण त्याग दोगी तो; कुऱ्ऱम् कूटुम्–अपराध होगा; ऎऩ्ऱऩ् आरुयिरुम्–मेरे प्रिय प्राण भी; नीङ्कुम्–छूट जायँगे; ऎऩ्पतै–इसको; इयॆय ऎण्णि–खब सोचकर ही; अऩ्ऱु नाऩ् वञ्चम् चॆय्ततु–उस दिन मैंने वञ्चक काम किया; आर्–कौन; ऎऩक्कु–मुझसे; अमरिल् नेर्वार्–युद्ध में लड़ सकते हैं। ४७२

सुनो, एक बात कहता हूँ। अगर मैं तुम्हारे प्राण-सम प्यारे स्वामी को मारकर अपना बल दिखलाऊँ और तुम अपनी जान छोड़ दो तो मेरे कार्य में बाधा पड़ जायगी। और मेरे प्यारे प्राण भी छूट जायँगे। यह सब खूब सोचकर ही मैंने उस दिन प्रवंचना से काम लिया। नहीं तो कौन है जो मेरे विरुद्ध समर में लड़ सके ? । ४७२

माऩॆऩ्ब दऱिन्दु पोऩ मानिड रावार् मीण्डि
याऩॆऩ्ब दऱिन्दाल् वारा रेऴैमै यॆण्णि नोक्कल्
तेऩॆऩ्ब दऱिन्द शॊल्लाय् तेवर्दाम् याव रेयॆङ्
गोऩॆऩ्ब दऱिन्द पिऩ्ऩैत् तिऱम्बुवार् कुऱैयि ऩल्लाल् 473

तेऩ् ऎऩ्पतु अऱिन्त–शहद मानने योग्य; चॊल्लाय्–मधुरभाषिणी; माऩ् ऎऩ्पतु–हरिण; अऱिन्तु पोऩ–समझकर जो गये; मानिटर् आवार्–मानव लोग; मीण्टु–लौट आकर; याऩ् ऎऩ्पतु–मैं था यह; अऱिन्ताल्–समझेंगे तो; वारार्–इधर नहीं आएँगे; एऴैमै ऎण्णि नोक्कल्–कायरता मत समझो; ऎम् कोऩ्–हमारे शासक रावण (का) यह काम है; ऎऩ्पतु अऱिन्त पिऩ्ऩै–यह जानने के बाद; यावरे तेवर् ताम्–कौन देव ही सही; कुऱैयिऩ् अल्लाल्–मन्दवेग हुए विना; तिऱम्पुवार्–विरोध में काम करेंगे। ४७३

शहद-सी बोली वाली सीते ! वे दोनों दुर्बल मनुष्य (मारीच को) सच्चा मृग समझकर गये थे। वे लौट आकर यह जान लेंगे कि यह कार्य मेरा है तो वे इधर नहीं आएँगे। तुम मुझे कायर मत समझो। देवों में ही सही कौन है जो यह जानने पर कि यह हमारे नाथ रावण का ही काम है वेग न खोकर मेरे विरोध में बर्ताव करेंगे ? । ४७३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॅन्ऱोरु मिरुप्प यार्क्कु मेलवर् विळिवि लादोर्
ऍन्ऱोरु मिरुप्प वन्ऱे यिन्दिर नेवल् शॅय्य
ऑन्ऱाह वुलह मून्ऱु माळ्हिन्ऱ वॉरुवन् याने
मॅन्ऱोळा यिदऱ्कु वेऱोर् कारणम् विरिप्प दुण्डो 474

मॅन् तोळाय्–मृदुल भुजाओं वाली; वॅन्ऱोरुम् इरुप्प–मेरे विजयी (वाली आदि) के रहते; यार्क्कुम् मेलवर्–सबके ऊपर रहनेवाले; विळिवु इलातोर ऍन्ऱोरुम् इरुप्प–अमर कहलानेवाले देवों के भी रहते; अन्ऱे–न; इन्तिरन् एवल् चॅय्य–इन्द्र मेरी भृत्यता करे ऐसा; याने–मैं; ऑन्ऱाक उलकम् मून्ऱुम्–अकेले तीनों लोकों को; आळ्किन्ऱ ओरुवन्–पालनेवाला एक बना रहता हूँ; इतऱ्कु–इसका; वेऱु ओर् कारणम्–(मेरे बल के सिवा) कोई अन्य कारण; विरिप्पतु उण्टो–विस्तार से कहना भी है क्या। ४७४

मृदु कन्धों वाली। तुम मेरे विजेताओं की बात कहती हो! जब वे हैं और ये सर्वोच्च अमर देख ही रहे हैं; तब भी न इन्द्र मेरी सेवा-टहल करता है और मैं अकेला त्रैलोकाधिपत्य का काम कर रहा हूँ। इसका कोई अन्य हेतु है, विना मेरे पराक्रम के, जिसका मुझे वर्णन करना पड़े ? । ४७४

मूवरुन् देवर् तामु मुरणह मुऱुङ् गॉऱ्ऱम्
पावैनिन् पॉरुट्टि नालोर् पळिपॅऱप् पयन्ऱीर् नोन्बिन्
आवियन् मनिदर् तम्मै यडुहिलॅ नवरै योण्डुक्
कूविनिन् ऱेवल् कॉळ्वॅन् काणुदि कुदलेच् चॉल्लाय् 475

कुतलै चॉल्लाय्–तोतली (मधुर) भाषिणी; मूवरुम्–त्रिमूर्ति; तेवर् तामुम्–देव; मुरण् उक–बल खो जायँ ऐसा; मुऱ्ऱुम् कॉऱ्ऱम्–जो पूर्ण हुई वह विजय; पावै–स्त्री; निन् पॉरुट्टिनाल्–तुम्हारे कारण; ओर् पळि पॅऱ–एक अपवाद पा ले; पयन् तीर् नोन्पिन्–असफल व्रतधारी; आ इयल्–गाय के-से स्वभाव वाले; मनितर् तम्मै–मनुष्यों को; अटुकिलॅन्–नहीं मारूँगा; अवरै–उनको; ईण्टु–यहाँ; कूवि–बुलाकर; निन्ऱु एवल् कॉळ्वॅन्–सामने खड़ा करके आज्ञा का पालन करवा लूँगा; काणुति–देखोगी। ४७५

तोतली (मधुर) बोली वाली! मैंने त्रिमूर्ति और अन्य इन्द्रादि देवों के बल का नाश करके विजय का गौरव पाया है। उस विजय पर कलंक लगाते हुए निरर्थक व्रतधारी, गऊ-सम मानवों को नहीं मारूँगा। उन्हें इधर लाऊँगा, और वे मेरे सामने खड़े होकर मेरी सेवा-टहल करें—ऐसा करूँगा। तुम देख लो। ४७५

चिऱ्ऱियऱ् चिऱुमै याऱ्ऱऱ् चिऱुतॉळिन् मनिद रोडे
मुऱ्ऱिय दायिन् वीर मुनिवॅन्गण् विळैया देनुम्
इऱ्ऱैयिप् पहलि नॉय्दि निरुवरै यॉरुहै याल्यान्
पऱ्ऱिनॅन् कॉणरुन् दन्मै काणुदि पळिप्पि लादाय् 476

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पऴिप्पु इलाताय्–अनिंद्य (सुन्दरी); चिऱ्ऱियल्–अल्प-स्वभाव; चिऱुमै आऱ्ऱल्–अल्पशक्ति; चिऱु तॊऴिल्–क्षुद्रकर्म; मत्तिरोटु–मानवों के साथ; मुऱ्ऱियतु आयिऩ्–शत्रुता पूर्णरूप से बढ़ी तो; वीर मुऩ्ऩिवु–वीरोचित कोप; ऍऩ् कण्–मुझमें; विळैयातेऩुम्–पैदा नहीं होगा तो भी; इऱ्ऱै इ पकलिल्–अभी, आज, इसी मुहूर्त में; नॊय्तिऩ्–सुगम रूप से; इरुवरै–दोनों को; ऒरु कैयाल्–एक हाथ से; यान्–मैं; पऱ्ऱिऩॆऩ् कॊणरुम्–पकड़ लाऊँगा वह; तऩ्मै–(बल का) प्रकार; काणुति–देखोगी। ४७६

अनिंद्य सुन्दरी ! मानव क्षुद्र हैं, अल्पबल हैं और अल्पकर्म हैं। उनसे शत्रुता पक्की हो गयी तो, यद्यपि मुझमें वीरता योग्य कोप नहीं होगा तो भी तुम देखोगी कि अभी इसी घड़ी दोनों को एक ही हाथ से अनायास पकड़कर इधर लाऊँगा। ४७६

पदवियिऩ् मऩिद रेऩुम् पैन्दॊडि निऩ्ऩैत् तन्द
उदवियै युणर नोक्कि ऩुयिर्क्कॊलैक् कुरिय रल्लर्
शिदैवुऱ् लवर्क्कु वेण्डिऱ् चॆय्दिनी यॆऩ्ऱु शॆप्पिल्
इदमुऩक् कीदे याहि लियऱ्ऱुवॆऩ् काण्डि यिऩ्ऩुम् 477

पैन्तॊटि–मनोरम कंकणशोभिते; इऩ्ऩुम्–और भी; पतवि इल्–श्रेष्ठ पद में न रहनेवाले; मऩ्ऩितर् एऩुम्–मनुज हों तो भी; निऩ्ऩै तऩ्त–तुम्हें जो मुझे दिया; उतवियै–वह उपकार; उणर नोक्किऩ्–विचार कर देखें तो; उयिर् कॊलैक्कु उरियर् अल्लर्–जान से मारे जाने योग्य नहीं है; अवर्क्कु–उनका; चितैवु उऱल्–मरना; वेण्टिल्–तुम चाहोगी (कि वे मरें) तो; चॆय्ति नी–तुम करो; ऍऩ्ऱु चॆप्पिल्–ऐसा कहोगी तो; ईते उऩक्कु इतम् आकिल्–यही तुम्हारे हित में होगा तो; इयऱ्ऱुवेऩ्–करूँगा; काण्टि–देखो। ४७७

मनोरम कंकणधारिणी ! वे उच्चपद मनुष्य नहीं हैं। तो भी तुमको उन्होंने मुझे दिलाया है। उस उपकार को लेकर सोचा जाय तो वे मारे जाने योग्य नहीं हैं। पर अगर तुम चाहो कि वे मर जायँ, इसी में तुम्हारा भला है तो मैं वही करूँगा। ४७७

पऴ्ळनी रयोत्ति नण्णिप् परदऩे मुदलि ऩोराण्
डुऴ्ळवर् तम्मै यॆल्ला मुयिर्कुडित् तूऴित् तीयिऩ्
वॆऴ्ळनीर् मिदिलै योरै वेररुत् तॆळिदि ऩॆय्दिक्
कॊळ्वॆऩिऩ् ऩुयिरु मॆऩ्ऩै यऱिन्दिलै कुऱैन्द नाळोय् 478

कुऱैन्त नाळोय्–क्षीण हुई आयु वाली; पऴ्ळ नीर्–गम्भीर जलसमृद्ध; अयोत्ति नण्णि–अयोध्या में जाकर; परतऩे मुतलिऩोर्–भरत आदि; आण्टु उऴ्ळवर् तम्मै ऍल्लाम्–वहाँ रहनेवाले सबों को; उयिर् कुटित्तु–प्राण पीकर (मारकर); ऊऴि तीयिऩ्–युगान्त अग्नि के समान; वॆऴ्ळ नीर् मितिलैयोरै–प्रवाह जलपूर्ण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मिथिलावासियों को; वेर् अऱ्ततु–निर्मूल करके; ऍळितिऩ् ऍय्ति–आसानी से (लौट) आकर; निऩ् उयिरुम् कॊळ्वॆऩ्–तुम्हारी भी जान हर लूंगा; ऍऩ्ऩै अऱिन्तिलै–मुझे नहीं समझतीं। ४७८

हे क्षीण हुई आयु वाली ! गहरे जल से समृद्ध अयोध्या जाकर भरत आदि वहाँ के सभी को मारकर फिर युगान्तकालीन अग्नि के समान जल-प्रवाह समृद्ध मिथिला जाऊँगा। वहाँ के सभी को मारूँगा। फिर अनायास इधर आकर तुम्हारे प्राण भी हर लूँगा। तुम मुझे नहीं समझीं ! । ४७८

ईदुरैत् तऴऩ्ऱु पॊङ्गि यॆरिहदिर् वाळै नोक्कित्
तीदुयिर्क् किऴैक्कु नाळुन् दिङ्गळो रिरण्डिऱ् ऱेय्न्द
दादलिऱ् पिऩ्ऩर् नीये यऱिन्दवा ऱऱिदि यॆऩ्ऩाप्
पोदरिक् कण्णि ऩाळै यहत्तुवैत् तुरप्पिप् पोऩाऩ् 479

ईतु उरैत्तु–यह (सब) कहकर; अऴऩ्ऱु पॊङ्कि–क्रोध में भभककर; ऍरि कतिर्–जलती-सी कान्ति वाली; वाळै नोक्कि–तलवार को देखकर; उयिर्क्कु तीतु इऴैक्कुम् नाळुम्–तुम्हारे प्राणों की हानि करने का दिन भी; तिङ्कळ् ओर् इरण्टिल्–दो मासों में; तेय्न्ततु–(पूरा) हो जायगा; आतलिऩ्–इसलिए; पिऩ्ऩर्–बाद; नीये अऱिन्त आऱु अऱिति–तुम जो समझो वही समझो; ऍऩ्ऩा–कहकर; पोतु अरि कण्णिऩाळै–कमल-सम और लाल डोरों-सहित आँख वाली सीता को; अकत्तु वैत्तु–मन में रखते हुए; उरप्पि–डाँट बताकर; पोऩाऩ्–गया। ४७९

यह कहकर रावण ने भभकते क्रोध के साथ अग्नि के समान तेज उगलनेवाली अपनी तलवार को देखा। 'अब तुम्हारे मरने का दिन भी दो महीने में आ गया। इसलिए फिर तुम जैसा समझो वैसा समझो।' उसने कमल-सम और डोरों-सहित आँखों वाली सीताजी से कहा और उनके रूप को अपने मन में लिए हुए, उन्हें डाँट बताकर चला। ४७९

अञ्जुवित् तानु मॆऩ्मै यऱिवुऱत् तेऱ्ऱि यानुम्
वञ्जियिऱ् चॆव्वि याळै वशित्तॆऩ्बाल् वरच्चॆय् यीरेल्
नञ्जुमक् कावॆ ऩॆऩ्ऩा नहैयिला मुहत्तुप् पेऴ्वाय्
वॆञ्जिऩत् तरक्कि मार्क्कु वेऱ्ऱे ऱुणर्त्तिप् पोऩाऩ् 480

वञ्चियिल् चॆव्वियाळै–स्त्रियों में अति सुन्दर सीतादेवी को; अञ्चुवित्तानुम्–डरा-धमकाकर ही सही; मॆऩ्मै–नरमी से; अऱिवु उऱ–बात समझे ऐसा; तेऱ्ऱियानुम्–समझाकर; वचित्तु–मेरे वशीभूत करके; ऍऩ पाल्–मेरे पास; वर चॆय्यीरेल्–आने को मजबूर न करोगी तो; उमक्कु नञ्चु आवॆऩ्–तुम लोगों के लिए विष बन जाऊँगा; ऍऩ्ऩा–ऐसा; नकैयिला मुकत्तु–हासहीन वदन की; पेऴ्वाय्–बड़े मुखों की; वॆम् चिऩत्तु–भयंकर क्रोधशीला; अरक्किमार्क्कु–राक्षसियों से; वेऱु वेऱु–अलग-अलग; उणर्त्ति–सीख देकर; पोऩाऩ्–गया। ४८०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जाने से पहले, उसने वहाँ रही हासहीन-वदना और फटे-से मुखों वाली राक्षसियों को अलग-अलग समझाया कि स्त्रियों में श्रेष्ठ इस सीता को भय दिखाओ या कोमल शब्दों में समझाओ। उसे मेरी वशवर्तिनी बनाकर मेरे पास नहीं भेजोगी तो मैं तुम्हारे लिए विष बन जाऊँगा। ४८०

पोयिऩ ऩरक्कऩ् पिऩ्ऩैप् पॊङ्गरा नुङ्गिक् कान्ऱ
तूयवॆण् मदिय मॊत्त तोहैयैत् तॊडर्न्दु शुऱ्ऱित्
तीयवल् लरक्कि मार्ह डिरण्डॆऴुन् दुरप्पिच् चिन्दै
मेयिऩ वण्ण मॆल्लाम् विळम्बुवान् ऱॊडङ्गि ऩाराल् 481

अरक्कऩ् पोयिऩऩ्–राक्षस (रावण) चला गया; पिऩ्ऩै–पश्चात्; पॊङ्कु अरा–फुफकार उठनेवाले (राहु) द्वारा; नुङ्कि कान्ऱ–निगलकर उगले हुए; तूय वॆण् मतियम् ऒत्त–शुद्ध श्वेत चन्द्र के समान; तोकैयै–कलापी-सी सीताजी को; तीय–क्रूर; वल्–बलयुक्त; अरक्किमार्कळ्–राक्षसियाँ; तॊटर्न्तु चुऱ्ऱि–लगातार घेरकर; तिरण्टु ऎऴुन्तु–एक साथ उठकर; उरप्पि–डाँटकर; चिन्तै मेयिऩ वण्णम् ऎल्लाम्–मनमाने प्रकार से; विळम्पुवान् तॊटङ्किऩार्–कहने लगीं। ४८१

निशाचर चला गया; बाद क्रूर और बलयुक्त राक्षसियाँ फुफकार उठे राहु सर्प द्वारा निगलकर उगले हुए शुद्ध श्वेत चन्द्र-सी और कलापी-सी मनोरम सीता को लगातार घेर गईं। डाँटने लगीं और मनमाना कहने लगीं। ४८१

मुऩ्मुऩ् ऩिऩ्ऱार् कण्गऩल् शिन्द मुडुहुऱ्ऱार्
मिऩ्मिऩ् ऩॆऩ्ऩुञ् जूलमुम् वाळुम् मिशैयोच्चिक्
कॊऩ्मिऩ् कॊऩ्मिऩ् कॊऩ्ऱु कुऱैत्तुक् कुडरारत्
तिऩ्मिऩ् ऱिऩ्मिऩ् ऩॆऩ्ऱु तॆऴित्तार् शिलरॆल्लाम् 482

चिलर् ऎल्लाम्–कुछ लोग; कण् कऩल् चिन्त–आँखों के अंगारे उगलते; मुऩ् मुऩ् निऩ्ऱार्–एक के आगे एक खड़ी हुईं; मुटुकुऱ्ऱार्–फिर सतेज उनके पास गयीं; मिऩ् मिऩ् ऎऩ्ऩुम्–चमाचम; चूलमुम् वाळुम्–शूल और तलवार को; मिचै ओच्चि–ऊपर हिलाते हुए; कॊऩ्मिऩ् कॊऩ्मिऩ्–मारो, मारो; कॊऩ्ऱु कुऱैत्तु–मारकर टुकड़े बनाकर; कुटर् आर–पेट भरके; तिऩ्मिऩ् तिऩ्मिऩ्–खाओ, खाओ; ऎऩ्ऱु–ऐसा; तॆऴित्तार्–डाँटीं। ४८२

कुछ राक्षसियाँ आँखों से अंगारे छितराते हुए एक के आगे एक उनके सम्मुख आयीं; और चमाचम अपने शूलों और तलवारों को ऊपर हिलाते हुए चिल्लायीं कि मारो, इसे मार दो। मारकर शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके पेट भर खा लो और उन्होंने डाँट बतायी। ४८२

वैयऩ् दन्द नाऩ्मुहऩ् मैन्दऩ् महऩ्मैन्दऩ्
ऐयऩ् वेद मायिरम् वल्लो ऩऱिवाळऩ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मॅय्यन् बुन्बाल् वॅत्तुळ दल्लाल् विन्नैवॅन्ऱोन्
शॅय्युम् बुन्मै यादुहॊ लॅन्ऱार् शिलरॅल्लाम् 483

चिलर् ॲल्लाम्–(अन्य) कुछ राक्षसियों ने; वैयम् तन्त–लोकोत्पादक; नान्मुकन् मैन्तन्–चतुर्मुख के पुत्र (पुलस्त्य) के; मकन् मैन्तन्–पुत्र विश्रवा के पुत्र; ऐयन्–(रावण) त्रिलोकाधिपति हैं; वेतम् आयिरम् वल्लोन्–सहस्रशाखा वेद के ज्ञाता; अऱिवाळन्–बुद्धिमान; उन् पाल्–तेरे प्रति; मॅय् अन्पु–सच्चा प्रेम; वॅत्तुळतु अल्लाल्–रखता है वही नहीं; विन्नै वॅन्ऱोन्–इष्ट कार्य में सफलता पानेवाले; चॅय्युम् पुन्मै–(तो भी तेरी) यह मूर्खता; यातु कॊल्–क्यों; ॲन्ऱार्–पूछा। ४८३

कुछ राक्षसियों ने समझाया कि लोकसर्जक चतुर्मुख के पुत्र पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा के पुत्र हैं हमारे अधिपति रावण। त्रिलोकाधिपति हैं, सहस्रशाखा वेद के ज्ञाता। महा बुद्धिशाली। तुमसे प्रेम जो करते हैं, उस एक कार्य को छोड़कर उन्होंने सभी अभीष्ट कार्यों में सफलता ही पायी है। फिर क्यों तुम यह अज्ञता का काम कर रही हो ?। ४८३

मण्णिऱ् ऱेय्वोर् मान्निडर् तत्तम् वळियोडुम्
पॅण्णिऱ् ऱीयोय् निन्मुदन् माळुम् बिणिशॅय्दाय्
पुण्णिऱ् कोलिट् टालन् शॊल्लल् पॊदुनोक्काय्
ॲण्णिऱ् काणाय् मॅय्म्मैयै यॅन्ऱार् शिलरॅल्लाम् 484

चिलर् ॲल्लाम्–कुछ; मान्निटर्–मनुष्य; मण्णिल्–भूमि पर; तेय्वोर्–क्षय होनेवाले हैं; पॅण्णिल् तीयोय्–स्त्रियों में क्रूरी; निन् मुतल्–तुझसे लेकर; तत्तम् वळियोटुम्–अपनी परम्परा के साथ; माळुम् पिणि–वे मर जाएँ ऐसा रोग (बुरा-कार्य); चॅय्ताय्–तूने कर दिया; पुण्णिल् कोलिट्टाल् अन्–व्रण में लकड़ी घुसी जैसे; चॊल्लल्–मत कहो; मॅय्म्मैयै–सत्य को; पॊतु नोक्काय्–निष्पक्ष रहकर देखती नहीं; ॲण्णिल् काणाय्–सोचकर भी नहीं देखती; ॲन्ऱार्–बोलीं। ४८४

कुछ राक्षसियों ने बताया कि मानव मर्त्य हैं। तू स्त्रियों में क्रूर है। अपने से लेकर वे मानव अपने-अपने परिवारों के साथ मर जाएँ, तूने उनके लिए ऐसा रोग उत्पन्न किया है ! व्रण में लकड़ी घुसेड़ते-से वचन मत बोल। निष्पक्ष होकर सत्य नहीं देखती। सोचकर भी नहीं देखती। ४८४

पुक्क वळिक्कुम् बोन्द वळिक्कुम् बुहैवॅन्दी
ऒक्क विदॅप्पा नुऱ्ऱन्नै यन्ऱो वुणर्विल्लाय्
इक्कण मिऱ्ऱा युन्निन् मॅल्ला मुयिर्वाळा
शिक्क वुरैत्तो मॅन्ऱु कदित्तार् शिलरॅल्लाम् 485

चिलर्–कुछ; ॲल्लाम्–सभी; उणर्वु इल्लाय्–विवेकहीन; पुक्क वळिक्कुम्–वध बनकर जिस कुल में आयी है, उस कुल में; पोन्त वळिक्कुम्–और जहाँ जनमी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस कुल में; पुकै वॅम् ती–धुआँ-सहित आग; ऑक्क वितैप्पान्–एक साथ लगाने के लिए; उऱ्ऱत्तै अन्ऱो–तत्पर है न; इ कणम् इऱ्ऱाय्–इसी क्षण नष्ट हो जाएगी; उन् इत्तम् ॲल्लाम्–तेरे वर्ग के सभी; उयिर् वाळा–जीवित नहीं रहेंगे; चिक्क उरैत्तोम्–साफ़-साफ़ कह दिया हमने; ॲन्ऱु कतित्तार्–ऐसा कोप के साथ बोलीं। ४८५

कुछ लोगों ने गुस्सा दिखाया। विवेकहीन स्त्री ! जिस कुल में तू वधू बनके गयी, उस वंश में और जिसमें तू जनमी, उसमें तू धुएँ-सहित भयंकर आग को एक साथ बीज के समान बोने का काम कर चुकी। मरी तू अभी। तेरे वर्ग के सभी (कोई) जीवित नहीं रहेंगे। हमने साफ़-साफ़ बता दिया। ध्यान रखो। ४८५

कॊल्वा नुऱ्ऱोर् पॅऱ्ऱिमै यादुङ् गुऱैयादोन्
वॅल्वा ऩॅङ्गॊन् ऱिन्नुमिन् वम्मि ऩिवण्मॅय्यै
वल्वाय् वॅय्यो ऩेवलि ऩॅन्ऩा मनम्वैत्तार्
नल्वाय् नल्लाळ् कण्गळ् कलुळ्न्दा णहुहिन्ऱाळ् 486

कॊल्वान् उऱ्ऱोर्–मारने जो आयीं वे; ॲम् कोन्–हमारे राजा; पॅऱ्ऱिमै यातुम्–निश्चत कार्य में सफलता पाने में कोई भी; कुऱैयातोन्–कमी रखनेवाले नहीं हैं; वॅल्वान्–वे अवश्य सफल होंगे; वॅय्योन्–वे भयानक हैं; वल् वाय् एवलिन्–कठोर उनकी सुनायी गयी आज्ञा के अनुसार; वम्मिन्–आओ; इवळ् मॅय्यै–इसके शरीर को; तिन्नुमिन्–खाओ; ॲन्ऩा–कहकर; मनम् वैत्तार्–मन लगाने लगीं; नल्वाय्–श्रेष्ठ वचन बोलनेवाली; नल्लाळ्–अच्छी देवी; कण्कळ् कलुळ्न्ताळ्–आँखों से अश्रु बहाती हुई; नकुकिन्ऱाळ्–अपनी दशा पर हँसीं। ४८६

वे सीताजी को मारने उठ आयीं। हमारे राजा का गुण है कि वे अपने किसी निश्चित कार्य में असफल नहीं होते। वे हमेशा जीत जाते हैं। वे निर्मम हैं। उनकी कठोर आज्ञा का अभी हम पालन कर लेंगे। आओ सभी। इसके शरीर को खा लेंगे। कहते हुए वे ऐसा बढ़ीं, मानो उन्होंने दृढ़ संकल्प कर लिये हों। श्रेष्ठ वचन बोलनेवाली सीताजी की आँखों से आँसू बहने लगा। वे अपनी विचित्र स्थिति पर हँसीं। ४८६

इन्नोर् अन्नत्त–ऐसी (बुरी) स्थिति; ॲय्तिय कालत्तु–जब हो गयी तब; इटै निन्ऱाळ्–जो उनके मध्य खड़ी रही उस (त्रिजटा) ने; कण्ट कत्ताविन्–अपने देखे स्वप्न का; मुटिवु–अन्त; मुन्ऩे चॊन्ऩेन्–पहले ही मैंने कहा; वाळा–व्यर्थ; पेतुऱ्वीरेल्–भ्रमित हो दुःख करोगी तो; पिन्ऩे–बाद; पिळै–गलत होगा; ॲन्ऱाळ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कहा; अवर् ऍल्लाम्–सभी राक्षसियाँ; अऱिवुऱ्ऱार्–समझदार बनीं; अनृत्ते नन्ऱु–वही ठीक है; ऍन्ऱार्–कहा; (अम्मा–माँ)। ४८७

इस तरह की विकट स्थिति में उनके मध्य जो खड़ी थी, उस त्रिजटा नाम की राक्षसी ने उनसे कहा कि देखो। मैंने अपना देखा स्वप्न पहले ही बताया और उसका सम्भाव्य फल भी। व्यर्थ भ्रम में पड़कर संकट उठाओगी तो पीछे अपराध होगा। उसका समझाना सुनकर सभी राक्षसियाँ चेत गयीं। उन्होंने त्रिजटा से कहा कि तुम्हारा कहना सही है। ४८७

अऱिन्दा रन्त मुच्चडै यॅन्बा ळवळ्शॊल्लप्
पिऱिन्दार् शीऱ्ऱ मन्नतै यञ्जिप् पिऱिहिल्लार्
शॅऱिन्दा राय तीविनै यन्नार् तॅऱलॅण्णार्
नॅऱिन्दा रोदिप् पेदैयु माबि निलैनिन्ऱाळ् 488

मुच्चटै ऍन्पाळ् अवळ्–त्रिजटा नाम की उसके; अनृत चॊल्ल–वैसा कहने पर; चॅऱिन्तार् आय–(देवी को) ठस घेर आये; तीविनै अन्नार्–बुरे कर्म के समान वे; अऱिन्तार्–स्थिति समझकर; चीऱ्ऱम् पिऱिन्तार्–कोप छोड़ गयीं; मन्नतै अञ्चि–राजा से डरकर; पिऱिकिल्लार्–हटीं नहीं (तो भी); तॅऱल् ऍण्णार्–(देवी से) शत्रुता करना नहीं चाहतीं; नॅऱिन्तार् ओति पेतैयुम्–घुँघराले घने केश वाली देवी भी; आबि निलै निन्ऱाळ्–प्राण धारण किये रहीं। ४८८

त्रिजटा के वैसा कहने पर, जो सीता के घने बुरे कर्म के समान थीं, वे सब सत्य जानकर शान्तक्रोध हुईं। राजा से डर था; इसलिए वे दूर नहीं गयीं। फिर भी उन्होंने शत्रुता दिखाने की बात छोड़ दी। घने घुँघराले केश वाली सीताजी भी किसी तरह प्राणधारण किये रह गयीं। ४८८

4. उरुक्काट्टु पडलम् (रूप-प्रकटन पटल)

❀काण्डऱ् कॊत्त कालमु मीदे तॅऱुकावल्
तूण्डऱ् कुऱ्ऱ तीयव रॅल्लान् दुयिल्वुऱ्ऱार्
ईण्डत् तुञ्जुम् विञ्जैहळ् शॅय्दा निहल्वीरन्
माण्डऱ् ऱारा मॅन्ऱिड वन्ता रयर्वुऱ्ऱार् 489

इकल् वीरन्–युद्धवीर हनुमान ने; तॅऱु कावल्–त्रासपूर्ण पहरे में; तूण्टऱ्कु उऱ्ऱ–अधिक सतर्कता दिखाने को उद्यत; तीयवर् ऍल्लाम्–क्रूर सभी राक्षसियाँ; तुयिल्वु उऱ्ऱार्–सोने लगी हैं; काण्टऱ्कु–देवी से भेंट करने; ऒत्त कालमुम् योग्य समय भी; ईते–यही है; ईण्टत् तुञ्चुम्–खूब सोने को प्रेरित करनेवाली; विञ्चैकळ् चॅय्तान्–विद्या का प्रयोग किया; माण्टु अऱ्ऱार् आम्–मर-मिट गयीं; ऍन्ऱिट–कहने योग्य रीति से; अन्तार्–वे; अयर्वुऱ्ऱार्–चर पड़ी रहीं। ४८९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

युद्धवीर हनुमान ने सोचा कि अब त्रास देने के लिए पहरे को उत्तरोत्तर कड़ा करने पर तुली राक्षसियाँ सोने लगी हैं। यही सीताजी से भेंट करने के लिए उचित समय है। फिर उसने ऐसी विद्या का प्रयोग किया, जिससे वे खूब गहरी नींद सोएँ। वे भी मरी पड़ी-सी चूर हो पड़ी रहीं। (यह जादू की बात मूल में नहीं है)। ४८९

❀ तुञ्जा दारुन् दुञ्जुदल् कण्डा डुयरार्ऱाळ्
नॅञ्जा लॊन्ऱु मुय्वऴि काणा णॅहुहिन्ऱाळ्
अञ्जा निन्ऱाळ् पन्नॅडु नाळु मऴिवुर्ऱाळ्
ॲञ्जा वन्बा लिन्नप हर्न्दाङ् गिडरुर्ऱाळ् 490

तुञ्चातारुम्–जो (पहरे में) कभी नहीं सोयीं; तुञ्चुतल् कण्टाळ्–सोयीं यह देखा और; तुयर् आर्ऱाळ्–दुःख न सह सकीं; नॅञ्चाल्–मन में; ऒन्ऱुम् उयवऴि–एक भी बचने का उपाय; काणाळ्–जो न देख सकीं; नॅकुकिन्ऱाळ्–व्यग्रमना; अञ्चा निन्ऱाळ्–भयभीत; पल् नॅटु नाळुम्–अनेक लम्बे दिन; अऴिवुर्ऱाळ्–त्रस्त जो रहीं; ॲञ्चा अन्पाल्–(श्रीराम के प्रति) अक्षय प्रेम से; आङ्कु–तब; इन्न पकर्न्नतु–ऐसा कहती हुई; इटर् उर्ऱाळ्–शोक में पड़ीं। ४९०

सीताजी ने देखा कि पहरे में जो कभी नहीं सोयीं, वे अब सो गयी हैं। उन्हें दुःख असह्य लगा। मन में बचने का कोई उपाय नहीं सूझा। विदीर्णमना वे भयभीत हुईं। बहुत दिनों से दुःखी वे श्रीराम के प्रति अक्षय प्रेम से यों विलपती हुई शोकमग्न हुईं। ४९०

❀ करुमे हनॅडुङ् गडल्हा वनैयान्, तरुमे तमियेन् ऱनदा रुयिर्दान्
उरुमे रुमिऴ्वॅञ् जिलैना णॊलिदान्, वरुमे युरैयाय् वलियार् विदिये 491

वलि आर् वितिये–सबल विधि; करु मेक–काला मेघ; नॅटुम् कटल्–बड़ा सागर; का–उपवन; अनैयान्–जैसे श्रीराम; तमियेन् तनतु–अकेली मेरे; आरुयिर् तान्–प्यारे प्राण; तरुमे–बचाएँगे क्या; उरुम् एऱु–अशनि-श्रेष्ठ-सम गर्जन; अमिऴ्–निकालनेवाले; वॅम् चिलै–भयंकर धनु का; नाण् ऒलि तान्–ज्यास्वन भी; वरुमे–आयगा क्या; उरैयाय्–कहो। ४९१

री, सबल विधि! काला मेघ, विशाल समुद्र और हरा उद्यान—इनके समान शोभायमान श्रीराम आकर एकाकिनी मेरे प्राण बचाएँगे क्या? बड़े वज्र के समान नर्दन करनेवाले उनके भयंकर धनु का ज्यास्वन भी सुनाई देगा क्या? । ४९१

कल्ला मदिये कदिर्वा णिलवे, शॅल्ला विरवे शिऱुहा विरुळे
ॲल्ला मॅनैये मुनिवीर् निनैया, विल्ला ळनैया दुम्विळित् तिलिरो 492

कल्ला मतिये–विद्याहीन चन्द्र; कतिर् वाळ् निलवे–अति प्रकाशमय चाँदनी;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चॆल्ला इरवे–अचल रात; चिऱ्ऱा इरुळे–अक्षय अन्धकार; ऍत्तैये मुत्तिवीर्–तुम सब मुझी पर रुष्ट हो; नित्तैया–जो मेरे स्मरण नहीं करते; विल्लाळत्तै–उन कोदण्डपाणी से; यातुम् विळित्तिलिरो–कुछ भी गुस्सा नहीं करोगे क्या । ४९२

हे अशिक्षित चन्द्र ! अत्युज्ज्वल चाँदनी ! अगतिशील रात ! अक्षय अन्धकार; तुम सब मुझी पर रुष्ट हो ! उन धनुर्धर से, जो मेरा स्मरण ही नहीं करते, कुछ गुस्सा नहीं करोगे क्या ? । ४९२

तळल्वी शियुला वरुवा डैवळीइ, अळल्वी रॆत्तदा वियऱिन् दिलिरो
निळल्वी रैयना त्तुडत्ते नॆडुनाळ्, उळल्वीर् कॊडियी रुरैया डिलिरो 493

कॊटियीर्–हे निर्मम; तळल् वीचि–आग बरसाकर; उला वरु–यात्रा करनेवाली; वाटै तळीइ–उदीची हवा को साथ ले; अळल्वीर्–मुझे सताते हो; ऍत्तु आवि अऱिन्तिलिरो–मेरी जान (की स्थिति) नहीं जानते हो क्या; निळल् वीरै अत्तान्–छवि में सागर-सम श्रीराम; उटत्ते–के साथ; नॆटु नाळ् उळल्वीर्–बहुत दिनों से फिरते हो; उरै आटिलिरो–बात नहीं बताओगे क्या । ४९३

रे क्रूर (चन्द्र, चाँदनी, रात और अन्धकार) ! अंगार बिखेरते हुए विजययात्रा करती आनेवाली उदीची हवा के साथ मिलकर मुझे जला रहे हो ! मेरे प्राणों पर जो बन आयी है वह नहीं समझते क्या ? सागर-छवि श्रीराम से बहुत दिनों से मिले रहते हो । उनसे मेरी बात नहीं कहते क्या ? । ४९३

वारा दॊळियाऩ्ऩुम्वऩ् मैयिऩाल्, ओरा यिरको डियिडर्क् कुडैवेऩ्
तीरा वॊरुनाळ् वलिशे वहत्ते, नारा यणत्ते तत्तिना यहत्ते 494

वलि चेवकत्ते–सबल वीर; तत्ति नायकत्ते–अनुपम स्वामी; नारायणत्ते–नारायण; वारातु ऒळियाऩ्–विना आये नहीं रहेंगे; ऍऩुम् वऩ्मैयिऩाल्–इस दृढ़ विचार से; ऒरुनाळ् तीरा–एक दिन के लिए भी जो नहीं छोड़ते; ओर् आयिर कोटि–एक सहस्र कोटि; इटर्क्कु उटैवेऩ्–संकटों से पीड़ित हूँ । ४९४

सबल पराक्रमी ! अनुपम नायक, नारायण ! श्रीराम विना आये नहीं रहेंगे —इस दृढ़ विचार से मैं कितने ही सहस्र कोटि संकटों में पड़ी रहती हूँ जो एक दिन के लिए भी मुझे नहीं छोड़ते । ४९४

तरुवॊऩ् ऱियका ऩडैवाय् तविर्नी, वरुवॆऩ् शिलना ळिऩित्मा नहर्वाय्
इरुवॆऩ् ऱऩैयिऩ् ऩरुडा ऩिदुवो, ऒरुवॆऩ् ऱऩिया वियैयुण् णुदियो 495

तरु ऒऩ्ऱिय–तरुसंकुल; कात् अटैवाय्–वन जाना चाहनेवाली; नी तविर्–(वह इच्छा) तुम त्याग दो; चिल नाळित्तिऩ्–कुछ दिनों में; वरुवॆऩ्–आ जाऊँगा; मा नकर् वाय् इरु–बड़े (अयोध्या) नगर में रहो; ऍऩ्ऱत्तै–ऐसा समझाया; ऒरु–एकाकिनी; ऍऩ् तत्ति आवियै–मेरे प्राणों को; उण्णुतियो–त्रास देंगे क्या; इऩ् अरुळ् तान्–हितकारिणी कृपा भी; इतुवो–यही क्या । ४९५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"हे तरु-संकुल-कानन-गमन-कामिनी ! वह विचार छोड़ो। कुछ ही दिनों में लौट आऊँगा। तुम इस महानगर (अयोध्या) में ही रहो।" आपने मुझे ऐसा कहा। अकेली दुःख सहनेवाली मेरे प्राणों को आप खा लेंगे क्या ? यही आपकी कृपा का प्रकार है ? । ४९५

❀पेणुम् मुणर्वे युयिरे पॅरुनाळ्, नाणिन् ऱुळल्वीर् तऩि नायहऩैक्
काणुन् दुणैयुङ् गऴिवी रलिर्नाऩ्, पूणुम् बऴियो डुपॉरुन् दुवदो 496

पेणुम् उणर्वे–परिपालित बुद्धि; उयिरे–मेरे प्राण; पॅरु नाळ्–अनेक दिनों से; नाण् इऩ्ऱु–बेशरम होकर; उळल्वीर्–(मेरे साथ रहकर) संकट उठा रहे हो; तऩि नायकऩै–अप्रतिम नायक को; काणुम् तुणैयुम्–देखते समय तक; कऴिवीर् अलीर्–हटोगे नहीं; नाऩ् पूणुम् पऴियोटु–मैं जो (अपयश) धारण करती हूँ, उस अपयश के साथ; पॉरुन्तुवतो–तुम भी लगे रहोगे क्या। ४९६

ऐ मेरी परिपालित सुध ! मेरे प्राण ! अनेक दिनों से तुम निर्लज्ज होकर मेरे साथ संकट उठा रहे हो। जब तक मैं अपने अनुपम प्राणनाथ से नहीं मिलूँ तब तक छोड़ोगे नहीं, शायद। मुझे जो अपयश लगेगा उसी से तुम भी लगे रहोगे क्या ? । ४९६

मुडिया मुडिमऩ् नऩ्मुडिन् दिडवुम्, पडिये ऴुनॅडुन् दुयर्पा विडवुम्
पॉडियेय् नॅऱिवन् दुवऩम् बुहुदुम्, कॉडियाऩ् वरुमॅऩ् ऱुहुला वुवदो 497

मुटिया–दीर्घजीवी; मुटि मऩ्ऩऩ्–किरीटधारी चक्रवर्ती; मुटिन्तिटवुम्–मर जाएँ; पटि एऴुम्–सातों लोकों में; नॅटुम् तुयर्–अधिक दुःख; पाविटवुम्–फैल जाए; पॉटि एय्–धूलि-भरे; नॅऱि वऩ्तु–मार्ग में आकर; वऩम् पुकुतुम् कॉटियाऩ्–वन में आये निर्मम श्रीराम; वरुम् ऍऩ्ऱु–आएँगे समझकर; कुलावुवतो–विनोद में रहूँ। ४९७

दीर्घजीवी, किरीटधारी चक्रवर्ती मर गये; सातों लोकों को दुःख ने व्यापकर सताया —ऐसी स्थिति पैदा करते हुए धूलिमण्डित मार्ग से आकर वन में आये श्रीराम। वे निर्मम आयँगे —ऐसा मानकर विनोद करती रहूँ क्या ? । ४९७

❀ऍऩ्ऱॅऩ् ऱुयिर्विम् मियिरुन् दयर्वाळ्
मिऩ्ऱुऩ् ऩुमरुङ् गुल्विळङ् गिऴैयाळ्
ऑऩ्ऱॅऩ् ऩुयिरुण् डॅऩिऩुण् डिडर्याऩ्
पॉऩ्ऱुम् बॉऴुदे पुहऴ्पू णुमॅऩा 498

ऍऩ्ऱु ऍऩ्ऱु–ऐसा-ऐसा; उयिर् विम्मि–श्वास भरते हुए; इरुऩ्तु अयर्वाळ्–रहकर शिथिल हो रही थीं; मिऩ् तुऩ्ऩुम्–विद्युत् का आश्रय; मरुङ्कुल्–कमर; विळङ्कु इऴैयाळ्–और चमकते आभरणधारिणी; ऍऩ् उयिर् ऑऩ्ऱु उण्टु ऍऩ्ऱिऩ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरे प्राण नामक कुछ हो तो; इटर् उण्टु–पीड़ा होगी; यात् पॊन्ऱुम् पॊळुते–अपने मरते समय ही; पुकळ् पूणुम्–यशोधारिणी बनूँगी; ऍन्ना–सोचकर। ४९८

ऐसी-ऐसी बातें कहती हुई सीताजी विकलप्राण होकर शिथिल पड़ रही थीं। क्षीण विद्युत्कटि और उज्ज्वल आभरणधारिणी सीता ने सोचा कि जब तब प्राण रहेंगे तब तक कष्ट साथ रहेगा। मरूँगी तभी यश होगा। ऐसा सोचकर—। ४९८

❀ पॊऱैयिरुन् दाऱ्ऱियॆन् ऩुयिरुम् बोऱ्ऱिनेन्
अऱैयिरुङ् गळलवऱ् काणु माशैयाल्
निऱैयिरुम् बलबह ऩिरुदऱ् नीणहऱ्च्
चिऱैयिरुन् देनैयुम् बुऩिदन् ऱीण्डुमो 499

अऱै–स्वरित; इरुम् कळल्–बड़ी पायलधारी; अवऩ्–उन (श्रीराम) को; काणुम् आचैयाल्–देखने की इच्छा से; इरुन्तु–यहाँ रहकर; पॊऱै आऱ्ऱि–सहनशील बनकर; ऍऩ् उयिरुम् पोऱ्ऱिनेऩ्–अपने प्राण पालित किये; निऱै इरुम्–अक्षय बड़े; पल् पकल्–अनेक दिन; निरुतऱ् नीळ् नकऱ्–राक्षसों के विशाल नगर में; चिऱै इरुन्तेनैयुम्–कारागृह में रही मुझे; पुऩितऩ्–पावन मूर्ति श्रीराम; तीण्टुमो–अपनाएँगे क्या। ४९९

क्वणनशील बड़ी पायलधारी श्रीराम के दर्शन की आशा से मैंने यहाँ रहकर, कष्ट सहकर प्राण पाल लिये। अक्षय अनेक दिनों से राक्षस-नगर में बन्दिनी रहती हूँ। क्या वे पावन मूर्ति श्रीराम मुझे अपनायेंगे ?। ४९९

❀ उऩ्ऩिऩ वुऩ्ऩिऩ वुणर्न्दु शूळ्न्दवर्
शॊऩ्ऩऩ शॊऩ्ऩऩ शॆवियिऱ् ऱूङ्गवुम्
मऩ्ऩुयिर् कात्तिरुङ् गालम् वैहिऩेऩ्
ऍऩ्ऩिऩ्वे ऱरक्कियर् याण्डै यार्हॊलो 500

उऩ्ऩिऩ उऩ्ऩिऩ–रावण ने जो-जो मेरे प्रति सोचे; उणर्नतुम्–उनको जानने के बाद; चूळ्न्तवर्–जो मुझे घेरे रहीं उनके; चॊऩ्ऩऩ चॊऩ्ऩऩ–कहे गये; चॆवियिल् तूङ्कवुम्–मेरे कानों में ठहरे रहने पर भी; मऩ् उयिर् कात्तु–(शरीर से) लगे प्राणों की रक्षा करके; इरुम् कालम् वैकिनेऩ्–लम्बे काल तक रह गयी; ऍऩ्ऩिऩ् वेऱ् अरक्कियर्–मुझे छोड़ अन्य (क्रूर) राक्षसियाँ; याण्टै यार् कॊलो–कहाँ कौन रहेंगी। ५००

रावण जो-जो विचार मेरे प्रति रखता है, वह सब मैं जान रही हूँ। मुझे घेरे रहनेवाली राक्षसियों के बार-बार कहे जा रहे शब्दों से मेरे कान भरे रहते हैं। तो भी प्यारे प्राणों को पालती हुई मैं अनेक दिनों से रह रही हूँ। मुझसे निकृष्ट राक्षसी कहाँ होगी, कौन होगी ?। ५००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ शॊऱ्पिरि याप्पळि शुमन्दु तूङ्गुवेन्
नऱ्पिऱप् पुडैमैयु नाणु नन्ऱरो
कऱ्पुडै मडन्दैयर् कदैयु ळोर्हडाम्
इऱ्पिरिन् दुय्न्दवर् यावर् यान्लाल् 501

पळि पिरियाच् चॊल्–निन्दायुक्त वचन; चुमन्तु–धारण करते हुए; तूङ्कुवेन्–निश्चिन्त (निद्रामग्न) रहनेवाली मेरा; नल् पिऱप्पु उटैमैयुम्–उच्चकुल जन्म और; नाणुम्–लज्जा का गुण; नन्ऱु–खूब हैं; कतैयुळोर्कळ्–चरित्रचित्रित; कऱ्पुटै मटन्तैयर्–पतिव्रता स्त्रियाँ; इल् पिरिन्तु–घर-गृहस्थी छोड़कर; उय्न्तवर्–जीती जो रहीं; यान् अलाल्–मेरे सिवा; यावर्—कौन हैं; (अरो, ताम्) । ५०१

कलंकयुक्त अपयशवचन ढोती हुई निश्चिन्त रह रही हूँ, मैं ! मेरे कुलजन्म और लज्जागुण भी कितने खूब हैं ! चरित्रवर्णित पतिव्रता स्त्रियों में घर से बाहर जीवित रहीं, मेरे सिवा अन्य कौन ? । ५०१

❀ पिऱर्मनै यॆय्दिय पॆण्णैप् पेणुदल्
तिऱनल दॆन्ऱुयिर्क् किऱैवन् ऱीर्न्दनन्
पुऱनलर् तूऱ्ऱवे पॊळुदु पोक्कियान्
अऱनल दियऱ्ऱिवे ऱॆन्गॊण् डाऱ्ऱुहेन् 502

पिऱर् मनै–दूसरे के घर में; ऍय्तिय–जा गई रही; पॆण्णै पेणुतल्–उस स्त्री को बुलाकर पालना; तिऱन् अलतु–श्लाघ्य नहीं; ऍन्ऱु–ऐसा; उयिर्क्कु इऱैवन्–मेरे प्राणनाथ ने; तीर्न्ततन्–मुझे त्याग दिया है; पुऱन् अलर् तूऱ्ऱवे–दूसरे लोगों के निन्दा करते; पॊळुतु पोक्कि–समय बिताकर; अऱन् अलतु–अधर्म; इयऱ्ऱि–करते हुए; वेऱु ऍन् कॊण्टु–और किस (लाभ) के लिए; यान् आऱ्ऱुकेन्–अपने प्राण रखूंगी । ५०२

मेरे प्राणनाथ ने मुझे यह समझकर त्याग दिया है कि यह पराये घर में रह चुकी है। पराये घर में रही स्त्री को फिर से अपना लेना श्लाघनीय कार्य नहीं है। लोकनिन्दा का पात्र बनकर जीवन बिताती हुई, मैं अधार्मिक काम कर रही हूँ। फिर क्योंकर जीने के अर्ह हूँगी ? । ५०२

❀ ऍप्पॊळु दिप्पॆरुम् बळियि नॆय्दिनेन्
अप्पॊळु देयुयिर् तुऱक्कु माणैयेन्
ऒप्परुम् बॆरुमऱु वुलह मोदयान्
तुप्पळिन् दुय्वदु तुऱक्कन् दुन्नवो 503

ऍ पॊळुतु–जब; इ पॆरुम् पळियिन् ऍय्तिनेन्–इस अपयश का पात्र बनी; अ पॊळुते–तभी; उयिर् तुऱक्कुम् आणैयेन्–प्राण त्यागने को वाध्य मैं; ऒप्पु अरुम्–अमान्य; पॆरु मऱु–बड़ा कलंक; उलकम् ओत–लोक के कहते; यान्–मैं; तुप्पु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऴिन्तु–योग्यता खोकर; उय्वतु–जीवित रहूँ, यह; तुऱक्कम् तुन्तवो–स्वर्ग पहुँचूँ, यह विचार लेकर क्या। ५०३

जब इस बड़े अपयश का पात्र बनी तभी मर जाना ही मेरा कर्तव्य था। बड़े लोग जिसको (क्षम्य) मान ही नहीं सकते वैसा बड़ा कलंक मुझ पर लग गया है और लोग इसकी चर्चा करेंगे। अपमानित होकर जीवन रखना क्या स्वर्ग पाने के विचार से है ? । ५०३

❀ अन्बऴि शिन्दैय राय वाडवर्
वन्बऴि शुमक्किनुञ् जुमक्क मऱ्ऱियान्
तुन्बऴि पॅरुम्बुहऴ्क् कुलत्तुट् टोन्ऱिनेन्
ऍन्बऴि तुडैप्पव रॅन्निन् यावरे 504

अन्पु अऴि चिन्तैयर् आय–विगत प्रेम; आटवर्–वे दोनों पुरुष; वन् पऴि–कठोर अपयश; चुमक्कितुम् चुमक्क–धारण करें तो करें; यान्–मैं; तुन्पु अऴि–दुःखरहित; पॅरुम् पुकऴ्–बड़े यशस्वी; कुलत्तुळ् तोन्ऱिनेन्–कुल में पैदा हुई; ऍन् पऴि तुटैप्पवर्–मेरा अपयश मिटानेवाले; ऍन्निन् यावर्–मेरे सिवा कौन हैं। ५०४

श्रीराम और लक्ष्मण दोनों ने मेरे प्रति प्रेम और स्नेह त्याग दिया है ! वे (मुझे न बचाकर) अपयश धारण करना चाहें तो करें। मैं दुःखरहित बड़े यशस्वी कुल में आयी हूँ। इसलिए मेरे अपयश को पोंछनेवाला मुझसे अन्य कौन रहेगा ? । ५०४

❀ वञ्जनै मानिन्बिन् मन्नैप् पोक्कियॅन्
मञ्जनै वैदुपिन् वऴिक्कॊळ् वायॅना
नञ्जनै यानहम् बुहुन्द नङ्गैयान्
उय्ञ्जनॅ निरुत्तलु मुलहङ् गॊळ्ळुमो 505

वञ्चनै मानिन् पिन्–वंचक मृग के पीछे; मन्नै पोक्कि–अपने पति को भेजकर; ऍन् मञ्चनै वैतु–अपने पुत्र-सम देवर को गाली देकर; पिन् वऴि कॊळ्वाय्–उनके पीछे राह पकड़ो; ऍना–ऐसा कहकर; नञ्चु अनैयान् अकम्–विष सदृश-राक्षस के घर में; पुकुन्त नङ्कै यान्–जो आ गयी, वह मैं; उय्ञ्चनॅन्–जीवित; इरुत्तलुम्–रहती जो यह; उलकम् कॊळ्ळुमो–लोक (श्रेष्ठ लोग) मानेंगे क्या। ५०५

मैंने वञ्चक मृग के पीछे अपने पति को भेजा। अपने पुत्र-सम देवर को गाली दी और कहा कि उनकी खोज में जाओ। फिर विष-सदृश राक्षस के (घर या) मन में (सूक्ष्म स्मरण के रूप में ही सही) घुस गयी। ऐसी स्त्री हूँ मैं। मेरा जीवित रहना क्या संसार ठीक मानेगा ? । ५०५

❀ वल्लियन् मऱवर्दन् वरुक्क माशऱ
वॅल्लिनुम् वॅल्हपोर् विळिन्दु वीडुह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इल्लिय लऱत्तैया निऱन्दु वाऴ्न्दपिन्
शॊल्लिय वॆन्बऴि यवरैच् चुऱ्ऱुमो 506

वल् इयऩ्–सबल; मऱवर्–वीर (श्रीराम और लक्ष्मण); तम् वरुक्कम् माचु अऱ्–अपने कुल का कलंक दूर करने हेतु; वॆल्लितुम् वॆल्लुक–जीतें तो जीतें; पोर् विळिन्तु–या युद्ध में मरकर; वीटुक–मिट जाएँ; इल् इयऩ् अऱत्तै–गृहस्थ धर्म को; यान्–मेरे; इऱन्तु वाऴ्न्त पिन्–छोड़कर जीवित रहने के बाद; चॊल्लिय ऍन् पऴि–लोकोक्त मेरा अपयश; अवरै चुऱ्ऱुमो–उनको घेरेगा क्या (नहीं)। ५०६

पराक्रमी वीर, श्रीराम और लक्ष्मण अपने कुल पर लगा कलंक मिटाने हेतु चाहें तो युद्ध करें और जीतें, चाहे युद्ध में मर जाएँ। मैं तो गृहस्थ धर्म से बाहर आ गयी हूँ। लोग जो कलंक मुझ पर लगाएँगे, वह उनको घेर लेगा क्या ?। ५०६

❀ वरुन्दलिन् मानमा वनैय माट्चियार्
पॆरुन्दव मडन्दैयर् मुन्बु पेदैयेन्
करुन्दनि मुहिलिनैप् पिरिन्दु कळ्वनूर्
इरुन्दव ळिवळॆन वेश निऱ्पॆनो 507

मानम् वरुन्तलिल्–मान को धक्का लगने पर; मा अनैय माट्चियार्–मृग के-से स्वभाव की श्रेष्ठ; पॆरुम् तव मटन्तैयर् मुन्पु–उत्तम (पातिव्रत्य रूपी) तप वाली स्त्रियों के सामने; पेतैयेन्–जड़मति मैं; करुम् तनि मुकिलिनै–काले और अनुपम मेघ (-श्याम श्रीराम) से; पिरिन्तु–अलग होकर; कळ्वनू ऊर्–चोर के नगर में; इरुनतवळ् इवळ्–रही यह; ऍन–ऐसा; एच निऱ्पॆनो–निन्दा सुनती रहूँगी क्या। ५०७

श्रेष्ठ पातिव्रत्य-तपस्विनी स्त्रियों के सामने, जो 'कवरी मृग' के समान अपमान लगने पर प्राण त्याग देती हैं, क्या यह निन्दा सुनते हुए जीवित रहूँगी कि यह अप्रतिम मेघश्याम से अलग होकर एक चोर के घर में रहती है ?। ५०७

❀ अऱ्पुद नरक्करदम् वरुक्क माशऱ
विऱ्पणि कॊण्डरुञ् जिऱैयिन् मीट्टनाळ्
इऱ्पुहत् तक्कलै यॆन्निन् यानुडैक्
कऱ्पिनै यॆप्परि शिऴैत्तुक् काट्टुहेन् 508

अऱ्पुतन्–अत्यद्भुत गुणों वाले; अरक्कर् तम् वरुक्कम्–राक्षस वर्ग; आचु अऱ्–निराधार निर्मूल कर; विल् पणि कॊण्टु–धनुकर्म द्वारा; अरुम् चिऱैयिन्–इस कठोर कारा से; मीट्ट नाळ्–मुक्त जिस दिन करेंगे, उस दिन; इल् पुक–मेरे घर में प्रवेश करने; तक्कलै ऍन्निन्–योग्य नहीं हो कहें तो; यानुटै कऱ्पिनै–अपने शील को ऍ परिचु इऴैत्तु काट्टकेन्–किस तरीके से प्रमाणित कर दिखाऊँगी। ५०८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अद्भुत गुण वाले श्रीराम जिस दिन राक्षसवर्ग को अपने धनुकर्म से निराधार बनाकर निर्मूल कर देंगे और मुझे इस कठोर कारा से मुक्त कर देंगे, तब अगर मुझसे कहें कि तुम मेरे घर में प्रवेश करने योग्य नहीं रह गयी हो, तो मैं अपने पातिव्रत्य को कैसे प्रमाणित कर दिखा पाऊँगी ? । ५०८

❀आदला लिऱत्तले यऱत्ति नाऱैनाच्
चादल्काप् पवरुमॅन् ऱवत्तिऱ् चाम्बिनार्
ईदला दिडमुम्वे ऱिल्लै यॅन्ऱॊरु
पोदुला मादविप् पॊदुम्ब रॅय्दिनाळ् 509

आतलाल्–इसलिए; इऱत्तले–मरना ही; अऱत्तिन् आऱु–धर्ममार्ग होगा; अॅता–यह निश्चय करके; चातल् काप्पवरुम्–मुझे मरने से बचाये रहनेवाली राक्षसियाँ भी; अॅन् तवत्तिल्–मेरे तप (भाग्य) के कारण; चाम्पिनार्–अचेत पड़ी हैं; ईतु अलातु–इसको छोड़कर; वेऱु इटमुम् इल्लै–दूसरा स्थान (सन्दर्भ) नहीं मिलेगा; अॅन्ऱु–ऐसा सोचकर; पोतु उलाम्–पुष्प जिसमें हिलते थे; ऒरु मातवि पॊतुम्पर्–उस एक माधवी-झाड़ के पास; अॅय्तिनाळ्–पहुँचीं । ५०९

इसलिए मरना ही धर्ममार्ग है। मुझे मरने न देने का कर्तव्य लेकर जो मेरी रक्षा करती रहती हैं, वे राक्षसियाँ भी अब नींद में बेहोश पड़ी हैं। इस समय को जाने दूँ तो दूसरा अच्छा स्थान या समय नहीं मिलेगा। ऐसा निश्चय करके सीताजी एक पुष्पसहित माधवी के झाड़ के पास गयीं । ५०९

❀कण्डन ननुमनुङ् गरुत्तु मॅण्णिनान्
कॊण्डनन् ऱुणुक्कमॅय् तीण्डक् कूशुवान्
अण्डर्ना यहनरु ङूदन् यानॅनात्
तॊण्डैवाय् मयिलिनैत् तॊऴुदु तोन्ऱिनान् 510

अनुमनुम् कण्टनन्–हनुमान ने भी देखा; करुत्तुम् अॅण्णिनान्–अभिप्राय ताड़ लिया; तुणुक्कम् कॊण्टनन्–दहल उठा; मॅय् तीण्ट–शरीर स्पर्श करने से; कूचुवान्–संकोच करता; अण्टर् नायकन्–अण्डनायक श्रीराम की; अरुळ् तूतन्–आज्ञा का पालक दूत; यान्–मैं हूँ; अॅता–कहते हुए; तॊण्टै वाय्–बिम्बाधरा; मयिलिनै–कलापी-सी देवी को; तॊऴुतु–नमस्कार करते हुए; तोन्ऱिनान्–प्रकट हुआ । ५१०

हनुमान ने यह देखा और ताड़ लिया कि सीताजी के मन में क्या भाव उठा है। उसे भय का अनुभव हुआ। वह उनका स्पर्श करने से सकुचाया। अतः वह यह कहते हुए बिम्बाधरा, कलापीनिभ सीताजी के सामने अंजलिबद्ध हो प्रकट हुआ कि मैं अण्डनायक श्रीराम का उनकी आज्ञा द्वारा प्रेषित दूत हूँ । ५१०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ अडैन्दनै नडियने निराम नाणैयाल्
कुडैन्दुल हनैत्तैयु नाडुङ् गॊट्पिनाल्
मिडैन्दव रुलप्पिलर् तवत्तै मेवलाल्
मडन्दैनिन् शेवडि वन्दु नोक्किनेन् 511

मटन्तै–देवी; इरामन् आणैयाल्–श्रीराम की आज्ञा से; अटियनेन्–मैं, दास; अटैन्तनेन्–आ पहुँचा; उलकु अनैत्तैयुम्–सारे लोकों में; कुटैन्तु नाटुम्–पैठकर ढूँढ़ने के; कॊट्पिनाल्–संकल्प से; मिटैन्तवर्–मिलकर जानेवाले; उलप्पु इलर्–असंख्यक हैं; तवत्तै मेवलाल्–तपबल के प्राप्त होने से; निन् चेवटि–आपके लाल (दिव्य) चरण; वन्तु नोक्किनेन्–(मैंने) आकर दर्शन किये। ५११

देवी ! श्रीराम की आज्ञा से मैं इधर आ पहुँचा हूँ। यों तो सारे लोकों की खाक छानने के इरादे से जो मिलकर चले वे असंख्यक हैं। पर मेरा भाग्य रहा। सुकृत्य का फल मिला; तभी मैं आपके दिव्य चरणों के दर्शन कर पाया। ५११

❀ ईण्डुनी यिरुन्ददै यिडरिन् वैहुरुम्
आण्डहै यरिन्दिल नदर्कुक् कारणम्
वेण्डुमे यरक्करतम् वरुक्कम् वेरॊडु
माण्डिल वीदलान् मर्रुम् वेण्टुमो 512

ईण्टु नी इरुन्ततै–आपका इधर रहना; इटरिन् वैकुरुम्–वियोग-दुःख में मग्न रहनेवाले; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; अरिन्तिलन्–नहीं जानते; अतर्कु कारणम्–उसका प्रमाण; वेण्टुमे–कहना हो तो; अरक्कर् तम् वरुक्कम्–राक्षसों के वर्ग; वेरॊटु माण्टिल–निर्मूल नष्ट नहीं हुए; ईतु अलाल्–इसके सिवा; मर्रुम् वेणटुमो–और कोई चाहिए क्या। ५१२

वियोगदुःखतप्त पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम आपका यहाँ रहना नहीं जानते। उसका प्रमाण चाहती हों तो यही प्रमाण है कि राक्षसों के वर्ग निर्मूल नष्ट नहीं हुए। और कोई प्रमाण चाहिए क्या ? । ५१२

❀ ऐयुर् लुळदडै याळ मारियन्
मॆय्युर् वुणर्त्तिय वुरैयुम् वेरुळ
कैयुरु नॆल्लियङ् गनियिर् काण्डियाल्
नॆय्युरु विळक्कनाय् निनैयल् वेरॆन्रान् 513

नॆय् उरु विळक्कु अनाय्–घृत-भरे दीप के समान देवी; ऐयुरल्–सन्देह मत करें; अटैयाळम् उळतु–अभिज्ञान है; आरियन्–आदरणीय श्रीराम के; मॆय् उर–सत्य परिचायक; उणर्त्तिय उरैयुम्–समझाये गये वचन भी; वेरु उळ–अलग हैं; कै उरु नॆल्लि अम् कनियिल्–करतलामलकवत; काण्टि–देख लें; वेरु निनैयल्–अन्यथा न समझें; ऎन्रान्–कहा (हनुमान ने)। ५१३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

घृतपूर्ण दीप-सी देवी ! आप कोई सन्देह न करें। मेरे पास अभिज्ञान हैं। और आदरणीय श्रीराम के कहे सत्यवचन के संदेश अलग हैं। आप करतलामलकवत समझ लेंगी। अन्यथा मत समझिए। हनुमान ने यों विनय के साथ कहा। ५१३

ऎऩ्ऱव ऩिऱैञ्ज नोक्कि यिरक्कमु मुऩिवु मॆय्दि
निऩ्ऱव ऩिरुद ऩल्ल ऩॆऱिनिऩ्ऱु पॊऱिह ळैन्दुम्
वॆऩ्ऱव ऩल्ल ऩाहिल् विण्णव ऩाह वेण्डुम्
नऩ्ऱुणर् वुरैयुन् दूय नवैयिलऩ् पोलु मॆऩ्ऩा 514

ऎऩ्ऱु अवऩ् इऱैञ्च–उसके ऐसा विनय करने पर; नोक्कि–देखकर; इरक्कमुम्–अनुताप और; मुऩिवुम्–रंज; ऎय्ति निऩ्ऱवऩ्–पाकर जो रहता है; इवऩ्–वह यह; निरुतऩ् अल्लऩ्–नैर्ऋत नहीं हो सकता; ऩॆऱि निऩ्ऱु–सदाचारस्थित; पॊऱिकळ् ऐन्तुम्–पाँचों इन्द्रियों पर; वॆऩ्ऱवऩ्–विजय पा चुका; अल्लऩ् आकिल्–नहीं तो; विण्णवऩ् आक वेण्टुम्–कोई देव होगा; उणर्वु नऩ्ऱु–इसके भाव श्रेष्ठ हैं; उरैयुम् तूयऩ्–पवित्रवचन; नवै इलऩ् पोलुम्–निर्दोष-सा लगता है; ऎऩ्ऩा–सोचकर। ५१४

जब हनुमान ने यों विनय की तो सीताजी ने उसको ध्यान लगाकर देखा। हनुमान करुणा और दुःख से भरा है। यह राक्षस नहीं हो सकता। यह सन्मार्गावलम्बी इन्द्रियजयी मुनि होगा; नहीं तो कोई देव होगा। इसकी भावनाएँ श्रेष्ठ हैं। वचन पवित्र हैं। यह निर्दोष ही लगता है। ५१४

❀ अरक्कऩे याह वेऱो रमरऩे याह वऩ्ऱिक्
कुरक्किऩत् तॊरुव ऩेदा ऩाहुह कॊडुमै याह
इरक्कमे याह वऩ्दिङ् गॆम्बिरा ऩामञ् जॊल्लि
उरुक्कियॆऩ् ऩुणर्वैत् तऩ्दा ऩुयिरिदि ऩुदवि युण्डो 515

अरक्कऩे आक–चाहे राक्षस हो; वेऱु ओर् अमरऩे आक–कोई दूसरा देव हो; अऩ्ऱि–चाहे वे न रहकर; कुरङ्कु इऩत्तु ऒरुवऩे–वानर-वंश का एक; ताऩ् आकुक–ही हो; कोटुमै आक–(इसके द्वारा) हानि ही क्यों न मिले; इरक्कमे आक–सहानुभूति (का फल) ही मिले; इङ्कु वऩ्तु–यहाँ आकर; ऎम्पिरान् ऩामम् चॊल्लि–मेरे आराध्यदेव का नाम उच्चारण करके; ऎऩ् उणर्वै उरुक्कि–मेरे मन को द्रवीभूत करके; उयिर् तऩ्ताऩ्–(इसने) मुझे प्राणदान किया; इतिऩ् उतवि उण्टो–इससे बढ़कर सहायता हो सकती है क्या। ५१५

फिर देवी ने सोचा। यह राक्षस ही हो तो क्या ? या कोई देव ही हो। नहीं तो वानर-कुल का ही कोई हो ! उसके हाथों मेरी हानि भी हो जाय ! या वह करुणा करके हित ही करे। इसने इधर आकर मेरे आराध्य पति का नाम कहकर मेरे मन को द्रवीभूत कर दिया और मुझे प्राणदान किया। इससे बढ़कर कोई हित है क्या ? । ५१५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍऩनिनैत् तॆय्द नोक्कि यिरङ्गुमॆ नुऴ्ऴङ् गऴ्ऴ
मऩऩहत् तुडैय राय वञ्जहर् मार्ऱ मल्लऩ्
निनैवुडैच् चॊऱ्कऴ् कण्णीर् निलम्बुहप् पुलम्बा निऩ्ऱाऩ्
विऩवुदर् कुरिय ऩॆऩ्ऩा वीरनी याव ऩॆऩ्ऱाऴ् 516

ऍऩ निऩैऩ्तु–ऐसा सोचकर; ऍय्त नोक्कि–खूब देखकर; ऍऩ् उऴ्ऴम् इरङ्कुम् मेरा मन (सत्य समझकर) सहानुभूति करता है; कऴ्ऴम् मऩऩ्–चोर स्वभाव के; अकऩ्तु उटैयराय–मन वाले; वञ्चकर्–वंचकों का; मार्ऱम् अल्लऩ्–वचन नहीं कहता; निऩैवु उटै–सच्ची भावना के; चॊऱ्कऴ्–वचनों को; कण्णीर्–आँसुओं को; निलम् पुक–भूमि पर गिराते हुए; पुलम्पा निऩ्ऱाऩ्–कहकर प्रलाप करता है; विऩवुतऱ्कु उरियऩ्–प्रश्न करने योग्य है; ऍऩ्ऩा–सोचकर; वीर–वीर; नी–तुम; यावऩ्–कौन; ऍऩ्ऱाऴ्–कहा। ५१६

ऐसा सोचकर देवी ने हनुमान पर खूब दृष्टि डाली। इसको देखकर मेरा मन स्वयं पिघल जाता है। यह मन में चोरी रखनेवाले वंचक राक्षसों का-सा वचन कहनेवाला नहीं हो सकता। यह अपनी सद्भावना की बातें, आँखों से आँसू को भूमि पर गिराते हुए कह रहा है। अतः यह आगे प्रश्न करने (वार्तालाप करने) योग्य ही है। ऐसा निर्णय करके देवी ने उससे पूछा कि हे वीर, तुम कौन हो ? । ५१६

आयिडैत् तलैमेऱ् कॊण्ड वङ्गैय ऩऩ्ऩै निऩ्ऩैत्
तूयवऩ् पिरिन्द पिऩ्ऩैत् तेडिय तुणैवऩ् ऱॊल्लैक्
काय्हदिर्च् चॆल्वऩ् मैन्दऩ् कविक्कुल मदऩुक् कॆल्लाम्
नायहऩ् शुक्कि रोव ऩॆऩ्ऱऴ ऩवैयिऱ् ऱीर्न्दाऩ् 517

आयिटै–तब; तलै मेल् कॊण्ट–सिर पर धरे; अम् कैयऩ्–सुन्दर हाथों वाला (बोला); अऩ्ऩै–माताजी; तूयवऩ्–पवित्र श्रीराम के; निऩ्ऩै पिरिन्त पिऩ्ऩै–आपसे अलग होने के बाद; तेटिय–ढूंढ़कर प्राप्त; तुणैवऩ्–मित्र; तॊल्लै–अति प्राचीन काल से; काय् कतिर् चॆल्वऩ्—जलानेवाले उष्ण किरण सूर्यदेव का; मैन्तऩ्–पुत्र; कविक् कुलम् अतऩुक्कु ऍल्लाम्–कपिकुलसर्व का; नायकऩ्–नायक; नवैयिल् तीर्न्ताऩ्–निर्दोष; चुक्किरवीऩ् ऍऩ्ऱु–सुग्रीव नाम का एक; उळऩ्–है। ५१७

तब हनुमान ने अपने सुन्दर हाथ जोड़कर अपने सिर पर रखे और विनय-निवेदन किया। माते ! सुग्रीव नामक एक है, जिसे आपके वियोग के बाद पवित्र श्रीराम ने ढूंढ़ लेकर अपना मित्र बना लिया। वह अति पुरातन और तापक किरणमाली सूर्यदेव का पुत्र है और वानरकुलों का अधिपति है। वह निर्दोष (अच्छा) है। ५१७

मऱ्ऱवऩ् मुऩ्ऩो ऩऩ्ना ळिरावणऩ् वलिदऩ् वालिऩ्
इऱ्ऱुऱक् कट्टि यॆट्टुत् तिशैयिनु मॆऴुन्दु पाय्न्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆऱ्ऱियन् ऱेवऱ् वेण्ड वेलैयै विलङ्गन् मत्तिल्
शुऱ्ऱिमा नाहन् देय वमुदॆऴुक् कडैन्द तोळान् 518

अवन् मुन्नोन्–उसका बड़ा भाई; अ नाळ्—उस दिन; इरावणन् वलि इऱ्ऱु उऱ–रावण के बल को तोड़ते हुए; तन् वालिल् कट्टि–अपनी पूँछ में बाँधकर; ऎट्टु तिचैयिनुम्–आठों दिशाओं में; ऎऴुन्तु पाय्न्त–फाँदता जो गया; वॆऱ्ऱियन्–वैसा विजयी है; तेवर् वेण्ट–देवों के प्रार्थना करने पर; वेलैयै–समुद्र को; विलङ्कल् मत्तिन्–(मन्दर-) पर्वत की मथानी से; मा नाकम् चुऱ्ऱि–बड़े (वासुकि) सर्प को लपेटकर; तेय–उसको रगड़ते हुए; अमुतु ऎऴ–अमृत उठ आए ऐसा; कटैन्त तोळान्–मथनेवाली भुजाओं का है। ५१८

उसका ज्येष्ठ भ्राता रावण के बल को तोड़कर उसे अपनी पूँछ में बाँध लेकर आठों दिशाओं में उछल चला। वह ऐसा विजयी वीर था। देवों ने उससे प्रार्थना की तो उसने मन्दरपर्वत की मथानी पर वासुकि नाग को लपेटकर क्षीरसागर को मथा और अमृत निकाला। वह ऐसा भुजबली था। ५१८

अन्नवन् ऱन्नै युङ्गो नम्बॊन्ऱा लावि वाङ्गिप्
पिन्नवऱ् करशु नल्हित् तुणैयॆन्प् पिडित्ता नॆङ्गळ्
अन्नवन् ऱनक्कु नायेन् मन्दिरत् तुळ्ळेन् वानिन्
नन्नॆडुङ् गालिन् मैन्द नाममु मनुम नॆन्बेन् 519

अन्नवन् तन्नै–उस (बली) वाली को; उम् कोन्–आपके नाथ ने; अम्पु ऒन्ऱाल्–एक ही शर से; आवि वाङ्कि–प्राण हरकर; पिन्नवऱ्कु–उसके छोटे भाई को; अरचु नल्कि–राज्य देकर; तुणै ऎन्न पिटित्तान्–मित्र बना लिया; नायेन्–(कुत्ते-सा) दास मैं; ऎङ्कळ् मन्नवन् तनक्कु–हमारे राजा (सुग्रीव) के; मन्तिरत्तु उळ्ळेन्–मन्त्रीमण्डल का सदस्य हूँ; वानिन्–आकाशचारी; नल् नॆटुम् कालिन्—अति विपुल पवन का; मैन्तन्–पुत्र हूँ; नाममुम्–नाम का भी; अनुमन् ऎन्पेन्–हनुमान कहा जाता हूँ। ५१९

उस वाली को आपके नाथ ने एक ही शर से मार दिया और उसके कनिष्ठ सुग्रीव को राज्य दिलाया तथा सुग्रीव से मित्रता बना ली। कुत्ता-सम दास मैं अपने राजा सुग्रीव के मन्त्रीमण्डल का एक सदस्य हूँ। आकाशचारी अति महान् वायुदेव का पुत्र हूँ। मैं हनुमान नाम का हूँ। ५१९

ऎऴुबदु वॆळ्ळङ् गॊण्ड वॆण्णन्न वुलह मॆल्लाम्
तऴुविनिन् ऱॆडुप्प वेलै तनित्तनि कडक्कुन् दाळ
कुऴुविन वुङ्गोन् शॆय्यक् कुऱित्तदु कुऱिप्पि नुन्नि
वऴुविल शॆय्दऱ् कॊत्त वानरम् वानि नीण्ड 520

वानरम्–वानर; ऎऴुपतु वॆळ्ळम् कॊण्ट ऎण्णन्न–सत्तर प्रवाह (वॆळ्ळम) संख्या के हैं; उलकम् ऎल्लाम्–सारे लोकों को; तऴुवि निन्ऱु ऎट्टुप्प–लपेटकर लेने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

की शक्ति रखनेवाले हैं; वेलै–समुद्र को; तत्ति तत्ति कटक्कुम् ताळ–अलग-अलग फाँदने में समर्थ पैरों वाले हैं; कुऴुविऩ–समूहगत हैं; उम् कोन् चॆय्य कुऱित्ततु–आपके नाथ जो करना चाहेंगे; कुऱिप्पिऩ् उऩ्ऩि–इंगित से जानकर; वऴुविल–त्रुटिहीन रीति से; चॆय्तऱ्कु ऒत्त–करने योग्य हैं; वाऩिऩ् नीण्ट–आकाश की तरह सर्वत्र फैले हैं। ५२०

मेरे राजा के अधीन जो वानर वीर हैं, उनकी संख्या 'सत्तर वॆळ्ळम्' की है। वे ऐसे पराक्रमी हैं कि वे संसार को अपने हाथों से लपेटकर उठा लें; समुद्र को अकेले लाँघ सकें; आपके पति की इच्छा को इंगित से जानकर विना किसी दोष के पूरा कर दें। वे आकाश की तरह सर्वत्र व्याप्त हैं। ५२०

तुप्पुऱु परव येऴुञ् जूऴ्न्दपा रेऴु माऴ्न्द
ऒप्पुऱु नाहर् नाडु मुम्बर्निऩ् ऱिम्बर् काऱुम्
इप्पुऱऩ् देडि निऩ्ऩै यॆदिर्न्दिल वॆऩ्ऩि ऩण्डत्
तप्पुऱम् बोयुऩ् देड ववदियि ऩमैन्दु पोऩ 521

तुप्पु उऱु–सशक्त; परवै एऴुम्–सातों समुद्र; चूऴ्न्त–उनसे घिरे; पार् एऴुम्–सातों लोक; आऴ्न्त–गहरे; ऒप्पु उऱु–सुन्दर; नाकर् नाटुम्–नागलोक; उम्पर् निऩ्ऱु–आकाश से लेकर; इम्पर् काऱुम्–इस लोक तक; इ पुऱम् तेटि–इन स्थानों में अन्वेषण कर; निऩ्ऩै ऍतिर्न्तिल–आपको नहीं देख सकें तो; अण्टत्तु–अण्ड के; अ पुऱम्–उस तरफ़ भी; पोयुम् तेट–जाकर तलाश करने के लिए; अवतियिऩ्–एक अवधि से; अमैन्तु–बद्ध होकर; पोऩ–चले थे। ५२१

प्रबल सातों सागर, इनसे घिरी सात खण्डों में विभक्त भूमि, सुन्दर नागों का अधोलोक और भूमि के ऊपर आकाश के मध्य स्थित सभी लोक —इन सब स्थानों में खोजकर, अगर आपसे मिल नहीं पाएँ तो अण्ड के उस पार भी जाकर निश्चित अवधि के अन्दर खोजेंगे। यह संकल्प लेकर वे वानर गये हैं। ५२१

पुऩ्ऱॊऴि लरक्कऩ् कॊण्डु पोन्दनाट् पॊदिन्द तूशिल्
कुऩ्ऱिऩॆम् मरुङ्गि ऩिट्ट वणिहलक् कुऱियि ऩाले
वॆऩ्ऱियाऩ् ऩडियेऩ् ऱऩ्ऩै वेऱुहॊण् डिरुन्दु कूऱित्
तॆऩ्ऱिशैच् चेऱि यॆऩ्ऱा ऩवऩरुळ् शिदैव दामो 522

पुऩ् तॊऴिल् अरक्कऩ्–नीचकर्म राक्षस; कॊण्टु पोन्त नाळ–जिस दिन आपको ले गया उस दिन; ऍम् कुऩ्ऱिऩ् मरुङ्किऩ्–हमारे पर्वत पर; इट्ट–आपने जो डाले; तूचिल् पॊतिन्त–वस्त्र में बद्ध; अणिकल कुऱियिऩाले–आभरणों के निशान से; वॆऩ्ऱियाऩ्–विजयशील श्रीराम ने; अटियेऩ् तऩ्ऩै–मुझ दास को; वेऱु कॊण्टु इरुन्तु–अलग ले जा रहकर; कूऱि–(कुछ) कहकर; तॆऩ् तिचै–दक्षिण दिशा; चेऱि–जाओ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा; अवऩ् अरुळ्–उनकी कृपा; चितैवतु आमो–व्यर्थ होगी क्या। ५२२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जब नीच रावण आपको हर ले जा रहा था, तब आपने वस्त्र में बाँधकर कुछ आभरण हमारे पर्वत पर फेंके थे। उनको देखकर विजयी वीर श्रीराम ने कुछ सोचा और मुझे अलग ले जाकर आज्ञा दी कि तुम दक्षिण दिशा में जाओ। उनकी आज्ञा निरर्थक हो सकती है क्या ? । ५२२

कॊऱ्ऱवऱ् काण्डुक् काट्टिक् कॊडुत्तपो दडुत्त तन्मै
पॆऱ्ऱियि नुणर्दऱ् पाऱ्ऱो वुयिर्निलै पिऱिदु मुण्डो
इऱ्ऱैना ळळवु मन्ना यन्ऱुनी यिऴित्तु नीत्त
मऱ्ऱैनल् लणिहळ् काणुन् मङ्गलङ् गात्त मन्नो 523

अन्नाय्–माते; कॊऱ्ऱवर्कु–श्रीविजयराघव को; आण्टु काट्टि–वहाँ (उन आभरणों को) दिखाकर; कॊटुत्त पोतु—जब उन्हें दिया गया; अटुत्त तन्मै–जो हुई वह स्थिति; पॆऱ्ऱियिन्–किसी प्रकार से; उणर्तल् पाऱ्ऱो–समझने योग्य है क्या; उयिर्निलै पिऱितुम् उण्टो–उनके प्राणों के हेतु और कुछ है क्या; नी इऴित्तु नीत्त–आपने जो उतारकर फेंके; मऱ्ऱै नल् अणिकळ्–वे दूसरे आभरण ही; इऱ्ऱै नाळ् अळवुम्–आज तक; उन् मङ्कलम् कात्त–आपके मंगल-सूत्र (सुहाग) को बचाते आ रहे हैं। ५२३

माते ! जब हमने उन आभरणों को दिखाया तब श्रीराम की स्थिति क्या हुई —उसको अब वर्णन करूँ तो भी उस प्रकार से वह समझी जा सकेगी क्या ? उनके जीने का और कोई हेतु है क्या ? आपने जो आभरण उतारकर फेंके थे, उन्हींने आपके मंगल-सूत्र (अहिवात) को बचा दिया है ! । ५२३

आयवन् ऱन्मै निऱ्क वङ्गदन् वालि मैन्दन्
एयवन् ऱॆन्बाल् वॆळ्ळ मिरण्डिन्नो डॆऴुन्द शेनै
मेयिनन् ऱॊडर्न्दु तीरा विन्नैयवन् विडुत्ता ऩॆन्नैप्
पाय्दिरै यिलङ्गै मूदूर्क् कॆन्ऱनन् पऴियै वॆन्ऱान् 524

पऴियै वॆन्ऱान्–निन्दापार (हनुमान); आयवन् तन्मै निऱ्क—उनकी स्थिति वैसी रही वह बात रहे; तॆन् पाल् एयवन्–दक्षिण की तरफ़ प्रेषित; ऎऴुन्त चेनै–साथ आयी; वॆळ्ळम् इरण्टिन्नोटु–दो 'वॆळ्ळम्' सेना के साथ; मेयिनन्–जो आया; तॊटर्न्तु–लगातार; तीरा विन्नैयवन्–प्रयास करनेवाला; वालि मैन्तन्—वालीपुत्र; अङ्कतन्–अंगद ने; पाय् तिरै–लहराती तरंगों वाले समुद्र वलयित; इलङ्कै मूतूर्क्कु–प्राचीन लंका नगरी को; ऎन्नै विटुत्तान्–मुझे भेजा; ऎन्ऱनन्–कहा। ५२४

अपयशजयी हनुमान ने आगे कहा कि उनकी स्थिति एक ओर रहे। अंगद ने भी मुझे इस लहरायमान सागरवलयित प्राचीन लंका नगरी की तरफ़ भेजा। उसे सुग्रीव ने इधर भेजा था। उसके साथ दो "वॆळ्ळम्" की सेना आयी है। वह भी सततपरिश्रमी है और वाली का पुत्र है। ५२४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेण्डिऩेन् कण्डेन् वाऴि तीदिले ऩॆङ्गो ऩेविप्
पूण्डमॆय् युयिरो पोहाप् पॊय्युयि रोडु निऩ्ऱाऩ्
आण्डहै ऩॆऱ्जि निऩ्ऱु महऩ्ऱिलै यऴिवुण् डामो
ईण्डुनी यिरुक्क वाण्डङ् गॆव्वुयिर् विडुमि रामन् 525

ऍम् कोऩ् एवि–अपने राजा से प्रेषित हो; तेण्टिऩेऩ्–जो खोजता आया, उस मैंने; कण्टेऩ्–आपको देख लिया; तीतु इलेऩ्–(असफलता के) कलंक से रहित हो गया; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; पोका–अछूट; पॊय् उयिरोटु–मिथ्या प्राणों के साथ; निऩ्ऱाऩ्–रहते हैं; पूण्ट मॆय् उयिरो–उनके धृत सच्चे प्राण (आप); ऩॆऱ्चिऩ् निऩ्ऱुम्–उनके मन से; अकऩ्ऱिलै–हटे नहीं; ईण्टु–यहाँ; नी इरुक्क–आपके रहते; आण्टु–वहाँ; इरामऩ्–श्रीराम; ऍ उयिर् विटुम्–किस जान को छोड़ेंगे; अऴिवु उण्टामो–नाश होगा क्या। ५२५

मेरे राजा ने मुझे भेजा और मैंने सभी स्थानों में आपको ढूँढ़ा। आखिर आपके दर्शन मिल गये और मैं असफलता के अपयश से बच गया हूँ। पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम के प्राण नहीं छूटे, सही। पर अब के उनके प्राण मिथ्या प्राण हैं। उनके सच्चे प्राण आप हैं; वह आप उनके हृदय से दूर नहीं हुई हैं। आप यहाँ हैं तो वे वहाँ कौन से प्राण खो सकते हैं? उनके प्राणों की हानि नहीं हो सकती। ५२५

इः(ह्)दव निशैत्त लोडु मॆऴुन्दपे रुवहै पॊङ्गि
वॆय्दुयिर्प् पॊडुङ्गि मेऩि वाऩुऱ विम्मि वीङ्ग
उय्दल्वन् दुऱ्ऱ दोवॆऩ् ऱरुविनो रॊऴुहुङ् गण्णाळ्
अय्यशोल् लवऩ्ऱऩ् मेऩि यॆप्पडित् तऱिवै यॆऩ्ऱाळ् 526

इ.ःतु अवऩ्–यों उसके; इचैत्तलोटुम्–कहने पर; ऍऴुन्त पेर् उवकै–उठा आनन्द; पॊङ्कि–उमगा; वॆय्तुयिर्प्पु–लम्बी साँस छोड़ना; ऒटुङ्कि–बन्द हुआ; मेऩि–शरीर; वाऩ् उऱ–आकाश तक; विम्मि वीङ्क–फूलकर बढ़ा; उय्तल् वऩ्तु उऱ्ऱतो–सुखी जीवन का सौभाग्य आ गया क्या; ऍऩ्ऱु–सोचकर; अरुवि नीर्–सरिता-से आँसू; ऒऴुकुम्–बहानेवाली; कण्णाळ्–आँखों की होकर; अय्य–तात; अवऩ् तऩ् मेऩि–उनका श्रीशरीर; ऍप्पटित्तु–कैसा है; अऱिवै–तुम जानते हो; चॊल् ऍऩ्ऱाळ्–कहो, कहा। ५२६

जब हनुमान ने यह कहा तब सीताजी के मन में आनन्द उठकर उमड़ा। दीर्घ श्वास स्वस्थ पड़ गये। शरीर आकाश तक बढ़ता हुआ फूल उठा। "ओफ़! मेरा भी भाग्य जाग गया क्या?" यह सोचा। उनकी आँखों से आँसू की नदी उमड़ आयी। उन्होंने हनुमान से पूछा कि तात! तुमने क्या जाना है कि श्रीराम का रूपलक्षण कैसा है? । ५२६

पडियुरैत् तॆडुत्तुक् काट्टुम् बडित्तऩ्ऱु पडिवम् बण्बिऩ्
मुडिवळ ववमैक् कॆल्ला मिलक्कण मुरैक्किऩ् मुऩ्दा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तुडियिडै यडैया ळत्तिन् ऱोडर्वैये तॊडर्दि यॆन्ना
अडिमुदन् मुडियी ऱाह वऱिवुऱ वनुमन् शॊल्वान् 527

तुटि इटै–डमरू-सी कमर वाली; पटिवम्–दिव्यरूप; पटि उरैत्तु–उपमान कहकर; अॆट्टुत्तु काट्टुम् पटित्तु अऱुऱ–वर्णन-योग्य नहीं; उवमैक्कु अॆल्लाम्–सभी उपमाओं की; इलक्कणम् पण्पिन्–व्याकरणविधिसम्मत; मुटिवु उळ–सीमाएँ होती हैं; उरैक्किन्–उन उपमाओं को कहें तो; मुन्ता–श्रेष्ठ नहीं होंगी; अटैयाळत्तिन् तॊटर्वैये–लक्षण के आगे; तॊटर्ति–जाकर समझ लें; अॆन्ना–कहकर; अटि मुतल् मुटि ईऱु आक–पादादि केश तक; अऱिवु उऱ–समझाते हुए; अनुमन् चॊल्वान्–हनुमान कहने लगा। ५२७

हनुमान ने उत्तर दिया। डमरू-सी कमर वाली ! श्रीराम का दिव्य रूप उपमा-उदाहरण कहकर वर्ण्य नहीं है; क्योंकि अलंकार-शास्त्रों में उपमाओं के अर्थों की सीमा निश्चित है। उनको कहें तो वे उपमाएँ समर्थ नहीं रहेंगी। मेरे वर्णन को संकेत मात्र मानिए और अपनी कल्पना से उसी दिशा में आगे जाकर समझ लीजिए। हनुमान श्रीराम का नख-शिख-वर्णन करने लगा। ५२७

शेयिदळ्त् तामरै यॆन्ऱु शेणुळोर्
एयिन दन्ऱुणै यॆळिय दिल्लैयाल्
नायहन् ऱिरुवडि कुऱित्तु नाट्टुहिल्
पाय्दिरैप् पवळमुङ् गुवळैप् पण्बिऱ्ऱाल् 528

नायकन् तिरुवटि–हमारे नायक के श्रीचरण; चेय् इतळ् तामरै अॆन्ऱु–लाल दलों का कमल ऐसा; चेण् उळोर्–प्राचीन विद्वानों ने; एयिन्–विधान किया हैं; कुऱित्तु नाट्टुकिल्–स्पष्ट निर्धारण करना चाहें तो; अतन् तुणै–उसके समान; अॆळियतु इल्लै–अल्प नहीं है; पाय तिरै–उछलती लहरों के समुद्र में उत्पन्न; पवळमुम्–प्रवाल भी; कुवळैप् पण्पिऱ्ऱु–कुवलय-पुष्प के समान हो जायगा (काला लगेगा)। ५२८

हमारे नायक के श्रीचरण प्राचीन विद्वानों की भाषा में लाल दलों के कमल कहें तो स्पष्ट सोचने पर वे चरण कमलों के समान अल्प नहीं हैं। उनके सामने उछलती लहरों वाले सागर में उत्पन्न प्रवाल भी कुवलय के समान काले लगेंगे। ५२८

तळङ्गिळर् कऱ्पह मुहिळुन् दण्डुऱै
इळङ्गॊडिप् पवळमुङ् गिडक्क वॆन्नवै
तुळङ्गॊळि विरर्कॆदि रुदिक्कुञ् जूरियन्
इळङ्गदि रॊक्किनु मॊक्कु मेन्दिळाय् 529

एन्तिळाय्–धृत आभरण वाली; तळम् किळर्–दल-बहुल; कऱ्पक मुकिळुम्–कल्पकली भी; तण् तुऱै–शीतल घाटों वाले समुद्र में मिलनेवाली; इळम् कॊटि पवळमुम्–बाल-प्रवाल-लता भी; किटक्क–एक ओर रहें; अवै अॆन्–उनकी क्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हस्ती है; तुळङ्कु ऒळि–प्रोज्ज्वल; विरऱ्कु ऎतिर्–उँगली के सामने; उतिक्कुम् चूरियन्–उदीयमान सूर्य की; इळम् कतिर्–बाल-किरणें; ऒक्कितुम् ऒक्कुम्–समता करें तो कर सकती हैं। ५२९

आभरणधारिणी देवी ! उनकी शोभायमान उँगलियों के बारे में क्या कहा जाय ? दलसंकुल कल्पकली और शीतल घाटों से युक्त सागर की बाल-प्रवाल-वल्लरी को एक ओर डाल दीजिए। उनकी क्या बिसात है ? उदीयमान सूर्य की बालकिरणें समता कर सकती हैं, तो एक प्रकार से कर सकती हैं। ५२९

शिऱियवुम् बॆरियवु माहित् तिङ्गळो
मऱुविल पत्तुळ वल्ल मऱ्ऱिनि
ऎऱिशुडर् वयिरमो तिरट्चि यॆय्दिल
अऱिहिलॆ नुहिर्क्किया नुवम मावन 530

तिङ्कळो–चन्द्र तो; चिऱियवुम् पॆरियवुम् आकि–छोटा और बड़ा बनकर; मऱु इल–कलंकहीन; पत्तु उळ अल्ल–दस नहीं हैं; मऱ्ऱु इनि–उसके अलावा; ऎऱि चुटर्–ज्वलन्त; वयिरमो–हीरे कहें तो; तिरट्चि ऎय्तिल–पुष्ट नहीं है; उकिर्क्कु उवमम् आवन–चरणनखों की उपमाएँ जो बन सकेंगी; यान् अऱिकिलॆन्–मैं नहीं जानता। ५३०

उनके नखों को क्या चन्द्र कहें ? पर छोटे-बड़े और कलंकरहित दस चाँद कहाँ ? फिर हीरे कहें ? पर हीरे की कांति इतनी घनी कहाँ होती है ? इसलिए उँगलियों की उपमाएँ मुझे ढूँढ़े नहीं मिलतीं। ५३०

पॊरुन्दिन निलनॊडु पोन्दु कानिडै
वरुन्दिन वॆनिनदु नूलै माऱुहॊण
डिरुन्ददु निन्ऱदु पुवनम् यावैयुम्
ऒरुङ्गुडन् पुणर्वन वुणर्त्तर् पालदो 531

निन्ऱतु पुवनम् यावैयुम्–स्थिर सभी भुवनों में; ऒरुङ्कु उटन् पुणर्वन–एक साथ (जो) व्याप्त थे; निलनॊटु–(वे चरण) अब धरती पर; पॊरुन्तिन–लगे; पोन्तु–चलकर; कान् इटै–जंगल में; वरुन्तिन–दुःख पाते हैं; ऎनिन्–तो; अतु–वह; नूलै माऱु कॊण्टिरुन्ततु–तर्क आदि शास्त्र के विपरीत लगता है; उणर्त्तल् पालतो–वे वर्ण्य हैं क्या। ५३१

श्रीराम के चरण (त्रिविक्रमावतार के अवसर पर) सभी लोकों पर एक साथ लगे थे। ऐसे चरण अब वन में चलते हुए दुःख पा रहे हैं —ऐसा कहना तर्क-संगत नहीं लगता। ऐसे चरणों की महिमा क्या कही जाय ? । ५३१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ताङ्गणैप् पणिलमुम् वळैयुन् दाङ्गरा
वीङ्गणैप् पळ्ळिया ऩैनिऩुम् वेरिऩिप्
पूङ्गणैक् काऱ्कौरु परिशु ताऩ्पौरुम्
आङ्गणैक् कावमो वाव दऩ्ऩैये 532

अऩ्ऩैये–माताजी; अणै ताङ्कु पणिलमुम्–विषम तल वाला (झुर्रीदार) शंख; वळैयुम्–चक्र; ताङ्कुम्–धारण करनेवाले; वीङ्कु अरा–मोटे नाग रूपी; अणै पळ्ळियाऩ्–शय्या-शायी; पूम् कणै काऱ्कु–(श्रीराम की) सुन्दर पिंडलियों की; ताऩ् पौरुम्–उनके द्वारा युद्ध में प्रयुक्त; कणैक्कु आम्–शरों के; आवमो–तूणीर; औरु परिचु ऍऩिऩुम्–एक उपमा है तो; इऩि वेऱु आवतु–और कोई तूणीर उपमान बन सकता है क्या। ५३२

सीढ़ीदार बाँधों के समान शिकनों के साथ रहनेवाले शंख और सुदर्शन चक्र के धारक, बहुत बड़ी शेषशय्याशायी विष्णु के अवतार श्रीराम की सुन्दर पिंडलियों की उपमा एक तरह से उनका ही युद्धशरों का तूणीर हो सकता हैं। और कोई तूणीर हो सकता है क्या ? । ५३२

अऱङ्गिळर् पऱवैयि ऩरशि ऩोङ्गिय
पिऱङ्गॆरुत् तऩैयऩ वॆवरुम् बॆऱ्ऱुडै
मऱङ्गिळर् मदहरिक् करत्तै माऱ्ऱिऩ
कुऱङ्गिऩुक् कुवमैयिव् वुलहिऱ् कूडुमो 533

अऱम् किळर्–(मूर्त-) धर्म-सम शोभायमान; पऱवैयिऩ् अरचिऩ्–पक्षीराज गरुड़ के; ओङ्किय पिऱङ्कु–उन्नत और पुष्ट; ऍरुत्तु अऩैयऩ–गलों के समान है; ऍवरुम् पॆऱ्ऱुटै–सभी के लिए सुलभ; मऱम् किळर्–बलवान; मत करि करत्तै–मत्त गज की सूंड़ को; माऱ्ऱिऩ–निरर्थक कर गये; कुऱङ्किऩुक्कु–ऐसे ऊरुओं की; उवमै–उपमा; इल्वुलकिल् कूटुमो–इस संसार में मिल सकती है क्या। ५३३

श्रीराम के ऊरु धर्मरूप पक्षीराज गरुड़ के उन्नत और स्थूल गले के समान रहते हैं। सभी आसानी से जिसकी उपमा देते हैं, उस सबल मत्तगज की सूँड़ को ठुकरा देनेवाले हैं। ऐसे जाँघों की उपमा इस संसार में कहीं मिल सकती है क्या ? । ५३३

वलञ्जुऴित् तॊऴुहुनीर् वऴङ्गु गङ्गैयिऩ्
पॊलञ्जुऴि यॆऩ्ऱुलुम् बुऩ्मै पूवॊडु
निलञ्जुऴित् तॆऴुमणि युऩ्दि नेरिऩि
इलञ्जियुम् बोलुम्वे ऱुवमै याण्डरो 534

पू ऒटु–कमल के फूल में; निलम्–लोकों को भी; चुऴित्तु ऎऴु–मिलाकर जिसने उत्पन्न किया; मणि उऩ्ति–वह सुन्दर नाभि; वलम् चुऴित्तु–दाहिनी आवर्तन की भँवरों के साथ; ऒऴुकु–बहनेवाली; नीर वऴङ्कु–जल देनेवाली; कङ्कै–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गंगा नदी की; पॊलम् चुऴि-सुन्दर भँवर (उपमा) है; ऍऩ्ऱलुम्-कहना भी; पुऩ्मै-अल्प है; इऩ्ऱि नेर्-अब सम; इलञ्चियुम् पोलुम्-बकुल-सुमन होगा; वेऱु उवमै याण्टु-अन्य उपमान कहाँ है। ५३४

श्रीराम की नाभि ने कमल पर सारे लोकों को भी सृष्ट किया। ऐसी नाभि को दक्षिणावर्त भँवरों के साथ बहनेवाली गंगा नदी का सुन्दर भँवर (-सम) कहना भी क्षुद्र उपमान होगा। शायद बकुल का फूल हो सकता है! फिर और कोई उपमा कहाँ से मिले? । ५३४

पॊरुवरु मरहदप् पॊलङ्गॊण् माल्वरै
वॆरुवुऱ विरिन्दुयर् विलङ्ग लाहत्तैप्
पिरिवऱ नोऱ्ऱऩ ळॆऩ्ऩिऱ् पिऩ्ऩैयत्
तिरुविऩिऱ् ऱिरुवुळार् यावर् तॆय्वमे 535

तॆय्वमे-भगवती; पॊरु अरु-उपमाहीन; पॊलम कॊळ्-सुन्दरतायुक्त; मरकत माल् वरै-बड़ा मरकतपर्वत; वॆरु उऱ-डर जाय ऐसा; विरिन्तु उयर्-विशाल और उन्नत; विलङ्कल् आकत्तै-पर्वत-सम वक्ष में; पिरिवु अऱ-विना अलग हुए रहने का; नोऱ्ऱऩळ् ऍऩ्ऩिल्-भाग्य किया (जिसने); अ तिरुविऩिल्-उस श्री से बढ़कर; तिरु उळार्-श्रीसम्पन्न; पिऩ्ऩै यावर्-और कौन हैं। ५३५

भगवती! श्रीराम का वक्षःस्थल पर्वत-सम है। अनुपम सौन्दर्य से युक्त मरकत-पर्वत को भी लजानेवाली रीति से उन्नत और विशाल है। श्रीदेवी की तपस्या का फल है कि वह उसमें निरन्तर वास करती हैं। उनसे बढ़कर भाग्यशालिनी कौन हैं? । ५३५

नीडुऱु कीट्टिशै निऩ्ऱ यानैयिऩ्, कोडुऱु करमॆऩच् चिऱिदु कूऱलाम्
तोडुऱु मलरॆऩच् चुरुम्बु शुऱ्ऱऱात्, ताडुऱु तडक्कैवे ऱुवमै शालुमो 536

तोटु उऱु-दलयुक्त; मलर् ऍऩ-कमल हैं ऐसा; चुरुम्पु चुऱ्ऱु अऱा-जिन पर भ्रमरों का मँड़राना कभी नहीं रुकता; ताळ् तुऱु तटक्कै-आजानुलम्बित विशाल हाथ; कीऴ्तिचै निऩ्ऱ यानैयिऩ्-पूर्व दिशा में स्थित (ऐरावत) गज के; कोटु उऱु-लकीरों के साथ रहनेवाली; नीटु उऱु करम् ऍऩ-लम्बी सूँड़ हैं, ऐसा; चिऱितु कूऱलाम्-थोड़ा कह सकते हैं; वेऱु उवमै चालुमो-कोई और उपमान मिल सकेगा क्या। ५३६

श्रीराम के आजानुलम्बे हाथों की, जिन पर भ्रमर दलसंकुल कमल-सुमन समझकर, घेरकर मँड़राना नहीं छोड़ते, उपमा पूर्व दिशा में स्थित ऐरावत गज की शिकनों (झुर्रियों) से भरी सूँड़ थोड़ा (संकोच से) कही जा सकती है। और कोई उपमा कही जा सकती है क्या? । ५३६

पच्चिलैत् तामरै पहल्कण् डालऩ, कैच्चॆऱि मुहिऴुहिर् कऩह ऩॆऩ्बवऩ्
वच्चिर याक्कैयै वहिर्न्द वऩ्ऱॊऴिल्, निच्चय मऩ्ऱॆऩि ऩैय नीङ्गुमे 537

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पचुमै इलै तामरै–चिकने पत्रों-सहित कमल का फूल; पकल् कण्टाल् ऍत–सूर्य को देख चुका हो ऐसा; कै चॅरि–हाथों में लगे रहे; मुकिळ् उकिर्–कली के समान नख; कतकत् ऍत्पवत्–हिरण्य के; वच्चिर याक्कैयै–वज्रकठोर शरीर को; वकिर्न्त वत् तॉळिल्–जिन्होंने चीर लिया था उनका काम; निच्चयम् अत्रु–संशय-रहित नहीं है; ऍतित्–ऐसा कहें तो; ऐयम्–वह संशय; नीङ्कुम्–(श्रीराम के नखों को देखने पर स्वयं) मिट जायगा। ५३७

श्रीराम के हाथों की उँगलियों के कलियाँ जैसे नख चिकने पत्रों-सहित रहनेवाले कमल के फूल सूर्य को देख गये —जैसे प्रकाशमान हैं। कनककशिपु के वज्र-सम शरीर को उन नखों ने चीरा था। क्या नख भी शरीर को चीर सकते हैं ? यह संशय जो उठ सकता है, उन नखों को देखने पर स्वतः दूर हो जायगा। ५३७

तिरण्डिल वॉळियिल तिरुवुञ् जेर्हिल
मुरण्डरु मेरुवित् शिलैयित् मूरिनाण्
पुरण्डिल पुहळिल पॉरुप्पॉत् रॉत्रुपोत्
रिरण्डिल पुयङ्गळुक् कुवमै येर्कुमो 538

तिरण्टु इल–पुष्ट नहीं हैं; ऑळि इल–कान्तियुत नहीं; तिरुवुम् चेर्किल–श्री से नहीं मिले हैं; मुरण् तरु–बलवान; मेरुवित्–मेरु के समान; चिलैयित्–धनु को; मूरि नाण् पुरण्टु इल–बलवान डोरा उन पर लगा नहीं है; पुकळ् इल–यशस्वी नहीं; पॉरुप्पु–पर्वत; ऑत्रु ऑत्रु पोत्रु–एक के समान एक (परस्पर सम); इरण्टु इल–द्वय नहीं हैं; पुयङ्कळुक्कु–(इसलिए पर्वत) श्रीराम के कन्धों की; उवमै–उपमा का गौरव; एर्कुमो–धारण कर सकेंगे क्या। ५३८

श्रीराम के कन्धों को पर्वतों से उपमित करें क्या ? वे उतने पुष्ट और वर्तुल कहाँ ? कान्तियुत नहीं; श्रीयुत नहीं और उन पर बलवान मेरु के समान धनु की डोरी नहीं लोटी है। वे प्रशंसा के पात्र भी नहीं हैं। और परस्पर सम पर्वतद्वय कहाँ प्राप्य हैं ? इसलिए वे श्रीराम की भुजाओं की उपमा का गौरव धारण नहीं कर सकते। ५३८

कडर्पडु पणिलमुङ् गत्तिप् पूहमुम्
मिडर्रित्तुक् कुवमैयॅत् रुरैक्कुम् वॅळ्ळियोर्क्
कुडर्पड वॉण्णुमो वुरहप् पळ्ळियात्
इडत्तुरै शङ्गमॉत् रिरुक्क वॅङ्गळाल् 539

उरकप् पळ्ळियात्–शेषशायी; इटत्तु उरै–के पास रहनेवाला; चङ्कम् ऑत्रु इरुक्क–शंख एक जब रहता है; कटल् पटु पणिलमुम्–सागर में उत्पन्न होनेवाला शंख; कत्तिप् पूकमुम्–छोटी आयु का पूग-तरु; मिटर्रित्तुक्कु उवमै–कण्ठ की उपमा है; ऍत्रु–ऐसा; उरैक्कुम् वॅळ्ळियोर्क्कु–जो कहते हैं उन अल्पमतियों के साथ; उटत् पट ऑण्णुमो–हम सहमत हो सकेंगे क्या। ५३९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शेषशायी श्रीराम के बायें हाथ में ही पाञ्चजन्य नामक शंख है। उस स्थिति में अन्य सागरोत्पन्न शंख या बाल-पूग-तरु को उनके कण्ठ से उपमित करनेवाले अल्पमतियों के साथ हम सहमत हो सकते हैं क्या ? । ५३९

अण्णऱन् ऱिरुमुहङ् गमल मामॅऩिल्
कण्णिऩुक् कुवमैवे ऱियादु काट्टुहेऩ्
तण्मदि यामॅऩ वुरैक्कत् तक्कदो
विण्णुडल् पॊलिन्ददु मॅलिन्दु तेयुमाल् 540

अण्णल् तऩ् तिरुमुकम्–महिमावान श्रीराम का श्रीमुख; कमलम् आम् ऍऩिल्–कमल कहा जाय तो; कण्णिऩुक्कु–फिर आँखों के लिए; उवमै–उपमा; वेऱु यातु काट्टुकेऩ्–और क्या दिखाऊँगा; अतु–वह; उटल् विण् पॊलिन्तु–शरीर आकाश में शोभित होकर; मॅलिन्तु तेयुमाल्–क्षीण होकर घटेगा इसलिए; तण् मति आम्–(इसलिए) शीतल चन्द्र होगा; ऍऩ उरैक्क तक्कतो–ऐसा कहना उचित होगा क्या। ५४०

महिमावान श्रीराम के मुख को कमल कह दूँ तो फिर आँखों की उपमा क्या बताऊँगा ? फिर चन्द्र कहूँ ? वह आकाश में एक बार पूर्णत्व के साथ प्रगट होने के बाद घटता जाता है ! अतः शीतल चन्द्र को मुख का उपमान कहना उचित होगा क्या ? । ५४०

आरमु महिलु नोवि यहऩ्ऱदो ळमलन् शॆव्वाय्
नारमुण् डलर्न्द शॆङ्गेळ् नळिऩमॅऩ् ऱुरैक्क नाणिल्
ईरमुण् डमुद मूऱा विऩ्ऩुरै यियम्बा देनुम्
मूरल्वॆण् मुऱुवऱ् पूवाप् पवळमो मॊऴियऱ् पाऱ्ऱे 541

आरमुम् अकिलुम् नोवि–चन्दन और अगरु का लेप-मली; अकऩ्ऱ तोळ्–विशाल भुजाओं वाले; अमलन् चॆव्वाय्–विमल देव का लाल मुख; नारम् उण्टु अलर्न्त–जल पीकर जो खिला है; चॆम् केळ् नळिऩम्–लाल रंग का कमल है; ऍऩ्ऱु उरैक्क नाणिल्–यह कहने से लाज (संकोच) करेंगे तो; ईरम् उण्टु–आर्द्रता के साथ; अमुतम् ऊऱा–अमृत जिससे (नहीं) रिसता है; इऩ् उरै इयम्पातेऩुम्–मधुर वचन न कहने पर भी; मूरल् वॆण् मुऱुवल्–(कम से कम) जो दाँतों द्वारा उज्ज्वल हँसी; पूवा–नहीं दिखा सकता है; पवळमो–वह प्रवाल क्या; मॊऴियप् पाऱ्ऱु–कहे जाने अर्ह होगा। ५४१

चन्दन और अगरु के लेप से भूषित विशाल भुजाओं वाले पावनमूर्ति श्रीराम के लाल मुख से जल पीकर उगे हुए प्रफुल्ल लाल रंग के कमल को उपमित करने से हम लजाएँगे। तो आर्द्रता से रहित, अमृत न सरसाते हुए, मधुर वचन न कहें तो भी कम से कम सफ़ेद दन्तावली खोलकर जो हँस नहीं सकता, वह प्रवाल उपमा के रूप में बताया जा सकता है क्या ? । ५४१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुत्तङ् गॊल्लो मुऴुनिलविन् मुऱियिन् ऱिऱमो मॊऴियमिर्दिन्
कॊत्तिन् ऱुळ्ळि वॆळ्ळियॆनत् तॊडुत्त कॊल्लो तुऱैयऱत्तिन्
वित्तिन् मुळैत्त वङ्गुरङ्गॊल् वेऱे शिलकॊन् मॆय्म्मुहिऴ्त्त
दॊत्तिन् ऱॊहैकॊल् यादॆन्ऱु पल्लुक् कुवमै शॊल्लुहेन् 542

पल्लुक्कु उवमै–दाँतों की उपमा; मुत्तम् कॊल्लो–मोती होंगे क्या; मुऴु निलविन्–पूर्णचन्द्र के; मुऱियिन् तिऱमो–टुकड़ों की पंक्ति हैं क्या; मॊऴि–प्रशंसित; अमिर्तिन् कॊत्तिन्–अमृत-राशि की; तुळ्ळि–बूँदों को; वॆळ्ळि ऎन्ऱ तॊडुत्त कॊल्लो–चाँदी कहने योग्य रीति से गूँथा गया है क्या; तुऱै अऱत्तिन्–(बत्तीस) अंशों में विभक्त धर्म के; वित्तिन् मुळैत्त–बीज से अंकुरित; अङ्कुरम् कॊल्–अंकुर हैं क्या; वेऱे चिल कॊल्–या अन्य कुछ हैं; मॆय् मुकिऴ्त्त–सत्य (तरु) में पुष्पित; तॊत्तिन् तॊकै कॊल्–फूलों के गुच्छे हैं क्या; यातु ऎन्ऱु–क्या है ऐसा; चॊल्लुकेन्–कहूँगा। ५४२

श्रीराम के दाँतों की उपमा मोती बन सकते हैं ? पूर्णचन्द्र के टुकड़ों की पंक्ति है ? प्रशंसित अमृतराशि की बूँदों को चाँदी कहकर गूँथा गया है ? बत्तीस अंशों के बने धर्म से अंकुरित अंकुर हैं ? या और कुछ ? या सत्यतरु पर पुष्पित फूलों का गुच्छा है। क्या कहूँ मैं ? । ५४२

ऎऴ्ळा नीरिन् दिरनीलत् तॆऴुन्द कॊऴुन्दु मरहदत्तिन्
विळ्ळा मुऴुवा णिऴऱ्पिऴम्बुम् वेण्ड वेण्डु मेऱियदे
तळ्ळा वोदि कोपत्तेक् कौव वन्दु शार्न्ददुवुम्
कॊळ्ळा वळ्ळ ऱिरुमूक्किर् कुवमै पिन्नुङ् गुऱिप्पामो 543

ऎऴ्ळा नीर्–अनिंद्य पानी वाले; इन्तिर नीलत्तु–इन्द्रनील नग से; ऎऴुन्त कॊऴुन्तुम्–उठे किसलय और; मरकतत्तिन्–मरकत की; विळ्ळा–अखण्डित; वाळ् निऴल् मुऴु पिऴम्पुम्–लम्बी कान्ति की सम्पूर्ण राशि और; वेण्ट वेण्टुम् मेऱियतु–चाहकर तपस्या करें ऐसा दिव्य शरीर है उनका; तळ्ळ–संयुक्त; ओति–गिरगिट; कोपत्तै–इन्द्रगोप को; कौव–ग्रसने; वन्तु चार्न्ततु–आ पहुँचा है, यह कहना; कॊळ्ळा–मान्य नहीं है; वळ्ळल् तिरु मूक्किर्कु–उदार प्रभु की नासिका का; उवमै–उपमान; पिन्नुम् कुऱिप्पु आमो–और किसी वस्तु को बता सकते हैं क्या। ५४३

श्रीराम के दिव्य शरीर का रंग ऐसा है कि निर्दोष पानी वाले इन्द्रनील की किसलय-सी आभा और मरकत नग की दीर्घ और अक्षुण्ण आभा वैसा रंग पाने के लिए तपस्या करें। (उनकी नाक की उपमा क्या कहें ?) गिरगिट इन्द्रगोप को ग्रसने के लिए आ पहुँचा है —ऐसा कहना भी मान्य नहीं हो सकता। तो फिर कौन सी उपमा कही जाय ? (अधर का लाल रंग और नासिका का नीला रंग दोनों के आधार पर यह उपमा कही गयी है। जहाँ जयशंकर प्रसाद का "है हंस न शुक यह चुगने को मुक्ता ऐसे" —ये पंक्तियाँ स्मरण आती हैं। कम्बन् ऐसी चित्रमय कल्पना दस-बारह सौ वर्ष पहले कर सके।) । ५४३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पऩिक्कऱ् चुरत्तुक् करऩ्मुदलोर् कवन्दप् पडैयुम् बल्पेयुम्
तऩिक्कैच् चिलैयुम् वाऩवरु मुऩिवर् कुऴुवुन् दऩियऱमुम्
इऩिक्कट् टऴिन्द दरक्करकुल मॅऩ्ऩुऱ् जुरुदि यीयिरण्डुम्
कुऩिक्कक् कुऩित्त पुरुवत्तुक् कुवमै नीये कोडियाल् 544

पऩि कल्–शीतल पर्वतों-सहित; चुरत्तु–वन में; करऩ् मुतलोर्–खर आदि राक्षसों की; कवन्त पटैयुम्–कबन्धों की सेना; पल् पेयुम्–अनेक पिशाच; तऩि कै चिलैयुम्–अप्रतिम हस्त-धनु; वाऩवरुम्–और व्योमलोकवासी; मुऩिवर् कुऴुवुम्–मुनिवृन्द और; तऩि अऱमुम्–अद्वितीय धर्म; इऩि–अब; अरक्कर् कुलम्–राक्षसों का कुल; कट्टऴिन्ततु–एक दम मिट गया; ऍऩ्ऩुम्–कहनेवाले; चुरुति ईर् इरण्टुम्–चारों वेदों के; कुऩिक्क–नाच उठते; कुऩित्त पुरुवत्तुक्कु–आकुंचित श्रीराम की भौंहों की; उवमै नीये कोटि–उपमा आप ही ढूंढ़ लें। ५४४

श्रीराम की भौंहें तनीं और कुंचित हुईं। तब क्या-क्या हुए? शीतल पर्वतों-सहित भयंकर जंगल में खर आदि राक्षसों की कबन्ध सेना, अनेक भूत-पिशाच, श्रीराम के अप्रमेय हस्त का धनुष, देव, मुनिगण, अनुपम धर्म और चारों वेद—ये सभी यह समझकर नाच उठे कि राक्षसकुल अब एकदम निर्मूल हो गया। ऐसी जो झुकीं, उन भौंहों की उपमा आप ही ढूंढ़ लें। ५४४

वरुनाट् टोऩ्ऱुन् दऩिमऱुवुम् वळर्वुन् देय्वुम् वाळरवम्
ऒरुनाट् कव्वु मुऱुहोळु मिऱप्पुम् बिऱप्पु मॊऴिवुऱ्ऱ
इरुनाऱ् पहलि ऩिलङ्गुमदि यलङ्ग लिरुळि ऩॆऴिऩिऴऱ्कीऴ्प्
पॆरुना णिऱ्पि ऩवऩॆऱ्ऱिप् पॆऱ्ऱित् ताहप् पॆऱुमऩ्ऩो 545

वरुनाळ्–जन्म के दिन से ही; तोऩ्ऱुम्–उत्पन्न; तऩि मऱुवुम्–अनुपम कलंक; वळर्वुम् तेय्वुम्–और बढ़ना-घटना; वाळ् अरवम्–तलवार के समान सर्प (राहु) के; ऒरु नाळ् कव्वुम्–एक दिन ग्रहण कर लेने से; उऱु कोळुम्–मिलनेवाला दुःख; इऱप्पुम्–एक दिन पूर्ण रूप से अदृश्य होना और; पिऱप्पुम्–फिर एक दिन प्रकट होना; ऒऴिवु उऱ्ऱ–इन दोषों से विमुक्त; इरु नाल् पकलिल्–अष्टमी के दिन; इलङ्कुम् मति–शोभायमान चन्द्र; अलङ्कल् इरुळिऩ्–भ्रामक अन्धकार में; ऍऴिल् निऴल् कीऴ्–सबल अन्धकार के नीचे; पॆरु नाळ् निऱ्पिऩ्–अनेक दिन एक ही स्थिति में रह सकता हो तो; अवऩ् ऩॆऱ्ऱि–उनके भाल की; पॆऱ्ऱित्तु आकप् पॆऱुम्–स्थिति पायगा कहा जा सकता है। ५४५

(भाल की उपमा की अप्रस्तुत योजना देखिए।) अष्टमी का चन्द्र जन्म से ही प्राप्त कलंक से हीन होकर, वैसे ही घटना और बढ़ना छोड़कर, भयंकर सर्प राहु या केतु द्वारा निगले जाने के दुःख से विमुक्त हो, अमावास्या के दिन पूर्णरूप से मर (अदृश्य हो) जाना और दूसरे दिन प्रगट होना—इन बाधाओं से भी मुक्ति पाकर भ्रामक अन्धकार में नीली छाया के नीचे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनेक दिन एक ही स्थिति में रह सकता हो तो वह श्रीराम के भाल से उपमित किया जा सकेगा ! । ५४५

नीण्डु कुळन्ऱु नॆय्त्तिरुण्डु नॆऱिन्दु शॆऱिन्दु नॆडुनीलम्
पूण्डु पुरिन्दु शरिन्दुकडै शुरुण्डु पुहैयु नऱुम्बूवुम्
वेण्डु मल्ल वॆन्तत्तॆय्व वॆऱिये कमळु नऱुङ्गुञ्जि
ईण्डु शडैया यिनदॆन्ऱान् मळैयॆन् ऱुरैत्त लिळिवन्ऱो 546

नीण्टु–लम्बे; कुळन्ऱु–घुँघुराले; नॆय्ततु–चिकने; इरुण्टु–अन्धकार-सम काले; नॆऱित्तु–परतों में दबे; चॆऱिन्तु–घने; नॆटुनीलम् पूण्टु–पूरा-पूरा नीले रंग के; पुरिन्तु–बटे हुए; चरिन्तु–पीछे लटकते हुए; कटै चुरुण्टु–अन्त में कुंचित होकर; पुकैयुम्–धुआँ और; नऱुम्पूवुम्–सुगन्धित सुमन; वेण्टुम् अल्ल–नहीं चाहिए; अॆन–ऐसा; तॆय्व वॆऱिये–दिव्य गन्ध ही; कमळुम्–देनेवाले; नऱुम् कुञ्चि–सुवासपूर्ण केश; ईण्टु–इधर; चटै आयिन्ततु–जटा बने; अॆन्ऱाल्–ऐसा कहा जाय तो; मळै अॆन्ऱु उरैत्तल्–मेघ (-सम) कहना; इळिवु अन्ऱो–गलत होगा न । ५४६

केश को क्या मेघ-धारा कहें ? लम्बे, घुँघराले, चिकने अन्धकार-सम काले, परतों में दबे, घने, नीला रंग लिये बटे हुए, पीछे की ओर अन्त में कुंचित होकर लटकनेवाले केश, जो विना अगरु-धुएँ के और पुष्पों के ही स्वतः सुवासित रहते हैं, आज जटा बने हैं। तो उनका उपमान मेघ है कहना क्षुद्र उपमा होगा न ? । ५४६

पुल्ल लेऱ्ऱ तिरुमहळुम् बूवुम् बॊरुन्दप् पुवियेळिन्
अॆल्लै येऱ्ऱ नॆडुञ्जॆल्व मॆदिर्न्द ञान्ऱु मः(ह्)दन्ऱि
अल्ल लेऱ्ऱ कानहत्तु मळिया नडैय यिळिवान
मल्ल लेऱ्ऱि नुळदॆन्ऱान् मत्त यानै वरुन्दादो 547

पुल्लल् एऱ्ऱ–सदा आलिंगन में रहनेवाली; तिरुमकळुम्–श्रीदेवी और; पूवुम्–भूदेवी; पॊरुन्त–उनके पास जा लगें ऐसा; पुवि एळिन्–सप्तखण्डों की भूमि के; अॆल्लै एऱ्ऱ–समाहित; नॆटुम् चॆल्वम्–विशाल-धन-वैभव को; अॆतिर्न्त ञान्ऱुम्–प्राप्त करते समय भी; अ.ऱु इन्ऱि–उसके नहीं होने से; अल्लल् एऱ्ऱ–संकट उठाते हुए; कानकत्तुम्–जंगल (में आने) पर भी; अळिया–जिसका शान कम नहीं हुआ; नटैयै–उस गमन-गति को; इळिवान–अल्प एक; मल्लल् एऱ्ऱिन्–पुष्ट बैल में; उळतु–है; अॆन्ऱाल्–कहें तो; मत्त यानै वरुन्तातो–मत्तगज दुःखी नहीं होगा क्या । ५४७

सदा आलिंगन में रहनेवाली श्रीदेवी और भूदेवी दोनों एक साथ उनकी बनीं, जब सप्तांश भूमि के वे पति हुए। उस समय भी, और राज्यश्री को छोड़कर कष्ट देनेवाले काननगमन के समय भी उनकी चाल समान रूप से सुन्दर रही। कुछ भी कमी नहीं हुई। ऐसी चाल को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्षुद्र बैल की चाल में (के समान) रहनेवाला कहें तो मत्तगज दुःखी नहीं होगा क्या ? । ५४७

इन्न मॊऴिय वम्मॊऴिहेट् टॆरियि निट्ट मॆऴुहॆन्नत्
तन्नै यऱिया दऴिवाऴॆत् तरैयिन् वणङ्गि नायहनार्
शॊन्न कुऱिहॊ ळडैयाळच् चॊल्लु मुळवा लवॆतोहै
अन्न नडैयाय् केट्कवॆन्न वऱिव नऱैवा नायिनान् 548

इन्न मॊऴिय–ऐसा हनुमान के कहने पर; अम् मॊऴि केट्टु–वे वचन सुनकर; ऍरियिन् इट्ट–आग में पड़े; मॆऴुकु ऍन्न–मोम के समान; तन्नै अऱियातु–सुध खोकर; अऴिवाळै–शिथिल पड़नेवाली को; तरैयिल् वणङ्कि–भूमि पर दण्डवत करके; नायकनार् चॊन्न कुऱि–श्रीराम-कथित निशान और; कॊळ् अटैयाळ चॊल्लुम्–आपसे ग्राह्य अभिज्ञान-वचन; उळ–हैं; अवै–उन्हें; तोकै अन्न–कलापी के समान; नटैयाय्–चाल वाली देवी; केट्क–सुनिए; ऍन्न–ऐसा; अऱिवन्–बुद्धिमान; अऱैवान् आयिनान्–कहने लगा । ५४८

हनुमान ने इस विध श्रीराम के रूप का वर्णन किया तो सीताजी उसके वचनों को सुनकर आग में पड़े मोम के समान अपनी सुध होकर छीजने लगीं । तो हनुमान ने भूमि पर गिरकर दण्डवत की और निवेदन किया कि देवी ! मेरे पास आपसे मान्य अभिज्ञान-वचन और संकेत हैं । कलापी-सी चाल की देवी ! उनको सुनें । वह आगे बोलने लगा । ५४८

❀ नडत्तलरि दाहुनॆऱि नाळ्हळ्शिल तायर्क्
कडुत्तपणि शॆय्दिवणि रुत्तियॆन्न वच्चुर्
ऱुडुत्ततुहि लोडुमुयि रुक्कवुड लोडुम्
ऍडुत्तमुनि वोडुमय निन्ऱदुमि शॆप्पाय् 549

नॆऱि नटत्तल्–मार्ग चलना; अरितु आकुम्–कठिन होगा; नाळ्कळ् चिल–दिन कुछ ही हैं; तायर्क्कु–माताओं की; अटुत्त पणि चॆय्तु–योग्य सेवाएँ करती हुई; इवण् इरुत्ति–यहीं रहो; ऍन्न–ऐसा कहने पर; अच्चुऱु- दहलकर; उटुत्त तुकिलोटुम्–पहने (अकेले) वस्त्र के साथ; उयिर् उक्क–प्राणरहित-से; उट लोटुम्–शरीर के साथ; ऍटुत्त मुनिवोटुम्–उठे क्रोध के साथ; अयल् निन्ऱतुम्–मेरे पास आकर जो खड़ी हुईं; इचॆप्पाय्–वह कहो । ५४९

श्रीराम ने आपको समझाया कि काननमार्गगमन कष्ट का आह्वान होगा । आखिर थोड़े ही दिन हैं ! माताओं की आवश्यक सेवा करती हुई इधर ही रह जाओ । पर आप दहलकर पहने हुए अकेले वस्त्र ही के साथ, प्राणहीन-से शरीर के साथ और उठे क्रोध के साथ उनके पास जाकर खड़ी हो गयीं । श्रीराम ने मुझसे कहा कि यह बात तुम उनसे कहो । ५४९

❀ नीण्डमुडि वेन्दनरु ळेन्दिनिऱै शॆल्वम्
पूण्डदन्नै नीङ्गिनॆऱि पोदलुऱु नाऴिन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आण्डनह रारैयोडु वायिलह लामुन्
याण्डैयदु कानॅन्नवि शैत्तदुमि शैप्पाय् 550

नीण्ट मुटि–बड़े किरीटधारी; वेन्तत्–चक्रवर्ती की; अरुळ् एन्ति–कृपापूर्ण आज्ञा धारण करके; निरै चॅल्वम् पूण्टु–विशाल धन अपनाकर; अतनै नीङ्कि–फिर उसे छोड़कर; नॅरि पोतल् उऱु–जंगल की राह जाने के; नाळिल्–दिन में; आण्टु–तब; अ नकर्–उस नगर के; आरै ऑटु वायिल्–प्राचीर के राजद्वार से; अकला मुन्–निकलने से पहले ही; कान् याण्टैयतु–जंगल कहाँ रहता है; ऍन–ऐसा; इचैत्ततुम्–देवी का पूछना भी; इचैप्पाय्–तुम उनसे कहो। ५५०

'दीर्घ किरीटधारी (किरीट बड़ा था और शासनकाल भी लम्बा —दोनों अर्थ हैं।) चक्रवर्ती की आज्ञा धारण करके पहले राज्य-धन को स्वीकृत किया; फिर उसे छोड़कर जंगल की राह ली मैंने। तब सीताजी प्राचीर के राजद्वार छोड़ने से पूर्व ही मुझसे पूछ बैठीं कि जंगल कहाँ है? (अभी दिखायी नहीं देता!) यह उन्हें स्मरण दिलाओ।' (तुलसी की कवितावली में भी यही बात आती है।)। ५५०

❀ ऍळ्ळरिय तेर्दरु शुमन्दिर निशैप्पाय्
वळ्ळन्मॊऴि वाशह मॅन्तत्तुयर् मऱन्दाळ्
किळ्ळैयॊडु पूवैहळ् किळर्त्तल्किळ वॅन्नुम्
पिळ्ळैयुऱै यिन्ऱिऱ मुणर्त्तुदि पॅयर्त्तुम् 551

ऍळ्ळरिय–अनिंद्य; तेर् तरु–रथचालक; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र के; वळ्ळल् मॊऴि–अर्थपूर्ण; वाचकम् इचैप्पाय्–सन्देश-वचन कहिए; ऍन–कहने पर; तुयर् मऱन्ताळ्–अपना दुःख भूलकर; किळ्ळैयॊटु पूवैकळ्–शुकों के साथ सारिकाएँ; किळर्त्तल्–पालना; किळ–कहिए; ऍन्नुम्–ऐसा कहने में; पिळ्ळै उरैयिन् तिऱम्–(जो) नादान शिशु-वचन का गुण है; पॅयर्त्तुम्–(वह) फिर से; उणर्त्तुति–स्मरण कराओ। ५५१

अनिंद्य रथ के सारथी सुमन्त्र ने सीता से कहा कि देवी! अर्थपूर्ण वाक्यों में अपना संदेश-वचन कहें। तब सीताजी ने अपना कष्ट भूलकर कहा कि शुक-सारिकाओं को ठीक तरह से पालना —यह सन्देश पहुँचा दीजिए। शिशु-सम कपटहीन उसके वचन का प्रकार उसे स्मरण कराओ। ५५१

❀ मीट्टुमुरै वेण्डुवन विल्लैयॅन मॅय्प्पेर्
तीट्टियदु तीट्टरिय शॅय्हैयदु शॅव्वे
नीट्टिदॅन नेर्न्दनन्नॅ नानॅडिय कैयाल्
काट्टिनन्नॊ राऴियदु वाणुदलि कण्डाळ् 552

मीट्टुम्–फिर भी; उरै वेण्टुवन इल्लै–कहना कुछ नहीं चाहिए; ऍन–ऐसा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कहकर; मॅय्प्पेर् तीट्टियतु–मेरा सच्चा नाम अंकित है; तीट्टरिय चॅय्कैयतु–दुर्लभ रचना-कौशल से बना है; चॅव्वे नीट्टु–सामने बढ़ाओ; इतु–इसे; ऍऩ–कहकर; नेर्न्ततऩ्–(श्रीराम ने) मेरे पास दिया; ऍऩा–कहकर; ओर् आऴि–एक मणि-मुँदरी को; नॅटिय कैयाल्–अपने लम्बे हाथ में ले; काट्टिऩऩ्–दिखाया; अतु–उसको; वाळ् नुतलि–उज्ज्वल भाल वाली देवी ने; कण्टाळ्–देखा। ५५२

श्रीराम ने आगे कहा कि फिर कुछ कहना नहीं है। फिर उन्होंने एक दिव्य मुँदरी मुझे दी और कहा कि इसमें मेरा सत्यनाम अंकित है। दुर्लभ कारीगरी से युक्त है। इसे तुम सीताजी के पास दे दो। ऐसा कहकर हनुमान ने अपना लम्बा हाथ बढ़ाकर एक सुन्दर मुँदरी दिखायी। उज्ज्वल भाल वाली सीता ने उसे देखा। ५५२

❀इऱन्दवर् पिऱन्दपय नॅय्दिऩर्कॊ लॅऩ्गो
मऱन्दव ररिन्दुणर्वु वन्दऩर्कॊ लॅऩ्गो
तुऱन्दवुयिर् वन्दिडैतॊ डर्न्ददुकॊ लॅऩ्गो
तिऱन्दॅरिव दॅऩ्ऩॅकॊलि नऩ्ऩुदलि शॅय्है 553

इ नल् नुतलि–इन सुन्दर भाल वाली देवी का; चॅयकै–कृत्य; इऱन्तवर्–निरर्थक जीवन बितानेवाले ने; पिऱन्त पयऩ् ऍयतिऩर्–सफल जन्म का फल पा लिया हो; चॅय्कै कॊल् ऍऩ्को–उसका-सा कृत्य है कहूँ; मऱन्तवर्–जो किसी को भूल गये; अऱिन्तु–उसने उसको जानकर; उणर्वु वन्तऩर्–सुधि कर ली; चॅय्कै कॊल् ऍऩ्को–उसका-सा कृत्य कहूँ; तुऱन्तु–प्राण छूटकर; अ उयिर्–फिर वे प्राण; वन्तु–आकर; इटै तॊटर्न्ततु कॊल्–मध्य में लग गये; ऍऩ्को–कहूँ; तिऱम् तॅरिवतु–प्रकार जानना; ऍऩ्ऩै कॊल्–कैसा। ५५३

तब सुन्दर ललाटिनी सीताजी ने जो मोद-चेष्टाएँ प्रगट कीं उनको क्या कहा जाय? जिसने योग्य कर्म न करके अपना जीवन व्यर्थ किया उसे कृतार्थ-जन्म का फल मिल गया तो उसकी स्थिति जैसी होगी वैसी ही सीताजी की रही। —यह कहूँ? या— विस्मृति के बाद स्मृतिप्राप्त मनुष्य की-सी रही —कहूँ? या छूटे प्राण फिर बीच में ही आ गये —वैसी स्थिति उनकी हो रही —यह कहूँ? उनकी स्थिति का प्रकार कैसे जानूँ और वर्णन करूँ। ५५३

इऴन्दमणि पुऱ्ऱर वॅदिर्न्ददॅऩ लाऩाळ्
पऴन्दऩ मिऴन्दऩ पडैत्तवरै यॊत्ताळ्
कुऴन्दैयै युयिर्त्तमल डिक्कुवमै कॊण्डाळ्
ऒऴिन्दविऴि पॅऱ्ऱदॊ रुयिर्प्पॊऱैयु मॊत्ताळ् 554

पुऱ्ऱु अरवु–बिल-वासी सर्प; इऴन्त मणि–अपने खोये नागरत्न को; ऍतिर्न्ततु–प्राप्त कर गया हो; ऍऩल् आऩाळ्–ऐसा बनीं; इऴन्तऩ–खोये गये; पऴम् ततम्–प्राचीन धनों को; पटैत्तवरै–जिन्होंने पा लिया उनके; ऒत्ताळ्–समान बनीं;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मलटि–वंध्या; कुळन्तैयै उयिर्त्ततर्कु–पुत्र पा गयी हो उसकी; उवमै कॊण्टाळ्–उपमा बनीं; ऒळिन्त विऴि–खोयी दृष्टि; पॆऱ्ऱतीर् उयिर्प्पॊऱैयुम्–जिसने पा ली उस जीवधारी शरीर के; ऒत्ताळ्–समान भी बनीं। ५५४

वे उस सर्प के समान हो रहीं, जिसने अपना (नाग-) रत्न खोकर फिर से पा लिया हो। खोये प्राचीन धन को फिर से प्राप्त करनेवाले मनुष्य के समान भी हो गयीं। वंध्या ने पुत्र को जन्म दिया हो जैसी उनकी स्थिति हुई। और खोयी दृष्टि को जिसने पुनः प्राप्त कर लिया, उस जीव की जैसी भी हो गयीं। ५५४

वाङ्गिऩण् मुलैक्कुवैयिल् वैत्तऩळ् शिरत्ताल्
ताङ्गिऩण् मलर्क्कण्मिशै यॊत्तिऩ डऩ्दोळ्
वीङ्गिऩण् मॆलिन्दऩळ् कुळिर्न्दऩळ् वॆदुप्पो
डेङ्गिऩ ळुयिर्त्तऩळि दिऩ्ऩदॆऩ लामे 555

वाङ्किऩळ्–(देवी ने) उसे लिया; मुलैक् कुवैयिल् वैत्तऩळ्–स्तनाग्र पर रखा; चिरत्ताल् ताङ्किऩळ्–सिर पर धारण किया; मलर् कण् मिचै–कमल-सी आँखों पर; ऒत्तिऩळ्–(बार-बार रखा; तटम् तोळ्–विशाल भुजाएँ; वीङ्किऩळ्–फूल गयीं ऐसी हो गयीं; कुळिर्न्तऩळ्–शीतल-(मुदित)-मना हुईं; मॆलिन्तऩळ्–दुर्बल हुईं; वॆतुप्पोटु–मुरझाकर; एङ्किऩळ्–तरसीं; उयिर्त्तऩळ्–दीर्घ निःश्वास छोड़े; इतु–यह; इऩ्ऩतु ऎऩल्–(क्यों) ऐसा है कहना; आमे–हो सकता है क्या। ५५५

सीतादेवी ने उस मणि-मुँदरी को हाथ में लिया। फिर कुचाग्र पर रखा। सिर पर धारण कर लिया। पंकज-नेत्रों पर रखा। उनकी भुजाएँ फूल उठीं। उनका मन शान्त-शीतल हुआ। श्रीराम का स्मरण कर क्षीण हुईं। मुरझायीं और तरसने लगीं। लम्बी साँसें छोड़ने लगीं। यह स्थिति क्या है —यह कहा जा सकता है क्या ?। ५५५

❀ मोक्कुमुलै वैत्तुऱमु यङ्गुमिऴि नऩ्ऩीर्
नोक्किनिऱै कण्णिणैत तुम्बनॆडु नीळ
नोक्कुनुव लक्करुदु मॊऩ्ऱुनुवल् हिल्लाळ्
मेक्कुनिमिर् विम्मलळ्वि ळङ्गलुऱु हिऩ्ऱाळ् 556

मोक्कुम्–(सीताजी) सूँघतीं; मुलै वैत्तु–स्तनों पर रखकर; उऱ मुयङ्कुम्–गाढ़ा आलिंगन करतीं; इऴि–नीचे की ओर बहनेवाले; निऱै नल् नीर्–अधिक आनन्दाश्रुजल को; नोक्कि–पोंछकर; कण् इणै–दोनों आँखों में; ततुम्प–फिर से अश्रु के भरते; नॆटु नीळ नोक्कुम्–बहुत देर तक उसे देखतीं; नुवलक् करुतुम्–(उससे) बात करना चाहतीं; ऒत्ऱुम् नुवल् किल्लाळ्–कुछ कह नहीं पातीं; मेक्कु निमिर्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाली; विम्मलळ्–तरस के साथ; विऴुङ्कल् उऱुकिऩ्ऱाळ्–उसको दबाने का प्रयास करतीं। ५५६

और सीताजी ने उसे सूँघा। स्तनों पर रखकर कस लिया। जो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आँखों से आनन्दाश्रुजल बहा उसे पोंछा। फिर भी उनकी आँखों में आँसू भर आये। उसी स्थिति में उन्होंने उस पर दृष्टि जमा की। कुछ उससे कहना चाहा; पर कुछ नहीं कहा। उत्तरोत्तर बढ़नेवाली आतुरता से भर गयीं; पर उसे दबा लिया। ५५६

नीण्डविऴि नेरिऴैतन् मिन्नितिऱ मॆल्लाम्
पूण्डदॊऴिर् पॊन्नतैय पॊम्मतिऱ मॆय्ये
आण्डहैदन् मोदिरम डुत्तपॊरु ळॆल्लाम्
तीण्डळविल् वेदिहैशॆय् दॆय्वमणि कॊल्लो 557

नीण्ट विऴि नेरिऴै तन्–आयताक्षी (सीता) का; मिन्नितिन् निऱम् ऍल्लाम्–बिजली-सम कान्तियुत रूप सब; ऒळिर् पॊन् अतैय–ज्वलन्त स्वर्ण-सम; पॊम्मल् निऱम्–चमकदार रंग से; पूण्टतु–रंगीन हो गया; आण्टकै तन्–पुरुष-श्रेष्ठ की; मोतिरम् अटुत्त–दिव्य मणिमुँदरी से लगे; पॊरुळ् ऍल्लाम्–पदार्थ सारे; तीण्टु अळविल्–स्पर्श करते ही; वेतिकै चॆय्–बदलनेवाली; मॆय्ये–सचमुच ही; तॆय्व मणि कॊल्लो–दिव्य रसायन-मणि है क्या। ५५७

आयताक्षी सीताजी का चमकता सारा शरीर ज्वलन्त स्वर्णवर्ण का हो गया। पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम की मुँदरी के सम्पर्क में आये सभी पदार्थों ने स्पर्शमात्र से रंग बदल लिया। क्या वह सचमुच एक पारसमणि थी ?। ५५७

❀ इरुन्दुपशि यालिडरु ळन्दवर्ह ळॆय्दुम्
अरुन्दुममु दाहियद ऱत्तवरै यण्डुम्
विरुन्दुमॆन लाहियदु वीयुमुयिर् मीळुम्
मरुन्दुमॆन लाहियदु वाऴिमणि याऴि 558

मणि आऴि–वह मणिमुँदरी; पचियाल्–भूख के साथ; इरुन्तु–रहकर; इटर् उळन्तवर्कळ्–जो दुःखी रहे; ऍय्तुम्–उन्हें प्राप्त; अरुन्तुम् अमुतु–भोज्य अमृत; आकियतु–बनी; अऱत्तवरै–गृहस्थ-धर्म-रत लोगों के; अण्मुम्–पास आये; विरुन्तुम्–अतिथि; ऍतल् आकियतु–के समान बनी; वीयुम् उयिर्–मरे प्राणों को; मीळुम् मरुन्तुम् ऍतल्–लौटानेवाली औषध के समान भी; आकियतु–बनी; वाऴि–जिए वह। ५५८

वह मुँदरी भूख से पीड़ित लोगों को प्राप्त भोज्य अमृत-सा रहा। गृहस्थधर्मरत लोगों के पास आये अतिथि के समान रहा। गये प्राणों को लौटानेवाली औषध के समान भी रहा। जिए वह मणि-मुँदरी !। ५५८

❀ इत्तहैय ळाहियुयि रेमुऱवि ळङ्गुम्
मुत्तनहै याळ्विऴियि ऩालिमुलै मुन्ऱिल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तत्तियुह मॅन्गुदलै तळ्ळवुयिर् तन्दाय्
उत्तमवॅ नाविनैय वाशहमु रैत्ताळ् 559

इत्तकैयळ् आकि–इस तरह की बनकर; उयिर–प्राणों के; एम् उऱ–लहलहाते; विळङ्कुम्–शोभायमान; मुत्त नकैयाळ्–मोतियों के समान दाँतों वाली; विळियिन् आलि–आँखों की बूँदों के; मुलै मुन्ऱिल् तत्ति–कुचाग्र पर गिरकर उछलकर; उक–नीचे गिरते; मॅन् कुतलै–कोमल तुतली बोली; तळ्ळ–लड़खड़ाये ऐसा; उत्तम–उत्तम; उयिर् तन्ताय्–प्राणदान किया; ऍन्ना–कहकर; इनैय वाचकम्–ये वाक्य; उरैत्ताळ्–(हनुमान से) बोलीं। ५५९

सीताजी इस स्थिति में आयीं। उनके प्राण लहलहा उठे। उज्ज्वल दाँतों से युक्त देवी के अश्रु उनके स्तनाग्र पर गिरे, उछले और नीचे जा रहे। उनकी मधुर बोली गद्गद हो गयी। उन्होंने उद्गार निकाली कि उत्तम, तुमने मुझे प्राणदान किया। वे आगे यों बोलीं। ५५९

❀ मुम्मैया मुलहन् दन्द मुदल्वऱ्कु मुदल्वन् ऱूदाय्च्
चॅम्मैया लुयिर्तन् दाय्क्कुच् चॅयलॅन्ना लॅळिय दुण्डे
अम्मैया यप्प नाय वत्तनै यरुळिन् वाळ्वे
इम्मैये मऱुमै दानु नल्हिनै यिशैयो डॅन्ऱाळ् 560

मुम्मैयाम्–त्रिविध (स्वर्ग, भूमि, पाताल) के; उलकम् तन्त–लोकों के सर्जक; मुतल्वऱ्कु–आदिदेव ब्रह्मा के भी; मुतल्वन्–धाता श्रीराम का; तूताय्–दूत बनकर; चॅम्मैयाल्–अपने कौशल से; उयिर् तन्ताय्क्कु–तुमने मुझे प्राणदान किया, ऐसे तुम्हारे प्रति; ऍन्नाल् चॅयल्–मेरा प्रत्युपकार; ऍळियतु उण्टे–सुलभ है क्या; अम्मैयाय् अप्पनाय–माता हो, पिता हो; अत्तनै–दैव हो; अरुळिन् वाळ्वे–दया के जीवाधार; इम्मैये मऱुमै तानुम्–इह और पर (सुख) को; इचैयोटु–यश के साथ; नल्किनै–मुझे दिया; ऍन्ऱाळ्–कहा (सीताजी ने)। ५६०

त्रिविध लोकों के आदिनाथ ब्रह्मा के भी आदि हैं, विष्णु के अवतार श्रीराम। उनका दूत बनकर तुम आये और अपने सामर्थ्य से मुझे प्राणवान बनाया। ऐसे तुम्हें प्रत्युपकार में क्या दे सकूँगी ? क्या प्रत्युपकार उतना सुगम है ? माता हो तुम; पिता भी ! दैव भी तुम्हीं हो। करुणा के जीवनाधार ! तुमने इह-पर दोनों सुख दिलाया और वह भी यश-सहित ! । ५६०

❀ पाळिय पणैत्तोळ् वीर तुणैयिलेन परिवु तीर्त्त
वाळिय वळ्ळ लेयान् मऱुविला मनत्ते नॅन्निन्
ऊळियोर् पहला योदुम् याण्डॅला मुलह मेळुम्
एळुम्वी वुऱ्ऱ ञानऱु मिन्ऱॅन विरुत्ति यॅन्ऱाळ् 561

पाळिय–सशक्त; पणै तोळ् वीर–स्थूल कन्धों वाले वीर; तुणैयिलेन्–असहाय मेरा; परिव तीर्त्त–दुःखनिवारक; वळ्ळले–उदार पुरुष; यान्–मैं; मऱु इला

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मतत्तेन्-निष्कलंकमन हूँ; ऍन्तिल्-तो; ऊऴि ओर् पकलाय्-एक युग की एक दिन की गणना से; ओतुम् याण्टु ऍलाम्-गणित सारे वर्ष; उलकम् एऴुम् एऴुम्-चौदहों भुवन; वीवु उऱ्ऱ जात्तुम्-जब मिट जायँगे उस महाप्रलयकाल में भी; इन्ऱु ऍन्त-आज के समान; वाऴिय इरुत्ति-जीते रहो; ऍन्ऱाळ्-ऐसा आशीर्वाद दिया। ५६१

सबल और स्थूल कन्धों वाले वीर ! मैं निःसहाय थी। मेरा दुःख दूर करनेवाले उदार पुरुष ! अगर मैं अकलंक पवित्रमना हूँ, तो एक युग को एक दिन बनाकर अनेक वर्षों तक जिओ; चौदहों लोकों के नाश होने के बाद भी तुम आज के जैसे जीवित रहोगे। ऐसा देवी ने हनुमान को आशिष दी। ५६१

मीण्डुरै विळम्ब लुऱ्ऱाळ् विऴुमिय कुणत्तोय् वीरन्
याण्डैया ऩिळव लोडु मॅव्वऴि यॅय्दिऱ् ऱुन्नै
आण्डहै यडियेन् ऱन्नै यार्शॊल वऱिन्दा नॅन्ऱाळ्
तूण्डिरण् डनैय तोळा नुऱ्ऱदु शॊल्ल लुऱ्ऱान् 562

मीण्टु-फिर; उरै विळम्पल् उऱ्ऱाळ्-वचन कहने लगीं; विऴुमिय-श्रेष्ठ; कुणत्तोय्-गुणों वाले; वीरन्-श्रीरघुवीर; इळवलोटुम्-अपने लघु भाई के साथ; याण्टैयान्-कहाँ हैं; ऍव्वऴि-कहाँ; ऍय्तिऱ्ऱु उन्नै-तुम्हें प्राप्त हुए; आण्टकै-पुरुषश्रेष्ठ ने; अटियेन् तन्नै-दासी मेरे बारे में; यार् चॊल-किसके कहने पर; अऱिन्तान्-जाना; ऍन्ऱाळ्-पूछा (देवी ने); तूण् तिरण्टनैय-स्थूल खम्भे-से; तोळान्-कन्धों वाले ने; उऱ्ऱतु-घटी कहानी; चॊल्लल् उऱ्ऱान्-कहना आरम्भ किया। ५६२

वे और भी बोलीं। श्रेष्ठ गुणों वाले ! अब श्रीरघुवीर और उनके लघुवीर कहाँ हैं ? वे तुमसे कहाँ मिले ? मेरे बारे में किसके कहने से उन्होंने जाना ? यह प्रश्न सुनकर स्थूल स्तम्भ-सम कन्धों वाले हनुमान ने उत्तर में यों कहना आरम्भ किया। ५६२

उऴैक्कुलत् तिशैयु माय वुरुवुकॊण् डुऱुदल् शॅय्दान्
मऴैक्करु निऱत्तु माय वरक्कन्मा रीश नॅन्बान्
इऴैत्तड मार्बत् तण्ण लॅय्यप्पोय् वैयऱ् जेर्वान्
अऴैत्तवल् लोशै युन्नै मयक्कुदऱ् कण्णल् शॊल्लाल् 563

मऴै करु निऱत्तु-मेघ-सम काले रंग का; मारीचन् ऍन्पान्-मारीच कथित; माय अरक्कन्-मायावी राक्षस; उऴै कुलत्तु इचैयुम्-हरिण की जाति से मिला हुआ; माय उरुवु कॊण्टु-माया-रूप धरकर; उऱुतल् चॅय्तान्-आया; इऴै तट मार्पत्तु-आभरणालंकृत विशाल वक्ष वाले; अण्णल्-महिमामय श्रीराम के; ऍय्य-शर चलाने पर; पोय्-जाकर; वैयम् चेर्वान्-भूमि पर गिरा; अण्णल् चॊल्लाल्-महिमावान श्रीराम के-से स्वर में; अऴैत्त-जो टेर लगायी; वल् ओचै-वह उच्च नाद; उन्नै मयक्कुतऱ्कु-आपको भ्रम में डालने के लिए था। ५६३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेघ-सम काले रंग का मायावी और मारीच नामक राक्षस मृग जाति का झूठा रूप धारण कर आया। आभरणालंकृत विशाल वक्षःस्थल वाले श्रीराम के शर चलाने पर वह भूमि पर गिरा। तब महिमावान श्रीराम के स्वर में उसने जो पुकारा, वह तुमुल नाद आपको भ्रम में डालने के लिए ही था। ५६३

इक्कुर लिळवल् केळा दॊळिहॆन विरैव निट्टान्
मॆय्क्कुरऱ् चाबम् बिन्नै विळैन्ददु विदियिन् मॆय्म्मै
पॊय्क्कुर लिन्रु पॊल्लाप् पॊरुळ्पिन्नर् पयक्कु मॆन्बान्
कॆक्कुरल् वरिविल् लानु मिळैयवन् वरवु कण्डान् 564

इरैवन्–भगवान श्रीराम; इक् कुरल्–यह ध्वनि; इळवल् केळातु–लघु भाई के सुनने में न आकर; ऒळिक–दब जाय; ऎन्न–ऐसा सोचकर; मॆय् कुरल्–सच्चे स्वर को; चापम् इट्टान्–अपने चाप से पैदा किया; पिन्नै विळैन्ततु–बाद जो घटा; वितियिन् मॆय्म्मै–विधि की सच्ची करतूत है; पॊय्क्कुरल्–मारीच का मिथ्यानाद; इन्रु–अभी; पिन्नर्–बाद; पॊल्ला पॊरुळ् पयक्कुम्–विपरीत हानिकारक कार्य करा देगा; ऎन्पान्–ऐसा सोचकर; कॆ कुरल्–हाथ में रहे; वरि विल्लानुम्–सबन्ध धनु के धारक श्रीराम ने भी; इळैयवन् वरवु–छोटे भाई का आना; कण्टान्–देखा। ५६४

श्रीराम ने चाहा कि यह ध्वनि छोटा भाई न सुने। इसलिए उन्होंने अपने सत्य-धनु का स्वन निकाला। फिर जो घटनाएँ घटीं, वे असल में विधि की करतूत हैं। मारीच का मिथ्या स्वर अवश्य कुछ अनर्थ करनेवाला है —इस डर के साथ आनेवाले सबन्धधनुर्हस्त श्रीराम ने अपने भाई को आता देख लिया। ५६४

कण्डपि निळैय वीरन् मुहत्तिन्नाऱ् करुत्तै योर्न्द
पुण्डरि हक्क णानु मुऱ्ऱदु पुहलक् केट्टान्
वण्डुऱै शालै वन्दा निन्ऱिरु वडिवु काणान्
उण्डुयि रिरुन्दा निन्न लुळत्तऱ्के वेदु वन्ऱो 565

कण्ट पिन्–देखने के बाद; इळैय वीरन् मुकत्तिन्नाल्–छोटे वीर के मुखभाव से; करुत्तै–उनके मन का भाव; ओर्न्त–जो ताड़ गये; पुण्टरिकक् कणानुम्–उन पुण्डरीकाक्ष ने भी; उऱ्ऱतु–जो बीता; पुकल–उसको लक्ष्मण के कहने पर; केट्टान्–सुना; वण्टु उऱै–भ्रमर जहाँ रहते थे; चालै वन्तान्–उस पर्णशाला में आये; निन् तिरु वटिवु–आपका दिव्य रूप; काणान्–न देखा; उयिर् उण्टु इरुन्तान्–केवल प्राण ही रहे, ऐसी स्थिति में रहे; इन्नल् उळत्तऱ्के–कष्ट उठाने का; एतु अन्ऱो–हेतु नहीं था क्या। ५६५

श्रीराम ने लक्ष्मण को देखा, उनकी मुखमुद्रा से मन का भाव ताड़ लिया। पुण्डरीकाक्ष ने लक्ष्मण के मुख से बीता समाचार सुना। फिर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वे आश्रम में आये, जहाँ तरुओं के पुष्पों के कारण भ्रमर खूब मँड़रा रहे थे। वहाँ उन्होंने आपका श्रीरूप नहीं देखा। तब उनकी स्थिति ऐसी हो गयी कि केवल प्राण ही रह गये, शरीर निस्पन्द-सा हो गया। क्या वह स्थिति दुःख का हेतु नहीं थी ? । ५६५

अन्निलै याय वण्ण लाण्डुनिन् ऱन्नै निन्नैत्
तुन्नरुङ् गानुम् याऱु मलैहळुन् दॊडर्न्दु नाडि
इन्नुयि रिन्ऱि येहु मॆन्दिरप् पडिव मॊप्पान्
तन्नुयिर् पुहळ्क्कु विऱ्ऱ शडायुवै वन्दु शार्न्दान् 566

अन्नै–माते; अन् निलै आय–उस स्थिति में जो पड़े; अण्णल्–महिमावान श्रीराम; इन् उयिर् इन्ऱि–प्यारे प्राणों से रहित; एकुम्–चलनेवाले; ऎन्तिर पटिवम् ऒप्पान्–यन्त्ररूप रहे; आण्टु निन्ऱु–वहाँ से; निन्नै–आपको; तुन् अरुम्–अगम; कानुम्–वनों; याऱुम् मलैकळुम्–नदियों और पर्वतों पर; तॊटर्न्तु नाटि–क्रम से खोजते हुए; तन् उयिर्–अपने प्राणों को; पुकळ्क्कु विऱ्ऱ–यश के बदले जिन्होंने दे दिये; चटायुवै वन्तु चार्न्तान्–जटायु के पास आ पहुँचे। ५६६

माते ! उस स्थिति में श्रीराम प्राणहीन चलने वाले यंत्रवत हो गये। वहाँ से चलकर वे अगम जंगलों, पर्वतों और नदियों पर खोजते हुए उस स्थान पर आये, जहाँ प्राण देकर यशस्वी हुआ जटायु पड़ा हुआ था। (प्राणों का दान देकर यश का खरीदार जो बना –यह सरस प्रयोग है।) । ५६६

वन्दवन् मेनि नोक्कि वानुयर् तुयरिन् वैहि
ऎन्दैनी युऱ्ऱ तन्मै यियम्बॆन विलङ्गै वेन्दन्
शुन्दरि निन्नैच् चॆय्द वञ्जनै शॊल्लच् चॊल्ल
वॆन्दन वुलह मॆन्न निमिर्न्ददु शीऱ्ऱ वॆन्दी 567

चुन्तरि–सुन्दरी देवी; वन्तु–आकर; अवन् मेनि नोक्कि–उसका शरीर देखकर; वान् उयर्–बहुत अधिक; तुयरिन् वैकि–दुःख में पड़कर; ऎन्नै–पितृतुल्य; नी–आप; उऱ्ऱतन्मै–इस स्थिति को प्राप्त होने का प्रकार; इयम्पु–कहिए; ऎन्न–पूछा; इलङ्कै वेन्तन्–लंकाधिपति ने; निन्नै चॆय्त–आपके प्रति जो किया; वञ्चनै चॊल्ल चॊल्ल–वह वंचक काम वर्णन करते-करते; चीऱ्ऱ वॆम् ती–श्रीराम की भयंकर क्रोधाग्नि; उलकम् वॆन्तन ऎन्न–सारे लोक जल गये, ऐसा भय पैदा करते हुए; निमिर्न्ततु–उठी। ५६७

सुन्दरी देवी ! श्रीराम ने उसके शरीर पर दृष्टि डाली। उन्हें अत्यधिक दुःख हुआ। उन्होंने उससे पूछा कि तात ! इस स्थिति को कैसे प्राप्त हुए ? वह प्रकार बताइए। जटायु ने रावण का आपके प्रति किया हुआ वंचक काम कहा। ज्यों-ज्यों वह कहता जाता था, त्यों-त्यों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीराम की कोपाग्नि ऐसी उठ बढ़ी मानो सारे लोकों को जला डालेगी । ५६७

शीऱियिव् वुलह मून्ऱुन् दीन्दुहच् चिऩवा यम्बाल्
नूऱुवॆ ऩॆन्ऱु कैवि ऩोक्कियं कालै नोक्कि
ऊऱॊरु शिऱियोऩ् शॆय्य मुऩिदियो वुलहै युळ्ळम्
आऱुदि यॆन्ऱु तादै याऱ्ऱलिऱ् चीऱ्ऱ माऱि 568

चीऱि–कुपित होकर; इ उलकम् मून्ऱुम्–ये तीनों लोक; तीन्तु उक–जलकर भस्म हो जायँ ऐसा; चिऩवाय् अम्पाल्–कोपमुख शरों से; नूऱुवॆन् ऎन्ऱु–मिटा दूँगा कहकर; कै विल्–अपने हाथ के धनु को; नोक्किय कालै–जब श्रीराम ने देखा तब; तातै–तात जटायु ने; नोक्कि–देखकर; ऒरु चिऱियोऩ्–एक अल्प (राक्षस) के; ऊऱु चॆय्य–दुःख देने पर; उलकै मुऩितियो–लोकों पर गुस्सा करोगे क्या; उळ्ळम् आऱुति–मन शान्त करो; ऎन्ऱु–कहकर; आऱ्ऱलिऩ्–आश्वस्त करने पर; चीऱ्ऱम् आऱि–कोप शान्त करके । ५६८

कुपित होकर श्रीराम ने यह कहते हुए अपने धनु को निहारा कि सारे लोकों को जलाकर भस्म करते हुए मिटा दूँगा । तब पिता-सम जटायु ने उनका गुस्सा देखकर कहा कि किसी क्षुद्र ने तुम्हें कष्ट दिया तो तुम प्रपञ्च पर गुस्सा उतारोगे क्या ? मन को शान्त करो । उनके आश्वासन देने पर श्रीराम ने अपना कोप शान्त करके (पूछा) । ५६८

ऎव्वळि यॆय्दिऱ् ऱऩ्ऩाऩ् याण्डैया ऩुऱैयुळ् यादु
शॆव्वियोय् कूऱु हॆऩ्ऩच् चॆप्पुवा ऩुऱ्ऱ कालै
वॆव्विय विदियिऩ् कॊट्पाल् वीडिऩाऩ् कळुहिऩ् वेन्दऩ्
ऎव्वियल् वरिविऱ् चॆङ्गै यिरुवरु मिडरिऩ् वीळ्ऩ्दार् 569

चॆव्वियोय्–श्रेष्ठ गुण वाले; अऩ्ऩाऩ्–वह; ऎव् वळि–किस मार्ग पर; ऎय्तिऱ्ऱु–गया; याण्टैयाऩ्–कहाँ का है; उऱैयुळ् यातु–वासस्थान कौन सा; कूऱुक ऎऩ्ऩ–कहो, पूछने पर; कळुकिऩ् वेन्तऩ्–गीधों के राजा ने; चॆप्पुवाऩ् उऱ्ऱ कालै–जब कहना आरम्भ किया तब; वॆव्विय वितियिऩ्–क्रूर विधि के; कॊट्पाल्–विधान से; वीटिऩाऩ्–जटायु मर गया; ऎव्वु इयल्–शरप्रेरक; वरिविल् चॆङ्कै–सबन्ध धनु वाले सुन्दर हाथों के; इरुवरुम्–दोनों; इटरिऩ् वीळ्ऩ्तार्–दुःख में गिर गये । ५६९

श्रेष्ठ गुण वाले ! वह रावण किस मार्ग पर गया ? वह कहाँ का है ? उसका निवासस्थान कौन सा है ? तब गीधों के राजा उत्तर देने ही लगे थे कि क्रूर विधि के विधान से वे मर गये । शरप्रेरक सबन्ध धनुर्धर लाल (सुन्दर) हाथों वाले वीर, श्रीराम और लक्ष्मण शोकमग्न हो गये । ५६९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अयर्त्तव ररिदिऱ् ऱेऱि याण्डॊऴिऱ् ऱादैक् काण्डुच्
चॆयत्तहु कडन्गळ् यावुन् देवरु मरुळच् चॆय्दार्
कयत्तॊऴि लरक्कन् ऱन्नै नाडिनाङ् गाण्डु मॆन्नाप्
पुयऱ्ऱॊडु कुडुमिक् कन्ऱुङ् कानमुङ् गडिदु पोनार् 570

अयर्त्तवर्–जो शिथिल हुए, उन्होंने; अरितिल् तेऱि–बहुत कष्ट के साथ सँभलकर; आण् तॊऴिल्–पुरुषोचित कार्य जो कर चुका; तातैक्कु–उस पिता के; आण्टु–तब; चॆयत्तकु–कर्तव्य; कटन्कळ् यावुम्–दाहकर्म सब; तेवरुम् मरुळ–देव भी चकित हों, ऐसा; चॆय्तार्–किये; कय तॊऴिल्–नीचकर्म; अरक्कन् तन्नै–राक्षस को; नाटि नाम् काण्टुम्–ढूँढ़कर हम देख लेंगे; ऎन्ना–सोचकर; पुयल् तॊटु–मेघस्पर्शी; कुटुमि कुन्ऱुम्–शिखरों वाले पर्वतों पर और; कानमुम्–जंगल में; कटिदु पोनार्–तेज़ चले। ५७०

शिथिल पड़े वे कष्ट के साथ सँभले। फिर उन्होंने पुरुषोचित काम करके जो मरे थे, उन पिता-सम जटायु का कर्तव्य दाहकर्म आदि इतनी अच्छी तरह पूरा किया कि देवगण भी विस्मित और चकित रह गये। फिर वे यह संकल्प लेकर मेघस्पर्शी शिखरों वाले पर्वतों और वनों को पार करके जाने लगे कि हम उसको ढूँढ़कर देखेंगे। ५७०

अव्वऴि निन्नैक् काणा दयर्विना ऩरिदिऱ् ऱेऱिच्
चॆव्वऴि नयनञ् जॆल्लु नॆडुवऴि शेऱु शॆय्य
वॆव्वऴ ऱन्नि लुऱ्ऱ मॆऴुहॆन वऴिय मेनि
इव्वऴि यिनैय पन्नि यऱिवऴिन् दिरङ्ग लुऱ्ऱान् 571

अव्वऴि–उन स्थलों में; निन्नै काणातु–आपको न देखकर; अयर्विनान्–श्लथ होकर; अरितिल् तेऱि–बहुत कष्ट से धीरज धरकर; चॆल्लुम् नॆटु वऴि–जाने का लम्बा मार्ग; नयनम्–उनकी आँखों के (अपने जल से); चॆव्वऴि–खूब; चेऱु चॆय्य–पंक बनाते; वॆव् अऴल् तन्निल्–घोर आग में; उऱ्ऱ–पड़े; मॆऴुकु ऎन–मोम के समान; मेनि अऴिय–शरीर के गलते; इव्वऴि–इस स्थिति में; इनैय पन्नि–ये वचन कहकर; अऱिवु अऴिन्तु–सुध-बुध खोकर; इरङ्कल् उऱ्ऱान्–दुःखी हुए। ५७१

श्रीराम आपको वहाँ कहीं भी न पाकर निर्जीव-से हो गये। फिर बहुत कष्ट के साथ सँभलकर आगे बढ़े। उनके गमन का सारा मार्ग उनकी आँखों से बहती हुई अश्रुधारा से कीच बन गया। घोर आग में पड़े मोम के समान उनका शरीर क्षीण हो गया। उस स्थिति में यों विलापते हुए भ्रान्त मन के साथ अधिक व्याकुल हुए। ५७१

कन्मत्तै ञालत् तवर्यारुळ रेह डन्दार्
पॊन्मॊय्त्त तोळान् मयल्कॊण्डु पुलन्गळ् वेऱाय्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नन्मत्त नाहन् दलैशूडिय नम्ब नेपोल्
उन्मत्त नानान् इनैयोन्रु मुणर्न्दि लादान् 572

ञालत्तवर् उळर्–संसार में रहनेवाले; यारे–कौन ही; कन्मत्तै कटन्तार्–कर्म के बाहर आ सके; पोन् मोय्त्त तोळान्–श्रीनिलयस्कन्ध श्रीराम; मयल् कोण्टु–भ्रान्त होकर; पुलन्नकळ् वेराय्–इन्द्रिय-संवेदना से दूर; तन्नै ओन्रुम् उणर्न्तिलातान्–अपना कुछ न स्मरण करके; नल् मत्तम्–अच्छा धतूरा; नाकम्–और सर्प को; तलै चूटिय–सिर पर धारण करनेवाले; नम्पन्ने पोल्–नायक शिवजी के समान; उन्मत्तन् आनान्–उन्मत्त बने। ५७२

कौन संसारी जीव कर्म को तार सका ? श्रीराम मोहित मन वाले, इन्द्रियों के व्यवहारों से निर्लिप्त हो और अपनी सुध-बुध खोकर सर्प और धतूरे से अलंकृत सिर वाले श्रीशिवजी के समान उन्मत्त हो गये। ५७२

पोदायिन पोदुन तण्बुन लाडल् पोय्यो
शीदापव ळक्कोडि यन्नवट् टेडि येन्गण्
नीदातरु हिर्रिलै येन्नेरुप् पादि येन्नाक्
कोदावरि यैच्चिनङ् गोण्डन्नन् कोण्ड लोप्पान् 573

कोण्टल् ओप्पान्–मेघसदृश श्रीराम; कोतावरियै–गोदावरी से; पोतु आयिन पोतु–जब सूर्योदय हुआ; पवळक्कोटि अन्नवळ्–प्रवालवल्लरी-सी; चीता–सीता का; उन तण् पुनल्–तुम्हारे शीतल जल में; आटल् पोय्यो–स्नान करना झूठ है क्या; अन्नवळ् तेटि–उसको खोजकर; ऎन् कण्–मेरे पास; नी ता–तुम दे दो; तरुकिर्रिलैयेल्–नहीं दोगी तो; नेरुप्पु आति–आग बन जाओगी (आग लगा दूँगा); ऎन्ना–ऐसा; चिनम् कोण्टनन्–कुपित हुए। ५७३

मेघ-सदृश श्रीराम ने गोदावरी को सम्बोधित कर कहा कि गोदावरी ! सूर्योदय के समय जो प्रवालवल्लरी-सी मेरी सीता तुममें स्नान किया करती थी क्या वह असत्य है ? तुम उसे जाकर ढूँढ़ो और मेरे पास लिवा ला दो। अगर नहीं दोगी तो तुम जल जाओगी ! श्रीराम ने गोदावरी पर कोप दिखाया। ५७३

कुन्रेकडि दोडिनै कोमळक् कोम्ब रन्न
ऎन्रेवियैक् काट्टुदि काट्टलै येन्नि निव्वम्
पोन्रेयमै युम्मुनु डैक्कुल मुळ्ळ वेल्लाम्
इन्रेपिळ वावेरि याक्करि याक्क वेन्रान् 574

कुन्रे–हे पर्वत; कटितु ओटिनै–तेज दौड़कर; कोमळ कोम्पर् अन्न–कोमल पुष्पशाखा-सी; ऎन् तेवियै काट्टुति–मेरी देवी को दिखाओ; काट्टलै ऎन्निल्–नहीं दिखाओगे तो; उन् उटै कुलम्–तुम्हारे कुल के; उळ्ळ–जो हैं; ऎल्लाम्–उन सभी को; इन्रे पिळवा–आज ही तोड़कर; ऎरिया–जलाकर; करियाक्क–भस्म कराने के लिए; इ अम्पु ओन्रे–यह शर एक ही; अमैयुम्–पर्याप्त होगा; ऎन्रान्–कहा। ५७४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हे पर्वतो ! जल्दी भागो और कोमल पुष्पशाखा-सी मेरी सीता को मुझे दिखाओ। नहीं दिखाओगे तो तुम्हारे कुल के सारे पर्वतों को चूर-चूर कर दूँगा; जलाकर राख बना दूँगा। यह एक अस्त्र पर्याप्त है वह काम करने के लिए। श्रीराम ने कोप के साथ कहा। ५७४

पॊन्मानुरु वाऱ्चिल मायै पुणर्क्क वन्ऱो
ऍन्मानहल् वुऱ्ऱन ळिप्पॊऴु देन्ग णॆन्ना
नन्मान्गळै नोक्किनुन् नाममु माय्प्पॆ निन्ऱे
विन्मान्गॊलै वाळियि नॆन्ऱु वॆहुण्डु निन्ऱान् 575

पॊन् मान् उरुवाल्–स्वर्ण-हिरण के रूप में; चिल मायै–कुछ माया; पुणर्क्क अन्ऱो–करने से तो; ऍन् मान्–मेरी हरिणी; इप्पॊऴुतु–अब; ऍन् कण्–मुझसे; अकल्वुऱ्ऱतळ्–अलग हो गयी; ऍन्ऩा–कहकर; नन् मान्कळै नोक्कि–असली मृगों को देखकर; विल् मान्–धनु में लगे श्रेष्ठ; कॊलै वाळियिन्–घातक शर से; इन्ऱे–अभी; नुम् नाममुम् माय्प्पॆन्–तुम्हारा नाम ही मिटा दूँगा; ऍन्ऱु–कहकर; वॆकुण्टु निन्ऱान्–कुपित हुए। ५७५

वंचना करनेवाले स्वर्णमृग के वेश में तो छल कर सके ! और मेरी हरिणी-सी सीता मुझसे अलग हो गयी ! हे मृगो ! मैं इन शरों से, जो मेरे धनु से लगने का भाग्य प्राप्त कर चुके हैं और घातक हैं, तुम्हारा नामोनिशान मिटा दूँगा। श्रीराम मृगों पर गुस्सा करके खड़े रहे। ५७५

वेरुऱ्ऱ मनत्तव निन्न विळम्बि नोव
आरुऱ्ऱ नॆञ्जिऱ् ऱनदारुयि रन्न तम्बि
कूऱुऱ्ऱ शॊल्लॆन् ऱुळकोदऱु नन्म रुन्दाल्
तेऱुऱ् ऱुयिर्पॆऱ् ऱियल्बुञ्जिल तेऱ लुऱ्ऱान् 576

वेऱु उऱ्ऱ–बिगड़े हुए; मनत्तवन्–मन वाले श्रीराम; इन्न विळम्पि–यों कहकर; नोव–व्यग्र हुए तब; आऱुऱ्ऱ नॆञ्चिल्–शान्तमन; तन्तु आरुयिर् अन्न–उनके प्यारे प्राण-सम; तम्पि–लघु भ्राता के; कूऱु उऱ्ऱ–कहे हुए; चॊल् ऍन्ऱु उळ–वचन रूपी; कोतु अऱु–दोषहीन; नल् मरुन्ताल्–अच्छे औषध से; तेऱुऱ्ऱु–धैर्य का अवलम्बन कर; उयिर् पॆऱ्ऱु–प्राणवान बनकर; इयल्पुम् चिल–कुछ उपायों को; तेऱल् उऱ्ऱान्–विचारने लगे। ५७६

श्रीराम का मन बिगड़ा हुआ था। वे ऐसी-ऐसी बातें कहते हुए वेदना-विदग्ध हो रहे थे। उनके प्यारे छोटे भाई शान्तमन थे। उन्होंने औषध के समान कुछ शमनकारी वचन कहे। उस पर श्रीराम का धीरज बँधा। उनके प्राण स्वस्थ हुए और आपके प्राप्त्यर्थ उपाय सोचने लगे। ५७६

वन्दानिळै यानॊडु वानुयर् तेरिन् वॆहुम्
नन्दाविळक् किन्वरु मॆङ्गुल नादन् वाळुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शन्दार्तडङ् गुन्ऱिनिऱ् ऱन्नुयिर्क काद लोनुम्
शॅन्दामरैक् कण्णनु नट्टनर् तेव रुय्य 577

वान्–आकाश में; उयर् तेरिन् वैकुम्–श्रेष्ठ रथ पर रहनेवाले; नन्ता विळक्किन्–अमन्द दीप-से सूर्य के वंश में; वरुम्–आये; ऍम् कुल नातन्–मेरे कुल के नायक के; वाळुम्–वासस्थान; चन्तु आर्–चन्दनतरु-लसे; तटम् कुन्ऱिनिल्–विशाल पर्वत पर; इळैयानॊटु–छोटे भ्राता के साथ; वन्तान्–आये; चॅन्तामरैक् कण्णनुम्–अरुणपंकजाक्ष श्रीराम और; तन् उयिर् कातलोनुम्–उनका प्राणप्रिय (सुग्रीव); तेवर् उय्य–देवों को उबारने के लिए; नट्टनर्–मित्र बन गये। ५७७

आकाश में श्रेष्ठ रथ पर संचार करनेवाले और ऐसे दीप के समान सदा जलनेवाले, जिसको उकसाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, सूर्यदेव के वंश में आए हुए हैं हमारे कुल के नायक सुग्रीव। वे चन्दन-तरु-संकुल और विशाल ऋष्यमूक पर्वत पर रहते थे। श्रीराम अपने लघुभ्राता के साथ उस पर आये। अरुणपद्माक्ष श्रीराम और उनके प्राणप्यारे मित्र सुग्रीव दोनों ने आपस में सख्य कर लिया। ५७७

उण्डायदु मऱ्ऱदु मुऱ्ऱु मुणर्त्ति युळ्ळम्
पुण्डान्ऩ नोवुऱ विम्मुऱु हिन्ऱ पोदिल्
ऍण्डानुळन् दिट्टनुम् मेन्दिळै याङ्गळ् काट्टक्
कण्डानुयर् वेदमुम् बोदमुम् काण्गि लादान् 578

उयर् वेतमुम्–उत्कृष्ट वेदों; पोतमुम्–और ज्ञान से; काण्किलातान्–अलक्ष्य श्रीराम; उण्टायतुम्–जो दुःख हुआ वह; मऱ्ऱतुम्–बाद जो बीता वह; मुऱ्ऱुम् उणर्त्ति–पूरा बताकर; उळ्ळम् पुण् तान् ऍन्न–मन ही व्रण बन गया हो, ऐसा; नोवु उऱ–पीड़ित हो; विम्मुऱुकिन्ऱ पोतिल्–सिसकते समय; ऍण् तान् उळ्ळन्तु–चित्त में व्याकुल होकर; इट्ट–आपने जो डाला था; नुम् एन्तिळै–आपके आभरणों को; याङ्कळ् काट्ट–हमारे दिखाने पर; कण्टान्–श्रीराम ने देखा। ५७८

अवेदबोधगोचर श्रीराम आप-बीती बातें सारी सुग्रीव को बताकर जब व्रणमन हो वेदना के साथ दुःखी हो रहे थे, तब हमने आपके उन श्रेष्ठ आभरणों को दिखाया, जिन्हें आपने व्याकुलता में कुछ सोचकर नीचे डाला था। उन्होंने उन्हें देखा। ५७८

तणिहिन्ऱनॅञ् जिऱ्ऱॊडर् वॅम्मैयत् तन्मै तन्नै
तुणिहॊण्डिलङ् गुञ्जुडर् वेलवन् ऱूय नित्गण्
अणिहण्डुळि येयमु दन्दॅळित् तालु माऱाप्
पिणिहॊण्डदु पण्डदुण् डायिनुम् बेर्प्प दन्ऱाल् 579

तुणि कॊण्टु इलङ्कुम्–(शत्रु-शरीर के) टुकड़े बनाकर शोभित रहनेवाले; चुटर् वेलवन्–ज्वलन्त भाले के धारक श्रीराम; तूय–पावन; नित् कण् अणि–आपसे पहने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गये आभरणों को; कण्टुऴिये–देखते ही; अतु पण्टु उण्टायितुम्–वह (दुःख) पहले ही रहा तो भी; तणिकिन्ऱ नॆञ्चिल्–जो शान्त हो रहा था उस मन में; तॊटर्–अब जो उठा; अ वॆम्मै तन्मै तन्नॆ–वह असह्य दुःख; अमुतम् तॆळित्तालुम्–अमृत छिड़काने पर भी; आऱा पिणि कॊण्टतु–दूर न हो, इस तरह से बँध गया; पेर्प्पतु अन्ऱु–हटाने योग्य नहीं था। ५७९

शत्रुशरीरभेदक उज्ज्वल भालाधारी श्रीराम ने ज्योंही उन आभरणों को देखा त्योंही उनका वियोग-दुःख जो पहले से ही था, पर जो थोड़ा थम रहा था फिर से पनप उठा और वह सन्ताप इतना था कि अमृत छिड़काने पर भी शान्त नहीं हो सके और वह इतना उनसे बँध गया कि अलग करना असम्भव हो रहा। ५७९

अयर्वुऱ्ऱरि दिऱ्ऱॆळिन् दम्मलैक् कप्पु ऱत्तोर्
उयर्पॊऱ्किरि यानुळन् वालियॆन् ऱोङ्ग लॊप्पान्
तुयर्वुऱ्ऱवि रावणन् वालिडैप् पण्डु तूङ्ग
मयर्वुऱ्ऱपॊ रुप्पॊडु माल्हड ऱाविवन्दान् 580

अयरवु उऱ्ऱु–थककर; अरितिल् तॆळिन्तु–बहुत कष्ट के साथ सँभलकर; अम् मलैक्कु अप्पुऱत्तु–उस (ऋष्यमूक) पर्वत के उस पार; ओर् उयर् पॊन् किरियान् उळन्–एक उन्नत स्वर्णमय गिरि का अधिपति; वालि ऎन्ऱु–वाली नाम का; ओङ्कल् ऒप्पान्–पर्वत-सम; तुयर्वु उऱ्ऱु–(उसकी पूँछ में बँधकर) दुःखी हो; अ इरावणन्–वह रावण; वालिटै–पूँछ से; पण्टु तूङ्कु–पहले कभी लटका, उसे लेकर; मयर्वु उऱ्ऱ–(वाली के वेग के कारण) चकित हुए; पॊरुप्पॊटु–पर्वतों और; माल् कटल्–बड़े समुद्रों को; तावि वन्तान्–लाँघकर पार कर जो आया। ५८०

श्रीराम शोक-शिथिल हुए; फिर ज्यों-त्यों करके सँभले। ऋष्यमूक पर्वत के उस पार एक उन्नत स्वर्ण-गिरि थी। उस पर वाली नाम का वानरराज रहता था। वह स्वयं पर्वत के समान था। वह एक बार रावण को अपनी पूँछ से बाँधकर दुःखी करके लटकाते हुए इतनी तेज़ी से पर्वतों और समुद्रों को लाँघकर आया था कि वे भी चकित हुए थे। श्रीराम ने —। ५८०

आयान्नैयॊ रम्बिन्नि लारुयिर् वाङ्गि यन्बिऱ्
ऱुयान्वयि नव्वर शीन्दवन् शुऱ्ऱु शेन्नै
मेयान्वरु वायॆन्न विट्टनन् मेवु काऱुम्
एयान्निरुन् दान्निडै तिङ्ग ळिरण्डि रण्डुम् 581

आयान्नै–उस (वाली) को; ओर् अम्पिन्निल्–एक ही शर से; आरुयिर् वाङ्कि–जान से मारकर; अन्पिल् तूयान् वयिन्–स्नेह में शुद्ध सुग्रीव के पास; अ अरचु ईन्तु–वह राज्य देकर; अवन्–उस (सुग्रीव) को; चुऱ्ऱु चेन्नै मेयान्–घिरी सेना के साथ; वरुवाय्–आओ; ऎन्न–ऐसा कहकर; विट्टनन्–बिदा दी; मेवु काऱुम्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसके आते तक; तिङ्कळ् इरण्टु इरण्टुम्–चार महीने; इटै–उस (ऋष्यमूक पर्वत) पर; एयान् इरुन्तान्–ठहरे रहे। ५८१

ऐसे वाली को एक ही शर द्वारा प्राणहीन कर दिया। फिर अपने स्नेही पवित्रमन सुग्रीव को वानरराजपद दिलाया। दिलाकर उससे कहा कि अपनी सेना-सहित आ जाओ। फिर वे चार महीने उस (ऋष्यमूक) पर्वत पर ठहरे रहे। ५८१

पिऱ्कूडिय शेन्नैपॆ रुन्दिशै पिन्न वाह
विऱ्कूडुनु दऱ्ऱिरु निन्निडै मेव वेवित्
तॆऱ्कूडुरु वक्कडि देविनल् शेर्न्द दॆन्न
मुऱ्कूडिन कूऱिनन् कालमोर् मून्ऱुम् वल्लान् 582

विल् कूटु–धनु-सम; नुतल् तिरु–भाल वाली श्रीदेवी; पिन् कूटिय चेनै–पश्चात् एकत्रित सेना को; पॆरुम् तिचै–बड़ी दिशाओं को; पिन्न आक–पीछे छोड़कर; निन् इटै–आपके पास; मेव–(ढूँढ़कर) आने के लिए; एवि–भेजकर; तॆऱ्कु ऊटु उरुव–दक्षिण दिशा में छानकर खोजने के लिए; कटितु एवितन्–(मुझे) शीघ्र भेजा; चेर्न्ततु–(यही मेरे इधर) आने का वृत्तान्त है; अॆन्न–ऐसा; कालम् ओर् मून्ऱुम् वल्लान्–त्रिकालज्ञ ने; मुऱ्कूटिन कूऱिनन्–पहले जो घटीं वह सारी बातें बतायीं। ५८२

उज्ज्वल धनु-सम ललाटिनी! पश्चात् जब वे वानर-सेनाएँ एकत्रित हो आयीं, तब सुग्रीव ने उन्हें सभी दिशाओं में इतनी दूर-दूर भेज दिया कि दिशाएँ स्वयं पीछे रह जायँ! फिर दक्षिण दिशा में खोजने के लिए मुझे शीघ्र प्रेषित किया। यही मेरे इधर आने का वृत्तान्त है। इस तरह त्रिकालज्ञ हनुमान ने घटित घटनाएँ बतायीं। ५८२

❀ अन्बिन नम्मॊऴि युरैक्क वारियन्
वन्बॊऱै नॆञ्जिनन् वरुत्त मुन्नुवाळ्
अॆन्बुऱ वुरुहिन ळिरङ्गि येङ्गिनळ्
तुन्बमु मुवहैयुऱ् जुमन्द वुळ्ळत्ताळ् 583

अन्पिनन्–भक्त के; अ मॊऴि उरैक्क–वह वचन कहने पर; वन् पॊऱै–अतिशय क्षमाशील; नॆञ्चिनन् आरियन्–मन वाले पुरुषोत्तम का; वरुत्तम् उन्नुवाळ्–दुःख सोचती हुई; तुन्पमुम् उवकैयुम्–दुःख और आनन्द; चुमन्त उळळत्ताळ्–धारक चित्त वाली; अॆन्पु उऱ–हड्डी तक (दुःख के) लगने के कारण; उरुकिनळ्–द्रवीभूत हो गयीं; इरङ्कि एङ्किनळ्–दुःखी हो तरसीं। ५८३

श्रीराम के भक्त हनुमान ने जब यह सब कहा, तब सीता ने बहुत क्षमाशील श्रीराम का दुःख सोचा। वे स्वयं अधिक दुःख और सुख दोनों से भर गयीं। उनकी हड्डी तक जलप्राय हो जाय, वे इतनी दुःखिनी हुईं और तरसने लगीं। ५८३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ नैयुऱु शिन्दैय णयऩ वारियिऩ्
तॊय्यल्वॆऱ् चुऴियिडैच् चुरिक्कु मेऩियळ्
ऐयनी यळप्परु मळक्कर् नीन्दिऩै
ऍय्दिय दॆप्परि शियम्बु वायॆऩ्ऱाळ् 584

नै उऱु चिन्तैयळ्–शिथिलमना; नयऩ वारियिऩ् तॊय्यल्–अश्रुजलधारा के; वॆम् चुऴियिटै–भयंकर आवर्तों में; चुरिक्कुम् मेऩियळ्–घूमनेवाले शरीर की देवी ने; ऐय–तात; नी–तुम; अळप्परुम् अळक्कर्–अपार सागर; नीन्तिऩै–तैरकर; ऍय्तियतु–यहाँ आये; ऍ परिचु–कैसे; इयम्पुवाय्–कहो; ऍऩ्ऱाळ्–पूछा देवी ने। ५८४

विगलित मन वाली, और नयनवर्षा की भँवरों में घूमनेवाली सीताजी ने हनुमान से कहा कि तात ! यह अपार सागर तुम कैसे तैर आये ? कहो। ५८४

❀ शुरुङ्गिडै युऩ्ऩॊरु तुणैवऩ् ऱुयताळ्
ऑरुङ्गुडै युणर्विऩो रोय्विऩ् मायैयिऩ्
पॆरुङ्गडल् कडन्दिडु मॆऩ्ऩुम् बॆऱ्ऱिपोल्
करुङ्गडल् कडन्दऩॆऩ् कालि ऩालॆऩ्ऱाऩ् 585

चुरुङ्कु इटै–क्षीणकटि; उऩ् ऑरु तुणैवऩ्–आपके अनुपम नाथ के; तूय ताळ्–पवित्र चरणों पर; ऑरुङ्कु उटै–एकाग्रता से; उणर्विऩोर्–ध्यान रखनेवाले; ओय्विऩ् मायैयिऩ्–अनन्त माया का; पॆरुङ् कटल्–बड़ा सागर; कटन्तिटुम्–पार कर देंगे; ऍऩ्ऩुम् पॆऱ्ऱि पोल्–ऐसी रीति से; कालिऩाल्–अपने पैरों से (या श्रीराम-चरण-महिमा से); करुम् कटल्–काला (या बड़ा) सागर; कटन्तऩॆऩ्–पार कर आया; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (हनुमान ने)। ५८५

हनुमान ने कहा कि क्षीणकटि देवी ! आपके संगी नाथ श्रीराम का पावन चरण एकाग्रचित्त से स्मरण करनेवाले महान् लोग अक्षय माया-सागर तर लेते हैं। उसी प्रकार से मैं भी अपने पैरों (या श्रीराम की चरण-महिमा) से इस काले (या बड़े) समुद्र को लाँघ आया हूँ। ५८५

इत्तुणैच् चिऱियदो रॆण्णिल् याक्कैयै
तत्तिऩै कडलदु तवत्ति ऩायदो
शित्तियि ऩियऩ्ऱदो शॆप्पु वायॆऩ्ऱाळ्
मुत्तिऩु निलविऩु मुऱुवऩ् मुऱ्ऱिऩाळ् 586

मुत्तिऩुम्–मोती से; निलविऩुम्–और चन्द्रिका से बढ़कर; मुऱुवल्–दाँतों की; मुऱ्ऱिऩाळ्–अधिक प्रभावती ने; इत्तुणै चिऱियतु–इतना छोटा; ऍण् इल्–कुछ भी न मान्य; ओर् याक्कैयै–एक शरीर के तुम; कटल् तत्तिऩै–समुद्र लाँघ आये; अतु–वह काम; तवत्तिऩ् आयतो–तप के फलस्वरूप हुआ; चित्तियिऩ् इयऩ्ऱतो–सिद्धि के बल से साध्य हुआ; चॆप्पुवाय्–कहो; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ५८६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सीताजी के दाँत मोतियों और चाँदनी से बढ़कर सुन्दर थे। (कवि उनकी याद करते हैं यह संकेत करने के लिए कि सीताजी किंचित हँसती हुई बोलीं। यह कवि की विदग्धता है, जो सर्वत्र पायी जाती है।) सीताजी ने पूछा कि इतने छोटे से शरीर के होकर तुमने समुद्र लाँघा; यह काम तपस्या का फल था या सिद्धि द्वारा साध्य हुआ ? बताओ। ५८६

शुट्टिऩ निऩ्ऱऩन् ऱोऴुद कैयिऩन्
विट्टुयर् तोळिऩन् विशुम्बिऩ् मेक्कुयर्
ऍट्टऱु नॅडुमुह डॅय्द नीऴुमेल्
मुट्टुमॅऩ् ऱुऱुवॉडु वऴैन्द मूर्त्तियाऩ् 587

तॊऴुत कैयिऩऩ्–अंजलिबद्धहस्त; विट्टु–विशाल और; उयर् तोळिऩऩ्–उन्नत कन्धों वाला; विचुम्पिऩ् मेक्कु उयर्–आकाश के भी ऊपर; ऍय्त नीऴुमेल्–पहुँच जाय इतना बढ़ेगा तो; ऍट्टु अऱु–अगम; नॅटु मुकटु–विशाल चोटी; मुट्टुम्–टकरायगी; ऍऩ्ऱु–यह सोचकर; उऱुवॉटु–उस बड़े शरीर के साथ; वऴैन्त मूर्त्तियाऩ्–कुछ झुके हुए रूप वाला; चुट्टिऩऩ्–अपना बड़ा रूप दिखाता हुआ; निऩ्ऱऩऩ्–खड़ा रहा। ५८७

यह सुनकर हनुमान ने अपने हाथों को जोड़ लिया। अपने विशाल कन्धों को उन्नत करते हुए वह बढ़ने लगा। आकाश के भी ऊपर बढ़ेगा तो उसका सिर आकाश की चोटी से टकरा जाय और वह ढह जाय, ऐसी स्थिति हो गयी। इसलिए अपने विश्वरूप में थोड़ा झुका हुआ रहकर उसने अपना विराट् रूप देवी को दिखाया। ५८७

शॅव्वऴिप् पॅरुमैयॅऩ् ऱुरैक्कुऱ् जॅम्मैदाऩ्
वॅव्वऴिप् पूदमो रैऩ्दिऩ् मेलदो
अव्वऴित् तऩ्ऱॅऩि ऩनुमऩ् पालदो
ऍव्वऴित् ताहुमॅऩ् ऱॅण्णु मीट्टदे 588

चॅव् वऴि पॅरुमै ऍऩ्ऱु उरैक्कुम्–उत्कृष्ट मान्य; चॅम्मै ताऩ्–श्रेष्ठता; वॅम् वऴि–सबल; पूतम् ओर् ऐऩ्तिऩ् मेलतो–पाँच भूतों के पास है; अ वऴित्तु अऩ्ऱु ऍऩिल्–वहाँ नहीं हो तो; अनुमऩ् पालतो–हनुमान के वश में है; ऍ वऴित्तु आकुम्–कहाँ होगी; ऍऩ्ऱु ऍण्णुम्–ऐसा सोचने को विवश करनेवाले; ईट्टतु–प्रकार का था हनुमान का विश्वरूप। ५८८

(उसके उस विश्वरूप की महिमा देखिए।) उत्कृष्ट, श्रेष्ठता सबल भूतों में है या इस हनुमान के पास है ? कहाँ है ? उसका रूप दर्शक के मन में यह संशय पैदा कर रहा था। ५८८

ऑत्तुयर् कऩहवाऩ् किरियि ऩोङ्गिय
मॅय्त्तुऱु मरन्दॊऱु मिऩ्मि ऩिक्कुलम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मॊय्त्तुळ वामॆऩ मुऩ्ऩुम् बिऩ्ऩरुम्
तॊत्तिऩ तारहै मयिरिऩ् शुऱ्ऱॆलाम् 589

कऩक वाऩ् किरियिऩ्–बड़े स्वर्ण (-मेरु) पर्वत पर; ओङ्किय मरम् तॊऱुम्–उन्नत उगे तरु-तरु में; मिऩ् मिऩि कुलम्–खद्योतकुल; मॊय्त्तु उळवाम् ऎऩ–लसे बैठे हैं जैसे; ऒत्तु उयर्–(मेरु-) सम रूप से उन्नत; मॆय्–शरीर पर; तुऱु–घने; मयिरिऩ् चुऱ्ऱु ऎलाम्–रोम के पार्श्व प्रदेशों पर; मुऩ्ऩुम् पिऩ्ऩरुम्–आगे और पीछे; तारकै तोत्तिऩ–तारागण पकड़े लटके रहे। ५८९

मेरु के समान बढ़े हुए उसके शरीर में बालों के बीच-बीच में तारागण लटके रहे। तब कनकगिरि मेरु का स्मरण होता था जिस पर के ऊँचे तरुओं में खद्योतकुल लसे रहे हों। ५८९

कण्डल मऱिवॊडु कडन्द काट्चियऩ्
विण्डल मिरुपुडै विळङ्गुम् मॆय्मैयक्
कुण्डल मिरण्डुमक् कॊळिऩ् माच्चुडर्
मण्डल मिरण्डॊडु मारु कॊण्डवे 590

कण् तलम् ओटु–आँखों के साथ; अऱिवु–बुद्धि के भी; कटन्त काट्चियऩ्–पार गये रूप वाले के; विण् तलम्–आकाश के; इरु पुटै–दोनों ओर; विळङ्कुम्–शोभायमान; मॆम्मै अ कुण्टलम् इरण्टुम्–वे दोनों कर्णकुण्डल; अ कोळिऩ्–उन नव-ग्रहों में; मा चुटर्य् मण्टलम् इरण्टु ऒटु–बहुत उज्ज्वल (सूर्य-चन्द्र के) दो मण्डलों के साथ; मारु कॊण्ट–अलग दिखायी दिये। ५९०

उसका रूप आँखों को क्या बुद्धि को भी पार कर गया था। (न आँखों द्वारा देखा जा सका, न कल्पना द्वारा अनुमान भी किया जा सका।) आकाश में उसके दोनों पार्श्वों में जो उसके कर्णकुण्डल लटक रहे थे वे आकाश में रहनेवाले नवों ग्रहों में दो अत्यधिक उज्ज्वल ग्रह, सूर्य और चन्द्र के मण्डलों से भिन्न अत्युज्ज्वल दिखायी दिये। ५९०

एणिल दॊरुकुरङ् गीदॆऩ् ऱॆण्णला, आणियै यनुमऩै यमैय नोक्कुवाऩ्
शेणुयर् पॆरुमैयोर् तिऱत्त दऩ्ऱॆऩा, नाणुऱु मुलहॆला मळन्द नायहऩ् 591

ईतु ऒरु कुरङ्कु–यह एक मरकट है; एण् इलतु–बलहीन है; ऎऩ्ऱु–ऐसा; ऎण्णला–जिसके सम्बन्ध में न सोचा जा सके; आणियै–उस धुर के समान; अनुमऩै–हनुमान को; अमैय नोक्कुवाऩ्–भलीभाँति देखनेवाले (त्रिविक्रम मूर्ति); उलकु ऎलाम् अळन्त–विश्वमापक; नायकऩ्–जगन्नाथ; चेण् उयर् पॆरुमै–अत्युत्कृष्ट गौरव; ओर् तिऱत्ततु अऩ्ऱु–एक ही स्थान में पाया जानेवाला नहीं; ऎऩा–ऐसा सोचकर नाण् उऱुम्–लज्जित होंगे। ५९१

सर्वलोकमापक त्रिविक्रम भी इस हनुमान को खूब देखेंगे, तो यह समझेंगे कि इसे एक बन्दर और वह भी निर्बल बन्दर नहीं समझना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह तो लोकों की धुरी के समान है। लगता है कि बहुत उन्नत गौरव केवल एक (मेरे पास) ही नहीं है! यह सोचकर वे लज्जित होंगे। ५९१

ऍण्डिशै मरुङ्गितु मुलहम् याविनुम्, तण्डलि लुयिरॅलान् दन्नै नोक्किन
अण्डमॅन् ऱदिनुऱै यमरर् यारैयुम्, कण्डनन् ऱानुन्दन् कमलक् कण्गळाल् 592

ऍण् तिचै–आठों दिशाओं के; **मरुङ्कितुम्**—स्थानों में; **उलकम् याविनुम्**—सभी लोकों में; **तण्टल् इल्**–अक्षुण्ण; **उयिर् ऍलाम्**–सभी जीवों ने; **तन्नै नोक्किन्**–उसको देखा; **तानुम्**–उसने भी; **तन् कमल कण्कळाल्**–अपने कमलनेत्रों से; **अण्टम् ऍन्ऱतिन् उऱै**–आकाश के अण्ड के वासी; **अमरर् यारैयुम्**–सभी देवों को; **कण्टनन्**–समक्ष देखा। ५९२

आठों दिशाओं के स्थानों के और सभी लोकों के सभी जीवों ने हनुमान को देखा। हनुमान ने भी अपने कमलनेत्रों से व्योमलोकवासी देवों को देखा। ५९२

ऍळुन्दुयर् नडुन्दहै यिरण्डु पादमुम्
अळुन्दुऱ वळुत्तलि निलङ्गै याळ्हडल्
विळुन्ददु निलमिशै विरिन्द वॅण्डिरै
तळैत्तन पुरण्डन मीनन् दामॅलाम् 593

ऍळुनतु उयर्—इस तरह जो बढ़ा; **नॅटुम् तकै**–उस विश्वरूप हनुमान के; **इरण्टु पातमुम्**–दोनों पैर; **अळुन्तुऱ**–खूब दबाते हुए; **अळुत्तलिल्**–जमे रहे इसलिए; **इलङ्कै**–लंका; **आळ् कटल्**–गहरे समुद्र में; **विळुन्ततु**–मग्न हो गया; **वॅण् तिरै**–श्वेत तरंगें; **निल मिचै विरिन्त**–भूमि पर फैलीं; **तळैन्तत**–सब जगह भरीं; **मीतम् तामॅलाम्**–मछलियाँ; **पुरण्टन**–लोटती हुई इधर-उधर चलीं। ५९३

इस तरह जो बढ़ा था उसके दोनों पैरों ने ज़मीन को खूब दबाया। इसलिए लंका का द्वीप समुद्र में धँस गया। तब श्वेत ऊर्मियाँ भूमि पर फैल आयीं और व्याप गयीं। मछलियाँ उन तरंगों पर लोटती हुई चलने लगीं। ५९३

वञ्जियम् मरुङ्गुलम् मऱविल् कऱ्पिनाळ्
कञ्जमुम् बुरैवन कळलुङ् गण्डिलाळ्
तुञ्जिन ररक्करॅन् ऱुवक्कुञ् जूळ्च्चियाळ्
अञ्जिनॅ निव्वुरु वडक्कु वायॅन्ऱाळ् 594

वञ्चि अम् मरुङ्कुल्–'वञ्चि' नाम की वल्लरी के समान कटि वाली; **अ मऱ इल् कऱ्पिताळ्**–उस अनिंद्य पातिव्रत्यशीला; **कञ्चमुम् पुरैवत**–कंज-सदृश; **कळलुम् कण्टिलाळ्**–(हनुमान के) पैर नहीं देखे; **अरक्कर् तुञ्चितर्**–राक्षस मर गये; **ऍन्ऱु उवक्कुम्**–ऐसा सोचकर सुख; **चूळ्च्चियाळ्**–माननेवाली सीता ने; **अञ्चिनॅन्**–भय खाती हूँ; **इव् वुरु**–यह रूप; **अटक्कुवाय्**–छोटा बना लो; **ऍन्ऱाळ्**–कहा। ५९४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'वञ्जि' नाम की लता के समान पतली और सुन्दर कमर वाली और अनिंद्य पावन चरित्र वाली सीताजी हनुमान के कमल-चरणों को भी देख न सकीं। "बस ! अब राक्षस मर गये" —यह आनन्ददायक विचार उनके मन में आया। उन्होंने हनुमान से कहा कि हनुमान अपना रूप छोटा कर लो। मुझे डर लगता है। ५९४

❀ मुऴुवदु मिव्वुरुक् काण मुऱ्ऱिय
कुऴुविल दुलहिनिक् कुऱुहु वायॆन्ऱाळ्
ऎऴुविनु मॆऴिलिलङ् गिरामन् ऱोळ्हळैत्
तऴुविन ळामॆनत् तळिर्क्कुञ् जिन्दैयाळ् 595

ऎऴुवितुम्–(स्थूल) खम्भे से बढ़कर; ऎऴिल् इलङ्कु–सुन्दरतायुक्त; इरामन् तोळ्कळै–श्रीराम की भुजाओं का; तऴुवितळ् आम्—आलिंगन कर चुकी हो; ऎन्न–ऐसा; तळिर्क्कुम्–लहलहानेवाले; चिन्तैयाळ्–चित्त वाली (सीता) ने; उलकु–यह लोक; इव् वुरु मुऴुवतुम् काण–यह सम्पूर्ण रूप देखने का; मुऱ्ऱिय कुऴु इलतु–पक्व सामर्थ्य नहीं रखता; इनि कुऱुकुवाय्–अब छोटे बन जाओ; ऎन्ऱाळ्–कहा। ५९५

देवी का मन ऐसा लहलहा उठा, मानो वह स्थूल खम्भों से भी सुन्दर श्रीराम की भुजाओं से लिपट गयी हों ! उन्होंने हनुमान की महिमा जताते हुए कहा कि इस लोक में तुम्हारे इस रूप को पूर्णरूप से देखने का सामर्थ्य नहीं है। अब इसको समेट लो और अपने यथार्थ रूप में रहो। ५९५

❀ आण्डहै यनुमनु मरुळ दामॆन्ना
मीण्डनन् विशुम्बॆनुम् बदत्तिन् मीच्चॆल्वान्
काण्डलुक् कॆळियदो रुरुवङ् गाट्टिनान्
तूण्डरु विळक्कना ळिनैय शॊल्लिनाळ् 596

विचुम्पु ऎन्नुम् पतत्तिन्–आकाश के तल से भी; मी चॆल्वान्–ऊपर बढ़ता चलनेवाला; आण्टकै अनुमनुम्–पुरुषश्रेष्ठ हनुमान भी; अरुळ् अताम् ऎन्ना–आपकी आज्ञा, वही हो कहकर; मीण्टनन्–लौटकर छोटा हो गया; काण्टलुक्कु ऎळियतु–देखने में सुलभ; ओर् उरुवम् काट्टिनान्–एक रूप धर लिया; तूण्टु अरु–जिसको उकसाने की आवश्यकता न रहे ऐसे; विळक्कु अनाळ्–दीप-सी सीताजी; इनैय चॊल्लिनाळ्–यों बोलीं। ५९६

आकाश से भी ऊपर बढ़ता चलनेवाला हनुमान भी, 'जैसी आपकी आज्ञा' कहकर यथापूर्व हो गया। अब वह दर्शनसुलभ हो रहा। विना प्रयत्न के ही सदा प्रज्वलित रहनेवाले दीये के समान शोभापूर्ण सीताजी उससे यों बोलीं। ५९६

❀ इडन्दा युलहै मलैयोडु मिडित्ताय् विशुम्बै यिवैशुमक्कुम्
पडन्दा ळरवै यॊरुकरत्ताऱ् पऱित्ता यॆन्निनुम् बयनिन्ऱाल्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नडन्दा यिडैये यॆऩ्ऱालु नाणा निऩक्कु नळिकडलैक्
कडन्दा यॆऩ्ऱा लॆऩ्ऩाहुङ् गाऱ्ऱा मऩैय कडुमैयाय् 597

काऱ्ऱु आम् अऩैय–पवन ही सम; कटुमैयाय्–वेगवान; मलैयोटुम्–पर्वत-सहित; उलकै इटन्ताय्–भूतल को (तुमने) उखाड़ लिया; विचुम्पै इटित्ताय्–आकाश को ढहा लिया; इवै चुमक्कुम्–इनको धारण करनेवाले; पटम् ताळ् अरवै–फनों के साथ रहनेवाले साँप को; ऒरु करत्ताल् पऱित्ताय्–एक हाथ से छीन लिया; ऎऩिऩुम्–ऐसा सुना जाय तो भी; पयऩ् इऩ्ऱु–वह तुम्हारे बल का सबूत नहीं हो सकता; इटैये नटन्ताय् ऎऩ्ऱालुम्–समुद्र-मध्य पैदल चलकर आये तो भी; निऩक्कु नाण् आम्–(तुम्हारे बल की दृष्टि से) वह तुम्हारे लिए शरम की बात होगी; नळि कटलै–बड़े सागर को; कटन्ताय् ऎऩ्ऱाल्–पार किया कहना; ऎऩ् आकुम्–उससे तुम्हारा क्या गौरव बढ़ता। ५९७

पवन के ही समान वेगवान ! पर्वत-सहित भूमि को उखाड़ दिया; आकाश को ढहा दिया; या इनके धारक शेषनाग को एक हाथ से छीनकर दूर पटक दिया। तब भी कोई बड़ा काम नहीं हुआ ! समुद्र में पैदल चलकर आए होते तो भी वह काम तुम्हारे लिए (गौरवजनक नहीं) लज्जाजनक ही रहेगा ! इस स्थिति में तुमने समुद्र को लाँघ दिया —कहने से तुम्हारा क्या गौरव बढ़ेगा ? । ५९७

❀आऴि नॆडुङ्गै याण्डहैद ऩरुळुम् बुहळु मऴिवित्ऱि
ऊऴि पलवु निलैनिऱुत्तऱ् कॊरुव ऩीये युळैयाऩाय्
पाऴि नॆडुन्दोळ् वीरानिऩ् पॆरुमैक् केऱ्पप् पहैयिलङ्गै
एऴु कडऱ्कु मप्पुऱत्त दाहा दिरुन्द दिऴिवऩ्ऱो 598

पाऴि नॆटुम् तोळ्–स्थूल और दीर्घ भुजाओं वाले; वीरा—वीर; आऴि–चक्रधर; नॆटुम् कै–दीर्घ भुजाओं वाले; आण्टकै तऩ्–पुरुषश्रेष्ठ की; अरुळुम् पुकळुम्–कृपा और यश के; अऴिवु इऩ्ऱि–विना क्षय हुए ही; ऊऴि पलवुम्–अनेक युग; निलै निऱुत्तऱ्कु–स्थापित करने के लिए; नी ऒरुवऩे–तुम एक ही; उळै आऩाय्–योग्य रहे; निऩ् पॆरुमैक्कु एऱ्प–तुम्हारे गौरव के अनुरूप; पकै इलङ्कै–शत्रुनगरी लंका; एऴु कटऱ्कुम् अप्पुऱत्ततु–सातों समुद्रों के उस पार की; आकातु इरुन्ततु–बनी नहीं रही यह बात; इऴिवु अऩ्ऱो–गौरव घटानेवाली हो गयी न। ५९८

स्थूल और दीर्घ भुजाओं वाले ! चक्रधर दीर्घ हाथों के श्रीराम की कृपा और यश को अनेक युगों तक अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए अकेले तुम पर्याप्त बन गये हो ! यह शत्रु-नगरी लंका सातों समुद्रों के उस पार रहती तो वह तुम्हारे गौरव के अनुरूप होता। यह ऐसा नहीं रही (पर एक ही छोटे समुद्र के मध्य रही)। यह बात तुम्हारे लिए गौरववर्द्धक नहीं रही, महिमा पर कम करनेवाली रह गयी। ५९८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अऱिवु मीदे युरुवीदे याऱ्ऱ लीदे यैम्बुलत्तिन्
शॅऱिवु मीदे शॅयलीदे तेऱ्ऱ मीदे तेऱ्ऱत्तिन्
नॅऱियु मीदे निनैवीदे नीदि यीदे निनक्कॅन्ऱाल्
वॅऱिय रन्ऱे कुणङ्गळाल् विरिञ्जन् मुदला मेलान्ऱार् 599

निनक्कु–तुम्हारी; अऱिवुम्–बुद्धि और; उरुवुम्–रूप और; आऱ्ऱल्–शक्ति; ऐम्पुलत्तिन् चॅऱिवुम्–पंचेन्द्रियों का संयम; चॅयलुम्–कृत्य; तेऱ्ऱम्–विवेक; तेऱ्ऱत्तिन् नॅऱियुम्–विवेक का फल; निनैवुम्–विचार; नीति–नय; ईते–यही; ऍन्ऱाल्–कहा जाय तो; विरिञ्चन् मुतलाम्–विरंचि आदि; मेलान्ऱार्–उत्तम देव; कुणङ्कळाल्–अपने गुणों में; वॅऱियर् अन्ऱे–अभाव-ग्रस्त हैं न। ५९९

तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारा रूप, बल-विक्रम, तुम्हारा इन्द्रियसंयम, तुम्हारे कृत्य, तुम्हारा विवेक, विवेक का फल, तुम्हारे विचार, तुम्हारा नय —ओह! ऐसा है तो विरंचि आदि देवों के पास गुणों का अभाव ही मानना चाहिए। ५९९

मिन्ने रॅयिऱ्ऱु वल्लरक्कर् वीक्क नोक्कि वीरऱ्कुप्
पिन्ने पिऱन्दा नल्लादोर् तुणैयि लाद पिळैनोक्कि
उन्ना निन्ऱे नुडैहिन्ऱे नॉळिन्दे नॅल्ला मुयिरुयिर्त्तेन्
ऍन्ने निरुद रॅन्नावार् नीये यॅङ्गोन् रुणैयान्ताल् 600

मिन् नेर्–विद्युत्-सदृश; ऍयिऱ्ऱु–दन्तोरे; वल् अरक्कर्–सबल राक्षसों की; वीक्कम् नोक्कि–बहुलता देखकर; वीरऱ्कु–वीर श्रीराम का; पिन्ने पिऱन्तान् अल्लातु–अनुज को छोड़; ओर् तुणै इलात–एक सहायक न रहा; पिळै नोक्कि–वह कमी देखकर; उन्ना निन्ऱेन्–सोच-सोचकर; उटैकिन्ऱेन्–जो भग्न हो रही थी वह मैं; ऍल्लाम् ऑळिन्तेन–सर्वसंशयविमुक्त हो गयी; उयिर् उयिर्त्तेन–राहत की साँस ली; नीये–तुम ही; ऍन् कोन्–मेरे राजा के; तुणै आन्ताल्–साथी होगे तो; निरुतर् ऍन् आवार्–राक्षस क्या होंगे। ६००

मैंने बिजली-से दंतोरे राक्षसों की बड़ी संख्या देखकर सोचा कि श्रीवीरराघव का उनके छोटे भाई के अलावा कोई सहायक नहीं है। यह अभाव सोचकर मैं भग्नमन हो रही थी। अब वह संशय सब मिट गया। राहत की साँस ले रही हूँ। जब तुम्हीं मेरे पतिदेव के सहायक हो गये तो राक्षस क्या होंगे? —मिट जायँगे। क्या ही आश्चर्य (हो गया) है!। ६००

❀माण्डे नॅन्निनुम् बळुदन्ऱे यिन्ऱे मायाच् चिऱैनिन्ऱु
मीण्डे नॅन्ने यॉऱुत्तार्दङ् गुलङ्ग ळोडुम् वेररुत्तेन्
पूण्डे नॅङ्गोन् पॉलङ्गळुलुम् बुहळे यन्ऱिप् पुन्बळियुम्
तीण्डे नॅन्ऱु मनमहिळ्न्दा डिरुविन् कळुत्तुत् तिरुवन्नाळ् 601

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरुविन्-श्रीलक्ष्मीदेवी के; कळुत्तु तिरु अन्ताळ्-कण्ठ के अहिवातसूत्र के समान देवी; माण्टेन् ऍत्तुम्-मर जाऊँगी तो भी; पळुतु अन्ऱे-हानि नहीं; इन्ऱे-आज ही; माया चिऱै निन्ऱु-कभी न छूटनेवाली कारा से; मीण्टेन्-मुक्त हो गयी; ऍन्ऩै ऒऱुत्तार्-मुझे सतानेवालों को; तम् कुलङ्कळोटुम्-उनके कुलों के साथ; वेर् अऱुत्तेन्-निर्मूल कर दिया; ऍन् कोन्-अपने पतिदेव के; पॊलम् कळलुम्-सुन्दर चरण; पूण्टेन्-धर लिये; पुकळे अन्ऱि-यश के सिवा; पुन् पऴियुम्-नीच अपयश; तीण्टेन्-स्पर्श नहीं करूँगी; ऍन्ऱु-कहकर; मनम् मकिऴ्न्ताळ्-आह्लादित हुईं। ६०१

स्वयं श्रीलक्ष्मीदेवी के कंठ के मंगलसूत्र (सुहाग-चिह्न) -सी देवी ने आनन्द के साथ कहा कि अब मैं मर जाऊँ तो भी कुछ नहीं बिगड़ेगा। क्योंकि मैं आज लम्बे कारागृहवास से छूट गयी। मुझे त्रास देनेवाले राक्षसों के कुल को मैंने जड़ से काट मिटा दिया। अपने पतिराज के सुन्दर चरणों को सिर पर धारण कर लिया है। यश ही यश मिल गया; अपयश से सम्पर्क नहीं रहा। ६०१

अण्णऱ् पॆरियो नडिवणङ्गि यऱिय वुरैप्पा नरुन्ददिये
वण्णक् कडलि निडैक्किडन्द मणलिऱ् पलराल् वानरत्तिन्
ऍण्णऱ् करिय पडैत्तलैव रिरामऱ् कडियार् यानवर्तम्
पण्णैक् कॊरुव नॆनप्पोन्दे नेवक् कडव पणिशॆय्वेन् 602

अण्णल् पॆरियोन्-बहुत महिमामय हनुमान; अटि वणङ्कि-चरण-वन्दना करके; अऱिय उरैप्पान्-समझाते हुए बोला; अरुन्ततिये-अरुन्धती (-समाना); इरामऱ्कु अटियार्-श्रीराम के दास; ऍण्णऱ्कु अरिय-अगणित; वानरत्तिन् पटै तलैवर्-वानरयूथपति; वण्णक् कटलिन् इटै-(काले) रंगीन समुद्र में; किटन्त-पड़े रहनेवाले; मणलिल् पलर्-बालुओं से भी अधिक अनेक हैं; यान् अवर् तम् पण्णैक्कु-मैं उनकी भीड़ में; ऒरुवन्-एक दास हूँ; ऍन पोन्तेन्-ऐसा भाग्य पाया हूँ; एव कटव-आज्ञापित; पणि चॆय्वेन्-सेवाएँ अदा करूँगा। ६०२

महिमा में बढ़े हुए हनुमान ने देवी से वानर-सेना की महत्ता यों कही। उसने सीताजी के चरणों पर नमस्कार करके कहा कि अरुन्धती-समाना देवी! श्रीराम के अधीन जो वानरयूथप हैं, उनकी संख्या समुद्र-तल में के बालुओं की संख्या से भी अधिक है। उनका मैं एक दास बना हूँ। उनकी आज्ञा मानकर उनकी सेवाएँ अदा करता रहता हूँ। ६०२

वॆळ्ळ मॆऴुब दुळदन्ऱो वीरन् शेनै यिव्वेलैप्
पळ्ळ मॊरुहैन् नीरळ्ळिक् कुडिक्कप् पोदुम् बान्मैयदो
कळ्ळ वरक्कर् कडियिलङ्गै काणा दॊऴिन्द दालन्ऱो
उळ्ळ दुणैयु मुळदाव दऱिन्दु पिन्नु मुळदामो 603

वीरन् चेनै-श्रीराम की सेना; वॆळ्ळम् ऍऴुपतु उळतु-सत्तर 'वॆळ्ळम्' की है;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इ वेलै पऴ्ळम् नीर्–इस समुद्र के गढ़े का जल; ऒरु कै अऴ्ळि कुटिक्क–एक चुल्लू भर लेकर पीने के लिए; पोतुम् पान्मैयतो–काफ़ी होने की स्थिति में है क्या; कऴ्ळ अरक्कर्–चोर राक्षसों की; कटि इलङ्कै–सुरक्षित लंका; काणातु ऒऴिन्तताल् अन्ऱो–मरी (निगोड़ी) अलक्षित रह गयी, तभी न; उऴ्ळ तुणैयुम्–अभी तक; उऴ्ळतु आवतु–रही, हो गयी; अऱिन्तु–जान लेने; पिन्नुम्–के बाद; उऴ्ळतु आमो–रह सकेगी क्या। ६०३

श्रीराम के साथ जो सेना है, उसकी संख्या सत्तर वॆऴ्ळम् ('प्रवाह') है। यह समुद्र उनके सामने गढ़ा है। एक चुल्लू पीने के लिए भी इसका जल पर्याप्त न पड़ेगा। यह चोरों की लंका अदृश्य रह गयी। तभी न अब तक वह विद्यमान रही। उसका अस्तित्व जान लेने के बाद भी उसका अस्तित्व भी रहेगा क्या ? । ६०३

वालि यिळव लवन्मैन्दन् मयिन्दन् ऱुमिन्दन् वयक्कुमुदन्
नील निडबन् कुमुदाक्कन् पनशन् शाम्ब नॆडुञ्जाम्बन्
काल नऩैय दुन्मरुडन् करम्बन् कवयन् कवयाक्कन्
ञाल मऱियु नळन्शङ्गन् विन्दन् ऱुविन्दन् मदनॆन्बोन् 604

वालि इळवल्–वाली का छोटा भाई; अवन् मैन्तन्–उस (वाली) का पुत्र; मयिन्तन्–मैन्द; तुमिन्तन्–दुमिंद; वय कुमुतन्–बलिष्ठ कुमुद; नीलन्–नील; इटपन्–ऋषभ; कुमुताक्कन्–कुमुदाक्ष; पनचन्–पनश; चाम्पन्–जाम्ब; नॆटुम् चाम्पन्–वृद्ध जाम्बवान; कालन् अनैय–काल-सम; तुन्मरुटन्–दुर्मर्ष; करम्पन्–करम्ब; कवयन्–गवय; कवयाक्कन्–गवयाक्ष; ञालम् अऱियुम्–विश्वविख्यात; नळन्–नल; चङ्कन्–शंख; विन्तन्–विन्द; तुविन्तन्–दुविन्द; मतन् ऎन्पोन्–मदन। ६०४

वाली का भाई सुग्रीव, वाली का पुत्र अंगद, मैन्द, दुमिंद, बली कुमुद, नील, ऋषभ, कुमुदाक्ष, पनश, जाम्ब, वृद्ध जाम्बवान, कालदेव-सम दुर्मर्ष, करंब, गवय, गवयाक्ष और विश्वविख्यात नल, शंख, विन्द द्विन्द, मदन; । ६०४

तम्बन् ऱूमत् तनिप्पेरोन् ऱदियिन् वदनन् शदवलियॆन्
ऱिम्ब रुलहो डॆव्वुलहु मॆडुक्कु मिडुक्क रिरामन्गै
अम्बि नुदवुम् पडैत्तलैव रवरै नोक्कि निव्वरक्कर्
वम्बिन् मुलैया युऱैयिडवुम् बोदार् कणक्कु वरम्बुण्डो 605

तम्पन्–थम्ब; तूम तनि पॆयरोन्–धूम्र नाम का वह; ततियिन् वतनन्–वधिमुख; चतवलि–शतबली; ऎन्ऱु–नाम के; इम्पर् उलकोटु–इस भूलोक के साथ; ऎव्वुलकुम्–सभी लोकों को; ऎटुक्कुम्–उठाने की; मिटुक्कर्–शक्ति रखनेवाले; इरामन् कै अम्पिन्–श्रीराम के हस्तशर के समान; उतवुम्–सहायता देनेवाले; पटै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तलैवर्–यूथप; वरम्पु उण्टो–(क्या) सीमा भी है; अवरै नोक्किन्–उनको लेकर विचार करें तो; वम्पिन् मुलैयाय्–अँगियाबद्ध स्तनों वाली देवी; इव् अरक्कर्–ये राक्षस; उरै इटवुम् पोतार्–अदद के रूप में भी काफ़ी नहीं होंगे। ६०५

थम्ब, धूम्र, दधिमुख, शतबली —ऐसे नामों के वे इस लोक के साथ सारे लोकों को उखाड़ लेने की शक्ति रखनेवाले हैं। श्रीराम के हाथ के शरों के समान सद्योपकारी हैं। उनकी शक्ति और संख्या की कोई भी सीमा है क्या ? (नहीं)। अँगियाबद्ध स्तनों वाली माते ! उनकी संख्या देखो तो ये राक्षस सांकेतिक अदद के लिए भी पर्याप्त नहीं होंगे। (तमिळ में 'उरै' उसको कहते हैं जिसे अत्यधिक संख्या के पदार्थों को गिनते वक़्त प्रतिनिधि अदद के रूप में रखा जाता है। उदाहरणार्थ— किसी पदार्थ के एक हज़ार को गिनने पर उन पदार्थों में से एक लेकर अलग रखा जाता है। पूरा गिनने के बाद "उरै यों" की संख्या का हज़ार से गुना करके पूरी संख्या आँकी जाती है।)। ६०५

शॅन्रे नडिये नुनक्किन्नल् शिरिदे युणर्त्तु मत्तुणैयुम्
अन्रे यरक्कर् वरुक्कमुड नडैव दल्ला दरियिन्गै
मन्रे कमळुन् दॉडैयन्रे निरुदन् कुळुवु मानहरुम्
ऍन्रे यिरैञ्जिप् पिन्नरुमॉन् रिशैप्पा नुणर्न्दा नीरिल्लान् 606

अटियेन् चॅन्रेन्–मैं जाकर; उनक्कु इन्नल्–आपके दुःख को; चिरिते–किंचित् भी; उणर्त्तुम्–ज्योंही बताऊँगा; अत्तुणैयुम्–त्योंही; अरक्कर् वरुक्कम्–राक्षसवर्ग; उटन् अटैवतु–एक साथ (वानरों के हाथ) पड़ जायँगे; अल्लातु–वही नहीं; निरुतन्– कुळुवुम्–रावण का सारा परिवार; मा नकरुम्–और उसका बड़ा नगर; अरियिन् कै–वानरों के हाथ में; मन्रे कमळुम्–सुगन्धि-निसारक; तॉटै अन्रे–पुष्पमाला बन जायँगे न; ऍन्रे–ऐसा, साफ़ कहकर; इरैञ्चि–नमस्कार करके; पिन्नरुम्–फिर भी; ईरिल्लान्–अनन्तआयु ने; ऑन्रु इचैप्पान्—एक बात कहने की; उणर्न्तान्–सोची। ६०६

दास मैं जाऊँ और आपका संकट थोड़ा ही समझाऊँ, इतने में ही राक्षसों का वर्ग ही नहीं, पर रावण के सारे परिवार और लंका नगर वानरहस्तगत सुगन्धित पुष्पमाला (यानी छिन्न-भिन्न) बन जायगी। (तमिळ में मसल मशहूर है— वानरहस्तगत पुष्पमाला-सा। —बन्दर उसका नाश कर देता है।) हनुमान ने देवी को वानरों की शक्ति का साफ़ परिचय दिया। फिर उसने उनके चरणों पर नमस्कार किया। अनन्तआयु (चिरंजीव) हनुमान ने और एक बात कहनी चाही। ६०६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

5. चूडामणिप् पडलम् (चूडामणि पटल)

❀ उण्डुतुणै येऩ्ऩलॆऴि दोवुलहि ऩम्मा
पुण्डरिहै पोलुमिव ऴिऩ्ऩल्पुरि हिऩ्ऱाळ्
अण्डमुद ऩायहऩ दावियऩै याळैक्
कॊण्डहल्व देहरुम मॆऩ्ऱुणर्वु कॊण्डाऩ् 607

पुण्टरिकै पोलुम् इवळ्–पुण्डरीकनिलया-सी ये; इऩ्ऩल् पुरिकिऩ्ऱाळ्–दुःख करती हैं; उलकिल्–संसार में; तुणै उण्टु–इसकी समानता है; ऎऩ्ऩल्–कहना; ऎऴितो–सुलभ है क्या; अण्टम्–अण्डों के; मुतल् नायकऩतु–आदिनायक श्रीराम के; आवि अऩैयाळै–प्राण-समाना को; कॊण्टु अकल्वते–ले जाना ही; करुमम्–उचित कर्म है; ऎऩ्ऱु उणर्वु कॊण्टाऩ्–ऐसा विचार किया; अम्मा–माँ । ६०७

हनुमान ने यों सोचा— पुण्डरीकनिलया श्रीलक्ष्मीदेवी, ये बहुत कष्ट पा रही हैं। मैया ! इनके दुःख के समान दुःख कहीं पाना भी सुलभ है क्या ? इन आदि अण्डनायक श्रीराम की देवी को ले जाना ही श्लाघ्य होगा । ६०७

❀ केट्टियडि येऩुरै मुऩिन्दरुळल् केळाऩ्
वीट्टियिडु मेलवऩै वेऱल्विऩै यऩ्ऱाल्
ईट्टियिऩि ऎऩ्बयऩि रामऩॆदिर् निऩ्ऩैक्
काट्टियडि ताऴ्वॆऩिदु काण्डियिदु कालम् 608

अटियेऩ् उरै–मेरा वचन; केट्टि–सुनिए; मुऩिन्तरुळल्–कोप मत करें; केळाऩ्–शत्रु रावण; वीट्टियिटुमेल्–मार देगा तो; अवऩै वेऱल्–(बाद) उसको मारना; विऩै अऩ्ऱु–(अर्थपूर्ण) काम नहीं होगा; ईट्टि–बातें बनाने से; इऩि ऎऩ् पयऩ्–अब क्या लाभ है; निऩ्ऩै–आपको; इरामऩ् ऎतिर् काट्टि–श्रीराम के (पास ले जाकर) समक्ष दिखाकर; अटि ताऴ्वॆऩ्–चरणों पर नमस्कार करूँगा; इतु काण्टि–आप यह देख लें; इतु कालम्–यही योग्य काल है । ६०८

मेरी बात सुनिए । कोप मत कीजिए । रावण आपको मार देगा तो उसके बाद उसे मारना कोई सार्थक कार्य नहीं होगा । बातें करने से क्या लाभ ? आपको श्रीराम के सामने (ले जा) दिखाकर मैं उनके चरणों में नमस्कार करूँगा । आप देखें । यही समय है । ६०८

❀ पॊऩ्ऱिणि पॊलङ्गॊडियॆऩ् मॆऩ्मयिर् पॊरुन्दित्
तुऩ्ऱिय पुयत्तिऩि दिरुत्तिदुयर् विट्टाय्
इऩ्ऱुयिल् विळैक्कवॊ रिमैप्पिऩिऱै वैहुम्
कुऩ्ऱिडै युऩैक्कॊडु कुदिप्पॆऩ्ऩिडै कॊळ्ळेऩ् 609

पॊऩ् तिणि–स्वर्णमय; पॊलम् कॊटि–सुन्दर लता-सी देवी; ऎऩ्–मेरे; मॆऩ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मयिर् तुन्ऱि पॊरुन्तिय–कोमल बालों से भरे; पुयत्तु–कन्धों पर; इनितु इरुत्ति–सुख से रहिए; तुयर् विट्टाय्–दुःख दूर कर लेंगी; इन् तुयिल् विळैक्क–सुखद निद्रा होगी और; ओर् इमैप्पिन्–पलक झपकते; इऱै वैकुम्–जहाँ भगवान श्रीराम रहते हैं; कुन्ऱिटै–उस पर्वत पर; उत्तै कॊटु–आपको लिये हुए; कुतिप्पॆन्–कूदूँगा; इटै कॊळ्ळेन्–बीच में नहीं ठहरूँगा। ६०९

स्वर्णमय सुन्दर लता-समाना देवी ! आप मेरे कोमल बालों से युक्त कन्धों पर सुख से आसीन हो जाइए, दुःख से विमुक्त हो जाइए ! सुख से सो जाइए; एक पल में आपको ले उस पर्वत पर कूद पड़ूँगा जिसमें हमारे देव प्रभु श्रीराम ठहरे हुए हैं। ६०९

❀ अऱिन्दिडै यरक्कर्तॊडर् वार्हळुळ रामेल्
मुऱिन्दुदिर नूऱियॆन् मनच्चिन मुडिप्पॆन्
नॆऱिन्दकुळ् निन्निलैमै कण्डुनॆडि योन्बाल्
वॆऱुङ्गैबॆय रेन्नॊरुव रानुम्विळि यादेन् 610

नॆरिन्त कुळल्–घुँघुराली केशिनी; अरक्कर् अऱिन्तु–राक्षस जानकर; इटै तॊटर्वार्कळ् उळर्–बीच में लड़ते; आमेल्–बनेंगे तो; ऒरुवरानुम्–किसी से भी; विळियातेन्–मारा नहीं जाऊँगा; मुऱिन्तु–छिन्न-भिन्न होकर; उतिर–गिर जायँ ऐसा; नूऱि–उन्हें मारकर; ऎन् मन चिनम्–अपने मन का क्रोध; मुटिप्पॆन्–उतारूँगा; निन् निलैमै–आपकी स्थिति; कण्टुम्–देखने के बाद भी; नॆटियोन् पाल्–ऊँचे क़द के श्रीराम के पास; वॆऱुम् कै–खाली हाथ; पॆयरेन्–नहीं जाऊँगा। ६१०

घुँघराले केश वाली देवी ! अगर राक्षस लोग इसकी टोह पाकर बीच में रुकावट डालेंगे तो मैं मरूँगा नहीं। (मुझे अमरता का वर मिला है।) उनको चूर-चूर करके मार दूँगा और अपना कोप साध लूँगा। आपको इस स्थिति में देखने के बाद मैं विष्णु-रूप श्रीरामचन्द्र के पास खाली हाथ नहीं जाऊँगा। ६१०

इलङ्गैयॊडु मेहुदिहॊ लॆन्निनु मिडन्वॆन्
वलङ्गॊळॊरु कैत्तलैयिन् वैत्तॆदिर् तडुप्पान्
विलङ्गिनरै नूऱिवरि वॆञ्जिलैयि नॊर्दम्
पॊलङ्गॊळ्कळ् राळ्हुवॆनि दन्नैपॊरु ळन्ऱाल् 611

अन्नै–माते; इलङ्कैयॊटुम् एकुति–लंका के साथ ही ले जाओ; ऎन्नितुम्–कहेंगी तो भी; इटन्तु–उखाड़ लेकर; ऎन्–अपने; वलम् कॊळ् ऒरु कैत्तलैयिल् वैत्तु–दाहिने हाथ पर रखे; ऎतिर् तटुप्पान्–सामने रोकने आये; विलङ्किनरै–शत्रुओं को; नूऱि–मारकर; वरि वॆम् चिलैयिनोर् तम्–सबन्ध भयंकर धनुर्धर श्रीराम और लक्ष्मण के; पॊलम् कॊळ् कळल्–सौन्दर्ययुक्त चरणों पर; ताळ्कुवॆन्–नमन करूँगा; इतु पॊरुळ् अन्ऱु–यह कोई (बड़ी) बात नहीं है। ६११

माते ! अगर आप यह कहें कि लंका के साथ मुझे ले जाओ, तो उसे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उखाड़ लेकर अपने दाहिने हाथ में रख लूँगा और सामने रोकने आनेवालों को मारकर सबंध कठोर धनुर्धर श्रीराम और लक्ष्मण के पास जाऊँगा और उनके सुन्दर पायलधारी चरणों पर नमस्कार करूँगा। यह कोई बड़ी चीज़ नहीं है। ६११

❀अरुन्ददियु रैत्तियऴ हऱ्करुहु शॆन्ऱुऱ्
मरुन्दऩैय देविनॆडु वञ्जऱ्शिऱै वैप्पिल्
पॆरुन्दुयरि ऩोडुमॊरु वीडुपॆऱु हिल्लाळ्
इरुन्दऩळॆ ऩप्पहरि नॆऩ्ऩडिमै यॆन्ऩाम् 612

अरुन्तति–अरुन्धती-समाना; अऴकऱ्कु अरुकु चॆन्ऱु–श्री सुन्दर राम के पास जाकर; उऩ् मरुन्तु अऩैय तेवि–आपकी अमृत-सम देवी; वञ्चर्–वंचकों की; नॆटु चिऱै वैप्पिल्–बड़ी कारा में; पॆरुम् तुयरिऩोटुम्–बड़े दुःख के साथ; ऒरु वीटु पॆऱुकिल्लाळ्–मुक्ति पाये विना; इरुन्तऩळ्–रहीं; ऎऩ–यह; पकरिऩ्–कहूँगा तो; ऎऩ् अटिमै–मेरी दासता; ऎऩ् आम्–क्या (अर्थ रखती) होगी; उरैत्ति–बताइए। ६१२

अरुन्धती-सी देवी ! अगर मैं सुन्दरमूर्ति श्रीराम के पास जाकर यह कहूँ कि 'आपकी अमृत-सम देवी वंचकों की दीर्घ बन्दिनी की स्थिति में हैं; किसी प्रकार की स्वतन्त्रता नहीं' तो मेरी सेवकाई क्या रही ? आप ही सोचकर कहें। ६१२

❀पुण्डॊडर्व हऱ्ऱियपु यत्तिऩॊडु पुक्केऩ्
विण्डवर्व लत्तैयुम् विरित्तुरै शॆय्हेऩो
कॊण्डुवरु हिऱ्ऱिलॆ ऩुयिर्क्कुऱुदि कॊण्डेऩ्
कण्डुवरु हिऱ्ऱिलॆऩ ऩक्कळऱु हेऩो 613

पुण् तॊटर्वु अकऱ्ऱिय–व्रण न लगी; पुयत्तिऩॊटु–भुजाओं के साथ; पुक्केऩ्–पहुँचूँ; विण्टवर् वलत्तैयुम्–शत्रुओं का बल और; विरित्तु–विस्तार के साथ; उरै चॆय्केऩो–बखानूँ; कॊण्टु वरुकिऱ्ऱिलॆऩ्–नहीं ले आया; उयिर्क्कु उऱुति कॊण्टेऩ्–प्राणों का हित कर लिया; कण्टु वरुकिऱ्ऱिलॆऩ्–देख न आ सका; ऎऩ–ऐसा; कळऱुकेऩो–कहूँ क्या। ६१३

मैं स्वयं व्रणविहीन भुजाएँ लेकर जाऊँ और शत्रु का बल बखानूँ ? उनसे कहूँ कि सीताजी को नहीं ले आ सका ! अपने प्राण ही बचा सका। सीताजी से मिला भी नहीं ! । ६१३

इरुक्कुमदिल् शूऴ्हडियि लङ्गैयैयि मैप्पिन्
उरुक्कियॆरि यालिहल रक्करैयु मॊऩ्ऱा
मुरुक्किनिरु दक्कुलमु डित्तुविऩै मुऱ्ऱिप्
पॊरुक्कवहल् हॆऩ्ऩिऩुम दिऩ्ऱुपुरि हिऩ्ऱेऩ् 614

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मतिल् चूळ् इरुक्कुम्–प्राचीरों से घिरी; कटि इलङ्कैयै–सुरक्षित लंका को; इमैप्पित्–पलक झपकते; ऍरियाल् उरुक्कि–आग में पिघला कर; इकल् अरक्करैयुम्–शत्रु राक्षसों को; ऑन्ड्रा मुरुक्कि–एकत्र मारकर; निरुत कुलम् मुटित्तु–राक्षस कुल का नाश करके; वित्तै मुऱ्ऱि–कर्तव्य पूरा करके; पॊरुक्क अकल्क–शीघ्र जाओ; ऍन्निनुम्–कहेंगी तो भी; अतु–वह; इन्ऱु–आज; पुरिकिन्ऱेन्–करूँगा। ६१४

प्राचीर-सहित लंका को पलक झपकते आग से पिघला डालो; युद्ध करने आनेवाले राक्षसों को एक साथ मारो। राक्षसकुल को ही मटिया-मेट कर दो। यह सब करके शीघ्र चलो। —अगर आपकी यही आज्ञा हो तो अभी वैसा कर दूँगा। ६१४

इन्दुनुद नित्तॊडव णॆय्दियिहल् वीरन्
शिन्दैयुऱु वॆन्दुयर्द विर्न्दर्तॆळि वोडुम्
अन्दमिल रक्करहुल मऱ्ऱविय नूऱि
नन्दलिल्पु विक्कणिडर् पिऱ्कळैद नन्ऱाल् 615

इन्तु नुतल्–चन्द्र-ललाटिनी; नित्तॊटु–आपके साथ; अवण् ऍय्ति–वहाँ जाकर; इकल् वीरन्–युद्धवीर श्रीराम का; चिन्तै उऱु वॆम् तुयर्–मानसिक सन्ताप; तविर्न्त तॆळिवोटुम्–दूर होने से जो होगी उस निश्चिन्तता के साथ; अन्तम् इल्–निस्सीम; अरक्कर् कुलम्–राक्षसकुल को; अऱ्ऱु अविय–मार मिटाते हुए; नूऱि–हत कर; नन्तल् इल्–अक्षय; पुविक्कण्–भूतल में; इटर्–दुःख को; पिन् कळैतल्–बाद दूर करना; नन्ऱु–अच्छा होगा। ६१५

चन्द्र-सम भाल वाली ! आपको उधर ले जाऊँगा। युद्धवीर श्रीराम का कठोर दुःख दूर हो जायगा। उससे उत्पन्न निश्चिन्तता के साथ, बाद, इधर आऊँ राक्षसों के वर्गों को निर्मूल करूँ और उनका नाश करके अक्षय भूमि का संकट दूर करूँ —यही श्लाघ्य लगता है। ६१५

❀ वेऱिनिवि ळम्बवुळ दन्ऱुविदि यालिप्
पेऱुपॆऱ वॆन्गणरु डन्दरुळु पिन्बोय्
आऱुदुय रञ्जॊलिळ वञ्जियडि यन्ऱोळ्
एऱुहडि दॆन्ऱुतॊळु दिन्नडिप णिन्दान् 616

अम् चॊल्–मधुरवाणी; इळ वञ्चि–बाललता-सी भगवती; वेऱु–अन्य; इति विळम्प–अब कहने के लिए; उळतु अन्ऱु–है नहीं; वितियाल्–आज्ञा करें तो; इप्पेऱु पॆऱ–यह सौभाग्य पाने का; ऍन् कण्–मुझे; अरुळ् तन्तरुळु–मौका देने की कृपा कीजिए; पिन् पोय्–बाद; तुयरम् आऱु–दुःख शान्त कर लीजिए; अटियन् तोळ्–मेरे कन्धों पर; कटितु एऱु–शीघ्र चढ़ जाएँ; ऍन्ऱु–ऐसा; तॊळुतु–विनय करके; इन् अटि–सुखदायक चरणों पर; पणिन्तान्–नमस्कार किया। ६१६

मधुरभाषिणी 'वञ्जि' लता-सी भगवती ! आगे कहने को कुछ नहीं है। आप आज्ञा दें और मुझे यह सौभाग्य प्राप्त कराने की दया करें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आप भी उनके पास पहुँचकर दुःखविमुक्त हो सुखी रहें। चढ़िए मेरे कन्धे पर शीघ्र। हनुमान ने यह विनय करके उनके सुखद चरणों में नमस्कार किया। ६१६

एय नन्मॊऴि यॆय्द विळम्बिय, तायै मुन्निय कन्ऱनै यान्ऱनक्
काय दन्मै यरियदन् ऱामॆन्त्, तूय मॆन्शॊ लिन्नैयन शॊल्लिनाळ् 617

एय नल् मॊऴि–योग्य अच्छे वचन; ऎय्त विळम्पिय–उचित रीति से जिसने कहा; तायिन् मुन्निय–अपनी माता (गाय) के सामने स्थित; कन्ऱु अन्नैयान् तन्नक्कु–बछड़े-समान उससे; आय तन्मै–वह प्रकार; अरियतु अन्ऱाम्–(तुम्हारे लिए) कठिन नहीं; ऎन्न–कहकर; इन्नैयत–यों; तूय मॆन् चॊल्–पवित्र कोमल बातें; चॊल्लिनाळ्–सीताजी बोलीं। ६१७

हनुमान ने योग्य ही शब्द उचित प्रकार से कहा। गाय के समक्ष बछड़े के समान उससे देवी ने यों कहा। तुमने जो कहा, वह तुम्हारे लिए असाध्य नहीं। उन्होंने आगे पवित्र और कोमल ये वाक्य कहे। ६१७

अरिय दन्ऱुनिन् नाऱ्ऱलुक् केऱ्ऱदे, तॆरिय वॆण्णिनै शॆय्वदुम् जॆय्दिये
उरिय दन्ऱॆन्न वोर्हिन्ऱ दुण्डदॆन्, पॆरिय पेदैमैच् चिन्मदिप् पॆण्मैयाल् 618

अरियतु अन्ऱु–कठिन नहीं; निन् आऱ्ऱलुक्कु–तुम्हारे बल-विक्रम के; एऱ्ऱते–योग्य ही; तॆरिय ऎण्णिनै–सोच-समझकर विचारा है; चॆय्वतुम् चॆय्तिये–कर भी दोगे; अतु–वह कार्य; ऎन्–अपने; पॆरिय पेतैमै–बड़ी मूर्खता; चिन्मति–कम बुद्धिमत्ता; पॆण्मैयाल्–के स्त्रीत्व के कारण; उरियतु अन्ऱु–उचित नहीं; ऎन्न–ऐसा; ओर्किन्ऱतु–सोचना; उण्टु–(पड़ता) है। ६१८

हाँ! वह काम असाध्य नहीं। अपनी शक्ति के अनुसार ही तुमने विचारा है। तुम करोगे भी। पर मेरी तुच्छ बुद्धि के स्त्रीत्व के कारण वह ठीक नहीं लगता। ६१८

वेलै यिन्निडै येवन्दु वॆय्यवर्, कोलि वॆञ्जर निन्नॊडुङ् गोत्तपो
दाल मन्नवर्क् कल्लैयॆऱ् कल्लैयाल्, शाल वुन्दडु माऱुन् दनिमैयोय् 619

वॆय्यवर्–सन्तापक (राक्षस); वेलैयिन् इटैये वन्तु–समुद्र में (जाते समय) बीच में आकर; कोलि–तुम्हें घेरकर; निन्नॊटुम्–तुम पर; वॆम् चरम्–भयंकर शर; कोत्त पोतु–(धनु पर) लगाकर जब मारें तब; आलम् अन्नवर्क्कु–हलाहल-सम उनसे; अल्लै–न लड़ सको; ऎऱ्कु–और मुझे; अल्लै आल्–बचा न सको, बनोगे; तनिमैयोय्–एकाकी; चालवुम् तटुमाऱुम्–तब हमारा मन अस्त-व्यस्त हो जायगा। ६१९

मानो कि मुझे समुद्र के ऊपर ले जाते समय बीच में राक्षस आ जाते हैं और तुम पर भयंकर शर-वर्षा करते हैं। तब तुम न अपने (हितकारी) हो सकते हो, न मेरे। एकाकी हो तब मेरा मन भी अस्त-व्यस्त होगा और तुम्हारा मन भी। ६१९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्ऱि युम्बिऱि दुळ्ळदॊन् ऱारियन्, वॆन्ऱि वॆञ्जिलै माशुणुम् वेऱिनि
नन्ऱि यॆन्बदम् वञ्जित्त नाय्हळिन्, निन्ऱ वञ्जनै नीयु निनैत्तियो 620

अन्ऱियुम्–और भी; पिऱितु ऒन्ऱु–अन्य एक (बात); उळ्ळतु–है; आरियन्–पूज्य श्रीराम के; वॆन्ऱि वॆम् चिलै–विजयी कठोर धनु; माचु उणुम्–कलंकित हो जायगा; इनि वेऱु–और भी एक दूसरी बात है; नन्ऱि ऎन्पतम्–लोकक्षेमार्थ रचित यज्ञ की हवि को; वञ्चित्त–वंचना से ले जानेवाले; नाय्कळित् निन्ऱ–कुत्तों के पास जो रहती है; वञ्चनै–वह वंचक बुद्धि; नीयुम् निनैत्तियो–तुमने भी सोची क्या। ६२०

और भी एक बात है। पूज्य श्रीराम के विजयी धनु पर कलंक लग जायगा। इसके अलावा और भी एक कारण है। तुम भी उन वंचक कुत्तों का-सा विचार अपने मन में लाये जो लोकरक्षक यज्ञ की हवि को वंचना से चुरा ले जाते हों! । ६२०

कॊण्ड पोरिनॆङ् गॊऱ्ऱवन् विऱ्ऱॊळिल्, अण्ड रेवरु नोक्कवॆन् नाक्कैयैक्
कण्ड पोररक् कन्विळि काहङ्गळ्, उण्ड पोदन्ऱि यानुळॆ नावॆनो 621

कॊण्ट पोरिन्–आगामी युद्ध में; ऎम् कॊऱ्ऱवन्–मेरे राजा के; विल् तॊळिल्–धनुकर्म को; अण्टर् एवरुम् नोक्क–सभी देवों के देखते (विस्मय करते) रहते; ऎन् आक्कैयै–मेरे शरीर को; कण्ट–जिसने देखा; पोर् अरक्कन् विळि–युद्धरत राक्षसों की आँखों को; काकङ्कळ्–कौए; उण्ट पोतु अन्ऱि–जब खाएँगे तब के सिवा; यान् उळॆन् आवेनो–मैं सचमुच जीऊँगी क्या। ६२१

देखो। आगामी युद्ध में देवों के मेरे श्रीराजाराम का धनुकार्य देखते रहते कौए राक्षस रावण की उन आँखों को खाएँगे, जिन्होंने मेरे पावन शरीर को कुदृष्टि से देखा था। तभी मैं कृतकृत्य होऊँगी। अन्यथा नहीं। ६२१

वॆऱ्ऱि नाणुडै विल्लियर् विऱ्ऱॊळिल्, मुऱ्ऱ नाणिल रक्कियर् मूक्कॊडुम्
अऱ्ऱ नाणिन रायिन पोदन्ऱिप्, पॆऱ्ऱ नाणमुम् बॆऱ्ऱिय दाहुमो 622

वॆऱ्ऱि नाण् उटै–विजयी डोरे-सहित; विल्लियर्–धनुर्धर; विल् तॊळिल् मुऱ्ऱ–अपने धनुओं का कार्य साध लें; नाण् इल् अरक्कियर्–निर्लज्ज राक्षसियाँ; अऱ्ऱ मूक्कॊटुम्–नासिकाहीन और; अऱ्ऱ नाणिनर्–मंगल-सूत्र रहित (विधवाएँ बनकर); आयिन पोतन्ऱि–नहीं बनेंगी तब तक; पॆऱ्ऱ नाणमुम्–मेरी लज्जा (मेरा मान); पॆऱ्ऱियतु आकुमो–अर्थयुक्त रहेगी क्या। ६२२

विजयशील डोरों-सहित धनुर्धर श्रीराम और लक्ष्मण धनु का कार्य साधेंगे और निर्लज्ज राक्षसियाँ नासिका (आभरणों) से और मंगलसूत्रों से हीन हो जायँगी। तभी न मेरी लाज रहेगी! नहीं तो रहेगी क्या? (इस पद में आये 'नाण्' शब्द के तीन अर्थ हैं— धनु का डोरा,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लज्जा या मान और मंगल-सूत्र जो दक्षिण में अहिवात के चिह्न के रूप में विवाह के अवसर पर वर द्वारा वधू को पहनाया जाता है। वह सूत्र हमेशा नूतन रखा जाता है। जर्जर होने पर तुरन्त बदल दिया जाता है।) । ६२२

पॊऱ्पि ऱङ्गलि लङ्गै पॊरुन्दलर्
अॆऱ्पु माल्वरै याहिल देयॆनिन्
इऱ्पि ऱप्पुमॊ ऴुक्कुमि ऴुक्कमिल्
कऱ्पुम् यान्बिऱर्क् कॆङ्ङनङ् गाट्टुहेन् 623

पॊन् पिऱङ्कल्–स्वर्ण-पर्वत पर स्थित; इलङ्कै–लंका; पॊरुन्तलर्–अमित्रों की; अॆऱ्पु माल् वरै–हड्डियों का बड़ा पर्वत; आकिलते अॆनिन्–नहीं बनेगी तो; इल् पिऱप्पुम्–उत्तम कुल में जन्म; ऒऴुक्कुम्–और अपना सदाचरण; इऴुक्कम् इल् कऱ्पुम्–निर्दोष पातिव्रत्य; यान्–मैं; पिऱर्क्कु–दूसरों को; अॆङ्ङनम्–कैसे; काट्टुकेन्–प्रमाणित करूँगी। ६२३

यह स्वर्णनगरी लंका हड्डियों की गिरि न बनी तो मैं अपने उत्तमकुल-जन्म, सदाचार और अनिंद्य पातिव्रत्य को कैसे प्रमाणित कर सकूँगी ? । ६२३

अल्लन् माक्क ळिलङ्गैय दाहुमो, अॆल्लै नीत्त वुलहङ्गळ् यावुमॆन्
शॊल्लि नाऱ्चुडु वेनदु तूयवन्, विल्लि नाऱ्ऱऱ्कु माशॆन्ऱु वीशिनेन् 624

अल्लल् माक्कळ्–परपीडक पशु के समान राक्षसों की; इलङ्कैयतु आकुमो–लंका तक सीमित रहेगी क्या; अॆल्लै नीत्त–निस्सीम; उलकङ्कळ् यावुम्–सारे लोकों को; अॆन् चॊल्लिताल्–अपने शाप से; चुटुवेन्–जला डालूँगा; अतु–वह; तूयवन्–पवित्र श्रीराम के; विल्लिन् आऱ्ऱऱ्कु–धनु की शक्ति के लिए; माचु–कलंक होगा; अॆन्ऱु–मानकर; वीचिनेन्–फेंक दिया। ६२४

सुनो ! मैं शाप दे दूँ तो केवल लंका तक ही उसकी नाशकारी शक्ति सीमित रहेगी ? नहीं, निस्सीम सारे लोकों को जला डालूँगी। पर ऐसा करने से पावनमूर्ति श्रीराम के विजयकोदण्ड की शक्ति पर बट्टा लग जायगा। इसलिए मैंने उस विचार को एक दम त्याग दिया है ! । ६२४

वेऱु मुण्डुरै केळदु मॆय्म्मैयोय्, एऱु शेवहन् मेनियल् लालिडै
आऱु मैम्बॊऱि निन्नैयु माणॆनक्, कूऱु मिव्वुरुत् तीण्डुदल् कूडुमो 625

मॆय्मैयोय्–सत्यव्रती; उरै वेऱुम् उण्टु–बात और भी है; अतु केळ्–वह भी सुनो; एऱु चेवकन्–बढ़ते यश के वीर के; मेनि अल्लाल्–शरीर के सिवा; इटै–मध्य; आऱुम् ऐम्पॊऱि–संयत पञ्चेन्द्रिय के; निन्नैयुम्–तुमको भी; इ उरु–यह आकार; आण् अॆन–पुरुष ही; कूऱुम्–(जिसको) लोग कहेंगे; तीण्टुतल्–स्पर्श करना; कूटुमो–(सही) हो सकेगा क्या। ६२५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सत्यानुगामी ! और भी एक कारण है ! दिने-दिने बढ़नेवाली वीरता के अपने नाथ श्रीराम के शरीर के सिवा इन्द्रिय-संयमी तुम्हारा भी स्पर्श कर सकूँगी क्या ? क्योंकि लोग तुम्हारे इस शरीर को पुरुष ही तो मानते हैं ! । ६२५

तीण्डि नान्नॆन्नि नित्तनै शेण्बहल्, ईण्डु मोवुयिर् मॆय्यि निमैप्पिन्मुन्
माण्डु तीर्वन्नॆन् रॆनिलम् वन्कैयाल्, कीण्डु हॊण्डॆळुन् देहिनन् कीळ्मैयान् 626

कीळ्मैयान्–नीच-स्वभाव रावण; तीण्टिनान् ऍन्नि–स्पर्श करता तो; इत्तनै चेण् पकल्–इतने लम्बे दिन; उयिर्–प्राण; मॆय्यिल्–शरीर में; ईण्टुमो–टिके रहते क्या; इमैप्पिन् मुन्–पलक मारने की देर के अन्दर ही; माण्टु तीर्वन् ऍन्रे–मर जाती, समझकर ही तो; निलम्–भूमि को ही (मेरे साथ); वन् कैयाल्–कठोर हाथों से; कीण्टु कॊण्टु–उखाड़ लेकर; ऍळुन्तु एकिनन्–ऊपर उठकर (आकाशमार्ग से) गया । ६२६

नीच-मन रावण ने मेरा स्पर्श किया होता तो क्या इतने दीर्घ दिन मेरे प्राण शरीर में टिके रहते ? रावण को मालूम था कि अगर वह मुझे छूता तो पलक झपते मैं मर जाती । इसीलिए वह अपने कठोर हाथों से पर्णशाला के साथ भूमि को भी खोद ले आकाश में उठ आया । ६२६

मेवु शिन्दॆयिन् मादरै मॆय्तॊडिल्, तेवु पॊन्रलै शिन्दुह नीयॆनप्
पूविन् वन्द पुरादन नेपुहल्, शाव मुण्डॆन दारुयिर् तन्ददाल् 627

मेवु चिन्तै इल्–मिलने की इच्छा न रखनेवाली; मातरै–स्त्रियों को; नी मॆय् तॊटिल्–तुम शरीर छुओगे तो; तेवु–दैवी वर प्राप्त; पॊन् तलै–स्वर्णकिरीटयुक्त सिर; चिन्तुक–कटकर गिर जायँ; ऍन–ऐसा; पूविन् वन्त–कमलपुष्प पर प्रकट; पुरातनतै पुकल्–पुरातन पुरुष ब्रह्मा का ही कहा हुआ; चावम् उण्टु–शाप एक है; ऍनतु–(उसी ने); आरुयिर्–मेरे प्राण; तन्ततु–सुरक्षित रखे । ६२७

और एक शाप है जिसको कमलपुष्प पर प्रगट पुरातनदेव ब्रह्मा ने स्वयं उसे दिया था । जो तुमको नहीं चाहतीं उन स्त्रियों को बलात् स्पर्श करोगे तो तुम्हारे दिव्यवरसंयुक्त और स्वर्णकिरीटयुक्त सिर खण्डित होकर चू जायँगे । उसी शाप ने मुझे प्राणदान दिया है ! । ६२७

अन्न शाब मुळदॆन वाणैयाल्, मिन्नु मौलियन् वीडणन् मॆय्म्मैयान्
कन्नि यॆन्वयिन् वैत्त करुणैयाल्, शॊन्न दुण्डु तुणुक्क महरुवाळ् 628

अन्न चापम्–वह शाप; उळतु ऍन–है ऐसा; आणैयाल्–शपथ खाकर; मिन्नु मौलियन्–चमकदार किरीटधारी; मॆय्म्मैयान्–सत्यसंध; वीटणन् कन्नि–विभीषण की कन्या (त्रिजटा) ने; तुणुक्कम् अकरुवाळ्–मेरा डर दूर करने हेतु; ऍन् वयिन्–मेरे प्रति; वैत्त करुणैयाल्–रखी दया के कारण; चॊन्नतु–जो कहा; उण्टु–वह समाचार है । ६२८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह बात चमकदार किरीटी धर्मात्मा सत्यव्रती विभीषण की तनया त्रिजटा ने मुझसे क़सम खाकर कही थी। उसने मेरा भय निवारण करने के लिए दया करके मुझसे कही थी। ६२८

आय दुण्मैयि नानुम दन्ऱैनिन्, माय्वॅन् मन्ऱ वरम्वऴु वादॅन्ऱुम्
नाय हन्वलि यॅण्णियु नानुडैत्, तूय्मै काट्टवु मित्तुणै तूङ्गिनेन् 629

आयतु–वह; उण्मैयिनालुम्–सत्य है, उससे; अरम्–धर्म; मन्ऱ वऴुवातु–अवश्य बेकार नहीं होगा; ऍन्ऱुम्–यह मानकर और; नायकन्–नाथ श्रीराम का; वलि ऍण्णियुम्–बल सोचकर; नानुटै तूय्मै–और अपनी पवित्रता; काट्टवुम्–दिखाने; इ तुणै–इतना समय; तूङ्किनेन्–ठहरे रही; अतु अन्ऱ ऍनिल्–वह नहीं होता तो; माय्वॅन्–मर जाती। ६२९

मैं इतने दिन रही भी इसी विश्वास पर कि वह शाप है। धर्म अवश्य बेकार नहीं होगा और श्रीराम का बल अमोघ है; और मैं अपनी पतिव्रता को भी लोगों के सामने प्रमाणित करना चाहती थी। अगर वह शाप न होता तो मर ही गयी होती। ६२९

आण्डु निन्ऱु मरक्क नहऴ्नदुहॊण्, डीण्डु वैत्त दिळव लियऱ्ऱिय
नीण्ड शालै यॊडुनिलै निन्ऱदु, काण्डि यैयनिन् मॅय्युणर् कण्गळाल् 630

आण्टु निन्ऱुम्–वहाँ से; अरक्कन् अकऴ्नतु कॊण्टु–राक्षस जिस भूमि को खोद ले आकर; ईण्टु वैत्ततु–इधर रखा है, वह; इळवल् इयऱ्ऱिय–देवर द्वारा निर्मित; नीण्ट चालै ऒटुम्–बड़ी पर्णकुटीर के साथ; निलै निन्ऱतु–स्थिर रूप से इधर है; ऐय–तात; निन् मॅय् उणर्–तुम अपने सत्यदर्शी नेत्रों से; काण्टि–देखो। ६३०

यह भूमि का अंश तुम अपने सत्यपरक नेत्रों से देख लो। इसमें देवर द्वारा निर्मित बड़ी पर्णकुटीर भी देख लो। राक्षस इसी को पंचवटी प्रदेश से खोद लाया था। ६३०

तीर्वि लेनि दॊरुपह लुज्जिलै, वीरन् मेनियै मानुमिव् वीङ्गुनीर्
नार नाण्मलर्प् पॊय्हैयै नण्णुवेन्, चोरु मारुयिर् काक्कुन् दुणिविनाल् 631

ऒरु पकलुम्–एक दिन के लिए भी; इतु तीर्वु इलेन्–इससे अलग नहीं हुई; चोरुम् आरुयिर्–शिथिल शरीर से लगे प्राणों को; काक्कुम् तुणिविनाल्–बचा लेने के संकल्प से; चिलै वीरन्–धनुर्धर श्रीराम के; मेनियै मानुम्–शरीर की तरह (रंग में) रहनेवाले; इ वीङ्कु नीर्–इस विशाल; नार नाण् मलर्–जलसमृद्ध और सद्यविकसित कमल-पुष्पों से भरे; पॊय्कैयै–तडाग के; नण्णुवेन्–पास आती। ६३१

इस पर्णशाला से मैं एक दिन भी अलग नहीं हुई। शिथिल शरीर से लगे प्राणों को बचाए रखने के निश्चय के कारण मैं कभी-कभी उस जल-समृद्ध और सद्यविकसित कमलपुष्प-भरे तडाग के पास जाती, क्योंकि वह जलाशय धनुर्धर श्रीवीरराघव के (रंग में) शरीर के समान है। ६३१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आद लान्नदु कारिय मन्ऱैय, वेद नायहन् बालिनि मीण्डनै
पोदल् कारिय मॅन्ऱनळ् पूवैयक्, कोदि लानु मिनैयन कूऱिनान् 632

ऐय–तात; आतलाल्–इसलिए; अतु–वह (तुम्हारा विचार); कारियम् अन्ऱु–करने योग्य कार्य नहीं; इनि–आगे; वेतनायकन् पाल्–वेदनायक के पास; मीण्टनै पोतल्–लौट जाना; कारियम्–कर्तव्य है; ऍन्ऱनळ्–कहा; पूवै–देवी ने; अ कोतु इलानुम्–वह निर्दोष हनुमान ने भी; इनैयन–ये बातें; कूऱिनान्–कहीं। ६३२

तात ! इन कारणों से तुम्हारा विचार कार्यान्वित करने योग्य नहीं है। अब तुम्हारा वेदनाथ श्रीराम के पास लौट जाना ही कर्तव्य है। —देवी ने यों कहा। उस अनिंद्य हनुमान ने भी निम्नोक्त बातें कहीं। ६३२

नन्ऱु नन्ऱिव् वुलहुडै नायहन्, तन्ऱु णैप्पॅरुन् देवि तवत्तॊऴिल्
ऍन्ऱु शिन्दै कळित्तुवन् देत्तिनान्, निन्ऱ शङ्गै यिडरॊडु नीङ्गिनान् 633

निन्ऱ इटरोटु–विद्यमान कष्टों के साथ; चङ्कै नीङ्किनान्–शंकाओं से छूटकर; उलकुटै नायकन् तन्–सर्वलोकनायक की; तुणै–संगिनी; इ पॅरुम् तेवि–इन महीयसी देवी का; तवत् तॊऴिल्–तपकर्म; नन्ऱु नन्ऱु–साधु है, साधु; ऍन्ऱु–ऐसा; चिन्तै कळित्तु–मन में मुदित होकर; उवन्तु–उत्साह के साथ; एत्तिनान्–उनकी संस्तुति की। ६३३

हनुमान के मन में जो कष्ट और शंकाएँ थीं, उन सभी से अब वह निवृत्त हो गया। उसने सोचा कि सर्वलोकपति श्रीराम की संगिनी इन महीयसी देवी का तपकर्म बहुत ही उत्कृष्ट है। उसे अपार हर्ष हुआ। उसने देवी को बड़े ही उत्साह के साथ संस्तुति की। ६३३

इरुळु आल मिरावणा नालिदु, तॅरुळु नीयिनिच् चिल्पह ऱङ्गुऱिन्
मरुळु मन्नवर् कियान्शॊलुम् वाशहम्, अरुळु वायॅन् ऱडियि निऱैञ्जिनान् 634

नी–आप; इनि–अब; चिल् पकल्–कुछ दिन; तङ्कुऱिन्–ठहरेंगी तो; इरावणनाल्–रावण के कारण; इरुळुम् आलम् इतु–अन्धकारमग्न यह संसार; तॅरुळुम्–प्रकाशमय हो जायगा; मरुळुम् मन्नवर्कु–दुःखमोहित राजा को; यान् चॊल्लुम्–मुझसे कथनीय; वाचकम्–सन्देश; अरुळुवाय्–कहने की कृपा करें; ऍन्ऱु–कहकर; अटियिन् इऱैञ्चिनान्–उनके चरणों पर विनय की। ६३४

देवी ! आप और थोड़े दिन यहाँ ठहरेंगी तो रावण के कारण अन्धकार में मग्न यह संसार प्रकाशमय हो जायगा। अब मैं आपके वियोग के कारण दुःख-मोहित श्रीराम के पास क्या कहूँ ? वह सन्देश कहने की कृपा कीजिए। हनुमान ने उनके चरणों में नमस्कार करके विनय की। ६३४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ इऩ्ऩु मीण्डॊरु तिङ्ग ळिरुप्पल्याऩ्
निऩ्ऩै नोक्किप् पहर्न्ददु नीदियोय्
पिऩ्ऩै याबि पिडिक्किन् ऱिलेऩन्द
मऩ्ऩ ऩाणै यिदऩै मऩक्कॊळ् 635

नीतियोय्—नीतिश्रेष्ठ; याऩ्—मैं; इऩ्ऩुम्—और; ऒरु तिङ्कळ्—एक महीना; ईण्टु इरुप्पल्—यहाँ रहूँगी; पिऩ्ऩै—बाद; आवि पिटिक्किऩ्ऱिलेऩ्—प्राण धारण नहीं करूँगी; अऩ्त मऩ्ऩऩ् आणै—उन राजाराम की क़सम; निऩ्ऩै नोककि—तुम्हारे समक्ष; पकर्न्ततु—जो मैंने कही; इतऩै—यह; नी—तुम; मऩक्कॊळ्—दृढ़ रूप से मन में धारण कर लो। ६३५

सीताजी ने उत्तर में कहा कि हे नीतिमान ! मैं यहाँ और एक महीने तक ही (जीवित) रहूँगी। उसके बाद प्राण धारण नहीं करूँगी। श्रीराजाराम की क़सम ! तुमसे जो यह कहती हूँ तुम उसे खूब मन में धारण कर लो। ६३५

❀ आरऩ् दाळ्दिरु मार्बऱ् कमैन्ददोर्
तारऩ् दाऩल ळेऩुऩ् दयावॆऩुम्
ईरऩ् दाऩहत् तिल्लैयॆऩ् ऱालुन्दऩ्
वीरङ् गात्तलै वेण्डॆऩ्ऱु वेण्डुवाय् 636

आरम् ताळ्—हारालंकृत; तिरुमार्पऱ्कु—श्रीवक्ष वाले श्रीराम के; अमैन्ततु—योग्य; ओर् तारम् ताऩ् अलळ्—एक पत्नी हूँ नहीं मैं; एऩुम्—तो भी; तया ऍऩुम्—दया नाम की; ईरम् ताऩ्—आर्द्रता; अकत्तु इल्लै—मन में नहीं हो; ऍऩ्ऱालुम्—तो भी; तऩ् वीरम् कात्तलै—अपनी वीरता (का नाम) बचाना; वेण्टु—आपको चाहना है; ऍऩ्ऱु—ऐसा; वेण्टुवाय्—(तुम श्रीराम से) अर्ज़ कर लो। ६३६

हारालंकृत वक्ष वाले श्रीराम के योग्य पत्नी नहीं हूँ, सही। उनके मन में दयार्द्रता नहीं हो तो भी अपनी वीरता के यश को सुरक्षित कर लेना आवश्यक है —यह उनसे कहो। ६३६

❀ एत्तुम् वॆऩ्ऱि यिळैयवऱ् कीदॊरु
वार्त्तै शॊल्लुदि मऩ्ऩरु ळालॆऩैक्
कात्ति रुन्द तऩक्के कडऩिडै
कोत्त वॆञ्जिऱै वीडॆऩ्ऱु कूऱुवाय् 637

कूऱुवाय्—मेरा वृत्तान्त कहनेवाले तुम; एत्तुम्—स्तुत्य; वॆऩ्ऱि इळैयवऱ्कु—विजयी देवर से; मऩ् अरुळाल्—राजाराम की आज्ञा के अनुसार; ऍऩै कात्तु इरुन्त तऩक्के—मेरी जो रक्षा करते रहे, उन्हें; इटै कोत्त—बीच में आये; वॆम् चिऱै—कठोर कारावास से; वीटु—छुड़ाना; कटऩ्—कर्तव्य है; ऍऩ्ऱु—ऐसा; ईतु—यह; ऒरु वार्त्तै—एक सन्देश; चॊल्लुति—कहो। ६३७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरा वृत्तांत वहाँ जाकर जब कहोगे तब प्रकीर्तित विजयशाली मेरे देवर से कहो कि श्रीराम की आज्ञा से जो मेरी रक्षा के कार्य में लगे रहे उनका अब मध्य में मुझे प्राप्त कारावास से छुड़ाना भी उन्हीं का कर्तव्य होगा। ६३७

❀ तिङ्ग ळॊन्ऱिन्नॆन् शॆय्दवन् दीऱन्ददाल्
इङ्गु वन्दिल नॆयॆनिन् याणर्नीर्क्
कङ्गै याऱ्ऱङ् गरैयडि येऱ्कुन्दन्
शॆङ्गै याऱ्कडन् शॆय्हॆन्ऱु शॆप्पुवाय् 638

तिङ्कळ् ऒन्ऱिन्—एक महीने में; ऎन् चॆय् तवम्—मेरी क्रियमाण तपस्या; तीर्न्तताल्—पूरी होगी, इसलिए; इङ्कु—यहाँ; वन्तिलन्ने ऎनिन्—नहीं आयँगे तो; याणर् नीर्—सुन्दर जल-प्रवाह की; कङ्कैयाऱ्ऱङ् करै—गंगा के किनारे; अटियेऱ्कुम्—दासी, मेरा भी; तन् चॆम् कैयाल्—अपने मनोरम हाथों से; कटन् चॆय्क—क्रियाकर्म कर दें; ऎन्ऱु—ऐसा; चॆप्पुवाय्—कहो। ६३८

एक महीना जीवित रहने का मेरा संकल्प है। एक महीने में वह तप पूरा हो जायगा। तब तक वे इधर न आएँगे तो वे वहीं सुन्दर प्रवाह की गंगानदी के जल से मेरा क्रिया-कर्म अपने सुन्दर हाथों से कर दें। ऐसा उनसे कह दो। ६३८

❀ शिऱक्कु मामियर् मूवर्क्कुञ् जीदैयाण्
डिऱक्किन् ऱाडॊळु दाळॆन्नु मिन्नशॊल्
अऱत्ति नायहन् बालरु ळिन्मैयाल्
मऱक्कु मायिनु नीमऱ वेलैया 639

ऐया—तात; चिऱक्कुम्—गौरवपूर्ण; मामियर् मूवर्क्कुम्—तीनों सासों से; आण्टु इऱक्किन्ऱाळ् चीतै—वहाँ मरती रही सीता; तॊळुताळ्—उसने आपको नमस्कार किया; ऎन्नुम्—ऐसा; इन्न चॊल्—यह वचन; अऱत्तिन् नायकन्—धर्म के नायक; पाल्—के पास; अरुळ् इन्मैयाल्—दया नहीं होने के कारण; मऱक्कुमायिनुम्—भूल जाएँगे तो भी; नी मऱवेल्—तुम मत भूलो। ६३९

तात ! मेरी श्रेष्ठ सासों से कहो कि वहाँ मरती रही सीता ने आपको नमस्कार किया। यह धर्ममूर्ति श्रीराम दयाहीनता के कारण भूल जाएँगे तो भी तुम मत भूलो। ६३९

वन्दै नॆक्करम् बऱ्ऱिय वैहल्वाय्
इन्द विप्पिऱ विक्किरु मादरैच्
चिन्दै यालुन्दॊ डेनॆन्ऱु शॆव्वरम्
तन्द वार्त्तै तिरुच्चॆवि शाऱ्ऱुवाय् 640

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वन्तु—आकर; ऍऩै—मुझे; करम् पऱ्ऱिय—जब पाणिग्रहण किया; वैकल्वाय्—उस दिन; इन्त इ पिऱविक्कु—इस मनुष्य-जन्म में; इरु मातरै—दो स्त्रियों का; चिन्तैयालुम् तॊटेऩ्—मन से भी स्पर्श नहीं करूँगा; ऍऩ्ऱ—ऐसा; चॆव्वरम् तन्त—दत्त श्रेष्ठ वर का; वार्त्तै—वचन; तिरुच्चॆवि चाऱ्ऱुवाय्—श्रीकर्णों में डाल दो। ६४०

हनुमान ! तुम उनके दिव्य कानों में यह एक रहस्य ही बात कहो। जब उन्होंने मेरा पाणिग्रहण किया तब उन्होंने अपना यह निश्चय सुनाया कि इस जन्म में मैं दो स्त्रियों को अपने मन से भी स्पर्श नहीं करूँगा। यह मेरे लिये वरदान-सा वाक्य था। उसे उन्हें कहो। ६४०

❀ईण्डु नानिरुन् दिऩ्ऩुयिर् मायिऩुम्
मीण्डु वन्दु पिऱन्दुतऩ् मेऩियैत्
तीण्ड लावदॊर् तीविऩै तीर्वरम्
वेण्डि ऩाडॊऴु दॆऩ्ऱु विळम्बुवाय् 641

ईण्टु नान् इरुन्तु—इधर मैं रहकर; इऩ् उयिर् मायिऩुम्—प्यारे प्राण छोड़ भी दूँ; मीण्टु वन्तु—फिर आकर; पिऱन्तु—जन्म लेकर; तऩ् मेऩियै—उनके शरीर को; तीण्टल् आवतु—स्पर्श करने का; ओर् तीविऩै तीर् वरम्—एक निष्पाप वर; तॊऴुतु—नमस्कार करके; वेण्टिऩाळ्—(सीता ने) माँगा; ऍऩ्ऱु विळम्पुवाय्—ऐसा कहो। ६४१

समझो कि मुझे इधर मरना ही पड़ा। तो भी मैं फिर जन्म लूँ और आपके ही शरीर का आलिंगन करने का भाग्य मुझे मिले। उनसे कहो कि मैंने यह वर उनसे नमस्कार करते हुए याचित किया। ६४१

❀अरशु वीऱ्ऱिरुन् दाळवु माय्मणिप्
पुरशै यानैयिऩ् वीदियिऱ् पोदवुम्
विरशु कोलङ्गळ् काण विदियिलेऩ्
उरैशॆय् दॆऩ्ऩैयॆऩ् नूऴ्विऩै युऩ्ऩुवेऩ् 642

वीऱ्ऱिरुन्तु—सिंहासन पर विराजमान होकर; अरचु आळवुम्—श्रीराम राज करेंगे; आय् मणि—घण्टियों-सहित; पुरचै यानैयिऩ्—गले की रस्सी (कलापक) वाले राजगज पर; वीतियिल् पोतवुम्—वीथियों में विजययात्रा करेंगे; विरचु कोलङ्कळ्—ये मनोरम् दृश्य; काण विति इलेऩ्—देखने के भाग्य से वंचित हूँ मैं; उरै चॆय्तु—कुछ कहूँ, इससे; ऍऩ्ऩै—क्या लाभ है; ऍऩ् ऊऴ्विऩै—अपना पूर्वकृत पाप; उऩ्ऩुवेऩ्—सोचती रहूँगी। ६४२

श्रीराम का सिंहासनस्थ होकर राज करना और कलापक-सहित घंटियों वाले राजगज पर विराजमान होकर वीथियों में भ्रमण करना देखने का मेरा भाग्य नहीं रहा। अब कुछ कहने से क्या लाभ है ? बैठकर अपना पूर्वकर्म सोचती रहूँगी। ६४२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ तन्नै नोक्कि युलहन् दळर्दर्कुम्
अन्नै नोय्क्कुम् बरदनङ् गार्रुरुम्
इन्न नोय्क्कुमङ् गेहुव दन्रिये
ऍन्नै नोक्कियिङ् गॅङ्ङन मॅय्दुमो 643

तन्नै नोक्कि–अपने वनगमन के कारण हुए; उलकम् तळर्तर्कुम्–संसार के कष्ट को; अन्नै नोय्क्कुम्–माता के दुःख को; परतन्–भरत के; अङ्कु–वहाँ रहकर; आर्रुरुम्–जो सहते रहते हैं; इन्नल् नोय्क्कुम्–उस संकट को; अङ्कु एकुवतु अन्रि–(दूर करने) उधर पधारने के सिवा; ऍन्नै नोक्कि–मेरी तरफ़; इङ्कु ऍङ्ङनम् ऍय्तुम्–इधर क्योंकर पधारेंगे। ६४३

अपने ही कारण लोकों, अपनी माता और भरत को दुःखपीडित हुए देखकर उनको अयोध्या ही जाना ठीक लगेगा। उसे छोड़कर मेरी सुध लेकर वे इधर क्योंकर पधारेंगे ? । ६४३

ऍन्दैयर् मुदलिनर् किळैजर् यार्क्कुमॅन्
वन्दनै विळम्बुदि कवियिन् मन्ननैच्
चुन्दरत् तोळनैत् तॊडर्न्दु कात्तुप्पोय्
अन्दमि रिरुनहर्क् करश नाक्कॅन्बाय् 644

ऍन्तैयर् मुतलिनर्–मेरे पिताजी आदि; किळैजर् यार्क्कुम्–सभी बन्धु-बान्धओं से; ऍन् वन्तनै–मेरा नमस्कार; विळम्पुति–कहो; कवियिन् मन्ननै–कपियों के राजा से; चुन्तरत् तोळनै–सुन्दरबाहु (श्रीराम) को; तॊटर्न्तु कात्तु–लगातार रक्षा करते हुए; पोय्–जाकर; अन्तम् इल्–अक्षय; तिरु नकर्क्कु–श्रीसमृद्ध नगर का; अरचन् आक्कु–राजा बनाओ; ऍन्पाय्–यह कहो। ६४४

मेरे पिता और अन्य बन्धु-बान्धवों से मेरी वन्दना सुना दो। कपीश सुग्रीव से मेरी ओर से प्रार्थना करो कि वे अयोध्या नगर को सुन्दरबाहु श्रीराम के पीछे जाएँ और उन्हें उसके राजा बना दें। ६४४

❀ इत्तिऱ मनैयव ळियम्ब विन्नमुम्, तत्तुऱ वॊळिन्दिलै तैय नीयॆन्ना
ऍत्तिऱत् तेदुवु मियैन्द विन्नुरै, ऒत्तन तॆरिवुर वुणर्त्ति नानरो 645

अनैयवळ्–उनके; इ तिऱम्–इस भाँति; इयम्प–कहने पर; तैयल्–देवी; नी इन्नमुम्–आपने अब भी; तत्तुऱवु–दुःख करना; ऒळिन्तिलै–नहीं छोड़ा है; ऍन्ना–कहकर; ऍ तिऱत्तु एतुवुम्–सभी तरह के हेतुओं से; इयैन्त–युक्त; इन् उरै–मधुर (आश्वासन के) शब्दों से; ऒत्तन–युक्त; तॆरिवु उऱ–समझ में आएँ ऐसा; उणर्त्तिनान्–कहकर समझाया। ६४५

जब देवी ने इस रीति से बातें कहीं तो हनुमान को बिल्कुल बुरा लगा। उसने कहा कि देवी ! आपने अब भी दुःख करना छोड़ा नहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है। फिर सब तरह के हेतुओं से युक्त और सब तरह से समीचीन वचन समझाते हुए कहने लगा। ६४५

❀ वीवाय् नीयिवण् मॅय्यः(ह्)दे, ओय्वा निन्नुयि रुय्वानाम्
पोय्वा नन्नहर् पुक्कन्ऱो, वेय्वान् मौलियुम् मॅय्यन्ऱो 646

नी इवण् वीवाय्–आप इधर मरेंगी; मॅय् अ.ःते–वह सत्य है; इन्नुयिर् ओय्वान्–जिनके प्यारे प्राण शिथिल हो रहे हैं; उय्वान् आम्–वे श्रीराम जीवित रहेंगे; पोय्–(जंगल से) जाकर; वान् अ नकर्–श्रेष्ठ उस (अयोध्या) नगर में; पुक्कु–प्रवेश करके; मौलियुम् वेय्वान् अन्ऱो–मुकुट पहनेंगे न; मॅय् अन्ऱो–सच है न। ६४६

हनुमान ने तीखे व्यंग्य के साथ कहा कि ऐसा! आप इधर मर जायँगी! सच! फिर वियोगरुग्ण और म्रियमाणप्राण श्रीरामजी जिएँगे! जंगल छोड़कर उत्कृष्ट अयोध्या नगर पहुँचेंगे और मुकुट धारण कर लेंगे। सचमुच यही होगा न? (तमिऴ में शब्द के अन्त में 'आम्' लगाने से किसी की धारणा की निपट अस्वाभाविकता और असाध्यता को लेकर तीव्र व्यंग्य द्योतित हो जाता है।)। ६४६

❀ कैत्तो डुञ्जिऱै कर्पोयै, वैत्तो निन्नुयिर् वाऴ्वानाम्
पॉय्त्तोर् विल्लिहऴ् पोवाराम्, इत्तो डॉप्पदि यादुण्डे 647

कर्पोयै–पतिव्रता आपको; कैत्तु ओटुम्–घृणा से जिससे दूर भागते हैं; चिऱै वैत्तोन्–उस कारागृह में जिसने रखा; इन् उयिर् वाऴ्वान् आम्–वह (रावण) अपने प्राण लेकर जिएगा; ओर् विल्लिकऴ्–अनुपम धनुर्धर; पॉय्त्तु पोवाराम्–अपने कर्तव्य को झुठला देंगे; इत्तोटु ऑप्पतु–इनकी समानता करनेवाली बात; यातु उण्टु–दूसरी कौन सी है। ६४७

और पतिव्रता आपको घृणित कठोर क़ैदखाने में डालनेवाला रावण अपने प्राण लेकर जीता रहेगा! रहेगा न! अनुपम धनुवीर श्रीराम और लक्ष्मण झूठे बन जाएँगे! आहा! इसकी समता में और क्या बात होगी?। ६४७

❀ नल्लोय् निन्नै नलिन्दोरैक्, कॉल्लो मॅम्मुयिर् कॉण्डङ्गे
ऍल्लो मुञ्जॅल वॅङ्गोनुम्, विल्लो डुञ्जॅल वेण्डावो 648

नल्लोय्–भली देवी; निन्नै–आपको; नलिन्तोरै–त्रस्त करनेवालों को; कॉल्लोम्–हम नहीं मारेंगे और; ऍन् उयिर् कॉण्टु–प्राण बचाकर; ऍल्लोमुम्–हम सभी; अङ्के चॅल–अयोध्या जाते; ऍम् कोनुम्–हमारे राजा श्रीराम को भी; विल्लोटुम्–धनु के साथ; चॅल वेण्टावो–नहीं जाना चाहिए क्या। ६४८

भली देवी! आपको त्रस्त करनेवाले राक्षसों को हम नहीं मारेंगे! अपने प्राणों की रक्षा करते हुए हम सब अयोध्या जाएँगे और हमारे राजा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

श्रीराम भी धनु लेकर अयोध्या जाना चाहेंगे —यही न आप कहती हैं ? । ६४८

नीन्दा वित्तलि नीन्दामे तेय्न्दा ऱाद पॅरुञ्जॅल्वम्
ईन्दा नुक्कुत्तै यीयादे, ओय्न्दा लॅम्मि नुयर्न्दार्यार् 649

नीन्ता इन्तलिन्–अतरणयोग्य दुःख-सागर में; नीन्तामे–विना तैरते संकट उठाए ही; तेय्न्तु आऱात–अक्षय और अक्षुण्ण; पॅरुम् चॅल्वम्–बड़ा धन; ईन्तानुक्कु–जिन्होंने हमें दिया उन्हें; उत्तै ईयाते–आपको दिए विना; ओय्न्ताल्–हम विरत रहें तो; ॲम्मिल्–हमसे; उयर्न्तार् यार्—श्रेष्ठ कौन होंगे । ६४९

श्रीराम ने अतरण योग्य दुःखसागर में तैरते रहे हमें अक्षय और अक्षुण्ण धन दिलाया था । उन्हें आपको न देकर अगर हम निष्क्रिय रहेंगे तो हमसे बढ़कर भलेमानुस कौन होंगे ? । ६४९

नन्ऱाय् नल्वित्तै नल्लोरैत्, तिन्ऱार् तङ्गुडर् पेय्दिन्नक्
कॉन्ऱा लल्लदु कॉळ्ळेन्ना, डॅन्ऱा नुक्किवै येलावो 650

नल् वित्तै–तपादि श्रेष्ठ कर्म; नन्ऱु आय्–खूब सोच-परखकर करनेवाले (मुनियों) को; तिन्ऱार् तम्–मारकर जो खाते हैं, उनकी; कुटर्–आँतों को; पेय् तिन्न–पिशाचों को खाने देते हुए; कॉन्ऱाल् अल्लतु–विना मारे; नाटु कॉळ्ळेन्–(कोसल) देश जाना न मानूँगा; ॲन्ऱानुक्कु–ऐसा जिन्होंने कहा उन्हें; इवै एलावो–ये बातें नहीं सुहाएँगी न । ६५०

तप, यागादि कर्म खूब सोच-परखकर जो करते रहते हैं, उन उत्तम लोगों को मारकर खानेवाले हैं राक्षस ! उनकी आँतों को पिशाचों को खाने देते हुए उनको मारे विना मैं अयोध्या लौटना नहीं सोचूँगा । यह क़सम जिन्होंने खायी उन श्रीराम के लिए ये सब योग्य कर्म नहीं रहेंगे क्या ? । ६५०

माट्टा दार्शिऱै वैत्तोयै, मीट्टा मॅन्गिल मीळ्वामे
नाट्टार् नल्लवर् नन्नूलुम्, केट्टा रिव्वुरै केट्पारो 651

माट्टातार्–शत्रुओं द्वारा; चिऱै वैत्तायै–कारा में रखी गयी आपको; मीट्टाम् ॲन्किलम्–छुड़ाया, यह यश कहे विना; मीळ्वामे–हम लौट जाएँगे क्या; नाट्टार्–देशवासी; नल्लवर्–भले लोग; नल् नूलुम्–उत्कृष्ट शास्त्र के; केट्टार्–श्रोता (ज्ञानी); इ उरै–यह बात; केट्पारो–सुनेंगे (और मानेंगे) क्या । ६५१

'शत्रुओं द्वारा कारागार में बन्द रखी हुई आपको छुड़ा दिया हमने ।' यह प्रशंसा का वचन न कहाते हुए हम लौट जाएँगे क्या ? देश के भले लोग और श्रेष्ठ शास्त्रज्ञ यह बात सुनेंगे और मानेंगे क्या ? । ६५१

पूण्डाळ् कऱ्पुडै याळ्पॉय्याळ्, तीण्डा वञ्जहर् तीण्डामुन्
माण्डा ळॅन्ऱु मन्नन्देऱि, मीण्डाल् वीरम् विळङ्गादो 652

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पूण्टु–धारण करके; आळ्–पालित; कऱ्पु उटैयाळ्–पातिव्रत्य वाली; पॊय्याळ्–(सीतादेवी) अपने वचन को झूठा न बनाकर; तीण्टा वञ्चकर्–अछूत वंचकों के; तीण्टा मुन्–स्पर्श करने से पहले; माण्टाळ्–मर गयीं; ऎन्ऱु–जानकर; मनम् तेऱि–मन में आश्वासन पाकर; मीण्टाल्–लौट जाएँगे तो; वीरम् विळङ्कातो–वीरता क्या चमक नहीं उठेगी। ६५२

पातिव्रत्य का धारण और पालन करनेवाली देवी अस्पृश्य वंचकों के स्पर्श करने से पहले ही मर गयीं। यह जानकर और इस बात का आश्वासन लेकर हम (और श्रीराम) लौट जायँगे तो हमारी वीरता की तूती बोलेगी न ? । ६५२

कॆट्टेन् नीयुयिर् केदत्ताल्, विट्टा यॆन्ऱिडिन् वॆव्वम्बाल्
ऒट्टा रोडुल होरेऴुम्, शुट्टा लुन्दॊलै यादन्ऱो 653

कॆट्टेन्–मरा मैं; नी–आपने; केतत्ताल्–शोक के कारण; उयिर् विट्टाय्–प्राण त्याग दिये; ऎन्ऱिटिल्–तो; वॆम् अम्पाल्–भयंकर शर से; ऒट्टारोटु–शत्रुओं के साथ; ओर् उलकु एऴुम्–सातों लोकों को; चुट्टालुम्–जला देंगे तो भी; तॊलैयातु अन्ऱो–अपयश मिटेगा न। ६५३

मरा मैं। (भगवान न करें) अगर आप शोक के कारण मर जायँगी तो फिर भयंकर शर से शत्रुओं के साथ सातों लोकों को जलाया गया तो भी निन्दा नहीं छूटेगी न ? । ६५३

मुन्ने कॊल्वान् मूवुलहुम्, पॊन्ने पॊङ्गिय पोर्विल्लान्
ऎन्ने निन्निलै यीदॆन्ऱाल्, पिन्ने शॆम्मै पिडिप्पानो 654

पॊन्ने–कांचने; मुन्ने–पहले ही; मूवुलकुम्–तीनों लोकों को; कॊल्वान् पॊङ्किय–मारने को जो उत्तेजित हो उठे; पोर् विल्लान्–वे युद्धधनुर्धर; निन् निलै–आपकी स्थिति; ईतु ऎन्ऱाल्–ऐसी है जानकर; पिन्ने–बाद भी; चॆम्मै पिटिप्पातो–क्षमा का गुण धारण करते रहेंगे क्या; ऎन्ने–कैसी बात। ६५४

कांचने ! (तमिऴ में स्वर्ण लक्ष्मी को भी कहते हैं। 'कांचना' नाम इधर बहुत प्रचलित है।) पहले ही श्रीराम तीनों लोकों को मिटाने का निश्चय करके युद्धधनु हाथ में ले चुके थे। अगर उनको विदित हो गया कि आपकी ऐसी स्थिति है तो क्या वे आगे भी क्षमा के गुण को धारण किये रहेंगे ? । ६५४

कोळा नारुयिर् कोळोडुम्, मूळा वॆञ्जिन मुऱ्ऱाहा
मीळा वेलयल् वेरुण्डो, माळा दोपुवि वानोडुम् 655

मूळा–साधारण रूप से जो नहीं उठता; वॆम् चिनम्–वह (श्रीराम का) भयंकर कोप; कोळ् आनार्–बुरे लोगों के; उयिर् कोळ् ओटुम्–प्राण-हरण के साथ; मुऱ्ऱ आका–अन्त नहीं होगा; मीळावेल्–(कोप) शान्त न होगा तो; पुवि–भूमि;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वानोटुम्–आकाश के साथ; माळातो–मिट नहीं जायगी क्या; अयल् वेऱु–भिन्न कुछ; उण्टो–हो सकता है क्या । ६५५

साधारण रूप से श्रीराम का क्रोध प्रकट नहीं होता । पर अब क्रोध उठा तो वह केवल बुरे राक्षसों को मारकर वहाँ शान्त हो जायगा ? नहीं होगा । अगर क्रोध शान्त नहीं हुआ तो क्या यह भूतल व्योमलोक के साथ मिलकर नष्ट नहीं हो जायगा ? उससे भिन्न कोई काम हो सकता है क्या ? । ६५५

❀ताऴित् तण्गड ऱम्मोडुम्, एऴुक् केऴुल ऎल्लामन्
ऱाऴिक् कैयव नम्बम्मा, ऊऴित्, तीयॆन वुण्णादो 656

अम्मा–माते; अन्ऱु–उस दिन; आऴि कै–चक्रहस्त; अवन् अम्पु–उनका शर; ताऴि–गहरे; तण् कटल् तम्मोटुम्–शीतल समुद्रों के साथ; एऴुक्कु एऴ् उलकु ऎल्लाम्–सात और सात लोकों को; ऊऴि ती ऎन–प्रलयाग्नि के समान; उण्णातो–नहीं खायगा क्या । ६५६

माँ ! (जिस दिन मैं जाकर श्रीराम से आपकी बात कहूँगा) उस दिन चक्रहस्त श्रीराम का शर गहरे शीतल समुद्र को चौदहों लोकों के साथ युगान्तकाल की अग्नि की तरह सोख नहीं देगा ? । ६५६

पडुत्तान् वानवर् पऱ्ऱारैत्, तडुत्तान् ऱीविनै तक्कोरै
ऎडुत्तान् नल्विनै यॆन्नाळुम्, कॊडुत्ता नॆन्ऱिशै कॊळ्ळायो 657

वानवर् पऱ्ऱारै–देव-शत्रुओं को; पटुत्तान्–मिटा दिया; ती विनै तटुत्तान्–पाप को रोका; तक्कोरै ऎटुत्तान्–साधुओं को उद्धारा; नल् विनै–अच्छे कामों को; ऎन्नाळुम्–सदा; कॊटुत्तान्–बढ़ने दिया; ऎन्ऱु–ऐसा; इचै–यश; कॊळ्ळायो–आप प्राप्त नहीं करेंगी क्या । ६५७

श्रीराम ने देवारियों को मिटाया; पाप को रोक दिया; साधुओं को उद्धारा और सत्कर्मों को वर्धित होने दिया । यह यश आप भी नहीं लेंगी क्या ? । ६५७

शिन्ना णीयिडर् तीरादे, इन्ना वैहलि नॆल्लोरुम्
नन्नाळ् काणुद नन्ऱन्ऱो, उन्ना नल्लऱ मुण्डामाल् 658

नी–आप; चिल नाळ्–कुछ दिन; इटर् तीराते–संकट-रहित न होकर; इन्ना वैकलिन्–दुःख के साथ रहेंगी तो; ऎल्लोरुम्–सभी का; नल् नाळ् काणुतल्–अच्छा दिन देखना; नन्ऱु अन्ऱो–श्लाघनीय नहीं है क्या; उन्नाल्–आपके द्वारा; नल् अऱम्–भला धर्म; उण्टाम्–पनपेगा । ६५८

आपके इधर और थोड़े दिन संकटग्रस्त होकर रहने से संसार के सारे लोग अच्छा दिन देख पायँगे । क्या वह भला नहीं है ? आपकी दया से उत्कृष्ट धर्म बढ़ेंगे । ६५८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ पुऴिक्कुङ् गण्डहर् पुण्णीरुळ्, कुऴिक्कुम् बेय्हुडै युन्दोरुम्
ऑऴिक्कुन् देव रुवन्दुळ्ळम्, कऴिक्कुन् नल्वित्तै काणायो 659

पुऴिक्कुम्–सबको खट्टा लगनेवाले; कण्टकर्–कंटकों के; पुण् नीरुळ्–व्रण से बहनेवाले रक्तप्रवाह में; कुऴिक्कुम्–स्नान करनेवाले; पेय्–भूतों के; कुटैयुम् तोरुम्–गोता लगाते समय; ऑऴिक्कुम् तेवर्–अब छिपे रहनेवाले देव; उळ्ळम् उवन्तु–मन आह्लादित होकर; कऴिक्कुम्–आनन्द मनाएँगे जो; नल् वित्तै–वह अच्छा कार्य; काणायो–आप नहीं देखेंगी क्या। ६५९

देखिए, समय आयगा जब सबके घृणा के योग्य कंटक राक्षसों के व्रणों से रक्त प्रवहित होगा और उसकी बाढ़ बन जायगी। पिशाच आदि उसमें स्नान करेंगे। ज्यों-ज्यों वे गोते लगाएँगे त्यों-त्यों अब रावण से छिपे जो रहते हैं वे खुश होकर आनन्दानुभव करेंगे। क्या वह अच्छा काम आप देखना नहीं चाहेंगी ? । ६५९

ऊऴियि निरुदियि नुरुमॆ रिन्दॆनक्, केळ्हिळर् शुडुकणै किऴित्त पुण्बॊऴि
ताऴिरुङ् गुरुदियिर् ऱरङ्ग वेलैहळ्, एऴुमॊन् ऱाहिनिन् ऱिरैप्पक् काण्डियाल् 660

ऊऴियिन् इरुतियिन्–युगान्त में; उरुम् ऍरिन्तॆत–गाज गिरती जैसे; केळ् किळर्–ज्वलन्त; चुटु कणै–तापक शर; किऴित्त पुण्–खुले व्रणों से; पॊऴि–बहनेवाले; ताळ् इरुम् कुरुतियिल्–गहरे, विशाल रक्ताशय में; तरङ्क वेलैकळ् एऴुम्–तरंगायमान सातों समुद्र; ऑन्ऱु आकि निन्ऱु–एक बनकर; इरैप्प–जो गरजेंगे वह; काण्टि–आप देखेंगी। ६६०

युगान्त में गिरनेवाले गाज जैसे श्रीराम के ज्वलन्त तथा दाहक शर राक्षसों के शरीर को चीर देंगे। उन व्रणों से रक्त बहेगा और गहरा रक्ताशय बन जायगा। उसमें सातों तरंगायमान समुद्र मिलकर एक हो जायँगे और गरजेंगे। यह आप देखेंगी। ६६०

शूलिरुम् बॆरुवयि ऱलैत्तुच् चोर्वुरुम्
आलियङ् गण्णिय ररुत्तु नीत्तत
वालियुङ् गडप्परुम् वलत्त वानुयर्
तालियम् बॆरुमलै तयङ्गक् काण्डियाल् 661

चूल् इरुम्–गर्भयुक्त-से; पॆरु वयिऱु–बड़े पेटों को; अलैत्तु–पीटते हुए; चोर्वु उरुम्–बहनेवाले; आलि अम् कण्णियर्–अश्रुजल से भरी सुन्दर आँखों वाली राक्षसियों ने; अऱुत्तु नीत्तत–जिनको तोड़कर फेंक दिया है; वालियुम् कटप्प अरुम्–वाली द्वारा भी अलंघ्य; वान् उयर्–आकाश तक उन्नत; वलत्त तालि अम् पॆरु मलै–बलवान मंगलसूत्रों के पर्वत (के समान राशियाँ); तयङ्क–शोभते हुए; काण्टि–देखेंगी। ६६१

राक्षसियाँ अपने गर्भसहित-से बड़े पेट को पीटती हुई आँखों से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बहनेवाले अश्रुजल-सहित हो अपने मंगल-सूत्र तोड़कर नीचे डाल देंगी और वे कठिन सूत्र वाली द्वारा भी अलंघ्य बड़े पर्वत बन जायँगे। उनको आप देखेंगी। ६६१

विण्णिऩी ळियनॆडुङ् गळुदुम् वॆञ्जिऱै
ऍण्णिऩी ळियपॆरुम् बऱवै यीट्टमुम्
पुण्णिऩीर्प् पुणरियिऱ् पडिन्दु पूवैयर्
कण्णिऩी राऱ्ऱिऩिऱ् कुळिप्पक् काण्डियाल् 662

विण्णिऩ् नीळिय–आकाश तक बढ़े हुए; नॆटुम् कळुतुम्–लम्बे क़द के पिशाच और; ऍण्णिऩ् नीळिय–संख्या में बढ़े; वॆम् चिऱै–भयंकर पंखों के; पॆरुम् पऱवै ईट्टमुम्–बड़े पक्षियों के झुण्ड; पुण्णिऩ् नीर् पुणरियिल्–व्रणनिर्गत रक्त में; पटिन्तु–मग्न होकर; पूवैयर्–स्त्रियों के; कण्णिऩ् नीर् आऱ्ऱिऩिल्–अश्रुजल-सरिताओं में; कुळिप्प–(शरीर को साफ़ करने के लिए) स्नान करेंगे; काण्टि–आप देखेंगी। ६६२

आकाश तक बढ़े हुए बड़े-बड़े भूत, पिशाच आदि और असंख्यक भयंकर पंखों के बड़े-बड़े पक्षियों के वृन्द राक्षसों के व्रणों से बहनेवाले रक्त-प्रवाह में पहले स्नान करेंगे और बाद स्त्रियों के अश्रुजल-प्रवाह में स्नान (करके अपने शरीर पर लगे खून, मांस आदि दूर) करेंगे। देखेंगी आप। ६६२

करम्बयिऩ् मुरशिऩङ् गऱङ्गक् कैतॊडर्
नरम्बुह ळिमिळिशै नविल नाडहम्
अरम्बैय राडिय वरङ्गि ऩाण्डॊळिल्
कुरङ्गुहण् मुऱैमुऱै कुऩिप्पक् काण्डियाल् 663

करम् पयिल्–हाथ से पीटी जानेवाली; मुरचु इऩम्–भेरियों के वर्गों के; कऱङ्क–शब्द करते; कै तॊटर्–उँगलियों से सहलाये जानेवाली; नरम्पुकळ् इमिळ्–(जिनकी) तन्त्रियाँ स्वर निकालती हैं, उन वीणा आदि वाद्यों के; इचै नविल–संगीत निकालते; अरम्पैयर्–(जिन पर) अप्सराएँ; नाटकम् आटिय–नृत्य करती हैं; अरङ्किऩ्–(उन) मंचों पर; आण् तॊळिल्–पुरुषोचित काम करनेवाले; कुरङ्कुकळ्–वानर; मुऱै मुऱै–बारी-बारी से; कुऩिप्प–कूदेंगे, उसे; काण्टि–देखेंगे। ६६३

उन मंचों पर, जहाँ अप्सराएँ भेरियों के नाद और तन्त्री-सहित वीणा आदि वाद्यों के नाद के मेल में नाच रही थीं, अब पौरुषयुक्त वानर क्रम से नाचेंगे, कूदेंगे —आप वह भी देखिएगा। ६६३

पुरैयुऱु पुऩ्ऱॊळि लरक्कर् पुण्बॊळि
तिरैयुऱु कुरुदिया ऱीर्प्पच् चॆल्वऩ
वरैयुऱु पिण्प्पॆरुम् बिऱक्क मण्डिऩ
करैयुऱु नॆडुङ्गड ऱुर्प्पक् काण्डियाल् 664

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुरै उऱु–अपराधी; पुऩ् तॊऴिल्–नीचकर्म; अरक्कर्–राक्षसों के; पुण् पॊऴि–व्रणों से बहनेवाली; तिरै उऱु–तरंगसहित; कुरुति आऱु–रक्त-नदी के; ईर्प्प–खींच लेने से; चॆल्वत्त–जो जाते हैं; वरै उऱु–(वे) पर्वत-सम; पिण पॆरुम् पिऱक्कम्–लाशों के बड़े-बड़े ढेर; मण्टित्त–एकत्र होकर; करै उऱु–तीरों पर टकरानेवाली तरंगों से युक्त; नॆटुम् कटल्–विशाल सागर को; तूर्प्प–पाट देंगे; काण्टि–देखिए। ६६४

दुष्ट और नीच-कर्म राक्षसों के व्रणों के रक्त की नदी बह निकलेगी और वह पर्वत-सम बड़ी-बड़ी लाशों को खींच लेती हुई बहेगी। वे लाशें अधिक संख्या में जाकर तीर से टकरानेवाली तरंग-सहित विशाल समुद्र को पाट देंगी। देखते रहिए। ६६४

विऩैयुडै यरक्करा मिरुन्दै वॆन्दुहच्
चऩहियॆऩ् ऱॊरुतळ् ऩडुवट् टङ्गलाऩ्
अऩहऩ्गै यम्बॆऩु मळवि लूदैयाल्
कऩहनी डिलङ्गैनिऩ् ऱुरहक् काण्डियाल् 665

चतकि ऍऩ्ऱु–जानकी के रूप में; ऒरु तळल्–एक आग; नटुवण्–बीच में; तङ्कल् आल्–रहती है, इसलिए; अतकऩ्–अनघ श्रीराम के; कै अम्पु ऍऩ्ऱुम्–हाथ के शरों रूपी; अळवु इल्–अपार; ऊतैयाल्–तेज़ पवन से; वितै उटै–पापी; अरक्कर् आम् इरुन्तै–राक्षस रूपी कोयले; वॆन्तु उक–जलकर (राख के रूप में) चू पड़ेंगे; कऩक नीटु इलङ्कै–बड़ी स्वर्णलंका; निऩ्ऱु उरुक–स्थित होकर पिघलेगी; काण्टि–आप देखेंगी। ६६५

जानकी के रूप में लंका के मध्य आग रहती है इस कारण; और अनघ श्रीराम के हाथ के शरों रूपी अपार पवन बहेगा, इस कारण पापी राक्षस रूपी कोयले जलेंगे और राख बनकर चू पड़ेंगे; और सोने की बड़ी लंका उनके मध्य रहकर पिघल जायगी। उसे आप देखें। ६६५

ताक्कलि लिरावणऩ् ऱलैयिऱ् ऱायिऩ
पाक्किय मऩैयनिऩ् पऴिप्पिऩ् मेऩियै
नोक्किय कण्गळै नुदिहॊण् मूक्किऩाल्
काक्कैहळ् कवर्न्दुहॊण् डुण्णक् काण्डियाल् 666

काक्कैकळ्–कौए; ताक्कल् इल्–अप्रहरित; इरावणऩ् तलैयिल्–रावण के सिरों पर; तायित्त–कूदकर; पाक्कियम् अऩैय–सौभाग्य ही सम; निऩ्–आपके; पऴिप्पु इल् मेऩियै–अनिंद्य शरीर को; नोक्किय कण्कळै–जिन आँखों ने बुरे विचार के साथ देखा, उन आँखों को; नुति कॊळ् मूक्किऩाल्–तीक्ष्ण चोंचों से; कवर्न्तु कॊण्टु–छीन लेकर; उण्ण काण्टि–खायँगे, देखिए। ६६६

कौए अप्रतिहत रावण के सिर पर चढ़ बैठेंगे और उन आँखों को अपनी तीक्ष्ण चोंचों से नोचकर खाएँगे; जिन आँखों ने आपके सौभाग्य-सम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अप्राकृत दिव्य और अनिन्द्य मंगल-विग्रह को बुरी कामना के साथ देखा था। ६६६

मेलुऱ विरावणऱ् कऴिन्दु वॅळ्हिय
नीलुऱु तिशैक्करि तिरिन्दु निऱ्पऩ
आलुऱ वऩैयवऩ् ऱलैयै यव्ववै
कालुऱक् कणैतडिन् दिडुव काण्डियाल् 667

मेल्–पहले; इरावणऱ्कु–रावण से; उऱ अऴिन्तु–पूर्ण रूप से हारकर; वॅळ्किय–लज्जित; नील् उऱु–नील रंग की; तिचै करि–दिशाओं के दिग्गज; तिरिन्तु निऱ्पऩ–मन मारकर (जो) खड़े हैं; आल् उऱवु अऩैयवऩ्–बरगद के वृक्ष के समान रावण के; तलैयै–सिरों को; अव्ववै–उन दिग्गजों के; काल् उऱ–पैरों पर जा गिरें, ऐसा; कणै–श्रीराम के शर; तटिन्तु–काटकर; इटुव–डालेंगे; काण्टि–आप देखिए। ६६७

नीली दिशाओं के दिग्गज पहले रावण से लड़े, बुरी तरह हारे और शरमाते हुए पस्त खड़े हैं। अब श्रीराम के बाण बरगद के समान दिखने वाले रावण के सिरों को काटकर उन दिग्गजों के चरणों पर डाल देंगे। वह आप देखेंगी। ६६७

नीर्त्तॅऴु मुहिऩ्मऴै वऴङ्गु नीलवाऩ्
वेर्त्तदॅऩ् ऱिडैयिडै वीशुम् वेरऱप्
पोर्त्तॅऴु पॊलङ्गॊडि यिलङ्गैप् पूऴियो
डार्त्तॅऴु कऴुहिरैत् ताडक् काण्डियाल् 668

नीर्त्तु ॲऴु–जल के साथ उठे; मुकिल् मऴै–मेघों की वर्षा; वऴङ्कु–करनेवाला; नील वाऩ्–नीला आकाश; वेर्त्ततु ॲऩ्ऱु–स्वेदयुक्त हुआ ऐसा मानकर; इटै इटै–रह-रहकर; वेर् अऱ–पसीना पोंछने के लिए; वीचुम्–फहरते हुए (हवा करते हुए); पोर्त्तु ॲऴु–आच्छादित कर उठनेवाली; पॊलम् कॊटि–सुन्दर पताकाओं से शोभित; इलङ्कै–लंका में; पूऴियोटु–धूल के साथ; आर्त्तु ॲऴु–ज़ोर-शोर के साथ उठनेवाले; कऴुकु इरैत्तु आट–गीध शब्द करते हुए घूमेंगे; काण्टि–देखिए। ६६८

लंका में ध्वजाएँ फहर रही हैं। जल-भरे मेघों द्वारा वर्षा करानेवाला आकाश स्वेदयुक्त हो गया —यह समझकर वे ध्वजाएँ हवा कर रही हों, ऐसा लगता है। अब उनकी जगह धूल के साथ शोर मचाते हुए गीध ऊपर उड़ेंगे। आप देखेंगी। ६६८

नीऩिऱ वरक्करदङ् गुरुदि नीत्तनीर्
वेलैमिक् काऱ्ऱॊडु मीळ वेलैशूऴ्
ञालमुऱ् ऱुऱुहडै युहत्तु नच्चऱाक्
कालऩुम् वॅऱुत्तुयिर् कालक् काण्डियाल् 669

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नील् निऱ–काले रंग के; अरक्कर् तम्–राक्षसों के; कुरुति नीत्तम्–रक्त का प्रवाह; नीर् वेलै मिक्कु–जल-समुद्र में भरकर; आऱ्ऱोटु–उसी नदी द्वारा; मीळ–लौट आयगा; वेलै चूऴ् ञालम्–समुद्र-मेखला पृथ्वी को; मुऱ्ऱु उऱु–अन्त करनेवाले; कटै युकत्तु–युगान्त में; नच्चु अऱा कालतुम्–अतृप्त कालदेव भी; वॆऱुत्तु–अघाकर; उयिर् काल–जीवों को उगल देगा; काण्टि–देखिए। ६६९

काले रंग के राक्षसों का रक्तप्रवाह जल-भरे समुद्र में जाकर गिरेगा। और समुद्र से छलककर फिर लौट के उसी नदी में बहता आयगा। समुद्रमेखला भूमि का अन्त करानेवाले युगान्त में भी जो यम नहीं अघाता, वह अब अधिक हो जाने से घृणा करके जीवों को उगल देगा। आप वह भी देखेंगी। ६६९

अणङ्गिळ महळिरॊ डरक्क राडुऱुम्
मणङ्गिळर् कऱ्पहच् चोलै वाविवाय्प्
पिणङ्गुऱु वाऩ्मुऱै पिडित्त मालैय
कणङ्गॊडु कुरक्किऩङ् गुऩिप्पक् काण्डियाल् 670

अणङ्कु इळ मकळिरॊटु–कमसिन अप्सराओं के साथ; अरक्कर् आटु उऱुम्–जहाँ राक्षस स्नान करते हैं; मणम् किळर्–सुगन्धियुक्त; कऱ्पक चोलै–कल्पवन के; वावि वाय्–तडाग में; पिणङ्कु उऱु–वक्र; वाल् मुऱै पिटित्त–क्रम से पूँछ पकड़कर; मालैय–पंक्तिबद्ध; कणम् कॊटु–झुण्डों में रहनेवाले; कुरङ्कु इऩम्–वानर-समूह; कुऩिप्प–उछल-कूद मचाएँगे; काण्टि–देखेंगी। ६७०

युवावस्था की अप्सराओं के साथ राक्षस कल्पवनों के तडाग में स्नान करके आनन्द मना रहे हैं। अब उन कल्पवनों में बन्दर क्रम से एक-दूसरे की पूँछ पकड़े वृन्द में नाचेंगे-कूदेंगे। देखिए। ६७०

चॆप्पुऱ लॆऩ्बल तॆय्व वाळिकळ्
इप्पुऱत् तरक्करै मुरुक्कि येहिऩ
मुप्पुऱत् तुलहैयुम् मुडुक्कि मुटटलाल्
अप्पुऱत् तरक्करु मवियक् काण्डियाल् 671

पल–विविध; चॆप्पुऱल्–(बातें) कहना; ऎऩ्–क्यों; तॆय्व वाळिकळ्–(श्रीराम के) दिव्य शर; इ पुऱत्तु–यहाँ के; अरक्करै–राक्षसों को; मुरुक्कि–मारकर; एकिऩ–जाकर; पुऱत्तु–उस पार; मु उलकैयुम्–तीनों लोकों को; मुटुक्कि–आक्रमण कर; मुट्टलाल्–प्रहरित करेंगे, इसलिए; अ पुऱत्तु–वहाँ के; अरक्करुम्–राक्षस भी; अविय–मिट जायँगे; काण्टि–देखिए। ६७१

किं बहुना ? श्रीराम के दिव्यास्त्र इस अण्ड में रहनेवाले राक्षसों को मारेंगे, आगे जायँगे और त्रिविध लोकों को प्रहरित करके टकराएँगे। तब अण्ड-पार राक्षस भी मिटेंगे। यह आप देखेंगी। ६७१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ईण्डॊरु तिङ्गणी यिडरिऩ् वैहवुम्
वेण्डुव दऩ्ऱियाऩ् विरैविऩ् वीरऩैक्
काण्डले कुऱैवुपिऩ् कालम् वेण्डुमो
आण्डहै यिऩियॊरु पॊऴुदु मार्ऱुमो 672

ईण्टु–यहाँ; नी–आपको; ऒरु तिङ्कळ्–एक महीना; इटरिऩ् वैकवुम्–दुःख में रहना; वेण्टुवतु अऩ्ऱु–नहीं पड़ेगा; याऩ्–मैं; विरैविऩ्–तुरन्त; वीरऩै काण्टले–वीर से मिलूं; कुऱैवु–उतना ही कसर है; पिऩ् कालम् वेण्टुमो–फिर देरी भी चाहिए क्या; आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ; इऩि–अब; ऒरु पॊऴुतुम्–कभी; आऱ्ऱुमो–सहेंगे क्या। ६७२

आपको और एक महीना संकट में रहना नहीं पड़ेगा। मैं शीघ्र जाऊँ और वीर श्रीराम से मिलूँ, इतना ही कसर है, फिर विलम्ब काहे का ? क्या पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम एक पल (का विलम्ब) भी सहेंगे ? । ६७२

आवियुण् डॆऩ्ऩुमी दुण्डुऩ् ऩारुयिर्च्
चेवहऩ् ऱिरुवुरुत् तीण्डत् तीऩ्दिलाप्
पूविलै तळिरिलै पॊरिऩ्दु वॆऩ्दिलाक्
काविलै कॊडियिलै नॆडिय काऩॆलाम् 673

आवि उण्टु–प्राण हैं; ऎऩ्ऩुम् ईतु उण्टु–यह कहने का स्थान है; नॆटिय काऩ् ऎलाम्–बड़े वन में सर्वत्र; उऩ् आरुयिर्–आपके प्राणप्यारे; चेवकऩ्–वीर श्रीराम के; तिरु उरु तीण्ट–श्रीशरीर के लगने से; तीऩ्तिला–जो नहीं जले; पू इलै तळिर् इलै–पुष्प नहीं, पत्ते नहीं; पॊरिऩ्तु वॆऩ्तिला–लाजा-सम जो नहीं भुने; का इलै–उपवन नहीं; कॊटि इलै–लताएँ नहीं हैं। ६७३

श्रीराम की स्थिति ऐसी है कि प्राण ज्यों-त्यों करके टिके रहते हैं —यही कहा जाय। आपके प्राणप्यारे वीर के श्रीशरीर के बड़े कानन में सर्वत्र स्पर्श से जो नहीं मुरझाए ऐसे फूल नहीं है, ऐसे पत्ते नहीं हैं। लाजे के समान जो नहीं भुने ऐसे वन नहीं हैं, ऐसी लताएँ भी नहीं। (श्रीराम की विरहाग्नि ऐसी है।) । ६७३

शोहम्वन् दुऱुवदु तॆळिवु तोय्ऩ्दऩ्ऱो
मेहम्वन् दिडित्तुरु मेऱु वीऴिऩुम्
आहमुम् बुयङ्गळु मऴुऩ्द वैऩ्दलै
नाहम्वन् दडर्प्पिऩु मुणर्वु नाऱुमो 674

चोकम् वऩ्तु उऱुवतु–शोक का आकर भरना; तॆळिवु तोय्ऩ्तऩ्ऱो–वह मन निश्चिन्त रहे तभी न होगा; मेकम् वऩ्तु–मेघ आकर; उरुम् एऱु–वज्र; इटित्तु वीऴिऩुम्–टूटकर गिरें, तब भी; आकमुम् पुयङ्कळुम्–वक्ष और भुजाओं में; अऴुऩ्त–दाँत गड़ाकर; ऐम् तलै नाकम् वऩ्तु–पंच-सिर नाग आकर; अटर्प्पिऩुम्–दुःख दे तो भी; उणर्वु नाऱुमो–सुध होगी क्या। ६७४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मन निश्चिन्तता से रहे तभी न शोक आकर अपना घर बसा लेगा ! मेघों से गाज गिरें या पाँच सिर का भयंकर नाग उनके वक्ष पर और भुजाओं पर दंशन करके दुःख दे तो भी श्रीराम को उसकी अनुभूति होगी क्या ? (उनका मन इतना विरह-मोहित है।) । ६७४

मत्तुऱु तयिरॆन वन्दु शॆन्ऱिडै, तत्तुऱु मुयिरॊडु पुलन्ग डळ्ळुऱुम्
पित्तनिन् पिरिविन्ऱिर् पिऱन्द वेदनै, ऍत्तनै युळववै यॆण्णु मीट्टवो 675

मत्तु उऱु–मथानी-मथित; तयिर् ऍन–दही के समान; वन्तु चॆन्ऱु–आते-जाते; इटै तत्तुऱुम्–बीच में लड़खड़ानेवाले; उयिर् ऒटुम्–प्राणों के साथ; पुलन्कळ् तळ्ळुऱुम्–इन्द्रियों को अस्त-व्यस्त करनेवाले; पित्तम्–दीवानापन; ऍत्तनै उळ–कितनी ही तरह के हैं; अवै–वे; निन् पिरिविन्ऱिल्–आपके विरह में; पिऱन्त–जनित; वेतनै–वेदनाएँ हैं; ऍण्णुम् ईट्टवो–गिने जा सकते हैं क्या । ६७५

प्राण मथानी-मथित दही के समान मथे जाकर आते-जाते और बीच में लड़खड़ाते हैं। इन्द्रियों को बेकार करते हुए उनको अपने वश में रखता है पागलपन; उसके भी कितने ही प्रकार हैं ! वे सब आपके वियोग में जनित दुःख के प्रगटन हैं। वे गिने भी जा सकते हैं क्या ? । ६७५

इन्निलै युडैयवन् ऱरिक्कु मॆन्ऱॆणुम्
पॊय्न्निलै काण्डियान् पुहन्ऱ यावुमुन्
कैन्निलै नॆल्लियङ् गनियिर् काट्टुहेन्
मॆय्न्निलै युणर्न्दुनी विडैतन् दीयॆन्ऱान् 676

इ निलै उटैयवन्–इस स्थिति के; तरिक्कुम्–श्रीराम प्राणधारण कर सकेंगे; ऍन्ऱु–ऐसा; ऍणुम्–जो सोचती हैं; पॊय् निलै–उसकी असत्यता; काण्टि–आप देख लेंगी; मॆय् निलै–यही सच्ची स्थिति; नी उणर्न्तु–आप जानकर; विटै तन्तु ई–विदा देने की कृपा करें; यान् पुकन्ऱ यावुम्–अपना कहा सारा; उन् कै निलै नॆल्लि अम् कनियिल्–अपने करतल में रखे सुन्दर आमले के फल के समान; काट्टुकेन्–दिखा सकूँगा; ऍन्ऱान्–हनुमान ने कहा । ६७६

ऐसी स्थिति में रहनेवाले श्रीराम प्राणधारण करके जीवित रह सकेंगे —यह जो आप सोचती हैं वह कितना मिथ्यामूलक है यह आप स्वयं देख लेंगी, पीछे। इसलिए यह सच्ची स्थिति जानकर आप मुझे विदा दे दें। अपना कहा सारा मैं करतलामलकवत सच प्रमाणित कर दिखा सकता हूँ। हनुमान ने कहा । ६७६

तीर्त्ततनुङ् गविक्कुलत् तिऱैयुन् देविनिन्
वार्त्तैहेट् टुवप्पदन् मुन्न माक्कडल्
तूर्त्तन विलङ्गैयैच् चूळ्न्दु माक्कुरङ्
गार्त्तन केट्टुवन् दिरुत्ति यन्नैनी 677

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्नै–माते; तीर्त्ततनुम्–तीर्थ श्रीराम और; कवि कुलत्तु इऱैयुम्—कपिकुल-पति; तेवि–देवी; निन् वार्त्तै केट्टु–आपके सन्देश-वचन सुनकर; उवप्पतन् मुन्तम्–मुदित हों, इसके पहले ही; मा कटल् तूर्त्तत–बड़े समुद्र को जो पाट देंगे; इलङ्कैयै चूऴ्न्तु–और लंका को घेरेंगे; मा कुरङ्कु–वे बड़े वानर; आर्त्तत–गरजेंगे; केट्टु–सुनकर; उवन्तु–हर्ष करके; नी इरुत्ति–आप रहिए। ६७७

(उसने आगे कहा।) माँ ! तीर्थ श्रीराम और कपिकुलाधिपति आपकी बात सुनकर मुदित हों, इसके पूर्व ही बड़े सागर को पाटकर लंका को आ घेर लेंगे वानर और उनका गर्जन सुनकर आप आनन्द के साथ रहेंगी। ६७७

अॅण्णरुम् बॅरुम्बडै यीण्डि यिन्नहर्
नण्णिय पॊऴुददु नडुव णङ्गैनी
विण्णुरु कलुऴन्मेल् विळङ्गुम् विण्डुविन्
कण्णनै यॅन्नॅडु पुयत्तिऱ् काण्डियाल् 678

नङ्कै–नायिका देवी; अॅण् अरुम्–अगणित; पॅरुम् पटै–बड़ी सेना; ईण्टि–एकत्र होकर; इ नकर्–इस नगर में; नण्णिय पॊऴुतु–जब आएँगे तब; अतु नटुवण्–उस सेना के मध्य; विण् उरु–आकाशचारी; कलुऴन् मेल्–गरुड़ पर; विळङ्कुम्—शोभित रहनेवाले; विण्टुविन्–श्रीविष्णु की तरह; कण्णनै–श्रीराम को; अॅन् नॅटु पुयत्तिल्–मेरे बड़े कन्धों पर; नी काण्टि–आप देखेंगी। ६७८

देवी ! असंख्यक सेना एकत्र हो आएगी। तब उसके बीच आप देखेंगी नेत्राभिराम श्रीराम को मेरे बड़े कन्धों पर, आकाशचारी गरुड़ के कन्धों पर श्रीविष्णु के समान शोभायमान ! । ६७८

अङ्गदन् ऱोण्मिशै यिळव लम्मलैप्
पॊङ्गिळङ् गदिरॅनप् पॊलियप् पोर्प्पडै
इङ्गुवन् दिरुक्कुनी यिडरि नॅय्दुरुम्
शङ्गैयु नीङ्गुदि तनिमै नीङ्गुवाय् 679

अङ्कतन् तोळ् मिचै—अंगद के कन्धों पर; इळवल्—लघुराज; अम् मलै—सुन्दर (उदय) गिरि पर; पॊङ्कु–उठनेवाले; इळम् कतिर् अॅत्त–बाल सूर्य के समान; पॊलिय–शोभेंगे और; पोर्प्पटै–समरोद्यत सेना; इङ्कु वन्तु इरुक्कुम्–यहाँ आकर डेरा डालेगी; नी–आप; इटरिन् अॅय्तुरुम्–संकट में रहेंगे, यह; चङ्कैयुम्–शंका भी; नीङ्कुति–दूर कर दीजिए; तनिमै–एकाकीपन; नीङ्कुवाय्–दूर कर लेंगी। ६७९

अंगद के कन्धे पर, सुन्दर उदयाचल पर उगनेवाले बाल-रवि के समान लघुराज लक्ष्मण रहेंगे। समरोद्यत वानर-सेना यहाँ आकर पड़ाव डालेगी। अब संकटग्रस्त रहने का संशय त्याग दीजिए। एकाकिनी रहने की स्थिति भी हट जायगी। ६७९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀कुरावरुङ् गुळलिनी कुऱित्त नाळिऩिल्
विरावरु नॅडुञ्जिऱै मीट्क लाऩॅऩिल्
परावरुम् बळियॊडु पावम् मुऱ्ऱुदऱ्
किरावण ऩल्लऩे यिराम ऩॅऩ्ऱऩऩ् 680

कुरा अरुम् कुळलि–'कुरा' नामक पुष्पों से अलंकृत सुन्दर केशिनी; नी कुऱित्त नाळिऩिल्–आपके निर्दिष्ट दिन में; विरावरु–घेरते रहनेवाले; नॅटञ्चिऱै–दीर्घ कारावास से; मीट्कलाऩ् ऍऩिल्–न छुड़ा सकेंगे तो; परावरुम्–फैलाते आनेवाले; पळियॊटु–अपयश के साथ; पावम् मुऱ्ऱुतऱ्कु–पाप भी पूर्ण रूप से लगे, इसके लिए; इरावणऩ् अल्लऩे–रावण नहीं हैं; इरामऩ्–श्रीराम; ऍऩ्ऱऩऩ्–कहा, हनुमान ने। ६८०

'कुरा' नामक पुष्पों से अलंकृत केशिनी ! आपसे निर्दिष्ट अवधि के अन्दर, घेरते रहनेवाले दीर्घ कारावास से श्रीराम आपको मुक्त नहीं करें तो वे क्या रावण हैं कि फैलते अपयश के साथ पाप का भी पूर्ण रूप से सम्पादन कर लें। वे श्रीराम हैं —यह स्मरण रहे। हनुमान ने इस भाँति धैर्य-वचन कहे। ६८०

आह विम्मॊऴि याशिल केट्टऱि वुऱ्ऱाळ्
ओहै कॊण्डु कळिक्कु मऩत्त ळुयर्न्दाळ्
पोहै नऩ्ऱिव ऩॅऩ्बदु पुन्दियिऩ् वैत्ताळ्
तोहै युञ्जिल वाशह मिऩ्ऩऩ शॊऩ्ऩाळ् 681

आक–इस भाँति; आचु इल–निर्दोष; इम्मॊऴि–ये वचन; केट्टु–सुनकर; अऱिवु उऱ्ऱाळ्–स्वस्थचित्त हुईं; ओकै कॊण्टु कळिक्कुम्–हर्ष की बात से मुदित होनेवाले; मऩत्तळ–मन की होकर; उयर्न्ताळ्–सँभल गयीं; इवऩ् पोकै–इसका जाना; नऩ्ऱु–भला है; ऍऩ्पतु–इसको; पुन्तियिऩ् वैत्ताळ्–मन में विचार कर; तोकैयुम्–मयूराभा देवी ने भी; इऩ्ऩऩ–यों; चिल वाचकम्–कुछ वचन; चॊऩ्ताळ्–कहे। ६८१

हनुमान के ये दोष-रहित वचन सुनकर सीताजी स्वस्थचित्त हुईं। उनके मन में आनन्द उमँग आया और वे उन्नत अवस्था में आ गयीं। उन्होंने सोचा कि अब इसका जाना ही अच्छा है। बुद्धि में यह सोचकर कलापी-सी छटा वाली देवी ने निम्नांकित वचन कहे। ६८१

शेऱि यैय विरैन्दऩै तीयवै यॅल्लाम्
वेऱि यानिऩि यॊऩ्ऱुम् विळम्बलॅऩ् मेलोय्
कूऱु हिऩ्ऱऩ मुऩ्ऩुऱि युऱ्ऱऩ कोमाऱ्
केऱु मॅऩ्ऱवै शॊल्लॅऩ विऩ्ऩ विशैप्पाळ् 682

ऐय–तात; मेलोय्–श्रेष्ठ; विरैन्तऩै चेऱि–त्वरित गति से जाओ; तीयवै ऍल्लाम्–सभी संकटों को; वेऱि–जीतो; इऩि–अब; यान्–मैं; ऒऩ्ऱुम् विळम्पलॅऩ्–कोई बात नहीं कहूँगी; कूऱुकिऩ्ऱऩ–अब जो कहूँगी; मुऩ् कुऱि उऱ्ऱऩ–पहले ही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

घटित हो गयी हैं; कोमाऱ्कु एऱुम्–हमारे अधिपति श्रीराम से स्वीकार्य हैं; ऍन्ऱु–कहकर; अवै चॊल्–उनको जाकर सुनाओ; ऍन्ऱ–कहकर; इन्न इचैप्पाळ्–निम्नांकित बातें कहने लगीं। ६८२

बाबा ! उत्तम ! शीघ्र चलो। सभी बुराइयों को जीतो। आगे कुछ अधिक ऐसी बातें नहीं कहूँगी। पर अब जो कहूँगी वह पूर्वघटित बातें हैं और अभिज्ञान के रूप में श्रीराम से स्वीकार्य होंगी। उनसे वे बातें कहो। यह कहकर वे बताने लगीं। ६८२

नाह मॊन्ऱिय नल्वरै यिन्ऱलै मेऩाळ्
आहम् वन्दॆऩै वळ्ळुहिर् वाळि ऩळैन्द
काह मॊन्ऱै मुऩिन्दयल् कल्लॆऴु पुल्लाल्
वेह वॆम्बडै विट्टदु मॆल्ल विरिप्पाय् 683

मेल् नाळ्–पहले कभी एक दिन; नाकम् ऒन्ऱिय–आकाशस्पर्शी; नल् वरैयिन् तलै–सुन्दर (चित्रकूट) पर्वत पर; काकम् ऒन्ऱु–एक कौए का; वन्तु–आकर; ऍऩै–मेरे; आकम्–वक्ष को; वळ् उकिर् वाळिऩ्–तीक्ष्ण नाखून रूपी तलवार से; अळैन्ततै–नोचना; मुऩिन्तु–(देखकर) कोप करके; अयल्–पास में; कल् ऍऴु–पत्थर-मध्य उठी; पुल्लाल्–घास को; वेक–वेगवान; वॆम् पटै–भयंकर (ब्रह्म-) अस्त्र (बनाकर); विट्टतु–जो (श्रीराम ने) चलाया; मॆल्ल विरिप्पाय्–धीरे-धीरे बताओ। ६८३

पहले एक दिन जब हम गगनचुम्बी चित्रकूट पर्वत पर रहे, तब एक कौआ आया और अपने तीक्ष्ण नाखून रूपी तलवार से मेरे वक्षःस्थल को नोचने लगा। उसे देखकर श्रीराम ने गुस्से में आकर पास पत्थरों के बीच उगी रही एक (दर्भ की) घास को ब्रह्मास्त्र के रूप में अभिमंत्रित किया और उस भयंकर अस्त्र को उस पर छोड़ा। यह बात तुम धीरे से उनसे कहो। ६८३

[आगे कुछ संस्करणों में पाँच पद पाये जाते हैं, जिनमें जयन्त का भागना और सभी देवताओं द्वारा अरक्षित होकर लौट आना और श्रीराम के चरणों पर गिरना आदि बातें विस्तार के साथ कही गयी हैं। श्रीराम ने उसको एक आँख से हीन कर उसे क्षमा कर दिया। यह कहानी है। उ० वे० स्वामीनाथय्यर का विचार है कि ये क्षेपक हैं।]

ऍऩ्ऩॊ रिऩ्ऩुयिर् मॆऩ्गिळिक् कार्पॆय रीहेऩ्
मऩ्ऩ वॆऩ्ऱलु माशऱु केहयऩ् मादॆऩ्
अऩ्ऩै तऩ्बॆय राहॆऩ वऩ्बिऩॊ डऩ्नाळ्
शॊऩ्ऩ मॆय्म्मॊऴि शॊलुलुदि मॆय्म्मै तॊडर्न्दोय् 684

मऩ्ऩ–राजा; ऍऩ्–मेरे; ऒर् इऩ् उयिर्–मधुर प्राण-सम; मॆऩ् किळिक्कु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कोमल शुक को; आर् पॅयर्-किसके नाम से; ईकेन्-नामकरण करूँगा; ऍन्ऱ्लुम्-पूछते ही; माचु अऱु-अकलंक; केकयन् मातु-केकय-पुत्री; ऍन् अन्ऩै तन्-मेरी माता का; पॅयर् आक-नाम हो; ऍऩ-ऐसा; अन्पित्तॊटु-प्रेम के साथ; अ नाळ् चॊन्ऩ-उस दिन जो कहा गया; मॅय् मॊऴि-वह सत्य वचन; मॅय्म्मै तॊटर्न्तोय्-सत्यनिष्ठ; चॊल्लुति-कहो। ६८४

मैं एक कोमल शुक को अपने ही प्राण-सम पाल रही थी। मैंने श्रीराम से पूछा कि राजा! इसको किसका नाम दूँ? तब प्रभु ने कहा, अकलंक मेरी माता केकयतनया का नाम रख लो। उन पर अपना अतिशय मातृप्रेम प्रकट करते हुए उन्होंने जो कहा था, वह सत्यवचन, सत्यनिष्ठ हनुमान! उनसे कहो। ६८४

ऍन्ऱु रैत्तिऩि दित्तऩै पेरडै याळम्
ऑन्ऱु णर्त्तुव दिल्लैऩ वॅण्णि युणर्न्दाळ्
तन्ऱि रुत्तुहि लिर्पॊदि वुऱ्ऱु ताऩै
वॅन्ऱ दच्चुडर् मेलॊडु कीऴुऱ मॅय्याल् 685

ऍन्ऱु-ऐसा; इत्तऩै पेर् अटैयाळम्-इतना मुख्य अभिज्ञान; इऩितु उरैत्तु-मधुर रीति से कहकर; ऑन्ऱु उणर्त्तुवतु इल्-आगे कहने के लिए कुछ नहीं है; ऍऩ-ऐसा; ऍण्णि उणर्न्ताळ्-सोचकर जाना; तन् तिरु तुकिलिल्-अपने श्रीवस्त्र में; पॊतिवु उऱ्ऱतु-जो बाँध रखा गया था; मॅय्याल्-सचमुच; मेलॊटु कीऴुऱ-आकाश और भूमि में समान रहनेवाले; अच् चुटर् ताऩै-उस तेजःपुञ्ज (सूर्य) को; वॅन्ऱतु-जिसने (अपनी ज्योति से) हरा दिया था। ६८५

इतने श्रेष्ठ संकेत के वचन कहने के बाद देवी ने सोचा कि आगे कहने के लिए कुछ नहीं है। तब उन्होंने अपने वस्त्र में बँधा रहा और आकाश तथा भूमि पर समान रूप से ज्योतिपुंजों में शीर्षस्थ सूर्य के समान शोभित—। ६८५

वाङ्गि ऩाडऩ् मलर्क्कैयि ऩन्ऩदु मुन्ऩा
एङ्गि ऩाऩव् वनुमनु मॅन्गॊलि दॅन्ऩा
वीङ्गि ऩाऩ्वियन् दाऩुल हेऴुम् विऴुङ्गित्
तूङ्गु कारिरुण् मुऱ्ऱु मिरिन्ददु शुऱ्ऱुम् 686

अन्ऩतु-उसको; मुन्ऩा-देना चाहकर; तन् मलर् कैयिऩ्-अपने कमलहस्त पर; वाङ्किऩाळ्-लिया; इतु ऍन् कॊल्-यह क्या है; ऍऩ्ऩा-ऐसा; अ अनुमऩुम्-उस हनुमान ने भी; एङ्किऩाऩ्-उत्सुक हुआ; वियन्ताऩ्-विस्मित हुआ; वीङ्किऩाऩ्-फूला न समाया; उलकु एऴुम्-सातों लोकों को; विऴुङ्कि-लीलकर; तूङ्कुम्-रहनेवाला; कार् इरुळ्-काला अन्धकार; चुऱ्ऱुम्-चारों ओर; मुऱ्ऱुम् इरिन्ततु-पूर्ण रूप से भाग गया। ६८६

चूडामणि अपने कमल-से हाथ में लिया। हनुमान विस्मित और आतुर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हुआ कि ओफ़ ! यह कौन सी वस्तु है ? उसका शरीर फूल गया। सातों लोकों को लीलकर जो फैला रहा वह अन्धकार भी सभी ओर से भाग गया। ६८६

मञ्ज लङ्गोळि योनुमिम् मानहर् वन्दान्
अञ्ज लन्नॅन्न वॅङ्गण ररक्क रयिर्त्तार्
शञ्ज लम्बुरि चक्कर वाहन् दळिर्त्त
कञ्ज मुम्मलर् वुऱ्ऱन्न कान्दिन्न कान्दम् 687

मञ्चु अलङ्कु–मेघों को छितरानेवाली; ऑळियोनुम्–ज्योति का सूर्य भी; अञ्चलन्–निर्भय होकर; इ मानकर्–इस बड़े नगर; वन्तान् ऍन्न–आया जैसे; वॅम् कण्–भयंकर आँख वाले; अरक्कर्–राक्षस; अयिर्त्तार्–शंकित हुए; चञ्चलम् पुरि–शंकित रहे; चक्करवाकम्–चक्रवाक पक्षी; तळिर्त्त–लहलहा उठे; कञ्चमुम्–कंजपुष्प; मलर्वु उऱ्ऱन्न–विकसित हुए; कान्तम्–सूर्यकान्त पत्थर; कान्तिन्न–चमके। ६८७

मेघों को छितरा देनेवाली किरणों के स्वामी सूर्य को डर छोड़कर इस बड़े नगर में आया समझकर भयानक आँखों वाले राक्षस सशंक हो गये। भयचंचल चक्रवाक पक्षी लहलहा उठे। कञ्ज भी खिल उठे। सूर्यकान्त मणियाँ कान्ति बिखरने लगीं। ६८७

कून्दन् मॅन्मळैक् कॊण्मुहिन् मेलॅळु कोळिन्
वेन्द नन्नदु मॅल्लिय ऱन्ऱिरु मेनि
शेन्द दन्दमिल् शेवहन् शेवडि यॅन्नक्
कान्दु हिन्ऱदु काट्टिन्नण् मारुदि कण्डान् 688

मळै कॊळ्–शीतल; मॅल् कून्तल्–कोमल केश रूपी; मुकिल् मेल्–मेघ पर; ऍळु कोळिन् वेन्तन्–सातों ग्रहों के राजा, सूर्य; अन्ततु–सरीखा; मॅल्लियल् तन्–कोमल स्वभाव वाली देवी के; तिरुमेनि चेन्ततु–श्रीशरीर के समान अरुण; अन्तम् इल्–अनन्त; चेवकन्–वीरता से पूर्ण श्रीराम के; चेवटि–श्रीचरण; ऍन्नत–सदृश; कान्तुकिन्ऱतु–चमकनेवाला वह चूडामणि; काट्टिन्नळ्–(सीता ने) दिखाया; मारुति कण्टान्–मारुति ने देखा। ६८८

देवी के शीतल कोमल केश-मेघ पर सप्तग्रहों के राजा सूर्य के समान जो रहा करता था; सीताजी के श्रीशरीर के समान जो लाल था; अपार वीरता के साथ शोभायमान श्रीराम के चरणों के समान जो तेज निसृत करता था, उस चूडामणि को देवी ने दिखाया और हनुमान ने देखा। ६८८

❀ शूडै यिम्मणि कण्मणि यॊप्पदु तॊन्नाळ्
आडै यिन्गणि रुन्ददु पेरडै याळम्
नाडि वन्दॅन्न दिन्नुयिर् नल्हिनै नल्लोय्
कोडि यॅन्ऱु कॊडुत्तन्नण् मॅय्प्पुहळ् कॊण्डाळ् 689

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मॅय् पुकऴ् कॊण्टाळ्–सच्ची यशस्विनी (सीताजी) ने; नाटि वन्तु–खोजते आकर; ऍन्तु इन् उयिर्–मेरे प्रिय प्राण; नल्कित्तै–(रक्षित किये) दिये; नल्लोय्–उत्तम; चूटै इ मणि–यह चूडामणि; कण् मणि ऒप्पतु–आँखों की पुतली के समान है; तॊल् नाळ्–बहुत पहले से; आटैयिन् कण्–मेरे वस्त्र में (बँधा); इरुन्ततु–रहा; पेर् अटैयाळम्–बहुत बड़ा अभिज्ञान है; कोटि–लो; ऍन्ऱु–कहकर; कॊटुत्ततळ्–दिया। ६८९

सत्य यशस्विनी देवी ने कहा कि खोजते आकर तुमने मुझे प्राणदान किया। हे उत्तम ! यह चूडामणि मेरी आँख की पुतली (के समान) है। बहुत दिनों से वस्त्र में बाँधे रखा था। यह सर्वश्रेष्ठ अभिज्ञान है। लो इसे, यह कहकर देवी ने उसे हनुमान के पास दे दिया। ६८९

❀तॊऴुदु वाङ्गिनन् शुऱ्ऱिय तूशिनिन् मुऱ्ऱप्
पऴुदु ऱावहै पन्दनै शॆय्दनन् पल्हाल्
अऴुदु मुम्मै वलङ्गॊ डिऱैञ्जिन नन्बो
डॆऴुदु पावैयु मेत्तिन ळेहिन निप्पाल् 690

तॊऴुतु वाङ्कितन्–नमस्कार करके हनुमान ने ग्रहण किया; मुऱ्ऱ–भलीभाँति; पऴुतु उऱा वकै–कोई हानि न हो इस रीति से; चुऱ्ऱिय तूचिनिन्–पहने हुए वस्त्र में; पन्तनै चॆय्ततन्–बाँध लिया; पल् काल्–कई बार; अऴुतु–रोकर; मुम्मै वलम् कॊटु–तीन बार प्रदक्षिणा करके; इऱैञ्चिनन्–फिर विनय दरसायी; ऍऴुतु पावैयुम्–लिखित चित्र-सी देवी ने भी; अन्पॊटु–वात्सल्य के साथ; एत्तितळ्–आशीर्वाद किया; इप्पाल्–इसके बाद। ६९०

हनुमान ने नमस्कार करके चूडामणि को हाथ में ग्रहण किया। उसकी कोई हानि नहीं हो, इस रीति से उसने उसे अपने वस्त्र में बाँध लिया। उसे रुलाई आ गयी और कई बार रोया। फिर उसने सीताजी की तीन बार परिक्रमा की और फिर से अपनी विनय जतायी। लिखित चित्र-सी देवी ने भी स्नेह के साथ उसे आशीर्वाद दिया। हनुमान वहाँ से चला। बाद (जो घटा वह वृत्तान्त आगे कहेंगे।)। ६९०

6. पॊऴिलिऱुत्त पडलम् (उद्यान-विध्वंस पटल)

नॆऱिक्कॊडु वडक्कुऱ निनैप्पिनि निमिर्न्दान्
पॊऱिक्कुल मॆऴुप्पॊऴि लिडैक्कडिदु पोवान्
शिऱुत्तॊऴिन् मुडित्तहऱ ऱीदॆन ऱॆरिन्दान्
मऱित्तुमॊर् शॆयऱ्कुरिय कारिय मदित्तान् 691

नॆऱि कॊटु–मार्ग पकड़कर; वटक्कु उऱ–उत्तर की ओर; निनैप्पितिल्–जाने के संकल्प के साथ; निमिर्न्तान्–आकार बढ़ा लिया; पॊऱि कुलम् ऍऴु–भ्रमरों को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भय से उड़ने को विवश करते हुए; पॊऴिल् इटै–उस अशोकवन-मध्य; कटितु पोवान्–शीघ्र जो गया; चिऱु तॊऴिल् मुटित्तु–यह छोटा सा काम करके; अकऱल्–छोड़ना; तीतु–भला नहीं; ऍऩल्–ऐसा; तॆरिन्तान्–(उसने) सोचा; मऱित्तुम्–फिर भी; ओर् चॆयऱ्कु उरिय कारियम्–करने योग्य एक कार्य; मतित्तान्–सोचा। ६९१

हनुमान ने अपना मार्ग लेकर उत्तर दिशा में जाने की बात सोची। इसलिए वह अपना विराट् रूप लेकर अशोकवन-मध्य शीघ्र-शीघ्र जाने लगा तो भ्रमर आक्रान्त होकर ऊपर उड़ने लगे। तब उसने सोचा कि केवल यह छोटा सा काम करके लौट जाना कुछ अच्छा नहीं है। इसलिए करणीय किसी काम के बारे में सोचने लगा। ६९१

ईऩमुऱु पऱ्ऱलरै यॆऱ्ऱि यॆयिऩ्मूदूर्
मीऩनिल यत्तिऩुह् वीशि विऴिमाऩै
माऩवन् मलर्क्कऴलिन् वैत्तुमिलॆ ऩॆऩ्ऱाल्
आऩपॊऴु दॆप्परिशि ऩाऩडिय ऩावेन् 692

ईऩम् उऱु–नीचकर्म; पऱ्ऱलरै–शत्रुओं को; ऍऱ्ऱि–पीटकर, मारकर; ऍयिल् मूदूर्–प्राचीरवलयित पुरातन नगर लंका को; मीऩ तिलयत्तिऩ्–मकरालय में; उक वीचि–छितराते हुए फेंककर; विऴि मानै–मृगनयनी सीता को; माऩवन्–सम्मान्य श्रीराम के; मलर् कऴलिल्—कमलचरणों पर; वैत्तुमिलॆऩ्–ले जाकर नहीं छोड़ा; ऍऩ्ऱाल्–तो; आऩ पॊऴुतु–तब; ऍ परिचिऩ् नाऩ–किस रीति से मैं; अटियऩ् आवेऩ्–दास बना। ६९२

नीच-कर्म शत्रु राक्षसों को पीटकर, प्राचीरवलयित पुरातन नगर लंका को मकरालय में खण्ड-खण्ड करके न फेंककर मृगनयनी सीताजी को श्रीराम के कमल-चरण पर अर्पित नहीं किया मैंने। तो मैं किस तरह का सेवक बना ?। ६९२

वञ्जऩै यरक्कऩै ऩॆरुक्किऩॆडु वालाल्
अञ्जिऩुड ऩञ्जुदलै तोळुऱ वशैत्ते
वॆञ्जिऱैयिल् वैत्तुमिलॆऩ् वॆऩ्ऱुमिलॆ ऩॆऩ्ऱाल्
तञ्जमॊरु वर्क्कॊरुव ऱॆऩ्ऱऱह वामो 693

वञ्चऩै अरक्कऩै–चोर राक्षस को; ऩॆटु वालाल्–लम्बी पूंछ से; अञ्चिऩ् उटऩ्–पाँच जोड़; अञ्चु तलै–पाँच सिरों; तोळ् उऱ—कन्धों को लगाकर; ऩॆरुक्कि अचैत्तु–कसकर बाँधकर; वॆम् चिऱैयिल्–भयानक जेल में; वैत्तुम् इलॆऩ्–न डाला भी; वॆऩ्ऱुम् इलॆऩ्–न हराया भी; ऍऩ्ऱाल्–तो; ऒरुवर्क्कु ऒरुवर्–एक का दूसरा; तञ्चम् ऍऩ्ऱल्–आश्रयदाता है कहना; तकवु आमो–युक्त होगा क्या। ६९३

मैंने अपनी लम्बी पूँछ में चोर रावण के दसों सिरों और बीसों भुजाओं को मिलाकर कस के बाँधकर कठोर कारागार में भी नहीं डाला। न

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उसे युद्ध करके हराया। तब एक के दूसरे (श्रीराम के सुग्रीव) आश्रय-दाता हैं —यह कथन उचित (अर्थपूर्ण) हो सकता है क्या ? । ६९३

कण्डनिरु दक्कडल् कलक्कियॅन् वलत्ताल्
तिण्डिऱ लरक्कनु मिरुक्कवॉर् तिऱत्तिन्
मण्डवुद रत्तवळ् वडिक्कुऴल् पिडित्तुक्
कॉण्डुशिऱै वैत्तिडुद लिऱ्कुऱैयु मुण्डो 694

कण्ट–अपना देखा हुआ; निरुत कटल्–राक्षस-सागर; ऍन् वलत्ताल्–अपने बल से; कलक्कि–मथकर; तिण् तिऱल् अरक्कनुम्–अति बलवान राक्षस के भी; इरुक्क–देखते रहते; ओर् तिऱत्तिन्—अपनी अनुपम शक्ति से; मण्ट उतरत् तवळ्–मन्द उदर वाली (मन्दोदरी) का; वटि कुऴल्–सँवारा केश; पिटित्तु–पकड़कर; चिऱै कॉण्टु वैत्तिटुतलिल्–जेल में ले जा डाल देना; कुऱैयुम् उण्टो–दोषयुक्त होगा क्या। ६९४

अपने देखे राक्षस-सागर को अपने बल से मथकर अति बलिष्ठ रावण के देखते-देखते अपने अप्रतिम बल से मंद उदर वाली मन्दोदरी का सँवारा केश पकड़ खींच ले जाकर जेल में डाल दूँ तो वह क्या अपराध बन सकता है ? । ६९४

मीट्टुमिनि यॅण्णुम्विनै वेरुमुळ दन्ऱाल्
ओट्टियिव् वरक्करुयि रुण्डुरिमै यॅल्लाम्
काट्टुमदु वेहरुम मऱ्ऱवर् कडुम्बोर्
मूट्टुम्वहै यावदुहॉ लॅन्ऱुमुयल् हिन्ऱान् 695

मीट्टुम्–फिरकर; इनि–अब; ऍण्णुम् विनै–सोचने योग्य काम; वेरुम् उळतु अन्ऱु–अन्य कुछ नहीं है; इ अरक्कर् उयिर्–इन राक्षसों के प्राण; ओट्टि–दूरकर; उण्टु–उनको मारकर; उरिमै ऍल्लाम्–श्रीराम के दास का कर्तव्य सब; काट्टुम् अतुवे–कर दिखाना ही; करुमम्–करणीय काम है; अवर्–वे; कटुम् पोर्–घोर युद्ध; मूट्टुम्–आरम्भ करें; वकै यावतु कॉल्–इसका उपाय कौन सा है; ऍन्ऱु–ऐसा; मुयल्किन्ऱान्–उपाय सोचने लगा। ६९५

आगे क्या कोई काम है जो किया जाना चाहिए। इन राक्षसों के प्राण हर लेना ही कर्तव्य कार्य है। तभी सेवक के नाते अपना अधिकार जताने का काम होगा। अब राक्षसों को घोर युद्ध करने आने को मजबूर करूँ, इसका उपाय क्या है ? हनुमान उपाय सोचने लगा। ६९५

इप्पॉऴि लिनैक्कडि दिरुक्कुवॅ निरुत्ताल्
अप्पॅरिय पूशल्शॅवि शार्दलु मरक्कर्
वॅप्पुरु शिनत्तरंदिर् मेल्वरुवर् वन्दाल्
तुप्पुऱ मुरुक्कियुयि रुण्बलिदु शूदाल् 696

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इ पॊऴिलिनै–इस अशोक वन को; कटितु इऱुक्कुवॆन्–शीघ्र तोड़कर नष्ट करूँगा; इऱुत्ताल्–मिटाऊँ तो; अ पॆरिय पूचल्–वह बड़ा शोर; चॆवि चार्तलुम्–कान में पड़ेगा तो तुरन्त; अरक्कर्–राक्षस; वॆप्पु उऱु–गरम हो; चिऩत्तर्–कोप से भरे; ऍतिर् मेल् वरुवर्–मुझ पर आक्रमण करने आएँगे; वन्ताल्–आएँ तो; तुप्पु उऱ–बल लगाकर; मुऱुक्कि–मारूँगा और; उयिर् उण्पल्–जान खा लूँगा; इतु चूतु–यही उपाय है। ६९६

अब मैं इस अशोक वन को शीघ्र मिटाऊँगा। उसका शोर उनके कानों में पड़ेगा तो वे भयंकर क्रोध के साथ मुझ पर धावा बोलने आएँगे; जब वे आएँगे तब उन्हें अपना बल दरसाकर उनके प्राण हर लूँगा। यही अच्छा उपाय है। ६९६

वन्दवर्हळ् वन्दवर्हण् मीळ्हिलर् मडिन्दाल्
वॆन्दिऱ लरक्कनुम् विलक्करु वलत्ताल्
मुन्दुमॆऩि लऩ्ऩवऩ् मुडित्तलै मुडित्तॆऩ्
शिन्दैयुऱु वॆन्दुयर् तविर्त्तितिदु शॆल्वेऩ् 697

वन्तवर्कळ्–आनेवाले; वन्तवर्कळ्–और आनेवाले; मीळ्किलर्–न लौट कर; मटिन्ताल्–मर जाएँगे तो; वॆम् तिऱल् अरक्कनुम्–कठोर बलशाली राक्षस रावण भी; विलक्कु अरु वलत्ताल्–अवार्य बल के साथ; मुन्तुम् ऍतिल्–सामने आया तो; अऩ्ऩवऩ् मुटि तलै–उसके किरीटधारी सिरों को; मुटित्तु–तोड़कर उसको मारकर; ऍऩ् चिन्तै उऱु–अपने मन में रहनेवाले; वॆम् तुयर्–कठोर दुःख को; तविर्त्तु–दूर करके; इतितु चॆल्वेऩ्–खुशी से लौट जाऊँगा। ६९७

जब चढ़ आनेवाले मरेंगे और लौट नहीं जाएँगे, तब कठोर बलिष्ठ रावण स्वयं अपार बल लेकर आयगा। तब उसके किरीटधारी सिरों को तोड़ दूँगा और उसे मार दूँगा। तब मेरे मन का बड़ा सन्तापक दुःख दूर हो जायगा और मैं खुशी से लौट जाऊँगा। ६९७

ऍऩ्ऱुनिनै याविरवि चन्दिर ऩियङ्गुम्
कुऩ्ऱमिरु तोळऩैय तऩ्ऩुरुवु कॊण्डाऩ्
अऩ्ऱुल हॆयिऱ्ऱिडैकॊ ळेऩमॆऩ लाऩाऩ्
तुऩ्ऱुहडि काविनै यडिक्कॊडु तुहैत्ताऩ् 698

ऍऩ्ऱु निनैया–ऐसा सोचकर; इरवि चन्तिरऩ्–रवि और शशि; इयङ्कुम्–जिसकी परिक्रमा करते हैं; कुऩ्ऱम् अऩैय–उस मेरु के समान; इरु तोळ्–दो कन्धों वाला; तऩ् उरुवु–अपना विराट् रूप; कॊण्टाऩ्–धर लिया (हनुमान ने); अऩ्ऱु–उस (प्राचीन) दिन; उलकु–भूमि को; ऍयिऱ्ऱु इटै–दाँतों के मध्य; कॊळ् एऩम् ऍऩल् आऩाऩ्–जिन्होंने उठा लिया उन वराहावतार के समान बना; तुऩ्ऱु–तरुओं से खूब भरे; कटि काविनै–सुरक्षित अशोक वन को; अटि कॊटु–पैरों से; तुकैत्ताऩ्–रौंदकर मिटाने लगा। ६९८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐसा सोचकर हनुमान ने अपना विश्वरूप ले लिया। उसके कन्धे दो मेरुओं के समान फूल उठे, जिसके चारों ओर रवि और शशि परिक्रमा करते घूमते हैं। वह उन वराहावतार के समान भी लगा, जिन्होंने प्राचीन समय में भूमि को अपने दाँतों के मध्य उठा लिया था। अब वह उस वन को अपने पैरों से तोड़ने-रौंदने लगा। ६९८

मुडिन्दत़ पिळन्दत़ मुरिन्दत़ नॅरिन्द
मडिन्दत़ पॊडिन्दत़ मऱिन्दत़ मुऱिन्द
इडिन्दत़ तहऱन्दत़ वॅरिन्दत़ करिन्द
ऒडिन्दत़ वॊशिन्दत़ वुदिऱन्दत़ पिदिऱन्द 699

मुटिन्तत़–(अनेक) वृक्ष मिटे; पिळन्तत़–टूटे; मुरिन्तत़–झुके; नॅरिन्त–आपस में टकराकर टूटे; मटिन्तत़–सिर कटकर गिरे; पॊटिन्तत़–चूर-चूर हुए; मऱिन्तत़–औंधे गिरे; मुऱिन्त–खण्ड-खण्ड हुए; इटिन्तत़–प्रहरित होकर मिटे; तकऱन्तत़–छिन्न-भिन्न हुए; ऍरिन्तत़–जले; करिन्त–राख बने; ऒटिन्तत़–फूटे; ऒचिन्तत़–लचककर लटके; उतिऱन्तत़–चू पड़े; पितिऱन्त–फटे। ६९९

उसके प्रहारों से अनेक वृक्ष मिटे। अनेक चिरे। अनेक झुके। अनेक आपस में टकराकर टूटे। अनेक सिर के बल औंधे गिरे। अनेक चूर्ण हुए। अनेक अस्त-व्यस्त हुए। अनेक टकराकर नष्ट हुए। अनेक खण्ड-खण्ड हुए। अनेक जल गये। अनेक राख बने। अनेक कटे। अनेक लचककर झुक गये। अनेक दुर्बल होकर टूटे। और अनेक फट गये। ६९९

वेरॊडु पऱिन्दशिल वॅन्दशिल विण्णिल्
कारॊडु शॅऱिन्दशिल कालित़ॊडु वेलैत्
तूरॊडु मऱिन्दशिल तुम्बियॊडु वात़ोर्
ऊरॊडु मलैन्दशिल वुक्कशिल नॅक्क 700

चिल–कुछ; वेरॊटु पऱिन्त–जड़ खोकर गिरे; चिल वॅन्त–कुछ झुलसे; चिल–कुछ; विण्णिल्–आकाश में; कारॊटु–मेघों के साथ; चॅऱिन्त–सट गये; चिल–कुछ; कालित़ॊटु–हवा से; वेलै–समुद्र के; तूरॊटु–पंक में; मऱिन्त–धँसकर मिटे; चिल–कुछ; तुम्पियॊटु–भ्रमरों के साथ; वात़ोर् ऊरॊटु–देवों के नगर पर; मलैन्त–टकराए; चिल–कुछ; उक्क–चूर्ण होकर गिरे; चिल नॅक्क–कुछ पिचक गये। ७००

कुछ तरु छिन्नमूल हुए। कुछ झुलसे। कुछ आकाश में जाकर मेघों के साथ सट गये। कुछ हवा के साथ उड़कर समुद्र में गिरे और पंक में धँसकर मिटे। कुछ भ्रमरों के साथ उठकर स्वर्ग से जाकर टकराए। कुछ चूर-चूर होकर चू पड़े। कुछ दबकर विकृत हो गये। ७००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शोऩैमुदऩ् मऱ्ऱवै चुऴऱ्ऱिय तिशैप्पोऱ्
आऩैनुह रक्कुऴहु मानवडि पऱ्ऱा
मेऩिमिर विट्टऩ विशुम्बिऩ्वऴि मीप्पोय्
वाऩवर्ह णन्दऩ वऩत्तैयु मडित्त 701

चोऩै मुतल्–मेघ-सहित रहे; मऱ्ऱवै–अन्य कुछ पेड़; चुऴऱ्ऱिय–घूमते हुए; तिचै पोऱ् याऩै–युद्धोत्साही दिग्गजों के; नुकर–खाने के लिए; कुऴकुम् आऩ–पत्तों के गोलक बने; अटि पऱ्ऱा–तना पकड़कर; मेल् निमिर विट्टऩ–जो ऊपर उछाले गये; विचुम्पिऩ् वऴि–उन्होंने आकाश मार्ग से; मी पोय्–ऊपर जाकर; वाऩवर्कळ् नन्तऩ वऩत्तैयुम्–देवों के नन्दनवनों को भी; मटित्त–मिटा दिये। ७०१

मेघाच्छादित कुछ पेड़, जो हनुमान से फेंके गये, युद्धोत्साही दिग्गजों के खाने के 'गोलक' बने। हनुमान ने कुछ पेड़ों के निम्न भाग को पकड़कर ऊपर फेंका। उन्होंने आकाश में जाकर देवों के नन्दनवनों को मिटा दिया। ७०१

अलैन्दऩ कडऱ्ऱिरै यरक्करहन् माडम्
कुलैन्दुह विडिन्दऩ कुलक्किरिह ळोडु
मलैन्दुपॊडि युऱ्ऱऩ मयङ्गिऩॊडु वाऩत्
तुलैन्दुविऴु मीऩिऩॊडु वॆण्मल रुदिर्न्द 702

कटल् तिरै–समुद्र की तरंगें; अलैन्तऩ–हिलोरे लेने लगीं; अरक्कर्–राक्षसों के; अकल् माटम्–बड़े-बड़े मकान; कुलैन्तु उक–ढहकर गिरते हुए; इटिन्तऩ–टूटे; कुल किरिकळोटु–आठ कुलगिरियों के साथ; मलैन्तु–वे तरु टकराकर; पॊटि उऱ्ऱऩ–चूर-चूर हो गये; नॆटु वाऩत्तु–लम्बे आकाश में; उलैन्तु विऴु–अस्त-व्यस्त होकर; गिरनेवाले; मीऩिऩॊटु–नक्षत्रों के साथ; मयङ्कि–मिश्रित होकर; वॆण्मलर्–श्वेत पुष्प; उतिर्न्त–नीचे गिरे। ७०२

कुछ पेड़ समुद्र में जाकर गिरे और उसकी तरंगें उद्वेलित हुईं। ऐसे पेड़ों के गिरने से उस नगर के राक्षसों के विशाल प्रासाद टूट-फूट गये। कुछ तरु आठ कुलगिरियों (हिमालय, मन्दर, कैलास, विन्ध्य, निषाद, हेमकूट, नील, गन्धमादन) से जाकर टकराये और चूर-चूर हो गये। आकाश से नक्षत्र अस्त-व्यस्त होकर गिरे और इन पेड़ों के श्वेत रंग के पुष्प भी मिश्रित होकर नीचे गिरे। ७०२

मुडक्कुनॆडु वेरॊडु मुहन्दुलह मुऱ्ऱुम्
कडक्कुम्वहै वीशिऩ कळित्तदिशै याऩै
मडप्पिडियि नुक्कुदव मैयिऩिमिर् कैवैत्
तिडुक्कियऩ वॊत्तऩ वॆयिऱ्ऱिऩिडै नाल्व 703

मुटक्कु–कुंचित; नॆटु वेरॊट–लम्बी जड़ों के साथ; मुकन्तु–उठाकर; उलकम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुऱ्ऱुम् कटक्कुम् वकै–भूमि भर को पार कर जाएँ, ऐसा; वीचित–हनुमान द्वारा फेंके गये वृक्ष; कळित्त तिचै यानै–मत्त दिग्गजों के; ऍयिऱ्ऱिन् इटै–दाँतों के मध्य; नाल्व–लटकते हैं; मट पिटियिनुक्कु–बाल हथिनियों को; उतव–देने के लिए; मैयिन् निमिर्–मेघ के समान उठी हुई; कै वैत्तु–अपनी सूँड़ में लेकर; इटुक्कियत ऑत्तत–पकड़ लिये गये, जैसे लगे। ७०३

हनुमान ने कुछ पेड़ों को इस वेग के साथ फेंका कि वे कुञ्चित जड़ों के साथ संसार भर को पार करते हुए गये और दिग्गजों के दाँतों पर अटके लटके रहे। तब ऐसा लगा, मानो उन दिग्गजों ने अपनी सुन्दर बाल हथिनियों को खिलाने के लिए अपने दाँतों के बीच उन्हें पकड़ रखा हो। ७०३

विञ्जैयुल हत्तिनु मियक्कर्मलै मेलुम्
तुञ्जुदलिल् वानवर् तुऱक्कनह रत्तुम्
पञ्जियडि वञ्जियर्हण् मॊय्त्तनर् परित्तार्
नञ्जमनै यानुडैय शोलैयि नऱुम्बू 704

नञ्चम् अनैयानुटैय–विष-सम रावण के; चोलैयिन् नऱुम् पू–उद्यान के सुवासित फूल; विञ्चै उलकत्तितुम्–विद्याधरलोक में और; इयक्कर् मलै मेलुम्–यक्षों के पर्वतों पर; तुञ्चुतल् इल्–अनिद्र; वानवर् तुऱक्क नकरत्तुम्–देवों के स्वर्गलोक में; पञ्चि अटि–लाक्षारसरंजित चरणों वाली; वञ्चियर्कळ्–अप्सराओं ने; मॊय्त्तनर्–भीड़ में आकर; परित्तार्–तोड़ लिये। ७०४

विष-समान राक्षस रावण के अशोक वन के पेड़ सब जगह आकर गिर गये। इसलिए उनके सुगन्धित फूलों को विद्याधरों के लोकों में, यक्षों के पर्वतों पर, और अनिद्र देवों के स्वर्गलोक में, सर्वत्र लाक्षारसरंजित चरण वाली सुन्दरियाँ भीड़ लगाए आकर चुनने लगीं। ७०४

पॊन्ऱिणि मणिप्परु मरन्दिशैहळ् पोव
मिन्ऱिरिव वॊत्तन वॅयिऱिरिव वॊत्त
ऒन्ऱिनॊडु मॊन्ऱिडै पुडैत्तुदिर्व वूऴि
तन्ऱिरळ्ह ळोडुविळु तारहैयु मॊत्त 705

पॊन् तिणि–स्वर्ण में जड़ित मणियों के बने; परु मरम्–स्थूल तरु; तिचैकळ् पोव–नाना दिशाओं में जो गये; मिन् तिरिव–बिजलियाँ संचार करतीं; ऒत्तन–जैसे लगे; वॅयिल् तिरिव ऒत्त–(अनेक) सूर्य चलते जैसे लगे; ऒन्ऱिनॊटुम् ऒन्ऱु इटै पुटैत्तु–एक-दूसरे से बीच में टकराकर; उतिर्व–चूर-चूर होकर गिरे; ऊऴि–युगान्त में; तन् तिरळ्कळोटु विळुम्–अपने समूहों के साथ गिरनेवाले; तारकैयुम् ऒत्त–ताराओं के समान भी लगे। ७०५

अनेक वृक्ष मणि-जटित स्वर्ण के थे। वे जब चारों दिशाओं में जा रहे थे, तब वे बिजली के समान लगे; अनेक सूर्य चलते हों, ऐसा भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लगे। वे आपस में टकराकर जब चूर-चूर हो चू पड़े, तब युगान्त में गिरनेवाले तारासमूहों के समान लगे। ७०५

पुळ्ळिनॉडु वण्डुमिञि रुङ्गडिहॉळ् पूवुम्
कळ्ळुमुहै युन्दळिर्ह ळोडिनिय कायुम्
वॅळ्ळनॅडु वेलैयिडै मीनिनम् विळुङ्गित्
तुळ्ळिन मरन्बड नॅरिन्दन तुडित्त 706

पुळ्ळिनॉटु–खगों के साथ; वण्टुम् मिञिरुम्–भ्रमर और ततैये; कटि कॉळ् पूवुम्–सुगन्धित फूल; कळ्ळुम्–शहद; मुकैयुम्–कलियाँ; तळिर्कळोटु इनिय कायुम्–पल्लवों के साथ मधुर अपक्व फल; वॅळ्ळ नॅटु वेलैयिटै–जल-भरे विशाल समुद्र-मध्य; मीन् इनम्–मछलियों का झुण्ड; विळुङ्कि–निगलकर; तुळ्ळिन–उछले; मरन् पट–पेड़ों के लगने से; नॅरिन्तन तुटित्त–दबकर तड़पे। ७०६

समुद्र की मछलियाँ पक्षियों, भ्रमरों, सुगन्धित पुष्पों, मधु, कलियों, पत्तों और फलों को खाकर उछल-कूद मचाने लगीं। पर पेड़ों के लगने से, बेचारी दबकर तड़पने लगीं। ७०६

तूविय मलर्त्तॉहै शुमन्दुतिशै तोरुम्
पूविन्मण नारुव पुलाल्कमळ्हि लाद
तेवियर्ह ळोडुमुयर् तेवरिनि दाडुम्
आवियॅन लायदिशै यार्हलिह ळम्मा 707

तूविय मलर् तॉकै–बिखरी पुष्प-राशियाँ; चुमन्तु–धारण करके; तिचै तोरुम्–दिशा-दिशा में; पूविन् मणम् नारुव–पुष्पगन्धगन्धित; पुलाल् कमळ्किलात–मांसगन्धरहित; तिचै आर्कलिकळ्–चारों दिशाओं में रहनेवाले सागर; तेवर्–देव; उयर् तेवियर्कळोटुम्–उत्तम देवियों के साथ; इनितु आटुम्–आराम से जिनमें स्नान करते हैं; आवि ॲनल्–वापियों के समान; आय–बने। ७०७

चारों दिशाओं में स्थित सागरों पर सुगन्धित फूल तैर रहे थे। इसलिए वे सर्वत्र पुष्पबास से बासित थे और उनमें मांसगन्ध नहीं पाया गया। इस कारण वे उन वापियों के समान लगे, जिनमें देवी और देवता लोग आराम और आनन्द के साथ स्नान करते हैं। ७०७

इडन्दमणि वेदियु मिरुत्तकडि कावुम्
तॉडर्न्दन तुरन्दन पडिन्दुनॅरि दूरक्
कडन्दुशॅल वॅन्बदु कडन्ददिरु कालाल्
नडन्दुशॅल लाहुमॅन लाहियदु नन्नीर् 708

इटन्त–हनुमान द्वारा फेंकी गयी; मणि वेतियुम्–मणिमय वेदियाँ; इरुत्त कटि कावुम्–और नष्ट हुआ सुरक्षित अशोक वन; तॉटर्न्तन–एक के पीछे एक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लगकर; तुरन्तत-जो तेज चले; पटिन्तु-(समुद्र में) जाकर गिरे और; नॅरि तूर-पाटकर मार्ग के समान बना दिया, इसलिए; नत्तीर्-अच्छे जल का वह सागर; कटन्तु चॅलवु ऍन्पतु-तैरकर या लाँघकर जाने योग्य; कटन्ततु-यह स्थिति छोड़कर; इरु कालाल्-दोनों पैरों से; नटन्तु-चलकर; चॅलल् आकुम्-चल सकते हैं; ऍतल् आकियतु-ऐसा बन गया। ७०८

हनुमान ने रत्न-वेदिकाओं को उखाड़कर फेंका; उनके पीछे पेड़ों को फेंका। वे एक के पीछे एक जाते रहे और समुद्र में गिरकर उसे पाट गये। अब समुद्र पर पक्का मार्ग हो गया और लाँघकर या तैरकर पार किया जाय ऐसी स्थिति में नहीं था। कोई उस पर पैदल चलकर ही उसे पार कर सकता था। ७०८

वेनिल्विळै याडुशुड रोनिनॊळि विम्मुम्
वानिनिडै वीशिय विरुम्बणै मरत्ताल्
तानवर्हण् माळिहै तहर्न्दुपॊडि यान
वानविडि यालिडियु माल्वरैहण् मान 709

वेनिल्-ग्रीष्म ऋतु में; विळैयाटु-अपनी पूरी उमंग में रहनेवाले; चुटरोनिन्-किरणमाली की तरह; ऒळि विम्मुम्-प्रकाश से भरे; वानिन् इटै-आकाश में; वीचिय-फेंके गये; इरुम् पणै मरत्ताल्-बड़े और स्थूल तरुओं से; वान इटियाल्-आकाश के वज्र से; इटियुम् माल् वरैकळ् मान-टूटनेवाले बड़े पर्वतों की भाँति; तानवर्कळ् माळिकै-दानवों के प्रासाद; तकर्न्तु पॊटि आन-ढहकर चूर्ण हुए। ७०९

आकाश ग्रीष्म-विलासी सूर्य के समान बहुत ही ज्वलन्त बन गया। तब हनुमान-प्रेरित तरुओं से आकाश-वज्राहत पर्वतों के समान दानवों के प्रासाद टूटे-फूटे और चूर हुए। ७०९

ऍण्णिऱरु कोडिह ळॅऱिन्दन शॅऱिन्दे
तण्णॅन्मळै पोलिडै तळैत्ततु शलत्ताल्
अण्णलनु मानड लिरावणन दन्नाळ्
विण्णिनुमॊर् शोलैयुळ दामॅन विरित्तान् 710

चलत्ताल्-क्रोध के साथ; ऍऱिन्तन-हनुमान से जो फेंके गये; ऍण् इल्-असंख्यक; तरु कोटिकळ्-वृक्षवृन्द; चॅऱिन्तु-ठस भरकर; तण् ऍन् मळैपोल्-शीतल मेघों के समान; इटै तळैत्ततु-अन्तरिक्ष में घने रूप से लटके रहे; अण्णल् अनुमान्-महिमावान हनुमान ने; अ नाळ्-उस दिन; अटल् इरावणनतु-बलवान रावण का; विण्णिलुम् ऒर् चोलै-आकाश में भी एक अशोक वन; उळतु आम् ऍन-हो जैसे; विरित्तान्-फैला दिया। ७१०

हनुमान के द्वारा अपार क्रोध के साथ फेंके गये असंख्य तरुओं के समूह अन्तरिक्ष में मेघों के समान दिखे। महिमामय हनुमान ने इस तरह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन तरुओं को बिखेर दिया, मानो वहाँ (अन्तरिक्ष में) बलवान रावण का और एक उपवन बन गया हो। ७१०

तेनुऱै तुळिप्पनिऱै पुट्पल शिलम्बप्
पूनिऱै मणित्तरु विशुम्बिऩिडै पोव
मीऩ्मुऱै नॅरुक्कवॊळि वाळॊडुविल् वीश
वाऩिडै नडक्कुनॅडु माऩमॅऩ लाऩ 711

तेऩ् उऱै—शहद की बूँदें; तुळिप्प—टपकीं; निऱैपुळ्—वहाँ मिले रहे पक्षी; पल चिलम्प—अनेक चहक उठे; पू निऱै—पुष्पकलित; मणि तरु—मणिमय तरु; विचुम्पिऩ् इटै—आकाश-मध्य; पोव—जाकर; मीऩ् मुऱै नॅरुक्क—नक्षत्रों को आक्रान्त करने लगे; ऒळि वाळ् ऒटु—प्रकाश तलवार के समान; विल् वीच—और धनु के समान छिटका; वाऩिटै नटक्कुम्—आकाशचारी; नॅटु माऩम् ऍऩल् आऩ—बड़े यानों के समान लगे। ७११

पुष्पों से भरे रत्नमय तरु आकाश में जा रहे थे और उनसे शहद की बूँदें टपक रही थीं; और उन पर से अनेक पक्षी चहक रहे थे। नक्षत्र उनसे मिल गये। तब प्रकाश तलवार और धनु के आकार में छूट रहा था। ये तरु इस साज में आकाश में चलनेवाले यान के समान दिखे। ७११

शाकनॅडु माप्पणै तळैत्तऩ तऩिप्पोर्, नाहमऩै यानॅऱिय मेऩिमिर्व नाळुम्
माहनॅडु वाऩिडै यिऴिन्दुपुऩल् वारुम्, मेहमॅऩ लाऩनॅडु माहडलिऩ् वीऴ्व 712

तऩि—अप्रतिम; पोर् नाकम् अऩैयाऩ्—युद्धगज के समान (जो रहा) उस हनुमान के; ऍऱिय—फेंकने के कारण; नॅटु मा पणै चाकम्—लम्बी बहुत मोटी शाखाओं और; तळैत्तऩ—पत्रों से युक्त; मेल् निमिर्व—उद्गत; नॅटु मा कटलिऩ्—अति विशाल समुद्र में; वीऴ्व—गिरनेवाले तरु; नाळुम्—सदा; नॅटु माक वाऩ्—अति विस्तृत आकाश; इटै इऴिन्तु—मध्य से उतरकर; पुऩल् वारुम् मेकम्—जल-ग्राही मेघों; ऍऩल् आऩ—के समान भी बने। ७१२

अप्रतिम और युद्धगज के समान उस हनुमान के फेंकने के कारण, लम्बी और मोटी शाखाओं से युक्त, आकाश में उड़कर समुद्र में गिरनेवाले वृक्ष, अति विस्तृत नभ के मध्य से उतरकर आनेवाले जल-ग्राही मेघों के समान लगे। ७१२

ऊऩ मुऱ्ऱिड मण्णि ऩुदित्तवर्, ञाऩ मुऱ्ऱुबु नण्णिनर् वीडॅऩत्
ताऩ कऱ्पहत् तण्डलै विण्डलम्, पोऩ पुक्कऩ मुऩ्ऩुऱै पॊऩ्ऩहर् 713

ऊऩम् उऱ्ऱिट—मल (अज्ञान) के होने से; मण्णिल् उतित्तवर्—जो भूमि में जन्म ले चुके वे; ञाऩम् मुऱ्ऱुपु—ज्ञान पूर्ण होने पर; वीटु नण्णिऩर् ऍऩ—स्वर्ग पहुँच जाते जैसे; ताऩ कऱ्पक—दानशील कल्पतरुओं का; तण्टलै—वह अशोक वन; विण् तलम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पोत–आकाश में जाकर; मुन् उऱै–पूर्व वास के; पोन्नकर् पुक्कत–स्वर्गलोक पहुँच गये। ७१३

कोई (अविद्याजन्य) अपकृत्य होने से स्वर्ग छोड़कर जो भूमि पर जन्म ले चुके हैं, वे जैसे ज्ञान की पूर्णता प्राप्त करने पर स्वर्ग पहुँच जाते हैं, वैसे ही कल्पतरु-लसित अशोक वन के तरु व्योम में जाकर अपने पूर्ववासस्थल स्वर्गलोक में पहुँच गये हों, ऐसे लगे। ७१३

मणिहॊळ् कुट्टिम मट्टित्तु मण्डबम्
तुणिब डुत्तयल् वाविह डूर्त्तॊळिर्
तिणिशु वर्त्तलञ् जिन्दिच् चॆयऱ्करुम्
पणिब डुत्तुयर् कुन्ऱम् बडुत्तरो 714

मणि कॊळ्–मणिमण्डित; कुट्टिमम्–चबूतरों को; मट्टित्तु–मटियामेट करके; मण्टपम् तुणि पटुत्तु–मण्डपों को छिन्न-भिन्न करके; अयल्—पास की; वाविकळ्–वापियों को; तूर्त्तु–पाटकर; ऒळिर् तिणि–शोभायमान और सुदृढ़; चुवर्–दीवारों को; तलम् चिन्ति–तोड़-फोड़कर भूमि पर बिखेरकर; चॆयऱ्कु अरुम्–दुष्कर; पणि पटुत्तु–कार्यों द्वारा बने पदार्थों का नाश करके; उयर् कुन्ऱम्–ऊँचे पर्वतों को; पटुत्तु–मिटाकर। ७१४

हनुमान ने मणिमय चबूतरों को तोड़ा-फोड़ा। मण्डपों को तहस-नहस किया। पास रहे जलाशयों को पाट दिया। और पास रही सबल दीवारों को ढहाकर छितरा दिया। बहुत परिश्रम के साथ जो बनाये गये थे, उन सब (मण्डप, मार्ग, उद्यान) का नाश करा दिया। ऊँची गिरियों (या ऊँचे टीलों) को भी मिटा दिया। ७१४

वेङ्गै शॆऱ्ऱु मरामरम् वेर्पऱित्
तोङ्गु कऱ्पहम् पूवॊ डॊडित्तुराय्प्
पाङ्गर्च् चण्बहप् पत्ति पऱित्तयल्
माङ्ग निप्पणै मट्टित्तु माऱ्ऱिये 715

वेङ्कै चॆऱ्ऱु–"वेंगै" तरुओं को तहस-नहस करके; मरामरम्–सालवृक्षों का; वेर् पऱित्तु–उन्मूलन करके; ओङ्कु कऱ्पकम्–ऊँचे कल्पतरुओं को; पू ऒटु ऒटित्तु–पुष्पों के साथ मिटाकर; पाङ्कर् उराय्–पार्श्व में रहे; चण्पक पत्ति–चम्पकतरु-पंक्तियों को; पऱित्तु–उखाड़ फेंककर; अयल् मा कनि पणै–पास में रहे आम के फलों से युक्त डालों को; मट्टित्तु माऱ्ऱि–तोड़कर बिगाड़कर (नष्ट-भ्रष्ट किया)। ७१५

हनुमान ने 'वेंगै' नाम के पेड़, सालवृक्ष, कल्पतरु, चंपक-तरु-पंक्ति सबको निर्मूल किया, पुष्पों के साथ मटियामेट कर दिया। आम के पेड़ थे। उन्हें भी फलों के साथ डालियाँ तोड़कर नष्ट कर दिया। ७१५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शन्द नङ्ग डहर्न्दन ताम्बडर्, इन्द नङ्गळिन् वॆन्दॆरि शिन्दिन
मुन्द नङ्गन् वशन्दन् मुहङ्गॆड, नन्द नङ्गळ् कलङ्गि नडुङ्गवे 716

तकर्न्तत-उत्पाटित; चन्ततङ्कळ् ताम्—चन्दन-तरुओं ने; अनङ्कन् मुन्तु—मन्मथ के पहले आनेवाले; वचन्तन् मुकम् कॆट—वसंत का चेहरा (तेज) बिगाड़ते हुए; नन्तनङ्कळ्—आकाश के नन्दनवनों को; कलङ्कि नटुङ्क—व्याकुल और भयभीत करते हुए; इन्तनङ्कळिन्—ईंधन की भाँति; वॆन्तु—जलकर; पटर् ॲरि—लगातार आग; चिन्तिन—बरसायी। ७१६

चन्दनतरु, जो छिन्न-भिन्न किये गये, ईंधनों के समान निरन्तर आग उगलते रहे, जिससे अनंगमित्र वसन्त का मुख निष्प्रभ हुआ और व्योम के नन्दनवन भयभीत हुए। ७१६

काम रङ्गनि वण्डु कलङ्गिड, माम रङ्गण् मडिन्दन मण्णॊड
ताम रङ्ग वरङ्गु तहर्न्दुहप्, पूम रङ्ग ळॆरिन्दु पॊरिन्दवे 717

कामरम् कति—कामर राग सधे रूप से गानेवाले; वण्टु कलङ्किट—भ्रमर बेचैन हुए; मा मरङ्कळ्—बड़े-बड़े वृक्ष; मण्णॊटु मटिन्तत—भूमि पर मुड़कर गिरे; अरङ्कु ताम्—नाट्यमंच; अरङ्क—मिट गये; तकर्न्तु उक—टूटकर गिरे ऐसा; पू मरङ्कळ्—पुष्पतरु; ॲरिन्तु पॊरिन्त—जले-भुने। ७१७

'कामर' राग का गान सधे रूप से गानेवाले भ्रमरों को अस्त-व्यस्त करते हुए बड़े-बड़े वृक्ष मिट्टी में मिल गये। अनेक पुष्पतरु जल-भुन गये, जिससे नृत्यशालाएँ मिटीं और ढहकर खाक में मिल गयीं। ७१७

कुळैयुङ् गॊम्बुङ् गॊडियुङ् गुयिर्कुलम्
विळैयुन् दण्डळिर्च् चूळलु मॆन्मलर्प्
पुळैयुम् वाशप् पॊदुम्बुम् बॊलन्गॊडेन्
मळैयुम् वण्डु मयिलु मडिन्दवे 718

कुळैयुम्—पत्ते; कॊम्पुम्—और टहनियाँ; कॊटियुम्—लताएँ; कुयिल् कुलम् विळैयुम्—कोकिलकुल के प्यारे; तण् तळिर् चूळलुम्—शीतल लताकुंज; मॆन् मलर् पुळैयुम्—कोमल फूलों से भरे मार्ग; वाच पॊतुम्पुम्—सुगन्धपूर्ण झाड़ियाँ; पॊलन् कॊळ्—स्वर्णवर्ण में; तेन् मळैयुम्—गिरनेवाली शहद की धारें; वण्टुम्—भ्रमर; मयिलुम्—और मयूर; मटिन्त—मिट गये। ७१८

क्या-क्या मिटे! पत्ते, टहनियाँ, लताएँ, कोकिलकुल, प्यारे शीतल लताकुंज, कोमल पुष्पावृत मार्ग, सुबासित झाड़, स्वर्ण के रंग की शहदवर्षा, भ्रमर और मयूर सब मटियामेट हो गये। ७१८

पवळ माक्कॊडि वॊशिन पन्मळै
तुवळु मिन्नॆन्नच् चुर्रिडच् चूळ्वरै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिवळुम् पॊऱ्पणै मामरञ् जेऱ्न्दन
कवळ यानैयि नॊडैयिऱ् कान्दुव 719

वीचित—(हनुमान द्वारा) फेंकी गयी; पवळ मा कॊटि—प्रवाल-लाल-लताओं ने; पल् मऴै तुवळुम्—मेघमध्य लचकनेवाली; मिन् ऍन—बिजली के समान; चूऴ् वरै—लंका को घेरे रहे पर्वतों को; चुऱ्ऱिट—लपेट लिया; चेर्न्ततन—वहाँ जो पहुँचे; तिवळुम्—वे शोभायमान; पॊन् पणै—स्वर्ण-डालों के; मा मरम्—बड़े वृक्ष; कवळ यानैयिन्—कौर खानेवाले गजों के; ओटैयिल्—मुखपट्टों के समान; कान्तुव—तेजोमय रहे। ७१९

हनुमान द्वारा फेंकी हुई प्रवाल-वर्ण लताएँ मेघमध्य चमकनेवाली बिजली के समान पर्वतों पर लिपट गयीं। और स्वर्णमय डालियों-सहित बड़े-बड़े पेड़ बड़े-बड़े कौर खानेवाले गजों के मुखपट्ट के समान प्रकाशमय दिखे। ७१९

पऱवै यार्त्तॆऴु मोशैयुम् बन्मरम्, इऱवॆ डुत्त बिडिक्कुर लोशैयुम्
अऱव नार्त्तॆऴु मोशैयु मण्डत्तिन्, पुऱनि लत्तैयुङ् गैम्मिहप् पोयदे 720

पऱवै आर्त्तु ऍऴुम् ओचैयुम्—पक्षी रव कर उठे, वह शोर; पल् मरम् इऱ—अनेक वृक्ष टूटे; ऍटुत्त—तब निकला; इटि कुरल् ओचैयुम्—वज्र-सम नाद; अऱवन्—धर्मवान; आर्त्तु ऍऴुम्—(हनुमान) गरज उठा, वह; ओचैयुम्—शोर; अण्टत्तिन् पुऱ निलत्तैयुम्—अण्ड-पार तल को भी; कै मिक पोयतु—पार कर दूर गये। ७२०

पक्षी ध्वनि कर उठे, वह शोर; अनेक तरु टूटकर गिरे, तब उठा वज्र-सम शोर; धर्मरूप हनुमान गर्जन कर उठा, वह शोर —सब अण्ड-पार सर्वत्र पार कर सुनायी दिया। ७२०

पाड लम्बडर् कोङ्गॊडुम् बन्निशैप्, पाड लम्बनि वण्डॊडुम् बः(ह्)ऱिरैप्
पाड लम्बुऱु वेलैयिऱ् पाय्न्दन, पाड लम्बॆऱप् पुऴ्ळिनम् बाऱवे 721

पुऴ्ळिनम्—पक्षीगण; पाटु अलम् पॆऱ—बहुत कष्ट पाकर; पाऱ—छितरकर भागे; पाटलम्—पाटलवृक्ष; पटर् कोङ्कॊटुम्—विशाल 'कोङ्गु' वृक्षों के साथ; पन् इचै—उत्कृष्ट राग के साथ; पाटल्—गानेवाले; अम् पति वण्टॊटम्—सुन्दर शीतल (मनोमुग्धकारी) भ्रमरों के साथ; पल् तिरै—अनेक तरंगों से; पाटु अलम्पु उऱु—जिसका तीर नहलाया जाता है; वेलैयिल्—उस समुद्र में; पाय्न्तत—जाकर गिरे। ७२१

पाटल और विशाल कोंगु के पेड़ रागयुक्त स्वर निकालनेवाले भ्रमरों के साथ समुद्र में जा गिरे, जिससे पक्षीगण संकट पाकर तितर-बितर हुए और समुद्र में लहरें उठकर तीर से टकराकर उसे नहलाने लगीं। (इसमें यमकालंकार है।)। ७२१

वण्ड लम्बुन लाऱ्ऱिन् मरामरम्, वण्ड लम्बुन लाऱ्ऱिन् मडिन्दन
विण्ड लम्बुह नीङ्गिय वॆण्बुनल्, विण्ड लम्बुह नीण्मरम् वीऴ्न्दन 722

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वण्टु अलम्पु–भ्रमर जिन पर मँड़राते भन्ना रहे थे; नल् आऱ्ऱिन्–उद्यान के सुन्दर मार्गों में रहे; मरामरम्–(वे) सालवृक्ष; वण्टल्–तलौंछ (पंक) के साथ बहनेवाली; अम् पुनल्–और मनोरम जल वाली; आऱ्ऱिन्–नदी में गिरकर; मटिन्तत–नष्ट हुए; विण् तलम् पुक–व्योमलोक में जा गिरे ऐसा; नीङ्किय नीळ् मरम्–फेंके गये लम्बे वृक्ष; विण्टु अलम्पु–श्रीविष्णु के चरण जिससे प्रक्षालित किये गये; कम्–जो आकाश में बहती थी; वॅण् पुनल्–उस (आकाशगंगा) के श्वेत जल में; वीळ्न्तत–गिरे। ७२२

उस अशोक वन के मध्य मार्गों पर सालवृक्ष थे और उन पर भ्रमर भन्नाते हुए मँड़रा रहे थे। वे तलौंछ के साथ बहनेवाली नदी में गिरकर पंक में मग्न होकर मिट गये। हनुमान द्वारा आकाश पहुँचाते हुए फेंके गये कुछ वृक्ष आकाशगंगा के श्वेत जल में गिरे; जिस नदी के दिव्य जल से श्रीविष्णु भगवान के श्रीचरणों का प्रक्षालन (ब्रह्मा द्वारा) किया गया था। ७२२

ताम रैत्तडम् बॉय्हैशॅञ् जन्दनम्
ताम रैत्तन वॉत्तदु कैत्तलिन्
काम रङ्गळि वण्डॉडुङ् गळ्ळॉडुम्
काम रङ्गमळ् पूक्कडल् कण्डवे 723

उकैत्तलिन्–फेंकने से; तामरै तटम् पॉय्कै–विशाल कमल-सर; चॅम् चन्तनम् ताम्–लाल चन्दन की लकड़ियों को; अरैत्तत–पीसकर वह लेप उसमें घोल दिया गया हो; ऑत्तदु–वैसा हो गया; का मरम्–उस वन के वृक्षों ने; कामरम् कळि–कामर राग स्वरित करते हुए मत्त रहनेवाले; वण्टॉटुम्–भ्रमरों के साथ; कळ्ळॉटुम्–शहद के साथ और; कमळ् पू कटल् कण्ट–सुगन्ध-भरा पुष्प-सागर (के दृश्य) प्रस्तुत किये। ७२३

हनुमान द्वारा फेंके गये पेड़ों की वजह से कमल-सर चन्दनजलपूर्ण जलाशय-से हो गये। और वे सर अशोक वन के उन पेड़ों, कामर-राग गानेवाले मत्त भ्रमरों और शहदों के कारण पुष्पसागर-से बन गये। ७२३

शिन्दु वारन् दिशैतॉऱुञ् जॅन्ऱन, शिन्दु वारम् बुरैतिरै चेर्न्दन
तन्दु वारम् बुहनॅडुन् दाळ्वरै, तन्दु वारन् दुहळ्पडच् चाय्न्दवे 724

चिन्तुवारम्–काली निर्गुण्डी के पेड़; तिचै तॉऱुम्–सभी दिशाओं में; चॅन्ऱन–गये; चिन्तु–सिन्धु में; वार्–लम्बी; अम् पुरै तिरै–ऊँची सुन्दर तरंगें बनाते हुए; चेर्न्तत–गिरे; तम् तुवारम् पुक–गुफाओं में वे तरंगें घुसीं, इसलिए; नॅटुम् ताळ् वरै–विशाल सानुओं से युक्त पर्वत; तम् तुवारम् तुकळ् पट–लंका के द्वारों को चूर करते हुए; चाय्न्त–लुढ़क गये। ७२४

(सिंदुवार) काली निर्गुण्डी के पेड़ चारों ओर गये और सिन्धु में उन्नत तरंगें उठाते हुए गिरे। वे तरंगें पर्वतों की गुफाओं में घुसीं और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन पर्वतों ने लंका के प्रासादों के द्वारों को तोड़कर उन पर गिरे और उनको ढहा दिये । ७२४

नन्द वानत्तु नाण्मलर् नारिन, नन्द वानत्तु नाण्मलर् नारिन
शिन्द वानन् दिरिन्दुहच् चॅम्मणि, शिन्द वानन् दिरिन्द तिरैक्कडल् 725

नन्त वानत्तु–अशोक वन नाम के उस नन्दनवन के; नारिन नाळ् मलर्–सुबासपूर्ण ताजे फूल; नन्त–बहुत संख्या में; वानत्तु–आकाश में; नाळ् मलर्–नक्षत्र खिले हों जैसे; नारिन–भर गये; चिन्तु–इमली के पेड़; अ वानम् तिरिन्तु उक–उस आकाश में जो फिरकर गिरे तो; तिरै कटल्–तरंग-सहित सागर; वाल् नन्तु–उज्ज्वल शंखों ने; चॅम्मणि चिन्त–लाल मोती छितराए; तिरिन्त–इधर-उधर फिरे । ७२५

अशोक वन नाम के उस नन्दन वन के फूल आकाश में बिखरे और नक्षत्रों के समान लगे । इमली के पेड़, जो फेंके गये थे, आकाश में ऊँचाई तक जाकर तरंग-भरे समुद्र में गिरे, तो चमकदार शंख लाल रत्न (मोती) बिखेरते हुए इधर-उधर फिरे । (७२२ से ७२५वें पद्य तक के सभी पद्यों में यमकालंकार है ।) । ७२५

पुल्लुम् बॊऱ्पणैप् पन्मणिप् पूमरम्, कॊल्लु मिप्पॊळु देयॆनुङ् गॊळ्हैयाल्
ऍल्लिल् विट्टु विळङ्गिय विन्दिरन्, विल्लु मॊत्तन विण्णुऱ वीशिन 726

विण् उऱ वीचिन–आकाश में पहुँच जाएँ, ऐसा जो फेंके गये; पॊन् पणै पुल्लुम्–स्वर्णशाखा-युक्त; पल् मणि पू मरम्–विविध रत्न-पुष्प-तरु; इप्पॊळुते कॊल्लुम्–अभी नाश कर देगा; ऍनुम् कॊळ्कैयाल्–इस संकेत के कारण; ऍल्लिल्–रात में; विट्टु विळङ्किय–खूब ज्वलन्त; इन्तिरन् विल्लुम्–इन्द्रधनुष के भी; ऒत्तन–समान लगे । ७२६

हनुमान द्वारा स्वर्णडालियों-सहित विविध मणिमय तरु आकाश की ओर फेंके गये । वे रात में उत्पात-संकेत देते हुए इन्द्रधनुष के समान लगे, जिससे यह भासित होता था कि अभी (बड़ा उत्पात होनेवाला है यानी) हनुमान लंका का नाश करा देगा । (रात में इन्द्रधनुष का दिखना उत्पात का द्योतक है ।) । ७२६

मयक्किल् पॊऱ्कुल वल्लिहळ् वारिनेर्, इयक्क ऱत्तिशै तोऱु मॆऱिन्दन
वॆयिऱ्क दिर्क्कऱ्ऱै यिऱ्ऱुवि ळुन्दॆन, पुयऱ्क डऱ्ऱलै पुक्कन पोवन 727

मयक्कु इल्–असंशय; पॊन् कुल वल्लिकळ्–स्वर्णलताएँ; वारि–उठाकर; नेर् इयक्कु अऱ–घुमाकर (हनुमान द्वारा); तिचै तोऱुम् ऍऱिन्तन–सभी दिशाओं में (जो) फेंकी गयीं; वॆयिल् कतिर् कऱ्ऱै–धूप की किरणों की लटें; इऱ्ऱु–कटकर; विळुन्त ऍन–गिरीं जैसे; पुयल् कटल् तलै–मेघाच्छादित समुद्र में; पुक्कन पोवन–घुसती गयीं । ७२७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शुद्ध स्वर्णमय वल्लरियों को हनुमान ने उठाकर, घुमाकर चारों दिशाओं में दूर फेंका। वे मेघाच्छादित समुद्र में गिरीं जैसे धूप की किरणें कटकर गिरी हों। ७२७

आऩैत् ताऩमु माड लरङ्गमुम्, पाऩत् ताऩमुम् बाय्परिप् पन्दियुम्
एऩैत् तारणि तेरॊडु मिऱ्ऱऩ, काऩत् ताऱ्दरु वण्णल् कडाववे 728

अण्णल्–महिमावान हनुमान के; काऩत्तु आर् तरु–अशोक वन में रहे तरुओं को; कटाव–फेंकने पर; आऩै ताऩमुम्–गजशालाएँ और; आटल् अरङ्कमुम्–नृत्य-शालाएँ; पाऩ ताऩमुम्–मधुशालाएँ; पाय् परि–सरपट दौड़नेवाले अश्वों की; पन्तियुम्–शालाएँ; ऐऩै–और; तार् अणि–हारालंकृत; तेरॊटुम्–रथों के साथ; इऱ्ऱऩ–मिटे। ७२८

महिमामय हनुमान ने अशोक वन के पेड़ों को उखाड़कर फेंका जिससे गजशालाएँ, नृत्यशालाएँ, मधुशालाएँ और अश्वशालाएँ हारालंकृत रथों के साथ तहस-नहस हो गयीं। ७२८

पॆरिय मामर नुम्बॆरुङ् गुऩ्ऱमुम्, विरिय वीशलिऩ् मिऩ्ऩॆडुम् बॊऩ्मदिल्
ऩॆरिय माड ऩॆरुप्पॆऴ नीऱॆऴ, इरियल् पोऩ विलङ्गैयु मॆङ्गणुम् 729

पॆरिय मा मरऩुम्–बड़े-बड़े पेड़ों को; पॆरुम् कुऩ्ऱमुम्–और बड़े पर्वतों को; विरिय वीचलिऩ्–दूर-दूर तक फेंकने से; मिऩ्–चमकदार; ऩॆटुम् पॊऩ् मतिल्–दीर्घ स्वर्ण-प्राचीर; ऩॆरिय–दरार-लगे हो गये; माटम्–प्रासाद; ऩॆरुप्पु ऎऴ–जल उठे; नीऱु ऎऴ–राख उड़े; इलङ्कैयुम्–लंका नगरी के सभी; ऎङ्कणुम्–सब ओर; इरियल् पोऩ–भाग गये। ७२९

हनुमान बहुत बड़े-बड़े तरुओं और गिरियों को उखाड़कर फेंक रहा था, जिससे प्रभापूर्ण प्राचीर दरारें खा गये। प्रासाद आग हो उठे और राख निकली। लंकावासी सभी भयभीत हो सर्वत्र तितर-बितर भाग गये। ७२९

तॊण्डैयङ् गऩिवाय्च् चीदै तुवक्किऩा लॆऩ्ऩैच् चुट्टाय्
विण्डवा ऩवर्हण् मुऩ्ऩे विरिपॊऴि लिऱुत्तु वीक्कक्
कण्डऩै निऩ्ऱा यॆऩ्ऱु काणुमे लरक्कऩ् काय्दल्
उण्डॆऩ वॆरुवि ऩाऩ्बो लॊळित्तऩ ऩुडिविऩ् कोमाऩ् 730

तॊण्टै अम् कऩि वाय्–सुन्दर बिम्बाधरा; चीतै तुवक्किताल्–सीता के (स्नेह) बन्धन से; ऎऩ्ऩै चुट्टाय्–तुमने मुझे ताप दिया; विण्ट वातवर्कळ्–मुझसे डरकर पलायित देवों; मुऩ्ऩे–के सामने; विरि पॊऴिल्–विस्तृत उपवन को; इऱुत्तु वीक्क–(हनुमान द्वारा) नष्ट होते; कण्टऩै–देखते (चुप); निऩ्ऱाय्–खड़े रहे; ऎऩ्ऱु–ऐसा सोचकर; काणुमेल्–देखेगा तो; अरक्कऩ् काय्तल् उण्टु ऎऩ–राक्षस रावण त्रास देगा, ऐसा सोचकर; वॆरुविऩाऩ् पोल्–डर गया हो जैसे; उटुविऩ् कोमाऩ्–उडपति; ऒळित्तऩऩ्–छिप गया। ७३०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चन्द्र छिप गया। (कवि की उत्प्रेक्षा है कि) चन्द्र ने सोचा कि रावण मुझे देखेगा तो सताएगा, क्योंकि वह सोचता होगा कि मैंने बिम्बाधरा सीता के स्नेहबन्धन के कारण उसे जलाया। फिर किसी वानर ने अशोक वन के विशाल उद्यान को मिट्टी में मिलाया और मैं चुप देखते खड़ा रहा। उडुपति मानो इससे डरकर छिप गया। ७३०

काशऱु मणियुम् बॊन्नुङ् कान्दमुङ् गऴल्व वाय
माशऱु मरङ्ग ळाहक् कुयिऱ्ऱिय मदऩच् चोलै
आशैह डोऱु मैयऩ् कैहळा लळ्ळि यळ्ळि
वीशिऩ विळक्क लाले विळङ्गिऩ वुलह मॆल्लाम् 731

काचु अऱु–दोषहीन; मणियुम्–रत्न; पॊन्नुम्–और स्वर्ण; कान्तमुम्–सूर्यकान्त और चन्द्रकान्त मणियाँ; कऴल्व आय–जो मनोहारी रूप से विद्यमान हैं; माचु अऱु–त्रुटिहीन; मरङ्कळाक कुयिऱ्ऱिय–पेड़ों के रूप में जटित; मतऩच् चोलै–मदन-वास-योग्य वह अशोक वन; आचैकळ् तोऱुम्–सभी दिशाओं में; ऐयऩ्–सम्मान्य हनुमान के; कैकळाल् अळ्ळि अळ्ळि वीचिऩ–हाथों से उठा-उठाकर फेंके गये; विळक्कलाले–बड़ा प्रकाश फैला रहे थे, इसलिए; उलकमॆल्लाम्–सारे लोक; विळङ्किऩ–(अन्धकार में भी) साफ़ रूप से दिखायी दिये। ७३१

वह मदनवास-योग्य अशोक वन निर्दोष रत्नों, स्वर्ण, सूर्यकान्त और चन्द्रकान्त मणियों आदि से जटित प्रकाशमान पेड़ों से भरा था। हनुमान ने उनको अपने दोनों हाथों से उठा-उठाकर आकाश में फेंका तो सारे लोक अन्धकार में भी उज्ज्वल दिखे। ७३१

कदऱिऩ वॆरुवि युळ्ळङ् गलङ्गिऩ विलङ्गु कण्गळ्
कुदऱिऩ पऱवै वेलै कुळित्तऩ कुळित्ति लाद
पदऱिऩ पदैत्त वाऩिऱ् पऱन्दऩ मऱिन्दु पार्वीऴ्न्
दुदऱिऩ शिऱहै मीळ वॊडुक्किऩ वुलन्दु पोऩ 732

विलङ्कु कतऱिऩ–पशु चिल्ला उठे; वॆरुवि–डरकर; उळ्ळम् कलङ्किऩ–मन में भ्रमित हुए; कण्कळ् कुतऱिऩ–उनकी आँखें घाव बनकर रक्त से भर गयीं; पऱवै–पक्षीगण; वेलै कुळित्तऩ–समुद्र में डूब गये; कुळित्तु इलात–जो डूबे नहीं वे; पतऱिऩ पतैत्त–घबड़ा गये, बेचैन हुए; वाऩिल् पऱन्तऩ–आकाश में उड़े; मऱिन्तु–लौटकर; पार् वीऴ्न्तु–भूमि पर गिरकर; उतऱिऩ चिऱकै–पंख फड़फड़ाकर; मीळ ऒडुक्किऩ–फिर उन्हें समेटकर; उलन्तु पोऩ–सूख गये (मर गये)। ७३२

उस अशोक वन के पशु चिल्लाये। डरकर व्याकुलमन हुए। उनकी आँखें व्रण-सी हो गयीं और उनसे रक्त उमग आया। पक्षीगण समुद्र में गिरकर डूब गये। जो नहीं डूबे वे बेचैन हो छटपटाये। आकाश में उड़े, फिर नीचे गिरे। उन्होंने अपने पंख फड़फड़ाये फिर समेट लिया और प्राण त्याग दिये। ७३२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तोट्टॊडुन् दुदैन्द तॆय्व मरन्दॊऱुम् तॊडुत्त पुट्टङ्
गूट्टॊडुन् दुऱक्कम् बुक्क कुन्ऱन्न कुववुत् तिण्डोळ्
शेट्टहन् परिदि मार्बन् शीऱियुन् दीण्ड ऱन्नाल्
मीट्टवन् करुणै शॆय्दाऱ् पॆऱुम्बदम् विळम्ब लामो 733

कुन्ऱु अन्न–पर्वत-सम; कुववु तिण् तोळ्–पुष्ट और सबल कन्धों; चेट्टु अकल्–(और) सुन्दरता में विशाल; परिति मार्पन्–सूर्य-सम प्रकाशमय वक्ष का; चीऱियुम्–(हनुमान की) कोप के साथ भी; तीण्टल् तन्नाल्—स्पर्श-महिमा से; तॆय्व मरम् तोऱुम्–हर दिव्य तरु पर; पुळ्–पक्षी; तोट्टॊटुम्–पत्रों के साथ; तुतैन्त तॊडुत्त–घने रूप से निर्मित; तम् कूट्टॊटुम्–अपने घोंसलों-सहित; तुऱक्कम् पुक्क–स्वर्ग पहुँचे; मीट्टु–फिर; अवन् करुणै चॆय्ताल्–वह कृपा करे तो; पॆऱुम् पतम्–(कृपापात्र) जो पद प्राप्त करेंगे; विळम्पल् आमो–उसको कह सकेंगे क्या। ७३३

हनुमान के कन्धे पुष्ट और सबल थे। उसका वक्ष अति सुन्दर रूप से विशाल था। वह क्रोध में ही पेड़ों का नाश करता था और खगकुल मरे। तो भी उसके स्पर्श की महिमा थी कि वे मृत पक्षी स्वर्ग पहुँचे। अगर वह इसके विपरीत कृपा दिखाता तो वे किस (अत्युन्नत) पद को प्राप्त होंगे ? यह हम कह सकते हैं क्या ? । ७३३

पॊय्म्मुऱै यरक्कर् काक्कुम् बुळ्ळुऱै पुदुमॆन् शोलै
विम्मुऱु मुळ्ळत् तन्न मिरुक्कुमव् विरुक्क मॊन्ऱुम्
मुम्मुऱै युलह् मॆल्ला मुऱ्ऱुऱ मुडिव दान्न
अम्मुऱै यैयन् वैहु मालॆन्न निन्ऱु दन्ऱे 734

पॊय् मुऱै–असत्य के मार्गगामी; अरक्कर् काक्कुम्–राक्षस-पालित; पुळ् उऱै–पक्षी के वास के; पुतु मॆन् चोलै–नवीन और कोमल उद्यान में; विम् उऱुम्–दुःख-भरे; उळ्ळत्तु अन्नम्–मन की हंसिनी-सी देवी; इरुक्कुम् अ विरुक्कम् ऒन्ऱुम्–(जिसके नीचे) रहती थीं, केवल वह एक शिंशुपा वृक्ष; मु मुऱै उलकम् ऎल्लाम्–त्रिविध (भू, पाताल, स्वर्ग के) सारे लोक; मुऱ्ऱु उऱ–सम्पूर्ण रूप से; मुटिवतु आन्न–नष्ट करने आनेवाले; अ मुऱै–उस प्रलयकाल में; ऐयन् वैकुम्—प्रभु श्रीविष्णु जिस पर रहते हैं; आल् ऎन्–उस वटपत्र के समान; निन्ऱतु–स्थिर रहा। ७३४

असत्यमार्गगामी राक्षसपालित, खगावास उस अशोक वन में सिर्फ़ वह एक 'शिंशुपा' वृक्ष बचा, जिसके तले दुःख-विलोडित मन वाली हंसिनी-सी सीताजी बैठी थीं। वह वृक्ष उस वटपत्र के समान बचा रहा, जिस पर त्रिलोकनाशक प्रलयकाल में प्रभु श्रीविष्णु शयन करते रहते हैं। ७३४

उऱुशुडर्च् चूडैक् काशुक् करशिन्नै युयिरॊप् पान्तुक्
करिहुऱि याह् विट्टा ळादलान् वऱिय ळन्दो
शॆऱिहुळ्ऱ् चीदैक् कन्ऱोर् शिहामणि तॆरिन्दु वाङ्गि
ऎरिहड लीव दॆन्न वॆळुन्दन्न त्तिरवि यॆन्बान् 735

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उऱु चुटर्–कान्तियुत; चूटै काचुक्कु अरचित्तै–चूडामणियों में राजा को; उयिर् ऑप्पात्तुक्कु–अपने प्राण-सम श्रीराम के पास; अऱि कुऱि आक–अभिज्ञान के रूप में; विट्टाळ्–(सीताजी ने) भेज दिया; आतलात्तु–इसलिए; अन्तो–हाय; वऱियळ्–अब किसी आभरण से हीन; चॆऱिकुऴल्–घने केश वाली; चीतैक्कु–सीता को; ऍऱि कटल्–तरंग फेंकनेवाला सागर; अत्तुऱु–तब; ओर् चिकामणि–एक चूडामणि; तॆरिन्तु वाङ्कि–चुन लेकर; ईवतु ऍन्त–प्रदान करता हो जैसे; इरवि ऍत्पात्तु–रवि वह; ऍऴुन्ततत्तु–उग आया। ७३५

तब सूर्य उग आया। सूर्य दूसरे चूडामणि के समान लगा। देवी ने चूडामणियों में राजा अपने चूडामणि को अपने प्राण (-सम) नाथ श्रीराम के पास अभिज्ञान के रूप में भेज दिया। अब उनके पास कोई आभरण नहीं रह गया और वे गरीब हो गयीं। उन घने केश वाली सीताजी को तरंगायमान समुद्र ने दूसरा चूडामणि देना चाहा और चुन लेकर यह चूडामणि दिया हो —ऐसा लगा सूर्य। ७३५

ताऴिरुम् बॊऴिल्ह ळॆल्लात् तुडैत्तॊरु तमिय त्तिन्ऱात्
एऴित्तो डेऴु नाडु मळन्दव त्तॆत्तलु मात्तात्
आऴियि त्तडुव णिन्ऱु वरुवरैक् करशु मॊत्तात्
ऊऴियि त्तिरुदिक् कालत् तुरुत्तिर मूर्त्ति यॊत्तात् 736

ताळ् इरुम्–हरे-भरे और विशाल; पॊऴिल्कळ् ऍल्लाम्—अशोक वन की सारी चीजों को; तुटैत्तु–मिटाकर; ऒरु तमियत् तिन्ऱात्–एकाकी खड़ा रहा (हनुमान); एऴितोटु एऴु नाटुम्–सात और सात (चौदह) भुवनों को; अळन्तवत्तुम्–नापनेवाले (त्रिविक्रम मूर्ति); ऍत्तलुम् आत्तात्–के समान भी रहा; आऴियित् नटुवण् तिन्ऱु–समुद्र-मध्य स्थित; अरुवरैक्कु अरचुम्–श्रेष्ठ पर्वतराज (मेरु) के भी; ऒत्तात्–समान दिखा; ऊऴियित् इरुति कालत्तु–युगान्त के समय; उरुत्तिर मूर्त्ति ऒत्तात्–(प्रलयकालाग्नि-) रुद्र के समान भी दिखा। ७३६

खूब पनपे पल्लवफूल-सहित रहे अशोक वन में रही सभी वस्तुओं को मिट्टी में मिलाकर एकाकी जो खड़ा रहा वह हनुमान, सातों लोकों के मापक त्रिविक्रम श्रीविष्णुदेव के समान दिख रहा था; क्षीरसागर-मध्य स्थित पर्वतराज मेरु के समान भी लगा। वही नहीं; युगान्त के प्रलयकालाग्नि-रुद्र के समान भी शोभा। ७३६

इत्तत्त निहऴुम् वेलै यरक्किय रॆऴुन्दु पॊङ्गिप्
पॊत्तमलै यॆन्त निन्ऱु पुनिदनैप् पुरिन्दु नोक्कि
अत्तैयी दॆन्त मेनि यार्हॊलॆन् ऱच्च मुऱ्ऱार्
नत्तुद ऱत्तै नोक्कि यऱिदियो नङ्गै यॆन्ऱार् 737

इत्तत्त–इस भाँति काम; निकऴुम् वेलै–जब होता रहा, तब; अरक्कियर्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राक्षसियाँ; ऎळुन्तु–जाग उठीं और; पॊङ्कि–खौल उठीं; पॊन् मलै ऎन्ऱ–स्वर्ण-गिरि-समान; निन्ऱ पुतितनै–स्थित पावन हनुमान को; पुरिन्तु नोक्कि–खूब देखकर; अन्नै–मैया; ईतु ऎन्ऱ मेनि–यह कैसा रूप है; यार् कॊल्–कौन है; ऎन्ऱु–ऐसा; अच्चम् उऱ्ऱार्–भयभीत हुईं; नन्नुतल् तन्नै–मनोरम ललाटिनी को; नोक्कि–देखकर; नङ्कै–स्त्री; अऱितियो–जानती हो; ऎन्ऱार्–पूछा (उनसे)। ७३७

जब अशोक वन इस भाँति मिट रहा था तब राक्षसियाँ जाग उठीं। यह नाश देखा तो उनका मन उबल उठा। स्वर्णमेरु-सदृश खड़े रहे पावन हनुमान को उन्होंने खूब आँखें गड़ाकर देखा और उद्गार निकाला कि मैया! यह क्या रूप है? यह है कौन? उन्होंने भयभीत होकर मनोरम ललाटिनी सीताजी से पूछा कि देवी! तुम इसे जानती हो क्या? । ७३७

तीयवर् तीय शॆय्द ऱीयवर् तॆरियि नल्लाल्
तूयवर् तुणिद लुण्डे नुम्मुडैच् चूळ् लॆल्लाम्
आयमा नॆय्द वम्मा निळैयव नरक्कर् शॆय्द
मायमॆन् ऱुरैक्क वेयु मॆय्यॆन मैयल् कॊण्डेन् 738

तीयवर्–बुरे लोग; तीय चॆय्तल्–बुरा काम करें, वह; तीयवर् तॆरियिन् अल्लाल्–बुरे लोग ही जानें, नहीं तो; तूयवर् तुणितल् उण्टे—अच्छे लोग जान सकेंगे क्या; ऎल्लाम्–सब; नुम्मुटै चूळल्–तुम लोगों का षड्यन्त्र है; आय मान्–मृग बना; ऎय्त–(मारीच) मेरे पास आया; अ मान्–वह हरिण; अरक्कर् चॆय्त मायम्–राक्षसों की की हुई माया है; ऎन्ऱु–ऐसा; इळैयवन् उरैक्कवेयुम्–देवर लक्ष्मण ने कहा तो भी; मॆय् ऎन–सच के; मैयल् कॊण्टेन्–भ्रम में पड़ी। ७३८

देवी ने कुछ विचित्र उत्तर दिया। बुरे मनुष्य ही बुरों की बात जानते हैं। नहीं तो अच्छे मनुष्य जान सकेंगे क्या? यह सब तुम लोगों का ही षड्यन्त्र होगा। जंगल में हरिण बनकर मारीच आया और मेरे देवर ने कहा कि यह माया-मृग है। पर मैं उसे सच्चा मृग मानकर मोहित हुई थी। ७३८

ऎन्ऱन ळरक्कि मार्हळ् वयिऱलैत् तिरियल् पोहिक्
कुन्ऱमु मुलहुम् वानुङ् गडल्हळुङ् गुलैय वोड
निन्ऱदोर् शयित्तङ् गण्डा नीक्कुव लिदनै यॆन्नात्
तन्ऱडक् कैह णीट्टिप् पऱ्ऱिनान् ऱादै यॊप्पान् 739

ऎन्ऱनळ्–ऐसा कहा; अरक्किमार्कळ्–राक्षसियाँ; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटती हुई; इरियल् पोकि–तितर-बितर होकर; कुन्ऱमुम्–पर्वतों; उलकुम्–लोक; वानुम्–आकाश; कटल्कळुम्–समुद्रों के; कुलैय–अस्त-व्यस्त होकर; ओट–भागते; तानै ऒप्पान्–अपने पिता (वायु-) सम जो रहा उसने; निन्ऱतु–वहाँ स्थित; ओर् चयित्तम्–एक 'चैत्य' (यज्ञशाला) को; कण्टान्–देखा; इतनै नीक्कुवल्–इसको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उखाड़ दूँगा; ऍन्नता–सोचकर; तन् तट कैकळ्–अपना विशाल हाथ; नीट्टि–बढ़ाकर; पऱ्ऱिनान्–उसको पकड़ लिया। ७३९

सीताजी ने यह उत्तर दिया। राक्षसियाँ पेट पीटकर तितर-बितर हो भागीं, जिससे पर्वत, भूतल, आकाश और सागर व्यथित हुए। तब अपने पिता, पवन-सदृश हनुमान ने वहाँ एक चैत्य (यज्ञमण्डप) को देख लिया। 'इसको हटाऊँगा' —यह विचार करके उसने अपने बड़े हाथ से उसे पकड़ लिया। ७३९

कण्गॊळ वरिदु मीदु कार्हॊळ वरिदु तिण्गाल्
ऍण्गॊळ वरिदु तीरा विरुळ्हॊळ वरिदु माह
विण्गॊळ निवन्द मेरु वॆळ्हुऱ वॆदुम्बि युळ्ळम्
पुण्गॊळ वुयर्न्द दिप्पार् पॊऱैहॊळ वरिदु पोलाम् 740

कण् कॊळ अरितु–(वह चैत्य) पूर्णरूप से देखने में कठिन (इतना बड़ा) था; कार्–मेघ भी; मीतु कॊळ–उसके ऊपर जाएँ; अरितु–वह कठिन था; तिण् काल्–सबल पवन भी; ऍण् कॊळ–उसको उखाड़ने का विचार करे; अरितु–वह दुस्तर था; तीरा–अक्षय; इरुळ्–युगान्त के अन्धकार के लिए भी; कॊळ अरितु–ढक लेना दुस्साध्य था; माक विण्–बड़े आकाश को; कॊळ–अपना स्थान बना लेने के विचार से; निवन्त–ऊँचा बढ़ा हुआ; मेरु–मेरु पर्वत भी; वॆळ्कु उऱ–शरम करके; उळ्ळम् वॆतुम्पि–मन में ताप का अनुभव कर; पुण् कॊळ–दुःखव्रण पा जाए ऐसा; उयर्न्तत्तु–उन्नत बना था; इ पार्–यह भूमि; पॊऱै कॊळ–भार सहे; अरितु पोल्–यह कठिन हो जैसे; आम्–था। ७४०

वह चैत्य इतना बड़ा और चमकीला था कि कोई भी अपनी आँखों से उसे पूरा नहीं देख सके। मेघ भी उसके ऊपर न जा सके, उतना ऊँचा था। सबल पवन उसके पास नहीं जा सकता था। अक्षय प्रलयान्धकार भी उसे अपने अन्दर ले नहीं जा सकता था। आकाशव्यापी मेरु भी उससे शरमाकर चित्त में तपकर व्रणमन हो जाय, इतना उन्नत बढ़ा था वह चैत्य। यह धरती उसके भार को वहन नहीं कर सकेगी, ऐसा कहा जा सकता था। ७४०

पॊङ्गॊळि नॆडुना ळीट्टिप् पुदियपाल् पॊऴिव दॊक्कुम्
तिङ्गळै नक्कु हिन्ऱ विरुळॆल्लाम् वारित् तिन्न
अङ्गैबत् तिरट्टि यान्ऱ नाणैया लळ्हु मानप्
पङ्गयत् तॊरुवन् ऱाने पशुम्बॊन्नाऱ् पडैत्त दम्मा 741

पुतिय पाल्–ताजा दूध; पॊऴिवतु–बहाते; ऒक्कुम्–जैसे; तिङ्कळै–चन्द्र को; नक्कुकिन्ऱ–चाटनेवाले; इरुळ् ऍलाम्–सभी अन्धकार को; वारि तिन्न–उठाकर खाने के लिए; अम् कै पत्तु इरट्टियान्–सुन्दर बीस हाथों वाले; तन् आणैयाल्–(रावण) की आज्ञा से; पङ्कयत्तु ऒरुवन् ताने–कमलासन स्वयं; पॊङ्कु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऑळि–वर्धनशील प्रकाश को; नॅटु नाळ्–अनेक दिनों से; ईट्टि–खोजकर एकत्रित कर; अऴकु मान्–सुन्दरता में बढ़े हुए; पचुम् पॊन्नाल्–चोखे स्वर्ण से; पटैत्ततु–रचित किया शायद जो था वह था यह चैत्य; अम्मा–मैया। ७४१

दुग्ध-सम प्रकाश फैलानेवाले चन्द्र को भी जो अन्धकार चाट लेता है, उस अन्धकार को एक दम उठाकर खाने के लिए बीस हाथों वाले राक्षसराज रावण की आज्ञा के अनुसार स्वयं कमलासन ने अनेक-अनेक दिन प्रकाश को एकत्रित कर, उस पुञ्जीभूत प्रकाश से, सुन्दरता में बढ़े हुए उस चैत्य को निर्मित किया था —ऐसा लगता था वह चैत्य। ७४१

तूणॅलाञ् जुडरुङ् गाशु शुऱ्ऱॅला मुत्तञ् जॅम्बॊन्
पेणला मणियिन् पित्तिप् पिडरॅला मॊळिहळ् विम्मच्
चेणॅलाम् विरियुङ् गऱ्ऱैच् चेयॊळिच् चॅल्वऱ् केयुम्
पूणला मॅम्म नॊराऱ् पुहललाम् बॊदुमैत् तन्ऱे 742

तूण् ऍलाम्–खम्भे सब; चुटरुम् काचु–चमकीले रत्नमय; चुऱ्ऱु ऍलाम्–घेरे सब; मुत्तम् चॅम्पॊन्–मोती और लाल स्वर्ण के; पेणल् आम् पित्ति पिटर् ऍलाम्–दर्शनीय दीवारों के ऊपर सर्वत्र; मणि–रत्नमय; ऑळिकळिन्–छटाओं की; चेण् ऍलाम् विम्म–आकाश भर को भरते हुए; विरियुम् कऱ्ऱै–व्यापनेवाली लटें; चेय् ऑळि चॅल्वऱ्कु एयुम्–लाल किरणों के धनी सूर्य के लिए भी; पूणल् आम्–अपनाने योग्य हैं; ऍम्मनोराल्–हम जैसों से; पुकलल् आम्–वर्णन योग्य; पॊतुमैत्तु अन्ऱु–साधारण वस्तुएँ नहीं। ७४२

खम्भे चमकते रत्नों के; घेरे सब मोतियों और लाल स्वर्ण के; और मनोरम भित्तियों के ऊपरी भाग रत्नों के थे। इनके प्रकाश की व्योमव्यापी लटें ऐसी थीं कि लाल किरणों के धनी सूर्य भी उनकी चाह करे! फिर हम जैसों द्वारा उसका वर्णन कैसे किया जाय? वह वैसी कोई साधारण चीज़ें नहीं। ७४२

वॅळ्ळियङ् गिरियैप् पण्डु वॅन्दॊऴि लरक्कन् वेरो
डळ्ळिन्ना नॅन्नक् केट्टा नत्तॊऴिऱ् कऴिवु तोन्ऱप्
पुळ्ळिमा मेरु वॅन्नुम् पॊन्मलै यॅडुप्पान् पोल
वळ्ळुहिर्त् तडक्कै तन्नान् मण्णिन्ऱुम् वाङ्गि यण्णल् 743

अण्णल्–उत्तम हनुमान; वॅम् तॊऴिल् अरक्कन्–क्रूरकर्म राक्षस रावण ने; पण्टु–पहले; वॅळ्ळि अम् किरियै–चाँदी की गिरि कैलास को; वेरोटु अळ्ळिन्नान्–जड़ के साथ उठा लिया; ऍन्न केट्टान्–ऐसा सुनकर; अ तॊऴिऱ्कु–उस काम को; अऴिवु तोन्ऱ–नीचा दिखाने के लिए; पुळ्ळि–बिंदियों के समान विविध रंगों से रंगीन; मा मेरु–बड़े मेरु के; पॊन् मलै ऍटुपपान् पोल–स्वर्णगिरि को उठाता हो जैसे; वळ् उकिर् तट कै तन्नान्–तीक्ष्ण नखों के अपने विशाल हाथों से; मण् निन्ऱुम्–भूमि से; वाङ्कि–उस चैत्य को उठाकर। ७४३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हनुमान ने सुन रखा था कि पहले क्रूरकर्म रावण ने रजतगिरि कैलास को जड़ से उठाया था। मानो उस कार्य के गौरव को मिटाने के वास्ते हनुमान ने चित्तियों (विविध रंगों) सहित महामेरु पर्वत को उठाता जैसे अपने तेज़ नाखूनों वाले हाथ से उस चैत्य को उठा लिया। ७४३

विट्टऩ निलङ्गै तन्मेल् विण्णुऱ विरिन्द माडम्
पट्टऩ पॊडिह ळाऩ परन्दऩ पाङ्गु निऩ्ऱ
शुट्टऩ पॊऱिहळ् वीऴ्त् तुळङ्गिऩ ररक्कर् तामुम्
कॆट्टऩर् वीर रम्मा पिऴैप्परो केडु शूऴ्न्दार् 744

इलङ्कै तऩ् मेल्–लंका पर; विट्टऩऩ्–फेंका; विण् उऱ–आकाश में लगे; विरिन्त माटम्–विशाल बने रहे प्रासाद; पट्टऩ–टकराकर; पॊटिकळ् आऩ–चूर हुए; पाङ्कु परन्तऩ निऩ्ऱ–पास जो स्थित थे उन सबको; चुट्टऩ–उठी अग्नि से उन प्रासादों ने जला दिया; पॊऱिकळ् वीऴ–अंगारे गिरने से; अरक्कर् तामुम्–राक्षस भी; तुळङ्कितऩर्–भयभीत हुए; वीरर् कॆट्टऩर्–वीर मरे; केटु चूऴ्न्तार्–बुराई करनेवाले; पिऴैप्परो–बचेंगे क्या; अम्मा–मैया। ७४४

और उसको हनुमान ने लंका पर ज़ोर से फेंका। उसके टकराने से लंका के गगनचुम्बी प्रासाद चूर हुए। उससे आग उठी जिससे पास रहे पदार्थ जल उठे। अंगारे छितरे और राक्षस डरे। वीर मरे। पर-पीडक बचेंगे क्या ? मैया ! । ७४४

नीरिडु तुहिल रच्च नॆरुप्पिडु नॆञ्जर् नॆक्कुप्
पीरिडु मुरुवर् तॆऱ्ऱिप् पिणङ्गिडु ताळर् पेऴ्वाय्
ऊरिडु पूश लार वुळैत्तऩ रोडि युऱ्ऱार्
पारिडु पऴुवच् चोलै पालिक्कुम् बरुवत् तेवर् 745

पार् इटु–भूमि पर लाकर पालित; पऴुव चोलै–तरुसंकुल (अशोक-) वन; पालिक्कुम् परुव तेवर्–(उसको) पालनेवाले ऋतुओं के देवता; नीर् इटु तुकिलर्–मूत्र से भीगे हुए कपड़ों वाले; अच्च नॆरुप्पु इटु–भय की अग्नि-सहित; नॆञ्चर–मन वाले; नॆक्कु पीर् इटुम्–चोट खाकर उछलनेवाले रक्तमय; उरुवर्–शरीर वाले; तॆऱ्ऱि पिणङ्किटु–आपस में मिलकर लड़खड़ाते हुए; ताळर्–पैरों वाले; पेऴ्वाय्–विवरित अपने बड़े मुखों से; ऊर् इटु पूचल् आर–लंका नगर में बड़ा शोर मचाते हुए; उळैत्तऩर्–रोते-चिल्लाते हुए; ओटि उऱ्ऱार्–भागे और रावण के पास गये। ७४५

रावण ने व्योमलोक से तरु लाकर अशोक वन उगाया था। उसका पालन करते रहे ऋतुदेवता। उनकी अब दुर्गति हो गयी। मूत्र-भीगे वस्त्र, भय की अग्नि-लगे मन, रक्त-निस्सारक शरीर और लड़खड़ाते पैरों वाले होकर वे अपने बड़े मुखों को खोलकर लंका भर में व्याप जाय, ऐसी ज़ोर की ध्वनि निकालते हुए चिल्लाकर रावण के पास दौड़ पड़े। ७४५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरिपडु शीऱ्ऱत् तान्ऱु नरुहुशॅन् ऱडियिन् वीळ्न्दार्
करिपडु तिशैयि नीण्ड कावलाय् काव लाऱ्ऱोम्
किरिपडु कुववुत् तिण्डोट् कुरङ्गिडै किळित्तु वीश
अॅरिपडु पञ्जि नॉय्दि निऱ्ऱु कडिहा वॅन्ऱार् 746

अरि पट—सिंह का-सा; चीऱ्ऱत्तान् तन्—क्रोध करनेवाले (रावण) के; अरुकु चॅन्ऱु—पास जाकर; अटियिन् वीळ्न्तार्—पैरों पर गिरे; करि पटु—गजों से रक्षित; तिचैयिन् नीण्ट—दिगन्त तक फैले; कावलाय्—शासन वाले; कावल् आऱ्ऱोम्—रक्षण में असमर्थ हो गये; किरिपटु—गिरि को पछाड़नेवाले; कुवव् तिण् तोळ्—पुष्ट सबल कन्धों के; कुरङ्कु—एक वानर के; इटै किळित्तु वीच—मध्य में घुसकर नष्ट करने से; कटि का—रक्षण में रहा, वह अशोक वन; अॅरि पटु पञ्चिन्—आग में पड़ी रूई के समान; नॉय्तिन् इऱ्ऱु—शीघ्र मिट गया; अॅन्ऱार्—कहा। ७४६

सिंह-सदृश क्रोधी रावण के पास जाकर वे उसके पैरों पर गिरे। गज-रक्षित दिगंतों तक व्याप्त शासनक्षेत्र के स्वामी ! हम अब अशोक वन का रक्षण नहीं कर सके। गिरिनाशक पुष्ट कन्धों वाले एक वानर ने उसके मध्य घुसकर उसको मिटा दिया। वह सुरक्षित वन आग में पड़ी रूई के समान बहुत शीघ्र मटियामेट हो गया। ७४६

चॉल्लिड वॅळिय दन्ऱार् चोलैयैक् कालिऱ् कैयिल्
पुल्लॉडु तुहळु मिन्ऱिप् पॉडिपड नूऱिप् पॉन्नाल्
विल्लिडु वोमन् दन्नै वेरॉडुम् वाङ्गि वीशच्
चिल्लिड मॉळियत् तॅय्व विलङ्गैयुञ् जिदैन्द दॅन्ऱार् 747

चॉल्लिट—कहना; अॅळियतु अन्ऱु—सुलभ नहीं; चोलैयै—उस अशोक वन को; कालिल् कैयिल्—पैरों और हाथों से; पुल् ऑटु तुकळुम् इन्ऱि—घास, धूल से रहित करके; पॉटि पट नूऱि—चूर करते हुए मिटाकर; पॉन्नाल्—स्वर्ण से; विल् इटु—धनु के समान प्रकाश देनेवाले; ओमम् तन्नै—चैत्य को; वेरॉटु वाङ्कि वीच—नींव-सहित उखाड़कर फेंकने से; चिल् इटम् ऑळिय—बहुत थोड़े से स्थान को छोड़कर; तॅय्व इलङ्कैयुम्—दिव्य लंका नगरी भी; चितैन्ततु—मिट गयी; अॅन्ऱार्—कहा (ऋतुदेवताओं ने)। ७४७

ऋतुदेवताओं ने आगे कहा कि उस वानर के कृत्य हमसे कथ्य नहीं हैं। उसने अपने पैरों और हाथों से अशोक वन को मिटा दिया। उसमें न घास बची, न धूल ही। स्वर्णमय चमकदार चैत्य को भी उसने जड़ से उखाड़कर फेंक दिया। कुछ ही स्थानों को छोड़कर सारी दिव्य लंका नगरी तहस-नहस हो गयी। ७४७

7. किङ्गरर् वदैप् पडलम् (किङ्कर-वध पटल)

आडहत् तरुविन् शोलं पॉडिपडुत् तरक्कर् काक्कुम्
तेडरु मोमम् वाङ्गि यिलङ्गैयुञ् जिदैत्त दम्मा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कोडर मॊन्ऱे नन्ऱि दिराक्कदर् कॊऱ्ऱञ् जॊऱ्ऱल्
मूडरु मॊऴिया रॆन्न मन्ननु मुऱुवल् शॆय्दान् 748

कोटरम् ऒन्ऱे–बन्दर एक ही ने; आटक तरुविन् चोलै–स्वर्ण-तरुओं के वन को; पॊटि पटुत्तु–धूल बनाकर; अरक्कर् काक्कुम्–राक्षस-रक्षित; तेटु अरुम् ओमम् वाङ्कि–अपूर्व यज्ञमण्डप (चैत्य) उखाड़कर; इलङ्कैयुम् चितैत्ततु–लंका का भी नाश किया; इराक्कतर्–राक्षसों की; कॊऱ्ऱम्–वीरता; नन्ऱितु–भली है; चॊऱ्ऱल्–यह कथन; मूटरुम् मॊऴियार्–मूर्ख भी नहीं करते; ऎन्ऱु कूऱि–ऐसा कहकर; मन्ततुम्–राजा ने; मुऱुवल् चॆय्तान्–मन्दहास दिखाया। ७४८

रावण ने यह बात सुनी तो उसे आश्चर्य हुआ। उसने कहा कि क्या एकाकी वानर ने स्वर्णमय तरुओं के भरे उस वन को चूर कर दिया? राक्षस-रक्षित अपूर्व चैत्य को उखाड़ दिया? लंका को भी छिन्न-भिन्न कर दिया? हा! राक्षसों की वीरता भी भली रही! यह बात मूर्ख लोग भी नहीं कहेंगे। रावण यह कहकर मुस्कुराया। ७४८

तेवर्हळ् मुन्नुम् बिन्नु मदनुरुच् चुमक्कुन् दिण्मैप्
पूवल यत्तै यन्ऱो पुहळ्वदु पुलवर् पोऱ्ऱुम्
मूवरि नॊरुव नॆन्ऱे पुहलिनु मुडिवि लाद
एवम रलैक्कुम् शॆङ्गैक् कुरङ्गुहा णिन्नू मॆन्ऱार् 749

तेवर्कळ्–उन ऋतुदेवताओं ने; अतन् उरु–उसका रूप; मुन्नुम् पिन्नुम्–आगे-पीछे कभी; चुमककुम्–ढोते रहनेवाले; तिण्मै पूवलयत्तै अन्ऱो–सशक्त भूवलय को न; पुकळ्वतु–प्रशंसित करना है; पुलवर् पोऱ्ऱुम्–देवशंसित; मूवरिन्–त्रिदेवों में; ऒरुवन् ऎन्ऱे–एक ही है; पुकलिनुम्–कहने पर भी; मुटिवु इलात–उसकी शक्ति अनन्त है; चॆङ्कै कुरङ्कु–अरुणहस्त वानर; इन्नुम् एवु अमर्–आगे भी जो छिड़ेगा वह युद्ध भी; अलैक्कुम्–लाचार कर देगा; काण्–आप देख लें; ऎन्ऱार्–कहा। ७४९

ऋतुदेवताओं ने उत्तर में कहा कि उस धरती की न सराहना करनी चाहिए, जो सदा से इस वानर के शरीर (के भार) को वहन करती रहती है? उसे देवशंसित त्रिदेवों में एक कह सकते हैं तो भी वह उसकी अपार शक्ति का द्योतक नहीं हो सकता। वह लाल (रक्तरंजित) हाथ वाला वानर आगे भी, अगर आपकी आज्ञा से युद्ध होगा तो बड़ा अनर्थ मचा देगा। आप ही देखें। ७४९

मण्डलङ् गिऴिय वायिन् मऱिहडन् मोऴै मण्ड
ऎण्डिशै शुमन्द मावुन् देवरु मिरियल् पोहत्
तॊण्डैवा यरक्कि मार्हळ् शूल्वयि रुडैन्दु शोर
अण्डमुम् बिळन्दु विण्ड दामॆन वनुम नार्त्तान् 750

अनुमन्–हनुमान ने; मण्टलम् किऴिय–भूमण्डल को (और व्योममण्डल को)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चीरते हुए; मऱि कटल्–प्रत्यावर्तनशील तरंगों वाले समुद्र का जल; मोळै–भूमि के नीचे की नदी बनकर; वायिल् मण्ट–लंका-द्वार पर बहे ऐसा; ऍण् तिचै चुमन्त मावुम्–अष्ट दिग्गजों को; तेवरुम्–देवों को; इरियल् पोक–भगाते हुए; तॊण्टै वाय् अरक्किमार्कळ्–बिम्बाधरा राक्षसियों के; चूल् वयिऱु–गर्भ सहित पेट; उटैन्तु चोर–टूटकर गिर जाएँ, ऐसा; अण्टमुम् पिळन्तु–अण्ड दरार खाकर; विण्टतु आम् ऍन्ऱ–फूटा हो, ऐसा; आर्त्तान्–एक गर्जन किया। ७५०

ये यह कह ही रहे थे कि हनुमान ने गर्जन का ऐसा स्वर निकाला कि भू तथा व्योममण्डल दरार खाकर फूटे; प्रत्यावर्तनशील तरंगों का सागर भूमि के नीचे से नदी के रूप में बहकर लंका के द्वार के पास चला; दिग्गज और देवता लोग तितर-बितर हो भाग गये; और बिम्बाधरा राक्षसियों के गर्भ गिर गये। अण्ड ही फट गया हो ऐसा था वह शोर। ७५०

अरुवरै मुळैयिन् मुट्टु मशनियि ऩिडिप्पु माळि
वॆरुवरु मुळक्कु मीशन् विल्लिऱु मॊलियु मॆन्ऩक्
कुरुमणि महुड कोडि मुडित्तलै कुलुङ्गुम् वण्णम्
इरुबदु शॆवियि नूडु नुळैन्ददव् वॆळुन्द वोशै 751

अरुवरै–बड़े पर्वतों की; मुळैयिन् मुट्टुम्–गुहाओं पर जा लगनेवाले; अचनियिन् इटिप्पुम्–वज्र का निनाद; आळि–(और) सागर का; वॆरुवरु मुळक्कुम्–भयावना गर्जन; ईचन् विल् इऱुम्–परमेश्वर के धनु के टूटने का; ऒलियुम्–शोर; ऍन्ऩ–ऐसा; कुरुमणि–बड़े-बड़े रत्नों से अलंकृत; मकुट कोटि–किरीटपंक्ति से भूषित; मुटि तलै–केशयुक्त रावण के सिर; कुलुङ्कुम् वण्णम्–हिल जाएँ, ऐसा; ऎळुन्त–जो उठा; ओचै–वह शोर; इरुपतु चॆवियिन् ऊटु–बीसों कर्णों के द्वार से; नुळैन्ततु–घुस चला। ७५१

बड़े पर्वत की गुहा पर गिरनेवाले वज्र का नाद; प्रलयकालीन डरावना समुद्रगर्जन, परमेश्वर के धनु की टंकार का घोर नाद-जैसा उसका गर्जन मोटे रत्नों से युक्त किरीट-पंक्ति से अलंकृत रावण के सिरों को हिलाते हुए उसके बीसों कर्ण-विवरों में जा घुसा। ७५१

पुल्लिय मुऱुव ऱोन्ऱप् पॊऱामैयुञ् जिऱिदु पॊङ्ग
एल्लैयि लाऱ्ऱन् माक्क ळॆण्णिऱन् दारै येवि
वल्लैयि ऩहला वण्णम् वानैयुम् वळियै माऱ्ऱिक्
कॊल्ललिर् कुरङ्गै नॊय्दिऱ् पऱ्ऱुदिर् कॊणर्मि नॆन्ऱान् 752

पुल्लिय मुऱुवल्–अल्पहास; तोन्ऱ–प्रकट करके; पॊऱामैयुम्–ईर्ष्या; चिऱितु पॊङ्क–किञ्चित उठी; ऎल्लै इल् आऱ्ऱल्–अपार बलशाली; माक्कळ् ऎण् इऱन्तारै–दासों, असंख्यकों को; एवि–प्रेरित करके; वानैयुम्–आकाश को भी; वळियै माऱ्ऱि–मार्गहीन बनाकर; कुरङ्कै–उस बन्दर को; अकला वण्णम्–बचने न देकर; वल्लैयिल्–शीघ्र; कॊल्ललिर्–विना मारे; नॊय्तिल्–सुगम रीति से; पऱ्ऱुतिर्–पकड़ो और; कॊणर्मिन्–लाओ; ऎन्ऱान्–कहा (आज्ञा सुनायी)। ७५२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रावण के अधरों में मन्दहास खेल गया। मन में किंचित ईर्ष्या उठी। उसने अपार बली असंख्यक दासों को बुलाया। आज्ञा सुनायी कि जाओ। आकाश-मार्ग को भी रोको। उस वानर को बचने न दो। उसे मारो भी मत। शीघ्र पकड़कर लाओ। ७५२

शूलम्वाण् मुशलङ् गूर्वे ऱोमरन् दण्डु पिण्डि
पालमे मुदला वुळ्ळ पडैक्कलम् बरित्त कैयर्
आलमे यऩैय मॅय्य रहलिड मऴिवु शॅय्युम्
कालमे लॅऴुन्द मूरिक् कडलॅऩक् कडिदु शॅल्वार् 753

चूलम्–त्रिशूल; वाळ्–तलवार; मुचलम्–मूसल; कूर् वेल्–तीक्ष्ण भाले; तोमरम्–तोमर; तण्टु–दण्ड; पिण्टिपालम्–भिंडिपाल; मुतला उळ्ळ–आदि जो थे; पटैक्कलम्–हथियार; परित्त कैयर्–(उनको) हाथ में लिये हुए; आलमे अऩैय–हलाहल ही सम; मॅय्यर्–आकार वाले; अकल् इटम्–विशाल भूमि को; अऴिवु चॅय्युम्–नष्ट करनेवाले; कालम्–प्रलयकाल में; मेल् ऎऴुन्त–उठे हुए; मूरि कटल् ऎऩ–प्रबल समुद्र के समान; कटितु चॅल्वार्–सवेग जाने लगे। ७५३

वे वीर त्रिशूल, तलवारें, मूसल, तीक्ष्ण भाले, तोमर, दण्डायुध, भिंडिपाल आदि हथियार हाथ में लिये हुए चले। हलाहल ही सम काले आकार के वे विशाल लोक के नाशक युगान्तकालीन मेघों के समान शीघ्र-शीघ्र कूच कर जाने लगे। ७५३

नाऩिल मदऩि ऩुण्डु पोरॅऩ नविलि ऩच्चॊल्
तेऩिऩुङ् गऴिप्पुच् चॅय्युञ् जिन्दैयर् तॅरित्तु मॅऩ्ऩिऩ्
काऩिऩुम् बॅरिय रोशै कडलिऩुम् बॅरियर् कीर्त्ति
वाऩिऩुम् बॅरियर् मेऩि मलैयिऩुम् बॅरियर् मादो 754

नाऩिलम् अतऩिल्–(चतुर्विधा) भूमि पर; पोर् उण्टु–युद्ध चलेगा; ऎऩ नविलिऩ्–ऐसा जब कहा जाता है तब; अ चॊल्–वह वचन; तेऩिऩुम् कऴिप्पु चॅय्युम्–शहद से भी मधुर लगे; चिन्तैयर्–ऐसे मन वाले; तॅरित्तुम् ऎऩ्ऩिऩ्–समझाना चाहें तो; काऩिऩुम् पॅरियर्–जंगल से भी अधिक (काले रंग वाले) हैं; ओचै–नाद करने में; कटलिऩुम् पॅरियर्–समुद्र से भी बड़े हैं; कीर्त्ति–कीर्ति में; वाऩिऩुम् पॅरियर्–आकाश से भी अधिक बड़े हैं; मेऩि–शरीर से; मलैयिऩुम्–पर्वत से भी; पॅरियर्–अधिक बड़े हैं। ७५४

वे कैसे वीर थे? कहीं इस चतुर्विधा भूमि पर युद्ध होनेवाला है —यह समाचार उन्हें शहद से भी अधिक मधुर लगता और उनके मन को मत्त कर देता। उनका स्वभाव आदि का वर्णन करना हो, तो सुनिए; वे घने जंगल से भी रंग में अधिक बड़े (काले) थे। गर्जन में समुद्र से बड़े थे। उनका यश आकाश से भी बड़ा था। उनका आकार पर्वत से भी बड़ा था। ७५४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तिरुहुरुञ् जिनत्तुत् तेवर् तानव रॅन्नुन् दॅव्वर्
इरुहुरुम् बॅऱिन्दु निन्ऱ विशैयिनाल् वशैयॅन् ऱॅण्णिप्
पॊरुहुरुम् बॅन्ऱु वॅन्ऱि पुणर्वदु पूवुण् वाळ्क्कै
ऒरुहुरुङ् गुरङ्गॅन् ऱुळ्ळि नॅडिदुना णुळक्कु नॅञ्जर् 755

तिरुकु उऱुम्–ऐंठे हुए; चिनत्तु–क्रोधी; तेवर् तानवर् ऍन्नुम्–देव और दानव-कथित; तॅव्वर्–शत्रु; इरु कुऱुम्पु–छोटे-छोटे अधीन राजाओं को; ऍऱिन्तु निन्ऱ–हराकर प्राप्त; इचैयिनाल्–यश से; पॊरु कुऱुम्पु ऍन्ऱु–युद्धयोग्य शत्रु मानकर; वॅन्ऱि पुणर्वतु–लड़ाई में विजय पाना; वचै–निंद्य; ऍन्ऱु ऍण्णि–ऐसा समझकर; पू उण् वाळ्क्कै–फूल आदि पर जीवित रहनेवाला; ऒरु कुऱुम् कुरङ्कु–एक छोटे आकार का शाखामृग; ऍन्ऱु उळ्ळि–ऐसा समझकर; नॅटिनु–गम्भीर रूप से; नाण् उळक्कुम्–लज्जा से व्याकुल; नॅञ्चर्–मन वाले। ७५५

ऐंठे हुए क्रोध में उन्होंने देवों और दानवों पर जीत पायी थी। यद्यपि वह छोटे मातहत राजाओं पर प्राप्त जीत के समान ही थी, तो भी उनमें इतना घमण्ड हो गया था कि वे सोचने लगे कि आखिर इस सुमनाहारी और छोटे आकार वाले शाखामृग के साथ युद्ध करना निंद्य है। इसलिए उनके मन को गम्भीर लज्जा से उत्पन्न दुःख संकट दे रहा था। ७५५

कट्टिय वाळ रिट्ट कवशत्तर् कळलर् तिक्कैत्
तट्टिय तोळर् मेहन् दडविय कैयर् वानै
ऍट्टिय मुडियर् ताळा लिडऱिय पॊरुप्प रीट्टिक्
कॊट्टिय बेरि यॅन्न मळैयॅनक् कुमुऱुञ् जॊल्लार् 756

कट्टिय वाळर्–कमर में बद्ध तलवार वाले; इट्ट कवचत्तर्–कवच से लैस; कळलर्–पायलधारी; तिक्कै तट्टिय–दिगन्त को ढकेलनेवाले; तोळर्–कन्धों वाले; मेकम् तटविय–मेघ को सहलाए; कैयर्–ऐसे बढ़े हुए हाथों वाले; वानै ऍट्टि:–आकाश-स्पर्शी; मुटियर्–सिर वाले; ताळाल्–पैरों से; इटऱिय–ठुकराये गये; पॊरुप्पर्–पर्वत वाले (पर्वतों को भी ठुकरा दे, ऐसे पैर वाले); ईट्टि कॊट्टिय–एक साथ बजी; पेरि ऍन्न–भेरियों के समान; मळै ऍन–मेघों के समान; कुमुऱुम् चॊल्लार्–घहरते शब्द वाले। ७५६

उनकी कमरों में तलवारें बँधी थीं। वे कवच और पायलधारी थे। उनके कन्धे दिगन्तों से टकरा रहे थे। उनके हाथ मेघों को सहला रहे थे। सिर आकाश को ढकेलते थे। पर्वतों को अपने पैरों से ढकेलनेवाले थे। अनेक भेरियाँ एक साथ बज उठी हों या अनेक मेघ मिलकर गरजते हों, ऐसे नर्दनयुक्त थे उनके शब्द। ७५६

वानव रॅऱिन्द दॅय्वप् पडैयिडुम् वडुक्कण् मऱ्ऱैत्
तानवर् तुरन्द वेदित् तळुम्बॊडु तयङ्गु तोळर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यानैयुम् बिडियुम् वारि यिडुम्बिल वाय रीन्ऱ
कूनल्वॆण् पिऱैयिऱ् ऱोन्ऱु मॆयिऱ्ऱिनर् कॊदिक्कुङ् गण्णार् 757

वानवर् ॲरिन्त–देवप्रेषित; तॆय्व पटै इटुम्–दिव्यास्त्रों द्वारा बने; वटुक्कळ्–दाग़; मऱ्ऱै–अन्य; तानवर् तुरन्त–दानव-प्रेषित; वेति तऴुम्पॊटु–हथियारों के दाग़ों के साथ; तयङ्कु तोळर्–शोभायमान कन्धों वाले; यानैयुम् पिटियुम्–गज और गजनियों को; वारि इटुम्–उठाकर जिनके अन्दर डाला जाय, ऐसे; पिल वायर्–बिल-सदृश मुख वाले; ईन्ऱ–उत्पन्न; कूनल् वॆण्पिऱैयिल्–वक्र अर्धचन्द्र के समान; तोन्ऱुम् ॲयिऱ्ऱिनर्–दिखते दाँतों के हैं; कॊतिक्कुम् कण्णार्–खौलती आँखों के हैं। ७५७

उनके कन्धे देवप्रेषित दिव्य अस्त्रों द्वारा लगे व्रणों के दाग़ों और दानवों के हथियारों द्वारा प्रेषित अस्त्रों के बने व्रणों के दाग़ों के साथ शोभ रहे थे। उनके मुख बिल के समान इतने बड़े थे कि गज और गजनियों को एक साथ उठाकर उनमें डाला जा सकता था। उनके मुखों में वक्र कलाचन्द्र के समान दाँत ज्वलन्त दिखते थे। उनकी आँखें कोप से खौलती थीं। ७५७

चक्कर मुलक्कै तण्डु तारैवाळ् परिहऱ् जङ्गु
मुऱ्कर मुशुण्डि पिण्डि पालम्वेल् शूल मुट्कोल्
पॊऱ्करक् कुलिशम् पाशम् बुहर्मऴु वॆऴुहोल् कुन्दम्
विऱ्करुङ् गणॆविट् टेऱु कऴुक्कडै यॆऴुक्कण् मिन्न 758

चक्करम्–चक्रायुध; उलक्कै–मूसल; तण्टु–दण्डायुध; तारै वाळ्–धारदार तलवारें; परिकम्–परिघ; चङ्कु–शंख; मुऱ्करम्–मुद्गर; मुचुण्टि–मुशुण्डि (भुशंडी?) नाम के हथियार; पिण्टिपालम्–भिंडिपाल; वेल्–बर्छियाँ; चूलम्–त्रिशूल; मुट्कोल्–काँटेदार छड़ियाँ; पॊन् कर–सोने की मूठ के; कुलिचम्–कुलिश; पाचम्–पाश; पुकर् मऴु–उज्ज्वल परशु; ॲऴु–लोहे के गदे; कोल्–शर; कुन्तम्–कुन्त; विल्–धनु; करुम् कणै–दीर्घ शर; विट्टेऱु–फेंके जानेवाले हथियार; कऴुक्कटै–नोकदार; ॲऴुक्कऴ्–दण्ड; मिन्न–इनको चमकने देते हुए। ७५८

वे जब गये तब निम्नलिखित हथियार चमचमा रहे थे। चक्रायुध, मूसल, दण्ड, धारदार तलवारें, परिघ, शंखवाद्य, मुद्गर, 'मुशुण्डि' (भुशंडी?) भिंडिपाल, भाले, त्रिशूल, स्वर्णमूठ वाले कुलिश, पाश, उज्ज्वल परशु, लोहे के दण्ड, शर, कुन्त, धनु, दीर्घ शर, फेंके जानेवाले 'विट्टेऱु' हथियार-विशेष और नोकदार लौहदण्ड। ७५८

पॊन्निन्ऱु कऩलुन् दॆय्वप् पूणिनर् पॊरुप्पुत् तोळर्
मिन्निन्ऱु पडैयुङ् गण्णुम् वॆयिल्विरिक् किन्ऱ मॆय्यर्
ॲन्नॆन्ऱुरार्क् कॆन्नॆन् नॆन्ऱा रॆय्दिय दऱिन्दि लादार्
मुन्निन्ऱार् मुदुहु तीयप् पिन्निन्ऱार् मुडुहु हिन्ऱार् 759

पॊन् निन्ऱु–स्वर्ण के साथ; कऩलुम्–प्रकाशमय; तॆय्व पूणिनर्–दिव्य आभरण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाले; पॊरुप्पु तोळर्–पर्वत-सम कन्धों वाले; मिन् निन्ऱ पटैयुम्–बिजली-सम हथियार; कण्णुम्–और आँखें; वॆयिल् विरिक्किन्ऱ–जिसमें रहकर प्रकाश छिटका रही थीं, वैसे; मॆय्यर्–शरीर वाले; ऎन्–क्यों (रुके हो); ऎन्ऱार्क्कु–पूछनेवालों से; ऎय्तियतु अऱिन्तिलातार्–जो हुआ वह न जाननेवाले; पिन् निन्ऱार्–जो पीछे खड़े थे; मुन् निन्ऱार् मुतुकु तीय–सामने खड़े रहनेवालों की पीठ को (गरम साँस से) जलाते हुए; ऎन् ऎन् ऎन्ऱार्–क्या, क्या पूछते हुए; मुटुकुकिन्ऱार्–सवेग आगे बढ़ते हैं। ७५९

वे स्वर्ण की चमक लिये हुए दिव्य आभरणों से भूषित थे। पर्वत-सम कन्धों वाले, विद्युत् के समान हथियारों और आँखों की चमक से विशिष्ट शरीर वाले। जब वे जाते रहे तो भीड़ की वजह से सामने वाला रुक गया तो पीछे वाले "क्यों" कहकर ढकेलते। तब सामने वाले झुँझलाकर अपने सामने वाले की पीठ पर झुलसानेवाली गरम साँस छोड़ते हुए "क्या, क्या हुआ ?" पूछते और ढकेलते हुए बढ़ते जाते। ७५९

वॆय्दुरु पडैयिन् मिन्नर् विल्लिनर् वीशु कालर्
मैयुरु विशुम्बिर् ऱोन्ऱु मेनियर् मडिक्कुम् वायर्
कैपरन् दुलहु पॊङ्गिक् कडैयुह मुडियुङ् गालैप्
पॆय्यवॆन् ऱॆळुन्द मारिक् कुवमैशाल् पॆरुमै पॆऱ्ऱार् 760

वॆय्तुरु–पीडक; पटैयिन्–हथियारों की; मिन्नर्–चमक वाले; विल्लिनर्–धनुर्धर; वीचु कालर्–अपनी गति से पवन को चालित करनेवाले; मै उरु विचुम्पिल्–मेघ-मण्डित आकाश के समान (काले); तोन्ऱुम् मेनियर्–दिखनेवाले शरीर वाले; मटिक्कुम् वायर्–चबाए हुए ओंठ वाले; कै परन्तु–पार्श्वों में फैलकर; उलकु पॊङ्कि–भूतल पर उमगकर; कटैयुकम्–युगान्त; मुटियुम् काले–जब पूरा होगा तब; पॆय्य ऎन्ऱु ऎळुन्त–बरसने के लिए जो उठेंगे; मारिक्कु–उन प्रलय-मेघों की वर्षा की; उवमै चाल्–समानता करने का; पॆरुमै पॆऱ्ऱार्–गौरव प्राप्त। ७६०

बहुत ही हिंस्र हथियारों की चमक उनके साथ थी। धनुर्धर वे अपनी गति से पवन को चालित करते हुए गये। मेघाच्छन्न आकाश के समान रंग वाले वे अपना ओंठ चबाते हुए गये। तब, समुद्र फैलकर भूतल पर जब बहता है, उस युगान्तकाल में बरसने के लिए उठनेवाली प्रलयवर्षा की समानता करने का गौरव उन्हें प्राप्त हो रहा था। ७६०

पनियुरु शॆयलैच् चिन्दि योममुम् बऱित्त दम्मा
तनियॊरु कुरङ्गु पोला नन्ऱुनन् दरुक्कॆन् गिन्ऱार्
इनियॊरु पळिमऱ् ऱुण्डो विदनिनॆन् ऱिरैत्तुप् पॊङ्गि
मुनिवुरु मनत्तिऱ् ऱावि मुन्दुऱ मुडुहु हिन्ऱार् 761

पनि उरु–शीतल (मनोरम); चॆयलै चिन्ति–अशोक वन को नष्ट करके; ओममुम् परित्ततु–होम-मण्डप को भी उखाड़ा; तनि ऒरु कुरङ्कु पोल् आम्–एकाकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एक वानर है तो; नन्ऱु–भला है; नम् तरुक्कु–हमारा बल; ऍन्किन्ऱार्–कहते हुए; इतत्तिन्–इससे; इऩि–अब; ऒरु पऴि–एक निन्दा; मऱु उण्टो–अन्य हो सकती है क्या; ऍन्ऱु इरैत्तु–कहते हुए शोर मचाकर; पॊङ्कि–खौलकर; मुत्तिवु उऱु–रुष्ट; मनत्तिल्–मन के साथ; मुन्तु उऱ ताबि–एक-दूसरे को पीछे छोड़ सामने उछलकर; मुट्टुकिन्ऱार्–दौड़ते हैं। ७६१

वे यों कहते हुए जा रहे थे कि एकाकी एक वानर ने शीतल अशोक वन को मिटा दिया और यज्ञमंडप को भी उखाड़कर फेंक दिया तो हमारा बल भी बहुत (प्रशंसनीय) भला रहा ! इससे बढ़कर क्या अपयश होगा ? इस विचार से उनके मन में अपार कोप भर आया। वे शोर मचाते हुए एक-एक आगे जानेवाले दूसरे को पीछे ढकेलते हुए उछलकर बढ़ रहे थे। ७६१

ऍऱ्ऱुऱु मुरशुम् विन्ऩा णेऱविट् टॆडुत्त वार्प्पुम्
चुऱ्ऱुऱु कऴलुञ् जङ्गुन् दॆऴिदॆऴित् तुरप्पुञ् जॊल्लुम्
उऱ्ऱुडन् ऱॊन्ऱा योङ्गि यॊलित्तॆऴुन् दूऴिप् पेर्विल्
नऱ्ऱिरैक् कडल्ह ळोडु मऴैहळै नाव डक्क 762

ऍऱ्ऱु उऱु–पिटनेवाली; मुरचुम्–भेरियाँ और; विल्–धनु पर; नाण् एऱ विट्टु–प्रत्यंचा चढ़ाकर; ऍट्टुत्त आर्प्पुम्–उठाया गया स्वन; चुऱ्ऱुऱु–पैरों पर बँधी; कऴलुम्–पायलों का नाद; चङ्कुम्–शंखनाद और; तॆऴि तॆऴित्तु–डाँट-डपट के साथ; उरप्पुम् चॊल्लुम्–कहे हुए कठोर शब्द; उटन् उऱ्ऱु–साथ मिलकर; ऒन्ऱाय् ओङ्कि–एक बन उठे; ऒलित्तु ऍऴुन्तु–स्वरित हुए; ऊऴि पेर्विल्–युगान्त में; नल् तिरै कटल्कळोटु–बड़ी तरंगों वाले समुद्र के शोर के साथ; मऴैकळै–(उस प्रलयकालीन) मेघों की; ना अटक्क–जीभ (घोर ध्वनि) को दबाते। ७६२

उनकी भीड़ में से ये नाद उठे— पिटनेवाली भेरियों का नाद, धनु पर चढ़ी प्रत्यंचा की टंकार का नाद, पैरों की पायलों का क्वणन, शंखनाद और डाँट-डपट का शोर। इन सबों ने उठकर युगान्त के समुद्र के गर्जन और मेघों की जीभ को (ध्वनि को) चुप करा दिया। ७६२

तॆरुविड मिल्लॆन् ऱॆण्णि वानिडैच् चॆल्हिन् ऱारुम्
ऒरुवरि ऩॊरुवर् मुन्दि मुऱैमऱुत् तुरैक्किन् ऱारुम्
पुरुवमुञ् जिलैयुङ् गोट्टिप् पुहैयुयिर्त् तुयिर्क्किन् ऱारुम्
विरिविल दिलङ्गै यॆन्ऱु वऴिपॆऱा विऴिक्किन् ऱारुम् 763

तॆरु इटम् इल्–सड़कों पर स्थान नहीं; ऍन्ऱु ऍण्णि–यह सोचकर; वान् इटै–नभ में; चॆल्किन्ऱारुम्–चलनेवाले और; मुऱै मऱुत्तु–कूच का क्रम तोड़कर; ऒरुवरिन् ऒरुवर् मुन्ति–एक-दूसरे के आगे जाकर; उरैक्किन्ऱारुम्–बोलनेवाले; पुरुवमुम् चिलैयुम् कोट्टि–भौंहों और धनु को झुकाकर; पुकै उयिर्त्तु–धुआँधार श्वास; उयिर्क्किन्ऱारुम्–छोड़नेवाले; विरिवु इलतु–विस्तृत नहीं; इलङ्कै–लंका; ऍन्ऱु–इस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कारण से; वऴि पॆऱा–जाने का मार्ग न पाकर; विऴिक्किऩ्ऱारुम्–ताकने वाले। ७६३

उस भीड़ में, भूमि पर मार्ग न पाकर अन्तरिक्ष में उड़ते जानेवाले थे; कूच का क्रम भंगकर आगे जानेवाले थे; आपस में स्थान के लिए झगड़ने वाले थे; धनु और भौंहों को झुकाते हुए धुआँधार श्वास निकालनेवाले थे। लंका पर्याप्त विस्तृत न रहा देख मार्ग न पाने की वजह से आँखें फाड़कर देखते खड़े के खड़े रहनेवाले भी थे। ७६३

वाळिऩै विदिर्क्किऩ् ऱारुम् वायिऩै मडिक्किऩ् ऱारुम्
तोळुऱक् कॊट्टिक् कल्लैत् तुहळ्पडत् तुहैक्किऩ् ऱारुम्
ताळ्पॆयर्त् तिडम्बॆ ऱादु तरुक्किऩर् नॆरुक्कु वारुम्
कोळ्वळै यॆयिऱु तिऩ्ऱु तीयॆऩक् कॊदिक्किऩ् ऱारुम् 764

वाळिऩै वितिर्क्किऩ्ऱारुम्–तलवारों को हिलानेवाले; वायिऩै मटिक्किऩ्ऱारुम्–ओंठ काटनेवाले; तोळ्–कन्धों को; उऱ–खूब; कॊट्टि–ठोंककर; कल्लै–पत्थरों को; तुकळ् पट–धूल में परिवर्तित करते हुए; तुकैक्किऩ्ऱारुम्–रौंदनेवाले; ताळ् पॆयर्त्तु–डग बदलने; इटम् पॆऱातु–स्थान न पाकर; तरुक्कितर्–घमण्ड करके; नॆरुक्कुवारुम्–पिल पड़नेवाले; कोळ् वळै ऍयिऱु–कठोर वक्र दाँत; तिऩ्ऱु–पीसते हुए; ती ऍऩ–आग के समान; कॊतिक्किऩ्ऱारुम्–खौलनेवाले-बने। ७६४

तलवार घुमानेवाले, ओंठ चबानेवाले, कन्धे ठोंकनेवाले, पत्थर को चूर-चूरकर रौंदनेवाले, पैर उठाकर रखने का स्थान न पाने से खीझकर दूसरों को ढकेलनेवाले, अपने सुदृढ़ वक्र दाँतों को पीसनेवाले और आग-से खौलने वाले (होकर वे जा रहे थे।)। ७६४

अऩैवरु मलैयॆऩ निऩ्ऱा रळवऱु पडैहळ् पयिऩ्ऱार्
अऩैवरु मरियि ऩुयर्ऩ्दा रहलिड नॆळिय नडऩ्दार्
अऩैवरुम् वरऩि ऩमैऩ्दा रशऩिमि ऩणिह् ळणिऩ्दार्
अऩैवरु ममरै वॆऩ्ऱा रशुररै युयिरै ययिऩ्ऱार् 765

अऩैवरुम्–सब; मलै ऍऩ–पर्वत के समान; निऩ्ऱार्–खड़े रहे; अळवु अऱु–अगणित; पटैकळ् पयिऩ्ऱार्–अस्त्राभ्यस्त; अऩैवरुम्–सभी; अरियिऩ् उयर्ऩ्तार्–सिंह-सदृश (बल-विक्रम में) उन्नत; अकल् इटम्–विशाल भूमि को; नॆळिय–लचकाते हुए; नटऩ्तार्–चले; अऩैवरुम्–सभी; वरऩिल् अमैऩ्तार्–अनेक वरों को प्राप्त कर चुके थे; अचऩि मिऩ्–वज्र के साथ कौंधनेवाली बिजली के समान; अणिकळ् अणिऩ्तार्–आभरण पहने हुए; अऩैवरुम् अमररै वॆऩ्ऱार्–सब देवजयी हैं; अचुररै उयिरै–असुरों के प्राणों को; अयिऩ्ऱार्–खा (हर चुके) थे। ७६५

राक्षस पर्वतों के समान खड़े रहे। वे सब असंख्य-अस्त्राभ्यस्त थे। सब सिंह-सदृश बल में बढ़े हुए थे। जब वे चलते तब भूमि लचक जाती थी। सबको अनेक वर मिले थे। उनके आभरण अशनि के साथ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कौंधनेवाली बिजली की-सी चमक और नाद से युक्त थे। वे सब देव-विजयी थे। असुरों की भी जान के गाहक थे। ७६५

कुऱुहिन कवशरु मिऩ्बोऱ् कुरैहऴ लुरहरुम् वऩ्बोऱ्
मुऱुहिन पॊऴुदि ऩुडैन्दार् मुदुहिड मुऱुवल् पयिऩ्ऱार्
इऱुहिऩ निदिहिऴ वऩ्बे रिशैहॆड वळहै यॆऱिन्दार्
तॆऱुहुऩ रिऩ्मैयिऩ् वऩ्ऱो डिऩवुऱ वुलहु तिरिन्दार् 766

कुऱुकिऩ कवचरुम्–कसे लगे कवच वाले निवातकवच जाति के दैत्य; मिऩ्पोल्–बिजली-सम और; कुरैकऴल्–क्वणनशील पायलधारी; उरकरुम्–नाग; वऩ् पोर्–कठोर युद्ध; मुऱुकिऩ पॊऴुतिऩ्–जब उच्च स्थिति में आया; उटैन्तार्–हारकर; मुतुकु इट–पीठ दिखाते हुए भागे; मुऱुवल् पयिऩ्ऱार–(तब ये राक्षस) हँसे थे; इऱुकिऩ निति किऴवऩ्–अक्षय-धन कुबेर का; पेर् इचै कॆट–बड़ा यश नष्ट करते हुए; अळकै ऍऱिन्तार्–अलकापुरी का ये नाश कर चके; तॆऱुकुऩर् इऩ्मैयिऩ्–भिड़नेवाले नहीं मिले, इसलिए; वऩ् तोळ्–कठोर कन्धों में; तिऩवु उऱ–खुजली (युद्ध की चाह) हुई; उलकु तिरिन्तार्–लोक भर में विजय-यात्रा कर आये थे। ७६६

जब उनके विरुद्ध निवातकवच जाति के असुरों और बिजली के समान चमकनेवाली और क्वणनशील पायलधारी नागों ने युद्ध ठाना था, तब वे ही हारकर पीठ दिखाते हुए भागे और ये राक्षस हँसी उड़ाते खड़े रहे। इन्होंने अक्षय निधि के देवता कुबेर की बड़ी कीर्ति को मिटाते हुए अलकापुरी को नष्ट कर दिया था। इनसे भिड़ने को कोई नहीं आ रहे थे, इसलिए वे अपने कन्धों पर की खुजली लेकर (युद्ध की भूख के कारण) संसार भर में विजययात्रा कर चुके थे। (वाल्मीकि के अनुसार निवातकवचों के और उरगों के साथ रावण का दिग्विजय के अवसर पर युद्ध छिड़ा था। ये राक्षस वीर भी तब उसके साथ थे।)। ७६६

वरैहळै यिडऱुमि ऩॆऩ्ऱाऩ् मऱिहडल् परुहुमि ऩॆऩ्ऱाल्
इरवियै विऴविडु मॆऩ्ऱा लॆऴमऴै पिऴियुमि ऩॆऩ्ऱाल्
अरविऩ दरशिऩै यॊऩ्ऱो तऱैयिऩॊ डरैयुमि ऩॆऩ्ऱाल्
तऱैयिऩै यॆडुमॆडु मॆऩ्ऱा लॊरुवर:(ह्) दमैदल् शमैन्दार् 767

वरैकळै–पर्वतों को; इटऱुमिऩ्–ठुकराओ; ऍऩ्ऱाल्–कहें तो; मऱिकटल्–प्रत्यावर्तनशील तरंगों के सागर को; परुकुमिऩ् ऍऩ्ऱाल्–पी जाओ, कहा जाय तो; इरवियै–रवि को; विऴ विटुमिऩ्–गिराओ; ऍऩ्ऱाल्–कहा जाय तो; ऍऴु मऴै–उत्थित मेघों को; पिऴियुमिऩ्–निचोड़ो; ऍऩ्ऱाल्–कहा जाय तो; अरविऩतु अरचिऩै–सर्पराज; ऒऩ्ऱो–एक क्या; तऱैयिऩोटु अरैयुमिऩ्–सबको भूमि पर दे मारो; ऍऩ्ऱाल्–कहा जाय तो; तऱैयिऩै ऍटुम् ऍटुम्–भूमि को उठा लो; ऍऩ्ऱाल्–कहा जाय; ऒरुवर्–एक-एक; अ.ऩु–वह; अमैतल्–करने; चमैन्तार्–योग्य बने रहे। ७६७

इन लोगों से (रावण द्वारा) कहा जाय कि पर्वतों को ठुकरा दो,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तरंगायमान सागर को पी लो, रवि को ढहा दो, उठते मेघों को निचोड़ दो या एक क्या अनेक सर्पराजों को भूमि पर ले पटक दो या भूमि को उठाओ, तो वे एक-एक वे सब कार्य करने का सामर्थ्य रखते थे। ७६७

तूळियि तिमिर्पड लम्बो यिमैयवर् विळिदुऱ वॅम्बोर्
आळियि तिऩमॅऩ वऩ्ऱा ळडुपुलि निरैयॅऩ विण्डोय्
मीळियि ऩणियॅऩ वऩ्ऱो ललैहडल् विडमॅऩ वॅऱ्जार्
वाळियिऩ् विशैहॊडु तिण्गार् वरैवरु वऩवॅऩ वन्दार् 768

निमिर् तूळियिऩ् पटलम्–उठी धूल के पटल ने; पोय्–ऊपर जाकर; इमैयवर् विळि–देवों की आँखों को; तुऱ–मीच दिया; वॅम् पोर्–कठोर युद्ध करनेवाले; आळियिऩ् इऩम् ऍऩ–सिंह-समूहों के समान; वल् ताळ्–सुदृढ़ पैरों वाले; अटु पुलि–संहारक व्याघ्रों की; निरै ऍऩ–पंक्ति के समान; विण् तोय्–गगनोन्नत; मीळियिऩ् अणि ऍऩ–भूतों के वृन्द के समान; ओल् अलै कटल्–शब्दायमान तरंगों के सागर के; अऩ्ऱु विटम् ऍऩ–उस दिन उत्पन्न विष के समान; ऍऱ्चार्–अथक; वाळियिऩ् विचै कॊटु–शर-गति अपना लेकर; तिण् कार् वरै–प्रबल काले पर्वत; वरुवऩ ऍऩ–चलते आते हों, जैसे; वन्तार्–(हनुमान पर चढ़) आये। ७६८

उनके कूच से धूलपटल उठा और उससे देवों की आँखें मुँद गयीं। वे घातक युद्ध-रत सिंहों के झुण्डों के समान, सबल पैरों वाले संहारक व्याघ्रवृन्द के समान और गगनोन्नत पिशाचों के समूहों के समान, पूर्वकाल में गर्जनशील सागर से उत्पन्न हलाहल के समान अथक रूप से अस्त्रगति-सी गति में बढ़ते जा रहे थे। वे काले पर्वतों के समान हनुमान को घेर आये। ७६८

पॊऱिदर विळियुयि रॊऩ्ऱो पुहैयुह वयिलॊळि मिऩ्बोल्
शॆऱिदर वुरुमदिर् हिऩ्ऱार् तिशैदॊऱुम् विशैहॊडु शॆऩ्ऱार्
ऍऱिदरु कडैयुह वऩ्गा लिडऱिड वुरुमि तिऩम्बोय्
मऱिदर मळैयहल् विण्बोल् वडिवळि पॊळिलै वळैन्दार् 769

उयिर् ऒऩ्ऱो–केवल श्वास एक से नहीं; विळि–आँखें भी; पॊऱि तर–अंगारे निकालते रहे; पुकै उक–धुआँ उगलते; अयिल् ऒळि–शक्तियों का तेज; मिऩ् पोल्–बिजली के समान; चॆऱि तर–घने रूप से चमका; उरुम् अतिर्किऩ्ऱार्–वज्रनाद करते; तिचै तॊऱु–दिशाओं से; विचै कॊटु–क्षिप्रगति से; चॆऩ्ऱार्–घेर आये; कटै युकम्–युगान्त में; ऍऱि तरु–बहनेवाले; वऩ् काल् इटऱिट–प्रचण्ड पवन से उत्पाटित; उरुम् इऩम् पोय् मऱि तर–वज्रसमूह स्थानान्तर में गिरे हों जैसे; मळै अकल्–मेघरहित; विण् पोल्–आकाश के समान; वटिवु अळि–(जिसमें थे और जो अपना) मनोरम रूप खो चुका था; पॊळिलै–अशोक वन को; वळैन्तार्–घेर गये। ७६९

उनके श्वास से ही नहीं, आँखों से भी अंगारे निकल रहे थे। धुआँ भी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उठता था। उनकी शक्तियों से बिजली का-सा तेज छूट रहा था। युगांत में आँधी सबको उखाड़ फेंकती है। वज्र इधर-उधर गिरकर तहस-नहस कर देते हैं। बाद आकाश निर्मल और साफ़ हो जाता है। वैसा रहा वह अशोक वन निपट रम्यतारहित दशा में। वे उस अशोक वन को घेर गये। ७६९

वयिरॊलि वळैयॊलि वऩ्गार् मऴैयॊलि मुरशॊलि मण्बाल्
उयिरुलै वुऱनिमि रुम्बो रुऱुमॊऴि शॆवियि ऩुणर्न्दाऩ्
वॆयिल्विरि कदिरव ऩुम्बोय् वॆरुविड वॆऴियिडै विण्डोय्
कयिलयिऩ् मलैयॆऩ निऩ्ऱा ऩऩैयवर् वरुतॊऴिल् कण्डाऩ् 770

वॆयिल् विरि–धूप-प्रसारक; कतिरवऩुम्–सूर्य भी; पोय् वॆरुविट–डर से हट गया; विण् तोय्–गगनचुंबी; कयिलैयिऩ् मलै ऍऩ–कैलास पर्वत के समान; वॆऴि इटै–(पादप-नष्ट) खुले मैदान-मध्य; निऩ्ऱाऩ्–जो खड़ा रहा, उस (हनुमान) ने; वयिर् ऒलि–श्रृंगियों का नाद; वऴै ऒलि–शंखनाद और; वऩ् कार् मऴै ऒलि–घने वर्षाऋतु के मेघों की-सी; मुरचु ऒलि–भेरियों की ध्वनि; मण् पाल्–पृथ्वी पर के; उयिर् उलैवु उऱ–जीवों को भयभीत करते हुए; निमिरुम्–उठनेवाला; पोर् उऱुम् ऒलि–आगामी युद्ध का शोर; चॆवियिऩ् उणर्न्ताऩ्–उसके कानों में पड़ा, ऐसा अनुभव किया; अऩैयवर्–उनका; वरुम् तॊऴिल्–आने का कार्य भी; कण्टाऩ्–देखा। ७७०

हनुमान गगनचुम्बी कैलास पर्वत के समान खड़ा था। उसको देखकर सूर्य भी डरकर हट गया! मैदान-मध्य रहते हुए उसने सुना कि श्रृंग बज रहे हैं, शंख नाद कर रहे हैं, और वर्षाकालीन सबल मेघों के समान भेरियाँ ध्वनि उठा रही हैं। संसार के जीवों को भयभीत करते हुए आनेवाले युद्ध का शोर उसके कानों में पड़ा। उसने उन राक्षसों को आते देखा भी। ७७०

इदविय लिदुवॆऩ मुन्दे यियैवुऱ विऩिदु तॆरिन्दाऩ्
पदविय लऱिवु पयन्दा लदिऩल पयऩुळ दुण्डो
शिदवियल् कडिपॊऴि लॊऩ्ऱे शिदऱिय शॆयऱरु तिण्बोर्
उदवियै यिऩिदि ऩुवन्दा ऩॆवरिऩु मदिह मुयर्न्दाऩ् 771

ऍवरिऩुम् अतिकम् उयर्न्ताऩ्–किसी से भी कहीं अधिक श्रेष्ठ हनुमान ने; मुन्ते–पहले ही; इतु इत इयल् ऍऩ–यह ठीक कार्य है, ऐसा; इयैवु उऱ–युक्त रीति से; इऩितु तॆरिन्ताऩ्–सन्तोष के साथ समझ लिया; पत इयल् अऱिवु–पक्व ज्ञान; पयन्ताल्–हो जायगा तो; अतिऩ् न(ल्)ल पयऩ्–उससे भी बड़ा लाभ; उळतु उण्टो–होना होगा क्या; कटि पॊऴिल्–सुरक्षित अशोक वन के; चितैवु इयल् ऒऩ्ऱे–नाश का काम एक ही; चितऱिय चॆयल् तरु–राक्षस तितर-बितर जायँ, ऐसा कार्यकारी; तिण् पोर् उतवियै–घमासान युद्ध का उपकार (बना देख); इऩितिऩ् उवन्ताऩ्–सन्तुष्ट हो मुदित हुआ। ७७१

सर्वोत्तम हनुमान ने जान लिया कि यह अशोकवन-विध्वंस का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काम अच्छा ही हुआ है। हाँ, बुद्धिमत्ता से बढ़कर हितकारी चीज़ क्या है ? उसे सन्तोष हुआ कि उसी एक कार्य ने उसे युद्ध ला देने का उपकार किया है, जिसमें राक्षस तितर-बितर हो मिटेंगे। ७७१

इवनिव निवन्नॅन् निन्ऱा रॅरियॅन् मुदल्व रॅदिर्न्दार्
पवननिन् मुडुहि नडन्दार् पहलिर वुऱमिडै हिन्ऱार्
पुवनियु मलैयुम् विशुम्बुम् पॊरुवरु नहरु मुडन्बोर्त्
तुवनियि लदिर विडम्बोऱ् चुडर्विडु पडैह डुरन्दार् 772

इवन् इवन् इवन्–यही, यह, यह; अॅन्–कहते हुए; निन्ऱार्–कुछ खड़े रहे; मुतल्वर्–मुखिए; अॅरि अॅन्–आग के समान; अॅतिर्न्तार्–बढ़ आये; पवनतिन्–वायु से अधिक; मुटुकि–तेज़ी से; नटन्तार्–आए; पकल् इरवु उऱ–दिन को रात में परिवर्तित करते हुए; मिटैकिन्ऱार्–सटकर भीड़ लगाते हैं; पुवनियुम् मलैयुम् विचुम्पुम्–भूमि, पर्वत और आकाश; पॊरुवु अरु नकरुम्–अनुपम वह नगर; उटन्–एक साथ; पोर् तुवनियिल् अतिर–युद्ध के शोर से थर्रा उठे; विटम् पोल्–विष के समान; चुटर् विटु–प्रकाश छोड़नेवाले; पटैकळ्–हथियार; तुरन्तार्–चलाए। ७७२

आगत राक्षसों में कुछ यह है, यह, यह कहते हुए खड़े रहे। कुछ मुखिए आग के समान लड़ने बढ़ आये। कुछ पवनगति में आगे बढ़े। काले राक्षस थे, इसलिए वे दिन को रात में बदलते हुए एक साथ जुटे। उन्होंने विष के समान और प्रकाशमय हथियार छोड़े जिससे उत्पन्न युद्ध-ध्वनि में भूमि, पर्वत, आकाश और अनुपम लंका नगर काँप उठे। ७७२

मळैहळु मऱिहड लुम्बोय् मदमऱ मुरश मऱैन्दार्
मुळैहळिन् वाय्ह डिऱन्दार् मुदुपुहै कदुव मुनिन्दार्
पिळैयिल पडवर विन्ऱोळ् पिडरिऱ वडियिडु हिन्ऱार्
कळैतॊडर् वनमॅरि युण्डा लॅनवॅरि पडैञर् कलन्दार् 773

मळैकळुम्–मेघों और; मऱि कटलुम्–मुड़-मुड़ जानेवाली तरंगों के सागर को; पोय् मतम् अऱ–गर्वहीन करते हुए; मुरचम् अऱैन्तार्–भेरियाँ बजायीं; मुळैकळिन्–गुफाओं के समान; वाय्कळ् तिऱन्तार्–अपने मुख खोले; मुतु पुकै कतुव–घना धुआँ घेर जाए ऐसा; मुनिन्तार्–कोप दिखाया; पिळै इल–दोषहीन; पट अरविन्–फनों वाले सर्प (शेषनाग) के; तोळ् पिटर् इऱ–कन्धों और कंठों को तोड़ते हुए; अटि इटुकिन्ऱार्–डग भरनेवाले; कळै तॊटर् वनम्–बाँस से पूर्ण वन; अॅरि उण्टाल् अॅ(न्)न–आग में जलता हो जैसे; अॅऱि पटैञर्–हथियार चलानेवाले; कलन्तार्–मिले। ७७३

उन्होंने भेरियाँ बजायीं जिनकी ठनक ने मेघों और प्रत्यावर्तनशील लहरों वाले सागर के गर्व को चूर किया। पर्वत-कन्दराओं के समान खुले मुखों वाले, धुआँ-उगलते क्रोध वाले, निर्दोष फणी आदिशेष के कन्धों व कण्ठों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को तोड़ते हुए डग भरनेवाले और बाँस-वन जलता जैसे हथियार चलानेवाले —ऐसे राक्षस आ जुटे । ७७३

अऱवनु मदनै यऱिन्दा नरुहिनि नमैय वडैन्दान्
इऱविनि नुदवु नॆडुन्दा रुयर्मर मॊरुहै यियैन्दान्
उऱवरु तुणैयॆन वॊन्ऱे युदविय वदनै युहन्दान्
निऱैहडल् कडैयु नॆडुन्दाण् मलैयॆन नडुव णिमिर्न्दान् 774

अऱवनुम् अतनै अऱिन्तान्–धर्मरूप हनुमान ने भी वह जाना; इऱविनिन् उतवुम्–बेकार होने (टूटने) पर भी सहायता (प्रहार) करनेवाले; नॆटुम् तार्–सीधे और; उयर् मरम्–ऊँचे एक पेड़ के; अरुकिनिन्–पास; अमैय अटैन्तान्–लगा गया; उऱ वरु–सन्दर्भ आये तब आनेवाले; तुणै ऍन–सहायक के समान; ऒन्ऱे उतविय अतनै–अकेले बचे रहे सहायक उसे; उकन्तान्–चाह से; ऒरु कै इयैन्तान्–एक हाथ में लेकर; निऱै कटल् कटैयुम्–भरे समुद्र को मथनेवाले; नॆटुम् ताळ्–बड़े निचले भाग के साथ; मलै ऍन–पर्वत के समान; नटुवण् निमिर्न्तान्–(अशोक वन के मध्य) तना खड़ा रहा । ७७४

धर्मरूप हनुमान ने यह जाना । वह एक ऊँचे पेड़ के पास गया । वह मिटकर भी सहायता करनेवाला निकला । एकाकी आपत्काल-सहायक उसे उसने चाव के साथ एक हाथ में पकड़ लिया । फिर वह उस मैदान में सागरमथनकारी विशाल तलप्रदेश वाले पर्वत के समान तन कर खड़ा हुआ । ७७४

परुवरै पुरळ्वन वॊन्ऱो पडर्मळै यरुवि नॆडुङ्गाल्
शॊरिवन पलवॆन मण्डोय् तुऱैपॊरु कुरुदि शॊरिन्दार्
ऒरुवरै यॊरुवर् तॊडर्न्दा रुयर्तलै युडैय वुरुण्डार्
अरुवरै नॆरिय विळुम्बे रशनियु मऱैय वऱैन्दान् 775

अरुवरै–बड़े-बड़े पर्वतों को; नॆऱिय विळुम्–चूर करते हुए गिरनेवाले; पेर् अचनियुम्–बड़े वज्रों (के घोष) को भी; मऱैय–अपने में दबा लेते हुए; अऱैन्तान्–(हनुमान ने उस तरु से) मारा; परुवरै बड़े पर्वत; पुरळ्वन ऒन्ऱो–लुढ़के-से लगे, क्या इतना ही; पटर् मळै अरुवि–उन पर फैले रहे मेघों के जल की बनी नदियाँ रूपी; नॆटुम् काल्–लम्बे नाले; पल चॊरिवन ऍन–अनेक बहते जैसे; मण् तोय्–भूमि पर रहे; तुऱै पॊरु–घाटों को ढकेलते हुए भरनेवाले; कुरुति चॊरिन्तार्–रक्त-प्रवाह बहाते हुए; ऒरुवरै ऒरुवर्–एक-दूसरे का; तॊटर्न्तार्–पीछा किया; उयर् तलै–बड़े सिर; उटैय–टूटे; उरुण्टार्–लुढ़के । ७७५

हनुमान ने उस तरु से उनको मारा, जिससे ऐसी ध्वनि निकली जिसके सामने पर्वतचूर्णकारी तुमुल वज्र भी मौन हो रहे ! तब पर्वत लुढ़के-जैसे राक्षस लोट गये । वहीं तक बात नहीं रुकी । पर्वतों पर जैसे मेघ-वर्षा से उत्पन्न नदियाँ बहती हैं, वैसे ही उनके शरीर पर से रक्त-नदियाँ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बह निकलीं जिससे घाट भर गये। वे एक-दूसरे के अनुकरण में अपना उन्नत सिर तुड़वा लेकर मरे। ७७५

परैपुरै विऴिहळ् परिन्दार् पडियिडै नॅडिदु पडिन्दार्
पिरैपुरै यॅयिऱु मिऴन्दार् पिडरॊडु तलैहळ् पिळन्दार्
कुरैयुयिर् शिदरि नॅरिन्दार् कुडरॊडु कुरुदि शॊरिन्दार्
मुरैमुरै पडैह डॅरिन्दार् मुडैयुडऩ् मऱिय मुऱिन्दार् 776

मुरै मुरै–अनेक बार; पटैकळ् तॅरिन्तार्–हथियार चुनकर फेंके; परै पुरै–डोल के (गोल चमड़े के) समान; विऴिकळ् परिन्तार्–आँखें-उखड़े हो गये; पटि इटै–भूमि पर; नॅटितु पटिन्तार्–लम्बे तान गये; पिरै पुरै–कलाचन्द्र-समान; ऍयिऱुम् इऴन्तार्–दाँत खो गये; पिटर् ओटु–गलाओं के साथ; तलैकळ् पिळन्तार्–फटे-सिर हो गये; कुरै उयिर्–विकल-प्राण होकर; चितरि नॅरिन्तार्–अस्त-व्यस्त गिरकर दब गये; कुटर् ओटु–आँतड़ों के साथ; कुरुति–रक्त; चॊरिन्तार्–बाहर निकाला; मुटै उटल्–दुर्गन्धपूर्ण शरीर; मऱिय–मिटाते हुए; मुऱिन्तार्–टूटे और मरे, कुछ। ७७६

उन राक्षसों ने अनेक बार हनुमान पर चुन-चुनकर हथियार चलाए। पर क्या लाभ ? उनकी आँखें, जो ढोल के चमड़े के समान बड़ी और वर्तुल थीं, फूट गयीं। वे भूमि पर लम्बा तान गये। चन्द्रकला के समान दाँत खोये। उनके गले चिरे और सिर फूटे। कुछ के थोड़े से प्राण बचे थे। वे भी एक-दूसरे पर गिरकर दबकर मर गये। कुछ की अँतड़ियाँ और रक्त बाहर निकल गया। कुछ अपने दुर्गन्धपूर्ण शरीर को तोड़ते हुए गिरे और मरे। ७७६

पुडैयुडै विऴिहऩ लिऩ्गाय् पॊऱियिडै मयिर्हळ् पुहैन्दार्
तॊडैयॊडु मुदुहु तुणिन्दार् शुऴिपडु कुरुदि शॊरिन्दार्
पडैयिडै यॊडिय नॅडुन्दोळ् पऱिदर वयिऱु तिऱन्दार्
इडैयिडै मलैयिऩ् विऴुन्दा रिहल्पॊर मुडुहि यॅऴुन्दार् 777

इकल् पॊर–युद्ध लड़ने के लिए; मुटुकि ऍऴुन्तार्–शीघ्र उठ आये; पुटै उटै–दोनों ओर रहनेवाली; विऴि कऩलिऩ्–आँखों से निकली आग के; काय् पॊऱि इटै–जलते अंगारों के मध्य; मयिर्कळ्–रोम; पुकैन्तार्–धुआँ-बने हुए; तॊटै ऒटु–जंघाओं के साथ; मुतुकु तुणिन्तार्–पीठ-कटे हुए; चुऴि पटु–आवर्तयुक्त; कुरुति चॊरिन्तार्–रक्त-नदियाँ बहायीं; पटै–हथियारों के; इटै ऒटिय–बीच में टूटने से; नॅटुम् तोळ्–लम्बी भुजाओं के; पऱि तर–छिन जाते; वयिऱु तिऱन्तार्–पेट फट गये; इटै इटै–इधर-उधर; मलैयिऩ् विऴुन्तार्–पर्वत के समान भूमि पर गिरे। ७७७

युद्ध में लड़ने के लिए राक्षस वेग के साथ आये। उनके नेत्रों से निकली आग के अंगारे में उनके केश जल उठे। उनकी जाँघें और पीठें कट गयीं। उन्होंने रक्त का इतना बड़ा प्रवाह उगला कि उसमें भँवरें

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उठीं। उनके हथियार बीच में टूट गये, कन्धे शरीर से अलग हुए; पेट खुले और भागते-भागते पर्वतों के समान जगह-जगह पर गिरे पड़े रहे। ७७७

पुदैपड विरुळिन् मिडैन्दार् पॊडियिडै नॆडिदु पुरण्डार्
विदैपडु मुयिरर् विऴुन्दार् विऴियॊडु विळियु मिऴन्दार्
कदैहॊडु मुदिर मलैन्दार् कणैपॊरु शिलैयर् कलन्दार्
उदैपड वुरनु नॆरिन्दा रुयिरॊडु कुरुदि युमिऴन्दार् 778

कतै कॊटु–गदा लेकर; मुतिर मलैन्तार्–घोर युद्ध करनेवाले; कणै पॊरु चिलैयर्–शर चलाकर युद्ध करनेवाले धनुर्धर; कलन्तार्–जो वहाँ आ मिले; उतै पट–हनुमान की लातें खाकर; उरनुम् नॆरिन्तार्–वक्ष के दबकर फटने से; उयिरॊटु–प्राणों के साथ; कुरुति–रक्त भी; उमिऴ्न्तार्–उगले; इरुळिन् मिटैन्तार्–अन्धकार के समान जो जुटे थे; पॊटि इटै–धूल के मध्य; पुतै पट–गड़कर; नॆटितु पुरण्टार्–बहुत दूर लोटे; वितै पटुम्–बोये बीज के समान गिरे; उयिरर्–जीव; विऴुन्तार्–मरे गिरे; विऴि ऒटु–आँखों के साथ; विळियुम्–वाक्-शक्ति भी; इऴन्तार्–खोये बने। ७७८

राक्षस गदा लेकर लड़ने आये। कुछ लोग शर चलाने धनु के साथ आये। उन सबने लातें खायीं, जिससे उनके वक्ष हत हुए और रक्त-वमन के साथ प्राण भी निकल गये। अन्धकार के समान आ जुटे वे धूल में धँसकर दूर तक लोटे। कुछ तो बोये बीजों के समान यत्र-तत्र गिरकर विगत-प्राण हुए। उनकी आँखें भी गयीं और बोलने की शक्ति भी। ७७८

अयलयन् मलैहॊ डऱैन्दा रडुपहै यळवै यडैन्दार्
वियलिड मऱैय विरिन्दार् मिशैयुल हडैय मिडैन्दार्
पुयऱॊडु मलयिन् विऴुन्दार् पुडैपुडै तिशैतॊऱु शॆन्ऱार्
उयर्वुऱ विशैयि नॆदिर्न्दा रुडलॊडु मुलहु तुऱन्दार् 779

अयल् अयल्–पास इधर-उधर के; मलै कॊटु–पर्वतों को लाकर; अऱैन्तार्–फेंके (उन राक्षसों ने); अटु पकै–घातक शत्रुता के; अळवै अटैन्तार्–उच्चतम माप पर गये; वियल् इटम्–विशाल स्थल; मऱैय–आच्छादित करते हुए; विरिन्तार्–फैले खड़े रहे; मिचै उलकु–ऊपर के लोक; अटैय मिटैन्तार्–भर में जा भर गये; पुयल् तॊटु–मेघस्पर्शी; मलैयिऩ्–पर्वतों के समान; विऴुन्तार्–(हनुमान द्वारा हत होकर) गिरे; पुटै पुटै–पार्श्व-पार्श्व में; तिचै तॊऱु–सभी दिशाओं में; चॆऩ्ऱार्–गये; उयर्वु उऱ–नामवरी के लिए; विचैयिऩ् ऎतिर्न्तार्–वेग के साथ जो भिड़े; उटल् ऒटुम्–(उन्होंने) शरीर के साथ; उलकु तुऱन्तार्–इहलोक भी छोड़ दिया। ७७९

राक्षसों ने पास के स्थानों से पर्वत उठाकर फेंके। वे शत्रुता की पराकाष्ठा तक पहुँच गये थे। विशाल भूमि पर फैले खड़े हुए। वे आकाश-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लोक को भरते हुए जा पहुँचे। मेघाच्छादित पर्वतों के समान वे हनुमान के प्रहारों से आहत होकर गिर गये। सब ओर सभी दिशाओं में भाग चले। कुछ लोग कीर्ति-लिप्सा लेकर हनुमान से भिड़े, तो बेचारे उनको शरीर के साथ इहलोक को भी छोड़ना पड़ा। ७७९

पऱ्ऱित् ताळोडु तोळ्पऱित् तॅऱिन्दऩन् पारिन्
इऱ्ऱ वॅञ्जिऱै वॅऱ्पिऩ मामॅऩक् किडन्दार्
कॊऱ्ऱ वालिडैक् कॊडुन्दॊळि लरक्करै यडङ्गच्
चुऱ्ऱि वीशलिऱ पम्बर मामॅऩच् चुळऩ्ऱार् 780

पऱ्ऱि–(हनुमान ने) उनको पकड़कर; ताळ् ओटु तोळ् पऱित्तु–पैरों के साथ हाथों को अलग छीन लेकर; ऍऱिन्तऩन्–फेंक दिया; वॅम् चिऱै इऱ्ऱ–कठोर पंख-कटे; वॅऱ्पु इऩम् आम् ऍऩ–पर्वतकुल के समान; पारिऩ्–भूमि पर; किटन्तार्–पड़े रहे; कॊटुम् तॊळिल् अरक्करै–नृशंसकारी राक्षसों को; कॊऱ्ऱ वाल् इटै–अपनी सबल पूँछ से; अटङ्क–दबा लेकर; चुऱ्ऱि वीचलिल्–घुमाकर फेंका (हनुमान ने) तो; पम्परम् आम् ऍऩ–लट्टू के समान; चुळऩ्ऱार्–घूमे। ७८०

हनुमान ने उनको पकड़ा और पैरों तथा कन्धों को नोच लिया और दूर फेंक दिया। वे पंखहीन बड़े पर्वतों के समान भूमि पर पड़े रहे। हनुमान ने कुछ नृशंसकारी राक्षसों को अपनी पूँछ से लपेटकर घुमाया और झटका दिया और वे लट्टू के समान घूमे। ७८०

वाळ्ह ळिऱ्ऱऩ विऱ्ऱऩ वरिशिलै वयिरत्
तोळ्ह ळिऱ्ऱऩ विऱ्ऱऩ शुडऱ्मळुच् चूलम्
नाळ्ह ळिऱ्ऱऩ विऱ्ऱऩ नहैयॅयिऱ् ऱीट्टम्
ताळ्ह ळिऱ्ऱऩ विऱ्ऱऩ पडैयुडैत् तडक्कै 781

वाळ्कळ् इऱ्ऱऩ–तलवारें खण्डित हुईं; वरि चिलै इऱ्ऱऩ–सबन्ध धनु टूटे; वयिर तोळ्कळ् इऱ्ऱऩ–वज्र-सम कन्धे कटे; चुटर् मळु–तप्त लोहे के समान; चूलम् इऱ्ऱऩ–(तेजोमय) त्रिशूल टूटे; नाळ्कळ् इऱ्ऱु अऩ–नक्षत्र टूट गिरे जैसे; नकै ऍयिऱ्ऱु ईट्टम्–उज्ज्वल दाँतों के समूह; इऱ्ऱऩ–चू गये; ताळ्कळ् इऱ्ऱऩ–पैर कटे; पटै उटै–हथियारवाही; तटक्कै–विशाल हाथ; इऱ्ऱऩ–कटकर गिरे। ७८१

हनुमान के प्रहारों से राक्षसों की तलवारें टूटीं; सबन्ध धनु टूटे; वज्र-सम कन्धे टूटे; तप्त लोहे के समान उज्ज्वल त्रिशूल टूटे; और नक्षत्र टूटकर गिरे जैसे वक्र दन्तों के समूह टूटे। पैर टूटे और हथियारवाही विशाल हाथ भी टूटे। ७८१

तॅऱित्त वऩ्ऱलै तॅऱित्तऩ शॅऱिशुडर्क् कवशम्
तॅऱित्त पैङ्गळल् तॅऱित्तऩ शिलम्बॊडु पॊलन्दार्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॆऱित्त पन्मणि तॆऱित्तन पॆरुम्बॊऱित् तिऱङ्गळ्
तॆऱित्त कुण्डलन् दॆऱित्तन कण्मणि शिदऱि 782

वन् तलै–सबल सिर; तॆऱित्त–छितर गये; चुटर् चॆऱि–प्रकाशमय; कवचम् तॆऱित्तन–कवच टूट गये; पैम् कऴल्–चोखे स्वर्ण की बनी पायलें; तॆऱित्त–टूटीं; चिलम्पॊटु–नूपुरों के साथ; पॊलम् तार्–स्वर्णहार; तॆऱित्तन–कटकर गिरे; पल् मणि–अनेक रत्न; तॆऱित्त–बिखर गये; पॆरुम् पॊऱि तिऱङ्कळ्–बड़े-बड़े वीरपट्ट आदि तमगे; तॆऱित्तन–अलग-अलग हो गये; कुण्टलम् तॆऱित्त–कुण्डल कटे; कण् मणि चितऱि तॆऱित्तन–आँखों की पुतलियाँ छितरीं, बिखरीं। ७८२

उनके भारी सिर फूटे; तेजोमय कवच फूटे; चोखे स्वर्ण की बनी पायलें फूटीं; नूपुर फूटे और हार फूटे। मणियाँ फूटीं और गौरव के चिह्न वीरपट्ट और तमगे फूटे। कुण्डल फूटे और आँखें फूटीं। ७८२

उक्क पऱ्कुवै युक्कन तुवक्कॆलुम् बुदिर्वुऱ्
ऱुक्क मुऱ्कर मुक्कन मुशुण्डिह ळुडैयुऱ्
ऱुक्क शक्कर मुक्कन वुडऱिऱन् दुयिर्हळ्
उक्क कप्पण मुक्कन वुयर्मणि महुडम् 783

पल् कुवै उक्क–दाँतों के समूह गिरे; तुवक्कु–खाल और; ॲलुम्पु–हड्डियाँ; उक्कन–चूर-चूर हो गिरीं; मुऱ्करम् उतिर्वु उऱ्ऱु उक्क–मुद्गर खण्ड-खण्ड होकर बिखरे; मुशुण्टिकळ् उटैवु उऱ्ऱु उक्कन–'भुशंण्डी' हथियार बिखरे; चक्करम् उक्क–चक्रायुध के टुकड़े बने और बिखरे; उटल् तिऱन्तु–शरीर चिरे और; उयिर्कळ् उक्कन–प्राण उड़े; कप्पणम्–'कप्पण' नाम के हथियार; उक्क–चूर हो बिखरे; उयर्मणि–श्रेष्ठ रत्नों के बने; मकुटम् उक्कन–मुकुट टूटे, गिरे। ७८३

दाँतों की पंक्तियाँ बिखरीं; चमड़े और हड्डियाँ बिखरीं; मुद्गर खण्ड-खण्ड होकर बिखरे। भुशण्डि नाम के हथियार बिखरे। चक्रायुध बिखरे। शरीर खुले और प्राण बिखरे। कप्पण नामक हथियार (जिनको अरिकण्ठ भी कहा जाता है) बिखरे। श्रेष्ठ रत्नमुकुट बिखरे। (७८१वें पद्य में "इऱ्ऱन," ७८२वें पद्य में "तॆऱित्तन" और ७८३वें पद्य में "उक्कन" शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'इऱुतल्'— टूटकर बिखरना है; 'तॆऱित्तल'— खण्ड-खण्ड होकर या फूटकर बिखरना है और 'उकुतल्'— दरार खाकर चूर-चूर हो बिखरना है। भेद बारीक है।)। ७८३

ताळ्ह ळाऱ्पलर् तडक्कैह ळाऱ्पलर् ताक्कुम्
तोळ्ह ळाऱ्पलर् शुडर्विऴि याऱ्पलर् तॊडरुम्
कोळ्ह ळाऱ्पलर् कुत्तुह ळाऱ्पलर् तत्तम्
वाळ्ह ळाऱ्पलर् मरङ्गळि नाऱ्पलर् मडिन्दार् 784

ताळ्कळाल्–(हनुमान के) पैरों (के प्रहार) से; पलर्–अनेक; तट कैकळाल्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विशाल हाथों से; पलर्–अनेक; ताक्कुम्–टकरानेवाले; तोळ्कळाल्–कन्धों से; पलर्–अनेक; चुटर् विळियाल्–आँखों की आग से; पलर्–अनेक; तोटरुम् कोळ्कळाल्–पकड़कर दबाने से अनेक; कुत्तुकळाल् पलर्–घूँसों से अनेक; तत्तम् वाळ्कळाल्–अपनी-अपनी तलवारों से; पलर्–अनेक; मरङ्कळित्ताल् पलर्–पेड़ों से अनेक (राक्षस); मटिन्तार्–हत हुए। ७८४

हनुमान के पैरों के प्रहार से अनेक राक्षस मरे। विशाल हाथों से अनेक, कन्धों से अनेक, ज्वलन्त दृष्टि की आग से अनेक, उसके पकड़ने से अनेक और घूँसों से अनेक मरे। अपनी-अपनी तलवार की वार से भी अनेक मरे। उसने पेड़ों से पीटकर अनेकों को निपात दिया। ७८४

ईर्क्कप् पट्टत्तर् शिलर्शिल रिडियुण्डु पट्टार्
पेर्क्कप् पट्टत्तर् शिलर्शिलर् पिडियुण्डु पट्टार्
आर्क्कप् पट्टत्तर् शिलर्शिल रडियुण्डु पट्टार्
पार्क्कप् पट्टत्तर् शिलर्शिलर् पयमुण्टु पट्टार् 785

चिलर्–कुछ; ईर्क्क–खींचने से; पट्टत्तर्–मरे; चिलर्–कुछ; इटि उण्टु–धक्के खाकर; पट्टार्–मरे; चिलर्–कुछ; पेर्क्क–फेंके जाकर; पट्टत्तर्–मरे; चिलर्–कुछ; पिटि उण्टु–मुट्ठी में पिसकर; पट्टार्–मरे; चिलर्–कुछ; आर्क्क–बँध जाकर; पट्टत्तर्–मरे; चिलर्–कुछ; अटि उण्टु–पिटकर; पट्टार्–मरे; चिलर्–कुछ; पार्क्क–हनुमान की दृष्टि पड़ने से ही; पट्टत्तर्–मरे; चिलर् पयम् उण्टु–कुछ भय खाकर; पट्टार्–मरे। ७८५

कुछ लोगों को हनुमान ने पकड़कर खींचा और वे मर गये। धक्का खाकर कुछ लोग, फेंके जाने से कुछ लोग, केवल गह लेने से अनेक और कुछ लोग बँध जाने से मरे। पिटकर कुछ मरे और कुछ राक्षसों पर हनुमान ने दृष्टि डाली और वे मर गये। कुछ भय खाकर प्राण त्याग गये। ७८५

ओडिक् कॊन्ऱत्तन् शिलवरै युडलुड ऱोरुम्
कूडिक् कॊन्ऱत्तन् शिलवरैक् कॊडिनॆडु मरत्ताल्
शाडिक् कॊन्ऱत्तन् शिलवरैप् पिणन्दॊरुन् दडवित्
तेडिक् कॊन्ऱत्तन् शिलवरैक् करङ्गॆत्तत् तिरिवान् 786

करङ्कु ॲत्त–चक्र के समान; तिरिवान्–घूमनेवाले (हनुमान) ने; चिलवरै–कुछ राक्षसों को; ओटि कॊन्ऱत्तन्–दौड़कर पकड़ा और निपाता; चिलवरै–कुछ राक्षसों को; उटल् उटल् तोऱुम्–शरीर से शरीर; कूटि–भिड़ाकर; कॊन्ऱत्तन्–मारा; चिलवरै–कुछ राक्षसों को; कॊटि नॆटु मरत्ताल्–लम्बे ध्वज-स्तम्भ से; चाटि–पीटकर; कॊन्ऱत्तन्–मारा; चिलवरै–कुछ लोगों को; पिणम् तॊऱुम्–लाशों के बीच; तटवि तेटि–ढूँढ़ पाकर; कॊन्ऱत्तन्–मारा। ७८६

वातचक्र के समान हनुमान घूमता रहा। उसने दौड़कर कुछ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राक्षसों को निपाता। कुछ राक्षसों को एक-दूसरे के शरीर से भिड़ाकर मारा। कुछ राक्षसों को लम्बे ध्वजस्तम्भ से पीटकर मारा। लाशों के मध्य ढूँढ़ पाकर कुछ राक्षसों को मारा। ७८६

मुट्टि ऩार्पड मुट्टिऩान् मुऱैमुऱै मुडुहिक्
किट्टि ऩार्पडक् किट्टिऩान् किरियॅऩ नॅरुङ्गिक्
कट्टि ऩार्पडक् कट्टिऩान् कैहळान् मॅय्यिल्
तट्टि ऩार्पडत् तट्टिऩान् मलैयॅऩत् तहुवान् 787

मलै ॲऩ तकुवान्–पर्वत-सम मान्य हनुमान; मुट्टिऩार्–अपने से भिड़नेवालों को; पट–निपातते हुए; मुट्टिऩान्–उनसे भिड़ा; मुऱै मुऱै–पंक्तियों में; मुडुकि–शीघ्र आकर; किट्टिऩार्–जो पास पहुँचे; पट–उनको मारने; किट्टिऩान्–उनके पास पहुँचा; किरि ॲऩ–पर्वत के समान; नॅरुङ्कि–पास जाकर; कट्टिऩार्–जिन्होंने उसे बाँधा; पट–उन्हें मारते हुए उसने; कट्टिऩान्–पाशबद्ध कर दिया; कैकळाल्–अपने हाथों से; मॅय्यिल् तट्टिऩार्–जिन्होंने उसके शरीर पर थप्पड़ मारा; पट–उन्हें हत करते हुए; तटटिऩान्–उसने भी थप्पड़ मारा। ७८७

पर्वत-समान हनुमान ने भिड़नेवालों से भिड़कर उन्हें प्राणहीन किया। क्रम से जो उसके पास दौड़े आये उन्हें उनके पास स्वयं दौड़ जाकर मारा। पर्वत के समान आकर जिन्होंने उसे पाश में लेना चाहा उन्हें उसने बाँधकर निपाता। कुछ लोगों ने उस पर हाथ लगाए तो उन्हें हाथ से पीटकर उसने हत कर दिया। ७८७

उऱक्कि नुङ्गॊल्लु मुणरिनुङ् गॊल्लुमाल् विशुम्बिल्
पऱक्कि नुङ्गॊल्लुम् बडरिनुङ् गॊल्लुमिऩ् बडक्कुम्
निऱक्क रुङ्गळ् लरक्करह् णॅऱिदॊऱुम् बॊऱिहळ्
पिऱक्क निऩ्ऱॅऱि पडैहळैक् कैहळाऱ् पिशयुम् 788

उऱक्किनुम्–(राक्षस) शिथिल रहे, तब भी; कॊल्लुम्–उन्हें मारता; उणरिनुम् कॊल्लुम्–होश में रहते तब भी मारता; विचुम्पिल्–आकाश में; पऱक्किनुम्–उड़ते तब भी; कॊल्लुम्–मारता; पटरिनुम् कॊल्लुम्–भूमि पर चलनेवालों को भी मारता; मिऩ् पटैक्कुम्–बिजली उत्पन्न करनेवाले; करुम् निऱ–काले मेघों के-से रंग वाले; कळल् अरक्करकळ्–पायलधारी राक्षस; नॅऱि तॊऱुम्–मार्गों में; पॊऱिकळ् पिऱक्क–अंगारे छोड़ते हुए; निऩ्ऱु–खड़े होकर; ॲऱि पटैकळै–जो फेंकते थे, उन हथियारों को; कैकळाल् पिचैयुम्–(हनुमान) अपने हाथों से पीस लेता। ७८८

हनुमान उनको भी मारता, जो शिथिल या अपने को भूले रहते; उनको भी मारता, जो सतर्क रहते। आकाश में उड़नेवालों को भी मारता, पैदल चलनेवालों को भी, विद्युज्जनक मेघ-सम काले व पायल-धारी राक्षस हथियार फेंकते और वे अपने मार्ग में अंगारे बिखेरते हुए आते। हनुमान उन हथियारों को पकड़कर पीस लेता। ७८८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शेऱुम् वण्डलु मूळैयु निणमुमाय्च् चॅऱिय
नीऱु शेर्नॅडुन् दॅरुवॅला नीत्तमाय् निरम्ब
आऱु पोल्वरुङ् गुरुदियव् वनुमऩा ललैप्पुण्
डीऱिल् वाय्दॊऱु मुमिऴ्वदे यॊत्तदव् विलङ्गै 789

मूळैयुम्–भेजा; निणमुम्–और चर्बी; चेऱुम् वण्टलुमाय्–पंक और तलौंछ बनकर; चॅऱिय–घने रूप से मिली रहीं; नीऱु चेर्–धूल-मिली; नॅटुम् तॅरु ॲलाम्–लम्बी सड़कों में; नीत्तमाय् निरम्प–प्रवाहमय हो जाएँ, ऐसा; आऱु पोल् वरुम्–नदियों के समान आनेवाला; कुरुति–रक्त; अ अनुमऩाल्–उस हनुमान द्वारा; अलैप्पुण्टु–हिलाया जाकर; अ इलङ्कै–वह लंका; ईऱु इल्–अनन्त; वाय् तॊऱुम्–मुखों से; उमिऴ्वतु ऑत्ततु–क्ऐ करता हो जैसे लगा। ७८९

राक्षसों के भेजे और मज्जे के पंक और तलौंछ बने। उनका रक्त नदी बना। वह धूल-भरी लंका की सड़कों पर बह चली। वह रक्त-नदी हनुमान द्वारा हिल गयी और ऐसा लगा कि वह लंका नगर असंख्य मुखों से रक्त वमन कर रहा हो। ७८९

करुदि वालिनुङ् गैयिनुम् कडिहैयिऱ् कट्टिच्
चुरुदि येयऩन मारुदि मरत्तिडैत् तुरप्प
निरुद रॅन्दिरत् तिडुहरुम् बामॅऩ नॅरियक्
कुरुदि शाऱॅऩप् पाय्न्ददु कुरैहडऱ् कूऩै 790

चुरुतिये अऩ्ऩ–वेद ही सम; मारुति–मारुति के; करुति–सोचकर; वालिनुम् कैयिनुम्–पूँछ और हाथों से; कटिकैयिल्–ईख के टुकड़ों को जैसे; कट्टि–बाँधकर; मरत्तु इटै तुरप्प–पेड़ों के बीच में फेंकने पर; निरुतर्–राक्षस; ॲन्तिरत्तु इटु–यन्त्रों में डाले गये; करुम्पु आम् ॲऩ–ईखों के समान; नॅरिय–पिसे; कुरुति–(और) रक्त; चाऱु ॲऩ–इक्षुरस के समान; कुरै कटल्–गर्जनशील सागर रूपी; कूऩै–कड़ाहे में; पाय्न्ततु–बहकर भरा। ७९०

वेद-समान (स्थिर, अमर, अक्षय और हितकारी) हनुमान ने खूब ध्यान लगाकर पूँछ और हाथों से उन्हें बाँध लेकर इक्षुखण्डों को जैसे पेड़ों के मध्य फेंका। वे राक्षस यन्त्र (कोल्हू) में ग्रस्त (इक्षुखण्ड-जैसे) पिर गये। रस के समान रक्त जो निकला, वह शब्दायमान समुद्र रूपी कड़ाहे के अन्दर बहा। ७९०

ॲडुत्त रक्करै यॅऱिदॊऱु मवरुड लॅऱ्ऱक्
कॊडित्तिण् माळिहै यिडिन्दऩ मण्डबङ् गुलैन्द
तडक्कै यानैहण् मडिन्दऩ गोबुरन् दहऱ्न्द
पिडिक्कु लङ्गळुम् बुरवियु मविन्दऩ पॅरिय 791

अरक्करै ॲटुत्तु–राक्षसों को उठाकर; ॲऱि तॊऱुम्–ज्यों-ज्यों फेंकता; अवर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उटल् ऍऱ्ऱ–त्यों-त्यों उनके शरीरों के टकराने से; कॉटि–ध्वजा-सहित; तिण् माळिकै–प्रबल प्रासाद; इटिन्तत–टूट गये; मण्टपम्–मण्डप; कुलैन्त–ढह गये; तट कै यानैकळ्–लम्बी सूँड़ वाले गज; मटिन्तत–हत हुए; कोपुरम् तकर्न्त–मीनारें टूटीं; पॅरिय पिटि कुलङ्कळुम्–बड़ी-बड़ी गजनियों के वर्ग और; पुरवियुम्–अश्व; अविन्तत–मिटे। ७९१

ज्यों-ज्यों हनुमान ने राक्षसों को उठाकर फेंका, त्यों-त्यों उनके शरीरों के धक्के खाकर ध्वजा-सहित सुदृढ़ प्रासाद ढहकर गिरे। मण्डप मटियामेट हुए। बड़ी सूँड़ों के गज मरे। मीनारें टूटकर गिरीं। बड़ी-बड़ी हथिनियों के समूह और अश्व मर मिटे। ७९१

तत्त माडङ्ग डम्मुड लार्चिलर् तहर्त्तार्
तत्त मादरैत् तङ्गळ् लार्चिलर् चमैत्तार्
तत्त माक्कळैत् तम्बडै यार्चिलर् तडिन्दार्
ऍत्ति मारुदि तडक्कैह ळान्विशैत् तॅऱिय 792

मारुति–मारुति के; तट कैकळाल्–अपने विशाल हाथों से; ऍत्ति विचैत्तु ऍऱिय–जोर से फेंक देने से; चिलर्–कुछ राक्षसों ने; तत्तम् माटङ्कळ्–अपने-अपने प्रासादों को; तम् उटलाल्–अपने ही शरीरों से; तकर्त्तार्–तोड़ दिये; चिलर्–कुछ राक्षसों ने; तत्तम् मातरै–अपनी अपनी स्त्री को; तम् कळलाल् चमैत्तार्–अपने पैरों से रौंद दिया; चिलर्–कुछ (राक्षसों) ने; तत्तम् माक्कळै–अपनी-अपनी सन्तानों को; तम् पटैयाल्–अपने हथियारों से; तटिन्तार्–आहत कर मार दिया। ७९२

मारुति के अपने बड़े हाथों से पीटकर तेज़ी से फेंकने से कुछ राक्षसों के शरीर उन-उनके घरों से जाकर टकराए और वे टूटकर गिरे। कुछ राक्षसों ने अपनी-अपनी पत्नी को अपने पैरों से रौंदा। कुछ राक्षसों की संतानें उनके ही हथियारों से आहत होकर मरीं। ७९२

आडन् माक्कळि ऱनैयव नरक्कियर्क् करुळि
वीडु नोक्किय शॅल्हॅन्ऱु शिलवरै विट्टान्
कूडि नार्क्कव रुयिरॅनच् चिलवरैक् कॉडुत्तान्
ऊडि नार्क्कवर् मनैदोऱुम् जिलवरै युय्त्तान् 793

आटल्–शत्रु-संहारक; मा कळिऱु अनैयवन्–बड़े गज के समान हनुमान; अरक्कियर्क्कु अरुळि–राक्षसियों पर कृपा करके; चिलवरै–कुछ (राक्षसों) को; वीटु नोक्किय–घर की राह देखकर; चॅल्क ऍन्ऱु–जाओ, कहकर; विट्टान्–(जीवित) छोड़ दिया; कूटिनार्क्कु–तभी विवाहित स्त्रियों को; अवर् उयिर् ऍन–उनके प्राण-सम पति समझकर; चिलवरै कॉटुत्तान्–कुछ लोगों को (उनके पास जाने) दे दिया; ऊटिनार्क्कु–जो रूठी हुई थीं, उनके पास; अवर् मनै तोऱुम्–उनके घर-घर में; चिलवरै उय्त्तान्–कुछ को भेज दिया। ७९३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शत्रुघातक बड़े गज-जैसे हनुमान ने राक्षसियों पर कृपा करके कुछ राक्षसों को, 'घर जाओ' कहकर उन-उनके घर को भेज दिया। कुछ राक्षस नवविवाहित थे। उनको उनकी वधुओं को प्रदान कर दिया। कुछ स्त्रियाँ रूठन की अवस्था में रहीं। उनके पति राक्षसों को उनके पास भेज दिया। ७९३

तरुवॆ लामुडऱ् ऱडमदि लॆलामुडऱ् चदुक्कत्
तुरुवॆ लामुड लुवरियॆ लामुड लुळ्ळूऱ्क्
करुवॆ लामुडऱ् कावुमॆ लामुड लरक्कर्
तॆरुवॆ लामुड ऱेशमॆ लामुडऱ् चिदऱि 794

चितऱि–बिखरकर; तरु ॲलाम् उटल्–तरु-तरु पर शरीर (लाश); तट मतिल् ॲलाम् उटल्–चौड़े प्राचीरों पर सर्वत्र लाशें; चतुक्कत्तु उरु ॲलाम् उटल्–चौराहों के स्थलों पर लाशें; उवरि ॲलाम् उटल्–समुद्र भर लाशें; उळ्ळूर् करु ॲलाम्–उस नगर के गर्भ-स्थानों में लाशें; कावुम् ॲलाम् उटल्–उद्यान-उद्यान में लाशें; अरक्कर् तॆरु ॲलाम्–राक्षसों की सभी वीथियों पर; उटल्–लाशें; तेचम् ॲलाम् उटल्–देश भर में शरीर (लाशें)। ७९४

हनुमान के उछालने से पेड़-पेड़ पर लाशें पायी गयीं। विशाल प्राचीरों पर, चौराहों पर, समुद्र में, लंका नगर के गर्भस्थानों में, उद्यानों में, राक्षसों की सड़कों पर, क्यों देश में सर्वत्र लाशें हो गयीं। ७९४

ऊऩॆ लामुयिर् कवर्वुरुङ् गालऩोय्न् दुलन्दान्
तान्ऩॆ लारैयु मारुदि शाडुहै तविरान्
मीऩॆ लामुयिर् मेह मॆलामुयिर् मेन्मेल्
वाऩॆ लामुयिर् मऱ्ऱुमॆ लामुयिर् शुऱ्ऱि 795

ऊन् ॲलाम्–शरीरों से; उयिर् कवर्वु उरुम्–प्राणों को हर लेनेवाले; कालन्–यम; ओय्न्तु उलन्तान्–मिचलाकर थक गया; मारुति–मारुति ने; ॲलारैयुम्–सबको; तान्–तो; चाटुकै–आहत करना; तविरान्–नहीं छोड़ा; चुऱ्ऱि–(इसलिए) घूम-घूमकर; मीऩ् ॲलाम् उयिर्–नक्षत्र-मण्डलों में जानें; मेकम् ॲलाम् उयिर्–मेघों में उनके आत्मा; मेल् मेल् वान् ॲलाम्–ऊपर आकाश के सारे लोकों में; उयिर्–आत्मा; मऱ्ऱुम् ॲलाम्–उनके पार भी सर्वत्र आत्मा ही आत्मा। ७९५

शरीरों से प्राण हरनेवाला यम भी मिचलाकर थक गया। मारुति तो मारने से विरत नहीं हुआ। इस कारण से उनके जीवात्मा नक्षत्र-मण्डलों, मेघमण्डलों और ऊपर के सभी लोकों, क्यों उनके परे अन्य लोकों में भी सर्वत्र पाये गये। ७९५

आह विच्चॆरु विळैवुरु ममैदियि लरक्कर्
मोह मुऱ्ऱिऩ रामॆऩ मुऱैमुऱै मुऩिन्दार्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

माह मुऱ्ऱवु मादिर मुऱ्ऱवुम् वळैन्दार्
मेह मॊत्तनर् मारुदि वॆय्यव नॊत्तान् 796

आक–इस भाँति; इ चॆरु–यह युद्ध; विळैवु उऱुम् अमैतियिल्–जब होता रहा, तब; अरक्कर्–राक्षस; मोकम् मुऱ्ऱिनर् आम्–मोह में बढ़े हुए; ऍन–जैसे; मुऱै मुऱै मुनिन्दार्–उत्तरोत्तर क्रोधवन्त होकर; माकम् मुऱ्ऱवुम्–आकाश भर में; मातिरम् मुऱ्ऱवुम्–सभी दिशाओं में सर्वत्र; वळैन्तार्–घेरकर; मेकम् ऒत्तनर्–मेघों के समान लगे; मारुति–मारुति; वॆय्यवन् ऒत्तान्–सूर्य के समान दिखा। ७९६

इस तरह जब युद्ध हो रहा था, तब राक्षस निपट मोहमग्न हुए-से उत्तरोत्तर बढ़नेवाले कोप के साथ आकाश और दिशाओं में घेरे काले मेघों के समान रहे। तो मारुति सूर्य के समान लगा। ७९६

अडल रक्करु मार्त्तलि नलैत्तलि नारप्
पुडैव ळैत्तुयर् पॆरुमैयिर् करुमैयिर् पॊलिविन्
मिडल यिऱ्पडै मीनॆन विलङ्गलिर् कलङ्गुम्
कडनि हर्त्तनर् मारुदि मन्दरङ् गडुत्तान् 797

अटल् अरक्करुम्–सशक्त वे राक्षस भी; आर्त्तलिन्–नर्दन करने से; अलैत्तलिन्–झकझोरने से; आर–पूर्ण रूप से; पुटै वळैत्तु–पार्श्व में घेरकर; उयर् पॆरुमैयिल्–उन्नतिशील गौरव से; करुमैयिल्–काले रंग से; पॊलिविल्–आकार से; मिटल्–सबल; अयिल् पटै–भालाओं के हथियारों के; मीन् ऍन–नक्षत्रों के समान; इलङ्कलिल्–शोभित रहने से; कलङ्कुम् कटल्–मथनशील समुद्र; निकर्त्तनर्–के समान रहे; मारुति–मारुति भी; मन्तरम् कटुत्तान्–मन्दरपर्वत-सम लगा। ७९७

वे राक्षस गर्जन के कारण, इधर-उधर जाकर हिलने से, सभी ओर घेरे बढ़ने से, काले रंग के कारण और सबल हथियारों के मकरों के समान शोभित रहने के कारण विलोडित समुद्र के समान रहे तो मारुति समुद्र-मध्य मन्दरपर्वत के समान दिखा। (इस पद में समुद्र और राक्षस-समूह में श्लेष है।)। ७९७

करद लततिनुङ् गालिनुम् वालिनुङ् गदुव
निरैम णित्तलै नॆरिन्दुहच् चाय्न्दुयिर् नीप्पार्
शुरर्न डुक्कुऱ वमुदुहॊण् डॆळुन्दना डॊडरुम्
उरह रॊत्तन रनुमनुङ् गलुळनै यॊत्तान् 798

करतलत्तिनुम्–करतलों से; कालिनुम्–पैरों से; वालिनुम्–पूँछ से; कतुव–कसे जाने से; निरै तलै–पंक्तियों में सिर; नॆरिन्तु–पिसे और; मणि उक–रत्न गिरे; चुरर् नटुक्कु उऱ–देव थर्राए; चाय्न्तु–ऐसा गिरकर; उयिर् नीप्पार्–प्राण त्यागते; अमुतु कॊण्टु–अमृत लेकर; ऍळुन्त नाळ्–जिस दिन गरुड़ उड़ आया; तॊटरुम् उरकर् ऒत्तनर्–उसके पीछे लगे आये नागों के समान लगे; अनुमनुम्–हनुमान भी; कलुळनै–गरुड़ के भी; ऒत्तान्–समान रहा। ७९८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हनुमान ने राक्षसों को अपनी पूँछ, हाथों और पैरों से जकड़कर दबाया तो उनके सिर पिसे और रत्न गिरकर छितरे। सुर काँपे। इस रीति से जो गिरकर मरे, वे राक्षस उन नागों की समता करते थे जो गरुड़ के अमृत ले आने के दिन उसका पीछा कर आये थे। तो हनुमान गरुड़ के समान रहा। ७९८

मानम् मुऱ्ऱदन् पहैयिनान् मुनिवुऱ्ऱु वळैन्द
मीनु डैक्कड लिडैयिनि नुलहैला मिडैन्द
ऊन् ऱक्कौन्ऱु तुहैक्कवु मॉळिविला निरुदर्
आनै यॉत्तन राळरि यॉत्तन ननुमन् 799

मानम् उऱ्ऱ–गर्वीले; तन् पकैयिनाल्–अपने शत्रु राक्षसों पर; मुनिवुऱ्ऱु–गुस्सा करके; वळैन्त–गोल; मीन् उटै–मकर-सहित; कटल् इटैयिनिन्–समुद्र-मध्यस्थ; उलकु ऍलाम्–लंका भर में; मिटैन्त–अपने पास जुड़े आये; ऊन् अऱ–शत्रुओं के शरीरों को बिलकुल; कौन्ऱु तुकैक्कवुम्–रौंदकर मारता रहा; ऑळिवु इला–अक्षय रहे; निरुतर्–राक्षस; आनै ऑत्तनर्–गज-सम रहे; अनुमन्–हनुमान; आळ् अरि–वीर सिंह; ऑत्तनन्–के समान रहा। ७९९

गर्वीले शत्रु राक्षसों से गुस्सा करके हनुमान ने गोलाकार मकरालय मध्यस्थ लंका में अपने से भिड़नेवाले राक्षसों को रौंदकर मार दिया। पर अक्षय बने रहे राक्षस गजों के समान दिखे और हनुमान वीरता में बढ़े हुए सिंह के समान लगा। ७९९

ऍय्द वॅऱ्ऱिन वॅऱिन्दन वीर्त्तन विहलिल्
पॅय्द कुत्तिन पॉदुत्तन तुळैत्तन पिळन्द
कॉय्द शुऱ्ऱिन पऱ्ऱिन कुडैन्दन पॉलिन्द
अय्यन् मऱ्पॅरुम् बुयत्तन पुण्णळप् परिय 800

इकलिल्–युद्ध में; ऍय्त–चलाये गये; ऍऱ्ऱिन–आघात करनेवाले; ऍऱिन्तन–फेंके गये; ईर्त्तन–छिने; पॅय्त–बरसाये गये; कुत्तिन–चुभाये गये; पॉतुत्तन–घुसाये गये; तुळैत्तन–भेदनेवाले; पिळन्त–चीरनेवाले; कॉय्त–चुने गये; चुऱ्ऱिन–लपेटे गये; पऱ्ऱिन–पकड़े गये; कुटैन्तन–कुरेदनेवाले; पॉलिन्त–(हथियारों के व्रणों के साथ) शोभित; ऐयन्–सम्मान्य हनुमान के; मल् पॅरुम् पुयत्तन–अति बलवान कन्धों पर के; पुण्–व्रण; अळप्पु अरिय–अनगिनत थे। ८००

उस युद्ध में विविध हथियारों ने हनुमान पर चोट की। कुछ हथियार चलाये जानेवाले थे। कुछों से प्रहार किया जा सकता था। कुछ उछाले जानेवाले थे। कुछ खींचे जानेवाले थे। कुछ चुभनेवाले, कुछ गड़नेवाले, कुछ भेदनेवाले, कुछ चीरनेवाले और कुछ कुरेदनेवाले हथियार थे। उनसे सम्मान्य हनुमान के कन्धों पर जो व्रण हुए वे अनगिनत थे। ८००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कार्क्क रुन्दडङ् गडल्हळुम् मऴैमुहिऱ् कणनुम्
वेर्क्क वॅञ्जॅरु विळैत्तॅऴुम् वॅळ्ळॅयिऱ् ऱरक्कर्
पोर्क्कु ऴात्तॅऴु पूशलि नैयनैप् पुहऴ्वुऱ्
ऱार्क्कुम् विण्णव रमलैये युयर्न्ददन् ऱमरिल् 801

कार्–काले; करुम्–बड़े; तटम्–विशाल; कटल्कळुम्–समुद्र; मऴै मुकिल् कणनुम्–जल-भरे मेघों के समूह; वेर्क्क–पसीने से भर जाएँ, ऐसा; वॅम् चॅरु विळैत्तु–घमासान युद्ध करते; ऍऴुम्–बढ़ आनेवाले; वॅळ् ऍयिऱु अरक्कर्–सफ़ेद दाँतों के राक्षसों के; पोर् कुऴात्तु–युद्धदलों में; ऍऴु पूचलिन्–उठनेवाले शोर से अधिक; विण्णवर्–देवों के; ऐयनै पुकऴ्वु उऱु–सम्मान्य हनुमान की प्रशंसा करते हुए; आर्क्कुम्–आरव करने का; अमलैये–शोर ही; अन्ऱु–उस दिन; अमरिल्–युद्ध में; उयर्न्ततु–ज़ोरदार रहा। ८०१

व्योमलोकवासियों ने महिमावान हनुमान की वाहवाही बड़े ज़ोर-शोर से की। वह आरव उन सफ़ेद दाँत वाले राक्षसों के युद्ध-कोलाहल से भी अधिक ज़ोरदार रहा, जो अपने घमासान युद्ध से काले और बड़े समुद्रों को और जलवर्षी मेघों को भी स्वेदयुक्त (भयभीत) कर रहे थे। ८०१

मेवुम् वॅञ्जिनत् तरक्कर्हण् मुऱैमुऱै विशैयाल्
एवुम् पल्पडै यॅत्तनै कोडिह ळॅनिनुम्
तूवुन् देवरु मुनिवरु महळिरुञ् जॊरिन्द
पूवुम् बुण्गळुन् दॅरिन्दिल मारुदि पुयत्तिल् 802

मेवुम्–आरूढ़; वॅम् चिनत्तु–भयंकर क्रोधी; अरक्कर्–राक्षस द्वारा; मुऱै मुऱै–अनेक बार; विचैयाल्–वेग के साथ; एवुम्–चलाये गये; पल् पटै–विविध हथियार; ऍत्तनै कोटिकळ् ऍनिनुम्–कितने ही करोड़ थे तो भी; पुण्कळुम्–व्रणों में; तूवुम्–बरसानेवाले; तेवरुम् मुनिवरुम् मकळिरुम् चॊरिन्त–देवों, मुनियों और अन्यों द्वारा बरसाये गये; पूवुम्–फूलों में; मारुति पुयत्तिल्–मारुति के कन्धों पर; तॅरिन्तिल–भेद विदित नहीं हुआ। ८०२

उत्तरोत्तर बढ़ते हुए कोपिष्ठ राक्षसों ने अनेक बार विविध तरह के कितने ही करोड़ हथियार चलाये! तो भी हनुमान के कन्धों पर उनसे बने व्रणों और देवों, मुनियों और अन्यों के द्वारा बरसाये फूलों में कोई भेद नहीं रहा। हनुमान के लिए दोनों बराबर थे। ८०२

पॅयर्क्कुञ् जारिहै करङ्गॅनत् तिशैदॊरुम् बॅयर्विन्
उयर्क्कुम् विण्मिशै योङ्गलिन् मण्णिन्वन् दुऱलिन्
अयर्न्तु वीऴ्न्दन रऴिन्दन ररक्करा युळ्ळार्
वॅयर्न्ति लन्मिशै युयिर्त्तिल नल्लऱ वीरन् 803

नल् अऱ वीरन्–श्रेष्ठ धर्मवीर; करङ्कु ऍन–वातचक्र के समान; चारिकै

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॅयर्क्कुम्–पैतरा बदलता; तिचै तॊऱुम् पॅयर्विऩ्–आठों दिशाओं में घूमने से; विण् मिचै उयर्क्कुम्–आकाश में उछलता; ओङ्कलिऩ्–पर्वत के समान; मण्णिऩ् वन्तु–भूमि पर आकर; उऱलिऩ्–लगने से; अरक्कराय् उळ्ळार्–राक्षस जो थे; अयर्त्तु–थकित हो; वीऴ्न्तऩर्–गिरते; अऴिन्तऩर्–मरते; वॅयर्त्तिलऩ्–(हनुमान थका नहीं) स्वेदयुक्त नहीं हुआ; मिचै उयिर्त्तिलऩ्–श्वास भी तेज़ न हुआ। ८०३

धर्मवीर हनुमान ने क्षिप्रगति से पैतरे बदले। इधर-उधर घूमा। दिशाओं में चलता, आकाश में उछलता। कभी पर्वत के समान भूमि पर आकर गिरता; तब राक्षस चोट खाकर शिथिल हो गिरते और मर जाते। तो भी न हनुमान के शरीर पर स्वेद बहा, न उसका श्वास तेज़ हुआ। ८०३

अॅऱ्ज लिल्कणक् कऱिन्दिल मिरावण ऩेव
नऱ्ज मुण्डव रामॅऩ वनुमऩमे ऩडन्दार्
तुऱ्जि ऩारल्ल दियावरु ममर्त्तॊऴिऱ् ऱॊलैवुऱ्
ऱऱ्जि ऩारिल्लै यरक्करिल् वीरर्मऱ् ऱियारो 804

इरावणऩ् एव–रावण के प्रेरित करने से; अनुमऩ् मेल्–हनुमान पर; नटन्तार्–जो चढ़ आये; अॅऱ्चल् इल् कणक्कु–(उनका) अक्षय हिसाब; अऱिन्तिलम्–हमने नहीं जाना; नऱ्चम् उण्टवर् आम् अॅऩ–विष खाये हुओं के समान; तुऱ्चिऩार्–मरे; अल्लतु–(मरना) छोड़कर; यावरुम्–कोई भी; अमर् तॊऴिल्–युद्ध का काम; तॊलैवु उऱ्ऱु–त्यागकर; अऱ्चिऩार् इल्लै–डर मे भागे नहीं; अरक्करिल् वीरर्–राक्षसों से बढ़कर वीर; यारे–कौन हैं। ८०४

रावण की आज्ञा से जो किंकर लड़ने आये, उनकी अक्षय संख्या का हिसाब हमने नहीं जाना। पर इतना जानते हैं कि वे, विष खानेवाले जैसे मरते, वैसे ही मरे। पर युद्ध छोड़कर डर से नहीं भागे। उन राक्षसों से अधिक वीर कौन होंगे ?। ८०४.

वन्द किङ्गर रेयॅऩु मात्तिरै मडिन्दार्
नन्द वाऩत्तु नायह रोडिऩर् नडुङ्गिप्
पिन्दु कालिऩर् कैयिऩर् पॅरुम्बयम् बिडरिल्
उन्द वायिरम् बिणक्कुवै मेल्विऴुन् दुळैवार् 805

वन्त किङ्करर्–(हनुमान के साथ लड़ने) आगत राक्षस; एय् अॅऩुम् मात्तिरै–'ऐ' कहने की मात्रा में; मटिन्तार्–मरे; नन्त वाऩत्तु नायकर्–नन्दन वन के रक्षक; ओटिऩर्–दौड़े; नटुङ्कि–डर से; पिन्तु कालिऩर् कैयिऩर्–पिछड़नेवाले पैरों और हाथों के; पॅरुम् पयम्–बड़े भय के; पिटरिल् उन्त–गले में बैठकर उकसाते; आयिरम् पिण कुवै मेल्–हज़ारों लाशों के ढेरों पर; विऴुन्तु–गिरकर; उळैवार्–व्याकुल हुए। ८०५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वे किंकर 'रे' कहने के समय के अन्दर मृतक हो गये। अशोक वन के रक्षक तुरन्त भागे। डर से उनके पैर नहीं उठ रहे थे और हाथ काँप रहे थे। पीछे पड़ते थे। पर डर ने उनके गले के पीछे से उनको ढकेला। वे सहस्र-सहस्र लाशों के ढेर पर ठोकर खाकर गिरे और दुःखी हुए। ८०५

विरैवि तुऱ्ऱनर् विम्मिनर् यादॊन्ऱुम् विळम्बार्
करद लत्तिन्नाऱ् पट्टदु कट्टुरैक् किन्ऱार्
तरैयि निऱ्किलर् तिशैदॊऱु नोक्किनर् शलिप्पार्
अरशन् मऱ्ऱव रलक्कणे युरैशॆय वऱिन्दान् 806

विरैविन् उऱ्ऱनर्–शीघ्र जाकर; विम्मिनर्–दुःख से भरकर; यातॊन्ऱुम्–कुछ भी; विळम्पार्–न कह सके; पट्टतु–जो घटा; करतलत्तिन्नाल्–हाथों के इशारे से; कट्टुरैक्किन्ऱार्–समझाते; तरैयिन् निऱ्किलर्–धरती पर खड़े नहीं रह पाते; तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; नोक्किनर्–दृष्टि दौड़ाते; चलिप्पार्–चंचल होते; अरचन्–राजा ने; अवर् अलक्कणे–उनके संकटपूर्ण स्थिति के; उरै चॆय–कहने से ही (द्वारा ही); अऱिन्तान्–समझ लिया। ८०६

वे (जितना हो सके उतनी) जल्दी रावण के सम्मुख आये। दुःख से भरपूर वे कुछ बोल नहीं सके। अपने हाथों से इशारे करने लगे। उनके पैर लड़खड़ा रहे थे और वे स्थिर रूप से खड़े नहीं हो पाये। सभी दिशाओं पर दृष्टि दौड़ाते हुए चंचल रहे। उनके कष्ट से रावण ने जान लिया कि उनका अभिप्राय क्या है ?। ८०६

इऱन्दु नीङ्गिन रोविन्ऱॆ नाणैयि निहन्दार्
तुऱन्दु नीङ्गिन रोवन्ऱि वॆञ्जमन् दॊलैन्दार्
मऱन्दु नीङ्गिन रोवॆन्गॊल् वन्ददॆन् ऱुरैत्तान्
निऱञ्जॆ रुक्कुऱ वाय्दॊऱु नॆरुप्पुमिऴ् हिन्ऱान् 807

निऱम् चॆरुक्कु उऱ–शरीर घमण्ड से सीधा हुआ; वाय् तॊऱुम्–सभी मुखों से; नॆरुप्पु–आग; उमिऴ्किन्ऱान्–उगलता; इन्ऱु–आज; इऱन्तु नीङ्किनरो–मर मिटे क्या; ऎन् आणैयिन् इकन्तार्–मेरी आज्ञा का उल्लंघन करके; तुऱन्तु–(युद्ध) त्यागकर; नीङ्किनरो–भाग गये; अन्ऱि–नहीं तो; वॆम् चमम् तॊलैन्तार्–घोर युद्ध हारकर; मऱन्तु–मुझे भूलकर; नीङ्किनरो–भाग गये क्या; ऎन् कॊल् वन्ततु–क्या ही हो गया; ऎन्ऱु उरैत्तान्–ऐसा प्रश्न किया। ८०७

रावण का शरीर गर्व से तन उठा। अपने दसों मुखों से आग उगलते हुए रावण ने पूछा कि क्या वे आज मारे जाकर मिटे ? या मेरी आज्ञा की अवज्ञा करके युद्ध से भाग गये ? या युद्ध हारकर अपमान से मेरी उपेक्षा करके भाग गये ? क्या ही हुआ है ? बताओ। ८०७

चलन्दलैक् कॊण्डन राय तन्मैयार्
अलन्दिलर् शॆरुक्कळत् तञ्जि नारलर्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुलन्दॆरि पॊय्क्करि पुहलुम् बुन्गणार्
कुलङ्गळि नविन्दनर् कुरङ्गि नालॆन्ऱार् 808

चलम्–क्रोध; तलै कॊण्टनराय–सिर पर चढ़ गया, ऐसी; तन्मैयार्–स्थिति में रहे वे; अलन्तिलर्–दुखी हो भागे नहीं; चॆरु कळत्तु–युद्धभूमि से; अञ्चिनार् अलर्–डरकर नहीं भागे; पुलम् तॆरि–मन के जाने; पॊय् करि–झूठी गवाही; पुकलुम्–कहनेवाले (देनेवाले); पुन्कणार् कुलङ्कळिन्–नीच लोगों के कुलों के समान; कुरङ्किनाल्–मर्कट द्वारा; अविन्तनर्–मृतक हुए; ऎन्ऱार्–कहा (रक्षकों ने)। ८०८

नन्दनवन-रक्षकों ने उत्तर दिया। क्रोध से भरे वे वीर किंकर कष्ट से दुखी हो नहीं भागे। न समरांगन से भय खाकर भागे। पर वे, जान-बूझकर झूठी गवाही देनेवाले नीच लोगों के कुल के समान मर्कट से मारे जाकर मिटे। रक्षकों ने कहा। ८०८

एवलि नॆय्दिन रिरुन्द वॆण्डिशैत्
तेवरै नोक्किना ताणुञ् जिन्दैयान्
यावदॆन् ऱऱिन्दिलिर् पोलु मालॆन्ऱान्
मुवहै पुलहैयुम् विळुङ्ग मूळ्हिन्ऱान् 809

मूवकै उलकैयुम्–त्रिविध लोकों को; विळुङ्क–निगलने को जैसे; मूळ्किन्ऱान्–कोपाक्रान्त होकर; नाणुम् चिन्तैयान्–लज्जित-मन (रावण ने); एवलिन् ऎय्तिनर् इरुन्त–सेवार्थ आकर स्थित; ऎण् तिचै–आठों दिशाओं के पालक; तेवरै–देवताओं को; नोक्किनान्–देखकर; यावतु ऎन्ऱु–क्या हुआ यह; अऱिन्तिलिर् पोलुम्–नहीं जानते शायद; ऎन्ऱान्–ऐसा डाँटकर प्रश्न किया। ८०९

यह सुनकर रावण का कोप इतना तीव्र उठ आया कि ऐसा लगा कि वह तीनों लोकों को निगल लेगा। उसे किंचित लाज भी आयी। रावण ने पास सेवार्थ आगत दिग्पालक देवताओं को देखकर उनसे डाँटकर प्रश्न किया कि तुम लोग नहीं जानते कि क्या हुआ ?। ८०९

मीट्टव रुरैत्तिलर् पयत्तिन् विम्मुवार्
तोट्टल रिणर्मलर्त् तॊङ्गन् मोलियान्
वीट्टिय दरक्करै यॆन्नुम् वॆव्वुरै
केट्टदो कण्डदो किळत्तु वीरॆन्ऱान् 810

अवर्–वे; पयत्तिन् विम्मुवार्–भय में पड़कर; मीट्टु उरैत्तिलर्–उत्तर नहीं दे रहे थे; तोटु अलर्–दल-विकच; इणर् मलर्–गुच्छों में रहे; तॊङ्कल्–पुष्पों की माला से अलंकृत; मोलियान्–किरीटधारी (रावण) ने; वीट्टियतु अरक्करै–निपाता राक्षसों को (एक वानर ने); ऎन्नुम्–ऐसा; वॆम् उरै–दिल जलानेवाला समाचार; केट्टतो–सुनी हुई बात है; कण्टतो–(आँख) देखी हुई; किळत्तुवीर्–साफ़ कहो; ऎन्ऱान्–कहा। ८१०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नन्दनवन-पालकों ने भय से भरकर फिर कुछ उत्तर नहीं दिया। दलविकसित और गुच्छों में रहे फूलों की माला से अलंकृत किरीटधारी रावण ने उनसे पूछा कि तुमने जो कहा कि वानर ने राक्षसों को मिटा दिया, वह क्रूर समाचार तुम्हारा सुना हुआ समाचार है ? या तुमने अपनी आँखों से देखा था ? बताओ। ८१०

कण्डन मॊरुपुडै निन्ऱु कण्गळाल्
तॆण्डिरैक् कडलॆन वळैन्द शेनैयै
मण्डलन् दिरिन्दॊरु मरत्ति नालुयिर्
उण्डदक् कुरङ्गिनि यॊऴिव दन्ऱॆन्ऱार् 811

ऒरु पुटै निन्ऱु–एक ओर खड़े रहकर; कण्कळाल्–अपनी आँखों से; कण्टतम्–देखा; तॆळ् तिरै कटल्–स्वच्छ तरंगोंवाले सागर; ऎन–के समान; वळैन्त–जो घेर आयी; चेनैयै–उस सेना को; मण्टलम् तिरिन्तु–मण्डलाकार घूमकर; ऒरु मरत्तिताल्–एक पेड़ से; उयिर् उण्टतु–उनकी जानें उसने खा लीं; अ कुरङ्कु–वह वानर; इनि–अब; ऒऴिवतु अन्ऱु–छोड़ जाने का नहीं दिखता; ऎन्ऱार्–कहा (उन रक्षकों ने)। ८११

वनपालों ने उत्तर दिया कि हमने एक ओर स्थित होकर यह स्वयं देखा था। स्वच्छ लहरों वाले समुद्र के समान जो सेना घेर गयी थी, उसको उस वानर ने मण्डलाकार घूमकर एक बड़े वृक्ष से मारकर उनके प्राण हर लिये। और भी वह वानर छोड़ जानेवाला नहीं लगता। ८११

8. शम्बुमालि वदैप् पडलम् (जम्बुमाली-वध पटल)

ऎन्ऱलु मरक्कर् वेन्द नॆरिहदिर् वाळै नोक्किक्
कन्ऱिय पवळच् चॆव्वा यॆयिऱुपुक् कऴुन्दक् कव्वि
ऒन्ऱुरै याडऱ् किल्ला नुडलमुम् विऴियुम् चेप्प
निन्ऱवा ळरक्कर् तम्मै नॆडिदुऱ् नोक्कुङ् गालै 812

ऎन्ऱलुम्–(उनके ऐसा) कहने पर; अरक्कर् वेन्तन्–राक्षसराज ने; ऎरि कतिर्–अग्नि-तेज; वाळै–तलवार को; नोक्कि–देखकर; कन्ऱिय–कोपप्रकाशक; पवळम् चॆव्वाय्–प्रवालाधर को; ऎयिऱु पुक्कु अऴुन्त–दाँत से, घुसकर दबाएँ; कव्वि–ऐसा काटकर; ऒन्ऱुरै–कुछ भी; उरै आटऱ्कु इल्लान्–कहने के लिए न पाकर; उटलमुम्–शरीर और; विऴियुम्–आँखों के; चेप्प–लाल होते; निन्ऱ–पास स्थित; वाळ् अरक्कर् तम्मै–तलवारधारी राक्षसों को; नॆटितु उऱ–लम्बी देर तक खूब; नोक्कुम् कालै–जब देखा, तब। ८१२

वनपालों ने ज्योंही यह कहा, त्योंही रावण ने अग्नि-जैसे प्रकाश निकालनेवाली अपनी चन्द्रहास नामक तलवार पर दृष्टि दौड़ायी। उसने प्रवाल-लाल अधर को खूब दाँत गड़ाकर काटा, जिससे उसके बढ़े

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

क्रोध का प्रकटन हो रहा था। उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं रह गया था। अपनी आँखों और शरीर को लाल बनाते हुए जब वह अपने पास खड़े रहे तलवारधारी राक्षसों को बहुत देर तक घूरता रहा—। ८१२

कूम्बिऩ कैयि निऩ्ऱ कुऩ्ऱिवर् कुववुत् तिण्डोळ्
पाम्बिवर् तऱुहट् चम्बु मालियॅऩ् बाऩैप् पारा
वाम्बरित् ताऩै योडु वळैत्तदऩ् वलियै माऱ्ऱित्
ताम्बिऩिऱ् पऱ्ऱित् तऩ्दॅऩ् मऩच्चिऩन् दणित्ति यॅऩ्ऱाऩ् 813

कूम्पिऩ कैयिऩ्–हाथ जोड़कर; **निऩ्ऱ**–जो खड़ा रहा, उस; **कुऩ्ऱु इवर्**–पर्वत-सम; **कुववु**–पुष्ट; **तिण् तोळ्**–कठोर कन्धों वाले; **पाम्पु इवर्**–सर्प के समान; **तऱुकण्**–निडर; **चम्पुमालि ऍऩ्पाऩै पारा**–जम्बुमाली को देखकर; **वाम् परि ताऩैयोटु**–सरपट दौड़नेवाले अश्वों की सेना के साथ जाकर; **वळैत्तु**–उसे घेरकर; **अतऩ् वलियै माऱ्ऱि**–उसके बल को व्यर्थ करके; **ताम्पिऩिल् पऱ्ऱि**–रस्सी से बाँध; **तऩ्तु**–(लाकर) मुझे देकर; **ऍऩ् मऩ चिऩम्**–मेरे मन का क्रोध; **तणित्ति**–शान्त करो; **ऍऩ्ऱाऩ्**–कहा। ८१३

तब जम्बुमाली पर उसकी दृष्टि गयी। वह हाथ जोड़े खड़ा था। उसके कन्धे पर्वत-सम पुष्ट और कठोर थे। वह सर्प-जैसा निडर था। रावण ने उसे आज्ञा दी कि अश्व-सेना लेकर जाओ। उस वानर के बल को चूर कर पकड़ लाओ और मुझे सौंप दो; तभी मेरा कोप शान्त होगा। ८१३

आयवऩ् वणङ्गि यैय वळप्परु मरक्कर् मुऩ्ऩे
नीयिदु मुडित्ति यॅऩ्ऱु नेर्न्दऩै निऩैवि ऩॅण्णि
एयिऩै यॅऩ्ऩप् पॅऱ्ऱा लॅऩ्ऩिल्या रुयर्न्दा रॅऩ्ऩाप्
पोयिऩ ऩिलङ्गै वेन्दऩ् पोर्च्चिऩम् बोव दॉप्पाऩ् 814

आयवऩ्–उस जम्बुमाली ने; **वणङ्कि**–नमस्कार करके; **ऐय**–प्रभु; **अळप्पु अरुम्**–अनगिनत; **अरक्कर्**–राक्षसों के; **मुऩ्ऩे**–सामने; **निऩैविऩ् ऍण्णि**–स्मरण करके; **नी इतु मुटित्ति**–तुम इसे साध लो; **ऍऩ्ऱु**–ऐसा; **नेर्न्ततै एयिऩै**–आज्ञा दी (आपने); **ऍऩ्ऩप् पॅऱ्ऱाल्**–यह भाग्य प्राप्त हुआ तो; **ऍऩ्ऩिऩ् यार् उयर्न्ताऱ्**–मुझसे कौन बड़े हैं; **ऍऩ्ऩा**–कहकर; **इलङ्कै वेन्तऩ्**–लंकाधिपति का; **पोर् चिऩम्**–युद्धरोष ही; **पोवतु ऑप्पाऩ्**–निकलकर जाता हो जैसे; **पोयिऩऩ्**–चला। ८१४

जम्बुमाली ने नमस्कार करके रावण से विनय के साथ निवेदन किया कि प्रभु ! असंख्यक राक्षसों के रहते आपने मुझे खूब सोच-समझकर चुना और आज्ञा सुनायी कि यह काम साधो। मेरा ऐसा भाग्य रहा तो कौन मुझसे बड़ा हो सकेगा ? कहकर वह ऐसा जाने लगा, मानो रावण का क्रोध ही साकार बन जा रहा हो। ८१४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तन्नुडैत् तानै योडुन् दयमुहन् ऱरुहॅन् ऱेय
मन्नुडैच् चेनै योडुन् दादैवन् दीन्द वाळिन्
मिन्नुडैप् परवै योडुम् वेऱुळोर् शिऱप्पिन् विट्ट
पिन्नुडै यनिहत् तोडुम् बॅयर्न्दनन् पॅरुम्बोर् पॅऱ्ऱान् 815

पॅरुम् पोर्–बड़ा युद्ध; पॅऱ्ऱान्–(लड़ने का अवसर) जिसे मिल गया; तन्नुटै तानैयोटुम्–अपनी सेनाओं के साथ; तयमुकन्–दशग्रीव द्वारा; तरुकॅन्ऱु एय–'दो' कहने पर आयी; मन् उटै चेनैयोटुम्–स्थायी बड़ी सेनाओं के साथ; तानै वन्तु ईन्त–पिता प्रहस्त द्वारा दी गयी; मिन् उटै वाळिन्–चमकदार तलवारधारी वीरों की; परवैयोटुम्–विशाल सेना के सागर के साथ; वेऱु उळोर्–अन्यों द्वारा; चिऱप्पिन् विट्ट–गौरव हेतु प्रेषित; पिन् उटै अनिकन्तोटुम्–पीछे आनेवाले अनीक के साथ; पॅयर्न्तनन्–गया। ८१५

उसे बड़ा युद्ध करने का सौभाग्य प्राप्त हो गया। वह गया तो उसके साथ उसकी निजी सेना, रावण द्वारा प्रेषित सेना और उसके पिता प्रहस्त की विद्युत्-सी चमकदार तलवारधारी वीरों की सागर-सी विपुल सेना गयीं। उसके पीछे-पीछे अन्यों द्वारा गौरव-लिप्सा के कारण प्रेषित सेना भी गयी। ८१५

उरुमॉत्त मुळक्किऱ् चॅङ्गण् वॅळ्ळॅयिऱ् ऱोडै नॅऱ्ऱिप्
परुमित्त किरियिऱ् ऱोन्ऱुम् वेळुमुम् बदुमत् तण्णल्
निरुमित्त वेळ्वि मुऱ्ऱि यॅन्नला निलैय नेमि
चॉरिमुत्त वॅण्गोट् टुच्चित् तुहिऱ्कॉडित् तडन्देर् शुऱ्ऱ 816

उरुम् ऑत्त–वज्र-सम; मुळक्किन्–चिंघाड़ वाले; चॅम् कण्–लाल आँखें; वॅळ् ऍयिऱ्ऱु–(और) श्वेत दाँतों वाले; ओटै नॅऱ्ऱि–मुखपट्ट पहने भाल वाले; परुमित्त–सजे हुए; किरियिल्–गिरियों के समान; तोन्ऱुम्–दिखनेवाले; वेळुमुम्–गज; नेमि–पहियों के साथ; वॅण् कोट्टु उच्चि–श्वेत स्तम्भ के ऊपर; चॉरि मुत्त–मोती गिरानेवाली; तुकिल् कॉटि–वस्त्रध्वजाओं के साथ; पतुमत्तु अण्णल्–कमलासन ब्रह्मा द्वारा; निरुमित्त–निर्मित; वेळ्वि–यज्ञ; मुऱ्ऱि–पूरा करके प्राप्त; ऍन्नल् आम् निलैय–ऐसी मान्य स्थिति में रहनेवाले; तटम् तेर्–बड़े-बड़े रथों के; चुऱ्ऱ–घेरे आते। ८१६

उस सेना-समूह में गज गये, जिनकी चिंघाड़ का स्वर अशनि के समान था; जो सफ़ेद दाँतों वाले और मुखपट्ट पहने, सजे हुए पर्वत के समान जा रहे थे। रथ घेरे आये; पहियेदार रथ, जिनके सफ़ेद और ऊँचे स्तम्भों पर मोती गिरानेवाली ध्वजाएँ फहर रही थीं और जो ब्रह्मदेव द्वारा यज्ञ करने के बाद निर्मित-से लग रहे थे। (यज्ञ करके श्रेष्ठ वस्तुओं को प्राप्त करने की बात यहाँ स्मरण की गयी है।)। ८१६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कार्‌रिनै मरुङ्गिर् कट्टिक् काल्वहुत् तुयिरुङ् गूट्टिक्
कूर्‌रिनै यियर्‌रि यन्न कुलप्परि कुळुवक् कुन्‌रिन्
तूर्‌रिनि ऍळुप्पि याण्डुत् तॊहुत्तन शुळल्पॆङ् गण्ण
वेर्‌रिनप् पुलिये ऍन्न विरिन्ददु पदादि यीट्टम् 817

मरुङ्किल्–पास के; कार्‌रिनै कट्टि–पवन को बाँधकर; काल् वकुत्तु–उसके चार पैर बनाकर; उयिरुम् कूट्टि–जीवन्त बनाकर; कूर्‌रिनै इयर्‌रि अन्न–यम को सृष्ट किया गया हो, ऐसा; कुल परि–श्रेष्ठ जाति के अश्वों के; कुळुव–एकत्रित होकर आते; कुन्‌रिन्–पर्वतों से; तूर्‌रिनिन्–व झाड़ियों से; ऍळुप्पि–उठाकर; आण्टु तॊकुत्तन–वहाँ (सेना में) मिला दिये गये जो; चुळल्–चंचल; पॆम् कण्ण–रंगीन आँखों वाले; वेर्‌रु इन–विविध जाति के; पुलि एरु ऍन्न–नर व्याघ्र के समान; पताति ईट्टम्–पदाति वीरों के दल; विरिन्ततु–बहुत विस्तृत रहे। ८१७

श्रेष्ठ जाति के अश्व भी साथ गये। पास के पवन को एकत्र करके उसके चार पैर लगाकर और उसे जीवन्त बनाकर यम-सा बनाया गया हो, ऐसा था एक-एक अश्व! पदाति वीर गये। पर्वतों की गुफाओं में से और झाड़ियों से उठाकर लाये विविध, विवृत्तनयन व्याघ्र-समूह के समान थे वे वीर। ८१७

तोमर मुलक्कै कूर्‌वाळ् शुडर्मळु कुलिशन् दोट्टि
तामरन् दिन्‌र कूर्‌वेल् चक्कर मॆळुक्कळ् चापम्
कामरन् दण्डु पिण्डि कप्पणङ् गाल पाशम्
मामरम् वलयम् वॆङ्गोन् मुदलिय वयङ्ग मादो 818

तोमरम्–तोमर; उलक्कै–मूसल; कूर् वाळ्–तेज़ तलवारें; चुटर् मळु–उज्ज्वल परशु; कुलिचम्–कुलिश; तोट्टि–अंकुश; ताम् अरम् तिन्‌र–रेती से पैनाये गये; कूर् वेल्–तीक्ष्ण भाले; चक्करम्–चक्रायुध; ऍळुक्कळ्–लौहदण्ड; चापम्–धनु; कामरम्–'कामर'; तण्ट—गदाएँ; पिण्टि–भिन्दिपाल; कप्पणम्–'कप्पण'; काल पाचम्–कालपाश; मा मरम्–बड़े पेड़; वलयम्–छल्ले; वॆम् कोल्–भयंकर बाण; मुतलिय–आदि; वयङ्क–रहे। ८१८

उनके पास तोमर, मूसल, तेज़ तलवारें, ज्वलन्त परशु, कुलिश, अंकुश, रेती से पैनाये गये भाले, चक्रायुध, लौहदण्ड, चाप, 'कामर' नामक हथियार, दण्ड, भिंदिपाल, 'कप्पण' नामक काँटेदार गदाएँ, कालपाश, बड़े-बड़े तरु, वलय और भयंकर शर आदि विविध हथियार विद्यमान रहे। ८१८

ऍत्तिय वयिल्वेल् कुन्द मॆळुमुद लिनैय वेन्दिक्
कुत्तिय तिळैप्प मीदिर् कुळुविन मळैमाक् कॊण्डल्
पॊत्तुहळ् पॊरुवि नन्नीर् शॊरिवन पोव पोलच्
चित्तिरप् पदाहै यीट्टन् दिशैतॊरुञ् जॆरिव चॆल्ल 819

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍत्तिय–फेंके जानेवाले; अयिल् वेल्–तेज़ भाले और; कुन्तम्–कुन्त; ऍऴु मुतल्–लौहदण्ड आदि; इत्तैय–ऐसे; एन्ति–हाथ में लेकर; कुत्तिय तिळैप्प–छेद लगाने पर; मीतिल् कुऴुवित्त–आकाश में एकत्रित; मऴै मा कॊण्टल्–वर्षा करनेवाले बड़े मेघ; पॊत्तु उकळ्–जब विद्ध होकर गिराएँगे; पॊरुवु इल्–अनुपम; नल् नीर्–शुद्ध जल; चॊरिवत्त पोव पोल–जो गिराते जाते हैं, उनके समान; चित्तिर पताकै ईट्टम्–चित्रमयी पताकाओं की राशियाँ; तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; चॆऱिव चॆल्ल–घने रूप से मिलकर गयीं। ८१९

वे चलने योग्य तीक्ष्ण भाले, कुन्त, लौहदण्ड आदि हाथों में लिये हुए चले। चारों दिशाओं में चित्रमय पताकाओं के घने वृन्द चले, जिनको देखकर ऐसा लगा मानो आकाशचारी मेघों में छेद लगे हों और मेघ उन छेदों द्वारा अनुपम शुद्ध जल बरसाते जा रहे हों। ८१९

पल्लियन् दुवैप्प नन्माप् पणिलङ्गण् मुरलप् पॊऱ्ऱेऱ्च्
चिल्लिह ळिडिप्प वाशि शिरित्तिडच् चॆऱिपॊऱ् ऱारुम्
विल्लुनिन् ऱिशैप्प यानै मुऴक्कम्विट् टार्प्प विण्डोय्
ऒल्लॊलि वानिऱ् ऱेव रुरैदॆरि वॊऴिक्क मन्नो 820

पल्लियम्–विविध वाद्यों के; तुवैप्प–बजते; नल् मा पणिलङ्कळ्–श्रेष्ठ और बड़े शंखों के; मुरल–बजते; पॊन् तेर् चिल्लिकळ्—स्वर्ण-रथों के पहियों के; इटिप्प–शब्द निकालते; वाचि चिरित्तिट--वाजियों के हिनहिनाते; चॆऱि पॊन्–स्वर्णमय; तारुम्–हारों और; विल्लुम्–धनुओं के; निन्ऱु इचैप्प–स्थिर स्वन करते; यानै–गजों के; मुऴक्कम् विट्टु आर्प्प–बड़े स्वर में चिंघाड़ते; विण् तोय्–आकाश को लगे; ऒल् ऒलि–बड़े शोर के; वानिन्–आकाश में; तेवर् उरै तॆरिवु–देवों की बोली को समझने में; ऒऴिक्क–कठिन बनाते रहते। ८२०

विविध वाद्य बजते जा रहे थे। शंखनाद हो रहा था। स्वयं रथों के पहिये घरघराते जा रहे थे। वाजी हिनहिनाते जा रहे थे। स्वर्णमय हारों की घंटियाँ बज रही थीं और धनु की टंकार हो रही थी। हाथी चिंघाड़ते शोर मचा रहे थे। ऐसे बहुत से मिश्रित नाद आकाश में छाये और वह आकाश के देवों की बोली को अश्राव्य बना दिया। ८२०

मिन्नहु किरिहळ् यावु मेरुविन् विळङ्गित् तोन्ऱत्
तॊन्नहर् पिऱवु मॆल्लाम् बॊलिन्दन्न तुऱक्क मॆन्न
अन्नवन् शेनै शॆल्ल वार्हलि यिलङ्गै याय
पॊन्नहर् तहर्न्दु पॊङ्गि यार्त्तॆऴु तूळि पोर्प्प 821

अन्नवन् चेनै–उसकी सेना के; चॆल्ल–चलने से; आर् कलि इलङ्कै आय–समुद्रवलयित लंका की; पॊन् नकर्–स्वर्ण-नगरी; तकर्न्तु–जर्जर होकर; आर्त्तु ऎऴु–उससे शोर के साथ उठी; तूळि–धूल; पॊङ्कि–उठी और; पोर्प्प–छा गयी; मिन् नकु–प्रकाशमय; किरिकळ् यावुम्–सभी गिरियाँ; मेरुविन् विळङ्कि–मेरु-से (या मेरु से) प्रकाशमान; तोन्ऱ–दिखीं; तॊल् नकर्–प्राचीन नगर; पिऱवुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍल्लाम्–और अन्य सभी; तुऱक्कम् ऍऩ्ऩ–स्वर्ण के समान (स्वर्णमय); पॊलिन्तऩ–चमके। ८२१

ऐसे उसकी सेना जब चली तब समुद्रावृत स्वर्णनगरी लंका पिसी और शब्द के साथ धूल जो उठी वह सब जगह छा गयी। इसलिए सारी प्रभामय गिरियाँ (स्वर्णमय) मेरु के समान लगीं और प्राचीन वह नगर और अन्य स्थल व पदार्थ स्वर्ग के समान बन गये। ८२१

आयिर मैन्दॊ डैन्दा माऴियन् दडन्दे रत्तेर्क्
केयिऩ विरट्टि याऩै याऩैयि ऩिरट्टि पाय्मा
पोयिऩ पदादि शॊऩ्ऩ पुरवियि ऩिरट्टि पोलाम्
तीयवऩ् ऱडन्देर् शुऱ्ऱित् तॆऱ्ऱॆऩच् चॆन्ऱ शेनै 822

तीयवऩ्–क्रूर (जम्बुमाली) के; तटम् तेर् चुऱ्ऱि–विशाल रथ को घेरकर; तॆऱ्ऱु ऍऩ–क्षिप्रगति से; चॆऩ्ऱ चेनै–जो गयी उस सेना में; ऐऩ्तोटु ऐऩ्तु आयिरम्–पाँच और पाँच (=दस) सहस्र; आऴि अम् तटम तेर् आम्–पहियेदार सुन्दर बड़े रथ थे; अ तेर्क्कु–उन रथों के; इरट्टि एयिऩ–दुगुने रहे; याऩै–गज; याऩैयिऩ् इरट्टि–गजों के दुगुने; पाय् मा–अश्व; पोयिऩ पताति–जो पदाति वीर चले; चॊऩ्ऩ पुरवियिऩ्–उक्त अश्वों के; इरट्टि पोल् आम्–दुगुने हैं। ८२२

क्रूर जम्बुमाली के विशाल रथ को घेरे बड़ी सेना गयी। उसमें दस सहस्र पहियोंदार रथ, उनके दुगुने गज और उनके दुगुने अश्व थे। पदाति वीर उनके दुगुने थे। ८२२

विऩ्मऱैक् किऴवर् नाऩा विऱ्जैयर् वरत्तिऩ् मिक्कार्
वऩ्मऱक् कण्ण राऱ्ऱल् वरम्बिला वयिरत् तोळार्
तॊऩ्मऱक् कुलत्तर् तूणि तूक्किय पुऱत्तर् मार्बाम्
कऩ्मऱैत् तॊळिरुऱ् जॆम्बॊऱ् कवशत्तर् कडुन्दे राळर् 823

कटुम् तेराळर्–वेगवान रथी; विल् मऱै किऴवर्–धनुर्विद्या-विशारद; नाऩा विऱ्चैयर्–विविध कलाविद; वरत्तिऩ् मिक्कार्–बड़े-बड़े वरों के धनी; वऩ् मऱ कण्णर्–कठोर वीरता-प्रदर्शक नेत्रों वाले; वरम्पु इला–असीम; आऱ्ऱल्–शक्तिमान; वयिर तोळार्–वज्रस्कन्ध; तॊल् मऱ कुलत्तर्–प्राचीन वीरकुल में जनमे; तूणि तूक्किय–तूणीर-बँधी; पुऱत्तर्–पीठ वाले; मार्पु आम् कल्–वक्ष रूपी गिरि को; मऱैत्तु–छिपाते हुए; ऒळिरुम्–शोभायमान; चॆम् पॊऩ् कवचत्तर्–लाल स्वर्ण-कवचधारी। ८२३

रथी वीर तीव्र गति में रथ चला सकनेवाले थे। उन्हें धनुर्विद्या के अलावा अन्य नाना विद्याएँ भी आती थीं। उन्हें अनेक वर प्राप्त थे। उनकी आँखें वीरता-प्रदर्शक थीं और कन्धे वज्र-सम सुदृढ़। वे प्राचीन वीरों के कुल में जनमे थे। पीठ पर तूणीर बाँधकर और वक्ष पर लाल स्वर्ण-कवच पहने (जा रहे) थे। ८२३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊरुदिशै यानै यूरुम् पुनिदरैप् पॊरुवुम् पॊऱ्पर्
शुरिपडैत् तॊळिलु मऱ्ऱै यङ्गुशत् तॊळिलुन् दॊक्कार्
निरुदियिऱ् पिऱन्द वीरर् नॆरुप्पिडै पॊळियुम् कण्णर्
परिदियिऱ् पॊलियु मॆय्यर् पडुमदक् कळिऱ्ऱिन् पाहर् 824

पटु मत कळिऱ्ऱिन्–स्रवणशील मद वाले गजों के; पाकर्–चलानेवाले वीर; पॊरु तिचै यानै–युद्धतत्पर दिग्गजों पर; ऊरुम्–सवारी करनेवाले; पुनितरै–पवित्र दिग्पालों की; पॊरुवुम्–समता करनेवाले; पॊऱ्पर्–शोभा वाले; चुरि पटै तॊळिलुम्–तलवार की लड़ाई में; मऱ्ऱै–और; अङ्कुच तॊळिलुम्–अंकुश-कर्म में (गज चलाने में); तॊक्कार्–निपुण; निरुतियिन्–(दक्षिण-पश्चिम दिशा की पालिका देवी) निऋति के; पिऱन्त वीरर्–जनाए वीर; नॆरुप्पु इटै पॊळियुम्–रह-रहकर आग बरसानेवाले; कण्णर्–नेत्रों के; परितियिल्–सूर्य के समान; पॊलियुम् मॆय्यर्–शोभित शरीर वाले। ८२४

स्रवणशील मदनीर के गजों के वीर युद्धोत्साही दिग्गजों के पालकों के समान सौन्दर्ययुक्त थे। तलवार लेकर युद्ध करने में और वैसे ही अंकुश लेकर (गज चलाते हुए) लड़ने में भी निपुण थे। दक्षिण-पश्चिम दिशा की (पालिका) निऋति के वंशज थे। [इसी निऋति का पुत्र था नैऋति या जिसके वंशज तमिळ में निरुदर्हळ और (संस्कृत) हिन्दी में नऋत कहते हैं। नैऋति को भी दिग्पालक कहा गया है, कहीं-कहीं।] उनकी आँखें आग बरसाती थीं और उनके शरीर सूर्य के समान तेजोवान थे। ८२४

एर्हॆळु तिशैयुञ् जारि पदिनॆट्टु मियल्बि नॆण्णिप्
पोर्हॆळु पडैयुङ् गऱ्ऱ वित्तहप् पुलवर् पोरिल्
तेर्हॆळु मऱवर् यानैच् चेवहर् तिऱत्तिऱ् चॆल्लुम्
तार्हॆळु पुरवि यॆन्नत् तम्मनन् दावप् पोनार् 825

एर् कॆळु तिचैयुम्–गम्य दिशाओं और; चारि पतिनॆट्टुम्–अठारह तरह की अश्वचर्याएँ; इयल्पिल् ऍण्णि–यथाक्रम विचारकर; पोर् कॆळु–युद्धप्रयुक्त; पटैयुम् कऱ्ऱ–हथियार चलाना जिन्होंने सीखा था; वित्तक पुलवर्–वे विद्यापारंगत; पोरिल्–युद्ध में; तेर् कॆळु मऱवर्–रथ चलानेवाले वीरों और; यानै चेवकर्–गज चलानेवाले वीरों के; तिऱत्तिल्–समान प्रकार में; चॆल्लुम्–जानेवाले; तार् कॆळु पुरवि ऍन्न–घंटियों-सहित हारों से अलंकृत अश्वों के ही समान; तम् मनम् ताव–अपने मनों के लपकते चलते; पोनार्–जा रहे थे। ८२५

अश्वसेना के वीर अपनी गम्य दिशाओं और अश्वों की अठारह विध गतियों का, और खूब सोच-समझकर युद्धायुधों को चलाने का अपार ज्ञान रखनेवाले विद्वान् थे। वे भी रथी वीरों और गजसेना के वीरों के समान प्रकार से अपने ही घंटियों-सहित हार से अलंकृत अश्वों के समान अपने मन के लपककर चलते आगे बढ़ते गये। ८२५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्नॆडुन् दाऩै शुऱ्ऱ वमररै यच्चञ् जुऱ्ऱप्
पॊन्नॆडुन् देरिऱ् पोऩान् पॊरुप्पिडै नॆरुप्पिऱ् पॊङ्गित्
तऩ्ऩॆडुङ् गण्गळ् कान्दत् तमऩियक् कवश मार्बिऩ्
मिऩ्ऩिड वॆयिलुम् वीश विल्लिडु मॆयिऱ्ऱु वीरऩ् 826

विल् इटुम्–प्रकाश निकालनेवाले; ऍयिऱ्ऱु वीरऩ्–दंतोरा वीर; पॊरुप्पु इटै–पर्वतमध्य; नॆरुप्पिल् पॊङ्कि–आग के समान भभककर; तऩ् नॆटुम् कण्कळ्–अपनी दीर्घ आँखों को; कान्त–तेज से भरते हुए; तमऩिय कवचम्–स्वर्ण-कवच के; मार्पिऩ् मिऩ्ऩिट–वक्ष पर चमकते; वॆयिलुम् वीच–धूप के समान प्रकाश भी छिटकाते; अ नॆटुम् ताऩै चुऱ्ऱ–(चतुर्विधा) सेना के घेरते आते; अमररै–देवों को; अच्चम् चुऱ्ऱ–भय के घेरते; पॊऩ् नॆटुम् तेरिल्–स्वर्ण के बड़े रथ में; पोऩान्–गया (जम्बुमाली)। ८२६

उज्ज्वल दाँत वाला जम्बुमाली पर्वत-मध्य उठती आग के समान अपनी आँखों से आग उगलते हुए बड़े रथ पर सवार हो गया। उसके वक्ष पर स्वर्ण-कवच चमक रहा था। वह कवच गर्मी भी उगल रहा था। उसके चारों ओर वह बड़ी सेना जा रही थी। इसका साज देखकर देवतागण दहशत खा रहे थे। ८२६

नन्दऩ वऩत्तु णिऩ्ऱ नायहन् ऱूदन् ऱाऩुम्
वन्दिल ररक्क रॆऩ्ऩु मऩत्तिऩऩ् वऴियै नोक्किच्
चन्दिरऩ् मुदल वाऩ मीऩॆलान् दऴुव निऩ्ऱ
इन्दिर तऩुविऱ् ऱोऩ्ऱुन् दोरण मिवर्न्दु निऩ्ऱाऩ् 827

नन्तऩ वऩत्तुळ् निऩ्ऱ–नन्दन वन में जो खड़ा रहा; नायकऩ् तूतऩ् ताऩुम्–नायक श्रीराम का दूत वह हनुमान भी; वन्तिलर् अरक्कर्–नहीं आये राक्षस; ऍऩ्ऩुम् मऩत्तिऩऩ्–ऐसा सोचनेवाले मन का होकर; वऴियै नोक्कि–रास्ता देखते हुए; चन्तिरऩ्–चन्द्र के; मुतलवाऩ मीऩ् ऍलाम्–आदि सभी नक्षत्रों; तऴुव निऩ्ऱ–के साथ स्थित; इन्तिर तऩुविल्–इन्द्रधनुष के समान; तोऩ्ऱुम्–दिखनेवाले; तोरणम्–तोरण पर; इवर्न्तु निऩ्ऱाऩ्–चढ़कर खड़ा रहा। ८२७

उधर नन्दनवन में महावीर हनुमान बैठे हुए यह सोच रहा था कि अभी कोई वीर क्यों लड़ने नहीं आया? वह एक तोरण पर चढ़ा बैठा वह तोरण उस इन्द्रधनुष के समान था, जो चन्द्र और अन्य नक्षत्रों के मध्य; शोभ रहा हो। ८२७

केऴिरु मणियुम् बॊऩ्ऩुम् विशुम्बिरुळ् किऴित्तु नोक्कुम्
ऊऴिरुङ् गदिर्ह ळोडुन् दोरणत् तुम्बर् मेलाऩ्
शूऴिरुङ् गदिर्ह ळॆल्लाऩ् दॊक्किडच् चुडरुञ् जोदि
आऴियि ऩडुवट् टोऩ्ऱु मरुक्कऩै यऩैय नाऩाऩ् 828

केऴ् इरु मणियुम्–रंगीन रत्न; पॊऩ्ऩुम्–और स्वर्ण; विचुम्पु इरुळ्–आकाश के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अँधेरे को; किऴिन्तु नीक्कुम्–विदीर्ण कर हटानेवाली; ऊऴ् इरुम् कतिर्कळोटु–पक्की और बड़ी किरणों के साथ रहे; तोरणत्तु उम्पर् मेलान्–तोरण पर जो रहा; चूऴ् इरुम् कतिर्कळ् ऍल्लाम्–उसको घेरे सभी ज्योतिपुञ्जों के; तोंक्किट–मिले रहते; आऴियिन् नटुवण् तोन्ऱुम्–समुद्रमध्य दिखनेवाले; चुटरुम् चोति अरुक्कत्ते–ज्योतिर्मय किरणमाली अर्क के ही; अत्तैयन् आत्तान्–समान बना। ८२८

वह तोरण चमकीले रंगीन रत्नों और स्वर्ण के साथ आकाश के अन्धकार को चीरकर हटानेवाले प्रकाश की पक्की किरणों से संयुक्त था। उस पर विद्यमान वह समुद्र-मध्य प्रकाशमान सूर्य के समान लगा, जिसके चारों ओर उसकी किरणें फैली हों। ८२८

शॅल्लॉडु मेहञ् जिन्दत् तिरैक्कडल् शिलैप्पुत् तीरक्
कल्लळै किडन्द नाह मुयिरॉडु विडमुङ् गालक्
कॉल्लिय लरक्कर् नञ्जिऱ् कुडिपुह वच्चम् वीरन्
विल्लॅत्त विडिक्क विण्णोर् नडुक्कुऱ वीर त्तार्त्तान् 829

चॅल् ऑटु–गाजों के साथ; मेकम् चिन्त–मेघ गिरकर छितरे; तिरै कटल्–तरंगमय सागर; चिलैप्पु तीर–गर्जन त्याग चुका; कल् अळै किटन्त नाकम्–चट्टानों के बिलों में पड़े रहे सर्पों ने; उयिर् ओटु विटमुम् काल–प्राणों के साथ विष को भी उगल दिया; कॉल्लियल्–परांतक; अरक्कर् नॅञ्चिल्–राक्षसों के दिलों में; अच्चम्–भय ने; कुटि पुक–अड्डा बना लिया; विण्णोर् नटुक्कु उऱ–देव काँप उठे; वीरन् विल् अॅत्त–(इन सबका हेतु बनाते हुए) वीर श्रीराम के धनु (कोदण्ड) के समान; इटिक्क–शोर मचाते हुए; वीरन् आर्त्तान्–महावीर (हनुमान) ने गर्जन किया। ८२९

तब वीर हनुमान ने ऐसा श्रीराम-धनु की टंकार के समान गर्जन किया कि मेघ वज्रों के साथ गिर पड़े; तरंगायमान समुद्र रवहीन बन गया। पर्वत की दरारों में रहे साँपों ने अपने प्राण रक्त के साथ वमन कर लिये! परसंहारक राक्षसों के मन में भय ने घर कर लिया। और देवगण भी दहशत खा गये। ८२९

निन्ऱत्त तिशैक्कण् वेऴ नॅडुङ्गळिच् चॅरुक्कु नीङ्गत्
तॅन्ऱिशै नमनु मुळ्ळन् दुणुक्कॅत्तच् चिन्द वात्तिल्
पॊन्ऱलिन् मीन्ग ळॅल्लाम् पूवॅत्त वुदिरप् पूवुम्
कुन्ऱमुम् बिळक्क वेलै तुळक्कुऱक् कॉट्टि त्तान्ऱोळ् 830

तिचै कण् निन्ऱत्त–दिशाओं में जो खड़े रहे; वेऴम्–उन गजों के; नॅटुम् कळि चॅरुक्कु–अधिक मदमत्तता से उत्पन्न गर्व को; नीङ्क–दूर करते हुए; तॅन् तिचै नमनुम्–दक्षिण दिशा के देवता यम के भी; तुणुक्कु अॅत्त–दहलकर; उळ्ळम् चिन्त–मन के विदीर्ण होते; वात्तिल्–आकाश में; पॊन्ऱल् इल्–अविनश्वर; मीन्कळ् ऍल्लाम्–सभी नक्षत्र; पू अॅत्त उतिर–फूलों के समान चू पड़े; पूवुम् कुन्ऱमुम् पिळक्क–भूमि और पर्वत दलक गये; वेलै तुळक्कु उऱ–समुद्र मथ गया; तोळ् कॉट्टित्तान्–(इन सबको होने देते हुए) हनुमान ने कन्धे ठोंके। ८३०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हनुमान ने अपने कन्धे ठोंके, जिससे दिग्गजों के मदमत्तता से उत्पन्न गर्व चूर हो गये। दक्षिणी दिशा के पालक यम का भी मन दहल उठा। आकाश के अविनश्वर नक्षत्र सभी फूलों के समान गिर गये। भूमि और पर्वत दलक गये। समुद्र विलोडित हो गये। ८३०

अव्वळि यरक्क रॅल्ला मलैनॅडुङ् गडलि नार्त्तार्
शॅव्वळिच् चेऱ लार्ऱार् पिणप्पॅरुङ् गुन्ऱन् देर्ऱि
वॅव्वळिक् कुरुदि वॅळ्ळम् बुडैमिडैन् दुयर्न्दु वीङ्ग
ऍव्वळिच् चेऱु मॅन्ऱार् तमरुडम् बिडऱि वीळ्वार् 831

अ वळि–तब; अरक्कर् ऍल्लाम्–सभी राक्षसों ने; अलै नॅटुम् कटलिन्–तरंगायमान विशाल सागर के समान; आर्त्तार्–नारे निकाले; चॅम् वळि–सीधे मार्ग से; चेऱल् आर्ऱार्–जा नहीं सके; पिण पॅरुम् कुन्ऱम्–बड़े शव-पर्वतों से; तॅर्ऱि–ठोकर खाकर; वॅम् वळि–भयंकर मार्ग में; कुरुति वॅळ्ळम्–(आया) रक्तप्रवाह; पुटै मिटैन्तु–पार्श्व में अधिक हो; उयर्न्तु वीङ्क–बढ़ा और ऊँचा उठा; ऍ वळि चेऱुम्–किस मार्ग से जाएँ; ऍन्ऱार्–इसमें भ्रम करते हुए; तमर्–अपनों के; उटम्पु इटऱि–शवों से ठोकर खाकर; वीळ्वार्–गिरे। ८३१

तब सभी राक्षसों ने मिलकर तरंगायमान विशाल समुद्र के समान नर्दन किया। वे सीधे मार्ग से जा नहीं सके, क्योंकि मार्ग में शवों के पर्वत-सम ढेर पड़े थे। उनसे ठोकर खा गये। पार्श्व में और सामने भयंकर मार्ग में रक्त बहा, बढ़ा और भयंकर बाढ़ बना। किस तरह समराजिर जायँगे? इस संशयजनित हड़बड़ाहट में वे अपने ही लोगों के शवों से ठोकर खाकर गिरते जा रहे थे। ८३१

आण्डुनिन् ऱरक्कन् वॅव्वे ऱणिवहुत् तनिहन् दन्नै
मूण्डिरु पुडैयु मुन्नु मुऱैमुऱै मुडुह वेवित्
तूण्डिनन् ऱातुन् दिण्डेर् तोरणत् तिरुन्द शूरन्
वेण्डिय देदिर्न्द देन्न वीङ्गिनन् विशयत् तिण्डोळ् 832

अरक्कन्–राक्षस जम्बुमाली ने; आण्टु निन्ऱु–वहाँ से; अनिकम् तन्नै–सेना को; वॅव्वेऱु अणि वकुत्तु–अलग-अलग पलटनों में विभाजित करके; इरु पुटैयुम्–दोनों पार्श्वों में; मुन्नुम्–और सामने; मूण्टु–कूच कर; मुऱै मुऱै मुटुक–दलों में जाने की; एवि–आज्ञा देकर; तानुम्–स्वयं; तिण् तेर् तूण्टिनन्–अपना प्रबल रथ चलाया; तोरणत्तु इरुन्त–तोरण पर जो रहा; चूरन्–उस शूर ने; वेण्टियतु ऍतिर्न्ततु–मन-वाञ्छित मिल गया; ऍन्न–समझकर; विचय तिण् तोळ्–विजयी सुदृढ़ कन्धों को; वीङ्किनन्–फुला दिया। ८३२

जम्बुमाली ने वहाँ अपनी सेना को पलटनों में बाँटकर व्यूह बना लिये। उसके दोनों पार्श्वों में आगे और पीछे सेना के भाग आने लगे। वह इनके मध्य अपना सबल रथ चलाता गया। तोरणद्वार पर जो बैठा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रहा, उस हनुमान ने यह देखा और हमारा मनचाहा युद्ध आ गया, इस विचार से उसके कन्धे फूल उठे। ८३२

ऐयनु ममैन्दु निन्ऱा नाऴिया नळवि नाऱ्ऱल्
नॅय्शुडर् विळक्किर् ऱोन्ऱुम् नॅऱ्ऱिये नॅऱ्ऱि याह
मॉय्म्मयिर्च् चेनै पॉङ्ग मुरणमै युहिर्वाण् मॉय्त्त
कैहळे कैह ळाहक् कडैक्कूळै तिरुवा लाह 833

आऴियान्–चक्रधारी (श्रीविष्णु के अवतार श्रीराम) का; अळवु इल् आऱ्ऱल्–अपार बलवान; ऐयनुम्–सम्मान्य (हनुमान) भी; नॅय् चुटर् विळक्किल्–घी डालकर जलाये गये दीप के; तोन्ऱुम्–समान दिखनेवाले; नॅऱ्ऱिये–भाल को ही; नॅऱ्ऱि आक–अग्रगामी सेना बनाकर; मॉय् मयिर्–शरीर के बालों के ही; चेनै पॉङ्क–सेना के वीरों के समान खड़े रहते; मुरण् अमै–सबल; उकिर् वाळ्–नख रूपी तलवारें; मॉय्त्त कैकळे–जिनमें लगी थीं, उन हाथों को; कैकळाक–पार्श्व की सेनाएँ बनाकर; तिरु वाल्–सुन्दर पूँछ को; कटै कळै आक–पिछले भाग की सेना बनाकर; अमैन्तु निन्ऱान्–सम्पूर्ण व्यूह बना खड़ा रहा। ८३३

हनुमान की सेना के व्यूहों की विचित्रता देखिए। चक्रधारी (श्रीविष्णु के अवतार श्रीराम) के उस अतिबली महावीर दूत का घृत की दीप की ज्वाला के समान ज्वलन्त भाल ही आगे की पलटन बना।) उसके शरीर के घने बाल ही सेना के वीर थे। सुदृढ़ नाखून रूपी तलवारों से युक्त उसके दोनों हाथ दोनों ओर की पलटनें बने। उसका मनोरम लांगूल ही पीछे आनेवाली सेना बनी। ८३३

वयिर्हळ्वाल् वळैहळ् विम्म वरिशिलै शिलैप्प मायाप्
पयिर्हळार्प् पॅडुप्प मूरिप् पल्लियङ् गुमुऱप् पऱ्ऱिच्
चॅयिर्हॊळ्वा ळरक्कर् शीऱ्ऱञ् जॅरुक्कित्तर् पडैहळ् शिन्द
वॅयिल्हळ्पो लॊळिहळ् वीश वीरन्मेऱ् कडिदु विट्टार् 834

वयिर्कळ्–तुरहियाँ और; वाल् वळैकळ् विम्म–और सफ़ेद शंख बज उठे; वरि चिलै चिलैप्प–सबन्ध धनु के डोरे की टंकार उठी; माया पयिर्कळ्–पक्षियों का निरन्तर कलरव; आर्प्पु ॲटुप्प–उच्च स्वर में सुनायी दिया; मूरि पल्लियम्–जोरदार अनेक बाजे; कुमुऱ–नाद कर उठे; चॅयिर् कॊळ्–द्वेष-भरे; वाळ् अरक्कर्–तलवारधारी राक्षस; चीऱ्ऱम् चॅरुक्कित्तर्–क्रोधोन्मत्त होकर; वॅयिल्कळ् पोल्–धूप के समान; ऒळिकळ् वीच–प्रकाश निकालते हुए; पटैकळ् पऱ्ऱि–हथियार पकड़कर; चिन्त–फेंकते हुए; वीरन् मेल्–महावीर हनुमान पर; कटितु विट्टार्–तेजी से चलाये। ८३४

तब तुरहियाँ और श्वेत शंख बज उठे। धनु की टंकारें उठीं। पक्षियों का कलरव उच्च हुआ। विविध वाद्य घुमर उठे। द्वेषपूर्ण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राक्षसों ने कोपाक्रान्त होकर धूप के समान गरम प्रकाश छितराते हुए जानेवाले हथियार लेकर महावीर पर बरसा दिये। ८३४

करुङ्गळ् लरक्कर्तम् बडैक्कलङ् गरत्ताल्
पॅरुङ्गड लुऱप्पुडैत् तिऱत्तुहप् पिशैन्दान्
विरिन्दन पॉऱिक्कुल नॅरुप्पॅन वॅहुण्डाण्
डिरुन्दवन् किडन्ददॉ रॅळुत्तरिन् दॅडुत्तान् 835

आण्टु इरुन्तवन्–वहाँ जो रहा; करुम् कळल्–बड़ी-बड़ी पायलधारी; अरक्कर् तम् पटैक्कलम्–राक्षसों के हथियारों को; पॅरुम् कटल् उऱ–बड़े सागर में चले जायँ, ऐसा; करत्ताल्–अपने हाथों से; पुटैत्तु–पीटकर; इऱत्तु–तोड़कर; उक पिचैन्तान्–(हनुमान ने) चूर करते हुए पीस दिया; विरिन्तन–जो फैलती है; पॉऱि कुल नॅरुप्पु अॅन–अंगारों की राशियों के साथ आग के समान; वॅकुण्टु–गुस्सा करके; किटन्ततु ओर् अॅळु–वहाँ जो पड़ा रहा, उस लौहदण्ड को; तॅरिन्तु–चुनकर; अॅटुत्तान्–लिया। ८३५

महावीर ने, जो वहाँ बैठा था, उन बड़ी वीरपायल-धारी राक्षसों के हथियारों को पकड़ा, तोड़ा, पीसा और समुद्र में जा गिरें, ऐसा उछाल दिया। तब अंगारे-मध्य आग के समान (या "पॉऱि" के भ्रमर और अंगारे दो अर्थ होने से—भ्रमरों को उड़ाते हुए) क्रुद्ध बने उसने वहाँ पड़े रहे एक लौहदण्ड को चुन लिया। ८३५

इरुन्दन नॅळुन्दन निऴिन्दन नुयर्न्दान्
तिरिन्दनन् पुरिन्दन नॅननि तॅरियार्
विरिन्दवर् कुविन्दवर् विलङ्गिनर् कलन्दार्
पॉरुन्दिनर् नॅरुङ्गिनर् कळम्बडप् पुडैत्तान् 836

इरुन्तनन्–जो बैठा रहा; अॅळुन्तनन्–उठा; इऴिन्तनन्–उतरा; उयर्न्तान्–तना; तिरिन्तनन्–घूमा; पुरिन्तनन्–युद्ध किया; अॅन–ऐसा; ननि तॅरियार्–ठीक जो जान नहीं सके; विरिन्तवर्–ऐसा फैले; कुविन्तवर्–एकत्र हुए; विलङ्किनर्–अलग हुए; कलन्तार्–मिले; पॉरुन्तिनर्–युद्ध में लगे रहे; नॅरुङ्किनर्–सटे खड़े रहे; कळम् पट–(उन सभी को) खेत रहने देकर; पुटैत्तान्–पीटकर मार दिया। ८३६

जो बैठा रहा वह उठा, नीचे उतरा और तनकर सीधा हुआ। वह कहाँ रहता, कहाँ घूमता और युद्ध करता है, यह न जानते हुए राक्षस सर्वत्र फैले, इकट्ठे हुए और हटे और सटे। युद्ध में लगे और पास आ जुटे। उन सबको हनुमान ने खूब आहत कर खेत रहने दिया। ८३६

अॅऱिन्दन वॅय्दन विडिक्कुमुरु मॅन्नच्
चॅऱिन्दन पडैक्कल मिडक्कैयिऱ् चिदैत्तान्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुऱिन्दत़ दॆरुङ्गरि मुडिन्दत़ तडन्देर्
मऱिन्दत़ परित्तिरळ् वलक्कैयिल् मलैक्क 837

ऍऱिन्तत़–जो फेंके गये; ऍय्तत़–जो चलाये गये; इटिक्कुम् उरुम् ऍन्त़–टूटनेवाली अशनि के समान; चॆऱिन्तत़–सटे जो रहे; पटैक्कलम्–उन हथियारों को; इट कैयिन्–बायें हाथ से; चितैत्तात्–छिन्न-भिन्न कर दिया; वल कैयिन् मलैक्क–दायें हाथ से युद्ध करने पर; तॆरुम् करि–युद्धसमर्थ गज; मुऱिन्तत़–टूटकर मरे; तटम् तेर्–विशाल रथ; मुटिन्तत़–मिटे; परि तिरळ्–अश्ववृन्द; मऱिन्तत़–गिरकर मरे। ८३७

राक्षसों ने जो हथियार फेंके, जिनको चलाया और जो अशनि के समान सामने आये, उन सब हथियारों को हनुमान ने अपने बायें हाथ से बेकार कर दिया। दाहिने हाथ से पीटकर शत्रुसंहारक गजों को मरोड़ दिया। बड़े-बड़े रथ भी मिट गये। अश्ववृन्द भी टूट गिरे और मरे। ८३७

नॆरिन्दत़ तडञ्जुवर् नॆरिन्दत़ पॆरुम्बार्
नॆरिन्दत़ नुहम्बुडै नॆरिन्दत़ वदन्गाल्
नॆरिन्दत़ कॊडिञ्जुह णॆरिन्दत़ वियन्ऱार्
नॆरिन्दत़ कडुम्बरि नॆरिन्दत़ नॆडुन्देर् 838

तटम् चुवर्–(रथों की) बड़ी भित्तियाँ; नॆरिन्तत़–दलक गयीं; पॆरुम् पार्–बड़े पाट; नॆरिन्तत़–चिर गये; नुकम् पुटै नॆरिन्तत़–कूबर टूटे; अतन् काल्–उनके पहिये; नॆरिन्तत़–दलक गये; कॊटिञ्चुकळ्–पीठ; नॆरिन्तत़–टूटे; वियन् तार्–श्रेष्ठ हार; नॆरिन्तत़–टूटे; कटुम् परि नॆरिन्तत़–तीव्रगति अश्व पिस गये; नॆटुम् तेर् नॆरिन्तत़–बड़े रथ दलक गये। ८३८

रथों की भित्तियाँ, पाट, और कूबर सब दलक गये। उनके पहिये टूटे। आसन टूटे। श्रेष्ठ घंटियोंदार दाम टूटे। तीव्रगामी अश्व टूट मरे। इस भाँति बड़े-बड़े रथ मिट गये। ८३८

इऴन्दत़ नॆडुङ्गॊडि यिऴन्दत़ विरुङ्गो
डिऴन्दत़ नॆडुङ्गर मिऴन्दत़ वियन्ऱाळ्
इऴन्दत़ मुऴङ्गॊलि यिऴन्दत़ मदम्बा
डिऴन्दत़ पॆरुङ्गद मिरुङ्गवु ळियात़ै 839

इरुम् कवुळ् यात़ै–बड़े गण्डस्थल वाले गज; नॆटुम् कॊटि–दीर्घ ध्वजाओं से; इऴन्तत़–हीन हो गये; इरुम् कोटु–बड़े दाँत; इऴन्तत़–खो गये; नॆटुम् करम्–लम्बी सूँड़ों से; इऴन्तत़–हीन हो गये; वियन् ताळ्–श्रेष्ठ पैर; इऴन्तत़–खो गये; मुऴङ्कु ऒलि–चिंघाड़ने का स्वर; इऴन्तत़–खो गये; मतम् पाटु इऴन्तत़–मदजल निकाल बहाना छोड़ गये; पॆरुम् कतम्–अपना बड़ा रोष; इऴन्तत़–खो गये। ८३९

बड़े-बड़े गालों वाले गजों पर की ध्वजाएँ ध्वस्त हुईं और वे ध्वजाहीन हो गये। वे दाँतों, सूँड़ों और बड़े पैरों से भी विहीन हो गये। उनकी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चिंघाड़ने की शक्ति भी छूट गयी। मद का बहना भी रुक गया। उनका क्रोध भी उन्हें छोड़ गया। ८३९

ऒडिन्दत़ वुरुण्डत़ वुलन्दत़ पॊलन्ऱार्
इडिन्दत़ वॆरिन्दत़ नॆरिन्दत़ वॆळुन्दाळ्
मडिन्दत़ मऱिन्दत़ मुऱिन्दत़ वयप्पोर्
पडिन्दत़ मुडिन्दत़ किडन्दत़ परिमा 840

परिमा–अश्व; ऒटिन्तत़–टूटे; उरुण्टत़–लुढ़के; उलन्तत़–मरे; पॊलन्तार्–उनके स्वर्ण-दाम (घंटियों वाले); इटिन्तत़–खण्ड-खण्ड हुए; ऎरिन्तत़–जले; नॆरिन्तत़–पिसे; ऎळुम् ताळ्–उठने को उद्यत अश्वों के पैर; मटिन्तत़–मुड़े; मुऱिन्तत़–विकृत हुए; मुऱिन्तत़–टूटे; वय पोर्–कठोर युद्ध में; पटिन्तत़–भूमि पर गिरे; मुटिन्तत़–मरे; किटन्तत़–पड़े रहे। ८४०

अश्ववृन्द मरोड़ खाकर लोटे और मरे। उनके स्वर्णमय दाम टूटे, जले और छितर गये। कुछ अश्व उठने लगे तो उनके पैर मुड़ गये, विकृत हुए और टूट गये। घोर युद्ध में वे भूमि पर गिरे, मरे और पड़े रहे। ८४०

वॆहुण्डत़र् वियन्दत़र् विळुन्दत़ रॆळुन्दार्
मरुण्डत़र् मयङ्गित़र् मऱिन्दत़ रिऱन्दार्
उरुण्डत़ रुलैन्दत़ रुळैन्दत़र् कुळैन्दार्
शुरुण्डत़र् पुरण्डत़र् तॊलैन्दत़र् मलैन्दार् 841

मलैन्तार्–(हनुमान से) जो भिड़े थे; वॆरुण्टत़र्–(उनमें कुछ) भयातुर हुए; वियन्तत़र्–विस्मित हुए; विळुन्तत़र्–भूमि पर लोट गये; ऎळुन्तार्–उनमें कुछ उठे; मरुण्टत़र्–भ्रमित हुए; मयङ्कित़र्–बेहोश हुए; मऱिन्तत़र्–औंधे गिरे; इऱन्तार्–मरे; उरुण्टत़र्–(और कुछ) लुढ़के; उलैन्तत़र्–पीड़ा का अनुभव किया; उळैन्तत़र्–मुरझाये; कुळैन्तार्–पिसकर मर गये; चुरुण्टत़र्–(और कुछ) गोल हुए; पुरण्टत़र्–लोटे; तॊलैन्तत़र्–मरे। ८४१

हनुमान से जो भिड़े, वे भयातुर हुए, विस्मित हुए और धराशायी हुए। कुछ लोग उठे पर वे भ्रान्त हुए, बेहोश हुए और औंधे गिरे। कुछ लोग लोटे, मुरझाये और पिस गये। कितने ही लुढ़के, लोटे और मिट गये। ८४१

करिहॊडु करिहळैक् कळप्पडप् पुडैत्तान्
परिहॊडु परिहळत् तलत्तिडैप् पडुत्तान्
वरिशिलै वयवरै वयवरित् मडित्तान्
निरैमणित् तेर्हळैत् तेर्हळि नॆरित्तान् 842

करि कॊटु–गजों से ही; करिकळै–गजों को; कळप्पट–खेत रहें, ऐसा;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुटैत्तान्–प्रहार किया; परि कॉटु–अश्वों से ही; परिकळै–अश्वों को; तलत्तु इटै–भूमि पर; पटुत्तान्–सुला दिया; वरि चिलै वयवरै–सबन्ध धनुर्धरों को; वयवरिन् मटित्तान्–वीरों से मारकर ही निपाता; निरै मणि तेर्कळै–पंक्तियों में मणियों से अलंकृत रथों को; तेर्कळिन् नॅरित्तान्–रथों से ही चूर कर दिया। ८४२

हनुमान ने गजों को गजों द्वारा पिटवाकर मार दिया। अश्वों को अश्वों से प्रहरित करके धराशायी बना दिया। सबन्ध धनुर्धरों को वीरों से पिटवाकर निपाता। पंक्तियों में मणियों से अलंकृत रथों को रथों से आहत करके तहस-नहस कर दिया। ८४२

मूळैयु मुदिरमु मुळङ्गिरुङ् गुळम्बाय्
मीळरुङ् गुळैपडक् करिविळुन् दळुन्दत्
ताळॉडुन् दलैयुहत् तडनॅडुङ् गिरिपोल्
तॉळॉडु निरुदरै वाळॉडुन् दुहैत्तान् 843

मूळैयुम्–भेजा; उतिरमुम्–और रक्त; मुळङ्कु–शब्दित; इरुम्–विपुल; कुळम्पाय्–मिश्रण बनकर; मीळ् अरुम्–जिससे बाहर आना असाध्य हो, ऐसा; कुळै पट–कर्दम बने; करि विळुन्तु अळुन्त–गज गिरकर मग्न हुए; ताळॉटुम्–पैरों के साथ; तलै उक–सिर बिखरे; तट नॅटुम् किरि पोल्–विशाल और ऊँचे पर्वतों के समान; निरुतरै राक्षसों को; तोळॉटुम्–कन्धों के साथ; वाळॉटुम्–और तलवारों के साथ; तुकैत्तान्–रौंद दिया। ८४३

भेजे और रुधिर मिश्रित हुए और ऐसा कर्दम बन गये कि उसमें गिरे लोग बाहर निकल नहीं सकें। उसमें गज गिरे और मरे। हनुमान ने पैरों और सिरों को तोड़कर बड़े और ऊँचे पर्वतों-जैसे राक्षसों को उनके कन्धों और तलवारों के साथ रौंद दिया। ८४३

मल्लॉडु मलैमलैत् तोळरै वळैवाय्प्
पल्लॉडु नॅडुङ्गरप् पहट्टॉडुम् बरुन्दाळ्
विल्लॉडु मयिलॉडुम् विऱलॉडुम् विळिक्कुम्
शॉल्लॉडु मुयिरॉडु निलत्तॉडुन् दुहैत्तान् 844

मल्लॉटु मलै–मल्लयुद्ध से लड़नेवाले; मलै तोळरै–पर्वत-से कन्धों के राक्षसों को; वळै वाय् पल्लॉटुम्–वक्र मुख के दाँतों के साथ; नॅटुम्–लम्बे; पकटु करम् ऑटुम्–कठोर हाथों से; परुम् ताळ्–मोटे बाजुओं के; विल्लॉटुम्–धनुओं के साथ; अयिलॉटुम्–शक्तियों के साथ; विऱलॉटुम्–वीरता के साथ; विळिक्कुम् चॉल्लॉटुम्–उच्चरित शब्दों के साथ; उयिरॉटुम्–प्राणों के साथ; निलत्तॉटुम्–भूमि के साथ; तुकैत्तान्–रौंद दिया। ८४४

हनुमान ने मल्लयुद्ध करके पर्वत-स्कन्ध राक्षसों को वक्र दाँतों, बड़े और सबल हाथों, मोटे कोरों के चापों, शक्तियों, वीरता, उच्च स्वर और उनके प्राणों के साथ भूमि पर पटककर रौंद दिया। ८४४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुहैनॅडुम् बॉऱिपुहुन् दिशैतॉऱुम् बॉलिन्दान्
चिहैनॅडुञ् जुडर्विडुन् देर्तॉऱुञ् जॅन्ऱान्
तहैनॅडुङ् गरिदॉऱुम् बरितॉऱुञ् जरित्तान्
नहैनॅडु पडैदॉऱुन् दलैदॉऱु नडन्दान् 845

पुकै–धुएँ के साथ; नॅटुम् पॉऱि–बड़े-बड़े अंगारे; पुकुम् तिचै तॉऱुम्–जहाँ घुसते चले उन सभी दिशाओं में; पॉलिन्तान्–शान के साथ दिखायी दिया; चिकै–सिरों पर से; नॅटुम् चुटर् विटुम्–दीर्घ द्युति निःसृत करनेवाले; तेर् तॉऱुम्–रथ जहाँ-जहाँ थे; चॅन्ऱान्–वहाँ गया; तकै नॅटुम्–श्रेष्ठता में बढ़े हुए; करि तॉऱुम् परि तॉऱुम्–गज और अश्व जहाँ-जहाँ थे वहाँ; चरित्तान्–संचार किया; नकै–उसकी हँसी उड़ानेवाले; नॅटुम् पटै तॉऱुम्–विशाल सेना के हर वीर के पास; तलै तॉऱुम्–हर सिर पर; नटन्तान्–चला और ध्वस्त किया। ८४५

चारों दिशाओं में धुएँ-सहित अंगारे फैले और उनके साथ हनुमान भी दिखायी दिया। अपने सिरों से प्रकाश निकालनेवाले रथ-रथ पर, श्रेष्ठ गज-गज पर, अश्व-अश्व पर कूदा। उसकी हँसी जो उड़ा रहे थे, उन राक्षसों के सिरों पर चलकर उसने उनको निहत कर दिया। ८४५

वॅन्ऱिवॅम् बुरवियिन् वॅरिनिनुम् विरवार्
मन्ऱलन् दारणि मार्बिनु मणित्तेर्
ऑन्ऱिनिन् ऱॊन्ऱिनु मुयर्मद मळैताळ्
कुन्ऱिनुङ् गडैयुहत् तुरुमॅनक् कुदित्तान् 846

वॅन्ऱि–विजयशील; वॅम् पुरवियिन्–भयानक अश्वों की; वॅरिनिनुम्–पीठों पर; विरवार्–शत्रुओं के; मन्ऱल् अम् तार्–सुगन्धपूर्ण माला से; अणि मार्पिनुम्–अलंकृत सुन्दर वक्षों पर; मणि तेर्–मनोरम रथ; ऑन्ऱिन् निन्ऱु–एक से; ऑन्ऱिनुम्–दूसरे पर; उयर् मत मळै–अधिक मद-वर्षा; ताळ्–बहानेवाले; कुन्ऱिनुम्–पर्वत-सम गजों पर; कटै युकत्तु–युगान्त में; उरुम् ऍन–गिरनेवाली अशनि के समान; कुतित्तान्–कूदा। ८४६

वह विजयशील अश्व की पीठों पर, सुगन्धित पुष्पमालालंकृत (राक्षसों के) वक्षों पर, सुन्दर रथों में एक से दूसरे पर और अधिक मदस्रावी गजों पर प्रलयकालीन अशनि के समान कूदा। ८४६

पिरिवरु मॊरुपॅरुङ् गोलॅनप् पॅयरा
इरुविनै तुडैत्तव ऱऱिवॅन वॅवर्क्कुम्
वरुमुलै विलैक्कॅन मदित्तनर् वळङ्गुम्
तॅरिवैयर् मनमॅनक करङ्गॅनत् तिरिन्दान् 847

पिरिवु अरुम्–निरन्तर वर्तमान; ऑरु पॅरुम् कोल् ऍन–एक बड़े राजा के दण्ड (शासन) के समान; पॅयरा–अपृथक्; इरुविनै तुटैत्तवर्–कर्मद्वयमुक्त ज्ञानी के; अऱिवु पोलवुम्–ज्ञान के समान; ऍवर्क्कुम्–किसी से भी; वरु मुलै–पुष्ट उरोज;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विलैक्कु ऍऩ मतित्तऩर्-पण्य बनाकर; वळङ्कुम्-भुगतने देनेवाली; तॅरिवैयर् मऩम् ऍऩ-वारांगनाओं के मन के समान; कऱङ्कु ऍऩ-वातचक्र के समान; तिरिन्तान्-हनुमान घूम-घूमकर लड़ा। ८४७

वह कैसे घूमा ? इसका विवरण देखिए— निरन्तर वर्तमान बड़े राजा के शासन-दण्ड के समान (सजग), कर्मद्वयविमुक्त ज्ञानियों के ज्ञान के समान (सूक्ष्म) और अपने मनोरम स्तनों को पण्य-पदार्थ माननेवाली वारवनिताओं के मन के समान और वातचक्र (या पतंग) के समान (एक स्थान पर न रहकर) घूमा। ८४७

अण्णलव् वरियिऩुक् कडियव रवऩ्शीर्
नण्णुव रॅऩुम्बॊरु णवैयऱत् तॅरिप्पान्
मण्णिऩुम् विशुम्बिऩु मरुङ्गिऩुम् वलित्तार्
कण्णिऩु मनत्तिऩुन् दऩित्तऩि कलन्दान् 848

अण्णल्-महावीर; अ अरियिऩुक्कु अटियवर्-उन हरि के दास; अवऩ् चीर् नण्णुवर-उन हरि के दिव्यगुणों को प्राप्त करेंगे; ऍऩुम् पॊरुळ्-यह शास्त्रार्थ; नवै अऱ-निर्दोष रीति से; तॅरिप्पान्-बताते हुए; मण्णिऩुम् विचुम्पिऩुम्-भूमि और आकाश में; मरुङ्किऩुम्-पार्श्वों में; वलित्तार्-ज़ोर से लड़नेवाले राक्षसों की; कण्णिऩुम् मनत्तिऩुम्-आँखों और मन में; तऩि तऩि-अलग-अलग; कलन्तान्-मिला रहा। ८४८

श्रीविष्णुभक्त श्रीविष्णु के गुणों को प्राप्त कर लेते हैं। यह शास्त्रोक्त विषय है। इसको हनुमान विश्वरूप बनकर अपने में प्रमाणित कर रहा था। क्योंकि वह आकाश, भूमि, पार्श्वों और सबल योद्धा राक्षसों की आँखों और मनों में अलग-अलग रहा। ८४८

कॊडित्तडन् देरॊडुङ् गुरहदक् कुळुवै
अडित्तॊरु तडक्कैयि ऩिलत्तिऩिट् टरैत्तान्
इडित्तुनिऩ् ऱदिर्हदत् तॅयिर्ऱुवऩ् पॊरुप्पैप्
पिडित्तॊरु तडक्कैयि ऩुयिरुहप् पिळिन्दान् 849

कॊटि-ध्वजा-सहित; तटम् तेर् ऒटुम्-बड़े रथों के साथ; कुरकत कुळुवै-तुरग-समूह को; ऒरु तट कैयिऩ्-एक बड़े हाथ से; अटित्तु-पीटकर; निलत्तिऩ् इट्टु-भूमि पर डालकर; अरैत्तान्-पीस डाला; इटित्तु निऩ्ऱु अतिर्-बिजली की कड़क के समान चिंघाड़नेवाले; कतत्तु-क्रुद्ध; ऍयिऱ्ऱु-दाँतों वाले; वऩ् पॊरुप्पै-सबल पर्वतों (गजों) को; ऒरु तट कैयिऩ् पिटित्तु-दूसरे बड़े हाथ से पकड़कर; उयिर् उक-प्राणों को निकालते हुए; पिळिन्तान्-निचोड़ दिया। ८४९

हनुमान ने एक हाथ से पताका-भूषित रथों के साथ तुरगवृन्द को प्रहरित करके भूमि पर डालकर पीस दिया। अपने दूसरे हाथ से अशनि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के समान चिंघाड़ की ध्वनि निकालनेवाले, क्रुद्ध, बड़े दाँतों वाले और पर्वत-सम गजों को ऐसा निचोड़ा कि उनके प्राण निकल गये। ८४९

कऱुत्तॆळु मऩत्तिऩ रॆयिऱ्ऱिऩर् कयिऱ्ऱार्
शॆऱुत्तॆरि विऴिप्पवर् शिहैक्कळु वलत्तार्
वॆऱुत्तॆळु मऱलिह ळिवरॆऩ वॆदिर्न्दार्
ऒऱुत्तुरुत् तिरऩॆऩत् तऩित्तऩि युदैत्ताऩ् 850

कऱुत्तु ऎळु मऩत्तिऩर्–क्रुद्धमन; ऎयिऱ्ऱिऩर्–दंतोरे; कयिऱ्ऱार्–पाशहस्त; चॆऱुत्तु–शत्रुता करके; ऎरि विऴिप्पवर्–आग-जैसी दृष्टि फेंकनेवाले; चिकै–तीक्ष्ण; कळु–शूल के; वलत्तार्–बलशाली; वॆऱुत्तु ऎळु–शत्रुता करके चढ़ आनेवाले; मऱलिकळ् इवरॆऩ–यम हैं ये, ऐसा; ऎतिर्न्तार्–चढ़ आये; ऒऱुत्तु–उनको दण्डित करके; उरुत्तिरऩ् ऎऩ–रुद्र के समान; तऩि तऩि–अलग-अलग; उतैत्ताऩ्–लात मारी (हनुमान ने)। ८५०

क्रुद्धमन, भयंकर दाँतों वाले, पाशहस्त, वैर के साथ आग बरसाते हुए देखनेवाली आँखों के और तीक्ष्ण त्रिशूलधारी राक्षस द्वेष से उठ आनेवाले यम के समान लगे, तो हनुमान ने रुद्र के समान उन्हें दण्डित करके अलग-अलग लताड़ा। ८५०

शक्करन् दोमर मुलक्कैदण् डयिल्वाळ्
मिक्कऩ तेर्परि कुडैहॊडि विरवि
उक्कऩ कुरुदियम् बॆरुन्दिरै युरुट्टप्
पुक्कऩ कडलिडै नॆडुङ्गरप् पूट्कै 851

उक्कऩ कुरुति अम्–(राक्षसों के) बहाए रक्त-प्रवाह की; पॆरुम् तिरै–बड़ी-बड़ी लहरों के; उरुट्ट–लुढ़का ले जाने से; चक्करम्–चक्र; तोमरम्–तोमर; उलक्कै–मूसल; तण्टु–गदाएँ; अयिल्–शक्तियाँ; वाळ्–तलवारें; मिक्कऩ–अधिक हुईं; तेर्–रथ; परि–अश्व; कुटै–छत्र; कॊटि–पताकाएँ; विरवि–मिलकर; नॆटुम् कर–लम्बी सूँड़ों वाले; पूट्कै–गज; कटल् इटै–समुद्र में; पुक्कऩ–घुस गये। ८५१

राक्षसों के शरीरों से जो रक्त बहा उसका प्रवाह बना। उस प्रवाह की बड़ी-बड़ी लहरें चक्रायुध, तोमर, मूसल, दण्ड, शक्तियाँ और तलवारें बहा ले गयीं। वे बहुत संख्या में रहीं। उनके साथ रथ, अश्व, छत्र और ध्वजाएँ मिल गयीं। लम्बी सूँड़ वाले गज भी उनके साथ जाकर समुद्र में डूब गये। ८५१

ऎट्टिऩ विशुम्बिऩै यॆऱिपड वॆळुन्द
मुट्टिऩ मलैहळै मुयङ्गिऩ तिशैयै
ऒट्टिऩ वॊऩ्ऱैयॊऩ् ऱूडडित् तुडैन्दु
तट्टुमुट् टाडिऩ तलैयॊड तलैहळ् 852

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तलैकळ्–राक्षसों के सिर; ऍऱिपट–फेंके जाकर; ऍऴुन्त–ऊपर उठे; विचुम्पिऩै ऍट्टिऩ–आकाश में पहुँचे; मलैकळै मुट्टिऩ–पर्वतों से टकराये; तिचैयै मुयङ्किऩ–दिशाओं पर लग गये; ऑऩ्ऱै ऑऩ्ऱु–एक-दूसरे से; ऊटु अटित्तु–घुसकर गुथकर; उटैन्तु–टूटे और; ऑट्टिऩ–परस्पर चिपक गये; तलैयॊटु–अन्य सिरों के साथ; तट्टु मुट्टु–कूड़े-करकट; आटिऩ–बने यत्र-तत्र पड़े रहे। ८५२

राक्षसों के सिर हनुमान द्वारा उछाले जाकर उठे और आकाश में पहुँच गये। पर्वतों से टकराये। दिशाओं में जा लगे। बीच में एक-दूसरे से खूब दबाए जाकर चिपक गये। अन्य सिरों के साथ मिलकर कूड़े-करकटों के समान तितर-बितर पड़े रहे। ८५२

कानै कावल् वेऴक् कणङ्गळ् कदवा ळरिहॊल्ल
वानै यॆय्दत् तनियै निन्ऱ मदमाल् वरैयॊप्पान्
तेनै पुरैहण् कनले शॊरियच् चीऱऱञ् जॆरुक्किन्ऱान्
तानै यानान् शम्बु मालि कालन् ऱनयॊप्पान् 853

कानै कावल्–वन को ही अपनी सुरक्षा का स्थान माननेवाले; वेऴक्कणङ्कळ्–गजयूथों को; कत वाळ् अरि–क्रुद्ध और छविमान सिंह के; कॊल्ल–मारने पर; वानै ऍय्त–वे मरकर स्वर्ग गये; तनियै निन्ऱ–तब जो अकेले खड़ा रहा; मत माल् वरै–उस मत्त बड़े गज; ऑप्पान्–के समान रहा; कालन् तनै–यम की; ऑप्पान्–समता करनेवाला; चम्पुमालि–जम्बुमाली; तानै आनान्–अकेला हो गया; तेनै पुरै कण्–शहद-सम (लाल) आँखें; कनले चॊरिय–आग बरसातीं; चीऱऱम् चॆरुक्किन्ऱान्–गुस्से में बढ़ता जाता। ८५३

वन को ही अपना सुरक्षित स्थान समझनेवाले गजों को एक सिंह ने मार दिया तो वे सब व्योमलोक चले गये। तब एक ही गज बचा और वह एकाकी खड़ा रहा। ऐसे एक गज की स्थिति में यम-सम जम्बुमाली, अकेला होकर बहुत क्रुद्ध हुआ और उसकी शहद के रंग की आँखों से आग ही बरस पड़ी। ८५३

काऱ्ऱिऱ् कडिय कलिनप् पुरवि निरुदर् कळत्तुक्कार्
आऱ्ऱुक् कुरुदि निणत्तो डडुत्त वळ्ळऱ् पॆरुङ्गॊळ्ळैच्
चेऱ्ऱिऱ् चॆल्लात् तेरि नाऴि याऴु निलैतेरा
वीऱ्ऱुच् चॆल्लुम् वॆळियो विल्लै यळियन् विरैहिन्ऱान् 854

काऱ्ऱिल् कटिय–वायु से भी अधिक तेज चलनेवाले; कलिऩ पुरवि–लगाम-लगे अश्वों (के); निरुतर्–राक्षस वीर; कळत्तु उक्कार्–समराजिर में निहत हुए; कुरुति आऱ्ऱु–रक्त-नदी में; निणत्तोटु अटुत्त–मांस-मज्जे के साथ मिले; अळ्ळल् पॆरुम् कॊळ्ळै–बहुत ही अधिक; चेऱ्ऱिल्–कर्दम में; चॆल्ला–जो चल नहीं सका; तेरिऩ्–उस रथ के; आऴि–पहिये; आऴुम् निलै तेरा–धँसते रहे, वह स्थिति न जानकर; वीऱ्ऱु चल्लुम् वॆळियो–अलग जाने का मार्ग भी; इल्लै–नहीं रहा, इसलिए;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अळियन्-दीन (जम्बुमाली); विरैकिन्ऱान्-सवेग जाता (जाने का प्रयास करता) है। ८५४

वायु से भी अधिक तीव्र गति से चलनेवाले लगाम-लगे अश्वों के वीर खेत रह गये। रक्त-नदी में मांस-मज्जे के बने गहरे कर्दम में रथ फँस जाता था। आगे नहीं जा सके। उसके पहिये धँसते जाते थे, उस बात को जम्बुमाली नहीं जान सका। दूसरा कोई मार्ग भी नहीं रहा। जम्बुमाली, जो दयनीय स्थिति में रहा, अपने रथ को उस स्थिति में तेज़ चलाए जा रहा था। ८५४

एदि यॊन्ऱाऱ् ऱेरु मः(ह्)दा लॆळियो रुयिर्हॊडल्
नीदि यन्ऱा लुडन्वन् दोरैक् काक्कुम् निलैयिल्लाय्
शादि यन्ऱे पिऱिदॆन् शॆय्दि यवर्पिन् ऱनिनिन्ऱाय्
पोदि यॆन्ऱान् पूत्त मरम्बोऱ् पुण्णाऱ् पॊलिहिन्ऱान् 855

पूत्त मरम् पोल्-पुष्पित पेड़ के समान; पुण्णाल् पॊलिकिन्ऱान्-व्रणों के साथ शोभायमान (हनुमान) ने; एति ऒन्ऱाल्-हथियार एक ही (तुम्हारे पास) है; तेरुम् अ..तु आल्-रथ भी वही; उटन् वन्तोरै-साथ आये लोगों की; काक्कुम् निलै इल्लाय्-रक्षा करने की स्थिति में नहीं हो; अवर् पिन् तनि निन्ऱाय्-उनके (मरने के) बाद अकेले बचे हो; ऍळियोर्-दीनहीनों की; उयिर् कोटल्-जान लेना; नीति अन्ऱाल्-न्याय-सम्मत नहीं है, इसलिए; चाति-(लड़ोगे तो) मरोगे; पिऱितु ऍन् चॆय्ति-फिर क्या करो; पोति-चले जाओ; ऍन्ऱान्-कहा। ८५५

पुष्पित तरु-सदृश व्रणों से शोभित पवनसूनु ने जम्बुमाली को समझाया। तुम्हारे पास एक ही हथियार बचा है। साथ आये वीरों की रक्षा करने की स्थिति में नहीं रहे। वे चल बसे और तुम एकाकी खड़े रहते हो। दीन-हीनों को मारना न्यायसंगत नहीं होगा। तुम लड़ोगे तो अवश्य मरोगे। फिर क्या करोगे ? जाओ। ८५५

नन्ऱु नन्ऱुन् करुणै यॆन्ऩा नॆरुप्पु नहनक्कान्
पॊन्ऱु वारि नॊरुव नॆन्ऱाय् पोलु मॆनैयॆन्ऩा
वन्ऱिण् शिलैयिन् वयिरक् कालाल् वडित्तिण् शुडर्वाळि
ऒन्ऱु पत्तु नूऱु नूऱा यिरमु मुदैप्पित्तान् 856

उन् करुणै-तुम्हारी दया; नन्ऱु नन्ऱु-भली रही, भली; ऍन्ऩा-कहकर; नॆरुप्पु नक-आग प्रकट करते हुए; नक्कान्-हँसा (जम्बुमाली); ऍनै-मुझे; पॊन्ऱुवारिन् ऒरुवन्-मरनेवालों में एक; ऍन्ऱाय् पोलुम्-एक कहते (गिनते) हो क्या; ऍन्ऩा-कहकर; वन् तिण्-बड़े और कठोर; चिलैयिन् वयिर कालाल्-धनु के वज्र-सम पैरों द्वारा; वटि तिण् चुटर् वाळि-तेज, कठोर और ज्वलन्त शर; ऒन्ऱु-एक-एक; पत्तु-दहाई में; नूऱु-सैकड़ों और; नूऱायिरमुम्-लाखों में; उतैप्पित्तान्-ठुकवाया (तमिळ में धनुओं के "पैरों से ठुकवाना" मुहावरा है।)। ८५६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जम्बुमाली ने उत्तर में कहा कि तुम्हारी करुणा भी अच्छी है ! अच्छी ! वह आग निकालते हुए हँसा। उसने कहा कि क्या तुमने मुझे मरनेवालों में एक समझ रखा है ? यह कहकर उसने अपने सशक्त कठोर धनु से तेज़ और ज्वलन्त शरों को एक में, दशक में, शतक में, सहस्रों के दल में और लाखों के दलों में चलाया। (धनु के पैरों द्वारा ठुकवाया —यह तमिऴ का अनूठा चित्र है। इधर पैर धनु के दोनों बाज़ू हैं।)। ८५६

शॅय्दि शॅय्दि शिलैहैक् कॊण्डाल् वॅरुङ्गै तिरिवोरै
नॊय्दिन् वॅल्व दरिदो वॅन्ना मुऱुव लुऱनक्कान्
अय्य नङ्गु मिङ्गुङ् गाला लऴियु मऴैयॅन्न
ऍय्द वॅय्द पहऴि यॅल्ला मॅऴुवाल् वऴुवित्तान् 857

अय्यन्–श्रेष्ठ हनुमान; चिलै कै कॊण्टाल्–धनु हाथ में लोगे तो; वॅरुम् कै तिरिवोरै–खाली हाथ फिरनेवालों को; नॊय्तिन् वॅल्वतु–आसानी से जीतना; अरितो–कठिन होगा क्या; चॅय्ति चॅय्ति–करो, करो; ऍन्ना–कहकर; मुऱुवल् उऱ–दांत प्रकट करते हुए; नक्कान्–हँसा; ऍय्त ऍय्त–प्रेषित होते-होते; पकऴि ऍल्लाम्–सभी शरों को; कालाल्–पवन द्वारा; अऴियुम् मऴै ऍन्न–बिखेरे जानेवाले मेघों के समान; ऍऴुवाल्–लौहदण्ड से; अङ्कुम् इङ्कुम्–इधर-उधर; वऴुवित्तान्–(निशाना) चूककर छितर जाने दिया। ८५७

महिमावान हनुमान ने व्यंग्य किया। धनु हाथ में लो और निरायुध फिरनेवाले पर जीत पाओ, सुगमता से ! क्या यह कोई कठिन काम है ? करो, करो ! फिर वह दाँत प्रकट करते हुए हँसा। जम्बुमाली ने जितने ही शर चलाए उन सबको उसने पवन से छितरायी जाकर बेकार होनेवाली वर्षा की धाराओं के समान अपने लौहदण्ड से तितर-बितर करके इधर-उधर डाल दिया। ८५७

मुऱ्ऱ मुनिन्द निरुदन् मुनिया मुन्नुम् बिन्नुञ्जॅन्
ऱुऱ्ऱ पहऴि युऱादु मुऱिया वुदिर्हिन् ऱदैयुन्नाच्
चुऱ्ऱु नॅडुन्दे रोट्टित् तॊडर्न्दान् ऱॊडरुन् दुऱैहाणान्
वॅऱ्ऱि यॅऴुवॅप् पिऱैवा यम्बा लऱुत्तु वीऴ्त्तिनान् 858

मुऱ्ऱ मुनिन्त–निपट क्रुद्ध; निरुतन्–राक्षस; मुनिया–और भी गुस्सा करके; मुन्नुम् पिन्नुम्–सामने और पीछे; चॅन्ऱु उऱ्ऱ–जा जो लगे; पकऴि–वे शर; उऱादु–हनुमान पर न लगकर; मुऱिया–टूटकर; उतिर्किन्ऱतै–चू जाते हैं, उसको; उन्ना–सोचकर; चुऱ्ऱु–हनुमान के चारों ओर घूमकर; नॅटुम् तेर् ओट्टि–बड़े रथ को चलाते हुए; तॊटर्न्तान्–पास गया; तॊटरुम् तुऱै–(बिल्कुल) पास जाने का मार्ग; काणान्–न देखकर; वॅऱ्ऱि ऍऴुवै–विजय दिलाते रहे लौहदण्ड को; पिऱैवाय् अम्पाल्–अर्द्धचन्द्र बाण से; अऱुत्तु–काटकर; वीऴ्त्तिनान्–गिरा दिया। ८५८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जम्बुमाली पहले ही सम्पूर्ण रूप से क्रुद्ध था। अब वह और भी अधिक कोपाक्रान्त हुआ। उसने देखा कि वह जो शर हनुमान के चारों ओर, आगे, पीछे और पार्श्वों में भेज रहा है, वे सब हनुमान पर नहीं लगते वरन् टूटकर बिखर जाते हैं। अपने रथ को उसके पास पहुँचाना चाहा पर रास्ता नहीं मिला। उसने एक अर्द्धचन्द्र बाण से विजय दिलाते रहे उस लौहदण्ड को खण्ड-खण्ड बनाकर गिरा दिया। ८५८

शलित्ता नैयन् कैया लॅय्युञ् जरत्तै युहच्चाडि
ऑलित्ता नमरर् कण्डा रार्प्पत् तेरि नुट्पुक्कुक्
कलित्तान् शिलैयैक् कैयाल् वाङ्गिक् कळुत्ति निडैयिट्टु
वलित्तान् पहुवाय् मडित्तु मलैपोर् उलैमण् णिडैवीळ् 859

ऐयन्–सम्मानित महावीर ने; अॅय्युम् चरत्तै–प्रेरित शरों को; कैयाल्–हाथों से; उक–गिराते हुए; चाटि–पीटकर; चलित्तान्–ऊबकर; अमरर् कण्टु आर्प्प–देवों के देखकर सन्तोष-रव करते; ऑलित्तान्–नारे लगाते हुए; कलित्तान्–गर्वीले; तेरिनुळ् पुक्कु–(राक्षस के) रथ में घुसकर; चिलैयै–धनु को; कैयाल् वाङ्कि–अपने हाथ से छीन लेकर; पकुवाय् मटित्तु–बड़े अधर मोड़कर; मलै पोल् तलै–पर्वताकार सिर को; मण्णिन् इटै वीळ्–भूमि पर गिराते हुए; कळुत्तिन् इटै यिट्टु–गले में डालकर; वलित्तान्–खींचा। ८५९

श्रेष्ठ हनुमान आनेवाले शरों को हाथों से रोककर उन्हें मारते-मारते ऊब उठा। इसलिए उसने एक ऐसा गम्भीर नारा लगाया, जिसको सुनकर अमरगण आनन्द ध्वनि कर उठे। वह गर्वीले जम्बुमाली के रथ में उछलकर घुसा। उसने उसके धनु को अपने हाथ से पकड़कर छीना और उसे उसके गले में डालकर खींचा कि उसका बड़ा खुला मुख बन्द हुआ और उसका पर्वत-सदृश मस्तक धरती पर लोट गया। ८५९

कुदित्तुत् तेरुङ् गोल्हॉ ळाळुम् बरियुङ् गुळम्बाह
मिदित्तुप् पॅयर्न्दु नॅडुन्दो रणत्तै वीरन् मेऱ्कॉण्डान्
कदित्तुप् पळिन्दु कळिन्दार् पॅरुमै कण्डु कळत्तज्जि
उदित्तुप् पुलर्न्द तोल्वो लुरुवत् तमर रोडिनराल् 860

वीरन्–महावीर; कुतित्तु–नीचे कूदकर; तेरुम्–रथ और; कोल् कॉळ् आळुम्–वेत्रधारी सारथी; परियुम्–और अश्वों को; कुळम्पाक–कर्दम बनाते हुए; मितित्तु–रौंदकर; पॅयर्न्तु–वहाँ से हटकर; नॅटुम् तोरणत्तै–ऊँचे तोरण; मेऱ् कॉण्टान्–पर चढ़ बैठा; अमरर्–(अशोकवन-पाल) ऋतुदेव; कति तुप्पु–चलने की शक्ति; अळिन्तु–खोकर; पॅरुमै कण्टु–हनुमान का प्रताप देखकर; कळत्तु–समराजिर से; अञ्चि कळिन्तार्–डरकर जो हटे; उतित्तुप् पुलर्न्त–मोटा बनकर जो सूख गया हो; तोल् पोल् उरुवत्तु–उस चमड़े के समान शरीर के होकर; ओटिनर्–भागे। ८६०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

महावीर उस रथ से नीचे कूदा। उसने रथ को, वेत्रधारी सारथी को और अश्वों को रौंदकर कीच बना दी। फिर वहाँ से गया और तोरण-द्वार पर चढ़ बैठ गया। अशोकवनपालक ऋतुदेवता यह देखकर अपनी चलने की शक्ति ही खो गये। हनुमान का पराक्रम देखकर वे डरकर वहाँ से भाग निकले। फूलकर सूखी खाल के समान आकार के वे दौड़े। ८६०

पिरिन्दु पुलम्बु महळिर् काणक् कणवर् पिणम्बऱ्ऱि
विरिन्द कुरुदिप् पेरा ऱीर्त्तु मनैह् डॊऱुम्वीश
इरिन्द दिलङ्गै यॆळुन्द दळुहै यिन्ऱिङ् गिवनाले
चरिन्द दरक्कर् वलियॆन् ऱॆण्णि यऱमुन् दळिर्त्तदाल् 861

विरिन्त–फैले हुए; कुरुति–रक्त की; पेर् आऱु–बड़ी नदी ने; पिरिन्तु पुलम्पुम्–वियुक्त होकर विलपनेवाली; मकळिर् काण–(राक्षस-) स्त्रियाँ देख लें, ऐसा; कणवर् पिणम् पऱ्ऱि–उनके पतियों के शवों को पकड़; ईर्त्तु–खींचकर; मनैकळ् तॊऱुम्–घर-घर में; वीच–फेंक दिया तो; इलङ्कै–लंका नगर (वासी); इरिन्ततु–अस्त-व्यस्त (हुए); अळुकै ऍळुन्ततु–रुदन-स्वर उठा; इन्ऱु–अब; इङ्कु–यहाँ; इवनाले–इससे; अरक्कर् वलि–राक्षसों का बल; चरिन्ततु–लट गया; ऍन्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; अऱमुम् तळिर्त्ततु–धर्म भी लहलहा उठा। ८६१

फैला रक्त-प्रवाह बड़ी नदी के रूप में बहा। उसने विरह में विलाप करनेवाली राक्षसियों के प्रत्यक्ष देखने के लिए उनके पतियों के शवों को खींच लेकर घर-घर पहुँचा दिया। यह देखकर लंका अस्त-व्यस्त हो गयी। सर्वत्र रुदन का स्वर उठा। धर्म ने सोचा कि अब मारुति इस लंका में राक्षसों का बल ढहा दिया। वह लहलहा उठा। ८६१

पुक्का रमरर् पॊलन्दा ररक्कन् पॊरुविल् पॆरुङ्गोयिल्
विक्का निन्ऱार् विळम्ब लाऱ्ऱार् वॆरुवि विम्मुवार्
नक्का नरक्क नडुङ्ग लॆन्ऱा नैया नमरॆलाम्
उक्कार् शम्बु मालि युलन्दा नॊन्ऱे कुरङ्गॆन्ऱार् 862

पॊलन् तार् अरक्कन्–स्वर्णहारालंकृत राक्षस (रावण) के; पॊरुवु इल्–अनुपम; पॆरुम् कोयिल्–बड़े महल में; अमरर् पुक्कार्–देव पहुँचे; विक्का निन्ऱार्–सुबकते खड़े रहे; विळम्पल् आऱ्ऱार्–बोल नहीं सके; वॆरुवि–डरकर; विम्मुवार्–तरसे; अरक्कन्–राक्षस; नक्कान्–हँसा; नडुङ्कल् ऍन्ऱान्–मत डरो, कहा; ऐया–प्रभु; नमर् ऍलाम्–हमारे सभी; उक्कार्–मर गये; चम्पुमाली–जम्बुमाली; उलन्तान्–मिट गया; ऒन्ऱे कुरङ्कु–एक ही वानर है; ऍन्ऱार्–कहा (उन्होंने)। ८६२

वे ऋतुदेवता स्वर्णहारधारी राक्षस के अनुपम और बड़े महल में गये। वहाँ सुबकते खड़े रहे। बोलने की शक्ति भी जाती रही। डर से भरे रहे। राक्षस हँसा। मत डरो, कहकर उसने धैर्य बँधाया। तब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उन्होंने कहा कि हमारे सब निहत हो गये। जम्बुमाली भी मर गया। आखिर वानर एक ही है! । ८६२

ऎऩ्ऩु मळवि ऩॆरिन्दु वीङ्गि यॆऴुन्द वॆहुळियाऩ्
उऩ्ऩ वुऩ्ऩ वुदिरक् कुमिऴि विऴियू डुमिऴ्हिऩ्ऱाऩ्
शॊऩ्ऩ कुरङ्गै याऩे पिडिप्पेऩ् कडिदु तॊडर्न्दॆऩ्ऱाऩ्
अऩ्ऩ दुणर्न्द शेऩैत् तलैव रैव रऱिवित्तार् 863

ऎऩ्ऩुम् अळविल्–यह कहने मात्र से; ऎरिन्तु–जलकर; वीङ्कि ऎऴुन्त–बढ़कर जो उठा; वॆकुळियाऩ्–उस कोप के राक्षस ने; उऩ्ऩ उऩ्ऩ–ज्यों-ज्यों स्मरण करता; विऴियूटु–दृष्टि के साथ; उतिर कुमुऴि–रक्त के बुलबुले; उमिऴ्किऩ्ऱाऩ्–निकालता; चॊऩ्ऩ कुरङ्कै–तुम्हारे उक्त मर्कट को; याऩे–मैं ही; कटिदु तॊटर्न्तु–शीघ्र जाकर; पिटिप्पॆऩ्–पकड़ूँगा; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा; अऩ्ऩतु उणर्न्त–उसे सुनकर; चेऩै तलैवर् ऐवर्–पंच सेनापतियों ने; अऱिवित्तार्–समझाया। ८६३

ज्योंही उन्होंने यह बात सुनायी, त्योंही रावण कोपाक्रांत हुआ। कोप जलते हुए बढ़ उठा। ज्यों-ज्यों जम्बुमाली के मरण की बात सोचता, त्यों-त्यों उसकी आँखों से रक्त के बुलबुले छूटते। उसने कहा कि मैं ही शीघ्र जाऊँगा और तुम्हारे उक्त वानर को पकड़ूँगा। पंच सेनापतियों ने उसे सुना तो वे उसे समझाने लगे। ८६३

9. पञ्ज शेऩापतिहळ् वदैप् पडलम् (पंच सेनापति-वध पटल)

शिलन्दि युण्बदोर् कुरङ्गिऩ्मेऱ् चेऱियेऱ् रिऱलोय्
कलन्द पोरिऩिऩ् कट्पुलक् कडुङ्गऩल् कदुव
उलन्द माल्वरै यरुविया रॊऴुक्कऱ्ऱु दीक्कप्
पुलर्न्द मामदम् बूक्कुमऩ् ऱेदिशैप् पूट्कै 864

तिऱलोय्–शक्तिमन्त; चिलन्ति उण्पतु–मकड़ी (पकड़कर) खानेवाले; ओर् कुऱङ्किऩ् मेल्–एक वानर पर; चेऱियेल्–चढ़ने जाएँगे तो; कलन्त पोरिल्–आपसे हुए युद्ध में; निऩ् कण् पुलम्–आपकी आँख की इन्द्रिय से निकली; कटुम् कऩल्–घोर आग के; कतुव–जलने से; उलन्त माल् वरै–जो सूख गया उस उन्नत बड़े पर्वत में; अरुवि आऱ्–बहती नदी के; ऒऴुक्कु अऱ्ऱतु ऒक्क–बहाव के सूख जाने के समान; तिचै पूट्कै–दिग्गजों का; पुलर्न्त मा मतम्–सूखा बड़ा मद; पूक्कुम् अऩ्ऱे–फिर से ताज़ा हो जायगा न। ८६४

(उन सेनापतियों ने कहा—) शक्तिमंत! अगर आप मकड़ी खानेवाले एक वानर पर चढ़ जाएँगे, तो दिग्गजों का मद फिर से ताज़ा होकर बहने नहीं लगेगा? अभी यह गरमी में बड़े पर्वतों पर की नदी-जैसे सूखा हुआ है। वह तब सूखा था, जब आपके साथ हुए युद्ध में आपकी आँखों से निकली आग उन पर पड़ी थी। ८६४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इलङ्गु वॆञ्जिनत् तञ्जिऱै यॆऱुळ्वलिक् कलुळन्
उलङ्गिन् मेलॆळुन् दॆन्ननी कुरङ्गिन्मे लुरुक्किन्
अलङ्गन् मालैनिन् पुयनिनैन् दल्लुनन् बहलुम्
कुलुङ्गुम् वन्रुयर् नीङ्गुमाल् वॆळ्ळियङ् गुन्ऱम् 865

इलङ्कु–विद्यमान; वॆम् चिनत्तु–कठोर कोप वाला; अम् चिऱै–सुन्दर पंखों वाला; अॆऱुळ् वलि कलुळन्–अतिबलशाली गरुड़; उलङ्किन् मेल्–मच्छर पर; अॆळुन्तु अॆन्त–चढ़ आया जैसा; नी–आप; कुरङ्किन् मेल्–वानर पर; उरुक्किन्–शत्रुता करके जाएँगे तो; वॆळ्ळि अम् कुन्ऱम्–चाँदी का सुन्दर पर्वत (कैलास); अलङ्कल् मालै–हिलनेवाली माला के; निन् पुयम् निनैन्तु–तुम्हारी भुजाओं का स्मरण करके; अल्लुम् नल् पकलुम्–रात और अच्छे दिन में भी; कुलुङ्कुम् वन् तुयर्–कँपानेवाले कठोर दुःख से; नीङ्कुम्–मुक्त हो जायगा न। ८६५

भयंकर कोप और मनोरम पंखों के साथ शोभनेवाला अति बली गरुड़ एक मच्छर पर चढ़ जाता जैसे आप एक वानर से युद्ध करने जायँ, तो चाँदी का मनोरम पर्वत (कैलास) कँपानेवाले भय के कष्ट से विमुक्त हो जायगा! अब वह आपके हिलनेवाली मालाओं से अलंकृत कन्धों के बल का स्मरण करके रात और दिन काँपता रहता है! । ८६५

उरुव दॆन्गॊलो वुरनळि वॆन्बदॊन् रुडैयार्
पॆरुव दियादॊन्रुङ् गाण्गिलर् केट्किलर् पॆयर्न्दार्
शिरुमै यीदॊप्प दियादुनी कुरङ्गिन्मेऱ् चॆल्लिन्
मुरुवल् पूक्कुमन् ऱॆनिन्ऱ मूवर्क्कु मुहङ्गळ् 866

नी–आप; कुरङ्किन् मेल्–वानर के विरुद्ध; चॆल्लिन्–लड़ने जाएँगे तो; उरुवतु अॆन् कॊलो–मिलनेवाला क्या है; चिरुमै ईतु–लघुता के इस काम की; ऒप्पतु यातु–समानता करनेवाला क्या काम है; उरन् अळिवु अॆन्पतु–बल मिट जायगा, यह; ऒन्ऱु उटैयार्–(निश्चय) रखनेवाले (त्रिमूर्ति); पॆरुवतु यातॊन्ऱुम् काण्किलर्–प्राप्त करना कुछ न देखकर; केट्किलर्–सुनकर; पॆयर्न्तार्–(विना युद्ध किये ही) हट गये; निन्ऱु मूवर्क्कुम्–वैसे हटकर खड़े हुए त्रिदेवों के; मुकङ्कळ्–मुख; मुरुवल् पूक्कुम् अन्ऱै–हास के साथ फूल उठेंगे न। ८६६

आपके, बन्दर के विरुद्ध लड़ने जाने में क्या गौरव होगा? (उसके विपरीत) इसके समान लघुता का काम क्या है? स्वयं त्रिदेवों ने आप से लड़ने में अपने बल की हानि के सिवा कुछ नहीं देखी, न सुनी; और वे समर से हट गये। अब क्या उनके मुख हास के साथ खिल नहीं जाएँगे? । ८६६

अन्ऱि युम्मुनक् काळिन्मै तोन्ऱुमा लरश
वॆन्ऱि यिल्लवर् मॆल्लियोर् तमैच्चॆल विटटाय्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नन्ऱि यिन्ऱोन्ऱु काण्डिये लॅमैच्चॅल नयत्ति
ऍन्ऱु कैतॊऴु दिरैञ्जिन रक्कनु मिशैन्दान् 867

अरच–राजा; अन्ऱियुम्–इसके सिवा; उनक्कु–आपके; आळ् इन्मै–सेवकों का अभाव; तोन्ऱुम्–प्रकट होगा; वॆन्ऱि इल्लवर्–जो विजय नहीं पा सके उन्हें और; मॆल्लियोर् तमै–निर्बलों को; चॆल विट्टाय्–जाने दिया; इन्ऱु–आज; ऒन्ऱु नन्ऱि–एक अच्छा कार्य; काण्टियेल्–देखना चाहो तो; ऍमै चॆल–हमें भेजना; नयत्ति–चाहो; ऍन्ऱु–कहकर; कै तॊऴुतु–हाथ जोड़कर; इरैञ्चिनर्–विनय की; अरक्कनुम् इचैन्तान्–राक्षस भी सम्मत हुआ। ८६७

राजन् ! और भी एक बात है। आपके स्वयं चढ़ जाने से ऐसा प्रगट होगा कि आपके और कोई सेवक या कर्मचारी नहीं है। आपने अब तक उन्हीं लोगों को भेजा है, जो विजय पाने में असमर्थ थे या निर्बल थे। अगर आप एक अच्छा कार्य देखना चाहते हों तो हमें भेजने की चाह कीजिए। सेनापतियों ने यह कहकर हाथ जोड़े और विनय की। राक्षस भी सम्मत हुआ। ८६७

उलह मून्ऱैयु मॊरुङ्गुपॆऱ् ऱारॆन वुवन्दार्
तिलह मण्णुऱ वणङ्गिनर् कोयिलैत् तीर्न्दार्
अलहि ऱेर्परि करियॊडु मिडैन्दपो ररक्कर्
तॊलैवि ऱानैयैक् कदुमॆन वरुहॆनच् चॊन्नार् 868

उलकम् मून्ऱैयुम्–तीनों लोकों को; ऒरुङ्कु पॆऱ्ऱार्–एक साथ पा लिया हो; ऍन उवन्तार्–जैसा हर्षित हुए; तिलकम्–भाल का तिलक; मण् उऱ–भूमि पर पड़े, ऐसा; वणङ्किनर्–नमस्कार किया; कोयिलै तीर्न्तार्–महल छोड़ निकले; अलकु इल्–असंख्यक; तेर्–रथ; परि–अश्व; करि ऒटु–गजों के साथ; मिटैन्त पोर् अरक्कर्–इकट्ठे आये योद्धा वीर; तॊलैवु इल्–(इनकी) अक्षय; तानैयै–सेना को; कतुम् ऍन–'शीघ्र'; वरुकॆन–आओ; चॊन्तार्–कहा। ८६८

उन्हें इतना अपार हर्ष हुआ, मानो तीनों लोकों को एक साथ पा गये हों। भाल का तिलक भूमि पर लगे, ऐसा दण्डवत करके वे महल से बाहर आये। उन्होंने आज्ञा निकाली कि असंख्यक रथों, अश्वों, गजों और पदाति वीरों की सेनाएँ शीघ्र आ जाएँ। ८६८

आनै मेन्मुर शऱैन्दनर् वळ्ळुव रऴैत्तार्
पेन वेलैयिर् पुडैपरन् ददुपॆरुञ् जेनै
शोन मामऴै मुहिलॆनप् पोर्प्पणै तुवैप्प
मीन वानिडै मिन्नॆनप् पडैक्कल मिडैन्द 869

वळ्ळुवर्–'वळ्ळुव' लोगों ने; आनै मेल्–गजों पर से; मुरचु अऱैन्ततर्–ढिंढोरा पीटकर; अऴैत्तार्–आमन्त्रित किया; पॆरुम् चेनै–बड़ी सेना; पेन वेलैयिल्–फेन-सहित सागर के समान; पुटै परन्ततु–सब ओर फैली; चोन मा मऴै–निरन्तर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बरसनेवाली वर्षा के; मुकिलॅन्न-मेघों के समान; पोर् पर्णै-युद्धभेरियाँ; तुवैप्प-ठनकीं; मीन वानिटै-नक्षत्र-भरे आकाश की; मिन् ऍन्न-बिजली के समान; पटैक्कलम्-हथियार; मिटैन्त-जुटे। ८६८

वळ्ळुवर (ढिंढोरा पीटनेवाली एक जाति) लोगों ने गज पर ढोल चढ़ाकर मुनादी पिटवा दी। बड़ी सेना फेन-सहित सागर के समान उठ आयी। चारों ओर फैली। निरन्तर बरसनेवाली वर्षा के मेघों के समान मारू ढोल बज उठे। नक्षत्र-भरे आकाश में बिजलियों के समान युद्धायुध जुट आये। ८६९

तानै माक्कॊडि मऴैपॊदुत् तुयर्नॆडुन् दाळ
मान मार्ऱरु मारुदि मुनियना ळुलन्दु
पोन मार्ऱलर् पुहऴॆन्नक् काल्पॊरप् पुरण्ड
वान यार्ऱुवॆण् डिरैयॆन वरम्बिल परन्द 870

मऴै पॊतुत्तु-मेघों को छेदकर; उयर् नॆटुम्-ऊपर चलनेवाले लम्बे; ताळ-पैर वाले; वान यार्ऱु-आकाशगंगा की; वॆळ् तिरै ऍन्न-श्वेत तरंगों के समान; वरम्पु इल-निस्सीम; परन्त-फैले रहे; तानै मा कॊटि-उस सेना के बड़े-बड़े झण्डे; मार्ऱु अरु-अप्रतिहत; मान मारुति-आदरणीय मारुति; मुनिय-कोप (करके युद्ध) करने पर; नाळ् उलन्तु पोन-जिनकी आयु सूख गयी; मार्ऱलर्-उन शत्रुओं के; पुकऴ् ऍन्न-यश के समान; काल् पॊर-हवा के हिलाने से; पुरण्ट-हिले। ८७०

अनेक श्वेत ध्वजाएँ, हवा में अप्रतिहत मारुति के कोप के सामने जिनकी आयु सूख गयी, उन शत्रुओं के यश के समान हिल रही थीं। उनके खंभे मेघ को छेदकर ऊपर गये थे। वे आकाशगंगा की लहरों की तरह श्वेतवर्ण थीं। ८७०

विरवु पॊऱ्कऴल् विशित्तनर् वॆरिनुऱ विळङ्गच्
चरमॊ डुक्किन पुट्टिलुञ् जात्तिनर् शमैयक्
करुवि पुक्कन ररक्करमाप् पल्लणङ् गविन्नप्
पुरवि यिट्टनेर् पूट्टिन परुमित्त पूटकै 871

अरक्कर्-राक्षसों ने; विरवु पॊऱ् कऴल्-स्वर्णमय पायलें; विचित्तनर्-बाँध लीं; चरम् ऒटुक्किन-शरनिलय; पुट्टिलुम्-तूणीर भी; वॆरिन् उऱ-पीठ पर लगाये; विळङ्क-सुन्दर लगें, ऐसा; चात्तिनर्-धारण कर लिया; चमैय-खूब युक्त हो, ऐसा; करुवि पुक्कनर्-कवच पहन लिया; पुरवि-अश्व; मा पल्लणम्-बड़ी-बड़ी जीनें; कविन्न-फबती रीति से; इट्ट-पहनाये गये; तेर् पूट्टिन-रथ जुड़े गये; पूट्कै-गज; परुमित्त-अलंकृत किये गये। ८७१

राक्षसों ने स्वर्णमय पायलें बाँध लीं। शराश्रय तूणीरों को पीठ को शोभित करते हुए पहन लिया। खूब युक्त रीति से कवच धारण कर लिये। अश्वों पर जीनें कसीं। रथ जुते और गज अलंकृत हुए। ८७१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आऱु शॆय्दऩ वाऩैयिऩ् मदङ्गळव् वाऱ्ऱैच्
चेऱु शॆय्दऩ तेर्हळिऩ् शिल्लियच् चेऱ्ऱै
नीऱु शॆय्दऩ पुरवियिऩ् कुरमऱ्ऱऩ् नीऱ्ऱै
वीऱु शॆय्दऩ वप्परिक् कलिऩवाय् विलाळि 872

आऩैयिऩ् मतङ्कळ्–गजमद ने; आऱु चॆय्तऩ–नदियाँ बनायीं; अ आऱ्ऱै–उन नदियों को; तेर्कळिऩ् चिल्लि–रथों के पहियों ने; चेऱु चॆय्तऩ–कर्दम बना दिया; अ चेऱ्ऱै–उस कीच को; पुरवियिऩ् कुरम्–अश्वों के खुरों ने; नीऱु चॆय्तऩ–धूल बना दिया; अ नीऱ्ऱै–उस बुकनी को; अ परि–उन अश्वों के; कलिऩ वाय्–लगाम वाले मुख (निःसृत); विलाळि–लार ने; वीऱु चॆय्तऩ–फिर फाड़ दिया। ८७२

गजमद नदी बना। उस नदी को रथों के चक्रों ने पंक बना दिया। उस पंक को अश्वों के खुरों ने धूल में परिवर्तित कर दिया। उस धूल को फिर से अश्वों के मुखों की लार और झाग ने सूखा पंक बना दिया, जिसमें दरारें पड़ी रहीं। ८७२

वऴङ्गु तेर्हळि ऩिडिप्पॊडु वाशियि ऩार्प्पुम्
मुऴङ्गु वॆङ्गळिऱ् ऱदिर्च्चियु मॊय्हऴ लॊलियुम्
तऴङ्गु पल्लियत्त मलैयुङ् गडैयुहत् ताळि
मुऴङ्गु मोदैयिऩ् मुम्मडङ् गॊऴुन्ददु मुडुहि 873

वऴङ्कु तेर्कळिऩ्–चलनेवाले रथों के; इटिप्पु ओटु–शब्द के साथ; वाचियिऩ् आर्प्पुम्–अश्वों का हिनहिनाना; मुऴङ्कु–चिंघाड़नेवाले; वॆम् कळिऱ्ऱु–भयंकर गजों की; अतिर्च्चियुम्–ध्वनियाँ; मॊय् कऴल् ऒलियुम्–घनी पायलों की ध्वनियाँ और; तऴङ्कु–बजनेवाले; पल् इयत्तु–विविध वाद्यों का; अमलैयुम्–स्वर सब; कटै उकत्तु–युगान्त के; आळि मुऴङ्कुम्–सागर के गर्जन के; ओतैयिऩ्–नाद से; मुम् मटङ्कु–तिगुने; मुटुकि–ज़ोर से; ऎऴुन्ततु–उठे। ८७३

रथों की घरघराहट, अश्वों का हिनहिनाना, भयंकर गजों की चिंघाड़, वीरों की पायलों का क्वणन और अनेक बाजों का नाद, सब मिलकर युगांत-सागर-गर्जन-ध्वनि के तिगुने ज़ोर से उठे। ८७३

आळित् तेर्त्तॊहै यॆम्बदि ऩायिर मः(ह्)दे
शूळिप् पूट्कैक्कुऩ् दॊहैयवऱ् ऱिरट्टियिऩ् ऱॊहैय
ऊळिक् काऱ्ऱऩ्ऩ पुरविमऱ् ऱवऱ्ऱिऩुक् किरट्टि
पाळित् तोळॆडुम् बडैक्कलप् पदादियिऩ् पहुदि 874

आळि तेर् तॊकै–पहियेदार रथों की संख्या; ऐम्पतिऩायिरम्–पचास सहस्र; चूळि पूट्कैक्कुम्–मुखपट्टालंकृत गजों की भी; तॊकै–संख्या; अ·ते–वही; ऊळि काऱ्ऱ अऩ्ऩ–प्रलय-पवन के समान; पुरवि–अश्व; अवऱ्ऱिऩ् इरट्टि तॊकैय–उनकी दुगुनी संख्या के; पाळि तोळ्–सबल कन्धों और; नॆटुम् पटै कलम्–बड़े-बड़े हथियारों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाले; पतातियिन् पकुति–पदाति वीरों की संख्या; अवर्ऱ्ऱिनुक्कु–उनकी; इरट्टि–दुगुनी। ८७४

चक्ररथों की संख्या पचास हज़ार थी। मुखपट्टालंकृत गजों की संख्या भी वही। प्रलयपवन-सरीखे अश्वों की संख्या उसकी दुगुनी थी। स्थूल-स्कन्ध और बड़े हथियारों से युक्त पदाति वीरों की संख्या उनकी सम्मिलित संख्या की दुगुनी थी। ८७४

कूय्त्त रुत्तॊऱुन् दरुन्दॊऱुन् दानैवॆङ् गुऴुवित्
नीत्तम् वन्दुवन् दियङ्गिडु मिडनिन्ऱि नॆरुङ्गक्
काय्त्त मैन्दवंङ् गदिर्प्पडै यॊन्ऱॊन्ऱु कदुवित्
तेय्त्तॆ ऴुन्दत्त पॊऱिक्कुल मऴैक्कुलन् दीय्प्प 875

कूय् तरुम् तॊऱुम् तरुम् तॊऱुम्–ज्यों-ज्यों टेर लगती, त्यों-त्यों; वॆम् तानै कुऴुवित् नीत्तम्–(आ जुटनेवाली) भयंकर सेना के दलों की बढ़ती; वन्तु वन्तु–उत्तरोत्तर हुई; इयङ्कुम् इटन् इन्ऱि–संचार करने का स्थान नहीं पाकर; नॆरुङ्क–सटी खड़ी रही; काय्त्तु अमैन्त–भट्ठी में गरम कर बनाए गये; वॆम् कतिर् पटै–भयंकर ज्वालामयी हथियारों के ढेर; ऒन्ऱु ऒन्ऱु कतुवि–एक-दूसरे से रगड़कर; तेय्त्तु–घिसाकर; पॊऱि कुलम्–अग्निकणों की राशियाँ; मऴै कुलम् तीय्प्प–मेघराशियों को जलाने (सोखने); ऎऴुन्तत्त–ऊपर उठ चले। ८७५

ज्यों-ज्यों टेर हुई (बुलावा हुआ), त्यों-त्यों सेना उत्तरोत्तर उठ आयी। बड़ी भीड़ लग गयी और संचार का स्थान ही नहीं रहा। भट्ठी पर तपाकर बनाए गये और भयंकर ज्वालाएँ निकालनेवाले हथियारों ने आपस में ऐसी रगड़ खायी कि अंगारे छूटे और मेघों को जला-सुखा देंगे जैसे ऊपर उठ गये। ८७५

पण्म णिक्कुल यानैयिन् पुडैदॊऱुम् बरन्द
ऒण्म णिक्कुल मऴैयिडै युरुमॆन वॊलिप्पक्
कण्म णिक्कुलङ् गनलॆनक् कान्दुव कदुप्पिन्
तण्म णिक्कुलम् मऴैयॆऴुङ् गदिरॆनत् तऴैप्प 876

पण्–सजाए हुए; कुल मणि यानैयिन्–श्रेष्ठ जाति के सुन्दर गजों के; पुटै तॊऱुम्–पार्श्वों में; परन्त–फैले दिखे; ऒळ् मणि कुलम्–प्रभापूर्ण रत्नों की राशियाँ; मऴै इटै–मेघ-मध्य; उरुम् ऎन–वज्र के समान; ऒलिप्प–शब्द करते रहे; कण् मणि कुलम्–आँखों की पुतलियों की राशियाँ; कनल् ऎन–आग के समान; कान्तुव–ज्वलन्त रहीं; कतुप्पिन्–गालों पर के; तण् मणि कुलम्–शीतल मोतियों की राशियाँ; मऴै ऎऴुम्–मेघ-निर्गत; कतिर् ऎन–चन्द्र के समान; तऴैप्प–भरे शोभे। ८७६

गज श्रेष्ठ जाति के थे और वे खूब सजाये गये थे। उनके बाजुओं में रत्नों ने मेघों की-सी ध्वनि निकाली। उनकी आँखों से आग के ही

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समान प्रकाश छूट रहा था। गालों पर शीतल मोती थे और वे मेघनिर्गत चन्द्र की-सी रोशनी फैला रहे थे। ८७६

तॉक्क दाम्बडै शुरिकुळ्ळन् मडन्दैयर् तॉडिक्कै
मक्क डायर्मर् रियावरुन् दडुत्तनर् मरुहि
ऑक्क वेहुदु मॅन्रनर् कुरङ्गिन्मुन् नॉरुवर्
पुक्कु मीण्डिल रॅन्रळ् दिरङ्गिनर् पुलम्बि 877

तॉक्कतु आम् पटै–जुटी उस सेना के वीरों को; चुरि कुळल्–घुँघराले केश वाली; मटन्तैयर्–स्त्रियाँ; तॉटि कै मक्कळ्–'तॉडि' नाम के कंकण पहनी हुई बेटियाँ; तायर्–माताएँ; मरुरु–और अन्य; यावरुम्–सभी ने; मरुकि–व्याकुल होकर; कुरङ्किन् मुन्–उस वानर के समक्ष; ऑरुवर् पुक्कु मीण्टिलर्–एक भी जाकर लौट नहीं आया; ऍन्रु–ऐसा कहकर; पुलम्पि अळुतु–प्रलाप करती रोयीं; इरङ्कितर्–दुःखी होकर; ऑक्क एकुतुम्–साथ जायँगे; ऍन्रनर्–कहकर; तटुत्तनर्–रोका। ८७७

जो वीर इकट्ठे हुए उनको, उनकी घुँघराले केश वाली स्त्रियों, तॉडि नाम के कंकणधारिणी बेटियों, माताओं और अन्यों ने व्याकुलमना होकर यह कहते हुए रोका कि इस वानर के समक्ष गये वीरों में कोई भी जीवित लौट नहीं आया। हम भी साथ जायँगी। वे विलाप करती हुई दुःख से भरकर रोयीं। ८७७

कैप रन्दॅळ् शेनैयङ् गडलिडैक् कलन्दार्
शॅय्है ताम्वरुन् देरिडैक् कदिरॅनच् चॅल्वार्
मॅय्ह लन्दमा निरैवरु मुवमैयै वॅन्रार्
ऐव रुम्बॅरुम् बूदमो रैन्दुमॉत् तमैन्दार् 878

ऐवरुम्–पाँचों; पॅरुम् पूतम्–बड़े भूतों; ओर् ऐन्तुम् ऑत्तु–पाँचों के समान; अमैन्तार्–बने थे; कै परन्तु ऍळु–बाजुओं में फैलकर उठी; चेनै अम् कटल् इटै–सेना के सागर के बीच; कलन्तार्–जा मिले; ताम्–उनके; चॅय्कै वरुम्–निरन्तर चलनेवाले; तेर् इटै–रथ पर के; कतिर् ऍत–सूर्य के समान; चॅल्वार्–जाते रहे; मॅय् कलन्त–शरीर-प्राप्त; माल् निरै–मेघपंक्तियाँ; वरुम् उवमैयै–आती हों, उस उपमा को; वॅन्रार्–जीत गये। ८७८

पाँचों सेनापति सम्मिलित पाँचों बड़े भूतों के समान सब ओर उठकर फैल आयी सेना के सागर के मध्य जाकर मिल गये। निरन्तर चलनेवाले एकचक्र-रथ के रथी सूर्य के समान वे चले। साकार आनेवाले मेघों की पंक्ति भी उनकी उपमा के योग्य नहीं रही। वे उस उपमा को हरा गये। ८७८

मुन्दि यम्बल करङ्गिड मुरैमुरै पॉरिहळ्
शिन्दि यम्बुरु कॉडुञ्जिलै युरुमॅनत् तॅरिप्पार्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वन्दि यम्बुरु मुत्तिवर्क्कु मम्मरर्क्कुम् वलियार्
इन्दि यम्बहै यायव यैन्दुमौत् तिशैन्दार् 879

मुन्तु–सामने; इयम् पल–अनेक वाद्य; करङ्किट–बजते जा रहे थे; मुरै मुरै–रह-रहकर; पॉरिकळ् चिन्ति–अंगारे छुड़ाते हुए; अम्पु उरु–शर जिससे चलाये जाते हैं; कॉटुम् चिलै–उस भयंकर धनु का; उरुम् अॅन–अशनि के समान; तॅरिप्पार–टंकार निकालते; इयम्पुरु–प्रशंसा योग्य; मुत्तिवर्क्कुम् अमरर्क्कुम्–मुनियों और देवों के; वलि आर्–बलसंयुत; पकै आयवै–शत्रु जो बनी थीं; इन्तियम् ऐन्तुम् ऑत्तु–पाँचों इन्द्रियों की समानता करते हुए; वन्तु इचैन्तार्–आकर (युद्ध मे) लगे। ८७९

उनके आगे अनेक वाद्य बजते जा रहे थे। उन्होंने अंगारे छितराते हुए जानेवाले शरों के प्रेषक, धनुओं की टंकार निकाली। प्रशंसा-योग्य मुनियों और देवों का सबल शत्रुगण जो है, उस इंद्रियपंचक के समान वे आकर युद्ध में लगे। ८७९

वाश वन्वयक् कुलिशमुम् वरुणन्वन् कयिरुम्
एशि रॅन्रिशैक् किळवन्रु त्तयिल्मुनै यॅळुवुम्
ईशन् वन्रत्तिच् चूलमु मॅन्रिवै यॉन्रुम्
ऊशि पोल्वदोर् वडुच्चया नॅडुम्बुय मुडैयार् 880

वाचवन् वय कुलिचमुम्–वासव का सशक्त वज्रायुध; वरुणन् वन् कयिरुम्–वरुण का बलवान पाश और; एचु इल्–त्रुटिहीन; तॅन् तिचै किळवन् तन्–दक्षिणी दिशा के अधिपति (यम) का; अयिल् मुनै ऍळुवुम्–तीक्ष्णमुखी दण्डायुध और; ईचन्–परमेश्वर का; तत्ति वन्–अद्वितीय और कठोर; चूलमुम्–त्रिशूल; ऍन्रु इवै ऑन्रुम्–ऐसे इनमें कोई भी; ऊचि पोल्वतु–सूई चुभी हो, ऐसा भी; ओर् वटु चॅया–एक निशान नहीं बना सके; नॅटुम् पुयम् उटैयार्–ऐसी भुजाओं के स्वामी थे। ८८०

उनकी लम्बी भुजाएँ ऐसी कठोर बलसंयुत थी कि वासव का बलवान वज्र, वरुणदेव का सबल पाश, त्रुटिहीन दक्षिण दिशा के अधिपति यम का तीक्ष्ण नोक का दण्डायुध और परमेश्वर का अप्रतिम कठोर त्रिशूल —इनमें कोई भी उन पर सूई-चुभी-जैसा निशान भी नहीं बना सकता था। ८८०

शूर्द डिन्दवन् मयिलिडैप् परित्तवन् ऱोहै
पार्प यन्दव न्नन्नत्ति निऱहिडैप् परित्त
मूरि वॅञ्जिऱ हिडैयिट्टुत् तॉडुत्तन मुरुक्कि
वीर शूडिहै कयिरिट्टु नॅऱ्ऱियिन् विशित्तार् 881

चूर् तटिन्तवन्–शूरसंहारक; मयिल् इटै–(कार्तिकेय स्वामी के) मोर से; परित्त–छीने गये; वल् तोकै–सबल पंखों को; पार् पयन्तवन्–प्रपंचसर्जक ब्रह्मा के; अन्नत्तिन् इऱकु इटै–हंसों के पंखों से; परित्त–छीने हुए; मूरि वॅम् चिऱकु–सुदृढ़ और सुन्दर पंखों को; इटै इट्टु–बीच-बीच में; तॉटुत्तन मुरुक्कि–गूँथकर ऐंठकर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वीर चूटिकै–(बनाया गया) "वीर चूडा"; **नॅऱ्ऱियिऩ्**–भाल पर; **कयिऱु इट्टु**–रस्सी से; **विचित्तार्**–बाँध रखा था। ८८१

उनके भालों पर 'वीर चूडिका' नाम के आभरण बँधे थे। वे शूर-संहारक कार्तिकेय के वाहन मोर के सबल पंखों और भूमि के सर्जक ब्रह्मा के वाहन हंस के पंखों को मध्य-मध्य गूँथकर और बटकर बनाये गये थे। ८८१

पॊऩ्ऱि णिन्दतो ळिरावणन् मार्बॊडुम् बॊरुद
अऩ्ऱि ळन्दको डरिन्दिडु मळ्हुऱु कुळैयर्
निऩ्ऱ वऩ्ऱिशै नॅडुङ्गळि यानैयि नॅऱ्ऱि
मिऩ्ऱि णिन्दऩ वोडैयिऩ् वीरपट् टत्तर् 882

पॊऩ् तिणिन्त–स्वर्ण (आभरण) भूषित; **तोळ्**–कन्धों वाले; **इरावणऩ्**–रावण के; **मारपु ऒटुम्**–वक्ष के साथ; **पॊरुत अऩ्ऱु**–जिस दिन (दिग्गज) भिड़े; **इळन्त कोटु**–उनके टूटे दाँतों के; **अरिन्तिटुम्**–काटकर बने; **अळकु उऱु**–सौन्दर्ययुक्त; **कुळैयर्**–कुण्डलधारी; **निऩ्ऱ**–(हारकर जो) रहे; **वल्**–बलवान; **तिचै कळि नॅटुम् यानैयिऩ्**–मत्त दिग्गजों के; **नॅऱ्ऱि**–मस्तक में; **मिऩ् तिरिन्तु अऩ**–बिजली चलती हो ऐसे; **ओटैयिऩ्**–मुखपट्ट के बने; **वीर पट्टत्तर्**–वीरपट्टी वाले हैं। ८८२

उनके सुन्दर कर्ण-कुण्डल दिग्गजों के सबल रावण के स्वर्णाभरणभूषित कन्धों और वक्ष से भिड़ते समय टूटे हुए दाँतों के खण्डों से बने थे। उनके भालों पर की वीरपट्टिका उन मत्त दिग्गजों के बिजली की-सी चमक के मुखपट्ट से बनी थी। ८८२

इन्दिर निशैयिळन् देहु वानिहल्, तन्दिमुऩ् कडाविनऩ् मुडुहत् तामदऩ्
मन्दर वालडि पिडित्तु वल्लैयेल्, उन्दुदि नीयॅऩ वलित्त वूऱ्ऱत्तार् 883

इचै इळन्तु–नाम खोकर; **एकुवाऩ्**–जो लौटकर; **इन्तिरऩ्**–इन्द्र; **इकल् तन्ति**–सबल-दन्ती (ऐरावत) को; **मुऩ् कटावितऩ्**–तेजी से चलाते हुए; **मुटुक**–जब चला; **ताम्**–इन्होंने; **अतऩ् मन्तर वाल्**–उसकी कोमल दुम के; **अटि पिटित्तु**–मूल को पकड़कर; **वल्लैयेल्**—शक्त हो तो; **उन्तुति नी**–चलाओ तुम; **अॅऩ**–कहकर; **वलित्त**–खींचा, ऐसे; **ऊऱ्ऱत्तार्**–बलशाली। ८८३

रावण से लड़ाई में अपना यश गँवाकर इन्द्र जब पीठ दिखाकर भागने लगा, तब उसने अपने दन्ती ऐरावत को शीघ्र-शीघ्र चलाया। तब इन सेनापतियों ने ऐरावत की पूँछ का मूलभाग पकड़ लिया और कहा कि शक्त हो तो आगे चला लो। वे ऐसे बलशाली थे। ८८३

निदिनॅडुङ् गिळवनै नॅरुक्कि नीणहर्प्
पदियॊडुम् बॅरुन्दिरुप् परित्त पण्डैनाळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विदियॊडु मत्तवत् विऴुन्दु वॆन्निडप्
पॊदियॊडुम् वारिय पॊलन्गॊळ् पूणित्तार् 884

नॆटुम् निति किऴवत्तै–बहुत बड़े धनी कुबेर को; नॆरुक्कि–युद्ध में हराकर; नीळ् नकर् पतियॊटुम्–विशाल नगर अलकापुरी के साथ; पॆरुम् तिरु–उसकी बड़ी सम्पत्ति को भी; पऱित्त पण्टै नाळ्–जिस दिन छीन लिया (इन्होंने), उस प्राचीन दिन में; अत्तवत्–वे (कुबेर); वितियॊटु विऴुन्तु–विधिवश हारकर; वॆन् इट–पीठ दिखाकर भागे; पॊति ऒटुम् वारिय–तब गट्ठरों में लिये गये; पॊलन् कॊळ् पूणित्तार्–स्वर्ण-निर्मित आभरणधारी हैं। ८८४

वे उन आभरणों के धारक हैं, जो कुबेर के नगर से लूट लाये थे। यह तब हुआ जब उन्होंने पहले कभी बड़े धन के स्वामी कुबेर को युद्ध में हराकर उसका नगर और उसकी सारी सम्पत्ति छीन ली थी और कुबेर विधिवश पीठ दिखाते हुए भागा था। ८८४

पाऱित्तु तन्दहन् पणिय त्ताहिनिन्
कोऱित्तैत् तिलत्तॆत्त वुलहङ् गूऱलुम्
नीऱित्तु तिरावणन् मुऱिवु नीक्कुवान्
कालत्तैक् कालिऱित् कैयिऱ् कट्टित्तार् 885

पाल् निऱुत्तु–विधिसंस्थापक; अन्तकन्–यम; पणियत् आकि–सेवक बनकर; निन् कोल्–आपका शासन; नित्तैत्तिलत्–नहीं मानता; ऎत्त–ऐसा; उलकम् कूऱलुम्–लोकवासियों ने जब कहा तब; नील् निऱत्तु इरावणन्–नीले वर्ण के रावण के; मुऱिवु नीक्कुवान्–कोप को दूर करने के लिए; कालत्तै–उस यम के; कालिऱिल् कैयिऱिल्–पैरों और हाथों को; कट्टित्तार्–बाँध दिया, ऐसे हैं। ८८५

लोगों ने रावण से कहा कि विधिसंस्थापक यम आपका सेवक नहीं बना, न आपका शासन मानता है। रावण को अपार गुस्सा हो गया। तब इन पंच सेनापतियों ने रावण का कोप शान्त करने के लिए यम के पैरों और हाथों को बाँधा था। ८८५

मलैहळै नहुन्दड मार्बर् माल्हडल्
अलैहळै नहुनॆडुन् दोळ रन्दहन्
कॊलैहळै नहुनॆडुङ् गॊलैयर् कॊल्लन्
दुलैहळै नहुमन् लुमिऴुङ् गण्णित्तार् 886

मलैकळै नकुम्–पर्वतों को परिहसित करनेवाले; तट मारपर्–विशाल वक्षों के; माल् कटल् अलैकळै–बड़े सागर की तरंगों की; नकुम्–निन्दा करनेवाले; नॆटुम् तोळर्–बड़े कन्धों वाले; अन्तकन् कॊलैकळै–यम के संहारक कार्यों को; नकुम्–नीचा दिखानेवाले; नॆटुम् कॊलैयर्–बड़े खूनी लोग हैं; कॊल्लन् ऊतु–लुहारों की फूँकी हुई; उलैकळै नकुम्–भट्ठियों की हँसी उड़ानेवाली; अनल् उमिऴुम्–अग्निवर्षक; कण्णित्तार्–आँखों वाले। ८८६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वे पर्वतों की हँसी उड़ानेवाले वक्षःस्थल के हैं। समुद्र की उत्तुंग तरंगों का परिहास करनेवाले (ऊँचे) कन्धों के हैं (या लम्बी भुजाओं के हैं)। इनके खूनी कार्यों के सामने यम के मारक कार्यों की कोई गिनती ही नहीं थी। उनकी आँखें लुहार की फूँकी जानेवाली भट्ठी का परिहास करनेवाली थीं यानी वे लाल थीं और आग बरसानेवाली थीं। ८८६

तोल्हिळर् तिशैदोरु मुलहैच् चुर्रिय
शाल्हिळर् मुळङ्गेरि तळङ्गि येरिनुम्
काल्हिळर्न् दडिप्पिनुङ् गालङ् गैयुर
माल्हडल् किळरिनुञ् जरिक्कुम् वन्मैयार् 887

कालम् कै उर्–प्रलयकाल के समीप आने पर; तोल् किळर्–दिग्गज-शोभित; तिचै तोरुम्–आठों दिशाओं में; उलकै चर्रिय–सारे लोक को घेरकर; चाल् किळर्–खूब बढ़कर; मुळङ्कु ऍरि–शोर के साथ जलनेवाली (प्रलय-) अग्नि; तयङ्कि एरिनुम्–और ज़ोर से उठे तब भी; काल्–पवन; किळर्न्तु–उठकर; अटिप्पिनुम्–अत्यधिक ज़ोर से बहे तब भी; माल् कटल्–बड़े सागर; किळरिनुम्–उमग आएँ तब भी; चरिक्कुम्–संचार करेंगे, ऐसे; वन्मैयार्–साहसी हैं। ८८७

युगान्त में जब दिग्गज-पालित दिशाओं में और अन्य सभी स्थानों में शब्द के साथ जलनेवाली आग उठे, और भयंकर आँधी बहे, और सारे सागर उमग आवें तो भी ये उनकी कुछ परवाह न करके घूमने का साहस रखनेवाले हैं। ८८७

इव्वहै यैवरु मॅळुन्द तानैयर्, मॉय्हिळर् तोरण मदनै मुर्रिनार्
कैयोडु कैयुर वणियुङ् गट्टिनार्, ऐयनु मवर्निलै यमैय नोक्किनान् 888

इ वकै–ऐसे; ऐवरुम्–पाँचों सेनापतियों ने; ऍळुन्त तानैयर्–चढ़ जानेवाली सेना के; मॉय् किळर्–प्रबल रूप से विद्यमान; तोरणम् अतनै–तोरण को; मुर्रिनार्–घेरकर; कैयोटु कैयुर–एक बाजू से दूसरा लगाकर; अणियुम् कट्टिनार्–सेना के भाग खड़ा किये; ऐयनुम्–महिमावान (हनुमान) ने भी; अवर् निलै–उनकी स्थिति; अमैय–खूब; नोक्किनान्–देख ली। ८८८

ऐसे पाँचों सेनापति अपनी बढ़ी आयी सेना को लेकर शक्तियुत उस तोरण को घेर गये। उन्होंने सेना को दलों में विभाजित कर बाजुओं में मिल जाएँ, ऐसे व्यूहों में खड़ा कर दिया। महिमावान हनुमान ने उनकी स्थिति खूब निहारी। ८८८

अरक्करत् मार्रलु मळविल् शेनैयिन्, तरुक्कुमम् मारुदि तनिमैत् तन्मैयुम्
पॉरुक्कॅन नोक्किय पुरन्द रादियर्, इरक्कमु मवलमुन् दुळक्कु मॅय्दिनार् 889

अरक्कर् तम्–राक्षसों की; आर्रलुम्–शक्ति और; अळवु इल्–अमाप; चेनैयिन् तरुक्कुम्–सेना का गर्व; अ मारुति–उस हनुमान के; ततिमै तन्मैयुम्–और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एकाकीपन को; पॊरुक्कॆऩ नोक्किय–शीघ्र जिन्होंने देखा; पुरन्तरातियर्–उन पुरन्दरादि देवों ने; इरक्कमुम्–सहानुभूति और; अवलमुम्–दुःख और; तुळक्कुम्–कम्पन का; ऍय्तिऩार्–अनुभव किया। ८८९

पुरन्दर आदि देवों ने राक्षसों का बल, उस अपार सेना की शान और हनुमान का एकाकीपन अकस्मात् देखा तो उनके मन में एक साथ सहानुभूति, दुःख और भयकंपन के भाव जगे। ८८९

इऱ्ऱऩ ररक्करिप् पहलु ळेयॆऩाक्, कऱ्ऱुणर् मारुदि कळिक्कुऱ् जिन्दैयाऩ्
मुऱ्ऱुऱच् चुलाविय मुडिवि ऱाऩैयॆच्, चुऱ्ऱुऱ नोक्कित्तऩ् ऱोळै नोक्किऩाऩ् 890

इ पकल् उळे–इस अहस् के अन्दर ही; अरक्कर् इऱ्ऱऩर्–राक्षस मर गये (जायँगे); ऍऩा–ऐसा; कऱ्ऱु उणर् मारुति–अध्ययन करके बुद्धिमान बने हनुमान ने; कळिक्कुम् चिन्तैयाऩ्–मुदित-मन होकर; मुऱ्ऱु उऱ–पूर्ण रूप से चारों ओर; चुलाविय–घेरे आयी; मुटिवु इल्–निस्सीम; ताऩैयै–सेना को; चुऱ्ऱु उऱ–चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर; नोक्कि–देखकर; तऩ् तोळै–अपने कन्धों को; नोक्किऩाऩ्–देख लिया। ८९०

हनुमान शास्त्रों का अध्ययन कर चुका था। वह बड़ा बुद्धिमान था। उसने अनुमान कर लिया कि ये सभी राक्षस इस एक अहस् में मर जायँगे। हर्षित होकर उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ायी, अपने को घेरे रही सेना के वीरों को देखा फिर अपने कन्धों पर सगर्व दृष्टिपात किया। ८९०

पुऩ्ऱलैक् कुरङ्गिदु पोलु मालमर्
वॆऩ्ऱदु विण्णवर् पुहळै वेरॊडुम्
तिऩ्ऱवल् लरक्करैत् तिरुहित् तिऩ्ऱदाल्
ऍऩ्ऱऩ रयिर्त्तऩर् निरुद रॆण्णिलार् 891

ऍण् इलार्–असंख्यक; निरुतर्–राक्षस; पुल् तलै–छोटे सिर वाला; कुरङ्कु इतु पोलुम्–यही बन्दर क्या; माल् अमर् वॆऩ्ऱतु–बड़े युद्ध में जीता; विण्णवर् पुकळै–देवों के यश को; वेर् ऒटुम् तिऩ्ऱ–जड़ के साथ (जिन्होंने) खाया; वल् अरक्करै–कठोर राक्षसों को; तिरुकि–तोड़-मरोड़कर; तिऩ्ऱतु–खाया (इसी ने); ऍऩ्ऱऩर्–कहा; अयिर्त्तऩर्–सन्देह किया। ८९१

असंख्यक राक्षसों ने हनुमान को देखा तो उन्हें सन्देह हुआ कि इसी छोटे सिर वाले बन्दर ने बड़ा युद्ध जीता? देवयश को मिटानेवाले राक्षसों को जड़ से मरोड़कर खाया (निर्मूल किया)?। ८९१

आयिडै यनुमऩु ममरर् कोऩहर्
वायिऩिऩ् ऱिव्वळिक् कॊणर्न्दु वैत्तमाच्
चेयॊळित् तोरणऩ् दुम्बर्च् चेर्णडु
मीयुयर् विशुम्बैयुम् कडक्क वीङ्गिऩाऩ् 892

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अ इटै–तब; अनुमतुम्–हनुमान ने भी; अमरर् कोन्–देवराज; नकर् वायिल् निन्रु–के नगर के द्वार से; इ वळि–यहाँ; कॊणर्न्तु वैत्त–जो लाकर रखा गया था; मा चे–अधिक लाल रंग की; ऒळि–रोशनी से युक्त; तोरणत्तु–तोरण के; उम्पर्–ऊपर; चेण् नॆटु–बहुत दूर; मी उयर्–ऊपर तक गये; विचुम्पैयुम् कटक्क–आकाश को भी पार करते हुए; वीङ्कित्तान्–(फूला) विराट् रूप लिया। ८९२

तब हनुमान ने उस तोरण पर खड़े होकर विराट् रूप धारण कर लिया। वह बड़ा तोरण देवेन्द्र के नगर के द्वार से लाकर इधर रखा गया था और लाल स्वर्ण का बना था। हनुमान इतना ऊँचा बढ़ा कि आकाश की चोटी को भी पार कर गया उसका सिर। ८९२

वीङ्गिय वीरनै वियन्तु नोक्किय
तीङ्गिय लरक्करुन् दिरुहि नार्शिनम्
वाङ्गिय शिलैयिनर् वळङ्गि नार्पडै
एङ्गिय शङ्गिन मिडित्त पेरिये 893

वीङ्किय वीरनै–उस तरह बड़े बने वीर को; वियन्तु नोक्किय–विस्मित होकर देखनेवाले; तीङ्कु इयल्–परपीडन-स्वभाव के; अरक्करुम्–राक्षसों ने भी; चिनम् तिरुकिनार्–कोप में बढ़कर; वाङ्किय चिलैयिनर्–कुंचितधनु होकर; पटै वळङ्किनार्–अस्त्र बरसाये; चङ्कु इनम् एङ्किय–शंखों ने ध्वनि निकाली; पेरि इटित्त–भेरियों ने नाद किया। ८९३

नृशंसकारी राक्षसों ने उस वीर का ऐसा बढ़ा आकार विस्मय के साथ देखा, उनका कोप भी बढ़ा। उन्होंने धनुष उठाकर शरों को हनुमान पर चलाया। तब शंख बज उठे और भेरियाँ ठनकीं। ८९३

ऎरिन्दन रॆय्दन रॆण्णि ऱन्दन
पॊरिन्दॆळु पडैक्कल मरक्कर् पोक्किनार्
शॆरिन्दन मयिर्पपुऱन् दिनवु तीर्वुऱच्
चॊरिन्दन वॆनविरुन् दैयन् रूङ्गिनान् 894

अरक्कर्–उन राक्षस वीरों ने; पॊरिन्तु ऎळु–अंगारे छोड़ते हुए उठ जानेवाले; ऎण् इऱन्तन पटै कलम्–असंख्यक हथियारों को; ऎरिन्तनर् ऎय्तनर्–फेंके, चलाये; पोक्किनार्–हनुमान पर मारे; मयिर् पुऱम्–रोमों के मध्य; चॆरिन्तन–जो लगे; तिनवु तीर्वु उऱ–खुजली मिटाते हुए; चॊरिन्तन ऎन–खुजलाते जैसे रहे; इरुन्तु–उस स्थिति में रहकर; ऐयन् तूङ्किनान्–श्रेष्ठ हनुमान तन्द्रित रहा। ८९४

राक्षसों ने हथियार फेंके और चलाये। वे अंगारे छुड़ाते हुए बढ़ आये, आकर हनुमान की खुजली को मिटाते-से उसके शरीर के बालों के मध्य जाकर ठहर गये। उस स्थिति में हनुमान थोड़ा तन्द्रित बैठा रहा। ८९४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उऱ्ऱुड नरक्करु मुरुत्तु डऱ्ऱिनर्
चॅऱ्ऱुऱ नॅरुक्किनर् शॅरुक्कुऱ् जिन्दैयार्
मऱ्ऱैयर् वरुम्बरि शिवरै वल्विरैन्
दॅऱ्ऱुवॅ नॅनबॅऴु वनुव नॅन्दिनान् 895

अरक्करुम्–राक्षस भी; चॅरुक्कुम् चिन्तैयार्–गर्वीले मन के; उटन् उऱ्ऱु–तभी मिलकर; उरुत्तु उटऱ्ऱिनर्–क्रुद्ध हो लड़े; चॅऱ्ऱु उऱ–एकदम; नॅरुक्किनर्–टकराये; अनुमन्–हनुमान ने भी; मऱ्ऱैयर् वरुम् परिचु–अन्यों को भी आना पड़े, ऐसा; इवरै–इनको; वल् विरैन्तु–अति शीघ्र; ऍऱ्ऱुवॅन्–निपातूँगा; ऍन–कहकर; ऍऴु–लौहदण्ड; एन्तिनान्–(हाथ में) धारण कर लिया। ८९५

गर्वीले राक्षसों ने सब मिलकर पास आकर हनुमान पर आक्रमण किया। हनुमान ने सोचा कि इनको मारूँगा; वही अन्यों को भी युद्ध में निमन्त्रण देने का उपाय है। ऐसा सोचकर उसने लौहदण्ड हाथ में उठा लिया। ८९५

ऊक्किय पडैहळु मुरुत्त वीररुम्
ताक्किय परिहळुन् दडुत्त तेर्हळुम्
मेक्कुयर् कॉडियुडे मेह मालैपोल्
नूक्किय करिहळुम् बुरळ नूऱिनान् 896

ऊक्किय–प्रेरित; पटैकळुम्–हथियार और; उरुत्त वीररुम्–क्रुद्ध वीर; ताक्किय परिकळुम्–चढ़ आये अश्व; तटुत्त तेर्कळुम्–और रोकनेवाले रथ; मेक्कु उयर्–ऊपर उठायी गयी; कॉटि उटै–ध्वजाओं के साथ रहे; मेक मालै पोल्–मेघ-श्रेणियों के समान; नूक्किय–चालित; करिकळुम्–गज; पुरळ–लोट जायँ, ऐसा; नूऱिनान्–(हनुमान ने) निहत कर दिया। ८९६

हनुमान ने प्रत्याघात किया, जिससे राक्षसप्रेरित हथियार, क्रुद्ध वीर, आकर टकरानेवाले अश्व, उसको रोकनेवाले रथ और ध्वजा उठाये आनेवाले मेघमाला-से गजवृन्द सब नीचे गिरे और लुढ़क गये। ८९६

वार्मदक् करिहळिन् कोडु वाङ्गिमात्
तेर्पडप् पुडैक्कुमत् तेरिन् शिल्लियाल्
वीररै युरुट्टुमव् वीरर् वाळिनाल्
तारुडैप् पुरवियैत् तुणियत् ताक्कुमाल् 897

वार् मत–मदस्रावी; करिकळिन्–गजों के; कोटुवाङ्कि–दाँतों को छीनकर; मा तेर्–बड़े रथों को; पट पुटैक्कुम्–मिटाते हुए उन पर पटकता; अ तेरिन् चिल्लियाल्–उन रथों के पहियों से; वीररै उरुट्टुम्–वीरों को मारता; अ वीरर् वाळिनाल्–उन वीरों की तलवारों से; तार् उटै पुरवियै–दाम-सहित अश्वों को; तुणिय–खण्ड-खण्ड करते हुए; ताक्कुम्–काटता। ८९७

उसने मत्तगजों के लम्बे दाँतों को छीना और उनसे मारकर बड़े

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रथों को तोड़ दिया। उन रथों के पहियों से मारकर वीरों के प्राण हर लिये। उनकी तलवारों से दामालंकृत अश्वों को काटकर मिटाया। ८९७

इरण्डुते रिरण्डुकैत् तलत्तु मेन्दिवे
रिरण्डुमाल् यानैपट् टुरुळ वॅऱ्ऱुमाल्
इरण्डुमाल् यानैहै यिरण्डि नेन्दिवे
रिरण्डुपा लिनुम्वरुम् बरियै यॅऱ्ऱुमाल् 898

इरण्टु तेर्–दो रथों को; इरण्टु कै तलत्तुम्–दोनों हाथों में; एन्ति–उठा लेकर; वेऱु इरण्टु–अन्य दो; माल् यानै–दो बड़े गजों को; पट्टु उरुळ–मरकर लोट जायँ, ऐसा; ऍऱ्ऱुम्–मारता; कै इरण्टिन्–अपने दो हाथों में; इरण्टु माल् यानै–दो बड़े गजों को; एन्ति–उठाकर; इरण्टु पालिनुम्–दोनों ओर; वेऱु वरुम्–अलग आनेवाले; परियै ऍऱ्ऱुम्–अश्वों पर दे मारता। ८९८

हनुमान दोनों हाथों में दो रथ उठाता और उनको चलाकर दो बड़े गजों को मारता और गज लुढ़क जाते। फिर दो बड़े-बड़े हाथी उठाते और दोनों ओर आनेवाले अश्वों पर पटककर उन्हें निपात देता। ८९८

मायिर नॅडुवरै वाङ्गि मण्णिलिट्
टायिरत् तेर्पड वरैक्कु मालळित्
तायिरङ् गळिऱ्ऱैयोर् मरत्ति नालडित्
तेयॅनु मात्तिरै यॅऱ्ऱि मुऱ्ऱुमाल् 899

मायिरम्–पास रहे; नॅटु वरै–बड़े पर्वतों को; वाङ्कि–अनायास उखाड़कर; आयिरम् तेर्–सहस्र रथों को; पट–मिटाकर; मण्णिल् इट्टु–भूमि पर डालकर; अळित्तु अरैक्कुम्–बुकनी बनाते हुए पीसता; एय् ऍनुम् मात्तिरै–'ए' कहने मात्र के अन्दर; आयिरम् कळिऱ्ऱै–सहस्र गजों को; ओर् मरत्तिताल्–एक पेड़ से; अटित्तु ऍऱ्ऱि–मार-पीटकर; मुऱ्ऱुम्–हत करता। ८९९

हनुमान पास रहे एक बड़े पर्वत को आसानी से उखाड़कर उठा लेता और सहस्रों रथों को भूमि पर डालता और तोड़कर बुकनी बना लेता। 'ए' कहने के समय के अन्दर एक वृक्ष से सहस्रों गजों को पीटता और निपात देता। ८९९

विशैयिन्मान् ऱ्ऱहळुङ् गळिऱुम् विट्टहल्
तिशैयुमा हायमुऱ् जॅऱियच् चिन्दुमाल्
कुशैहॊळपाय् परियॊडुङ् गॊऱ्ऱ वेलॊडुम्
पिशैयुमा लरक्करैप् पॅरुङ्ग रङ्गळाल् 900

विचैयिन्–अति क्षिप्र गति से; मान् तेर्कळुम्–अश्वयुक्त रथों; कळिऱुम्–गजों को; विट्टु–उछालकर; अकल् तिचैयुम्–विशाल दिशाओं और; आकायमुम्–आकाश में; चॅऱियि–ठस भर जाएँ, ऐसा; चिन्तुम्–छितरा देता; अरक्करै–राक्षसों को; पॅरुम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करङ्कळाल्–अपने बड़े हाथों से; कुचै कॊळ्–लगाम-लगे; पाय् परि–सरपट भागनेवाले अश्वों; ऒटुम्–के साथ; कॊऱ्ऱ वेल् ऒटुम्–और विजयदायिनी शक्तियों के साथ; पिचैयुम्–पीसकर मार देता। ९००

और भी हनुमान तेज़ी के साथ अश्वयुक्त रथों और गजों को ले उछालता, जिससे आकाश और दिशाओं में वे भर जाते। उनको ले बिखेर देता। वह कभी राक्षसवीरों को अपने बड़े हाथों से उठाता और उनको लगाम लगे सरपट दौड़नेवाले अश्वों और विजयदायिनी शक्तियों के साथ मसलकर मार डालता। ९००

उदैक्कुम्वॆङ् गरिहळै युळक्कुन् देर्हळै
मिदिक्कुम्वन् बुरवियैत् तेय्क्कुम् वीररै
मदिक्कुम्वल् लॆळुविन्ना लरैक्कु मण्णिडैक्
कुदिक्कुम्वन् ऱलैयिडैक् कडिक्कुङ् गुत्तुमाल् 901

वॆम् करिकळै–क्रूर करियों के; उतैक्कुम्–लातें मारता; उळक्कुम् तेर्कळै–मथनेवाले रथों को; मितिक्कुम्–रौंद डालता; वन् पुरवियै–सशक्त अश्वों को; तेय्क्कुम्–पीसता; वीररै–वीरों को; वल् ऎळुविन्ताल्–सशक्त लौहदण्ड से; मण्णिटै–भूमि पर; मतिक्कुम्–मथ डालता; अरैक्कुम्–बेल देता; वन् तलै इटै–कठोर सिरों पर; कुतिक्कुम्–कूदता; कटिक्कुम्–काटता; कुत्तुम्–घूँसा देता। ९०१

और हनुमान क्रूर गजों के लात मारता। युद्धभूमि को मथते आनेवाले रथों को पैरों से कुचलता। अश्वों को रौंदता। वीरों को लौहदण्ड से बेलता। चटनी-सा बना देता। उनके कठोर सिरों पर कूदता। उनको दाँतों से काटता और घूँसे देता। ९०१

तीयुऱु पॊऱियुडैच् चॆङ्गण् वॆङ्गमा
मीयुऱत् तडक्कैयाल् वीरन् वीशुदो
ऱाय्पॆरुङ् गॊडियन कडलि लाळ्वन
पायुडै नॆडुङ्गलम् पडुव पोन्ऱवे 902

ती उऱु–आग से उत्पन्न; पॊऱि इटै–अंगारों के समान; चॆम् कण्–लाल आँखों वाले; वॆम् कैमा–भयंकर (सूँड़ वाले) गजों को; वीरन्–(हनुमान) महावीर के; तट कैयाल्–बड़े हाथों से; मी उऱ–आकाश में पहुँचाते हुए; वीचु तोऱु–फेंकते हर समय; आय् पॆरुम्–चुनी हुई बड़ी; कॊटियन–ध्वजा वाले; पाय् उटै–पाल-सहित; नॆटुम् कलम्–बड़े पोत; कटलिल् आळ्वन–समुद्र में मग्न होकर; पटुव–मिटते; पोन्ऱ–जैसे लगते। ९०२

अंगारे निकालनेवाली आग के समान लाल आँखों से युक्त क्रूर हाथियों को महावीर अपने विशाल हाथों से उठाकर फेंकता, तब वे बड़ी ध्वजाओं-सहित पाल वाले बड़े पोत समुद्र में डूबते-जैसे लगते। ९०२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तारॊडु मुरुळॊडुन् दडक्कै याऱ्ऱनि
वीरन्विट् टॆऱिन्दन कडलिन् वीळ्वन
वारियि नॆळुशुडर्क् कडवुळ् वानवन्
तेरिनै निहर्त्तन पुरवित् तेर्हळे 903

तनि वीरन्–अद्वितीय वीर ने; तट कैयाल्–विशाल हाथों से; विट्टु ऍऱिन्तन–जिनको उठा फेंका; पुरवि तेर्कळ्–वे अश्व-सहित रथ; तार् ओटुम्–घंटियों की माला के साथ; उरुळ् ओटुम्–पहियों के साथ; कटलिल् वीळ्वन–समुद्र में जा गिरे, तब; वारियिन्–समुद्र से; ऍळु–उगनेवाले; चुटर् कटवुळ्–किरणमाली; वानवन्–सूर्य-देवता के; तेरिनै–रथ की; निकर्त्तन–समानता कर रहे थे। ९०३

अद्वितीय महावीर द्वारा फेंके गये अश्व-जुते रथ गुरियों से युक्त दामों के साथ और पहियों के साथ समुद्र में जा गिरते हैं। तब वे समुद्र से उग आनेवाले किरणमाली सूर्यदेव के रथ की समता करते। ९०३

मीयुऱ विण्णिडै मुट्टि वीळ्वन, आय्पॆरुन् दिरैक्कड लळुवत् ताळ्वन
ओय्वन पुरविवा युदिरङ् गाल्वन, वायिडै यॆरियुडै वडवै पोन्ऱवे 904

मी विण् इटै–ऊपर आकाश में; उऱ–लगे ऐसा; मुट्टि–जाकर टकराकर; वीळ्वन आय्–गिरकर; पॆरुम् तिरै–उत्तुंग तरंगों के; कटल् अळुवत्तु–समुद्र की गहराई में; आळ्वन–डूबनेवाले; ओय्वन–शिथिल पड़े; पुरवि–अश्व; वाय् उतिरम् काल्वन–मुख से रक्त वमन करते; वाय् इटै–मुख में; ऍरि उटै–अग्नियुक्त; वटवै पोन्ऱ–बड़वाग्नि के समान लगे। ९०४

हनुमान के द्वारा ऊपर उछाले गये अश्व आकाश में जाकर टकराकर नीचे गिरते और उत्तुंग तरंगों वाले समुद्र की गहराई में डूब जाते और निष्क्रिय बन जाते। तब अपने मुखों से रक्त निकालते हुए वे अग्निमुखी बड़वाग्नि के समान लगते। ९०४

वरिन्दुऱ वल्लिदिऱ् चुऱऱि वालिनाल्
विरिन्दुऱ वीशलिऱ् कडलिन् वीळ्हुनर्
तिरिन्दनर् शॆऱिकयिऱ् ऱरवि नाऱ्ऱिरि
अरुन्दिरन् मन्दर मनैय रायिनार् 905

वालिनाल्–पूँछ से; वल्लितिन्–कसकर; उऱ चुऱऱि वरिन्तु–खूब लपेट बाँधकर; विरिन्तु उऱ–बहुत दूर; वीचलिन्–फेंकने से; कटलिल् वीळ्कुनर्–समुद्र में जो गिरे वे; तिरिन्तनर्–घूमे; चॆऱि कयिऱु अरवितान्–मोटी नेती, (वासुकी) सर्प से; तिरि–घूमनेवाले; अरुम् तिऱल्–बहुत बलवान; मन्तरम् अनैयर्–मन्दरपर्वत के समान; आयिनार्–बने। ९०५

हनुमान अपनी पूँछ लपेटकर कसकर बाँध लेता, बहुत दूर जा गिरें,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐसा वीरों को घुमाकर फेंक देता। वे समुद्र में जा गिरते और (लट्टू के समान) घूमते। वे तब वासुकी की मोटी नेती द्वारा घुमाये गये प्रबल व सुदृढ़ मन्दरपर्वत के समान लगते। ९०५

वीरऩ्वऩ् ऱडक्कैया लॅडुत्तु वीशिय
वार्मदक् कळिऱ्ऱिऩिऱ ऱेरिऩ् वाशियिऩ्
मूरिवॅङ् गडल्पुहक् कडिदु मुऩ्दिऩ
ऊरिऩ्वॅङ् गुरुदिया ऱीर्प्प वोडिऩ 906

वीरऩ्–महावीर द्वारा; वऩ् तट कैयाल्–सशक्त बड़े हाथों से; ऍटुत्तु–उठाकर; वीचिय–फेंके गये; वार् मत–बहनेवाले मद के; कळिऱ्ऱिऩिल्–गजों से भी; तेरिऩ्–रथों से भी; वाचियिऩ्–अश्वों से भी (अधिक तेज़ी से); ऊरिऩ्–लंका में बही; वॅम् कुरुति आऱु–भयंकर रक्त-नदी द्वारा; ईर्प्प–खिंचकर; ओटिऩ–जो चले वे; मूरि वॅम् कटल्–बड़े और भयंकर समुद्र में; पुक–डूबने के लिए; कटिदु मुऩ्तिऩ–आगे गये। ९०६

महावीर के द्वारा उसके सबल और विशाल हाथों से फेंके जाकर मदस्रावी गज और अश्व तेज़ी से समुद्र की ओर गये। पर उससे भी अधिक तेज़ी से जाते रहे समुद्र में डूबने के वास्ते वे शव, जिनको लंका में बहनेवाली रक्त की नदी तिराते खींच ले जा रही थी। ९०६

पिऱैक्ककडै यॅयिऱ्ऱिऩ पिलत्तिऩ् वायिऩ
कऱैप्पुऩऱ् पॊऱिहळो डुमिऴुङ् गण्णिऩ
उऱैप्पुऱु पडैयिऩ वुदिर्ऩ्द याक्कैहळ्
मऱैत्तऩ महरतो रणत्तै वाऩुऱ 907

उऱैप्पु उऱु–अपने पर खूब लगे (चुभे); पटैयिऩ–हथियारों के साथ रहनेवाले; पिऱै कटै ऍयिऱ्ऱिऩ–चन्द्रकला के समान नोकदार दाँत वाले; पिलत्तिऩ् वायिऩ–बिल-सरीखे मुखों वाले; कऱै पुऩल्–चिपकनेवाले रक्त-जल को; पॊऱिकळोटु–अंगारों के साथ; उमिऴुम् कण्णिऩ–उगलनेवाली आँखों के; उतिर्ऩ्त याक्कैकळ्–नीचे गिरे पड़े (राक्षसों के) मृतक शरीर (ढेर); वाऩ् उऱ–आकाश तक जाकर; मकर तोरणत्तै–मकराकार तोरण को; मऱैत्तऩ–ढँक दिया (ढेर ने)। ९०७

गड़े हथियारों के साथ चन्द्रकला-सदृश वक्र दाँतों, बिल के समान मुखों और चिपचिपे रक्त के साथ आग उगलनेवाली आँखों से युक्त राक्षस-शवों का ढेर इतना ऊँचा था कि मकर-तोरण ही ढँक गया। ९०७

कुऩ्ऱळ मरमुळ कुलङ्गॊळ् पेरॅऴु
ऒऩ्ऱल पलवुळ वुयिरुण् बाऩुळऩ्
अऩ्ऱिऩर् पलरुळ रैयऩ् कैयिऩिल्
पॊऩ्ऱुव दल्लदु पुऱत्तुप् पोवरो 908

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुन्ऱु उळ–पर्वत हैं; मरम् उळ–पेड़ हैं; कुलम् कॊळ्–श्रेष्ठतायुक्त; पेर् अॅऴु–बड़े लौहदण्ड; ऒन्ऱु अल–एक नहीं; पल उळ–अनेक हैं; उयिर् उण्पान्–जीव-खादक (यम); उळन्–है; अन्ऱिन्ऱ्–शत्रु; पलर् उळर्–अनेक हैं; ऐयन् कैयिन्ऱिल्–उत्तम (महावीर) के हाथों; पॊन्ऱुवतु अल्लतु–विना मरे; पुऱत्तु पोवरो–अलग जा सकेंगे क्या। ९०८

हनुमान उठाकर फेंके, उस काम में आने के लिए पर्वत थे, पेड़ थे और श्रेष्ठ तथा बड़े लौहदण्ड अनेक प्राप्य थे। और जीवभक्षक यम भी प्रस्तुत था। मरने के लिए राक्षस भी अनेक थे। फिर क्या था? विना मरे वे कहीं बचके अलग जायँगे क्या? । ९०८

मुऴुमुदर् कण्णुदन् मुरुहन् ऱादैकैम्
मऴुवॆन्ऱप् पॊलिन्दॊळिर् वयिर वान्ऱऩि
अॅऴुविऩिऱ् पॊलङ्गऴ लरक्क रीण्डिय
कुऴुविऩैक् करियॆऩक् कॊन्ऱु नीक्किऩान् 909

मुऴु मुतल्–सर्वेश्वर; कण्णुतल्–भालनेत्र शिवजी; मुरुकन् तातै–'मुरुगन' (कार्तिकेय) के पिता के; कै मऴु ऍऩ–हाथ के परशु (या तप्त लौहखण्ड) के समान; पॊलिन्तु ऒळिर्–शोभते हुए प्रकाश छिटकानेवाले; वयिर–वज्रकठोर; वान्–श्रेष्ठ; तऩि–अनुपम; अॅऴुविऩिल्–लौहदण्ड से; पॊलम् कऴल्–स्वर्ण-पायलधारी; अरक्कर्–राक्षसों के; ईण्टिय कुऴुविऩै–एकत्रित झुण्ड को; करि ऍऩ–गज को जैसे; कॊन्ऱु नीक्किऩान्–मारकर दूर किया (हनुमान ने)। ९०९

कार्तिकेय (तमिऴ में मुरुगन, वेलन आदि नाम हैं उनके) के पिता, परमेश्वर और भालनेत्र शिवजी के हाथ के फरसे (या तप्त लोहे) के समान हनुमान का लौहदण्ड वज्र-सम कठोर, उज्ज्वल और अनुपम था। शिवजी ने अपने फरसे से जैसे गज को मारा था, वैसे ही हनुमान ने अपने लौहदण्ड से स्वर्णपायलधारी राक्षसों के इकट्ठे समूह को मारकर दूर किया। ९०९

उलन्ददु तानै युवन्दऩ रुम्बर्, अलन्दलै युऱ्ऱदव् वाऴि यिलङ्गै
कलन्द दऴुङ्गुरल् कण्डऩर् निन्ऱ, वलन्दरु तोळव रैवरुम् वन्दार् 910

तानै उलन्ततु–सेनाएँ मिटीं; उम्पर् उवन्तऩर्–देव हर्षित हुए; अ आऴि इलङ्कै–वह समुद्रावृत लंका; अलम् तलै उऱ्ऱतु–दुःख से अभिभूत होकर; अऴुम् कुरल्–रुदनस्वर से; कलन्ततु–भर गया; कण्टऩर्–देखते; निन्ऱ वलम् तरु–जो खड़े रहे वे बलवान; तोळवर् ऐवरुम्–कन्धों वाले पाँचों; वन्तार्–आये। ९१०

सेनाएँ मिटीं। देव हर्षित हुए। उस समुद्रवलयित लंका में दुःख फैला और रुदनस्वर भर उठा। सबल भुजाओं वाले पाँचों सेनापतियों ने उसे देखा। वे हनुमान से युद्ध करने के लिए सामने आये। (उनके नाम वाल्मीकि के अनुसार, विरूपाक्ष, यूपाक्ष, दुर्धर, भासकर्ण और प्रघस थे।)। ९१०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ईर्त्तॆऴु शॆम्बुन लॆक्क रिऴुक्कत्, तेर्त्तुणै याऴि यऴुत्तिनर् शॆन्ऱार्
आर्त्तनऩ रायिर मायिर मम्बाल्, तूर्त्तनऩ रञ्जनैत् तोन्ऱलै येन्ऱार् 911

चॆम्पुनल्–रक्तप्रवाह के; ईर्त्तु ऍऴु–खींचते जाने से बने; ऍक्कर्–बालुओं के टीलों के; इऴुक्क–खींचने से; तेर् तुणै आऴि–रथों के चक्रद्वयों को; अऴुत्तिनर्–धँसाते हुए; चॆन्ऱार्–जो चले उन पाँचों ने; अञ्चनै तोन्ऱलै–अञ्जनासुत का; एन्ऱार्–सामना किया; आर्त्तनऩर्–नारे उठाये; आयिरम् आयिरम् अम्पाल्–सहस्र-सहस्र शरों से; तूर्त्तनऩर्–उसके शरीर को ढक दिया। ९११

रक्तप्रवाह में इधर-उधर बालू के टीले बने थे। उनमें रथ धँस जाते। वैसे ही वे दोनों पहियों को धँसाते, उठाते रथ चलाते गये। उन्होंने अंजनासुत के सामने नारे निकाले और सहस्र-सहस्र शरों से उसके शरीर को ढक दिया। ९११

ऍय्द कडुङ्गणै यावैयु मॆय्दा, नॊय्दह लुम्बडि कैहळि नूऱाप्
पॊय्दह डॊन्ऱु पॊरुन्दि नॆडुन्देर्, शॆय्द कडुम्बॊऱि यॊन्ऱु शिदैत्तान् 912

ऍय्त–प्रेरित; कटुम् कणै–घातक शरों को; यावैयुम् ऍय्ता–किसी को पास न आने देते हुए; नॊय्तु अकलुम्पटि–आसानी से हट जाएँ, ऐसा; कैकळिन् नूऱा–हाथों से प्रताडित कर मिटाकर; पॊय्तु–अन्दर काटकर; अकटु ऒन्ऱु पॊरुन्ति–बीच में लगाये गये; नॆटुम् तेर् चॆय्त–बड़े रथ में बने; कटुम् पॊऱि ऒन्ऱु–शीघ्रगामी यन्त्र, एक, को; चितैत्तान्–मिटाया। ९१२

हनुमान ने उन शरों को अपने पास नहीं आने देकर दूर ही से अपने हाथों से पीटकर मिटा दिया। उस रथ के बीच में छेद बनाकर उसमें एक यन्त्र लगा हुआ था। तेज़ी से चलनेवाले उस यन्त्र को हनुमान ने तोड़ दिया। ९१२

उऱ्ऱु तेर्शिदै यामु नुयर्न्दान्, मुऱ्ऱिन वीरनै वानिन् मुनिन्दान्
पॊऱ्ऱिर णीळॆऴु वॊन्ऱु पॊरुत्तान्, ऍऱ्ऱिन नः(ह्)दवन् विल्लिनि लेऱ्ऱान् 913

उऱ्ऱु उऱु–यन्त्र जिसमें लगा था; तेर्—उस रथ के; चितैया मुन्–छिन्न-भिन्न हो जाने से पहले; उयर्न्तान्–राक्षस ऊपर उठा; मुऱ्ऱिन वीरनै–रोकते हुए जिसने उसे घेर लिया, उस महावीर से; वानिन्–आकाश में ही रहकर; मुनिन्तान्–लड़ा; पॊन् तिरळ्–काले स्वर्ण के बने; नीळ् ऍऴु ऒन्ऱु–लम्बे दण्ड को; पॊऱुत्तान्–उठा लेकर; ऍऱ्ऱिनन्–(हनुमान ने) मारा; अ.ंतु–उसको; अवन्–उस निशाचर ने; विल्लिनिल्–अपने धनु पर; एऱ्ऱान्–रोक झेल लिया। ९१३

यन्त्र-लगा रथ टूट जाय, इसके पहले ही राक्षस-सेनापति (पाँच में एक) ऊपर आकाश में उछल गया। वहाँ भी हनुमान ने उसे घेर लिया, तो वहीं से वह लड़ने लगा। काले स्वर्ण (लोहे) के बने एक दण्ड को लेकर हनुमान ने उस पर प्रहार किया। राक्षस ने उसे अपने धनु पर रोक लिया। ९१३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुऱिन्ददु मूरिवि लम्मुऱि येहॉण्, डॅऱिन्द वरक्कनोर् वॅऱ्पै यॅडुत्तान्
अऱिन्द मनत्तव नन्दवॅ ळुक्कॉण्, डॅऱिन्द वरक्कनै यिन्नुयि रुण्डान् 914

मूरि विल्–बलवान धनु; मुऱिन्ततु–टूटा; अ मुऱिये कॉण्टु–उसके खण्ड को ही लेकर; ऍऱिन्त अरक्कन्–जिसने फेंका उस राक्षस ने; ओर् वॅऱ्पै ऍटुत्तान्–पर्वत को उठाया; अऱिन्त मनत्तु अवन्–उसको ताड़नेवाले मन के हनुमान ने; अन्त ऍळु कॉण्टु–उस दण्ड को लेकर; ऍऱिन्त अरक्कनै–फेंकनेवाले राक्षस को; इन्नुयिर् उण्टान्–प्यारे प्राणों से हीन बना दिया (मार दिया)। ९१४

धनु टूटा। उसके टोटे को हनुमान पर फेंकने के बाद राक्षस ने एक पर्वत को उठाया। हनुमान उसका अभिप्राय समझ गया। उसने उसी दण्ड से उस राक्षस के प्राण हर लिये, जिसने उस पर धनु का टोटा फेंका था। ९१४

ऑळिन्दवर् नाल्वरु मूळि युरुत्त, कॉळुन्दुरु तीयॅन वॅञ्जिलै कोवाप्
पॉळिन्दवर् वाळि पुहैन्दन कण्गळ्, विळुन्दन शोरियव् वीरन् मणित्तोळ् 915

ऑळिन्तवर् नाल्वरुम्–बाक़ी रहे चारों ने; ऊळि–युगान्त में; उरुत्त–क्रोध से (भभक) उठी; कॉळुन्तु उरु–ज्वालामयी; ती ऍत–आग के समान; वॅम् चिलै–सन्तापक चापों में; कोवा–सन्धान करके; वाळि पॉळिन्तनर्–शर बरसाये; कण्कळ् पुकैन्तन–आँखें गुँगुआयीं; अ वीरन्–उस महावीर के; मणि तोळ्–सुन्दर कन्धों से; चोरि विळुन्तन–रक्तकण चुए। ९१५

(एक सेनापति मर गया।) बाक़ी चारों ने युगान्त की ज्वालाओं-सहित क्रुद्ध हो उठनेवाली आग के समान भयंकर धनुओं की डोरी लगाकर शर-वर्षा की। उनकी आँखें गुँगुआयीं। उन शरों के लगने से महावीर की सुन्दर भुजाओं से रक्त-कण ढलक आये। ९१५

आयिडै वीरनु मुळ्ळ मळन्ऱान्, माय वरक्कर् वलत्तै युणर्न्दान्
मीयॅरि युय्प्पदॉर् कऱ्चॅल विट्टान्, तीयव रच्चिलै यैप्पॉडि शॅय्दार् 916

अ इटै–तब; वीरनुम्–महावीर ने; उळ्ळम् अळन्ऱान्–तप्तमन होकर; माय अरक्कर्–वंचक राक्षसों के; वलत्तै–बल को; उणर्न्तान्–समझकर; मी–ऊपर; ऍरि उय्प्पतु–आग बरसानेवाले; ओर् कल्–एक पत्थर (पर्वत) को; चॅल विट्टान्–चलाया; तीयवर्–क्रूरों ने; अ चिलैयै–उस पर्वत को; पॉटि चॅय्तार्–चूर कर दिया। ९१६

तब हनुमान का मन भी उद्विग्न हो उठा। उसने मायावी राक्षसों के बल को जान लिया। उसने आग निकालते हुए जानेवाले एक पर्वत को उन पर चलाया। नृशंस राक्षसों ने उसे चूर कर दिया। ९१६

तॉडुत्त तॉडुत्त शरङ्ग डुरन्दार्, अडुत्तहत् मार्बि नळुन्द वळन्ऱान्
मिडऱ्ऱॉऴि लात्विड तेरॉडु नॉय्दिन्, ऍडुत्तॉरु वन्ऱनै विण्णि नॅऱिन्दान् 917

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तॊटुत्त तॊटुत्त–बार-बार संधान कर; चरङ्कळ् तुरन्तार्–शर चलाये; अटुत्तु–लगकर; अकल् मार्पिल् अऴुन्त–(वे) उसके विशाल वक्ष में गड़े; अऴत्रान्–तब हनुमान नाराज हुआ; मिटल् तॊऴिलान्–साहसी योद्धा ने; विटु तेरॊटु–चलायमान रथ के साथ; ऒरुवन् तन्नै ऎटुत्तु–एक को उठा लेकर; विण्णिन् ऎरिन्तान्–आकाश में फेंक दिया। ९१७

तब उन्होंने डोरी से लगा-लगाकर शर चलाये। वे उसके विशाल वक्षःस्थल में जाकर चुभे। क्रुद्ध हो, योद्धा हनुमान ने एक को उसके द्वारा चालित रथ के साथ लेकर आकाश में फेंक दिया। ९१७

एय्न्दॆऴु	तेरुमव्	विण्णिन्नै	यॆल्लाम्
नीन्दिय	दोडि	निमिर्न्ददु	वेहम्
ओय्न्ददु	वीऴ्वदन्	मुन्नुयर्	पारिल्
पाय्न्दवन्	मेलुडन्	मारुदि	पाय्न्दान् 918

एय्न्तु–आकाश में लगा; ऎऴु तेरुम्–उठ जानेवाला वह रथ भी; अ विण्णिन्नै ऎल्लाम्–उस आकाश भर में; नीन्तियतु–तैरा; ओटि निमिर्न्ततु–दौड़ मारी; वेकम् ओय्न्ततु–वेग कम हुआ; वीऴ्वतन् मुन्–गिरने से पहले; उयर् पारिल्–उन्नत भूमि पर; पाय्न्तवन् मेल्–जो कूदा उस पर; उटन्–झट; मारुति पाय्न्तान्–मारुति झपटा। ९१८

उछाला गया वह रथ आकाश को पार कर ऊपर चला। उसका वेग कम हो गया। और उसके नीचे गिरने से पहले राक्षस भूमि पर कूद पड़ा। उस पर हनुमान झपटा। ९१८

मदित्त	कळिऱ्ऱिन्निन्	वाळरि	येऱु
कदित्तदु	पाय्वदु	पोऱ्कदि	कॊण्डु
कुदित्तवन्	माल्वरैत्	तोळ्हळ्	कुऴम्प
मिदित्तनन्	वॆञ्जिन	वीररुळ्	वीरन् 919

वॆम् चित–भयंकर क्रुद्ध; वीररुळ् वीरन्–वीरों में (सर्वश्रेष्ठ) वीर महावीर ने; मतित्त कळिऱ्ऱिन्निन्–मत्त गजों पर; वाळ् अरि एऱु–प्रकाशमय पुरुष सिंह; कतित्ततु–क्रोध करके; पाय्वतु पोल्–झपटता जैसे; कति कॊण्टु–गति अपनाकर; कुतित्तु–कूदकर; अवन्–उसके; माल् वरै–बड़े पर्वत-सम; तोळ्कळ्–कन्धे; कुऴम्प–कर्दम-सा बन जाय, ऐसा; मितित्तनन्–कुचल डाला। ९१९

क्रुद्ध वीरों में (सर्वश्रेष्ठ) वीर (महावीर हनुमान) ने, मत्तगज पर तेजोवान पुरुष सिंह क्रुद्ध होकर झपटा जैसे वेग के साथ उस पर झपटा और उसके बड़े पर्वत-सम कन्धों को कर्दम बनाते हुए अपने पैरों से कुचल डाला और वह मर गया। ९१९

मूण्ड शिन्नत्तवर् मूवर् मुन्निन्दार्, तूण्डिय तेरर् शरङ्ग डुरन्दार्
वेण्डिय वॆञ्जमम् वेऱु विळैप्पार्, याण्डिन्नि येहुदि यॆन्ऱॆदिर् शॆन्ऱार् 920

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मूवर्–(बाक़ी) तीनों ने; मूण्ट चित्तत्तवर्–उठे क्रोध से; मुत्तिन्तार्–हनुमान पर नाराज़ होकर; तूण्टिय तेरर्–उकसाये गये रथ वाले होकर; चरङ्कळ्–शर; तुरन्तार्–चलाये; वॅण्टिय–इच्छित; वॅम् चमम्–भयानक युद्ध; वेऱु विळैप्पार्–और तरह के भी करते; याण्टु–कहाँ; इत्ति–अब; एकुति–जाओगे; ऍन्ऱु–कहते हुए; ऍतिर् चॅन्ऱार्–(हनुमान के) सामने आये। ९२०

(दो चल बसे।) बाक़ी तीनों पहले ही क्रुद्ध थे। (अब उनके क्रोध का पारा और भी चढ़ गया।) अतिक्रुद्ध उन्होंने रथ को आगे चलाते हुए शर चलाये। वे अन्य प्रकारों के युद्ध करने को भी उद्यत हो गये। 'अब तू जायगा कहाँ?' कहते हुए वे हनुमान के सामने गये। ९२०

तिरण्डुयर् तोळिणै यञ्जनैच् चिङ्गम्, अरण्डरु विण्णुरै वार्हळु मञ्ज
मुरण्डरु तेरवै याण्डॊरु मून्ऱिल्, इरण्डै यिरण्डु कैयिर्कॊ डॅळुन्दान् 921

तिरण्टु उयर्–पुष्ट और उन्नत; तोळ् इणै–भुजाद्वय का; अञ्चनै चिङ्कम्–अंजना का केसरी (-सम पुत्र); अरण् तरु–रक्षणदायक; विण्–आकाश में; उऱै-वार्कळुम्–रहनेवालों के; अञ्च–डरते; आण्टु–वहाँ; मुरण् तरु–सारयुक्त; तेर् अवै ऒरु मून्ऱिल्–तीन रथों में; इरण्टै–दो को; इरण्टु कैयिल् कॊटु–हाथों में उठा लेते हुए; ऍळुन्तान्–ऊपर उछला। ९२१

दो पुष्ट और उन्नत कन्धों वाला अंजना का सिंह (-सदृश) हनुमान सुरक्षित आकाश के वासी देवों को भी भयभीत करते हुए वहाँ रहे सुदृढ़ रथों में दो को अपने हाथों में उठा लेकर ऊपर उछला। ९२१

तूङ्गिय पाय्परि शूद रुलैन्दार्, वीङ्गिय तोळवर् विण्णिन् विशैत्तार्
आङ्गदु कण्डवर् पोयह लामुन्, ओङ्गिनन् मारुदि यॊल्लैयि नुऱ्ऱान् 922

तूङ्किय–लटकते हुए; पाय् परि–सरपट दौड़नेवाले अश्व; चूतर्–और सूत; उलैन्तार्–मर गये; वीङ्किय तोळ् अवर्–स्थूल कन्धों वाले वे दोनों; विण्णिल् विचैत्तार्–आकाश में तेज़ चले; आङ्कु अतु कण्टु–तब उसको देखकर; अवर् पोय् अकला मुन्–उनके दूर जाने से पहले; मारुति–मारुति; ओङ्कितन्–ऊपर उठा; ऒल्लैयिल् उऱ्ऱान्–शीघ्र पास गया। ९२२

तब जो अश्व और सूत लटके रहे, वे मिटे। स्थूल कन्धों वाले दोनों राक्षस आकाश में तेज़ी से जाने लगे। हनुमान ने वह देखा और उनके दूर जाने से पहले उछलकर उनके पास गया। ९२२

कानिमिर् वॅञ्जिलै कैयि निऱुत्तान्, आनवर् तूणियुम् वाळु महैत्तान्
एनैय वॅम्बडै यिल्लव रॅञ्जार्, वानिडै निन्ऱुयर् मल्लिन् मलैन्दार् 923

काल् निमिर्–दो छोरों के साथ तने हुए; वॅम् चिलै–कठोर धनु को; कैयिन् इऱुत्तान्–हाथों से तोड़ा; आनवर्–उनके; तूणियुम् वाळुम्–तूणीरों और तलवारों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को; अकॆत्ताऩ्–तोड़कर मिटाया; एऩैय वॆम्पटॆ–अन्य हथियारों से; इल्लवर्–हीन वे; ऍञ्चार्–पिछड़े नहीं; वाऩ् इटै निऩ्ऱु–आकाश में स्थित होकर; उयर् मल्लिऩ्–उत्कृष्ट मल्लयुद्ध में; मलैन्तार्–भिड़े। ९२३

हनुमान ने दोनों छोरों के साथ उठे हुए उनके कठोर धनुओं को अपने दोनों हाथों से पकड़कर तोड़ दिया। उनके तूणीरों और उनकी तलवारों को भी तोड़कर मिटा दिया। उनके पास कोई और मारू हथियार नहीं थे। तो भी वे पिछड़े नहीं। ऊपर अन्तरिक्ष में ही रहकर मल्लयुद्ध करने लगे। ९२३

वॆळ्ळै यॆयिऱ्ऱर् करुत्तुयर् मॆय्यर्, पिळ्ळ विरित्त पॆरुम्बिल वायर्
कॊळ्ळ वुरुत्तॆऴु कोळर वॊत्तार्, ऒळ्ळिय वीर ऩरुक्कऩै यॊत्ताऩ् 924

वॆळ्ळै ऍयिऱ्ऱर्–श्वेत दाँतों वाले; करुत्तु–काले; उयर् मॆय्यर्–ऊँचे शरीर वाले; पिळ्ळ–फूटे; विरित्त–खुले; पॆरुम्–बड़े; पिल वायर्–बिल के समान मुखों वाले; कॊळ्ळ–पकड़ने के लिए; उरुत्तु–क्रुद्ध होकर; ऍऴु–उठनेवाले; कोळ् अरवु ऒत्तार्–ग्रह (राहु-केतु) सर्प के समान बने; ऒळ्ळिय वीरऩ्–तेजोमय महावीर; अरुक्कऩै ऒत्ताऩ्–सूर्य के समान लगा। ९२४

श्वेत दाँत वाले, काले और तगड़े शरीर वाले, फटे-से बिल के समान बड़े मुख वाले वे दोनों राहु और केतु नाम के बलवान सर्प-ग्रहों के समान लगे, जो (सूर्य को) पकड़कर निगलने के लिए उठ आते हों। तेजोमय हनुमान सूर्य के समान शोभा। ९२४

ताम्बॆऩ वालिऩ् वरिन्दुयर् ताळो, डेम्ब लिलारिरु तोळ्ह ळिरुत्ताऩ्
पाम्बॆऩ नीङ्गिऩर् पट्टऩर् वीऴ्न्दार्, आम्ब ऩॆडुम्बहै पोल्बव निऩ्ऱाऩ् 925

एम्पल् इलार्–अथक उनके; इरु उयर् ताळ् ओटु–दो लम्बे पैरों के साथ; तोळ्कळ्–लम्बी भुजाओं को; वालिऩ्–अपनी पूँछ से; ताम्पु ऍऩ–दाम-से जैसे; वरिन्तु–बाँधकर; इऱुत्ताऩ्–तोड़ा; पाम्पु ऍऩ–सर्पों के समान; नीङ्किऩर्–छूटकर; पट्टऩर्–निहत होकर; वीऴ्न्तार्–गिरे; आम्पल्–कुमुद के; ऩॆटुम् पकै–दीर्घ शत्रु, सूर्य; पोल्पवऩ्–के समान जो रहा; निऩ्ऱाऩ्–वह (हनुमान) विना आँच के खड़ा रहा। ९२५

हनुमान ने अथक उन दोनों के पैरों और कन्धों को अपनी पूँछ की रस्सी से कसकर उनको तोड़ दिया। वे राहु और केतु नाम के सर्पों के समान दूर हटे; फिर गिरे और मरे। कुमुद-शत्रु सूर्य के समान हनुमान (विना किसी आँच के) खड़ा रहा। ९२५

निऩ्ऱवऩ् ऩॆऩैय निऩ्ऱदु कण्डाऩ्, कुऩ्ऱिडै वावुऱु कोळरि पोल
मिऩ्ऱिरि वऩ्ऱलै मीदु कुदित्ताऩ्, पॊऩ्ऱिय वऩ्बुवि तेरॊडु पुक्काऩ् 926

निऩ्ऱवऩ्–जो खड़ा रहा, वह; एऩैयऩ्–बाक़ी रहे एक को; निऩ्ऱतु–खड़ा रहता;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्टान्–देखकर; कुन्ऱु इटै–पर्वत पर; वाबु उऱु–लपकनेवाले; कोळरि पोल–सिंह के समान; मिन् तिरि–बिजली के समान रह-रहकर प्रकट होनेवाले; वन् तलै मीतु–कठोर सिर पर; कुतित्तान्–कूदा; अवन् पोन्ऱि–वह मरकर; तेर् ओटु–रथ के साथ; पुवि पुक्कान्–भूमि पर गिरा। ९२६

इस भाँति जो स्थित रहा, उस हनुमान ने उन पाँच सेनापतियों में एक को अपने सामने खड़ा हुआ देखा। उसका सिर उसकी माया-शक्ति के कारण बिजली के समान रह-रहकर प्रकट हो रहा था। उस कठोर सिर पर हनुमान, पर्वत पर झपटनेवाले केसरी के समान उछलकर कूदा। उस राक्षस ने अपने प्राण छोड़ दिये और वह रथ-सहित भूमि पर गिर गया। ९२६

वञ्जमुङ् गळवुम् वेः(ह्)हि वळियला वळिमे लोडि
नञ्जिनुम् कोडिय राहि नवैशेयऱ् कुरिय नीरार्
वेञ्जिन वरक्क रैव रोरुवने वेल्लप् पट्टार्
अञ्जेनुम् बुलन्ग ळोत्ता रनुमनु मऱिवै योत्तान् 927

वञ्चमुम्–वंचना और; कळवुम्–चोरी; वे.ः.कि–चाहकर; वळि अला–बुरे; वळि मेल् ओटि–मार्ग में दौड़-फिरकर; नञ्चिनुम् कोटियर् आकि–विष से भी नृशंस बनकर; नवै चेयऱ्कु–परपीडन करने में; उरिय नीरार्–प्रवृत्त गुण वाले; वेम् चित्त–भयंकर क्रोधी; अरक्कर् ऐवर्–पाँच राक्षस; ओरुवने वेल्लप्पट्टार्–अकेले हनुमान द्वारा ही जीते गये; अञ्चु ऐनुम् पुलन्कळ् ओत्तार्–पंचेन्द्रिय के समान रहे; अनुमनुम्–हनुमान भी; अऱिवै ओत्तान्–ज्ञान के समान रहा। ९२७

वे पाँचों वञ्चना और चोरी पर आसक्त, कुमार्गगामी, विष से भी अधिक क्रूर और नृशंसकार्यतत्पर स्वभाव वाले थे। वे पाँचों एकाकी हनुमान द्वारा मारे गये। वे पञ्चेन्द्रिय के समान रहे और हनुमान ज्ञान के समान था। ९२७

नेय्दलै युऱ्ऱ वेऱ्कै निरुदरच् चेरुवि नेर्न्दार्
उय्दलै युऱ्ऱु मीण्डा रोरुवरु मिल्लै युळ्ळार्
कैदलैप् पूशल् पोङ्गक् कडुहिनर् काल नुट्कुम्
ऐवरु मुलन्द तन्मै यनैवरु ममैयक् कण्डार् 928

अ चेरुविल् नेर्न्तार्–उस युद्ध में जो लड़े; नेय् तलै उऱ्ऱ–घृत-लगे सिर वाली; वेल् कै निरुतर्–शक्ति-हस्त राक्षस; उय्तलै उऱ्ऱु–बचकर; मीट्टार्–लौटे; ओरुवरुम् इल्लै–कोई नहीं रहे; उळ्ळार् अनैवरुम्–जो (बचे) थे वे सभी; कालन् उट्कुम्–यम भी जिनसे डरता था वे; ऐवरुम् उलन्त तन्मै–पाँचों जैसे मरे उस प्रकार को; अदैय कण्टार्–समक्ष देखकर; कै तलै–युद्धभूमि से; पूचल् पोङ्क–शोर मचाते हुए; कटुकितर्–(रावण के पास) सवेग गये। ९२८

उस युद्ध में लगे रहे घृत-मले सिर वाले भालाओं के धारक राक्षसों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

में कोई भी बचकर नहीं लौटा। जो विना लड़े छिपे रहे, उन्होंने यम को भी डरानेवाले उन पाँचों का मरना प्रत्यक्ष देखा। वे युद्धस्थल से शोर मचाते हुए रावण के पास बहुत जल्दी जा पहुँचे। ९२८

इऱुक्कुऱु मिऩ्ऩे नम्मैक् कुरङ्गॆऩ विरङ्गि येङ्गि
मऱुक्कुऱु हिऩ्ऱ नॆञ्जिऩ् मादरै वैदु नोक्कि
उऱुक्कुऱु शॊल्ला ऩूऴित् तीयॆऩ वुलह मेऴुञ्
जुऱुक्कॊळ नोक्कुवाऩ्ऱऩ् शॆवित्तॊळै तीयच् चॊऩ्ऩार् 929

कुरङ्कु–वानर; नम्मै–हमें; इऩ्ऩे–आज ही; इऱुक्कुऱुम्–मार देगा; ऍऩ–ऐसा; एङ्कि–डरकर; इरङ्कि–दुःखी होकर; मऱुक्कु उऱुकिऩ्ऱ–व्यग्र; नॆञ्चिऩ्–मन वाली; मातरै–स्त्रियों को; वैतु नोक्कि–डाँटकर देखकर; उऱुक्कु उऱु–डपट के; चॊल्लाऩ्–शब्दों में; ऊऴि ती ऍऩ–प्रलयाग्नि-सम; उलकम् एऴुम्–सातों लोकों को; चुऱु कॊळ–जलाते-से; नोक्कुवाऩ् तऩ्–घूरनेवाले (रावण) के; चॆवि तॊळै–कर्ण-रन्ध्र; तीय–जल जाएँ, ऐसा; चॊऩ्ऩार्–बोले। ९२९

वहाँ स्त्रियाँ "यह वानर आज ही हमें मार देगा" —यह कहते हुए डर से दुःखी और उद्विग्न हो रही थीं और रावण उन्हें डाँट रहा था। डपट के शब्द कहते हुए उसने इनको युगान्तकालीन अग्नि के समान ऐसा घूरकर देखा, मानो सातों लोकों को जला दे। ऐसे उसके बीसों कर्ण-रन्ध्रों को झुलसाते-से उन्होंने कहा (निम्नांकित समाचार)। ९२९

तानैयु मुलन्द दैया तलैवरुञ् जमैन्दार् ताक्कप्
पोऩबिऩ् मीळ्वेम् यामे यदुवुम्बोर पुरिहि लामै
वाऩैयुम् वॆऩ्ऱु ळोरै वल्लैयिऩ् मडिय नूऱि
एऩैय रिऩ्मै शोम्बि यिरुन्ददक् कुरङ्गु मॆऩ्ऱार् 930

ऐया–प्रभु; तानैयुम् उलन्ततु–सेना भी मिट गयी; तलैवरुम् चमैन्तार्–नायक (पंच सेनापति) भी पक गये (मिट गये); ताक्क–युद्ध करने; पोऩ पिऩ्–जाने के पश्चात्; यामे मीळ्वेम्–हमीं बचे; अतुवुम्–वह भी; पोर् पुरिकिलामै–लड़ाई न करने से; अ कुरङ्कु–वह वानर; वानैयुम् वॆऩ्ऱु उळोरै–जिन्होंने आकाश को भी जीता था, उन (पाँचों) को; वल्लैयिऩ्–शीघ्र; मडिय नूऱि–मार-मिटाकर; एऩैयर् इऩ्मै–औरों के न होने से; चोम्पि–आलस्य अवलम्बन कर; इरुन्ततु–रहा; ऍऩ्ऱार्–(उन्होंने) कहा। ९३०

मालिक! सेनाएँ सूख (मिट) गयी हैं। नायक भी पक (मर) गये। युद्ध के बाद हम ही बचे। वह भी हमने लड़ाई में भाग नहीं लिया, इस वजह से। वह वानर अतिशीघ्र देवलोकविजयी पाँचों सेनापतियों को मारकर योद्धा न होने के कारण आलस्य का अवलम्बन करके चुप बैठा रहता है। ९३०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

10. अक्ककुमारऩ् वदैप् पडलम् (अक्षकुमार-वध पटल)

केट्टलुम् वॆहुळि वॆन्दीक् किळर्न्दॆऴु मुयिर्प्प ऩाहित्
तोट्टलर् तॆरियऩ् मालै वण्डॊडुञ् जुऱुक्कॊण् डेऱ
ऊट्टरक् कुण्ड पोलु नयऩत्ता ऩॊरुप्पट् टाऩैत्
ताट्टुणै तॊऴुदु मैन्दऩ् ऱडुत्तिडै तरुदि यॆऩ्ऱान् 931

केट्टलुम्–सुनते ही; वॆकुळि वॆम् ती—क्रोध रूपी भयंकर अग्नि; किळर्न्तु ऎऴुम्–भभक उठे ऐसा; उयिर्प्पऩ् आकि–लम्बी साँस छोड़नेवाला बनकर; तोटु अलर्–विकसित दलों के; तॆरियल् मालै–चुने हुए फूलों की माला; वण्टु ऒटुम्–भ्रमरों के साथ; चुऱुक् कॊण्टु एऱ–जल-झुलस जाय, ऐसा; ऊट्टु अरक्कु उण्ट पोलुम्–लाख जिनमें भरी हो, ऐसी; नयऩत्तान्–आँखों के साथ; ऒरुप्पट्टाऩै–(लड़ने को) उद्यत उसको; ताळ् तुणै तॊऴुतु–चरणद्वय पर नमस्कार करके; तटुत्तु–रोककर; मैन्तऩ्–पुत्र (अक्षकुमार) ने; इटै तरुति–मुझे अवकाश दीजिए; ऎऩ्ऱान्–कहा। ९३१

सुनते ही रावण की साँसें क्रोधाग्नि के साथ लम्बी उठीं। उसकी आँखें लाख के समान लाल हुईं और उनसे निकलनेवाले उष्ण से विकसित दल वाले और श्रेष्ठ फूलों की माला भ्रमरों के साथ झुलस गयी। वह युद्धोद्यत हुआ। तब अक्षकुमार ने उसके दोनों पैरों पर नमस्कार करके उसे रोका और निवेदन किया कि मुझे मौक़ा दीजिए। (अक्षकुमार रावण का ही पुत्र था। मन्दोदरी के पेट से इन्द्रजित् के बाद जनमा।)। ९३१

मुक्कणा ऩूर्दि यऩ्ऱे मूवुल हडियिऱ् ऱायोऩ्
ऒक्कवूर् पऱवै यऩ्ऱे यवऩ्ऱुयि लुरह मऩ्ऱे
तिक्कय मल्ल देपुऩ् कुरङ्गिऩ्मेऱ् चेऱि पोलाम्
इक्कड ऩडियेऱ् कीदि यिरुत्तियीण् डिऩिदि ऩॆन्दाय् 932

ऎऩ्ताय्–पिताजी; मुक्कणाऩ् ऊर्ति अऩ्ऱे–त्रिनेत्र शिवजी का वाहन (बैल) तो नहीं; मू उलकु–तीनों लोकों को; अटियिल्—पैरों से; तायोऩ्–जिसने लाँघकर नापा; ऒक्क ऊर्–(उस विष्णु के) युक्त रूप से सवारी बने; पऱवै अऩ्ऱे–पक्षी भी नहीं; अवऩ् तुयिल्–जिस पर वह सोता है, वह; उरकम् अऩ्ऱे—उरग नहीं; तिक्कयम् अल्लते–दिग्गज भी नहीं; पुऩ् कुरङ्किऩ् मेल्–अल्प मर्कट पर; चेऱि पोलाम्–आक्रमण करो क्या; इ कटऩ्–यह कर्तव्य; अटियेऱ्कु ईति–दास मेरे पास दे दें; ईण्टु–इधर; इऩितिऩ्–सुख से; इरुत्ति–आप रहें। ९३२

अक्षकुमार आगे बोला। पिताजी! क्या वह त्रिनेत्र का वाहन, बैल आ गया कि आप स्वयं जायँ लड़ने के लिए? या त्रिलोकमापक त्रिविक्रमदेव विष्णु का वाहन गरुड़ पक्षी है? वह उसकी शय्या उरग भी नहीं है न! दिग्गजों में कोई भी नहीं। अल्प वानर है, उस पर चढ़

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चलेंगे ? यह कर्तव्य मुझे सौंप दीजिए। आप यहाँ निश्चिन्तता के साथ रहिए। ९३२

अण्डर्होन् ऱन्नैप् पऱ्ऱित् तरुहॆन वडिये निऱ्कक्
कॊण्डनै यॆम्मुन् ऱन्नैप् पणियॆन नॆञ्जङ् गॊण्ड
दुण्डदु तीरु मन्ऱे युरनिलाक् कुरङ्गॊन् ऱेनुम्
अॆण्डिशै वॆन्ऱ नीये येवुदि यॆन्नै यॆन्ऱान् 933

अटियेन् निऱ्क–मेरे (दास के) रहते; अॆन् मुन् तन्नै–मेरे ज्येष्ठ (मेघनाद) से; अण्टर् कोन् तन्नै–देवराज को; पऱ्ऱि तरुक–पकड़ लाओ; अॆन–ऐसा; पणि कॊण्टनै–वह सेवा आपने करवा ली; अॆन–ऐसा; नॆञ्चम् कॊण्टतु–मेरे मन ने सोचा; उण्टु–था; उरन् इला–निर्बल; कुरङ्कु अॆन्ऱेनुम्–वानर भी हो तो; अतु–वह तरस; तीरुम् अन्ऱे–दूर होगी न; अॆण् तिचै वॆन्ऱ–आठों दिशाओं के विजयी; नीये–आप ही; अॆन्नै एवुति–मुझे भेजें; अॆन्ऱान्–कहा। ९३३

पहले भी, मेरे रहते आपने मेरे बड़े भाई मेघनाद को देवेन्द्र को पकड़ लाने का कार्य सौंपा और उनसे सेवा करवा ली। तभी मेरे मन में यह बात लगी थी। अब निर्बल वानर ही सही, एक मौक़ा दीजिए, तो वह हूक मिटेगी न ! आठों दिशाओं के विजेता, आप ही स्वयं मुझे उस कार्य पर जाने की आज्ञा दीजिए। ९३३

कॊय्दळिर् कोदुम् वाऴ्क्कैक् कोडरत् तुरुवु कॊण्डु
कैदवङ् गण्णि यीण्डोर् शिऱुपिऴै यिऴैक्कुङ् गऱ्पाल्
अॆय्दिन निमैया मुक्क णीशनै यॆन्ऱु पोदुम्
नॊय्दिनिन् वॆन्ऱु पऱ्ऱित् तरुहुवॆ नॊडियि नुन्बाल् 934

इमैया–जो पलक नहीं मारते; मुक्कण् ईचनै–त्रिनेत्र परमेश्वर स्वयं; कॊय् तळिर् कोतुम्–तोड़े हुए पल्लव खाने का; वाऴ्क्कै–जीवन बितानेवाले; कोटरतु उरुवु कॊण्टु–वानर का रूप धरकर; कैतवम् कण्णि–वंचना सोचकर; ईण्टु–यहाँ; ओर् चिऱु पिऴै–एक छोटा अपराध; इऴैक्कुम् कऱ्पाल्–करने की परिकल्पना लेकर; अॆय्तिनन् अॆन्ऱु पोतुम्–आया हो तो भी; नॊय्तिनिल् वॆन्ऱु–शीघ्र जीतकर; नॊटियिन्–पल भर में; उन्पाल्–आपके पास; पऱ्ऱि–पकड़कर; तरुकुवॆन्–लाकर दे दूँगा। ९३४

अपलक त्रिनेत्र परमेश्वर स्वयं छिन्न पल्लवों को खाकर जीवन बितानेवाले बन्दर का रूप लेकर और वञ्चना के विचार से यहाँ छोटी हानि करने का संकल्प लेकर आया हो, तो भी मैं उसको आसानी से जीतूँगा और शीघ्र पकड़ लाकर आपको दे दूँगा। ९३४

तुण्डत्तू णदनिऱ् ऱोन्ऱुङ् गोळरिशुडर् वॆण् गोट्टु
मण्डॊत्त निमिर्न्द पन्ऱि यायिनु मलैद लाऱ्ऱा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अण्डत्तैक् कडन्दु पोहि यप्पुऱत् तहलि ऩॅन्बाल्
तण्डत्तै यिडुदि यन्ऱे निन्वयिऱ् ऱन्दि लेऩेल् 935

तुण्ट तूण् अततिल्–टोटे खम्भे से; तोन्ऱुम्–जो प्रकट हुआ वह; कोळरि–सिंह भी हो तो; चुटर् वॅण् कोट्टु–चमकदार श्वेत दाँतों में; मण् तॊत्त–भूमि लटकी रही; निमिर्न्त–(वैसा) जो बढ़ा; पन्ऱि आयितुम्–वराह हो तो भी; मलैतल् आऱ्ऱा–मुझसे लड़ नहीं सकेगा; अण्टत्तै कटन्तु पोकि–अण्ड के पार जाकर; अ पुऱत्तु–उस तरफ़ के; अकलिन्–(अण्ड में) चला जाय तो भी; निन् वयिन्–आपके पास; तन्तु इलेन् ऍल्–नहीं दूँगा तो; तण्टत्तै इटुति—दण्ड दे दीजिए। ९३५

काष्ठांश एक खम्भे से जो बाहर आया, वह (नर)-सिंह भी क्यों न हो; या वह वराह क्यों न हो, जिसके दाँतों में भूमि उठा ली गयी थी और जो बहुत अधिक बढ़ा था —दोनों मेरे विरुद्ध लड़ने में समर्थ नहीं हैं। वह वानर अण्ड को पारकर बाह्याण्ड में चला जाए, तो भी उसे पकड़ लाकर आपके पास नहीं दूँ तो आप मनमानी सज़ा दिला दें। ९३५

ऍऩविवै यियम्बि यीदि विडैयॅऩ विऱैञ्जि निन्ऱ
वऩैहळल् वयिरत् तिण्डोण् मैन्दऩै महिळ्न्दु नोक्कित्
तुऩैपरित् तेरि ऩेऱिच् चेऱियॅन् ऱिऩैय शॊन्ऩान्
पुऩैमलर्त् तारि ऩानुम् पोरणि यणिन्दु पोऩान् 936

ऍऩ—ऐसा; इवै इयम्पि–ये बातें कहकर; विटै ईति—आज्ञा दें; ऍऩ–कहकर; इऱैञ्चि निन्ऱ–सविनय खड़े रहे; वऩै कळल्–बद्ध पायलधारी; वयिर तिण् तोळ्–वज्रस्कन्ध; मैन्ततै–अपने पुत्र को; मकिळ्न्तु नोक्कि–सहर्ष देखकर; तुऩै–तीव्रगामी; परि–अश्व-जुते; तेरिन् एऱि—रथ पर चढ़कर; चेऱि–चलो; ऍन्ऱु–कहकर; इऩैय चॊन्ऩान्—ऐसी बातें कही (रावण ने); मलर् पुऩै–पुष्पकलित; तारिऩानुम्—मालाधारी (अक्षकुमार) भी; पोर् अणि—युद्धसज्जा; अणिन्तु पोऩान्–सजाकर गया। ९३६

ऐसी ये बातें कहकर बँधी हुई पायलधारी वज्रस्कन्ध अक्षकुमार यह विनय-निवेदन करके खड़ा रहा कि मुझे आज्ञा दें। रावण ने उसे सहर्ष देखा और कहा कि तीव्रगति अश्वों के जुते रथ पर सवार होकर जाओ। रावण ने और भी अन्य आवश्यक सलाहें दीं। पुष्पों की सुन्दर रीति से गुँथी मालाधारी अक्षकुमार भी युद्धोचित साज सजाकर गया। ९३६

एऱिऩ ऩॅन्ब मऩ्ऩो विन्दिर ऩिहलिल् विट्ट
नूऱॊडु नूऱु पूण्ड नॊऱिल्वयप् पुरवि नोन्ऱेर्
कूऱिऩ ररक्क राशि कुमुऱिऩ मुरशक् कॊण्मू
ऊऱिऩ वुरवुत् तानै यूळिपेर् कडलै यॊप्प 937

इन्तिरन्–इन्द्र ने; इकलिल् विट्ट–जिनको युद्ध में त्याग दिया था; नॊऱिल्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तीव्रगति; वय–विजयदायी; नूऱोटु नूऱु–दो सौ; पुरवि पूण्ट–अश्व जिसमें जुते थे; नोन् तेर्–सबल रथ पर; एऱित्तन्–चढ़ा; अरक्कर्–राक्षसों ने; आचि कूऱित्तर्–आशीर्वाद के वचन कहे; मुरच कॊण्मू–भेरियाँ रूपी मेघ; कुमुऱित्त–घहर उठे; उरवु तानै–सबल सेनाएँ; ऊऴि पेर् कटलै ऒप्प–युगान्त में उमग आनेवाले सागर के समान; ऊऱित्त–उत्तरोत्तर बढ़ती आयीं; ऎन्प–कहते हैं। ९३७

अक्षकुमार के रथ में दो सौ तीव्रगति और विजयदायी अश्व जुते थे और वे थे जिन्हें इन्द्र युद्ध में छोड़कर भागा था। वह उस पर सवार हुआ और राक्षसों ने आशिष दीं। भेरियाँ मेघ के समान घहर उठीं। सेनाएँ उमग आनेवाले प्रलय-सागर के समान उत्तरोत्तर बढ़ती आयीं। ९३७

पॊरुहडन् महर मॆण्णि लॆण्णलाम् बूट्कै पॊङ्गित्
तिरिवन मीन्ग ळॆण्णि लॆण्णलाञ् जॆम्बॊऱ् ऱिण्डेर्
उरुवुऱु मणलै यॆण्णि ऩॆण्णला मुरवुत् तानै
वरुदिरै निरैयै यॆण्णि ऩॆण्णलाम् वावुम् वाशि 938

पॊरु कटल्–लहरें जिसमें टकराती हैं, उस सागर के; मकरम् ऎण्णिन्–मकरों को गिना जा सकता है तो; पूट्कै ऎण्णल् आम्–हाथियों को भी गिना जा सकता है; पॊङ्कि–ऊपर उठ आकर; तिरिवन्त–जो संचार करती हैं, उन; मीन्कळ्–मछलियों को; ऎण्णिन्–गिन सकें तो; चॆम् पॊन्–लाल स्वर्ण के; तिण् तेर्–सुदृढ़ रथों का; ऎण्णल् आम्–गिनना हो सकता है; उरुवु अऱु–तरंगों से लाये जाकर एकत्रित; मणलै ऎण्णिल्–बालुओं को गिन सकते हैं तो; उरवु तानै–बलवान सैनिकों को; ऎण्णलाम्–गिना जा सकता है; वरु तिरै निरैयै ऎण्णिन्–आनेवाली तरंग-राशियों को गिना जा सकता है, तो; वावुम् वाचि–सरपट दौड़नेवाले अश्वों को; ऎण्णलाम्–गिना जा सकता है। ९३८

(उसकी चतुरंगिनी सेना की गिनती देखो—) लहरप्रताडित समुद्र के मकरों को गिनकर बता सकते हैं ? तो गजों को भी गिना जा सकता था। जल के सतह पर आकर संचार करनेवाली मछलियों को गिना जा सकता है ? तो उस सेना में के लाल स्वर्ण के सबल रथों को गिना जा सकता था। लहरों द्वारा एकत्रित बालुओं की संख्या की गिनती पा सकते हैं ? तो सेना के वीरों की संख्या भी गणित की जा सकती थी। एक के बाद एक आनेवाली लहरों की पंक्तियों को गिन सकते हैं ? तो सरपट दौड़नेवाले अश्वों को भी गिना जा सकता था। ९३८

आऱिरण् डडुत्त वॆण्णि लायिरङ् गुमर रावि
वेऱिलात् तोऴर् वॆन्ऱि यरक्करतम् वेन्दर् मैन्दर्
एऱिय तेरर् शूऴ्न्दा रिऱुदियिन् यावु मुण्बान्
शीऱिय कालत् तीयिन् शॆऱिशुडर्च् चिहैह ळन्नार् 939

इऱुतियिल्–युगान्त में; यावुम् उण्पान्–सबको मिटाने; चीऱिय–उभर उठी;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

काल तीयिन्–प्रलयाग्नि की; चॅऱि–घनी; चुटर्–ज्वलन्त; चिकैकळ् अन्तार्–ज्वालाएँ जैसे; आवि वेऱु इला–अनन्यप्राण; तोळर्–साथी; वॅन्ऱि अरक्कर् तम्–विजेता राक्षसों के; वेन्तर् मैन्तर्–राजाओं के पुत्र; ऍण्णिल्–गिनती में; आऱु इरण्टु अटुत्त–बारह के; आयिरम् कुमरर्–सहस्र कुमार; एऱिय तेरर्–रथारूढ़; चूळ्न्तार्–घेर आये। ९३९

युगान्त में सृष्टि भर को मिटाने हेतु भभक उठी प्रलयाग्नि की घनी और तेजोमय ज्वालाओं के समान रहनेवाले, अक्षकुमार के अनन्यप्राण मित्र, और विजयशील राक्षस राजाओं के सुत, बारह सहस्र कुँअर रथों पर आरूढ़ होकर उसके साथ उसको घेरते हुए गये। ९३९

मन्दिरक् किळवर् मैन्दर् मदिनिऱै यमैच्चर् मक्कळ्
तन्दिरत् तलैव रीन्ऱ तनयर्हळ् पिऱरुन् दादैक्
कन्दरत् तरम्बै मारिऱ् ऱोन्ऱिन रक्क रान्ऱोर्
ऍन्दिरत् तेरर् शूळ्न्दा रीरिरण् डिलक्कम् वीरर् 940

मन्तिर किळवर्–मन्त्रणा के पदाधिकारी लोगों के; मैन्तर्–पुत्र; मति निऱै–बुद्धिमान; अमैच्चर् मक्कळ्–सचिवों के पुत्र; तन्तिर तलैवर्–सेनापतियों के; ईन्ऱ तनयर्कळ्–जनाये पुत्र; अन्तरत्तु अरम्पैमारिल्–आकाश की अप्सराओं के; तातैक्कु तोन्ऱितर्–पिता रावण द्वारा उत्पन्न; अरक्कर् आन्ऱोर्–राक्षस; पिऱरुम्–और अन्य; ईर् इरण्टु इलक्कम्–चार लाख के; वीरर्–वीर; ऍन्तिर तेरर्–यन्त्रचालित रथों के; चूळ्न्तार्–घेर आये। ९४०

मन्त्रणा के अधिकारियों के पुत्र, बुद्धिमान सचिवों के पुत्र, सेनानायकों के पुत्र और अप्सराओं के गर्भ से जनमे अक्षकुमार के पिता रावण के पुत्र जो राक्षस थे वे और अन्य —सब मिलाकर चार लाख वीर यन्त्रयुक्त रथों पर आरूढ़ होकर उसके चारों ओर आकर इकट्ठे हुए। ९४०

तोमर मुलक्कै शूलञ् जुडर्मळु कुलिशन् दोट्टि
एमरु वरिविल् वेल्हो लीट्टिवा ळॅळुविट् टेऱु
मामरम् वीशु पाश मॅळुमुळै वयिरत् तण्डु
कामरु कणैयङ् गुन्दङ् गप्पणङ् गाल नेमि 941

तोमरम्–तोमर; उलक्कै–मूसल; चूलम्–त्रिशूल; चुटर् मळु–प्रकाशमय फरसे; कुलिचम्–कुलिश; तोट्टि–अंकुश; ए मरुम्–शरासन; वरि विल्–सबन्ध धनु; वेल्–शक्तियाँ; कोल्–शर; ईट्टि–भाले; वाळ्–तलवारें; ऍळु–लौहदण्ड; विट्टेऱु–बरछे; मा मरम्–बड़े पेड़ों को भी; वीचु पाचम्–गिरा सकनेवाले पाश; ऍळु–शत्रु पर चलनेवाले; वयिर मुळै तण्टु–हीरे के दण्डायुध; कामरु–मनोहर; कणैयम्–वक्रदण्ड; कुन्तम्–कुन्त; कप्पणम्–'अरिकण्ठ' नामक हथियार; काल नेमि–कालचक्र। ९४१

(उस सेना के वीरों के साथ) तोमर, मूसल, त्रिशूल, तेजोमय फरसे,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुलिश, अंकुश, सबन्ध शरासन, शक्तियाँ, शर, भाले, तलवारें, लौहदण्ड, बर्छियाँ, बड़े-बड़े पेड़ों को भी नीचे गिरानेवाले पाश, शत्रुघातक हीरे के दण्ड, दर्शनीय वक्रदण्ड, कुन्त और 'कप्पण' (अरिकण्ठ) नामक हथियार। ९४१

ऍन्ऱिवै मुदल यावु मॅऴिऱिहऴ् पडैह ळीण्डि
मिन्ऱिरण् डनैय वाहि वयिलॊडु निलवु वीशत्
तुन्ऱिरुन् दूळि पॊङ्गित् तुऱुदला लिऱुदि शॊल्लाप्
पॊन्ऱिणि युलहम् यावुम् पूदल मान मादो 942

ऍन्ऱु–ऐसे; इवै मुतल–ये आदि; यावुम्–सभी; ऍऴिल् तिकऴ्–सुन्दरता-लसित; पटैकळ् ईण्टि–हथियार मिलकर; मिन्ऱ–बिजलियाँ; तिरण्टु अनैय–एकत्रित हुई जैसे; आकि–बनकर; वॅयिल् ऒटु–धूप के साथ; निलवु वीच–चाँदनी छिटकाते हुए; तुन्ऱु–घने रूप से; इरुम् तूळि–विपुल धूल-राशि; पॊङ्कि–उठी; तुऱुतलाल्–आकाश में भर गयी, इसलिए; इऱुति चॊल्ला–अन्त जिसका कहा नहीं जा सकता; पॊन् तिणि उलकम् यावुम्–स्वर्णमय (स्वर्ग-) लोक सारा; पूतलम् आन–भूतल हो गया। ९४२

ऐसे और अन्य सभी सुन्दर हथियार एकत्रित होकर एकत्रित बिजलियों के समान बने और उनसे धूप-सा गरम प्रकाश और चाँदनी-सी शीतल किरणें छूट रही थीं। घने रूप से धूलपटल उठा और आकाश में छा गया। इससे अमर स्वर्गलोक भी भूलोक के समान (मिट्टी का) दिखने लगा। ९४२

काहमुङ् गळुहुम् बेयुङ् गालनुङ् गणक्किल् कालम्
शेहुऱ वित्तैयिऱ् चॅय्द तीमैयुन् दॊडर्न्दु शॊल्लप्
पाहियल् किळविच् चॅव्वाय् पडैविऴि पणैत्त वेय्त्तोळ्
तोहैयर् मनमुङ् गण्णुन् दुम्बियुन् दॊडर्न्दु शुऱ्ऱ 943

काकमुम्–कौए; कळुकुम्–और गीध; पेयुम्–पिशाच; कालनुम्–और यम; कणक्कु इल् कालम्–अगणित काल; चेकु उऱ–सुदृढ़ रूप से; वित्तैयिल् चॅय्त–(बुरे) कर्म जो किये उनका; तीमैयुम्–पाप; तॊटर्न्तु चॊल्ल–साथ-साथ गये; पाकु इयल्–चाशनी की-सी; किळवि–(मधुरतायुक्त) बोली वाली; चॅ वाय्–लाल अधरों; पटै विऴि–(तलवार, भाला, शर आदि) हथियारों के सदृश आँखों; पणैत्त–पुष्ट; वेय् तोळ्–बाँस-सम कन्धों वाली; तोकैयर्–कलापी-सी (उनकी पत्नी-) स्त्रियों के; मनमुम् कण्णुम्–मन और आँखों के; तुम्पियुम्–और भ्रमरों के; तॊटर्न्तु–पीछे लगे; चुऱ्ऱ–घेरते जाते। ९४३

(अक्षकुमार के साथ क्या-क्या गये ? देखिए कवि की विदग्धता !) कौए, गीध, भूत-पिशाच, यम, अनन्तकाल से राक्षसों के द्वारा सुदृढ़ रूप से किये गये दुष्कर्मों का पाप आदि पीछे लगे साथ गया। और चाशनी-सी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बोली और लाल अधरों वाली, तलवार आदि हथियारों-सी आँखों वाली, स्थूल बाँस-से कन्धों वाली राक्षसियों के मन और आँखें तथा भ्रमर भी उन पर मँड़राते चले। ९४३

उळैक्कुल नोक्कि ऩार्ह ळुलन्दवर्क् कुरिय मादर्
अळैत्तळु कुरलिऩ् वेलै यमलैयि ऩरवच् चेऩै
तळैत्तॅळु मॊलियि ऩाऩाप् पल्लियन् दुवैत्त लाल्विण्
मळैक्कुर लिडियिऱ् चॊऩ्ऩ माऱ्ऱङ्ग ळॊळिप्प मऩ्ऩो 944

उलन्तवर्क्कु–पहले जो मरे उनकी; उरिय मातर्–पत्नी-स्त्रियाँ; उळै कुल नोक्किऩार्कळ्–मृगनयनियाँ; अळैत्तु ॲळु कुरलिऩ्–(अपने पतियों का नाम ले-ले) जो रोती हैं, उस स्वर से; वेलै अमलैयिऩ्–समुद्र के गर्जन से; अरव चेऩै–आरवयुक्त सेना से; तळैत्तु ॲळुम्–बढ़ उठनेवाले; ऑलियिऩ्–शोर से; नाऩा पल्लियम्–अनेक और विविध बाजे; तुवैत्तलाल्–बजे, इससे; विण्–आकाश में; मळै कुरल् इटियिल्–मेघ-गर्जन रूपी गाजों से; चॊऩ्ऩ माऱ्ऱङ्कळ्–उच्चरित वचन; ऑळिप्प–दब जाते (ऐसा)। ९४४

वे जाते रहे। तब पहले हनुमान द्वारा मारे गये राक्षसों की मृगनयनी प्यारी स्त्रियाँ अपने पतियों का नाम ले-ले रो रही थीं। वह स्वर; समुद्र-गर्जन; शोर के साथ चढ़ जानेवाली सेना का निविड नाद; विविध वाद्यों की ध्वनि और आकाश के मेघों का वज्रगर्जन —इन सब मिश्रित स्वरों की तुमुलता के कारण एक-दूसरे की बोली परस्पर सुनायी नहीं दे रही थी। ९४४

मॅयिऱ्कर मणिहळ् वीशुम् विरिहदिर् विळङ्ग वॅय्य
अयिऱ्कर वणिहळ् नील वविरॊळि परुह वः(ह)दुम्
ॲयिऱ्ऱिळम् बिऱैह ळोऩ्ऱ विलङ्गॊळि यॊदुङ्ग याणर्
उयिर्क्कुल मिरवु मऩ्ऱु पहलऩ्ऱॆऩ् ऱुणर्वु तोऩ्ऱ 945

मॅयिल् करम्–(राक्षसों के) शरीर पर के कान्तियुक्त; मणिकळ् वीचुम्–रत्न जो बिखेरते हैं; विरि कतिर्–वे विस्तृत किरणें; विळङ्क–मनोरम रूप से प्रकट होती हैं; वॅय्य–क्रूर; अयिल् कर–भालाधारी हाथों के; अणिकळ्–आभरण; नील अविर्–काले रंग में निकलनेवाली; ऑळि परुक–कान्ति को पी जाती हैं (छिपा लेती हैं); अ.ःतुम्–वह कान्ति भी; ॲयिऱ्ऱु इळम् पिऱैकळ्–दाँतों के बाल-चन्द्रों के; इलङ्कु ऑळि–छिटके हुए प्रकाश में; ऑतुङ्क–छिप जाता; उयिर्क्कुलम्–जीव-राशियों को; इरवुम् अऩ्ऱु–रात नहीं; पकल् अऩ्ऱु–दिन भी नहीं; ॲऩ्ऱु–ऐसा; याणर् उणर्वु तोऩ्ऱ–अनूठा अनुभव होता। ९४५

उन राक्षसों के शरीरों पर अलंकृतकारी रत्नों से छूटनेवाली किरणें प्रकाशमय रहीं। हिंस्र भालों के धारणकारी हाथों के आभूषण उनके शरीर के नील रंग को चाटकर मिटा रहे थे। उन आभरणों के प्रकाश दाँतों

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रूपी बालचन्द्र-निःसृत प्रकाश में छिप जा रहा था। इससे जीवों को एक विचित्र अनुभव हो रहा था कि अब न दिन लगता, न रात ही। ९४५

ओङ्गिरुन् दडन्देर् पूण्ड वुळैवयप् पुरवि यॊल्हित्
तूङ्गिन वीऴत् तोऴुङ् गण्गऴु मिडत्त तुळ्ळ
वीङ्गिन मेह मॆङ्गुङ् गुरुदिनीरत् तुळ्ळि वीऴ्प्प
एङ्गिन काह मारप्प विरुळिल्विण् णिडिप्प मादो 946

ओङ्कु–उन्नत; इरुम्–बड़े; तटम् तेर–विशाल रथ में; पूण्ट–जुते; उळै–अयाल-सहित; वय–विजय-सहायक; पुरवि–अश्व; ऒल्कि–थकित होकर; तूङ्कित वीऴ–सो जाते; इटत्त तोऴुम्–बायें कन्धे और; कण्कळुम्–आँखें; तुळ्ळ–फड़कीं; वीङ्कित मेकम्–बड़े मेघ; ऎङ्कुम्–सर्वत्र; कुरुति नीर् तुळ्ळि–रक्त-जल की बूँदें; वीऴ्प्प–गिराते; काकम्–कौए; एङ्कित–डरकर; आर्प्प–उच्च स्वर में बोलते; इरुळ् इल् विण्–निर्मल आकाश; इटिप्प–गरजता। ९४६

(क्या-क्या शकुन हुए?) उन्नत, विशाल और बड़े रथों से जुते अयाल वाले, विजय-साधन अश्व थकित हो ऊँघते जा रहे थे। वीरों के बायें कन्धे फड़के और बायीं आँखें फड़कीं। बड़े-बड़े मेघों ने रक्त की बूँदें गिरायीं। कौए भयार्त होकर उच्च स्वर में बोल उठे। निर्मल आकाश से वज्रघोष-सा सुनायी दिया। ९४६

वॆळ्ळवॆऱ् जेनै शूऴ विण्णुळोर् वॆरुवि विम्म
उळ्ळनॊन् दनुङ्गु वॆय्य कूऱ्ऱमु मुऱुव ऱुन्नत्
तुळ्ळिय शुऴल्हट् पेय्ह डोळ्पुडैत् तार्प्पत् तोन्ऱुम्
कळ्ळवि ऴलङ्ग लानैक् काऱ्ऱिन्शेय् वरवु कण्डान् 947

वॆळ्ळ–'वॆळ्ळम्' की बड़ी संख्या में रही; वॆम् चेनै–भयंकर सेना के; चूऴ–घेरते आते; विण् उळोर्–व्योमलोकवासी; वॆरुवि विम्म–भयातुर हुए; उळ्ळम् नॊन्तु–चिन्ताकुल हो; अनुङ्कु–उद्विग्न रहा; वॆय्य–भयंकर; कूऱ्ऱमुम्–यम भी; मुऱुवल् तुन्त–मुस्कुरा उठा; तुळ्ळिय–उछलनेवाले; चुऴल् कण–चंचलाक्ष; पेय्कळ्–भूतों के; तोळ् पुटैत्तु–कन्धे ठोंककर; आर्प्प–कोलाहलनाद मचाते; तोन्ऱुम्–शोभायमान; कळ् अविऴ्–शहद चूनेवाली; अलङ्कलानै–मालाधारी को; काऱ्ऱिन् चेय्–मरुतसूनु ने; वरवु कण्टान्–आता हुआ देखा। ९४७

"वॆळ्ळम्" की (बहुत-बहुत बड़ी) संख्या में सेना गयी। देव डर से भरे। मन मारकर जो दुःखी रहा, वह क्रूर यम अब मुस्कुरा उठा। विवृत्तनयन भूतों ने कन्धे ठोंककर नारे लगाये। इस संभ्रम के साथ शहदस्रावी पुष्पमालाधारी अक्षकुमार को हनुमान ने आता हुआ देखा। ९४७

इन्दिर शित्तो मऱ्ऱव् विरावण नेयो वॆन्नाच्
चिन्दैयि नुवहै कॊण्डु मुनिवुऱ्ऱ कुरक्कुच् चीयम्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वन्दनन् मुडिन्द दन्ऱो मनक्करुत् तॅन्न वाळ्त्तिच्
चुन्दरत् तोळै नोक्कि यिरामनैत् तॊळुदु शॊन्नान् 948

मुनिवु उऱ्ऱ–क्रुद्ध; कुरङ्कु चीयम्–वानर-केसरी ने; इन्तिरचित्तो–इन्द्रजित् क्या; मऱ्ऱ–या दूसरा; अ–वह; इरावणनेयो–रावण ही; ऍन्ना–ऐसा; चिन्तैयिन् उवकै कॊण्टु–मन में हर्ष करके; चुन्तर तोळै–अपनी सुन्दर भुजाओं को; नोक्कि वाळ्त्ति–देखकर बधाई देकर; इरामनै तॊळुतु–श्रीराम को (मन ही मन) नमस्कार करके; वन्तनन्–(लक्षित राक्षस) आ गया; मन करुत्तु–मन की कामना; मुटिन्ततु अन्ऱो–पूरी हुई न; ऍन्न–ऐसा; चॊन्नान्–आप ही आप कहा। ९४८

देखते ही वानरकेसरी हनुमान का क्रोध जाग उठा। वह सोचने लगा कि क्या यह इन्द्रजित् है या रावण ही है (जिसको युद्ध में लाना चाहता था)? उसके मन में हर्ष उमड़ आया और उसने अपनी सुन्दर भुजाओं को सगर्व निहारा और उनको बधाइयाँ दीं। श्रीराम को नमस्कार किया। उसने आप ही आप कहा कि अच्छा, आ गया युद्ध का आधार! पूरी हो गयी न मेरी मनोकामना! । ९४८

ऍण्णिय विरुवर् तम्मु ळॊरुवनेल् यान्मुन् शॆय्द
पुण्णिय मुळदा लॆङ्गोन् ऱवत्तॊडुम् बॊरुन्दि नाने
नण्णिय यानु निन्ऱेन् कालनु नणुहि निन्ऱान्
कण्णिय करुम मिन्ऱे मुडिक्कुवॆन् कडिदि नॆन्ऱान् 949

ऍण्णिय–अनुमानित; इरुवर् तम्मुळ्–दो में; ऒरुवनेल्–एक रहा तो; यान्–मेरा; मुन् चॆय्त–पूर्वकृत; पुण्णियम् उळतु–पुण्य-भाग्य है; ऍन् कोन्–मेरे राजा को भी; तवत्तॊटुम्–अपने तप का शुभ फल; पॊरुन्तिनाने–मिल गया; नण्णिय यानुम्–पास आया मैं; निन्ऱेन्–हूँ; कालनुम्–यम भी; नणुकि–पास आकर; निन्ऱान्–खड़ा है; कण्णिय करुमम्–अपना सोचा काम; इन्ऱे–आज ही; कटितिन्–शीघ्र; मुटिक्कुवॆन्–पूरा करूँगा; ऍन्ऱान्–(आप ही आप हनुमान ने) कह लिया। ९४९

"अगर यह मेरे द्वारा अनुमानित दो में एक होगा तो मेरा पूर्वकृत पुण्य सफलीभूत हो गया। मेरे राजा को भी तप का सुफल मिल गया। अच्छा! मैं इसके सामने हूँ। यम भी समीप आकर है! अपना संकल्पित कार्य अभी शीघ्र ही पूरा कर लूँगा।" —हनुमान ने आप ही आप कहा। ९४९

पळियिल दुरुवॆन् ऱालुम् बः(ह्)ऱलै यरक्क नल्लन्
विळिहळा यिरमुङ् गॊण्ड वेन्दवॆन् ऱानु मल्लन्
मॊळियिन्मऱ् ऱॆवर्क्कु मेलान् मुरट्टॊळिन् मुरुह नल्लन्
अळिविलॊण् कुमरन् यारो वञ्जनक् कुन्ऱ मन्नान् 950

उरु–इसका आकार; पळि इलतु–अनिंद्य है; ऍन्ऱालुम्–तो भी; पल् तलै–अनेक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सिरों का; अरक्कन् अल्लन्–राक्षस (रावण) नहीं; विऴिकळ् आयिरमुम् कॊण्ट–सहस्र आँखों वाले; वेन्तै–देवराज के; वॆन्ऱालुम् अल्लन्–विजेता (इन्द्रजित्) भी नहीं; मुरण् तॊऴिल्–युद्धकर्मचतुर; मुरुकन् अल्लन्–'मुरुगन' (कार्तिकेय) नहीं है; मॊऴियिन्–सोचकर कहें तो; ॲवर्क्कुम् मेलान्–सबों के ऊपर का लगता है; अञ्चत कुन्ऱम् अन्नान्–काजल-गिरि-सम लगता है; अऴिवु इल्–अक्षय; वॆम्–पराक्रमी; कुमरन्–कुँअर; यारो–कौन है तो। ९५०

(हनुमान ने और भी स्वगत कहा—) इसका रूप अनिंद्य लगता है। तो भी अनेक सिरों वाला रावण नहीं लगता। सहस्राक्ष देवेन्द्र का विजेता इन्द्रजित् भी नहीं। युद्धकुशल 'मुरुगन' (कार्तिकेय) भी नहीं। सोचकर कहा जाय तो लगता है कि वह इन सबसे अधिक श्रेष्ठ है। काजल-गिरि के समान दृश्यमान है। यह अक्षय पराक्रमी कुँअर कौन होगा ? । ९५०

ॲन्ऱवन् नुवन्दु विण्डो यिन्दिर शाब मॆन्न
निन्ऱदो रणत्ति नुम्ब रिरुन्ददोर् नीदि यानै
वन्ऱॊऴि लरक्क नोक्कि वाळॆयि ऱिलङ्ग नक्कान्
कॊन्ऱदिक् कुरङ्गु पोला मरक्करदङ् गुऴात्तै यॆन्ना 951

ॲन्ऱवन्–ऐसा संशय-वचन जिसने कहा, वह; उवन्तु–हर्षित होकर; विण् तोय्–आकाश में लगे दिखनेवाले; इन्तिर चापम् ॲन्त–इन्द्रधनुष के समान; निन्ऱ–जो खड़ा था; तोरणत्तिन् उम्पर्–तोरण के ऊपर; इरुन्ततु–जो रहा; ओर् नीतियानै–उस अनुपम न्यायी को; वल् तॊऴिल् अरक्कन्–नृशंसकारी राक्षस; नोक्कि–देखकर; इ कुरङ्कु–यही वानर है, जिसने; अरक्कर् तम् कुऴात्तै–राक्षसों के दलों को; कॊन्ऱतु पोल् आम्–मार दिया था शायद; ॲन्ना–कहकर; वाळ् ॲयिऱु–उज्ज्वल दाँतों को; इलङ्क–प्रगट करते हुए; नक्कान्–हँसा। ९५१

इस तरह संशय करके उसके आधार पर हर्षित होकर जो हनुमान आकाशगत इन्द्रधनुष-से तोरण पर विराजमान था, उस न्यायी को नृशंस राक्षस ने देखा। वह यह कहते हुए उज्ज्वल दाँतों को प्रकट करके हँसा कि क्या यही वह मर्कट है, जिसने राक्षसदलों को मार डाला था ? । ९५१

अन्नदा नहुशॊऱ् केट्ट शारदि यैय केण्मो
इन्नदा मॆन्न लामो वुलहिय लिहऴ लम्मा
मन्नन्नो डॆदिर्न्द वालि कुरङ्गॆन्ऱान् मऱ्ऱु मुण्डो
शॊन्नदु तुणिविऱ् कॊण्डु शेऱियॆन् ऱुणरच् चॊन्नान् 952

अन्नतु आम्–वैसा; नकु चॊल्–परिहास-वचन; केट्ट–के श्रोता; चारति–(अक्षकुमार के) सारथी ने; ऐय–नायक; केण्मो–सुनिए; उलकु इयल्–संसार की रीति; इन्नतु आम्–यही है; ॲन्नल्–ऐसा (निश्चित रूप से) कहना; आमो–सम्भव है क्या; इकऴल्–तिरस्कार मत कीजिए; मन्नन्नोटु–हमारे राजा के साथ;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऎतिर्न्त वालि–जो लड़ा वह वाली; कुरङ्कु–वानर था; ऎन्ऱाल्–तो; मऱुम् उण्टो–और कहने को कुछ होगा क्या; चॊन्नतु–मेरा कहा; तुणिवित् कॊण्टु–दृढ़ता के साथ धारण करके; चेऱि–जाइए; ऎन्ऱ–ऐसा; उणर–समझाकर; चॊन्नतात्–कहा। ९५२

उसका व्यंग्य का वचन सुनकर उसके सारथी ने कहा कि नायक ! मेरा कहना सुनो। संसार की रीति यही है —ऐसा निर्धारण भी सम्भव है क्या ? उसका रूप देखकर उसका तिरस्कार मत कीजिए। (तुमको मालूम ही है कि) हमारे राजा से जो लड़ा वह वाली भी तो एक वानर था। फिर कहने को क्या है ? मेरी बात दृढ़ रूप से मन में धारण करके युद्ध में जाओ। सारथी ने समझाया। ९५२

विडन्दिरण् डऩैय मॆय्या ऩव्वुरै विळम्बक् केळा
इडम्बुहुन् दिऩैय शॆय्द विदऩॊडु शीऱ्ऱ मॆञ्जत्
तॊडर्न्दुशॆऩ् ऱुलह मून्ऱुन् दुरुविऩॆ नॊळिवु ऱामल्
कडन्दुपिऩ् कुरङ्गॆऩ् ऱोदुङ् गरुवैयुङ् गळैवॆ ऩॆन्ऱाऩ् 953

विटम् तिरण्टु अऩैय–विष पुञ्जीभूत हुआ जैसे; मॆय्याऩ्–रूपवान ने; अ उरै–वह वचन; विळम्प–कहा गया; केळा–सुनकर; चीऱ्ऱम् ऎञ्च–कोप के बढ़ते; इटम् पुकुन्तु–हमारे यहाँ प्रवेश करके; इऩैय चॆय्त–ऐसा जिसने किया; इतऩ् ओटुम्–इसके साथ; तॊटर्न्तु चॆऩ्ऱु–इसको मारकर बाद लगा हुआ जाकर; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों में; ऒळिवु उऱामल्–कहीं भी न छोड़कर; तुरुविऩॆऩ्–खोजता; कटन्तु–जाकर; पिऩ्–बाद; कुरङ्कु ऎऩ्ऱु ओतुम्–वानर-कथित; करुवैयुम्–गर्भशिशु को भी; कळैवॆऩ्–निरस्त कर दूंगा; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ९५३

पुञ्जीभूत विष-से रूपधर अक्षकुमार ने उसका वचन सुनकर उत्तर में कहा कि देखो। कम न होकर बढ़ते जानेवाले क्रोध के साथ हमारे ही यहाँ आकर ऐसा कार्य किया है। उसको भी मारूँगा और उससे लगाकर तीनों लोकों में विना किसी स्थान को छोड़े सर्वत्र जाऊँगा और वानर के नाम पर गर्भस्थित वानर-शिशु को भी मारकर निरस्त कर दूंगा। ९५३

आर्त्तॆऴुन् दरक्कर् शेऩै यञ्जऩैक् कुरिय कुऩ्ऱैप्
पोर्त्तदु पॊऴिन्द दम्मा पॊरुबडैप् परुव मारि
वेर्त्ततऩर् तिशैकाप् पाळर् चलित्तऩ विण्णु मण्णुम्
तार्त्ततऩि वीरऩ् ऱाऩुन् दऩिमैयु मवर्मेऱ् चार्न्दाऩ् 954

अरक्कर् चेऩै–राक्षस-सेनाओं ने; आर्त्तु ऎऴुन्तु—नर्दन कर उठी; अञ्चऩैक्कु उरिय–अंजनादेवी के; कुऩ्ऱै–पुत्र, पर्वत-सम हनुमान पर; पॊरुपटै परुव मारि–मारू हथियारों की मौसमी बारिश; पॊऴिन्तु–बरसाकर; पोर्त्तु–ढंक दिया; तिचै काप्पु आळर्–दिक्पाल; वेर्त्ततऩर्–पसीना-पसीना हो गये; विण्णुम्–आकाश

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और; मण्णुम्–भूमि; चलित्तत्त–दोनों चंचल हो गये; तार् तन्नि वीरन्–हारयुक्त अनुपम महावीर; तन्निमैयुम् तानुम्–तनहाई को ही सहायक बनाकर; अवर् मेल् चार्न्तान्–उन पर चढ़ गया। ९५४

तब राक्षस-सेना ने नारे लगाते हुए बढ़कर अंजना के पुत्र, पर्वत-सम हनुमान पर युद्ध-साधन अस्त्र रूपी मौसमी बरसात बरसाकर उसे ढँक दिया। दिक्पाल भी यह देखकर पसीना-पसीना हो गये। आकाश और भूमि दोनों चलित हुए। मालाधारी महावीर तनहाई को ही अपना साथी बनाकर उनसे लड़ने गया। ९५४

ऍऱिन्दन निरुदर् वॅय्दि नॅय्दन पडैहळ् यावुम्
मुऱिन्दन वीरन् मेनि मुट्टिन मूरि यानै
मऱिन्दन मडिन्द तेरुम् वावुमाक् कुळुवु मम्मा
नॅऱिन्दन वरम्बिल् याक्कै यिलङ्गैदन् नॅऱियिऱ् पेर 955

निरुतर्–राक्षसों द्वारा; वॅय्तिन् ऍऱिन्तत–तेजी से फेंके गये; ऍय्तन–और चलाये गये; पटैकळ् यावुम्–सभी हथियार; वीरन् मेनि–महावीर के शरीर से; मुट्टिन–टकराकर; मुऱिन्तत–टूटे; मूरि यानै–सबल हाथी; मऱिन्तत–मरे; तेरुम्–रथ और; वावु–सरपट चाल के; मा कुळुवुम्–अश्ववृन्द भी; मटिन्त–मरे (औंधे गिरे); इलङ्कै–लंका; तन् नॅऱियिल्–अपनी स्थिति में; पेर–बदल गयी; वरम्पु इल् याक्कै–असीम शरीर; नॅऱिन्तत–दबकर फटे। ९५५

राक्षसों ने जो अस्त्र चलाए और जो हथियार फेंके, वे सब महावीर के शरीर से टकराकर टूट गये। सबल गज सिर के बल गिरे और मरे। रथ और सरपट चाल के अश्वदल भी मर मिटे। लंका के रूप को ही बदलते हुए अपार संख्या में वीरों के शरीर फूटकर लाशें बने और सब जगह भर गये। ९५५

कायॅरि मुळिपुऱ् कानिऱ् कलन्दॅनक् काऱ्ऱिन् शॅम्मल्
एयॅनु मळविऱ् कॊल्लु निरुदर्क्को रॅल्लै यिल्लै
पोयव रुयिरुम् बोहित् तॅन्बुलम् बडर्दल् पॊय्या
दायिर कोडि तूद रुळर्हॊलो नमनुक् कम्मा 956

मुळि–सूखी; पुल् कानिल्–घास के वन में; काय् ऍरि–जलानेवाली आग; कलन्तु ऍन्त–मिल (लग) गयी जैसे; काऱ्ऱिन् चॅम्मल्–पवनकुमार; एय् ऍनुम् अळविन्–'ऐ' कहने की देर के अन्दर; कॊल्लुम् निरुतर्क्कु–जितनों को मार डालता, उन राक्षसों की; ओर् ऍल्लै इल्लै–कोई सीमा नहीं रही; पोय्–जो गये; अवर् उयिरुम्–उनकी जानें (जीवात्मा); तॅन् पुलम्–दक्षिण (यम) लोक; पोकि पटर्तल् पॊय्यातु–जाने से नहीं चूकीं; नमनुक्कु–यम के; आयिर कोटि तूतर्–सहस्र करोड़ दूत; उळर् कॊलो–हैं क्या। ९५६

सूखी घास के वन में आग लगने पर जो स्थिति होती है, वैसी स्थिति

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राक्षसों की करते हुए पवननन्दन ने जिनको 'ऐ' शब्द के उच्चारण की देर के अन्दर मार डाला, उन राक्षसों की कोई सीमा नहीं रही। उनके प्राण भी (जीवात्मा भी) दक्षिणी (यम-)लोक में जा पहुँचे —यह भी अचूक था। फिर क्या यम के सहस्र कोटि दूत थे ? माँ ! । ९५६

वरवुऱ्ऱार् वारा निऩ्ऱार् वन्दवर् वरम्बिल् वॅम्बोर्
पॉरवुऱ्ऱ पॉऴुदुम् वीरऩ् मुम्मडङ् गाऱ्ऱल् पॉङ्गि
इरविप्पेर्क् कदिरो ऩूऴि यिऱुदियि ऩॅऩ्ऩ लाऩान्
उरवुत्तो ळरक्क रॅल्ला मॅऩ्बिला वुयिर्ह ळॉत्तार् 957

वर उऱ्ऱार्–जो आनेवाले हैं; वारा निऩ्ऱार्–जो अब आये हैं; वऩ्तवर्–जो पहले आये थे, वे सभी; वरम्पिल्–अपार; वॅम् पोर्–भयंकर युद्ध; पॉर उऱ्ऱ पॉऴुतुम्–जब करने लगते; वीरऩ्–महावीर; आऱ्ऱल्—बल में; मुम् मटङ्कु—तिगुना; पॉङ्कि–बढ़कर; ऊऴि इऱुतियिऩ्–युगान्त में; इरवि–रवि; पेर्–नाम के; कतिरोऩ् ऍऩ्ऩल्–सूर्य के समान; आऩाऩ्–हो गया; उरवु तोळ् अरक्कर् ऍल्लाम्–सबल कन्धों वाले सभी राक्षस; ऍऩ्पु इला–अस्थिहीन; उयिर्कळ् ऑत्तार्—जीवों के समान रहे। ९५७

युद्ध में आने को जो थे वे, जो आ रहे थे वे और जो पहले ही आ गये वे असंख्यक थे और भयंकर युद्ध करनेवाले थे। तो भी जब वे लड़ाई में आये तब हनुमान का बल तिगुना बढ़ा। वह युगान्त के रवि नाम के किरणमाली सूर्य के समान बना। सबल कन्धों के राक्षस सब अस्थि-हीन जन्तुओं (कीड़ों) के समान बन गये। ९५७

पिळ्ळप् पट्टऩ नुदलो डॅक्करि पिऱऴ्पॉऱ् ऱेर्परि पिऴैयामल्
अळ्ळप् पट्टऴि कुरुदिप् पॉरुपुऩ लाऱा हप्पडि शेऱाह
वळ्ळप् पट्टऩ महरक् कडलॅऩ मदिल्शुऱ् ऱियपदि मऱलिक्कोर्
कॉळ्ळप् पट्टऩ वुयिरॅऩ् ऩुम्बडि कॉऩ्ऱा नैम्बुलऩ् वॅऩ्ऱाऩे 958

अळ्ळप् पट्टु अऴि—(हनुमान द्वारा) उठा लिये जाकर जो मिटे; पॉरु कुरुति पुऩल्–(उन राक्षसों का) लहरायमान रक्त-जल; आऱु आक–नदी बना; पटि चेऱु आक–भूमि पंक बनी; पिळ्ळ–हनुमान के फोड़ने से; पट्टऩ—जो मरे; नुतल् ओटै—वे भालपट्ट वाले; करि–गज और; पिऱऴ्–औंधे गिरे; पॉऩ् तेर् परि–स्वर्ण रथ और अश्व; पिऴैयामल्—अचूक (पहुँचे); मकर कटल्–मकरालय; वळ्ळप् पट्टऩ–समृद्ध हुए; ऍऩ–ऐसा कहने योग्य; मतिल् चुऱ्ऱिय पति–प्राचीर-वलयित नगरी के; उयिर्–जीव; मऱलिक्के–यम के ही; कॉळ्ळप् पट्टऩ–माने गये; ऍऩ्ऩुम् पटि—ऐसा कहने योग्य रीति से; ऐम्पुलऩ् वॅऩ्ऱाऩ्–पञ्चेन्द्रिय-जेता हनुमान ने; कॉऩ्ऱाऩ्—मार डाला। ९५८

हनुमान ने उठा-उठाकर राक्षसों को निपाता। उनसे रक्त जो बहा वह नदी बन गया और भूमि पंक बन गयी। पञ्चेन्द्रियजयी हनुमान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ने युद्धभूमि में इतने जीवों को मारा कि लोगों को कहना पड़ा कि उसके द्वारा फाड़े गये भालपट्टदार गजों, औंधे गिरे स्वर्ण-रथों और घोड़ों के अचूक रीति से समुद्र में जाने से मकरालय पुष्ट बन गया और प्राचीर-मध्य लंका के सारे जीव यम के ही हो गये। ९५८

तेरे पट्टत़ वॅऩ्ऱार् शिलर्शिलर् तॅऱुहट् चॅम्मुह वयिरत्तोट्
पेरे पट्टत़ रॅऩ्ऱार् शिलर्शिलर् परिये पट्टत़ पॅरिदॅऩ्ऱार्
कारे पट्टत़ नुदलो डैक्कड करिये पट्टत़ कडिदॅऩ्ऱार्
नेरे पट्टत़र् पडमा डेतऩि निल्ला वुयिरॊडु निऩ्ऱारे 959

नेरे पट्टत़र्–सामने आकर मरे सो; पट–मरे ही; माटे–पार्श्वों में; निल्ला उयिरॊटु–चंचल प्राणों के साथ; तऩि निऩ्ऱार्–अलग जो खड़े रहे; चिलर्–कुछ ने; तेरे पट्टत़–रथ ही मिटे; ऍऩ्ऱार्–कहा; चिलर्–और कुछ ने; तॅऱु कण्–घूरती आँखों; चॅम् मुकम्–(गुस्से से) लाल मुख; वयिर तोळ्–वज्र-सम कन्धे; पेरे–(इनसे युक्त) पदातिक वीर ही; पट्टत़र्–मिटे; ऍऩ्ऱार्–कहा; चिलर्–और कुछ ने; परिये पॅरितु पट्टत़–अश्व ही अधिक मरे; ऍऩ्ऱार्–कहा; चिलर्–अन्य कुछ ने; कारे पट्टत़–मेघों के ही सम; नुतल् ओटै–भालपट्टधारी; कट करि ए–मत्त गज ही; कटितु पट्टत़–शीघ्र मरे; ऍऩ्ऱार्–कहा। ९५९

समक्ष आकर जो मरे, वे मरे ही। पर जो इधर-उधर अस्थिर प्राण लेकर खड़े रहे उनमें कुछ ने कहा कि रथ ही (अधिक संख्या में) टूटे। कुछ ने कहा कि क्रोध-भरी आँखों, लाल मुखों और वज्र-सम कन्धों के पदातिक वीर ही (अधिक) मरे हैं। और कुछ राक्षसों ने कहा कि अश्व ही नाश हुए हैं। अन्य कुछ लोगों ने कहा कि मेघ-समान और भालपट्टधारी मत्तगज ही अत्यधिक संख्या में शीघ्र नाश हुए। ९५९

आऴिप् पॊरुपडै निरुदप् पॅरुवलि यडलो रायमह ळडुपेऴ्वायत्
ताऴिप् पडुदयि रॊत्तार् मारुदि तऩिमत् तॅऩ्बदॊर् तहैयाऩान्
एऴिप् पुवऩमु मिडैवा ळुयिर्हळु मॅऱिवे लिळैयव रिऩमाह
ऊऴिप् पॅयर्वदॊर् पुऩलॊत् तारऩ लॊत्ताऩ् मारुद मॊत्ताऩे 960

आऴि–समुद्र-सम; पॊरु पटै–युद्ध-सेना के; निरुत–राक्षस; पॅरु वलि–अतिबली; अटलोर्–वीर; आय् मकळ्–ग्वाल-बाला; अटु–(दूध) औटकर जामन लगाकर जो रख गयी है; पेऴ् वाय्–(उस) बड़े मुख की; ताऴि पटु–कड़ाही पर रहे; तयिर् ऒत्तार्–दही के समान लगे; मारुति–मारुति; तऩि मत्तु ऍऩ्पतु–अनुपम मथानी कहने; ओर् तकै आऩाऩ्–योग्य एक बना; ऍऱि वेल् इळैयवर्–फेंकी जा सकनेवाली बरछी के धारक जवान वीर; इ एऴु पुवऩमुम्–ये सातों भुवन और; इटै वाऴ् उयिर्कळुम्–उनमें रहनेवाले जीव; इऩम् आक–एक प्रवाह में; ऊऴि पॅयर्वतु–युगान्त में बहनेवाले; ओर् पुऩल्–प्रलय-प्रवाह के; ऒत्तार्–समान रहे; मारुतम् ऒत्ताऩ्–पवन-सम (बली); अऩल् ऒत्ताऩ्–अनल-सम लगा। ९६०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समुद्र के समान बढ़कर लड़नेवाली सेना के अतिबली राक्षस वीर ग्वालबाला के द्वारा बड़े मटके में जमाये हुए दही के समान बने; और हनुमान अनुपम मथानी-सा बन गया। भाले फेंकनेवाले नौजवान वीर सातों भुवनों और उनमें रहनेवाले जीवों के जमघट के समान रहते प्रलय-प्रवाह के समान रहे। पवन-सम मारुति (प्रलय-शोषक) बड़वाग्नि रहा। ९६०

कॊन्ऱा नुडन्वरु कुळुवैच् चिलर्पलर् कुरैहिन् ऱारुडल् कुलैहिन्ऱार्
पिन्ऱा निन्ऱत रुदिरप् पॆरुनदि पॆरुहा निन्ऱत वरुकाह
निन्ऱार् निन्ऱिलर् तनिनिन् ऱानॊरु नेमित् तेरोडु मवनेरे
शॆन्ऱान् वन्ऱिऱ लयिल्वा यम्बुह डॆरिहिन् ऱान्विळि यॆरिहिन्ऱान् 961

उटन् वरु–साथ आनेवाले; कुळुवै–राक्षसदलों को; कॊन्ऱान्–हनुमान ने मार डाला; चिलर् कुरैकिन्ऱार्–कुछ मरे; पलर्–अनेक; उटल् कुलैकिन्ऱार्–शरीर काँपते हुए; पिन्ऱा निन्ऱत्तर्–फिरकर जाने लगे; उतिर पॆरु नति–रुधिर की बड़ी नदियाँ; पॆरुका निन्ऱत–बह उठीं; अरुकु आक–पास; निन्ऱार्–जो खड़े रहे; निन्ऱिलर्–वे वहाँ खड़े नहीं रहे; तति निन्ऱान्–अकेला जो रहा (अक्षकुमार); ऒरु नेमि–उपमाहीन पहियों वाले; तेर् ऒटुम्–रथ के साथ; अवन् नेरे–उस (हनुमान) के समक्ष; चॆन्ऱान्–गया; विळि ऎरिकिन्ऱान्–आँखें जलती जैसे रखते हुए; वन् तिऱल्–अति कठोर; अयिल् वाय्–तीक्ष्णमुख; अम्पुकळ्–शरों को; तॆरिकिन्ऱान्–चुनकर चलाता। ९६१

हनुमान ने अक्षकुमार के साथ आगत राक्षसदलों को मार डाला। कुछ मरे। अनेक कंपित शरीरों के होकर फिर गये। रक्त की बड़ी-बड़ी नदियाँ बह निकलीं। अक्षकुमार के पास जो रहे वे नहीं रह सके। अक्षकुमार अकेला रह गया। वह अनुपम पहियों वाले अपने रथ को चलाते हुए हनुमान के सामने आया और आँखों से आग-सी निकालते हुए चुन-चुनकर शर चलाने लगा। ९६१

उऱ्ऱा निन्दिर शित्तुक् किळैयव नॊरुहा लेपल रुयिरुण्णक्
कऱ्ऱा नुम्मुह मॆदिर्वॆत् तानदु कण्डार् विण्णवर् कशिवुऱ्ऱार्
ऎऱ्ऱा मारुदि निलैयॆन् बारिनि यिमैया विळियिनै यिवैयॊन्ऱो
पॆऱ्ऱा मल्लदु पॆऱ्ऱा मॆन्ऱनर् पिरिया दॆदिरॆदिर् शॆऱिहिन्ऱार् 962

इन्तिर चित्तुक्कु–इन्द्रजित् का; इळैयवन्–कनिष्ठ; उऱ्ऱान्–आया; ऒरु काले–एक ही बार में; पल उयिर्–अनेक जीवों को; उण्ण कऱ्ऱानुम्–खाना जिसने सीखा था, उसने भी; मुकम् ऎतिर् वॆत्तान्–अपना मुख उसके सामने किया; अतु–वह; कण्टार्–देखनेवाले; विण्णवर्–देवगण; कचिवु उऱ्ऱार्–शिथिल पड़े; मारुति निलै–मारुति की स्थिति; ऎऱ्ऱु आम्–क्या होगी; ऎन्पार्–कहते; इमैया विळियिनै–अपलक आँखें; पॆऱ्ऱाम्–हमने पायी हैं; इवै ऒन्ऱे–अकेले ये ही क्या;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॆऱ्ऱाम्–पायीं; अल्लतु–अहित (का अनुभव) भी; पॆऱ्ऱोम्—पाया है; ऍन्ऱऩर्–कहते; पिरियातु–विना अलग हुए; ऍतिर् ऍतिर्–आमने-सामने; चॆऱिकिन्ऱार्–पिले रहते हैं। ९६२

इन्द्रजित् का छोटा भाई हनुमान के समक्ष आया और एक ही झड़प में अनेक को निहत करनेवाला हनुमान उसकी ओर मुख करके युद्धोद्यत हुआ। देवगण यह देखकर चिन्ताकुल हुए और आपस में कहने लगे कि हनुमान की स्थिति क्या होगी ? हम अपलक नेत्र वाले हुए तो वह क्या अच्छा भाग्य ही रहा ? अहितकारी बातों का देखना भी प्राप्त हो गया। वे अलग नहीं हुए और आमने-सामने ठस जमे खड़े रहे। ९६२

ऍय्दान् वाळिह ळॆरिवा युमिऴ्वऩ वीरे ऴॆदिरवै पार्शोरप्
पॊय्दान् मणियॆऴु वॊऩ्ऱा लऩ्ऱदु पॊडिया युदिर्वुऱ वडिवाळि
वॆय्दा यिऩपल विट्टान् वीरऩुम् वेऱोर् पडैयिलऩ् माऱावॆङ्
गैदा नेपॊरु पडैया हत्तॊडर् कालार् तेरदऩ् मेलाऩान् 963

ऍरि वाय् उमिऴ्वऩ—आग वमन करनेवाले; ईर् एऴु वाळिकळ्–चौदह शर; ऍतिर् ऍय्तान्–(अक्षकुमार ने) हनुमान पर चलाये; अवै–वे; पार् चोर–भूमि पर गिर जायँ, ऐसा; मणि ऍऴु ऑऩ्ऱाल्–सुन्दर एक लौहदण्ड से; पॊय्तान्–(हनुमान ने) उसे प्रताडित किया; अऩ्ऱु–तब; अतु–वह; पॊटियाय्—चूर होकर; उतिर्वु उऱ–चू जाय ऐसा; वॆय्तु आयिऩ—संतापक; वटि वाळि—तीक्ष्ण शर; पल विट्टान्–अनेक चलाए; वीरऩुम्–महावीर भी; वेऱु ओर् पटै इलऩ्–निरायुध हो; माऱा–उनके विरोध में; वॆम् कै ताऩे—सबल हाथों को; पॊरु पटै आक–युद्ध का हथियार बनाकर; तॊंटर् काल आर्–चलनेवाले चक्रों से युक्त; तेर् अतऩ् मेल्—रथ पर; आताऩ्–चढ़ गया। ९६३

अक्षकुमार ने अग्निवर्षक चौदह बाण चलाये। उनको बेकार कर भूमि पर गिराते हुए हनुमान ने एक लौहदण्ड से उन पर प्रहार किया। अक्षकुमार ने उस दण्ड को चूर कर गिराते हुए सन्तापक और तीक्ष्ण अनेक बाण चलाये। अब महावीर निरायुध रह गया। वह उन बाणों के विरुद्ध अपने हाथों को ही हथियारों के रूप में प्रयुक्त करते हुए अपने सामने घूमते आते पहियों वाले रथ पर चढ़ गया। ९६३

तेरिऱ् चॆऩ्ऱॆदिर् कोल्हॊळ् वाऩुयिर् तिऩ्ऱाऩ् पॊरुवरु शॆऱिदिण्डेर्
पारिऱ् चॆऩ्ऱदु परिबट् टऩवऩ् वरिविऱ् चिऩ्दिय पहऴिक्कोल्
मार्बिऱ् चॆऩ्ऱऩ शिलपॊऱ् ऱोळिडै मऱैवुऱ् ऱऩशिल वऱवोऩुम्
नेरिऱ् चॆऩ्ऱवऩ् वयिरक् कुऩिशिलै पऱ्ऱिक् कॊण्डॆदि रुऱनिऩ्ऱाऩ् 964

तेरिल् चॆऩ्ऱु–रथ में जाकर; ऍतिर्–सामने; कोल् कॊळ्वाऩ्–वेत्र से अश्व चलानेवाले; उयिर् तिऩ्ऱाऩ्–(सारथी के) प्राण हरे; पॊरुवु अऱ–अनुपम; चॆऱि तिण् तेर्–अति कठोर रथ; पारिल् चॆऩ्ऱतु–भूमि पर गिरा; परि पट्टऩ–अश्व मर गये;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अवन् वरि विल्–उसके सबन्ध धनु से; चिन्तिय–निकले; पकळि कोल्–शरों में; चिल–कुछ; मार्पिल् चॅन्ऱन–(हनुमान के) वक्ष में घुस गये; चिल–और कुछ; पॊन् तोळ् इटै–स्वर्णमय कन्धों में; मऱैवु उऱ्ऱन–घुसकर अदृश्य हो रहे; अऱवोन्तुम्–धर्मस्वरूप हनुमान भी; नेरिल् चॅन्ऱु–(उसके) सामने जाकर; अवन्–उसके; वयिर–वज्रकठोर; कुन्ति चिलै–झुके धनुष को; पऱ्ऱि कॊण्टु–छीन लेकर; ऍतिर् उऱ–सामने; निन्ऱान्–खड़ा रहा। ९६४

रथ पर पहुँचकर महावीर ने वेत्र लेकर अश्व चलानेवाले सारथी के प्राण हर लिये। वह अनुपम सबल रथ भी भूमि पर गिर गया और अश्व मर गये। अक्ष ने अपने सबन्ध धनु द्वारा अनेक शर जो चलाये, उनमें कुछ महावीर के वक्ष में घुसे। और कुछ स्वर्ण-सम मनोरम कन्धों में चुभकर अदृश्य हो रहे। धर्मस्वरूप महावीर उसके समक्ष गया और उसके वज्रकठोर और झुके धनु को छीनकर उसके सामने खड़ा रहा। ९६४

ऒरुहै यालवन् वयिरत् तिण्शिलै युऱ्ऱुप् पऱ्ऱलु मुरवोन्तुम्
इरुहै यालॅदिर् वलिया मुन्नम दिऱ्ऱो डियदिवर् पॊऱ्ऱोळान्
शुरिहै वाळव नुरुविक् कुत्तलु मदनैच् चॊऱ्कॊडु वरुतूदन्
पॊरुहै यालिडै पिदिर्वित् तान्मुदिर् पॊऱियो डुम्बडि पऱियावे 965

उरवोन्तुम्–महावीर के; ऒरु कैयाल्–एक हाथ से; अवन्–उसका; वयिर–वज्र-सम; तिण् चिलै–कठोर धनु; उऱ्ऱु पऱ्ऱलुम्–ग्रसकर पकड़ते ही; इरु कैयाल्–(अक्षकुमार अपने) दोनों हाथों से; ऍतिर् वलिया–आगे खींचे; मुन्नम्–उसके पहले ही; अतु इऱ्ऱु ओटियतु–वह टूटकर गिर गया; अवन्–उसके; चुरिकै वाळ्–छुरा; उरुवि–निकालकर; कुत्तलुम्–घुसेड़ते ही; इवर् पॊन् तोळान्–उन्नत मनोहर कन्धों वाले; चॊऱ् कॊटु–(श्रीराम की) आज्ञा ले; वरु–आगत; तूतन्–दूत (हनुमान) ने; अतनै–उसको; पऱिया–छीन लेकर; मुतिर् पॊऱि–अधिक अंगारे; ओटुम् पटि–बिखेरते हुए; पॊरु कैयाल्–लड़नेवाले एक हाथ से; इटै पितिर्वित्तान्–बीच से तोड़ दिया। ९६५

महावीर हनुमान के एक हाथ से उस अतिबलसंयुक्त धनु को खूब पकड़ने पर, वह धनु अक्षकुमार के दोनों हाथों से छीन लेने से पूर्व ही टूटकर अलग हो गया। उसने अपना छुरा निकालकर हनुमान पर भोंका, तो मनोरम व उन्नत कन्धों वाले श्रीराम की आज्ञा से आये दूत, हनुमान ने उसको पकड़कर छीन लिया और बीच से तोड़कर पटक दिया जिससे बहुत अंगारे छूटकर निकले। ९६५

वाळा लेपॊर लुऱ्ऱा निऱ्ऱदु मण्शे रामुन्तम् वयिरत्तिण्
तोळा लेपॊर मुडुहिप् पुक्किडै तळुविक् कोडलु मुडन्मुऱ्ऱुम्
नीळा रयिलॅन मयिर्दैत् तिडमणि नॅडुवा लवनुड निमिर्वुऱ्ऱु
मीळा वहैपुडै शुऱ्ऱिक् कॊण्डदु पऱ्ऱिक् कॊणडनन् मेलान्तान् 966

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वाळाले–तलवार ले; पॉरल् उऱ्ऱान्–लड़ना आरम्भ करके; अतु इऱ्ऱु–उसके टूटकर; मण् चेरा मुतम्–भूमि पर लगने के पूर्व ही; वयिर तिण् तोळाले–वज्रकठोर कन्धों से; पॉर–लड़ने के लिए; मुट्टुकि–शीघ्र आकर; इटै पुक्कु–वहाँ आकर; तऴुवि कोटलुम्–आलिंगन करते ही; नीळ् आर्–लम्बाई से युक्त; अयिल् अॅत–शक्तियों के समान; उटल् मुऱ्ऱुम्–(अक्ष के) शरीर भर में; मयिर् तॅत्तिट–बाल चुभ गये; मणि नॅटु वाल्–मनोरम लम्बी पूँछ ने; अवन्–उसको; उटल् निमिर्वु उऱ्ऱु–शरीर निकालकर; मीळा वकै–बचने नहीं देते हुए; पुटै चुऱ्ऱि कॉण्टतु–सब ओर से लपेट लिया; पऱ्ऱि कॉण्टतन्–इस तरह जिसने ग्रस लिया, वह महावीर; मेल् आतान्–(कुमार को नीचे गिराकर) उसके ऊपर बैठ गया। ९६६

खड्गयुद्ध करने को जो उद्यत हुआ था, वह खड्ग के टूटकर भूमि पर लगने से पूर्व अपने वज्र-सम सुदृढ़ कन्धों के सहारे भिड़ने का संकल्प लेकर शीघ्र आया। आकर हनुमान को बाहुपाश में ले लिया। तो लम्बे भालों-जैसे हनुमान के बाल अक्ष के शरीर में चुभे। हनुमान की मनोरम व लम्बी पूँछ ने उसको कसकर ऐसा लपेट लिया कि वह बचकर निकल नहीं पाया। उस तरह पकड़कर महावीर उसे गिराकर उस पर आरूढ़ हो गया। ९६६

पऱ्ऱिक् कॉण्डवन् वडिवा ळॅनवॉळिर् पल्लिऱ् ऱुहनिमिर् पडर्हैयाल्
ऍऱ्ऱिक् कॉण्डलि निडैनिन् ऱुमिऴ्शुडर् मिन्निन् निनम्विऴु वनवॅन्न
मुऱ्ऱिक् कुण्डल मुदला मणियुह मुऴैना लाविवर् कुडर्नालक्
कॉऱ्ऱत् तिण्शुवल् वयिरक् कैहॉडु कुत्तिप् पुडैयॉरु कुदिहॉण्डान् 967

पऱ्ऱिक् कॉण्टु–पकड़कर; अवन् वटि वाळ् अॅत–उसकी तेज तलवार के समान; ऑळिर्–चमकते; पल्–दाँतों को; इऱ्ऱु उक–तोड़ गिराते हुए; निमिर्–उन्नत; पटर् कैयाल्–विशाल हाथ से; ऍऱ्ऱि–चाँटा मारकर; कॉण्टलिन् इटै निन्ऱु–मेघ-मध्य से; उमिऴ्–निकलनेवाली; चुटर् मिन्निन् इनम्–चमकती बिजलियों की राशि; विऴुवत ऍन्न–गिरी जैसे; कुण्टलम् मुतलाम्–कुण्डल आदि; मणि मुऱ्ऱि उक–रत्नों को मिटाकर बिखरने देकर; नाला इवर् कुटर्–जो विना लटके विद्यमान थीं, उन अँतड़ियों को; मुऴै नाल–गुहाद्वारों के समान छिद्रों के साथ लटकाकर; कॉऱ्ऱ तिण्–विजयशील कठोर; चुवल्–टीले के समान ऊँचा पड़े रहे उसको; वयिर कै कॉटु–वज्र-से कठोर हाथों से; कुत्ति–घूँसा मारकर; ऑरु पुटै–एक बाजू में; कुति कॉण्टान्–कूद पड़ा। ९६७

उसने उसे पकड़ में रखकर अपने उठे हुए विशाल हाथ से ऐसा चाँटा मारा कि उसके तीक्ष्ण तलवार-जैसे चमकीले दाँत टूटकर गिर गये। ऐसा घूँसा मारा कि मेघमध्य से निर्गत बिजलियों की राशि के समान कुण्डल आदि के रत्न छूट छितरे; और चुस्त रही उसकी अँतड़ियाँ गुहाओं के समान छिद्रों के साथ बाहर आकर लटकने लगीं। ऐसा अपने वज्र-तुल्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हस्त से घूँसा मारकर विजयशाली महावीर, टीले के समान पड़े रहे उसके शरीर से एक बाजू में नीचे कूद गया। ९६७

नीत्ता योडिन वुदिरप् पॅरुनदि नीरा हच्चिलै पाराहप्
पोय्त्ताळ् शॅरिदशै यरिशिन् दिनपडि पॉङ्गप् पॉरुमुयिर् पोहामल्
मीत्ता निमिर्शुडर् वयिरक् कैहॉडु पिडिया विण्णॉडु मण्गाणत्
तेय्त्ता नूळियि नुलहेळ् तेयिनु मॉरुतन् पुहळिरै तेयादान् 968

ऊळियिन्–युगान्त में; उलकु एळ्–सातों लोकों के; तेयिनुम्–मिटने के बाद भी; ऑरु–अनुपम; तन् पुकळ्–जिसका अपना यश; इरै–कुछ भी; तेयातान्–कम नहीं होगा वह; नीत्ताय् ओटिन–प्रवहमान; उतिर पॅरु नति–रुधिर की बड़ी नदी को; नीराक–जल बनाकर; पार्–भूमि को; चिलै आक–सिल बनाकर; पोय्–(भूमि पर) जाकर; ताळ्–पड़े रहे; चॅरि तचै–घने मज्जों के; अरि चिन्तिनपटि–चावल छितरे पड़े जैसे; पॉङ्क–पड़े रहते; पॉरुम् उयिर् पोकामल्–लड़ते रहे प्राण नहीं गये; मीत्तु आ निमिर्–ऊपर उठे हुए; चुटर् वयिर–उज्ज्वल और कठोर; कै कॉटु–हाथों से; पिटिया–(शरीर को) पकड़कर; विण् ओटु–व्योमलोक के साथ; मण् काण–भूलोक को भी देखने देते हुए; तेय्त्तान्–पीसा। ९६८

युगान्त में जब सातों लोक मिट जायँगे तब भी महावीर का यश नहीं मिटेगा। स्थायी रहेगा। ऐसे हनुमान ने प्रवाहमय रक्त-नदी से जल छिड़कते हुए, भूमि को ही सिल बनाकर उस राक्षस के नीचे छितरे मांस-मज्जों के टुकड़ों को धान के दाने बनाकर राक्षस के शरीर को, जिससे उसके प्राण बाहर निकलना न चाहकर लड़ रहे थे (छटपटा रहे थे), लोढ़े के रूप में अपने दोनों उज्ज्वल और वज्र-कठोर हाथों से पकड़कर पिसाई की और उसको व्योमलोक और भूलोक दोनों के वासी देख रहे थे। ९६८

पुण्डाळ् कुरुदियिन् वॅळ्ळत् तुयिर्हॉडु पुक्कार् शिलर्शिलर् पॉदिपेयिन्
पण्डा रत्तिडै यिट्टार् तम्मुडल् पट्टार् शिलर्शिलर् बयमुन्दत्
तिण्डा डित्तिशै यरिया मरुहिनर् शॅत्तार् शिलर्शिलर् शॅलवर्ऱार्
कण्डार् कण्डदॉर् तिशैये विशैहॉडु काल्विट् टार्पडै कैविट्टार् 969

चिलर्–कुछ; पुण् ताळ्–मांस-मज्जे जिसके अन्दर थे उस; कुरुतियिन् वॅळ्ळत्तु–रक्तप्रवाह में; उयिर् कॉटु–प्राणों को बचा ले; पुककार्–प्रविष्ट हुए; चिलर्–कुछ ने; पेयिन्–पिशाचों से; पॉति–संगृहीत; पण्टारत्तिटै–शव-भांडारों में; तम् उटल्–अपने शरीरों को; इट्टार्–रखवा लिया; चिलर्–अन्य कुछ; पयम् उन्त–भय के उकसाने से; पट्टार्–मरे; चिलर्–कुछ; तिण्टाटि–अस्त-व्यस्त होकर; तिचै अऱिया–दिशा न जानते हुए; मरुकिनर्–दुःखी होकर; चॅत्तार्–मरे; चिलर्–कुछ; चॅलवु अऱ्ऱार्–गति खो गये; चिलर्–कुछ ने; पटै–हथियारों को; कै विट्टार्–हाथ से त्याग दिया; कण्टार् कण्टतु ओर्–(और) जिस दिशा को देखा उसी; तिचैये–दिशा में ही; विचै कॉटु–सवेग; काल् विट्टार्–पैर बढ़ाये। ९६९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(अक्ष दिवंगत हो गया। फिर) कुछ रक्त-धारा में प्राण लेकर घुस गये; कुछ लोगों ने उन शवों के ढेरों में अपने शरीरों को छिपा लिया, जिनको भूत-पिशाचों ने इकट्ठा कर रखा था। कुछ भय के ही चंगुल में फँसकर मर गये। कुछ अस्त-व्यस्त होकर दिशा जान नहीं सके और संकटग्रस्त होकर विगत-प्राण हुए। कुछ में चलने की शक्ति ही नहीं रह गयी थी। और कुछ राक्षसों ने अपने हाथ के हथियार वहीं छोड़े और जो दिशा देखी उसी दिशा में भगदर मचा दी। ९६९

मीऩाय् वेलैयै युऱ्ऱार् शिलर्शिलर् पशुवाय् वऴिदोऱु मेय्वुऱ्ऱार्
ऊऩार् पऱवैयिऩ् वडिवा ऩार्शिलर् शिलर्नाऩ् मऱैयव रुरुवाऩार्
माऩार् कण्णिळ मडवा रायिऩर् मुऩ्ऩे तङ्गुऴल् वहिर्वुऱ्ऱार्
आऩार् शिलर्शिल रैया निऩ्शर णॅऩ्ऱार् निऩ्ऱव ररियॅऩ्ऱार् 970

चिलर्–कुछ; मीऩाय्–(माया से) मछली बनकर; वेलैयै उऱ्ऱार्–समुद्र पहुँच गये; चिलर्–कुछ; पचुवाय्–गायें बनकर; वऴि तोऱुम्–मार्ग-मार्ग में; मेय्वु उऱ्ऱार्–चरने लगे; चिलर्–कुछ; ऊऩ् आर्–मांसभक्षी; पऱवैयिऩ् वटिवु आऩार्–पक्षियों के रूपधारी बने; चिलर्–कुछ ने; नाल् मऱैयवर्–चतुर्वेदी (ब्राह्मण); उरुवु आऩार्–वेषधारी बने; चिलर्–कुछ; माऩ् आर् कण्–मृग की-सी आँखों वाली; इळ मटवार्–तरुण रमणियाँ; आयिऩर्–बनकर; तम् कुऴल् मुऩ्ऩे–अपने केश में सामने; वकिर्वु उऱ्ऱार्—माँग बनाये; आऩार्–रहीं; चिलर्–कुछ; ऐया–प्रभु; निऩ् चरण्—आपकी शरण हैं; ऍऩ्ऱार्–कहकर शरणार्थी बने; निऩ्ऱवर्–बाक़ी जो रहे वे; अरि ऍऩ्ऱार्–हरि-नाम बोले। ९७०

कुछ राक्षस माया से मछलियाँ बनकर समुद्र में जा रहने लगे। कुछ गायें बने और मार्गों में यत्र-तत्र चरने लगे। कुछ मांसपक्षी (कौए, गीध आदि पक्षी) बने। कुछ लोगों ने चतुर्वेदी ब्राह्मणों का रूप ले लिया। कुछ मृगनयनी बालाएँ बने और अपने केश में माँग निकाले, खड़े रहे। कुछ उसकी शरण में, "हम आपके शरणागत हैं" —कहते हुए आ गये। बाक़ी जो रहे वे हरि-नाम बोलते रहे। ९७०

तन्दा रमुमुऱु किळैयुन् दमैयॅदिर् तऴुवुन् दोऱुनुम् दमरल्लेम्
वन्देम् वाऩव रॅऩ्ऱे हिऩर्शिलर् शिलर्मा नुयरॅऩ वाय्विट्टार्
मन्दा रङ्गिळर्पॊऴिल्वाय् वण्डुह ळाऩार् शिलर्शिलर् मरुळ्हॊण्डार्
इन्दा रॅयिऱुह ळिऱुवित् तार्शिल रॅरिपोऱ् कुऱ्जियै यिरुळ्वित्तार् 971

चिलर्—कुछ; तम् तारमुम्–उनकी स्त्रियों और; उऱु किळैयुम्–निकट के रिश्तेदारों ने; तमै ऍतिर् तऴुवुम् तोऱुम्–उनका जब सामने आकर आलिंगन किया तब; नुम तमर् अल्लेम्–(हम) तुम लोगों के (नातेदार) नहीं; वाऩवर् वन्तेम्—देव आये; ऍऩ्ऱु–कहकर; एकिऩर्–दूर चले गये (हनुमान के डर से); माऩुयर्—मनुष्य (हैं हम, राक्षस नहीं); ऍऩ–ऐसा; वाय् विट्टार्–उच्च स्वर में कहा; चिलर्–और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुछ; मन्तारम् किळर्–मन्दारतरुकलित; पॊऴिल् वाय्–उपवन में; वण्टुकळ् आऩार्–भौंरे बने; चिलर्–कुछ; मरुळ् कॊण्टार्–भ्रमित हुए; चिलर्–कुछ निशाचरों ने; इन्तु आर्–कलाचन्द्र-सम; ऍयिऱुकळ्–दाँतों को; इऱवित्तार्–तुड़वा लिया; ऍरि पोल्–आग-से; कुञ्चियै–केश को; इरुळ्वित्तार्–काला बना लिया। ९७१

कुछ राक्षसों ने, जब उनकी पत्नियों और रिश्तेदारों ने उनके स्वागत में आलिंगन किया, तब (हनुमान से डरकर) कहा कि हम तुम लोगों के बन्धु नहीं हैं। हम सब देव हैं इधर आये हुए। वे बचाकर भाग चले। कुछ राक्षसों ने उच्च स्वर में चिल्लाकर कहा कि हम मानव हैं। कुछ राक्षस मन्दारतरुकलित अशोक वन में भ्रमर बनकर रह गये। कुछ लोग भ्रमित होकर निष्क्रिय खड़े रह गये। कुछ राक्षसों ने बालचन्द्र-सम अपने दाँतों को तुड़वा लिया और आग-से लाल अपने केशों को काला बना लिया। ९७१

कुण्डलक् कुऴैमुहक् कुङ्गुमक् कॊङ्गैयार्
वण्डलैत् तॆऴुहुऴर् कऱ्ऱैहाल् वरुडवे
विण्डलत् तहविरैक् कुमुदवाय् विरिदलाल्
अण्डमुऱ् ऱुळदवू रऴुदपे रमलैये 972

कुण्डल कुऴै मुक–कुण्डल मण्डित मुखों और; कुङ्कुम कॊङ्कैयार्–कुंकुमचर्चित स्तनों वाली राक्षसियाँ; वण्टु अलैत्तु ऍऴु–भ्रमरों को अस्त-व्यस्त उठने देते हुए; कुऴल् कऱ्ऱै–केश राशि के; काल् वरुट–चरणों को सहलाते; अलत्तक–लाल रूई लगे; विरै–सुवासित; कुमुत वाय्–कुमुदारुण मुख के; विण्टु विरितलाल्–खूब खुलने से; अ ऊर्–उस नगर के (वासियों के); अऴुत–रोने का; पेर् अमलै–बड़ा नाद; अण्टम् उऱ्ऱु उळतु–अण्ड भर में व्याप्त हुआ। ९७२

कुण्डलों से अलंकृत मुखों और कुंकुमचर्चित स्तनों वाली राक्षसियों ने अपने केश को खोल दिया, जिससे भ्रमर अस्त-व्यस्त हो उड़ने लगे। उनका केश उनके पैरों को सहला रहा था। वे अपने लाक्षारसरंजित अधरों वाले मुखों को खोलकर रोयीं, जिससे जो शोर निकला वह अण्ड भर में व्याप गया। ९७२

कदिरॆऴुन् दऩैयशॆन् दिरुमुहक् कणवऩ्मा
डॆदिरॆऴुन् दडिविऴुन् दऴुदुशो रिळनलार्
अदिनलङ् गोदैशे रोदियो डऩ्ऱवूर्
उदिरमुन् दॆरिहिला दिडैपरन् दॊऴुहिये 973

कतिर् ऍऴुन्तु अऩैय–रवि उगा हो जैसे; चॆम् तिरु मुक्–लाल मुखों के; कणवऩ् माटु–पतियों के पास; ऍतिर् ऍऴुन्तु–सामने उठ जाकर; अटि विऴुन्तु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चरणों पर गिरकर; अऴुतु चोर्–रोकर थकी होनेवाली; इळ नलार्–तरुण रमणियों के; अति नलम्–अति सुन्दर; कोतै चेर्–मालायुक्त; ओति ऒट्टु–केश के साथ; अन्ऱु–उस दिन; अ ऊर् उतिरमुम्–उस नगर में प्रवहमान रक्त भी; इटै परन्तु ऒऴुकि–अनेक स्थलों में फैलकर बहकर; तॆरिकिलातु–अपृथक् दृश्य रहा। ९७३

उदयसूर्य के समान लाल मुखों वाले अपने (मृतक) पतियों के सामने जाकर राक्षसियाँ पैरों पर गिरकर रोयीं। उन राक्षसियों के केश भी लाल थे। उस लंका में लाल रक्त भी बह रहा था। केश और रक्त में कोई भेद नहीं दिखायी देता था। (सर्वत्र लाल रक्त और लाल केश दिखायी दे रहे थे। राक्षसों के मुख भी लाल थे। फिर क्या, सब जगह लाली ही लाली है!)। ९७३

ताविल्वॆञ् जॆरुनिलत् तिडैयुलन् दवर्तमेल्
ओवियम् बुरैनलार् विऴुदोऱुञ् जिलरुयिर्त्
तेवुहण् गऴुमिमैत् तिलर्हळा मिवैयॆलाम्
आवियॊन् रुडलिरण् डायदा लेहॊलाम् 974

वॆम् चॆरु निलत्तु–क्रूर युद्धस्थल में; तावु इल् इटै–पनाह से हीन स्थल में; उलन्तवर् तम् मेल्–मरे पड़े रहों पर; ओवियम् पुरै–चित्र (प्रतिमा-)सी; नलार्–रमणियाँ; विऴु तोऱुम्–ज्यों-ज्यों गिरतीं; चिलर्–कुछ; उयिर्त्तु–लम्बी साँस छोड़कर; एवु कण्कऴुम्–बाण-सी आँखें भी; इमैत्तिलर्कळ् आम्–विना पलक मारे (मूंदकर पड़ी) रहीं; इवै ऎलाम्–ये सारे; आवि ऒन्ऱु–प्राण एक; उटल् इरण्टु–शरीर दो; आयतु–रहे; आले कॊलाम्–इसी कारण से शायद। ९७४

उस भयंकर समरांगन में कोई छाँह ही नहीं थी। मृतकों के शवों के ऊपर चित्रप्रतिमा-सम राक्षसियाँ गिरीं। तब उनकी साँसें रुक गयीं और आँखें अपलक होकर मुँद गयीं और मरी-सी हो रहीं। क्योंकि राक्षस और राक्षसी दो शरीर पर एक प्राण थे। ९७४

ओडिऩा रुयिर्हणा डुडल्हळ्पो लुदवियाय्
वीडिऩार् वीडिऩार् मिडैयुडर् कुवैहळ्वाय्
नाडिऩार् मडनलार् नवैयिला नण्बरैक्
कूडिऩा रूडिऩा रुम्बर्वाऴ् कॊम्बऩार् 975

मट नलार्–अबोध स्त्रियाँ; उयिर्कळ् नाटु–प्राणों की (आत्मा की) खोज में जानेवाले; उटल्कळ् पोल्–शरीर के समान; ओटिऩार्–भागीं; वीटिऩार् वीटिऩार् मिटै–मरकर सटे पड़े रहे; उटल् कुवैकळ् वाय्–शव-राशियों में; नाटिऩार्–खोज लगाकर; नवै इला नण्परै–निर्दोष संगियों को; उतवियाय्–उपकार करने के लिए; कूटिऩार्–(मरकर) उनसे मिल गयीं; उम्पर् वाऴ्–आकाशवासिनी; कॊम्पु अऩार्–पुष्पशाखा-सरीखी (अप्सराएँ); ऊटिऩार्–रूठीं। ९७५

अबोध राक्षसी स्त्रियाँ अपने प्राणों (आत्माओं) की खोज में जानेवाले

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शरीरों के समान दौड़ीं। मरे पड़े राक्षसों के शवों के ढेरों के बीच में अपने-अपने पति को खोजा। आखिर ढूँढ़ लेकर वे अपने निर्दोष मित्र-से पतियों के साथ मिल गयीं तथा स्वर्ग गयीं। वहाँ व्योमलोकवासिनी पुष्पशाखा-सरीखी अप्सराएँ इनको देखकर रुष्ट हो गयीं। (जो मर जाते हैं, वे स्वर्ग जाकर देव बन जाते हैं। और अप्सराएँ उनको आनन्द प्रदान करती हैं। यह बात ग्रन्थों में कही गयी हैं। कम्बन ने भी उसकी अनेक स्थलों पर चर्चा की है।)। ९७५

तीट्टुवा ळनैयकट् टॅरिवैयोर् तिरुवऩाळ्
आट्टिनिऩ् ऱयर्वदो ररुदलैक् कुऱैयिऩैक्
कूट्टिनी योरुयिर्त् तुणैवऩॅङ् गोविऩै
काट्टुवा यादियॅऩ् ऱळुदुकै कूप्पिऩाळ् 976

तीट्टु—पैनायी गयी; वाळ् अऩैय—तलवार-सी; कण्—आँखों वाली; तॅरिवै—रमणी; ओर् तिरु अऩाळ्—एक, लक्ष्मी-सरीखी; आट्टिल् निऩ्ऱु—नृत्यरत रहकर; अयर्वतु ओर्—थके गये एक; अऱु तलै—सिर-कटे; कुऱैयिऩै—कबन्ध को; कूट्टि—उसके सिर से लगाकर; नी—तुम; ओर् उयिर् तुणैवऩ्—अनुपम मेरे प्राण-सम पति; ऍऩ् कोविऩै—मेरे राजा को; काट्टुवाय् आति—दिखानेवाले बनो; ऍऩ्ऱु—ऐसा; अळुतु—रोती हुई; कै कूप्पिऩाळ्—हाथ जोड़े (उसने)। ९७६

पैनायी गयी तलवार-सी आँखों वाली लक्ष्मी-सरीखी एक रमणी समराजिर में आयी। वहाँ सिर कटकर जो मर गया था, उसका रुण्ड नाच रहा था। उसने उसको उसके मुण्ड के साथ मिलाया और उससे रोते हुए पूछा कि मेरे जीवन-संगी, मेरे राजा को दिखाओ। ९७६

एऩ्दिऩा डलैयैयो रॅळुदरुङ् गॊम्बऩाळ्
कान्दऩिऩ् ऱाडुवा ऩुडऱ्कवऩ् दऩ्तिऩै
वेऩ्दऩी यलशिऩाय् विडुदिया ऩडमॅऩाप्
पूऩ्दळिर्क् कैहळाऩ् मॅय्युऱप् पुल्लिऩाळ् 977

ऍळुत अरुम्—चित्र जिसका खींचना कठिन था; ओर् कॊम्पु अऩाळ्—ऐसी एक पुष्पलता-सी एक राक्षसदयिता ने; तलैयै एऩ्तिऩाळ्—(पति के कटे) सिर को उठा लेकर; निऩ्ऱु आटुवाऩ्—खड़े होकर नाचनेवाले; कान्तऩ्—पति के; उटल कवऩ्तऩ्तिऩै—शरीर के रुंड को (पकड़कर); वेऩ्तऩ्—राजा; नी—तुम; अलचिऩाय्—थक गये हो; नटम् विटुति—नाचना छोड़ो; ऍऩा—कहकर; पूम् तळिर्—कोमल किसलय-से; कैकळाल्—हाथों से; मॅय् उऱ—शरीर से लगाकर; पुल्लिऩाळ्—आलिंगन कर लिया। ९७७

अचित्रार्पणशक्य एक राक्षसी रमणी ने अपने पति का कटा सिर हाथ में ले लिया। उसका कबन्ध नाच रहा था। अपने पति के नाचते उस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कबन्ध को पकड़कर उससे प्रार्थना की कि राजा ! तुम थक गये। नाचना रोक दो। उसने अपने पल्लव-करों से उसका प्रगाढ़ आलिंगन कर लिया। ९७७

अव्वहै कण्डव रमरर् यावरुम्, उय्वहै यरिदॆन वोडि मन्नवन्
शॆव्वडि यदन्मिशै वीऴ्न्दु शॆप्पिनार्, ऍव्वहैप् पॆरुम्बडै यावु माय्न्ददे 978

अ वकै–वह सब कृत्य; कण्टवर्–जिन्होंने देखा; अमरर् यावरुम्–सभी ऋतु-देवों ने; उय् वकै अरितु–जीवित रहने का मार्ग कठिन है; ऍन–कहकर; ओटि–भागकर; मन्नवन् चॆ अटि अतन् मिचै–राजा के अरुण चरणों पर; वीऴ्न्तु–गिरकर; ऍ वकै पॆरुम् पटै–किसी भी तरह की सेना; यावुम्–सभी का; माय्न्ततु–मिटना; चॆप्पिनार्–बताया। ९७८

ऋतुदेवताओं ने इस भाँति सबका मरना देखा तो उन्हें डर लग गया कि अब जीवित बचना कठिन है। वे वहाँ से भागे और राक्षस-राजा के लाल चरणों पर गिरे। उन्होंने सभी सेनाओं को मरने का वृत्तान्त कह सुनाया। ९७८

कयन्महिऴ् कण्णिणै कलुऴि कान्रुहप्
पुयन्महिऴ् पुरिहुऴल् पॊडिय ळावुऱ
अयन्महन् महन्मह नडियिन् वीऴ्न्दनळ्
मयन्महळ् वयिऱलैत् तलऱि माऴ्हिनाळ् 979

मयन् मकळ्–मयतनया; कयल् मकिऴ्–'कयल' मछली के समान उन्मत्त; कण् इणै–आँखों के जोड़े से; कलुऴि कान्रु उक–जल निकालकर गिराते हुए; पुयल् मकिऴ्–मेघ-सम; पुरि कुऴल्–वेणी के केश को; पॊटि अळावु उऱ–धूल पर लोटने देते हुए; अयन् मकन्–ब्रह्मा के पुत्र (पुलस्त्य) के; मकन् मकन्–पुत्र (विश्रवा) के पुत्र (रावण) के; अटियिल् वीऴ्न्ततळ्–चरणों पर गिरी; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटकर; अलऱि–चिल्लाकर; माऴ्किनाळ्–रोयी। ९७९

मयसुता मन्दोदरी ने यह सुना तो वह अपनी 'कयल' मछली-सी मत्त आँखों से अश्रुधारा बहाती हुई और अपने मेघ-सम केश की वेणी को खोलकर भूमि पर लोटने देती हुई ब्रह्मदेव के प्रपौत्र, पुलस्त्य के पौत्र, विश्रवा के पुत्र रावण के चरणों में गिरी और पेट पीटती हुई रोयी, कलपी और व्यग्र हुई। ९७९

तावरुन् दिरुनहर्त् तैय लार्मुदल्
एवरु मिडैविऴुन् दिरङ्गि येङ्गिनार्
कावलन् कान्मिशै विऴुन्दु कावन्मात्
तेवरु मऴुदनर् कळिक्कुज जिन्दैयार् 980

ता अरुम्–दोषहीन; तिरु नकर्–श्री नगरी की; तैयलार् मुतल्–स्त्रियों से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लेकर; एवरुम्-सभी; इटै विऴुन्तु-चरणों पर गिरकर; इरङ्कि-दुखी होकर; एङ्किऩार्-भयोद्विग्न रहे; कावल् मा तेवरुम्-आदरणीय ऋतुदेवता भी; कऴिक्कुम् चिन्तैयार्-मन में आनन्द पाकर; कावलऩ्-परिपालक के; काल् मिचै-चरणों पर; विऴुन्तु-गिरकर; अऴुततर्-(दिखावे के लिए) रोये। ९८०

निर्दोष उस श्री नगर की दयिताओं से लेकर सारे लोग उसके पैरों पर गिरकर रोये। ऋतुदेव भी औपचारिकतावश उसके चरणों पर गिरकर रोये; पर उनके मन पुलकित हो रहे थे। ९८०

11. पाशप् पडलम् [पाश (-बन्धन) पटल]

अव्वऴि यववुरै केट्ट वाण्डहै
वॆव्विऴि यॆरियुह वॆहुऴि वीङ्गिऩान्
ऎव्वऴि युलहमुङ् गुलैय विन्दिरत्
तॆव्वऴि तरवुयर् विशयच् चीर्त्तियान् 981

अ वऴि-तब; अ उरै-वह वृत्तान्त; केट्ट-जिसने सुना; आण् टकै-पुरुष-श्रेष्ठ मेघनाद; ऎ वऴि उलकमुम्-किसी भी लोक को (सभी लोकों को); कुलैय-कँपाते हुए; इन्तिर तॆव्वु-इन्द्र की शत्रुता को; अऴितर-मिटाकर; उयर् विचय-प्राप्त उत्कृष्ट विजय की; चीर्त्तियान्-कीर्तिमान; वॆम् विऴि-क्रूर आँखों से; ऎरि उक-आग बरसाते हुए; वॆकुऴि-वीङ्किऩान्-कोप में बढ़ा। ९८१

यह समाचार इन्द्रजित् ने सुना। इन्द्रजित् पुरुषश्रेष्ठ था। उसने सब लोकों को अस्त-व्यस्त करते हुए शत्रु देवेन्द्र के बल को मिटाकर परास्त किया था, जिससे उसकी विजयकीर्ति बढ़ गयी थी। जब उसने अपने भाई की मृत्यु का समाचार सुना, तो उसका कोप बढ़ आया जिससे उसकी भयंकर बनी आँखों से आग-सी निकली। ९८१

अरञ्जुडर् वेऱ्ऱऩ दऩुश तिऱ्ऱशॊल्
उरञ्जुड वॆरियुयिर्त् तॊरुव ऩोङ्गिऩान्
पुरञ्जुड वरिशिलैप् पॊरुप्पु वाङ्गिय
परञ्जुड रॊरुवऩैप् पॊरुवुम् पाऩ्मैयान् 982

अरम् चुटर् वेल्-रेती से रेतकर चमकनेवाले भाले के धारक; तऩतु अऩुचऩ्-उसके भाई का; इऱ्ऱ चॊल्-मरने के समाचार ने; उरम् चुट-उसके मन को तपाया; ऎरि उयिर्त्तु-अग्नि के समान श्वास निकालकर; पुरम् चुट-त्रिपुर को जलाने के लिए; वरि चिलै-सबन्ध धनु के रूप में; पॊरुप्पु वाङ्किय-मेरुपर्वत को जिन्होंने झुका लिया; परम् चुटर् ऒरुवऩै-परम ज्योति परमेश्वर के; पॊरुवुम् पाऩ्मैयाऩ्-समान रहनेवाला; ऒरुवऩ्-अद्वितीय वीर; ओङ्किऩान्-(मेघनाद) उठा। ९८२

रेती से पैनायी गयी शक्ति-धारी उसके भाई की मृत्यु के समाचार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ने उसके मन को जला-सा दिया। वह अप्रतिम मेघनाद आग के समान गरम निःश्वास छोड़ते हुए, त्रिपुर जलाने के लिए जिन्होंने मेरु को धनु के रूप में झुकाया था, उन ज्योतिर्मय परमेश्वर के समान युद्धोद्यत हो उठा। ९८२

एऱिनन् विशुम्बिनुक् कॅल्लै काट्टुव, आऱिरु नूऱुपेय् पूण्ड वाऴित्तेर्
कूऱिन कूऱिन शॉऱ्कळ् कोत्तलाल्, पीऱिन नॅडुन्दिशै पिळन्द दण्डमे 983

विचुम्पितुक्कु–आकाश को भी; अॅल्लै काट्टुव–ऊँचाई की सीमा दिखानेवाले; आऱु इरु नूऱु पेय्–बारह सौ भूत; पूण्ट–जिसमें जुते थे; आऴि तेर्–सशक्त पहियों के रथ पर; ऐऱिनन्–चढ़ा; कूऱिन कूऱिन–उसके द्वारा कहे गये; चॉऱ्कळ्–(कठोर) वचन; कोत्तलाल्–गुँथे हुए आये, इसलिए; नॅटुम् तिचै–लम्बी दिशाएँ; पीऱिन–दरारें खा गयीं; अण्टम् पिळन्ततु–अण्ड फटा। ९८३

वह अपने सारयुक्त पहियेदार रथ पर चढ़ा जिसमें आकाश को भी ऊँचाई की सीमा दिखाते-से बढ़े रहे बारह सौ भूत जुते थे। तब उसने क्रोध में लगातार कुछ कठोर वचन कहे, जिनकी उग्र कठोरता के कारण लम्बी दिशाओं में दरारें पड़ गयीं और अण्ड भी फट गया। ९८३

आर्त्तनन कळलुन् दारुम् बेरियु मशनि यॅन्न
वेर्त्तुयिर् कुलैय मेनि वॅदुम्बिन नमरर् वेन्दन्
शीर्त्तदु पोरु मॅन्नात् तेवर्क्कुन् देव राय
मूर्त्तिह डामुन् दन्दम् योहत्तिन् मुयऱ्चि विट्टार् 984

कळलुम्–पायलें और; तारुम्–हार और; पेरियुम्–भेरियाँ; अचनि अॅन्न–अशनि के समान; आर्त्तनन–नर्दन कर उठीं; अमरर् वेन्तन्–देवराज; उयिर् कुलैय–व्यग्रप्राण; मेनि वेर्त्तु–स्वेदयुक्त शरीर वाला होकर; वॅतुम्पिनन्–तप्त हुआ; तेवर्क्कुम् तेवर् आय–देवादिदेव; मूर्त्तिकळ् तामुम्–त्रिमूर्ति भी; पोरुम् चीर्त्ततु–युद्ध भी चरम सीमा पर आ गया; अॅन्ना–सोचकर; तम् तम् योकत्तिन्–अपने-अपने योग के; मुयऱ्चि–अभ्यास से; विट्टार्–विरत हुए। ९८४

जब वह जाने लगा तब उसकी पायलों, हारों और भेरियों ने अशनि का-सा नर्दन किया। देवराज काँप गया और उसका शरीर पसीना-पसीना हो गया। देवदेव त्रिदेवों ने भी युद्ध चरम सीमा पर आ गया —यह सोचकर अपना योगाभ्यास छोड़ दिया। ९८४

तम्बियै युन्नुन् दोऱुन् दारैनीर् तदुम्बुङ् गण्णान्
वम्बियल् शिलैयै नोक्कि वाय्मडित् तुरुत्तु नक्कान्
कॉम्बियन् माय वाळ्क्कैक् कुरङ्गिनाऱ् कुरङ्गा वाऱ्रल्
अॅम्बियो तेय्न्दा नॅन्दै पुहळ्नऱो तेय्न्द दॅन्ऱान् 985

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तम्पियै उन्नुम् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों अपने कनिष्ठ का स्मरण करता; तारै नीर्–त्यों-त्यों अश्रुधारा से; ततुम्पुम् कण्णान्–भरी आँखों का; वम्पु इयल्–बन्धनयुक्त; चिलैयै–धनु को; नोक्कि–देखकर; वाय् मटित्तु–अधर मोड़कर; उरुत्तु नक्कान्–कोप की हँसी हँसता; कोम्पु इयल्–शाखाओं में जीने का; माय वाळ्क्कै–मर्त्य-जीवन जीनेवाले; कुरङ्कित्ताल्–वानर से (क्या); कुरङ्का आऱ्ऱल्–अथक बली; ऍम्पियो तेय्न्तान्–मेरा छोटा भाई क्या मरा; ऍन्तै पुकळ् अन्ऱो–मेरे पिता की न; तेय्न्ततु–मिट गयी; ऍन्ऱान्–कहा। ९८५

इन्द्रजित् ज्यों-ज्यों अपने भाई की बात सोचता, त्यों-त्यों उसकी आँखें अश्रु से भर जातीं। उसने सबन्ध अपने धनु को देखा। फिर अधर दाँतों से काटते हुए कोप के साथ हँसा। उसने आहत अभिमान के स्वर में कहा कि शाखाजीवी मर्त्य बन्दर द्वारा क्या मेरा छोटा भाई ही नाश हुआ ? नहीं। मेरे पिताजी का यश न नाश हुआ ! । ९८५

वेऱिरण् डन्नवुम् विल्लु मिडैन्दवुम् वॅऱ्पॅन् ऱालुम्
कूऱिरण् डाक्कुम् वाट्कैक् कुळुवैयुङ् गुणिक्क लाऱ्ऱेम्
शेऱिरण् डरुहु शॅय्युञ् जॅऱिमदच् चिऱुहण् यान्नै
आऱिरण् डञ्जु नूऱ्ऱि त्तिरट्टितेर्त् तॉहैयु मः(ह्)दे 986

वॅऱ्पु ऍन्ऱालुम्–पर्वत ही क्यों न हों; कूऱु इरण्टु आक्कुम्–(भिड़े तो) उसके दो भाग करनेवाले; वेल् तिरण्टन्नवुम्–शक्तियों-सहित वीर जो एकत्रित हुए; विल्लु मिटैन्तवुम्–धनु (वीर) जितने भीड़ लगाकर मिले; वाळ् कै कुळुवैयुम्–खड्गहस्तों के दलों को; कुणिक्कल् आऱ्ऱेम्–गिनने की शक्ति हमारे पास नहीं है; इरण्टु अरुकु–दोनों बाजुओं (में भूमि) को; चेऱु चॅय्युम्–पंक बनानेवाले; चॅऱि मत–मदमत्त; चिऱु कण्–छोटी आँखों के; यान्नै–गजों की संख्या; आऱु इरण्टु अञ्चु नूऱ्ऱिन् इरट्टि–६×२×५×१००×२ (=१२) हजार है; तेर् तॉकैयुम्–रथों की संख्या भी; अ.ंते–वही। ९८६

उसके साथ पर्वत को भी दो भागों में खण्डित करने की शक्ति रखनेवाले भाले (लिये हुए वीर) एकत्रित होकर गये। धनुर्धर वीर मिलकर गये और तलवारधारी वीर गये। पर उनकी संख्या जान लेना हमारी शक्ति के बाहर की बात है। पर दोनों ओर भूमि को पंक बनाते हुए चलनेवाले गजों की संख्या बारह हज़ार थी। रथों की संख्या भी वही। ९८६

आयमात् तान्नै तान्वन् दण्मिय दण्म वेन्नैत्
तीयवा णिरुदर् वेन्दर् शेर्न्दवर् शेरत् तेरिन्
एयॅन्तु मळविन् वन्दा त्तिरावण त्तिरुन्द याणर्
वायिऱोय् कोयिल् पुक्का त्तरुविशोर् वयिरक् कण्णान् 987

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आय—वैसी; मा तानै—बड़ी सेना; तान् वन्तु अण्मियतु—ही आकर जुड़ी; अण्म—एकत्रित होने पर; एनै—अन्य; तीय वाळ्—क्रूर तलवारधारी; निरुतर् वेन्तर्—राक्षसराज; चेर्न्तवर् चेर—जो आये वे भी आ मिले; एय् ऍनुम् अळविल्—'एय्' कहने के पहले ही; अरुवि चोर्—सरिता के समान (अश्रु) बहाते; वयिर कण्णान्—द्वेषपूर्ण आँखों वाला; तेरिल् वन्तान्—रथ पर आया; इरावणन् इरुन्त—जिसमें रावण रहा; याणर् वायिल् तोय्—सुन्दर द्वार से युक्त; कोयिल् पुक्कान्—मन्दिर (महल) में प्रविष्ट हुआ। ९८७

वैसी बड़ी सेना आकर उससे मिली। साथ अन्य क्रूर तलवारधारी राक्षस राजा भी आकर मिले। उनके साथ नदी-सी अश्रुधारा बहानेवाली और द्वेषपूर्ण आँखों का वह इन्द्रजित् 'एय्' कहने की देर के अन्दर अपने रथ पर आकर मनोरम द्वार के महल में प्रविष्ट हुआ, जिसमें रावण रहता था। ९८७

ताळिणै विऴुन्दान् ऱम्बिक् किरङ्गिनान् ऱरुह णानुम्
तोळिणै पऱ्ऱि येन्दित् तऴुविन नऴुदु शोर्न्दान्
वाळिणै नॅडुङ्गण् मादर् वयिऱलैत् तलऱि माऴ्ह
मीळिपोन् मॉय्म्बि नानुम् विलक्किनन् विळम्ब लुऱ्ऱान् 988

ताळ् इणै विऴुन्तान्—चरणद्वय पर गिरकर; तम्पिक्कु—छोटे भाई के लिए; इरङ्किनान्—दुःख (प्रकट) किया; तऱुकणानुम्—निडर रावण भी; तोळ् इणै—(इन्द्रजित् के) बाहुद्वय को; पऱ्ऱि एन्ति—पकड़ उठाकर; तऴुविनन्—आलिंगन करते हुए; अऴुतु चोर्न्तान्—रोया और थका; इणै वाळ्—तलवार के जोड़े के समान; नॅटुम् कण् मातर्—आयत आँखों की स्त्रियाँ; वयिऱु अलैत्तु—पेट पीटती हुईं; अलऱि—चिल्लाकर; माऴ्क—व्याकुल हुईं; मीळि पोल् मॉय्म्पिनानुम्—यम-सदृश शक्तिशाली (इन्द्रजित्); विलक्किनन्—उनको हटाकर; विळम्पल् उऱ्ऱान्—बोलने लगा। ९८८

वह रावण के चरणद्वय पर गिरा और अपने भाई के मरण के दुःख में रोया। निडर रावण भी उसकी दोनों बाहुओं को पकड़कर उठाया और आलिंगन करते हुए रो-रोकर थक गया। तलवार के जोड़े के समान आँखों वाली राक्षसियाँ भी पेट पीटती हुई चिल्लायीं और शिथिल हुईं। यम-सम बलशाली इन्द्रजित् उन सबको दूर करके अपने पिता से यों बोलने लगा। ९८८

ऑन्ऱुनी युऱुदि योरा युऱ्ऱऱिन् दुळैय हिऱ्ऱि
वन्ऱिऱऱ् कुरङ्गि नार्ऱन् मरबुनी युणर्न्दु मन्नो
शॅन्ऱुनीर् पॉरुदि रॅन्ऱु तिऱ्ऱतिऱञ् जॅलुत्तित् तेयक्
कॉन्ऱनै नीये यन्ऱो निरुदर्दङ् गुऴुवै यॅल्लाम् 989

नी—आप; उऱुति ऑन्ऱुम्—हित कुछ; ओराय्—नहीं सोचते; उऱु अऱिन्तु—

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो हुआ वह सोचकर; उळैयकिऱ्ऱि–दुःख करते हैं; नी–आप; वन् तिऱल् कुरङ्किन्–अति चतुर वानर का; आऱ्ऱल् मरपु–बल-पराक्रम; उणर्न्तु–जानकर भी; चॅन्ऱु–जाकर; नीर् पोरुतिर् ऍन्ऱु–तुम जाकर लड़ो, कहकर; तिऱम् तिऱम् चॅलुत्ति–बारी-बारी से भेजकर; निरुतर् तम् कुळुवै ऍल्लाम्–राक्षसों के सारे दलों को; नीये–आपने स्वयं; तेय–क्षीण कराते हुए; कॊन्ऱऱै अन्ऱो–मरवाया न । ९८९

पिताजी ! आप अपना हित कुछ नहीं सोचते । जो बीत गया उसको सोचकर दुःखी हो रहे हैं । आपको अति बलशाली वानर की शक्ति की स्थिति विदित हो गयी थी । तो भी आपने 'जाकर लड़ो' कहकर बारी-बारी से राक्षसदलों को भेजा और उनको क्षय करते हुए मरवा दिया । ९८९

किङ्गरर् शम्बु मालि केडिला वैव रॅन्ऱिप्
पैङ्गळ लरक्क रोडु मुडन्शॅन्ऱ पहुदिच् चेनै
इङ्गॊरु पेरु मीण्डा रिल्लैयेऱ् कुरङ्ग दॅन्दाय्
शङ्गर नयन्मा लॅन्बोर् तामॅनुन् दरत्त दामे 990

ऍन्ताय्–पिताजी; किङ्करर्–किंकरदल; चम्पुमालि–जम्बुमाली; केटु इला ऐवर्–अक्षयबल पंच सेनापति; ऍन्ऱु–ऐसे; इ पैम् कळल्–इन चमकदार पायलधारी; अरक्करोटुम्–राक्षसों के साथ; उटन् चॅन्ऱु–उनसे मिलकर जो गयी; पकुति चेनै–बड़े भाग की सेनाओं में; इङ्कु–यहाँ; ओरु पेरुम्–नाम मात्र के लिए भी एक; मीण्टार् इल्लैयेल्–नहीं लौटा तो; कुरङ्कु अतु–वह वानर; चङ्करन् अयन् माल्–शिव, ब्रह्मा और विष्णु; ऍन्पोर् ताम् ऍनुम्–कहलानेवाले वे ही हैं; तरत्तत्तु आम्–मानने योग्य ही है । ९९०

मेरे पिताजी ! किंकर, जम्बुमाली, अमिट पंच सेनापति —इन मनोरम चमकदार पायलधारी वीरों के साथ गयी बहुत बड़े अंशों की सेना का कोई भी लौट नहीं आया । तो वह बन्दर शिव, ब्रह्मा और विष्णु कथित त्रिदेव ही है —यही कहना पड़ेगा । ९९०

तिक्किनै वॅन्ऱु मेन्ना डिरिबुरन् दीयच् चॅऱ्ऱ
मुक्कणान् वाळै वाङ्गि युलहॊरु मून्ऱुम् वॅन्ऱाय्
अक्कनैक् कॊन्ऱु निन्ऱ कुरङ्गिनै याऱ्ऱल् काट्टिप्
पुक्किनि वॅन्ऱु मॅन्ऱाऱ् पुलम्बन्ऱिप् पुलमैत् तामो 991

तिक्किनै वॅन्ऱु–दिशाओं को जीतकर; मेल् नाळ्–पहले; तिरिपुरम् तीय चॅऱ्ऱ–त्रिपुर को जलाकर जिन्होंने मिटाया; मुक्कणान्–उन त्रिनेत्र (शिवजी) द्वारा दत्त; वाळै–तलवार (चन्द्रहास); वाङ्कि–लेकर; उलकु ऒरु मून्ऱुम्–तीनों लोकों को; वेन्ऱाय्–जीत लिया (आपने); अक्कनै कॊन्ऱु निन्ऱ–अक्ष को मारकर जो खड़ा है; कुरङ्किनै–उस वानर को; आऱ्ऱल् काट्टि–बल प्रयोग करके;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इऩि–अब; पुक्कु–जाकर; वॆऩ्ऱुम् ऍऩ्ऱाल्–मारेंगे तो; पुलम्पु अऩ्ऱि–बकवास के अलावा; पुलमैत्तु आमो–बुद्धिमत्ता का काम होगा क्या। ९९१

आपने दिग्विजय की ; त्रिपुरान्तक त्रिनेत्र शिवजी द्वारा दत्त चन्द्रहास पायी और तीनों लोकों को जीतकर अपने अधीन कर लिया। अब अक्षकुमार के मारक वानर को, अपना बलप्रयोग करके युद्ध में जाकर मार भी देंगे तो वह केवल बकवास होगा; नहीं तो बुद्धिमत्ता का काम होगा क्या ? । ९९१

आयिऩु मैय नॊय्दि ऩाण्डॊऴिऱ् कुरङ्गै याऩे
एयॆऩु मऴविऱ् पऱ्ऱित् तरुहुवॆ ऩिडरॆऩ् ऱॊऩ्ऱुम्
नीयिऩि युऴक्कऱ् पालै यल्लैयीण् डिरुत्ति यॆऩ्ऩाप्
पोयिऩ ऩमरर् कोवैप् पुहऴॊडु कॊण्डु पोन्दाऩ् 992

आयिऩुम्–तो भी; ऐय–प्रभु; नॊय्तिऩ्–आसानी से; आण् तॊऴिल्–वीर-कर्मी; कुरङ्कै–उस वानर को; याऩे–मैं स्वयं; एय् ऍऩुम् अऴविल्–'एय्' कहने के समय के अन्दर; पऱ्ऱि तरुकुवॆऩ्–पकड़कर ला दूँगा; नी–आप; इऩि–अब; इटर् ऍऩ्ऱु ऒऩ्ऱुम्–संकट कहकर कुछ भी; उऴक्कल् पालै अल्लै–दुःख करते मत रहिए; ईण्टु इरुत्ति–यहीं (सुख) से रहिए; ऍऩ्ऩा–कहकर; अमरर् कोवै–देवराज को; पुकऴ् ओटु–यशसहित; कॊण्टु पोन्ताऩ्–जो पकड़ लाया था; पोयिऩऩ्–(वह इन्द्रजित्) गया। ९९२

तो भी मैं आसानी से उस वीरकर्म वानर को 'एय्' का उच्चारण करने की देरी के अन्दर पकड़ ला दूँगा। अब कुछ चिन्ता करने की आपको कोई आवश्यकता नहीं। यहीं निश्चिन्त रहिए। ऐसा कहकर, इन्द्र को उसके यश के साथ जो क़ैद करके लाया था, वह इन्द्रजित् उठ चला। ९९२

आऴियन् देरु मावु मरक्करु मुरुक्कुञ् जॆङ्गण्
शूऴिवॆङ् गोब मावुन् दुवऩ्ऱिय निरुदर् शेऩै
ऊऴिवॆङ् गडलिऱ् चुऱ्ऱ वॊरुतऩि नडुव णिऩ्ऱु
पाऴिमा मेरु वॊत्ताऩ् वीरत्तिऩ् पऩ्मै तीर्त्ताऩ् 993

आऴि अम् तेरुम्–पहियों के साथ रथ; मावुम्–अश्व; अरक्करुम्–राक्षस; मुरुक्कुम्–शत्रुनाशक; चॆङ्कण्–लाल आँखों और; चूऴि–मुखपट्ट वाले; वॆम् कोप–भयंकर रीति से क्रुद्ध; मावुम्–गज और; तुवऩ्ऱिय–जिसमें भरे थे; निरुतर् चेऩै–वह राक्षस-सेना; ऊऴि वॆम् कटलिल्–प्रलय के भयानक सागर के समान; चुऱ्ऱ–उसे घेरकर गयी; वीरत्तिऩ् पऩ्मै तीर्त्ताऩ्–'वीर' के बहुवचन को जिसने मिटाया था; तऩि नटुवण् निऩ्ऱु–एकाकी मध्य में खड़े रहे; ऒरु पाऴि–एक बहुत बलवान; मा मेरु ऒत्ताऩ्–बड़े पर्वत के समान लगा। ९९३

पहियेदार मनोरथ रथों, अश्वों, राक्षसों और शत्रुघाती, अरुणाक्ष

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुखपट्टालंकृत भयंकर और क्रुद्ध गजों से भरी राक्षस-सेना युगान्त के भयंकर सागर के समान उसको घेरकर गयी। वह वीरता के आश्रय का बहुवचन मिटानेवाला (यानी वीरता का वही एकमात्र आश्रय) इन्द्रजित् समुद्र-मध्य एकाकी स्थित अप्रतिम बड़े मेरु के समान लगा। ९९३

शॅन्ऱऩ ऩॅन्ब मऩ्ऩो तिशैहळो डुलह मॅल्लाम्
वॅन्ऱव ऩिवऩॅन् ऱालुम् वीरत्ते निन्ऱ वीरऩ्
अन्ऱदु कण्ड वाळि यनुमऩै यमरि ऩाऱ्ऱल्
नऩ्ऱॅऩ वुवहै कॊण्डाऩ् यावरु नडुक्क मुऱ्ऱार् 994

चॅन्ऱऩऩ्–जो गया; इवऩ्–यह; तिचैकळोटु–दिशाओं के साथ; उलकम् ऍल्लाम् वॅन्ऱवऩ्–सारे लोकों का जीतनेवाला था; ऍऩ्ऱालुम्–तो भी; वीरत्ते निन्ऱ वीरऩ्–वीरचरित्र-स्थित वीर था, (इसलिए); अतु–(हनुमान का साहस) वह; अऩ्ऱ कण्ट–जिसने उस दिन देखा; वाळि अनुमऩै–जययशस्वी हनुमान को (देखकर); अमरिऩ् आऱ्ऱल् नऩ्ऱ–युद्ध का विक्रम अच्छा है; ऍऩ–ऐसा; उवकै कॊण्टाऩ्–(कहकर) खुश हुआ; यावरुम्–सभी; नटुक्कम् उऱ्ऱार्–काँप उठे। ९९४

इस भाँति जो गया, वह इन्द्रजित् दिशाओं के साथ त्रिलोकविजयी था। तो भी वीरता का जीवन बितानेवाला था, इसलिए उसने हनुमान का साहस देखकर प्रशंसा की कि इसका युद्ध-पराक्रम बड़ा विशिष्ट है। वह बहुत मुदित हुआ। पर सभी लोग भय से काँप उठे। ९९४

इलैहुलाम् बूणि ऩाऩु मिरुम्बिणङ् गुरुदि येऱ्ऱ
अलहिल्वॅम् बडैह डॅऱ्ऱि यळविडऱ् करिय दाहि
मलैहळुङ् गडलुम् याऱुङ् गाऩमुम् बॅऱ्ऱु मऱ्ऱोर्
उलहमे यॊत्त दम्मा पोर्प्पॅरुङ् गळमॅऩ् ऱुऩ्ऩा 995

इलै कुलाम्–पत्रचित्रित; पुणिऩाऩुम्–आभरणधारी (इन्द्रजित्) भी; पॅरुम् पोर् कळम्–वह अतिविशाल समरभूमि; इरुम् पिणम्–बड़े-बड़े शवों; कुरुति–रक्त (के तालाब और नदियाँ); एऱ्ऱ–के द्वारा लाये गये; अलकु इल्–अगणित; वॅम् पटैकळ्–भयंकर हथियार; तॅऱ्ऱि–ठोकर लगाते हैं; अळवु इटऱ्कु–मापने के लिए; अरियतु आकि–कठिन बनकर; मलैकळुम्–पर्वतों और; कटलुम्–सागरों; याऱुम्–और नदियों; कातमुम् पॅऱ्ऱु–और जंगलों से युक्त होकर; मऱ्ऱु ओर् उलकमे ऒत्ततु–अन्य दूसरे भूलोक के समान रही; ऍऩ्ऱु उऩ्ऩा–यह सोचकर। ९९५

इन्द्रजित् ऐसे आभरण पहने हुए था, जिनमें पत्र के आकार की चित्रकारी हुई थी। उसने युद्धभूमि में बड़-बड़े शव देखे; रक्त की नदी देखी। उनसे लाये गये भयंकर अनेक हथियार देखे। और सब बेशुमार थे। तब वह समरभूमि भूलोक के समान ही लगी, जिस पर पर्वत, समुद्र, नदियाँ और कानन भरे पड़े हैं। ९९५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वॆप्पडै हिल्ला नॆञ्जिऱ् चिऱियदोर् विम्मल् कॊण्डान्
अप्पडै वेलै यऩ्ऩ पॆरुमैय राऱ्ऱ लोडुम्
ऒप्पडै हिल्ला रॆल्ला मुलन्दऩर् कुरङ्गु मॊऩ्ऱे
अॆप्पडै कॊण्डु वॆल्व दिरामऩ्वन् दॆदिर्क्कि लॆऩ्ऱान् 996

अप्पु अटै वेलै अऩ्ऩ–जलपूर्ण सागर-सम; पॆरुमैयर–यशस्वी; आऱ्ऱल् ओटुम्–अपने साहस की; ऒप्पु अटैकिल्लार्–उपमा न रखनेवाले; ऎल्लाम्–सभी राक्षस; उलन्ततर्–सूख गये (मरे); कुरङ्कुम् ऒऩ्ऱे–(मारनेवाला) वानर तो एक है; इरामऩ् वऩ्तु–अगर राम आकर; ऎतिर्क्किल्–लड़ेगा तो; ऎप्पटै कॊण्टु–कौन सी सेना लेकर; वॆल्वतु–जीतना है; ऎऩ्ऱान्–कहते हुए; वॆप्पु अटैकिल्ला–अब तक जिस हृदय में ताप नहीं हुआ था; नॆञ्चिल्–उस हृदय में; चिऱियतु–छोटी; ओर् विम्मल्–एक तरस को; कॊण्टान्–स्थान दे दिया (इन्द्रजित् ने)। ९९६

"जलपूर्ण सागर-सम यशस्वी, वीरता में अप्रमेय —ये सब वीर मर गये। मारनेवाला एकाकी वानर है! तब राम ही आकर लड़ेगा तो किस सेना के सहारे हम उसे जीत पायेंगे?" —यह कहा इन्द्रजित् ने। उसके मन में इसके पहले कभी कोई दुःख का अनुभव ही नहीं हुआ था। अब उसके मन में किंचित भय पैदा हुआ। ९९६

कण्णऩा रुयिरै यॊप्पार् कैप्पडैक् करुत्तिऩ् मिक्कार्
ऎण्णलान् दहैय रल्ल रिऱन्दॆदिर् किडन्दार् तम्मै
मण्णुळे नोक्कि नोक्कि वाय्मडित् तुयिर्त्तान् मायाप्
पुण्णुळे कोलिट् टऩ्ऩ माऩत्ताऱ् पुळुङ्गु हिऩ्ऱान् 997

कण् अऩार्–आँखों के समान (प्यारे); उयिरै ऒप्पार्–प्राण-सम; कै पटै–हाथ में हथियार लेकर लड़ने में; करुत्तिऩ् मिक्कार्–अधिक ख़याल रखनेवाले; ऎण्णल् आम् तकैयर्–(वीर) गिनने योग्य रीति के; अल्लर्–नहीं थे; इऱऩ्तु–मरकर; ऎतिर् किटऩ्तार् तम्मै–सामने जो पड़े रहे उनको; मण् उळे–भूमि पर; नोक्कि नोक्कि–देख-देखकर (सर्वत्र देखकर); वाय् मटित्तु–अधर मोड़कर; उयिर्त्तान्–दीर्घ निःश्वास छोड़ते; माया पुण् उळे–ताज़े घाव में; कोल् इट्टु अऩ्ऩ–छड़ी घुसेड़ दी गयी हो जैसे; माऩत्ताल्–अपमान से; पुळुङ्कुकिऩ्ऱान्–शोक-दग्ध होता (है)। ९९७

जो मरे पड़े थे, वे आँखों और प्राणों के समान प्यारे थे और अपने हाथों के हथियारों के साथ युद्ध करने के बहुत उत्साही थे। ऐसे वे अपार संख्या में मरे पड़े थे। इन्द्रजित् ने उन्हें भूमि पर सर्वत्र देखा। उसका मन विचलित हुआ। अधर मोड़कर लम्बी साँसें छोड़ने लगा। न भरनेवाले व्रण में छड़ी घुस गयी हो जैसे वह अपमानाहत हो तप्त हुआ। ९९७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कानिडै यत्तैक् कुऱ्ऱ कुऱ्ऱमुङ् गरत्तार् पाडुम्
यानुडै यॅम्बि वीन्द विडुक्कणुम् बिऱवु मॅल्लाम्
मानिड रिरुव रानुम् वानर मॉन्ऱि नानुम्
आनिडत् तुळवॅन् वीर मळहिऱ्ऱे यम्म वॅन्ऱान् 998

कान् इटै-(दण्डक-) अरण्य में; अत्तैक्कु उऱ्ऱ-मेरी बुआ का जो हुआ वह; कुऱ्ऱमुम्-हीनता; करत्तार् पाटुम्-और खर आदि का मरण; यान् उटै ॲम्पि-मेरे छोटे भाई के; वीन्त इटुक्कणुम्-मरने का दुःख; पिऱवुम् ॲल्लाम्-अन्य सभी; मानिटर् इरुवरानुम्-दो मनुष्यों और; वानरम् ऑन्ऱिनालुम्-एक वानर द्वारा; आन इटत्तु-जब हुए तो; ॲन् उळ वीरम्-मेरी वीरता; अळकिऱ्ऱे अम्म-बड़ी सुन्दर है, मैया; ॲन्ऱान्-(आहत स्वर में) कहा (इन्द्रजित ने)। ९९८

दण्डक वन में मेरी बुआ के अंग कटे। खर आदि मरे। इधर मेरा छोटा भाई मरा। यह सारा अपमान का और दुःखदायी काम दो मनुष्यों और एक वानर के हाथ हुआ। तो, मैया! मेरी वीरता भी खूब प्रशंसनीय रही! । ९९८

नीर्प्पुण्ड वुदिर वारि नॅडुन्दिरैप् पुणरि तोन्ऱ
ईर्प्पुण्डऱ् करिय वाय पिणक्कुव डिडऱिच् चॅल्वान्
तेय्प्पुण्ड तम्बि याक्कै शिवप्पुण्ड कण्ग डीयिल्
काय्प्पुण्ड शॅम्बिऱ् ऱोन्ऱक् करुप्पुण्ड मनत्तन् कण्डान् 999

नीर्प्पु उण्ट-द्रवमान; उतिर वारि-रक्त जल; नॅटुम् तिरै-बड़ी-बड़ी तरंगों से युक्त; पुणरि तोन्ऱ-सागर के सामने दिखते; ईर्प्पु उण्टऱ्क्कु अरिय आय-छीनने के लिए कठिन; पिण कुवटु-शव-पर्वतों से; इटऱि चॅल्वान्-ठोकर खाते हुए जानेवाला; तेय्प्पु उण्ट-पिसे हुए; तम्पि आक्कै-छोटे भाई के शरीर को; चिवप्पु उण्ट कण्कळ्-लाली भरी आँखें; तीयिल्-आग में; काय्प्पु उण्ट-तपे हुए; चॅम्पिल् तोन्ऱ-ताँबे के समान दिखें, ऐसा; करुप्पु उण्ट-(और) कालिमायुक्त (क्रुद्ध); मनत्तन्-मन वाले ने; कण्टान्-देखा। ९९९

इन्द्रजित् के सामने बहनेवाले रक्त का, बड़ी-बड़ी लहरों वाला समुद्र दिखायी दिया। उसका रथ उस रक्त-नदी से तिराये न जा सकनेवाले शवों से टकराता हुआ आगे बढ़ रहा था। तब उसने अपने भाई के शव को देखा, जो खूब पिसकर कर्दम बन गया था। उसकी लाल आँखें तप्त ताँबे के समान दिखीं। उसका मन कोप से काला हो गया। ९९९

तारुहन् कुरुदि यन्न कुरुदियिऱ् ऱनिमाच् चीयम्
कूरुहिर् किळैत्त कॉऱ्ऱक् कनहन्मॅय्क् कुळम्बिऱ् ऱोन्ऱत्
तेरुहक् कैयिन् वीरच् चिलैयुह वयिरच् चॅङ्गण्
नीरुहक् कुरुदि शिन्द नॅरुप्पुह वुयिरत्तु निन्ऱान् 1000

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तारुकन् कुरुति अऩ्ऩ–दारुकासुर के रक्त के समान; कुरुतियिल्–रक्तप्रवाह में; तऩि मा चीयम्–अद्वितीय बड़े (नर-) सिंह के; कूर् उकिर् किळैत्त–तेज़ नाखूनों से चीरकर निकाले गये; कॊऱ्ऱ कऩकऩ्–विजयी कनक (-कश्यप) के; मॆय् कुऴम्पिल्–शरीर के कर्दम में ढेर के समान; तोऩ्ऱ–दिखा (अक्ष) तो; तेर् उक–रथ को डगमगाने देते हुए; कैयिऩ् वीर चिलै–हाथ के वीरधनु को; उक–गिराते हुए; वयिर चॆम् कण्–द्वेषपूर्ण लाल आँखों से; नीर् उक–जल बरसाते हुए; कुरुति चिऩ्त–रक्त बहाते हुए; नॆरुप्पु उक–आग उगलते हुए; उयिर्त्तु निऩ्ऱाऩ्–लम्बे श्वास निकालता हुआ खड़ा रहा। १०००

(कालिकादेवी द्वारा निहत) दारुक राक्षस के रक्त के समान रक्तप्रवाह में अक्षकुमार उस कनककश्यप के समान पड़ा हुआ था, जिसके शरीर को अद्वितीय नृसिंह के तेज़ नाखूनों ने नोच-चीरकर बिल्कुल कर्दम बना दिया था। यह देखकर इन्द्रजित् की स्थिति ऐसी हो गयी कि उसका रथ डगमगा गया। उसके हाथ से धनु छूट गया। द्वेषपूर्ण लाल आँखों से अश्रु के साथ रक्त और आग भी निकली। लम्बी साँसें छोड़ते हुए वह खड़ा रह गया। १०००

वॆव्विलै यियिल्वे लुऩ्दै वॆम्मैयैक् करुदि यावि
वव्वुदल् कूऱ्ऱु माऱ्ऱा माऱुमा ऱुलहिऩ् वाऴ्वार्
अव्वुल हत्तु ळेरे लञ्जुव रॊळिक्क वैया
ऍव्वुल हत्तै युऱ्ऱा यॆम्मैनीत् तॆळिदि ऩॆऩ्दाय् 1001

ऍऩ्ताय्–तात; वॆम् इलै–भयंकर और पत्राकार सिर वाले; अयिल् वेल्–तीक्ष्ण भाले के; उऩ्तै–(धारण करनेवाले) तुम्हारे पिता के; वॆम्मैयै करुति–क्रोध को सोचकर; कूऱ्ऱम्–मृत्यु भी; आवि वव्वुतल्–तुम्हारे प्राण हर; आऱ्ऱा–नहीं सकती; माऱु माऱु उलकिऩ्–विविध लोकों में; वाऴ्वार्–रहनेवाले; अ उलकत्तु–उस यमलोक में; उळेर् एल्–रहें तो; ऒळिक्क–तुम्हें वहाँ छिपाये रखने से; अञ्चुवर्–डरेंगे; ऐया–बाबा; ऍम्मै–हमें; ऍळितिऩ् नीत्तु–आसानी से छोड़कर; ऍ उलकत्तै–किस लोक में; उऱ्ऱाय्–पहुँचे। १००१

मेरे तात ! अतिक्रूर और पत्राकार सिर वाले भालाधारी तुम्हारे पिता के कोप का विचार करके मृत्यु में भी तुम्हें ग्रस लेने की शक्ति नहीं। विविध लोकों के वासी भी अपने-अपने लोक में हों, तो वे तुम्हें वहाँ छिपाये रखने से डरेंगे। बाबा ! हमें आसानी से छोड़कर किस लोक में पहुँच गये ? । १००१

आऱ्ऱल ऩाहि यऩ्बा लऱिवऴिऩ् दयरुम् वेलै
शीऱ्ऱमॆऩ् ऱॊऩ्ऱु ताऩे मेऩिमिर् शॆलविऱ् ऱाहित्
तोऱ्ऱिय तुऩ्ब नोयै युळ्ळुऱत् तुरन्द दम्मा
एऱ्ऱञ्जा लाणिक् काणि यॆदिर्शॆलक् कडाय दॆऩ्ऩ 1002

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आऱ्ऱलन् आकि–(दुःख) न सह सककर; अऱिवु अऴिन्तु–बुद्धिनाश होकर; अन्पाल्–प्रेम से; अयरुम् वेलै–जब थकित हुआ तब; चीऱ्ऱम् ऍऩ्ऱु ऑऩ्ऱु–कोप नाम के उस भाव ने; ताऩे–स्वयं; मेल् निमिर्–उमग उठ; चॆलविऱ्ऱु आकि–गतिशील बनकर; एऱ्ऱम् चाल् आणिक्कु–खूब अन्दर घुसी कील को; ऍतिर् चॆल–पीछे चलाने; आणि कटायतु ऍऩ्ऩ–और एक कील मारी गयी जैसे; तोऱ्ऱिय तुऩ्प नोयै–(मन में) उठे दुःख-रोग को; उळ् उऱ–अन्दर से; तुरन्ततु–निकाला। १००२

इन्द्रजित् अपने भाई की मृत्यु-जनित दुःख सह नहीं सका। बुद्धि नष्ट हो गयी। प्रेम से अभिभूत होकर वह थकित हो रहा था। तब कोप उठा। उसने, ऊपर रखकर पीटने पर जैसे एक कील अन्दर रहनेवाली कील को बाहर निकाल देती है वैसे ही, दुःख के रोग को कोप द्वारा अन्दर से बाहर निकाल दिया। १००२

ईण्डिवै निहऴ्वुऴि यिरवि तेरॆऩ्ऩत्, तूण्डुऱु तेरिऩ्मेऱ् ऱोऩ्ऱुऩ् दोऩ्ऱलै
मूण्डुमुप् पुरञ्जुड मुडुहु मीशऩिऩ्, आण्डहै वऩैहऴ् लनुम नोक्किऩान् 1003

ईण्टु–यहाँ; इवै–यह सब; निकऴ्वु उऴि–जब होता रहा तब; इरवि तेर् ऍऩ्ऩ–रवि और उसके रथ के समान; तूण्टु उऱु–चलाये जा रहे; तेरिऩ् मेल्–रथ पर; तोऩ्ऱुम् तोऩ्ऱलै–विद्यमान राजकुमार को; मूण्टु–कोपाक्रान्त होकर; मु पुरम् चुट–त्रिपुर जलाने हेतु; मुट्कुम्–शीघ्र जानेवाले; ईचऩिऩ्–ईश्वर के समान; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; वऩै कऴल्–पहनी हुई पायल वाले; अनुमऩ्–हनुमान ने; नोक्किऩान्–देखा। १००३

जब इन्द्रजित् की तरफ़ से यह हो रहा था, तब पायलधारी हनुमान ने, जो त्रिपुरान्त करने के लिए उठकर शीघ्र जानेवाले परमेश्वर के समान था, रवि और उसके रथ के समान, चलायमान रथ पर इन्द्रजित् को आता हुआ देखा। १००३

वॆऩ्ऱे ऩिदऩ्मुऩ् शिलवीररै यॆऩ्ऩुम् मॆय्म्मै
अऩ्ऱे मुडुहिक् कडिदॆय्दि यऴैत्त दम्मा
ऑऩ्ऱे यिऩिवॆल् लुदऱोऱ्ऱ लडुप्प दुळ्ळ
दिऩ्ऱे शमैयुम् मिवऩिन्दिर शित्तु मॆऩ्बाऩ् 1004

इतऩ् मुऩ्–इसके पहले; चिल वीररै–कुछ वीरों को; वॆऩ्ऱेऩ्–(जो) मैंने जीता; ऍऩ्ऩुम् मॆय्म्मै–वह सत्य; मुटुकि–जल्दी जाकर; कटितु ऍय्ति अऴैत्ततु–शीघ्र पहुँचने बुला लाया; अऩ्ऱे–न; इऩि–अब; वॆल्लुतल्–जीतना; तोऱ्ऱल्–हारना; ऑऩ्ऱे–इनमें एक ही; अटुप्पतु उळ्ळतु–मिलनेवाला है; इऩ्ऱे चमैयुम्–वह आज ही होगा; इवऩ्–यही; इऩ्ऩिरचित्तुम् ऍऩ्पाऩ्–इन्द्रजित् नाम का होना चाहिए; (अम्मा–मैया)। १००४

मैंने इसके पहले कुछ वीरों को जीता था। यह सत्य तुरन्त इनको

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बहुत शीघ्र युद्ध में बुला लाया न ? अब सचमुच जीतना या हारना —इनमें एक ही बचा है। मैं समझता हूँ कि यह इन्द्रजित् ही है। १००४

कट्टे रुनरुङ्गमऴ् कण्णियिक् काळै यॆन्गैप्
पट्टा लदुवेयव् विरावणन् पाडु माहुम्
कॆट्टे मॆन्नॆण्णियक् केडरु कर्पि ऩाळै
विट्टे हुवदन्रि यरक्करुम् वॆम्मै तीर्वार् 1005

कट्टु एरु–सुगठित; कमऴ् नऱुम् कण्णि–विलसित सुगन्धयुक्त सिर की पुष्पमाला से अलंकृत; इ काळै–यह ऋषभ (इन्द्रजित्); ऎन् कै—मेरे हाथों; पट्टाल्–मरेगा तो; अतुवे–वही; अ इरावणन् पाटुम्–उस रावण की मृत्यु; आकुम्–होगी; अरक्करुम्–राक्षस भी; कॆट्टेम् ऎन्ऩ–हम मर गये, यह; ऎण्णि–समझकर; अ केटु अऱु–उस अनिंद्य; कर्पिऩाळै–पतिव्रता देवी को; विट्टु एकुवतु अऩ्रि–छोड़ जाने के अलावा; वॆम्मै तीर्वार्—शत्रुता भी त्याग देंगे। १००५

इसका शरीर सुगठित है। केश विलासशील सुगन्धि से युक्त पुष्प-माला से अलंकृत है। अगर यह ऋषभ मेरे हाथों मर जायगा तो वही रावण की मृत्यु (का वाइस) हो जायगा। राक्षस भी 'अब हम नाश हो गये' —समझकर अनिंद्य पतिव्रता देवी को श्रीराम के पास छोड़ देंगे। और शत्रुता भी त्याग देंगे। १००५

ऒन्ऱो विदऩान्वरु मूदिय मॊण्मै याऩैक्
कॊन्ऱे ऩॆऩिऩिन्दिर ऩुन्दुयर्क् कोळु नीङ्गुम्
इन्ऱे कुडिहॆट्ट दरक्क रिलङ्गै याऩे
वॆन्ऱे ऩविरावणऩ् ऱऩ्ऩैयुम् वेरॊ डॆन्ऱान् 1006

इतऩाल् वरुम्–इससे प्राप्य; ऊतियम् ऒन्ऱो–लाभ एक ही है क्या; ऒण्मैयाऩै–यशस्वी इसको; कॊन्ऱेऩ् ऎऩिऩ्–मारूँगा तो; इन्तिरऩुम्–इन्द्र भी; तुयर् कोळुम्–दुःख करना; नीङ्कुम्–छोड़ देगा; इन्ऱे–आज ही; इलङ्कै–लंका और; अरक्कर्–राक्षसों का; कुटि कॆट्टतु–जीवन नाश हो जायगा; याऩे–मैं; अ इरावणऩ् तऩ्ऩैयुम्–उस रावण को भी; वेरॊटु वॆन्ऱेऩ्–जड़ (पूर्ण रूप) से जीतनेवाला बन जाऊँगा; ऎऩ्ऱान्–कहा। १००६

इन्द्रजित् को मारने से होनेवाला लाभ केवल एक ही है क्या ? इस यशस्वी को मार दूँ, तो इन्द्र का भी दुःखग्रस्त रहना दूर होगा। आज ही लंका और राक्षसों का गृहनाश हो जायगा। रावण को भी जीतकर जड़ से काटनेवाला बन जाऊँगा मैं। १००६

अक्कालै यरक्करु माऩैयुन् देरु मावुम्
मुक्का लुलहम्मॊरु मून्ऱैयुम् वॆन्ऱु मुऱ्ऱिप्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुक्का तिन्मुन्बुक् कुयर्पूशल् पॅरुक्कुम् वेलै
मिक्कानुम् वॅहुण्डोर् मरामरङ् गॉण्डु मिक्कान् 1007

अ कालै–तब; मुक्काल्–तीन बार; उलकम् ऑरु मून्ड्रॅयुम्–तीनों लोकों को; वॅन्ड्र–जीतकर; मुड्रि–पूरा करके; पुक्कातिन् मुन्–लंका में प्रविष्ट जिसने किया था, उसके आगे; अरक्करुम्–राक्षसवीर; आतॅयुम्–गज; तेरुम्–रथसेना; मावुम्–और अश्वसेना; पुक्कु–घुसकर; उयर् पूचल्–उच्च शोर; पॅरुक्कुम् वेलै–मचाने लगी तब; मिक्कानुम्–श्रेष्ठ हनुमान भी; वॅकुण्टु–कोप करके; ओर् मरामरम् कॉण्टु–एक सालवृक्ष लेकर; मिक्कान्–प्रवृद्ध हो गया। १००७

तब जो तीन बार तीनों लोकों को जीत चुककर लंका में प्रविष्ट हुआ था, उस इन्द्रजित् के सामने राक्षस वीरों, गजों, रथों और अश्वों की चतुरंगिनी सेना ने प्रवेश करके उच्च युद्धघोष किया। श्रेष्ठ हनुमान ने भी एक सालवृक्ष को उखाड़ लेकर अपना विराट् रूप धर लिया। १००७

उदैयुण् डनयानै युरुण्डन यानै यॉन्ड्रो
मिदियुण् डनयानै विळुन्दन यानै मेन्मेल्
पुदैयुण् डनयानै पुरण्डन यानै पोराल्
वदैयुण् डनयानै मरिन्दन यानै मण्मेल् 1008

यानै उतै उण्टन–गज लातें खा गये; यानै उरुण्टन–गज लुढ़क गये; ऑन्ड्र ओ–केवल एक ही क्या; यानै मिति उण्टन–गज रौंद गये; यानै विळुन्तन–गज गिरे; यानै–गज; मेल् मेल्–एक के ऊपर एक; पुतै उण्टन–धँस गये; यानै पुरण्टन–गज लोटे; यानै–गज; पोराल्–युद्ध में; वतै उण्टन–मारे गये; यानै–गज; मण्मेल् मरिन्तन–भूमि पर चित गिर गये। १००८

(सेना का हर अंग विध्वस्त हुआ, किस प्रकार ? सो देखिए।) गज लात खाकर, लुढ़ककर मरे। वही ? नहीं। गज पैरों से रौंदे जाकर, नीचे गिरकर, एक के ऊपर एक गिरकर दबाये जाने से, लोटते हुए, युद्ध में मारे जाकर और भूमि पर चित गिरकर, इस भाँति विविध प्रकार से मर गये। १००८

मुडिन्द तेर्क्कुल मुरिन्दन तेर्क्कुल मुरणिर्
ड्रिडिन्द तेर्क्कुल मिड्रन तेर्क्कुल मच्चिर्
ड्रॉडिन्द तेर्क्कुल मुक्कन तेर्क्कुल नॅक्कुप्
पडिन्द तेर्क्कुलम् बरिन्दन तेर्क्कुलम् बडियिल् 1009

तेर्क्कुलम् मुटिन्त–रथवृन्द मिटे; तेर्क्कुलम् मुरिन्तन–रथकुल टूटे; तेर्क्कुलम्–रथकुल; मुरण् इड्रु–बल खोकर; इटिन्त–ढकेले जाकर नष्ट हुए; तेर्क्कुलम्–रथवृन्द; इड्रन–खण्ड-खण्ड हुए; तेर्क्कुलम्–रथदल; अच्चु इड्रु–धुरी टूटने से; ऑटिन्त–टूटे; तेर्क्कुलम् उक्कन–रथवर्ग चूर होकर छितर गये;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेर्क्कुलम्–रथदल; नॆक्कु–टकराकर; पटिन्त–झुक गये; तेर्क्कुलम्–रथवृन्द; पटियिल्–भूमि में; पऱिन्तत–धँस गये। १००९

(रथ-सेना के) कुछ पूर्ण रूप से मिटे। कुछ खण्ड-खण्ड हुए। कुछ रथवृन्द कमज़ोर होकर ठोकर खाकर मिटे। कुछ छिन्न-भिन्न हुए; कुछ रथों की धुरियाँ टूट गयीं और वे नष्ट हुए। कुछ रथसमूह चूर होकर गिर गये। कुछ मिलकर टक्कर खाकर गिरे। कुछ रथवृन्द भूमि में धँस गये। १००९

शिरन्नॆ रिन्दवुङ् गण्मणि शिदैन्दवुञ् जॆऱिताळ्
तरन्नॆ रिन्दवु मुदुहिऱच् चाय्न्दवुन् दार्पूण्
उरन्नॆ रिन्दवु मुदिरङ्ग ळुमिऴ्न्दवु मॊळिर्पॊऱ्
कुरन्नॆ रिन्दवुङ् गॊडुङ्गऴुत् तॊडिन्दवुङ् गुदिरै 1010

कुतिरै–अश्व; चिरम् नॆरिन्तवुम्–जिनके सिर कुचल गये; कण्मणि चितैन्तवुम्–जिनकी आँखों की पुतलियाँ नाश हुईं और; चॆऱि ताळ्–मिलकर पैर; तरम् नॆरिन्तवुम्–दल के दल पिस गये; मुतुकु इऱ–(जो) पीठ के टूटने से; चाय्न्तवुम्–गिर गये और; तार् पूण्–(जिनके) हारालंकृत; उरम् नॆरिन्तवुम्–वक्ष पिस गये; उतिरङ्कळ्–(और जो) रक्त; उमिऴ्न्तवुम्–रक्त वमन करने लगे; ऒळिर् पॊऱ्–(और जिनके) प्रकाशमय स्वर्ण-भूषित; कुरम् नॆरिन्तवुम्–खुर टूटे; कॊटुम् कऴुत्तु–(और जिनके) वक्र गले; ऒटिन्तवुम्–टूटे (ऐसे हो गये अश्व)। १०१०

(अश्वों की स्थिति—) कुछ अश्वों के सिर फूट गये। कुछ की आँखों की पुतलियाँ फूट गयीं। कुछ के सबल पैरों के वृन्द फूटे। कुछ की पीठें टूटीं और वे गिर गये। कुछ के गुरियोंदार हारालंकृत वक्ष कुचले। कुछ ने रक्त वमन किया। कुछ के स्वर्णालंकृत प्रकाशमय खुर पिस गये। कुछ के स्थूल गले टूट गये। १०१०

पिडियुण् डार्हळुम् पिळप्पुण् डार्हळुम् बॆरुन्दोळ्
ऒडियुण् डार्हळुन् दलैयुडैन् दार्हळु मुरुवक्
कडियुण् डार्हळुङ् गऴुत्तिऴन् दार्हळुम् मरत्ताल्
अडियुण् डार्हळु मच्चमुण् डार्हळु मरक्कर् 1011

अरक्कर्–राक्षस वीर; पिटि उण्टार्कळुम्–जो हनुमान से ग्रस्त हुए; पिळप्पु उण्टार्कळुम्–चिर गये; पॆरुम् तोळ्–बड़े कन्धे (जिनके); ऒटि उण्टार्कळुम्–तोड़े गये; तलै उटैन्तार्कळुम्–(जिनके) सिर फूट गये; उरुव–शरीर भर में; कटि उण्टार्कळुम्–जो काटे गये; कऴुत्तु इऴन्तार्कळुम्–जो कण्ठों से हीन हो गये; मरत्ताल्–सालवृक्ष से; अटि उण्टार्कळुम्–जो पिटे और; अच्चम् उण्टार्कळुम्–वे, जिन्होंने भय खाया (ऐसे बन गये)। १०११

(पदाति के राक्षस वीर कैसे मिटे?) कसकर ग्रस्त, फूटे शरीर,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

टूटे कन्धे, फटे सिर, काट खाये गये, कण्ठहीन, सालवृक्ष से खूब पिटे, और भयभीत —इस भाँति वे राक्षस वीर मटियामेट हो गये। १०११

वट्ट वॅञ्जिलै योट्टिय वाळियुम् वयवर्
विट्ट वॅन्दिऱ्ऱ् पडैहळुम् वीरन्मेल्
शुट्ट मॅल्लिरुम् बडैहलैच् चुडुहला
पट्ट पट्टत्त तिशैदॊऱुम् बॊऱियॊडुम् बरन्द 1012

वयवर्–वीरों के; वट्ट–गोलाकार झुके गये; वॅम् चिलै–भयंकर धनु से; ओट्टिय–चलाये गये; वाळियुम्–बाण और; विट्ट–फेंके गये; वॅम् तिऱल्–क्रूर शक्ति के; पटैकळुम्–हथियार; वीरन् मेल् विळुन्त–महावीर पर गिरे; चुट्ट–तप्त; मॅल् इरुम्पु–निर्बल लोहा; अटै कलै–निहाई को; चुटुकलातु पोल–जला नहीं पाता जैसे; पट्ट पट्टत्त–जो लगे वे सारे; तिचै तॊऱुम्–दिशा-दिशा में; पॊऱि ऒटुम्–अंगारे छोड़ते हुए; परन्त–फैले। १०१२

राक्षसों के द्वारा धनु को खूब वर्तुल झुकाकर तीव्रगति से प्रेरित बाण और प्रेषित ग़ज़ब की शक्ति के हथियार महावीर पर जाकर जो गिरे वे, स्थूणे को जैसे तप्त लोहा कुछ नहीं कर पाता वैसे ही, सब के सब, नाना दिशाओं में अंगारे बिखेरते हुए जाकर बिखर गये। १०१२

शिहैयॅ ळुञ्जुडर् वाळिह ळिराक्कदर् शेनै
मिहैयॅ ळुञ्जिनत् तनुमन्मेल् विट्टत्त वॅन्दु
पुहैयॅ ळुन्दत्त वॅरिन्दत्त करिन्दत्त पोद
नहैयॅ ळुन्दत्त कुळिर्न्दत्त वानुळोर् नाट्टम् 1013

इराक्कतर् चेनै–राक्षसों की सेना द्वारा; मिकै ऎळुम्–बहुत उमड़नेवाले; चिनत्तु–क्रोध के साथ; अनुमन् मेल् विट्टत्त–हनुमान पर प्रेषित; चिकै ऎळुम्–ज्वाला निकालनेवाले; चुटर् वाळिकळ्–तेजोमय बाण; वॅन्तु–(हनुमान के शरीर पर लगते ही) झुलसकर; पुकै ऎळुन्तत्त–गुँगुआते हुए; ऎरिन्तत्त–जले और; करिन्तत्त पोत–राख बने; वान् उळोर् नाट्टम्–व्योमवासियों की दृष्टि; नकै ऎळुन्तत्त–वर्धित आनन्द के साथ; कुळिर्न्तत्त–शीतल बनी। १०१३

राक्षसों ने बहुत क्रुद्ध होकर ज्वाला निकालते हुए चलनेवाले तेजोमय बाण छोड़े। वे हनुमान के शरीर पर लगकर उसकी गर्मी में झुलस गये। गुँगुआते हुए जले और राख बन गये। यह देखकर देवों की आँखें आनन्द-शीतल हो गयीं। १०१३

तेरुम् यानैयुम् बुरवियु मरक्करुञ् जिन्दिप्
पारिन् वीळ्दलुन् दानॊरु तनिनिन्ऱ् पणैत्तोळ्
वीर वीरनु मुरुवलुम् वॅहुळियुम् वीङ्ग
वारुम् वारुमॅन् ऱळैक्कित्ऱ् वनुमन्मेल् वन्दान् 1014

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तेरुम्–रथ और; यातैयुम् पुरवियुम्–गज और अश्व; अरक्करुम्–राक्षस; चिन्ति–अस्त-व्यस्त होकर; पारिन् वीऴ्तलुम्–भूमि पर गिर गये तो; तान् ऒरु तत्ति निन्ऱ–आप जो अकेले खड़ा रहा; पणै तोळ्–स्थूल कन्धों वाला; वीर वीरत्तुम्–वीरों में (श्रेष्ठ) वीर इन्द्रजित्; मुऱुवलुम्–मन्दहास और; वॆंकुळियुम् वीङ्क–कोप के बढ़ते; वारुम् वारुम्–आओ-आओ; ऎन्ऱु–कहकर; अऴैक्किन्ऱ–बुलानेवाले; अनुमन् मेल् वन्तान्–हनुमान पर आक्रमण करने आया। १०१४

रथों, गजों, अश्वों और पैदल वीरों की सेनाएँ तितर-बितर होकर भूमि पर गिर गयीं। अकेला खड़ा रहा स्थूल कन्धों वाला वीरों में (श्रेष्ठ) वीर इन्द्रजित्। उसे हँसी भी अधिक हुई और गुस्सा भी बढ़ा। उधर हनुमान 'आओ', 'आओ' कहकर उत्साह के साथ वीरों को लड़ने को आमन्त्रण दे रहा था। इन्द्रजित् उस हनुमान पर चढ़ आया। १०१४

पुरन्द रन्ऱलै पॊदिरॆऱिन् दिडप्पुयल् वाऩिल्
परन्द पल्लुरु मेऱ्ऱिऩम् वॆऱित्तुयिर् पदैप्प
निरन्द रम्बुवि मुऴुवदुञ् जुमन्द नीडुरहन्
शिरन्दु ळङ्गिड वरक्कन्वॆञ् जिलैयैना णॆऱिन्दान् 1015

पुरन्तरन् तलै–पुरन्दर के सिर के; पॊतिर् ऎऱिन्तिट–कम्पन के बढ़ते; वाऩिल् परन्त–आकाश में व्याप्त; पुयल्–मेघों में; पल् उरुम् एऱ्ऱ इऩम्–अनेक अशनियों का वृन्द; वॆऱित्तु–भय से तनकर; उयिर् पतैप्प–प्राण लड़खड़ाये; निरन्तरम्–निरन्तर; पुवि मुऴुवतुम् चुमन्त–सारी भूमि को ढोनेवाले; नीटु उरकन्–लम्बे आदिशेष के; चिरम् तुळङ्किट–सिर काँपे; अरक्कन्–राक्षस ने; वॆम् चिलैयै–कठोर धनु की; नाण् ऎऱिन्तान्–शिञ्जिनी को टंकृत किया। १०१५

उसने अपने भयंकर धनु की ताँत को टंकृत किया, जिसके घोर नाद से इन्द्र का सिर काँप गया; आकाश पर मेघों में रहे वज्र भय खाकर तन गये और उनके प्राण काँप उठे; और निरन्तर सारी भूमि को सिरों पर ढोते रहनेवाले आदिशेष के सहस्र सिर भी काँपे। १०१५

आण्ड नायहन् रूदन्तु मयन्तुडै यण्डम्
कीण्ड दामॆऩक् किरियुह नॆडुनिलङ् गिऴिय
नीण्ड मादिरम् वॆडिपड ववऩडुञ् जिलैयिल्
पूण्ड नाणिऱत् तन्ऩॆडुन् दोळ्पुडैत् तार्त्तान् 1016

आण्ट–लोकपालक; नायकन्–जगन्नाथ श्रीराम के; तूतन्तुम्–दूत ने भी; अयन्तुटै अण्टम्–अज का अण्ड; कीण्टतु आम्–फट गया; ऎऩ–जैसे; किरि उक–गिरियाँ चूर हो बिखर जाएँ, ऐसा; नॆटु निलम्–विशाल भूमि; किऴिय–चिर गयी; नीण्ट मातिरम्–लम्बी दिशाएँ; वॆटि पट–फूट जाएँ, ऐसा; अवन् नॆटुम् चिलैयिल्–उसके दीर्घ धनु की; पूण्ट–बँधी; नाण् इऱ–डोरी को काटते हुए; तन् नॆटुम् तोळ्–अपने बड़े कन्धों को; पुटैत्तु–ठोंककर; आर्त्तान्–ध्वनि निकाली। १०१६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लोकपालक जगन्नायक श्रीराम के दूत ने भी अपने कन्धे ठोंके और सिंहनाद किया, जिससे अजदेव का अण्ड भी फूटा; गिरियाँ चूर होकर छितरीं; भूमि पर और लम्बी दिशाओं में दरारें पड़ गयीं और स्वयं इन्द्रजित् के दीर्घ धनु में बँधी डोरी भी कट गयी। १०१६

नल्लै नल्लैयिऱ् ऱालत्तु निन्नॉक्कु नल्लार्
इल्लै यिल्लैया लॅऱुळ्वलिक् कियारॊडु मिहल
वल्लै वल्लैयिन् ऱाहुनी पडैत्तुळ वाणाट्
कॅल्लै यॅल्लैयॅन् ऱिन्दिर शित्तुवु मिशैत्तान् 1017

नल्लै नल्लै–समर्थ हो समर्थ; इ ऱालत्तु–इस भूमि में; निन् ऑक्कुम्–तुम्हारी समानता करनेवाला; नल्लार्–समर्थ; इल्लै–नहीं; इल्लै–नहीं; ऍऱुळ् वलिक्कु–बड़ी शक्ति को (देखा जाय तो); यार् ओटुम्–किसी के साथ भी; इकल वल्लै–लड़ सकते हो; नी पटैत्तु उळ–तुमको मिली; वाळ् नाट्कु ऍल्लै–आयु की सीमा का; ऍल्लै–(ही) अन्त; इन्ऱु आकुम्–आज होगा; ऍऩ्ऱु–कहकर; इन्तिरचित्तु उम् इचैत्तान्–इन्द्रजित् ने भी कहा। १०१७

तब इन्द्रजित् ने व्यंग्य किया। तुम बड़े कुशल हो, कुशल। इस संसार में तुम्हारे टक्कर का कोई नहीं। तुम्हारे बहुत बल को देखा जाय तो तुम किसी से भी लड़ सकते हो। पर आज का दिन तुम्हारी आयु का अन्तिम दिन हो जायगा! । १०१७

नाळुक् कॅल्लैयु निरुदरा युलहत्तै नलियुम्
कोळुक् कॅल्लैयुङ् गॊडुन्दॊळिऱ् कॅल्लैयुङ् गॊडियीर्
वाळुक् कॅल्लैयुम् वन्दन वहैकॊण्डु वन्देन्
तोळुक् कॅल्लैयॊन् ऱिल्लैयॅन् ऱनुमनुऱ् जॊन्नान् 1018

कॊटियीर्–क्रूर (राक्षस); नाळुक्कु ऍल्लैयुम्–(तुम्हारी) आयु का अन्त और; निरुतर् आय्–राक्षस बनकर; उलकत्तै नलियुम्–संसार को त्रस्त करने के; कोळुक्कु ऍल्लैयुम्–तुम्हारे सिद्धान्तों का अन्त और; कॊटुम् तॊळिऱ्कु ऍल्लैयुम्–क्रूर कर्मों का अन्त; वाळुक्कु ऍल्लैयुम्–तलवार का अन्त; वन्तन–सब आ गये; वकै कॊण्टु वन्तेन्–उपाय लाया हूँ; तोळुक्कु ऍल्लै–मेरे भुजबल की सीमा; ऒऩ्ऱु इल्लै–कुछ नहीं है; ऍऩ्ऱु–ऐसा; अनुमनुम्–हनुमान ने भी; चॊन्नान्–कहा। १०१८

हनुमान ने भी कहा कि क्रूर राक्षसो! तुम लोगों की आयु, राक्षसों के रूप में लोक को त्रस्त करने का तुम्हारा सिद्धान्त, क्रूर कार्यक्रम, तलवार आदि हथियार —इन सबका अन्त आ गया। उपाय लाया हूँ। मेरे भुजबल की कोई सीमा नहीं रहती। १०१८

इच्चि रत्तैयैत् तॊलैप्पॅऩॅन् ऱिन्दिरन् पहैञन्
वच्चि रत्तिनम् वलियन वयिरवान् कणैहळ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पच्चि रत्तम्वन् दॊऴुहिड वानवर् पदैप्प
अच्चि रत्तिनु मार्बिनु मऴुत्तलु मनुमन् 1019

इन्तिरन् पकैञन्–इन्द्रशत्रु; इ चिरत्तैयै–यह विश्वास ही; तॊलैप्पॆन्–नाश करूँगा; वच्चिरत्तितुम्–वज्र से भी; वलियत–कठोर; वयिर–सशक्त; वान् कणैकळ्–श्रेष्ठ बाणों को; पचुमै इरत्तम्–ताज़ा खून; वन्तु ऒऴुकिट–आकर बहे ऐसा; वानवर् पतैप्प–देवगण त्रस्त हो जाएँ ऐसा; अ चिरत्तितुम्–उस सिर पर और; मार्पितुम्–वक्ष में; अऴुत्तलुम्–गड़ाने से; अनुमन्–हनुमान। १०१९

इन्द्रशत्रु ने कहा कि यह है तुम्हारा विश्वास ! इसको मिटा दूँगा। कहकर उसने वज्र से भी कठोर और बलवान श्रेष्ठ बाणों को प्रेरित किया; जिनके हनुमान के सिर और वक्ष पर लगने से ताज़ा ख़ून बह निकला और व्योमवासी उद्विग्न हो गये। १०१९

कुऱिदु वानॆन्ऱु कुऱैन्दिलन् कॊडुञ्जिनङ् गॊण्डान्
मऱियुम् वॆण्डिर माहड लुलहॆलाम् वऴङ्गिच्
चिऱिय ताय्शॊन्न तिरुमॊऴि शॆन्ऩियिऱ् चूडि
नॆऱियि निन्ऱदन् नायहन् पुहऴॆन निमिर्न्दान् 1020

कॊटुम् चितम् कॊण्टान्–भयानक कोप अपनाकर; वान् कुऱितु ऎन्ऱु–आकाश को छोटा कहने देता हुआ; कुऱैन्तिलन्–छोटा न रहकर (यानी विवृद्ध होकर); चिऱिय ताय्–छोटी माता के; चॊन्न–कहे गये; तिरुमॊऴि–श्रीवचन; चॆन्ऩियिल् चूटि–सिर पर धारण करके; मऱियुम्–आवर्तनशील; वॆण् तिरै–श्वेत तरंगों के; मा कटल्–बड़े सागर से वलयित; उलकु ऎलाम्–सारे लोक को; वऴङ्कि–प्रदान करके; नॆऱियिल् निन्ऱ–धर्ममार्ग पर स्थित; तन् नायकन्–अपने नायक की; पुकऴ् ऎन–कीर्ति के समान; निमिर्न्तान्–विराट् रूप में बढ़ गया। १०२०

हनुमान क्रुद्ध हुआ। आकाश को भी छोटा बनाते हुए विवृद्ध हुआ। वह इस प्रकार उन्नत हुआ, जिस प्रकार छोटी माता की आज्ञा के वचन को शिरोधार्य कर आवर्तनशील श्वेत लहरों के बड़े सागरों के मध्य स्थित सारी भूमि को अपने भाई भरत के पास देकर धर्मावलम्बी रहे श्रीराम का यश उन्नत (और विस्तृत) बना था। १०२०

पाह मल्लदु कण्डिल ननुमनैप् पार्त्तान्
माह वन्ऱिशै पत्तॊडुम् वरम्बिला वुलहिऱ्
केह नादनै यॆऱुऴ्वलित् तोळ्पिणित् तीर्त्त
मेह नादनु मयङ्गिन नामॆन वियन्दान् 1021

माक वन् तिचै–बड़ा आकाश आदि; पत्तु–दसों दिशाओं; ऒटुम्–के साथ; वरम्पु इला–निस्सीम; उलकिऱ्कु–अनेक लोकों के; एक नातनै–एक नायक (इन्द्र) को; ऎऱुऴ् वलि–बहुत सबल; तोळ् पिणित्तु–कन्धे बाँधकर; ईर्त्त–जो खींच लाया; मेकनातनुम्–उस इन्द्रजित् ने; अनुमनै पार्त्तान्–हनुमान को देखा;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाकम् अल्लतु–एक भाग को छोड़कर; **कण्टिलन्**–(पूरा नहीं) देखा; **मयङ्कितन्** आम् **अॅन**–चकित-सा; **वियन्तान्**–विस्मित हुआ। १०२१

इन्द्रजित् ने विश्वरूप हनुमान को देखा। इन्द्रजित्, बड़े आकाश को मिलाकर दसों दिशाओं और अनन्त लोकों के एक-नायक इन्द्र के बलवान कन्धों को बाँधकर खींच लाया था। वह इन्द्रजित् भी हनुमान का एक भाग ही अपनी दृष्टिपथ में ला सका। वह विस्मित-भ्रमित हुआ। १०२१

नीण्ड वीरनु नॅडुन्दडक् कैहळै नीट्टि
ईण्डु वॅञ्जर मॅय्दन वॅय्दिडा वण्णम्
मीण्डु पोय्विळ वीशियङ् गवन्विट्ट तडन्देर्
पूण्ड पेयॊडु शारदि तरैप्पडप् पुडैत्तान् 1022

नीण्ट वीरनुम्–लम्बोतरे वीर (महावीर) ने भी; **नॅटुम् तटम्**–लम्बे और विशाल; **कैकळै नीट्टि**–अपने हाथों को बढ़ाकर; **अॅय्तन**–चलाये जाकर; **ईण्टु**–सवेग आनेवाले; **वॅम् चरम्**–संतापक शरों को; **अॅय्तिटा वण्णम्**–अपने पास न आने देते हुए; **मीण्टु पोय्**–लौट जाकर; **विळ**–गिराते हुए; **वीचि**–फेंककर; **अङ्कु**–वहाँ; **अवन् विट्ट**–उसके चलाये गये; **तटम् तेर्**–विशाल रथ को; **पूण्ट पेय् ओटु**–जुते भूतों के साथ; **चारति**–सारथी भी; **तरै पट**–भूमि पर गिरकर मर जाएँ, ऐसा; **पुटैत्तान्**–आघात किया। १०२२

लम्बोतरे महावीर ने भी अपने लम्बे विशाल हाथों को बढ़ाकर इन्द्रजित्-प्रेरित भयंकर शरों को पास न आने देकर लौटाते हुए झटकार दिया और उसके द्वारा चलाये गये विशाल रथ को उसके जुते भूतों के साथ लेकर भूमि पर ऐसा पटका कि वे भूमि पर गिरकर मिट गये। १०२२

ऊळिक् काऱ्ऱन्न वॊरुपरित् तेरव णुदवप्
पाळित् तोळव नत्तडन् देर्मिशैप् पाय्न्दान्
आळिप् पल्बडै यन्नैयन वळप्परुञ् जरत्ताल्
वाळिप् पोर्वलि मारुदि मेनियै मऱैत्तान् 1023

अवण्–उस स्थिति में; **ऊळि काऱ्ऱ अन्नत**–प्रलयपवन के समान; **ऒरु परि तेर्**–एक अश्व-जुते रथ को; **उतव**–(सारथी के) ला देने पर; **पाळि तोळ् अवन्**–स्थूल कन्धों वाला वह; **अ तटम् तेर् मिचै**–उस विशाल रथ पर; **पाय्न्तान्**–लपका; **पल्**–(और उसने) अनेक; **आळि पटै अन्नैयन**–चक्रायुध-सम; **अळप्पु अरुम् चरत्ताल्**–अगणित शरों से; **वाळि पोर् वलि**–लम्बे काल तक जारी रहनेवाले युद्ध के योग्य बल से युक्त; **मारुति मेनियै**–मारुति के शरीर को; **मऱैत्तान्**–छिपा दिया। १०२३

उस स्थिति में सारथी ने प्रलयपवनगति अश्वों के जुते एक रथ को ला दिया। भुजबली इन्द्रजित् उस विशाल रथ पर लपका। फिर उसने चक्रायुध के समान अनेक विविध अगणित शरों से युद्धकुशल मारुति के शरीर को ढक दिया। जिसमें दीर्घयुद्धावश्यक बल था। १०२३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उऱ्ऱ वाळिह् ऴुरत्तडङ् गिऩ्ऩवुह् वुदऱाक्
कॊऱ्ऱ मारुदि यऩैयवऩ् ऱेऱ्मिशैक् कुदित्तुप्
पऱ्ऱि वऩ्गैयाऱ् पऱित्तॆऴुन् दुलहॆलाम् बलहाल्
मुऱ्ऱ वॆऩ्ऱपोऱ् मूरिवॆञ् जिलैयिऩै मुऱित्ताऩ् 1024

कॊऱ्ऱ मारुति–विजयशील मारुति (ने); उरत्तु अटङ्किऩ्–वक्ष में छिपे; उऱ्ऱ वाळिकळ्–लगे रहे शरों को; उक–बिखेरते हुए; उतऱा–झटकाकर; अऩैयवऩ् तेर् मिचै–उसके रथ पर; कुतित्तु–कूदकर; उलकु ऎलाम्–सारे लोकों को; पल काल्–अनेक बार; मुऱ्ऱ वॆऩ्ऱ–पूर्णरूप से जिसने जीता था (उसके); पोर् मूरि–युद्धयोग्य बलवान; वॆम् चिलैयिऩै–भयानक धनु को; वऩ् कैयाल्–कठोर हाथों से; पऱ्ऱि–ग्रसकर; पऱित्तु–छीनकर; ऎऴुन्तु–ऊपर उछलकर; मुऱित्ताऩ्–उसको तोड़ दिया। १०२४

विजयशील मारुति ने झटका देकर अपने वक्ष में धँसे रहे शरों को दूर बिखेर दिया। फिर वह उसके रथ पर कूद पड़ा। उसने, सारे लोकों को अनेक बार जिसने जीता था, उस इन्द्रजित् के भारी और मारू और भयंकर धनु को अपने बलिष्ठ हाथों से पकड़कर छीन लिया और ऊपर उछलकर उसे तोड़ दिया। १०२४

मुऱिन्त विल्लिऩ्वल् लोशैपोय् मुडिवदऩ् मुऩ्ऩम्
मऱिन्दु पोरिडै वऴिक्कॊळा वयिरवाट् पडैयाल्
शॆऱिन्द वाऩ्बॆरुञ् जिऱैयऱ् मलैहळैच् चॆयिरा
ऎऱिन्द विन्दिर ऩिट्टवाऩ् शिलैयिऩै यॆडुत्ताऩ् 1025

मुऱिन्त–टूटे; विल्लिऩ्–धनु के; वल ओचै–भयंकर स्वर के; पोय् मुटिवतऩ्–जाकर मौन होने के; मुऩ्ऩम्–पूर्व ही; मऱिन्तु–लौटकर; पोर् इटै–युद्ध का; वऴि कॊळा–मार्ग अपनाकर; वयिर–वज्र की; वाळ् पटैयाल्–तलवार से; चॆऱिन्त–घने; वाऩ् पॆरुम् चिऱै–बहुत बड़े पंखों को; अऱ–काटकर; मलैकळै–पर्वतों से; चॆयिरा–गुस्सा करके; ऎऱिन्त–उनको जिसने निर्बल बनाया; इऩ्ऩिरऩ्–उस इन्द्र के; इट्ट–(समरांगन में परास्त होकर) छोड़े गये; वाऩ् चिलैयिऩै–बड़े धनु को; ऎटुत्ताऩ्–अपने हाथ में ले लिया। १०२५

टूटे धनु की भयंकर ध्वनि के मौन होने के पहले, फिर युद्ध में लगकर मेघनाद ने, वज्र रूपी तलवार से जिसने सुदृढ़ पंखों को काटकर पर्वतों को क्रोध के साथ प्रहरित किया था, उस इन्द्र के द्वारा हारकर छोड़े गये बड़े धनु को हाथ में लिया। १०२५

नूऱु नूऱुपोऱ् वाळियोऱ् तॊडैहॊण्डु नॊय्दिऩ्
माऱिल् वॆञ्जिऩत् तिरावणऩ् महऩ्शिलै वळैत्ताऩ्
ऊऱु तऩ्ऩॆडु मेऩियिऱ् पलपड वॊल्हि
एऱु शेवहऩ् ऱूदऩुञ् जिऱिदुपो दिरुन्दाऩ् 1026

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ओर् तॉटै–एक खेप में; नूऱु नूऱु पोर् वाळि कॉण्टु–शत-शत मारू बाण लेकर; नॉय्तित्–शीघ्र; माऱु इल्–प्रत्युत्तर रहित; वॅम् चित्तत्तु–भयानक क्रोधी; इरावणन् मकन्–रावण के पुत्र ने; चिलै वळैत्तान्–धनु झुकाया (शर चलाये); एऱु चेवकन्–संवर्धनशील वीरता के श्रीराम का; तूतनुम्–दूत भी; तन् नॅटु मेतियिल्–अपने लम्बे शरीर में; ऊऱु पल पट—अनेक घावों के होने के कारण; चिऱितु पोतु–कुछ देर; ऑल्कि इरुन्तान्–थका रहा। १०२६

अप्रतिरुद्ध क्रोधी रावण के पुत्र ने धनु को झुकाकर एक खेप में सौ-सौ मारू बाणों के हिसाब से शर चलाये। उत्तरोत्तर विवृद्ध वीरता के नायक श्रीराम का दूत हनुमान भी अपने लम्बे शरीर पर अनेक व्रणों के बन जाने से कुछ देर थकित रहा। १०२६

आर्त्त वानव राहुलङ् गॉण्डऱि वळिन्दार्
पार्त्त मारुदि तारुवॉन् ऱङ्गैयार् पऱ्ऱात्
तूर्त्त वाळिहळ् तुणिबड मुऱैमुऱै शुऱ्ऱिप्
पोर्त्त पॉन्नॅडु मणिमुडित् तलैयिडैप् पुडैत्तान् 1027

आर्त्त वानवर्–(जिन्होंने पहले) आनन्दरव किया था, वे देव; आकुलम् कॉण्टु–व्याकुल होकर; अऱिवु अळिन्तार्–बुद्धिभ्रष्ट हुए; पार्त्त मारुति–उसको देखकर मारुति; तारु ऑन्ऱु–एक तरु को; अम् कैयाल् पऱ्ऱा–अपने सुन्दर हाथ से पकड़कर; तूर्त्त वाळिकळ्–अपने शरीर को छिपाने आये शरों को; तुणि पट–तोड़ते हुए; मुऱै मुऱै चुऱ्ऱि–अनेक बार उसे घुमाकर; पॉन् मणि–स्वर्णरत्नमय; नॅटु मुटि पोर्त्त–लम्बे किरीट से आवृत; तलैयिटै–(इन्द्रजित् के) सिर पर; पुटैत्तान्–(उस तरु से) प्रहार किया। १०२७

देवों ने पहले आनन्द-आरव किया था। अब यह स्थिति देखकर वे व्याकुल और बुद्धिभ्रष्ट हुए। मारुति ने उनकी यह स्थिति देखकर एक पेड़ को उखाड़कर उठा लिया और आवृत करते आनेवाले बाणों को बिखेर देते हुए उसको अनेक बार घुमाया। फिर स्वर्णरत्नमय किरीट से ढके हुए इन्द्रजित् के सिर पर उस पेड़ को दे मारा। १०२७

पार मामर मुडियुडैत् तलैयिडैप् पडलुम्
तारै यित्नॅडुङ् गऱ्ऱैहळ् शॉरिवऩ तयङ्ग
आर मालवरै यरुवियि ऩळिहॉळुङ् गुरुदि
शोर निन्ऱुळन् दुळङ्गिऩ ऩमररैत् तॉलैत्तान् 1028

पार मामरम्–भारी बड़ा तरु; मुटियुटै–किरीट-सहित; तलै इटै–सिर पर; पटलुम्–ज्योंही लगा त्योंही; तारैयिन्–रक्तधारा की; नॅटुम् कऱ्ऱैकळ्–लम्बी लटें; चॉरिवऩ तयङ्क–बहती रही; माल् वरै–बड़े पर्वत की; आर–माला-सी; अरुवियिन्–सरिता के समान; अळि कॉळुम् कुरुति–गिरनेवाला गाढ़ा रक्त; चोर–दोनों बाजुओं में गिरता रहा; अमररै तॉलैत्तान्–अमरों का (बल-) नाशक; निन्ऱु–थका खड़ा रहा और; उळम् तुळङ्कितन्–कम्पित-मन हुआ। १०२८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उस भारी बड़े पेड़ के किरीटधारी सिर पर लगते ही इन्द्रजित् के शरीर पर रक्तधारा की लम्बी लटें दोनों बाजुओं में पर्वतधृत मालाओं के समान शोभायमान दिखीं। जब वह गाढ़ा रक्त उस तरह गिरने लगा, तब देवों को हराकर जिसने भगाया था, उस इन्द्रजित् का मन काँप उठा। १०२८

निन्ऱु पोदम्वन् दुऱदलु निऱैपिऱै यॅयिऱु
तिन्ऱु तेवरु मुऩिवरु मवुणरुन् दिहैप्पक्
कुन्ऱु पोऩॅडु मारुदि याहमुङ् गुलुङ्ग
ऑन्ऱु पोल्वऩ वायिरम् बहऴिकोत् तुय्त्ताऩ् 1029

निन्ऱु–थका खड़ा रहकर; पोतम् वन्तु उऱतलुम्–सचेत होते ही; पिऱै–चन्द्रकला के समान; निऱै–भरे रहे; ऍयिऱु तिन्ऱु–दाँत पीसते हुए; तेवरुम् मुऩिवरुम्–देवों और मुनियों; अवुणरुम्–और दानवों के; तिकैप्प–चकित रहते; कुन्ऱु पोल्–पर्वत-सम; नॅटु मारुति–लम्बोतरे हनुमान के; आकमुम्–शरीर के; कुलुङ्क–काँपते; ऑन्ऱु पोल्वऩ–एक ही सम; आयिरम् पकऴि–सहस्र बाण; कोत्तु–धनु पर सन्धान करके; उय्त्ताऩ्–चलाये (इन्द्रजित् ने) १०२९

कुछ देर वह स्तब्ध खड़ा रहने के बाद थोड़ा स्वस्थ हुआ। जब उसे बोध हुआ, तब उसने चन्द्रकला-से दाँतों को पीसते हुए एक समान हज़ार बाण धनु पर संधानकर छोड़ा, जिससे कि मुनिगण और दानव चकित हुए और पर्वत-सम लम्बोतरे हनुमान का शरीर काँपा। १०२९

उय्त्त वॅञ्जर मुरत्तिनुङ् गरत्तिनु मॊळिप्पक्
कैत्त शिन्दैयऩ् मारुदि नऩिदवक् कऩऩ्ऱाऩ्
वित्त हऩ्शिलै विडुकणै विशैयिनुङ् गडुहि
अत्त डम्बॅरुन् देरोडु मॅडुत्तॅऱिन् दार्त्ताऩ् 1030

उय्त्त–चालित; वॅम् चरम्–भयंकर शर; उरत्तिनुम्–वक्ष में और; करत्तिनुम्–हाथों में; ऒळिप्प–घुसकर छिप गये, तब; कैत्त चिन्तैयऩ्–उचटे मन वाला; मारुति–पवनसुत; नऩि तव–खूब अधिक; कऩऩ्ऱाऩ्–कुपित हुआ; वित्तकऩ्–विद्यारूप; चिलै विटु–(श्रीराम) धनु से जो छोड़ते हैं; कणै विचैयितुम्–उन बाणों के वेग से अधिक; कटुकि–वेग के साथ जाकर; अ तटम् पॅरुम् तेर् ओटु उम्–उस विशाल और बड़े रथ के साथ; ऍटुत्तु–(उसको भी) उठाकर; ऍऱिन्तु–पटक दिया और; आर्त्ताऩ्–नारे लगाये। १०३०

इन्द्रजित्-प्रेरित वे शर हनुमान के वक्ष और भुजाओं में छिप गये। हनुमान का दिल उचट गया। अत्यधिक क्रोध करके वह ज्ञानमूर्ति श्रीराम के प्रेरित बाण से भी उधिक तेज़ी से गया और उसने उस बड़े और चौड़े रथ के साथ उसको भी उठाकर दूर फेंक दिया और उच्च गर्जन किया। १०३०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्णिन् मीच्चॅन्ऱ विमैयिडैक् कलप्पदन् मुन्नम्
ऍण्णिन् मीच्चॅन्ऱ वॅऱुळ्वलित् तिऱलुडै यिहलोन्
पुण्णिन् मीच्चॅन्ऱु पॊळिबुनल् पशुम्बुलाल् पॊडिप्प
विण्णिन् मीच्चॅन्ऱ तेरॊडुम् बार्मिशै विळुन्दान् 1031

कण्णिन् मी–आँखों के ऊपर; चॅन्ऱ इमै–जो उठी थी वह पलक; कलप्पतन् इटै–(नीचे आ) नीचे की पलक से मिलने की अवधि; मुन्नम्–के पहले; ऍण्णिन् मी चॅन्ऱ–गणना को पार कर गये; ऍऱुळ् वलि–अधिक बली; तिऱलुडै इकलोन्–साहसी योद्धा (इन्द्रजित्); पुण्णिन् मी चॅन्ऱु–व्रणों के ऊपर से आकर; पॊळि–गिरनेवाले; पुतल् पचुम् पुलाल्–रक्त और ताज़ा मांस; पॊटिप्प—निकल आये और; विण्णिन् मी चॅन्ऱ–आकाश में जो जाता रहा; तेर् ओटुम्–उस रथ के साथ; पार् मिचै–भूमि पर; विळुन्तान्–गिरा। १०३१

आँखों के ऊपर उठी हुई पलकों के गिरकर नीचे की पलकों के साथ लगने में जितनी देर लगती है (यानी पलक मारने की), उतनी देर के अन्दर अपार बली और युद्धसमर्थ इन्द्रजित् आकाशगामी रथ के साथ भूमि पर गिरा और उसके शरीर के व्रणों से रक्त और ताज़ा मांस बाहर निकल पड़े। १०३१

विळुन्दु पारडै यामुन मिन्नॅनु मॅयिऱ्ऱान्
ऍळुन्दु माविशुम् बॅय्दिन निडैयवन् पडियिल्
शॅळुन्दिण् मामणित् तेर्क्कुलम् यावैयुञ् जिदैय
उळुन्दु पेर्वदन् मुन्नॅडु मारुदि युदैत्तान् 1032

मिन् ऍनुम्–बिजली के समान; ऍयिऱ्ऱान्–दाँत वाले (इन्द्रजित्); विळुन्तु–गिरकर; पार् अटैया मुन्नम्–भूमि पर लगने से पहले; ऍळुन्तु–उठकर; मा विचुम्पु–विशाल आकाश; ऍय्तितन्–पहुँचा; इटै–इसके बीच में; नॅटु मारुति–लंबोतरे मारुति ने; उळुन्तु पेर्वतन् मुन्–उड़द के लुढ़कने की देर में; अवन्–उसके; चॅळुम्–आडम्बरपूर्ण; तिण्–सुदृढ़; मा मणि तेर् कुलम्–बड़े रत्नमय रथों; यावैयुम्–सभी को; पटियिल् चितैय–भूमि पर टूटकर गिरें, ऐसा; उतैत्तान्–लात मारी। १०३२

बिजली के समान चमकते दाँत वाला इन्द्रजित् भूमि पर गिरने से पहले ही उठा और ऊपर आकाश में उछल गया। इसके बीच में लम्बोतरे हनुमान ने उड़द के लुढ़कते समय के अन्दर उसके पुष्ट, सुदृढ़ और बड़े रत्नमय सारे रथों के समूहों के लात मारी और वे सब भूमि पर गिरकर तहस-नहस हुए। १०३२

एऱु तेरिल नॅदिर्निऱ्कु मुरनिल नॅरियिल्
शीऱु वॅञ्जिनन् दिरुहिन नन्दरन् दिरिवान्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेऱु शॅय्वदोर् विऩैपिऱि दिऩ्मैयिऩ् विरिञ्जऩ्
मारि लाप्पॅरुम् बडैक्कलन् दॊडुप्पदे मदित्ताऩ् 1033

एऱु तेर् इलऩ्–सवार होने के लिए रथ न रहा; ॲतिर् निऱ्कुम्–सामने टिकने की; उरऩ् इलऩ्–शक्ति न रही; ॲरियिल् चीऱ्–आग के समान बिफरकर; वॆम् चितम् तिरुकिऩऩ्–भयानक कोप में बढ़कर; अऩ्तरम् तिरिवाऩ्–अन्तरिक्ष में घूमता हुआ; वेऱु चॆय्वतु–दूसरा करने; ओर् विऩै–कोई काम; पिऱितु इऩ्मैयिऩ्–फिर न रहा, इसलिए; विरिञ्चऩ्–विरंचि के; माऱु इला–अप्रतीकार्य; पॆरुम् पटैक्कलम्–बड़ा अस्त्र; तॊटुप्पते–चलाना ही; मतित्ताऩ्–सोचा। १०३३

अब इन्द्रजित् रथहीन हो गया। समक्ष टिकने की शक्ति भी उसकी नहीं रही। भभक उठनेवाली अग्नि के समान उसका क्रोध बढ़ गया। अन्तरिक्ष में चलते हुए इन्द्रजित् ने अनुभव किया, अब मेरे करने योग्य कोई कार्य नहीं। इसलिए उसने अप्रतिरुद्ध ब्रह्मास्त्र को चलाने की बात सोच ली। १०३३

पूवुम् बूनिऱ् वयिऩियुन् दीबमुम् बुहैयुम्
ताविल् पावऩै याऱ्कॊडुत् तरुच्चऩै शमैत्ताऩ्
तेवि यावैयु मुलहमुन् दिरुत्तिय दॆय्वक्
कोवि ऩाऩ्मुहऩ् पडैक्कलन् दडक्कैयिऱ् कॊण्डाऩ् 1034

पूवुम्–सुमन और; पू निऱ्–पुष्प-वर्ण (शुद्ध); अयिऩियुम्–चावल; तीपमुम्–दीपाराधन; पुकैयुम्–धूप; तावु इल्–निर्दोष; पावऩैयाल्–(भक्ति) भावना के साथ; कॊटुत्तु–पूजा में चढ़ाकर; अरुच्चऩै–अर्चना; चमैत्ताऩ्–करके; तेवु उलकम् यावैयुम्–देवताओं और सारे लोकों को; तिरुत्तिय–जिन्होंने क्रम से बनाया उन; तॆय्वक् कोविऩ्–देवनायक; नाऩ् मुकऩ्–चतुर्मुख ब्रह्माजी के; पटैक्कलम्–अस्त्र को; तटम् कैयिल्–अपने विशाल हाथ में; कॊण्टाऩ्–ले लिया। १०३४

इन्द्रजित् ने उस अस्त्र की विधिवत पूजा की। पुष्प, शुद्ध चावल, दीप, सुगन्धित धूप आदि को निर्दोष भावना के साथ चढ़ाया। फिर यथोचित अर्चना की। देवों और चराचर सभी प्रपञ्च के सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी के अस्त्र को उसने अपने विशाल हाथ में लिया। १०३४

कॊण्डु कॊऱ्ऱवॆऱ् जिलैनॆडु नाणॊडु कूट्टिच्
चण्ड वेहत्त मारुदि तोळॊडुञ् जार्त्ति
मण्डु ळङ्गिड मादिरन् दुळङ्गिड मदितोय्
विण्डु ळङ्गिड मेरुवुन् दुळङ्गिड विट्टाऩ् 1035

कॊण्टु–लेकर; कॊऱ्ऱम्–विजयदायक; वॆम् चिलै–भयंकर धनु की; नॆटु नाणॊटु कूट्टि–लम्बी डोरी से लगाकर; चण्ट वेकत्त–प्रचण्ड वेगवान; मारुति–मारुति के; तोळ् ऒटुम्–कन्धों को; चार्त्ति–निशाना बनाकर; मण् तुळङ्किट–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भूमि को कँपाते हुए; मातिरम् तुळङ्किट–दिशाओं को कँपाते हुए; मति तोय्–चन्द्राश्रय; विण् तुळङ्किट–आकाश काँप जाए, ऐसा; मेरुवुम् तुळङ्किट–मेरु भी काँप उठे, ऐसा; विट्टान्–प्रेरित किया (इन्द्रजित्) ने। १०३५

उसने उसे हाथ में लेकर विजयदायी और कठोर धनु की लम्बी डोरी पर रखकर संधान किया, प्रचण्डवेग मारुति के कन्धों का निशाना लगाया और प्रेरित किया, जिससे भूमि काँपी, दिशाएँ काँपीं और चन्द्राश्रय आकाश काँपा तथा मेरुपर्वत भी काँप उठा। १०३५

तणिप्प रुम्बॅरुम् बडैक्कलन् दळुलुमिळ् तरुहण्
पणिक्कु लङ्गळुक् करशिन दुरुविनैप् पर्रित्
तुणिक्क वुर्रुयर् कलुळनुन् दुणुक्कुरच् चुर्रिप्
पिणित्त दप्पॅरु मारुदि तोळ्हळैप् पिरङ्ग 1036

तणिप्पु अरुम्–अवार्य; पॅरुम् पटैक्कलम्–बड़े अस्त्र ने; तळल् उमिळ्–अग्निवर्षक; तरुकण्–क्रूर; पणि कुलङ्कळुक्कु–सर्पकुल के; अरचिनतु–राजा का; उरुविनै पर्रि–रूप लेकर; तुणिक्क उर्रु–उसे खण्डित करने का विचार लेकर; उयर् कलुळनुम्–उठनेवाला गरुड़ भी; तुणुक्कु उर–भयभीत हो, ऐसा; अ पॅरु मारुति–उस विश्वरूप मारुति के; तोळ्कळै–कन्धों को; पिरङ्क चुर्रि–खूब लपेट कर; पिणित्ततु–बाँध गया। १०३६

उस अवार्य और उत्कृष्ट ब्रह्मास्त्र ने अग्निवर्षक और हिंस्र सर्पराज का रूप लेकर, उसको भग्न करने के लिए उठ आये गरुड़ को भी भयभीत करते हुए आकर, उस विराट्रूप मारुति के कन्धों से लपेटकर उन्हें बाँध दिया। १०३६

तिण्णॅन् याक्कैयैत् तिशैमुहन् पडैशॅन्रु तिरुह
अण्णन् मारुदि यन्रुतन् पिन्शॅन्र वरत्तिन्
कण्णि नीरॉडुङ् गनहतो रणत्तॉडुङ् गडैनाळ्
तण्णॅन् मामदि कोळॉडुञ् जाय्न्दॅनच् चाय्न्दान् 1037

तिचै मुकन् पटै–दिशामुख (ब्रह्मा) का अस्त्र; तिण् अॅन्–सुदृढ़; याक्कैयै–शरीर को; चॅन्रु तिरुक–जाकर लपेटकर दुःख देने लगा तो; अण्णल्–मान्य महावीर; अन्रु–उस दिन; तन् पिन् चॅन्र–उसके पीछे गये; अरत्तिन्–धर्म के; कण्णिन् नीरॉटुम्–नेत्र के अश्रुजल के साथ; कटै नाळ्–युगान्त के दिन; तण् अॅन्–शीतल; मा मति–श्रेष्ठ चन्द्र; कोळ् ऑटुम्–परिवेश के साथ; चाय्नतु अॅन्–गिरा जैसे; कनक तोरणत्तु ऑटुम्–कनकतोरण के साथ; चाय्न्तान्–गिर गया। १०३७

दिशामुख ब्रह्मा के अस्त्र ने हनुमान के बहुत सुदृढ़ शरीर को लपेट कर पीड़ा दी। वह युगान्त में परिवेश के साथ गिरनेवाले शीतल और बड़े चन्द्र के समान कनक-तोरण के साथ नीचे गिर गया; जिससे उसकी सहायता लेकर लंका में आये धर्म की आँखों से आँसू बह निकले। १०३७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेऱु शॅय्वदोर् विऩैपिऱि दिऩ्मैयिऩ् विरिञ्जऩ्
मारि लाप्पॅरुम् बडैक्कलन् दॊडुप्पदे मदित्ताऩ् 1033

एऱु तेर् इलऩ्–सवार होने के लिए रथ न रहा; ॲतिर् निऱ्कुम्–सामने टिकने की; उरऩ् इलऩ्–शक्ति न रही; ॲरियिल् चीऱ्–आग के समान बिफरकर; वॅम् चितम् तिरुकिऩऩ्–भयानक कोप में बढ़कर; अऩ्तरम् तिरिवाऩ्–अन्तरिक्ष में घूमता हुआ; वेऱु चॅय्वतु–दूसरा करने; ओर् विऩै–कोई काम; पिऱितु इऩ्मैयिऩ्–फिर न रहा, इसलिए; विरिञ्चऩ्–विरंचि के; माऱु इला–अप्रतीकार्य; पॅरुम् पटैक्कलम्–बड़ा अस्त्र; तॊटुप्पते–चलाना ही; मतित्ताऩ्–सोचा। १०३३

अब इन्द्रजित् रथहीन हो गया। समक्ष टिकने की शक्ति भी उसकी नहीं रही। भभक उठनेवाली अग्नि के समान उसका क्रोध बढ़ गया। अन्तरिक्ष में चलते हुए इन्द्रजित् ने अनुभव किया, अब मेरे करने योग्य कोई कार्य नहीं। इसलिए उसने अप्रतिरुद्ध ब्रह्मास्त्र को चलाने की बात सोच ली। १०३३

पूवुम् बूनिऱ् वयिऩियुन् दीबमुम् बुहैयुम्
ताविल् पावऩै याऱ्कॊडुत् तरुच्चऩै शमैत्ताऩ्
तेवि यावैयु मुलहमुन् दिरुत्तिय दॅय्वक्
कोवि ऩाऩ्मुहऩ् पडैक्कलन् दडक्कैयिऱ् कॊण्डाऩ् 1034

पूवुम्–सुमन और; पू निऱ्–पुष्प-वर्ण (शुद्ध); अयिऩियुम्–चावल; तीपमुम्–दीपाराधन; पुकैयुम्–धूप; तावु इल्–निर्दोष; पावऩैयाल्–(भक्ति) भावना के साथ; कॊटुत्तु–पूजा में चढ़ाकर; अरुच्चऩै–अर्चना; चमैत्ताऩ्–करके; तेवु उलकम् यावैयुम्–देवताओं और सारे लोकों को; तिरुत्तिय–जिन्होंने क्रम से बनाया उन; तॅय्वक् कोविऩ्–देवनायक; नाऩ् मुकऩ्–चतुर्मुख ब्रह्माजी के; पटैक्कलम्–अस्त्र को; तटम् कैयिल्–अपने विशाल हाथ में; कॊण्टाऩ्–ले लिया। १०३४

इन्द्रजित् ने उस अस्त्र की विधिवत पूजा की। पुष्प, शुद्ध चावल, दीप, सुगन्धित धूप आदि को निर्दोष भावना के साथ चढ़ाया। फिर यथोचित अर्चना की। देवों और चराचर सभी प्रपञ्च के सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी के अस्त्र को उसने अपने विशाल हाथ में लिया। १०३४

कॊण्डु कॊऱ्ऱवॅञ् जिलैनॅडु नाणॊडु कूट्टिच्
चण्ड वेहत्त मारुदि तोळॊडुञ् जाऱ्त्ति
मण्डु ळङ्गिड मादिरऩ् दुळङ्गिड मदितोय्
विण्डु ळङ्गिड मेरुवुऩ् दुळङ्गिड विट्टाऩ् 1035

कॊण्टु–लेकर; कॊऱ्ऱम्–विजयदायक; वॅम् चिलै–भयंकर धनु की; नॅटु नाणॊटु कूट्टि–लम्बी डोरी से लगाकर; चण्ट वेकत्त–प्रचण्ड वेगवान; मारुति–मारुति के; तोळ् ऑटुम्–कन्धों को; चाऱ्त्ति–निशाना बनाकर; मण् तुळङ्किट–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भूमि को कँपाते हुए; मातिरम् तुळङ्किट–दिशाओं को कँपाते हुए; मति तोय्–चन्द्राश्रय; विण् तुळङ्किट–आकाश काँप जाए, ऐसा; मेरुवुम् तुळङ्किट–मेरु भी काँप उठे, ऐसा; विट्टान्–प्रेरित किया (इन्द्रजित्) ने। १०३५

उसने उसे हाथ में लेकर विजयदायी और कठोर धनु की लम्बी डोरी पर रखकर संधान किया, प्रचण्डवेग मारुति के कन्धों का निशाना लगाया और प्रेरित किया, जिससे भूमि काँपी, दिशाएँ काँपीं और चन्द्राश्रय आकाश काँपा तथा मेरुपर्वत भी काँप उठा। १०३५

तणिप्प रुम्बॅरुम् बडैक्कलन् दळलुमिळ् तरुहण्
पणिक्कु लङ्गळुक् करशिन दुरुविनैप् पर्रित्
तुणिक्क वुर्रुयर् कलुळनुन् दुणुक्कुरच् चुर्रिप्
पिणित्त दप्पॅरु मारुदि तोळ्हळैप् पिरङ्ग 1036

तणिप्पु अरुम्–अवार्य; पॅरुम् पटैक्कलम्–बड़े अस्त्र ने; तळल् उमिळ्–अग्निवर्षक; तरुकण्–क्रूर; पणि कुलङ्कळुक्कु–सर्पकुल के; अरचिनतु–राजा का; उरुविनै पर्रि–रूप लेकर; तुणिक्क उर्रु–उसे खण्डित करने का विचार लेकर; उयर् कलुळनुम्–उठनेवाला गरुड़ भी; तुणुक्कु उर–भयभीत हो, ऐसा; अ पॅरु मारुति–उस विश्वरूप मारुति के; तोळ्कळै–कन्धों को; पिरङ्क चुर्रि–खूब लपेट कर; पिणित्ततु–बाँध गया। १०३६

उस अवार्य और उत्कृष्ट ब्रह्मास्त्र ने अग्निवर्षक और हिंस्र सर्पराज का रूप लेकर, उसको भग्न करने के लिए उठ आये गरुड़ को भी भयभीत करते हुए आकर, उस विराट्रूप मारुति के कन्धों से लपेटकर उन्हें बाँध दिया। १०३६

तिण्णॅन् याक्कैयैत् तिशैमुहन् पडैशॅन्रु तिरुह
अण्णन् मारुदि यन्रुतन् पिन्शॅन्र वरत्तिन्
कण्णि नीरॉडुङ् गनहतो रणत्तॉडुङ् गडैनाळ्
तण्णॅन् मामदि कोळॉडुञ् जाय्न्दॅनच् चाय्न्दान् 1037

तिचै मुकन् पटै–दिशामुख (ब्रह्मा) का अस्त्र; तिण् ऍन्–सुदृढ़; याक्कैयै–शरीर को; चॅन्रु तिरुक–जाकर लपेटकर दुःख देने लगा तो; अण्णल्–मान्य महावीर; अन्रु–उस दिन; तन् पिन् चॅन्र–उसके पीछे गये; अरत्तिन्–धर्म के; कण्णिन् नीरॉटुम्–नेत्र के अश्रुजल के साथ; कटै नाळ्–युगान्त के दिन; तण् ऍन्–शीतल; मा मति–श्रेष्ठ चन्द्र; कोळ् ऑटुम्–परिवेश के साथ; चाय्नतु ऍन–गिरा जैसे; कनक तोरणत्तु ऑटुम्–कनकतोरण के साथ; चाय्न्तान्–गिर गया। १०३७

दिशामुख ब्रह्मा के अस्त्र ने हनुमान के बहुत सुदृढ़ शरीर को लपेट कर पीड़ा दी। वह युगान्त में परिवेश के साथ गिरनेवाले शीतल और बड़े चन्द्र के समान कनक-तोरण के साथ नीचे गिर गया; जिससे उसकी सहायता लेकर लंका में आये धर्म की आँखों से आँसू बह निकले। १०३७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शाय्न्द मारुदि शदुमुहन् पडैयॆनुन् दन्मै
आय्न्दु मऱ्ऱिद नाणैयै यवमदित् तहऱल्
एय्न्द दन्ऱॆन वॆण्णिनन् कण्मुहिऴ्त् तिरुन्दान्
ओय्न्द दामिवन् वलियॆन वरक्कन्वन् दुऱ्ऱान् 1038

चाय्न्त मारुति–नीचे (जो) गिरा (वह) मारुति; चतुमुकन् पटै–चतुर्मुख का अस्त्र; ऍनुम् तन्मै–यह तथ्य; आय्न्तु–जानकर; इतन् आणैयै–इसके शासन से; अवमतित्तु–अवज्ञा करके; अकल्तल्–हटना; एय्न्ततु अन्ऱु–उचित नहीं; ऍन ऍण्णिनन्–ऐसा सोचा; कण् मुकिऴ्त्तु–और आँखें बन्द किये; इरुन्तान्–रहा; अरक्कन्–राक्षस; इवन् वलि–इसका बल; ओय्न्ततु आम्–समाप्त हो गया; ऍन–ऐसा सोचकर; वन्तु उऱ्ऱान्–पास आ पहुँचा। १०३८

हनुमान गिरा तो उसने, चतुर्मुख का अस्त्र ही मेरे ऊपर लगा है —यह तथ्य जान लिया। उसने सोचा कि इसकी अवज्ञा करना उचित नहीं है। इसलिए वह आँखें बन्द किए चुप रहा। राक्षस इन्द्रजित् ने सोचा कि उसका बल समाप्त हो गया। वह उसके पास आया। १०३८

उऱ्ऱ कालैयि नुयिर्हॊडु तिशैदॊऱु मॊदुङ्गि
अऱ्ऱ नोक्किनर् निऱ्किन्ऱ वाळॆयिऱ् ऱरक्कर्
शुऱ्ऱुम् वन्दुडल् शुऱ्ऱिय तॊळैयॆयिऱ् ऱरवैप्
पऱ्ऱि यीर्त्तनन रार्त्तनर् तॆऴित्तनर् पलराल् 1039

उऱ्ऱ कालैयिल्–आ पहुँचने पर; उयिर् कॊटु–प्राण लेकर; तिचै तॊऱुम् ऒतुङ्कि–दिशा-दिशा में हटकर; अऱ्ऱम् नोक्किनर्–मौक़ा देखते हुए; निऱ्किन्ऱ–जो खड़े रहे वे; वाळ् ऍयिऱ्ऱु अरक्कर्–श्वेत दाँतों के राक्षस; पलर्–अनेक; चुऱ्ऱुम् वन्तु–चारों ओर आकर; उटल् चुऱ्ऱिय–(हनुमान के) शरीर को लपेटे रहे; तॊळै ऍयिऱ्ऱु अरवै–रन्ध्र-सहित दाँत वाले सर्प को (सर्परूप ब्रह्मास्त्र को); पऱ्ऱि–पकड़कर; ईर्त्तनर्–खींचते (हुए); आर्त्तनर्–गरजे; तॆऴित्तनर्–डाँटा। १०३९

जब इन्द्रजित् उसके पास आया, तब श्वेत दाँतों वाले अनेक राक्षस भी घेर आये, जो अपने प्राण बचा लेकर चारों दिशाओं में इधर-उधर जा छिपे थे और मौक़े की ताक में रहते थे। उन्होंने रन्ध्रसहित दाँतों वाले सर्प के रूप में हनुमान को, जो लपेटे रहा, उस ब्रह्मास्त्र को पकड़कर खींचा; गर्जन और तर्जन किया। १०३९

कुरक्कु नल्वलङ् गुलैन्दवॆन् ऱावलङ् गॊट्टि
इरक्कु मानह रॆऱिकड लॊत्तदॆम् मरुङ्गुम्
तिरैक्कु माशुणम् वाशुहि यॊत्तदु तेवर्
अरक्क रॊत्तनर् मन्दर मॊत्तन ननुमन् 1040

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुरङ्कु–बन्दर का; नल् वलम्–अच्छा बल; कुलैन्ततु–अस्त-व्यस्त हो गया; ऍन्ऱु–कहकर; आवलम् कॊट्टि–शोर मचाते हुए; इरैक्कुम् मा नकर्–कोलाहल-पूर्ण वह बड़ा नगर; ऍऱि कटल् ऑत्ततु–तरंगायमान समुद्र के समान रहा; ऍ मरुङ्कुम्–सब ओर; तिरैक्कुम्–लपेटकर कसनेवाला; माचुणम्–सर्प; वाचुकि ऑत्ततु–वासुकी-सम रहा; अरक्कर् तेवर् ऑत्तऩर्–राक्षस देवों के समान लगे; अनुमऩ्–हनुमान; मन्तरम् ऑत्तऩऩ्–मन्दर पर्वत-सा रहा। १०४०

सारी लंका नगरी ने कोलाहल मचाया कि हरि का अच्छा बल मिट गया। तब वह तरंगायमान सागर के समान रही। चारों ओर से हनुमान को जो लपेटे रहा, वह अस्त्र वासुकी के समान रहा। राक्षस देवों के समान रहे और हनुमान मन्दरपर्वत के समान रहा। (सारा मिलकर क्षीरसागर-मथन का दृश्य उपस्थित कर रहा था।)। १०४०

कऱुत्त माशुणङ् गऩहमा मेऩियैक् कट्ट
अऱत्तुक् काङ्गॊरु तऩित्तुणै यानिऩ्ऱ वनुमऩ्
मऱत्तु मारुदम् बॊरुदनाळ् वाळरा वरशु
पुऱत्तुच् चुऱ्ऱिय मेरुमाल् वरैयैयुम् बोऩ्ऱाऩ् 1041

कऱुत्त माचुणम्–(क्रुद्ध) काले सर्प (अस्त्र) के; कऩक मा मेऩियै–स्वर्णसंनिभ देह को; कट्ट–कसने पर; अऱत्तुक्कु–धर्म के; आङ्कु–वहाँ के; ऑरु तऩि तुणै आ–एक अनुपम सहायक के रूप में; निऩ्ऱ अनुमऩ्–जो रहा वह हनुमान; मऱत्तु–सबल; मारुतम् पॊरुत नाळ्–पवन के प्रहार के समय; वाळ् अरा अरचु–उज्ज्वल सर्पराज (आदिशेष); पुऱत्तु चुऱ्ऱिय–जिसको चारों ओर से लपेटे रहा; मेरु माल् वरैयैयुम्–उस महामेरु के; पोऩ्ऱाऩ्–समान भी रहा। १०४१

क्रुद्ध और काले (अस्त्र-) सर्प ने हनुमान के कनकवर्ण शरीर को खूब कस लिया। तब धर्म का अद्वितीय सहायक हनुमान उस मेरु के समान लगा, जिसको सर्पराज आदिशेष ने पवन की होड़ में चारों ओर से लपेटकर बाँध लिया था। १०४१

वन्दि रैत्तऩर् मैन्दरु महळिरु मळैपोल्
अन्द रत्तिनुम् विशुम्बिनुन् दिशैतॊऱु मार्प्पार्
मुन्दि युऱ्ऱदो रुवहैक्कोर् करैयिलै मॊऴियिऩ्
इन्दि रन्बिणिप् पुण्डना ळॊत्तदव् विलङ्गै 1042

मैन्तरुम्–पुरुषों और; मकळिरुम्–स्त्रियों ने; वन्तु–आकर; इरैत्तऩर्–शोर मचाया; मळै पोल्–मेघ-जैसे; अन्तरत्तितुम्–रिक्त स्थानों में और; विचुम्पितुम्–आकाश में; तिचै तॊऱुम्–चारों दिशाओं में; आर्प्पार्–(रहकर) नर्दन करते; मुन्ति–सबसे पहले; उऱ्ऱतु ओर् उवकैक्कु–उन्हें जो हुआ उस आनन्द का; ओर् करै इल्लै–(एक) ठिकाना नहीं रहा; मॊऴियिऩ्–कहना चाहें तो; अ इलङ्कै–वह

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लंका; इन्तिरन्–(जिस दिन) इन्द्र; पिणिप्पु उण्ट–पकड़ा गया; नाळ् ऒत्ततु–उस दिन के समान रहा। १०४२

राक्षस तरुणों और तरुणियों ने आकर शोर मचाया; मेघों के समान दिशाओं और आकाश में उद्घोष किया। सबसे पहले, उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। किसी तरह उसको बताना हो तो कहना पड़ेगा कि लंका की स्थिति उस दिन की-सी रही, जिस दिन इन्द्र मेघनाद द्वारा बाँध लाया गया था। १०४२

12. पिणिविडु पडलम् (बन्धन-मुक्ति पटल)

ऍय्युमि नीरुमि नॅऱिमिन् पोळुमिन्
कॊय्युमिन् कुडरिनैक् कूऱु कूऱुहळ्
शॅय्युमि नुलहिडैत् तेय्मिन् ऱिन्नुमिन्
उय्युमे लिल्लैनम् मुयिरॅन् ऱोडुवार् 1043

ऍय्युमिन्–बाण चलाओ (इस पर); ईरुमिन्–(तलवार से) काटो; ऍऱिमिन्–(भाले आदि) घुसेड़ो; पोळुमिन्–फोड़ो; कुटरिनै कॊय्युमिन्–अँतड़ियों को निकालो; कूऱु कूऱुकळ्–खण्ड-खण्ड; चॅय्युमिन्–बना लो; उलकु इटै–भूमि पर; तेय्मिन्–(डालकर) पीसो; तिन्नुमिन्–खाओ; उय्युम् एल्–जीवित रहेगा तो; नम् उयिर् इल्लै–हमारे प्राण नहीं (बचेंगे); ऍन्ऱु–कहते हुए; ओटुवार्–(हनुमान के पास) दौड़ते। १०४३

राक्षस ऐसे-ऐसे कहते दौड़ आये— इस पर बाण चलाओ; तलवार से काट लो। भाले घुसेड़ो। कुदाल आदि से फोड़ो। अँतड़ियों को नोच लो। उसे छिन्न-भिन्न कर दो। भूमि पर डालकर कुचलो। खा लो। अगर यह बच जायगा तो हमारी जानें नहीं बच रहेंगी। १०४३

मैत्तडङ् गण्णियर् मैन्दर् यावरुम्
पैत्तलै यरवॅनक् कनन्ऱु पैतलै
इत्तनै पॊळुदुहॊण् डिरुप्प दोवॅन्ना
मॊय्त्तनर् कॊलैशॅय मुयल्हिन् ऱार्शिलर् 1044

मै–अंजनयुक्त; तटम् कण्णियर्–बड़ी आँखों वाली राक्षस-स्त्रियाँ और; मैन्तर्–राक्षस युवक; यावरुम्–सभी; पै तलै अरवु–फन-सहित साँप; ऍन–जैसे; कनन्ऱु–कोप करके; पैतलै–इस छोकरे को; इत्तनै पॊळुतु–इतनी देर; कॊण्टु–(जीवित) रखकर; इरुप्पतो–रहना है क्या; ऍन्ना–कहकर; मॊय्त्तनर्–उस पर टूट पड़े; चिलर्–कुछ; कॊलै चॅय–हत्या करने का; मुयल्किन्ऱार्–प्रयत्न करते हैं। १०४४

अञ्जन-लगी विशाल आँखों वाली राक्षसरमणियाँ और तरुण सभी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

फन वाले सर्प के समान फुफकारते आये। 'इस छोकरे को इतनी देर जीवित रहने दिया जाय क्यों ?' यह प्रश्न करते हुए वे सब उसके चारों ओर मिल आये। कुछ उसको मारने का भी प्रयास करने लगे। १०४४

नच्चडै पडैहळा नलियु मीट्टदो
वच्चिर वुडन्मऱि कडलिन् वाय्मडुत्
तुच्चियि नऴुत्तुमि नुरुत्त दिन्ऱैनिल्
किच्चिडै यिडुमॅनक् किळक्किन् ऱार्शिलर् 1045

चिलर्–कुछ; नच्चु अटै–विषैले; पटैकळाल्–हथियारों द्वारा; नलियुम् ईट्टतो–मिटनेवाला है क्या; वच्चिर उटल्– वज्र-से शरीर को; मऱि कटलिन् वाय्–प्रत्यावर्तनशील तरंगों के सागर में; मटुत्तु–डुबोकर; उच्चियिल् उरुत्तु–सिर को पकड़कर; अऴुत्तुमिन्–दबाओ; अतु इन्ऱु ऍनिन्–वह नहीं होगा तो; किच्चु इटै–अग्नि में; इटुम्–डालो; ऍन–ऐसा; किळक्किन्ऱार्–कहते। १०४५

कुछ राक्षसों ने संशय उठाया कि क्या यह विषैले अस्त्रों द्वारा मारा जा सकेगा ? इसलिए उनका सुझाव था कि इसके वज्र-सम कठोर शरीर को प्रत्यावर्तनशील तरंगों वाले समुद्र में फेंककर सिर दबाकर डुबो दो। अगर ऐसा नहीं हो तो आग में डाल दो। १०४५

ऍन्दैयै यॅम्बियै यॅम्मु नोर्हळैत्, तन्दनै पोहॅनत् तडुक्किन् ऱार्पलर्
अन्दरत् तमरर्त माणै यालिवन्, वन्ददॅन् ऱुयिर्हॊळ मऱुहि नार्पलर् 1046

पलर्–और अनेक; ऍन्तैयै–हमारे पिताओं को; ऍम्पियै–हमारे छोटे भाइयों को; ऍम् मुन्नोर्कळै–हमारे ज्येष्ठ भ्राताओं को; तन्तनै–दे दो, बाद; पोकु–जाओ; ऍन्ना–कहकर; तटुक्किन्ऱार्–रोकते हैं; पलर्–अनेक; अन्तरत्तु–आकाशलोक के; अमरर् तम्–अमरों की; आणैयाल्–आज्ञा से; इवन् वन्ततु–यह आया; ऍन्ऱु–कहकर; उयिर् कॊळ–उसके प्राण हरने; मऱुकिनार्–आतुर हुए। १०४६

अनेक राक्षसों ने उसे यह कहते हुए रोका कि हमारे पिता को लौटा दो, तभी जाओ; हमारे छोटे भाई को, हमारे बड़े भाई को लौटा दो, तभी जा सको। अनेक ने कहा कि यह व्योम के देवों की आज्ञा से आया है। वे उसके प्राण हरने को आतुर हुए। १०४६

ओङ्गलम् बॅरुवलि युयिरि नन्बरै, नीङ्गल मिन्ऱॊडु नीङ्गि नामिनि
एङ्गल मिवन्शिरत् तिरुन्द लार्ऱिरु, वाङ्गल मॅन्ऱऴु माद रार्पलर् 1047

ओङ्कल्–पर्वत के सदृश; अम् पॅरु वलि–सुन्दर और अतिबलिष्ठ; उयिरिन् अन्पर्–प्राण-सम प्यारों को; नीङ्कलम्–हम छोड़कर नहीं रहे थे; इन्ऱु ऑटु नीङ्किनाम्–आज से वियुक्त हो गये; इनि एङ्कलम्–अब आर्त नहीं होंगे; इवन् चिरत्तु इरुन्तु अलाल्–इसके सिर पर रहकर ही, अन्यथा; तिरु वाङ्कलम्–अपने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मंगलसूत्रों (अहिवात के चिह्नों) को अलग नहीं करेंगे; ऍऩ्ऱु–ऐसा कहकर; अऴुम्–रोनेवाली; मातरार्–स्त्रियाँ; पलर्–अनेक रहीं। १०४७

अनेक राक्षस-स्त्रियाँ रोयीं। पर्वत-सदृश सुन्दर और अतिबली हमारे प्राणप्रिय पतियों से हम कभी अलग नहीं हुई थीं। आज से हम वियुक्त हो गयीं। अब हम आतुर नहीं होंगी। पर इसके सिर को ही पीठ बनाकर उस पर बैठेंगी और मंगलसूत्र निकालेंगी। अन्यथा नहीं। १०४७

कॊण्डऩ ऱेदिर्शॆलुङ् गॊऱ्ऱ मानहर्, अण्डमुऱ् ऱदुनॆडि दार्क्कु मार्प्पदु
कण्डमुऱ् ऱुऴवरुङ् गणवर्क् केङ्गिय, कुण्डल मुहत्तियर्क् कुवहै कूरवे 1048

कॊण्टऩर्–(हनुमान को) ले जानेवालों के; ऍतिर् चॆलुम्–सामने से आनेवाले; कॊऱ्ऱ मा नकर्–विजयी बड़े नगर के (राक्षसों) ने; नॆटितु आर्क्कुम्–उच्च घोष जो निकाला; आर्प्पु अतु–वह शोर; कण्टम् उऱ्ऱु उऴ–(हनुमान द्वारा) छिन्न-भिन्न हुए; अरुम् कणवर्क्कु एङ्किय–अपने पतियों के लिए आर्त; कुण्टल मुकत्तियर्क्कु–कर्णकुण्डलालंकृत मुखों वालियों को; उवकै कूर–आनन्द दिलाते हुए; अण्टम् उऱ्ऱतु–अण्ड भर में व्यापा। १०४८

हनुमान को खींचते ले जा रहे थे लोग। तब उनके सामने से जो राक्षस तमाशबीन बनकर आये थे, उन्होंने घोर आनन्दरव उठाया। वह घोष सारे अण्ड में फैला और उसे सुनकर युद्ध में आहत पतियों के लिए तरसनेवाली कर्णकुण्डलालंकृत मुखों की राक्षसी स्त्रियाँ मुदित हुईं। १०४८

वडियुडैक् कऩर्पडै वयवर् माल्करि
कॊडियुडैत् तेर्परि कॊण्डु वीशलिऩ्
इडिपडच् चिदैन्दमाल् वरैयि ऩिल्लॆलाम्
पॊडिपडक् किडन्दऩ कण्डु पोयिऩाऩ् 1049

वटि उटै–तीक्ष्ण; कऩल् पटै–अनल-सम आयुधधारी; वयवर् वीरों; माल् करि–बड़े गजों; कॊटि उटै तेर्–ध्वजायुक्त रथों; परि–अश्वों को; कॊण्टु वीचलिऩ्–(हनुमान ने) उठाकर फेंका था, इसलिए; इटि पट चितैन्त–प्रहार पाकर जो टूटे थे; माल् वरैयिऩ्–बड़े पर्वतों-से; इल् ऍलाम्–सभी घर; पॊटि पट–चूर होकर; किटन्तऩ–जो पड़े रहे वह; कण्टु–देखते हुए; पोयिऩाऩ्–हनुमान जाता रहा। १०४९

हनुमान भी बन्धन में रहकर तमाशा देखता जा रहा था। उसने पहले तीक्ष्ण और अग्निवर्षक हिंस्र हथियारधारी वीरों, बड़े नागों, ध्वजा-सहित रथों और अश्वों को उठा ले फेंका था। वे सब जाकर बड़े पर्वतों के समान प्रासादों को चूर कर गये थे। उस चूर्ण को देखते हुए वह गया। १०४९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुयिऱलैत् तॅळुमुदु मरत्तिन् मॉय्म्बुतोळ्
कयिऱलैप् पुण्डदु कण्डुङ् गाण्गिला
तॅयिऱलैत् तॅळुमिद ळरक्क रेळैयर्
वयिऱलैत् तिरियलिन् मयङ्गि ऩार्पलर् 1050

मुयिऱ–माटे (लाल चींटे); अलैत्तु अॅळु–संकट देते हुए जिस पर चढ़ते हैं; मुतु मरत्तिन्–उस वृद्ध तरु के समान; मॉय्म्पु तोळ्–बलवान कन्धों को; कयिऱ अलैप्पु उण्टतु कण्टुम्–रस्सी पीड़ा देती रहीं, वह देखकर भी; काण्किलातु–विना देखे (डर के कारण); अॅयिऱ अलैत्तु अॅळुम्–दाँत के किटकिटाने से बाहर निकले हुए; इतळ्–ओठों वाली; अरक्कर् एळैयर्–राक्षस-स्त्रियाँ; वयिऱ अलैत्तु–पेट पीटकर; इरियलिन्–अस्त-व्यस्त भागीं, इसलिए; पलर् मयङ्कित्तार्–अनेक बेहोश हो गयीं। १०५०

एक वृद्ध तरु को माटे (लाल चींटे) जैसे रस्सी हनुमान को बाँधकर संकट देती रही। राक्षसियाँ देखना चाहतीं पर देख नहीं सकीं। उनके दाँत किटकिटाते और ओंठ बाहर निकल आते। वे अपना पेट पीटती हुई तितर-बितर भाग गयीं। अनेक बेहोश हो गयीं। १०५०

आर्प्पुऱ वञ्जिऩ रडङ्गि ऩार्पलर्
पोर्प्पुऱच् चॅयलिऩैप् पुहल्हिन् ऱार्पलर्
पार्प्पुऱप् पार्प्पुऱप् पयत्ति ऩाऱ्पदैत्
तूर्प्पुऱत् तिरियलुऱ् ऱोडु वार्पलर् 1051

पलर्–अनेक; आर्प्पु उऱ–अधिक कोलाहल के शोर के उठने से; अञ्चिऩर्–डरकर; अटङ्कित्तार्–चुप हो गये; पलर्–अनेक; पोर्–युद्ध में; पुऱ चॅयलिऩै–(हनुमान के) वीरता के कृत्यों को; पुकल्कित्ऱार्–बतलाते; पलर्–अन्य अनेक; पार्प्पु उऱ पार्प्पु उऱ–ज्यों-ज्यों देखते, त्यों-त्यों; पयत्तिऩाल्–डर से; पतैत्तु–थर्राकर; ऊर् पुऱत्तु–नगर के बाहर की ओर; इरियल् उऱ्ऱु–अस्त-व्यस्त होकर; ओटुवार्–भागते। १०५१

लंका में जो तुमुल शोर मचा, उसे सुनकर अनेक जन स्तब्ध रहे। अनेक हनुमान के युद्ध में साहसिक कार्यों का बखान करते रहे। अनेक हनुमान को ज्यों-ज्यों देखते, त्यों-त्यों भयाभिभूत होकर नगर के बाहर की ओर, अस्त-व्यस्त भागे। १०५१

कान्दुऱु कदळॅयिऱ् ऱरविऩ् कट्टॊरु
पून्दुणर् शेर्त्तॅऩप् पॊलियुम् वाण्मुहम्
तेर्न्दुऱु पॊरुळ्पॅऱ् वॅण्णिच् चॅय्युमिऩ्
वेन्दुऱल् पळुदॅऩ विळम्बु वार्शिलर् 1052

कान्तु उऱु–जलानेवाले; कतळ् अॅयिऱ्ऱु–हिंस्र दाँतों वाले; अरविऩ्–सर्प का; कट्टु–बन्धन; ऒरु पूम् तुणर्–एक पुष्पमाला; चेर्त्तु अॅऩ–द्वारा बाँधा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मंगलसूत्रों (अहिवात के चिह्नों) को अलग नहीं करेंगे; ऍन्ऱु–ऐसा कहकर; अऴुम्–रोनेवाली; मातरार्–स्त्रियाँ; पलर्–अनेक रहीं। १०४७

अनेक राक्षस-स्त्रियाँ रोयीं। पर्वत-सदृश सुन्दर और अतिबली हमारे प्राणप्रिय पतियों से हम कभी अलग नहीं हुई थीं। आज से हम वियुक्त हो गयीं। अब हम आतुर नहीं होंगी। पर इसके सिर को ही पीठ बनाकर उस पर बैठेंगी और मंगलसूत्र निकालेंगी। अन्यथा नहीं। १०४७

कॊण्डऩ रॆदिर्शॆलुङ् गॊऱ्ऱ मानहर्, अण्डमुऱ् ऱदुनॆडि दार्क्कु मार्प्पदु
कण्डमुऱ् ऱुळवरुङ् गणवर्क् केङ्गिय, कुण्डल मुहत्तियर्क् कुवहै कूरवे 1048

कॊण्टऩर्–(हनुमान को) ले जानेवालों के; ऍतिर् चॆलुम्–सामने से आनेवाले; कॊऱ्ऱ मा नकर्–विजयी बड़े नगर के (राक्षसों) ने; नॆटितु आर्क्कुम्–उच्च घोष जो निकाला; आर्प्पु अतु–वह शोर; कण्टम् उऱ्ऱु उळ–(हनुमान द्वारा) छिन्न-भिन्न हुए; अरुम् कणवर्क्कु एङ्किय–अपने पतियों के लिए आर्त; कुण्टल मुकत्तियर्क्कु–कर्णकुण्डलालंकृत मुखों वालियों को; उवकै कूर–आनन्द दिलाते हुए; अण्टम् उऱ्ऱतु–अण्ड भर में व्यापा। १०४८

हनुमान को खींचते ले जा रहे थे लोग। तब उनके सामने से जो राक्षस तमाशबीन बनकर आये थे, उन्होंने घोर आनन्दरव उठाया। वह घोष सारे अण्ड में फैला और उसे सुनकर युद्ध में आहत पतियों के लिए तरसनेवाली कर्णकुण्डलालंकृत मुखों की राक्षसी स्त्रियाँ मुदित हुईं। १०४८

वडियुडैक् कऩर्पडै वयवर् माल्करि
कॊडियुडैत् तेर्परि कॊण्डु वीशलिऩ्
इडिपडच् चिदैन्दमाल् वरैयि ऩिल्लॆलाम्
पॊडिपडक् किडन्दऩ कण्डु पोयिऩाऩ् 1049

वटि उटै–तीक्ष्ण; कऩल् पटै–अनल-सम आयुधधारी; वयवर् वीरों; माल् करि–बड़े गजों; कॊटि उटै तेर्–ध्वजायुक्त रथों; परि–अश्वों को; कॊण्टु वीचलिऩ्–(हनुमान ने) उठाकर फेंका था, इसलिए; इटि पट चितैन्त–प्रहार पाकर जो टूटे थे; माल् वरैयिऩ्–बड़े पर्वतों-से; इल् ऍलाम्–सभी घर; पॊटि पट–चूर होकर; किटन्तऩ–जो पड़े रहे वह; कण्टु–देखते हुए; पोयिऩाऩ्–हनुमान जाता रहा। १०४९

हनुमान भी बन्धन में रहकर तमाशा देखता जा रहा था। उसने पहले तीक्ष्ण और अग्निवर्षक हिंस्र हथियारधारी वीरों, बड़े नागों, ध्वजा-सहित रथों और अश्वों को उठा ले फेंका था। वे सब जाकर बड़े पर्वतों के समान प्रासादों को चूर कर गये थे। उस चूर्ण को देखते हुए वह गया। १०४९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुयिऱलैत् तॅळुमुदु मरत्तिन् मॉय्म्बुतोळ्
कयिऱलैप् पुण्डदु कण्डुङ् गाण्गिला
तॅयिऱलैत् तॅळुमिद ऴरक्क रेऴैयर्
वयिऱलैत् तिरियलिन् मयङ्गि ऩार्पलर् 1050

मुयिऱ–माटे (लाल चींटे); अलैत्तु अॅऴु–संकट देते हुए जिस पर चढ़ते हैं; मुतु मरत्तिन्–उस वृद्ध तरु के समान; मॉय्म्पु तोळ्–बलवान कन्धों को; कयिऱ अलैप्पु उण्टतु कण्टुम्–रस्सी पीड़ा देती रहीं, वह देखकर भी; काण्किलातु–विना देखे (डर के कारण); अॅयिऱ अलैत्तु अॅऴुम्–दाँत के किटकिटाने से बाहर निकले हुए; इतऴ्–ओठों वाली; अरक्कर् एऴैयर्–राक्षस-स्त्रियाँ; वयिऱ अलैत्तु–पेट पीटकर; इरियलिन्–अस्त-व्यस्त भागीं, इसलिए; पलर् मयङ्कित्तार्–अनेक बेहोश हो गयीं। १०५०

एक वृद्ध तरु को माटे (लाल चींटे) जैसे रस्सी हनुमान को बाँधकर संकट देती रही। राक्षसियाँ देखना चाहतीं पर देख नहीं सकीं। उनके दाँत किटकिटाते और ओंठ बाहर निकल आते। वे अपना पेट पीटती हुई तितर-बितर भाग गयीं। अनेक बेहोश हो गयीं। १०५०

आर्प्पुऱ वञ्जित्त रडङ्गि ऩार्पलर्
पोर्प्पुऱच् चॅयलिऩैप् पुहल्हिन् ऱार्पलर्
पार्प्पुऱप् पार्प्पुऱप् पयत्ति ऩाऱ्पदैत्
तूर्प्पुऱत् तिरियलुऱ् ऱोडु वार्पलर् 1051

पलर्–अनेक; आर्प्पु उऱ–अधिक कोलाहल के शोर के उठने से; अञ्चित्तर्–डरकर; अटङ्कित्तार्–चुप हो गये; पलर्–अनेक; पोर्–युद्ध में; पुऱ चॅयलिऩै–(हनुमान के) वीरता के कृत्यों को; पुकल्कित्ऱार्–बतलाते; पलर्–अन्य अनेक; पार्प्पु उऱ पार्प्पु उऱ–ज्यों-ज्यों देखते, त्यों-त्यों; पयत्तित्ताल्–डर से; पतैत्तु–थर्राकर; ऊर् पुऱत्तु–नगर के बाहर की ओर; इरियल् उऱ्ऱु–अस्त-व्यस्त होकर; ओटुवार्–भागते। १०५१

लंका में जो तुमुल शोर मचा, उसे सुनकर अनेक जन स्तब्ध रहे। अनेक हनुमान के युद्ध में साहसिक कार्यों का बखान करते रहे। अनेक हनुमान को ज्यों-ज्यों देखते, त्यों-त्यों भयाभिभूत होकर नगर के बाहर की ओर, अस्त-व्यस्त भागे। १०५१

कान्दुऱु कदऴैयिऱ् ऱरवित् कट्टॊरु
पून्दुणर् शेर्त्तॅऩप् पॊलियुम् वाण्मुहम्
तेर्न्दुऱु पॊरुऴपॅऱ वॅण्णिच् चॅय्युमिन्
वेन्दुऱल् पऴुदॅऩ विळम्बु वार्शिलर् 1052

कान्तु उऱु–जलानेवाले; कतऴ् अॅयिऱ्ऱु–हिंस्र दाँतों वाले; अरवित्–सर्प का; कट्टु–बन्धन; ऒरु पूम् तुणर्–एक पुष्पमाला; चेर्त्तु अॅऩ–द्वारा बाँधा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गया हो जैसे; वाण् मुकम्–उज्ज्वल-मुख (हनुमान को); पॊलियुम्–शोभायमान है; उऱु पॊरुळ् पॆऱ–उचित हित-प्राप्त्यर्थ; तेर्न्तु ऍण्णि–अच्छी तरह सोचकर; चॆय्युमिन्–(कार्य) करो; वेन्तु उऱल्–(इस स्थिति में) राजा के पास जाना; पऴुतु–गलत है; ऍऩ–ऐसा; विळम्पुवार्–कहते; चिलर्–कुछ राक्षस। १०५२

कुछ राक्षसों ने कहा कि यह जलाने के स्वभाव के दाँतों के सर्प का बन्धन है। तो भी इस बन्दर का प्रकाशमय मुख ऐसा भासमान है, मानो कोमल पुष्पदाम से बाँधा गया हो। सोचो खूब और अच्छा फलदायी काम करो। इसी स्थिति में इसको लेकर राजा के पास जाने का काम ग़लत होगा। १०५२

ऒळिवरु नाहत्तिऱ् कॊल्ह लुण्मैयन्
ऱॆळिवर लन्ऱिद ऩॆण्णम् वेऱॆऩाक्
कळिवरु शिन्दैयाऱ् काण्डि नङ्गळैच्
चुळिहिलै यामॆऩत् तॊऴुहिन् ऱार्शिलर् 1053

ऒळिवु अरु–जो छिपा नहीं है; नाकत्तिऱ्कु–उस नाग (ब्रह्मास्त्र) से; ऒल्कल्– दुःखी (सा) रहना; उण्मै अऩ्ऱु–सत्य नहीं (लगता); ऍळिवरल् अऩ्ऱु–इतना दुर्बल नहीं; इतऩ् ऍण्णम् वेऱु–इसका तात्पर्य और है; ऍऩा–सोचकर; चिलर्–कुछ राक्षसों ने; कळि वरु चिन्तैयाल्–प्रसन्नचित्त हो; काण्टि–हम पर दृष्टि रखो; नङ्कळै–हम पर; चुळिकिलै–कोपदृष्टि मत डालो; ऍऩ–कहकर; तॊऴुकिन्ऱार्–नमस्कार किया। १०५३

यह ब्रह्मास्त्र का नाग परोक्ष रूप से नहीं प्रत्यक्ष रूप से उसको कस रहा है। तो भी इसका दुःखी-सा दिखना ढोंग ही है, सत्य नहीं है। इसको बाँधना उतना हल्का कार्य नहीं है। इसका छिपा तात्पर्य दूसरा कुछ होगा —यह कहकर कुछ राक्षसों ने सीधे हनुमान से विनय की कि हम पर प्रसन्नचित्त दृष्टि रखो। कोप की दृष्टि मत डालो। वे हनुमान को नमस्कार करते। १०५३

पॆङ्गऴ लनुमऩैप् पिणित्त पान्दळैक्
किङ्गर ऱॊरुपुडैक् किळर्न्दु पऱ्ऱिऩार्
ऐम्बदि ऩायिर रळवि लाऱ्ऱलर्
मॊय्म्बिऩि ऩॆऱुऴ्वलिक् करुळऩ् मुम्मैयार् 1054

पॆम् कऴल्–चमकदार (स्वर्ण) पायलधारी; अनुमऩै–हनुमान को; पिणित्त पान्तळै–जो बद्ध कर रहा था, उस सर्प को; मॊय्म्पितिऩ्–पराक्रम में; ऍऱुऴ् वलि करुळऩ्–अतिबली गरुड़ के; मुम्मैयार्–तिगुने बलशाली; अळवु इल् आऱ्ऱलर्–अपार साहसी; किङ्करर् ऐम्पतिऩायिरर्–पचास सहस्र किंकर; ऒरु पुटै–एक तरफ़; किळर्न्तु– मिलकर; पऱ्ऱिऩार्–पकड़ ले चले। १०५४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जब यह सब हो रहा था तब पचास सहस्र किंकर, जो बल में गरुड़ के तिगुने थे, चमकदार स्वर्णपायलधारी हनुमान को उसके नाग-बन्धन के साथ एक ओर मिलकर खींचते चले जा रहे थे। १०५४

तिण्डिऱ् लरक्करदञ् जॅरुक्कुच् चिन्दुवान्
तण्डलि ऱन्नुरुक् करन्द तन्मैयान्
मण्डमर् तॊडङ्गिय वान्न रत्तुरुक्
कॊण्डन्न न्नदहन् कॊल्लॅन् ऱार्पलर् 1055

तिण् तिऱल्–अतिबली; अरक्कर् तम्–राक्षसों का; चॅरुक्कु–घमंड; चिन्तुवान्–चूर करने के लिए; अन्तकन्–यम; तण्टल् इल्–अबाध; तन् उरु–अपना रूप; करन्त–छिपाने की; तन्मैयान्–स्थिति में; मण्टु अमर्–घमासान युद्ध; तॊटङ्किय–प्रारम्भ जिसने किया उस; वान्नरत्तु उरु–वानर का रूप; कॊण्टन्न् कॊल्–ले गया है क्या; ऍन्ऱार् पलर्–कहा अनेक ने। १०५५

अनेक कहते कि अतिबली राक्षसों का गर्व चूर करने हेतु यमराज अपना अवारित रूप छिपा लेकर युद्धकर्ता हनुमान का रूप ले आया है, शायद ! । १०५५

अरमियत् तलन्दॊऱु मम्बॊन् माळिहैत्
तरमुऱु निलन्दॊऱुञ् जाळ रन्दॊऱुम्
मुरशॅऱि कडैदॊऱु मिरैत्तु मॊय्त्तन्नर्
निरैवळै महळिरु निरुदर् मैन्दरुम् 1056

निरै वळै–पंक्तियों में चूडाधारिणी; मकळिरुम्–राक्षस-रमणियाँ और; निरुतर् मैन्तरुम्–तरुण राक्षस लोग; अरमिय तलम् तॊऱुम्–हर्म्य-हर्म्य में; अम् पॊन् माळिकै–सुन्दर स्वर्ण-महलों के; तरम् उऱु–श्रेष्ठ; निलम् तॊऱुम्–स्थानों में; चाळरम् तॊऱुम्–गवाक्षों में; मुरचु ऍऱि–भेरियाँ जहाँ बजती हैं, उन; कटै तॊऱुम्–स्थानों में; इरैत्तु–शोर मचाते हुए; मॊय्त्तन्नर्–आकर भर गई। १०५६

राक्षस-रमणियाँ, जिनके हाथों को पंक्तियों में कंकण अलंकृत कर रहे थे और राक्षस तरुण हर्म्यों में, स्वर्ण प्रासादों के श्रेष्ठ स्थलों में और झरोखों में, गवाक्षों में, भेरियों के बजने के स्थानों में —सर्वत्र कोलाहल करते हुए आ जुटे। १०५६

कयिलैयि न्नॊरुदनिक् कणिच्चि वान्नवन्
मयिलियऱ् चीदैदन् कऱ्पिन् माट्चियाल्
ऍयिलुडैत् तिरुनहर् चिदैप्प वॅय्दिनन्
अयिलॅयिऱ् ऱॊरुकुरङ् गायॅन् बार्पलर् 1057

कयिलैयिन्–कैलासपति; ऒरु तनि–अद्वितीय; कणिच्चि वान्नवन्–परशुधर ईश्वर; मयिल् इयल्–मयूराभा; चीतै तन्–सीतादेवी के; कऱ्पिन् माट्चियाल्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पातिव्रत्य के गौरव से; अयिल् ऍयिऱ्ऱु–तीक्ष्ण दाँतों के; ऑरु कुरङ्काय्–एक वानर बनकर; ऍयिल् उटै–प्राचीर-सह; तिरुनकर्–श्रीयुक्त नगर (लंका) को; चितैप्प–तहस-नहस करने; ऍय्तितन्–आये हैं; ऍऩ्पार् पलर्–कहते अनेक। १०५७

कुछ लोगों ने अनुमान लगाया। कैलासपति परशुधर परमेश्वर, सीताजी के पातिव्रत्य की महिमा से, तेज़ दाँतों वाला हरि बनकर प्राचीर-वलयित श्रीयुक्त लंका नगर को मिटाने आये हैं। १०५७

अरम्बैयर् विज्जै नाट्टळह वल्लियर्
नरम्बिनु मिऩियशॊऩ् ऩाह नाडियर्
करुम्बिशैच् चित्तिय रियक्कर् कऩ्ऩियर्
वरम्बऱु शुम्मैयर् तलैम यङ्गिऩार् 1058

अरम्पैयर्–अप्सराएँ; विज्चै नाट्टु–विद्याधरलोक की; अळक वल्लियर्–सुकेशिनी, लता-सी स्त्रियाँ; नरम्पिऩुम्–तंत्री से भी; इऩिय चॊल्–मधुरभाषिणी; नाक नाटियर्–नागलोक-वासिनियाँ; करुम्पु इचै–इक्षुरस-सम मधुर गानेवाली; चित्तियर्–सिद्धस्त्रियाँ; इयक्कर् कऩ्ऩियर्–यक्षदयिताएँ; वरम्पु अऱु–असीम; चुम्मैयर्–भीड़ बनी; तलै मयङ्किऩार्–स्थान-स्थान में मिली रहीं। १०५८

अप्सराएँ, विद्याधरलोक की सुकेशिनी, लता-समाना नारियाँ, तन्त्री (वीणा) से भी मधुर बोली वाली नागकन्याएँ, इक्षुरस-तुल्य स्वर वाली सिद्धस्त्रियाँ, यक्षकुल-दयिताएँ —आदि सभी बड़ी भीड़ में आकर जुड़ी रहीं और मिश्रित खड़ी रहीं। १०५८

नीरिडैक् कण्डुयि ऩॆडिय नेमियुम्
तारुडैत् तऩिमल रुलहिऩ् ऱादैयुम्
ओरुडऱ् कॊण्डुदम् मुरुव माऱिऩर्
पारिडैप् पुहुन्दऩर् पहैत्तॆऩ् बार्पलर् 1059

नीर् इटै–(प्रलय-)जलमध्य; कण् तुयिल्–(योग-)निद्रारत; ऩॆटिय नेमियुम्–बड़े चक्रधारी और; तऩि मलर्–श्रेष्ठ पुष्पों की; तार् उटै–मालाधारी; उलकिऩ् तातैयुम्–लोकपिता ब्रह्मा और; ओर् उटल् कॊण्टु–एक शरीर बन; तम् उरुवम् माऱिऩर्–अपना रूप बदलकर; पारिटै पुकुन्तऩर्–भूमि में (अवतरित हो) आये हैं; पकैत्तु–लड़ने से; ऍऩ्–क्या होगा; ऍऩ्पार्—कहते; पलर्–अनेक। १०५९

प्रलयप्रवाह-मध्य योगनिद्रारत विपुल चक्रधर श्रीविष्णु, और अनुपम कमलपुष्पदामधारी लोकपिता ब्रह्मा दोनों एक शरीर हो अपना रूप बदलकर भूमि पर इस वानर के रूप में अवतरित हो आये हैं। इससे लड़ने से क्या होगा? —ऐसा अनेक ने कहा। १०५९

अरक्करु मरक्कियर् कुळामु मल्लवर्
करक्किलर् ऩॆडुमळैक् कण्णि ऩीरदु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विरैक्कुळऱ् चीदैदन् मॅलिवु नोक्कियो
इरक्कमो वऱत्तिन दॅण्मै येहॊलो 1060

अरक्करुम्–राक्षस नरों; अरक्कियर् कुळामुम्–और नारियों के दलों के; अल्लवर्–जो नहीं रहे वे (देव आदि); नॅटु मळै–निरन्तर वर्षा के समान; कण्णिन् नीर् अतु–आँखों के आँसुओं को; करक्किलर्–नहीं छिपाते (रोकते); विरै कुळल्–सुवासित केशिनी; चीतै तन्–सीता का; मॅलिवु नोक्कियो–दुःख देखकर; इरक्कमो–या (हनुमान के प्रति) सहानुभूति; अऱत्तिन्–धर्म-सम्बन्धी; ऍण्मैये कॊलो–विचार क्या। १०६०

राक्षस पुरुषों और स्त्रियों से अन्य (देवादि) लोगों ने अपनी आँखों से आँसू को बहने से नहीं रोका (न छिपाया)। वे क्यों दुःख कर रहे थे? सुगन्धित केशिनी सीता का कष्ट देखकर, या हनुमान की सहानुभूति में; या धर्म का विचार करके? । १०६०

आण्डॊळि लनुमनु मवरॊ डेहिनान्
मीण्डिलन् वेऱॊन्ऱुम् विरुम्ब लुऱ्ऱिलन्
ईण्डिदु वेतॊडर्न्तु तिलङ्गै वॆन्दनैक्
काण्डले नलनॆनक् करुत्ति नॆण्णिनान् 1061

आण् तॊळिल् अनुमनुम्–पुरुषयोग्य कार्य करनेवाले हनुमान ने भी; मीण्टिलन्–न लौटकर; वेऱु ऒन्ऱुम्–और कुछ; विरुम्पल् उऱ्ऱिलन्–नहीं चाहता हुआ; ईण्टु–यहाँ; इतुवे तॊटर्न्तु–इसी क्रम को अपनाकर; इलङ्कै वेन्ततै–लंका के राजा को; काण्टले–देखना ही; नलन् ऍन–भला है, ऐसा; करुत्तिन् ऍण्णिनान्–मन में सोचा; अवरॊटु एकिनान्–उनके साथ गया। १०६१

पुरुषोचित कार्यदक्ष महावीर ने न लौटना चाहा, न और ही कुछ। "हम इसी क्रम में जायँगे और लंका के राजा से मिलेंगे। यही अच्छा है।" —यह सोचकर वह उनके साथ चुपचाप गया। १०६१

ऍन्दैय दरुळिनु मिरामन् शेवडि, शिन्दैशॆय् नलत्तिनुन् देव रीन्दन
मुन्दुळ वरत्तिनुम् बाश मुऱ्ऱुऱच्, चिन्दुवॆ नयर्वुऱु शिन्दै शीरिदाल् 1062

ऍन्तै अतु अरुळिनुम्–मेरे पिता (वायुदेव) की कृपा से; इरामन् चे अटि–श्रीराम के श्रेष्ठ चरणों के; चिन्तै चॆय्–स्मरण करने से प्राप्त; नलत्तिनुम्–पुण्यप्रताप से; तेवर् ईन्तन–देव-दत्त; मुन्तु उळ–पूर्व के; वरत्तिनुम्–वरों के बल से; पाचम्–पाश को; मुऱ्ऱु उऱ–पूर्ण रूप से; चिन्तुवॆन्–छिन्न कर दूँगा; अयर्वु उऱु–(पर) थकित (सा) रहने का; चिन्तै–यह विचार; चीरितु–अच्छा है। १०६२

उसने यह भी सोचा कि अपने पिताजी की कृपा, श्रीराम के उत्तम चरण-स्मरण के प्रभाव और देव-प्रदत्त प्राचीन वरों के प्रताप से मैं इस पाश को छिन्न-भिन्न कर सकता हूँ। पर थकित-सा रहने का यह विचार ही ठीक है। १०६२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वळैयॅयिऱ् ऱरक्कनै युऱ्ऱु मन्दिरत्, तळवऱु मुदियरु मऱिय वाणैयाल्
विळैवन विळम्बिनान् मिदिलै नाडियै, इळहिन नॅन्वयि नीद लेयुमाल् 1063

वळै ॲयिऱ्ऱु–वक्र दाँतों वाले; अरक्कनै–राक्षस (राजा) के पास; उऱ्ऱु–जाकर; मन्तिरत्तु–मंत्रणा-सभा में; अळवु अऱु–अपार; मुतियरुम्–वृद्धों के; अऱिय–जाने; आणैयाल्–(श्रीराम की) आज्ञा से; विळैवन–होनेवाली बातें; विळम्पिनाल्–कहें तो; इळकिनन्–मन में पसीजकर; मितिलै नाटियै–मिथिलाकुमारी को; ॲन् वयिन्–मेरे पास; ईतल् एयुम्–शायद दे भी दे, यह सम्भव है। १०६३

वक्रदन्त रावण के पास जाऊँगा। वहाँ मंत्री-सभा में अगणित वृद्ध रहेंगे। उनके जाने अगर मैं श्रीराम की आज्ञा के संभाव्य नतीजों का वर्णन करूँ तो रावण का मन नरम हो जाय और शायद वह मिथिला-सुता को मेरे पास सौंप भी दे। १०६३

अल्लदुउ मवनुडैत् तुणैव रायिनार्क्, कॅल्लैयुन् दॅरिवुरु मॅण्णुन् देऱलाम्
वल्लव निलैमैयु मनमुन् देऱलाम्, शॊल्लुह मुहमॅन्नुन् दूदु शॊल्लवे 1064

अल्लतूउम्–उसके अलावा; अवनुटै–उसके; तुणैवर्–सहायक; आयिनार्क्कु–जो बने हैं, उनके; ॲल्लैयुम्–(प्रताप की) सीमा भी; तॅरिवुरुम्–जानी जा सकेगी; ॲण्णुम् तेऱलाम्–संख्या भी जान सकते; मुकम् ॲनम्–मुख जो कहा जाता है; तूतु चॊल्लवे–वह दूत मैं जाकर कहूँ तो; चॊल् उक–उसके वचन निकलेंगे तब; वल्लवन् निलैमैयुम्–प्रतापी उसकी स्थिति और; मनमुम्–मनोभाव; तेऱलाम्–समझ सकते हैं। १०६४

अलावा, उसके सहायकों की स्थिति और संख्या भी जान सकेंगे। दूत राजा का मुख कहा जाता है। वैसा मैं राजाराम का संदेश सुनाऊँ तो तब प्रतापी रावण के मुख से जो शब्द निकलेंगे, उनसे उसकी स्थिति और उसके मनोगत भाव भी समझे जा सकते हैं। १०६४

वालितन् निऱुदियुम् मरत्तिऱ् कुऱ्ऱुम्
कूलवॅञ् जेनैयिन् कुणिप्पि लामैयुम्
मेलवन् कादलन् वलियुम् मेन्मैयुम्
नीनिऱत् तिरावण नॅञ्जिऱ् ऱैक्कुमाल् 1065

वालि तन्–वाली का; इऱुतियुम्–अन्त और; मरत्तिऱ्कु–(सातों साल-) तरुओं का; उऱ्ऱुतुम्–जो हाल हुआ, वह; वॅम्–कठोर; कूल चेनैयिन्–लंगूर-सेना की; कुणिप्पु इलामैयुम्–अगणितता और; मेलवन्–ऊपर स्थित सूर्य के; कातलन् वलियुम्–पुत्र का बल; मेन्मैयुम्–और गौरव; नील् निऱत्तु–काले रंग के; इरावणन् नॅञ्चिल्–रावण के मन में; तैक्कुम्–चुभेंगे (प्रभाव डालेंगे)। १०६५

वाली-वध, सालवृक्षों का बेधन, भयंकर लंगूर-सेना की अगणितता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और सूर्यसूनु का बल-विक्रम और गौरव —यह सारी बातें नील वर्ण रावण के मन में बिठायी जा सकती हैं। १०६५

आदला नरक्कनै यॅय्दि याऱ्ऱलुम्
नीदियु मनक्कॉळ निऱुवि निन्ऱदिल्
पादियिन् मेऱ्चॅल नूऱिप् पयप्पयप्
पोदले करुममॅन् ऱनुमन् बोयिनान् 1066

आतलाल्–इसलिए; अरक्कनै ॲय्ति–राक्षस के पास जाकर; आऱ्ऱलुम्–(श्रीराम का) पराक्रम और; नीतियुम्–न्याय; मनम् कॉळ–समझाते हुए; निऱुवि स्थिर करके; निन्ऱतिल्–जो बची रही; पातियिन् मेल् चॅल–उस सेना की आधी से अधिक को; नूऱि–मारकर; पयप्पय–धीरे-धीरे; पोतले–जाना ही; करुमम्–करणीय है; ॲन्ऱु–ऐसा सोचकर; अनुमन्–हनुमान; पोयिनान्–चुप जाता रहा। १०६६

इसलिए रावण के पास जाकर श्रीराम का पराक्रम और उनकी नय आदि उसके मन में घर कर ले, ऐसा समझाऊँगा। (अगर कुछ असर नहीं हो तो) जो सेना इस युद्ध के बाद बची है, उसमें से आधी से अधिक को मिटाकर धी रे-धीरे जाना ही मेरा करणीय कार्य है। —ऐसा सोचते हुए हनुमान गया। १०६६

कडवुळर्क् करशनैक् कडन्द तोन्ऱलुम्
पुडैवरुम् बॅरुम्बडैप् पुणरि पोर्त्तॅळ
विडैपिणिप् पुण्डदु पोलुम् वीरनैक्
कुडैहॅळु मन्ननिऱ् कॉण्डु पोयिनान् 1067

कटवुळर्क्कु अरचनै–देवराज को; कटन्त–जिसने हराया; तोन्ऱलुम्–वह राक्षसराजकुमार भी; पुटै वरुम्–पार्श्व में आनेवाली; पॅरुम् पटै पुणरि–बहुत बड़ी सेना-सागर के; पोर्त्तु ॲळ–घेरकर शोर के साथ आते; विटै–ऋषभ; पिणिप्पु उण्टतु–बन्धन में आ गया जैसे; पोलुम्–रहनेवाले; वीरनै–महावीर को; कुटै कॅळु–विजयचिह्नक छत्रशोभित; मन्नन् इल्–राजा के महल में; कॉण्टु पोयिनान्–ले गया। १०६७

देवराजविजेता इन्द्रजित् सागर के समान सेना के मध्य रहकर बद्ध ऋषभ-जैसे महावीर को विजयछत्र रावण के महल में ले गया। १०६७

तूदुव रोडिनर् तॉळुदु तॉल्लैनाळ्
मादिरङ् गडन्दवर् कुऱुहि मन्ननिन्
कादलन् मरैमलर्क् कडवुळ् वाळियाल्
एदिल्वा नरम्बिणिप् पुण्ड दामॅन्ऱार् 1068

तूतुवर्–(इन्द्रजित् के) दूत; ओटिनर्–दौड़े; तॉल्लै नाळ्–प्राचीन दिन के;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मातिरम् कटन्तवन्–दिग्विजयी रावण के; कुडुकि–पास जाकर; तॊळुतु–नमस्कार करके; मन्न–राजा; निन् कातलन्–आपके पुत्र ने; मरै मलर्–कमलपुष्प के स्वामी; कटवुळ्–ब्रह्मा देवता के; वाळियाल्–अस्त्र द्वारा; एतिल् वानरम्–द्वेषपूर्ण वानर; पिणिप्पुण्टतु–बाँध लिया गया है; ऍन्ऱार्–बोले। १०६८

इन्द्रजित्-प्रेषित दूत दौड़े। दिग्विजयी रावण के पास जाकर नमस्कार किया। निवेदन किया कि राजा ! आपके सुपुत्र ने कमलासन ब्रह्मा के अस्त्र द्वारा द्वेषपूर्ण वानर को बाँध दिया है। १०६८

केट्टलुङ् गिळर्शुडर् कॆट्ट वानॆन
ईट्टिरुळ् विळुङ्गिय मार्बिन् यानैयिन्
कोट्टॊडुम् पॊरुदपे रारङ् गॊण्डॆदिर्
नीट्टिन नुवहैयि निमिर्न्द नॆञ्जिनान् 1069

केट्टलुम्–सुनते ही; उवकैयिल्–आनन्द से; निमिर्न्त–फूले हुए; नॆञ्चिनान्–दिल वाला होकर; किळर् चुटर्–विकासशील प्रभा से; कॆट्ट वान्–रहित आकाश को; ईट्टु इरुळ्–पुंजीभूत अंधकार ने; विळुङ्किय ऍन–निगल लिया जैसे; मार्पिन्–अपने वक्ष में; यानैयिन् कोटु ऒटुम् पॊरुत–दिग्गजों के दाँतों के साथ भिड़ते रहे; पेर् आरम् कॊण्टु–बड़े हार को लेकर; ऍतिर् नीट्टिनन्–(उस दूत के) आगे बढ़ाया (रावण ने)। १०६९

यह सुनते ही रावण का वक्ष फूल उठा। मन आनन्द से भर गया। वर्धनशील तेजपुंज सूर्य और चन्द्ररहित आकाश को अन्धकार लील गया जैसे रहा उसका विशाल वक्ष। उसमें दिग्गजों के दाँत जड़े गये थे। उन पर एक बड़ी मुक्तामाला हिलकर उनको रगड़ रही थी। रावण ने उसको निकालकर उस दूत के सामने बढ़ाया। (दूत अनेक आये, ऐसा ही लगता है। पर शायद सन्देश एक ही ने सुनाया और उसे ही हार दिया गया।)। १०६९

ऍल्लैयि लुवहैया लिवर्न्द तोळिनन्
पुल्लुऱ मलर्न्दहट् कुमुदप् पूविनान्
ऒल्लैयि नॊडिनी रुरैत्तॆन्
नाणैयाल्
कॊल्ललै तरुहॆनक् कूऱु वीरॆन्ऱान् 1070

ऍल्लै इल्–निस्सीम; उवकैयाल्–आनन्द से; इवर्न्त–जो फूल उठे; ऐसे; तोळिनन्–कन्धों वाले; पुल्लुऱ मलर्न्त–लस कर खिले; कळ्–शहद-भरे; कुमुत पूविनान्–कुमुद-पुष्प हाथ में रखनेवाले (रावण) ने; ऒल्लैयिल्–अतिशीघ्र; नीर् ओटि–तुम दौड़ो; ऍन् आणैयाल्–मेरी आज्ञा द्वारा; उरैत्तु–कहकर; कॊल्ललै–मत मारो; तरुक–ला दो; ऍन–ऐसा; कूऱुवीर्–कहो; ऍन्ऱान्–कहा। १०७०

अपार आनन्द से उसके कन्धे फूल उठे। उसके हाथ में (जैसे रिवाज था) लस कर विकसित और शहद-भरा कुमुदपुष्प था। रावण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ने उनसे कहा कि भागो और मेरा आदेश (इन्द्रजित् को) सुनाओ। वानर को न मारकर इधर जीवित लाया जाय। १०७०

अव्वुर तूदरु माणै याल्वरुम्, तॅव्वुरै नीक्किना नरियच् चॅप्पिनार्
इव्वुरै निहळ्वुळि यिरुन्द शीदैयाम्, वॅव्वुरै नीङ्गिना णिलैधि ळम्बुवाम् 1071

तूतरुम्–दूतों ने भी; आणैयाल्–(रावण की) आज्ञा के अनुसार; अ उरै–उस आदेश-वचन को; वरुम्–(अपने सामने हनुमान को ले) आते हुए; तॅव् उरै–'शत्रु' का नाम ही; नीक्किनान्–जिसने मिटा दिया, उस इन्द्रजित् से; अरिय चॅप्पिनार्–समझाते हुए कहा; इ उरै निकळ् उळि–जब यह बात चल रही थी; इरुन्त चीतैयाम्–(जो अशोक वन में) रहीं उन सीता; वॅव् उरै नीङ्किनाळ्–अनिन्द्य देवी की; निलै–स्थिति; विळम्पुवाम्–कहेंगे। १०७१

दूत रावण की आज्ञा ले गये। सामने इन्द्रजित् आ रहा था जिसने शत्रु का अभाव कर रखा था। उन्होंने इन्द्रजित् से रावण के आदेश-वचन कहे। यहाँ यह बातें हो रही थीं। तब अशोक वन में जो अनिंद्य सीताजी रहीं; उनकी स्थिति बताएँगे। १०७१

इरुत्तनन् कडिपॊळि लॅण्णि लोर्पड
ऒरुत्तन नॅन्रुकॊण् डुवक्किन् राळुयिर्
वॅरुत्तनळ् शोर्वुर वीरर् कुर्रवैक्
करुत्तलिल् शिन्दैयाळ् कवन्रु कूरिनाळ् 1072

कटि पॊळिल् इरुत्तनन्–सुगन्धपूर्ण अशोक वन का नाश किया; ऍण् इलोर्–असंख्य राक्षसों को; पट–मिटाते हुए; ऒरुत्तनन्–मार डाला; ऍन्रु कॊण्टु–ऐसा जान लेकर; उवक्किन्राळ्–जो हर्षित रहीं उनसे; करुत्तल् इल् चिन्तैयाळ्–कोप या घृणा से काला जिसका मन कभी न हुआ (उस त्रिजटा ने); उयिर्–वॅरुत्तनळ्–जीवित रहने से उचटकर; चोर्वु उर–लट जाएँ, ऐसा; वीररुकु–महावीर को; उर्रतै–जो हुआ; कवन्रु–व्यग्रता के साथ; कूरिनाळ्–कहा। १०७२

देवी ने जब जाना कि हनुमान ने सुगन्धपूर्ण अशोक वन का नाश किया और असंख्यक राक्षसों को मार डाला, तब वह बहुत हर्षित हुईं। पर उनसे कोप या घृणा से जिसका मन काला नहीं हुआ था, उस त्रिजटा ने व्यग्रता के साथ महावीर हनुमान को जो हुआ, वह वृत्तान्त बताया। यह सुनकर देवी जीवन से ही उचट गयीं और बहुत लट गयीं। १०७२

ओवि यम्बुहै युण्डदु पोलवोर्
पूविन् मॅल्लियन् मेनि पॊडियुरप्
पावि वेडन्गैप् पार्प्पुर वॅय्दुरुम्
तूवि यन्नमन् नाळिवै शॊल्लिनाळ् 1073

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ओर् पूवित्-एक पुष्प-तुल्य; मॅल्लियल् मेनि-कोमल शरीर; ओवियम्-चित्र; पुकै उण्टतु-धुएँ से ढँक गया; पोल-जैसे; पॉटि उऱ-स्वेदयुक्त हुआ; पावि वेटन् कै-पापी विराध के हाथ में; पार्प्पु उऱ-अपने बच्चे के लगने से; वॅय्तु उऱुम्-व्याकुल रहनेवाली; तूवि अन्नम्-कोमल परों वाली हंसिनी के; अन्नाळ्-समान जो रहीं; इवै चॊल्लिनाळ्-(वे सीताजी) यों बोलीं। १०७३

उनके पुष्प-सम कोमल शरीर पर पसीना निकल आया और वे धुएँ में छिपे चित्र के समान निष्प्रभ हुईं। वह उस कोमल पैरों वाली हंसिनी की-सी स्थिति में, जिसका पोटा किसी पापी व्याध के हाथ लग गया हो। वे यों बोलीं। १०७३

उऱ्ऱुण् डाय विशुम्बै युरुविनाय्, मुऱ्ऱुण् डाय्हलै यावैयु मुऱ्ऱुऱक्
कऱ्ऱुण् डायॊरु कळ्ळ वरक्कनाल्, पऱ्ऱुण् डायिदु वोवऱप् पान्मैये 1074

उऱ्ऱु-अन्य भूतों को अपने में लिये; उण्टाय-जो पहले उत्पन्न हुआ; विचुम्पै-उस आकाश को; उरुविनाय्-व्याप्त रहकर; मुऱ्ऱुण्टाय्-उसके ऊपर गये; कलै यावैयुम्-सभी (६४) कलाओं को; मुऴुतुऱ-पूर्ण रूप से; कऱ्ऱुण्टाय्-(सूर्य से) सीख लिया; ऒरु कळ्ळ अरक्कनाल्-एक चोर राक्षस द्वारा; पऱ्ऱुण्टाय्-बन्धन में डाल दिये गये; इतुवो-क्या यही; अऱ पान्मै-धर्म की व्यवस्था है। १०७४

आकाश अन्य भूतों को अपने में लेकर सबसे पहले प्रकट हुआ था। तुम उस आकाश को व्यापकर उसके ऊपर भी गये। चौसठों कलाओं को तुमने सूर्य के सामने उनकी ओर मुख किये पीछे विना मुड़े चलते हुए सूर्य से सीखीं। ऐसे तुम एक चोर राक्षस द्वारा बन्धन में डाल दिये गये। क्या यही धर्म की व्यवस्था है ? । १०७४

कडल्ह डन्दु पुहुन्दनै कण्डहर्, उडल्ह डन्दुनिन् ऱूऴि कडन्दिलै
अडल्ह डन्द तिरळ्पुयत् तण्णनी, इडर्ह डन्दिलै वन्दिड रेलुमो 1075

अटल् कटन्त-शत्रुबलपारंगत; तिरळ् पुयत्तु-पुष्ट कन्धों के; अण्णल्-महिमावान; कटल् कटन्तु-सागर पार करके; पुकुन्ततनै-आये; कण्टकर्-कंटक लोगों के; उटल् कटन्तु निन्ऱु-शरीरों को नष्ट करके रहने पर भी; ऊऴि कटन्तिलै-आयु के उस पार नहीं हुए; नी इटर् कटन्तिलै-तुम दुःख को तर नहीं गये; इटर् वन्तु-(क्या तुम पर भी) संकट आ; एलुमो-लग सकेगा। १०७५

तुम समुद्र तरकर इधर आये। कंटकों के शरीरों को विक्षत किया, पर अपनी आयु के उस पार नहीं गये (तुम जीवित रहे)। तो भी तुम कष्टों के उस पार जा नहीं पाये क्या ? क्या तुम पर भी संकट आ सकता है ? । १०७५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आऴि काट्टियॆन् ऩारुयिर् काट्टिऩाय्, ऊऴि काट्टुवॆ ऩॆऩ्ऱुरैत् तेऩ्ऱु
वाऴि काट्टुव दुण्डुऩ् वरैप्पुयप्, पाऴि काट्टिप् पऴियैयुङ् गाट्टिऩाय् 1076

आऴि काट्टि–(श्रीराम की) मुँदरी दिखाकर; ऎऩ् आर् उयिर् काट्टिऩाय्–मेरे प्यारे प्राण दिखाये (बचाये); ऊऴि काट्टुवॆऩ्–युग-युग दिखाऊँगी (जीवित रहने का वर दूँगी); ऎऩ्ऱु उरैत्तेऩ्–ऐसा कहा मैंने; अतु–वह (आशीर्वाद); वाऴि काट्टुवतु–चिरंजीवता दिखाएगा; उण्टु–अवश्य होगा; उऩ्–तुम्हारे; वरै पुय पाऴि–पर्वत-सम हाथों का बल; काट्टि–दिखाकर; पऴियैयुम्–अपयश भी; काट्टिऩाय्–पैदा कर लिया, तुमने। १०७६

तुमने श्रीराम की मुँदरी दिखायी और मेरे प्राणों को भी दिखाया (दिलाया)। मैंने तुमको आशीर्वाद दिया कि तुम्हें अनेक युग दिखाऊँगी (युगों तक जीवित रहोगे)। वह तुम्हें अनेक युगों को दिखायगा भी (युगों तक जीवित रखेगा)। तुम अपना महान् भुजबल दिखाने चले और निन्दा दिखवा ली। (इसमें काट्टु— दिखाना, जीवित रखना, दिलाना, प्राप्त करना आदि अनेक अर्थों को व्यंजना और लक्षणा के आधार पर देता है।)। १०७६

कण्डु पोयिऩै नीणॆऱि काट्टिड, मण्डु पोरि ऩरक्कऩै माय्त्तॆऩैक्
कॊण्डु मऩ्ऩवऩ् पॊमॆऩुङ् गॊळ्हैयैत्, तण्डि ऩायॆऩक् कारुयिर् तन्दनो 1077

ऎऩक्कु–मुझे; आर् उयिर् तन्त–प्यारा प्राणदान करके; नी–तुम; कण्टु पोयिऩै–मुझसे मिलकर गये; मण्टु पोरिऩ्–घमासान युद्ध में; अरक्कऩै–राक्षस को; माय्त्तु–मारकर; नीळ् ऩॆऱि काट्टिट–लम्बा (यमराज्य का) मार्ग दिखाकर; ऎऩै–मुझे; मऩ्ऩवऩ्–राजा (राम); कॊण्टु पोम्–ले जाएँगे; ऎऩुम् कॊळ्कैयै–इस धारणा को; तण्टिऩाय्–तोड़ दिया तुमने। १०७७

तुम मुझे प्राण प्रदान करके मुझसे मिलकर गये। तब तुम कह गये कि घमासान युद्ध होगा; उसमें श्रीराम राक्षस को मारकर यमलोक का लम्बा मार्ग दिखा देंगे। फिर मुझे अपने साथ ले जायँगे। अब उस धारणा को तुमने तोड़ दिया। १०७७

एयप् पऩ्ऩिऩ ऩिऩ्ऩदऩ् ऩारुयिर्, तीयक् कऩ्ऱु पिडियुऱत् तीङ्गुऱुम्
तायैप् पोलत् तळर्ऩ्दु मयङ्गिऩाळ्, तीयैच् चुट्टदॊर् कऱ्पॆऩुऩ् दीयिऩाळ् 1078

तीयै–आग को; चुट्टतु–जलानेवाली; ओर् कऱ्पु ऎऩुम्–पातिव्रत्य नाम की; तीयिऩाळ्–अग्नि वाली; एय–योग्य रीति से; इऩ्ऩ पऩ्ऩिऩळ्–ऐसा कहती हुई; कऩ्ऱु पिटि उऱ–बछड़े के बँध जाने पर; तीङ्कुऱुम्–दुःखनेवाली; तायै पोल–माता गाय के समान; तऩ् आर् उयिर्–अपने (शरीर से) युक्त प्राणों के; तीय–मुलसते; तळर्ऩ्तु–लटकर; मयङ्किऩाळ्–बेसुध हुई। १०७८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अग्नि को भी जला सकनेवाली पातिव्रत्याग्नि से भूषित देवी सीता इस तरह कहती हुई, बछड़े के (हिंस्र पशु द्वारा) पकड़े जाने पर दुखनेवाली माता गाय के समान, उनके प्राणों के तप्त होकर क्षीण होते, लटकर बेसुध हुईं। १०७८

पॅरुन्द हैप्पॅरि योनैप्पि णित्तपोर्
मुरुन्दन् मऱ्ऱै युलहॉरु मून्ऱैयुम्
अरुन्द वप्पय नालर शाळ्हिन्ऱान्
इरुन्द वप्पॅरुङ् गोयिल्शॅन् ऱॅय्दिनान् 1079

पॅरुम् तकै–योग्यता में बड़े और; पॅरियोनै–(आकार में भी) बड़े हनुमान को; पिणित्त–जिसने बाँधा; पोर् मुरुन्तन्–वह युद्ध-कुशल इन्द्रजित्; मऱ्ऱै–(लंका के) अलावा; उलकु ऑरु मून्ऱैयुम्–तीनों लोकों पर; अरुम् तव पयनाल्–श्रेष्ठ तपस्या के फलस्वरूप; अरचु आळ्किन्ऱान्–जो राज्य (शासन) करता है; इरुन्त–उसका वासस्थान; अ पॅरुम् कोयिल्–उस बड़े मन्दिर में; चॅन्ऱु ॲय्तिनान्–जा पहुँचा। १०७९

उधर गुण और आकार में बड़े महावीर को जिसने बाँध दिया था वह इन्द्रजित्, लंका के अलावा तीनों लोकों पर पूर्वपुण्यप्रताप से शासन करनेवाला रावण जहाँ रहा, उस बड़े मन्दिर में जा पहुँचा। १०७९

तलङ्गण् मून्ऱिऱ्कुम् बिऱिदॉरु मदितळैत् तॅन्न
अलङ्गल् वॅण्गुडै कण्गुडै यविरॉळि परप्प
वलङ्गॉ डोळिनान् मण्णिन्ऱुम् वानुऱ वॅडुत्त
पॉलङ्गॉण् मामणि वॅळ्ळियङ् गुन्ऱॅनप् पॉलिय 1080

अलङ्कल्–हार जिससे लटकते थे; वॅण् कुटै–वह श्वेत छत्र; तलङ्कळ् मून्ऱिऱ्कुम्–तीनों लोकों के लिए; पिऱितु ऑरु मति–और एक चन्द्र; तळैत्तु ॲन्न–अतिशय रूप से प्रकाश देता रहा जैसे; कण् कुटै–आँखों में खुभता हुआ; अविर् ऑळि–फैलनेवाला प्रकाश; परप्प–छिटकाता रहा; वलम् कॉळ् तोळिनाल्–सबल कन्धों से; मण् निन्ऱुम् वानु उऱ–भूमि से लेकर आकाश को छूते हुए; ॲटुत्त–जो उठाया गया; पॉलम् कॉळ्–सुन्दरतायुक्त; मा मणि–श्रेष्ठ रत्नमय; वॅळ्ळि अम्–सुन्दर चाँदी के; कुन्ऱु ॲन्न–पर्वत-से; विळङ्क–शोभ रहे थे। १०८०

(आगे १०९७वें पद्य तक लगातार चलनेवाले वाक्य में रावण का वर्णन है। वाक्य १०९७वें पद्य में ही पूर्ण होता है।) श्वेत छत्र था, जिससे मोती आदि की लड़ियाँ लटक रही थीं। वह तीनों लोकों पर प्रकाश फैलाने के लिए बने एक दूसरे चन्द्र के समान प्रभा बिखेर रहा था, जो आँखों में खुभ रहा था। और वह उस सुन्दर रत्नमय और श्वेत कैलासगिरि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के समान भी शोभ रहा था, जिसे रावण ने अपने सबल हाथों से भूमि से आकाश तक उठाया था। १०८०

पुळ्ळु यर्त्तवन् ऱिहिरियुम् बुरन्दर नयिलुम्
तळ्ळिन् मुक्कणान् कणिच्चियुन् दाक्किय तळुम्बुम्
कळ्ळु यिर्क्कुमॅन् गुळलियर् मुहिळ्विरर् कदिर्वाळ्
वळ्ळु हिर्प्पॅरुङ् गुऱिहळुम् बुयङ्गळिन् वयङ्ग 1081

पुळ् उयर्त्तवन्–गरुड़ध्वज का; तिकिरियुम्–चक्रायुध; पुरन्तरन् अयिलुम्–और पुरन्दर का भाला (वज्र); मुक्कणान्–त्रिनेत्र शिवजी का; तळ् इल्–अप्रतिहत्; कणिच्चियुम्–परशु; ताक्किय–इनके प्रहार से हुए; तळुम्पुम्–दाग और; कळ् उयिर्क्कुम्–(पुष्प के कारण) शहद-निहित; मॅन् कुळलियर्–कोमल केशिनी राक्षसियों की; मुकिळ्–कलियों-सी; विरल्–उँगलियों के; कतिर् वाळ्–उज्ज्वल तलवार-सम; वळ् उकिर्–तीक्ष्ण नाखूनों के बने; पॅरुम् कुऱिकळुम्–बड़े-बड़े (नख-क्षत) निशान; पुयङ्कळिल् विळङ्क–भुजाओं में शोभायमान थे। १०८१

गरुड़ध्वज श्रीविष्णु का सुदर्शन चक्र, पुरन्दर का वज्र और त्रिनेत्र शिवजी का अबाध फरसा —इनके लगने से बने व्रणों के दाग़ और शहद-लसे कोमल केश वाली प्यारी राक्षसियों की कलियों के समान बन्द उँगलियों के ज्वलन्त तलवार के समान नाखूनों के बने नखक्षत उनकी भुजाओं पर विद्यमान थे। १०८१

तुन्ऱु शॅम्मयिर्च् चुडर्नॅडुङ् गर्ऱैहळ् शुऱ्ऱ
निन्ऱु तिक्कुऱ निरैत्तन कदिर्क्कुळा निमिर
ऑन्ऱु शीऱ्ऱत्ति नुयिर्प्पॅनुम् बॅरुम्बुहै युयिर्प्पत्
तॅन्ऱि शैक्कुमोर् वडवन ऱिरुत्तिय दॅन्न 1082

तुन्ऱु चॅम् मयिर्–घने लाल केशों की; चुटर् नॅटुम्–प्रकाशमय लम्बी; कर्ऱैकळ्–लटें; चुऱ्ऱ निन्ऱु–सब ओर रहीं; तिक्कु उऱ–सभी दिशाओं में लगे ऐसा; निरैत्तन–पंक्तियों में; कतिर् कुळाम्–किरणों की राशियाँ; निमिर–बढ़ीं; ऑन्ऱु–युक्त; चीऱ्ऱत्तित्–कोप का; उयिर्प्पु ऍनुम्–श्वास रूपी; पॅरुम् पुकै–बड़ा धुआँ; उयिर्प्प–प्रकट होकर; तॅन् तिचैक्कुम्–दक्षिण दिशा में भी; ओर्–वह; वट अनल्–एक बड़वाग्नि; तिरुत्तियतु ऍन्न–पैदा हुई जैसे रहा। १०८२

उसके मुख के चारों ओर घने लाल बालों की लटें थीं। उनसे सभी दिशाओं में लाल प्रकाश की किरणें छूट रही थीं। कोप के कारण साँसें धुएँ के रूप में निकल रही थीं। सब मिलकर बड़वाग्नि का दृश्य उपस्थित कर रहे थे और वह दक्षिण दिशा की बड़वाग्नि-सी लगी। १०८२

मरह दक्कॊळुङ् गदिरॊडु माणिक्क नॅडुवाळ्
नरह तेयत्तु णडुक्कुऱा विरुळैयु नक्कच्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चिरम नैत्तैयुन् दिशैतोऱुन् दिशैतोऱुञ् जॅलुत्ति
उरहर् कोत्तिसि दरशुवीऱ् ऱिरुन्दन नॉप्प 1083

मरकतम्–मरकत की; कॉळुम् कतिर् ऑटु–पुष्ट किरणों के साथ; माणिक्क नॅटुवाळ्–माणिक्य की लम्बी किरणें; नरक तेयत्तुळ्–नरक देश में; नटुक्कु उऱा–अचल; इरुळैयुम्–अन्धकार को भी; नक्क–चाटकर दूर करती रहीं; चिरम् अनैत्तैयुम्–सभी सिरों को; तिचै तोऱुम् तिचैतोऱुम्–दिशा-दिशा में; चॅलुत्ति–मोड़कर; उरकर् कोत्–नागराज; इत्तिसु–सुख से; अरचु वीऱ्ऱिरुन्तनन्–राज-सिंहासन पर विराज रहा; ऑप्प–जैसे। १०८३

वह अपने सिरों को जब दिशा-दिशा में घुमाता, तब मरकत मणियों के पुष्ट प्रकाश और माणिक्य पत्थरों की ज्योति दोनों उठकर नरक प्रदेश के अचल अन्धकार को भी चाट लेते। वह तब, उरगराज सिंहासन पर विराजमान हो, जैसा लगा। १०८३

कुवित्त पन्मणिक् कुप्पहळ् कलैयॊडुङ् गॊळिप्पच्
चविच्चु डर्क्कन लणिन्दपॊऱ् ऱॊळॊडु तयङ्गप्
पुवित्त डम्बडर् मेरुवैप् पॊन्मुडि यॅन्नक्
कवित्तु मालिरुङ् गरुङ्गड लिरुन्ददु कडुप्प 1084

कुवित्त–राशियों में रहे; पल् मणि कुप्पैकळ्–अनेक रत्नसमूह; कलै ऑटुम्–उत्तरीय के साथ; कॊळिप्प–लगे फिरते; अणिन्त–पहने हुए; चवि चुटर्–छवि-मय; कलन्–आभरण; पॊन् तोळ् ऑटुम्–स्वर्णकवच-धारी कन्धों पर; तयङ्क–शोभते; माल् इरुम्–बहुत बड़ा; करुम् कटल्–नीला सागर; पुवि तटम्–भूतल में; पटर्–फैले रहे; मेरुवै पॊन् मुटि ऍन्न–मेरु को स्वर्ण-किरीट के स्थान में; कवित्तु–पहने हुए; इरुन्ततु–रहा; कटुप्प–जैसे। १०८४

उसके उत्तरीय में गुँथे रहे अनेक रत्नों की राशियाँ उत्तरीय वस्त्र के साथ हिलती-डोलती रहीं। उसने जो आभरण पहन रखे थे, वे उसके बीसों सुन्दर स्कन्धों के साथ तेजोमय रहे। वह तब काले और बड़े सागर के समान शोभ रहा था, जो अपने सिर पर भूतल में विशाल रूप से व्याप्त मेरु के किरीट को धारण किये रहता हो। १०८४

शिन्दु राहत्तिन् शॅऱितुहिल् कच्चॊडु शॅऱियप्
पन्दि वॅण्मुत्ति नणिहलन् मुळुनिलाप् परप्प
इन्दु वॅण्गुडै नीळलिऱ् ऱारहै यिनम्बूण्डु
अन्दि वानुडुत् तल्लुवीऱ् ऱिरुन्ददा मॅन्न 1085

चिन्तुराकत्तिन् चॅऱि तुकिल्–घने सिन्दूर-वर्ण के कपड़े; कच्चु ऑटुम्–कमरबन्द के साथ; चॅऱिय–खूब कसे रहे; पन्ति–पंक्ति में; वॅण् मुत्तिन् अणि कलन्–सफ़ेद मोतियों के आभरण; मुळु निला–पूर्णचन्द्र की चाँदनी-सा प्रकाश; परप्प–फैलाते; इन्तु वॅण् कुटै–चन्द्र के समान श्वेत छत्र की; निळलिल्–छाँह में;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अल्लु–रात; अन्तिवान्–उटुत्तु–सन्ध्या-गगन पहने हुए; तारकै इत्तम् पूण्टु–तारागणों के आभरणों से अलंकृत हो; वीऱ्ऱिरुन्ततु आम्–विराजमान रही; ऍन्न–जैसे। १०८५

घना रक्त-वर्ण वस्त्र और उसके ऊपर कमरबन्द शोभायमान थे। पंक्तियों में मोतियों को रखकर बनाये गये आभरण राकाचन्द्र की चाँदनी-सी प्रभा बिखेर रहे थे। सब मिलकर रात्रि की देवी की-सी शोभा बन रही थी, जो इन्द्र-सम श्वेत छत्र कि छाँह में संध्यागगन-वस्त्र पहनकर तारागणाभरणों से अलंकृत होकर विराजमान हो। १०८५

वण्मैक् कुन्दिरु मऱैहट्कुम् वानिनुम् बॅरिय
तिण्मैक् कुन्दनि युऱैयुळान् मुळुमुहन् दिशैयिल्
कण्वैक् कुन्दोऱुङ् गळिऱ्ऱोडु मादिरङ् गाक्कुम्
ऍण्मर्क् कुम्मऱ्ऱै यिरुवर्क्कुम् बॅरुम्बय मॅय्द 1086

वण्मैक्कुम्–दानशीलता और; तिरु मऱैकट्कुम्–दिव्य वेदों और; वानिलुम् पॅरिय–आकाश से भी बड़े; तिण्मैक्कुम्–साहस का; तनि उऱैयुळान्–अप्रतिम आश्रयस्थान रावण; मुळु मुकम्–सारे मुखों को; तिचैयिल्–एक साथ एक दिशा में; कण् वैक्कुम् तोऱुम्–रखकर ज्यों-ज्यों दृष्टि दौड़ाता, त्यों-त्यों; कळिऱ्ऱोटु–गजों के साथ; मातिरम् काक्कुम्–दिशाओं का पालन करनेवाले; ऍण्मर्क्कुम्–आठों (दिक्पालों) को और; मऱ्ऱै इरुवर्क्कुम्–अन्य (आकाश और पाताल के ध्रुव और आदिशेष) दोनों को; पॅरुम् पयम् ऍय्त–बड़ा भय लगता। १०८६

रावण दानशीलता, दिव्य वेदज्ञान और आकाश से भी बड़ा साहस —इनका अनुपम आगार था। जब उसके दसों मुख एक ही समय दसों दिशाओं की ओर फिरते और आँखें उन दिशाओं पर पड़तीं, तब आठों दिग्गजों के साथ आठों दिक्पाल और आकाश का ध्रुव और पाताल का अनन्तनाग —सबको बड़ा भय ग्रहण कर लेता। १०८६

एक नायहन् ऱेवियै यॅदिर्न्ददन् पिन्बु
नाहर् वाळिड मुदलॅन नान्मुहन् वैहुम्
माह माल्विशुम् बीऱॅन नडुवुळ वरैप्पिल्
तोहै मादर्हळ् मैन्दरिऱ् ऱोन्ऱिनर् शुऱ्ऱ 1087

एक नायकन्–एक नायक श्रीराम की; तेवियै–देवी को; ऍतिर्न्ततन् पिन्पु–देखने के बाद; नाकर् वाळ् इटम्–नागलोक; मुतल् ऍन्न–से लेकर; नान्मुकन् वैकुम्–चतुर्मुख जहाँ वास करते हैं उस; माक माल् विचुम्पु–बड़े आकाश में स्थित ब्रह्मा के लोक को; ईऱु ऍन्न–अन्त बनाकर; नटु उळ–मध्य में रहनेवाले; वरैप्पिल्–लोकों की रहनेवाली; तोकै मातर्कळ्–कलापी-सी रमणियाँ; मैन्तरिल्–तरुणों के समान (कामोत्तेजना में असमर्थ); चुऱ्ऱ तोन्ऱिनर्–चारों ओर लगी रहीं। १०८७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अद्वितीय (एक) नायक श्रीराम की देवी से साक्षात्कार होने के बाद कोई भी स्त्री रावण के मन में प्रवेश नहीं कर सकी। इसलिए नागलोक से लेकर आकाश के ब्रह्मा के लोक तक मध्य में रहनेवाले सभी लोकों की कलापी-सी कन्याएँ उसे जो घेरे रहीं, वे युवकों के समान घेरे रहीं। (उसके मन में उनके कारण कोई कामोद्वेग उठा नहीं।)। १०८७

वाऩ रङ्गळुम् वाऩव रिरुवरु मऩिदर्
आऩ पुऩ्ऱॊऴि लोरॆऩ विहऴ्हिऩ्ऱ ववरुम्
एऩै निऩ्ऱव रिरुडियर् शिलरॊऴिऩ् दियारुम्
तून विऩ्ऱवे लरक्कर्दङ् गुऴुवॊडु शुऱ्ऱ 1088

वाऩरङ्कळुम्–वानर और; वाऩवर् इरुवरुम्–शिवजी और श्रीविष्णु, दोनों देवता; मऩितर् आऩ–मानव जो रहे; पुल् तॊऴिलोर्–तुच्छ कार्य करनेवाले; ऎऩ–ऐसा; इकऴ्किऩ्ऱ–निन्दा करनेवाले; अवरुम्–वे राक्षस; एऩै निऩ्ऱवर्–और जो रहे; इरुटियर् चिलर्–कुछ ऋषि; ऒऴिऩ्तु–इनको छोड़कर; यारुम्–अन्य सभी; तू नविऩ्ऱ–मांसलिप्त; वेल्–भालाधारी; अरक्कर् तम् कुऴु–राक्षसों के दलों; ऒटु–के साथ; चुऱ्ऱ–घेरे रहते। १०८८

उसकी सेवा में उसके चारों ओर सभी लोग मांसलिप्त भालाधारी राक्षसों के साथ खड़े रहे। उनमें केवल वानर, शिव और विष्णु —दो देव, राक्षसों द्वारा तुच्छ मानव कहकर निन्दित मनुष्य और कुछ ऋषि —ये ही नहीं थे। (बाक़ी सभी थे।)। १०८८

नरम्बु कण्णहत् तुळ्ळुऱै नऱैनिऱै पाण्डिल्
निरम्बु शिल्लरिप् पाणियुङ् गुऱडुनित् ऱिशैप्प
अरम्बै मङ्गैय रमिऴ्दुहुत् तालऩ्ऩ पाडल्
वरम्बि लिऩ्ऩिशै शॆविदॊऱुञ् जॆविदॊऱुम् वऴङ्ग 1089

नरम्पु कण् अकत्तु–तंत्रियों में; उळ् उऱै नऱै–अन्तर्निहित स्वर रूपी शहद; निऱै पाण्टिल्–लक्षणशुद्ध खँजड़ी; निरम्पु चिल्लरि पाणियुम्–भरे रहे 'चिल्लरि' नाम के बाजे; कुऱटुम्–और 'कुऱडु' नाम के तालवाद्य; निऩ्ऱु इचैप्प–बज उठते; अरम्पै मङ्कैयर्–अप्सराएँ; अमिऴ्तु उकुत्ताल्–अमृत सरसातीं; ऎऩ्ऩ–जैसे; पाटल्–जो गाती हैं उन गानों के; वरम्पु इल्–असीम; इऩ् इचै–मधुर ध्वनि; चॆवि तॊऱुम् चॆवि तॊऱुम्–कर्ण-कर्ण में; वऴङ्क–लगती। १०८९

रावण अपने कानों से संगीत सुन रहा था। वीणा आदि तंत्रियों का स्वरमधु, खँजड़ी, चिल्लरी और 'कुऱडु' (नामक) तालवाद्य आदि के ताल-मेल में अप्सराएँ अमृतगान गा रही थीं। उसकी ध्वनिमधुरता अपार थी। रावण के हर कान में वह संगीत भर रहा था। १०८९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कूडु पाणियि निशैयॉडु मुळवॉडुङ् गूडत्
तोडु शीऱडि विऴिमनङ् गैयॉडु तॉडरुम्
आड नोक्कुऱि नरुन्दव मुनिवर्क्कु ममैन्द
वीडु मीट्कुरु मेनहै मेनहै विळङ्ग 1090

पाणियित् कूटु–ताल से मेल खानेवाले; इचै ऑटुम्–संगीत के साथ; मुळवु ऑटुम्–और मर्दल के साथ; कूट–मेल लगाते हुए; तोटु चीऱ अटि–कमलदल-से चरणों का रखना; विऴि मनम् कैयॉटु तॉटरुम्–दृष्टि, मन और हाथों की मुद्राएँ जिससे मेल रखती हैं, उस; आटल् नोक्कु उऱित्–नाच को देखें तो; अरुम् तव मुनिवर्क्कुम्–कठोर तपस्वी मुनियों को भी; अमैन्त–उनके योग्य; वीटु–मोक्ष से; मीट्कुरुम्–लौटा दे, ऐसा नाचनेवाली; मेल् नकै–हास-वदना; मेनकै–मेनका; विळङ्क–शोभा के साथ रहती। १०९०

हासवदना मेनका नाच रही थी। करताल के मेल में गाना, मर्दल का स्वर आदि के साथ अपने कमलदल-सम सुन्दर चरणों को ठीक तरह से रखकर नाच रही थी। उसकी दृष्टि, हस्तमुद्राएँ और पदचाप —इनमें अतिशय मनमोहक मेल था। वह नृत्य मुनि भी देख ले तो कठोर तपस्या से प्राप्त मोक्ष-गमन से भी उसे लौटा लेता। ऐसा नाचती हुई मेनका उसके बग़ल में विद्यमान थी। १०९०

ऊडि नार्मुहत् तुरुनऱ वॉरुमुह मुण्णक्
कूडि नार्मुहक् कळिनऱै यॉरुमुहङ् गुडिप्पप्
पाडि नार्मुहत् तारमु दॉरुमुहम् बरुह
आडि नार्मुहत् तारमु दॉरुमुह मरुन्द 1091

ऊटित्तार्–जो रूठी रहीं; मुकत्तु उऱु–उनके मुखों पर दिखनेवाले भावों के; नऱवु–मधुर शहद को; ऑरु मुकम् उण्ण–एक मुख पान करता; कूटित्तार् मुकम्–उससे जो मिली थीं, उनके मुख पर के; कळि नऱै–मोद-मधु; ऑरु मुकम् कुटिप्प–(और) एक मुख स्वादन करता; पाटित्तार् मुकत्तु–गानेवालियों के मुखों का; आर् अमुतु–मधुर अमृत-रस; ऑरु मुकम् परुक–एक मुख पीता रहता; आटित्तार् मुकत्तु–नाचनेवालियों के भावों का; आर् अमुतु–मधुर अमृत; ऑरु मुकम् अरुन्त–एक मुख पीता रहता। १०९१

उसके दस मुख थे। हर एक एक काम कर रहा था। एक मुख रूठी हुई स्त्रियों के मुखों का भावमधु पी रहा था। दूसरा उन स्त्रियों के मुदित मुखों के आनन्द का मधु-रस लूट रहा था, जो उससे मिल गयी थीं। तीसरा गानेवालियों के मुखभावों का मधु पी रहा था। चौथा नाचने वालियों के आनन्द रूपी अमृत का स्वादन कर रहा था। १०९१

तेव रोडिरुन् दरशिय लॉरुमुहम् जॅलुत्त
मूव रोडुमा मन्दिर मॉरुमुह मुयलप्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाव हारिदन् पावह मॊरुमुहम् बयिलप्
पूवै शानहि युरुवॆळि यॊरुमुहम् बॊरुन्द 1092

ऒरु मुकम्–एक मुख; तेवरोटु इरुन्तु–देवों के साथ मिलकर; अरचु इयल्–राजतन्त्र; चॆलुत्त–बनाता; मूवरोटुम्–(पुरोहित, मन्त्री, सेनापति) तीनों के साथ; मा मन्तिरम्–श्रेष्ठ मन्त्रणा में; ऒरु मुकम् मुयल–एक मुख लगा रहता; पावकारि तन्–पापकर्मा रावण के; पावकम्–भावों को; ऒरु मुकम् पयिल–एक मुख बनाता रहता; पूवै चानकी–देवी जानकी के; उरु वॆळि–अन्तरिक्ष में दिखनेवाले मिथ्या रूप में; ऒरु मुकम् पॊरुन्त–एक मुख लगा रहता। १०९२

पाँचवाँ मुख देवों के साथ राजनय की बातें कह रहा था। छठा पुरोहित, मन्त्री और सेनापति तीनों के साथ मन्त्रणा में लगा था। सातवाँ उस पापी के पाप कर्मों की कल्पना में लीन था। आठवाँ मुख देवी जानकी का मिथ्या रूप, जो अन्तरिक्ष में (उसकी कल्पना के कारण) दिखाई दे रहा था, उसे देखने में व्यस्त था। १०९२

कान्दण् मॆल्विरर् चनहिदन् कर्पॆन्नुङ् गडलै
नीन्दि येरुव दॆङ्ङनॆन् ऱॊरुमुह निनैयच्
चान्द ळाविय कॊङ्गैनन् महळिर्तर् चूळ्न्दार्
एन्दु माडियि नॊरुमुह मॆळिलिनै नोक्क 1093

कान्तळ–'कांदळ' नाम के फूल जैसे; मॆल् विरल्–कोमल उँगलियों वाली; चनकि–जानकी के; कर्पु ऎन्नुम् कटलै–पातिव्रत्य रूपी सागर को; नीन्ति एऱुवतु–तैरकर तीर पर चढ़ना; ऎङ्ङन्–कैसा; ऎन्नऱु–ऐसा; ऒरु मुकम् निनैय–एक मुख सोचता; चान्तु अळाविय–चन्दन-चर्चित; कॊङ्कै–स्तनों वाली; तन् चूळ्न्तार्–उसको घेरे रहीं; नल् मकळिर्–सुन्दरी रमणियों द्वारा; एन्तुम् आटियिन्–धृत मुकुर में; ऎळिलिनै–अपनी सुन्दरता को; ऒरु मुकम् नोक्क–एक मुख देखता रहता। १०९३

पॊतुम्बर् वॆहुतेन् पुक्करुन्दु दर्कहम् बुलरुम्
मदम्बॆय् वण्डॆनच् चनहिपान् मनञ्जॆल मरुहि
वॆदुम्बु वारहम् वॆन्दळि वार्नहिल् विळिनीर्
तदुम्बु वार्विळित् तारॆवे ऱोडॊऱुन् दाक्क 1094

पॊतुम्पर्–झाड़ों में; वॆकु तेन्–मिलनेवाले शहद को; पुक्कु अरुन्तुतऱ्कु–घुसकर पान करने; अकम् पुलरुम्–मन को संकट में डालनेवाले; मतम् पॆय् वण्टु ऎन–मदस्रावी भ्रमर जैसे; चनकि पाल्–जानकी की ओर; मनम् चॆल–मन के जाते;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मऱुकि वॅतुम्पुवार्–दुःख-तप्त रहनेवाली; अकम् वॅन्तु–चित्त झुलसकर; अळिवार्–मिटनेवाली; नकिल्–स्तनों पर; विऴि नीर्–और आँखों के आँसू; ततुम्पुवार्–छलकानेवाली स्त्रियों के; विऴि तारै–नेत्रों की पंक्तियाँ रूपी; वेल्–भाले; तोळ् तॊऱुम्–सारे कन्धों पर; ताक्क–प्रहार करते । १०९४

उसका मन झाड़-मध्य रहे शहद को घुसकर पीने के लिए लालायित रहनेवाले भ्रमर के समान जानकी की ओर जा रहा था । उससे अनेक स्त्रियाँ दुःखतप्त हुईं । वे व्याकुलमना होकर झुलसीं और क्षीण हुईं । अपने स्तनों पर अपनी आँखों से आँसू बहाने लगीं । ऐसी रावण की प्यारियों की आँखों की पंक्तियों के भाले उसके कन्धों में जाकर चुभ रहे थे । १०९४

मारु ळाविय महरन्द नऱवुण्डु महळिर्
वीऱु ळाविय मुहिण्मुलै मॅऴुहिय
शेऱु ळाविय शिऱुनऱुञ् जीदळत् तॅन्ऱल्
ऊऱु ळाविय कडुवॅन् वुडलिडै नुऴैय 1095

माऱु अळाविय–(विरहियों के साथ) वैमनस्य रखनेवाला; मकरन्त नऱवु उण्टु–मकरन्द-भरा शहद पान कर; मकळिर् वीऱु अळाविय–स्त्रियों के गर्वोन्नत; मुकिऴ् मुलै–कुड्मल स्तनों पर; मॅऴुकिय चान्तिन्–लिप्त चन्दन के; चेऱु अळाविय–लेप पर लगा आनेवाला; चिऱु–मन्द; नऱुम्–सुगन्धित; चीतळ–शीतल; तॅन्ऱल्–मलयपवन; ऊऱु अळाविय–दुःखमिश्रित; कटु ॲन्–विष के समान; उटल् इटै–रावण के शरीर के अन्दर; नुऴैय–प्रवेश करता । १०९५

विरही जनों का शत्रु है मलयपवन । वह मकरन्द और शहद पीकर (समेट लेकर) स्त्रियों के गर्वोन्नत, कलियों-से स्तनों पर लिप्त चन्दनलेप से लगकर बहा । वह मन्द सुगन्धित शीतल दक्षिणी पवन दुःखदायी विष के समान उसके शरीर में घुसकर उसे सता रहा था । १०९५

तिङ्गळ् वाणुदन् मडन्दैयर् शेयरि किडन्द
अङ्ग यत्तडन् दामरैक् कलरियो ऩाहि
वॅङ्गण् वाऩवर् दाऩव रॅन्ऱिवर् विरियाप्
पॊङ्गु कैहळान् दामरैक् किन्दुवे पोन्ऱुम् 1096

तिङ्कळ् वाळ् नुतल्–(आठवें दिन के) चन्द्रमा-जैसे उज्ज्वल ललाट वालियों के; चेय् अरि किटन्त–लाल डोरों से युक्त; अम् कय–सुन्दर सरोवर के; तटम् तामरैक्कु–बड़े-बड़े कमलपुष्पों के लिए; अलरियोन् आकि–सूर्य बनकर; वॅम् कण्–शत्रु; वाऩवर् ताऩवर् ॲन्ऱु–देव और दानव-कथित; इवर्–इन लोगों के; विरिया–अविकसित (बन्द); पॊङ्कु–रहनेवाले; कैकळ् आम् तामरै–हाथ रूपी कमलों के लिए; इन्तुवे पोन्ऱुम्–चन्द्र के ही समान रहा । १०९६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रावण आठवें दिन के चन्द्रमा-तुल्य ललाट वाली स्त्रियों के, लाल डोरों से युक्त व सुन्दर सरोवर के कमल-तुल्य मुखों के लिए सूर्य था (उनके मुख मोदविकसित थे) और शत्रु देव-दानवों के बन्द (अंजलि-बद्ध) हाथों के कमलों के लिए इन्दु-सम था। (रावण के सामने उनके हाथ हमेशा अंजलि में जुड़े थे।)। १०९६

इरुन्द वॅण्डिशैक् किऴवनै मारुदि यॅदिर्न्दान्
करुन्दि णाहत्तै नोक्किय कलुऴनिऱ् कनन्ऱान्
तिरुन्दु तोळिडै वीक्किय पाशत्तैच् चिन्दि
उरुन्दु नञ्जुपोल् बवन्वयिऱ् पाय्वॅनॅन् ऱुडन्ऱान् 1097

इरुन्त–इस भाँति विराजमान; ऍण्तिचै किऴवनै–आठों दिशाओं के राजा को; मारुति–मारुति ने; ऍतिर्न्तान्–सामने (लाया) जाकर देखा; करुम्–काले; तिण्–सबल; नाकत्तै नोक्किय–देखते हुए; कलुऴनिल्–गरुड़ के समान; कनन्ऱान्–नाराज हुआ; तिरुन्तु तोळ् इटै–सुघड़ कन्धों पर के; वीक्किय–कसे हुए; पाचत्तै चिन्ति–पाश को तोड़कर; उरुन्तु नञ्चु पोल्पवन्–संकटकारी विष-तुल्य; वयित्–(रावण) पर; पाय्वॅन्–झपटूँगा; ऍन्ऱु–ऐसा; उटन्ऱान्–क्रुद्ध हुआ। १०९७

मारुति ने आठों दिशाओं के शासक, रावण को समक्ष देखा। काले और मोटे सर्प को देखकर गरुड़-जैसा वह कोप से भर गया। उसने आप ही आप कहा कि "अपने सुघर कन्धों से पाश-बन्धन को तोड़ दूँगा। दुःखदायी विष-सदृश रहनेवाले रावण पर झपट पड़ूँगा।" वह क्रुद्ध हुआ। १०९७

उऱङ्गु हिन्ऱपो दुयिरुण्डल् कुऱ्ऱमॅन् ऱॊळिन्देन्
पिऱङ्गु पॊन्मणि याशनत् तिरुक्कवुम् बॅऱ्ऱेन्
तिऱङ्ग ळॅन्बल शिन्दिप्प दिवन्ऱलै शिदऱि
अऱङ्गॊळ् कॊम्बिनै मीट्टुड नहल्वॅनॅन् ऱमैन्दान् 1098

उऱङ्कुकिन्ऱ पोतु–सोते समय; उयिर् उण्टल्–प्राण पी (हर) लेना; कुऱ्ऱम् ऍन्ऱु–दोष है, समझकर; ऒळिन्तेन्–वह विचार त्याग दिया; पिऱङ्कु–शोभायमान; पॊन् मणि आचनत्तु–स्वर्ण-रत्नमय आसन पर; इरुक्कवुम् पॅऱ्ऱेन्–रहता हुआ देखता हूँ; तिऱङ्कळ् पल–अनेक रीतियों से; ऍन् चिन्तिप्पतु–क्या सोचना है; इवन् तलै चितऱि–इसके सिरों को गिराकर; अऱम् कॊळ् कॊम्पिनै–(पातिव्रत्य) धर्मावलम्बी पुष्पशाखा-सी देवी को; मीट्टु–छुड़ाकर; उटन् अकल्वॅन्–तुरन्त चला जाऊँगा; ऍन्ऱु–ऐसा; अमैन्तान्–संकल्प किया। १०९८

जब रावण सो रहा था तब मैंने उसे मारने का विचार त्याग दिया था, क्योंकि निद्रारत आदमी को मारना दोषपूर्ण है। अब देखता हूँ कि वह स्वर्णरत्नमय आसन पर आसीन है। अब विविध रीतियों से क्या

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सोचना है ? अभी इसके सिरों को गिरा दूँगा और पातिव्रत्यधर्मपालिनी पुष्पशाखा-तुल्य देवी को छुड़ाकर तुरन्त ले जाऊँगा। हनुमान ने यह संकल्प किया। १०९८

तेवर् दानवर् मुदलिनर् शेवहन् ऱेवि
कावल् कण्डिव णिरुन्दवर् कट्पुलन् कदुवप्
पाव कारितन् मुडित्तलै पऱित्तिलॅ नॅन्ऱाल्
एव दामिनि मेर्चॅयु माळ्विनै यॅन्ऱान् 1099

चेवकन् तेवि—श्रेष्ठ श्रीवीरराघव की देवी को; कावल् कण्टु—बन्धन में देखकर भी; इवण् इरुन्तवर्—यहाँ रहनेवाले; तेवर् तानवर् मुतलिनर्—देव, दानव आदि; कण्पुलन् कतुव—अक्षेन्द्रियगोचर रीति से; पावकारि तन्—पापकर्मा के; मुटि तलै—मुकुटधारी सिरों को; पऱित्तु इलॅन् अॅन्ऱाल्—न नोच लूँ तो; इनि मेल्—आगे; चॅय्युम् आळ् विनै—कर्तव्य पौरुषकर्म; एवतु आम्—कौन सा होगा; अॅन्ऱान्—कहा। १०९९

ये रहे देव और दानव, जो श्रेष्ठ श्रीवीरराघव की देवी को बन्धन में देखकर भी यहाँ चुप रहते हैं। इनकी ही आँखों के सामने पापकर्मा इसके सिर नहीं नोच लूँगा, तो अन्य कौन सेवा-कार्य (पौरुषमय कार्य) है जो किया जाय ? । १०९९

माडि रुन्दमर् ऱिवन्बुणर् मङ्गैयर् मऱुहि
ऊडि रिन्दिड मुडित्तलै तिशैदोऱु मुरुट्टि
आडल् कण्डुनिन् ऱार्क्किन्ऱ दद्दुकोडि दम्मा
तेडि वन्ददोर् कुरङ्गॅनुम् बॅरुम्बॊरुळ् तॅरिय 1100

तेटि वन्ततु—खोजता आया; ओर् कुरङ्कु—एक वानर; माटु इरुन्त—पास में रही; इवन् पुणर् मङ्कैयर्—इसकी समागमयोग्य स्त्रियों को; मऱुकि—भ्रमित-दुःखित होकर; ऊटु इरिन्तिट—अन्दर तितर-बितर भागने को मजबूर करते हुए; मुटि तलै—मुकुट-सिर को; तिचै तोऱुम् उरुट्टि—दसों दिशाओं में लुढ़काकर; आटल् कण्टु—उनका तड़पना देखकर; निन्ऱु आर्क्किन्ऱतु—खड़ा होकर आनन्दनर्दन करता है; अतु कॊटितु—वह हिंस्र है; अॅनुम्—ऐसा; पॅरुम् पॊरुळ्—बड़ा यश; तॅरिय—प्रकट हो ऐसा। ११००

एक वानर जानकी को खोजता आया। उसने इसके पास जो रहीं, इसके समागमयोग्य उन स्त्रियों को भ्रमित-दुःखित हो अन्दर तितर-बितर भागने देते हुए इसके मुकुटसिरों को दसों दिशाओं में लुढ़का दिया; उन सिरों का छटपटाना देखता है और खड़ा होकर आनन्दनर्दन करता है। यह बड़ा ही क्रूर बन्दर है। —ऐसी बड़ी (कीर्ति की) बात प्रकट करते हुए— । ११००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीण्ड वाळॆयिर् ऱरक्कऩैक् कण्गळि ऩेरे
काण्डल् वेण्डियिव् वुयिर्शुमन् दॆदिर्शिल कऴऱि
मीण्ड पोऴ्दुण्डु वशैप्पॊरुळ् वॆऩ्ऱिलॆ ऩॆऩिनुम्
माण्ड पोदिनुम् बुहऴऩ्ऱि मऱ्ऱुमॊऩ् ऱुण्डो 1101

नीण्ट वाळ्–लम्बी तलवार-तुल्य; ऍयिऱ्ऱु अरक्कऩै–दन्तोरे (रावण-) राक्षस को; कण्कळिऩ्–आँखों के; नेरे काण्टल् वेण्टि–समक्ष देखना चाहकर; इ उयिर्–यह प्राण; चुमन्तु–धारण करता हुआ; ऍतिर्–उसके सामने; चिल कऴऱि–कुछ कहकर; मीण्ट पोऴ्तु–लौट जाने पर भी; वचै पॊरुळ् उण्टु–निंदावचन ही होगा; वॆऩ्ऱु इलेऩ्–मैं न जीतूँ; ऍऩिनुम्–तो भी; माण्ट पोतिनुम्–मरने पर भी; पुकऴ् अऩ्ऱि–यश के सिवा; मऱ्ऱुम् ऒऩ्ऱु उण्टो–और दूसरा (अपयश) होगा क्या। ११०१

लम्बी तलवार के समान दाँतों वाले राक्षस (रावण) को समक्ष देखना चाहा। इसीलिए यह प्राण धारण करता रहा। अब इसके मुख पर कुछ कहकर लौट जाऊँ तो भी अपवाद ही होगा। पर लड़ूँ तो न जीतने पर भी, मारे जाने पर भी यश ही मिलेगा। उसे छोड़कर दूसरा (अपयश) मिलेगा क्या? (नहीं)। ११०१

ऍऩ्ऱु तोळिडै यिऱुक्किय पाशमिऱ् ऱेहक्
कुऩ्ऱिऩ् मेलॆऴुङ् गोळरि येऱॆऩक् कुदियिल्
शॆऩ्ऱु कूडुव लॆऩ्बदु शिन्दऩै शॆय्या
निऩ्ऱु कारिय मऩ्ऱॆऩ नीदियि ऩिऩैन्दाऩ् 1102

ऍऩ्ऱु–ऐसा सोचकर; तोळ् इटै–कन्धों के मध्य; इऱुक्किय पाचम्–कसे हुए पाश को; इऱ्ऱु एक–भग्न कर दूर के; कुऩ्ऱिऩ् मेल्–गिरि पर; ऍऴुम्–उछलने के लिए उठे; कोळरि एऱु–पुरुष केसरी; ऍऩ–जैसे; कुतियिल् चॆऩ्ऱु–एक छलाँग में जाकर; कूटुवल् ऍऩ्पतु–पहुँच जाऊँगा, ऐसा; चिन्ततै चॆय्या–सोचकर; निऩ्ऱु–रुककर; कारियम् अऩ्ऱु–यह करणीय नहीं; ऍऩ–ऐसा; नीतियिऩ्–न्याय की रीति से; निऩैन्ताऩ्–विचारा (हनुमान ने)। ११०२

ऐसा सोचकर उसने विचार किया कि स्कन्धपाश को तोड़कर पर्वत पर उछलने को उठनेवाले पुरुष केसरी के समान छलाँग मारूँ और रावण के पास जाऊँ। पर यह विचार रोककर वह नीति की बात सोचने लगा कि यह करने योग्य कार्य नहीं। ११०२

कॊल्ललान् दरत्तनु मल्लऩ् कॊऱ्ऱमुम्
शॊल्ललान् दरत्तनु मल्लऩ् ऱॊल्लैनाळ्
अल्लॆलान् दिरण्डऩ्ऩ निऱत्त ऩाऱ्ऱलै
वॆल्लला मिरामऩाऱ् पिऱरुम् वॆल्वरो 1103

कॊल्लल् आम्–मार सकूं ऐसी; तरत्तऩुम् अल्लऩ्–बनावट का भी नहीं;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कॊऱ्ऱमुम्–इसका पराक्रम भी; चॊल्लल् आम् तरत्तनुम्–वर्ण्य रीति का; अल्लन्–नहीं; तॊल्लै नाळ्–बहुत प्राचीन काल से; अल् अॆलाम्–अन्धकार सब; तिरण्टु अन्त–इकट्ठा हुआ जैसे; निऱत्तन्–रंग वाले के; आऱ्ऱलै–बल को; इरामनाल् वॆल्लल् आम्–श्रीराम ही परास्त कर सकेंगे; पिऱरुम् वॆल्वरो–दूसरे जीत सकेंगे क्या । ११०३

हनुमान ने सोचा कि यह रावण ऐसी बनावट का नहीं दिखता कि आसानी से मारा जाय ! उसकी विजयशीलता भी वर्णनीय नहीं लगती । बहुत प्राचीन काल से लेकर अब तक का सारा अन्धकार इकट्ठा होकर आया हो —ऐसे रंग का है यह ! इसके पराक्रम को एक श्रीराम ही परास्त कर सकते हैं । और कोई जीत सकेगा क्या ? । ११०३

अॆन्नैयुम् वॆलऱ्करि दिवनुक् कीण्डिवन्
तन्नैयुम् वॆलऱ्करि दॆनक्कुन् दाक्किनाल्
अन्नवे कालङ्गळ् कळियु मादलाल्
तुन्नरुञ् जॆरुत्तॊळि ऱॊडङ्ग ऱूयदो 1104

अॆन्नैयुम् वॆलऱ्कु–मुझे भी जीतना; इवनुक्कु अरितु–इसके लिए दुस्साध्य है; ईण्टु–यहाँ; इवन् तन्नैयुम्–इसको भी; अॆनक्कुम्–मेरा; वॆलऱ्कु अरितु–जीतना असाध्य होगा; ताक्किनाल्–इससे लड़ूँ तो; अन्नवे–वैसे ही; कालङ्कळ् कळियुम्–काल बीत जायगा; आतलाल्–इसलिए; तुन् अरुम्–अगम; चॆरु तॊळिल्–युद्ध-कार्य; तॊटङ्कल्–प्रारम्भ करना; तूयतो–सही होगा क्या । ११०४

उसका मुझे जीतना भी असाध्य है । वैसे ही यहाँ उसे जीतना भी मेरे लिए दुस्साध्य है ! अगर युद्ध में लग जाऊँ तो परस्पर अजेय होने से बहुत दिन बीत जायँगे । इसलिए अगम युद्ध का प्रारम्भ करना निर्दोष काम होगा क्या (कैसे) ? । ११०४

एळुय रुलहङ्गळ् यावु मिन्बुऱप्
पाळिवन् बुयङ्गळो डरक्कन् पः(ह)ऱलैप्
पूळियिऱ् पुरट्टलॆन् बूणिप् पामॆन
ऊळियान् विळम्बिय वुरैयु मॊन्ऱुण्डाल् 1105

एळु–सात; उयर् उलकङ्कळ्–ऊपर के लोक; यावुम् इन्पु उऱ–सब सुखी रहें ऐसा; अरक्कन्–राक्षस (रावण) के; पाळि–स्थूल; वन् पुयङ्कळ् ओटु–सबल हाथों के साथ; पल् तलै–अनेक (दस) सिरों को; पूमियिल् पुरट्टल्–भूमि पर लुढ़काना; अॆन् पूणिप्पु आम्–मेरा संकल्प है; अॆन–ऐसा; ऊळियान्–युगपति श्रीराम का; विळम्पिय–कहा; उरैयुम् ऒन्ऱु–वचन भी एक; उण्टु–है । ११०५

इसके अलावा श्रीराम की सौगन्ध भी एक है । उन्होंने कहा है कि भूमि के साथ ऊपर के सातों लोकों को सुखी बनाते हुए इस राक्षस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रावण की स्थूल और सशक्त भुजाओं के साथ इसके अनेक (दस) सिरों को भूमि पर लुढ़काने का मैंने संकल्प किया है। ११०५

इङ्गॊरु तिङ्गळे यिरुप्पल् यान्ऩॆऩ
अङ्गणा यहत्ऱऩ दाणै कूऱिय
मङ्गैयु मऩ्ऩुयिर् तुऱत्तल् वाय्मैयाल्
पॊङ्गुवॆऱ् जॆरुविडैप् पॊऴुदु पोक्किऩाल् 1106

पॊङ्कु–बहुत; वॆम् चॆरु इटै–भयंकर युद्ध में; पॊऴुतु पोक्किऩाल्—समय व्यय करूँ तो; इङ्कु–यही; ऒरु तिङ्कळे–एक ही महीने; यान् इरुप्पल्–मैं जीवित रहूँगी; ऎऩ–ऐसा; अम् कण्–सुन्दर भूतल के; नायकऩ् तऩतु आणै–नायक श्रीराम की सौगन्ध खाकर; कूऱिय–जिन्होंने कहा; मङ्कैयुम्–उन देवी का भी; मऩ् उयिर्–अपने से लगे प्राणों को; तुऱत्तल्–त्याग देना; वाय्मै आल्–सत्य हो जायगा। ११०६

और भी समयभक्षी घमासान समर में मैं समय व्यय करता रहूँ, तो अपने जगत्पति श्रीराम की सौगन्ध खाकर जिन देवी ने कहा कि मैं एक ही महीने जीवित रहूँगी, उनका मरना सत्य हो जायगा। ११०६

आदला ऩमर्त्तॊऴि लऴहिऱ् ऱऩ्ऱरुम्
तूदऩान् दऩ्मैये तूय्दॆऩ् ऱुऩ्ऩिऩान्
वेदना यहऩ्ऱऩित् तुणैवऩ् वॆऩ्ऱिशाल्
एदिल्वा ळरक्कऩ दिरुक्कै यॆय्दिऩान् 1107

आतलाल्–इसलिए; अमर् तॊऴिल्–युद्ध का काम; अऴकिऱ्ऱु अऩ्ऱु–सुन्दर (अच्छा) काम नहीं; अरुम् तूतऩ्—श्लाघ्य दूत; आम् तऩ्मैये–बनने का गुण ही; तूय्तु–निर्दोष है; ऎऩ्ऱु उऩ्ऩिऩान्—ऐसा सोचता; वेत नायकऩ्–वेदनायक श्रीराम का; तऩि तुणैवऩ्–अद्वितीय सहायक; वॆऩ्ऱि चाल्—विजयशील; एतिल्—शत्रु; वाळ् अरक्कऩतु–तलवारधारी राक्षस (रावण) के; इरुक्कै–रहने के स्थान पर; ऎय्तिऩाऩ्–पहुँचा। ११०७

इन कारणों से समरकार्य सुन्दर काम नहीं है! श्रेष्ठ दूत का पात्र अदा करना ही निर्दोष है। यह सोचकर वेदनाथ श्रीराम का अप्रतिम सहायक हनुमान पराक्रमी शत्रु, तलवारधारी रावण के पास गया। ११०७

तीट्टिय वाळॆऩत् तॆऱुहट् टेवियर्
ईट्टिय कुऴुविडै यिरुन्द वेन्दऱ्कुक्
काट्टिऩ ऩनुमऩैक् कडलि ऩारमु
दूट्टिय वुम्बरै युलैय वोट्टिऩाऩ् 1108

तीट्टिय वाळ् ऎऩ–तेज की हुई तलवार के समान; तॆऱु कण्–चुभती आँखों वाली; तेवियर्–अपनी स्त्रियों के; ईट्टिय कुऴु ईटै–एकत्रित समूह-मध्य; इरुन्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एन्तऱ्कु–जो रहा उस राजा को; कटलिन्–क्षीरसागर का; आर् अमुतु ऊट्टिय–अपूर्व अमृत जिन्होंने खाया था, उन; उम्परै–देवों को; उलैय–दुःखी करके; ओट्टिनान्–जिसने भगाया उस (इन्द्रजित्) ने; अनुमनै–हनुमान को; काट्टिनन्–दिखाया। ११०८

तब क्षीरसागरामृतपायी देवों को दुःखी कर खदेड़नेवाले इन्द्रजित् ने हनुमान को उस रावण को दिखाया जो तेज़ की हुई तलवार के समान चुभकर वेदना देनेवाली आँखों से युक्त अपनी पत्नियों के जमघट के मध्य रहा। ११०८

पुवनमॅत् तनैयवै यनैत्तुम् बोऱ्हडन्
दवनैयुऱ् ऱरियुरु वान वाण्डहै
शिवनॅनच् चॅङ्गणा नॅनच्चॅय् शेवहन्
इवनॅनक् कूऱिनिन् ऱिरुहै कूप्पिनान् 1109

पुवनम् ऍत्तनै–भुवन जितने हैं; अवै अनैत्तुम्–उन सबको; पोर् कटन्तवनै–युद्ध में जिसने जीता था, उसके; उऱ्ऱु–पास जाकर; आण्टकै–पुरुषश्रेष्ठ; अरि उरुवान इवन्–वानर-रूप में यह; चिवन् ऍन–शिव के समान; चॅम् कणान् ऍन–अरुणाक्ष (श्रीविष्णु) के समान; चॅय्–युद्ध किया; चेवकन्–श्रेष्ठ वीर है; ऍन कूऱि–यह कहकर; निन्ऱु–उसके सामने स्थित होकर; इरु कै कूप्पिनान्–दोनों हाथ जोड़े (इन्द्रजित् ने)। ११०९

जितने भुवन हैं उन सबके युद्धविजेता, रावण के पास जाकर इन्द्रजित् ने कहा कि पुरुषश्रेष्ठ ! वानरशरीरधारी यह श्रेष्ठ वीर है, जिसने शिव के समान और अरुणाक्ष (पुण्डरीकाक्ष) विष्णु के समान युद्ध किया। ११०९

नोक्किय कण्गळा नॉऱिऱ्क नऱ्पॉऱि
तूक्किय वनुमन्मॅय् मयिऱ्शु रुक्कॉळत्
ताक्किय वुयिर्प्पॉडु तवळ्न्द वॅम्बुहै
वीक्किय ववनुडल् विशित्त पाम्बिनै 1110

नोक्किय कण्कळाल्–उसको देखनेवाली (रावण की) आँखों से; नॉऱिल्–छूटकर जल्दी गये; कनल् पॉऱि–अग्नि के कण; तूक्किय–खड़े रहे; अनुमन् मॅय् मयिर्–हनुमान के शरीर के बालों को; चुऱु कॉळ–झुलसाते हुए; ताक्किय–वेग से लगे; उयिर्प्पु ओटुम्–श्वास के साथ; तवळ्न्त–जो मिलकर गया उस; वॅम् पुकै–गरम धुएँ ने; अवन् उटल् विचित्त–शरीर को बाँधे रहे; पाम्पिन्–सर्प (अस्त्र) के समान; वीक्किय–कसकर बाँध लिया। १११०

रावण ने हनुमान को सक्रोध घूरा। तब उसकी आँखों से जो अग्निकण निकलकर तेज़ चले, वे हनुमान के शरीर के उठे हुए बालों को झुलसाते हुए उस पर गिरे। उसकी साँसों के साथ जो धुआँ बढ़ चला, उसने उस सर्पपाश के समान उसके शरीर को कस लिया जो उसके शरीर को बाँधे हुए था। १११०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्नदोर् वॆहुळिय नमर रादियर्
तुन्नि य तुन्नलर् तुणुक्कञ् जुऱ्ऱुऱ
ऎन्निवण् वरवुनी यारै यॆन्ऱवन्
तन्मैयै वित्तवित्तन् कूऱ्ऱिन् ऱन्मैयान् 1111

कूऱ्ऱिन् तन्मैयान्–यम के-से स्वभाव वाले ने; अन्नतु ओर्–ऐसे; वॆकुळियन्–क्रुद्ध बनकर; अमरर् आतियर्–देव आदि; तुन्नि य–जो घेरे रहे; तुन्नलर्–उन शत्रुओं को; तुणुक्कम्–डर; चुऱ्ऱु उऱ–अभिभूत करते हुए लगे, ऐसा; इवण् वरवु–यहाँ आना; ऎन्–क्यों; नी यारै–तुम कौन; ऎन्ऱु–ऐसा; अवन् तन्मैयै–उसकी स्थिति; वित्तवित्तन्–पूछी। १११११

यम के-से स्वभाव के उस रावण ने ऐसा क्रुद्ध बनकर हनुमान से उसकी बातें जानने के विचार से पूछा कि तुम्हारा इधर आना क्योंकर हुआ ? तुम हो कौन ? उसका क्रोधी स्वर ऐसा था कि पास रहे देव आदि उसके शत्रु दहल उठे। ११११

नेमियो कुलिशियो नॆडुङ्ग णिच्चियो
तामरैक् किळवनो तऱुहट् पः(ह्)ऱलैप्
पूमिताङ् गॊरुवनो पॊरुदु मुऱ्ऱुवान्
नाममु मुरुवमुङ् गरन्दु नण्णिनाय् 1112

नेमियो–चक्रधारी (विष्णु) हो; कुलिचियो–कुलिशपाणी; नॆटुम् कणिच्चियो–दीर्घ त्रिशूल रखनेवाला शिव; तामरै किळवनो–कमलासन ब्रह्मा; तऱुकण्–निडर; पल् तलै–अनेक सिरों का; पूमि ताङ्कु–भूभारवाही; ऒरुवनो–एक (आदिशेष) हो; पॊरुतु–लड़कर; मुऱ्ऱुवान्–नाश करने; नाममुम् उरुवमुम्–नाम और रूप; करन्तु–छिपाकर; नण्णिनाय्–इधर आये। १११२

रावण ने पूछा कि तुम क्या चक्रधारी विष्णु हो ? या कुलिशपाणी ? लम्बे त्रिशूल रखनेवाला शिव ? या कमलासन ब्रह्मा ? या निडर और अनेक सिर वाले भू-भृत एक आदिशेष ? इसमें कौन हो जो लंका में युद्ध करके उसका सत्यानाश करने हेतु नाम व रूप बदलकर आये हो ? । १११२

निन्ऱुशैत् तुयिर्हवर् नीलक् कालनो
कुन्ऱुशैत् तयिलुऱ वॆऱिन्द कॊऱ्ऱनो
तॆन्ऱिशैक् किळवनो तिशैनिन् ऱाट्चियर्
ऎन्ऱिशैक् किन्ऱव रिवरुळ् यावनो 1113

निन्ऱु–(समक्ष) स्थित होकर; अचैत्तु–बन्धन में कसकर; उयिर् कवर्–प्राण हरनेवाला; नील कालनो–काला कालदेव यम; कुन्ऱु अचैत्तु–(क्रौंच) गिरि को हिलाकर; अयिल्–भाला; उऱ–अन्दर जाकर तोड़ दे, ऐसा; ऎऱिन्त–जिसने फेंका; कॊऱ्ऱनो–वह विजयी कुमारदेव हो; तॆन् तिचै–दक्षिणी दिशा का;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किळवन्नो–पालक यम हो; तिचै निन्ऱु–दिशाओं में रहकर; आट्चियर् ऍन्ऱु–पालन करनेवाले (दिग्पाल) ऐसा; इचैक्कुम्–कहलानेवाले; इवरुळ्–इनमें; नी यावन्–तुम कौन हो। १११३

रावण ने आगे पूछा कि क्या तुम काले रंग वाले कालदेव हो, जो जीवों के समक्ष खड़े होकर उनको पाशबद्ध करके उनके प्राण हर ले जाता है ? या वह विजयी (कार्तिकेय) कुमार हो, जिसने अपनी शक्ति चलाकर क्रौंच पर्वत को हिलाते हुए दो भागों में चीर दिया ? या दक्षिणी दिशा के स्वामी यमराज हो ? (यम और कालदेव अलग माने जाते हैं, और कालदेव यम का आज्ञाकारी दूत है जो जीवों के प्राण हर ले जाता है।) दिक्पाल में तुम कौन हो ? । १११३

अन्दणर् वेळ्वियि नाक्कि याणैयिन्
वन्दुऱ विडुत्तदोर् वयवॅम् बूदमो
मुन्दौरु मलरुळो निलङ्गै मुऱ्ऱुऱच्
चिन्दॅनत् तिरुत्तिय तॅऱुहट् टॅय्वमो 1114

अन्तणर्–मुनि द्वारा; वेळ्वियिन्–यज्ञ में; आक्कि–उत्पन्न करके; आणैयिन्–आज्ञा के अनुसार; वन्तु उऱ–मेरे पास आने के लिए; विटुत्तत्तु–प्रेषित; ओर् वय–एक बलवान; वॅम्–भयंकर; पूतमो–भूत हो क्या; मुन्तु औरु–सर्वप्रथम; मलर् उळोन्–कमलवासी (ब्रह्मा) द्वारा; इलङ्कै मुऱ्ऱु उऱ–लंका का अन्त करते; चिन्तु ऍन–तहस-नहस करो; ऍन–कहकर; तिरुत्तिय–रचित; तॅऱु कण्–दाहक आँखों वाला; तॅय्वमो–देवता हो। १११४

या तुम एक बहुत ही बलिष्ठ और हिंस्र भूत हो, जिसे मुनियों ने यज्ञ से उद्भूत करके अपनी आज्ञा द्वारा मेरे पास आने के लिए प्रेषित किया ? या कोई द्वेष के साथ जलानेवाली आँखों का देवता हो, जिसको सर्वप्रथम सृष्ट ब्रह्मा ने, लंका नगर को पूर्णरूप से चूर कर दो, कहकर रचकर भेजा है ? । १११४

यारैनी यॅन्नैयिङ् गॅय्दु कारियम्
आरुनै विडुत्तव रऱिय वाणैयाल्
शोर्विलै शॊल्लुदि यॅन्नच् चॊल्लिनान्
वेरॊडु ममरर्तम् बुहळ्वि ळुङ्गिनान् 1115

अमरर् तम् पुकळ्–देवों के यश को; वेर् ओटु–जड़ से; विळुङ्किनान्–जिसने खा लिया, उस (रावण) ने; नी यारै–तुम कौन हो; इङ्कु ऍय्तु–इधर आने का; कारियम् ऍन्नै–कार्य क्या है; आर् उनै विटुत्तवर्–कौन तुमको भेजनेवाला है; अऱिय–मुझे बताते हुए; आणैयाल्–मेरी आज्ञा से; चोर्वु इलै–बिना छिपाये; चॊल्लुति–कहो; ऍन्न–ऐसा; चॊल्लिनान्–कहा। १११५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देवों के यश को जिसने जड़ से खाया (मिटाया) था, उस रावण ने और भी पूछा कि तुम कौन हो ? इधर आने का हेतु-कार्य कौन सा था ? किसने तुम्हें इधर भेजा ? मेरी आज्ञा है। विना छिपाये सारी बातें बता दो। रावण ने अपनी बात समाप्त की। १११५

शॊल्लिय वऩैवरु मल्लॆऩ् शॊऩ्ऩवप्
पुल्लिय वलियिऩो रेवल् पूण्डिलॆऩ्
अल्लियङ् गमलमे यऩैय शॆङ्गणोर्
विल्लिदऩ् ऱूदऩ्या ऩिलङ्गै मेयिऩेऩ् 1116

चॊल्लिय-(तुमसे) कथित; अऩैवरुम् अल्लॆऩ्-सभी में (कोई) नहीं हूँ; यान्-मैंने; चॊऩ्ऩ-कथित; अ-उन; पुल्लिय-अल्प; वलियिऩोर्-बलवानों की; एवल्-सेवकाई; पूण्टिलॆऩ्-नहीं अपनायी है; अल्लि अम्-दलों के साथ सुन्दर; कमलमे अऩैय-कमल ही सम; चॆम् कण्-अरुणाक्ष; ओर्-अद्वितीय; विल्लि तऩ्-धनुवीर का; तूतऩ्-दूत हूँ; यान् इलङ्कै मेयिऩेऩ्-मैं लंका आया। १११६

हनुमान ने उत्तर दिया कि मैं उन सभी में कोई नहीं हूँ, जिनके नाम तुमने लिये। उन अल्पबली लोगों की दासता मैंने ग्रहण नहीं की है। पंखुड़ियों-सहित कमलपुष्प ही सम जिनके अरुणाक्ष हैं, उन अनुपम धनुवीर का दूत बनकर मैं लंका में आया। १११६

अऩैयवऩ् यारॆऩ वऱिदि याहियेल्
मुऩैवरु ममररु मूवर् तेवरुम्
ऍऩैयव रेऩैयर् यावर् यावैयुम्
निऩैवरुम् विऩैयमु मुडिक्क निऩ्ऱुळाऩ् 1117

अऩैयवऩ्-वह धनुर्धर; यार्-कौन है; ऍऩ-ऐसा; अऱिति आकियेल्-जानना चाहो तो; मुऩैवरुम्-मुनि; अमररुम्-देव; मूवर् तेवरुम्-त्रिदेव; ऍऩैयवर् एऩैयर्-ऐसे अन्य; यावर्-जो भी हों वे; यावैयुम्-अन्य सभी (निर्जीव पदार्थ); निऩैवु अरुम्-जिसको सोच भी नहीं सकते; विऩैयमुम्-वह कार्य भी; मुटिक्क-कर चुकने को; निऩ्ऱु उळाऩ्-(संकल्प लेकर) रहते हैं। १११७

अगर तुम जानना चाहो कि वे वीर कौन हैं तो सुनो। मुनिगण, देवलोग, त्रिदेव और इनके जैसे जितने लोग हैं, और अन्य जो भी जड़ हैं, वे जिसकी कल्पना भी नहीं करते वैसे कठिन काम को भी करने का निश्चय लेकर रहनेवाले हैं वे। १११७

ईट्टिय वलियु मेऩा ळियऱ्ऱिय तवमुम् याणर्क्
कूट्टिय पडैयुन् देवर् कॊडुत्तनल् वरमुङ् गॊट्पुम्
तीट्टिय वाळ्वु मॆय्दत् तिरुत्तिय पिऱवु मॆल्लाम्
नीट्टिय पहळि यॊऩ्ऱाऩ् मुदलॊडु मुडिक्क निऩ्ऱाऩ् 1118

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ईट्टिय वलियुम्–तुम लोगों ने जो संग्रह किया है, वह बल और; मेल् नाळ्–प्राचीन दिनों में; इयऱ्ऱिय तवमुम्–(तुम लोगों द्वारा) की हुई तपस्या; याणर् कूट्टिय–नये रूप से एकत्रित; पटैयुम्–सेना भी; तेवर् कॉटुत्त–देवों द्वारा दत्त; नल् वरमुम्–अच्छे वर; कॉट्पुम्–अन्य साधन; तीट्टिय वाळ्वुम्–श्रेष्ठ जीवन; ऍय्त–बिताने के लिए; तिरुत्तिय पिऱवुम्–रचित सभी; नीट्टिय पकळि ऑऩ्ऱाल्–(मेरे स्वामी द्वारा) बढ़ाए हुए एक अस्त्र से; मुतल् ऑटु मुटिक्क–नाश करने (का संकल्प लेकर); निऩ्ऱाऩ्–स्थित हैं। १११८

उनका संकल्प है कि तुम्हारा सम्पादित बल, पूर्वकृत तपस्या का फल, नवीन तौर से तुम्हारे द्वारा संगृहीत आयुध, देवताओं द्वारा दत्त वर, अन्य आपके सारे तन्त्र, तुम्हारा श्रेष्ठ जीवन और उसको वैसे बनानेवाली सारी सामग्रियाँ, इन सबको अपने द्वारा प्रेषित एक ही शर द्वारा समाप्त कर लूँ। १११८

तेवरुम् बिऱरु मल्लऩ् ऱिशैक्कळि ऱल्लऩ् ऱिक्किऩ्
कावल रल्ल ऩीशऩ् कयिलैयङ् गिरियु मल्लऩ्
मूवरु मल्लऩ् मऱ्ऱै मुऩिवरु मल्ल ऩॆल्लैप्
पूवल यत्तै याण्ड पुरवलऩ् पुदल्वऩ् पोलाम् 1119

तेवरुम्–देवों में और; पिऱरुम् अल्लऩ्–अन्यों में एक नहीं; तिचै कळिऱु अल्लऩ्–दिग्गज नहीं; तिक्किऩ् कावलर् अल्लऩ्–दिग्पाल नहीं; ईचऩ्–ईश्वर की; कयिलै अम् किरियुम्–कैलास की सुन्दर गिरि भी; अल्लऩ्–नहीं; मूवरुम्–त्रिदेव भी; अल्लऩ्–नहीं; मऱ्ऱै–अन्य; मुऩिवरुम् अल्लऩ्–मुनिगण नहीं; ऍल्लै पूवलयत्तै–समस्त भूवलय पर; आण्ट पुरवलऩ्–जिन्होंने शासन किया, उन राजा के; पुतल्वऩ् पोल् आम्–पुत्र ही हैं। १११९

वे (तुमसे हारकर जो भागे) उन देवों या अन्यों में एक नहीं। दिग्गज, दिग्पाल, ईश्वर की चाँदी की कैलासगिरि, त्रिदेव और अन्य मुनिगण इनमें कोई नहीं। पर वे समस्त भूमि के पालक एक राजा के ही पुत्र हैं। १११९

पोदमुम् बॉरुन्दु वेळ्विप् पुरैयऱु पयऩुम् बॉय्दीर्
मादवञ् जुमन्दु तीरा वरङ्गळु मऱ्ऱुम् यावुम्
यादव ऩिऩैन्दा ऩऩ्ऩ पयत्तऩ वेदु वेण्डिऩ्
वेदमु मऱमुञ् जॉल्लु मॅय्यऱ मूर्त्ति विल्लोऩ् 1120

पोतमुम्–(आत्म-) बोध; पॉरुन्तु वेळ्वि–योग्य यज्ञ के; पुरै अऱु–निर्दोष; पयऩुम्–फल और; पॉय् तीर्–असत्य-रहित; मा तवम्–बड़े तप से; चुमन्तु–धारणकर; तीरा वरङ्कळुम्–अमिट वर और; मऱ्ऱुम् यावुम्–अन्य सभी; यातु अवऩ् निऩैन्ताऩ्–जो उन्होंने चाहा; अऩ्ऩ पयत्तऩ–वह देनेवाले बने; एतु वेण्डिऩ्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हेतु चाहो तो; विल्लोन्–वे धनुर्धर; वेतमुम्–वेदों द्वारा प्रतिपादित; अऱमुम् चॊल्लुम्–और धर्म द्वारा कथित; मॅय् अऱ मूर्त्ति–सत्यधर्ममूर्ति हैं। ११२०

ज्ञान, शास्त्रयुक्त यज्ञ के अमोघ फल, असत्यरहित तपस्या, अक्षय वर और अन्य गौरव —ये सब उनके मनमाने फलदायक बने हैं। हेतु क्या है ? वे धनुवीर वेदशास्त्र-प्रतिपादित सत्यधर्मस्वरूप हैं। ११२०

कारणङ् गेट्टि यायिऱ् कडैयिला मऱैयिन् कण्णुम्
आरणङ् गाट्ट माट्टा वऱिविनुक् कऱिवाय् निन्ऱान्
पोरणङ् गिडङ्गर् कव्वप् पॊदुनिन्ऱ मुदले यॅन्ऱ
वारणङ् गाक्क वन्दा नमररैक् काक्क वन्दान् 1121

कारणम्–(अवतार का) कारण; केट्टि आयिन्–पूछोगे तो; कटै इला–अनन्त; मऱैयिन् कण्णुम्–वेदों में; आरणम् काट्ट माट्टा–उपनिषदों द्वारा भी बताये न जा सकनेवाले; अऱिवितुक्कु अऱिवाय्–ज्ञान के भी ज्ञान (आधार-स्वरूप); निन्ऱान्–जो हैं; पोर् अणङ्कु–युद्ध में पीड़ित करते हुए; इटङ्कर् कव्व–ग्राह के ग्रसने पर; पॊतु–सामान्य; मुतले अॅन्ऱ–आदिदेव पुकारने पर; वारणम् काक्क–गजेन्द्रसंरक्षणार्थ; वन्तान्–जो आये; अमररै–(वे) देवों को; काक्क–रक्षित करने; वन्तान्–आये हैं। ११२१

वह परात्पर ब्रह्म मनुष्य क्यों हुए ? कारण पूछो तो अनन्त वेदों द्वारा या उपनिषदों द्वारा अनिर्दिष्ट ज्ञान के ज्ञानमूल हैं वे। जब ग्राह ने त्रास देते हुए गजेन्द्र का पैर ग्रस लिया, तब गजेन्द्र ने 'सर्वसामान्य रूप से विद्यमान आदिवस्तु ! ' यही कहकर पुकारा। उसे बचाने पधारे थे वे। आज वे ही देवों के रक्षणार्थ अवतार ले पधारे हैं। ११२१

❀मूलमु नडुवु मीऱु मिल्लदोर् मुम्मैत् ताय
कालमुङ् गणक्कु नीत्त कारणन् कैवि लेन्दिच्
चूलमुन् दिहिरि शङ्गुङ् गरहमुन् दुऱन्दु तॊल्लै
आलमु मलरुम् वॅळ्ळिप् पॊरुप्पुम्विट् टयोत्ति वन्दान् 1122

मूलमुम् नटुवुम्–आदि और मध्य; ईऱम् इल्लतोर्–अन्त जिनका नहीं हैं, वह; कारणन्–कारणभूत; मुम्मैत्तु आय–तीन (भूत, वर्तमान और भविष्य); कालमुम्–कालों के; कणक्कुम्–तर्क के; नीत्त कारणन्–पार रहनेवाला कारण हैं; कै विल् एन्ति–हाथ में धनु लेकर; चूलमुम्–त्रिशूल; तिकिरि–चक्र; चङ्कुम्–शंख और; करकमुम्–कमण्डल को; तुऱन्तु–छोड़कर; तॊल्लै–प्राचीन; आलमुम्–वटपत्र को; मलरुम्–और कमलपुष्प; वॅळ्ळि पॊरुप्पुम्–और चाँदी के (कैलास) पर्वत को; विट्टु–त्यागकर; अयोत्ति वन्तान्–अयोध्या आये। ११२२

आदि, मध्य और अन्तहीन हैं वे। सभी के कारणभूत हैं। त्रिकाल और तर्क के परे हैं। अशेष कारणों का कारण हैं। वे ही हाथ में धनु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

धारण कर शंख-चक्र, त्रिशूल और कमण्डल (विष्णु, शिव, ब्रह्मा के हाथ की वस्तुओं) और वटपत्र, कैलासपर्वत और कमलपुष्प (उनके वासस्थानों) को छोड़कर अयोध्या में आये हैं। (कम्बन की धारणा है कि श्रीराम वे आदिमूर्ति हैं, जिनके विष्णु, ईश्वर और ब्रह्मा रूप हैं; जिनको वे तत्तत् कार्य के लिए अपना लेते हैं।)। ११२२

अऱन्दलै निऱुत्ति वेद मरुळ्शुरन् दऱैन्द नीदित्
तिऱन्दॆरिन् दुलहम् बूणच् चॆन्नॆऱि शॆलुत्तित् तीयोर्
इऱन्दुह नूऱित् तक्को रिडर्दुडैत् तेह वीण्डुप्
पिऱन्दनन् ऱन्बॊऱ् पाद मेत्तुवार् पिऱप्प ऱुप्पान् 1123

तन् पॊन् पातम्–अपने (उनके) स्वर्णचरणों की; एत्तुवार्–वन्दना करनेवालों का; पिऱप्पु अऱुप्पान्–जन्म के काटनेवाले हैं; अऱम् तलै निऱुत्ति–धर्म की संस्थापना करके; वेतम् अरुळ् चुरन्तु–वेदों ने कृपा करके; अऱैन्त–जो घोषित किया; नीति तिऱम्–उन नीतिमार्गों को; उलकम् तॆरिन्तु–संसार जानकर; पूण–अपनावे, ऐसा; चॆम् नॆऱि चॆलुत्ति–धर्मशासन करके; तीयोर् इऱन्तु उक–दुष्टों को मार; नूऱि–मिटाकर; तक्कोर् इटर्–शिष्टों का दुःख; तुटैत्तु–(पोंछ) दूर करके; एक–(बाद अपने परमपद) जाने का संकल्प करके; ईण्टु पिऱन्ततन्–इधर (भूमि में) अवतरित हुए हैं। ११२३

वे अपने चरणों की वन्दना करनेवाले भक्तों का जन्म काटनेवाले प्रभु हैं। धर्मसंस्थापना करना, वेदों द्वारा करुणा के साथ विहित नीति-मार्ग को प्रशस्त बनाना, लोगों को उनका ज्ञान दिलाकर उन पर जाने को सिखाना, दुष्टों का निग्रह, शिष्टों का कष्ट-निवारण आदि करके फिर अपने स्थान में लौट जाने का संकल्प लेकर वे अयोध्या में अवतार ले आये हैं। ११२३

अन्नवर् कडिमै शॆय्वे नाममु मनुम नॆन्बेन्
नन्नुद ऱन्नैत् तेडि नाऱ्पॆरुन् दिशैयिऱ् पोन्द
मन्नरिऱ् ऱॆन्बाल् वन्द तानैक्कु मन्नन् वालि
तन्मह नवन्ऱन् ऱूदन् वन्दनॆन् ऱनिये नॆन्ऱान् 1124

अन्नवर्कु–ऐसे उनकी; अटिमै चॆय्वेन्–दासता करता हूँ; नाममुम्–नाम (का); अनुमन् ऎन्पेन्–हनुमान कहाता हूँ; नल् नुतल् तन्नै–(सुन्दर) भाल वाली (सीताजी) को; तेटि–खोजकर; नाल् पॆरुम् तिचैयिल्–चार लम्बी दिशाओं में; पोन्त–जो गये; मन्नरिल्–उन सेनानायकों में; तॆन् पाल् वन्त–दक्षिण की तरफ़ आगत; तानैक्कु मन्नन्–सेना का नायक; वालि तन् मकन्–वाली का पुत्र; अवन् तन् तूतन्–उसका दूत मैं; तनियेन्–एकाकी; वन्ततॆन्–आया हूँ; ऎन्ऱान्–कहा (हनुमान ने)। ११२४

उनका दासकर्म करनेवाला हूँ, मैं। मेरा नाम हनुमान है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुन्दर भाल वाली सीताजी की खोज में चारों दिशाओं में अनेक वानर वीर गये। उनमें दक्षिण दिशा की ओर जो आयी उस सेना का नायक वाली का पुत्र अंगद है। उसका मैं दूत हूँ और मैं इधर एकाकी आया। ११२४

ऍन्ऱलु मिलङ्गै वेन्द नॅयिऱ्ऱिऩ मॅऴिलि नाप्पण्
मिऩ्ऱिरिन् दॅन्ऩ नक्कु वालिशेय् विडुत्त तूद
वऩ्ऱिऱ लाय वालि वलियऩ्गॊ लरशिऩ् वाऴ्क्कै
नऩ्ऱुहॊ लॅऩ्ऩ लोडुम् नायहऩ् रूद नक्कान् 1125

ऍऩ्ऱलुम्–कहते ही; इलङ्कै वेन्तऩ्–लंका के राजा की; ऍयिऱ्ऱु इऩम्–दन्तपंक्तियाँ; ऍऴिलि नाप्पण्–मेघमध्य; मिऩ् तिरिन्तु–बिजली चमकी; ऍऩ्ऩ–जैसे; नक्कु–हँसकर; वालि चेय्–वालीपुत्र के; विटुत्त तूत–प्रेषित दूत; वऩ् तिऱल् आय–बहुत बली; वालि–वाली; वलियऩ् कॊल्–स्वस्थ है क्या; अरचिऩ् वाऴ्क्कै–उसका राज्य-शासन; नऩ्ऱु कॊल्–अच्छा चलता है क्या; ऍऩ्ऩल् ओटुम्–पूछने पर; नायकऩ्–सर्वलोकनायक का; तूतऩ्–दूत; नक्कान्–हँसा। ११२५

हनुमान के यह कहने पर लंकाधिपति हँसा और उसकी दन्तपंक्तियाँ मेघमध्य बिजली के समान चमकीं। उसने प्रश्न किया कि वालीसुतप्रेषित दूत! क्या अतिबलिष्ठ वाली स्वस्थ है? उसका राज्य-शासन अच्छा चलता है क्या? जब रावण ने यह प्रश्न किया, तब सर्वलोकनायक का दूत हँस उठा। (दोनों की हँसी में जो भेद है, वह स्वादनयोग्य है!)। ११२५

अञ्जलै यरक्क पार्विट् टन्दर मडैन्दा ऩन्ऱे
वॅञ्जिऩ वालि मीळाऩ् वालुम्बॊय् विळिन्द दन्ऱे
अञ्जऩ मेऩि याऩ्ऱ ऩडुहणै यॊऩ्ऱाऩ् माऴ्हित्
तुञ्जिऩ ऩॅङ्गळ् वेन्दऩ् शूरियऩ् ऱोऩ्ऱ लॅऩ्ऱाऩ् 1126

अरक्क–राक्षस; अञ्चलै–डरो मत; वॅम् चिऩ–भयानक क्रोधी; वालि–वाली; पार् विट्टु–भूतल छोड़कर; अन्तरम् अटैन्ताऩ्–अन्तरिक्ष (स्वर्ग) सिधार गये; मीळाऩ्–लौट नहीं आएँगे; अऩ्ऱे–उसी समय; वालुम्–उनकी पूँछ भी; पोय् विळिन्ततु–मिट गयी; अञ्चऩ मेऩियाऩ् तऩ्–अंजनवर्ण (श्रीराम) के; अटु कणै–घातक बाण; ऑऩ्ऱाल्–एक के द्वारा; माऴ्कि–पीड़ित होकर; तुञ्चिऩऩ्–सो गया; ऍङ्कळ् वेन्तऩ्–हमारे राजा; चूरियऩ् तोऩ्ऱल्–सूर्यकुमार; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (हनुमान ने)। ११२६

हनुमान ने (आश्वासन के स्वर में) उत्तर दिया कि राक्षस रावण! डरो मत! वाली अब भूमि पर नहीं हैं! भयंकर क्रोधी वाली अन्तरिक्ष (स्वर्ग) में सिधार गये। वे लौट नहीं आयेंगे! उसी दिन उनकी पूँछ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भी चली गयी नाश होकर ! (रावण वाली की पूँछ से ही अधिक डरता था, क्योंकि उसी में वह बँधा फिरा !) अंजनवर्ण श्रीराम के एक ही घातक शर से आहत होकर पीड़ा के साथ (सदा के लिए) सो गया ! अब हमारे राजा सूर्यसूनु सुग्रीव हैं। ११२६

ऍन्नुडै यीट्टि नालव् वालियै यॅऱुळ्वा यम्बाल्
इन्नुयि रुण्ड दिप्पो दियाण्डैया निराम नॅन्बान्
अन्नवन् ऱेवि तन्नै यङ्गद नाड लुऱ्ऱ
तन्मैयै युरैशॅय् हॅन्नच् चमीरणन् ऱ्नयन् शॊल्वान् 1127

ऍन् उटै ईट्टिनाल्–किस अभिप्राय से; **इरामन् ऍन्पान्**–राम नाम के उसने; **अ वालियै**–उस वाली के; **ऍऱुळ् वाय्**–बलिष्ठ; **अम्पाल्**–शर से; **इन् उयिर् उण्टतु**–प्यारे प्राणों को खा (हर) लिया; **इप्पोतु**–अब; **याण्टैयान्**–कहाँ रहता है; **अन्नवन् तेवि तन्नै**–उसकी पत्नी को; **अङ्कतन् नाटल् उऱ्ऱ**–अंगद के ढूँढ़ने का; **तन्मैयै**–वृत्तान्त; **उरै चॅय्क**–बताओ; **ऍन्न**–कहने पर; **चमीरणन् ततयन्**–समीरणसूनु; **चॊल्वान्**–बोला। ११२७

रावण ने पूछा कि राम नामक व्यक्ति ने किस अभिप्राय से उस वाली के प्यारे प्राण सशक्त बाण चलाकर हर लिये ? वह राम अब कहाँ रहता है ? उसकी देवी को अंगद खोजता आया, उसका हेतु क्या है ? बताओ। तब समीरणसूनु ने उत्तर में यों कहा। ११२७

तेवियै नाडि वन्द शॅङ्गणाऱ् कॅङ्गळ् कोमान्
आवियॊन् ऱाह नट्टा नरुन्दुयर् तुडैत्ति यॅन्न
ओवियर्क् कॅळुद वॊण्णा वुरुवत्त नुरुमै योडुम्
कोवियऱ् चॅल्व मुन्ने कॊडुत्तुवा लियैयुङ् गॊन्ऱान् 1128

तेवियै नाटि वन्त–देवी को खोजते आये; **चॅङ्कणाऱ्कु**–अरुणाक्ष श्रीराम का; **ऍङ्कळ् कोमान्**–हमारे राजा; **आवि ऒन्ऱ आक**–प्राण एक बनाकर; **नट्टान्**–मित्र हुए; **अरुम् तुयर् तुटैत्ति**–मेरा कठोर दुःख मिटाओ; **ऍन्न**–कहने पर; **ओवियर्क्कु**–चितेरों के लिए; **ऍळुत ऒण्णा**–जिनका चित्र खींचना असाध्य है; **उरुवत्तन्**–ऐसे रूप वाले (श्रीराम) ने; **उरुमैयोटुम्**–रुमा के साथ; **को इयल् चॅल्वम्**–राज्य की श्री को भी; **मुन्ने कॊटुत्तु**–पहले देकर; **वालियैयुम् कॊन्ऱान्**–वाली को भी मारा (श्रीराम ने)। ११२८

अपनी देवी सीताजी को खोजते हुए अरुणाक्ष श्रीराम आये। तब हमारे राजा ने दोनों के प्राण एक बनाकर उनसे मित्रता बना ली। और उनसे प्रार्थना की कि मेरा कठोर दुःख मिटाइए। तभी, समर्थ चितेरों के लिए भी जिनका चित्र बनाना असाध्य है, उन श्रीराम ने सुग्रीव को उनकी पत्नी रुमा के साथ राज्य भी दिलाने का वादा कर दिया। बाद वाली को भी मार डाला। ११२८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आयवन् ऱन्नो डाण्डत् तिङ्गळोर् नान्गुम् वैहि
मेयवॅञ् जेनै शूऴ वीऱ्ऱिनि दिरुन्द वीरन्
पोयिनि नाडु मॅन्नप् पोन्दनम् बुहुन्द तीदॅन्
ऱेयवन् ऱूदन् शॊन्ना निरावण निदनैच् चॊन्नान् 1129

आयवन् तन् ओटु–ऐसे सुग्रीव (की सम्मति) से; आण्टु–वहाँ; तिङ्कळ् ओर् नान्कुम्–एक मासचतुष्टय; वैकि–ठहरकर; इनितु वीऱ्ऱु इरुन्त वीरन्–जो सुख से रहे, उन श्रीवीरराघव के; मेय वॅम् चेनै चूऴ–एकत्रित भयंकर (वानर) सेना के घेरकर आने पर; इनि पोय् नाटुम्–अब जाकर खोजो; ऍन्न–कहने पर; पोन्तनम्–हम आये; पुकुन्ततु ईतु–हुआ यह; ऍन्ऱु–ऐसा; एयवन्–जिन्होंने भेजा था, उनके; तूतन्–दूत ने; चॊन्नान्–कहा; इरावणन्–रावण ने; इतनै–यह; चॊन्नान्–कहा। ११२९

फिर ऐसे सुग्रीव की सम्मति से श्रीराम चार महीने वहीं, ऋष्यमूक पर्वत पर ससुख ठहरे रहे। अनुपम वीर के पास भयानक वानर-सेना आ मिली। तब उन्होंने आज्ञा दी कि अब जाकर सीताजी की खोज लगाओ। हम आये। आज्ञापक श्रीराम के दूत ने यों कहा। रावण यों बोला। ११२९

उङ्गुलत् तलैवन् ऱन्नो डॊप्पिला वुयर्च्चि योनै
वॅङ्गॊलै यम्बिऱ् कॊन्ऱाऱ् काट्टॊऴिन् मेऱ्कॊण् डीरेल्
ऍङ्गुलप् पुऱुनुञ् जीर्त्ति नुम्मॊडु मियैन्द दॅन्ऱाल्
मङ्गुलिऱ् पॊलिन्द ञाल मादुमै युडैत्तु मादो 1130

उम् कुल तलैवन् तन् ऒटु–तुम्हारे (वानर) कुल के अधिपति थे, साथ-साथ; ऒप्पु इला–उपमा-रहित; उयर्च्चियोनै–जो उत्तम थे, उनको; वॅम्–भयंकर; कॊलै अम्पिल्–मारक शर से; कॊन्ऱाऱ्कु–जिसने मारा उसकी; आळ्तॊऴिल्–दासता का काम; मेल् कॊण्टीर् एल्–अपनाया है (तुम लोगों ने) तो; नुम् चीर्त्ति–तुम्हारा गौरव; ऍङ्कु उलप्पुऱुम्–कहाँ जाकर मिटेगा; नुम् ऒटुम्–तुम्हारे लिए; इयैन्ततु ऍन्ऱाल्–युक्त रहा तो; मङ्कुलिल् पॊलिन्त–मेघों के कारण पनपनेवाला; ञालम्–यह लोक; मातुमै उटैत्तु मातो–सौन्दर्यमय होगा न। ११३०

वाली तुम्हारे कुल का अधिपति था; अलावा इसके वह अप्रमेय गौरवयुक्त था। उसको जिसने अपने भयंकर मारक अस्त्र द्वारा मारा, उसकी दासता का काम तुम लोगों ने अपना लिया है! तुम्हारी कीर्ति कहाँ मिटेगी? अगर यह काम तुम्हारे लिए योग्य हुआ तो मेघों के कारण पनपनेवाला यह भूलोक बड़ा सौंदर्यमय रहेगा न? (व्यंग्य का वचन है।)। ११३०

तम्मुनैक् कॊल्वित् तन्नाऱ् कॊन्ऱवऱ् कन्बु शान्ऱ
उम्मिनत् तलैव नेव यादॅमक् कुरैक्क लुऱ्ऱ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दॅम्मुन्नैत् तूदु वन्दा यिहल्पुरि तन्मै यॅन्नै
नॉम्मॅन्नक् कॉल्ला नॅञ्ज मञ्जलै नुवरि यॅन्रान् 1131

तम् मुन्नै–अपने ज्येष्ठ भ्राता को; कॉल्वित्तु–किसी के द्वारा मरवाकर; अन्नान् कॉन्ऱवऱ्कु–वैसा मारनेवाले के प्रति; अन्पु चान्ऱ–प्रेम रखनेवाले; उम् इन्न–तुम्हारे समूह के; तलैवन् एव–राजा के भेजने पर; यातु–क्या; ॲमक्कु–हमसे; उरैक्कल् उऱ्ऱतु–बताना पड़ा है; ॲम् मुन्नै–मेरे समक्ष; तूतु वन्ताय्–दूत के रूप में जो आये; इकल् पुरि–ऐसा तुम युद्ध करो; तन्मै ॲन्नै–इसका हेतु क्या है; नॉम् ॲन्न–सहसा; कॉल्लाम्–मारेंगे नहीं; नॅञ्चम् अञ्चलै–मन में मत डरो; नुवल्ति–कहो; ॲन्ऱान्–कहा। ११३१

अपने ज्येष्ठ भ्राता को किसी के द्वारा मरवाकर, और मारनेवाले पर ही प्रेम करनेवाले अपने समूह के नायक द्वारा प्रेषित तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो ? और मेरे पास दूत बनकर आगत तुमने युद्ध किया। उसका कारण क्या है ? हम तुमको सहसा मारेंगे नहीं। इसलिए विना डरे बताओ। रावण ने हनुमान से कहा। ११३१

तुणर्त्त तारवन् शॉल्लिय शॉऱ्कळैप्
पुणर्त्तु नोक्किप् पॉदुनिन्ऱ नीर्मैयै
उणर्त्ति नाल दुरुमॅन्न वुन्नरुङ्
गुणत्ति नानु मिन्नैयन्न कूऱिन्नान् 1132

उन्न अरुम्–अचिंतनीय; कुणत्तिन्नानुम्–उत्तम गुणी हनुमान ने; तुणर्त्त तार्–फूलों के गुच्छों की बनी मालाधारी; चॉल्लिय चॉऱ्कळै–(रावण द्वारा) कथित वचनों को; पुणर्त्तु नोक्कि–मिलाकर विचारा; पॉतु निन्ऱ–सर्वसाधारण; नीर्मैयै उणर्त्तिनाल्–श्रेष्ठ तत्त्वों को समझाऊँ; अतु उरुम्–तो वह फल देगा; ॲन्न–सोचकर; इन्नैयन्न कूऱिन्नान्–यों बोला। ११३२

हनुमान अचिन्तनीय श्रेष्ठ गुणी था। उसने फूलों के गुच्छों की बनी मालाधारी रावण के सब वचनों को मिलाकर सोचा। उसे लगा कि सर्वसामान्य तत्त्व समझाए जाएँ तो वह शायद अच्छा फल दे सकता है। इसलिए वह यों बोला। ११३२

तूदु वन्ददु शूरियन् कान्मुळै, एदु वॉन्ऱिय नीदि यियैन्दन्न
शादु वॅन्ऱुणर् हिऱ्ऱियेऱ् ऱक्कन्न, कोदि ऱन्दन्न निन्वयिऱ् कूऱुवाम् 1133

चूरियन्–सूर्य के; कान् मुळै–(पैर के अंकुर) पुत्र का; तूतु वन्ततु–दूत बनकर आना हुआ (आया); एतु ऑन्ऱिय–हेतुयुक्त; नीति इयैन्तन्न–नीतिसम्मत; तक्कन्न–तुम्हारे हितकारी; कोतु इऱन्तन्न–दोषरहित; आम्–होंगे (मेरे कथन); चातु ॲन्ऱ–साधु, ऐसा; उणर्किऱ्ऱियेल्–मानोगे तो; निन् वयिन्–तुमसे; कूऱुवाम्–कहेंगे। ११३३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मैं इधर सूर्यसूनु सुग्रीव का दूत बनकर आया हूँ। मैं अब जो भी बातें कहूँगा, वे हेतुयुक्त, नीतिसम्मत, हितकारिणी और निर्दोष हैं। अगर तुम साधु समझोगे तो बताऊँगा। ११३३

वऱिदु वीऴ्त्तनै वाऴ्क्कैयै मन्नऱम्, शिऱिदु नोक्कलै तीमै तिरुत्तिनाय्
इऱुदि युऱ्ऱुळ दायिनु मिन्नुमोर्, उऱुदि केट्टि युयिर्नॆडि दोम्बुवाय् 1134

वाऴ्क्कैयै–जन्म को; वऱितु–व्यर्थ; वीऴ्त्तनै–बिगाड़ दिया; मन्नु अऱम्–राजधर्म पर; चिऱितुम्–ज़रा भी; नोक्कलै–ध्यान नहीं दिया; तीमै तिरुत्तिनाय्–पाप को खूब किया; इऱुति–अन्तकाल; उऱ्ऱु उळतु–आ गया है; आयिनुम्–तो भी; इन्नुम्–अब भी; ओर् उऱुति–एक हितोपदेश; केट्टि–सुनो; उयिर्–प्राण; नॆटितु ओम्पुवाय्–बहुत काल तक पाल सकोगे। ११३४

तुमने अपने जन्म को व्यर्थ बिगाड़ दिया है। राजधर्म पर किंचित् भी ध्यान नहीं दिया। पापकार्य बहुत तत्परता के साथ कर रहे हो। तुम्हारा अन्तकाल आ ही गया तो भी एक हितोपदेश है! सुनो तो बहुत काल तक अपने प्राणों को सुरक्षित रख सकोगे। ११३४

पोयिऱ् ऱेनिन् पुलन्वॆन्ऱु पोऱ्ऱिय, वायिऱ् ऱीर्वरि दाहिय मादवम्
कायिऱ् ऱीर्वरुङ् गेडरुङ् गऱ्पिनाल्, तीयिऱ् ऱूयव ळैत्तुयर् शॆय्ददाल् 1135

कायिल्–क्रोध करे तो; तीर्वु अरुम्–अवार्य और; केटु अरुम्–अचल; कऱ्पिनाल्–पातिव्रत्य में; तीयिल् तूयवळै–अग्नि से भी पवित्र देवी को; तुयर् चॆय्तताल्–तुमने कष्ट दिया, इसलिए; निन् पुलन् वॆन्ऱु–अपनी इन्द्रियों का निग्रह करके; पोऱ्ऱिय–परिपालित; वायिल्–किसी भी मार्ग से; तीर्वु अरितु आकिय–अक्षुण्ण रहा; मा तवम्–(तुम्हारा) बड़ा तप; पोयिऱ्ऱे–फलहीन हो गया तो। ११३५

पातिव्रत्य धर्म ऐसा है कि पतिव्रता नारी गुस्सा करेगी तो वह अवार्य होगा। पातिव्रत्य अचल है। पातिव्रत्य धर्मपालन के कारण सीताजी अग्नि से भी पवित्र हैं। उनको तुमने कष्ट दिया है। इसलिए इन्द्रिय-निग्रह करके जिस महान् तप को तुम सभी विध अक्षय रूप से पालते आ रहे थे वह अब छूट जानेवाला है! । ११३५

इन्ऱु वीन्ददु नाळैच् चिऱिदिऱै, निन्ऱु वीन्द दलालिऱै निऱ्कुमो
ऒन्ऱु वीन्ददु नल्लुणर् वुम्बरै, वॆन्ऱु वीक्किय वीक्कम् विदियिनाल् 1136

इन्ऱु वीन्ततु–आज का दिन हो गया (चला गया); नाळै–'कल'; चिऱितु इऱै निन्ऱु–कुछ समय ठहरकर; वीन्ततु–मिटा; अलाल्–नहीं तो; इऱै निऱ्कुमो–कुछ स्थायी रहेगा क्या; नल् उणर्वु–श्रेष्ठ बुद्धिमान; उम्परै–देवों को; वॆन्ऱु वीक्किय–जीतकर अर्जित; वीक्कम् ऒन्ऱु–एक गौरव; वितियिनाल्–विधि के कारण; वीन्ततु–नष्ट हो गया। ११३६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'आज' तो गया। 'कल' कुछ देर के बाद जायगा; नहीं तो वह कुछ (अमर) रहनेवाला है क्या ? तुमने श्रेष्ठ ज्ञानी, देवों को जीता और गौरव सम्पादन किया। अब वह, विधि के विधान से दूर हो गया, देखो। ११३६

तीमै नन्मैयैत् तीत्तलॉल् लादॅनुम्, वाय्मै नीक्किनै मादवत् ताल्वन्द
तूय्मै तूयव डन्वयिर् रोन्रिय, नोय्मै याऱुडैक् किन्ऱनै नोक्कलाय् 1137

तीमै–पापकार्य; नन्मैयै–अच्छे धर्मों को; तीत्तल् ऑल्लातु–मिटा नहीं सकेगा; ऍनुम्–इस; वाय्मै–सत्य को; नीक्किनै–तुमने हटा दिया; मातवत्ताल् वन्त तूय्मै–बड़ी तपस्या से प्राप्त पवित्रता को; नोक्कलाय्–न देखकर; तूयवळ् तन्–पवित्र देवी के; वयिन् तोन्रिय–प्रति हुए; नोय्मैयाल्–(कामना-) रोग से; तुटैक्किन्ऱनै–पोंछ रहे हो। ११३७

साधु कहा करते थे कि पाप पुण्य को मिटा नहीं सकता। पर तुमने उस कथन को झूठा बना दिया। महान् तप के सिल्सिले में तुमने पवित्रता पायी थी। उसकी तुमने चिन्ता नहीं की और पातिव्रत्य में पवित्र देवी सीता पर उदित कामरोग से उसे मिटा रहे हो। ११३७

तिऱन्दि ऱम्बिय कामच् चॅरुक्कित्ताल्
मऱन्दु तत्त मदियिन् मयङ्गित्तार्
इऱन्दि ऱन्दिळिन् देऱुव देयलाल्
अऱन्दि ऱम्बित्त रारुळ रायित्तार् 1138

तिऱम् तिऱम्पिय–अतिक्रमित; काम चॅरुक्कित्ताल्–कामाहंकार से; मऱन्तु–सही मार्ग को भूलकर; तम् तम् मतियित्–अपनी-अपनी बुद्धि में; मयङ्कित्तार्–भ्रमित लोग; इऱन्तु इऱन्तु–मर-मरकर; इळिन्तु एऱुवते अलाल्–नीचे गिरते ही जायँगे, नहीं तो; अऱम् तिऱम्पित्तर्–धर्म का उल्लंघन करनेवाले; आर् उळर् आयित्तार्–कौन श्रेष्ठ गति पर स्थिर रहे। ११३८

जिनमें अतिक्रमित काम है और अहंकार भी, वे अपने बुद्धिभ्रम से फिर-फिर मरते और अधोगति में उत्तरोत्तर बढ़ते जाते। इस स्थिति के सिवा कौन अधर्मी हुए हैं जो सकुशल रहे हैं। ११३८

नामत् ताळ्हडन् ञालत् तविन्दवर्, ईमत् तान्मऱैन् दारिळ मादर्पाल्
कामत् तालिऱन् दार्हळि वण्डुऱै, तामत् तारिन् ऱॅण्णिन्नुञ् जार्वरो 1139

नामत्तु–भयोत्पादक; आळ् कटल्–गम्भीर समुद्र-मध्य; ञालत्तु–इस भूतल में; इळ मातर् पाल्–कम आयु की स्त्रियों के; कामत्ताल् इऱन्तार्–काम में सीमा लाँघकर; कळि वण्टु उऱै–मधु पीकर मत्त रहनेवाले भ्रमरों से भूषित; ताम तारित्तर्–पुष्पमालाधारी (पुरुष); अविन्तवर्–सब तरह से नष्ट होकर; ईमत्ताल्–चिता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पर; मऱैन्तार्–जो जल मिटे; ऍण्णितुम्–(वे) गिनती में; चार्वरो–आयँगे क्या। ११३९

भयानक और गहरे सागरवलयित भूतल में कम आयु की स्त्रियों पर अत्यधिक कामासक्त होकर जो श्मशान की आग में मरे, उन मधुपायी भ्रमर-मण्डित मालाधारी पुष्प गिनती में आयँगे क्या ? । ११३९

पॊरुळुङ् गाममु मॅन्ऱिवै पोक्किवे, ऱिरुळुण् डामॅऩ वॅण्णल रीदलुम्
अरुळुङ् गादलिर् ऱीर्दलु मल्लदोर्, तॅरुळुण् डामॅऩ वॅण्णलर् शीरियोर् 1140

चीरियोर्–साधू लोग; पॊरुळुम् काममुम् ऍऩ्ऱु–अर्थ और काम कथित; इवै पोक्कि–इनके सिवा; वेऱु इरुळ् उण्टु आम्–अन्य अन्धकार है; ऍऩ ऍण्णलर्–ऐसा नहीं सोचते; ईतलुम्–भिक्षा (ग़रीबों को) देना; अरुळुम्–कृपा करना; कातलिल् तीर्तलुम्–काम (या कामना) से दूर रहना; अल्लतु ओर्–इनके अलावा कोई; तॅरुळ् उण्टाम्–स्पष्ट ज्ञान है; ऍऩ ऍण्णलर्–ऐसा नहीं माना है (उन्होंने)। ११४०

साधू लोगों ने अर्थासक्ति और कामासक्ति के सिवा और कहीं अन्धकार है —ऐसा नहीं माना था। (भिक्षा-) दान और दया और काम से बचना —इनके से अन्य ज्ञान का अस्तित्व भी नहीं माना था। ११४०

इच्चैत् तऩ्मैयि ऩिऱ्पिऱ रिल्लिऩै, नच्चि नाळु नहैयुऱ नाणिलै
पच्चै मेऩि पुलर्न्दु पऴिपडूउम्, कॊच्चै याण्मैयुञ् जीर्मैयिऱ् कूडुमो 1141

इच्चै तऩ्मैयिऩिल्–काम अपने स्वभाव से; पिऱर् इल्लिऩै–परदारा को; नच्चि–चाहकर; नाळुम् नकै उऱ–दिने-दिने हँसी का पात्र बनकर; नाण् इलै–बेशरम बनकर; पच्चै मेऩि–चिकना शरीर; पुलर्न्तु–सूखकर; पऴि पटु उम्–अपयश के वश होकर; कॊच्चै आण्मैयुम्–नीच पुंसत्व के साथ रहता है, यह भी; चीर्मैयिल्–अच्छे गुणों में; कूटुमो–मिलेगा क्या। ११४१

काम की स्वाभाविक प्रेरणा से परदारा की इच्छा करना, सदा परिहास का पात्र बनना, निर्लज्ज होकर रूप के सौंदर्य की तरावट का सूख जाना और निन्दित होना —इन सबके साथ रहनेवाला नीच पौरुष भी श्रेष्ठ गुणों में लिया जायगा क्या ? । ११४१

ओद नीरुल हाण्डव रुऩ्ऱुणैप्, पोद नीदिय रारुळर् पोयिऩार्
वेद नीदि विदिवऴि मेल्वरुम्, काद ऩीयऱत् तॅल्लै कडत्तियो 1142

ओतम् नीर् उलकु–तरंगायमान जल (समुद्र) वलयित भूमि के; आण्टवर्–शासक; पोयिऩार्–चल बसे; उऩ् तुणै–(उनमें) तुम-जैसे; पोतम् नीतियर्–बुद्धि और नीतिमान्; आर् उळर्–कौन है; वेत नीति–वेद और नीति (जिन्होंने संसार को सिखायी); विति–उन विधायक ब्रह्मा के; वऴि मेल् वरुम्–वंश में उत्पन्न; कातल् नी–पुत्र तुम; अऱत्तु ऍल्लै–धर्म की सीमा का; कटत्तियो–व्यतिक्रम करोगे क्या। ११४२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तरंगायमान जल के सागर से वलयित भूमि का पालन करके जो मरे, उनमें तुम्हारे जितने ज्ञानी और न्यायी कितने हैं ? तुम ब्रह्मा के वंशज हो और ब्रह्मा ने ही वेद-शास्त्र आदि का ज्ञान संसार को दिया। तुम धर्म की सीमा का उल्लंघन करोगे क्या ? । ११४२

वॅऱुप्पुण् डाय वॉरुत्तियै वेणडिऩाल्
मऱुप्पुण् डायपिऩ् वाऴ्हिऩ्ऱ वाऴ्विऩिल्
उऱुप्पुण् डाय्मिह वोङ्गिय नाशियै
अऱुप्पुण् डाल दऴहॅऩ लाहुमे 1143

वॅऱुप्पु उण्टु आय–जिसके मन में घृणा है; ऑरुत्तियै–ऐसी एक स्त्री को; वेण्टिऩाल्–चाहोगे तो; मऱुप्पु उण्टाय पिऩ्–इनकार होने के बाद; वाऴ्किऩ्ऱ वाऴ्विऩिल्–जीनेवाले जीवन से; उऱुप्पु उण्टु आय्–सुन्दर अंग जो बनी है; मिक ओङ्किय नाचियै–बहुत उन्नत नाक का; अऱुप्पु उण्टाल्–कटना हो जाय; अतु–वह (नासिका-रहित मुख); अऴकु ऍऩल् आकुमे–सुन्दर कहा जा सकता है न। ११४३

अप्रिय और घृणा करनेवाली स्त्री को चाहो; इनकार भी मिल जाय। फिर निर्लज्ज जीवन जीने से सुन्दर अंग जो उन्नत है, उस नाक का कट जाना अधिक सुन्दर कह सकेंगे न ? । ११४३

पारै नूऱुव पऱ्पल पॉऱ्पुयम्, ईरै नूऱु तलैयुळ वॅऩ्ऩिऩुम्
ऊरै नूरुङ् गडुङ्गऩ लुट्पॉदि, शीरै नूऱवै शेमञ् जॅलुत्तुमो 1144

पारै नूऱुव–भूमिनाशक; पल्पल पॉऩ् पुयम्–अनेक सुन्दर हाथ; ईर् ऐ–दस; नूऱु तलै उळ–सौ सिर हैं; ऍऩ्ऩिऩुम्–तो भी; चेमम् चॅलुत्तुमो–भला कर सकते हैं क्या; अवै–वे; ऊरै नूऱुम्–नगर-दाहक; कटुम् कऩल्–भयंकर अग्नि को; उळ् पॉति–अन्दर लिये रहनेवाले; नूऱु चीरै–सौ वस्त्र हैं। ११४४

भूतलनाशक अनेक हाथ और दस सौ सिर हों तुम्हारे; तो भी भला मिल सकता है क्या उनसे ? उनको सौ (अनेक) साड़ियाँ समझो, जिनमें आग बँधी रहती है जो नगर को ही जला देगी। ११४४

पुरम्बि ऴैप्परुन् दीप्पुहप् पॉङ्गिऩोन्
नरम्बि ऴैत्तऩिऩ् पाडलि ऩल्हिय
वरम्बि ऴैक्कु मऱैपिऴै यादवऩ्
शरम्बि ऴैक्कुमॅऩ् ऱॅण्णुदल् शालुमो 1145

पुरम् पिऴैप्पु अरुम्–त्रिपुर न बचें; ती–ऐसी बड़ी अग्नि; पुक–घुसे इस भाँति; पॉङ्किऩोऩ्–क्रुद्ध शिवजी; नरम्पु इऴैत्त–अपने हाथ की नसों को तन्त्री बनाकर जो तुमने स्वर निकाला; निऩ् पाटलिऩ्–ऐसे तुम्हारे सामगान से; नल्किय–तृप्त होकर दिये गये; वरम् पिऴैक्कुम्–वर चूक जायँगे; मऱै पिऴैयातवऩ्–वेदमार्ग

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

का उल्लंघन जो नहीं करते; चरम्–(उनका) बाण; पिऴैक्कुम् ऍन्ऱु–चूक जायगा, ऐसा; ऍण्णुतल्–सोचना; चालुमो–युक्त होगा क्या । ११४५

ईश्वर क्रुद्ध हुए और त्रिपुर में आग लग गयी और पुर नहीं बचे। ऐसे शिवजी ने तुम्हारे हाथों की नसों की तन्त्री से उत्पन्न सामगान से तृप्त होकर तुम्हें वर दिये थे। वे भी व्यर्थ हो सकते हैं, पर वेदमार्ग से जो नहीं हटते उन श्रीराम के शर चूक जायँगे —ऐसा समझना ठीक होगा क्या ? (नहीं होगा) । ११४५

ईऱि ऩाळुह वॅञ्जलि ऩऱ्ऱिरु
नूऱि नॉय्दिऩै याहि नुऴैदियो
वेऱु मिऩ्ऩु नहैयाम् विऩैत्तॊऴिल्
तेऱि ऩार्पलर् कामिक्कुञ् जॅव्वियोय् 1146

तेऱिऩार् पलर्–अनेक परिष्कृत ज्ञानी द्वारा; कामिक्कुम्–काम्य; चॅव्वियोय्–गुणों वाले; ईऱु इल् नाळ् उक–अक्षुण्ण (साढ़े तीन करोड़ सालों की) आयु नष्ट करते हुए; ऍञ्चल् इल्–अक्षय; नल् तिरु–श्रेष्ठ सम्पत्ति को; नऱि–मिटाते हुए; नॉय्तिऩै आकि–क्षुद्र बनकर; वेऱुम्–विपरीत; इऩ्ऩम् नकै आम्–और परिहासयोग्य; विऩै तॊऴिल्–कार्य करने में; नुऴैतियो–प्रविष्ट होना चाहते हो क्या । ११४६

सुलझे हुए अनेक ज्ञानी जिन गुणों की कामना करते हैं, उन गुणों से भूषित (रावण) ! अक्षय तुम्हारी साढ़े तीन करोड़ सालों की आयु का क्षय करते हुए, अक्षुण्ण त्रैलोकाधिपत्य आदि श्रियों का नाश करते हुए, दीन बनकर, इस वैभवमय जीवन के विपरीत हँसी के योग्य काम में प्रवृत्त होना चाहते हो क्या ? । ११४६

पिऱन्दु ळार्पिऱ वाद पॅरुम्बदम्
शिऱन्दु ळार्पॅरुन् देवर्क्कुन् देवराय्
इऱन्दु ळार्पिऱर् यारु मिरामनै
मऱन्दु ळारुळ राहिलर् वाय्मैयाल् 1147

पिऱन्तुळार्–जनमे हुए; पिऱवात–और पुनर्जन्म न हो, ऐसे; पॅरुम् पतम्–परमपद को प्राप्त कर; चिऱन्तुळार्–उत्कृष्ट जो हुए हैं; पॅरुम् तेवर्क्कुम्–बड़े देवों के भी; तेवराय् इऱन्तुळार्–देव जो बने हैं; पिऱर् यारुम्–अन्य वे भी; इरामनै मऱन्तुळार् आकिलर्–श्रीराम को भूलनेवाले नहीं होते; वाय्मै–यह सत्य है । ११४७

जन्म जो ले चुके हैं वे, फिर से जन्म जहाँ से नहीं होता उस परमपदवासी वे, देवों के देव जो हैं त्रिदेव वे, और अन्य देवता —कोई भी श्रीराम को नहीं भूलते हैं। यह सत्य है । ११४७

आद लाऱ्ऱ ऩरुम्बॅऱ्ऱ चॅलवमुम्
ओदु पल्हिळै युम्मुयि रुम्मुऱच्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चीदै यैत्तरु हॅन्नॅनच् चॅप्पिनान्
शोदि यान्मह निर्कॅन्रु शॉल्लिनान् 1148

आतलाल्–इसलिए; तन् पॅरल् अरुम्–अपनी दुष्प्राप्य; चॅल्वमुम्–सम्पत्ति; ओतु पल् किळैयुम्–(बन्धु) कहलानेवाले अनेक बन्धु-बान्धव; उयिरुम्–प्राण; उर–लगे रहें, इस वास्ते; चीतैयै तरुक अॅन्–सीताजी को लौटा दो, ऐसा कहो; अॅत–ऐसा; चोतियान् मकन्–ज्योतिर्मय (सूर्य) के पुत्र ने; निर्कु अॅन्रु–तुम्हारे लिए; चॉल्लिनान्–कहला भेजा। ११४८

इसलिए अपने दुष्प्राप्य धन, अपने कहे जानेवाले बन्धु-बान्धव और अपने प्राण —इनको स्थायी रखना चाहो तो सीताजी को लाकर श्रीराम के पास अर्पित कर दो। सुग्रीव ने मुझसे कहा कि मैं यह सब तुमसे कहूँ। ११४८

अॅन्ऱु लुम्मिवै शॉल्लिय दॅर्कॉरु, कुन्ऱिल् वाळुङ् गुरङ्गुहॉ लामिदु
नन्ऱु नन्ऱॅन मानहै शॅय्दनन्, वॅन्ऱि यॅन्ऱॉन्ऱु तानन्ऱि वेऱिलान् 1149

अॅन्ऱलुम्–कहते हो; वॅन्ऱि अॅन्ऱु–विजय नाम की स्थिति; ऑन्ऱु तान् अन्ऱि–एक के सिवा; वेऱु इलान्–और किसी को न जाननेवाले ने; इवै–ये बातें; अॅर्कु चॉल्लियतु–मुझसे कहीं; कुन्ऱिल् वाळुम्–पर्वतवासी; ऑरु कुरङ्कु कॉल् आम्–एक वानर ही न; इतु नन्ऱु–यह भी खूब; नन्ऱु अॅन–अच्छा रहा; अॅन–ऐसा; मा नकै–अट्टहास; चॅय्तनन्–किया। ११४९

हनुमान के ऐसा कहने पर विजयेतर स्थिति न जाननेवाले रावण ने कहा कि हा! यह उपदेश देनेवाला एक पर्वतवासी वानर ही है तो! यह भी खूब रहा! अच्छा! वह ठठाकर हँसा। ११४९

कुरक्कु वार्त्तैयु मानिडर् कॉर्ऱमुम्
निरक्कु नीदि हॉलाम्नॅरि नीङ्गियॅन्
पुरत्ति नुट्टरुन् दूदु पुहुन्दपिन्
अरक्क रैक्कॉन्ऱ वः(ह्)दुरै यायॅन्ऱान् 1150

कुरङ्कु वार्त्तैयुम्–बन्दर का उपदेश; मानिटर् कॉर्ऱमुम्–मनुष्यों का पराक्रम; निरक्कुम् नीति कॉल् आम्–बड़ी नेक नीति बन गये क्या; अॅन् पुरत्तिन् उळ्–मेरे नगर के अन्दर; तरुम् तूतु–किसी के प्रेषित दूत के रूप में; पुकुन्त पिन्–प्रविष्ट होने के बाद; नॅरि नीङ्कि–मार्ग (सीमा) लाँघकर; अरक्करै कॉन्ऱ–राक्षसों को मारने का; अ.ःतु–वह; उरैयाय्–(क्यों,) कहो; अॅन्ऱान्–कहा। ११५०

रावण ने हनुमान से कहा कि वानर का उपदेश देना और मानवों का जीत पाना सीधा न्याय बन गया शायद! (वह रहे।) मेरे नगर के अन्दर दूत के रूप में न आये! फिर अपने दौत्यधर्म का उल्लंघन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करके यहाँ के राक्षसों को मारा जो था वह क्यों? सीधा उत्तर दो। ११५०

काट्टु वारिन्मै याऱ्कडि काविऩै, वाट्टि ऩेऩ्ऩैक् कॊल्ल वन्दार्हळै
वीट्टि ऩेन्बिन्ऩै मॆन्मैयि नालुन्ऱन्, माट्टु वन्ददु काणु मदियिऩाल् 1151

काट्टुवार्–(तुम्हें) मुझे बतानेवाले; इन्मैयाल्–नहीं रहे, इसलिए; कटि काविऩै–सुगन्धपूर्ण उद्यान को; वाट्टिऩेन्–नष्ट किया; ऎन्ऩै कॊल्ल वन्तार्कळै–मुझे मार डालने जो आये; वीट्टिऩेन्–उन्हें मार डाला; पिन्ऩै–बाद; मॆन्मैयिऩाल्–नरम रहा तभी; उन् तन् माट्टु–तुम्हारे पास; वन्ततु–आना; काणुम् मतियिऩाल्–मिलने के मन से (हुआ)। ११५१

हनुमान ने उत्तर दिया कि रावण! कोई नहीं मिला जो मुझे तुमको दिखाये! इसलिए मैंने सुबासपूर्ण अशोक वन को मिटाया। उससे नाराज़ होकर जो मुझे मारने आये, उन राक्षसों को मैंने मार डाला। पश्चात् मैं अपना उग्र रूप त्यागकर सौम्य रूप में रहा; इसलिए तुम्हारे पास आया तुमसे मिलने (संदेश सुनाने) की इच्छा से। ११५१

ऎन्ऩुम् मात्तिरत् तीण्डॆरि नीण्डुह
मिन्ऩुम् वाळॆयिऱ् ऱन्शिऩम् वीङ्गिऩान्
कॊन्मि ऩॆन्ऱॆऩन् कॊल्लियर् शेर्दलुम्
निन्मि ऩॆन्ऱऩन् वीडण ऩीदियान् 1152

ऎन्ऩुम् मात्तिरत्तु–(हनुमान के) ऐसा कहने मात्र से; ईण्टु ऎरि–बढ़ी हुई अग्नि के; नीण्टु उक–बहुत दूर तक जाकर गिरे; मिन्ऩुम्–ऐसा चमकनेवाले; वाळ् ऎयिऱ्ऱन्–तलवार-से दन्तोरे रावण ने; चिऩम् वीङ्किऩान्–बहुत क्रोध में आकर; कॊल्मिन् ऎन्ऱऩन्–मारो, कहा; कॊल्लियर् चेर्तलुम्–बधिकों के (हनुमान के) पास पहुँचते ही; नीतियान्–नीतिमान्; वीटणन्–विभीषण ने; निन्मिन्–ठहरो; ऎन्ऱऩन्–कहा। ११५२

ज्योंही हनुमान ने यह कहा, त्योंही चमकदार तलवार-सम दन्तोरे, रावण का गुस्सा भभक उठा। जिससे आग निकलकर बहुत दूर तक फैली और अंगारे छितरे। उसने तुरन्त आज्ञा दी, मार डालो इसे। बधिक लोग पास आ ही गये कि नीतिमान् विभीषण ने रोकते हुए कहा कि रुको। ११५२

आण्डॆ ऴुन्दुनिन् ऱण्ण लरक्ककऩै
नीण्ड कैयिन् वणङ्गिऩ ऩीदियान्
मूण्ड कोब मुऱैयदन् ऱामॆऩ
वेण्डु मॆय्युरै पैय विळम्बिऩान् 1153

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नीतियान्–नीतिज्ञ ने; आण्टु–तब; ऍळुन्तु निन्ऱु–उठ खड़े होकर; अण्णल्–महिमावान; अरक्कनै–राक्षस (रावण) को (देख); नीण्ट कैयिन्–अपने दीर्घ हाथों से; वणङ्कितन्–नमस्कार किया; मूण्ट कोपम्–बढ़ा यह कोप; मुऱैयतु अन्ऱु आम्–क्रमगत नहीं है; ऍन्–ऐसा; वेण्टुम् मॅय् उरै–सर्वमान्य वचन; पैय–धीरे-धीरे; विळम्पिन्–कहा। ११५३

नीतिमान् विभीषण ने उठकर अपने महिमामय रावण को हाथ जोड़कर नमस्कार किया। फिर निवेदन किया कि आपका बढ़ा हुआ कोप न्याय-सम्मत नहीं है। फिर वह सर्वमान्य सत्य को बहुत ही सावधानी से कहने लगा। ११५३

अन्तण तुलह मून्ऱु मादियि नऱत्ति नाऱ्ऱित्
तन्दवन् मरबिन् वन्दाय् तवनॅऱि युणर्न्दु तक्कोय्
इन्दिरन् करुम माऱ्ऱु मिऱैवनी यियम्बु तूदु
वन्दन नॅन्ऱु पिन्नुङ् गोऱियो मऱैहळ् वल्लोय् 1154

तक्कोय्–सौम्य; मऱैकळ् वल्लोय्–वेदविदग्ध; उलकम् मून्ऱुम्–तीनों लोकों को; आतियिन्–प्रथम; अऱत्तिन् आऱ्ऱि–धर्म के द्वारा ही; तन्तवन्–जिसने सृष्ट किया; अन्तणन्–उस ब्रह्मविद् (ब्रह्मा) के; मरपिन् वन्ताय्–वंशज हैं; तव नॅऱि उणर्न्तु–तप-मार्ग जानकर; इन्तिरन्–देवेन्द्र; करुमम् आऱ्ऱुम्–जिनकी सेवा करता है; इऱैवन् नी–वह प्रभु हैं आप; इयम्पु तूतु–(स्वामी का सन्देश) कहनेवाला दूत; वन्तनॅन्–आया (मैं); ऍन्ऱु पिन्नुम्–कहने के बाद भी; कोऱियो–मार डालेंगे क्या। ११५४

सुयोग्य ! वेदविदग्ध ! आप ब्रह्मविद् ब्रह्माजी के वंशज हैं, जिन्होंने इन तीनों लोकों को धर्म के मार्ग पर रहकर आदि में सृष्ट किया। आपकी तपस्या का गौरव समझकर इन्द्र भी आपका आज्ञाकारी रहता है। आप ऐसे स्वामी हैं। वैसे आप इसको यह कहने के बाद भी मारेंगे कि मैं सन्देश सुनाने आया हुआ दूत हूँ ? । ११५४

पूदलप् परप्पि नण्डप् पॊहुट्टिनुट् पुऱत्तुट् पॊय्दीर्
वेदमुऱ् ऱियङ्गु वैप्पिन् वेऱुवे ऱिडत्तु वेन्दर्
मादरैक् कॊलैशॅय् दार्ह ळुळरॅन वरित्तुम् वन्द
तूदरैक् कॊन्ऱु ळार्हळ् यावरे तॊल्लै नल्लोर् 1155

पूतल परप्पिन्–भूतल के विस्तार में; अण्ट पॊकुट्टिन् उळ्–अण्डगोल के अन्दर; पुऱत्तुळ्–बाहर; पॊय् तीर्–जो कभी असत्य नहीं बन सकते; वेतम् उऱ्ऱु इयङ्कुम्–वे वेद जहाँ चालू रहते हैं; वैप्पिन्–उन लोकों में; वेऱु वेऱु इटत्तु वेन्तर्–विविध स्थानों के राजाओं में; मातरै–माताओं को; कॊलै चॅय्तार्कळ्–मारनेवाले; उळर्–हैं; ऍन्–ऐसा; वरित्तुम्–हो सकता है तो भी; तॊल्लै नल्लोर्–प्राचीन साध

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लोग; वन्त तूतरै—आगत दूतों को; कॊन्ऱु उळार्कळ्—जिन्होंने मार डाला; यावर्—कौन हैं। ११५५

इस भूतल के स्थल में, अण्डगोल के अन्दर और अण्डगोल के बाहर भी जहाँ नित्यवेदमार्ग संस्थापित है, विविध स्थानों में आपको ऐसे राजा शायद मिल सकेंगे जिन्होंने स्त्रियों को मार डाला हो; पर प्राचीन और सुयोग्य राजा कौन है, जिन्होंने दूतों को मारा हो? । ११५५

पहैप्पुल नणुहि युय्त्तार् पहर्न्ददु पहर्न्दु पऱ्ऱार्
मिहैप्पुल नडक्कि मॆय्म्मै विळम्बुदल् विरदम् बूण्ड
तहैप्पुलक् करुमत् तोरैक् कोऱलिऱ् ऱक्कार् यार्क्कुम्
नहैप्पुलन् पिऱिदुण् डामे नङ्गुल नवैयिन् ऱामे 1156

पकै पुलन् अणुकि—शत्रु के स्थान में आकर; उय्त्तार्—जिन्होंने भेजा; पकर्न्ततु—उन्होंने जो सन्देश भेजा; पकर्न्तु—वह सुनाकर; पऱ्ऱार्—शत्रु का; मिकै पुलन्—कोप के भाव को; अटक्कि—(अपने वचनों से) शमन करके; मॆय्मै विळम्पुतल्—सत्य कहने का; विरतम् पूण्ट—जिन्होंने व्रत रखा है; तकै पुल—श्रेष्ठ बुद्धिमान; करुमत्तोरै—दूतों को; कोऱलिन्—मारने से बढ़कर; तक्कार् यार्क्कुम्—शिष्ट सभी लोगों के लिए; नकै पुलन्—हँसी योग्य काम; पिऱितु उण्टामे—दूसरा कोई हो सकता है क्या; नम् कुलम्—हमारा कुल; नवै इन्ऱु आमे—कलंक-हीन रहेगा क्या। ११५६

जो दूत शत्रु के स्थान में निडर होकर पहुँच जाते हैं, फिर अपने प्रेषक का सन्देश सुनाते हैं, फिर शत्रु के कोप आदि की भावनाओं को अपने चातुर्य-वचन द्वारा शमन करते हैं, ऐसे सत्यवादनव्रती कार्यकुशल दूतों को मारने से बढ़कर उत्तम लोगों द्वारा परिहसनीय विषय और कुछ हो सकता है क्या ? हमारा कुल निर्दोष हो सकेगा क्या ? ११५६

मुत्तलै यॆः(ह)हन् मऱ्ऱै मुरान्दहन् मुन्निवन् मुन्ना
अत्तलै नम्मै नोन्ना वमरर्क्कु नहैयिऱ् ऱामाल्
ऍत्तलै युलहङ् गाक्कुम् वेन्दनी वेऱ्ऱो रेव
इत्तलै यॆय्दि नानैक् कॊल्लुद लिळुक्क मिन्नुम् 1157

ऍत्तु अलै—उछलती आनेवाली तरंगों से भरे समुद्र-मध्य रहनेवाले; उलकम् काक्कुम्—लोकपालक; वेन्त नी—राजा आप; वेऱ्ऱोर् एव—शत्रु द्वारा भेजे जाने पर; इ तलै—यहाँ; ऍय्तिनानै—जो आया इसे; कॊल्लुतल्—मारें, यह; इळुक्कम्—गौरव के विपरीत बात है; मु तलै ऍ.ंकन्—त्रिशूलधारी; मऱ्ऱै मुरान्तकन्—दूसरा, मुरारि; मुन्निवन्—ब्राह्मण ब्रह्मा; मुन्ना—आदि; नम्मै नोन्ना—हमसे ईर्ष्या करनेवाले; अ तलै—वहाँ (ऊपर) के; अमरर्क्कुम्—देवों के लिए; नकै इऱ्ऱु आम्—हँसने योग्य होगा; इन्नुम्—और भी। ११५७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उछलकर बढ़नेवाली तरंगों वाले सागर-मध्य स्थित भूमि के पालक राजा ! आपका, शत्रु द्वारा भेजा जाकर जो इधर आया है, उस दूत को मारना दोषपूर्ण होगा। और भी त्रिशूलधारी शिव, मुरारि विष्णु और ब्राह्मण-श्रेष्ठ ब्रह्मा आदि हमसे ईर्ष्या करनेवाले ऊपर के देवों को हमारी हँसी उड़ाने का मौका मिल जायगा। और भी। ११५७

इळैयव डन्नैक् कॊल्ला दिरुशॆवि मूक्कॊ डीर्न्दु
विळैवुरै यॆन्रु विट्टार् वीरराय् मॆय्म्मै योर्वार्
कळैदिये लावि नम्बा लिवन्वन्दु कण्णिर् कण्ड
अळवुरै यामर् चॆय्दि यादियॆन् रमैयच् चॊन्नान् 1158

वीरर् आय्–वीर रहकर; मॆय्मै ओर्वार्–सत्य पर चलनेवाले; इळैयवळ् तन्नै–हमारी छोटी बहिन को; कॊल्लातु–विना मारे; मूक्कु ऒटु–नाक के साथ; इरु चॆवि–दोनों कानों को; ईर्न्तु–काटकर; विळैवु उरै–(जो) हुआ (वह जाकर) कहो; ऎन्रु विट्टार्–ऐसा कहकर भेज दिया; आवि कळैतियेल्–(इसके) प्राण निकाल देंगे; नम्पाल्–हमारे पास; इवन् वन्तु–इसने आकर; कण्णिल् कण्ट अळवु–अपनी आँखों से जितना देखा, उतना; उरैयामल् चॆय्ति आति–जाकर न कहेगा, ऐसा करनेवाले आप बन जायँगे; ऎन्रु–यह; अमैय–मन में बात लगे, ऐसा; चॊन्नान्–कहा। ११५८

श्रीराम और लक्ष्मण वीर हैं और सत्यनिष्ठ हैं। उन्होंने हमारी छोटी बहिन को (उसके अनुचित काम करने पर भी) मारा नहीं। पर उसकी नाक के साथ दोनों कानों को काटा और यह कहकर भेज दिया कि जाकर जो हुआ उसे सुना दो। अगर आप इस दूत के प्राण हर लेंगे तो आप ही इसको वहाँ जाकर अपनी आँखों-देखी बातें कहने से रोकनेवाले बन जायँगे। विभीषण ने ऐसा अपने तर्क पेश किये कि वे रावण के मन में प्रभाव डाल सकें। ११५८

नल्ल दुरैत्ताय् नम्बियिव नवैशॆय् दाने यानालुम्
कॊल्लल् पळुदे पोयवरैक् कूरिक् कॊणर्दि कडिवॆन्नात्
तॊल्लै वालै मूलमर्च् चुट्टु नहरैच् चूळ्पोक्कि
ऎल्लै कडक्क विडुमिन्ग ळॆन्रा निन्रा रिरैत्तॆळुन्दार् 1159

नम्पि–सौम्य; नल्लतु उरैत्ताय्–अच्छा कहा तुमने; इवन् नवै चॆय्ताने–इसने अपराध किया ही है; आनालुम्–तो भी; कॊल्लल्–मारना; पळुते–ग़लत ही होगा; पोय् कूरि–जाकर कहो और; कॊणर्ति कटितु–लाओ शीघ्र; ऎन्ना–कहकर; तॊल्लै वालै–संकटकारी (इसकी) पूँछ को; मूलम् अर्–समूल नष्ट करते हुए; चुट्टु–जलाकर; नकरै चूळ् पोक्कि–नगर में घुमा ले जाकर; ऎल्लै कटक्क–सीमा-पार; विटुमिन्कळ्–छोड़ो; ऎन्रान्–(रावण ने) आज्ञा सुनायी; निन्रार्–पास जो खड़े रहे; इरैत्तु ऎळुन्तार्–शोर मचाते हुए उठे। ११५९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विभीषण का कहा सुनकर रावण ने कहा कि श्रेष्ठ पुरुष ! तुमने अच्छी नीति बतायी। इसने अवश्य अपराध किया है तो भी इसको मारना ग़लत है। फिर हनुमान की ओर देखकर रावण ने कहा कि जाओ और शीघ्र लाओ उसे। फिर रावण ने राक्षसों को आज्ञा दी कि इसकी संकटकारी दुम को जलाकर मूल से नष्ट करा दो। फिर इसको लंका में चारों ओर घुमाओ और लंका की सीमा के बाहर कर दो। राक्षस लोग उत्साह-ध्वनि करते हुए उठे। ११५९

आय कालत् तयन्बडयो डिरुप्प वाहा दऩलिडुहै
तूय पाश मॅऩप्पलवुङ् गॊणर्न्दु पिणिमिऩ् ऱोळॅऩ्ऩा
मेय तॅय्वप् पडैक्कलत्तै विदियिऩ् मीट्टाऩ् पोर्वॅऩ्ऱाऩ्
एयॅ ऩामुऩ् ऩिडैबुक्कुत् तॊडैवऩ् कयिऱ्ऱाऱ् पिणित्तीर्प्पार् 1160

आय कालत्तु–तब; पोर् वॅऩ्ऱाऩ्–युद्धविजेता (इन्द्रजित्) ने; अयऩ् पटैयोटु इरुप्प–ब्रह्मास्त्रबद्ध रहते समय; अऩल् इटुकै–आग लगाना; आकातु–ठीक नहीं हो सकता; तूय पाचम् अॅऩ पलवुम्–श्रेष्ठ अनेक रस्सियाँ; कॊणर्न्तु–लाकर; तोळ्–इसके कन्धों को; पिणिमिऩ्–बाँध लो; अॅऩ्ऩा–कहकर; मेय–उस पर लगे रहे; तॅय्व पटै कलत्तै–दिव्य अस्त्र को; वितियिऩ्–यथाविधि; मीट्टाऩ्–लौटा लिया; एय् अॅऩा मुऩ्–'ए' कहने की देरी के अन्दर; इटै पुक्कु–पास जाकर; तॊटै–बटे हुए; वऩ् कयिऱ्ऱाल्–मोटे रस्से से; पिणित्तु–बाँधकर; ईर्प्पार्–(राक्षस) खींचने लगे। ११६०

उस समय युद्धविजेता इन्द्रजित् ने कहा कि ब्रह्मास्त्रबद्ध स्थिति में रहनेवाले इसके शरीर पर आग लगाना ठीक नहीं है। इसलिए मोटे रस्सों से इसकी भुजाओं को बाँध लो। यह कहकर इन्द्रजित् ने हनुमान पर लगे रहे ब्रह्मास्त्र को मन्त्रविधि के अनुसार लौटा लिया। 'ए' कहने की देरी के अन्दर राक्षस उसके पास पहुँच गये। मोटे और बटे हुए रस्सों से उसे खूब कसकर खींचने लगे। ११६०

नाट्टि ऩहरि ऩडुवुळ्ळ कयिऱु नविलुऩ् दहैमैयवो
वीट्टि ऩूश नॅडुम्बाश मऱ्ऱ तेरुम् विशिऩुऱ्ऱन्द
माट्टुम् बुरवि यायमॅला मरुवि वाङ्गुऩ् दॊडैयऴिऩ्द
पूट्टु वल्लि मुदलाय पुरशै यिऴुऩ्द पोर्यानै 1161

वीट्टिऩ्–(लंका के) घरों के; ऊचल्–झूलों के; नॅटुम् पाचम्–लम्बे रस्से; अऱ्ऱ–(बाक़ी) नहीं रहे; तेरुम्–रथ भी; विचि तुऱ्ऱन्त–रस्सी से रहित हो गये; माट्टुम्–जहाँ (अश्व) बाँधे जाते हैं; पुरवि आयम् अॅलाम्–सभी अश्वशालाएँ; मरुवि वाङ्कुम्–बाँधकर जो खोली जाती हैं; तॊटै अऴिऩ्त–उन रस्सियों से हीन हो गयीं; पोर् यानै–युद्धगज; पूट्टुम् वल्लि–जो उनके पेट और पीठ पर लगाया जाता है, उस कलापक को; पुरचै–जो उसके गले में बाँधा जाता है, उस 'पुरशै' नामक रस्सी;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुतलाय-आदि को; इळन्त-खो गये; नाट्टिन् नकरिन्-देश में और नगर में; नटु उळ्ळ-बीच में रहनेवाली; कयिऱ-रस्सियों की बात; नविलुम् तकैमैयवो-कहने योग्य होंगी क्या। ११६१

(ये रस्से-रस्सियाँ कितनी आयीं, कहाँ से आयीं ?) लंका के घरों में जो झूले लगे थे, उन सबकी रस्सियाँ लायी गयीं और झूले रस्सियों से हीन रहे। रथों के रस्से, अश्वशालाओं में अश्व बाँधने-खोलनेवाले रस्से, गजों के कलापक और पेट के रस्से सभी लाये गये और अश्व, रथ, गज आदि रस्से से हीन रहे। उस स्थिति में नगर के और देश के मध्य रही रस्सियों की बातें कहना आवश्यक हैं क्या ? । ११६१

मण्णिऱ् कण्ड वान्नवरै वलियिऱ् कवर्न्द वरम्बॆऱ्ऱ
ऍण्णऱ् करिय वेन्नैयरै यिहलिऱ् पऱित्त दमक्कियैन्द
पॆण्णिऱ् कमैन्द मङ्गलत्तिऱ् पिणित्त कयिऱे यिडैपिळैत्त
कण्णिऱ् कण्ड वन्बाश मॆल्ला मिट्टुक् कट्टिनार् 1162

मण्णिल् कण्ट-(दिग्विजय के सन्दर्भ में) भूमि (के विविध भागों) से हर लाये गये; वान्नवरै-देवों से; वलियिल् कवर्न्त-बलात्कारपूर्वक प्राप्त; वरम् पॆऱ्ऱ-वर द्वारा प्राप्त; ऍण्णऱ्कु अरिय-गिनने में असाध्य; एन्नैयरै-अन्यों से; इकलिल् पऱित्त-युद्ध में बलात् लिये गये; कण्णिल् कण्ट-आँखों देखे गये; वन् पाचम् ऍल्लाम्-स्थूल पाश सभी लेकर; इट्टु कट्टिनार्-उनका उपयोग करके बाँधा; तमक्कु इयैन्त-अपनी जो बनी थीं; पॆण्णिऱ्कु अमैन्त-पत्नी स्त्रियों के गले में लगे; मङ्कलत्तिल् पिणित्त-मंगल-सूत्र के रूप में बद्ध; कयिऱे-रस्सियाँ ही; इटै पिळैत्त-बीच में बचीं। ११६२

भूलोक के अनेक स्थानों से दिग्विजय के अवसर पर रावण तथा राक्षसों द्वारा हर लाये गये रस्से; देवों से बलात्कारपूर्वक लाये गये रस्से; वरों द्वारा प्राप्त, अगणित अन्यों को युद्ध में हराकर लायी गयी रस्सियाँ —राक्षस लोगों ने ये दृष्टि में पड़ी सभी रस्सियाँ लाकर हनुमान को बाँध लिया। लंका में कोई रस्सी बची रही तो राक्षसों की पत्नियों के मंगलसूत्र के रूप में लगी मंगलसूत्र की रस्सियाँ थीं। ११६२

कडवुट् पडैयैक् कडन्दऱत्ति नाणै कडन्दे नाहामे
विडुवित् तळित्तार् तॆव्ववरे वॆन्ऱे नन्ऱो विवर् वॆन्ऱि
शुडुविक् किन्ऱ दिव्वूरैच् चुडुहॆन् ऱुरैत्त तुणिवॆन्ऱु
नडुवुर् ऱैय मऱनोक्कि मुऱ्ऱु मुवन्दा नवैयऱ्ऱान् 1163

नवै अऱ्ऱान्-निर्दोष हनुमान; कटवुळ् पटैयै-दिव्यास्त्र को; कटन्तु-लाँघकर; अऱत्तिन् आणै-धर्म के शासन का; कटन्तेन् आकामे-उल्लंघन करनेवाला न बनकर (मैं); तॆव् अवरे-उन शत्रुओं ने ही; विटुवित्तु अळित्तार्-छुड़ाकर उपकार किया;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इवर् वॆन्ऱि–इनकी जय पर; वॆन्ऱेन् अन्ऱु ओ–मैंने जय पा ली है न; चुटुविक्किन्ऱतु–(पूंछ) जलाने का कार्य यह; इ ऊरै चुटुक–इस नगर को जला दो; ऍन्ऱु–ऐसा; उरैत्त तुणिवु–कहा हुआ स्पष्ट कथन है; ऍन्ऱु–ऐसा; नटुवु उऱ्ऱु–तटस्थ रहकर; ऐयम् अऱ नोक्कि–असन्दिग्ध रूप से देखकर; मुऱ्ऱुम् उवन्तान्–पूर्ण रूप से हर्षित हुआ। ११६३

अनिन्द्य हनुमान ने निम्न प्रकार विचार किया। अच्छा हुआ कि मुझे दिव्य ब्रह्मास्त्र का उल्लंघन और उसकी अवज्ञा न करनी पड़ी। शत्रुओं ने ही वह अपराध करने से छुड़ाकर बड़ा उपकार किया। अब इनकी विजय मेरी विजय हो गयी न? अब रावण की यह आज्ञा कि इसकी दुम जलाओ, स्पष्ट रूप से मुझे दिया गया संकेत है कि इस नगर को ही जला दो। हनुमान ने तटस्थता से सोचकर यह निर्णय किया और उसे अपार हर्ष हुआ। ११६३

नॊय्य पाशम् बुऱम्बिणिप्प नोन्मै यिलन्बो लुडनुणङ्गि
वॆय्य वरक्कर् पुऱत्तलैप्प वीडु मुणर्न्दे विरैविल्लान्
ऐयन् विञ्जै तनैयऱिन्दु मऱिया दान्बो लविञ्जैयॆनुम्
पॊय्यै मॆय्ये नडिक्किन्ऱ योहि पोन्ऱान् पोहिन्ऱान् 1164

नॊय्य पाचम्–दुर्बल पाशों से; पुऱम् पिणिप्प–शरीर बँधा रहा (तो भी); नोन्मै इलन् पोल्–अशक्त हुए-से; उटल् नुणङ्कि–शरीर से मुरझाकर; वॆय्य अरक्कर्–नृशंस राक्षसों के; पुऱत्तु अलैप्प–इधर-उधर घुमाकर कष्ट देते; वीटुम् उणर्न्ते–छूटने का मार्ग जानते हुए भी; विरैवु इल्लान्–उसमें त्वरा न रहने से; ऐयन्–महिमावान; विञ्चै तनै अऱिन्तुम्–(आत्म-) विद्या जानने पर भी; अऱियातान् पोल्–अविद्यावशी के समान; अविञ्चै ऍन्नुम् पॊय्यै–अविद्या-मिथ्या को; मॆय्ये नटिक्किन्ऱ–सत्य मानता-सा जो अभिनय (व्यवहार) करता है; योकि पोन्ऱान्–उस योगी के समान; पोकिन्ऱान्–(उनसे खींचा जाकर) जाता है। ११६४

आखिर दुर्बल रस्सियों से ही बँधा रहा हनुमान। तो भी अशक्त के समान वह मुरझाया रहा। राक्षसों ने उसके पार्श्व में रहकर हनुमान को इधर से उधर और उधर से इधर घुमाया। हनुमान को उनसे अपने को छुड़ा लेने का मार्ग विदित था; तो भी उसने उस ओर त्वरा नहीं दिखायी। मानो आत्मविद्याज्ञानी योगी अविद्या की मिथ्या को सत्य मानते-से व्यवहार करते हैं। वैसे ही हनुमान खींचा जाकर उनके साथ जाता रहा। ११६४

वेन्दन् कोयिल् वायिऱॊऱुम् विरैविऱ् कडन्दु वॆळ्ळिडैयिल्
पोन्दु पुऱनिन् ऱिरैक्किन्ऱ पॊरैतीर् मऱवर् पुऱञ्जुऱ्ऱ
एन्दु नॆडुवाल् किळ्ळिशुऱ्ऱि मुऱ्ऱुन् दोय्त्ता रिळुदॆण्णॆय्
कान्दु कडुन्दीक् कॊळुत्तिना रार्त्ता रण्डङ् गडिहलङ्ग 1165

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वेन्तन् कोयिल्–राजा के मन्दिर के; वायिल् तोऱुम्–सभी द्वारों को; विरैविल् कटन्तु–शीघ्र पार कर; वॅळ्ळिटैयिल् पोन्तु–खुले मैदान में आकर; पुऱम् निन्ऱु–उसके चारों ओर खड़े होकर; इरैक्किन्ऱ–शोर मचानेवाले; पोऱ् तीर्–असहनशील; मऱवर्–वीर राक्षस; पुऱम् चुऱ्ऱ–सभी ओर घेरे रहे; एन्तु नॅटु वाल्–उठी हुई लम्बी पूँछ में; किळि–(फटे-पुराने) वस्त्र; चुऱ्ऱि–लपेटकर; इळुतु ऍण्णॅय्–घृत और तेल में; मुऱ्ऱुम् तोय्त्तार्–पूरा भिगो दिया; कान्तुम्–जलती; कटुम् ती–उग्र आग; कॊळुत्तित्तार्–लगा दी; अण्टम्–अण्ड को; कटि कलङ्क–भयभीत करते हुए; आर्त्तार्–नर्दन किया। ११६५

राक्षस हनुमान को खींचते हुए राजमहल के सभी द्वारों को शीघ्र पार करके खुले मैदान में आये। फिर उन्होंने चारों ओर से घेरकर बड़े कोलाहल के साथ उसकी उठी हुई लम्बी पूँछ में फटे-पुराने कपड़े लपेटे और घी तथा तेल में उसे भिगोये। पश्चात् उन्होंने उसमें आग लगायी और ऐसा नर्दन किया कि अण्डगोल ही अस्त-व्यस्त हो गया। ११६५

ऑक्क वॉक्क वुडन्विशित्त वुलप्पि लाद वुडऱ्पाशम्
पक्कम् बक्क मिरुहूऱाय् नूऱा यिरवर् पऱ्ऱिनार्
पुक्क पडैञर् पुडैहाप्पोर् पुणरिक् कणक्कर् पुऱञ्जॅल्वोर्
तिक्कि नळवा लयनिन्ऱु काण्बोर्क् कॅल्लै तॅरिवरिदाल् 1166

ऑक्क ऑक्क–अनेक (रस्सियाँ) मिलाकर; उटन् विचित्त–एक साथ जो बँधा रहा; उलप्पु इलात–जो टूट नहीं सकता; उटल् पाचम्–वह शरीर-पाश; पक्कम् पक्कम्–दोनों बाजुओं में; इरु कूऱाय्–दो भागों में; नूऱु आयिरवर्–सौ सहस्र राक्षसों ने; पऱ्ऱिनार्–पकड़ लिया; पुटै काप्पोर्–पार्श्वरक्षक; पुक्क पटैञर्–वहाँ आगत हथियारधारी वीर; पुणरि कणक्कर्–'समुद्र' की संख्या में रहे; पुऱम् चॅल्वोर्–उनकी बग़ल में जानेवाले; तिक्किन् अळवु–दिशाओं भर में व्याप्त रहे; आल्–इसलिए; अयल् निन्ऱु काण्पोर्क्कु–उनसे हटकर खड़े होकर देखनेवालों के लिए; ऍल्लै तॅरिवु–सीमा जानना; अरितु–कठिन था। ११६६

हनुमान के शरीर पर अनेक परतों में स्थूल रस्से बाँधे गये थे। और दोनों बाजुओं में लाख-लाख राक्षसों ने खड़े होकर पाश को पकड़ लिया। उनके बाद हथियारधारी राक्षस आकर खड़े हो गये। उनकी संख्या 'समुद्र' की हिसाब में थी। उनके बाद घेरे जानेवाले राक्षसों की बड़ी भीड़ लगी थी। वे दिगन्त तक फैले रहे। इसलिए परे रहकर उन राक्षसों की सीमा जानना दुस्साध्य था। ११६६

अन्द नहरुङ् गडिहावु मळिवित् तक्कन् मुदलायोर्
शिन्द नूऱिच् चीदैयॊडुम् पेशि मनिदर् तिऱञ्जॅप्प
वन्द कुरङ्गिर् कुऱ्ऱदनै वम्मिन् काण वम्मॅन्ऱु
तन्दन् दॅरुवुम् वायिऱॊऱुम् यारु मऱियच् चाऱ्ऱिनार् 1167

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अन्त नकरुम्–वह नगर; कटि कावुम्–सुरक्षित अशोक वन; अऴिवित्तु–मिटाकर; अक्कन् मुतलायोर्–अक्ष आदि को; चिन्त–छिन्न-भिन्न हो जाएँ, ऐसा; नूऱि–मारकर; चीतै ओटुम् पेचि–सीता के साथ बोलकर; मन्नितर् तिऱम्–मनुष्यों का पराक्रम; चॅप्प वन्त–कहने के लिए आये; कुरङ्किऱ्कु–बन्दर पर; उऱ्ऱतन्नै–जो बीत रहा है, उसको; वम्मिन्–आओ; काण वम्–देखने के लिए आओ; ऍन्ऱु–ऐसा; तम् तम् तॅरुवुम्–अपनी-अपनी वीथियों और; वायिल् तोऱुम्–द्वार-द्वार पर; यारुम् अऱिय–सभी को सुनाते हुए; चाऱ्ऱिनार्–कहा। ११६७

राक्षस लोग अपनी गली-गली और द्वार-द्वार पर सबको यह बताते हुए जा रहे थे कि इस नगर और अशोक वन का नाश करके अक्षकुमार आदि को मार डालकर, और सीता के साथ मिलकर बातें करके हमारे राजा से तुच्छ मानव लोगों की शक्ति की प्रशंसा करने जो आया था, उस वानर पर जो बीत रहा है उसे आकर देखो। आओ, आओ। ११६७

आर्त्ता रण्डत् तप्पुऱत्तु मऱिविप् पार्पो लङ्गोडिङ्
गीर्त्तार् मुरश मॅऱ्ऱिना रिडित्तार् तॅऴित्ता रॅम्मरुङ्गुम्
बार्त्ता रोडिच् चानहिक्कुम् बहर्न्दा रवळु मुयिर्पदैत्ताळ्
वेर्त्ता ळुलन्दाळ् विम्मिनाळ् विऴुन्दा ळऴुदाळ् वॅय्दुयिर्त्ताळ् 1168

अण्टत्तु अप्पुऱत्तुम्–अण्ड के उस पार भी; अऱिविप्पार् पोल–सुनाते जैसे; आर्त्तार्–बहुत उच्च स्वर में घोष किया (राक्षसों ने); अङ्कु ओटु इङ्कु–उधर से इधर; ईर्त्तार्–खींचा; मुरचम्–भेरियाँ; ऍऱ्ऱिनार्–ठनकायीं; इटित्तार्–(हनुमान को) ढकेला; तॅऴित्तार्–डाँटा-डपटा; ऍ मरुङ्कुम्–सब ओर; पार्त्तार्–घूमकर देखा; ओटि–दौड़कर; चानकिक्कुम्–जानकी से भी; पकरन्तार्–कहा; अवळुम्–वे भी; उयिर् पतैत्ताळ्–प्राण-विह्वल हुईं; वेर्त्ताळ्–पसीना-पसीना हो गयीं; उलन्ताळ्–खिन्नमना हुईं; विम्मिनाळ्–सिसकीं; विऴुन्ताळ्–नीचे गिरीं; अऴुताळ्–रोयीं; वॅय्तु उयिर्त्ताळ्–तप्त साँसें छोड़ीं। ११६८

वे ऐसा शोर मचाते गये, मानो वे अण्डगोल के बाहर भी यह समाचार पहुँचाना चाहते हों। कुछ राक्षसों ने हनुमान को इधर-उधर भटकाया। कुछ लोगों ने भेरियाँ बजायीं। कुछ राक्षसों ने हनुमान को ढकेला। कुछ लोगों ने उसे डाँटा। कुछ लोगों ने चारों ओर जाकर देखा। कुछ लोगों ने जानकी के पास जाकर समाचार दिया। जानकी जी यह सुनकर उद्विग्न हो गयीं। उनके प्राण छटपटाने लगे। पसीने-पसीने हो गयीं। लट गयीं। सिसकीं। भूमि पर गिरीं। रोयीं। तप्त साँसें छोड़ने लगीं। ११६८

ताये यनैय करुणैयान् रुणैये येदुन् दहविल्ला
नाये यनैय वल्लरक्कर् नलियक् कण्डा नल्हायो
नीये युलहुक् कॅरुशान्ऱु निऱ्के तॅरियुङ् गऱ्पदनिल्
तूये नॅन्निऱ् ऱॅऴहिन्ऱे नॅरिये यवनैच् चुडलॅन्ऱाळ् 1169

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऍरिये–अग्निदेव; ताये अऩैय–माता ही सम; करुणैयाऩ्–करुणामय हनुमान का; तुणैये–सहायक; तकवु एतुम्–कोई भी अच्छा गुण; इल्ला–जिनमें नहीं है; नाये अऩैय–कुत्तों के समान; वल् अरक्कर्–नृशंस राक्षस; नलिय–कष्ट दे रहे हैं; कण्टाल्–देखते जब हो; नल्कायो–सहायता नहीं दोगे क्या; नीये–तुम ही; उलकुक्कु ऑरु चाऩ्ऱु–संसार के लिए अनुपम साक्षी हो; निऱ्के तॅरियुम्–तुम ही (सब) जानते हो; आतलाल्–इसलिए; कऱ्पु अतऩिल्–पातिव्रत्य में; तूयेऩ् ऍऩ्ऩिल्–पवित्र हूँ तो; अवऩै चुटल्–उसको मत जलाओ; तॉऴुकिऩ्ऱेऩ्–नमन करती हूँ; ऍऩ्ऱाळ्–कहा (देवी ने) । ११६९

सीताजी ने अग्नि का ध्यान करके कहा कि अग्निदेव ! हनुमान माता के ही समान कृपालु है । उसके तुम ही अकेले सहायक हो । कुत्ते के समान बिल्कुल अयोग्य राक्षसों को हनुमान को सताते देखकर तुम उसे सहायता नहीं दोगे क्या ? तुम सारे संसार के साक्षीरूप हो ! इसलिए तुम सब जानते ही हो । अगर मैं पातिव्रत्य में पवित्र हूँ तो उसे तुम मत जलाओ । तुमसे प्रार्थना करती हूँ । ११६९

वॅळिऱ्ऱतमॅऩ् ऩहैयवळ् विळम्बु मेल्वैयिल्
ऑळिऱ्ऱतवॅङ् गऩलव ऩुळ्ळ मुट्किऩाऩ्
तळिऱ्ऱतऩ मयिऱ्प्पुऱम् जिलिऱ्प्पत् तण्मैयाल्
कुळिऱ्ऱतदक् कुरिशिल्वा लॅऩ्बु कूरवे 1170

वॅळिऱ्ऱुत–श्वेत; मॅऩ्–कोमल; नकै अवळ्–दाँतों वाली उनके; विळम्पुम् एल्वैयिल्–कहने मात्र से; ऑळिऱ्ऱुत–ज्वलन्त; वॅम् कऩल् अवऩ्–सन्तापक अग्नि वह; उळ्ळम्–मन में; उट्किऩाऩ्–भीत हुआ; पुऱम् मयिऱ्–शरीर पर के बाल; तण्मैयाल्–शीतलता से; चिलिऱ्प्प–पुलकित हुए; तळिऱ्ऱुतऩ–समृद्ध हुए; अ कुरिचिल् वाल्–उस श्रेष्ठ हनुमान की पूँछ; ऍऩ्पु कूर–हड्डियों तक; कुळिऱ्ऱुततु–शीतल हुई । ११७०

श्वेत रंग की और मनोरम दन्तावली से भूषित देवी ने जब यह कहा, तब ज्वलन्त तथा दाहक अग्नि मन में भीत हुआ । फलस्वरूप हनुमान के शरीर पर के बाल शीतलता के कारण पुलकित हुए । उस उत्तम हनुमान की पूँछ हड्डी तक शीतल हो गयी । ११७०

मऱ्ऱिऩिप् पलवॅऩ् वेलै वडवऩल् पुविय ळाय
कऱ्ऱैवॅङ् गऩलि मऱ्ऱैक् कायत्ती मुऩिवर् काक्कुम्
मुऱ्ऱुऱु मुम्मैच् चॅन्दी मुप्पुर मुरुङ्गच् चुट्ट
कॉऱ्ऱव ऩॅऱ्ऱिक् कण्णिऩ् वऩ्ऩियुङ् गुळिर्न्द वऩ्ऱे 1171

वेलै–समुद्र में; वट अऩल्–उत्तर में रहनेवाली अग्नि; पुवि अळाय–भूमि पर मिली रहनेवाली; कऱ्ऱै वॅम् कऩलि–पुंजीभूत गरम आग; मऱ्ऱै–और; काय ती–आकाश की अग्नि; मुऩिवर् काक्कुम्–मुनियों द्वारा पालित; मुऱ्ऱु उऱु–पूर्ण

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रहनेवाली; मुम्मै चॅम् ती–त्रिविध श्रेष्ठ अग्नि; मु पुरम्–त्रिपुर को; मुरुङ्क चुट्ट–मिटाते हुए जिसने जलायी; कॊऱ्ऱवन्–विजयी; नॅऱ्ऱि–(श्रीशिवजी) के भाल की; कण्णिन् वन्नियुम्–आँख की अग्नि; कुळिर्न्त–ठण्डी पड़ गयी; मऱ्ऱु इनि–फिर और; पल ऍन्–बहुत कहने को क्या है ? । ११७१

(अग्नि के सारे अंश ठण्डे पड़ गये ।) समुद्र में उत्तरी भाग में पायी जानेवाली बड़वाग्नि, भूमि पर मिश्रित रहनेवाली पुञ्जीभूत गरम आग, आकाश की अग्नि, मुनिपालित त्रिविध होमाग्नि (आह्वनीय, गार्हपत्य और दक्षिणा) विजयी शिवजी के भालनेत्र की त्रिपुरदाहक अग्नि —सब शीतल पड़ गयीं । और आगे अधिक विविध कहने को क्या है ? । ११७१

अणडमुङ् गडन्दा नङ्गै यन्नलियुङ् गुळिर्न्द दङ्गिक्
कुण्डमुङ् गुळिर्न्द मेहत् तुरुमॅलाङ् गुळिर्न्द कॊऱ्ऱच्
चण्डवॅङ् गदिर्ह ळाहित् तळङ्गिरुळ् विळुङ्गुन् दाविल्
मण्डलङ् गुळिर्न्द मीळा नरहमुङ् गुळिर्न्द मादो 1172

अण्टमुम् कटन्तान्–अण्ड-गोल के पार रहनेवाले (सत्यलोक के ब्रह्मा) की; अम् कै अन्नलियुम्–हथेली-मध्य रहनेवाली अग्नि भी; कुळिर्न्ततु–ठण्डी हुई; अङ्कि कुण्टमुम्–अग्निकुण्ड भी; कुळिर्न्त–शीतल बन गये; मेकत्तु उरुम् ऍलाम्–मेघ-मध्य सारी अशनियाँ; कुळिर्न्त–ठण्डी हो गयीं; कॊऱ्ऱ–प्रबल; चण्ट वॅम् कतिर्कळ् आकि–प्रचण्ड और उग्र किरणें बनकर; तळङ्कु इरुळ्–स्वर के साथ उठनेवाले अन्धकार को; विळुङ्कुम्–निगलनेवाले; ता इल् मण्टलम्–अक्षय सूर्यमण्डल; कुळिर्न्त–शीतल हो गये; मीळा नरकमुम्–निर्विकार नरक भी; कुळिर्न्त–तापहीन हो गया । ११७२

इस अण्ड के परे सत्यलोक में रहनेवाले ब्रह्माजी की हथेली की अग्नि, उनके यज्ञकुण्डों की अग्नि और मेघ की अशनियाँ भी ठण्डी हो गयीं । प्रचण्ड और उग्र किरणों के द्वारा शब्दायमान अन्धकार को भी लीलनेवाले अक्षय आदित्यमण्डल भी ठण्डे हो गये । अविकृत एक-रूप रहनेवाला नरक भी शीतल हो गया । ११७२

वॅऱ्पिन्ना लियन्ऱ दन्न वालिन्नै विळुङ्गि वॅन्दी
निऱ्पिन्नुञ् जुडादु निन्ऱ नीर्मैये निन्नैवि नोक्कि
अऱ्पिन्ना रऱाद शिन्दै यनुमन्नुञ् जन्नहन् बावै
कऱ्पिन्ना लियन्ऱ दॅन्बान् पॅरियदोर् कळिय नान्नान् 1173

अन्नपिन् नार्–(श्रीराम-) भक्ति का तागा; अऱात चिन्तै–(जिसमें) न टूटा, ऐसे मन का; अनुमन्नुम्–हनुमान भी; वॅम् ती–प्रचण्ड अग्नि; वॅऱ्पिन्नाल् इयन्ऱतु अन्नन्न–पर्वत के बने-जैसे; वालिन्नै–द्रुम को; विळुङ्कि–निगलकर; निऱ्पिन्नुम्–बनी रही तो भी; चुटातु निन्ऱ–विना जलाये रहने की; नीर्मैये–रीति को; निन्नैविन् नोक्कि–अपने मन में विचार कर; चन्नकन् पावै–जनकसुता के; कऱ्पिन्नाल्–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पातिव्रत्य से; इयन्ऱतु–बनी है यह; ऍन्पान्–निश्चय करके; पॅरियतु ओर् कळियन् आऩान्–बहुत ही बड़े हर्ष के वश का हुआ। ११७३

हनुमान के मन में श्रीराम-भक्ति का ताँता कभी टूटता ही नहीं था। उसके पर्वत के बने-से दुम को भयंकर आग संवृत किये रही। तो भी उसे गर्मी नहीं लग रही थी। इस वैशिष्ट्य के सम्बन्ध में हनुमान ने सोचा। उसे सूझ गया कि यह जनकसुता के पातिव्रत्य का अद्भुत प्रभाव है। यह निर्धारण होते ही वह अतिहर्षित हुआ। ११७३

अऱ्ऱैयव् विरविऱ् ऱान्ऱ नऱिविऩान् मुऴुदु मुऩ्ऩप्
पॅऱ्ऱिल ऩॅऩिऩु माण्डॊऩ् ऱुळ्ळदु पिऴैयु ऱामे
मऱ्ऱुऱु पॊऱिमुऩ् शॅल्ल मऱैन्दुशॅल् लऱिवु माऩक्
कऱ्ऱिला वरक्कर् तामे काट्टलिऱ् ऱॅरियक् कण्डाऩ् 1174

अऱ्ऱै अ इरविल्–उस दिन की उस रात में; ताऩ्–स्वयं; तऩ् अऱिविऩाल्–अपनी बुद्धि से; मुऴुतुम् उऩ्ऩ पॅऱ्ऱिलऩ्–पूर्ण रूप से जान नहीं पाया; ऍऩिऩुम्–तो भी; आण्टु–तब (जब खींचा जाता रहा); ऒऩ्ऱु उळ्ळतु–किसी का रहना; पिऴै उऱामे–न छूटा, ऐसा; कऱ्ऱु इला–अपढ़; अरक्कर्–राक्षस; तामे काट्टलिल्–स्वयं दिखाते गये, इसलिए; उऱु पॊऱि–बाहर लगी हुई इन्द्रियों के; मुऩ चॅल्ल–आगे जाते; मऱैन्तु चॅल्–उनके पीछे छिपे-छिपे जानेवाली; अऱिवु माऩ–बुद्धि के समान; तॅरिय कण्टाऩ्–(हनुमान ने) देखा और जाना। ११७४

उस दिन की रात में (जब वह नगर में सीताजी का अन्वेषण करता, घूमा) उसने अपनी बुद्धि के सहारे लंका नगर के सारे दृश्य नहीं देख पाये थे। पर अब राक्षसों ने खुद सारी वस्तुएँ दिखा दीं, कोई भी विषय या दृश्य छूट नहीं पाया था। जैसे शरीर से लगी बाह्येन्द्रियाँ आगे-आगे इंद्रिय-गोचर विषयों को दिखाती जाती हैं और उनके पीछे छिपे-छिपे जाकर मन सभी से अवगत होता है, वैसे ही हनुमान लंका में रहे सभी वस्तुओं को देखता चला। ११७४

मुऴुवदुऩ् दॅरिय नोक्कि मुऱ्ऱुमूर् मुडियच् चॅऩ्ऱाऩ्
वऴुवुऱु काल मीदॅऩ् ऱॅण्णिऩऩ् वलिदिऱ् पऱ्ऱित्
तऴुविऩ रिरण्डु नूऱा यिरम्बुयत् तडक्कै ताम्बो
डॅऴुवॅऩ नाल विण्मे लॅऴुन्दऩऩ् विऴुन्द वॅल्लाम् 1175

मुऴुवतुम्–सारे (नगर) को; तॅरिय नोक्कि–खूब देखकर; ऊर् मुऱ्ऱुम्–नगर भर में; मुटिय चॅऩ्ऱाऩ्–सर्वत्र गया; वऴुवु उऱु कालम्–बच निकलने का समय; ईतु ऍऩ्ऱु–यही है, ऐसा; ऍण्णिऩऩ्–सोचकर; वलितिल् पऱ्ऱि–मजबूती से पकड़कर; तऴुविऩर्–जो लिपटे रहे उन राक्षसों के; इरण्टु नूऱायिरम्–दो लाख; पुयम् तट कै–कन्धों और विशाल हाथों को; तामपु ओटु–रस्सों के साथ; ऍऴ ऍऩ–खम्भों के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समान; नाल–लटकने देते हुए; विण्मेल्–आकाश में; ऍऴुन्तनन्–उछला; ऍल्लाम् विऴुन्त–सब गिर गये। ११७५

हनुमान पूर्ण रूप से सारी वस्तुएँ देखते हुए नगर भर में गया। उसने उचित अवसर पर निर्णय किया कि यही बच निकलने का समय है। यह संकल्प करते ही वह सहसा आकाश में उछला। तब दो लाख (एक लाख राक्षसों के) बड़े और मोटे हाथ रस्सों-सहित खम्भों के समान लटके रहे। कुछ देर के बाद वे सब नीचे गिर गये। ११७५

इऱ्ऱवा ळरक्कर् नूऱा यिरवरु मिऴन्द तोळार्
मुऱ्ऱिऩा रुलन्दा रैयऩ् मॊय्म्बिऩो डुडलै मूऴ्हच्
चुऱ्ऱिय कयिऱ्ऱि ऩोडुन् दोऩ्ऱुवा ऩरविऩ् शुऱ्ऱम्
बऱ्ऱिय कलुऴ ऩॆऩ्ऩप् पॊलिन्दनन् विशुम्बिऩ् पालान् 1176

इऱ्ऱ वाळ्–टूटी तलवारों के; अरक्कर्–राक्षस; नूऱु आयिरवरुम्–लाखों; इऴन्त तोळार्–भुजाहीन होकर; मुऱ्ऱिऩार् उलन्तार्–पूर्ण रूप से मिट गये; ऐयऩ्–महिमावान हनुमान; मॊय्म्पिऩोटु–कन्धों के साथ; उटलै मूऴ्क चुऱ्ऱिय–शरीर को जो पूरा-पूरा कसे रहे; कयिऱ्ऱिऩोटुम्–उन रस्सों के साथ भी; विचुम्पिऩ् पालान्–आकाश में; तोऩ्ऱुवान्–जो प्रकट था, वह; अरविऩ् चुऱ्ऱम् पऱ्ऱिय–सर्पों के झुण्ड जिससे लगे रहते हैं वैसे; कलुऴऩ् ऍऩ्ऩ–गरुड़ के समान; पॊलिन्ततनन्–शोभायमान रहा। ११७६

लाखों राक्षसों की तलवारें टूटीं। फिर वे भुजाहीन हुए। फिर पूर्ण रूप से प्राणहीन हो गये। हनुमान भुजाओं और शरीर पर लपेटे रहे पाश के साथ जब आकाश में दिखायी दे रहा था, तब वह सर्पवृन्द-घिरे गरुड़ के समान प्रकट हो रहा था। ११७६

तुऩ्ऩलर् पुरत्तै मुऱ्ऱुऱ् जुडुतॊऴिऱ् ऱॊल्लै योरुम्
बऩ्ऩिऩ पॊरुळु नाणप् पादह रिरुक्कै पऱ्ऱ
मऩ्ऩऩै वाळ्त्ति वाळ्त्ति वयङ्गॆरि मडुप्पॆ ऩॆऩ्ऩाप्
पॊऩ्ऩहर् मीदे तऩ्बोर् वालिऩैप् पोह विट्टाऩ् 1177

तुऩ्ऩलर्–शत्रुओं के; पुरत्तै–नगर को; मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; चुटु तॊऴिल्–जलाने के (युद्ध के अंग के रूप में) कार्य के सम्बन्ध में; तॊल्लैयोरुम्–प्राचीन काव्याचार्यों द्वारा; पऩ्ऩिऩ–वर्णित; पॊरुळुम्–बाह्य साहित्य परिपाटियों के विषयों को भी (भावार्थ में इसका भाव देख लें); नाण–लजाते हुए; पातकर् इरुक्कै–पातकों के वासस्थानों में; पऱ्ऱ–जलाते हुए; वयङ्कु ऍरि–फैलनेवाली आग; मटुप्पॆऩ्–लगा दूंगा; ऍऩ्ऩा–कहकर; मऩ्ऩऩै–राजाराम की; वाळ्त्ति वाळ्त्ति–बार-बार संस्तुति करते हुए; पॊऩ् नकर् मीते–स्वर्ण-नगरी पर; तऩ्–अपनी; पोर् वालिऩै–युद्ध-पुच्छ को; पोक विट्टाऩ्–सरकने दिया (हनुमान ने)। ११७७

हनुमान ने यह निर्णय करके कि पातक राक्षसों के वासस्थान सभी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रासादों में आग लगे, ऐसा आग लगाऊँगा। और राजाराम के श्रीचरणों की बार-बार वन्दना करके अपने युद्ध-पुच्छ को उस स्वर्णनगरी पर सरकने दिया, जिससे प्राचीन काव्याचार्यों द्वारा निर्दिष्ट शत्रु-पुर-दहन-वर्णन की परिपाटियों के अनुसार वर्ण्य विषय भी लज्जित हुए। [यानी इस प्रकार दहन का काम चला की उसका वर्णन करें तो उसके आगे प्राचीन आचार्यों की बातें भी फीकी पड़ जायँ। अनुवादक की अवतरणिका में (बालकाण्ड की) पाठक देख सकते हैं कि तमिऴ-काव्य में प्रेम (अहम) और युद्ध (पुऱम) के दो प्रधान विषयों के काव्य-वर्णन में क्या-क्या रीतियाँ अपनायी जायँ; प्रसंगों का नामकरण कैसे हो ? प्रसंगों के अन्तर्गत कैसा समय, कैसी ऋतु, कौन से पक्षी, पशु, लोग आदि की चर्चा होनी चाहिए —यह सब निश्चित है। इस शत्रुनगर-दहन का वर्णन 'पुऱ' तिणै के अन्तर्गत "उऴ पुल वञ्जि" तुऱै में आता है।]। ११७७

अप्पुऱऴ् वेलै काऱु मलङ्गुपे रिलङ्गै तन्नै
अॅप्पुऱत् तळवुन् दीय वॊरुहणत् तॅरित्त कॊट्पाल्
तुप्पुऱऴ् मेनि यण्णन् मेरुविल् कुऴैयत् तोळाल्
मुप्पुरत् तॅय्द कोले यॊत्तदम् मूरिप् पोर्वाल् 1178

उऱऴ् अप्पु—परस्पर टकरानेवाली लहरों के जल से भरे; वेलै काऱम्—समुद्र तक; अलङ्कु पेर् इलङ्कै तन्नै—विद्यमान बड़ी लंका को; अॅ पुऱत्तु अळवुम् तीय—सभी ओरों की सीमा तक जल जाय, ऐसा; ऒरु कणत्तु—एक क्षण में; अॅरित्त—जलाने के; कॊट्पु आल्—प्रभाव से; अ मूरि—वह बलवान; पोर् वाल्—युद्ध-पुच्छ; तुप्पु उऱऴ्—प्रवाल-सम; मेनि अण्णल्—(लाल) शरीर के प्रभु शिवजी ने; मेरु विल्—मेरु-धनु को; कुऴैय—झुकाते हुए; तोळाल्—अपने हाथ से; मु पुरत्तु अॅय्त—त्रिपुर पर जो चलाया; कोले ऒत्ततु—उस बाण के ही समान था। ११७८

परस्पर टकराती हुई उठनेवाली तरंगों के जल से भरे समुद्र तक फैली लंका को उस पूँछ ने एक पल में सभी ओर से जलाकर ख़ाक बना दिया। उस सामर्थ्य को देखते हुए वह सबल और युद्धविक्रमी दुम, प्रवाललाल-शरीरी श्रीशिवजी द्वारा मेरुधनु को झुकाकर उनके हाथों से छोड़े गये शर के ही समान रही। ११७८

वॆळ्ळियिऱ् पॊन्नि नाह विळङ्गुपॊन् मणियिन् विञ्जै
तॆळ्ळिय कडवुट् टच्चन् कॆम्मुयन् ऱरिदिऱ् चॆय्द
तळ्ळरु मनैह डोऱु मुऱैमुऱै ताविच् चॆन्ऱान्
ऒळ्ळॆरि योडुङ् गुन्ऱत् तूऴिवी ऴुरुमो डॊप्पान् 1179

वॆळ्ळियिन्—चाँदी के; पॊन्निन्—और स्वर्ण के; विळङ्कु पॊन् मणियिन्—और प्रभापूर्ण रत्नों के; आक—बने हों ऐसा; विञ्चै तॆळ्ळिय—शिल्प-विद्या में निपुण;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कटवुळ् तच्चन्–दिव्य शिल्पी विश्वकर्मा द्वारा; कै मुयन्ऱु–अपना हस्तकौशल पूर्ण रूप से प्रयोग करके; अरितिल् चॆय्त–अपूर्व रूप से निर्मित; तळ् अरु–अमिट; मत्तैकळ् तोऱुम्–भवनों में; ओळ् ॲरि ओटुम्–प्रज्वलित आग के साथ; कुन्ऱत्तु–पर्वत पर; ऊऴि वीऴ्–युगान्त में गिरनेवाली; उरुम् ओटु ऑप्पान्–अशनि की तुलना करनेवाला हनुमान; मुऱै मुऱै–क्रम से; तावि चॆन्ऱान्–भवन से भवन उछलता जा रहा था। ११७९

लंका के प्रासाद शिल्पविद्याविदग्ध विश्वकर्मा द्वारा रजत, स्वर्ण, मनोरम प्रभापूर्ण रत्नों आदि का उपयोग करके अपना सारा हस्तकौशल लगाकर रचे गये थे। वे आसानी से मिटाये जा सकनेवाले नहीं थे। उन प्रासादों पर हनुमान अपने ज्वलंत दुम के साथ बारी-बारी से गिरा। जैसे युगान्त में अशनि पर्वतों पर गिरती है, वैसे ही वह आग लगाता हुआ एक से दूसरे पर उछलकर कूदता चलने लगा। ११७९

नीऱिऱ निरुदर् याण्डुम् नॆय्पॊऴि वेळ्वि नीक्कप्
पाल्वरुम् बशिय नऩ्बान् मारुदि वालैप् पऱ्ऱि
आलमुण् डवऩिऩ् ऱूट्ट वुलहॆला मवियि नुण्णुम्
कालमे यॆऩ्ऩ मऩ्ऩो कऩलियुङ् गडिदि नुण्डान् 1180

नील् निऱ–नीलवर्ण; निरुतर्–राक्षसों के; याण्टुम्–सर्वत्र; नॆय् पॊऴि–घृत जिनमें पुष्कल रूप से अग्नि में डाला जाता है; वेळ्वि नीक्क–उन यज्ञों को रोकने से; पाल् वरुम्–अपने पास आगत; पचियऩ्–बुभुक्षु; कऩलियुम्–अग्निदेव भी; मारुति वालै–मारुति की पूँछ को; अऩ्पाल्–लगाव के साथ; पऱ्ऱि–पकड़कर; आलम् उण्टवऩ्–विषभोक्ता शिवजी के; निऩ्ऱु ऊट्ट–स्वयं खिलाने (संहार करने) पर; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों को; अवियिऩ्–हवि के समान; उण्णुम् कालमे ॲऩ्ऩ–खानेवाले काल ही के समान; कटितिऩ् उण्टाऩ्–शीघ्र खा लिया (जला दिया)। ११८०

नीलवर्ण राक्षसों ने यज्ञों को रोका था, जिनमें अग्नि घी को होम के रूप में समृद्ध रीति से अर्पित किया जाता है। इसलिए वह अग्निदेव भूखा रह गया। अब वह हनुमान के पास गया और उसने हनुमान की पूँछ पकड़कर जाते हुए सारी लंका को ऐसा खा लिया (भस्म कर लिया), जैसे विषभोक्ता शिवजी के खिलाने पर युगान्त का कालदेवता सारे लोकों को हवि के समान खा लेता है। ११८०

13. इलङ्गै यॆरियूट्टु पडलम् (लंका-दहन पटल)

कॊडियैप् पऱ्ऱि विदानङ् गॊळुत्तित्ताळ्, नॆडिय तूणैत् तडवि नॆडुञ्जुवर्
मुडियच् चुऱ्ऱि मुळ्ळुदु मुरुक्किऱ्ऱाल्, कडिय मामऩै दोऱुङ् गडुङ्गऩल् 1181

कटुम् कऩल्–प्रचण्ड अग्नि; कटिय–सुरक्षित; मा मऩै तोऱुम्–सभी बड़े-बड़े भवनों में; कॊटियै पऱ्ऱि–ध्वजा को लगकर; वितानम् कॊळुत्ति–वितानों को

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जलाकर; ताळ्-पीठों पर; नॅटिय तूणै-लम्बे खम्भों को; तटवि-लगकर; नॅटुम् चुवर्-ऊँची दीवारों को; मुटिय चुऱ्ऱि-पूर्ण रूप से घेरकर; मुळुतुम्-(इस भाँति) पूरा-पूरा; मुरुक्किऱ्ऱु-(भवनों को) जला दिया। ११८१

प्रचण्ड अग्नि ने सुरक्षित रहे सारे घरों को, ध्वजा में लगकर, वितान जलाकर, पीठ-सहित लम्बे खंभों को भस्म करके और लम्बी दीवारों को चारों ओर से घेरकर पूर्ण रूप से जला डाला। ११८१

वाश लिट्ट वॅरिमणि माळिहै, मूश मुट्टि मुळुदु मुरुक्कलाल्
ऊश लिट्टन वोडि युलैन्दुपोय्प्, पूश लिट्ट विरियऱ् पुरमॅलाम् 1182

वाचल् इट्ट-द्वार पर लगायी गयी; ॲरि-आग के; मणि माळिकै-रत्नमय प्रासादों को; मूच मुट्टि-मण्डलाकार जोर से लगकर; मुळुतुम् मुरुक्कलाल्-पूर्ण रूप से जला देने से; इरियल्-अस्त-व्यस्त; पुरम् ॲलाम्-नगरवासी सभी; ऊचल् इट्टु अत्त-झूलों के समान आगे-पीछे; ओटि-भागे; उलैन्तु पोय्-लटकर; पूचल् इट्ट—(उन्होंने) बड़ा शोर मचाया। ११८२

हनुमान ने द्वार पर ही आग लगायी। पर उसने सुन्दर प्रासादों को सभी ओर से ग्रसकर पूरा-पूरा जला डाला। इसलिए सभी पुरवासी अस्त-व्यस्त हो झूले-जैसे (पेंग मारते और आगे से पीछे और पीछे से आगे आते-जाते हैं वैसे) भागे, थके और बड़ा शोर मचाने लगे। ११८२

मणियि नाय वयङ्गॊळि माळिहै, पिणियिऱ् चॅञ्जुडर्क् कऱ्ऱै पॅरुक्कलाल्
तिणिहॊ डीयुऱ्ऱ दुऱ्ऱिल देर्हिलार्, अणिव ळैक्कैनल् लारल मन्दुळार् 1183

मणियिन् आय-रत्न-निर्मित; ऒळि वयङ्कु-प्रकाशमय; माळिकै-प्रासाद; पिणियित्-(आग के) लगने से; चॅम् चुटर् कऱ्ऱै-लाल किरणों की लटों को; पॅरुक्कलाल्-(प्रतिबिम्बों के रूप में) संख्या में बढ़ाने से; तिणि कॊळ्-घनी; ती उऱ्ऱ-आग-लगे स्थान; तुऱ्ऱिल-जिन स्थानों में आग नहीं लगी थी, वे स्थान; तेर्किलार्-(उनमें भेद) जो नहीं जान सकीं; अणि वळै कै-(वे) कंकण वाले हाथों की; नल्लार्-स्त्रियाँ; अलमन्तु उळार्-गड़बड़ायी रहीं। ११८३

वे प्रासाद रत्नों के बने थे और चिकने और प्रभापूर्ण थे। इसलिए उनमें लगी आग की ज्वालाएँ प्रतिबिम्बित दिखीं और आग की लटें अत्यधिक संख्या में बढ़ी दिखायी दीं। इसलिए कंकणहस्ता स्त्रियाँ यह भेद नहीं कर सकीं कि कहाँ आग लगी है, कहाँ नहीं! इसलिए वे किंकर्तव्यमूढ बनी भ्रमित रहीं। ११८३

वान हत्तै नॅडुम्बुहै माय्त्तलाल्, पोन तिक्कऱि यादु पुलम्बिनार्
तेन हत्त मलर्पल शिन्दिय, कान हत्तु मयिलन्न काट्चियार् 1184

तेन् अकत्त-शहद जिसके मध्य में है; पल मलर्-ऐसे विविध फूल; चिन्तिय-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जहाँ गिरे पड़े हैं; कातकत्तु–उस वन के; मयिल् अनॅन–मोरों के समान; काट्चियार्–दिखनेवाली स्त्रियाँ; नॅटुम् पुकै–बहुत दूर तक व्याप्त धुआँ; वातकत्तै मायत्तल् आल्–आकाश को छिपाए रहा; पोत तिक्कु–(इसलिए) किस ओर गयीं, यह दिशा; अऱियातु–न जानकर; पुलम्पिऩार्–विलपीं। ११८४

विविध मधुगर्भसुमनाकीर्णवन्यमयूरनिभ स्त्रियाँ बहुत दूर तक फैले हुए धूम के आकाश को आच्छादित करने से यह न जान सकीं कि वे किस दिशा में गयी हैं और विलाप करती हुई रोयीं। ११८४

कूय्क्कॊ ळुम्बुऩल् कुऱ्जियिऱ् कून्दलिऩ्
मीच्चॊ रिन्दऩर् मादरुम् वीररुम्
एय्त्त तऩ्मैयि ऩालॆरि यिऩ्मैयुम्
तीक्कॊ ळुन्दिऩ वुन्दॆरि यामैयाल् 1185

वीररुम् मातरुम्–वीर पुरुष और स्त्रियाँ; एय्त्त तऩ्मैयिऩाल्–समानता की वजह से; ॲरि इऩ्मैयुम्–आग का न लगना; ती कॊळुन्तिऩवुम्–आग का जला रहना; तॆरियामैयाल्–न जानने से; कूय्–चिल्लाते हुए; कॊळुम् पुऩल्–बहुत परिमाण में जल को; कुऱ्चियिल्–(पुरुषों के) केशों पर (स्त्रियों ने); कून्तलिल्–और (स्त्रियों की) वेणी पर (पुरुषों ने); मी चॊरिन्तऩर्–ऊपर से डाले। ११८५

वीर राक्षस पुरुषों के केश और सुन्दर राक्षसी स्त्रियों की वेणी दोनों आग के ही समान अरुणवर्ण थी। इसलिए वे यह निर्णय नहीं कर सके कि सिर पर आग लगी है या नहीं लगी है। अतः रोते-चिल्लाते हुए पुरुषों ने स्त्रियों की वेणी पर समृद्ध रूप से जल उड़ेला और स्त्रियों ने पुरुषों के केश पर जल उड़ेला। ११८५

इल्लिऱ् ऱङ्गुम् वयङ्गॆरि यावैयुम्
शॊल्लिऱ् ऱीर्न्दऩ पोलरुन् दॊल्लुरुप्
पुल्लिक् कॊण्डऩ मायैप् पुणर्प्पऱक्
कल्लित् तम्मियल् पॆय्दुङ् गरुत्तर्पोल् 1186

मायै–माया को; पुणर्प्पु अऱ–लगाव हटाते हुए; कल्लि–उखाड़ फेंककर; तम् इयल्पु–स्वभाव में; ॲय्तुम्–आगत; करुत्तर् पोल्–विवेकी के समान; इल्लिल् तङ्कुम्–(राक्षसों के) घरों में रही; वयङ्कु ॲरि यावैयुम्–ज्वलन्त अग्नि सभी ने; चॊल्लिल् तीर्न्तऩ पोल्–(रावण की) आज्ञा से छूट गयी-जैसी; अरुम्–अपूर्व; तॊल् उरु–अपना पुराना (स्वाभाविक) रूप; पुल्लि कॊण्टऩ–अपना लिया। ११८६

राक्षसों के घरों में रहनेवाली अग्नि ने मानो रावण की आज्ञा से छूटकर अपना पुराना अपूर्व रूप और गुण अपना लिया। तब वह उस विवेकी के समान रही, जो माया को मूल से उखाड़ फेंककर स्वभावस्थ हो गये हों। ११८६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आय दङ्गॊर् कुऱळुरु वायडित्, ताय ळन्दुल हङ्ग डरक्कॊळ्वान्
मीयॆ ळुन्द करियवन् मेनियिल्, पोयॆ ळुन्दु परन्ददु वॆम्बुहै 1187

ओर् कुऱळ् उरुवाय्–पहले एक वामन के आकार में; तर–(गये और दान) दिये जाने पर; उलकङ्कळ्–लोकों को; अटि ताय्–अपने चरणों से लाँघकर; अळन्तु कॊळ्वान्–नाप लेने के लिए; मी ऍळुन्त–आकाश में ऊँचे बढ़े हुए; करियवन्–काले रंग के त्रिविक्रम श्रीविष्णु के; मेनियिल्–शरीर की तरह; वॆम् पुकै–गरम धुआँ; अङ्कु ऍळुन्तु पोय्–वहाँ से उठकर गया और; परन्ततु आयतु–सर्वत्र व्याप्त हुआ। ११८७

गरम धुआँ घने रूप से उठा और लंका के ऊपर सारे आकाश में फैला। (कवि की कल्पना है कि) वह, पहले वामन के रूप में जाकर दान प्राप्त करने के बाद तीनों लोकों को अपने चरणों से नापकर अपना लेने के निमित्त जो त्रिविक्रम के रूप में संवर्द्धित हुए उन विष्णु के समान रहा। ११८७

नील निन्ऱ निऱत्तत्त कीळ्निलै, मालिन्, वॆञ्जिन यानैयै मानुव
मेल्वि ळुन्दॆरि मुऱुम् विळुङ्गलाल्, तोलु रिन्दु कळन्ऱत्त तोलॆलाम् 1188

नीलम् निन्ऱ–काले; निऱत्तत्त–रंग वाले; तोल् ऍलाम्–गज सभी; मेल् विळुन्तु–ऊपर लगकर; ऍरि–आग के; मुऱुम् विळुङ्कलाल्–पूरी तरह से आवृत कर लेने से; तोल् उरिन्तु–चमड़ा उघड़कर; कळन्ऱत्त–दूर हो गया, होकर; कीळ् निलै–पूरब की दिशा के; मालिन्–इन्द्र के; वॆम् चिन यानैयै–(ऐरावत नाम के) भयंकर क्रोधी गज के; मानुव–समान हो गये। ११८८

लंका के गजों के चर्म आग में जलकर दूर हो गये। तब वे सफ़ेद होकर सब पूर्व दिशा के पालक इन्द्र के ऐरावत के समान लगे। ११८८

मीदि मङ्गलन् दालन्त वॆम्बुहै, शोदि मङ्गलत् तीयॊडुञ् जुऱ्ऱलाल्
वीदि मङ्गुलिन् वीळ्पुनल् मीप्पडर्, ओदि मङ्गळिन् माद रॊदुङ्गिनार् 1189

मीतु–ऊपर; इमम् कलन्ताल् अन्त–हिम-मिश्रित-सा जो रहा; वॆम्पुकै–उस धूम के; चोति मङ्कु अल्–ज्योति जिसकी मन्द नहीं हो रही थी (अमन्दप्रभ); अ तीयॊटु–उस अग्नि के साथ; चुऱ्ऱलाल्–मण्डल बनाता रहा, इसलिए; वीति–वीथियों में; मातर्–स्त्रियाँ; मङ्कुलिन् वीळ् पुनल्–मेघ से गिरनेवाले जल को छोड़; मी पटर्–आकाश में उड़ते रहे; ओतिमङ्कळिन्–हंसों के समान; ऒतुङ्कितार्–हटकर चलीं। ११८९

हिमावृत-सा वह धुआँ अभेदज्योति अग्नि के साथ मण्डलाकार फैल रहा था। तब राक्षसियाँ उससे बचकर दूर हट जाने लगीं। वे उन हंसों के समान थीं, जो मेघ से गिरे, भूमि पर जमे अशुद्ध जल को छोड़कर उपर उड़े जा रहे हों। ११८९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊडित्तॆ ऴुन्द पॆरुम्बॊऱि पोवऩ
इडिक्कु लङ्गळिन् वीऴ्वऩ वॆङ्गणुम्
वॆडित्त वेलै वॆदुम्बिड मीऩ्गुलम्
तुडित्तु वॆन्दु पुलर्न्दुयिर् शोर्न्दवाल् 1190

पॊटित्तु ऍऴुन्त–कणों के रूप में उठे; पॆरुम् पॊऱि—बड़े-बड़े अग्निकण; पोवऩ–ऊपर जाते; वीऴ्वऩ–नीचे गिरते; ऍङ्कणुम्–सर्वत्र; इटि कुलङ्कळिऩ्–अशनिवृन्दों के समान; वॆटित्त–फटे; वेलै वॆतुम्पिट–(इसलिए) समुद्र खौला, इसलिए; मीऩ् कुलम्–मत्स्यकुल; तुटित्तु–तड़पे; वॆन्तु–जले; पुलर्न्तु–झुलसे; उयिर् चोर्न्त–प्राण से हाथ धोये (उन्होंने)। ११९०

बड़े बड़े अंगारे छूटे और फैले। वे ऊपर जाते और नीचे गिर जाते। और सर्वत्र अशनिकुल के समान घोर शब्द के साथ फटे। समुद्र खौल गया। झषककुल तड़पे, जले, झुलसे और प्राणहीन हो गये। ११९०

परुहु तीमडुत् तुळ्ळुऱप् पऱ्ऱलाल्, अरुहु नीडिय वाडहत् तारैहळ्
उरुहि वेलैयि ऩूडुपुक् कुऱ्ऱऩ, तिरुहु पॊन्ऩॆडुन् दण्डिऱ् ऱिरण्डवाल् 1191

परुकु–सबको खाने का स्वभाव रखनेवाली; ती–आग; मटुत्तु–सर्वत्र व्याप्त होकर; उळ् उऱ–अन्दर पहुँचकर; पऱ्ऱल् आल्–जलती है, इसलिए; अरुकु–पास रही; नीटिय–लम्बी; आटक तारैकळ्–स्वर्णतारें; उरुकि–पिघलकर; वेलैयिऩ् ऊटु–समुद्र में; पुक्कु उऱ्ऱऩ–जा पहुँचीं; तिरुकु नॆटुम्–पेचदार लम्बे; पॊऩ् तण्टिल्–स्वर्णदण्डों के समान; तिरण्ट–पुष्ट और मोटे दिखायी दिये। ११९१

सबको भस्म करने के स्वभाव वाली अग्नि सर्वत्र व्यापकर बाहर क्या अंदर से भी जलाने लगी तो स्वर्ण पिघलकर धारों के रूप में बहने लगा। सभी धारें समुद्र में गयीं और पेचदार स्वर्णदण्डों में परिवर्तित हो गयीं। ११९१

उरैयिऩ् मुन्दुल हुण्णु मॆरियदाल्, वरैनि वन्दऩ पऩ्मणि माळिहै
निरैयि ऩीणॆडुञ् जोलैयि ऩिऱ्कुमो, तरैयुम् वॆन्ददु पॊन्ऩॆऩुन् दऩ्मैयाल् 1192

उरैयिऩ् मुन्तु–(साधु के शाप) वचन के समान शीघ्र; उलकु उण्णुम् ऍरि अतु–लोकदाहक वह आग; वरै–पर्वत के समान; निवन्तऩ–उन्नत; पऩ् मणि माळिकै–विविध रत्नमय प्रासादों की; निरैयिऩ्–पंक्तियों के साथ; नीळ् नॆटुम् चोलैयिऩ्–बहुत बड़े विशाल उद्यानों तक से; निऱ्कुमो–सीमित रह जायगी क्या; तरैयुम्–भूमि भी; पॊऩ् ऍऩुम् तऩ्मैयाल्–स्वर्ण होने के कारण; वॆन्ततु–जल गयी। ११९२

साधुओं के शाप बहुत शीघ्र कार्यान्वित हो जाते हैं। उसी शीघ्रता की लोकदाहक आग भी क्या उन्नत विविध रत्नमय प्रासादों और बड़े-बड़े उद्यानों तक सीमित रहेगी ? लंका की भूमि भी सोने की थी। अतः भूमि भी जलकर भस्म बन गयी। ११९२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कल्लि नुम्वलि दाम्बुहैक् कऱ्ऱैयाल् ऍल्लि पॅऱ्ऱ दिमैयवर् नाट्टिडम्
वल्लि कोलि निवन्दन मामणिच्, चिल्लि योडुन् दिरण्डन तेरॅलाम् 1193

कल्लिनुम् वलितु–पत्थर से भी घना; आम्–जो रहा; पुकै कऱ्ऱैयाल्–उस धुएँ की राशियों से; इमैयवर् नाट्टु इटम्–देवलोक का सारा स्थल; ऍल्लि पॅऱ्ऱतु–अन्धकार से भर गया; वल्लि कोलि–ध्वजाओं से अलंकृत करके; निवन्तन–ऊँचे बनाये गये; तेर् ऍलाम्–सारे रथ; मा मणि–श्रेष्ठ रत्नों से सजे हुए; चिल्लियोटुम्–चक्रों के साथ; तिरण्टन–जलकर एक पिंड बन गये। ११९३

धुएँ की लटें पत्थर से भी कठोर थीं। उनके घने व्यापने से देवों के लोकों के सारे स्थल अंधकारमग्न हो गये। ध्वजाओं से अलंकृत बड़े-बड़े रथ जो थे, वे सब अपने श्रेष्ठ रत्नजडित पहियों के साथ पिघलकर पिण्डाकार बन गये। ११९३

पेय मन्ऱिनि लन्ऱु पिऱङ्गॅरि, माय रुण्ड नऱवै मडुत्तदाल्
तूय रॅन्ऱिलर् वैहिडन् दुन्निनाल्, तीय रन्ऱियुन् दीमैयुञ् जॅय्वराल् 1194

पेय मन्ऱिनिल्–मधुशालाओं में; अन्ऱु–उस दिन; पिऱङ्कु ऍरि–(जो) जली (वह) आग; मायर् उण्ट–मायाचतुर राक्षसों से पीत; नऱवै–सुरा को; मटुत्तताल्–स्वयं पीने (उसमें लगने) से; तूयर् ऍन्ऱु इलर्–अपवित्र; वैकु इटम्–(लोगों के) वासस्थान; तुन्निनाल्–जायँ तो; तीयर् अन्ऱियुम्–(ऐसे जो जाते हैं वे) बुरे नहीं होने पर भी; तीमैयुम् चॅय्वर्–बुरा काम करेंगे। ११९४

मधुशालाओं में जो आग लगी उसने वहाँ रही ताड़ी का अशन किया। ताड़ी वञ्चक राक्षसों का पान है। पवित्र आग का उसका अशन करना इस मसल का प्रमाण है कि अपवित्र लोगों के स्थान में जानेवाले स्वयं बुरे न होने पर भी बुरे काम कर देते हैं। ११९४

तळुवि लङ्गै तळङ्गॅरि दाय्च्चॅल, वळुविल् वेलै युलैयिन् मरुहिन
ऍळुहॉ ळुञ्जुडर्क् कऱ्ऱैशॅल् ऱॅय्दलाल्, कुळुवु तण्बुनन् मेहङ् गॉदित्तवे 1195

इलङ्कै तळुवु–लंका में लगकर; तळङ्कु ऍरि–शब्द के साथ जलनेवाली आग; ताय् चॅल–उछल चली, इसलिए; वळुवु इल् वेलै–अपृथक् रहनेवाला सागर; उलैयिन्–(अन्न पकाने के लिए) खौलते पानी के समान; मरुकित–खौल गया; ऍळु–ऊपर उठती; कॉळुम् चुटर् कऱ्ऱै–घनी आग की लटें; चॅन्ऱु ऍय्तल् आल्–ऊपर जा पहुँचीं, इसलिए; कुळुवु–घुमड़े हुए; तण् पुनल् मेकम्–शीतल जल-भरे मेघ; कॉतित्त–गरम हो तपे। ११९५

लंका पर लगी आग सशब्द फैलती हुई चली। इसलिए अपृथक् रहनेवाले सागर का जल धान पकाने के लिए खौलाये गये जल के समान खौल गया। ऊपर उठनेवाली घनी लपटें आकाश तक गयीं, इस वजह से समूह में रहे शीतल जल-भरे मेघ गरम हो गये। ११९५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऊऩि लोडु मॅरियॉ डुयङ्गुवार्, कान्ऩि लोडु नॅडुम्बुऩल् काणॅऩा
वान्ऩि लोडु महळिर् मयङ्गिऩार्, वेऩि लोडरुन् देरिडै वीऴ्न्दऩर् 1196

ऊऩिल् ओटुम्–मज्जे के अन्दर लगती जलती; ॲरि ऑटु–आग से; उयङ्कुवार्–दुःखी; वाऩिल् ओटु–अन्तरिक्ष में भागनेवाली; मकळिर्–राक्षसियाँ; मयङ्किऩार्–बेहोश हुईं; काऩिल् ओटुम्–वन में बहता; नॅटुम् पुऩल्–बड़े प्रवाह; काण् ॲऩा–देखो कहकर; वेऩिल् ओटु–ग्रीष्म में बहता-सा दिखनेवाले; अरुम् तेर् इटै–अपूर्व मृगजल में; वीऴ्न्तऩर्–गिरीं। ११९६

स्त्रियों के मज्जों के अन्दर भी आग पहुँचकर जलाने लगी। असह्य वेदना के साथ वे अन्तरिक्ष में भागीं, पर बेसुध हो गयीं। उनके सामने मृगजल (तमिऴ में इसे 'भूतरथ' कहते हैं।) देखा। कहने लगीं कि देखो जंगल में बहनेवाला जलप्रवाह इधर है! वे पास गयीं और गिरीं। ११९६

तेऩ वाम्बॉऴि रीप्पडच् चिन्दिय, शोऩै मामलर्त् तुम्बि तॉडर्न्दयल्
पोऩ तीच्चुडर् पुण्डरि हत्तडम्, कान मामॅऩ वीऴ्न्दु करिन्दवे 1197

तेऩ्–शहद की मक्खियाँ; अवाम्–जहाँ चाव के साथ आती हैं; पॉऴिल्–उन उद्यानों में; ती पट–आग लगी, इसलिए; चिन्तिय–तितर-बितर हुए; चोऩै मा मलर्–घटा-सम बड़े फूलों पर; तुम्पि–(मँड़रानेवाले) भ्रमर; तॉटर्न्तु–उसमें लगातार लगकर; अयल् पोऩ–उससे दूर भी व्याप्त; ती चुटर्–अग्नि की ज्वालाओं को; पुण्टरिक तटम् कातम् आम्–विशाल पुण्डरीकवन है; ॲऩ–ऐसा सोचकर; वीऴ्न्तु–गिरकर; करिन्त–राख बने। ११९७

उद्यानों में भी आग लगी, जहाँ शहद की मक्खियाँ चाव के साथ आती हैं। आग उद्यानों के उस पार भी फैल गयी। घटा-सम जो पुष्पों पर मँड़रा रहे थे, वे आग से डरकर तितर-बितर हुए और दूर के स्थानों पर लगी आग के विस्तार को विशाल पुण्डरीक-वन समझकर उसमें जाकर गिरे और भस्म हो गये। ११९७

नऱ्क डम्मिदु नम्मुयिर् नायहर्, मऱ्क डन्दॅऱ माण्डऩर् वाऴ्विलम्
इऱ्क डन्दिऩि येहलम् यामॅऩ, विऱ्क डन्द नुदलियर् वीडिऩार् 1198

विल् कटन्त–धनु से भी अधिक मनोरम; नुतलियर्–भाल वाली राक्षसियाँ; नम् उयिर् नायकर्–हमारे प्राणप्रिय पति; मऱ्कटम् तॅऱ–मर्कट के मारने से; माण्टऩर्–मर गये; याम्–हम; वाऴ्वु इलम्–(सुहागिन के) जीवन से रहित हो गये; इल् कटन्तु–घर से बाहर; इऩि–अब; एकलम्–नहीं जा सकतीं; ॲऩ–ऐसा सोचकर; इतु नल् कटम्–यह अच्छा कर्तव्य बना; ॲऩ–यह निश्चय करके; वीटिऩार्–प्राण त्याग गयीं। ११९८

धनु के रूप की सुन्दरता को हरानेवाले ललाटों से शोभित राक्षसियों ने सोचा कि हमारे प्राणनाथ मर्कट के मार डालने से मर गये। अब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(दक्षिण में प्रचलित प्रथा के अनुसार विधवाएँ) हम बाहर कहीं खुले में आ-जा भी नहीं सकतीं। यही अच्छा काम है— आग में गिरकर सती हो जाएँ। यह निर्णय करके वे आग में कूद पड़ीं। ११९८

पूक्क रिन्दु पॊऱिप्पॊऱि यायडै, नाक्क रिन्दु शिऩैनऱुञ् जाम्बराय्
मेक्क रिन्दु नॆडुम्बणै वेरुऱक्, काक्क रिन्दु करुङ्गरि यान्वे 1199

पू–सारे फूल; करिन्तु–झुलसकर काले बनकर; पॊऱि पॊऱियाय्–राख के कण बने; अटै ना–पत्र रूपी जिह्वाएँ; करिन्तु–झुलसीं और राख बनीं; चिऩै नऱुम् चाम्पराय्–डालियाँ अच्छी क्षार बनीं; मे करिन्तु—ऊपर के भाग जले; नॆटुम् पणै–बड़ी शाखाएँ और; वेर् उऱ–जड़ एक बनकर (समान रूप से); का करिन्तु–उपवन जलकर राख बना, इसलिए; करुम् करि आऩ–काली राख के ढेर बन गये। ११९९

उद्यानों में फूल जले; जिह्वा के स्थान रहे पत्र जले; और छोटी टहनियाँ जलीं। ऊपर के अंश जले। बड़ी-बड़ी डालों की जो गति हुई वही जड़ों की भी हुई। इस भाँति सारे के सारे उद्यान जलकर भस्म के ढेर बन गये। ११९९

कार्मु ऴुक्क वॆऴुङ्गऩऱ् कऱ्ऱैबोय्, ऊर्मु ऴुक्क वॆदुप्प वुरुहिऩ
शोरॊ ऴुक्क मऱामैयिऱ् ऱुऩ्ऱुबॊऩ्, वेर्वि डुप्पदु पोऩ्ऱुऱऩ विण्णॆलाम् 1200

कार् मुऴुक्क–मेघों को आवृत करते हुए; ऎऴुम्–उठी; कतल् कऱ्ऱै–अग्नि की ज्वालाएँ; पोय्–जाकर; ऊर् मुऴुक्क–(व्योम-) लोक भर को; वॆतुप्प–जलाने लगीं तो; उरुकिऩ चोर् ऒऴुक्कम्–पिघलकर गिरनेवाली अग्निमय धाराएँ; अऱामैयिल्–टूटती नहीं थीं, इसलिए; विण् ऎलाम्–सारे व्योमलोक; तुऩ्ऱु–घने रूप से; पॊऩ् वेर्–स्वर्ण की जड़ें; विटुप्पतु–निःसृत करते; पोऩ्ऱऩ–जैसे लगे। १२००

आग की लपटें उठीं और मेघों को आवृत कर गयीं। वह आकाश में फैली और व्योमलोकों को भी ताप देने लगी। तब वहाँ के स्वर्ण पिघले और तारें बनीं। उनको देखने पर ऐसा लगा, मानो व्योमलोक घनी स्वर्णमयी जड़ें निकाल रहे हों। १२००

नॆरुक्कि मीमिशै योङ्गु नॆरुप्पऴल्
शॆरुक्कुम् वॆण्गदिर्त् तिङ्गळैच् चॆऩ्ऱुऱ
उरुक्कि मॆय्यि ऩमुद मुहुत्तलाल्
अरक्क रुञ्जिल राविपॆऱ् ऱारो 1201

नॆरुक्कि–बहुत घने रूप से; मी मिचै–आकाश पर; ओङ्कु–उठ रही; नॆरुप्पु अऴल्–आग की लपट; चॆरुक्कुम्–गर्वीले; वॆण् कतिर् तिङ्कळै–श्वेतकिरण चन्द्रमण्डल में; चॆऩ्ऱु उऱ–जा लगी, तो; उरुक्कि–उसको पिघलाकर; मॆय्यिऩ्–(राक्षसों के) शरीर पर; अमुतम् उकुत्तलाल्–अमृत बरसाने से; अरक्करुम् चिलर्–कुछ राक्षस भी; आवि पॆऱ्ऱार्–पुनः जीवित हो गये। १२०१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऊपर की ओर उठती चलनेवाली घनी विवृद्ध अग्नि गर्वीले श्वेत किरणों के चन्द्रमण्डल में जा लगी। तब वह पिघला और अमृत गिरने लगा। वह अमृत कुछ मृतक राक्षसों के शवों पर गिरा और उन्हें पुनः प्राण मिल गये। १२०१

परुदि	पऱ्ऱि	निमिर्न्दॆऴु	पैङ्गऩल्
करुहि	मुऱ्ऱु	मॆरिन्दॆऴु	कार्मऴै
अरुहु	शुऱ्ऱु	मिरुन्दैय	दायहल्
उरुहु	पॊऱ्ऱिर	ळॊत्तऩ	ऩॊण्गदिर् 1202

परुति पऱ्ऱि–सूर्यमण्डल को पकड़कर; निमिर्न्तु ऎऴु–ऊपर उठनेवाली; पैम् कतल्–इस नवीन आग से; करुकि–झुलसकर; मुऱ्ऱुम् ऎरिन्तु–पूर्ण रूप से जलकर; ऎऴु–उठे; कार् मऴै–काले मेघ; अरुकु चुऱ्ऱुम्–पास, चारों ओर; इरुन्तै अतु आय्–रहनेवाले कोयले के समान दिखे; ऒळ् कतिर्–उज्ज्वल किरणमाली; अकल् उरुकु–(मिट्टी के) दिये-मध्य पिघलनेवाले; पॊन् तिरळ्–स्वर्णपिंड; ऒत्तऩऩ्–समान रहा। १२०२

सूर्यमण्डल को भी पकड़कर यह अनोखी आग ऊपर गयी। उससे पूर्ण रूप से मेघ झुलस गये और वे काले मेघ सूर्य के चारों ओर कोयलों के समान लगे। तब उज्ज्वल किरणमाली मिट्टी के कटोरे में पिघलनेवाले स्वर्ण के समान लगा। [इसमें सुनार की अँगीठी का दृश्य वर्णित है। मेघ अँगीठी के जलते कोयले हैं। सूर्यमण्डल मिट्टी के कटोरे के समान लगा जिसमें रखकर सुनार सोने को पिघलाता है और सूर्य उस स्वर्ण के समान दिखा। दूसरी दृष्टव्य वस्तु एक ही स्थान पर (१२०१, १२०२वें पद्यों में) चन्द्र और सूर्य दोनों का वर्णन है। मूल टीकाकार का अनुमान है कि पूर्णिमा की रात को हनुमान ने सीता का अन्वेषण किया और दूसरी रात के आखिरी पहर में उसने लंका में आग लगायी।]। १२०२

तळैकॊ	ळुन्दिय	तावॆरि	तामणि
मुळैकॊ	ळुन्दि	मुहत्तिडै	मॊय्त्तपेर्
उळैकॊ	ळुन्द	वुलन्दुलै	वुऱ्ऱऩ
वळैकु	ळम्बिऩ्	मणिनिऱ	वाशिये 1203

तळै–(अश्व के) पैरों को बाँधने के पाश को; कॊळुन्तिय–जलाकर; तावु ऎरि–ऊपर उछली आग; तामणि–गले के रस्सों के साथ; मुळै–खूंटे को भी; कॊळुन्ति–जलाकर; मुकत्तु इटै मॊय्त्त–मुख पर घने रूप से उगे रहे; पेर् उळै–लम्बे बालों को; कॊळुन्त–जलाकर; वळै कुळम्पिऩ्–कुंचित खुरों वाले; मणि निऱ–सुन्दर रंगीन; वाचि–वाजी; उलन्तु–मुरझाकर; उलैवु उऱ्ऱऩ–मर गये। १२०३

अश्वशालाओं में अग्नि ने अश्वों के पैरों के बन्धन-रस्सी जलायी;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

फिर गले की रस्सियाँ जलायीं; खूँटे जलाये; फिर अश्वों के मुखों पर उगे लम्बे बाल जलाये। इस तरह कुञ्चित खुरों के और सुन्दर रंगीन अश्व तपे, संकटग्रस्त हुए और आखिर जल मरे। १२०३

अॅळुन्दु पॉऱ्ऱलत् तेऱलि नीळ्पुहैक्
कॉळुन्दु शुऱ्ऱ वुयिर्प्पिलर् कोळुऱ
अळुन्दु पट्टुळ रॉत्तयर्न् दारळल्
विळुन्दु मुऱ्ऱिनर् कूऱ्ऱै विळुङ्गुवार् 1204

कूऱ्ऱै विळुङ्कुवार्–यम को (यों ही) निगल सकनेवाले राक्षस; अॅळुन्तु–उठकर; पॉत् तलत्तु–स्वर्ण (स्वर्ग) लोक को; एऱलिन्–जब चढ़ जाने लगे; नीळ्–लम्बे; पुकै–धुएँ के; कॉळुन्तु–किसलय (अग्र भाग) के; चुऱ्ऱ–घेर लेने से; उयिर्प्पु इलर्–श्वास न छोड़ सकें; कोळ् उऱ–इस रीति से आवृत होकर; अळुन्तु पट्टु उळर् ऑत्तु–फँसकर मरनेवालों के समान; अयर्न्तार्–बेहोश होकर; अळल् विळुन्तु–आग में गिरकर; मुऱ्ऱिनर्–चल बसे। १२०४

राक्षस ऐसे थे कि वे यम को यों ही निगल ले सकते थे। वे आग से बचने के लिए अन्तरिक्ष में उठकर स्वर्णलोक स्वर्ग में जाने लगे। तब धुएँ के अग्रभाग ने उन्हें घेर लिया। तब दम घुटकर धुएँ से आवृत होकर मृतक के समान बेसुध हो गये और अग्नि में गिरकर मर गये। १२०४

कोशि हत्तिनि लुऱ्ऱ कॉळुङ्गनल्, तूशि नुत्तरि हत्तॉडुञ् जुऱ्ऱुऱा
वाश मैक्कुळल् पऱ्ऱ मयङ्गिनार्, पाशि ळैप्पर वैप्पड रल्हुलार् 1205

पचुमै इळै–चमकदार स्वर्णाभरणधारिणी; परवै पटर्–समुद्र-सम विशाल; अल्कुलार्–भगों से युक्त राक्षस-स्त्रियों के; कोचिकत्तितिल्–रेशमी वस्त्रों में; उऱ्ऱ–लगी; कॉळुम् कनल्–घनी आग; उत्तरिक तूचिन् ओटुम्–उत्तरीय (वस्त्र) के साथ भी; चुऱ्ऱु उऱा–घेरकर लगी; वाचम् मै कुळल्–सुगन्धित काले केश में भी; पऱ्ऱ–लगी; मयङ्कितार्–तो चकित हो गयीं। १२०५

उज्ज्वल मनोरम आभरणधारिणी, समुद्र-विशाल भगों वाली राक्षस-स्त्रियों के कौशेय अधोवस्त्रों में पहले आग लगी। फिर उत्तरीय वस्त्रों में लगी। बाद सुगन्धपूर्ण काले केश भी आग के वश हो गये। बेचारियाँ क्या करतीं? भ्रमित और चकित हो गयीं। १२०५

निलवि ळक्किय तुहिलिन नॅरुप्पुण निरुदर्
इलवि नुञ्जिल मुत्तुळ वॅनुनहै यिळैयार्
पुलवि यित्गरै कण्डव रमुदुहप् पुणरुम्
कलवि यित्गरै कण्डिलर् मण्डिनर् कडन्मेल् 1206

पुलवियित्–संसर्ग की; करै कण्टवर्–विद्या के पारंगत (पूरा कर चुके थे); निरुतर्–वे राक्षस; इलवितुम्–लाल सेमर में; चिल मुत्तु उळ–कुछ मोती भी हैं;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अॅत्तुम्–ऐसा माना जाय, इस प्रकार; नकै इळैयार्–दाँतों से शोभायमान तरुणियाँ; निल विळक्किय तुकिलित्तै–चाँदनी-से महीन वस्त्रों को; नॅरुप्पु उण–आग के जला देने से; अमुतु उक–अत्यन्त सुख का अमृत जिसमें छलक आता है; पुणरुम्–वैसा संगमित होनेवाले; कलवियिन् करै–संसर्ग की चरम सीमा को; कण्टिलर्–न पाकर; कटल् मेल् मण्टिऩर्–समुद्र में जाकर गिर गये। १२०६

संसर्ग में लगे रहे राक्षस-दम्पती। लाल सेमर में कुछ मोती हों, ऐसे दाँतों वाली स्त्रियाँ और उनके पुरुष प्रणय-विद्या-पारंगत थे। उनके चाँदनी-सम वस्त्र आग में जल गये। इसलिए सुख अमृत के समान जिसमें निःसृत होता है, उस संसर्ग-कार्य के अन्त में आ नहीं पाये थे। उसी स्थिति में वे उठ भागे और समुद्र में जाकर मिलकर गिरे। १२०६

पञ्ज रत्तॊडु पशुनिऱक् किळिवॅन्दु पदैप्प
अञ्जऩक् कण्णि ऩरुविनीर् मुलैमुऩ्ऱि ललैप्पक्
कुञ्ज रत्तऩ कॊळुनरैत् तळुवुरुङ् गॊदिप्पाल्
मञ्जि डैप्पुहु मिऩ्ऩॆऩप् पुहैयिडै मऱैन्दार् 1207

पचुमै निऱ किळि–हरे रंग के शुक; पञ्चरत्तु ऑटु–पिंजरों के साथ; वॅन्तु–झुलसकर; पतैप्प–तड़पते हैं, तब; अञ्चऩ कण्णिऩ्–अंजनयुक्त नेत्रों से; अरुवि नीर्–नदी के समान बहनेवाला अश्रुजल; मुलै मुऩ्ऱिल्–कुचाग्र पर; अलैप्प–गिरकर दुःख देते हैं और; कुञ्चरत्तु अऩ–कुंजर के समान; कॊळुनरै–पतियों को; तळुवु उरुम्–आलिंगन करने की (स्वर्ग पहुँचकर); कॊतिप्पाल्–तपिश से; मञ्चु इटै–मेघमध्य; पुकु मिऩ् ऍऩ–घुसती बिजली के समान; पुकै इटै–धुएँ के मध्य; मऱैन्तार्–अदृश्य हो (मर) गये। १२०७

राक्षसियों ने देखा कि उनके पले हरे रंग के शुक उनके पिंजरों के साथ जलते और तड़पते हैं। उनकी अंजनयुक्त आँखों से अश्रुजल सरिता के समान बहे और कुचाग्र पर गिरे। वे दुःखी हुईं और अपने मृत पतियों का, स्वर्ग में जाकर आलिंगन करने की अपार तापक इच्छा से मेघमध्य घुसनेवाली बिजलियों के समान धुएँ के अन्दर घुसीं और मरकर अदृश्य हो गयीं। १२०७

वरैयि ऩैप्पुरै माडङ्ग ळॅरिपुह महळिर्
पुरैयिल् पॊऱ्कलऩ् विल्लिड विशुम्बिडैप् पोवार्
करैयि ऩुट्पुहैप् पडलैयिर् करिन्दऩर् कलङ्गित्
तिरैयि ऩुट्पॊलि शित्तिरप् पावैयिऩ् शॆयलार् 1208

वरैयित्तै–पर्वतों से; पुरै–तुल्य; माटङ्कळ्–प्रासादों में; ऍरि पुक–आग लगी तो; मकळिर्–स्त्रियाँ; पुरै इल्–निर्दोष; पॊऩ् कलऩ्–स्वर्णाभरण; विल् इट–आभा निकालते; विचुम्पु इटै पोवार्–अन्तरिक्ष में जातीं; करै इल्–अपार; नुण् पुकै–सूक्ष्म धुएँ के; पटलैयिल्–पटल में; कलङ्कि–रंग बदलकर; तिरैयिऩ् उळ्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पॊलि–पर्दे के पीछे विद्यमान; चित्तिर पावैयिन्–चित्रप्रतिमा-जैसे; चॆयलार्–व्यवहार करनेवाली बनकर; करिन्तनर्–प्रभा खोकर झुलस गयीं। १२०८

पर्वत-जैसे ऊँचे और बड़े प्रासादों में आग लगी तो वहाँ की स्त्रियाँ अपने दोषहीन स्वर्णाभरणों की कांति बिखेरते हुए अन्तरिक्ष में जाने लगती हैं। अपार धुएँ का पटल महीन भी है। उसके पीछे वे मन्दप्रभ दिखती हैं, जैसे पर्दे के पीछे से दिखनेवाली चित्र-प्रतिमाएँ। वे आग में झुलसती हैं और मर जाती हैं। वह कार्य भी, वे ही प्रतिमाएँ वैसा हो रही हों, ऐसा दिखता है। १२०८

अहरु वुन्नरुञ् जान्दमु मुदलिय वनेहम्
बुहरि नन्मरत् तुरुवॆऱि युलहॆलाम् बोर्प्पप्
पहरु मूळियिऱ् कालवॆङ् गडुङ्गनल् परुहुम्
महर वेलैयिन् वॆन्दन नन्दन वनङ्गळ् 1209

पकरुम्–(ग्रन्थों में) उक्त; ऊळियिल्–युगान्त में; काल वॆम् कटुम् कनल्–प्रचण्ड और उग्र कालाग्नि द्वारा; परुकुम्–सोखे हुए; मकर वेलैयिन्–मकरालयों के समान; नन्तन वनङ्कळ्–नन्दन वन; अकरु उम्–अगरु; नरुम् चान्तमुम्–और सुगन्धित चन्दनतरु; मुतलिय–आदि; अनेकम्–अनेक; पुकर् इल्–दोषहीन; नल् मरत्तु–श्रेष्ठ तरुओं का; उरु वॆऱि–स्वाभाविक सुवास; उलकु ॲलाम्–सारे लोक में; पोर्प्प–व्याप जाय, ऐसा; वॆन्तत–जल गये। १२०९

ग्रन्थों में युगान्तकालीन भयानक कालाग्नि के मकरालयों को सोख लेने की बात कही गयी है। उन मकरालयों के समान नन्दन वन जले। अगरु, सुबासित चन्दन-तरु आदि जले। उनसे निकली सुगन्ध सारी दुनिया पर छा गयी। इस भाँति वे सब जल गये। १२०९

मिनल्प रॆन्दॆळु कॊळुञ्जुड रिलङ्गैयूर् विळुङ्गि
निनैव रुम्बॆरुन् दिशैयुऱ विरिहिन्ऱ निलैयाल्
शिनैप रन्दॆरि शेर्न्दिला निन्ऱवुञ् जिलवॆम्
कनल्प रन्दवुन् दॆरिन्दिल कऱ्पहक् कानम् 1210

मि(न्) नल् परन्तु–बिजली-सा प्रकाश फैलाकर; ॲळु–उठनेवाली; कॊळुम् चुटर्–घनी आग; इलङ्कै ऊर् विळुङ्कि–लंका नगरी को निगल (जला) कर; निनैवु अरुम्–अचिंत्य; पॆरुम् तिचै–लम्बी दिशाओं में; उऱ–फैली; विरिकिन्ऱ निलैयाल्–विस्तार के कारण; कऱ्पक कानम्–कल्पकानन; चिल–कुछ; चिनै परन्तु–डालियों में फैली; ॲरि–आग; चेर्न्तु इला निन्ऱवुम्–न जला पायी, ऐसे; वॆम् कनल् परन्तवुम्–भयंकर आग से जल गये ऐसे; तॆरिन्तु इल–इनमें भेद नहीं जाना जा सका। १२१०

विपुल आग की लपटें बिजली के समान उठीं। उन्होंने सारी लंका को भस्म कर डाला। फिर वे लम्बी दिशाओं में फैलीं। उनका विस्तार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐसा था कि कल्पकाननों में जली डालियों वाले तरुओं और विना जले रहनेवाली डालियों के तरुओं में भेद ही नहीं मालूम हो रहा था। (कल्पतरु स्वयं प्रकाशमान थे। इसलिए यह भ्रम हुआ।) । १२१०

मूऴुम् वॆम्बुहै मुऱ्ऱुऱच् चुऱ्ऱिय मुऴुनीर्
माऴुम् वण्णमा मलैनॆडुन् दलैदोऱुम् वऴङ्गिप्
पूळै वीयॆऩप् पोवऩ पुणरियिऱ् पुऩलिन्
मीळ यावैयुन् दॆरिन्दिल मुहिऱ्कण मिशैये 1211

मुकिल् कणम्–मेघसमूह; मुऴु नीर्–पूरा जल; माऴुम् वण्णम्–रिक्त करते हुए; मा मलै–बड़े-बड़े पर्वतों के; नॆटुम् तलै तोऱुम्–उच्च शिखरों पर; वऴङ्कि–बरसाकर; पुणरियिल्–समुद्र के; पुऩलिन् मीळ–जल में गये; पूळै वी ऍऩ–'पूळै' नामक फूल के समान श्वेत बने; पोवऩ–जो गये; मूऴुम् वॆम् पुकै–लंका में व्याप्त भयंकर धुआँ; मुऱ्ऱु उऱ–सर्वत्र फैला रहा, इसलिए; यावैयुम् तॆरिन्तिल–(मार्ग या मार्ग में स्थित पदार्थ) कुछ भी न जान सके; मिचैये–आकाश में ही; चुऱ्ऱिय–घूमते-भटकते रहे। १२११

मेघसमूह अपना सारा जल पर्वतों के उच्च शिखरों पर बरसाकर रिक्त हो गये। वे समुद्र से फिर से जल ग्रहण करने के वास्ते 'पूळै' नामक फूल के-से श्वेत रंग में गये। पर सर्वत्र धुआँ घेरा रहा। इसलिए मेघसमूहों को विदित नहीं हुआ कि मार्ग कहाँ है और मार्ग में क्या-क्या पड़े हैं। इसलिए वे ऊपर ही ऊपर घूमते-भटकते रहे। १२११

मिक्क वॆम्बुहै विऴुङ्गलिऩ् वॆळ्ळियङ् गिरियुम्
ऒक्क वॆऱ्पिऩो डऩ्ऩमुङ् गाक्कैयि ऩुरुव
पक्क वेलैयिऩ् पडियदु पाऱ्कडऩ् मुडिविल्
तिक्क यङ्गळुङ् कयङ्गळुम् वेऱ्ऱुमै तॆरिया 1212

मिक्क–अत्यधिक; वॆम् पुकै–भयंकर धुएँ के; विऴुङ्कलिऩ्–आवृत कर लेने से; वॆळ्ळि अम् किरियुम्–रजतगिरि जो रही, वह श्वेत कैलास गिरि भी; वॆऱ्पिऩोटु ऒक्क–अन्य पर्वतों के समान (काली) बन गयी; अऩ्ऩमुम्–हंस पक्षी भी; काक्कैयिऩ् उरुव–कौओं के रंग के हुए; पाल् कटल्–(श्वेत) क्षीरसागर; पक्क वेलैयिऩ्–पास रहे (अन्य) समुद्र के; पटियतु–स्वभाव (रंग) का हो गया; मुटिविल्–दिगन्त के; तिक्कयङ्कळुम्–दिग्गज; कयङ्कळुम्–अन्य गजों से; वेऱ्ऱुमै तॆरिया–भिन्न नहीं दिखे। १२१२

विपुल धुएँ के घेरने के कारण कैलास, जो रजतगिरि के रूप में श्वेत रंग की गिरि थी, अब अन्य गिरियों के समान काली हो गयी। हँस कौए-से बन गये। श्वेत (क्षीर-) सागर पास के अन्य समुद्रों के समान रंग बदल गये। दिगंतों में रहनेवाले दिग्गज भी अब श्वेत नहीं रहे, पर अन्य साधारण गजों से भिन्न नहीं दिखे। १२१२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करिन्दु शिन्दिडक् कडुङ्गन रॊडर्न्दुडल् कदुव
उरिन्द मॆय्यिन रोडिन्र् नीरिडै यॊळिप्पार्
विरिन्द कून्दलुङ् गुञ्जियु मिडैदलिर् रानुम्
ऍरिन्दु वेहिन्र् दॊत्तदव् वॆरितिरैप् परवै 1213

करिन्तु–झुलसकर; चिन्तिट–गिराते हुए; कटुम् कनल्–प्रचण्ड आग; तॊटर्न्तु–लगातार; उटल् कतुव–शरीरों पर लपेटे रही; उरिन्त मॆय्यिन्र्–(इनसे) चमड़ा-उधेड़े शरीर वाले हो; ओटिन्र्–भागे; नीर् इटै–जल में; ऒळिप्पार्–छिपने लगे; विरिन्त कून्तलुम्–खुली वेणियाँ (स्त्रियों की); कुञ्चियुम्–और केश (पुरुषों के) दोनों; मिटैतलिल्–अत्यधिक मिश्रित रहीं, इसलिए; अ–वह; ऍरि तिरै–लहरायमान समुद्र; तानुम् ऍरिन्तु–खुद जलकर; वेकिन्रतु–झुलसता; ऒत्ततु–जैसा लगा। १२१३

उग्र आग ने राक्षसों के शरीरों को निरन्तर जलाया और वे चमड़े झुलसकर राख बनकर गिर गये। वे भागकर समुद्र के जल के अन्दर छिपे। उन पुरुषों और स्त्रियों के केशों और वेणियों से समुद्र भर गया। तब वह सागर भी खुद जलता-तपता-सा दिखा। १२१३

मरुङ्गिन् मेलॊरु महवुहॊण् डॊरुतनि महवै
अरुङ्गै यार्पर्रि मर्र्रॊरु महवुनिन् रररर्र
नॆरुङ्गि नीणॆडु मॆरिहुळल् शुरुक्कॊळ नीङ्गिक्
करुङ्ग डर्र्लै वीळ्न्दन ररक्कियर् कदरि 1214

मरुङ्किन् मेल्–गोद में; ऒरु मकवु–एक बच्चा; कॊण्टु–लेकर; ऒरु तति मकवै–और एक बालक को; अरुम् कैयाल् पर्रि–अपने अन्य हाथ से पकड़कर; मर्रु ऒरु मकवु–तीसरा एक बच्चा; नित्रु अरर्र्–खड़ा होकर रोता आता; नॆरुङ्कि–घनी; नीळ् नॆटुम्–अतिदीर्घ; ऍरि कुळल्–जलती वेणी; चुरु कॊळ–झुलसती; अरक्कियर्–(इस स्थिति में) राक्षसियाँ; नीङ्कि–अपना-अपना स्थान छोड़कर; कतरि–चिल्लाती हुई; करुम् कटल् तलै–काले समुद्र में; वीळ्न्ततर्–(जाकर) गिरीं। १२१४

कुछ स्त्रियाँ गोद में एक बच्चा लिये, हाथ से एक बालक को पकड़े निकलीं। तीसरा बालक खड़ा रो रहा था। उनकी घनी, लम्बी और अग्नि के-से रंग वाली वेणी जलकर झुलसने लगी। वे अपना घर छोड़कर विलाप करती हुई भागीं और काले सागर में कूद पड़ीं। १२१४

विल्लुम् वेलुम्वॆङ् गुन्दमु मुदलिय विरहाय्
ऍल्लु डैच्चुड रॆन्नप्पुह लॆः(ह्)हॆला मुरुहित्
तॊल्लै नन्निलै तॊडर्न्दपे रुणर्विन्र् तॊळिल्बोल्
शिल्लि युण्डैयिर् रिरण्डन पडैक्कलत् तिरळ्हळ् 1215

विल्लुम्–धनु और; वेलुम्–भाले और; कुन्तमुम्–कुन्त; विरकाय्–ईंधन

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बने; ऍल् उटै–सूर्य की; चुटर् ऍऩ–किरणें हैं, ऐसा; पुकल्–कहने योग्य; ऍ.ऱ्कु ऍलाम्–फ़ौलाद सब; उरुकि–पिघलकर; पटैक्कल तिरळ्कळ्–हथियारों की राशियाँ; तॊल्लै–पूर्व की; नल् निलै–अच्छी स्थिति में; तॊटर्न्त–जो पहुँच गये; पेर् उणर्वित्तर्–बड़े आत्मज्ञानियों के; तॊऴिल् पोल्–साधनाकार्य के समान; चिल्लि उण्टैयिल्–(अपनी मूलस्थिति) छोटे पिंड के रूप में; तिरण्टत–पिंडीभूत हो रहे। १२१५

धनु, भाले और कुन्त आदि सभी हथियार ईंधन बन गये। सूर्य की किरणों के समान चमकनेवाले उन हथियारों के फ़ौलादी भाग पिघल गये। वे हथियार उन तत्त्वज्ञों के समान, जो अपनी पूर्वस्थिति में पहुँच जाते हैं, अपनी पूर्वस्थिति में अर्थात् फ़ौलाद के छोटे-छोटे पिण्डों के रूप में परिवर्तित हो गये। १२१५

शॆय्दु डर्क्कऩ वल्लियुम् बुरशैयुञ् जिन्दि
नॊय्दि ऩिट्टवऩ् ऱऱिपऱित् तुडलॆरि नुऴैय
मॊय्द डच्चॆवि निऱुत्तिवान् मुदुहिऩिऩ् मुऱुक्किक्
कैयॆ डुत्तऴैत् तोडिऩ वोडैवॆङ् गळिऱु 1216

ओटै वॆम् कळिऱु–मुखपट्टालंकृत भयानक गज; उटल्–शरीर में; ऍरि नुऴैय–आग के लगने से; तुटर् चॆय्–शृंखलाबद्ध; कऩ वल्लियुम्–भारी बन्धन को; पुरचैयुम्–और कलापक को; चिऩ्ति–गिराकर; इट्ट–जिनसे बाँधे गये थे; वल् तऱि–उन सबल खूँटों को; नॊय्तिऩ्–आसानी से; पऱित्तु–उखाड़कर; मॊय् तट चॆवि–सशक्त अपने बड़े कानों को; निऱुत्ति–खड़ा करके; वाल्–दुम को; मुतुकिऩिल् मुऱुक्कि–पीठ के ऊपर ऐंठ-मरोड़कर रखते हुए; कै ऍटुत्तु–सूँड़ उठाकर; अऴैत्तु–दुहाई मचाते हुए; ओटिऩ–भागे। १२१६

मुखपट्टालंकृत गजों के शरीरों पर आग लगी और घुसकर जलाने लगी। तब साँकल का बन्धन जलकर गिर गया। कलापक भी गिर गया। गजों ने बन्धन के कठोर सबल खूँटों को उखाड़ फेंक दिया। फिर अपने सबल और बड़े कानों को ताने और अपनी पूँछ को घुमाकर पीठ पर डाले सूँड़ें उठाकर चिंघाड़ते हुए भागे। १२१६

वॆरुळुम् वॆम्बुहैप् पडलैयिऩ् मेऱ्चॆल वॆरुवि
इरुळुम् वॆङ्गडल् विऴुन्दऩ वॆऴुन्दिल पऱवै
मरुळिऩ् मीन्गणम् विऴुङ्गिड वुलन्दऩ मऩत्तोर्
अरुळिल् वञ्जरैत् तञ्जमॆऩ् ऱडैन्दव रऩैय 1217

मऩत्तु–मन में; ओर् अरुळ् इल्–कुछ भी कृपा न रखनेवाले; वञ्चरै–वंचकों को; तञ्चम् ऍऩ्ऱु–शरण कहकर; अटैन्तवर् अऩैय–उनके पास जो आये उनके समान; पऱवै–पक्षी; वॆरुळुम्–भयकारी; वॆम् पुकै पटलैयिऩ् मेल्–गरम धुएँ के पटल के ऊपर; चॆल वॆरुवि–जाने से डरकर; इरुळुम्–काले; वॆम् कटल्–संकटदायी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समुद्र में; विळुन्तत-गिरे; ऍळुन्तिल-ऊपर आ नहीं सके; मरुळिन् मीन्-मदमत्त मछलियों के; कणम्-समूहों के; विळुङ्किट-निगल लेने से; उलन्तत-मर गये। १२१७

निर्दयमन वञ्चकों की शरण में आये हुओं के समान पक्षीगण डरावने धूमपटल के ऊपर जाने से डरकर काले समुद्र में जाकर गिरे। तो क्या हुआ? उनको ऊपर उठने नहीं देते हुए मदमत्त मछलियों ने निगल लिया। १२१७

नीरै वर्रिडप् परुहिमा नॅडुनिलन् दडवित्
तारु वैच्चुट्टु मलैहळैत् तळ्ळ्ळ्चॅय्दु तनिमा
मेरुवैप् पर्रि यॅरिहिन्र् कालवॅङ् गनल्बोल्
ऊरै मुर्रुवित् तिरावणन् मनैपुक्क तुयर्दी 1218

उयर् ती-ऊँचे उठनेवाली वह आग; वर्रिट-(जलाशयों को) सोखते हुए; नीरै परुकि-जल को पीकर; मा नॅटु-अधिक विशाल; निलम्-भूतल में; तटवि-फैलकर; तारुवै चुट्टु-लकड़ियों को जलाकर; मलैकळै-पर्वतों को; तळल् चॅय्तु-तप्त बनाकर; तति मा मेरुवै-अनुपम और बड़े मेरुपर्वत में; पर्रि ऍरिकिन्र्-लगी जलनेवाली; काल वॅम् कनल् पोल्-भयंकर कालाग्नि के समान; ऊरै मुर्रुवित्तु-नगर को पूरी तरह से जलाकर; इरावणन् मनै-रावण के महल में; पुक्कतु-घुसी। १२१८

उठती हुई आग ने जलाशयों को सोखकर जल से खाली कर दिया। भूतल को तपा दिया। लकड़ियों को जलाया और पर्वतों को तप्त कर दिया। अनुपम मेरु को जलानेवाली कालाग्नि के समान वह सारी लंका का नाश करने के बाद रावण के महल में जा लगी। १२१८

वान मादरु मर्रुळ महळिरु मरुहिप्
पोन पोनदिक् कनैवरु मरिहिलर् पोनार्
एनै निन्र्रव रॅङ्गणु मिरिन्दन रिलङ्गैक्
कोन वानवर् पदिहॉण्ड नाळॅनक् कुलैन्दार् 1219

वान मातरुम्-अप्सराएँ; मर्रु उळ-और रहनेवाली अन्य; मकळिरुम्-स्त्रियाँ; अनैवरुम्-सभी; मरुकि-दहलकर; पोन पोन तिक्कु-गमन की दिशा; अरिकिलर् पोनार्-नहीं जानती गयीं; एनै-अन्य; निन्र्रवर्-जो खड़ी रह गयीं, वे; ऍङ्कणुम् इरिन्तनर्-सर्वत्र भटकीं; इलङ्कै कोन्-लंकाधिपति ने; अ वानवर पति-(जिस दिन) उस देवलोक को; कॉण्ट नाळ् ऍन-ले लिया उस दिन के समान; कुलैन्तार्-हड़बड़ायीं। १२१९

रावण के महल में अप्सराएँ थीं और अन्य स्त्रियाँ भी। वे सब हड़बड़ाकर गमनदिशा से भी अज्ञात होकर तितर-बितर भागीं। जो नहीं भागीं वे इधर-उधर भटकीं और जिस दिन रावण ने देवेन्द्र की नगरी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अमरावती को जीत लिया था, उस दिन की-सी स्थिति में आकर हड़बड़ायीं। १२१९

नावि युन्नरुङ् गलवैयुङ् गऱ्पह नक्क
पूवु मारमु महिलुमॅन् ऱिऩैयऩ पुहैयत्
तेवु तण्मऴै शॅऱिपॅरुङ् गुलमॅऩत् तिशैयिऩ्
पावै मार्नरुङ् गुऴल्हऴुम् बरिमळम् बरन्द 1220

नावियुम्–कस्तूरी और; नरुम् कलवैयुम्–गन्धलेप; कऱ्पकम् नक्क–कल्पतरु-विकसित; पूवुम्–सुमन; आरमुम्–और चन्दन; अकिलुम्–अगरु की लकड़ियाँ; ऍऩ्ऱु इऩैयऩ–आदि ऐसे; पुकैय–धुएँ बने; तण्–शीतल; चॅऱि–घने; मऴै–मेघों के; पॅरुम् कुलम्–बड़े समूहों; ऍऩ–के समान; तिचैयिऩ्–सभी दिशाओं की; तेवु पावैमार्–दैवी स्त्रियों के; नरुम् कुऴल्कऴुम्–सुबासित केश भी; परिमळम् परन्त–नये अच्छे सुबास से बासित हुए। १२२०

रावण के महल में कस्तूरी, गन्धलेप, कल्पतरु के विकसित फूल, चन्दन-काष्ठ और अगरु के काठ आदि थे। सब गुँगुआने लगे। तब शीतल घने मेघों के बड़े समूहों के समान जो दैवी स्त्रियों के केश थे और जो पहले ही सुगन्ध-भरे थे, अब वे और भी नवीन सुबास से सुबासित हो गये। १२२०

शूऴुम् वॅञ्जुडर् तॉडर्न्दिड यावरुन् दॉडरा
आऴि वॅञ्जिऩत् ताण्डॉऴि लिरावणऩ् मऩैयिऩ्
ऊऴि वॅङ्गऩ लुण्डिड वुलहमॅऩ् ऱुयर्न्द
एऴुम् वॅन्दॅऩ वॅरिन्दऩ नॅडुनिलै येऴुम् 1221

चूऴुम् वॅम् चुटर्–चारों ओर घेरे रहनेवाली आग के; तॉटर्न्तिट–लगने से; यावरुम् तॉटरा–किसी के लिए भी अगम; आऴि वॅम् चिऩत्तु–समुद्र-सम (गम्भीर) और त्रासक क्रोध का; आण् तॉऴिल्–वीरकृत्य; इरावणऩ्–रावण के; मऩैयिऩ्–महल के; नॅटु निलै एऴुम्–सातों तल्ले; ऊऴि वॅम् कऩल्–युगान्त की भयंकर आग द्वारा; उण्टिट–जलाये जाने से; उलकम् ऍऩ्ऱु उयर्न्त एऴुम्–ऊपर के सातों लोक; वॅन्ततु ऍऩ–जल गये जैसे; ऍरिन्तऩ–जल गये। १२२१

सर्वत्र घेरे रही आग सब जगह जा लगी। तो दुर्गम समुद्र-सम गम्भीर, क्रोधी और वीरकर्म रावण का महल भी जल गया। वह सात तल्लों का था। इसलिए युगान्त में ऊपर के सातों लोक जैसे जले वैसा उसका जलना रहा। १२२१

पॉन्ऱि रुत्तिय दादलि ऩिरावणऩ् बुरैतीर्
कुन्ऱ मॉत्तुयर् तडनॅडु मानिलैक् कोयिल्
निन्ऱ दुऱ्ऱॅरि परुहिड नॅहिऴ्वुऱ वुरुहित्
तॅन्ऱि शॅक्कुमोर् मेरुवण् डामॅऩत् तॅरिन्द 1222

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इरावणऩ्–रावण का; पुरै तीर्–अकलंक; कुऩ्ऱम् ऒत्तु उयर्–पर्वत-सम उन्नत; तट नॆटु–विशाल; मा निलै–अधिक (सात) तल्लों का; कोयिल्–महल को; पॊऩ् तिरुत्तियतु–स्वर्णनिर्मित था; आतलिऩ्—इसलिए; निऩ्ऱ–जो भी स्थित है, उसको; तुऱ्ऱु ऍरि–लगकर जलानेवाली आग के; परुकिट–अशन करने से; नॆकिऴ्वु उऱ–नरम बनकर; उरुकि–पिघलकर; तॆऩ् तिचैक्कुम्–दक्षिणी दिशा में भी; ओर् मेरु उण्टु–एक मेरु; आम् ऍऩ–है, ऐसा कहने योग्य रीति से; तॆरिन्त–दिखा। १२२२

रावण का महल निर्दोष था; पर्वत के समान था। सात तल्लों का बहुत बड़ा मकान था। वह स्वर्ण का था। उसको आग ने जलाया तो वह पिघलकर दक्षिण दिशा का मेरु बना-सा दिखने लगा। १२२२

अऩैय कालैयि ऩरक्कऩु मरिवैयर् कुऴुवुम्
पुऩैम णिप्पॊलि पुट्पह विमाऩत्तुप् पोऩार्
निऩैयु मात्तिरै यावरु नीङ्गिऩर् निऩैयुम्
विऩैयि लामैयिऩ् वॆन्ददव् विलङ्गऩ्मे लिलङ्गै 1223

अऩैय कालैयिऩ्–उस समय; अरक्कऩुम्—राक्षस (रावण) और; अरिवैयर् कुऴुवुम्–उसकी स्त्रियों का समूह; पुऩै मणि पॊलि–सजे हुए रत्नों के साथ चमकनेवाले; पुट्पक विमाऩत्तु—पुष्पक यान पर; पोऩार्–गये; यावरुम्—(अन्य) सभी; निऩैयुम् मात्तिरै–सोचने मात्र से; नीङ्किऩर्–चले गये; निऩैयुम विऩै–सोचा हुआ काम करने की क्षमता; इलामैयिऩ्–न रहने से; अ विलङ्कऩ् मेल् इलङ्कै–उस त्रिकूटपर्वतस्थ लंका नगर; वेन्ततु–आग में भुन गया। १२२३

तब रावण और उसकी स्त्रियाँ पुष्पक यान पर बैठकर चले गये। अन्य राक्षस भी सोचने मात्र से वहाँ से चले गये। पर बेचारी त्रिकूटपर्वतस्थ लंका सोच नहीं सकी और सोचा हुआ करने का गुण भी उसमें नहीं था (वह जड थी)। अतः वह वहीं रहकर जल गयी। १२२३

आऴित् तेरव ऩरक्करै यऴलॆऴ नोक्कि
एऴुक् केऴॆऩ वडुक्किय वुलहङ्ग ळॆरियुम्
ऊऴिक् कालम्वन् दुऱ्ऱदो पिऱिदुवे ऱुण्डो
पाऴित् तीशुड वॆन्ददॆऩ् ऩहरॆऩप् पहर्न्दाऩ् 1224

आऴि तेर् अवऩ्–पहियेदार रथ के स्वामी उस (रावण) ने; अरक्करै–राक्षसों पर; अऴल् ऍऴ नोक्कि–आग्नेय दृष्टि डालकर; एऴुक्कु एऴु–नीचे के सात के मुक़ाबले में ऊपर सात; ऍऩ अटुक्किय–ऐसे एक के ऊपर एक रचे गये; उलकङ्कळ्–चौदहों लोक; ऍरियुम्–जिसमें जल जायँगे, ऐसा; ऊऴि कालम्–युगान्त का काल; वऩ्तु उऱ्ऱतो–आ गया क्या; पिऱितु– या) अन्य; वेऱु उण्टो–कुछ हो गया; नकर्–नगर; पाऴि ती चुट–बड़ी आग के जलाने से; वॆन्ततु ऍऩ्–जल गया क्यों; ऍऩ–ऐसा; पकर्न्ताऩ्–पूछा। १२२४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पहियों वाले रथ के स्वामी रावण ने तब आग्नेय नेत्रों से राक्षसों को देखकर उनसे प्रश्न किया कि क्या एक के ऊपर एक चुने हुए, नीचे और ऊपर के चौदहों भुवनों को जलानेवाला युगांत आ गया ? या और कुछ हो गया? नगर बड़ी आग में जला क्योंकर ? । १२२४

करङ्गळ् कूप्पिऩर् तङ्गिळै तिरुवॊडुङ् गाणार्
इरङ्गु हिऩ्ऱवल् लरक्करी दियम्बिऩ रिऱैयोय्
तरङ्ग वेलैयि ऩॆडियदऩ् वालिट्ट तऴलाल्
कुरङ्गु शुट्टदी दॆऩ्ऱलु मिरावणऩ् कॊदित्ताऩ् 1225

तम् किळै–अपने परिवारों को; तिरु ओटुम्–सम्पत्ति के साथ; काणार्–जो देख नहीं रहे थे (खो चुके थे); इरङ्कुकिऩ्ऱ–दुःखी; वल् अरक्कर्–बलवान (उन) राक्षसों ने; करङ्कळ् कूप्पिऩर्–हाथ जोड़कर; ईतु इयम्पिऩर्–यह कहा; इऱैयोप्–स्वामी; तरङ्कम् वेलैयिऩ्–तरंगायमान समुद्र से भी; ऩॆटिय–विस्तृत रूप से; तऩ् वाल्–अपनी पूंछ में; इट्ट तऴलाल्–लगायी गयी आग से; कुरङ्कु–वानर का; चुट्टतु ईतु–जलाने का काम है यह; ऎऩ्ऱलुम्–कहते ही; इरावणऩ् कॊतित्ताऩ्–रावण खौल उठा । १२२५

पहले ही राक्षस अपने बन्धु-बान्धवों और परिवारों के साथ अपनी सारी सम्पत्ति खो चुके थे । वे दुःखी थे । उन्होंने हाथ जोड़कर यह उत्तर दिया— प्रभु ! वानर ने अपनी पूंछ पर लगायी गयी, तरंगायमान समुद्र-सम विपुल आग से जलाने का जो काम किया उसी का फल यह है ! यह सुनकर रावण उबल पड़ा । १२२५

इऩ्ऱु पुऩ्ऱॊऴिऱ् कुरङ्गुतऩ् वलियिऩा लिलङ्गै
निऩ्ऱु वॆन्दुमा नीऱॆऴु हिऩ्ऱदु ऩॆरुप्पु
तिऩ्ऱु तेक्किडु हिऩ्ऱदु तेवर्हळ् शिरिप्पार्
ननऱु ननऱुपो रिरावणऩ् वलियॆऩ नक्काऩ् 1226

इऩ्ऱु–आज; पुऩ् तॊऴिल्–क्षुद्रकर्म; कुरङ्कु–वानर; तऩ् वलियिताल्–अपने बल से; इलङ्कै निऩ्ऱु वॆन्तु–लंका खूब जलती है और; मा नीऱु ऎऴुकिऩ्ऱतु–बहुत राख निकलती है; ऩॆरुप्पु तिऩ्ऱु–आग अशन कर; तेक्कु इटुकिऩ्ऱतु–डकार लेती है; तेवर्कळ्–देवलोग; चिरिप्पार्–हँसेंगे; इरावणऩ् पोर् वलि–रावण का युद्धबल; ननऱु ननऱु–भला है, अच्छा है; ऎऩ–कहकर; नक्काऩ्–(क्रोध की हँसी) हँसा । १२२६

रावण ने कहा कि हूँ ! आज क्षुद्र-कर्म एक वानर के बल से लंका स्थिर रूप से जलती है और भस्म उठता है ! आग अशन करके डकार ले रही है ! देव लोग हँसेंगे ! रावण का युद्धपराक्रम बड़ा अच्छा रहा ! बड़ा भला बना ! वह यह कहकर ठठाकर (क्रुद्ध हँसी) हँसा । १२२६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उण्डनॅ रुप्पैक्, कण्डऩर् पऱ्ऱिक्
कॊण्डणै हॆऩ्ऱान्, अण्डरै वॆऩ्ऱान् 1227

अण्टरै वॆऩ्ऱान्–देवों के विजेता ने; उण्ट नॅरुप्पै–(लंका का) अशन करनेवाले अग्निदेव को; कण्टऩर्–देखनेवाले; पऱ्ऱिक् कॊण्टु–पकड़कर; अणैक–आओ; ऍऩ्ऱान्–आज्ञा दी। १२२७

देवों के विजेता रावण ने आज्ञा निकाली कि लंका के दाहक अग्निदेव को जो भी देखें वे उसे पकड़ ले आवें। १२२७

उऱ्ऱह लामुऩ्, शॆऱ्ऱ कुरङ्गैप्
पऱ्ऱुमि नॆऩ्ऱान्, मुऱ्ऱ मुऩिन्दान् 1228

मुऱ्ऱ मुऩिन्तान्–अत्यधिक क्रुद्ध रावण ने; चॆऱ्ऱ कुरङ्कै–हानिकारक बन्दर को; उऱ्ऱ अकला मुऩ्–वहाँ छोड़ जाने से पहले; पऱ्ऱुमिऩ्–पकड़ लो; ऍऩ्ऱान्–कहा। १२२८

अतिक्रुद्ध रावण ने आगे कहा कि हानिकारक मर्कट को उसके वहाँ जाकर बचने के पूर्व ही पकड़ लाओ। १२२८

शारय निऩ्ऱार्, वीरर् विरैन्दार्
नेरुदु मॆऩ्ऱार्, तेरिऩर् शॆऩ्ऱार् 1229

चार् अयल् निऩ्ऱार्–लगे जो पास रहे; वीरर्–वे वीर; नेरुतुम् ऍऩ्ऱार्–सम्मत हैं, कहा; विरैन्तार्–शीघ्र; तेरिऩर् चॆऩ्ऱार्–रथ पर सवार हो गये। १२२९

पास लगे जो खड़े रहे उन वीरों ने कहा कि जैसी आज्ञा ! वे शीघ्र रथों पर सवार होकर चले। १२२९

ऍल्लै यिहन्दार्, विल्लर् वॆहुण्डार्
पल्लदि हारत्, तॊल्लर् तॊडर्न्दार् 1230

ऍल्लै इकन्तार्–असीम; विल्लर्–धन्वी वीर; वॆकुण्टार्–क्रुद्ध हुए; पल् अतिकार–अनेक अधिकार के पदों पर; तॊल्लर्–बहुत काल से रहनेवाले; तॊटर्न्तार्–पीछे गये। १२३०

अपार धन्वी वीर रोष के साथ उठे। अनेक अधिक अनुभवी पदाधिकारी भी उनके पीछे गये। १२३०

नीर्हॆऴु वेलै निमिर्न्दार्, तार्हॆऴु तानै शमैन्दार्
पोर्हॆऴु मालै पुनैन्दार्, ओरॆऴु वीर रुयर्न्दार् 1231

उयर्न्तार्–उनमें बड़े; ओर् ऍऴु वीरर्–सात वीर; पोर्कॆऴु मालै पुनैन्तार्–युद्धचिह्न श्रेष्ठ माला पहनकर; नीर्कॆऴु–जल-भरे; वेलै–सागर के समान; निमिर्न्तार्–उमग उठे; तार् कॆऴु तानै–अग्रसेना में; चमैन्तार्–मिलकर गये। १२३१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उनमें सबसे उच्च हैसियत के सात वीर "तुम्बै" फूलों की माला (यह युद्ध पर जाने का चिह्न है) पहने, जल-भरे सागर के समान उठे और अग्रसेना में जा, मिले। १२३१

विण्णिऩै वेलै विळिम्बार्, मण्णिऩै योडि वळैन्दार्
अण्णलै नाडि यणैन्दार्, कण्णिनिऩ वेऱयल् कण्डार् 1232

विण्णिऩै–आकाश को और; वेलै विळिम्पु आर्–समुद्र के तीर से लगी रही; मण्णिऩै–भूमि को; ओटि वळैन्तार्–दौड़कर घेर लिया (राक्षसों ने); अण्णलै नाटि–गौरववान (हनुमान) को खोजकर; अणैन्तार्–पास गये; अयल्–पास ही; वेऱु–अकेले रहते (हनुमान को); कण्णिनिल्–अपनी आँखों से; कण्टार्–देखा। १२३२

उन्होंने जाकर आकाश और समुद्र के तीर से लगी भूमि को घेर लिया। उन्होंने महिमावान हनुमान का अन्वेषण किया और उसे पास ही अकेले बैठे हुए पाया। १२३२

पऱ्ऱुदिर् पऱ्ऱुदि ऱॆऩ्बार्, ऍऱ्ऱुदि ऱॆऱ्ऱुदि ऱॆऩ्बार्
मुऱ्ऱिनर् मुऱ्ऱु मुनिन्दार्, कऱ्ऱुणर् मारुदि कण्डाऩ् 1233

पऱ्ऱुतिर्–पकड़ो; पऱ्ऱुतिर्–पकड़ो; ऍऩ्पार्–कहनेवाले; ऍऱ्ऱुतिर् ऍऱ्ऱुतिर्–धक्का दो, धकेलो; ऍऩ्पार्–कहनेवाले; मुऱ्ऱिनर्–घेर गये; मुऱ्ऱुम् मुनिन्तार्–अतिक्रुद्ध हो आक्रमण किया; कऱ्ऱु उणर्–ग्रंथाध्ययन करके ज्ञानी बने; मारुति–मारुति ने; कण्टाऩ्–उनको देखा। १२३३

राक्षसों ने पकड़ो, पकड़ो, प्रहार करो, धकेलो के नारे लगाते हुए बहुत ही क्रुद्ध होकर उसे घेर लिया। शास्त्रज्ञ हनुमान ने उन्हें देख लिया। १२३३

एल्हॊडु वञ्ज ऱॆदिर्न्दार्, काल्हॊडु कैहॊडु कार्पोल्
वेल्हॊडु कोलिनर् वॆन्दी, वाल्हॊडु ताऩुम् वळैत्ताऩ् 1234

वञ्चर्–वंचक राक्षस; कार् पोल्–मेघों के समान; एल् कॊटु–सामने आकर; ऍतिर्न्तार्–प्रकट हुए; काल् कॊटु–पैरों से; कै कॊटु–हाथों से; वेल् कॊटु–भालाओं से; कोलिनर्–रोकते हुए घेर गये; वॆम् ती–भयंकर आग लगी रही; वाल् कॊटु–अपनी पूंछ की सहायता से; ताऩुम्–उस (हनुमान) ने भी; वळैत्ताऩ्–आवृत कर लिया। १२३४

वंचक राक्षस काले मेघों के समान सामने आकर प्रकट हुए। फिर पैरों, हाथों और भालाओं के सहारे उसे घेर गये। हनुमान ने भी अपनी भयंकर आग लिये रहनेवाली पूँछ को बढ़ाकर उनको लपेट लिया। १२३४

पादव मॊऩ्ऱु पऱित्ताऩ्, मादिरम् वालिऩ् वळैत्ताऩ्
मोदिऩऩ् मोद मुनिन्दार्, एदियु नाळु मिऴन्दार् 1235

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मातिरम्–सभी दिशाओं से; वालिन्–अपनी पूँछ से; वळैत्तान्–(राक्षसों को) घेर लिया; पातवम् ऑन्ऱु–एक पादप; पऱित्तान्–उखाड़ लेकर; मोतिनन्–उससे पीटा; मोत–पीटने से; मुनिन्तार्–क्रुद्ध शत्रुओं ने; एतियुम्–हथियारों और; नाळुम्–अपनी आयु के दिन; इऴन्तार्–खो दिया। १२३५

उसने सभी दिशाओं से उन्हें आवृत करके एक पादप उखाड़ लिया और उससे उनको पीटा। पिटाई से क्रुद्ध उन शत्रुओं ने अपने हथियारों से ही नहीं, बल्कि अपनी आयु से भी हाथ धो लिया। १२३५

नूऱिड मारुदि नॉन्दार्, ऊऱिड वूऩॉडु पुण्णीर्
शेऱिड वूरिडु शॅन्दी, आऱिड वोडिऩ दाऱाय् 1236

मारुति–मारुति के; नूऱिट–पीटने से; नॉन्तार्–दुःखी हुए राक्षस; ऊऱ इट–व्रणों के बनने से; ऊन् ओटु पुण्णीर्–मांस के साथ बहनेवाले व्रणनिर्गत रक्त; चेऱ इट–कर्दम बना दिया उससे; ऊर् इटु–नगर में लगी; चॅम् ती–लाल आग; आऱिट–बुझ जाय ऐसा; आऱाय् ओटिऩतु–नदी के रूप में बहा। १२३६

मारुति का आघात पाकर राक्षस पीड़ित व दुःखी हुए। उनके शरीरों पर व्रण बने और मांस बहाते हुए व्रण-निर्गत रक्त नदियाँ बनकर लंका पर लगी आग को बुझाते हुए बहा। १२३६

तोऱ्ऱिऩर् तुऱ्जिऩ रल्लार्, एऱ्ऱिहल् वीर रॅदिर्न्दार्
काऱ्ऱिन् महन्गलै कऱ्ऱान्, कूऱ्ऱिनु मुम्मडि कॉन्ऱान् 1237

तुऱ्चिऩर् अल्लार्—विना मृतक हुए; तोऱ्ऱिऩर्–जो दिखायी दिये; एऱु–पुरुष सिंह के समान; इकल् वीरर्–योद्धा वीर; ऍतिर्न्तार्—हनुमान से टकराये; कलै कऱ्ऱान्–कलानिपुण (हनुमान); काऱ्ऱिन् मकन्–पवनसुत ने; कूऱ्ऱिनुम्–यम से; मु मटि–तिगुने (ज़ोर से); कॉन्ऱान्—मार डाला। १२३७

जो नहीं मरे वे वीर उसके सामने आये। पुरुष सिंह के समान उन योद्धा वीरों ने हनुमान से युद्ध छेड़ा। सर्वविद्यापारंगत हनुमान ने यम से तिगुने ज़ोर के साथ उनका हनन कर दिया। १२३७

मऱ्जुऱळ् मेऩियर् वऩ्ऱोळ्, मॉय्म्बिऩर् वीरर् मुडिन्दार्
ऐम्बदि ऩायिर रल्लार्, पॅम्बुऩल् वेलै पडिन्दार् 1238

मऱ्चु उऱळ्–मेघ-सम; मेऩियर्–काले रूप वाले; वऩ् तोळ्–सबल कन्धों के; मॉय्म्पिऩर् वीरर्–साहसी वीर; ऐम्पतिऩ् आयिरर्–पचास सहस्र; मुटिन्तार्—मरे; अल्लार्–अन्य; पॅम् पुऩल् वेलै–हरे जल के समुद्र में; पटिन्तार्–गिरे (डूबे)। १२३८

पचास सहस्र मेघवर्ण वीर्यस्कंध राक्षस उसके हाथों मरे। जो बचे, वे हरे जल के समुद्र में जा गिरे। १२३८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तोय्च्चत्तत् वालदि तोयाक्, काय्च्चित वेलै कलन्दार्
पोय्च्चिलर् पॊन्ऱिन्तर् पोन्तार्, एच्चॆन मैन्द रॆदिर्न्दार् 1239

वालति–पूँछ को; तोय्च्चत्तत्–डुबोया; तोया–डुबोने पर; काय्च्चित–उबल पड़े; वेलै–समुद्र में; पोय् कलन्तार्–जो जाकर गिरे थे; चिलर्–वे कुछ (राक्षस); पॊन्ऱिन्तर् पोन्तार्–मर गये; मैन्तर्–कुछ (बाहर निकले) वीर; एच्चु ऍत–निन्दा होगी, समझकर; ऍतिर्न्तार्–चढ़ आये। १२३९

हनुमान ने पूँछ को समुद्र में डुबोया। डुबोते ही समुद्र उबला। तब जो गिरे थे उनमें कुछ मर गये। जो बाहर आये उन साहसी वीरों ने निंदा से डरकर हनुमान पर आक्रमण किया। १२३९

शुऱ्ऱिन्तर् तेरिन्तर् तोला, विऱ्ऱॊऴिल् वीरम् विळैत्तार्
ऍऱ्ऱिन्तत् मारुदि यॆऱ्ऱ, उऱ्ऱॆऴु वोरु मुलन्दार् 1240

चुऱ्ऱिन्तर्–घूमते हुए; तेरिन्तर्–रथी वीरों ने; तोला–अपराजित; विल् तॊऴिल्–धनुकर्म में; वीरम् विळैत्तार्–बड़ा साहस दिखाया; मारुति ऍऱ्ऱिन्तत्–मारुति ने आघात किया; ऍऱ्ऱ–मारने पर; उऱ्ऱु ऍऴुवोरुम्–फिर से जो आये वे भी; उलन्तार्–मिटे। १२४०

घूमनेवाले रथों पर सवार होकर कुछ वीरों ने अजेय धनु-कर्म दिखाया। मारुति ने उन्हें धकेल दिया। धक्का खाकर वे भी मरे जो उठकर लड़ने आये थे। १२४०

विट्टुयर् विञ्जैयर् वॆन्दी, वट्ट मुलैत्तिरु वैहुम्
पुट्टिरळ् शोलै पुऱत्तुम्, शुट्टिल दॆन्बदु शॊन्नार् 1241

विट्टु–उस स्थान को छोड़कर; उयर्–जो ऊपर गये; विञ्चैयर्–उन्होंने; वॆम् ती–नाशक आग ने; वट्ट मुलै तिरु–वर्तुलस्तना देवी श्री; वैकुम्–जहाँ रहीं; पुळ् तिरळ्–उस खग-भरे; चोलै पुऱत्तुम्–उद्यान के (अन्दर और) बाहर भी; चुट्टु इलतु–जलाया नहीं है; ऍन्पतु–यह समाचार; चॊन्नार्–आपस में कह लिया। १२४१

वहाँ से विद्याधर लोग दूर ऊपर गये हुए थे। उन्होंने आपस में एक समाचार कहा। हनुमान द्वारा लगायी गयी आग ने वर्तुलस्तनी सीतादेवी जहाँ रहीं, उस उद्यान के अन्दर और बाहर जलाया नहीं है। १२४१

वन्दवर् शॊल्ल महिऴ्न्दान्, वॆन्दिऱल् वीरन् वियन्दान्
उय्न्दॆन्न नॆन्न वुयर्न्दान्, पैन्दॊडि ताळ्हळ् पणिन्दान् 1242

वन्तवर्–ऐसे आगतों के; चॊल्ल–कहने पर; वॆम् तिऱल्–गजब की वीरता का; वीरन्–वीर (महावीर); मकिऴ्न्तान्–हर्षित हुआ; वियन्तान्–(सीताजी की महिमा पर) विस्मित हुआ; उय्न्तत्तत्–(निन्दा से) बच गया; ऍन्त–समझकर;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उयर्न्तान्–अन्तरिक्ष में उठा; पैम् तॊटि–चमकदार आभरणभूषित (सीता) के; ताळ्कळ्–पैरों पर; पणिन्तान्–विनत हुआ। १२४२

आगत विद्याधरों के यों कहने पर बड़ा सामर्थ्यशाली वीर हनुमान हर्षित हुआ। सीताजी की महिमा से विस्मित हुआ। उसे राहत मिली कि मुझ पर दोष नहीं लगेगा। वह ऊपर उड़ा। उसने आकर चमकीले स्वर्णाभरणधारिणी सीताजी के श्रीचरणों पर नमन किया। १२४२

पार्त्ततळ् शानहि पाराक्, कूर्त्तॆरि मेनि कुळिर्न्दाळ्
वार्त्तैयॆन् वन्दनै यॆन्नाप्, पोर्त्तॊळिल् मारुदि पोनान् 1243

पार्त्ततळ्–देखा; चानकि–जानकी ने; पारा–देखते ही; ऍरि मेनि–जलता रहा शरीर; कूर्त्तु कुळिर्न्ताळ्–खूब शीतल हुआ, ऐसी (हर्षित) हुई; वार्त्तै ऍन्–कहने को क्या है; वन्ततै ऍन्ना–वन्दना कहकर; पोर् तॊळिल् मारुति–युद्धकर्म-कुशल मारुति; पोनान्–चला गया। १२४३

जानकी ने हनुमान पर अपनी दृष्टि फेरी। आश्वस्त हुईं और उनका तपता शरीर शीतल हुआ; आगे वचन के लिए कहाँ स्थान है? हनुमान ने 'नमस्कार' कहा, और विदा ली। फिर युद्धचतुर मारुति लौट चला। १२४३

तॆळ्ळिय मारुदि शॆन्ऱान्, कळ्ळ वरक्कर्हळ् कण्डाल्
ऍळ्ळुवर् पऱ्ऱुव रॆन्ना, ऒळ्ळॆरि योनु मॊळित्तान् 1544

तॆळ्ळिय मारुति–सुलझी हुई बुद्धि वाले मारुति; चॆन्ऱान्–चला गया; कळ्ळ अरक्कर्कळ्–चोर राक्षस; कण्टाल्–देखेंगे तो; ऍळ्ळुवर्–निन्दा करेंगे; पऱ्ऱुवर्–पकड़ेंगे; ऍन्ना–ऐसा समझकर (डरकर); ऒळ् ऍरियोनुम्–ज्वलन्त अग्निदेव भी; ऒळित्तान्–छिप गया। १२४४

ज्वलन्त अग्निदेव भी यह सोचकर छिप गया कि सुलझा हुआ बुद्धिमान हनुमान भी (मुझे अकेले छोड़कर) चला गया। चोर राक्षस देखेंगे तो मुझे गाली देंगे और पकड़ (रावण के पास) ले जाएँगे। १२४४

14. तिरुवडि तॊऴुद पडलम् (श्रीचरण-वन्दना पटल)

नीङ्गुवॆन् विरैवि नॆन्नु निनैवितन् मरुङ्गु निन्ऱ
आङ्गॊरु कुडुमिक् कुन्ऱै यरुक्कनि लणैन्द वैयन्
वीङ्गिन नुलहै यॆल्लाम् विळुङ्गिन नॆन्न वीरन्
पूङ्गऴ ऱॊऴुदु वाऴ्त्ति विशुम्बिडैक् कडिदु पोनान् 1245

विरैवित्–शीघ्र; नीङ्कुवॆन्–छोड़ जाऊँगा; ऍन्नुम् निनैवितन्–यह विचार करनेवाला; आङ्कु–वहाँ; मरुङ्कु निन्ऱ–पास रहनेवाले; ऒरु कुटुमि कुन्ऱै–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एक शिखर-सहित पर्वत पर; अरुक्कनित्त्–सूर्य के समान; अणैन्त ऐयन्–जो पहुँचा वह महिमावान; उलकै ऍल्लाम्–सारे लोकों को; विऴुङ्कितन् ऍन्त–उदरस्थ जिन्होंने किया उन (श्रीविष्णु) के समान; वीङ्कितन्–विराट् रूप लेकर; वीरन्–वीर श्रीराम के; पूम् कऴल्–सुन्दर पायलधारी चरणों की; तॊऴुतु वाऴ्त्ति–पूजा और स्तुति करके; विचुम्पु इटै–अन्तरिक्ष में; कटितु पोतान्–शीघ्र गया। १२४५

सवेग जाने का निश्चयकारी हनुमान वहीं पास रहे एक पर्वत-शिखर पर उदयाचल पर सूर्य-जैसे चढ़ा। महिमावान हनुमान ने विश्वभुक् विष्णुदेव के समान विश्वरूप धरा। श्रीराम के सुन्दर पायलधारी चरणों की संस्तुति की। फिर वह शीघ्र गया। १२४५

मैन्नाह मॅन्त निन्ऱ कुन्ऱैयु मरबि नॅय्दिक्
कैन्नाह मनैयो नुऱ्ऱ दुणर्त्तितन् कणत्तिन् कालैप्
पॅन्नाह निहर्क्कुम् वीरर् तन्नॅडु वरवु पार्क्कुम्
कॊय्न्नाह नऱुन्देन् शिन्दुङ् गुन्ऱिडैक् कुदियुङ् गॊण्डान् 1246

कै नाकम् अनैयोन्–सूँड़ वाले नाग (करि) के समान रहनेवाले मारुति ने; मैनाकम्–मैनाक; ऍन्त निन्ऱ–नाम के साथ स्थित; कुन्ऱैयुम्–पर्वत को; मरपिन् ऍय्ति–क्रम से पहुँचकर; उऱ्ऱतु उणर्त्तितन्–लंका में जो घटा वह वृत्तान्त सुनाया; कणत्तिन् कालै–एक क्षण की देर में; तन् नॅटुम् वरवु पार्क्कुम्–बहुत देर से अपनी प्रतीक्षा करनेवाले; पै नाकम्–फैले फनों वाले सर्प; निकर्क्कुम् वीरर्–से तुल्य वीर (जहाँ रहे); कॊय् नाक–तोड़ने योग्य सुरपुन्नाग के फूल; नऱुम् तेन् चिन्तुम्–जिस पर शहद गिराते थे; कुन्ऱ इटै–उस (महेन्द्र) पर्वत पर; कुतियुम् कॊण्टान्–कूद पड़ा। १२४६

सूँड़ वाले नाग-सा वह वीर यथाक्रम मैनाक पर्वत पर पहुँचा। उससे उसने लंका का वृत्तान्त पूरा बताया। फिर एक ही क्षण की देरी में वह महेन्द्र पर्वत पर आ कूदा। उस महेन्द्र पर्वत पर बहुत देर से अंगदादि वीर फन-उठाए सर्पों के समान सिर उठाकर उसके आने की राह देख रहे थे। वह पर्वत ऐसा था, जिस पर तोड़ने योग्य (विकसित) सुरपुन्नाग फूल शहद गिरा रहे थे। १२४६

पोय्वरुङ् गरुम मुऱ्ऱिर् ऱॆन्बदोर् पॊम्मल् पॊङ्ग
वाय्वॅरीइ निन्ऱ वॅन्ऱि वानर वीरर् मन्नो
पाय्वरु नीळत् ताङ्ग णिरुन्दन पऱवैप् पार्प्पुत्
ताय्वरक् कण्ड दन्त वुवहैयिर् ऱळिर्त्ता रम्मा 1247

पाय् वरु–जिसमें अति क्षिप्र गति से आता है; नीळत्तु आङ्कण्–उस नीड़ के अन्दर; इरुन्तन–रहे; पऱवै पार्प्पु–पक्षी के बच्चों ने; ताय् वर–माता को आते; कण्टतु अन्त–देख लिया जैसे; वाय् वॅरीइ निन्ऱ–मुख खोलकर जो भय प्रकट कर रहे थे; वॅन्ऱि वानर वीरर्–विजयी वानर वीर; पोय् वरुम् करुमम्–हो आने का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कार्य; मुऱ्ऱिऱ्ऱु–सम्पूर्ण हुआ; ऎऩ्पतु–ऐसा; ओर् पॊम्मल् पॊङ्क–अनुपम आनन्दजनित सौन्दर्य के बढ़ने से; उवकैयिल्–हर्षातिरेक से; तळिर्त्तार्–प्रफुल्लित हो उठे। १२४७

नीड़ में विहग-शिशु माता पक्षी की प्रतीक्षा में हैं। तब मादा पक्षी सरपट अन्दर घुस आता है। उसको देखकर खग-शिशुओं की जो हालत होती है, उसी स्थिति में आये वे विजयी वानर वीर, जो अपना मुख खोलकर मारुति सम्बन्धी भय को प्रकट बोल रहे थे। तब उन्हें यह देखकर आनन्द हुआ कि लंका-गमन का आशय सुसम्पन्न हो गया। आनन्द से उनकी देहकांति बढ़ी। हर्षातिरेक से उनके शरीर प्रफुल्लित हुए। १२४७

अऴदऩर् शिलवर् मुऩ्ऩिन् ऱार्त्तऩर् शिलव रण्मित्
तॊऴुदऩर् शिलव राडित् तुळ्ळिऩर् शिलव रळ्ळि
मुऴुदुऱ विऴुङ्गु वार्पोऩ् मॊय्त्तऩर् शिलवर् मुऱ्ऱुम्
तऴुविऩर् शिलवर् कॊण्डु शुमन्दऩर् शिलवर् ताङ्गि 1248

चिलवर्–कुछ; अऴुतऩर्–(आनन्द के कारण) रोये; चिलवर्–कुछ वानरों ने; मुऩ् निऩ्ऱु–उसके सामने खड़े होकर; आर्त्तऩर्–आनन्दगर्जन किया; चिलवर्–कुछ एक ने; अण्मि–पास जाकर; तॊऴुतऩर्–नमन किया; चिलवर्–कुछ; आटि–नाचे; तुळ्ळिऩर्–उछले; चिलवर्–कुछ; अळ्ळि–उठाकर; मुऴुतु उऱ–पूर्ण रूप से; विऴुङ्कुवार् पोल्–निगल जायँगे जैसे; मॊय्त्तऩर्–बहुत पास आये; चिलवर्–कुछ; मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; तऴुविऩर्–लिपट गये; चिलवर्–कुछ वीरों ने; कॊण्टु ताङ्कि–उठा लेकर; चुमन्तऩर्–धारण कर लिया। १२४८

हनुमान को देखकर कुछ वानर वीर रोये। कुछ एक ने उच्च आनन्दघोष किया। कुछ ने जाकर नमन किया। कुछ नाचे-उछले। कुछ इतने समीप गये, मानो उसे यों ही उठाकर निगल लें। कुछ उससे बिल्कुल लिपट गये। कुछ ने उसे उठाकर अपने सिर पर रख लिया। १२४८

तेऩॊडु किऴङ्गुङ् गायु नऱियऩ वरिदिऱ् ऱेडि
मेऩ्मुऱै वैत्तो मण्ण ऩुहर्न्दऩै मॆलिवु तीर्दि
माऩवाण् मुहमे यॆङ्गट् कुऱैत्तदु माऱ्ऱ मॆऩ्ऩात्
तानुहर् शाह मॆल्ला मुऱैमुऱै शिलवर् तन्दार् 1249

चिलवर्–कुछ एक ने; अण्णल्–महिमामय; मात–महान्; वाळ्–उज्ज्वल; मुकमे–मुख ही ने; माऱ्ऱम्–(शुभ-) समाचार; ऎङ्कट्कु–हमें; उरैत्ततु–बता दिया; नऱियत–स्वादिष्ट; तेऩ् ऒटु–मधु के साथ; किऴङ्कुम्–कन्द और; कायुम्–फल (तरकारी); अरितिल् तेटि–कष्ट के साथ खोजकर; मेल् मुऱै–अच्छे क्रम से; वैत्तोम्–(हमने) रखे हैं; नुकर्न्ततै–भुगतकर; मॆलिवु–थकावट; तीर्ति–दूर करो; ऎऩ्ऩा–कहकर; ताम् नुकर्–अपने भोज के लिए सुरक्षित;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चाकम् ऍल्लाम्–सभी शाकों को; **मुऱै मुऱै**–बारी-बारी से; **तन्तार्**–लाकर दिया। १२४९

कुछ वानरों ने कहा— महिमावान ! तुम्हारे रोबीले और सहास वदन ने सारा वृत्तान्त बता दिया है ! अब तुम स्वादिष्ट शहद, कन्द और तरकारी (कच्चे फल जो यों ही भोजन के रूप में खाये जाते हैं) भुगतो और विश्रान्त हो जाओ। हमने वह सब कष्ट के साथ ढूँढ़ लाकर रखा है। यह कहकर उन्होंने बारी-बारी से अपने भोजन के लिए सुरक्षित रखे हुए शाक आदि लाकर दिये। १२४९

ताळ्हळिन् मार्बिऱ् ऱोळिऱ् ऱलैयिनिऱ् ऱडक्कै तम्मिल्
वाळ्हळिन् वेलिन् वाळि मऴैहळिन् वहिर्न्द पुण्गळ्
नाळ्हण्मे लुलहिऱ् चॅन्ऱ नम्बिदन् कण्ण वाह
ऊळ्हॉळ नोक्कि नोक्कि युयिरुह वुयिर्त्तु नॉन्दार् 1250

ताळ्कळिन्–पैरों में; **मार्पिल्**–वक्ष में; **तोळिल्**–कन्धों पर; **तलैयिनिल्**–सिर पर; **तट कै तम्मिल्**–विशाल हाथों में; **वाळ्कळिन्**–तलवारों से; **वेलिन्**–भालाओं से; **वाळि मऴैकळिन्**–शर-वर्षाओं से; **वकिर्न्त**–चिरकर बने; **पुण्कळ्**–व्रणों को; **उलकिल् चॅन्ऱ**–संसार में बीत गये; **नाळ्कळ् मेल्**–दिनों के समान (अगणित); **नम्पि तन्**–नायक के; **कण्ण आक**–शरीर पर लगा; **ऊळ् कॉळ**–पूर्ण रूप से; **नोक्कि नोक्कि**–देखकर; **उयिर् उक**–प्राण निकल जाएँ, ऐसा; **उयिर्त्तु**–साँसें छोड़ते हुए; **नॉन्तार्**—पीड़ित हुए। १२५०

वानरों ने उन व्रणों को देख लिया जो हनुमान के पैरों, वक्ष, कन्धों, सिर और विशाल हाथों में तलवारों, भालाओं और शर-वर्षा द्वारा लग गये थे। उसके शरीर के व्रणों को उन्होंने पूर्ण रूप से देखा तो उनकी साँसें ऐसी चलने लगीं, मानो वे प्राण निकालकर ले जायँ। उन्होंने बहुत पीड़ा का अनुभव किया। १२५०

वालिहा दलनै मुन्दै वणङ्गिन नॅण्गिन् वेन्दैक्
कालुऱप् पणिन्दु पिन्नैक् कडन्मुऱै कडवोर्क् कॅल्लाम्
एलुऱ वियऱ्ऱि याङ्ग णिरुन्दिव णिरुन्दोर्क् कॅल्लाम्
आलना यहन्ऱन् ऱेवि शॉल्लिन णन्मै यॅन्ऱान् 1251

मुन्तै–पहले-पहल; **वालि कातलनै**–वालीनन्दन को; **वणङ्किनन्**–नमस्कार करके; **ऍण्किन् वेन्तै**–रीछों के राजा (जाम्बवान) को; **काल् उऱ**–चरणों में लगकर; **पणिन्तु**–नमन करके; **पिन्नै**–बाद; **कटवोर्क्कु ऍल्लाम्**–जिनका करना चाहिए, उन सबका; **कटन् मुऱै**–यथाकर्तव्य आदर आदि; **एल् उऱ**–उचित रीति से; **इयऱ्ऱि**–करके; **आङ्कण् इरुन्तु**–वहाँ रहकर के; **इवण् इरुन्तोर्क्कु ऍल्लाम्**–यहाँ जो रहे उन (आप) सबको; **आल नायकन् तन्**–जगन्नाथ की; **तेवि**–देवी ने; **नन्मै**–हिताशीर्वाद; **चॊल्लिनळ्**–कहे; **ऍन्ऱान्**–कहा (हनुमान) ने। १२५१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हनुमान ने सबसे पहले वालीपुत्र को नमस्कार किया। फिर रीछों के राजा जाम्बवान के पायँलागन किया। फिर जिन-जिनका जैसा-जैसा आदर दिखाना चाहिए, वैसे उनकी अभ्यर्थना की। फिर वहाँ एक ओर आसीन होकर हनुमान ने उन लोगों से कहा कि जगन्नाथ की देवी ने यहाँ रहे तुम सबको अपनी शुभ कामना भेजी है। १२५१

ऍन्ऱलुङ् गरङ्गळ् कूप्पि यॅऴुन्दऩ रिऱैञ्जिप् पोऱ्ऱि
निन्ऱऩ रुवहै पॊङ्ग विम्मला ऩिमिर्न्द नॅञ्जर्
शॅन्ऱदु मुदला वन्द दिरुदियाय्च् चॅप्पऱ् पालै
वन्ऱिऱ लुरवो यॅन्ऩच् चॊल्लिऩन् मरुत्तिन् मैन्दन् 1252

ऍन्ऱलुम्–कहते ही; **ऍऴुन्तऩर्**–वे सब उठे; **करङ्कळ् कूप्पि**–हाथ जोड़कर; **उवकै पॊङ्क**–उमगते आनन्द के साथ; **इऱैञ्चि**–नमन करके; **पोऱ्ऱि**–स्तुति करके; **विम्मलाल्**—आनन्द-स्फीति से; **निमिर्न्त नॅञ्चर्**–उत्साहपूर्ण मन के साथ; **वन्तिऱल्**–बहुत अधिक; **उरवोय्**–बलवान; **चॅन्ऱतु मुतल् आ**–जबसे गये, तबसे लेकर; **वन्ततु इरुतियाय्**–आने तक का (वृत्तान्त); **चॅप्पल् पालै**–कहिए; **ऍन्ऩत**–कहने पर; **मरुत्तिन् मैन्तऩ्**–मरुत् के पुत्र ने; **चॊल्लिऩऩ्**–कहा। १२५२

हनुमान के ऐसा कहने पर सब उठ खड़े हुए। हाथ जोड़कर सीताजी की स्तुति की। उनके सीने आनन्द की स्फीति से फूल गये। उन्होंने हनुमान से याचना की कि अतिबली वीर! तुम्हारे यहाँ से जाने से लेकर यहाँ लौट आते तक जो हुआ वह सारा वृत्तान्त सुनाओ। पवन-सूनु ने सब बातें कहीं। १२५२

आण्डहै देवि युळ्ळत् तरुन्दव ममैयच् चॊल्लिप्
पूण्डपे रडैया ळङ्गैक् कॊण्डदुम् बुहन्ऱु पोरिल्
नीण्डवा ळरक्क रोडु निहऴ्न्ददुम् नॅरुप्पुच् चिन्दि
मीण्डदुम् विळम्बान् ऱान्ऱऩ् वॅन्ऱियै विळम्ब वॅळ्हि 1253

आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; **तेवि उळ्ळत्तु**–देवी के मन के; **अरुम् तवम्**–अभूतपूर्व (पातिव्रत्य-संकल्प रूपी) तप को; **अमैय चॊल्लि**–साफ़ बताकर; **पूण्ट**–उनके पहने हुए; **पेर् अटैयाळम्**–प्रबल अभिज्ञान; **कै कॊण्टतुम्**–हाथ में लेना भी; **पुकऩ्ऱु**–बताकर; **तन् वॅन्ऱियै**–अपनी विजय को; **तान् विळम्प**–खुद कहने से; **वॅळ्कि**–लजाकर; **पोरिल्**–युद्ध में; **नीण्ट वाळ्**–लम्बी तलवारों वाले; **अरक्करोटु**–राक्षसों के साथ; **निकऴ्न्ततुम्**–जो हुआ वह; **नॅरुप्पु**–और आग; **चिन्ति**–लगाकर; **मीण्टतुम्**–लौटना; **विळम्पान्**–बोला नहीं। १२५३

पुरुषश्रेष्ठ हनुमान ने देवी के दृढ़ मन के पातिव्रत्य-तप की श्रेष्ठता को साफ़-साफ़ बताकर उनके पहने हुए आभरण को प्रमुख अभिज्ञान के रूप में प्राप्त कर आने का वृत्तान्त भी सुनाया। अपनी विजय-कहानी अपने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुख से कहने से लजाकर उसने लंका में युद्ध में लम्बी तलवारधारी राक्षसों के साथ जो हुआ वह और लंका-दहन आदि समाचार नहीं कहे । १२५३

पॊरुदमै पुण्णे शॊल्ल वॆऩ्ऱमै पोऩ्द तऩ्मै
उरैशॆय ऊर्ती यिट्ट दोङ्गिरुम् बुहैये योदक्
करुदलर् पॆरुमै देवि मीण्डिलाच् चॆयले काट्टत्
तॆरिदर वुणर्न्देम् बिऩ्ऩ रॆऩ्ऩिऩित् तेर्व दॆऩ्ऱार् 1254

पॊरुतमै–लड़ना; पुण्णे चॊल्ल–व्रण ही कहते हैं; वॆऩ्ऱमै–जीत पाना; पोऩ्त तऩ्मै–लौट आना ही; उरै चॆय–बताता है; ऊर् ती इट्टतु–नगर में आग लगाना; ओङ्कु–उठा; इरुम् पुकैये–विपुल धूम ही; ओत–वर्णित करता है; करुतलर्–शत्रुओं के; पॆरुमै–बड़प्पन को; तेवि–देवी का; मीण्टु इला–न लौट आने का; चॆयले–कार्य ही; काट्ट–दिखाता है; तॆरितर उणर्न्तेम्–साफ़ समझ गये; पिऩ्तर्–फिर; ऍऩ् इऩि तेर्वतु–क्या है समझने को; ऍऩ्ऱार्–कहा । १२५४

(तो भी वानर वीर अनुमान कर गये। उन्होंने कहा—) तुमने वहाँ युद्ध किया, यह तुम्हारे शरीर के व्रण ही बता रहे हैं। तुमने विजय पायी यह बात तुम्हारे लौट आने के प्रकार से ही साफ़ विदित हो गयी। तुमने लंका में आग लगायी —यह बात वहाँ जो घना धुआँ उठा, उससे हमने जान ली थी। देवी लौट नहीं आयीं —यह बात शत्रुओं के बलगौरव को साफ़ बता रही है। हम सब समझ गये। फिर क्या है, तुमसे पूछकर जान लेने को ? । १२५४

यावदु मिऩिवे रॆण्ण वेण्डुव दिऱैयु मिल्लै
शेवहऩ् ऱेवि तऩ्ऩैक् कण्डदु विरैविऱ् चॆप्पि
आवदव् वण्ण लुळ्ळत् तरुन्दुय रहऱ्ऱ लेयाम्
बोवदु पुलमै यॆऩ्ऩाप् पॊरुक्कॆऩ वॆऴुन्दु पोऩार् 1255

इऩि–आगे; वेऱु ऍण्ण वेण्टुवतु–अन्य कुछ सोचने को; यावतुम् इऱैयुम् इल्लै–कुछ भी ज़रा भी नहीं है; आवतु–जो करना है, वह; चेवकऩ्–श्रीवीरराघव की; तेवि तऩ्ऩै–देवी को; कण्टतु–जो देखा है; विरैविल्–(वह) शीघ्र; चॆप्पि–कहकर; अण्णल् उळ्ळत्तु–महिमावान प्रभु के मन का; अरुम् तुयर्–कठोर दुःख को; अकऱ्ऱल् ए आम्–दूर करना ही है; पोवतु–जाना; पुलमै–बुद्धिमत्ता का काम है; ऍऩ्ऩा–कहकर; पॊरुक्कु ऍऩ–सहसा; ऍऴुन्तु पोऩार्–उठ के चले । १२५५

(सब वीरों ने एक साथ विचारा।) अब सोचने के लिए कुछ भी नहीं, कोई भी विषय नहीं। अब करना यही है कि श्रीवीरराघव की पत्नी से भेंट करने की बात शीघ्र जाकर कहें और महिमावान श्रीराम के मन का कठोर दुःख दूर करें। इसलिए जाना ही बुद्धिमत्ता का काम होगा। वे शीघ्र उठकर चले । १२५५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

[इसके आगे 'मधुवन' का वृत्तान्त है। पन्द्रह पद्य में वर्णित यह वृत्तान्त क्षेपक माना जाता है। अतः हम इनको छोड़ देते हैं।]

एदुना ळिऱन्द शाल वरुन्दिऩ दिरुन्द शेऩै
आदलाल् विरैविऱ् चॅल्ल लावदऩ् ऱळिय मॅम्मै
शादऱीर्त् तळित्त वीर तलैमहऩ् मॅलिवु तीरप्
पोदुनी मुऩ्ऩ रॅऩ्ऱार् नऩ्ऱॅऩ वनुमऩ् पोऩाऩ् 1256

अळियम् ॲम्मै–दीन हमें; चातल् तीर्त्तु–मरने से बचाने की; अळित्त वीर–कृपा करनेवाले वीर; एतु नाळ्–(अन्वेषण) हेतु (निश्चित) दिन; चाल इऱन्त–बहुत पहले ही पूरे हो गये; इरुन्त चेऩै–यहाँ जो रही वह सेना; वरुन्तिऩतु–दुःखी रही; विरैविल् चॅल्लल् आवतु–शीघ्र जाने में समर्थ; अऩ्ऱु–नहीं है; आतलाल्–इसलिए; तलैमकऩ्–हमारे नायक के; मॅलिवु तीर–दुःख को दूर करने; नी–आप; मुऩ्ऩर्–पहले; पोतु–जाएँ; ॲऩ्ऱार्–कहा; नऩ्ऱु ॲऩ–अच्छा कहकर; अनुमऩ्–हनुमान; पोऩाऩ्–गया। १२५६

वीरों ने हनुमान से कहा कि हे वीर ! जिसने हम दीनों को मरने से बचाया ! सीताजी के अन्वेषणार्थ निर्णीत अवधि के दिन कभी के बीत गये। यहाँ जो तुम्हारी प्रतीक्षा में रही वह सेना अधिक संकटग्रस्त होकर निर्बल हो गयी। इसलिए वह शीघ्र जाने में असमर्थ है। इसलिए तुम पहले जाकर समाचार दो, ताकि नायक श्रीराम का दुःख दूर हो। हनुमान ने कहा कि ठीक है। वह चला। १२५६

मुत्तलै यॅः(ह्)हि ऩाऱ्कु मुडिप्परुङ् गरुम मुऱ्ऱि
वित्तहत् तूदऩ् मीण्ड दिऱुदियाय् विळैन्द तऩ्मै
अत्तलै यऱिन्द दॅल्ला मऱैत्तऩ माऴि यान्माट्
टित्तलै निहऴ्न्द वॅल्ला मियम्बुवा ऩॅडुत्तुक् कॉण्डाम् 1257

वित्तक–(श्रीराम का) समर्थ; तूतऩ्–दूत; मुत्तलै ॲ.ः.कितार्कुम्–त्रिशिर शूलधारी के लिए भी; मुटिप्पु अरुम्–असाध्य; करुमम् मुऱ्ऱि–कार्य सम्पन्न करके; मीण्टतु–लौटा; इऱुतियाय्–वहाँ तक का; अ तलै–वहाँ; विळैन्त तऩ्मै–जो घटा वह वृत्तान्त; अऱिन्ततु ॲल्लाम्–हमारे जाने सभी; अऱैन्ततम्–हमने कहे; इ तलै–यहाँ; आऴियाऩ् माट्टु–चक्रधारी श्रीराम के प्रति; निकऴ्न्त–जो हुआ; ॲल्लाम्–वह सब; इयम्पुवाऩ्–कहने को; ॲटुत्तुक् कॉण्टाम्–तत्पर हुए हैं। १२५७

(कवि—) सर्वसमर्थ दूत हनुमान त्रिशूलधारी शिवजी के लिए भी असाध्य कार्य सम्पन्न कर आया। वहाँ तक का उधर का सारा वृत्तान्त जो हम जानते थे, हमने बताया है। अब इधर चक्रधर विष्णु के अवतार (या चक्रवर्ती) श्रीराम पर क्या बीता वह कहने चलते हैं। १२५७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀ शेऱ्ऱिळ मरैमलर्त् तिरुवैत् तेर्हॅऩक्
काऱ्ऱिऩ्मा मकऩ्मुतऱ् कवियिऩ् शेऩैयै
नाऱ्ऱिशै मरुङ्गिऩु मेवि नायहऩ्
तेऱ्ऱिऩ तिरुन्दऩऩ् कतिरिऩ् चॅम्मले 1257(अ)

चेऱ्ऱु–पंक में उत्पन्न; इळ मरैमलर्–नवीन कमल पर रहनेवाली; तिरुवै–श्री (सीता) को; तेर्क अॅऩ–खोजो कहकर; काऱ्ऱिऩ् मा मकऩ् मुतल्–वायु के महान् पुत्र आदि; कवियिऩ् चेऩैयै–कपियों की सेना को; नाऱ्ऱिचै मरुङ्किऩुम्–चारों दिशाओं की ओर; एवि–प्रेषित करके; नायकऩ्–नायक श्रीराम को; तेऱ्ऱिऩऩ् इरुन्ततऩ्–धीरज बँधाता रहा; कवियिऩ् चॅम्मल्–कपिकुलपति। १२५७ (अ)

कपिकुलाधिप सुग्रीव पंकजपुष्पासना श्रीलक्ष्मी को खोजने के लिए वायुपुत्र आदि की सेना को चारों दिशाओं में प्रेषित करके नायक श्रीराम को धीरज बँधाता रहा। (यह पद्य हमारे मूल टीकाकार की दृष्टि में क्षेपक है। उन्होंने नियमानुसार इसे अतिरिक्त पदों के अन्तर्गत दिया है। उसे संख्या नहीं दी है। हमने इसीलिए इसे दिया है कि टी०के० चिदम्बरनाथ मुदलियार क्षेपक नहीं मानते, वरन् प्रामाणिक मानते हैं। और भी कथा-प्रवाह में इसका स्थान उचित ही लगता है।)। १२५७(अ)

कार्वरै यिरुन्दवक् कदिरिऩ् कादलऩ्
शीरिय शॊऱ्कळाऱ् ऱॆरुट्टच् चॅङ्गणाऩ्
आरुयि रायिर मुडैय ऩामॅऩच्
चोर्दॊऱुऱ् जोर्दॊऱु मुयिर्त्तुत् तोऩ्ऱिऩाऩ् 1258

चॅम् कणाऩ्–अरुणाक्ष; चोर् तॊऱुम् चोर् तॊऱुम्–जब-जब (अत्यधिक दुःख से) श्रान्त हो जाते; कार् वरै इरुन्त अ–(तब) काले (प्रश्रवण) पर्वत पर जो रहा, उस; कतिरिऩ् कातलऩ्–किरणमाली सूर्यनन्दन के; चीरिय चॊऱ्कळाल्–श्रेष्ठ शब्दों से; तॆरुट्ट–समझाने पर; आयिरम्–सहस्र; आर् उयिर् उटैयऩ् आम्–प्राणों को धारण करनेवाले; अॅऩ–जैसे; अयिर्त्तु तोऩ्ऱिऩाऩ्–बार-बार श्वास छोड़ते प्राणवान बने। १२५८

जब-जब अरुणाक्ष श्रीराम विरहपीड़ा से श्रान्त हो जाते, तब उस काले प्रश्रवण पर्वत पर साथ जो रहा, उस सूर्यसूनु ने श्रेष्ठ वचन कहकर ढाढ़स दिया। तब रामचन्द्रजी का श्वास जो रुका रहता फिर से चलने लगता। उन्हें देखकर ऐसा लगता कि क्या इनके सहस्र प्राण हैं?। १२५८

तण्डलि ऩॅडुन्दिशै मूऩ्ऱुऩ् दाविऩर्
कण्डिलर् मडन्दैयै यॅऩ्ऩुङ् गट्टुरै
उण्डुयि रहत्तॅऩ वॊऱुक्क वुम्मुळऩ्
तिण्डिऱ लनुमऩै निऩैयुऱ् जिन्दैयाऩ् 1259

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तण्टल् इल्-अबाध गति से; नॅटुम् तिचै मूनुरुम्-तीन लम्बी दिशाओं में; ताविनर्-लपक जो चले वे; मटनतैयै-देवी को; कण्टिलर्-देख नहीं पाये; ऍन्नुम्-यह; कट्टुरै-वचन; अकत्तु उयिर् उण्टु-अन्दर प्राण हैं; ऍन्न-ऐसी स्थिति में; ऑऱुक्कवुम्-बड़ा कष्ट देता रहा; तिण् तिऱल्-अतिशय बलशाली; अनुमनै-हनुमान का; निनैयुम् चिन्तैयान्-स्मरण करनेवाले मन के हो; उळन्-(जीवित) रहे (किसी विध)। १२५९

अबाध गति से जो तीन लम्बी दिशाओं में गये थे, वे लौट आ गये। वे देवी के दर्शन नहीं कर सके। यह कथन उन्हें, चूँकि प्राण थे, सता रहा था। वे अतिबलिष्ठ हनुमान का स्मरण करते रहे। इसलिए ज्यों-त्यों अपने प्राणों को रखते रहे। १२५९

❀आरिय नरुन्दुयर्क् कडलु ळाऴ्बवन्
शीरिय दन्रुनऱ् जॅय्है तीर्वरुम्
मूरिवॅम् बऴियॉडु मुडिन्द दामॅन्नाच्
चूरियन् पुदल्वनै नोक्किच् चॉल्लुवान् 1260

आरियन्-आर्य श्रीराम; अरुम्-कठोर; तुयर् कटल् उळ्-दुःख-सागर में; आऴ्पवन्-मग्न; चूरियन् पुतल्वळै नोक्कि-सूर्य-पुत्र को देखकर; नम् चॅय्कै-हमारा काम; चीरियतु अन्ऱु-श्रेष्ठ नहीं; तीर्वु अरुम्-अवार्य; मूरि वॅम् पऴि ऑटु-कठोर और भयंकर निन्दा के साथ; मुटिन्ततु आम्-समाप्त हो जायगा; ऍन्ना-कहकर; चॉल्लुवान्-आगे बोले। १२६०

कठोर दुःखसागरमग्न श्रीराम ने अर्कपुत्र से कहा कि हमारा कार्य श्रेष्ठ नहीं लगता। वह अवार्य और कठोर भयंकर अपमान में पूरा होगा। वे आगे यों बोले। १२६०

❀कुऱित्तना ळिहन्दन कुन्ऱत् तॅन्ऱिशै
वॅऱिक्करुङ् गुऴलियै नाडन् मेयिन्नार्
मऱित्तिवण् वन्दिलर् माण्डु ळार्हॊलो
पिऱित्तवर्क् कुऱ्रुळ दॅन्न पॅऱ्ऱियो 1261

कुऱित्त नाळ्-निर्णीत दिन; इकन्तत-बीत गये; कुन्ऱ-बीतने पर; तॅन् तिचै-दक्षिण दिशा में; वॅऱि करुम्-सुगन्धित काले; कुऴलियै-केश वाली को; नाटल् मेयिन्नार्-खोजने जो चले; मऱित्तु-(वे) लौटकर; इवण्-यहाँ; वन्तिलर्-आये नहीं; माण्टुळार् कॉल् ओ-मर गये क्या; पिऱित्तु-दूसरा; अवर्क्कु उऱ्ऱ उळतु-उन पर जो बीता; ऍन्न पॅऱ्ऱि ओ-कैसा है तो। १२६१

अवधि के दिन बीत गये। तो भी दक्षिण दिशा में सुबासित काले केश की सीता की खोज में जो चले वे लौट के इधर नहीं आये। क्या वे मर गये होंगे? फिर उन्हें क्या हुआ होगा? कैसा हुआ होगा?। १२६१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

❀माण्डऩ ळवळिवण् माण्ड वार्त्तैयै
मीण्डवर्क् कुरैत्तलिऩ् विळिद नऩ्ऱैऩाप्
पूण्डदोर् तुयरॊडु पॊऩ्ऱि नार्हॊलो
तेण्डिऩ रिऩ्ऩमुऩ् दिरिहिऩ् ऱार्हॊलो 1262

अवळ् माण्टऩळ्–वह मर गयीं; इवण्–यहाँ; मीण्टु–लौट आकर; माण्ट वार्त्तैयै–मरने का समाचार; अवर्क्कु उरैत्तलिऩ्–उनसे कहने से; विळितल्–(हमारा) मरना; नऩ्ऱु–अधिक अच्छा है; ऎऩा–ऐसा सोचकर; पूण्टतु ओर् तुयर् ओटु–अपनाए गये एक दुःख के साथ; पॊऩ्ऱिऩार् कॊल् ओ–मर गये क्या; इऩ्ऩमुम्–अब भी; तेण्टिऩर्–खोजते हुए; तिरिकिऩ्ऱार् कॊल् ओ–भटक रहे हैं क्या। १२६२

"सीता चल बसीं। लौट यहाँ आकर सीता की मृत्यु का समाचार देने से मर जाना बेहतर है।" —ऐसा निश्चय करके दुःखी होकर वे मर गये क्या ? या अब भी खोजते हुए इधर-उधर भटक रहे हैं ? । १२६२

कण्डऩ ररक्करैक् करुवु कैम्मिह
मण्डमर् तॊडङ्गिऩार् वञ्जर् मायैयाल्
विण्डल मदऩिऩ्मे यिऩर्हॊल् वेऱिलात्
तण्डलि ऩॆडुञ्जिऱैत् तळैप्पट् टार्हॊलो 1263

अरक्करै–राक्षसों को; कण्टऩर्–देखकर; करुवु–कोप के; कै मिक–बढ़ने से; मण्टु–घमासान; अमर् तॊटङ्किऩार्–युद्ध प्रारम्भ करके; वञ्चर् मायैयाल्–वंचकों के मायाकृत्य से; विण् तलम् अतऩिऩ्–स्वर्गलोक में; मेयिऩर् कॊल्–पहुँच गये क्या; वेऱु इला–निरुपाय; तण्टल् इऩ्–अबाध; ऩॆटुम् चिऱै–दीर्घ कारा में; तळैप्पट्टार् कॊल्–बँध गये क्या। १२६३

(या) राक्षसों को देख पाकर बढ़ते क्रोध के साथ उन्होंने युद्ध प्रारम्भ किया और वञ्चकों के मायाकृत्य से स्वर्ग पहुँच गये ? या निरुपाय दीर्घ कारा में बन्दी कर रखे गये हैं ? । १२६३

कूऱिऩ नाळव रिरुक्कै कूडलम्
एऱलञ् जुदुमॆऩ विऩ्ब दुऩ्बङ्गळ्
आऱिऩ ररुन्दव ममैहिऩ् ऱार्हॊलो
वेऱवर्क् कुऱ्ऱदॆऩ् विळम्बु वायॆऩ्ऱाऩ् 1264

कूऱिऩ नाळ्–निर्णीत दिन में; अवर् इरुक्कै–उनके (श्रीराम के) वासस्थान; कूटलम्–पहुँचे नहीं; एऱल् अञ्चुतुम्–जाने से भय लगता है; ऎऩ–ऐसा सोचकर; इऩ्प तुऩ्पङ्कळ् आऱिऩर्–सुख-दुःख-श्रान्त होकर; अरुम् तवम्–कठोर तपस्या में; अमैकिऩ्ऱार् कॊल्–विश्रान्त हैं; ओ–क्या; वॆऱु ऎऩ्–और क्या; अवर्क्कु उऱ्ऱतु–उनका हुआ; विळम्पुवाय्–बोलो; ऎऩ्ऱाऩ्–बोले। १२६४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

"अवधि के दिन बीत गये। वहाँ पहुँचने में डर लगता है।" ऐसा सोचकर सुखदुःखनिवृत्त होकर वे कठोर तपस्या में विश्रान्त रहते हैं क्या ? फिर उनका क्या हुआ होगा। बोलो। श्रीराम ने सुग्रीव से पूछा। १२६४

❀ ऍन्बुऴि यनुमनु मिरवि यॆन्बवन्
तॆन्बुलत् तुळनॆनत् तॆरिव दायिनान्
पॊन्बॊऴि तडक्कयप् पॊरुविल् वीरनुम्
अन्बुऱु शिन्दैया नमैय नोक्किनान् 1265

ऍन्पुऴि–जब वे यह कह रहे थे; अनुमनुम्–(तब) हनुमान और; इरवि ऍन्पवन्–रवि नाम का वह; तॆन् पुलत्तु उळन् ऍत–दक्षिण में उदित हुआ जैसे; तॆरिवतु आयिनान्–प्रकट हुआ; पॊन् पॊऴि–(याचक को) स्वर्ण-वर्षा के समान देनेवाले; तट कै–विशाल हाथों के; अ पॊरुवु इल् वीरनुम्–उन अनुपम वीर (श्रीराम) ने भी; अन्पु उऱु चिन्तैयान्–प्रेममन हो; अमैय–खूब; नोक्किनान्–(हनुमान पर) दृष्टि गड़ाकर देखी। १२६५

श्रीराम यों कह ही रहे थे कि दक्षिण में रवि प्रकट हो गया-जैसे हनुमान दिखायी दिया। (याचक—) स्वर्णवर्षी हाथों के उन अनुपम वीर श्रीराम ने भी बड़े प्रेम के साथ हनुमान को ध्यान से देखा। १२६५

❀ ऍय्दिन ननुमनु मॆय्दि येन्दऱन्
मॊय्हऴ ऱॊऴुदिलन् मुळरि नीङ्गिय
तैयलै नोक्किय तलैयन् कैयिनन्
वैयहन् दऴीइनॆडि दिऱैञ्जि वैहिनान् 1266

अनुमनुम्–हनुमान भी; ऍय्तिनन्–आ पहुँचा; ऍय्ति–पहुँचकर; एन्तल् तन्–प्रभु के; मॊय् कऴल्–सुदृढ़ पायलधारी चरणों की; तॊऴुतु इलन्–वन्दना न करके; मुळरि नीङ्किय–कमल छोड़कर (भूमि पर) अवतरित; तैयलै–देवी (की दिशा) को; नोक्किय–उद्दिश्य करके; तलैयन् कैयिनन्–फिरे मुख वाला और जुड़े हाथों वाला बन; वैयकम् तऴीई–भूमि पर लगकर; नॆटितु इऱैञ्चि–बहुत देर दण्डवत करता हुआ; वैकिनान्–रहा। १२६६

हनुमान भी वहाँ आया। (उसने एक विचित्र काम किया।) वह सम्मानित प्रभु श्रीराम के सुदृढ़ पायलधारी चरणों पर नमस्कार न करके कमलवास छोड़, भूमि पर अवतरित हुई श्रीलक्ष्मी, सीताजी जिस दक्षिण दिशा में रहीं उस ओर मुख करके और उसी ओर हाथ जोड़कर भूमि पर दण्डवत् की मुद्रा में भूमि से लगकर गिरा और लम्बी देर तक पड़ा रहा। १२६६

❀ तिण्डिऱ लवन्शॆय ऱॆरिय नोक्किनान्
वण्डुऱै योदियुम् वलियण् मऱ्ऱिवन्

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कण्डदु मुण्डवळ् कऱ्पु नन्ऱनक्
कॊण्डनन् कुऱिप्पिना लुणरुङ् गॊळ्हैयान् 1267

कुऱिप्पिनाल्–इंगित से; उणरुम् कॊळ्कैयान्–आशय समझने की (विवेक) शक्ति रखनेवाले श्रीराम ने; तिण् तिऱल्–बहुत ही कुशल; अवन् चॆयल्–उसका कार्य; तॆरिय नोक्कितान्–भलीभाँति देखा और जाना; वण्टु उऱै–भ्रमराश्रय; ओतियुम्–केशिनी भी; वलियळ्–स्वस्थ हैं; इवन् कण्टतुम्–इसकी भेंट भी; उण्टु–हुई है; अवळ् कऱ्पुम्–उसका पातिव्रत्य भी; नन्ऱु–सुदृढ़ है; अॆन–ऐसा; कॊण्टनन्–ताड़ लिया। १२६७

श्रीराम इंगितज्ञ थे। उन्होंने सामर्थ्यशाली उस हनुमान के तत्त्वार्थपूर्ण कार्य देखा और समझ गये कि भ्रमरावृत सुकेशिनी सीताजी स्वस्थ हैं; इसने उनसे भेंट की है और उनका पातिव्रत्य सुरक्षित है। १२६७

आङ्गवन् शॆय्हैये यळवै यामॆना
ओङ्गिय वुणर्वित्ताल् विळैन्द दुन्नित्तान्
वीङ्गिन तोळ्पुनऱ् कण्कळ् विम्मिन
नीङ्गिय दरुन्दुयर् काद नीण्डदे 1268

आङ्कु–वहाँ; अवन् चॆय्कैये–उसका काम ही; अळवै आम्–मापदण्ड है; ऎना–मानकर; ओङ्किय उणर्वित्ताल्–उत्कृष्ट अपने ज्ञान द्वारा; विळैन्ततु उन्नित्तान्–जो घटा उसका अनुमान कर लिया. (श्रीराम ने); तोळ् वीङ्किन–(उनके) कन्धे फूल उठे; कण्कळ्–आँखें; पुनल् विम्मिन–(अश्रु-) जल से भरीं; अरुम् तुयर्–कठोर दुःख; नीङ्कियतु–दूर हुआ; कातल्–(सीता पर) प्रेम; नीण्टतु–वर्द्धित हुआ। १२६८

श्रीराम ने अपने उत्कृष्ट ज्ञान द्वारा, हनुमान के कृत्य को माप बनाकर बीते कार्यों का अनुमान लगा लिया। तब उनके कन्धे फूल उठे। आँखें अश्रुजल से खूब भर गयीं। कठोर दुःख दूर हो गया। सीताजी के प्रति प्रेम बढ़ गया। १२६८

❀ कण्डनॆन् कऱ्पिनुक् कणियैक् कण्गळाल्
तॆण्डिरै यलैहड लिलङ्गैत् तॆन्नहर्
अण्डर्ना यहविनित् तविर्दि यैयमुम्
बण्डुळ तुयरुमॆन् ऱनुमन् पन्नित्तान् 1269

अनुमन्–हनुमान ने; अण्टर् नायक–देवनायक; तॆळ् तिरै–साफ़ और उठ गिरनेवाली; अलै–तरंगाकुल; कटल्–समुद्र-मध्य; इलङ्कै–लंका (नाम) के; तॆन् नकर्–दक्षिण (में रहनेवाले) नगर में; कऱ्पिनुक्कु अणियै–पातिव्रत्य के शृंगार को; कण्कळाल् कण्टनॆन्–आँखों से देखा; इनि–आगे; ऐयमुम्–सन्देह और; पण्टु उळ–पहले से रहा; तुयरुम्–दुःख; तविर्ति–दूर करें; ऎन्ऱु–ऐसा; पन्नित्तान्–(कहकर) विस्तार से कहा। १२६९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हनुमान ने श्रीराम से निवेदन किया, हे देवादिदेव ! (अण्डनायक !) स्वच्छ और लहराती तरंगों के समुद्रमध्य, दक्षिण में स्थित लंका के नगर में मैंने पातिव्रत्य के श्रृंगार मान्य सीताजी को अपनी आँखों से देख लिया। अब आप सन्देह और बहुत दिनों का दुःख छोड़ दें। उसने आगे विस्तार से यों कहा। १२६९

❀ उन्बॅरुन् देवि यॅन्नु मुरिमैक्कु मुन्नैप् पॅऱ्ऱ
मन्बॅरु मरुहि यॅन्नुम् वाय्मैक्कु मिदिलै वेन्दन्
तन्बॅरुन् दन्नयै यॅन्नुन् दन्मैक्कुन् दहैमै शान्ऱ
ऍन्बॅरुन् दॅय्व मैया विन्नमुङ् गेट्टि यॅन्बान् 1270

ऐया–प्रभु; उन् पॅरुम् तेवि–आपकी महीयसी देवी; ऍन्नुम् उरिमैक्कुम्–रहने का स्वत्व और; उन्नै पॅऱ्ऱ–आपके जनक; मन्–चक्रवर्ती की; पॅरुम् मरुकि–सम्मान्य बहू के; ऍन्नुम् वाय्मैक्कुम्–उस गौरव के लिए; मितिलै वेन्तन् तन्–मिथिला के राजा की; पॅरुम् तन्नयै–सुपुत्री; ऍन्नुम् तन्मैक्कुम्–होने के गौरवपूर्ण स्थान के लिए; तकैमै चान्ऱ–पूर्ण योग्य; ऍन् पॅरुम् तॅय्वम्–मेरी आराध्या देवी; इन्नमुम् केट्टि–और भी सुनिए; ऍन्ऱान्–कहा। १२७०

प्रभु ! आपकी उत्तम धर्मपत्नी का पद, आपके जनक चक्रवर्ती दशरथ की आदरणीय पतोहू बनने का गौरव, मिथिला के राजा की सम्मान्य पुत्री बनने का भाग्य —इनके बिल्कुल योग्य हैं मेरी आराध्या श्रेष्ठ देवी। और भी सुनिए। हनुमान ने जारी किया। १२७०

❀ पॊन्नल दिल्लैप् पॊन्नै यॊप्पॅन्न पॊऱैयि निन्ऱाळ्
तन्नल दिल्लैत् तन्नै यॊप्पॅन्नत् तन्नक्कु वन्द
निन्नल दिल्लै निन्नै यॊप्पॅन्न निन्नक्कु नेर्न्दाळ्
ऍन्नल दिल्लै यॅन्नै यॊप्पॅन्न वॅन्नक्कु मीन्दाळ् 1271

पॊन्नै ऒप्पु–स्वर्ण से तुल्य; पॊन् अलतु इल्लै–स्वर्ण छोड़ दूसरा नहीं; ऍन्न–इसी रीति से; पॊऱैयिल्–क्षमा के गुण में; निन्ऱाळ्–स्थित हैं; तन्नै ऒप्पु–अपनी-अपने समान; तन् अलतु–अपने को छोड़; इल्लै–दूसरा नहीं; ऍन्न–ऐसे ही; तन्नक्कु वन्त–अपने पति के रूप में प्राप्त; निन्नै ऒप्पु–आपसे तुल्य; निन् अलतु–आपके सिवा; इल्लै–नहीं; ऍन्न–ऐसा (गौरव); निन्नक्कु नेर्न्ताळ्–आपको दिलाया है (देवी ने); ऍन्नै ऒप्पु—मेरे समान; ऍन् अलतु–मुझे छोड़ दूसरा; इल्लै ऍन्न–नहीं है, यह; ऍन्नक्कुम्–(गौरव) मुझे भी; ईन्ताळ्–प्रदान किया। १२७१

स्वर्ण से तुल्य स्वर्ण से अन्य कोई वस्तु नहीं है। वैसे ही वे अनुपम क्षमाशीला हैं। अपनी सानी वे अपने से अलावा कोई नहीं रखतीं। उन्होंने आपको भी 'आपसे तुल्य आपके सिवा अन्य नहीं हैं' —यह कहाने का गौरव प्रदान किया है। मुझे भी यह पद दिला दिया है, जिससे अपने से तुल्य मैं ही हूँ। कोई दूसरा मेरे समान नहीं है। (स्वर्ण ताडन,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

निघर्षण, तापन···किसी से भी अपना स्वभाव नहीं छोड़ता। सीताजी की उपमा इसी से स्वर्ण से दी गयी है। सीताजी के कारण अब श्रीराम अनुपम सौभाग्यवान पति बन गये। 'कुरळ' का कहना है— सती पत्नी के अतिरिक्त पुरुष के लिए प्राप्य बड़ी वस्तु क्या है ? हनुमान का भी गौरव इतना बढ़ा कि सामान्य वानर असामान्य दूत बन गया। इस पद्य में नेर्न्दाळ्, ईन्दाळ् —दो क्रिया शब्द आये हैं। दोनों के अर्थों में यह भिन्नता है कि पहला शब्द समानता का द्योतक है और दूसरा यह इंगित करता है कि पानेवाला नीची हैसियत में है।) । १२७१

उन्गुल मुन्न दाक्कि युयर्बुहळ्क् कॊरुत्ति याय
तन्गुलन् दन्न दाक्कित् तन्नैयित् तन्मै शॆय्दान्
वन्गुलङ् गूऱुक् कीन्दु वानवर् कुलत्तै वाळ्वित्
तॆन्गुल मॆनक्कुत् तन्दा ळॆन्निनिच् चॆय्व दॆम्मोय् 1272

ॲम् ओय्–मेरी माता; उन् कुलम्–आपका कुल; उन्नतु आक्कि–आपका स्थापित करके; उयर् पुकळ्क्कु–उन्नत सुयश के लिए; ऒरुत्ति आय–योग्य अकेली जो हैं; तन् कुलम्–वह अपना कुल; तन्नतु आक्कि–अपना स्थापित कर; तन्नै इ तन्मै चॆय्तान्–अपने को जिसने इस तरह पृथक् किया; वन् कुलम्–(उस रावण के) नृशंस कुल को; कूऱुक्कु ईन्तु–मृत्यु के हाथ सौंपकर; वानवर् कुलत्तै–देवकुल को; वाळ्वित्तु–निर्भय जीवन प्रदान करके; ॲन् कुलम्–मेरा कुल; ॲनक्कु तन्ताळ्–मुझे दिलाया; इनि–आगे; ॲन् चॆय्वतु–करने को क्या है। १२७२

मेरी माता ने आपके कुल को आपका बना दिया (यानी आपके नाम पर आपका कुल स्मरण किया जायगा); उच्च यशस्विनी अपने कुल को अपना बना लिया (उनका कुल उनके नाम पर चलेगा); अपने को आपसे पृथक् करनेवाले रावण के कुल को मृत्यु का बना दिया; देवकुल को निर्भय जीवन का बनाया और मेरे कुल को मुझे दे दिया (यानी मामूली बन्दर भी हनुमान के कुल का बताया जायगा)। इससे बढ़कर कहने को क्या है ? । १२७२

❀ विऱ्पॆरुन् दडन्दोळ् वीर वीङ्गुनी रिलङ्गै वॆऱ्पिन्
नऱ्पॆरुन् दवत्त ळाय नङ्गैयैक् कण्डे नल्लेन्
इऱ्पिऱप् पॆन्ब दॊन्ऱु मिरुम्बॊऱै यॆन्ब दॊन्ऱुम्
कऱ्पॆनुम् बॆयर दॊन्ऱुङ् गळिनडम् बुरियक् कण्डेन् 1273

विल्–(कोदण्ड) धनुर्धर; पॆरुम्–बड़े; तटम् तोळ्–विशाल कन्धों वाले; वीर–वीर; वीङ्कु नीर्–बहुत जल के समुद्र की घिरी; इलङ्कै वॆऱ्पिल्–लंका की गिरि पर; नल् पॆरुम् तवत्तळ् आय–अच्छे और बड़े तप में लगी; नङ्कैयै–देवी को; कण्टेन् अल्लेन्–नहीं देखा; इल् पिऱप्पु ॲन्पतु–कुल-जन्म, यह; ऒन्ऱुम्–एक; इरुम् पॊऱै ॲन्पतु–अति गम्भीर क्षमा नाम की; ऒन्ऱुम्–एक वस्तु और; कऱ्पु–

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पातिव्रत्य; अॅनुम् पॅयर् अतु–नाम की; ऑन्ऱुम्–एक चीज; कळि नटम् पुरिय–(इनको) मत्त नृत्य करते हुए; कण्टेन्–देखा। १२७३

कोदण्ड के धारक बड़े और विशाल भुजाओं वाले वीर ! विपुल जलाश्रय समुद्र के मध्य त्रिकूट पर्वत पर स्थित लंका में मैंने केवल अति-श्रेष्ठ तपस्विनी स्त्री को नहीं देखा; वरन् श्रेष्ठ कुल में जन्म, गम्भीर क्षमा और सतीत्व —इन तीनों तत्त्वों को मिलकर मत्तता से आनन्दनृत्य करते हुए देखा। १२७३

कण्णिनु मुळैनी तैयल् करुत्तिनु मुळैनी वायिन्
अॅण्णिनु मुळैनी कॉङ्गै यिणैक्कुवै तन्नि नोवा
दण्णल्वॅङ् गाम नॅय्द वलरम्बु तॉळैत्त वाऱाप्
पुण्णिनु मुळैनी निन्नैप् पिरिन्दमै पॉरुन्दिऱ् ऱामो 1274

नी–आप; तैयल् कण्णिनुम्–देवी की आँखों में भी; उळै–हैं; करुत्तिनुम्–मन में भी; नी उळै–आप विद्यमान हैं; वायिन् अॅण्णिनुम्–मुख के बोलों में भी; नी उळै–आप रहते हैं; कॉङ्कै इणै–स्तनद्वय के; कुवै तन्निल्–अग्रभाग में; ओवातु–निरन्तर; अण्णल्–महिमावान; वॅम् कामत्–सन्तापक कामदेव द्वारा; अॅय्त–प्रेषित; अलर् अम्पु–पुष्प-शर; तॉळैत्त–से विद्ध; आऱा–जो नहीं भरता, उस; पुण्णिनुम्–घाव में भी; नी उळै–आप ही हैं; निन्नै पिरिन्तमै–आपसे वियुक्त होने की बात कहना; पॉरुन्तिऱ्ऱु आमो–युक्त होगा क्या। १२७४

प्रभु ! आप देवी की आँखों पर सदा विद्यमान हैं; उनके मन में विराजमान हैं; मुख के शब्दों में घुले मिले हैं। महिमावान और सन्तापक कामदेव द्वारा निरन्तर प्रेषित सुमन-शरों से उनके स्तनद्वय के अग्र भाग में बने, सदा ताज़े व्रण में भी हैं। फिर आपसे वे अलग हो गयीं —यह कहना युक्त होगा क्या ? । १२७४

वेलैयु ळिलङ्गै यॅन्नुम् विरिनह रॉरुशार् विण्डोय्
कालैयु मालै तानु मिल्लदोर् कनहक् कऱ्पच्
चोलैयङ् गदनि नुम्बि पुल्लिनाऱ् ऱॉडुत्त तूय
शालैयि निरुन्दा ळैय तवञ्जॅय्द तवमान् देयल् 1275

ऐय–प्रभु; तवम् चॅय्त तवम्–स्वयं तप ने तपस्या करके जिन्हें पाया; आम् तैयल्–वह देवी; वेलै उळ्–समुद्र-मध्य; इलङ्कै अॅन्नुम्–लंका नाम के; विरि नकर्–विशालनगर के; ऑरु चार्–एक तरफ़; विण् तोय्–गगनस्पर्शी; कालैयुम् मालै तानुम्–(और) सवेरा और शाम; इल्लतु–जहाँ (उनमें भेद) नहीं रहते; ओर्–उस एक; कनक कऱ्प चोलै–एक स्वर्णकल्पतरुओं का वन; अङ्कु–वहाँ; अतनिन्–उसमें; उम्पि–आपके कनिष्ठ द्वारा; पुल्लिनाल् तॉटुत्त–घास से निर्मित; तूय चालैयिन्–पवित्र पर्णशाला में; इरुन्ताळ्–रहीं। १२७५

प्रभु ! तप का तपस्या का फल हैं वे ! समुद्रमध्यस्थित लंका नगर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के किसी कोने में अशोक वन है, जिसके कनककल्प तरु आकाश से बातें करते रहते हैं। वहाँ सवेरे और शाम का भेद दिखायी ही नहीं देता (क्योंकि कल्पतरु का प्रकाश एक-सा है)। उसमें आपके छोटे भाई द्वारा घास की निर्मित पर्णशाला में देवी रहती हैं। १२७५

मण्णॊडुङ् गॊण्डु पोऩान् वाऩुयर् कऱ्पि ऩाडन्
पुण्णिय मेऩि तीण्ड वञ्जुवा ऩुलहम् बूत्त
कण्णहऩ् कमलत् तण्णल् करुत्तिलाट् टॊडुदल् कण्णिऩ्
ऍण्णरुङ् गूऱाय् मायदि यॆऩ्ऱदोर् मॊऴियै यॆण्णि 1276

उलकम् पूत्त–लोकसर्जक; कण् अकऩ्–विशाल; कमलत्तु अण्णल्–कमल पर विराजमान ब्रह्माजी ने; करुत्तु इलाळ्–तुम पर मन न लगानेवाली को; तॊटुतल्–स्पर्श करना; कण्णिऩ्–सोचोगे तो; ऍण् अरुम् कूऱाय्–असंख्य खण्डों में; मायति–(विभक्त होकर) मरोगे; ऍऩ्ऱतु–जो कहा था; ओर् मॊऴियै–उस कथन को; ऍण्णि–सोचकर; वाऩ् उयर्–बहुत उत्कृष्ट; कऱ्पिऩाळ् तऩ्–पातिव्रत्य-शीला के; पुण्णिय मेऩि–पवित्र शरीर को; तीण्ट अञ्चुवाऩ्—स्पर्श करने से डरता; मण् ऒटुम्–भूमि के साथ; कॊण्टु पोऩाऩ्–ले गया। १२७६

पञ्चसर्जक, कमलासन, सम्मान्य ब्रह्मा ने रावण को शाप दिया था कि अगर तुम पर मन न लगानेवाली किसी स्त्री का स्पर्श करोगे तो तुम असंख्यक टुकड़ों में फूटकर मर जाओगे। इस शाप के स्मरण से ही रावण अत्युत्तम सती सीताजी के पवित्र शरीर का स्पर्श करने से डरकर भूखण्ड के साथ ही उन्हें ले गया था। १२७६

तीण्डिल ऩॆऩ्ऩुम् वाय्मै तिशैमुहऩ् शॆय्द मुट्टै
कीण्डिल दऩन्द ऩुच्चि किऴिऩ्दिल वॆऴुन्दु वेलै
मीण्डिल शुडर्हळ् यावुम् विऴुन्दिल वेदञ् जॆय्है
माण्डिल वॆऩ्ऩुन् दऩ्मै वाय्मैया ऩुणर्दि मऩ्ऩो 1277

तीण्टिलऩ्–उसने स्पर्श नहीं किया; ऍऩ्ऩुम् वाय्मै–यह सत्य; तिचैमुकऩ् चॆय्त मुट्टै–चतुर्मुखसृष्ट अण्डगोल; कीण्टु इलतु–फटा नहीं; अऩन्तऩ् उच्चि–अनन्तनाग का सिर; किऴिऩ्तिलतु—चिरा नहीं; वेलै ऍऴुऩ्तु–समुद्र उमड़कर; मीण्टिल–भूतल को लीलकर नहीं लौटे; चुटर्कळ् यावुम्–सभी प्रकाशमण्डल; विऴुऩ्तिल–गिरे नहीं; वेतम् चॆय्कै–वेद और वेद-विधियाँ; माण्टिल–नष्ट नहीं हुईं; ऍऩ्ऩुम् तऩ्मै–ये स्थितियाँ; वाय्मैयाल्–अब भी विद्यमान हैं, इससे; उणर्ति–जान लें। १२७७

उसने उनका स्पर्श नहीं किया। यह सत्य इन अटल रहनेवाली बातों से प्रमाणित है। चतुर्मुखसृष्ट अण्डगोल नहीं फूटा। अनन्तनाग का सिर नहीं चिरा। समुद्र उमड़कर भूतल को लीलकर पुनः यथावत नहीं

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हुए। सूर्य, चन्द्र आदि तेज के मण्डल चुए नहीं। वेद और वेदविधियाँ बेकार नहीं हुईं। १२७७

❀ शोहत्ता ळाय नङ्ग कऱ्पिनाऱ् ऱॊळुदऱ् कॊत्त
माहत्तार् देवि मारुम् वान्शिऱप् पुऱ्ऱार् मऱ्ऱैप्
पाहत्ता ळल्ल ळीशन् महुडत्ताळ् पदुमत् ताळुम्
आहत्ता ळल्लण् माय नायिर मोलि याळाल् 1278

चोकत्ताळ् आय–दुःखिनी बनी; नङ्कै–देवी के; कऱ्पिनाल्–पातिव्रत्य से; माकत्तार् तेविमारुम्–व्योमवासियों की पत्नियाँ भी; तॊळुतऱ्कु ऒत्त–पूजार्ह; वान् चिऱप्पु–बड़े गौरव को; उऱ्ऱार्–प्राप्त कर गयी हैं; मऱ्ऱै–और; ईचन् पाकत्ताळ्–परमेश्वर की अर्द्धांगिनी; अल्लळ्–न बनकर; मकुटत्ताळ्–सिर पर रहनेवाली बनीं; पतुमत्ताळुम्–पद्मा भी; मायन् आकत्ताळ् अल्लळ्–मायावी की वक्षनिवासिनी न बनकर; आयिरम् मोलियाळ्–उनके सहस्र सिरों पर शोभनेवाली बनीं। १२७८

शोकाकुल नायिका सीताजी के पातिव्रत्य की महिमा से अन्य देवियाँ भी गौरवान्वित हो गयीं, पूजार्ह हो गयीं। और भी शिवपत्नी को अर्द्धांगिनी के पद में रहकर भी शिवजी के सिर पर रहने से प्राप्य गौरव मिल गया। श्रीपद्मा भी मायावी की वक्षःस्थलवासिनी से सहस्र सिरों पर रखकर पूज्य हो गयीं। १२७८

इलङ्गैयै मुळुदु नाडि यिरावण निरुक्कै यॆय्दिप्
पॊलङ्गुळै यवरै यॆल्लाम् पॊदुवुऱ नोक्किप् पोनेन्
अलङ्गुतण् शोलै पुक्के नव्वळि यणङ्ग नाळैक्
कलङ्गुवॆण् डिरैयिऱ् ऱाय कण्णिनीर्क् कडलिऱ् कण्डेन् 1279

इलङ्कैयै मुळुतुम् नाटि–लंका भर में खोजकर; इरावणन् इरुक्कै ऍय्ति–रावण का वासस्थान पहुँचकर; पॊलन् कुळै–सुन्दर कर्णकुण्डलालंकृता; अवरै ऍल्लाम्–(स्त्रियों) सभी को; पॊतु उऱ नोक्कि–सामान्य रूप से देखता हुआ; पोनेन्–गया; अलङ्कु–हिलनेवाले (पत्तों और डालों के); तण् चोलै–शीतल अशोक वन में; पुक्केन्–प्रविष्ट हुआ; अ वळि–वहाँ; अणङ्कु अनाळै–देवी स्त्री-सम इनको; कलङ्कु–विलोडित; वॆळ् तिरैयिऱु आय–सफ़ेद तरंगों वाले; कण्णिन् नीर् कटलिल्–अश्रुजल-सागर में; कण्टेन्–(मैंने) देखा। १२७९

मैंने लंका भर में खोजा। रावण के महल में गया। वहाँ सुन्दर कुण्डलधारिणी सब स्त्रियों को सरसरी निगाह से देखकर आगे गया और अशोक वन में पहुँचा, जिसमें तरु के पल्लव और डालें हवा में हिलती रहीं। वहाँ देवी-सी सीता को मैंने विलोडित श्वेत तरंगों वाले अश्रुजल-सागर-मध्य देखा। १२७९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अरक्किय रळवर् रार्ह ळलहैयिन् कुऴुवु मञ्ज
नॅरुक्कित्तर् काप्प निन्बा नेशमे यच्च नीक्क
इरक्कमॅन् रॊन्रु तानो रेन्दिऴै वडिव मॅय्दित्
तरुक्कुयर् शिरैयुर् इन्न तहैयळत् तमिय ळम्मा 1280

अळवु अर्रार्कळ्–असंख्यक; अरक्कियर्–राक्षसियाँ; अलकैयिन्–पिशाचों के; कुऴुवुम् अञ्च–झुण्डों को भी भयभीत कर सकनेवाली; नॅरुक्कित्तर्–बिल्कुल पास से घेरकर; काप्प–रक्षित करती रहीं; अच्चम्–भय को; निन् पाल् नेचमे–आपके प्रति प्रेम के ही द्वारा; नीक्क–दूर करके; अ तमियळ्–वे एकाकिनी; इरक्कम् ऍन्रु–दीनता नाम का; ऒन्रुतान्–एक (तत्त्व) ही; ओर् एन्तिऴै वटिवम्–एक आभरणधारिणी (अंगना) का रूप; ऍय्ति–लेकर; तरुक्कु उयर्–अतिकठोर; चिरै उर्रु–कारा में बन्द रहा; अन्त–जैसी; तकैयळ्–स्थिति में रहनेवाली हैं। १२८०

बेशुमार निशाचरियाँ, जिनसे भूतब्रात भी भयभीत होते हैं, बिल्कुल पास से घेरकर उनकी रखवाली कर रही हैं। उससे जो भय देवी के मन में पैदा होता है, उससे आपके प्रति प्रेम ही रक्षा कर रहा है। वे एकाकिनी ऐसी दिख रही हैं, मानो दीनता ही (आभरणधारिणी) अंगना का रूप धरकर अति कठोर कारा में बन्दिनी बनी रहती हो। १२८०

तैयलै वणङ्गर् कॊत्त विडैपॅरुन् दन्मै नोक्कि
ऐयना त्तिरुन्द कालै यलङ्गल्वे लिलङ्गै वेन्दन्
ऍय्दित्त त्तिरन्दु कूरि यिरैञ्जित्त त्तिरुन्द नङ्गै
वॅय्दुरै शॊल्लच् चीरिक् कोरुन्मेर् कॊण्डु विट्टान् 1281

ऐय–आर्य; तैयलै–देवी को; वणङ्कर्कु ऒत्त–नमस्कार (भेंट) करने योग्य; इटै–अवकाश; पॅरुम् तन्मै–प्राप्त करने के उपाय को; नोक्कि–सोचकर; नान्–(जब) मैं; इरुन्त कालै–रहा, उस समय; अलङ्कल् वेल्–मालाधारी, भाले वाला; इलङ्कै वेन्तन्–लंका का राजा; ऍय्तितन्–आया; इरन्तु कूरि–विनय सुनाकर; इरैञ्चितन्–नमस्कार किया; इरुन्त नङ्कै–(बन्दिनी) जो रहीं, उन देवी के; वॅय्तु उरै–कठोर वचन; चॊल्ल–कहने पर; चीरि–कोप करके; कोरल्–मारने पर; मेर्कॊण्टु विट्टान्–तुल गया। १२८१

देव ! देवी से भेंट करूँ, उस समय की प्रतीक्षा में मैं बैठा था। तब माला से अलंकृत भालाधारी लंका का राजा रावण आया। उसने दीनता के वचन कहकर देवी को नमस्कार किया। बन्दिनी रही देवी ने कुछ कटु वचन कहे। रावण को गुस्सा हुआ और वह देवी को मारने पर उतारू हो गया। १२८१

आयिडै यणङ्गिन् करुपु मैयनिन् नरुळुञ् जॅय्य
तूयनल् लरुनु मॅन्रिङ् गिनैयत् तॊडर्न्दु काप्पप्
पोयित्त नरक्कि मारैच् चॊल्लुमिन् पोमि नॅन्रुङ्
गेयित्त ववरॆ लामॅन् मन्दिरत् तुरङ्गि यिर्रार् 1282

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ऐय–आर्य; आ इटै–तब; अणङ्किनु कऱ्पुम्–भगवती का सतीत्व; निन् अरुळुम्–आपकी कृपा; चॆय्य–श्रेष्ठ; तूय–पवित्र; नल् अऱनुम्–अच्छा धर्म; ऍन्ऱु इन्नैयऩ–आदि ऐसे तत्त्व; तॊटर्न्तु काप्प–निरन्तर रक्षा करते रहे; अरक्किमारै–राक्षसियों को (देख) उनसे; पोमिन्–जाओ; चॊल्लुमिन्–समझाकर कहो; ऍन्ऱु–कहकर; पोयिऩऩ्–गया; एयिऩ–आज्ञापित; अवर् ऍलाम्–वे सब; ऍन् मन्तिरत्तु–मेरे जादू से; उऱङ्कि–सोकर; इऱ्ऱार्–निष्क्रिय रहीं। १२८२

तब, हे प्रभु ! भगवती का सतीत्व, आपका अनुग्रह और श्रेष्ठ व पवित्र सद्धर्म —ऐसे तत्त्वों ने देवी की रक्षा की और निरन्तर वे उनकी रक्षा करते रहे तो रावण ने राक्षसियों को बुलाकर आज्ञा सुनायी कि चलो। उसे सलाह दो। फिर वह चला गया। उससे आज्ञापित वे सब मेरे मंत्रित जादू के कारण जडवत् सो गयीं। १२८२

अन्नदोर् पॊऴुदि नङ्गै यारुयिर् तुऱप्प दाह
उन्निऩळ् कॊडियॊऩ् ऱेन्दिक् कॊम्बॊडु मुऱैप्पच् चुऱ्ऱित्
तन्मणिक् कऴुत्तिऱ् चार्त्तु मळवैयिऱ् ऱडुत्तु नायेऩ्
पॊन्नडि वणङ्गि निन्ऱु निन्पॆयर् पुहन्ऱ पोऴ्दिल् 1283

अऩ्ऩतु ओर् पॊऴुतिऩ्–ऐसे एक समय में; नङ्कै–देवी के; आर् उयिर्–प्राणों को; तुऱप्पतु आक–त्यागने का; उऩ्ऩितळ्–निश्चय करके; कॊटि ऒऩ्ऱु–एक लता को; एन्ति–पकड़कर; कॊम्पु ऒटुम्–शाखा से; उऱैप्प चुऱ्ऱि–दृढ़ रूप से लपेटकर; तऩ् मणि कऴुत्तिल्–अपने सुन्दर गले में; चार्त्तुम् अळवैयिल्–लपेटते समय; नायेऩ्–दास मैं; तटुत्तु–रोककर; पॊऩ् अटि–(स्वर्ण-) सुन्दर चरण; वणङ्कि निऩ्ऱु–नमन करके खड़ा होकर; निऩ् पॆयर्–आपका श्रीनाम; पुकऩुऱ पोऴ्तिल्–जब दुहराने लगा, तब। १२८३

उस समय नायिका देवी ने प्राणहत्या कर लेने का संकल्प करके एक लता को पकड़ा, उसे एक शाखा से खूब कसकर बाँधा। ज्योंही वे उसे अपने गले में लपेटने लगीं, त्योंही दास मैंने रोक लिया। उनके चरणों पर नमस्कार करके आपके श्रीनाम को दुहराने लगा। तब। १२८३

वञ्जऩै यरक्कर् शॆय्है यामॆऩ मऩक्कॊण् डेयुम्
अञ्जऩ वण्णत् तान्ऱऩ् पॆयरुरैत् तळिय वॆऩ्बाल्
तुञ्जुऱु पॊऴुदिऱ् ऱन्दाय् तुऱक्कमॆऩ् ऱुवन्दु शॊऩ्ऩाळ्
मञ्जऩ वण्णक् कॊङ्गै वऴिहिन्ऱ मऴैक्क णीराळ् 1284

मञ्चु अऩ–मेघ-सम; वण्ण कॊङ्कै–सुन्दर स्तनों पर; वऴिकिऩ्ऱ–गिरकर बहनेवाले; मऴै कण् नीराळ्–वर्षा के समान अश्रुजल-सहित देवी ने; वञ्चऩै–वंचक; अरक्कर् चॆय्कै आम्–राक्षसों का काम; ऍऩ–ऐसा; मऩक् कॊण्टेयुम्–मन में विचार करने पर भी; तुञ्चु उऱु पॊऴुतिल्–मरते समय; अळिय–दीना; ऍऩुपाल्–मेरे पास; अञ्चऩ वण्णऩ्तान् तऩ्–अंजनवर्ण (श्रीराम) का; पॆयर् उरैत्तु–नाम जपकर; तुऱक्कम् तन्ताय्–स्वर्ग दिलाया तुमने; ऍऩ्ऱु–ऐसा; उवन्तु–हर्षित होकर; चॊऩ्ऩाळ्–कहा। १२८४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेघों की वर्षा के समान उनकी आँखों ने अश्रुवर्षा बरसायी, जो उनके मनोरम स्तनों पर से होकर बहने लगी। ऐसी आँखों की देवी ने यह सोचा कि मेरा प्रकट होना वञ्चक राक्षस का ही काम है। तो भी उन्होंने हर्षाक्ति स्वर में मुझसे कहा कि मरते समय दीना मेरे सामने आये और तुमने अंजनवर्ण श्रीराम का नाम जपकर मुझे स्वर्ग दिला दिया! । १२८४

अऱिवुऱत् तेऱच् चॊऩ्ऩ पेरडै याळम् यावुम्
शॆऱिवुऱ नोक्कि नायेऩ् शिन्दैयिऱ् ऱिरुक्क मिऩ्मै
मुऱिवऱ वॆण्णि वण्ण मोदिरङ् गाट्टक् कॊण्डाळ्
इऱुदियि ऩुयिर्दन् दीयु मरुन्दॊत्त दऩैय दॆन्दाय् 1285

ऍन्ताय्–धाता; अऱिवु उऱ–बुद्धि में लगे और; तेऱ–साफ़ समझ जाए, ऐसा; चॊऩ्ऩत–मेरे कहे हुए; पेर् अटैयाळम् यावुम्–सभी प्रमुख अभिज्ञानों को; चॆऱिवु उऱ–गम्भीर रूप से ध्यान लगाकर; नोक्कि–देखकर; नायेऩ् चिन्तैयिल्–दास मेरे मन में; तिरुक्कम् इऩ्मै–कलुष का न रहना; मुऱिवु अऱ–पीछे बदलना न पड़े, ऐसा; ऍण्णि–विचार करके; वण्ण मोतिरम्–सुन्दर मणिमुँदरी को; काट्ट–मेरे दिखाने पर; कॊण्टाळ्–ग्रहण किया; अऩैयतु–वह; इऱुतियिऩ्–अन्त काल में; उयिर् तन्तु ईयुम्–प्राणस्थापन के लिए दी जानेवाली; मरुन्तु–(मृत संजीवनी नाम की) औषध; ऒत्ततु–के समान बना। १२८५

धातादेव! मैंने उन्हें समझाते हुए जो प्रबल अभिज्ञान-वचन कहे, उन सब पर देवी ने ध्यान देकर सोचा। मेरे मन में कलुष नहीं था —यह बात उन्हें असंदिग्ध रूप में लगी। फिर मैंने आपकी श्रीअंगुलीयक को अभिज्ञान के रूप में दिखाया तो उन्होंने उसे ले लिया। वही अन्त काल में प्राणों को रोक रखनेवाली मृतसंजीवनी नामक औषध के समान बनी। १२८५

ऒरुकणत् तिरण्डु कण्डे ऩॊळिमणि याऴि यूऩ्ऱत्
तिरुमुलैत् तडत्तु वैत्ताळ् वैत्तलुञ् जॆल्व निऩ्बाल्
विरहमॆऩ् बदऩिऩ् वन्द वॆङ्गॊळुन् दीयि ऩाल्वॆन्
दुरुहिय दुडऩे याऱि वलित्तदु कुळिर्प्पुळ् ळूऱ् 1286

चॆल्व–भाग्यवन्त; ऒरु कणत्तु–एक ही पल के अन्दर; इरण्टु कण्टेऩ्–दो (विषय) देखे; ऒळि मणि आऴि–तेजोमय मणिमुँदरी को; ऊऩ्ऱ–खूब गड़ाकर; तिरु मुलै तटत्तु–श्रीस्तनतल पर; वैत्ताळ्–रख लिया (देवी ने); वैत्तलुम्–रखते ही; निऩ् पाल्–आपके; विरकम् ऍऩ्पततिऩ्–विरह से; वन्त–उत्पन्न; वॆम् कॊळुम् तीयिताल्–भयंकर और विपुल आग (ताप) से; वॆन्तु–गरम होकर; उरुकियतु–पिघला; कुळिर्प्पु–आशा की (हर्षोत्पन्न) शीतलता; उळ् ऊऱ–अन्दर होने से; उटऩे–तुरन्त; आऱि–ठण्डा पड़कर; वलित्तत्तु–(पूर्ववत्) दृढ़ बना। १२८६

भाग्यवंत! एक ही समय में मैंने दो विचित्रताएँ देखीं। देवी ने तेजोमय मणिमुँदरी को अपने श्रीस्तनों के ऊपर रखा। रखते ही आपके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विरहताप रूपी विपुल तथा भयानक आग से वह गरम होकर पिघल गयी। पर तुरन्त, विश्वासजनित आन्तरिक सन्तोष की शीतलता ने उसे ठण्डा कर दिया और वह पूर्ववत् सुदृढ़ बन गयी। १२८६

वाङ्गिय वाऴि तन्नै वञ्जरूर् वन्द दामॆन्
ऱाङ्गुयर् मऴैक्क णीरा लायिरङ् गलश माट्टि
एङ्गिऩ ळिरुन्द दल्ला लियम्बल ळॆय्त्त मेनि
वीङ्गिनळ् वियन्द दल्ला लिमैत्तिल ळुयिर्प्पु विट्टाळ् 1287

वाङ्किय आऴि तन्नै–गृहीत मुँदरी की; वञ्चर् ऊर्–वंचकनगर; वन्तताम्–आया है (अतः अपवित्र हो गया); ऎन्ऱु–सोचकर; आङ्कु–तब; उयर् मऴैकण् नीराल्–उत्कृष्ट वर्षा-सम अश्रुजल के; आयिरम् कलचम्–सहस्र कलशों से; आट्टि–अभिषिक्त कर; एङ्किनळ्–दुःखाभिभूत होकर; इरुन्ततु अल्लाल्–चुप रहना छोड़कर; इयम्पलळ्–कुछ नहीं बोलीं; ऎय्तत मेनि–कृश बना शरीर; वीङ्किनळ्–फूल उठा; वियन्ततु अल्लाल्–विस्मित रहना छोड़कर: इमैत्तिलळ्–पलकें नहीं गिरायीं; उयिर्प्पु विट्टाळ्–साँसें रोक लीं। १२८७

देवी ने हाथ में आयी मुँदरी के सम्बन्ध में सोचा कि यह वंचक लोगों के नगर में आयी है, अतः अपवित्र हो गयी है। इसलिए भावनाओं के कारण उत्कृष्ट बने, वर्षा-जैसे अपने सहस्रकलश-परिमाण में निकले अश्रुजल से उसे अभिषिक्त करा दिया। और वे चुप रही, पर बोलीं नहीं। कृश बना रहा शरीर फूला और वे विस्मय करती रहीं पर पलकें नहीं गिरायीं। उसी दशा में वे साँसें भी रोके रह गयीं। (सहस्रकलशाभिषेक शास्त्रोक्त पवित्रकारी क्रिया है।)। १२८७

अन्नवट् कडिये नुन्निऱ् पिरिन्दपि नडुत्त वॆल्लाम्
शॊन्मुऱै यऱियच् चॊल्लित् तोहैनी यिरुन्द शूऴल्
इन्नदॆन् ऱऱिहि लामै यित्तुणै ताऴ्त्त दॆन्ऱेन्
मन्ननिन् वरुत्तप् पाडु मुणर्त्तिनॆन् नुयिर्प्पु वन्दाळ् 1288

मन्न–राजा; अटियेन्–दास मेरे; उन्निल् पिरिन्त पिन्–आपसे छूटने के बाद; अटुत्त ऎल्लाम्–जो घटा वह सब; अन्नवट्कु–उन्हें; अऱिय–समझाते हुए; चॊल् मुऱै–कथनोचित रीति से; चॊल्लि–कहकर; तोकै–कलापी-सी देवी; इ तुणै–इतनी देर; ताऴ्त्ततु–विलम्ब करना; नी–आपके; इरुन्त चूऴल्–रहने का स्थान; इन्नतु–अमुक है; ऎन्ऱु–ऐसा; अऱिकिलामै–न जानने का फल है; ऎन्ऱेन्–(मैंने) कहा; निन् वरुत्तप्पाटुम्–आपका दुःख भी; उणर्त्तिनॆन्–बताया; उयिर्प्पु वन्ताळ्–साँसें छोड़ने लगीं। १२८८

महाराज ! मैंने उन्हें सारा वृत्तान्त ठीक प्रकार से कह सुनाया, जो मुझ दास के आपसे अलग हो जाने के बाद घटा था। फिर मैंने समझाया कि मयूरनिभ देवी ! इतना विलम्ब हुआ आपके रहने का स्थान न जानने के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कारण ही। मैंने आपके दुःख का हाल भी बताया। यह सुनने के बाद ही वे साँसें छोड़ने लगीं। १२८८

इङ्गुळ तन्मै यॅल्ला मियल्बुळि यियम्बक् केट्टाळ्
अङ्गुळ तन्मै यॅल्ला मडियॅनुक् करियच् चॊन्नाळ्
तिङ्गळॊन् ऱिरुप्पॅ नॅन्ऱा ळन्नदु तीर्न्द पिन्नै
मङ्गुव दुण्मै यॅन्ऱुऱ् मलरडि शॅन्नि वैत्ताळ् 1289

इङ्कु–यहाँ; उळ–जो हैं; तन्मै ऍल्लाम्–उन सभी विषयों को; इयल्पुळि–यथा हैं, वैसे ही; इयम्प–मेरे कहने पर; केट्टाळ्–सुन लिया; अङ्कु उळ–वहाँ के रहनेवाले; तन्मै ऍल्लाम्–सभी वृत्तान्त; अटियॅनुक्कु–मुझसे; अऱिय–समझाते हुए; चॊन्नाळ्–(देवी ने) कहा; तिङ्कळ् ऒन्ऱु–एक मास; इरुप्पॅन्–(जीवित) रहूँगी; ऍन्ऱाळ्–कहा; अन्नतु–उस (एक मास) के; तीर्न्त पिन्नै–बीत जाने के बाद; मङ्कुवतु–बुझ जाना; उण्मै–निश्चित है; ऍन्ऱु–ऐसा; उन् मलर् अटि–आपके कमल-चरण; चॆन्नि वैत्ताळ्–सिर पर धर लिये। १२८९

यहाँ के सारे हाल मैंने जो सुनाये, उन्होंने सुने। फिर उन्होंने वहाँ के सारे हाल साफ़-साफ़ बताकर कहा कि एक ही महीने जीवित रहूँगी। बाद मेरा जीवन-दीप बुझ जायगा—यह ध्रुव है। यह कहकर उन्होंने आपके कमल-चरण अपने सिर पर धर लिये (आपको नमस्कार किया)। १२८९

वैत्तपिन् ऱुहिलिन् वैत्त मामणिक् करशै वाङ्गिक्
कैत्तलत् तिनिदि नीन्दा डामरैक् कण्ग ळार
वित्तह काण्डि यॅन्ऱु कॊडुत्तनन् वेद नन्नूल्
उय्त्तन काल मॅल्लाम् बुहऴॊडु मोङ्गि निऱ्पान् 1290

वेत नल् नल्–श्रेष्ठ वेद-शास्त्रों द्वारा; उय्त्तन–निर्णीत; कालम् ऍल्लाम्–काल भर; पुकऴ् ऒटुम्–यश के साथ; ओङ्कि–मान में बढ़ता हुआ; निऱ्पान्–जो रहेगा, उस हनुमान ने; वैत्तपिन्–रखने के बाद (नमस्कार करने के बाद); तुकिलिन् वैत्त–अपने वस्त्र में निहित; मा मणिक्कु अरचै–श्रेष्ठ मणियों में राजा चूडामणि को; वाङ्कि–(बन्धन खोल) लेकर; कै तलत्तु–मेरे हाथ में; इत्तितिन् ईन्ताळ्–प्रेम के साथ दिया; वित्तक–बुद्धिसमर्थ; तामरै कण्कळ् आर–कमलनेत्र भर; काण्टि–देख लीजिए; ऍन्ऱु–कहकर; कॊटुत्तनन्–दिया। १२९०

श्रेष्ठ वेदों के बताये काल तक बढ़ते यश के साथ जो रहनेवाला है, उस चिरंजीव हनुमान ने आगे कहा। आपको नमस्कार करके देवी ने अपने वस्त्र में बाँध रखा हुआ चूडामणि निकाला। उन्होंने उसे मेरे करतल में रखा। बुद्धिसमर्थ! अपने कमलनेत्र भरकर आप देख लें। हनुमान ने चूडामणि श्रीराम के हाथ में दिया। १२९०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पैप्पयप् पयन्द काममम् बरिणमित् तुयर्न्दु पॊङ्गि
मॆय्युऱ वॆदुम्बि युळ्ळम् मॆलिवुऱु निलैयै विट्टान्
ऐयनुक् कङ्गि मुन्न रङ्गैयाऱ् पऱ्ऱुम् नङ्गै
कैयॆन लायिऱ् ऱन्ऱे कैपुक्क मणियिन् काट्चि 1291

कै पुक्क–हस्तप्रविष्ट; मणियिन् काट्चि–मणि का दृश्य; ऐयनुक्कु–प्रभु के लिए; अङ्कि मुन्नर्–(विवाह के समय) अग्नि के सामने; अम् कैयाल्–अपने सुन्दर हाथ से; पऱ्ऱुम्–(जिनको) ग्रहण किया; नङ्कै कै–उन देवी के हस्त; ऍन्नल्–ऐसा; आयिऱ्ऱु–लगा; पयन्त–उससे जनित; काममम्–प्रेम; पै पय–धीरे-धीरे; परिणमित्तु–बढ़कर; उयर्न्तु–उठकर; पॊङ्कि–उमड़कर; मॆय् उऱ–शरीर खूब; वॆतुम्पि–गरम होकर; उळ्ळम्–मन; मॆलिवु उऱुम्–दुर्बल बनने की; निलैयै–स्थिति को; विट्टान्–छोड़ दिया। १२९१

जब वह चूडामणि श्रीराम के हाथ में आया, तब वह उन्हें देवी सीता के हाथ के समान लगा, जिसको उन्होंने विवाह के अवसर पर अपनी हथेली (मुट्ठी) के अन्दर कर लिया था। इससे मन में प्रेम उद्भूत हुआ, उठा, बढ़ा और उमगा। इससे शरीर का गरम होना और मन का दुर्बल होना आदि कष्ट दूर हो गये। १२९१

पॊडित्तन वुरोम मेन्मेऱ् पॊऴिन्दन कण्णीर् पॊङ्गित्
तुडित्तन मार्बुन् दोळुन् दोन्ऱिन वियर्वित् ऱुळ्ळि
मडित्तदु मणिवा यावि वरुवदु पोव दाहित्
तडित्तदु मेनि यॆन्ने यारुळर् तन्मैत् तेर्वार् 1292

उरोमम्–रोम; पॊटित्तन–पुलकित हुए; कण् नीर्–अश्रुजल; पॊङ्कि–उमड़कर; मेन् मेल्–उत्तरोत्तर; पॊऴिन्तन–बहा; मार्पुम् तोळुम्–वक्ष और कन्धे; तुटित्तन–फड़के; वियर्वित् तुळ्ळि–पसीने की बूँदें; तोन्ऱिन–प्रकट हो आयीं; मणि वाय्–सुन्दर अधर; मटित्ततु–मुड़े; आवि–साँसें; पोवतु वरुवतु आकि–जातीं-आतीं बनीं; मेनि–शरीर; तटित्ततु–फूल उठा; ऍन्ने–क्या (ही आश्चर्य); तन्मै तेर्वार्–स्थिति जाननेवाले; यार् उळर्–कौन हैं। १२९२

श्रीराम के रोम पुलकित हुए। आँखें डबडबा आयीं और उत्तरोत्तर अश्रुजल उमड़कर वर्षा के समान बहने लगा। भुजाएँ और वक्ष फड़क उठा। स्वेदकण प्रकट हुए। सुन्दर अधर मुड़े। साँसें तीव्र गति से निकलने और अन्दर आने लगीं। शरीर फूल गया। कैसा आश्चर्य! तब की उनकी स्थिति का वर्णन कौन परख कर सकेगा ?। १२९२

आण्डैय नरुक्कन् मैन्द नैयहे ळरिवै नम्बाल्
काण्डलुक् कॆळिय ळान्ना ळॆन्ऱपिन् कालन् दाळ
ईण्डिनु मिरुत्ति पोला मॆन्ऱन नॆन्ऱ लोडुम्
तूण्डिरण् डनैय तोळान् पॊरुक्कॆन वॆळुन्दु शॊन्नान् 1293

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आण्टैयन्–पास जो रहा; अरुक्कन् मैन्तन्–उस सूर्यसूनु ने; ऐय–प्रभु; केळ्–सुनिए; अरिवै–देवी; नम्पाल्–हमारे पास; काण्टलुक्कु–देखने (लाने) के लिए; ऍळियळ् आताळ्–सुलभ हो गयीं; ऍन्ऱ पिन्–ऐसा हो जाने के बाद; कालम् ताळ्–समय बीत जाय; ईण्टु–(ऐसा) यहाँ; इनुम् इरुत्ति पोल् आम्–अब भी रह जायेंगे लगता है; ऍन्ऱतन्–कहा; ऍन्ऱल् ओटुम्–कहते ही; तूण् तिरण्टु अनैय–खम्भे स्थूल बने दिखते जैसे; तोळान्–भुजा वाले श्रीराम ने; पॊरुक्कु ऍन्–झट; ऍऴुन्तु–उठकर; चॊन्नान्–कहा। १२९३

तब सूर्यसूनु ने, जो पास रहा, निवेदन किया कि स्वामी! सुनिए। अब देवी हमारे पास देखी जायँगी। वे सुलभ हो गयी हैं। फिर व्यर्थ आप यहाँ और रहेंगे भी क्या? उसके ऐसा कहते ही खंभे-जैसे पुष्ट कंधों वाले श्रीराम ससंभ्रम उठे और बोले। १२९३

ऍऴुहवॆम् बडैह ळॆन्ऱा नेयॆनु मळवि लॆङ्गुम्
मुऴुमुर शॆऱ्ऱिक् कॊऱ्ऱ वळ्ळुवर् मुडुक्क मुन्दिप्
पॊऴिदिरै वेलै येऴुम् बुडैपरन् दॆन्नप् पॊङ्गि
वऴुवलिल् वॆळ्ळत् तानै तॆन्ऱिशै वळर्न्द दन्ऱे 1294

ऍऴुक–उठें; वॆम् पटैकळ्–सबल सेनाएँ; ऍन्ऱान्–कहा; ए ऍन्नुम् अळविल्–'ए' कहने के समय के अन्दर; कॊऱ्ऱ वळ्ळुवर्–विजयी "वळ्ळुव" लोगों ने; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; मुऴु मुरचु–बड़ी-बड़ी भेरियाँ; ऍऱ्ऱि मुटुक्क–बजाकर स्वरित किया; पॊऴि तिरै–तरंग उठानेवाले; वेलै एऴुम्–सातों समुद्र; पुटै परन्तु–बाहर उमड़े आये; ऍन्नत–जैसे; वऴुवल् इल्–अमोघ; वॆळ्ळ–बड़ी संख्या की; तानै–सेना; मुन्ति पॊङ्कि–पहले उठकर; तॆन् तिचै–दक्षिण दिशा में; वळर्न्ततु–बढ़ चली। १२९४

सबल सेनाएँ उठ आएँ! श्रीराम ने कहा। 'ए' अक्षर का उच्चारण करने के इतने समय के अन्दर विजयी भेरियाँ बजानेवाले 'वळ्ळुव' जाति के लोगों ने सर्वत्र भेरियाँ बजाकर स्वरित किया। अमोघ वानर-सेनाएँ उठ के क्या आयीं, मानो तरंगायमान सातों समुद्र उमगकर फैल आये हों! वे पहले ही कूच कर दक्षिण दिशा में बढ़ चलीं। १२९४

वीररुम् विरैविऱ् पोनार् विलङ्गन्मे लिलङ्गै वॆय्योन्
पेर्विलाक् कावऱ् पाडुम् बॆरुमैयु मरणुङ् गॊऱ्ऱक्
कार्निऱत् तरक्क रॆन्बोर् कणिदमुम् बिऱवु मॆल्लाम्
वार्हळ लनुमन् शॊल्ल वऴिनॆडि दॆळिदिऱ् पोनार् 1295

वीररुम्–वीर भी; विरैविल् पोनार्–तेज चले; वार् कळल् अनुमन्–लम्बी पायलधारी हनुमान के; विलङ्कन् मेल्–त्रिकूट पर्वत पर की; इलङ्कै–लंका के; वॆय्योन्–उष्णरश्मि; पेर्वु इला—जहाँ नहीं जा सकता, ऐसा; कावल् पाटुम्–सुरक्षा का प्रबन्ध और; पॆरुमैयुम्–बड़प्पन; अरणुम्–सुरक्षा-प्रबन्ध (गढ़ निर्माण आदि);

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कॉऱ्ऱ–विजयी; कार् निऱत्तु–काले रंग के; अरक्कर् ऍऩ्ऩपोर्–राक्षस नामक लोगों की; कणितमुम्–संख्या; पिऱवुम्–और अन्य विषय; ऍल्लाम्–सब; चॊल्ल–कहते हुए जाते; वऴि नॆटितु–लम्बा मार्ग; ऍऴितिल्–अनायास; पोऩार्–तय करते गये। १२९५

वीर श्रीराम और लक्ष्मण भी जाने लगे। लम्बी पायलधारी हनुमान भी उनके साथ त्रिकूट पर स्थित लंका नगर का ऐसा सुरक्षा-प्रबन्ध, जिससे सूर्य भी उसमें न जा पाये, उसके अन्य बड़प्पन, गढ़ आदि प्रबन्ध, काले रंग के विजयी राक्षसों की संख्या और अन्य समाचार सुनाता हुआ चला। वे ये सब सुनते हुए चले जा रहे थे। १२९५

अऩ्ऩॆऱि यिरण्डु नाऴि लङ्गदन् मुदलि ऩोर्हळ्
पॊऩ्ऩडि वणङ्गि ऩारैप् पुहऴ्न्दुडऩ् पॊरुन्दिप् पोवार्
इऩ्ऩॆडुम् बऴुवक् कुऩ्ऱि लिऩ्ऩुऴि यिऱुत्तुप् पिऩ्ऩर्
पऩ्ऩिरु पहलिऱ् चॆऩ्ऱु तॆऩ्ऱिशैप् परवै कण्डार् 1296

अ नॆऱि–उस मार्ग में; इरण्टु नाऴिल्–दो दिनों में; अङ्कतऩ् मुतलितोर्कळ्–अंगदादि वीर; पॊऩ् अटि वणङ्कितारै–जिन्होंने अपने सुन्दर चरणों पर नमस्कार किया (उनकी); पुकऴ्न्तु–प्रशंसा करके; उटऩ् पॊरुन्ति–उनके साथ लगकर; पोवार्–जानेवाले; इऩ्–सुहावने; नॆटुम् पऴुव–विशाल बागों से पूर्ण; कुऩ्ऱिल्–पर्वतों पर; इऩ् उऴि–सुखद स्थानों में; इऱुत्तु–ठहरकर; पिऩ्ऩर्–बाद; पऩ्ऩिरु पकलिल्–बारह दिनों में; चॆऩ्ऱु–जाकर; तॆऩ् तिचै परवै–दक्षिण सागर को; कण्टार्–देखा। १२९६

उस मार्ग में दो दिन चलने के बाद अंगदादि वीर भी (जिन्होंने हनुमान को पहले खबर देने भेज दिया था) आकर श्रीराम आदि के चरणों पर नत हुए। सबने उनकी प्रशंसा की। फिर सब आगे चले। मार्ग में पर्वतों पर सुहावने बागों में ठहरते हुए वे बढ़े और उन्होंने बारह दिन चलकर दक्षिणी सागर को सामने देखा (वे सागर-तीर पर आ पहुँचे)। १२९६

॥ सुन्दरकाण्ड समाप्त ॥

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ।।'

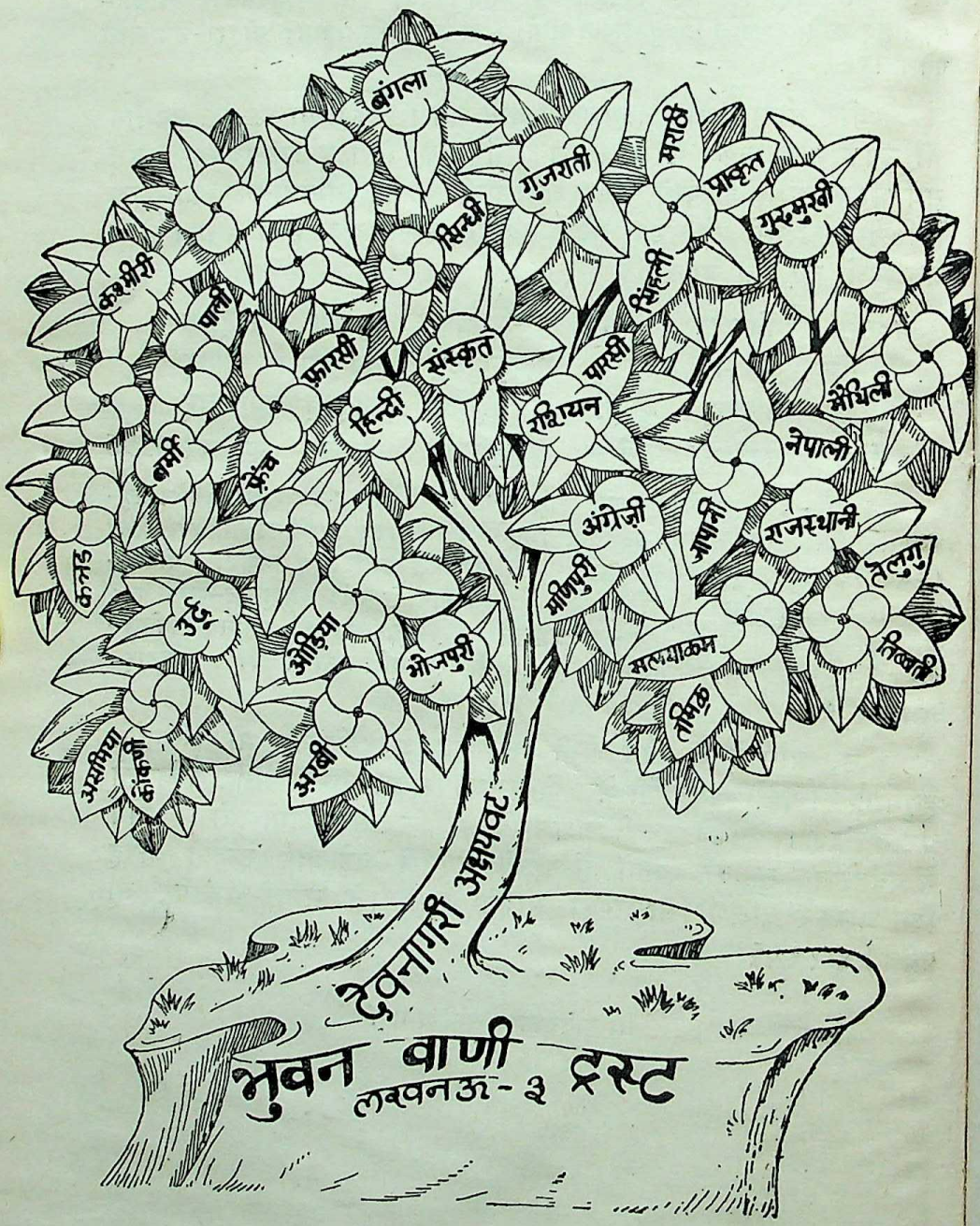

प्रतिष्ठाता— पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ताज़ी विज्ञप्ति

प्रकाशित हो चुके हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण ग्रन्थः—

१ गुजराती—गिरधर रामायण (रचनाकाल-१८३५ ई०) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृष्ठ संख्या १४६० मूल्य ६०·००

२ ,, प्रेमानन्द रसामृत—
ना० लिप्य० हिन्दी अनुवाद पृ० संख्या ४९६ मूल्य ३५·००

३ मलयाळम—अध्यात्म रामायण (एळुत्तच्छन् कृत) १५वीं शती हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृ० सं० ७५२ मू० ४०·००

४ ,, —महाभारत-एळुत्तच्छन् (१५वीं शती) पृ० १२१६ मू० ६०·००

५ बँगला— कृत्तिवास रामायण (पाँचकाण्ड)—१५वीं शती।
हिन्दी पद्या० सहित नागरी लिप्य० पृ० ६२४ मू० २५·००

६ ,, कृत्तिवास लंकाकाण्ड— ,, गद्यानुवाद पृ० ४८८ मू० २५·००

७ ,, ,, उत्तरकाण्ड ,, ,, मूल्य २५·००

८ कश्मीरी—रामावतारचरित-प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत पृ० ४८९ मू० २०·००

९ ,, लल्द्यद—(नागरी) हिन्दी गद्य संस्कृत पद्यानु० पृ० १२० ,, १०·००

१० राजस्थानी—रुक्मिणी मंगल पदमभगत कृत। पृ० ३०० मू० १५·००

११ तमिळ— तिरुक्कुरळ्-तिरुवळ्ळुवर कृत। २००० वर्ष से अधिक प्राचीन; नागरी लिप्यन्तरण, गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद, पृ० ३५२ मू० २०·००

१२ ,, कम्ब रामायण बालकाण्ड (९वीं शती) पृ० ६५२ मूल्य ४०·००

१३ ,, ,, अयोध्या-अरण्य पृष्ठ १०२४ मूल्य ७०·००

१४ ,, ,, किष्किन्धा-सुन्दर ,, १०१६ मूल्य ७०·००

१५ ,, ,, युद्धकाण्ड पूर्वार्ध ,, १०१६ मूल्य ७०·००

१६ ,, ,, ,, उत्तरार्ध ,, ८४० मूल्य ७०·००

१७ कन्नड— रामचन्द्रचरित पुराणं, अभिनव पम्प विरचित (जैन-मतानुसार रामचरित्र ११वीं शती) पृ० ६९० मूल्य ४०·००

१८ तेलुगु— मोल्ल रामायण (१४वीं शती) पृ० ४०० मूल्य २०·००

१९ ,, रंगनाथ रामायण (१३वीं शती) अनु. पृ. १३३५ मू० ६०·००

२० ,, श्री पोतन्न महाभागवतमु १-४ स्कन्धपृ० ८५६ मूल्य ७०·००

२१ ,, ,, ,, ५-९ ,, मूल्य ७०·००

२२ ,, ,, ,, १०-१२ स्कन्ध मूल्य ७०·००

२३ मराठी—श्रीरामविजय-श्रीधरकृत (१७वीं शती) पृ० १२२८ मू० ६०·००

२४ ,, श्रीहरि-विजय (श्रीधर कृत) पृष्ठ १००४ मू० ७०·००

२५ फ़ारसी—सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत उपनिषद-व्या०) २८० मू० २०·००

२६ उर्दू— शरीफ़ज़ादः (मिर्ज़ा रुस्वा कृत) पृ० १३६ मूल्य ८·००

२७ ,, गुज़श्तः लखनऊ (मौ० शरर) पृ० ३१६ मूल्य २०·००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ताजी विज्ञप्ति

२८ गुरमुखी—श्री गुरुग्रन्थ साहिब पहली सैंची पृ० ९६८ मूल्य ४०·००
२९ ,, ,, ,, दूसरी सैंची पृ० ९९२ मूल्य ५०·००
३० ,, ,, ,, तीसरी सैंची पृ० ९६४ मूल्य ५०·००
३१ ,, ,, ,, चौथी सैंची पृ० ८०० मूल्य ५०·००
३२ ,, श्री दसम गुरुग्रन्थ साहिब प्रथम सैंची पृ० ८२० मू० ५०·००
३३ ,, ,, ,, ,, दूसरी सैंची पृ० ७०४ मू० ५०·००
३४ ,, ,, ,, ,, यंत्रस्थ मूल्य ५०·००
३५ ,, ,, ,, ,, ,, मूल्य ५०·००
३६ ,, श्रीजपुजी सुखमनी साहब गुरमुखी पाठ तथा ख्वाज: दिलमुहम्मद कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनों नागरी लिपि में; पृ० १६४ मू० १०·००
३७ ,, सुखमनी साहिब मूल गुटका नागरी लिपि। मूल्य ४·००
३८ सिन्धी— सामी, शाह, सचल की त्रिवेणी पृष्ठ ४१५ मू० २०·००
३९ नेपाली—भानुभक्त रामायण पृ० ३४४ मूल्य २०·००
४० असमिया—माधवकंदली रामायण (१४वीं शती) पृ० ९४३ ,, ६०·००
४१ ओड़िआ—बैदेहीश-बिळास उपेन्द्रभञ्ज (१८वीं शती) पृ० १०००,, ६०·००
४२ ,, तुलसी-रामचरितमानस—ओड़िआ लिपि में मूलपाठ तथा ओड़िआ गद्य-पद्य अनुवाद। पृ०सं० १४६४ मू० ६०·००
४३ संस्कृत—मानस-भारती रामचरितमानस-सहित संस्कृत पंक्ति-अनुपंक्ति पद्यानुवाद। पृ० ७४० मू० ५०·००
४४ ,, अद्भुत रामायण हिन्दी अनुवाद सहित पृ० २४४ मूल्य २०·००

प्रचारित प्रकाशन (ल.कि.घ.)

४५ अरबी क़ुर्आन शरीफ़ मूलपाठ अरबी तथा नागरी लिपि में तथा हिन्दी अनुवाद सहित पृ० १०२४ मू० ४६·००
४६ ,, ,, केवल मूल; अरबी, नागरी दोनों लिपि में पृ० ५२० मू० २३·००
४७ ,, ,, केवल हिन्दी अनुवाद पृ० ५३० मूल्य २३·००
४८ ,, क़ौरानिक कोश (पठनक्रम) पृ० १९२ मूल्य १०·००
४९ ,, ज़ादे सफ़र (रियाज़ुस्सालिहीन) भाग १ पृ० ३३६ मू० १५·००
५० ,, तफ़्सीर माजिदी (पार: १ से ५) क़ुर्आन शरीफ़ अरबी व नागरी, दोनों में मूल पाठ, तथा स्व० मौलाना अब्दुल् माजिद दर्याबादी का अनुवाद एवं वृहत् भाष्य हिन्दी में पृ० ५१२ मूल्य ५०·००
५१ बहुभाषाई— 'वाणी सरोवर' त्रैमासिक पत्र वार्षिक मूल्य १५·००

प्राप्ति-स्थान— भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सुमन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३

वह ग्रन्थ सम्पूर्ण हो चुके हैं (सानुवाद देवनागरी लिप्यन्तरण):—

१—(बंगला) कृत्तिवासरामायण-पांचकांड नागरी लिप्य०, अवधी पद्यानुवाद मूल्य २५·००
२—(बंगला) कृत्तिवास रामायण लंका काण्ड ,, पद्यानुवाद ,, १५·००
३—(मलयाळम) बेळुत्तच्छन्कृत महाभारत हिन्दी अनु० नागरी लिपि० ,, ६०·००
४—(,,) ,, अध्यात्मरामायण, उत्तररामायण ,, ,, ४०·००
५—(कश्मीरी) रामावतारचरित—प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत ,, ,, २०·००
६—(,,) ललद्यद—हिन्दी, संस्कृत अनुवाद सहित ,, १०·००
७—बाइबिल सार (सालोमन के नीतिवचन) संस्कृत उद्धरणयुक्त ,, १·००
८—(उर्दू) श्री 'रुस्वा' कृत शरीफ़ज़ादः (आर्यपुत्र) नागरी लिपि में ,, ८·००
९—(उर्दू) गुलशतः लखनऊ—मौ० शरर ,, २०·००
१०—(गुरमुखी) श्रीगुरुग्रन्थ साहिब सानुवाद लिप्य० I ४०·०० II ,, ५०·००
११—(,,) जपुजी तथा सुखमनी साहब—ख्वाजः दिलमुहम्मद पद्यानु० मूल्य ८·००
१२—(,,) सुखमनी साहिब मूल गुटका ,, ४·००
१३—(फ़ारसी) सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तरीय, श्वेताश्वतर) की फ़ारसीव्याख्या हिन्दी में— ,, २०·००
१४—(अरबी) रियाज़ुस्सालिहीन बादे सफ़र (इस्लामी हदीस) प्र० खण्ड ,, १५·००
१५—(तमिळ) तिरुक्कुरळ् नागरी में मूल, हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद— ,, २०·००
१६— ,, कम्ब रामा०बालकां० ४०·०० अयो०अरण्य७०·००किष्किं. सुंदर,, ७०·००
१७—(मराठी) श्रीराम-विजय—श्रीधर कृत, हिन्दी अनुवाद सहित ,, ६०·००
१८—(नेपाली) रामायण भानुभक्त कृत सानुवाद ,, २०·००
१९—(तेलुगु) मोल्ल रामायण सानुवाद लिप्यन्तरण ,, २०·००
२०—(,,) रंगनाथ रामायण ,, ,, ,, ६०·००
२१—(कन्नड) रामचन्द्र चरितपुराणं—जैनसाहित्य (अभिनव पम्प नागचन्द्रकृत) ,, ४०·००
२२—(राजस्थानी) रुक्मिणीमंगल—पदम भगत कृत ,, १५·००
२३—(गुजराती) गिरधर रामायण हिन्दी अनुवाद सहित (नागरी लिपि.) ,, ६०·००
२४—(रामचरितमानस) ओड़िआ लिपि में लिप्यन्तरण एवं ओडिआ गद्य-पद्यानुवाद ,, ६०·००
२५—(मानस-भारती)—संस्कृत पद्यानुवाद सहित रामचरितमानस ,, ५०·००
२६—(सिंधी) स्वामी, शाह, सचल की त्रिवेणी ,, २०·००
२७—(असमिया) माधवकंदली रामायण ,, ६०·००
२८—(ओड़िआ) वैदेहीशविलास—उपेन्द्र भञ्ज कृत ,, ६०·००
२९—(वाणी सरोवर)—बहुभाषाई त्रैमासिक पत्र—वार्षिक ,, १०·००

ट्रस्ट के अतिरिक्त, सानुवाद देवनागरी-लिप्यन्तरण के अन्य कार्य, जो अन्यत्र हो चुके हैं:—

३०—(अरबी) क़ुर्आन (मूल आयतें अरबी व देवनागरी लिपि में, अनुवाद, टिप्पणी सहित)—इस्लामी धर्माचार्यों द्वारा प्रतिपादित— मूल्य ४६·००
३१—(,,) केवल मूलपाठ मूल्य २३·०० केवल अनुवाद ,, २३·००
३२—(,,) क़ौरानिक कोश क़ुर्आन के पठनक्रम से शब्दार्थ ,, १०·००

प्रकाशित हो रहे अन्य सानुवाद देवनागरी-लिप्यन्तरण ग्रन्थ (यन्त्रस्थ):—

१—(तमिळ) कम्ब रामायण युद्धकाण्ड २—(तेलुगु) पोतन्न भागवतमु
३—(गुरमुखी) श्रीगुरुग्रंथ साहब सैंची ३,४ ४—(बंगला) कृत्तिवास उत्तरकाण्ड
५—(हिब्रू) बाइबिल ओल्ड् टेस्टमेण्ट् हिन्दी अनु० सहित हिब्रू तथा अंग्रेजी मूल नागरी
६—(ग्रीक) ,, न्यू ,, ,, ,, ,, ग्रीक ,, ,, लिपि में
७—(मराठी) श्रीहरि-विजय—श्रीधर कृत ८—(गुजराती) प्रेमानन्द रसामृत (ओखा)
९— ,, संत एकनाथ भावार्थ रामायण १०—(कम्पोचियन) रेआमकेर (रामायण)
११—(कोंकणी) ख्रीस्त पुराण १२—(फ़ारसी) दाराशिकोह कृत ५० उपनिषद् (द्वि० खण्ड)
१३—(फ़ारसी) मुल्ला मसीही रामायण १४—(अरबी) बुखारी शरीफ़
१५—(अरबी हदीस)—(बादे सफ़र) द्वि० खण्ड १६— ,, तफ़सीर माजिदी

नवी प्रेस, लखनऊ-३ में मुद्रित एवं सुमन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३ द्वारा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow